Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

112794

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

112794

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरिता

अप्रैल (द्वितीय) 1976
अंक : 504

सामाजिक व पारिवारिक पुनर्निर्माण की पाक्षिक पत्रिका

कथा साहित्य

चिकित्सा	गंगासहाय प्रेमी	35
हम ने महिला वर्ष मनाया	शकुंतला शर्मा	42
जवाब हाजिर है...	गोविंद शर्मा	63
उचित अवसर	चैतन्य भट्ट	82
इंद्रधनुष के रंग	माया प्रधान	89
गिद्ध	कस्तूरचंद जैन	116
पिघलता हुआ पत्थर	हसनजमाल छीपा	134
परिवर्तन	सत्यप्रकाश संगर	147

लेख

पुस्तक ज्ञान	रामप्रियाशरण सिंह 'रत्नेश'	19
स्तुतिकार	कृष्णचंद्र महंत	29
क्या आप चोर हैं?	शिवेंद्र सुमन	49
आदिवासियों का प्यार: 'भाई'	सुरेशराम	53
बूगनविलिया	ब्रह्मदेव गुप्त	67
भावावेश को रोकिए	नीलमरानी	72
टेटनस	दलीपकुमार	76
बच्चों पर नजर रखिए	सत्यप्रकाश हिंदवान	95
मायके के उपहार	क्षमा चतुर्वेदी	99
जिन्नभूतों के साए	मोहम्मद हुसेन	105
अंतर्जातीय विवाह	आप के विचार	114
मनौतियों का व्यापार	विराज	126
हृषिकेश मुखर्जी	अभिषेक	157

कविताएं

कौन कहता है?	महाराज	27
मुख चूमा है	किशोर काबरा	39
सब अंग निखर गया	शिवप्रसाद 'कमल'	78

स्तंभ

सरित प्रवाह	15	नए पकवान	103
बच्चों के मुख से	41	हमारी बेड़ियां	107
अब हंसने की बारी है	66	देशप्रदेश की भाषा	113
श्रीमतीजी	74	ये पति	133
पाठकों की समस्याएं	80	विज्ञान जगत	161
बात ऐसे बनी	97	चंचल छाया	163
ये पत्नियां	102	आप के पत्र	171

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सब तरह से अच्छा बल्ब
फ़िलिप्स बल्ब

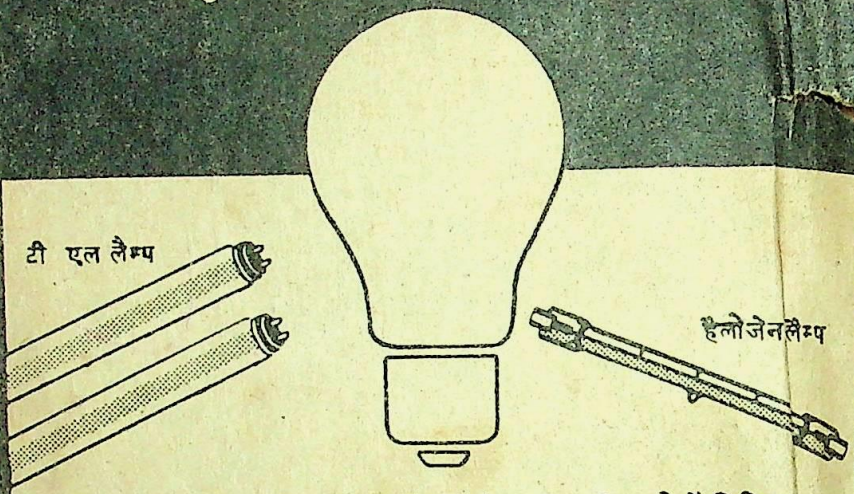

रोशनी की दुनिया में नयी-नयी खोजों और नये आविष्कारों में फ़िलिप्स इंडिया ४५ वर्षों से भी अधिक समय से लगे हैं.
अधिक कारगर और किफ़ायती रोशनी के लिये नये लैम्पों की ज़रूरत पड़ने पर उसे पेश करने में फ़िलिप्स ने हमेशा पहल की है.
अपनी शुरुआत के साथ, १९३८ से ही फ़िलिप्स घरेलू, व्यावसायिक. औद्योगिक और विशेष प्रकाश योजनाओं के लिये सही लैम्प पेश करते रहे हैं
अलग-अलग क़िस्म के इतने सारे लैम्प भारत में सिर्फ़ फ़िलिप्स ही पेश करते हैं. और देश की तरक़्क़ी के साथ-साथ क़िस्मों की इस संख्या में भी तरक़्क़ी होती जायेगी.

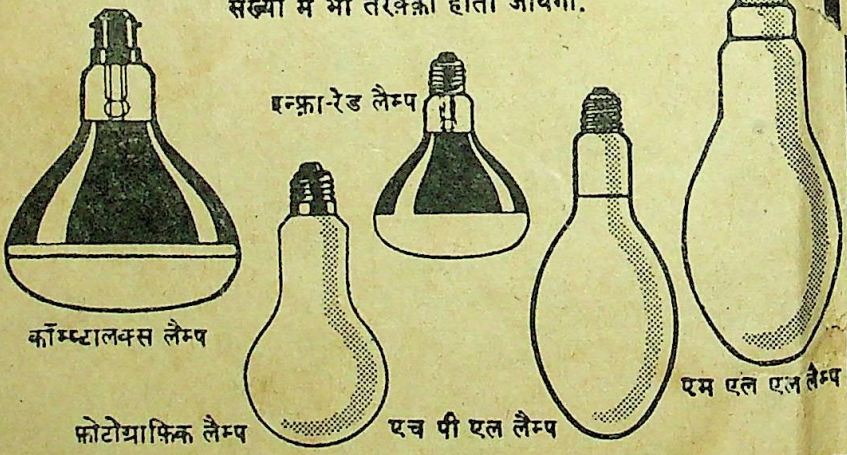

फ़िलिप्स-लैम्प और रोशनी की दुनिया में अगुआ

PHILIPS

फ़िलिप्स

फ़िलिप्स इंडिया लिमिटेड

PHL-936

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केश सज्जा का आधुनिकतम तरीका—

पॉयज़ हेयरस्प्रे

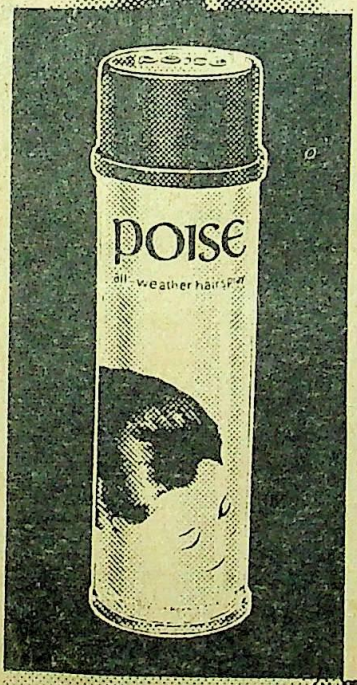

पॉयज़ आपके बालों को मुलायम व व्यवस्थित रखता है — उनके कुदरती सौन्दर्य को निखारता है। सिर्फ़ पॉयज़ हेयरस्प्रे ही गर्मी व चिपचिपाहट वाले दिनों में भी आपके बालों की सुन्दरता को बनाये रखता है।

इसका राज़? यह भारतीय जलवायु के लिए ख़ास तौर से बनाया गया है। यह समान रूप से लगता है, ब्रश से साफ़ हो जाता है, न चिपचिपाहट, न बाल सख़्त और न ही पपड़ी जमने का डर। इसकी हलकी मोहक सुगंध आपके परफ़्यूम की सुगंध में मिल जाती है।

फिर भला इम्पोर्टेड हेयरस्प्रे के लिए बेहिसाब पैसा बहाने में क्या तुक, जबकि उनसे कहीं अच्छा हेयरस्प्रे आपको आसानी से मिल रहा है। इसलिए हमेशा पॉयज़ हेयरस्प्रे इस्तेमाल कीजिए— केश-सज्जा का आधुनिकतम तरीका।

पॉयज़

विक्रेता : रैलीज़ इण्डिया लिमिटेड

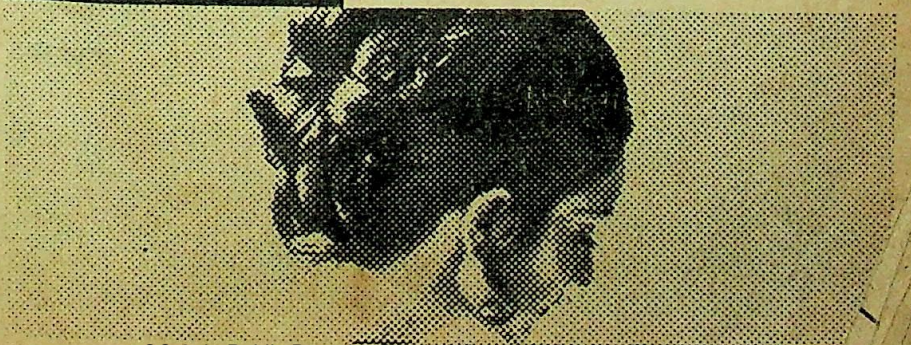

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरिता

ग्रीष्म विशेषांक

मई (प्रथम) 1976

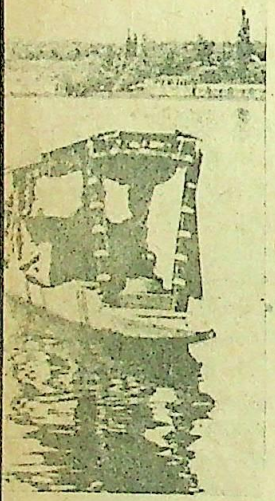

- कूलर और फ्रिज दोनों बेकार पड़े हैं?
- सारे शरीर पर फुंसियां ही फुंसियां हो गई हैं?
- गए थे किसी काम से लौटे तो लू लग गई?
- क्या बना कर खाएं कि मन की तपिश भाग जाए?
- छुट्टियां बिताने जाएं तो कहां जाएं?

गरमी आई
तरहतरह की परेशानियां लाई...
लेकिन आप की इन परेशानियों का हल
एक साथ ले कर आ रहा है

ग्रीष्म विशेषांक

अपने अखबार वाले से भी अभी से अपनी प्रति सुरक्षित करवाएं या हमें लिखें :

दिल्ली प्रेस, नई दिल्ली-55

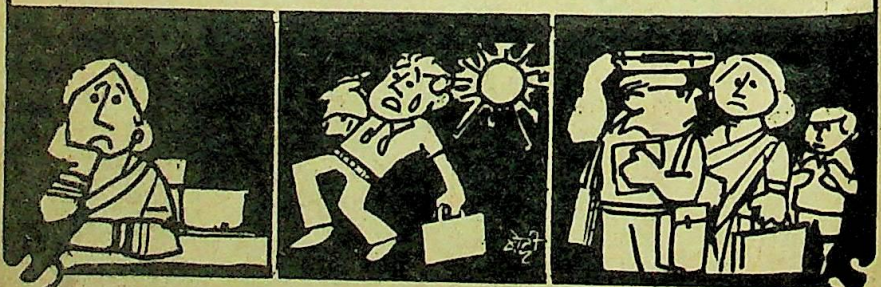

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मॉडेला

मॉडेला पेश करते हैं – सेफ्रिन

औपचारिक या स्वच्छन्द जीवन का अभिन्न साथी — सेफ्रिन की 'सफारी'-सजधज ...
वाह क्या कहने ! गर्मियों के दिनों में आपके लिये हमारा विशेष उपहार ...औपचारिक या
स्वच्छन्द जीवन का अभिन्न साथी — सेफ्रिन सूटिंग्स ।

सेफ्रिन–
सूटिंग्स के क्षेत्र में
मॉडेला की
नवीनतम देन

modella

मॉडेला टेक्स्टाइल इंडस्ट्रीज़ प्रा. लि.
मॉडेलाग्राम, थाना, महाराष्ट्र

CONCEPT-MTL 1927-HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओरिएन्ट

सुन्दर पंखे
हवादार पंखे

भारत के सबसे अधिक अनुभवी पंखे बनाने वालों का निर्माण ओरिएन्ट सीलिंग पंखे डिजाइन में आधुनिक, खूबसूरती में बेजोड़ और आपकी आवश्यकताओं के अनुरुप ९०० मिमि से लेकर १५०० मिमि तक के विभिन्न साइजों में मिलते हैं, जिनसे आपका गृहसौन्दर्य और भी बढ़ जाता है। निरन्तर रिसर्च व विकास एवं निर्माण के हर चरण में कड़े क्वालिटी कन्ट्रोल के फलस्वरुप उनसे वर्षों तक समान, नि:शब्द व निर्झंझट सेवा आपको मिलती है।

दो वर्ष की गारन्टी

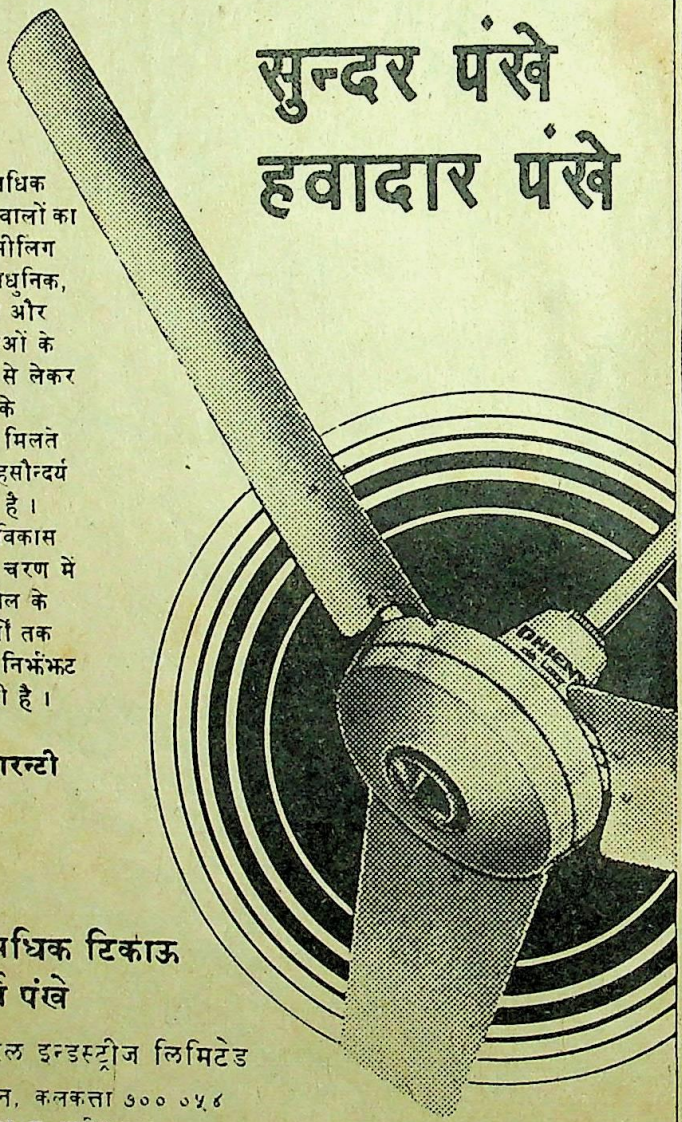

ओरिएन्ट पंखा

ओरिएन्ट—अधिक टिकाऊ और कम खर्च पंखे

ओरिएन्ट जनरल इन्डस्ट्रीज लिमिटेड

६, घोर बीबी लेन, कलकत्ता ७०० ०५४

फैक्टरी : कलकत्ता व फरीदाबाद

CC/OGI-4/76 HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खाली हो जब पेट हमारा,

पूप–सी देती दूध की धारा,

इससे, मम्मीसे प्रेम हमारा

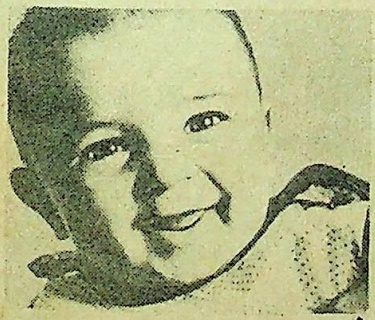

हर माँ का सबसे अधिक भरोसेमंद बेबी फीडर

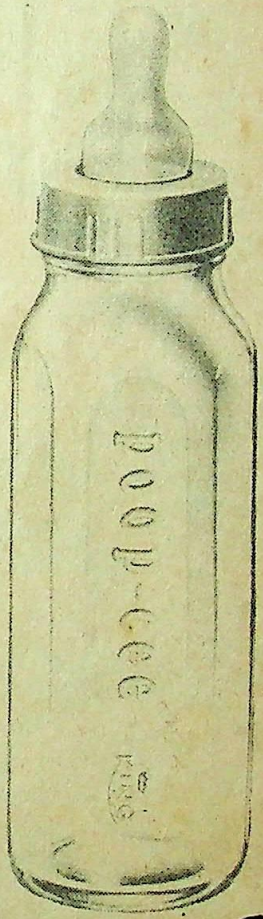

पूप-सी®

भारत में सबसे अधिक बिकनेवाले बेबी फीडर्स और निप्पल्स

निर्माता : **बॉम्बे लेटेक्स एण्ड डिस्पर्शन्स प्रा. लि.**
८३/सी, डॉ- एनी बेसेंट रोड, वरली, बम्बई-४०० ०१८

INNOVATION/BLD/H/03-D

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

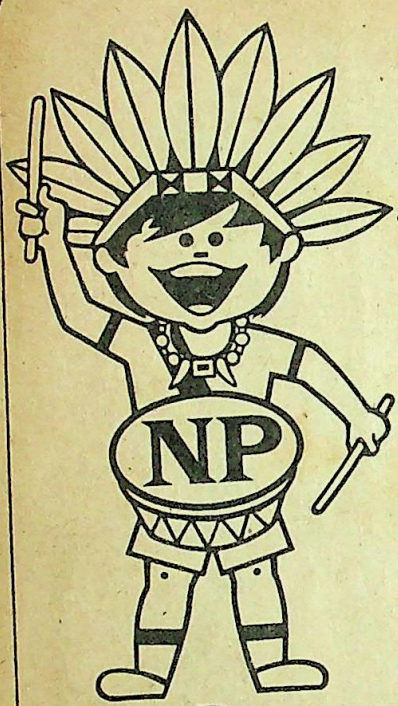

ये लीजिये आपको लुभानेवाले क्रॅकीज़

सांता क्लॉस की ही तरह एन. पी. भी बच्चोंके लिए स्वादिष्ट मिठाइयोंका खजाना लुटाने आते हैं। एन. पी. क्रॅकीज़ च्युइंग गम—बबल गम भी—जो पेपरमिंट, पाइनएपल, टूटी फ्रूटी, ऑरेंज और अनोखे, सुपारीके स्वादयुक्त होते हैं। इसके अलावा बॉनबाइट—जो मलाईदार और अप्रतिम स्वादिष्ट मिठाई है, और फलोंके रुचिकर स्वादवाले बालगम्स।

आपकी रुचि-पसंद च्युइंग गम

(NP) – ISI गुणवत्ता के निशानवाले अद्वितीय च्युइंग गम्स और बबल गम्स।

अपनी जेबोंमें हमेशा (NP)–आपकी पसंद की च्युइंग गम्स रखिए।

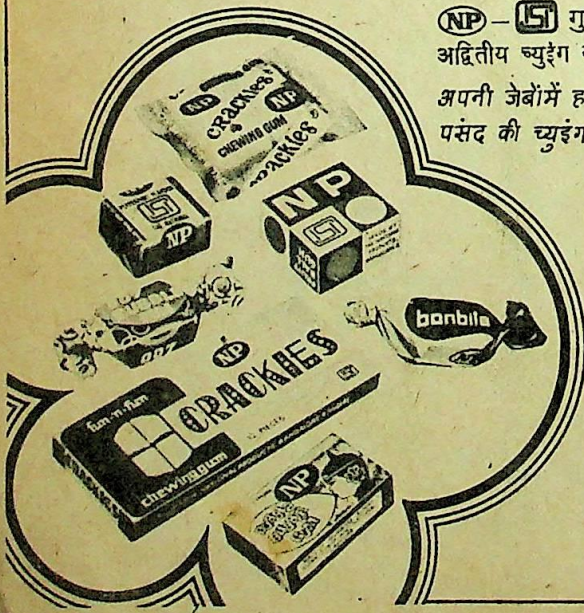

दि नॅशनल प्रॉडक्टस
बंगलूर

Dattaram-NP-1HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

सरिता

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जी हाँ, फ़िनिट .
घरभर के उड़नेवाले और रेंगनेवाले
सभी कीटों जैसे मच्छरों, मक्खियों,
तिलचट्टों व खटमलों का नाश करने का
निरापद तथा सुनिश्चित उपाय।
जी हाँ, निरापद तथा सुनिश्चित नाश।

HP

हिन्दुस्तान पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन लिमिटेड

CMHPF-2-172 HN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अतुलनीय रंग-रूप!
मोहक. रेशमी कोमल. नैसर्गिक सुंदर.

लक्स सुप्रीम से आपका रंग-रूप ऐसे ही निखर आता है. एकमात्र लक्स सुप्रीम में ही मिली है ब्यूटी क्रीम. इसके भरपूर गुदगुदे झाग में ब्यूटी क्रीम का सुखद स्पर्श आप स्वयं अनुभव कर सकती हैं. मधुर, मोहक सुगंध भरा इसका कोमल झाग आपकी त्वचा को बड़े यत्न से संवारता है...फिर तो आपका रंग-रूप सचमुच रेशमी कोमल और स्वाभाविक सुंदर हो कर निखर आता है.

LUX SUPREME

अब इसके अलावा आप कुछ और नहीं पसंद कर पाएँगी.

हिन्दुस्तान लीवर लि. का एक उत्कृष्ट उत्पादन

HLLS-9266 (A)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अरित प्रवाह

उत्तर पूर्वी अफ्रीका के प्रमुख अरब देश मिस्र ने रूस से मित्रता की संधि तोड़ दी है. यह संधि मिस्र के पिछले राष्ट्रपति नासिर ने की थी, जब अमरीका और ब्रिटेन ने मिस्र को आर्थिक सहायता देने से इनकार किया था. इस संधि के अंतर्गत रूस ने मिस्र को अरबों रुपए के अस्त्रशस्त्र दिए, जिन के बल पर मिस्र इजराइल पर दो बार आक्रमण कर सका. अब झगड़ा इस बात पर हुआ है कि रूस ने इन शस्त्रों का पैसा मांगा और जब तक वह न मिले तब तक नए अस्त्रशस्त्र व पुराने शस्त्रों के मरम्मत के पुरजे इत्यादि देने से इनकार कर दिया.

इन रूसी शस्त्रों में जो सब से महत्त्वपूर्ण सामान था वह था वायुयान विनाशक सैम मिसाइल और मिग-21 लड़ाकू हवाई जहाज. इन दोनों पर रूस ने अपना नियंत्रण रखा हुआ था--इन का संचालन रूसी ही करते थे. जब वर्तमान राष्ट्रपति सादत को रूस ने नए अस्त्र व पुरानों के कलपुरजे देने पर आनाकानी की तो उन्होंने रूसी चालकों को तत्काल मिस्र छोड़ देने का आदेश दिया. और फिर तो बात बिगड़ती ही गई.

रूस और मिस्र की अनबन में अमरीकी कूटनीति का भी विशेष हाथ है. अमरीकी विदेश मंत्री श्री किसिंजर समय-समय पर इन अरब देशों व इजराइल की यात्रा कर के उन्हें पटाने की कोशिश करते रहे हैं. पिछले वर्ष उन्होंने मिस्र को अस्त्रशस्त्र व अन्य प्रकार की वित्तीय सहायता देने का वचन दिया और दूसरी ओर इजराइल से स्वेज नहर के पूर्वी अधिकृत क्षेत्र को खाली भी करवा दिया--जो काम रूस नहीं करवा सकता था. फलस्वरूप श्री सादत ने रूस से संबंध विच्छेद कर लिए.

कहा जा रहा है कि यदि रूस ने अमरीका को अंगोला में हराया तो अमरीका ने मिस्र में रूस को मात दे दी--जो अंगोला में हार से कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण है.

इस सिलसिले में यह भी समाचार प्रकाशित हुआ था कि मिग-21 लड़ाकू हवाई जहाजों के कलपुरजे मिस्र ने भारत से भी लेने चाहे--ये भारत में रूसी लाइसेंस के अंतर्गत बनते हैं--पर भारत ने इन्हें देने से इनकार कर दिया. यह तो ठीक ही है--रूस की मरजी के बिना ये कैसे दिए जा सकते थे. पर इस से मिस्र-भारत के संबंधों पर भी असर पड़ने की आशंका है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत और श्रीलंका में सामुद्रिक सीमा पर एक समझौता हो गया है जिस के अंतर्गत दोनों सरकारों ने यह स्वीकार कर लिया है कि दोनों देशों की सामुद्रिक सीमा 200 मील तक रहेगी. और जहां दोनों देशों के बीच इस से कम फासला होगा, वहां उस फासले के बीच की रेखा दोनों की सीमा मानी जाएगी.

अब तक अंतर्राष्ट्रीय व्यवहार में किसी देश की भौगोलिक सीमा समुद्र तट से 20 मील तक मानी जाती थी, उस के आगे अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र रहता था, परंतु जब से समुद्र में तेल निकलने लगा है हर देश अपनी सीमा बढ़ाता जा रहा है. इन दिनों विभिन्न देशों में कई समझौते हुए हैं जिन में 200 मील की दूरी तक सीमा मानी जाने लगी है.

इस सीमा विस्तार का अनेक देशों ने, जिन के पास समुद्र तट नहीं हैं, विरोध किया है परंतु ऐसे देश छोटेछोटे हैं, इसलिए उन की कोई सुनवाई नहीं होती.

भारत सरकार ने श्रीलंका की तरह बंगला देश से बंगाल की खाड़ी में भी इसी प्रकार सीमाबंदी की बातचीत शुरू की थी, पर बंगला देश इस पर राजी नहीं हुआ. वहां इस समय जो भारत विरोधी वातावरण छा रहा है उस के कारण उस देश से किसी भी मुद्दे पर किसी भी समझौते की आशा रखनी बेकार है. आखिर वह 24 वर्ष पाकिस्तान का भाग रहा है (वह भी अपनी स्वेच्छा से) तो अपनी भारत विरोध की प्रवृत्ति कैसे भूल सकता है!

✦

संसार भर में हर वर्ष जितने व्यक्ति इन्फ्लुएंजा से पीड़ित होते हैं, उतने अन्य किसी बीमारी से नहीं होते. इन्फ्लुएंजा विषाणुजन्य रोग है; और छूत से एक व्यक्ति से दूसरे को लगता है. इस के टीके भी बनाए जाते हैं, पर कठिनाई यह है कि इन्फ्लुएंजा के विषाणु एकदो या दसबीस नहीं, बल्कि सैकड़ों हैं. एक के विरोध में टीका बनता है तो दूसरा विषाणु अपना आक्रमण कर देता है, और चक्र चलता रहता है.

क्योंकि साधारणतः इस बीमारी से मनुष्य मरता कम है, केवल कमजोर हो जाता है, इसलिए इस की कोई विशेष परवा नहीं की जाती. परंतु यदि इस बीमारी के कारण उत्पन्न कमजोरी, काम से गैरहाजिरी और कष्ट का अनुमान लगाया जाए तो यह अन्य किसी भी घातक रोग से कम नहीं बैठेगा.

अमरीका में इस वर्ष के अंत तक एक भीषण किस्म के फ्लू—'सूअर (स्वाइन) फ्लू' के व्यापक आक्रमण का अंदेशा है. यह उसी प्रकार का फ्लू है जिस ने 1918 में संसार में फैल कर 2 करोड़ व्यक्ति मार डाले थे.

इस रोग से जूझने के लिए अमरीकी सरकार ने 100 करोड़ रुपए का प्रावधान किया है जिस के अंतर्गत प्रत्येक अमरीकी को टीके लगाए जाएंगे.

क्योंकि इन्फ्लुएंजा यदि विश्व के किसी एक देश में आक्रमण करता है तो सुगम यातायात के कारण सारे संसार में बड़ी आसानी से फैल जाता है, भारत सरकार को भी इस विषय में सतर्क रहने की आवश्यकता है ताकि उचित किस्म के टीकों का पहले से ही प्रबंध किया जा सके.

✦

नए केंद्रीय बजट में मीठा सोडा वाटर, कोका कोला, लिम्का इत्यादि पेयों पर उत्पादन शुल्क एक बार फिर बढ़ा दिया गया है. यह 45 पैसे प्रति बोतल बैठता है, जब कि इन पेयों की कुल लागत ही 45 पैसे के लगभग होती है और सिवा पानी के हरेक तत्त्व या माल, जो इस में लगता है, उस पर पहले ही से एक अन्य उत्पादन शुल्क लगा होता है. टैक्स पर टैक्स और टैक्सों के कारण मूल्य वृद्धि का यह एक छोटा सा उदाहरण है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संसार की पहली महिला राष्ट्रपति अर्जेंटीना की श्रीमती इसाबेल पेरोन को अपनी गद्दी छोड़नी पड़ गई है.

श्रीमती पेरोन अपने पति जनरल जुआन पेरोन की मृत्यु पर 1974 में अर्जेंटीना के राष्ट्रपति पद पर आसीन की गई थीं. पर देश में जो अशांति, आर्थिक संकट व विद्रोह था, उस पर वह काबू न पा सकीं और अंत में सेना को हस्तक्षेप करना पड़ा. जब वह देश छोड़ कर बाहर जा रही थीं, तभी उन्हें हवाई अड्डे पर पकड़ लिया गया और राजधानी से दूर एक छोटे से गांव में नजरबंद कर दिया गया है.

अंतर्राष्ट्रीय महिला वर्ष के अंत और अंतर्राष्ट्रीय महिला दशक के प्रारंभ में ही इस घटना से महिला समर्थक क्षेत्रों में निराशा होना स्वाभाविक है.

✦

पिछले महीने केरल में भारी मात्रा में अति विस्फोटक पदार्थ डायनामाइट पकड़ा गया. यह पुलिस को एक बिजलीघर में हुए विस्फोट की जांचपड़ताल करते हुए हाथ लगा.

केरल विधान सभा में यह सूचना देते हुए केरल गृह मंत्री श्री करुणाकरन ने यह भी बतलाया कि राज्य में नक्सलपंथियों की सरगरमियां फिर शुरू हो गई हैं. परंतु पुलिस पूरी तरह उन का पीछा कर रही है. उन्होंने यह भी कहा कि इस प्रकार की गतिविधियों को केवल पुलिस द्वारा ही नहीं नियंत्रित किया जा सकता, इस काम में जनता का सहयोग अति आवश्यक है.

इस से पहले गुजरात राज्य में बड़ौदा शहर में भी डायनामाइट मिला था, जिस के सिलसिले में कहा गया कि यह सब एक षडयंत्र का हिस्सा है, जिस का विस्तार अनेक राज्यों में होने की आशंका है. आजकल यह मामला केंद्रीय गुप्तचर विभाग के सुपुर्द कर दिया गया है.

इतनी अधिक मात्रा में इस अति विस्फोटक पदार्थ का पाया जाना सरकार के लिए वास्तव में चिंता का कारण हो सकता है.

✦

जहां शेर बहादुरी, शक्ति और गौरव का प्रतीक माना जाता है वहां मगरमच्छ दूसरों को हड़प करने, झूठे, फरेबी आंसू बहाने और साधारणतः एक बुरे व्यक्तित्व का प्रतिनिधि समझा जाता है. पर आज भारत में दोनों एक श्रेणी में आ गए हैं. दोनों के इस देश से लुप्त, पूर्णतः समाप्त हो जाने का अंदेशा हो गया है.

शेरों के समाप्त होने के बारे में तो बहुत दिनों से चर्चा है और इस के लिए सरकार की ओर से इन की हत्या पर कड़े प्रतिबंध लगा दिए गए हैं. इन की खाल न बाजार में बेची जा सकती है, न बाहर निर्यात की जा सकती है. पर मगरमच्छ को अभी तक कोई सुरक्षा का आश्वासन नहीं मिला है.

मगरमच्छ को पकड़नेमारने वालों के लिए भी प्रायः वही आकर्षण है, जो शेर के मारने वालों के लिए है. मगरमच्छ की खाल भी बाजार में बड़े ऊंचे भाव बिकती है--लगभग 40 रुपए प्रति इंच यानी पूरे विकसित 8 फुट लंबे मगर के 3500 रुपए और इस का मांस भी खाने में बड़ा स्वादिष्ट माना जाता है.

मगर अपने अंडे सूखी जमीन पर देता है, इसलिए 100 में से लगभग 80 तो अन्य पक्षियों, जानवरों व मनुष्य द्वारा खा लिए जाते हैं. जब अंडे फोड़ कर बच्चे निकलते हैं, तो उन को भी जान बचाना कठिन हो जाता है. इसलिए लगातार देश में मगरों की संख्या कम होती जा रही है.

अब कुछ दिनों से सरकार भी चेत रही है और देश में कई जगह मगर फार्म खोलने का प्रबंध किया जा रहा है. बड़े जलाशयों में मगर के रहने का एक यह फायदा भी है कि मगर केवल वही मछलियां खाता है जो आदमी नहीं खाता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसलिए मानव उपयोगी मशीनों की पैदावार बढ़ जाती है.

✦

भारतीय रिजर्व बैंक ने व्यापारी बैंकों (सरकारी व निजी दोनों) को ग्राहक से वसूल करने की ब्याज दर पर नियंत्रण लगा दिया है. अब ज्यादा से ज्यादा यह 16.5 प्रतिशत वार्षिक हो सकती है.

रिजर्व बैंक का यह कदम उचित है. पिछले दिनों (जैसा इन पंक्तियों में पिछले महीने लिखा गया था) बैंकों ने सब सीमाओं को तोड़ कर 22/24 प्रतिशत तक ब्याज वसूल करना शुरू कर दिया था ताकि वे अधिक मुनाफा कमा सकें, और अपने बेतहाशा व अनुचित दैनिक खर्च को पूरा कर सकें.

वैसे तो यह 16.5 प्रतिशत वार्षिक की दर भी बहुत ज्यादा है, पर भागते भूत की लंगोटी ही सही. इस 4 या 5 प्रतिशत की बचत से भी व्यापारउद्योग की लागत में कुछ कमी आएगी और यदि माल की कीमतें कम भी नहीं हुई तो सरकार को कुछ टैक्स अधिक मिलेगा. इस के अतिरिक्त बैंकों को जो अपना कामधंधा थोड़ा अधिक किफायतशारी से करने के लिए मजबूर होना पड़ेगा, वह अलग.

✦

नए केंद्रीय बजट में एक बात जो स्वागतयोग्य है वह है कि संपत्ति कर के लिए स्वयं मालिक के अपने रिहायशी मकान की बाजार कीमत हर तीसरे वर्ष नहीं जांची जाएगी. जो कीमत मकान का निर्माण पूरा होने पर मान ली गई है वही आगे भी हमेशा मान ली जाएगी--या यदि मकान पहले का बना हुआ है तो उस का जो बाजार भाव 1971-72 में था, वही आगे भी माना जाएगा.

रिहायशी मकानों को हर तीसरे वर्ष सरकार द्वारा मान्यताप्राप्त मूल्यांककों से जंचवाना और उस का बाजार भाव मालूम करना एक बहुत बड़ा झंझट था और टैक्स लेने और देने वालों--दोनों के लिए एक सिरदर्द. वास्तव में तो संपत्ति पर, विशेषतया अचल संपत्ति पर, कर उसी कीमत पर लगना चाहिए जो उस की लागत हो, क्योंकि यदि उस का बाजार भाव बढ़ भी जाता है तो यह निश्चित नहीं है कि उस से आमदनी भी उसी अनुपात से बढ़ जाती है. मकान चाहे रिहायशी हों, या व्यापारिक या औद्योगिक हों, इन की बाजार में कीमत चाहे जो हो, किराया नियंत्रण कानून के अनुसार इन का किराया तो बढ़ता नहीं. आमदनी उतनी ही रहे, टैक्स बढ़ता रहे, इस में कौन सा न्याय है? (वैसे आय कर, संपत्ति कर, उत्तराधिकार व भेंट करों में न्याय बहुत ही कम होता है क्योंकि यह मान लिया गया है कि आय व संपत्ति वाला व्यक्ति समाज-विरोधी तत्त्व है, जब कि सत्य यह है कि समाज चलता ही उन व्यक्तियों के बलबूते पर है जो मेहनत कर के आमदनी करते हैं, संपत्ति जमा करते हैं और सरकार को टैक्स देते हैं.)

✦

कई बरसों से जनता को रिजर्व बैंक व भारत सरकार के गलेसड़े, खराब नोटों से बड़ी परेशानी हो रही थी.

अब रिजर्व बैंक ने कुछ नए मोटे कागज पर नई विधि से नोट छाप कर प्रचलित करने शुरू किए हैं और भारत सरकार ने भी एक रुपए के नोट की जगह एक रुपए का मिश्रित धातु का सिक्का चलाया है.

पर खराब नोटों को बदलने का उचित प्रबंध अभी होना बाकी है. ये नोट केवल रिजर्व बैंक ही बदलता है और इस प्रक्रिया में बहुत देर लगती है. लाचार हो कर जनता को नोटदलालों का सहारा लेना पड़ता है, जो मोटी कमीशन वसूल करते हैं. क्यों न सभी सरकारी बैंकों को यह काम भी सौंप दिया जाए? ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेख : रामप्रियाशरण सिंह 'रत्नेश'

पुस्तक ज्ञान

आदिकाल से ले कर आधुनिक युग तक—इतिहास, कला, संस्कृति, विज्ञान के विकास की कहानी अपने पन्नों में समेटे हुए ये पुस्तकें आज कितनी उपयोगी बन गई हैं...

जब तक मनुष्य बर्बर या असभ्य बना रहा, तब तक उस के पास अपनी भावना या अनुभूत ज्ञान को, दूसरों या अपनी भावी पीढ़ियों के लिए, स्थायी रूप से संजो कर रखने का कोई साधन नहीं था. पर जब उस की बढ़ती हुई चेतना ने लेखनकला का आविष्कार किया तो वह अपने अनुभवजनित ज्ञान को, यथासंभव स्थायी बनाने के लिए, भोजपत्र या तालपत्र के ग्रंथों में उतारने लगा.

पहलेपहल अपने ज्ञान को उत्तराधिकारियों पर उतारने का प्रयत्न सप्तसिंधु के आर्यों ने किया. प्रसिद्ध मनीषी मैक्समूलर के अनुसार : "आर्य लोग वे थे, जिन्होंने सब से पहले खेती करने की विधि खोजी थी. खेती ने ही मनुष्य को खानाबदोश का जीवन छोड़ कर एक जगह टिक कर रहने की प्रेरणा दी थी. इस से बढ़ईगीरी, लोहारी आदि विभिन्न कृषि सहायक व्यवसायों का विकास हुआ. इसी लिए कृषक समुदाय श्रेष्ठ माना गया और वह आर्य कहलाया.

"जब तक आर्यों में वर्णभेद की प्रथा का जन्म नहीं हुआ था, तब तक आर्य चिंतक या ऋषि अपने खेतों में स्वयं हल चलाते थे. वे युद्धों में लड़ते थे और अपनी अच्छी फसल तथा युद्धों में विजय के लिए मेघ, वरुण, अग्नि आदि प्राकृतिक दिव्य शक्तियों की स्तुतियां या ऋचाएं रचते थे. उन्हीं ऋचाओं से ऋग्वेद का आरंभ हुआ था. पर ये आरंभिक ऋषि न ब्राह्मण थे, न क्षत्रिय और न वैश्य ही. वे केवल आर्य थे."

ऐसी अवस्था चिरस्थायी नहीं रह सकी. स्थिति के अनुसार, पहले तो समाज ब्राह्मण, क्षत्रिय आदि चार कर्मजात वर्णों में विभक्त हो गया और बाद में जन्मजात वर्णों में. ऐसी अवस्था में ऋग्वेद का निर्माण सदियों में तीनों प्रकार के ऋषियों द्वारा हुआ—कुछ अवर्ण आर्य ऋषियों द्वारा, कुछ कर्मजात ब्राह्मण ऋषियों द्वारा और कुछ जन्मजात ब्राह्मण ऋषियों द्वारा. समझा जाता है कि ऋग्वेद के प्रथम और दशम मंडल जन्मजात ब्राह्मणों द्वारा बाद में रचे गए. इसी दशम मंडल में पुरुष सूक्त है, जिस में विराट पुरुष के विभिन्न अंगों से वर्णों की उत्पत्ति अलगअलग बतलाई गई है. ब्राह्मण सब से श्रेष्ठ और शूद्र निकृष्ट माने गए. इस प्रकार संसार की सब से प्राचीन पुस्तक ऋग्वेद का निर्माण हुआ.

'वेद' शब्द विद् धातु से बना है, जिस का अर्थ है—जानना या ज्ञान. इस वेद या ज्ञान को बहुत दिनों तक आर्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऋषि अपने वंशधरों और शिष्यों को मौखिक रूप से देते रहे और वे सुन कर उसे धारण करते रहे, इसलिए वेद का नाम श्रुति भी पड़ गया था. पर बाद में वेद को लिख कर पुस्तक का रूप दे दिया गया और फिर उसी वेद से ले मिला कर तीन और वेद रचे गए.

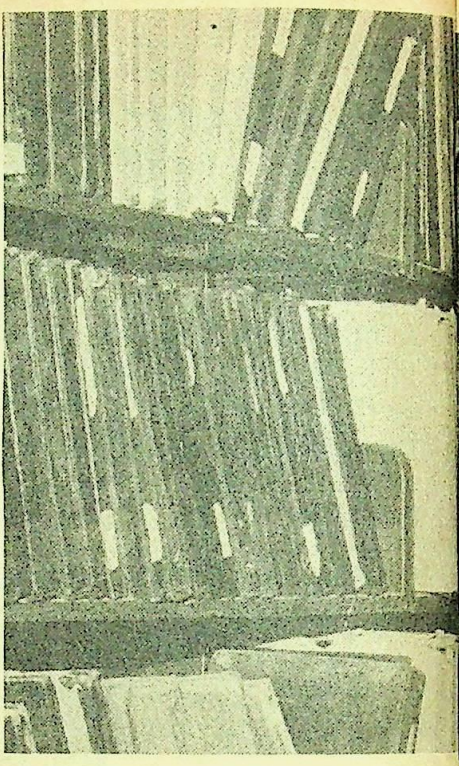

धर्मग्रंथ ब्राह्मणों की बपौती

जैसेजैसे लेखनकला का विकास होता गया, वैसेवैसे और पुस्तकों की रचना भी होती चली गई. उन पर मानव का अनुभूत ज्ञान उतरता चला गया. ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद आदि विभिन्न प्रकार की पुस्तकों की बौद्ध काल से पहले तक रचना होती रही. पर इन पुस्तकों की रचना विशेषकर धर्माध्यक्ष वर्ग द्वारा और उसी के लिए हुई. अतः जनसाधारण के लिए ये पुस्तकें दुर्लभ बनी रहीं. इन से शूद्र समुदाय तो वैधानिक रूप से वंचित रहा. इस व्यवधान को तोड़ा बौद्ध धर्म ने.

वैदिक ब्राह्मणवाद के वर्णभेद की विषमता को बौद्ध धर्म ने नहीं माना. उस ने समाज में समता की स्थापना की और श्रेष्ठता का मानदंड सदाचार को बतलाया. उस ने मध्यम मार्ग को और वर्ग विशेष की वैदिक संस्कृत के बदले, लोक भाषा मागधी को अपनाया. वही मागधी बौद्ध धर्म और मौर्य साम्राज्य के सहारे बढ़ती गई. अन्य लोक भाषाओं के संपर्क से पालि भाषा बन गई. उस में त्रिपिटक, धम्मपद आदि बौद्ध धर्म की अनेक पुस्तकों की रचना होने लगी और उन में जनसाधारण के लिए बौद्ध धर्म का ज्ञान उतरने लगा. इन पुस्तकों के बल पर बौद्ध धर्म देश की सीमा तोड़ कर विदेशों में भी फैलने लगा.

बौद्ध धर्म ने शिक्षण पद्धति को भी बदल दिया. ब्राह्मणकाल में पढ़ाने का काम केवल जन्मजात ब्राह्मण ही कर सकता था. किसी भी दूसरे वर्ण को पढ़ाने का अधिकार नहीं था. इसी लिए उस समय ब्राह्मणों के असंख्य व्यक्तिगत गुरुकुल थे. बौद्ध धर्म ने शिक्षा को भी सार्वजनिक बना दिया. उस ने नालंदा, विक्रमशिला, उदंतपुरी आदि महाविहारों को विश्वविद्यालय बना कर शिक्षा सब के लिए सुलभ कर दी. वहां देशविदेश के विद्यार्थी पढ़ने लगे. पर यह स्थिति अधिक समय तक जारी नहीं रह सकी.

जैसे वृक्षों का रस पी कर जीने वाली अमरलता समतल जमीन पर नहीं जी सकती, वैसे ही परोपजीवी ब्राह्मणवाद बौद्ध धर्म की मानव समता की भूमि पर नहीं जी सकता था. तो मरता क्या न करता, छद्मवेशी ब्राह्मण बौद्ध भिक्षुओं ने बौद्ध धर्म को अपने सिर पर उठा लिया. बुद्ध को ईश्वर का अवतार तक मान लिया और वे पुस्तकों की रचना जनभाषा पालि के बदले पुनः अपनी भाषा संस्कृत में करने लगे और अवसर पा कर अपने सिर से बौद्ध धर्म को ऐसा पटका कि वह चरचूर हो गया.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

112794

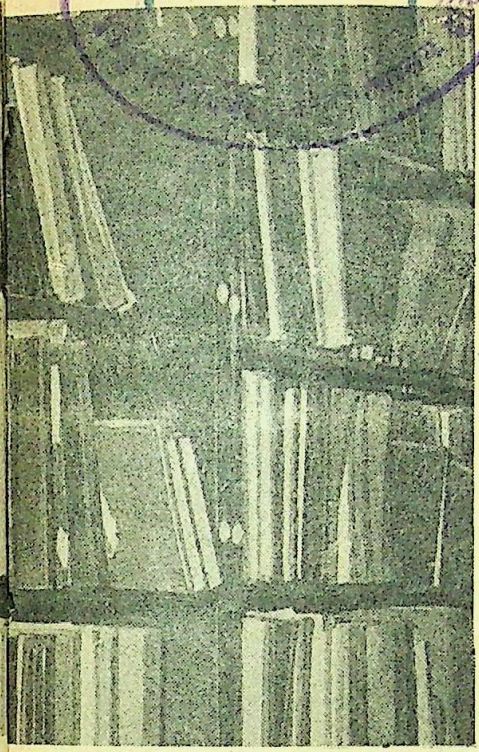

वैदिक ब्राह्मणों की जीविका के आधार अश्वमेध, गोमेध, राजसूय, सर्वजित आदि यज्ञ थे, जिन में असंख्य पशु-पक्षी मारे जाते थे, सर्वोत्तम खाद्य सामग्री का प्रयोग किया जाता था, प्रचुर दान-दक्षिणा दी जाती थी. ब्राह्मण के लिए जंगल में भी मंगल बना रहता था. पर वे घोर हिंसक यज्ञ बौद्ध धर्म के अहिंसक धक्के से समाप्त हो गए. उन का उसी रूप में लौटना कठिन था. इसलिए उस से भी सुलभ जीविका के लिए बौद्धकाल के बाद ब्राह्मणों ने विभिन्न काल्पनिक देवीदेवताओं की मूर्तिपूजा का मार्ग अपनाया.

किसी हद तक मूर्तिपूजा का प्रचलन आर्यों से पूर्व भारत के आदिम निवासियों में था.

वे प्राणियों के अस्तित्व का मूल जननेंद्रिय को मान कर शिश्न अर्थात लिंग की पूजा करते थे. इसलिए वैदिक ब्राह्मण उन्हें शिश्नपूजक कह कर उन की निंदा किया करते थे. लेकिन बौद्ध काल के बाद, यज्ञों के अभाव में, सहज सम्मानित जीविका का कठिन प्रश्न आया तो उन्होंने उसी मूर्तिपूजा को अपना लिया. शाक्त ब्राह्मणों ने कुमारीपूजा या स्त्री जननेंद्रियों की पूजा आरंभ कर दी और शैव ब्राह्मणों ने पुरुष जननेंद्रिय शिवलिंग की.

इसी प्रकार अन्य देवीदेवताओं की और ईश्वर के अनेक अवतारों की कल्पना की गई और उन की तथा ब्राह्मण की अलौकिक महिमा दर्शाने के लिए, वैदिक काल के प्रसिद्ध ऋषिमुनियों के नाम पर, कथानक प्रधान पुराण आदि के बड़ेबड़े पोथे तैयार किए गए. इस प्रकार बुद्ध-पूर्व का वैदिक ब्राह्मणवाद बदल कर बौद्धोत्तर काल में पौराणिक ब्राह्मणवाद बन गया.

समय के साथ बदलतेबदलते पुस्तकों का स्वरूप अब ऐसा हो गया है.

पौराणिक ब्राह्मणों ने, जनसाधारण को चिरकाल तक अपनी ओर आकर्षित करते रहने के लिए जिन ग्रंथों की रचना की उन में से अधिकांश ऐसे थे जिन में पहले के ग्रंथों में वर्णित चरित्रों को बढ़ा-चढ़ा कर पेश किया गया था. ईसवी पूर्व छठी शताब्दी के लगभग किसी व्यास ने कौरवों और पांडवों के युद्ध पर 'जय' नाम की पुस्तक लिखी और वाल्मीकि ने रामकथा पर आधारित रामायण की रचना की. 'जय' छोटा सा ग्रंथ था और रामायण में केवल पांच कांड थे.

उस समय समाज में कौरवों और पांडवों के तथा राम और रावण के युद्ध के संबंध में जो अनुश्रुतियां फैली हुई थीं और जिन्हें सूत तथा चारण परंपरा से जुगाएसंजोए चले आ रहे थे, संभवतः उन्हीं के आधार पर दोनों ने अपने ग्रंथों की रचना की. पर ये रचनाकार न रामकाल के प्रसिद्ध वाल्मीकि थे और न कौरवपांडव युद्धकाल के व्यास ही. उन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के हजारों साल बाद के ये दोनों व्यक्ति और ही थे. शुंग काल से राजपूत काल तक आतेआते रामायण पांच कांड से बढ़ कर सात कांड की हो गई और छोटा सा 'जय' ग्रंथ बढ़ कर महाभारत का विशाल पोथा बन गया.

विद्वानों का अनुमान है कि वाल्मीकि की रामायण में राम को महापुरुष के रूप में चित्रित किया गया था, ईश्वर के अवतार के रूप में नहीं. उस में बाल और उत्तर कांड पीछे से जोड़ कर राम को अवतार बना दिया गया और उन की मूर्ति की पूजा आरंभ कर दी गई. इसी प्रकार स्मृतियां और पुराण भी बनते और बढ़ते चले गए.

कल्पना की उड़ान

श्रमरहित और परोपजीवी ब्राह्मण वर्ग का काम केवल चिंतन था. ऐसा परोपजीवी जन्मजात चिंतक वर्ग संसार में दूसरा नहीं था. इसलिए उस ने कल्पना के आकाश में बेहद दूर तक उड़ने का कमाल दिखलाया. पुराणकारों ने इस दुनिया को बुद्धि की पहुंच से परे उठा कर और विचित्र जादू की दुनिया बना कर ऐसा चित्रित किया, जिस में ब्रह्मा, विष्णु, महेश तथा छोटेबड़े असंख्य देवी-देवता, ब्राह्मण की अपार महिमा का बखान करते हुए, दिनरात धरती पर घूमघूम कर अपनी अलौकिक लीला दिखलाते रहते हैं.

कहीं कोई ब्राह्मण गगनचुंबी विंध्य पर्वत को क्षण भर में धरती पर झुकवा कर प्रणाम करवाता है और लहराते समुद्र को अपने चुल्लू में उठा कर पी जाता है तो कहीं वह विष्णु के कलेजे पर भी लात मार देता है और वह उस के पैर पकड़ कर उस की बड़ाई का बखान करने लगते हैं. इन्हीं देवीदेवताओं की मूर्तियों के दर्शन कर के और उन का नाम लेने मात्र से मनुष्य के सातसात जन्मों के पाप धुल जाते हैं, सातसात पुरखे तर जाते हैं और दुराचारी होने पर भी वह अनायास सब पापों से मुक्त हो जाता है.

पौराणिक ब्राह्मण धर्म की दुकान में जब पुण्य और मुक्ति के इतने सस्ते सौदे बेहद आसानी से मिलने लगे तो बौद्ध धर्म की महंगी दुकान की ओर कौन झांकता? वहां तो साधना और सदाचार के मार्ग पर चल कर ही मुक्ति मिलती थी. भारत में बौद्ध धर्म के समाप्त हो जाने का एक यह भी प्रबल कारण रहा.

'महंगा रोए एक बार और सस्ता रोए बारबार' की कहावत की तरह ही बौद्ध धर्म से ब्राह्मण धर्म में आई जनता की भी वैसी ही दुर्दशा हुई. देवीदेवताओं के नामस्मरण और उन की मूर्तियों के दर्शनपूजन के बावजूद पापियों का पाप तिल भर भी नहीं घट सका, नीच जरा भी ऊपर नहीं उठ सके. तथाकथित भगवान तक भारत की धरती पर बार-बार आए, पर वह भी नीच को ऊंचा नहीं उठा सके. उलटे उच्च भी नीच बनते चले गए. वैदिक काल में जो क्षत्रिय और वैश्य थे, उन के वंशज भी पौराणिक काल में नीच और शूद्र मान लिए गए. कहा गया कि कलियुग में क्षत्रिय और वैश्य नहीं रहे, अब केवल ब्राह्मण और शूद्र ही रह गए हैं.

स्वार्थवश जातियोंउपजातियों का निर्माण

समाज को हजारों जातियों और उपजातियों में बांट कर उस की एकता नष्ट कर दी गई. इसी लिए बौद्ध काल के बाद कोई जोरदार धार्मिक विद्रोह नहीं उठा, सामाजिक क्रांति नहीं आई, हालांकि देश की बहुसंख्यक जनता धर्म के नाम पर शूद्रत्व की भयानक चक्की में बुरी तरह पिसती चली आ रही थी. धर्म-शास्त्रों की नजरों में जब राजपूत, बढ़ई, नाई, ग्वाले, कुम्हार, बनिए, कायस्थ, माली, कुर्मी आदि बीच के अब्राह्मण भी शूद्र हैं तो इन से निचली सैकड़ों जातियां एवं हरिजन तो बहुत ही नीच माने जाएंगे. उपर्युक्त जातियों की अनेक उप-जातियां क्षत्रियों और वैश्यों से ही बनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं. फिर हिंदुओं में ऐसी कौनकौन जातियां बची हैं जो शास्त्रों की नजर में क्षत्रिय या वैश्य हैं?

सभी अब्राह्मणों के शूद्र समझे जाने के कारण, राजपूत काल तक वैदिक संस्कृत और लौकिक संस्कृत में जितनी भी पुस्तकों की रचना हुई उन के पढ़ने की वैधानिक अधिकारी कोई भी अब्राह्मण जाति नहीं रही. इसलिए सारा का सारा संस्कृत साहित्य वर्गिक साहित्य बन कर रह गया और उस में केवल एक ही वर्ग की भावनाएं उतारी गईं. यही कारण था कि राजपूत काल तक पुस्तकों की ज्ञान-गंगा, आकाश गंगा बन सर्वसाधारण के लिए दुर्लभ रही. उसे धरती पर उतारा विदेशियों ने, विधर्मियों ने.

ब्राह्मणों और राजाओं की साठगांठ

गुप्त काल से राजपूत काल तक जैसे-जैसे पौराणिक ब्राह्मणवाद का रंग जमता गया, वैसे ही वैसे राजामहाराजा प्रजा की कमाई लूट कर जहां एक ओर अपने ऐशोआराम के लिए रंगमहल और शीश-महल आदि बनवाते रहे, वहां दूसरी ओर परलोक या परजन्म में मौज करते रहने तथा ब्राह्मणों की सहज सम्मानित जीविका के लिए बड़ेबड़े मठमंदिरों का निर्माण भी करते और उन में अपार धनदौलत भरते रहे. इसलिए राजपूत काल के अंत तक धीरेधीरे भारत सारी धनदौलत सिमट कर केवल दो जगहों में केंद्रित हो गई—एक राजाओं और सामंतों के महलों में और उस से भी ज्यादा ब्राह्मणों के मठोंमंदिरों में.

इसी लिए महमूद गजनवी ने मठों-मंदिरों को लूटने की परंपरा चलाई और मुहम्मद गोरी ने राजाओं और सामंतों को लूटने की. इस से कुछ ही अरसे में सारा मुरदा भारत आसानी से मुसलमानों के हाथ में चला गया. पौराणिक संस्कृति ने तलवार थामने के काबिल न ब्राह्मण समुदाय को रखा और न विशाल अब्राह्मण या शूद्र समुदाय को ही. थोड़े से राजपूत थे, जिन का उद्भव विभिन्न वंशों से हुआ था और वंश की दरार अभी भर नहीं पाई थी. इसलिए सब की अपनी डफली, अपना राग था. ऐसी अवस्था में जो होना था वह हो कर रहा. पर मुसलमानों के हमले से इतना अवश्य हुआ कि पुराणकारों के जादू का कुहासा फट गया और ठोस धरती सामने आ गई. तो भी यह कहा गया कि घोर कलियुग में देवीदेवता धरती छोड़ कर भाग जाते हैं.

मुसलमानों ने हिंदुओं पर चाहे जो भी अत्याचार किए हों, पर उतना अत्याचार उन्होंने भी नहीं किया जितना कि एक विशाल हिंदू समुदाय को मानवता के मूल आधार ज्ञान से वंचित रख कर हिंदू धर्माध्यक्षों ने किया. महमूद गजनवी के साथ भारत में आने वाला प्रसिद्ध इतिहासकार अलबेरूनी लिखता है: "ब्राह्मण अपने अधिकारों की रक्षा के लिए इतने व्याकुल हैं और जातिभेद का ऐसा द्वेषभाव फैला रहे हैं कि वैश्यों और शूद्रों को वेद-पाठ करते देख कर ब्राह्मण उन पर तलवार ले कर टूट पड़ते हैं और उन्हें राजकचहरी में उपस्थित करते हैं, जहां उन की जबान काट ली जाती है." (भारत में इसलाम, पृ. 76)

मुसलमानों ने हिंदुओं के पढ़नेलिखने पर कभी कोई प्रतिबंध नहीं लगाया. हिंदू काल के पुश्तों से पढ़नेलिखने से वंचित अनेक हिंदू भी, उर्दूफारसी पढ़ कर, मुसलिम बादशाह के कर्मचारी बने. छत्रपति शिवाजी के पिता भी इसी प्रकार के एक उच्च पदाधिकारी थे. यद्यपि वह

पुस्तकें

पुस्तकें वे प्रकाश स्तंभ हैं जो समय के विशाल समुद्र में खड़े किए गए हैं.

—विपिल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राचीन क्षत्रिय वंश के थे, लेकिन धर्माध्यक्षों ने कलियुग में उन्हें भी शूद्र ही मान लिया था और जब शिवाजी ने अपना राजतिलक वैदिक रीति से कराना चाहा तो उन के पुरोहितों ने उन्हें शूद्र कह कर काफी शोर मचाया. पर हिंदुओं पर इसलाम का असर कम करने के लिए मुसलिम काल में ही भक्ति साहित्य और रीति साहित्य की काफी पुस्तकें जनभाषाओं में रची गईं.

अंगरेजी साम्राज्य की देन

मुसलमान भारत में आए थे अरब, ईरान, इराक इत्यादि गैरउपजाऊ मुल्कों से. पर जब भारत की केंदित अपार संपत्ति उन के हाथ लगी तो उस संपत्ति ने उन में विलासिता पैदा कर दी और चंद पीढ़ियों में ही उन की नसनाड़ियां ढीली पड़ गईं. इसलाम की बुनियादी खूबियां खो कर, वे राज्य संभालने योग्य नहीं रह सके. दौलत प्रायः ऐयाशी पैदा कर के मनुष्य को कमजोर बना देती है.

भारत से अपार दौलत ले जाने वाले महमूद गजनवी के वंशजों की यही दशा हुई थी और गौर वंश वालों ने उन्हें दबोच लिया था. भारतीय मुसलमानों की भी यही दशा हुई. इन्हें अंगरेजों ने आ दबोचा. हिंदू अपनी पुरानी बेढंगी रफ्तार से मुंह ताकते रह गए. अंगरेज आए थे यहां व्यापार करने और सुविधा पा कर राजा बन बैठे.

अगर सच कहना गुनाह नहीं है तो बेशक यह कहा जा सकता है कि अंगरेजों ने भी चाहे हिंदुस्तानियों को कुछ भी नुकसान पहुंचाया हो, और ऐसा दूध का धुला कौन सा देश है जो दूसरे शासित देश का कभी नुकसान न करे, पर सब मिला कर अंगरेजी साम्राज्य सामान्य जनता के लिए अभूतपूर्व वरदान बन कर ही आया. जैसी सुविधा, सुरक्षा और शांति उसे अंगरेज काल में मिली वैसी पहले किसी काल में नहीं मिली थी. हिंदू समाज में जो भी परिवर्तन आया, वह अंगरेज काल की ही देन है.

अंगरेजी राज्य के माध्यम से जब जाग्रत यूरोप के विकसित ज्ञानविज्ञान का अनुपम प्रकाश भारत पर भी पड़ने लगा तो उस प्राणदायक प्रकाश से भारत का हर क्षेत्र फूल सा खिलने लगा. चिर-उपेक्षित जनभाषाएं हिंदी, बंगला, मराठी, गुजराती आदि भी बड़ी तेजी से विकसित होने लगीं. इन के विकास में ईसाई मिशनरियों का काफी हाथ रहा. मशीनी कागज और छापेखाने आदि की सुलभता के कारण सभी विषयों की पुस्तकें सभी भाषाओं में छपने लगीं. सभी तरह के चिंतक और विद्वान अपना अनुभूत मौलिक ज्ञान पुस्तकों पर उतारने लगे. ज्ञान-विज्ञान की गंगा पुस्तकों के पन्नों पर लहराने लगी. प्राचीन काल की विशिष्ट वर्ग में अटकी हुई आकाश गंगा, सर्वसाधारण के अवगाहन के लिए, उतर कर धरती पर चली आई.

धर्म ही प्रधान

जब तक यूरोप में जनजागरण नहीं आया था तब तक संसार की सारी पुस्तकें प्रायः धर्ममूलक थीं, जैसे वेद, पुराण, कुरान, बाइबिल इत्यादि. सच तो यह है कि धर्माध्यक्षों ने ही पुस्तकों की रचना का आरंभ किया था और यह भी सच है कि धर्मों ने ही अपने समाज को बर्बरता या असभ्यता से सौम्यता या सभ्यता की ओर बहुत आगे बढ़ाया था. इस माने में बेशक धर्मों का बहुत महत्त्व है.

किंतु धर्म अपनी पकड़ की सीमा में बंधे हुए रहे. वे अपने अशाश्वत या परिवर्तनशील सिद्धांतों या मान्यताओं को भी यथावत थामे रहे, जिस से धर्म ही साध्य या प्रधान बन गए और मानव-जीवन साधन एवं गौण बन गया और जमाना धर्मों की पकड़ के दौर से आगे बढ़ता चला गया. इसी लिए प्रायः धर्मों में अनेक भेदप्रभेद या उन के प्रतिधर्म उत्पन्न होते रहे.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिर भी जिन धर्मों के संचालक कर्मजात रहे, वे बहुत कुछ जनता के संपर्क में रहे. उन में उदारता एवं जन-जीवन की सहानुभूति बनी रही. यूरोप के धर्माध्यक्ष इसी प्रकार के थे. इसी लिए वहां अभूतपूर्व जनजागरण आया, जिस ने एकक्षत्र राजतंत्र शासन को बदल कर जनतंत्र अथवा साम्यतंत्र बना दिया.

यह जागरण भी तब आया जब मार्टिन लूथर, कालविन, कार्ल मार्क्स इत्यादि अनेकानेक लोकचिंतकों ने अपनी पुस्तकों के प्रचार से धर्मचिंतकों के शिकंजे काफी ढीले कर दिए और यूरोप सभ्यता के दौर में बड़ी तेजी से आगे बढ़ गया. उस ने थोड़े समय में ही सारे संसार को अपने अनोखे रंग में रंग दिया. इस से पिछले 150 वर्षों में संसार का जैसा नवनिर्माण हुआ, वैसा उस से पहले हजारों वर्षों में भी नहीं हुआ था. यूरोपीय जन-जागरण ने पुस्तकों के निर्माण की दिशा बदल दी.

यूरोपीय विद्वानों की देन

धार्मिक पुस्तकें लोककल्याण की अपेक्षा काल्पनिक परलोक की दृष्टि से अधिक लिखी गई थीं. पर अब उस काल्पनिक परलोक से अधिक प्रत्यक्ष और वर्तमान लोकजीवन को महत्त्व दिया गया और संसार के सभी विषयों एवं सभी भाषाओं के विद्वान चिंतक अपने अनुभव-जनित ज्ञानविज्ञान को, अपनेअपने ढंग से, अखंड जनजीवन के कल्याण के लिए पुस्तकों और पत्रपत्रिकाओं के पन्नों पर उतारने लगे. इस दिशा में संसार निस्संदेह यूरोप का हमेशा ऋणी रहेगा.

यूरोपीय विद्वानों ने जहां पुरातात्त्विक खुदाइयों द्वारा नालंदा, वैशाली आदि अनेकानेक भग्नावशेषों का पता लगाया, वहां अनेकानेक प्राचीन लुप्त ग्रंथों का भी पुनरुद्धार किया. बौद्ध साहित्य भारत से गायब हो चुका था. आज से सौ सवा सौ वर्ष पूर्व की भारतीय जनता बुद्ध और बौद्ध धर्म को भूल चुकी थी. उन्हें पुनः प्रकाश में लाने का श्रेय यूरोपीय विद्वानों को है. कहा जाता है कि पौराणिक धर्माध्यक्षों ने वेदों तक को भुला दिया था, जिन का उद्धार जरमनी के संस्कृतज्ञ विद्वानों ने किया.

जिन ग्रंथों के पढ़नेसुनने पर हिंदुओं के राज में अब्राह्मणों या शूद्रों के कानों में सीसा पिघला कर डाल दिया जाता या उन की जीभ काट ली जाती थी, उन्हें भी यूरोपीय विद्वानों ने अंगरेजी या अन्य भाषाओं में अनूदित कर के सर्वसाधारण के लिए सुलभ बना दिया. मैकाले को व्यर्थ ही बदनाम किया जाता है कि उस ने भारत में अंगरेजी फैला कर भारतीयों का बहुत बड़ा अहित किया. किंतु मैकाले के समय में संस्कृत, फारसी, उर्दू इत्यादि कोई भी भाषा अंगरेजी की तरह इतनी विकसित नहीं थी कि अपने पारिभाषिक शब्दों से आधुनिक ज्ञानविज्ञान को संभाल पाती.

"लड़ाईझगड़ा किसी से नहीं हुआ. बस, मैं जरा गलती से स्कूल बस में चढ़ गया था."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जितनी आसानी से अंगरेजी असंख्य भारतीय जनता पर उतरी, उतनी आसानी से एक वर्ग की भाषा संस्कृत नहीं उतर सकती थी. आज भी इतनी सुविधा पाने के बावजूद वह बहुत ही कम उतर रही है. अंगरेजी नहीं आती तो डा. अंबेडकर, जगजीवनराम जैसे व्यक्ति देखने को न मिलते. अतः मैकाले तथा अन्य यूरोपीय शासकों और चिंतकों ने भारत के विशाल जनसमुदाय को अंगरेजी के माध्यम से देशी मानसिक दासता से बहुत कुछ मुक्त करवाया और उन्हें शिक्षित कर भारत का बहुत बड़ा कल्याण किया. आज उन्हीं की कृपा से सभी भाषाओं की पुस्तकों में ज्ञानविज्ञान की सरलसुलभ गंगा लहरा रही है.

पुस्तकों में अजेय शक्ति

ऐसा लिखने का यह अर्थ नहीं है कि अपने धर्म या देश की अवहेलना कर के विदेशियों या विधर्मियों की हिमायत की जाए. लेकिन सचाई और दूसरों के उपकार को मान कर अपनी खामियां दूर की जानी चाहिए क्योंकि ज्वलंत सचाई को झुठलाते हुए किसी का उपकार न मानना भी बहुत बड़ा गुनाह है.

बहरहाल, पुस्तकों में अजेय शक्ति होती है. पुस्तकें जनजीवन की धारा बदल देती हैं वेदों, शास्त्रों और पुराणों ने भारतीय जनजीवन को चिरकाल से अपने अनुकूल बनाए रखा. कुरान ने इसलाम के रंग में रंग कर अनगिनत मनुष्यों की जीवनधारा बदल दी और बाइबिल ने ईसाई धर्म के रंग में रंग कर. कार्ल मार्क्स की पुस्तक 'दास कैपिटल' ने विश्व पर अपना गहरा असर डाला और आधी दुनिया का रूप बदल दिया. आज के हिंदू समाज पर सूर और तुलसी की पुस्तकों की गहरी छाप है.

भगीरथी गंगा अधमों का उद्धार करती है या नहीं, यह ठीक से नहीं कहा जा सकता, क्योंकि उस में डुबकी लगाते हुए भी शूद्र, चोर, बदमाश, हत्यारे, डाकू आदि अधम जीवनपर्यंत ज्यों के त्यों बने रहते हैं, पर पुस्तक रूपी ज्ञान गंगा असंख्य अधमों का उद्धार वर्तमान जीवन में ही कर देती है. पुस्तकों के स्वाध्याय से अनेक दुराचारी सदाचारी बन गए, अनेक मूर्ख विद्वान बन गए. पुस्तक वह पारसमणि है जो जीवित ही कलेवर बदल देती है. इसी लिए कहा गया है कि स्वाध्याय में आलस्य मत करो.

मनुष्य केवल सीमित पाठ्यपुस्तकों के स्वाध्याय से ही विद्वान नहीं बनता, बल्कि इस के लिए विभिन्न पुस्तकों और पत्रपत्रिकाओं के मुक्त स्वाध्याय की भी आवश्यकता होती है. इसी लिए विद्यालयों में पुस्तकालय तथा वाचनालय की आवश्यकता होती है. पर अधिकांश छात्र उन का महत्त्व नहीं समझते. वे पाठ्य पुस्तकों को रट कर अच्छे नंबरों से पास होने का स्वप्न देखने लगते हैं और उन का पास होना भी स्वप्न ही बन कर रह जाता है. अतः अध्यापक का मुख्य कर्तव्य है, छात्रों की सोई हुई जिज्ञासा को जगा कर ज्ञान की पिपासा बढ़ाना उन में मुक्त स्वाध्याय की प्रवृत्ति पैदा कर देना.

किंतु पुस्तकों में अमृत है तो विष भी है. जहां अनेक स्वार्थत्यागी निष्पक्ष चिंतकों ने जनकल्याण के लिए पुस्तकें लिखी हैं, वहां बहुत से स्वार्थियों ने, जनता को अपने वाग्जाल में उलझा कर, उस के शोषण द्वारा अपने स्वार्थसाधन के लिए भी पुस्तकें लिखी हैं. इसलिए अंधविश्वास के हाथों अपनी बुद्धि बेच कर पुस्तकों का स्वाध्याय कभी नहीं करना चाहिए, प्रत्युत सावधान रहते हुए अपनी बुद्धि की कसौटी पर जांच कर उपयोगी पुस्तकों का ही स्वाध्याय करना चाहिए.

बुद्ध ने कहा था कि किसी बात को इसलिए मत मानो कि वह बड़ीबड़ी पुस्तकों में लिखी हुई है, इसलिए भी नहीं कि उसे बहुत से लोग मान रहे हैं, बल्कि तब मानो जब तुम्हारी बुद्धि स्वीकार करे कि यह मेरे और दूसरों के लिए भी उपयोगी है. सदा अपनी प्रज्ञा अर्थात बुद्धि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के प्रदीप से देखते हुए अपने पथ पर चलो. वस्तुतः मुक्त स्वाध्याय से विवेक स्वयं जाग्रत हो जाता है, बुद्धि अपना रास्ता खुद खोज लेती है.

संक्षेप में यह कि आज पुस्तकों के पन्नों में ज्ञानविज्ञान की गंगा, जन कल्याण के लिए, स्वच्छंद प्रवाहित हो रही है. प्राचीन काल से आज तक के विद्वानों ने, सभी प्रकार के ज्ञानविज्ञान पुस्तकों के पन्नों पर उतार कर रख दिए हैं. जो ज्ञानविज्ञान सदियों से गुप्त एवं दुर्लभ थे, जिन्हें काफी खर्च और परिश्रम कर के भी पाना कठिन था, वे भी आज प्रत्यक्ष और सर्वसुलभ बन गए हैं. वे आज थोड़े से खर्च और परिश्रम से पुस्तकों और पत्रपत्रिकाओं द्वारा पाए जा सकते हैं. अनेकानेक ज्ञानविज्ञान की गंगाओं के संगमसंस्थान पुस्तकालयों और वाचनालयों की असीम महिमा का बखान कौन कर सकता है? ●

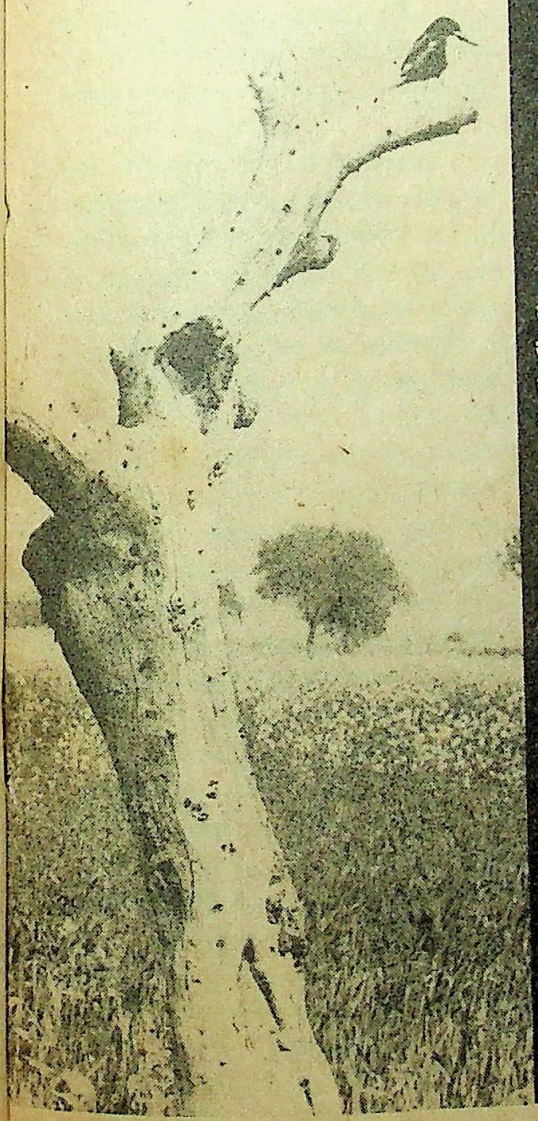

कौन कहता है?

कौन कहता है,
सत्य की सदैव जय होती है?
सत्य
यदि धारण करे न कवच
विवेक, प्रयत्न, पुरुषार्थ का
तो असत्य के हाथों
उस की मौत होती है.

कौन कहता है,
चलते रहने से मंजिल आ जाती है?
गलत दिशा में रखा प्रत्येक कदम,
हमें मंजिल से दूर ले जाता है.

कौन कहता है,
भक्ति से मनुष्य ऊंचे उठता है?
अंधभक्ति मनुष्य की बुद्धि को कैद कर
उसे पशु बनाती है.

—महाराज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिनदहाड़े

एक बार मैं रेलगाड़ी में बैठा सफर कर रहा था. मेरे सामने वाली सीट पर एक लड़की बैठी हुई थी. अगले स्टेशन पर जब गाड़ी रुकी, तो उस लड़की ने अपनेआप को अपाहिज बता कर मुझ से आधा दर्जन केले ला देने का आग्रह किया. मैं ने कोई आपत्ति नहीं की और केले लेने के लिए बाहर जाते हुए उस से कहा कि वह मेरे बैग को देखती रहे.

जब मैं केले ले कर वापस आया तो यह देख कर भौचक्का रह गया कि उस लड़की के साथसाथ मेरा बैग भी गायब था.

—रतनलाल साहू, इलाहाबाद

✦

एक दिन मैं पटना रेलवे स्टेशन की तरफ से गुजर रहा था. फुटपाथ पर रंग-बिरंगी चीजें बेचने वालों के शोर और लोगों की भीड़ को चीरता हुआ मैं तेजी से बढ़ रहा था कि एक धोती बेचने वाले की आवाज सुन कर रुक जाना पड़ा. वह जोरजोर से चिल्ला रहा था, 'पंदरहपंदरह जोड़ा.'

मैं उस की तरफ बढ़ गया. पांचसात आदमी उसे घेरे खड़े थे. मुझे अपनी तरफ आते देख कर उस ने अत्यधिक उत्साह दिखाते हुए कहा, "आइए, बाबूजी. कहिए, क्या सेवा करूं?" मैं ने धोती के सूत को छू कर गौर से देखा. फिर उस की आवाज 'पंदरहपंदरह जोड़ा' को एक क्षण ध्यान से सुना और कह दिया, "एक जोड़ा देना, भाई."

उस ने बड़ी तत्परता से एक जोड़ा अखबार में लपेटा और मेरी ओर बढ़ा दिया. मैं ने पंदरह रुपए उस की ओर बढ़ा दिए. उस ने बड़ीबड़ी आंखों से मेरी ओर देख कर कहा, "सुना नहीं आप ने, बाबूजी? पंदरहपंदरह जोड़ा, यानी तीस रुपए में एक जोड़ा."

इतना सुन कर मेरे तो होश ही गुम हो गए. ऐसी धोती और तीस रुपए जोड़ा! लेकिन अब करता भी क्या? उतने लोगों के बीच अपनी हेठी कैसे कराता. दसदस के तीन नोट उस की ओर बढ़ाए और एक नई सीख याद करने के बाद अपना रास्ता पकड़ा.

—शंकर श्रीवीणा, पटना

✦

राजस्थान के ग्राम मुंडरू में एक साधु द्वारा एक सुनार से पांच हजार रुपए ठग ले जाने की घटना प्रकाश में आई है.

घटना के अनुसार एक साधु सोने के मोतियों की माला ले कर सुनार के पास आया और बोला, "यह माला हमें अपने डेरे में गड़ी हुई मिली है. इसे परख कर देखो."

सुनार ने माला को परखा. वह शुद्ध सोने की पाई गई.

साधु ने सुनार से माला की कीमत पांच हजार रुपए मांगी. माला करीब 21 तोले की थी. सुनार लालच में आ गया. उस ने साधु से सुबह तक इंतजार करने को कहा. साधु अपने डेरे का पता बता कर और सुनार से वहीं आने के लिए कह कर चला गया.

दूसरे दिन सुनार पांच हजार रुपए ले कर साधु के डेरे पर गया. साधु ने रुपए ले कर माला सुनार को सौंप दी. लेकिन यह माला वह नहीं थी जो परखी थी, बल्कि उस की हूबहू नकल थी और पूरी तांबे की थी. सुनार भाग कर साधु के डेरे पर पहुंचा, लेकिन तब तक चिड़िया उड़ चुकी थी.

—राजस्थान पत्रिका, जयपुर

(प्रेषक : वीरसिंह बिदावत, भीलवाड़ा) ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेख • कृष्णचंद्र महंत

स्तुतिकार

अगर हवा का रुख देख कर तुरही बजाने की बजाए समय पर ये सही बात कहते तब भी क्या हमारा इतिहास यही होता?

जब कोई व्यक्तित्व अचानक उभरता है या किसी तरह शक्ति के सोपानों पर चढ़ने लगता है, देश और समाज की आशाभरी दृष्टि उस पर टिक जाती है तो कुछ व्यक्ति कीड़े की तरह उस व्यक्तित्व की जड़ में लगने शुरू हो जाते हैं और ये कीड़े उस की जड़ का सारा रस खींच लेते हैं. ये कीड़े कोई और नहीं, उस व्यक्ति की सफलता से फायदा उठाने वाले उस के प्रशंसक ही हैं.

सोचता हूं, अगर ये चाटुकार न होते, अगर संसार के महान व्यक्तियों की प्रशंसा में इतने गीत न लिखे गए होते, इतनी स्तुतियां न की गई होतीं, इतने बंदनवार न सजाए गए होते तो शायद वे और भी महान होते, शायद वे अपनी शक्तियों का और भी उपयोग करते.

पृथ्वीराज चौहान ने मुहम्मद गौरी को अनेक बार हराया. शक्ति पूजक, स्तुतिकार चंद्रबरदाई उन के पीछे लग गया. वह नवविवाहिता संयोगिता के प्यार में डूबते गए और यही चाटुकार उन के आसपास रह कर, रसभरे गीत लिखने लगा. उन्हें कुछ सोचने का मौका ही नहीं दिया, उन्होंने जो कुछ किया, इस चाटुकार ने उस की भूरिभूरि प्रशंसा की. रणभेरी बज रही हो, राजा अपने प्रेयसी के साथ रासरंग में डूबा हो और उस के प्रशंसक ऐसा वातावरण तैयार कर रहे हों कि रंग और गहराता जाए तो भला देश का क्या होगा?

तरायन की दूसरी लड़ाई में पृथ्वीराज हार गया. उस की आँखें निकाल ली गईं, वह कैदी बना कर देश से बाहर ले जाया गया. देश पर विदेशियों का आधिपत्य हो गया. काश, चंद्रबरदाई न होते, 'पृथ्वीराज रासौ' न लिखा गया होता, फलस्वरूप तरायन की दूसरी लड़ाई हारी न गई होती. और तब शायद पिछले आठ सौ वर्षों का इतिहास ही कुछ दूसरा होता.

रूस का शहंशाह जार, इतनी बुरी तरह दरबारी चाटुकारों से घिर गया था कि उसे हर तरफ खुशी ही खुशी नजर आती थी. जब लोग विरोधी नारे लगाते थे तो जार के चाटुकार कहते थे कि ये लोग हुजूर की जयजयकार कर रहे हैं. जार के महल पर जनता ने हमला कर दिया, जारशाही समाप्त हो गई, लेकिन जार के लिए किसी की आंखों में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आंसू तक नहीं आया. क्या और इतना बुरा था? ये चाटुकार, ये स्तुतिकार, उसे घेर कर न बैठ होते, तब उस का आचरण कैसा होता, इसे कौन जाने?

हर व्यक्ति के भीतर हीन भावना की एक ग्रंथि होती है. वह इसी ग्रंथि के कारण औरों से श्रेष्ठ बनने की, दिखने की और कहे जाने की अपेक्षा करता रहता है. अकसर सफल व्यक्ति, बड़े संघर्षों से गुजरे हुए लोग होते हैं. जब उन की अवस्था सुख भोगने की होती है तो वे उन सुखों से वंचित हो गए होते हैं. जीवन का बेहतरीन समय दुखों, प्रवंचनाओं और संघर्षों में गुजार देने के बाद जब कोई व्यक्ति सफल हो कर, परीक्षा की भट्ठी से तमतमाते सोने की तरह बाहर निकलता है तो सुखों की घड़ियों को खो देने की एक कसक भी उस के दिल के किसी कोने में पड़ी उसे सालती रहती है.

हीन भावना की वह अमरबेल, जो उस के बाल्यकाल में या संघर्षकाल में

उसे आच्छादित कर चुकी थी, अब भी उस का पीछा नहीं छोड़ती. और इसी चोट को जब चाटुकार, प्रशंसक या स्तुतिकार सहलाता है तो सफलता की छत पर खड़े महान व्यक्ति को राहत मिलती है. और यही वजह है कि बड़े लोग ज्यादातर खुशामदपसंद होते हैं और दूसरा तबका जो स्तुति करता है, वह भी अपनी हीन भावना के तुष्टिकरण के लिए ही ऐसा करता है. जो वह स्वयं न बन सका, जो वह स्वयं न प्राप्त कर सका, उस के लिए चटखारेदार शब्दों में बखान कर के ही तुष्ट हो लेता है.

मनोवैज्ञानिक सत्य

हम इस मनोवैज्ञानिक सत्य को उदाहरणों की कसौटी पर कस सकते हैं. महापुरुष राम का बाल्य और शैशव काल बड़ा कष्टमय रहा. उन्हें ताड़का और मारीच वध से ले कर, चौदह वर्ष तक बनवास और रावण से युद्ध तक करने पड़े. जब लोग चैन की नींद सोते थे, वे कठिन विपत्ति में विचरे. बाद में वे चक्रवर्ती हुए तब वाल्मीकि ने उन के जीवन की प्रशंसा भरी कथा लिखी. अवश्य उन्हें खुशी हुई होगी. श्रीकृष्ण को वृंदावन में अहीरों के बीच रह कर कठिन जीवन जीना पड़ा. चर्चिल, वाशिंगटन, लेनिन, माओ, गांधी, नेहरू पंक्ति की पंक्ति महापुरुषों की है, जो अपने शैशव काल में दुखों और संघर्षों के बीच जिए. यही अभाव बड़ेबड़े स्तुतिकारों के जीवन में भी रहा है.

किसी बड़े कवि, किसी बड़े लेखक के जीवन में झांक कर देखा जाए तो उस की कोई न कोई रग दुखती मिलेगी. तुलसीदास गरीबी से त्रस्त और पत्नी से तिरस्कृत होने के बाद कवि बने. सूरदास आंख के अंधे थे. कबीर, मीरा, गालिब, मीर, मिल्टन, गोर्की सब जीवन में ठोकरें खाने के बाद कवि बने थे. कवियों के संसार में हर कोई वियोगी रहा है. जिन्हें आर्थिक दुख नहीं था, वे आदर्शवाद के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पीछे दीवाने थे.

जिस की चोट सहलाई गई और जिस ने सहलाया वे दोनों जमाने के मारे हुए लोग थे, लेकिन इस चोट सहलाए जाने की प्रक्रिया ने समाज का बहुत बड़ा अहित किया है.

अतिरंजित प्रशंसा

एक बड़ा अहित तो यह हुआ है कि इन स्तुतिकारों की वजह से ही किसी भी इतिहास पुरुष का सही चित्र समाज के सामने नहीं आ पाया है. हर राजा, संत, गुणी और शूर का इतिहास उस के प्रशंसकों द्वारा रचित विरदावली में ही मिलता है. दरबार में पलने वाले इतिहास लेखक, राज्याश्रय पर जीने वाले कवि, भला अतिरंजित प्रशंसा के अलावा और क्या लिखेंगे—अपने अन्नदाता के विषय में. अगर राजा क्रोधी है तो वह स्वाभिमानी लिखा गया, अगर कायर है तो नम्र लिखा गया.

क्या रामायण से राम का सही चरित्र झलकेगा, जब कि रामायणकार दोनों कवि वाल्मीकि और तुलसीदास राम की भक्ति में डूबे हुए थे. तुजके बाबरी, और बाबरनामा को आधार मान कर बाबर का चरित्रचित्रण करने से वही बाबर सामने आया है जैसा उस के प्रशंसकों ने उसे चित्रित किया है. शिवाजी के आस-पास भूषण छाया की तरह लगा रहा. और शिवाजी की प्रशंसा में अतिशयोक्ति-पूर्ण वर्णन करता रहा. भूषण ने तो यहां तक लिख डाला है कि शिवाजी के डर से दिल्ली के लोगों के दरवाजे कभीकभी ही खुलते थे.

भूषण तो कवि ठहरे, लेकिन इतिहास लिखने वाले लोग भी चापलूस होते हैं. वे झूठी बातें इतनी सफाई से लिख डालते हैं कि लोग उन्हें सही मान लेते हैं. पुराने लोगों के विषय में उस जमाने में लिखी गई किताबों और टिप्पणियों तथा शिला-लेखों से ही जानकारी मिलती है. जिस राजा ने शिलालेख लिखवाए होंगे या

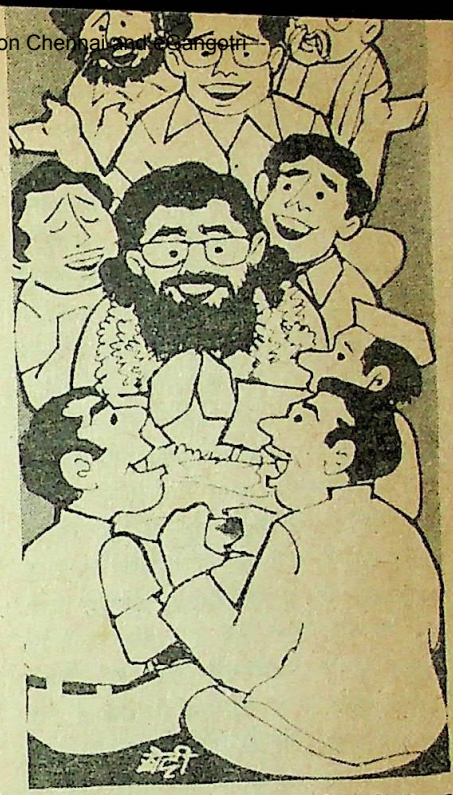

जिस कवि या लेखक ने किताबें लिखी होंगी, क्या उस ने उस राजा के विरुद्ध भी कुछ लिखने की हिम्मत की होगी, जिस के अन्न पर वह पलता होगा. उस की तलवार का डर तो उस के सिर पर हर समय मंडराता होगा. राजा की तारीफ उस के शत्रुओं की बुराई, यही दो विषय थे, जिस पर दरबारी कवि और इतिहास लेखक की जबान और लेखनी चलती थी. विक्रमादित्य के दरबार में कालिदास थे, अकबर के दरबार में नौ-रत्न दरबारी थे. गौतम बुद्ध के अनुयायियों ने जातक कथा लिख कर उन की महानता के गुण गाए.

आज भी इतिहास बिगाड़ने वाले इन चाटुकारों की कमी नहीं है. बीसवीं शताब्दी में लेनिन एक महापुरुष हो गए हैं. उन के विचारों ने क्रांति को प्रभावित किया था. पर क्रांति रूस की तत्कालीन परिस्थितियों के कारण ही हुई. जार के चापलूसों ने घेर रखा था. प्रजा का शोषण हो रहा था. तंग आ कर प्रजा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ने बगावत कर दी. जब रूस में क्रांति हो रही थी, लेनिन देश से निर्वासित थे. ज़ार के पतन के बाद वह रूस पहुंचे और बाद में वह सत्ता में आ गए. वे हजारों लोग दब गए, जो रूसी क्रांति में बोलशेविकों के साथ कटेमरे थे, जिन्होंने कुरबानियां दी थीं. रूसी क्रांति में सारी जनता ने भाग लिया था, उन में जनतंत्रवादी भी थे और राष्ट्रवादी भी, लेकिन जार के हटते ही बोलशेविकों ने सत्ता पर कब्जा कर लिया. आज रूसी साहित्य लेनिन की तारीफों से भरा रहता है.

स्तालिन जब तक जीवित था, उस की तारीफ में बहुत कुछ लिखा गया. अनेक शहरों का नाम स्तालिन के नाम पर रखा गया. किसी की हिम्मत नहीं थी कि वह स्तालिन का विरोध करे. लेकिन उस के मरते ही उस का इतना विरोध हुआ कि सार्वजनिक स्थानों से हर उस चीज को हटा दिया गया जो स्तालिन की याद दिलाती थी. उस की बुराई में भी उतना ही लिखा गया, जितना कभी प्रशंसा में लिखा गया था. बाद में आने वाली पीढ़ियां लेनिन, स्तालिन और रूसी क्रांति का कैसे मूल्यांकन करेंगी जब कि स्तुतिकारों ने बदलते समय के अनुसार, घटनाओं, परिस्थितियों और व्यक्तियों का चित्रण किया है?

स्तुतिकारों का प्रभाव

स्तुतिकारों की ही वजह से लोग क्रूर, ज़ालिम बने हैं. सफलता पर कब्जा करने वाला हर व्यक्ति योग्य और अच्छा हो, ऐसा नहीं होता है. अंगरेजी की एक उक्ति है 'कुछ लोग पैदाइशी महान होते हैं, कुछ लोग महानता अर्जित करते हैं और कुछ पर महानता थोप दी जाती है.' परिस्थितियोंवश सत्ता या सम्मान के ऊंचे पद पर पहुंचने वाला व्यक्ति अगर बुरा आदमी हुआ तो स्तुतिकार उस के हर जुल्म को न्यायसंगत करार देने लगते हैं. उस व्यक्ति को स्तुतिकारों की बातें ही जनता की बातें लगती हैं.

डर और आतंक का वातावरण तैयार कर के हासिल की हुई कुछ क्षणिक सफलताओं का, यही स्तुतिकार बहुत बढ़ाचढ़ा कर वर्णन करते हैं. जुल्म को भी आवश्यकता की संज्ञा दे देते हैं. मुसोलिनी और हिटलर जैसे लोग अपने देश की तत्कालीन परिस्थितियों में सत्तारूढ़ हो गए थे. उन्हें प्रारंभिक सफलताएं भी मिलने लगी थीं, फिर तो उन के हर सहीगलत काम की प्रशंसा की जाने लगी. जितना ही जुल्म बढ़ता गया, प्रशंसकों की जबानें भी उतनी ही तेज होती गईं और अंत में इन लोगों ने अपने देश को विनाश की भट्ठी में झोंक दिया.

सारा साहित्य स्तुतियों पर आधारित

और हमारे देश की तो बात ही निराली है. सारा साहित्य स्तुतियों पर ही टिका है. हनुमान चालीसा, शिव पुराण, विष्णु पुराण, भागवत, बावन पुराण, रामायण, पद्मावत, सूरसागर कितनों का नाम गिनाया जाए. कवि बिहारी ने एक विलासी राजा को खुश करने के लिए बिहारी सतसई लिख डाली. सारा रीतिकालीन साहित्य नाच, गाना, शराब और नारी के नशे में डूबे राजाओं को खुश करने के लिए लिखा गया है. पहले निराकार ब्रह्म की पूजा होती थी. हमारा दर्शन था कि आदमी यज्ञ, तपस्या, स्वाध्याय, मननचिंतन से मोक्ष प्राप्त कर सकता है. बाद में साकार ब्रह्म के पूजन की बात उठी. भक्ति का आधार मान लिया गया—सौ पाप करो पर शाम को भजन कर लो, हनुमान चालीसा पढ़ लो, रामनाम का जप कर लो, सब क्षमा हो जाएगा.

भजन और कीर्तन, भगवान की चापलूसी के अलावा कुछ भी नहीं है. गांवगांव भजनकीर्तन होते हैं, कथा, भागवत होती है. लोग मोक्ष प्राप्त करने के लिए उद्यम नहीं, चापलूसी का सहज रास्ता अपनाते हैं. नतीजा सामने है. बहुत से लोग जो सुबह दो घंटे पूजा करते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं चाहे वे इंजीनियर, मजिस्ट्रेट, जज जो भी हों, जम कर घूस लेते हैं, लोगों का हक मारते हैं. भजन और कीर्तनों का आयोजन तस्कर और डाकू भी करते हैं. चापलूसी करना आसान है.

भक्ति या चापलूसी

इसी भक्ति नामक चापलूसी की प्रवृत्ति ने सारे देश को आलसी भी बना दिया है. गांवगांव में देवीदेवता हैं. लोग अपने सुखों और दुखों का निमित्त उन्हीं को मानते हैं. दुख हुआ तो उस का दोष अपने को न दे कर, किसी देवीदेवता के नाम थोप देते हैं. अभी कुछ ही दिन पहले हैजा और चेचक को देवीदेवताओं का कोप माना जाता था. गांव के गांव हैजा, चेचक, प्लेग जैसी बीमारियों से साफ हो जाते थे, लेकिन लोग आलसी बने, हाथ पर हाथ धरे भजनपूजन किया करते थे. पंडित बैठ कर पाठ बांचा करता था. देहाती पंडितों के पास हर देवीदेवता की स्तुति की किताबें रहती हैं, जिन्हें वह गांव के लोगों को सुना कर अपनी रोजी चलाते हैं.

कालांतर में इसी स्तुतिवाद ने हमें गुलाम तक बना डाला. सोमनाथ का मंदिर लूटा जा रहा था और आम जनता चमत्कार के लिए शंकर की पूजा में व्यस्त थी. लोग अब भी विश्वास करते हैं कि एक अवतार होगा जो पाप को खत्म कर के पुण्य की स्थापना करेगा. हमारी इसी कमजोरी का लाभ उठा कर मध्य एशिया की जंगली कौमों तक ने हम पर शासन किया. शक, हूण, मंगोल, अफगान, मुगल और यहां तक कि गुलाम वंश ने भी काफी समय तक भारत पर राज्य किया.

अंगरेज आए, तो यही चापलूस उन के भक्त बन गए. मुझे अच्छी तरह याद है कि द्वितीय महायुद्ध के समय में ऐसे अनेक शायर और कवि थे जो बरतानिया हुकूमत की शान में कविताएं और नज्में लिखते थे. यूनियन जैक की तारीफ में लिखी गई एक उर्दू नज्म मुझे अब तक याद है. हमारा राष्ट्रीय गान 'जनगण-मन अधिनायक...' अंगरेज राजा की ताजपोशी के समय उस के सम्मान में लिखा गया था. चापलूस लोग अंगरेजों के जमाने में खान बहादुर, सर, राय साहब आदि के खिताब पाते थे. जनगण-मन के लेखक रवींद्रनाथ ठाकुर भी 'सर' बनाए गए. कितने ऐसे चापलूसों को सारी जनता जानती है, जिन्हें अंगरेजों के समय में चापलूसी के नाते ऊंची पदवी और खिताब मिले थे और देश के आजाद होने के बाद उन्होंने अपना चोगा बदल दिया. आजाद भारत में भी वे लोग उच्च पदों तक पहुंचे और सम्मानित हुए.

इन दिनों लोगों को अभिनंदन पत्र भेंट करने का रिवाज सा हो गया है. कुछ लोगों का तो यह व्यवसाय ही बन गया है. अतः अभिनंदन ग्रंथ पाना काफी आसान हो गया है. अभिनंदन ग्रंथों में इतना बढ़ाचढ़ा कर लिखा जाता है कि अभिनंदन प्राप्त व्यक्ति का सही मूल्यांकन मुश्किल हो जाता है. जब कमलापति त्रिपाठी उत्तर प्रदेश के मुख्य मंत्री बने तो कुछ लोगों ने एक कमेटी बना कर बड़ी धूमधाम से उन का जन्म-दिन मनाया. जब सब लोग तारीफों के पुल बांध चुके, खोजखोज कर उन के गुणों का बखान कर चुके तो कमलापति-जी जवाब देने उठे.

अखबारों में छपा हुआ उन का जवाब आज तक याद है. उन्होंने कहा था, "मैं जीवन के पैंसठ वर्ष गुजार चुका, मुझे पता ही नहीं लगा कि मुझ में इतने

चापलूस

ऐसे आदमी पर कभी विश्वास न करो जो प्रशंसा के पुल बांध दे.
—सूक्ति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुण भरे पड़े हैं. अचानक इस छियासठवें जन्मदिन पर मैं लोगों को महान कैसे नजर आने लगा?''

और इस के बाद उन्होंने ऐसे आयोजनों की व्यर्थता पर प्रकाश डाला. कुछ लेखक और पत्रकार ऐसे हैं, जो हर बड़े आदमी से अपना संबंध जोड़ कर उन के जन्मदिन पर पत्रिकाओं में लेख लिखा करते हैं. एक पत्रकार सज्जन तो ऐसे हैं जो हर बड़े आदमी से अपना संबंध जोड़ने की कला में माहिर हैं और हर छोटीबड़ी पत्रिका में उस आदमी से अपना संबंध जोड़ते हुए लेख, लिखा करते हैं. उन की ख्याति इसी प्रकार के लेखन के कारण है. वह इसी कारण मंत्री तक बन चुके हैं.

स्तुतिकार खूंखार

ये खुशामदी और स्तुतिकार बड़े खूंखार भी होते हैं. अगर प्रशंसा में लिख सकते हैं, तो बुराई करने से भी नहीं चूकते. महमूद गजनवी ने अपनी तारीफ लिखने के लिए एक दरबारी कवि को एक शेर पर एक अशर्फी देने का वादा किया था. वादा पूरा करने में कुछ देर हो गई, तो वह शायर बिगड़ कर महमूद की हिजो (बुराई) लिखने लगा.

आज तो खुशामद में ही आमद है. झुंड के झुंड वकील, काले गाउन ओढ़े प्रतिदिन अदालतों की खुशामद किया करते हैं. मी लार्ड, यौर आनर, हुजूर, सरकार, जैसे शब्द बोल कर वे न्यायाधीशों से अपना गलत पक्ष भी मनवा लेते हैं. हनुमान चालीसा पढ़ कर, आरती गा कर, दुर्गापाठ करवा कर लोग मोक्ष प्राप्त कर लेते हैं.

अखबारों में विशिष्ट जनों के जन्मदिन पर, उन की तारीफ में लेख लिख कर लोग ऊपर उठ जाते हैं. जन्मदिन समारोहों का आयोजन करने वाले लोग विधायक और संसद सदस्य बन जाते हैं.

स्वाभिमानी अंगद कहीं का नहीं रहा, उस की कोई गढ़ी नहीं बनी, जब कि राम भक्त हनुमान की गढ़ियां हर जगह हैं, जहां लड्डू और लंगोट चढ़ते रहते हैं. वे लोग महाकवि कहलाए जिन्होंने स्तुति के बल पर महापुरुष को ईश्वर के दरजे तक पहुंचा दिया.

परंतु सत्य तो यह है कि स्तुतिकारों ने अपने को चाहे जितना ऊपर उठा लिया हो, उन्होंने अच्छेभले लोगों को तानाशाह बनाया है, आम जनता के अंदर हीन भावना भरी है. उन्हें निश्चेष्ट बना दिया है, और सच्चा इतिहास लिखने में रुकावटें पैदा की हैं. काश, ये स्तुतिकार न होते, इन्होंने हवा के रुख पर अपनी तुरही न बजाई होती, सही समय पर सही बात कही होती तो समाज का चेहरा ही कुछ दूसरा होता! ●

मेरे लिए...

कुछ संभल जाता, अगर करवट बदल जाती मेरी,
यह मुझे दुश्वार था, उस के लिए मुश्किल न था.
——साकिब लखनवी

✦

रोई शबनम, गुल हंसा, गुंचा खिला मेरे लिए,
जिस से जो कुछ हो सका उस ने किया मेरे लिए.
——उम्मीद अमेठवी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

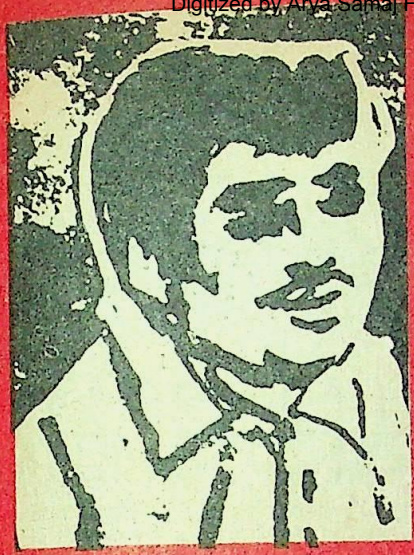

बहुत पूछने पर लड़के ने ज्योतिषी की भविष्यवाणी दोहराई तो सोमेश्वरजी की चिंताजनक हालत का रहस्य मेरी समझ में आ गया...

चिकित्सा

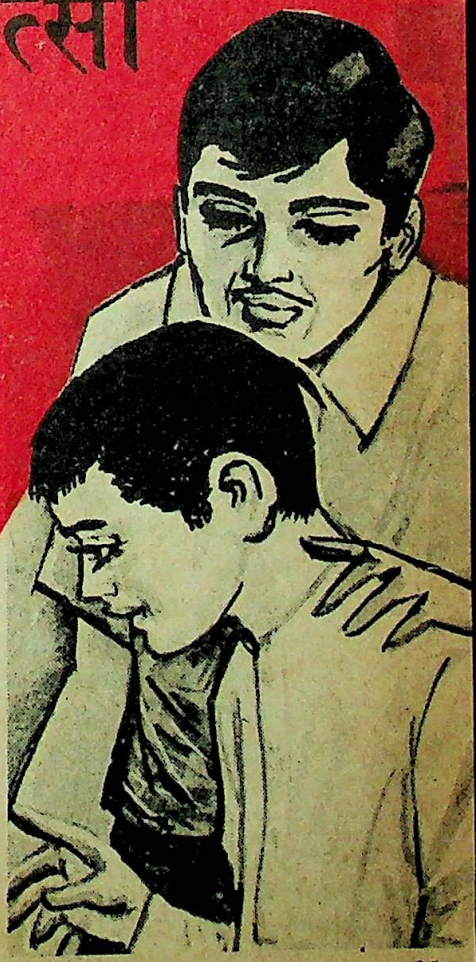

मैं कालिज से आ कर कपड़े भी नहीं उतार पाया था कि पत्नी ने सूचना दी, "सोमेश्वरजी को दिल का दौरा पड़ा है. लगभग घंटा भर पहले एक आदमी सूचना दे गया है."

सोमेश्वरजी मेरे घनिष्ठ मित्र हैं. मेरी और उन की अवस्था में तीस वर्ष का अंतर है. पर इस से हम लोगों की मैत्री में कभी बाधा नहीं पड़ी. व्यवसाय भी हम दोनों का भिन्न है. मैं अध्यापक हूं और वह चिकित्सक. मैं इस नगर में आया, उस के दो मास पश्चात ही मेरा उन से परिचय हो गया था. इस नगर का पानी मेरे अनुकूल नहीं था. मुझे भयानक पेचिश हुई. चिकित्सक उसे ठीक करने में विफल रहे. सभी ने एक ही सलाह दी, 'चाय पियो या प्याज खाओ. तभी यहां का पानी अनुकूल आएगा.' मैं दोनों में से एक भी काम नहीं कर सकता, इसलिए मैं ने यहां से जाने का निर्णय कर लिया.

कहानी • गंगासहाय प्रेमी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तभी किसी ने मुझे सोमेश्वरजी के पास जाने की सलाह दी. सोमेश्वरजी की पहली ही गोली से मुझे फायदा होने लगा. यदि यह कहूं कि मैं इस नगर में सोमेश्वरजी की कृपा से ही हूं तो अतिशयोक्ति नहीं होगी. यदि वह न होते तो मैं यहां से अवश्य चला गया होता.

सोमेश्वरजी से मेरा परिचय घनिष्ठता में बदला और शीघ्र ही घनिष्ठता ने मित्रता का रूप ले लिया. इस बात से लगभग सारा नगर परिचित है कि जब मैं यहां होता हूं तो चार बजे से पांच बजे तक सोमेश्वरजी की दुकान पर अवश्य बैठता हूं. उस समय मेरा घर में मिलना असंभव होता है, अतः वहां से निराश हो कर लोग मुझे सोमेश्वरजी की दुकान पर ही खोजते हैं. इतनी घनिष्ठता होने के कारण सोमेश्वरजी के अस्वस्थ होने की बात से मेरा चिंतित होना स्वाभाविक था. वैसे सोमेश्वरजी का अस्वस्थ होना कोई आश्चर्य की बात नहीं थी. वह सत्तर साल की अवस्था में इतना अधिक परिश्रम करते थे कि उन्हें दिल का दौरा न पड़ना ही विचित्र बात जान पड़ती थी.

मैं ने उलटासीधा खाना खाया और सोमेश्वरजी के घर की ओर चल पड़ा. सोमेश्वरजी दूसरी मंजिल के कमरे में लेटे हुए थे. कमरे के बाहर बहुत से लोग बैठे थे. डाक्टर ने उन के पास लोगों को जाने से मना कर दिया था. दरवाजे के बाहर उन की पत्नी के साथ दोनों पुत्रवधुएं चुपचाप आंसू बहा रही थीं. वातावरण अत्यंत शांत एवं करुण बना हुआ था.

मेरे पहुंचते ही सोमेश्वरजी के बड़े लड़के ने मुझे प्रणाम किया और धीरे से किवाड़ खोल कर मुझे कमरे में ले गया. मैं एक कुरसी पर बैठ गया. मैं सोमेश्वरजी को देख रहा था और सोमेश्वरजी मुझे. डाक्टर ने उन्हें पूरा विश्राम करने की सलाह दी थी. उन्हें बोलने और उठनेबैठने की मनाही थी.

सोमेश्वरजी कुछ कहना चाह रहे थे, पर मैं ने उन्हें ऐसा करने से रोक दिया. सहसा उन की दोनों आंखों से आंसुओं की बूंदें निकल पड़ीं, जो उन के मानसिक ताप की साक्षी थी. मैं ने सोमेश्वरजी के समीप बैठ कर उन्हें समझाया, "आप निराश क्यों होते हैं? आप अवश्य ठीक हो जाएंगे. वैसे भी आप को घबराना नहीं चाहिए. आप अपने सभी उत्तरदायित्व पूरे कर चुके हैं."

मेरी बात का सोमेश्वरजी पर विशेष प्रभाव नहीं हुआ. तभी सूचना मिली कि डाक्टर साहब उन्हें देखने आए हैं. मैं कमरे से बाहर आ गया. डाक्टर साहब मेरे परिचित थे. उन्होंने कमरे में घुसने से पहले मुझे नमस्ते की. मैं कुछ पूछता इस से पहले ही वह सोमेश्वरजी वाले कमरे में घुस गए.

डाक्टर साहब कुछ देर बाद बाहर निकले. उन के चेहरे पर असंतोष के भाव थे. मैं उन्हें भीड़ से एक ओर ले गया. वैद्यजी का बड़ा लड़का भी मेरे साथ था. मैं ने डाक्टर साहब से पूछा, "कहिए, डाक्टर साहब, वैद्यजी के स्वास्थ्य में कुछ सुधार है?"

डाक्टर साहब ने विवशता दिखाते हुए उत्तर दिया, "मैं ने बढ़िया से बढ़िया दवा दी है. दवा अपना काम कर रही है. पर उतना नहीं जितना करना चाहिए."

"दवा पूरा प्रभाव क्यों नहीं कर रही, उन्हें आप की इच्छा के अनुसार लाभ क्यों नहीं हो रहा?" मैं ने उत्सुकता से पूछा.

डाक्टर साहब कुछ देर तक सोचते रहे. उन के चेहरे पर अनिश्चितता की भावना छाई रही. सहसा कुछ निश्चय सा कर के वह कहने लगे, "इन के मन में जीवन के प्रति आशा और उमंग बिलकुल नहीं है. यह समझ बैठे हैं कि इन की मृत्यु निश्चित है. इन के मन में निराशा समाई हुई है. जब तक वह मन से जीवन की अभिलाषा नहीं करेंगे तब तक दवा पूरा लाभ नहीं कर सकती. उन्हें जीवन के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं ने सोमेश्वरजी के विषय में जो कुछ बताया था, उसी के आधार पर हस्तरेखा विशेषज्ञ ने उन का भूतकाल बता दिया.

प्रति आशावान बनना पड़ेगा अन्यथा वह चल बसेंगे. अगर इन्होंने चार दिन काट लिए तो इन के बचने की संभावना बढ़ जाएगी."

"आप ने इन्हें जीवन के प्रति आशावान बनाने का प्रयत्न नहीं किया?" मैं ने डाक्टर साहब से अगला प्रश्न किया.

"मैं केवल समझा सकता हूं, इन्हें तसल्ली दे सकता हूं. मैं ने इन्हें कई बार बताया है कि आप मरेंगे नहीं, आप अवश्य ठीक हो जाएंगे. पर इन के ऊपर कोई असर नहीं होता," डाक्टर साहब ने उदासीनतापूर्वक उत्तर दिया.

मेरे मुख पर हलकी सी मुसकराहट दौड़ गई. मैं ने डाक्टर साहब को विश्वास दिलाते हुए कहा, "आप इन्हें दवा दीजिए. इन के मन में जीवित रहने वाली भावना जगाने का प्रबंध मैं कर दूंगा."

पर उन के चेहरे से ऐसा लगा जैसे वह न तो मेरी बात समझे हैं और न ही मेरी बात पर उन्हें विश्वास हो रहा है. उन्हें शायद दूसरा मरीज देखने जाना था, इसलिए बात अधिक न बढ़ा कर चले गए.

मैं सोमेश्वरजी की कमजोरी जानता था. वह ज्योतिषियों का बहुत विश्वास करते थे. मुझे शंका हुई कि अवश्य किसी ज्योतिषी ने उन की मृत्यु की भविष्यवाणी कर दी है, इसी लिए वह अपने जीवन की समाप्ति का विश्वास कर के मृत्यु की प्रतीक्षा कर रहे हैं.

सोमेश्वरजी की दुकान पर एक लड़का नौकर था, जो दवाएं उठाउठा कर देता था. सोमेश्वरजी गद्दी पर बैठे रहते थे. वह जिस दवा का नाम लेते थे, लड़का उसी की शीशी अलमारी से निकाल कर सोमेश्वरजी के सामने रख देता था. काम हो जाने पर शीशी को अलमारी में रखना भी उसी का काम था.

मैं ने उस से पूछा, "क्या, कुछ दिन पहले वैद्यजी के पास कोई ज्योतिषी आया था?"

"आया था. वैद्यजी ने अपनी जन्मपत्री भी उसे दिखाई थी," लड़के ने उत्तर दिया.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं ने लड़के से अगला प्रश्न किया, "तुम्हें ध्यान है कि उस ने वैद्यजी को क्या बातें बताई थीं?"

लड़का याद करता हुआ बोला, "बातें तो उस ने बहुत सी बताई थीं, पर मुझे तो एक ही बात याद है. उस ने कहा था कि आप की मृत्यु शीघ्र ही होने वाली है."

मैं ने जो अनुमान किया था, वह सत्य निकला. वैद्यजी का बड़ा लड़का घबरा कर मुझ से पूछने लगा, "अब क्या होगा, शास्त्रीजी? लगता है, पिताजी अब नहीं रहेंगे. उस ज्योतिषी की बात इन के मन में बैठ गई है."

मैं ने सोमेश्वरजी के बड़े लड़के को आश्वासन दिया और सोचने लगा, विष को विष ही काटता है. कांटे से ही कांटा निकाला जा सकता है. यदि कोई ज्योतिषी विश्वास दिलाए तो सोमेश्वरजी जीवन के प्रति आशावान बन सकते हैं. पहले तो मैं ने सोचा कि उसी ज्योतिषी को बुला कर लाया जाए. और उस से कहलवा दिया जाए कि उस ने जो कुछ बताया था, वह झूठ था.

तभी मुझे ध्यान आया कि अब वैद्यजी उस की बात पर विश्वास नहीं करेंगे. वह समझ जाएंगे कि इस ने पहले तो ठीक बात बताई थी, अब वह किसी के कहने पर झूठ बोल रहा है. मैं ने किसी अन्य ज्योतिषी को बुला कर सोमेश्वरजी को जीवन की आशा दिलाने की बात सोची. पर कुछ देर में यह विचार भी मुझे लचर जान पड़ा. यह आवश्यक नहीं है कि वह एक ज्योतिषी के कहने से दूसरे की बात झूठ मान लें.

इसी समय मेरा ध्यान हस्तरेखा देख कर भविष्य बताने वालों की ओर चला गया. समीप ही ग्वालियर है. वहां प्रायः हस्तरेखा विशेषज्ञ आते रहते हैं. उन के विज्ञापन समाचारपत्रों में निकलते हैं. मैं ने ग्वालियर से निकलने वाला एक दैनिक पत्र उठा कर देखा. उस में एक इसी प्रकार का विज्ञापन निकला था. मैं तुरंत ग्वालियर जा कर उन से मिला और उन्हें सारी स्थिति समझाई.

वह कहने लगे, "यह तो असत्य भाषण है. मुझ से यह नहीं हो सकेगा."

मैं ने उन्हें लालच देते हुए बताया, "मैं आप को दो सौ रुपए दे सकता हूं. आप को आनेजाने में विशेष समय नहीं लगेगा. वहां तो केवल दस मिनट का काम है. आप को केवल दो बातें कहनी हैं. एक तो हस्तरेखा विज्ञान को ज्योतिष से श्रेष्ठ सिद्ध करना है. दूसरे सोमेश्वरजी के कई वर्ष जीवित रहने की बात कहनी है.

"रही झूठ बोलने की बात. यदि आप ने कभी भी झूठ नहीं बोला हो तो आज भी मत बोलिए. यह भी तो संभव है कि सोमेश्वरजी के हाथ की रेखाएं अभी उन के जीवित रहने का संकेत कर रही हों. वैसे भी किसी इनसान को जीवनरक्षा के लिए मन रखने वाली बात कह दी जाए,

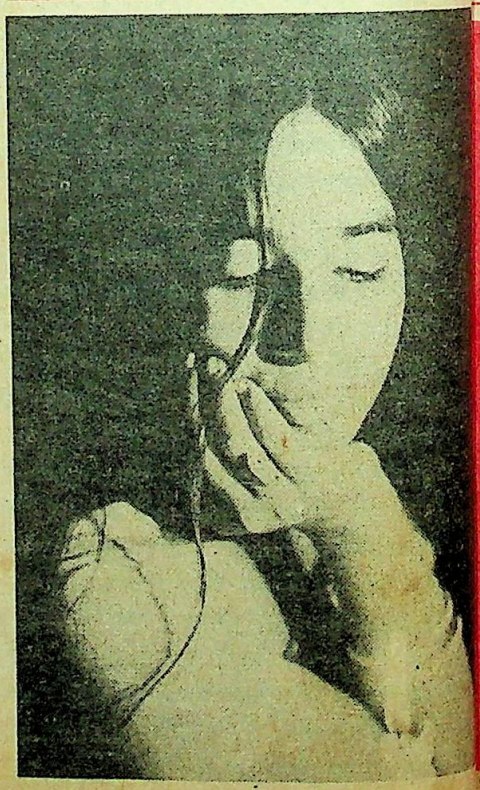

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो मैं कुछ बुरा नहीं समझता."

लगता था हस्तरेखा विशेषज्ञ महोदय दो सौ रुपए का लालच नहीं छोड़ सके. वह मेरे साथ चले आए. मैं उन्हें सोमेश्वरजी के कमरे में ले गया तो मेरे सिखाए अनुसार उन के बड़े लड़के ने हस्तरेखा विशेषज्ञ की ओर संकेत कर के पूछा, "शास्त्रीजी, यह सज्जन कौन हैं? मैं ने इन्हें पहले कभी नहीं देखा."

मैं ने उत्तर दिया, "तुम इन्हें देखते कहां से, यह यहां के रहने वाले नहीं हैं. यह प्रसिद्ध हस्तरेखा विशेषज्ञ हैं जो ग्वालियर के गूजरी महल में ठहरे हैं. यहां तहसीलदार साहब के घर आए थे. वहां से मैं उन्हें ले आया हूं. वैद्यजी का हाथ दिखाने."

हस्तरेखा विशेषज्ञ को अपने सामने बैठा जान कर सोमेश्वरजी अपना भविष्य जानने की अभिलाषा न रोक सके. उन्होंने अपना दायां हाथ धीरे से आगे बढ़ा दिया. मैं ने सोमेश्वरजी के विषय में जो कुछ बताया था, उसी के आधार पर हस्तरेखा विशेषज्ञ ने उन का भूतकाल इस प्रकार ठीकठीक बता दिया, जैसे खुली हुई किताब पढ़ रहे हों. उन बातों से सोमेश्वरजी पर उन का पूरा विश्वास जम गया.

मैं ने हस्तरेखा विशेषज्ञ से वैद्यजी की आयु के विषय में पूछा तो उन्होंने सीधे हाथ की चारों उंगलियों को एकएक कर के हथेली पर मोड़ा और आत्मविश्वास के साथ कहने लगे, "इन की आयु अस्सी वर्ष है. इस से पहले इन की मृत्यु नहीं हो सकती."

सोमेश्वरजी चुप नहीं रह सके और धीरे से बोले, "मगर कुछ दिन पहले एक ज्योतिषी ने मेरी जन्मपत्री देख कर बताया था कि मैं एक महीने से अधिक नहीं जी सकता. मुझे मारकेश लग चुका है."

हस्तरेखा विशेषज्ञ यह बात सुन कर जोश से भर गए और आत्मविश्वास

मुख चूमा है...

चंदा की छांव पड़ी
सागर के मन में,
शायद मुख देखा है
तुम ने दरपन में.
अधरों के ओरछोर
टेसू का पहरा,
आंखों में बदरी का
रंग हुआ गहरा,
चुंबन से डोल रहे
माधव मधुवन में,

शायद मुख चूमा है
तुम ने बचपन में.
अंगड़ाई लील गई
आंखों के तारे
अंगिया के बंध खुले
बगिया के द्वारे.
केसरिया गीलापन
वन में उपवन में,
शायद मुख धोया है
तुम ने जलकण में.

—किशोर कावरा

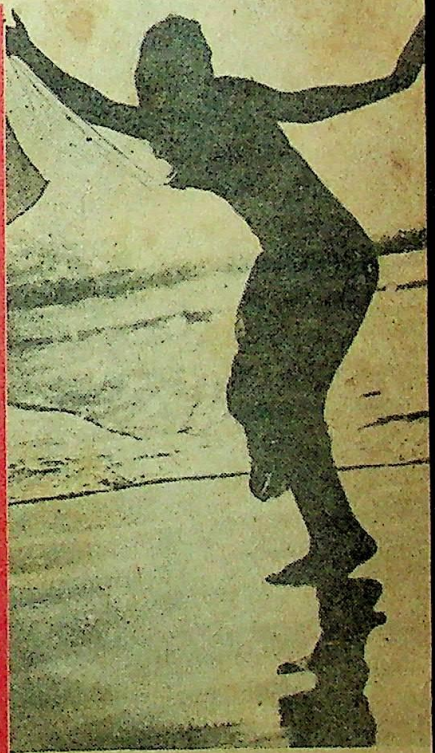

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के साथ कहने लगे, "जन्मपत्री और हस्तरेखाओं का अंतर आप समझ लेंगे तो मेरी बात ही आप को ठीक लगेगी. जन्मपत्री जन्मकाल के आधार पर बनाई जाती है. गांव के लोग बच्चे के जन्म का समय ठीक नहीं बता पाते, क्योंकि वहां सभी परिवारों में घड़ियां नहीं होतीं. यदि घड़ी हो तब भी समय में थोड़ाबहुत अंतर पड़ जाता है, क्योंकि अधिकांश घड़ियां थोड़ीबहुत आगेपीछे रहती हैं. ज्योतिष के दो अंग हैं. गणित और फलित. गणित के आधार पर ज्योतिषी फलित के रूप में भविष्यवाणियां करते हैं. जन्मकाल ठीक ज्ञात न होने से गणित में अंतर पड़ जाता है और जन्मपत्री की घटनाएं सही नहीं बैठ पातीं. हस्तरेखाओं के विषय में ऐसी कोई बात नहीं है, उन्हें कभी भी देखा जा सकता है."

हस्तरेखा विशेषज्ञ की लंबीचौड़ी बातें सुन कर सोमेश्वरजी ज्योतिष की अपेक्षा हस्तरेखा विज्ञान को श्रेष्ठ समझने लगे हैं, ऐसा उन के चेहरे से लग रहा था. शीघ्र ही सोमेश्वरजी के मुख पर पुनः शंका की भावना जगी और वह धीरे से बोले, "आप की बात ठीक होगी. पर मुझे तो ऐसा लगता है कि मेरा अंतिम समय आ गया है."

सोमेश्वरजी की बात सुनते ही हस्तरेखा विशेषज्ञ की भौंहें तन गईं. वह आत्मविश्वासपूर्वक बोले, "अधिक बात तो मैं नहीं कहता, पर आप के जीवन के प्रति मैं शर्त लगा सकता हूं. अभी तो आप को चारों धामों की तीर्थयात्रा करनी है. अगर अस्सी वर्ष से पहले आप की मृत्यु हो जाए तो मैं हस्तरेखा देखने का काम छोड़ दूंगा."

सोमेश्वरजी को हस्तरेखा विशेषज्ञ पर पक्का विश्वास हो गया. उन के चेहरे की उदासी मिट गई और वहां आशा का प्रकाश झलकने लगा. हस्तरेखा विशेषज्ञ बाहर निकले तो मैं ने सफल अभिनय के लिए उन की प्रशंसा की तथा ढाई सौ रुपए दिए. पचास रुपए अभिनय का इनाम था.

धीरेधीरे सोमेश्वरजी की दशा सुधरने लगी. अगले दिन डाक्टर साहब उन्हें देख कर बाहर निकले तो कहने लगे, "इन की हालत में जमीनआसमान का अंतर है. आप ने क्या जादू कर दिया है?"

मैं ने डाक्टर साहब को सब बातें बताईं तो वह चकित रह गए.

इस बात को चार वर्ष हो गए हैं. सोमेश्वरजी अपना काम पहले के समान ही परिश्रम और लगन के साथ कर रहे हैं. हां, अब वह ज्योतिषियों पर कम विश्वास करते हैं. ●

नाकाम है इदराक...

नाकाम है इदराक को परवाज अभी तक,
फर्याद कि है राज तेरा राज अभी तक.
पाया न तेरा नामो निशा जौके तलब ने,
तू है फकत आवाज ही आवाज अभी तक.
तू गर्चे खुद इक राज है मेरे लिए, लेकिन
दुनिया मुझे कहती है तेरा राज अभी तक.
बस एक झलक जल्वा-ए-मकसूदे तमन्ना,
है जौके-जुनू महवे-तगोताज अभी तक.

—जगन्नाथ 'आजाद'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बच्चों के मुख से

एक दिन मैं कुछ आवश्यक कार्य कर रही थी. मेरी दोनों लड़कियां खेल रही थीं. खेलतेखेलते दोनों झगड़ने लगीं और मेरे पास आ कर एकदूसरे की शिकायत करने लगीं. मैं ने नाराज हो कर कहा, "तुम दोनों गंदी हो. जाओ, मैं तुम्हारी मम्मी नहीं हूं."

इस पर ढाई वर्षीया सपना बोली, "फिर क्या आप केवल पापा की ही हैं?" सुन कर मैं हंसे बिना न रह सकी.

—निर्मल जैन, उज्जैन

✦

मेरी पांच वर्षीया भानजी अभी तक शीशी से दूध पीती है. उसे शादी के नाम से बहुत डर लगता है, क्योंकि वह समझती है कि शादी के बाद उसे मम्मी-पापा को छोड़ कर जाना पड़ेगा.

जब वह कभी किसी बात के लिए जिद करती है तो हम उस से कहते हैं, "बिट्टू, हम तुम्हारी शादी कर देंगे." फिर वह जिद नहीं करती.

एक दिन मैं ने उसे समझाया, "बिट्टू, शादी पर नएनए कपड़े मिलते हैं, गहने मिलते हैं, सब प्यार करते हैं."

ये सब बातें समझने के बाद वह शादी के लिए राजी हो गई. परंतु फिर बोली, "मामाजी, हम शादी तो कर लेंगे, पर वहां हमें शीशी से दूध कौन

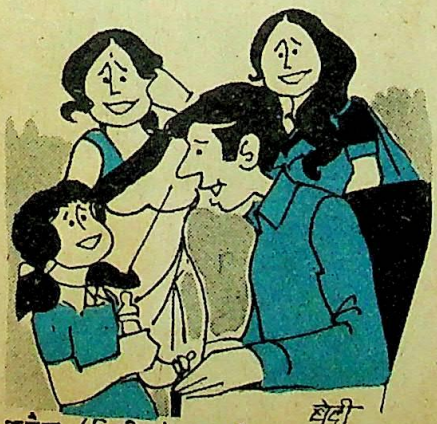

पिलाएगा?" उस की यह बात सुन कर सभी हंस पड़े.

—च. स. गंभीर, हाटपीपलिया

✦

मेरे छः वर्षीय पुत्र को सब्जी खाने से बहुत नफरत है. मैं जबतब उसे सब्जी खाने के फायदे समझाती रहती हूं.

एक दिन रेडियो पर महिला सभा में भी सब्जी की उपयोगिता का प्रसंग आया. उस रात खाने के वक्त मैं ने शैलेंद्र से कहा, "देखो, आज रेडियो ने

भी सब्जी के खाने के फायदे बताए थे न?"

इस पर उस ने तपाक से उत्तर दिया, "वह तो महिलाओं के लिए कहा था." उस की यह बात सुन कर हम सब हंसे बिना न रह सके.

—दुर्गा पसारी, देवास

✦

मेरी बहन बीमार होने के कारण अस्पताल में भरती थी. मैं अपनी बहन के खाने का डब्बा ले कर घर से निकली. थी कि बाहर खेल रही मेरी चार वर्षीया भानजी मुझे देख कर बोली, "मौसी, मैं भी चलूंगी."

मैं ने उस से कहा, "मैं डब्बा ले कर जा रही हूं, तुम्हें कैसे ले जाऊंगी?"

इस पर वह बोली, "मौसी, डब्बा मैं ले चलूंगी, आप मुझे गोद में ले चलो." इतना सुन कर मैं अपनी हंसी न रोक सकी.

—उर्मिला विजयवर्गीय, देपालपुर ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यंग्य • शकुंतला शर्मा

हमने महिला वर्ष मनाया

इतनी तैयारी के साथ कि समारोह में हमारे नाम का डंका बज गया, लेकिन घर आए तो लगा जैसे कई वर्षों से बीमार हों...

हम ने भी महिला वर्ष मनाया. अब इस का किस्सा आप को सुनाएं तो आप हैरान हो जाएंगे. शुरू में जनवरी से जुलाईअगस्त तक हमें मालूम ही न पड़ा कि सन 1975 अंतर्राष्ट्रीय महिला वर्ष है. हमें तो बस प्रेम और विरह की कहानियां या हंसीमजाक के चुटकुले पढ़ने का ही शौक है. चिकने कागज पर छपे फैशनेबल, सुंदर औरतों और आदमियों के रंगबिरंगे फोटो भी हमें अच्छे लगते हैं, पर और चीजों का न हमें शौक है, न हम पढ़ते हैं. इसी लिए पत्रिकाओं में अंतर्राष्ट्रीय महिला वर्ष की चर्चा होने पर भी हमें उस का काफी समय तक पता ही न चला.

यों कालिज में पढ़ने वाले हमारे बच्चे अपने मित्रों से इस बारे में बातें करते. लल्ला के पापा भी अपने आफिस के दोस्तों से सलाहमशविरा करते हुए कहते, "ऊपर से हुक्म आया है कि महिला वर्ष के उपलक्ष्य में महिलाओं की भलाई के लिए कुछ करो. अब आप ही बताइए कि हमें क्या करना चाहिए?" पर हमारी तो मरी आदत ही ऐसी है कि हम इन के आफिस के पचड़ों में नहीं पड़ते. यह तो जाने क्याक्या कहते और करते हैं.

हमें तो इस बारे में तब मालूम हुआ जब लेडीज क्लब की कुछ बहनें हमारे

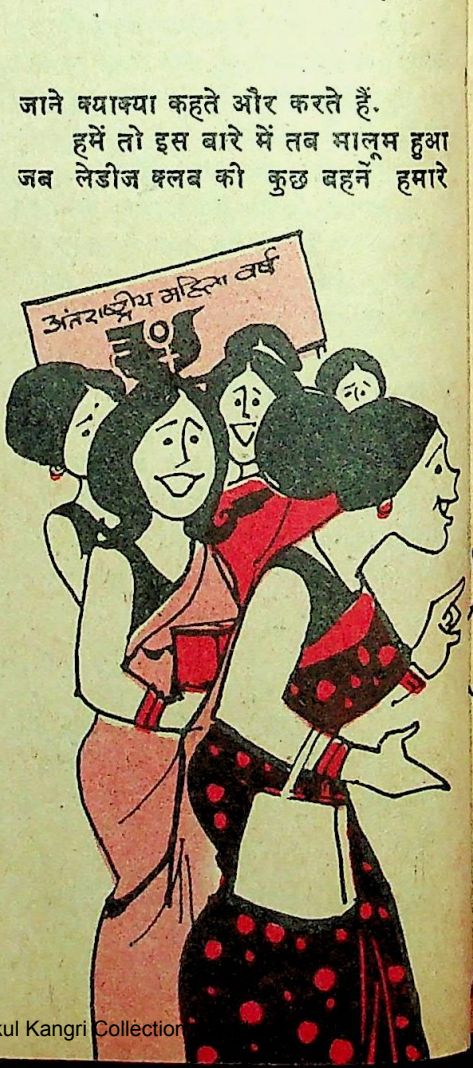

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पास चंदा मांगने आईं. उन्होंने हमें बताया कि इस महिला वर्ष में हम अनपढ़ बहनों को पढ़ाने के लिए स्कूल खोलेंगी, जिस में सिलाईबुनाई भी सिखाई जाएगी. स्कूल का उद्घाटन हम एक उत्सव मना कर करेंगी, जिस में डांस, ड्रामा और गाना होगा. हम घरघर जा कर बहनों को इस बारे में बताएंगी और चंदा इकट्ठा कर के इन कामों को करने का प्रबंध करेंगी. आप भी सहयोग दीजिए.

हम ने कह दिया कि आप बेफिक्र रहिए और बहनें जो कुछ देंगी, उसे देख कर, या जो हम से बन पड़ेगा वह हम भी दे देंगी. लेकिन वे कहने लगीं कि आप को दूसरों से क्या लेना, आप के पति इतने बड़े अफसर हैं, इसलिए आप को तो अधिक से अधिक देना चाहिए. फिर यह महिला वर्ष दुनिया में पहली बार ही मनाया जा रहा है. यही तो अवसर मिला है हम महिलाओं को अपने लिए कुछ करने का. तब क्यों न हम इस में भाग ले कर कुछ लाभ उठाएं? जब ऐसीऐसी बहुत सी बातें उन्होंने हम से कहीं तो कुछकुछ हमारी समझ में भी आ गया. पर रुपएपैसे का मामला ठहरा, सो हम ने उन्हें यह कह कर साफ टरका दिया कि फिर देंगे, और मन में सोचा कि अब तो हमें लल्ला के पापा से भी सलाह करनी ही होगी.

रात को जब उन से कहा तो उन्होंने कोई खास दिलचस्पी नहीं दिखाई और कह दिया कि दसबीस रुपए तक जो चाहो दे देना. जब वे बहनें फिर आईं तो हम ने यह सोच कर कि इतनी पढ़ीलिखी औरतें दोदो बार हमारे द्वार पर आई हैं, बीस रुपए दे दिए. पर वे इतने से कहां मानने वाली थीं. बोलीं कि हमारे साथ घरघर घूम कर चंदा इकट्ठा करवाइए, तब हम सब मिल कर कुछ करने की योजना बनाएंगी. हमें तो अपने घर के कामों से ही फुरसत नहीं मिलती लेकिन जब उन्होंने बहुत अधिक आग्रह किया तो हम भी जाने लगे.

लेडीज क्लब की कुछ बहनें जब चंदा मांगने आईं और उन्होंने महिला वर्ष मनाने के लिए हम से कुछ निवेदन किया तो घर में सब सतर्क हो गए...

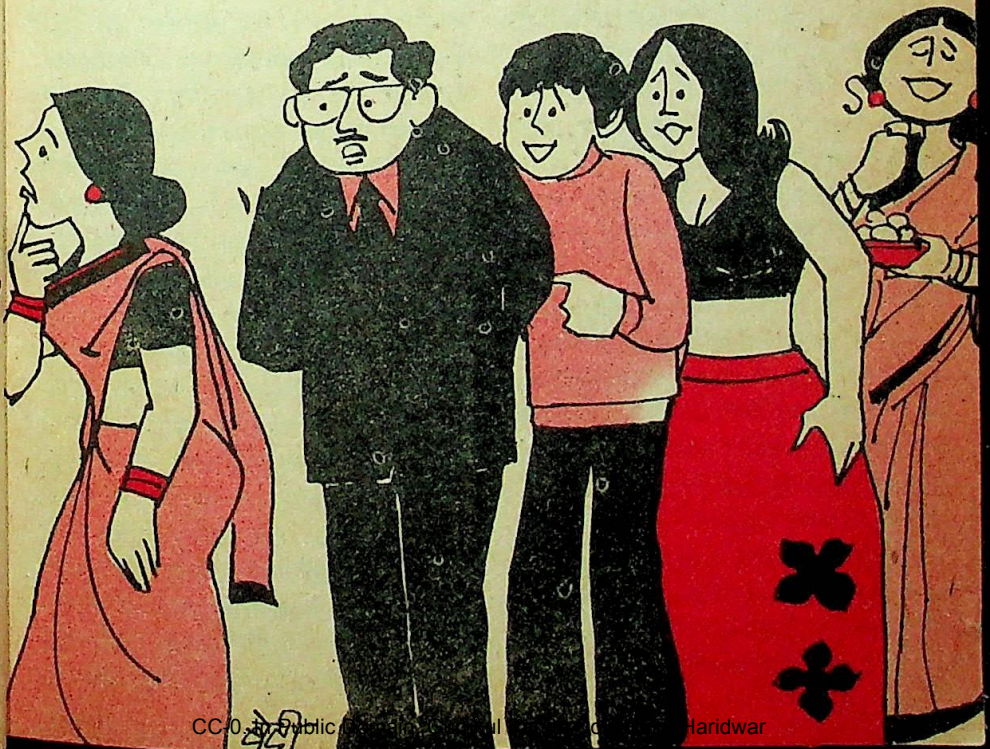

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब बहुत सी बहनों को महिला वर्ष के बारे में बता दिया गया और पैसा भी इकट्ठा हो गया (वैसे पैसा बड़ी कठिनाई से इकट्ठा हुआ क्योंकि कोई भी बहन चंदे के नाम पर एक फूटी कौड़ी भी देना नहीं चाह रही थी) तो समस्या हुई कि महिला वर्ष किस दिन और कैसे मनाया जाए, अध्यक्ष तथा मुख्य अतिथि किसे बनाया जाए, किसकिस को क्याक्या काम सौंपा जाए? अंत में तय हुआ कि श्रीमती शकुंतला यानी मेरे यहां शनिवार को दो से पांच बजे तक मीटिंग की जाए. हमें भला अपने घर मीटिंग करवाने में क्या एतराज था. खुशीखुशी राजी हो गए.

घर पर मीटिंग की बात बताई तो लल्ला बोले, "मम्मी, आप ने तो गड़बड़ कर दी. उस दिन तो मैं ने संगीत प्रोग्राम रखा है घर पर."

जैसेतैसे उसे मनाया, "बेटा, तुम अपना प्रोग्राम किसी मित्र के यहां रख लो."

लल्ली नाराज हो गई. बोली, "मम्मी, आप को मालूम तो है कि मेरे टैस्ट चल रहे हैं, फिर भी आप यहां भीड़ इकट्ठा कर के होहल्ला मचवाएंगी."

उसे भी यह कह कर मनाया, "आखिर कुल तीन घंटे की ही तो बात है, फिर पढ़ लेना."

लेकिन शनिवार को बेचारे लल्ला और लल्ली, दोनों को ही सुबह से काम में लग जाना पड़ा. लल्ली को ड्राइंगरूम साफ कर के सजाने का काम सौंपा और लल्ला को बाजार भेजा. हम ने भी महरी को अपने साथ लगा कई चीजें नाश्ते के लिए बनाईं. इतनी सारी बहनों को हमारे घर आना था. अगर चायनाश्ते को भी न पूछती तो वे क्या सोचतीं अपने मन में? सब ने ठीक दो बजे आने को कहा था, पर समय पर कोई न आई. अच्छा ही हुआ कि सब देर से आईं. हम भी कहां निबट पाए थे समय पर!

खैर, जब चार बजे सब आ गईं तो हम ने इतनी मेहनत से तैयार किया नाश्ता पहले ही करा देना ठीक समझा. सब ने खुश हो कर हमारे हाथ की बनी चीजें खाईं. इतने में पांच बज गए और अगले शनिवार को फिर मीटिंग करने की बात कह कर सब जाने को हुईं.

हम डरे कि फिर कहीं हमारे घर ही मीटिंग करने को न कहें. पर भला हो उन का कि उन्होंने कुमारी कौशल्या के यहां मीटिंग रखी. हम डरे इसलिए कि उन के साथ आए बच्चों ने हमें बड़ा परेशान किया. खाया और बिगाड़ा, यहां तक तो फिर भी ठीक था, पर ड्राइंगरूम की चीजों को तोड़फोड़ कर बगीचे तक को ऐसे बिखेर दिया मानो हनुमानजी ने अशोक वाटिका उजाड़ी हो. यह सोचसोच कर हमारी तो हालत ही खराब हो गई कि लल्ला के पापा यह सब देखेंगे तो हमें कितना डांटेंगे.

कौशल्या के यहां हम भी गए पर वहां भी कुछ तय न हो पाया, और हां, उस के यहां जा कर हमें तो बड़ा गुस्सा आया. हम ने अपने घर सब की इतनी आवभगत की थी, पर कौशल्या को देखो जो इतना पैसा कमाती है, अकेली जान है, फिर भी, उस की नौकरानी ने सब को सिर्फ एकएक कप कालीकाली, फीकी सी चाय पकड़ा दी. हम ने तो अपने घर ऐसी चाय न कभी पी, न किसी को पिलाई. फिर कई मीटिंगें हुईं, पर हम न गए.

कोई एक महीने बाद पांचछः बहनों ने आ कर हमें बताया कि 21 अक्तूबर को हम महिला वर्ष का उत्सव मना रहे हैं जिस की अध्यक्षता हमें करनी होगी. मुख्य अतिथि जिलाधीश की पत्नी को बनाएंगे. उन्होंने बहुत से बैनर भी दिखाए, जिन पर तरहतरह की औरतों के चित्र बने थे और हां, एक चिड़िया सी सभी बैनरों पर बनी थी. उत्सव के समय लगाने को हमें एक गोल बैज भी दिया. उस पर भी वैसी ही चिड़िया बनी थी. हम ने उन से कह दिया कि लल्ला के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

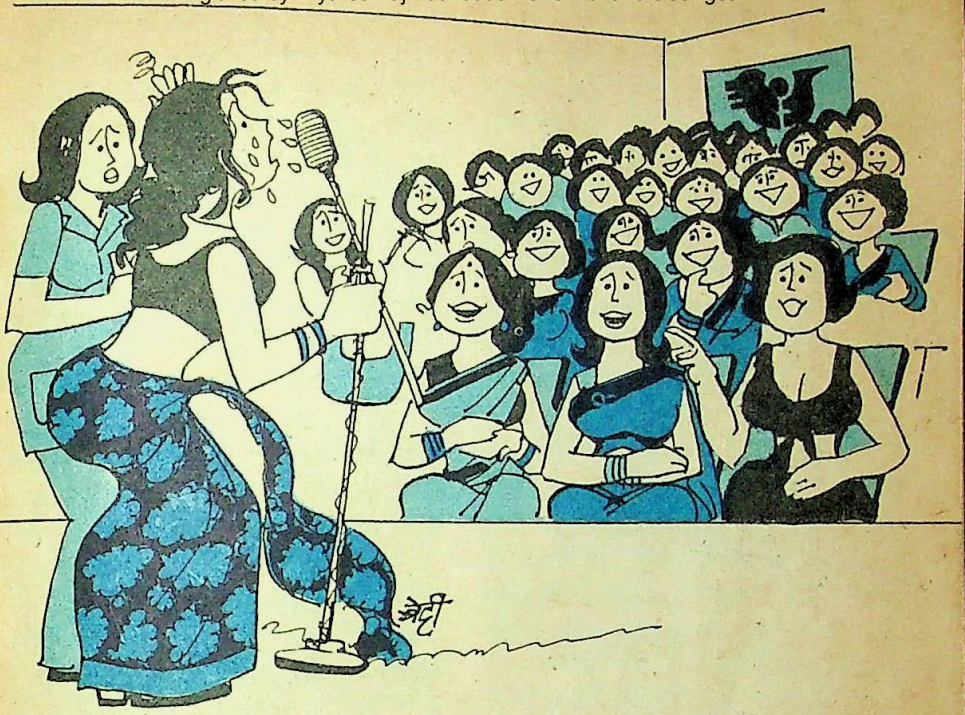

लल्ली हमारे पीछे ही खड़ी थी. उस ने धीमे स्वर में कहा, "मम्मी, बोलिए." और यह कह कर उस ने भाषण के शुरू के शब्द याद दिलाए.

पापा से पूछ कर ही हम आप को जवाब देंगे.

लल्ला के पापा को जब हम ने बताया कि क्लब की बहनें हमें महिला वर्ष के उत्सव की अध्यक्षा बनने को कह रही हैं तो उन्होंने बड़ी रुखाई से कह दिया कि तुम इन झंझटों में मत पड़ना, उन के साथ चंदा मांगने जाने और अपने घर पर मीटिंग करवाने तक तो मैं ने कुछ न कहा, पर इस से ज्यादा ठीक नहीं. ये काम तुम्हारे बस के हैं भी नहीं. मैं सब जानता हूं कि तुम्हें अध्यक्षा किसलिए बनाया जा रहा है. कल तक तो तुम्हें कभी पूछा नहीं. तुम्हें अध्यक्षा बना कर लोग कितने ही उचितअनुचित काम मुझ से करवाने के फेर में हैं. साफ मना कर दो उन से. हमें ऐसी मक्खनबाजी नहीं चाहिए.

हम ने भी उन बहनों से साफसाफ कह दिया कि उत्सव की अध्यक्षता नहीं कर सकती. न हमें इन कामों का अनुभव है और न लल्ला के पापा ही इसे पसंद करते हैं.

यह सुन कर उन्होंने हमें बहुत समझाया कि पुरुष ने सदियों से स्त्री को अपनी दासी बना कर रखा है और अपने इशारों पर चलने को विवश किया है. अपनी इच्छा से स्त्री कुछ भी नहीं कर सकती. सभी बातों के लिए उसे पुरुष का मुंह ताकना पड़ता है. अब जब पुरुषों की गुलामी से छूटने और प्रत्येक क्षेत्र में उन के बराबर अधिकार हासिल करने के लिए हम महिला वर्ष मना रही हैं तो पुरुषों को यह सहन नहीं हो रहा. रही अध्यक्षा बनने की बात, उस में क्या कठिनाई है? आप को तो बस अध्यक्ष की कुरसी पर बैठ जाना है और मुख्य अतिथि के सम्मान में तथा महिला वर्ष के विषय में थोड़ा सा भाषण दे देना है. इसी तरह की बहुत सी बातें उन्होंने कहीं, जिन में कुछ हमारी समझ में आईं और कुछ न आईं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब हम ने भी ठान ली कि लल्ला के पापा कुछ भी कहें या करें हम तो अध्यक्षा अवश्य बनेंगे. वह अपनेआप जो मन में आता है करते हैं, हमारे मना करने पर भी नहीं मानते हैं. वह तो हम ही हैं कि सदा उन के इशारों पर नाचती हैं. हमारी आंखें उन की यह बात सुन कर ही खुली हैं कि स्त्री को अपनी मरजी से कुछ भी करने का अधिकार नहीं. अब दुनिया भर की सरकारों ने हमारी दशा सुधारने के लिए महिला वर्ष मनाने का अवसर दिया है तो वह यह भी नहीं करने देना चाहते. हम ने कभी उन्हें रोका है? वह अपने आफिस के जो हैं सो तो हैं ही और भी न जाने क्याक्या बनते ही रहते हैं, किसी कमेटी के मेंबर, तो किसी के एक्सपर्ट मेंबर, कहीं एडवाइजर तो कहीं चीफ गेस्ट. हम तो अध्यक्षा बनेंगे. देखें वह कैसे रोकते हैं?

वह तो मानते ही न थे, पर एक तो हम ने जिद की और दूसरे बच्चों ने भी कहा कि पापा कोई बात नहीं, मम्मी को भी स्टेज पर आने दीजिए. आखिर उन्हें, भले ही बेमन से, हां करनी पड़ी.

फिर क्या था, हम ने तैयारियां आरंभ कर दीं. सब से पहले हमें उस अवसर पर पहनने के कपड़ों का ध्यान आया. जरी-गोटे की भारी साड़ियां तो हमारी शादी की कई हैं, पर आजकल के चलन की, ढंग की साड़ी हमारे पास कोई नहीं थी. यों हम अपना काम ऐसे ही चला लेते, परंतु लल्ली बोली कि मम्मी पुराने फैशन की ये साड़ियां ऐसे फंक्शन में नहीं चलेंगी. अब आप एक अच्छी सी साड़ी खरीद ही लीजिए. बाद में भी आप के पहनने के काम आएगी. यह बात हमें भी जंच गई और हम ने उस की पसंद की नए फैशन की इंपोर्टेड साड़ी और उस से मैच करता ब्लाउज खरीद ही लिया.

अब कठिनाई यह आ पड़ी कि हम अपने भाषण में क्या कहें. लल्ला के पापा ने कहा कि हम अपना भाषण पहले से याद कर लें. उन्होंने हिंदी के अपने किसी स्टूडेंट से भाषण लिखवा कर हमें ल दिया, क्योंकि वह स्वयं तो अंगरेजी हैं अधिक पढ़े हैं और उन का हिंदी का ज्ञा कम ही है. हमें भी हिंदी में ही भाष देना ठीक लगा. वैसे तो हमें अंगरेजी भी कुछकुछ आती है, क्योंकि जब हमारी सगाई लल्ला के पापा से हुई थी त हमारे पिताजी ने हमें अंगरेजी पढ़ाने के लिए एक काना मास्टर रख दिया थ और हम दसवीं कक्षा की परीक्षा में भी बैठे थे, पर तीनचार किताबें पढ़ने पर भी हमें औरों की तरह अंगरेजी में बोलना नहीं आया. हिंदी में भाषण देना क्या बुरा है? हिंदी तो हमारी राष्ट्रभाषा है.

अब हम सारे दिन भाषण याद करते रहते. कई शब्द समझ में न आते तो बच्चों से पूछते. जैसे ही बोलते, बच्चे कहते, "मम्मी, आप का उच्चारण गलत है."

मुश्किल से तोते की तरह रट कर और पूरा भाषण याद कर के जब बच्चों को सुनाया तो वे बोले, "मम्मी, आप तो ऐसे बोल रही हैं जैसे पंडितजी कथा बांच रहे हों."

लल्ला और लल्ली ने हमें एकएक वाक्य अभिनय के साथ बोलबोल कर बताया और हम ने उन की नकल की तब कहीं जा कर हमें भाषण देना आया. सच कभीकभी तो हमें बड़ी झुंझलाहट होती कि यह क्या मुसीबत मोल ले बैठे पर फिर सोचते कि महिला वर्ष रोजरोज थोड़े ही आता है.

इसी बीच क्लब की बहनें भी आती रहीं. बेचारियों को बड़ी परेशानी हुई. फंक्शन के लिए जो ड्रामा एक को पसंद आता, दूसरी को वह एकदम बेकार लगता. जो गाना एक बहन गाना चाहती, दूसरी कहती कि यदि वह गाया गया तो मैं फंक्शन में भाग नहीं लूंगी. एक बहन को डांस करने के लिए राजी किया तो गाने वाली बोली कि इन के डांस पर मैं नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गाऊंगी. ड्रामे के मुताबिक अब किसी को अपनी ड्रेस नहीं पसंद आई तो किसी को अपना पार्ट. इन बातों से कई बहनों में मनमुटाव हो गया और कइयों में अच्छी-खासी लड़ाई, जिस में आगेपीछे के गढ़े मुरदे भी उखाड़े गए. बड़ी चखचख रहती, जिस की वजह से कई बहनों ने आना ही छोड़ दिया. हमें भी इन झंझटों में फंस कर घर का काम संभालने की फुरसत न मिलती. फिर भी अंत में प्रोग्राम निश्चित हो गया.

फंक्शन के तीनचार दिन पहले लल्ली की सहेलियां आईं और हमारी साड़ी देख कर बोलीं, "आंटी, साड़ी तो अच्छी है, पर इस से मैच करती चूड़ियां, बिंदी, लिपस्टिक, नेल पालिश, पर्स और चप्पल आदि होने पर ही आप अध्यक्षा जंचेंगी."

हमारे मना करने पर भी वे लल्ली को साथ ले कर ये चीजें खरीद लाईं. लल्ला के पापा ने जब ये चीजें देखीं तो आंखें लाल कर के बोले कि सब चीजें अपने मुंहहाथ पर पोतते तुम्हें शर्म नहीं आएगी!

पहले तो हम डर कर चुप हो गए, पर जब वह बोलते ही रहे तो हमें भी गुस्सा आ गया और कह दिया, "हां, हम ये सब लगाएंगे. और औरतें भी तो लगाती हैं. हमें यह बात आज ही मालूम हुई है कि हमें अपने काजल व बिंदी तक लगाने का अधिकार नहीं. जब आप गरमी की शाम को सूटबूट पहन कर पसीने में नहाते हुए पार्टियों में जाते हो तो हम ने कभी रोका है आप को? कभी कह भी दें कि इतनी गरमी में बुश्शर्ट या लखनउवा कुरतापाजामा पहन जाओ तो हंस कर कह देते हो कि तुम क्या जानो कि किस समय क्या कपड़ा पहनना चाहिए. फिर मैं ही आप का कहना क्यों मानूं?"

जब इन का बस ऐसे न चला तो प्यार से समझाने लगे कि अब तक तुम साधारण ढंग से रहती रही हो. अब एकाएक इस फंशन में स्टेज पर जा बैठोगी तो लोग हमें छिछोरापन ही समझेंगे. शुरू से ही फैशन करतीं तो बात दूसरी थी.

हमें यह सुन कर रोना आ गया. इन्होंने ही तो हमारे रहनेसहने पर कभी ध्यान नहीं दिया. नहीं तो क्या हम भी फैशन से नहीं रह सकते थे? हमें कहीं साथ ले कर जाते तो क्या हमें भी सभा-सोसाइटी में बैठने की तमीज न आ जाती?

फंक्शन वाले दिन सुबह से ही मन में अजीब सी खुशी और बेचैनी हो रही थी. मन ही मन हम कल्पना कर रहे थे कि किस तरह अकड़ कर हम मंच तक जाएंगे, कैसे शान से बैठेंगे, कैसे प्रभावशाली ढंग से खड़े हो कर गंभीर वाणी में भाषण देंगे, कैसी सराहनाभरी दृष्टि से लोग हमें देखेंगे. कैसे अच्छे लगेंगे उस समय.

फंक्शन शाम छः बजे से आरंभ होना था पर दोपहर से ही बरसात आरंभ हो गई. हाय! अब क्या होगा? हम ने तो

दिल का दामन...

फूल चुनना भी अबस,
सैरे बहारां भी अबस.
दिल का दामन ही जो,
कांटों से बचाया न गया.
—'जज्बी'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इतनी तैयारियां की हैं. तीन बजे से ही हम ने सजना शुरू कर दिया था. कपड़े पहने, ऊंचा जूड़ा बनाया और उस पर गुलाब का फूल टांका, क्रीमपाउडर लगा कर काजल और बिंदी भी लगाई. शीशे के सामने खड़े हुए तो बड़ी शर्म सी लगी. इतना तो हम अपनी शादी में न सजे थे.

पौने छः बजे जब वर्षा कम हुई तो लल्ला के पापा हमें और लल्ली को आडिटोरियम के गेट तक छोड़ आए. वहां पहले से खड़ी दो बहनें हमें बड़े आदर से मंच तक ले गईं. हाल में बैठे सजेधजे बच्चों और तरहतरह के फैशन में रंग-बिरंगे कपड़े पहने बहनों को देख कर आंखें चुंधियाने लगीं. यों हम भी खूब सजसंवर कर गए थे, पर औरों के सामने अपने-आप को कुछ ऐसावैसा ही महसूस कर रहे थे. पता नहीं, रूपरंग और शक्लसूरत की वजह से या अपनी पढ़ाईलिखाई के कारण.

कुछ देर में मुख्य अतिथि आ गईं. हम ने उन को हाथ जोड़ कर नमस्कार किया. बड़ी प्यारीप्यारी, सुंदर और नाजुक सी थीं वह. कपड़े भी बड़े सलीके से और बढ़िया पहने थीं.

इतने में अनाउंसर ने हमारे भाषण की घोषणा कर दी. जैसे ही हम उठ कर माइक के सामने जाने लगे कि माइक के तार में हमारा पैर उलझ गया. मोटीमोटी ऊंचे तले वाली सैंडिलों की वजह से हम अपना संतुलन न रख पाए. यदि पास खड़ी बहन हमें संभाल न लेती तो हम मुंह के बल स्टेज पर धड़ाम से गिर जाते.

जैसेतैसे माइक के सामने पहुंचे तो हड़बड़ाहट में रटारटाया भाषण भूल गए. जब लोगों की हंसी की आवाज हमारे कानों में पड़ी तो उस सुहावने मौसम और एयर कंडीशंड हाल में भी पसीने छूट गए, दिल जोरों से धड़कने लगा, आंखों के नीचे अंधेरा छा गया और ऐसे लगा जैसे अभी गिर पड़ेंगे. मन में सोचा किसी ढंग से यहां से गायब हो जाएं. इतने में किसी ने पानी का गिलास थमा दिया. जीभ तालु से चिपक गई थी. कठिनाई से दो घूंट पानी गले से नीचे उतारा.

लल्ली हमारे पीछे ही खड़ी थी. उस ने धीमे स्वर में कहा, "मम्मी, बोलिए न." और यह कह कर उस ने भाषण के शुरू के शब्द हमें याद दिलाए. हम ने बोलने की चेष्टा की तो पहले तो गले से आवाज ही न निकली, किंतु जब एक बार बोलना शुरू किया तो फिर धड़ाधड़ बोलते ही गए और भाषण समाप्त कर के ही दम लिया.

इसी बीच पता नहीं हमारी साड़ी का पल्लू कंधे से उतर कर कैसे मंच पर गिर गया था, जिसे संभालने हम कुरसी पर आ बैठे. जूड़ा ढीला हो कर कमर पर लटक रहा था और उस में लगा फूल अनाउंसर के पैर के नीचे कुचला पड़ा था. लोग तालियां बजा रहे थे. गला सूख गया था, सो गिलास भरा पानी गटागट पी गए. फिर भी दिल जोरों से धड़कता रहा.

इस के बाद गाना, बजाना, ड्रामा और मुख्य अतिथि का भाषण. सब कुछ हुआ. पर हम तो जैसे नशे में हों, न कुछ सुनाई दे रहा था, न दिखाई दे रहा था. अंत में हमें आभार प्रकट करना था, जो किसी तरह कर दिया. चायनाश्ते के प्रोग्राम में भी कुछ खायापिया न गया.

घर लौटे तो लल्ली रास्ते में ही हम पर बरस पड़ी, "मम्मी, आप को क्या हो गया था कि पहले तो माइक के सामने चुपचाप खड़ी रहीं और जब बोलना शुरू किया तो एक्सप्रेस ट्रेन ही बन गईं. सभी लोग हंस रहे थे."

हम क्या कहते. उखड़ेउखड़े से घर आ कर बिना किसी से कुछ बोले पलंग पर ऐसे पड़ गए जैसे वर्षों से बीमार हों. थकान भी कई दिन तक न उतरी.

इतना सब होने पर भी हमें महिला वर्ष बड़ा अच्छा लगा. सोचते हैं कि यह एक बार ही क्यों आया. हर वर्ष ही महिला वर्ष क्यों नहीं हो जाता?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेख

क्या आप चोर हैं?

शिवेंद्र सुमन

इस संभावित आरोप से बचने के लिए क्या आप अपने कर्तव्यों के प्रति सजग हैं?

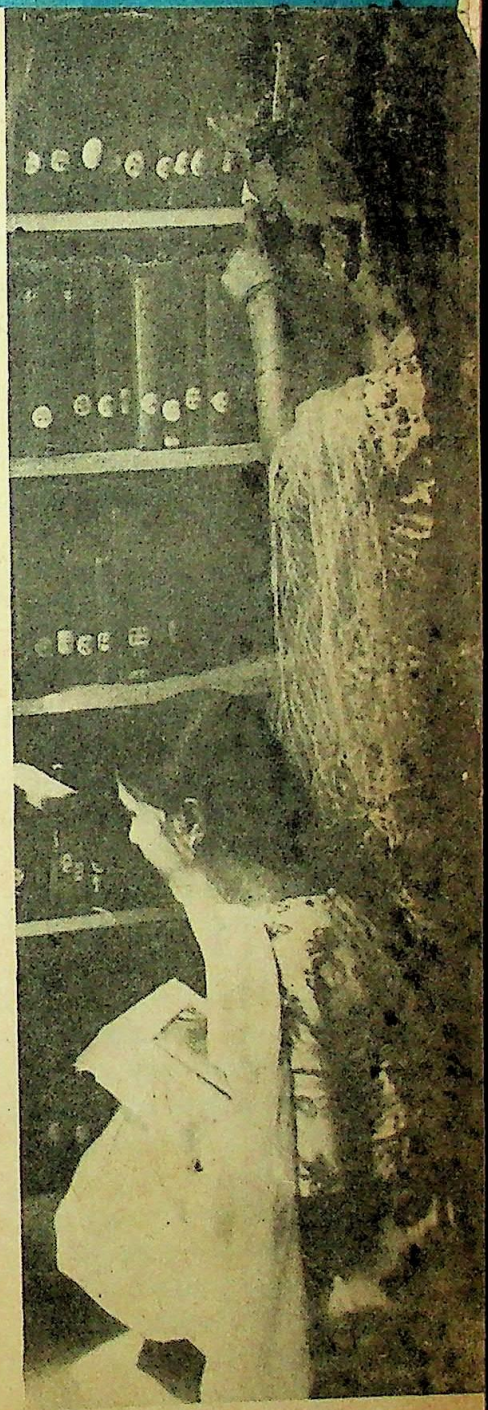

पिछले दिनों मेरे कार्यालय में कर्मचारियों की कैंटीन समिति की बैठक थी. बैठक में कैंटीन के सुधार के पावन उद्देश्य को ले कर कुछ सुझाव देने के लिए कहा गया था. मैं भी उस बैठक में आमंत्रित था. मैं ने सुझाव दिया कि कैंटीन की हर मेज पर सिगरेटों के टुकड़ों के लिए ऐशट्रे रखी जाए, ताकि टुकड़े फर्श पर न बिखरते रहें.

इस सुझाव पर तुरंत अमल हुआ. लेकिन अगले दिन ही समिति के सचिव मेरे पास आ कर बोले, "साहब, आप ने देखी अपने सहयोगियों की करतूतें? अभी एक घंटे पूर्व ही छः ऐशट्रे ला कर हर मेज पर रखी गई थीं. उन में से एक गायब हो चुकी है." यह सुन कर मेरा सिर शर्म से झुक गया. जिस कार्यालय की यह बात है, वहां के चपरासी भी आय कर देते हैं. ऐसे संपन्न व्यक्ति भी इस कदर गिर सकते हैं, इस की मुझे आशा नहीं थी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुझे सफर करने का शौक है. रेलगाड़ी के डिब्बों में मैं ने बहुधा एक सूचनापट्ट देखा है जिस पर लिखा होता है, 'हमें खेद है, यहां का शीशा (या अन्य कोई सामग्री) चुरा लिया गया है.' रेल हमारी राष्ट्रीय संपत्ति है. हम भी राष्ट्र की संपत्ति हैं. अतः किसी देशप्रेमी ने सोचा होगा, राष्ट्रीय संपत्ति कहीं भी रहे, कोई अंतर नहीं पड़ेगा. हां, अगर वह वस्तु उस के घर में रहे तो उस की कहीं अधिक बेहतर देखभाल हो सकेगी.

चोरी और सीनाजोरी

जब मैं कानून का अध्ययन कर रहा था तब हमारे पुस्तकालय में मुसलिम कानून विषय पर श्री मुल्ला की प्रसिद्ध पुस्तक की दस प्रतियां थीं. इस पुस्तक में उत्तराधिकार के अध्याय में तीन चार्ट हैं. इन की सहायता से उत्तराधिकार की समस्या का समाधान सहज ही मिल जाता है. परीक्षा में इस विषय पर हर वर्ष ही प्रश्न पूछे जाते हैं. पाठकों को यह जान कर शायद विश्वास नहीं होगा कि दस की दस पुस्तकों में से चार्ट निकाल लिए गए थे. बात केवल यहीं खत्म नहीं होती. अपने एक साथी को मैं ने इसी प्रश्न की तैयारी के लिए चार्ट-युक्त अपनी निजी पुस्तक दी थी. यह घटना मार्च की है, जब आम तौर पर कोई भी व्यक्ति पुस्तक उधार नहीं देना चाहेगा.

पुस्तक जब लौट कर आई तो मैं ने उसे बिना देखे ही रख ली. बाद में ज्ञात हुआ कि चार्ट वाले पृष्ठ गायब हैं. उन मित्र से पूछा तो वह कहने लगे, "इस में ये पृष्ठ थे ही नहीं." यह जानते हुए भी कि वह सफेद झूठ बोल रहे हैं, मैं कुछ कर न सका. अलबत्ता मैं अपने अन्य साथियों के पास गया. उन से वह पुस्तक ली और हाथोंहाथ चार्ट की नकल तैयार कर ली. आज भी यह नकल मेरे पास सुरक्षित है, जो मुझे हमारे राष्ट्रीय चरित्र का अहसास कराती है.

पुस्तकालयों की पुस्तकों के पृष्ठ बहुधा गायब मिलते हैं. जो व्यक्ति इन्हें चुराते हैं, वे प्रायः पकड़ में नहीं आते और अकसर निर्दोष व्यक्तियों को ही इस का दंड भुगतना पड़ता है. यदि किसी को किसी पुस्तक से कुछ सामग्री चाहिए तो मुझे समझ नहीं आता कि वह उस की नकल करने से क्यों कतराता है. तनिक से श्रम से बच कर वह तमाम पाठकों की घोर हानि करता है. उस सामग्री की आवश्यकता केवल उसे नहीं, दूसरों को भी हो सकती है. कुछ लोगों की आवश्यकता उस व्यक्ति की जरूरत से भी अधिक हो सकती है. आर्थिक या दूसरे कारणों से पुस्तक खरीदना यदि उस के बूते से बाहर की बात है तो इस का यह अर्थ तो नहीं कि वह पुस्तक के पृष्ठ ही फाड़ कर अपने पास रख ले.

दफ्तरों में बहुधा 'मैगजीन क्लब' चलाए जाते हैं. ऐसे क्लबों में दसबीस व्यक्ति होते हैं. हर व्यक्ति से तीनतीन या चारचार रुपए प्रति मास इकट्ठे कर के जो राशि एकत्र होती है उस से कुछ पत्रिकाएं खरीद ली जाती हैं. इस प्रकार क्लब का हर सदस्य थोड़े से शुल्क में तमाम बड़ी एवं महत्त्वपूर्ण पत्रिकाएं पढ़ लेता है. यदि वह स्वयं उन पत्रिकाओं को खरीदे तो उसे उस चंदे से दस गुना से भी अधिक रकम खर्च करनी पड़ेगी. मैं ने बहुधा देखा है कि ऐसी पत्रिकाओं के पन्ने भी फाड़ कर रख लिए जाते हैं. जो व्यक्ति ऐसा करते हैं वे या तो क्लब के ही सदस्य होते हैं या उसी कार्यालय के कर्मचारी.

मैं यह समझने में सर्वथा असमर्थ हूं कि जो लोग कोई चित्र या बुनाई का नमूना या कोई कूपन फाड़ते हैं, वे उस के लिए अपनी जेब से पैसा खर्च क्यों नहीं कर सकते. यदि आप को कोई चित्र या लेख पसंद आता है तो निश्चय ही आप को अपनी पसंद की वस्तु के लिए पैसा व्यय करने में हार्दिक प्रसन्नता होनी चाहिए. पर वास्तव में ऐसा होता नहीं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

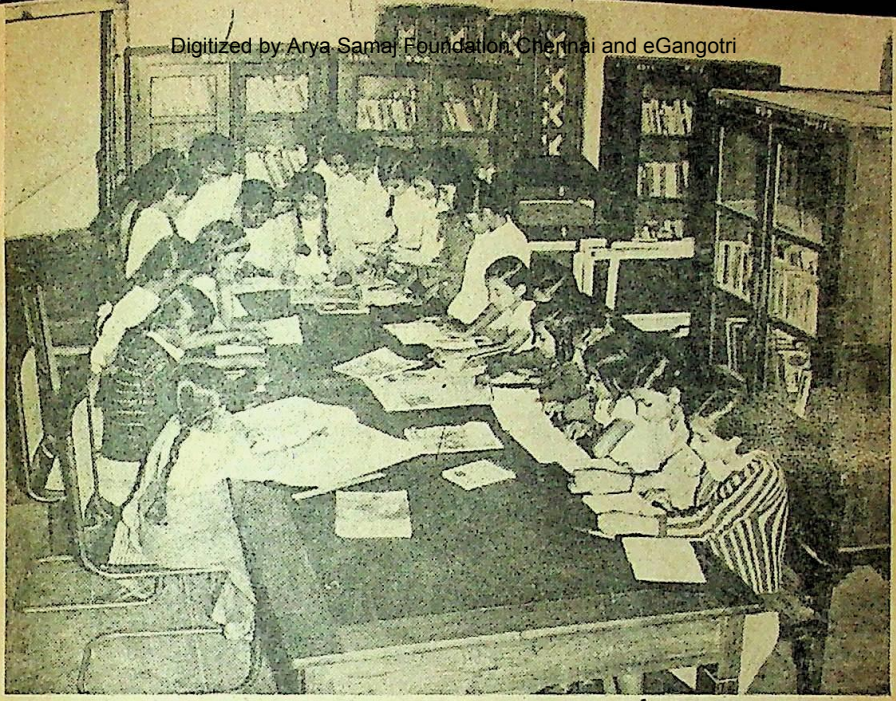

पत्रपत्रिकाओं में प्रकाशित कूपन अथवा रंगबिरंगे चित्रों को फाड़ लेना या वह पत्रिका ही चुरा लेना क्या हम में चोर वृत्ति का कारण नहीं है?

आप को तो सब से आसान तरीका यही दीखता है कि जो पन्ना चाहिए उसे फाड़ लो. आप को इस से कोई सरोकार नहीं कि दूसरे भी उसे पढ़ना चाहेंगे. औरों ने भी उस पत्रिका के लिए पैसे दिए हैं. उन्हें भी उस सामग्री को पढ़ने का हक है. उन की भी रुचि उस लेख या चित्र में हो सकती है.

सार्वजनिक वाचनालयों में भी रोजाना ऐसा ही होता है. वहां समाचार-पत्रों की पुरानी फाइलें सुरक्षित रखी जाती हैं. इन्हें रखने का प्रयोजन यह होता है कि भविष्य में यदि किसी व्यक्ति को कोई पुराना अखबार देखने की आवश्यता पड़े तो वह फाइल ले कर उसे देख सकता है. पर यहां भी अकसर यही देखा जाता है कि पाठकगण अख़बार फाड़ कर ले जाते हैं या उस का कोई हिस्सा काट लेते हैं. अपने जरा से लाभ के लिए वे हजारों पाठकों को असुविधा में डाल देते हैं. हम यह नहीं सोचते कि हमारे इस तनिक से लोभ और आलस्य से न केवल राष्ट्रीय संपत्ति एवं हमारी नैतिकता को क्षति पहुंचती है, बल्कि हमारी इस हरकत से आगे चल कर जरूरतमंद व्यक्ति को भी भारी कष्ट होता है.

किसी पहेली का हल भेजने के लिए जो कूपन पत्रिकाओं में छपते हैं, उन्हें भी अकसर काट लिया जाता है. इसी प्रकार कई बार पत्रपत्रिकाओं में कूपन भेजने पर कोई सामग्री दिए जाने की सूचना होती है. अतः चोर वृत्ति के लोग मौका पा कर एवं पत्रिका हाथ लगने पर उसे मार लेते हैं. इस प्रसंग में मुझे गांधीजी का ध्यान आता है. उन्होंने ठीक ही कहा था कि अच्छे लक्ष्य के लिए साधन भी उत्तम होने चाहिए. साधनों की अपवित्रता अच्छे लक्ष्य को भी कलंकित कर देती है. एक तरफ तो आप वर्ग पहेली का पुरस्कार जीतना चाहते हैं, दूसरी ओर आप उस के लिए रुपयाआठ आने भी खर्च करने के लिए तैयार नहीं हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कार्यालयों में रोजाना जो डाक आती है उस में बहुत से व्यक्तिगत पत्र भी होते हैं. उन में पत्रिकाएं और पुस्तकें भी होती हैं. अब होता यह है कि दफ्तर के ही कुछ अनधिकृत लोग लिफाफों को फाड़ कर पत्रिकाएं अपने पास रख लेते हैं. इसी प्रकार कुछ पत्रिकाओं में, जिन्हें कोई व्यक्ति खरीद कर मंगवाता है, कुछ रियायती कूपन होते हैं. इन्हें या तो उड़ा लिया जाता है या गिरा दिया जाता है. जिस व्यक्ति की ये पत्रिकाएं होती हैं उस की इन कूपनों में रुचि हो सकती है. हो सकता है उसे इन की जरूरत हो, पर होता यही है कि कूपन उस तक पहुंचते ही नहीं. फलतः पत्रिका का ग्राहक हो कर भी वह व्यक्ति उस का लाभ नहीं उठा पाता.

दफ्तरों में पानीबिजली की जो फिटिंग्स होती हैं उन के हिस्सेपुरजे चुरा ले जाना एक आम बात हो गई है. दफ्तरों के नलों की टोटियां भी चुरा ली जाती हैं. स्टेशनरी के मामले में तो प्रायः हर रोज ही घोटाले होते रहते हैं. लोग अपनी ही नहीं, दूसरों की पेंसिलें भी उठा ले जाते हैं.

आखिर यह सब कब तक चलेगा? आखिर कब तक हम इसी पर गुजर करते रहेंगे? क्या इस बीमारी का कोई इलाज नहीं है? अमुक वस्तु चुरा ली गई है—इस आशय की सूचियां देख कर क्या हमारी अंतरात्मा हमें कोसती नहीं है? अपनी अंतरात्मा को मार देना बहुत ही बुरी बात है. हमारी इस कुप्रवृत्ति से कोई भी चीज सुरक्षित नहीं है. हमारी इस आदत का असर हमारी संतान पर भी पड़ता है. आज जो हम करेंगे, वही आगे चल कर हमारी संततियां भी करेंगी.

हमें यह याद रखना चाहिए कि छोटी-छोटी चोरियां कर के हम बड़े और पक्के चोर बनते जाते हैं. आज चाहे हम पकड़ में न आएं, पर कल ऐसा हो सकता है. यह सोचने की बात है कि कल जब हम रंगेहाथों पकड़े जाएंगे, तब हमारी अब तक की कीर्ति का, हमारे मानसम्मान एवं ओहदे का क्या होगा? तब हमारी शान और प्रतिष्ठा क्षण भर में ही मिट्टी में मिल जाएगी.

अतः प्रश्न यह है कि क्या इस संभावित खतरे से बचने के लिए आज कोई उपाय नहीं किया जा सकता? निश्चय ही इस से बचने का उपाय है जिसे तुरंत अमल में लाना चाहिए. समझदार व्यक्ति खतरे से पहले ही सजग हो जाते हैं. तो आइए, हम संकल्प करें कि आज से हम ऐसा कोई काम नहीं करेंगे जिस से बाद में हम कलंकित हों. मानसम्मान को बनाए रखना हमारे अपने ही हाथों में है. ●

जलरोधी दियासलाई

गृहिणियों को उस समय कठिनाई का सामना करना पड़ता है जब दियासलाई की डिबिया किसी प्रकार पानी में भीग जाती है या वर्षा के दिनों में नमी से प्रभावित हो जाती है. ऐसी स्थिति में दियासलाई लाख कोशिश करने पर भी नहीं जलती. लेकिन अब इस समस्या का सामना नहीं करना पड़ेगा.

समस्या के समाधान के लिए एक ऐसी दियासलाई का आविष्कार किया गया है जो जलरोधी है. आविष्कारक श्री प्रकाशम ने, जो कडप्पा के महादाया माचिस उद्योग संस्थान के सचिव हैं, तीलियों पर एक ऐसा रासायनिक लेप किया है जिस पर पानी का कोई असर नहीं पड़ता और तीलियां पांच सेकंड तक पानी में रहने के बाद भी तुरंत जल जाती हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेख • सुरेशराम

आदिवासियों का प्यारा "भाई"

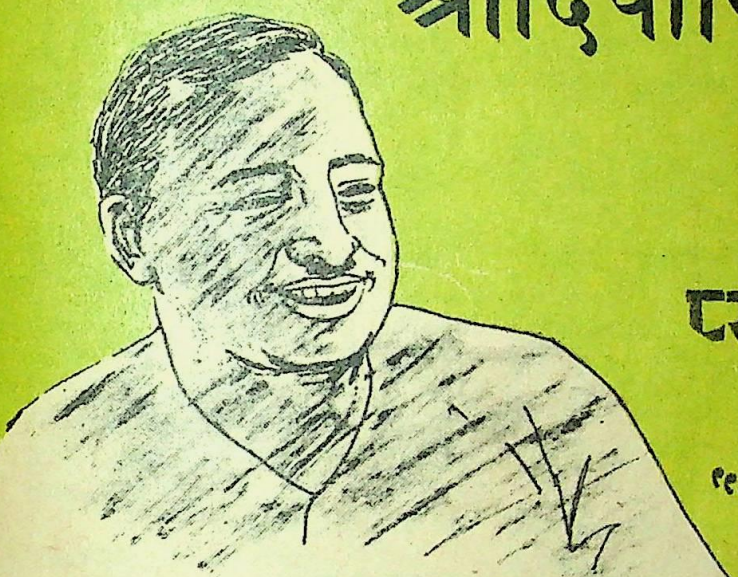

हरीवल्लभ परीख का आनंद निकेतन आज अत्याचार और अन्याय के खिलाफ संघर्ष का प्रतीक बन गया है. इस तरह की संस्थाओं को प्रोत्साहन क्यों नहीं दिया जाता जो ग्राम स्वराज्य के सपने को साकार कर दें?

"भाई, ओ भाई. गजब हो गया. इस जीने से तो मौत बेहतर है, भाई."

"क्या हुआ? कुछ बताओगे भी."

"महकमा जंगल के कर्मचारी बहुत तंग कर रहे हैं. हम बेपढ़ेलिखे आदिवासियों को वे अपने पैर की जूती से भी बदतर समझते हैं."

"क्या किया है उन्होंने?"

"उन्हें मुफ्त में हमारी गायों का दूध चाहिए, मुरगियों के अंडे चाहिए. न दें तो गाली देते हैं, मारते हैं. रिश्वत का तो कोई ठिकाना ही नहीं है. और क तो...बस..."

"कल क्या हुआ?"

"हमारी बीसबाईस जवान बहन बेटियों को मुरगे की तरह उलटा कर उ की पीठ का पुल बनाया. फिर एक मोट तगड़ा जमादार मूंछों पर ताव देता हुआ उन के ऊपर से हो कर चला. जो लड़क जरा भी झुक जाती थी, उस की पीठ प चाबुक पड़ता था. ऐसी बेइज्जती अंगरेजों के राज में भी न कभी देखी थ न सुनी थी."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तुम यह सब देखते रहे?"

"आखिर एक आदमी फारेस्टर पर टूट पड़ा. जंगल वालों ने उस आदमी को बहुत मारा और बंदूकें तान लीं."

"अच्छा, चलो, मैं तुम्हारे साथ चलता हूं."

"हां, भाई, सारा गांव यही चाहता है कि भाई आ जाएं तो इस अन्याय का जवाब दिया जाए."

भाई उस आदिवासी के साथ गांव पहुंचे. सारी दुखभरी कहानी सुनी.

अन्याय के विरुद्ध आवाज

शाम को सभा हुई. नौजवान बड़ी तादाद में थे. उन में से एक ने जोरदार आवाज से गीत गाया :

"मारी एक तमन्ना बाकी छे
हासिल करना ग्राम स्वराज ने
लगनी अमो ने लागी छे."

(हमारी एक तमन्ना बाकी है, ग्राम स्वराज्य प्राप्त करने की इच्छा हम में जागी है.)

सर्वसम्मति से तय हुआ कि तीन आदमियों की एक समिति मामले की पूरी जांच करे और फिर आगे का कदम उठाया जाए.

जब समिति के सदस्य फारेस्टर महोदय के पास पहुंचे तो वह बिगड़ उठे और बोले, "तुम कौन होते हो हमारी जांच करने वाले? खबरदार, अगर सरकारी मामले में दखल दिया तो तुम तीनों पर मुकदमा चलेगा और सजा हो जाएगी."

उन में से एक ने कहा, "आप धोखे में हैं. आप किसी राजा के हाकिम नहीं, जनता के सेवक हैं."

"फालतू बकवास करोगे तो अभी बंद करा दूंगा."

यह कह कर वह गाली देने लगा. समिति के लोग आगे बढ़े और गांव की औरतों तथा अन्य लोगों से मिल कर पूरी रिपोर्ट तैयार की.

दूसरे दिन आसपास के आठ गांवों की सभा हुई. उस में निश्चय किया गया कि यह सभा सरकार से अनुरोध करेगी कि वह मामले की पूरी जांच कराए और अपराधी कर्मचारियों को फौरन हटाया जाए. सरकार जब तक ऐसा न करे तब तक कोई आदिवासी जंगल वालों के लिए घास न काटे और भाई को यह अधिकार दिया जाता है कि वह इस मामले में जरूरी कारवाई करें.

भाई जंगल विभाग के मंत्री और सचिव आदि से मिले. उन्हें असलियत बताई. सब ने जंगल वालों की हरकत पर दुख प्रकट किया. कुछ दिन बाद एक बड़ा अधिकारी गांव आया. हजारों लोग जमा थे. सब के सामने उस ने जंगल विभाग की तरफ से माफी मांगी. पुराने अधिकारियों को हटा कर नए नियुक्त किए गए और आगे ऐसा कोई अत्याचार न होने देने का आश्वासन दिया गया. आकाश जयघोष से गूंज उठा..."महात्मा गांधी की जय! भाई की जय!"

यह भाई है कौन?

कौन है यह 'भाई' जो बड़ौदा जिले के आदिवासियों का हृदय सम्राट बन गया है?

नाम है हरिवल्लभ परीख. उन का जन्म 15 सितंबर, 1925 को सौराष्ट्र (गुजरात) के सुरेंद्रनगर जिले के ध्रांगध्रा गांव में हुआ था. पांच भाइयों और दो बहनों में हरिवल्लभ सब से छोटे हैं. दादा श्री मनोरभाई महादेवभाई परीख ध्रांगध्रा राज्य के दीवान थे. राज्य की तरफ से ही उन के पिता दामोदरभाई मनोरभाई परीख को प्रतापगढ़ (मालवा) के राजा का सेक्रेटरी बना कर भेजा गया. उन की माता श्रीमती गोदावरी बहन राजकोट के सुप्रसिद्ध वकील अजमानीभाई बोहरा की लड़की थीं.

हरिवल्लभ की प्रारंभिक शिक्षा मातापिता के पास प्रतापगढ़ में हुई. अंगरेजी की तालीम के लिए वह राजकोट में अपने मामा के पास आ गए. एल्फ्रेड हाई स्कूल से दसवीं पास की. बाद में ऊंची

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिक्षा के लिए महात्मा गांधी द्वारा खोले गए गुजरात विद्यापीठ (अहमदाबाद) आ गए. चार महीने बाद सन 1942 का 'भारत छोड़ो' आंदोलन छिड़ गया. विद्यापीठ पर पुलिस का कब्जा हो गया. हरिवल्लभ भी पकड़े गए और छः महीना जेल में रहे. इस के बाद जीवन की दिशा ही बदल गई और वह राष्ट्रीय संस्कारों से ओतप्रोत हो गए.

उन्होंने सेवाग्राम पहुंच कर समग्र ग्राम सेवा विद्यालय में खादी व रचनात्मक कार्य का पूरा शिक्षण लिया. वहीं बापू के पास रहने का अवसर मिला और कुमारप्पाजी, जाजूजी, जमनालालजी, किशोरलाल मश्रुवाला, नरहरि परीख आदि मनीषियों से संपर्क हो गया. वहां तीन बातें खास तौर से सीखीं——स्वावलंबन, श्रमनिष्ठा और सादगी. सन 1946 में प्रभा बहन से शादी की.

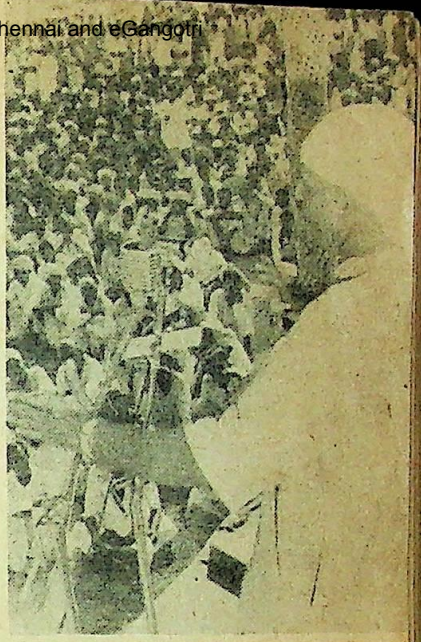

भाई ने लोगों को एकजुट हो कर काम करने की प्रेरणा दी.

सार्वजनिक जीवन में प्रवेश

उन्हीं दिनों देश में जगहजगह सांप्रदायिक दंगे हो रहे थे. उन्होंने दिल्ली से अजमेर तक के क्षेत्र में काम किया. एक जगह उन्हें कुछ मुसलमान अल्पसंख्यकों को बचाने के लिए अपने प्राणों की बाजी लगा देनी पड़ी. उन्होंने उन्हें बचा तो लिया, मगर इस के लिए उन्हें मार भी बहुत खानी पड़ी. हमेशा के लिए उन की गरदन पर चोट आ गई. हवा व धूप लगते ही उस में दर्द होने लगता है. इसी वजह से वह सिर पर रूमाल लपेट कर गरदन को ढके रहते हैं. कभीकभी कई रोज तक नींद भी नहीं आती है.

आजादी के बाद उन में ग्रामसेवा की धुन सवार हो गई.

प्रश्न उठा——ग्रामसेवा के लिए कहां जाएं? कई संस्थाओं में काम किया, पर मन को संतोष नहीं हुआ. आखिर घूमतेघामते बड़ौदा जिले के आदिवासी क्षेत्र में पहुंचे. पहाड़ी इलाका था. प्रकृति की निराली छटा. मगर इनसान की करतूतें उतनी ही काली थीं. जंगल के कर्मचारी, साहूकार और व्यापारी आदिवासियों क मनमाना शोषण करते थे. गुलामी बदतर हालत थी.

1948 के जाड़े के दिन थे.

हरिवल्लभ और प्रभा बहन बांट गांव में एक पेड़ के नीचे डट गए. गां वालों को शक हुआ कि कोई महाजन जो लूटने आया है. बहुत शंका की निगा से देखते और दूरदूर रहते. प्रभा बहन भी सेवाग्राम में नई तालीम की ट्रेनि ली थी. हरिवल्लभ इरादे के पक्के थे.

गांव के बच्चे उन के पास आने लगे प्रभा बहन उन के मुंह और हाथपै धोतीं, उन्हें कहानी सुनातीं, उन्हें खे खिलातीं और भजन सिखातीं. हरिवल्ल को पता चला कि गांव में लोग आपस झगड़ते हैं और कभीकभी तो कत्ल भ हो जाता है. एक दुखिया आया, उस क दर्दभरी कहानी सुनी. उस ने इनसा चाहा. एकतरफा तो कोई फैसला नह किया जा सकता था. दूसरी तरफ वा भी आए. दोनों की पूरी दास्तान सुनी बीचबचाव किया. दोनों को बात कबू

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ई और दोनों ने ही तारीफ की. गांव
ी रंजिश मिटी. लोगों को लगा कि यह
ोड़ी तो कुछ दूसरे ढंग की है. बेरुखी
र हुई. किसी ने अनाज पहुंचा दिया,
किसी ने दूध, किसी ने छाछ.

सर्दी पड़ ही रही थी. सारे गांव ने
ाग्रह किया--पेड़ के नीचे रहना ठीक
हीं. अस्थायी तौर पर एक घर में चले
ए. सब ने मिल कर एक कच्चा मकान
ीन दिन में खड़ा कर दिया. फिर उस में
हने लगे.

ांव वालों से संपर्क

गांव वालों से नाता बढ़ता गया.
ासपास के गांवों के लोग 'भाई' के पास
पना दुखड़ा ले कर आने लगे. रोज
काध मामला पेश हो जाता. भीड़ लगने
गी. 'भाई' की अदालत बैठती. उसे
न्होंने नाम दिया--'लोक अदालत.'
कदमों का फैसला होता और इलाके की
वा बदलने लगी.

एक मामला कत्ल का आया.

किसी के घर मेहमान आए थे. दावत
मुरगा चाहिए था. उस की घरवाली
कहा, "अमुक के पास है, वहां से ले
ाओ." वह गया. मुरगा ले आया. दाम
क महीने में चुकाने का वादा किया,
हीं चुका पाया. मुरगे वाले ने जा कर
पना पैसा मांगा. उस ने आनाकानी की.
ार दिन बाद फिर गया. वही इनकार.
स ने अपना तकाजा कड़े लफ्जों में
या. गाली दे दी.

बस फिर क्या था. "मेरी घरवाली
सामने तू ने गाली दी है."

चलाया तीर. वह वहीं ढेर हो गया.

मारने वाला दौड़ा आया भाई के
स. भाई गांव पहुंचे. लोक अदालत
ठी. फैसला हुआ कि हत्यारा विधवा को
च सौ रुपए नकद देगा, जब तक उस
बच्चे (जो आठ व दस बरस के थे)
ड़े न हो जाएं, उस के खेत पर जा कर
ाम करेगा और अगर बच्चे कुछ कहें तो
ाई जवाब नहीं देगा.

इस फैसले से सब ने सहमति प्रकट
की. समझौते के मुताबिक काम होने लगा.
किसी को न कोई शिकवा था, न
शिकायत.

कुछ दिन बाद भाई के पास पुलिस
पहुंची और उन से सवाल किया, "यह
आप ने क्या किया? इस तरह आप कानून
हाथ में लेंगे तो कैसे चलेगा?"

भाई पुलिस कप्तान से मिले. जिला
जज से भी मिले. सच्चा किस्सा बताया.
आपस में यह तय हो गया कि मारने
वाला कह देगा कि पहले मुझे मारा और
बचाव में मैं ने तीर छोड़ा. सरकारी कोर्ट
में मामला पेश हुआ. हत्यारे ने सही बात
कह दी, "मुझे गुस्सा आ गया, मैं ने खुद
मार दिया. मैं झूठ नहीं बोल सकता."

जज भी हैरान.

आखिर हत्यारे की पत्नी ने बयान
दिया कि आने वाले ने हमला किया और
जवाब में उस के पति ने, अपनी हिफ़ाजत
के लिए, तीर चलाया.

किसी तरह मामला खत्म हुआ.

भाई और उन की लोक अदालत पर
लोग लट्टू हो गए.

शोषण के विरोध में

इसी बीच बंबई राज्य सरकार ने
(उस समय मुख्य मंत्री श्री मोरारजी-
भाई देसाई थे) भाई को सोलह एकड़
जमीन दे दी. इस पर उन्होंने अपनी
कुटिया बना ली. धीरेधीरे पूरा आश्रम
बस गया. नाम दिया आनंद निकेतन--
जैसा नाम वैसी जगह.

भाई ने देखा कि आपस के झगड़ों के
अलावा इस इलाके के दो रोग हैं--पैदा-
वार की कमी और महाजनों द्वारा शोषण.
शोषण का कारण बहुत हद तक पैदा-
वार न होना है. जब खेत से फसल
नहीं होती तो जरूरत की खातिर किसान
को कर्ज लेना पड़ता है और वह महाजन
के चंगुल में फंसता चला जाता है. इस से
वह अपनी जमीन से भी हाथ धो बैठता
है और लाचारी का शिकार हो जाता है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

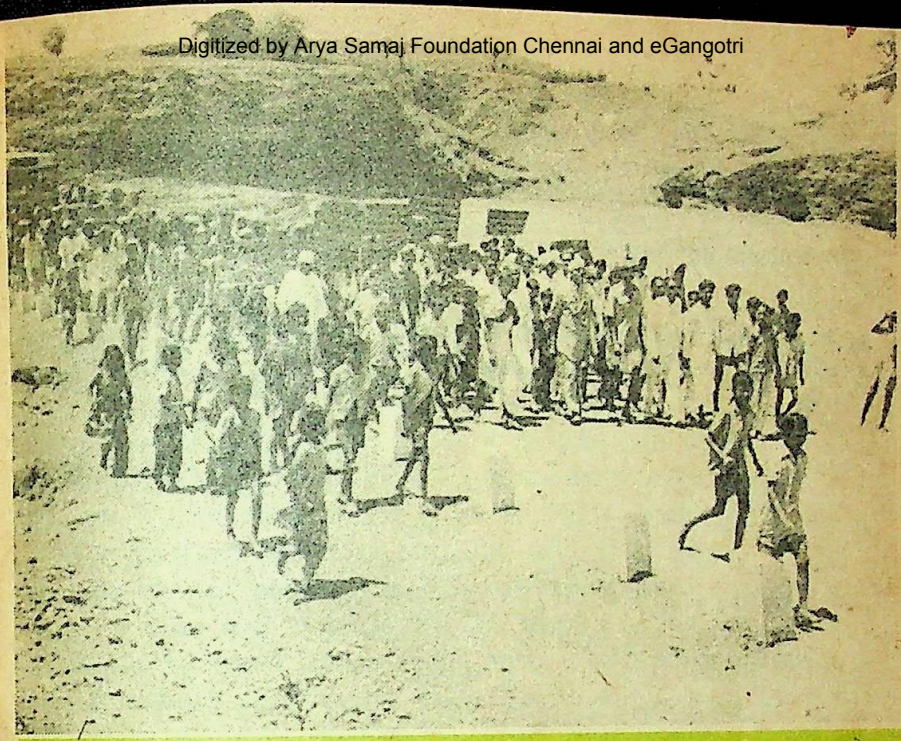

जमींदारों के अत्याचार के खिलाफ एक जुलूस का नेतृत्व करते हुए भाई.

इसलिए इस इलाके का संकट दूर करना है तो खेती को बढ़ावा देना होगा.

लेकिन कैसे? खेती के लिए जरूरी है कि पानी का प्रबंध हो.

जब तक पानी नहीं तब तक खेती नामुमकिन है. केवल बरसात के सहारे रह कर किसान की गुजर नहीं. भाई ने छानबीन शुरू की. देखा कि कुओं में पानी है, मगर कम. कहींकहीं तो कुएं भी नहीं हैं. इसलिए दोनों काम होने चाहिए. पुराने कुएं गहरे किए जाएं और नए कुएं या नलकूप लगाए जाएं. मगर सवाल यह था कि यह काम हो किस तरह. जाहिर है कि व्यक्तिगत रूप से किसान में इतनी सामर्थ्य नहीं थी कि वह खर्च बरदाश्त कर सके.

भाई ने सहकारी योजना शुरू कर दी. 22 दिसंबर, 1950 को रंगपुर गांव में बहुधंधी सेवा सहकारी समिति की स्थापना की गई. 257 निवासियों ने मिल कर 3,970 रु. लगाए और समिति खोल दी. अब इस के लगभग साढ़े चार सौ सदस्य हैं और साझा पूंजी एक लाख के करीब है. इस के पास तीन लाख रुपए से ऊपर की संपत्ति है. इस का अपना एक भंडार है और यह काश्तकारों को खाद व औजार खरीदने के लिए कर्ज देती है. इस के व्यापार का लौटफेर लगभग पचीस लाख रुपए का होता है. इस का काम सौ गांवों में फैला है.

भाई ने समिति को बैंक से कर्ज दिलाया. बैंक को डर था कि गांव को दिया रुपया बट्टेखाते में जाएगा, मगर रंगपुर से एक साल बाद हर तीसरे महीने ब्याज मिलने लगा और रकम भी अदा हो गई.

बैंक वाले दंग रह गए. भाई ने कहा, "ये मामूली किसान नहीं, ये ईमानदार और शानदार लोग हैं और जबान के सच्चे व पक्के हैं."

इस इलाके का नाम फेनाई है. यह बड़ौदा शहर से लगभग सवा सौ किलोमीटर की दूरी पर है. इस में हेरन नदी बहती है. यह नर्मदा नदी की शाखा है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस में 750 गांव हैं, जिन की आबादी लगभग साढ़े सात लाख है. कुल जमीन 3,75,000 एकड़ है. इस में से 55,000 एकड़ पर अब सिंचाई हो रही है. 322 कुएं बन गए हैं और 397 पंप लग गए हैं. यह सारा काम गांव वालों ने अपनी मेहनत से किया है.

जब जमीन को पानी मिलने लगे तो हरी क्रांति में देर क्या? 1968 में जिस जमीन पर 100 एकड़ में मुश्किल से 350 क्विंटल अनाज होता था, 1970-71 में सिंचाई के बाद 1650 क्विंटल अनाज हुआ. जहां मक्का मुश्किल से होती थी, वहां गेहूं और धान हो रहा है. और जब पैदावार बढ़ेगी तो किसान के रहनसहन के स्तर में भी फर्क पड़ेगा. कई गांवों में पक्के मकान खड़े हो गए हैं और जीवन सुधर गया है.

भूदान की जमीन

फेनाई क्षेत्र में भूदान का काम 1952 में शुरू हुआ. 1857 एकड़ जमीन हरिवल्लभ भाई को मिली और वह उन्होंने एक साल में भूमिहीनों को बांट दी. 1956 में ग्रामदान भी शुरू हुआ. गुजरात प्रदेश में पहला ग्रामदान इस इलाके के गांव का हुआ. 1969 तक 353 गांव ग्रामदान में आ गए. यहां के ग्रामदान अनोखे हैं. भाई ने तीन शर्तें रखीं—जमीन की मुक्ति होनी चाहिए (दूसरों के कब्जे से), उस पर ग्राम के लोगों का सामूहिक स्वामित्व हो और जमीन का लगभग समान बंटवारा हो. भाई ने आपस की एकता पर हमेशा जोर दिया. यही कारण है कि देश भर में बड़ौदा के ग्रामदान सब से ज्यादा सफल रहे हैं.

एक चीज की कमी भाई को हमेशा खटकती थी—शिक्षा का अभाव. जब तक बच्चों को सही तालीम नहीं दी जाएगी, उन का उन्नति करना नामुमकिन है. भाई ने आश्रम में पाठशाला खोल दी. 1949 में दस बच्चों से इस की शुरुआत हुई. अब इस में अस्सी बच्चे हैं. बच्चे वहीं रहते भी हैं. न पढ़ाई की फीस, न रहने और खानेपीने का खर्चा. सारा खर्च आश्रम बरदाश्त करता है. पढ़ाई के साथ साथ बच्चे खेती व दस्तकारी का काम भी सीखते हैं. आठवें दरजे तक की पढ़ाई चलती है. बढ़ईगीरी, लोहारी, औजार बनाना, कोल्हू की मरम्मत, ट्रैक्टर चलाना आदि हुनर सिखाए जाते हैं. अब तक यहां से लगभग चार सौ बच्चे पढ़ कर निकले हैं.

कमाल यह है कि कोई सरकारी नौकरी में नहीं गया. सब अपने गांव में खेती व उद्योग करते हैं और अपने पांव पर खड़े हैं. कुछ ने तो अपने क्षेत्र में कीर्ति भी पाई है. आगे उन से और भी उम्मीदें हैं.

इस क्षेत्र में जाने पर पता चलता है कि असली विकास कैसा होता है. लोगों के चेहरे खुद बताते हैं कि उन्होंने कितना परिश्रम किया है और अपना जीवन बदला है. एक गांव में हम गए. किसान भाइयों से बातें कीं. हमारे साथ एक वकील साहब भी थे. उन्होंने एक आदमी से पूछा, "तुम्हें किस चीज की जरूरत है? कुछ पूंजी चाहिए क्या?"

अपनी मेहनत पर भरोसा

वह अनपढ़ लेकिन समझदार किसान मुसकराने लगा. फिर बोला, "पैसा ले कर क्या करेंगे? हाथ का मैल है. जब आपस में एका है और अपने में मेहनत करने का दम है तो पैसा अपनेआप आता है."

"और कुछ चाहते हो?"

"हमें कुछ नहीं चाहिए."

बगल में दूसरा किसान बैठा था. उस ने कहा, "अगर हमारे गांव में बिजली आ जाए तो हम अपनी सहकारी समिति के जरिए गांव के लिए बहुत कुछ कर सकते हैं."

वकील साहब कुछ शरमा गए और बोले, "यह तो आप के 'भाई' ही करा सकते हैं."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाद में वह मुझ से बोले, "कैसा ऊंचा मानस है इन लोगों का. भाई ने सचमुच बड़ा काम किया है, ऐसा उदाहरण कहीं मुश्किल से ही मिलेगा."

सच बात है. देश में कहीं भी इस तरह से ग्रामनिर्माण का काम नहीं हुआ है. कारण यह है कि कहीं भी ग्रामसेवक शोषण के खिलाफ न तो जागृति पैदा करते हैं और न उस का मुकाबला करते हैं. जो चलता है, उसी को चलने देते हैं. ऊपर से कुछ सफाई, शिक्षा, उद्योग आदि के कार्यक्रम खोल देते हैं और उसी को विकास कह कर अपने ढोल पीटते हैं. नतीजा यह होता है कि गांव का संपन्न या धनी वर्ग और ज्यादा शक्तिशाली हो जाता है. सरकार से मिलने वाली मदद का फायदा वह उठाता है और भूमिहीन या मजदूरीपेशा को और ज्यादा सताने लगता है जिस से विषमता बढ़ती है.

हरिवल्लभ ने इस चीज को जड़ से पकड़ा है और शोषणयुक्त संबंधों पर कुठाराघात किया है. खास रंगापुर गांव की 85 प्रतिशत जमीन एक बड़े साहूकार के पास थी. उस का मनमाना राज्य चलता था. भाई ने उस के पंजे से वह जमीन मुक्त करा कर मूल मालिकों को दिलाई. कई जगह उन्होंने सत्याग्रह चलाए, उपवास किए, जेल गए और अंत में विजय आदिवासियों की हुई. अक्तेश्वर का सत्याग्रह तो देश भर में प्रसिद्ध है.

नई चेतना पैदा करने में लोक अदालत का बड़ा हाथ है. भाई की इस खुली अदालत में सैकड़ों लोग आते हैं व न्याय पा कर गद्गद् हो जाते हैं. गत नवंबर में जब मैं आनंद निकेतन गया तो इस अदालत का इजलास देखा. बड़ा ही रोमांचक और प्रेरणादायक दृश्य था.

इस लोक अदालत में अब तक लगभग पचीस हजार मामले तय हो चुके हैं. आपस का वैरभाव मिटाने और राजीखुशी से झगड़े को निपटा कर प्यार का नाता कायम करने में इतनी सफलता शायद ही

भाई का असर इतना था कि उन की कही बात कोई नहीं टालता था : नहर बनाते हुए गांव वाले.

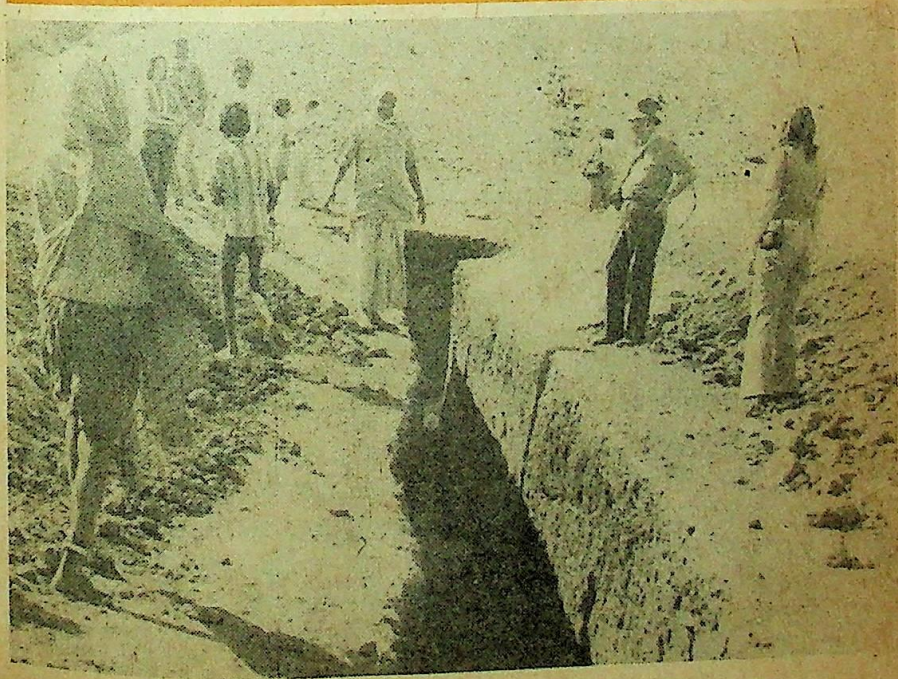

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहीं मिली होगी. कम से कम मेरी जानकारी में नहीं है. इन पचीस हजार में आधे से ज्यादा, लगभग पंदरह हजार तो पतिपत्नी संबंधी होंगे, छः हजार जमीन के बंटवारे के बारे में, तीन हजार मारपीट के, एक हजार हत्या या हत्या के इरादे के और कुछ चोरी के. धीरेधीरे ये झगड़े कम होते जा रहे हैं.

पारिवारिक सुलह

पतिपत्नी संबंधी दो प्रसंगों से पता चलेगा कि ये झगड़े किस तरह के होते है.

आठ साल पहले एक शादी हुई. मगर पत्नी कुछ दिन ससुराल रह कर अपनी मां के घर चली जाती थी. एक साल तक वह आई ही नहीं. अदालत के सामने मामला आया. भाई ने पति से पूछा कि तुम ने क्यों छोड़ दिया? उस ने जवाब दिया, "मैं ने नहीं छोड़ा, अब भी रखने को तैयार हूं." फिर पत्नी से पूछा तो वह बोली, "मैं आज भी इन के साथ रह सकती हूं लेकिन एक बात है."

भाई के पूछने पर वह बोली, "मुझे बोलते हुए शरम आती है, मेरे ससुर की मेरे ऊपर बुरी निगाह है. घर में दूसरों के सामने तो मुझ से घूंघट काढ़ने को कहते हैं, पर अकेले होती हूं तो...इसलिए अलग घर हो, तभी रह सकती हूं."

ससुर लजा गया. लेकिन सचाई से इनकार नहीं कर सकता था. उस ने बेटे को अलग मकान देने का वादा किया. अदालत ने उसे चेतावनी दी और कहा—अगर फिर कभी अपनी बहू के साथ दुर्व्यवहार किया और अदालत के सामने साबित हो गया तो पांच सौ रुपए जुरमाना देना पड़ेगा और तुम्हारे लड़के का कोई हक पत्नी पर नहीं रहेगा. उस ने मंजूर किया. पत्नी बहुत खुश हुई और पति का हाथ पकड़ कर उसे लिवा ले गई.

दूसरा मामला : पांच बच्चों की मां नोनी की तबीयत खराब रहती थी. उस के पति ने एक साधु की दवा की. उस से तबीयत सुधरने लगी. साधु उसी घर में रहने लगा. उस में और नोनी में संबंध हो गया. एक दिन नोनी उस के साथ घर छोड़ कर चली गई. दोनों जने दूसरे गांव में बस गए. कुछ दिन बाद साधु को पीटा गया. नोनी ने अदालत में शिकायत की कि उस के पहले वाले पति ने ही पिटवाया है.

लोक अदालत के सामने नोनी ने बयान दिया कि साधु से मिलने उस के चेले आते थे. वे पैसा, अनाज, फलफूल भेंट दे जाते थे. उस पैसे से हम लोग अपना काम चलाते. पति भी आलसी हो गया और कुछ कमाई नहीं करता था. एक दिन बोला कि तू आजाद है, मगर अपने बाप के घर मत जाना तो इस की इजाजत से मैं साधु के साथ चली गई. मेरे नए घर पर भी यह आता और पैसा ले जाता. इसी बीच मेरी छोटी बहन विधवा हो गई. उस के तीन बच्चे थे. मेरे पति ने बहन व बच्चों को अपने पास रख लिया. फिर साधु को पिटवा दिया. ऊपर से पैसा भी मांगता है.

सर्वमान्य फैसला

पति ने अपने बयान में कहा, "मैं ने इसे घर छोड़ने की इजाजत कभी नहीं दी. यह अपनेआप गई साधु के साथ. हां, इस की बहन का दुख देख कर मैं ने उसे अपने पास जरूर बुला लिया. अब मैं नोनी को वापस नहीं ले सकता. शादी के वक्त इस के बाप को जो पैसा मैं ने दिया था वह मुझे साधु से मिलना चाहिए."

साधु ने कहा, "मैं नोनी को नहीं रखना चाहता. उस का आदमी उसे चाहे तो ले जाए. जो भी हो मेरे पास देने के लिए पैसा नहीं है."

तुरंत नोनी बोली, "यह सही कहते हैं. मैं ही इन के साथ गई हूं. यह साधु आदमी हैं पैसा कहां से देंगे."

जब यह पता चला कि साधु कबीरपंथी है तो अदालत में बैठे कुछ कबीरपंथी लोग बहुत गुस्सा हुए और साधु को मारने उठे. लेकिन भाई के समझाने पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मच्छरों ने जीना हराम कर दिया

सबसे ज्यादा बिकने वाला—मच्छर को दूर भगाने वाला

आपको चाहिए-

ओडोमॉस

जिसे लाखों लोग विश्वासपूर्वक इस्तेमाल करते हैं।
नन्हें मुन्नों के लिए भी बिलकुल सुरक्षित.

बलसारा
—सुखी जीवन के लिए
आधुनिक साधन

BALSARA बलसारा पण्ड कं. (प्रा.) लि.
४१, नमिनदास मास्तर रोड, बंबई ४०० ०२३.

CHAITRA BLS 45 HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ठंडे पड़ गए. मामले को सुलझाने के लिए भाई ने कहा कि तीनों तरफ से दोदो आदमी आ जाएं और ये पंच आपस में सलाह कर के आधे घंटे में अपना फैसला दे दें.

पंचों ने तय किया कि नोनी साधु के साथ रहे, लेकिन साधु को ढाई सौ रुपए जुरमाना अदा करना चाहिए और नोनी की बहन नोनी के पति के साथ रहे. इस पर भाई ने कहा कि साधु को उसी ने पिटवाया था, इस की सजा भी उसे मिलनी चाहिए. इस पर साधु का जुरमाना पचास रुपए कम कर दिया गया.

अंत में नोनी बोली, "मुझे अपने बच्चों से मिलने की छूट होनी चाहिए." पति बिगड़ उठा, "मैं इसे अपने घर में पैर नहीं रखने दूंगा." तब भाई ने समझाया कि अब तो सब के सामने तलाक हो गया इसलिए नोनी का कोई हक तुम पर या बच्चों पर नहीं होगा. मेहमान की तरह आएगी और बच्चों से मिल कर चली जाएगी. वह मान गया. इस तरह सारा मामला सर्वसम्मति से निपट गया.

सस्ता न्याय

हम लोग सस्ते न्याय की और गरीबों को वकीलों की मदद की बात करते हैं. लेकिन यह भूल जाते हैं कि आज झगड़े बढ़ाने और सही न्याय न दिलाने के लिए पुलिस और सरकारी व्यवस्था भी बहुत कुछ जिम्मेवार है. रंगपुर की लोक अदालत में न पुलिस है, न वकील, न कोई बड़ा तंत्र. जनता का सच्चा दरबार लगता है और पंचों की राय से काम होता है जिस पर भाई की सहमति की मुहर लग जाती है. हमें विश्वास है कि आगे चल कर खुली लोक अदालत का तौरतरीका सारे देश को स्वीकार होगा.

किसी इलाके में ऐसा शानदार काम हो रहा हो तो देखने वालों का तांता लग जाना स्वाभाविक है. देश के विभिन्न कोनों से भाई के पास कार्यकर्ता, वकील, जीवी--सभी तरह के लोग पहुंचते हैं. कालिजों और यूनिवर्सिटियों के विद्यार्थी भी आते हैं.

लगभग ढाई हजार छात्रों और छात्राओं ने भाई के आश्रम में लगने वाले शिविरों में हिस्सा लिया है. विदेश से भी लोग बड़ी तादाद में आते हैं. कई परोपकारी संस्थाएं आर्थिक मदद भी देती हैं. भाई 'सर्वास' नाम की एक अंतर्राष्ट्रीय संस्था के उपाध्यक्ष हैं और उस की भारतीय शाखा के अध्यक्ष. भाई कई बार विदेश जा चुके हैं. 1953-54 में वह पहली बार बाहर निकले और चीन गए. 19[illegible] में वह बर्मा व इंडोनेशिया गए और 19[illegible] में जापान व हांगकांग. 1970 में उन्होंने ढाई महीने यूरोप व अमरीका की यात्रा की. 1972 व 1974 में पश्चिमी देशों में गए. आश्रम में कोई न कोई विदेशी प्रायः रहता ही है.

पिछले पचीस बरस में रंगपुर की शक्ल ही बदल गई है. अब और बदल रही है. नवयुवतियां और युवक आगे तैयार हो रहे हैं, जो रंगपुर के नमूने पर अन्याय और अत्याचार का मुकाबला करेंगे. ग्राम स्वराज्य के स्वप्न देखते हैं. उन का लक्ष्य एक नए जीवन का निर्माण करना है, जो सत्य, अहिंसा, समता, श्रम और संयम की पंचशिला के आधार पर खड़ा होगा. आनंद निकेतन में भाई हरिवल्लभ परीख की आप को दावत है--आइए और समाज की रचना के इस अद्भुत कार्य में हाथ बंटाइए.

तड़पने वाले...

उतरने वाले अभी तक न बाम से उतरे,
तड़पने वाले तड़प कर फलक को छू आए.
--रियाज खैराबादी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रश्न : हम अपनी गलतियों के लिए किसे जिम्मेवार ठहराएं?

उत्तर : हमारे देश में इस सवाल का एक ही जवाब है--भगवान. सदियों से हम अपनी बेवकूफियों के कारण हुई गलतियों के लिए भगवान को जिम्मेवार ठहराते रहे हैं. यदि आप समझते हैं कि यह सब पुराना हो गया है और कुछ नए बहाने चाहिए तो पाकिस्तान के प्रधान मंत्री भुट्टो का अनुसरण करें.

जनाब भुट्टो ने एक साक्षात्कार के दौरान बताया कि बलोचिस्तान की समस्या का असली कारण मुगल सम्राट अकबर की नीति थी. वैसे तो वह समन्वय में विश्वास रखता था, पर पृथकतावादियों को भी हवा दिया करता था. भुट्टो ने ऐसा कह कर एक तीर से कई शिकार मारे हैं. पाकिस्तान में होने वाली हर गड़बड़ के लिए भुट्टो ने विपक्षी दलों और पूर्व शासकों को जिम्मेवार ठहराने की अपनी पुरानी चाल को छोड़ कर यह दिखा दिया है कि उन के तरकश में बहानों की कोई कमी नहीं है.

कल यदि कोई पूछेगा कि पाकिस्तान में शराब की खपत क्यों बढ़ती जा रही है तो जवाब मिलेगा--इस के लिए अकबर का बेटा जहांगीर दोषी है. और अगर कोई पूछेगा कि आप के वजीर और आप स्वयं आलीशान महलों में क्यों रहते हैं? जवाब है--इस के लिए जहांगीर का बेटा शाहजहां दोषी है.

मुसलमानों के जमाने में ऐसेऐसे चरित्र पैदा हो चुके हैं कि हमें हमारी हर गलती के लिए कोई न कोई जिम्मेदार मिल ही जाएगा. भारत में एक नया फैशन चल पड़ा है. जब भी कोई नया हवाई जहाज उड़ाया जाता है या नया होटल खोला जाता है तो उस का नाम या तो अशोक होता है या अकबर. अकबर को दोषी ठहरा कर भुट्टो ने अपना भारत विरोध भी प्रकट कर दिया है.

अब तक यही माना जाता था कि मुसलमानों में अलगाव की भावना जिन्ना

सवाल यह है कि भुट्टो साहब ने जिन्ना के सिर का सेहरा अकबर के ताज पर क्यों रख दिया?

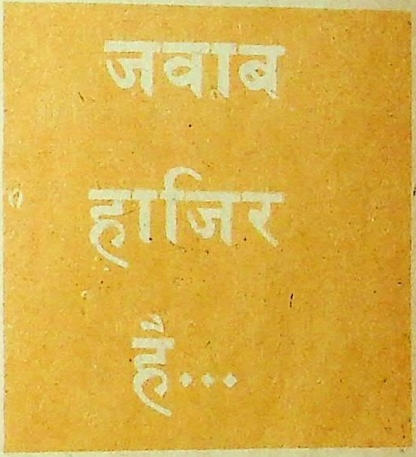

ने भरी थी और उसी ने पाकिस्तान बनवाया था. भुट्टो साहब ने जिन्ना के सिर से यह सेहरा छीन कर अकबर के ताज पर रख दिया है.

प्रश्न : पाकिस्तान में उच्च असैनिक पदों पर सैनिकों को क्यों बैठाया जा रहा है?

उत्तर : शासक एक ही थैली के चट्टेबट्टे होते हैं. भुट्टो साहब ने सोचा है या तो कुरसी पर मैं ही बैठूंगा या इसे ले कर समुद्र में कूद जाऊंगा. विपक्षी दलों को सत्तारूढ़ नहीं होने दूंगा. इस के लिए जरूरी है कि सैनिकों के मुंह सत्ता का खून लगता रहे. ठीक भी है, भुट्टो के बाद यदि वर्तमान विपक्षी नेता सत्ता में आ गए तो सब से पहले भुट्टो की हेराफेरियों को मैदान में लाएंगे.

प्रश्न : मौलाना भाषानी दोबारा भारतसमर्थक कैसे बन गए?

उत्तर : यदि यह समाचार सही है तो उन का भारत समर्थक होना स्वार्थ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर आधारित है. बंगला देश के लिए पूर्ण स्वतंत्रता की मांग सर्वप्रथम मौलाना साहब ने ही की थी और भारत से मदद भी मांगी थी. कुछ दिन भारत के गुण गाए भी थे. लेकिन अचानक भारत विरोधी बन गए. बने भी क्यों न? स्वतंत्रता जो उपहार में मिल गई थी.

अब पुनः पाकिस्तान की गुलामी के से हालात पैदा हो गए हैं. खाने के लिए अन्न नहीं, पहनने के लिए कपड़े नहीं. सब से बड़ी बात तो है कि नाममात्र की स्वतंत्रता नहीं है. अखबार सरकारी भोंपू बन कर रह गए हैं. लोग मनमरजी से स्वतंत्रता दिवस भी नहीं मना सके. गुलामी की यह मार मौलाना साहब को भारत समर्थक बनने के लिए मजबूर कर रही है. लेकिन हर बार स्वतंत्रता उपहार में नहीं मिलती है. अपने देश की आजादी की रक्षा देश की जनता ही कर सकती है.

प्रश्न : अंगोला में एम. पी. एल. ए. की विजय से पश्चिमी राष्ट्र क्षुब्ध क्यों हैं?

उत्तर : जो वास्तविक रूप से क्षुब्ध हैं और जिन के पेट में मरोड़ उठ रहे हैं, उन की तरफ किसी ने ध्यान नहीं दिया. रूस के ठोस समर्थन के कारण एम. पी. एल. ए. ने थोड़े से समय में लगभग पूरे देश पर कब्जा कर लिया है. जब कि इस पार्टी से एक अक्षर कम, पी. एल. ए. (फिलीस्तीनी मुक्ति मोर्चा), जो तेल के धनी राष्ट्रों के गोद गई हुई पार्टी है, अभी तक एक जिले पर भी अधिकार नहीं जमा सकी है. रूस के प्रबल समर्थन के बावजूद ये अभी मारेमारे फिर रहे हैं.

लगता है, अरब राष्ट्रों ने कभी भी फिलीस्तीनियों के भले के लिए गंभीरता से नहीं सोचा है. इजराइल को तहसनहस करने का सपना देखते हुए इन शरणार्थियों का राजनीतिक मोहरे के रूप में उपयोग किया है. फिलीस्तीनी युवकों को हथियारबंद कर के, अपना उद्देश्य पूरा करने के लिए, अरब राष्ट्राध्यक्षों ने अपराधपूर्ण कारवाइयां उन से करवाई हैं. जरूरत इस बात की है कि ईमानदारी से इजराइल के अस्तित्व को स्वीकार [illegible] जाए, दुराग्रहपूर्वाग्रह छोड़ कर शांति समाधान खोजा जाए.

प्रश्न : सी. आई. ए. ने बड़े भयं[illegible] कांड किए हैं. अमरीका दूसरे देश[illegible] सत्ता उलटनेपलटने में क्यों लगा है?

उत्तर : अमरीका ही क्यों, दु[illegible] के सभी शक्तिशाली देश अपने से [illegible] जोर और छोटे देशों की सरकारों को [illegible] पुतलियों की तरह नचाते रहे हैं. पर [illegible] इस की फिक्र क्यों करें? न तो हम [illegible] में हैं और न आने की उम्मीद है.

सी. आई. ए. एक और भयं[illegible] सत्यानाश करवा रही है, जिस की [illegible] किसी का ध्यान नहीं गया है. वह दु[illegible] के गरीब लेखकों के पेट पर लात [illegible] रही है. आजकल रहस्य, रोमांच [illegible] अपराध कथाओं के लेखकों की ही [illegible] बोल रही है. इन में सत्यकथाओं [illegible] लेखकों के तो और ज्यादा मजे हैं.

काल्पनिक कथाओं को सत्य का [illegible] दे कर उन्होंने लोगों को सत्यकथा [illegible] बना दिया है. सी. आई. ए. अपनी [illegible] खुलवा कर अखबारों में छपवा रही [illegible] पाठक भी लेखकों की सत्यकथाओं [illegible] छोड़ कर इन में ज्यादा रुचि लेने लगे [illegible] सिर्फ सी. आई. ए. ही क्यों, पूरा [illegible] रीका रहस्यमय द्वीप बनता जा रहा [illegible] कभी अनाज कम तोलने का तो [illegible] विमान कंपनी द्वारा शासकों को रि[illegible] देने का--नित्य एक नया रहस्योद्घ[illegible] हो रहा है. लगता है, अमरीका के अ[illegible] गरीबों (लेखकों) को जीने नहीं देंगे.

प्रश्न : हमारी फिल्में इतनी प्रभ[illegible] हीन क्यों होती हैं?

उत्तर : जी, नहीं, आप इन [illegible] प्रभाव अनदेखा कर रहे हैं. हमारी फि[illegible] का प्रभाव तो अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर [illegible] है. आप युगांडा के अनेक उपाधिप[illegible] धारी राष्ट्रपति इदी अमीन को दे[illegible] उन के रंगढंग, बयानबाजी, कला[illegible] हमारे फिल्मों के हीरो से मिलतीजु[illegible] हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिस तरह हमारी फिल्मों का नायक एक साथ लेखक, गायक, जासूस, बाक्सर, पायलट, गुंडा, समाज सुधारक हो सकता है, उसी तरह अमीन साहब भी सभी कलाओं में पारंगत माने जाते हैं. पत्रकारों और अतिथियों से बातें करतेकरते उन्हें फील्ड मार्शल तक बना देते हैं.

हमारे यहां की एक कथा के अनुसार (जिस पर फिल्म बन चुकी है) एक राजपूत राजा ने सौगंध खाई कि जब तक विपक्षी राजपूत राजा का किला ध्वस्त नहीं कर दूंगा, अन्नजल ग्रहण नहीं करूंगा. लेकिन यह काम आसान नहीं था. राजा को भूखप्यास सताने लगी तो विरोधी के किले को नमूना बना कर ध्वस्त किया. उसी प्रकार ईदी अमीन ने भी नकली दक्षिण अफ्रीका बना कर उस पर हमला किया था और उसे युगांडा के अधीन कर लिया था.

अर्जेंटीना की राष्ट्रपति श्रीमती इसाबेला पेरोन भी हमारी फिल्मों की नायिकाओं से प्रभावित जान पड़ती थीं. महत्त्वपूर्ण सरकारी पदों पर उस ने अपने प्रेमियों की नियुक्ति की. दिन भर में कई बार अपने वस्त्र बदलती. उस के वार्डरोब में हर प्रकार के फैशन के कपड़ों के ढेर लगे रहते. बेचारी अब खलनायिकाओं की तरह कोने में फेंक दी गई हैं. ●

"अरे, बहन, अपनी बहू को गालियां देती हूं तो उस के ऊपर कुछ असर नहीं होता. इधर तुम ने अगर कुछ नई गालियां ईजाद की हों तो मुझे बताओ."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब हंसने की बारी है?

शादी के बाद विदा के समय दुलहन की सहेली को रोता देख कर दूल्हे के एक मित्र ने पूछा, "तुम क्यों रो रही हो? शादी तो उस की हुई है."

"इसी लिए तो मैं रो रही हूं," लड़की ने रोतेरोते बड़े भोलेपन से उत्तर दिया.

✦

एक शानदार विदेशी कार से उतर कर नवयुवक ने दवाखाने में प्रवेश किया और डाक्टर की ओर हाथ बढ़ाता हुआ बोला, "बहुतबहुत शुक्रिया, डाक्टर साहब, आप की दवा ने मेरा बहुत फायदा किया है. सारी उमर आप का एहसानमंद रहूंगा."

"लेकिन, माफ करना, बरखुरदार, जहां तक मुझे ध्यान है, मैं ने तुम्हें कभी दवा नहीं दी," डाक्टर ने अपना सिर खुजलाते हुए धीमे स्वर में कहा.

"ओह, आप ठीक कह रहे हैं, डाक्टर साहब, लेकिन आप ने मेरे चाचाजी को तो दवा दी थी. उन का उत्तराधिकारी मैं ही हूं," युवक ने स्थिति स्पष्ट की.

✦

"क्यों, शीला, तुम्हें याद है, जब हम पिछले साल बंबई गए थे तो कौन से होटल में ठहरे थे?" पति ने पूछा.

शीला ने पहले तो कुछ याद करने का प्रयास किया, फिर रसोईघर की ओर झपटती हुई बोली, "एक मिनट ठहरो, चम्मच पर देख कर बताती हूं."

✦

हालचाल पूछने के बाद एक मित्र ने दूसरे से सकुचाते हुए कहा, "तुम्हें ध्यान होगा, एक बार तुम ने मुझ से सौ रुपए उधार लिए थे."

"मैं ने कब? मुझे तो बिलकुल याद नहीं आ रहा," दूसरे ने आश्चर्यचकित हो कर कहा.

"अरे, तो तुम्हें बिलकुल भी ध्यान नहीं? भई, उसी दिन जिस दिन तुम पिए हुए थे." पहले ने जैसे याद दिलाने की कोशिश की.

दूसरे ने सुना तो पल भर को वह ठिठका. फिर अचानक जैसे उसे कुछ याद आया, "अच्छाअच्छा, उस दिन. लेकिन वे तो मैं ने तुम्हें कब के वापस कर दिए.

"लेकिन कब?" पहला चौंका.

"ओह, तो तुम्हें ध्यान ही नहीं?" दूसरे ने मुसकराते हुए कहा, "ध्यान हो भी कैसे, उस दिन तुम नशे में धुत्त थे."

✦

"इस गिटार का क्या दोगे?" कबाड़ी के हाथ में अपना टूटाफूटा गिटार थमाते हुए गायक ने पूछा.

"पांच रुपए," एक सरसरी नजर से देखने के बाद नाक सिकोड़ते हुए कबाड़ी ने उत्तर दिया.

"उंह," गिटार छीनते हुए गायक बोला, "इस के बदले में 50 रुपए तो मेरे पड़ोसी ही मुझे चंदा कर के देने को तैयार हैं."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बूगनविलिया

रंगबिरंगे फूलों के गुच्छों से लदी इस इंद्रधनुषी बेल से घर का हर कोना सजाया जा सकता है...

लेख • ब्रह्मदेव गुप्त

बूगनविलिया बेल का जन्म कब और कहां हुआ, इस संबंध में पूरी जानकारी नहीं मिलती. आधुनिक वैज्ञानिकों के अनुसार यह बेल अमरीका से दूसरे देशों में पहुंची है. इस का वर्तमान नाम सन 1866 में फ्रांसीसी नाविक बूगनवील (1729-1811) के नाम पर रखा गया.

यह उष्ण तथा शीतोष्ण कटिबंध क्षेत्र का पौधा है. इसे धूप की आवश्यकता होती है. यह तरहतरह की जलवायु और तरहतरह की मिट्टी में उग सकता है. चिकनी मिट्टी से ले कर रेतीली मिट्टी तक किसी भी मिट्टी में इसे उगाया जा सकता है. अपने इन गुणों के कारण यह संसार के लगभग सभी भागों में पाया जाता है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

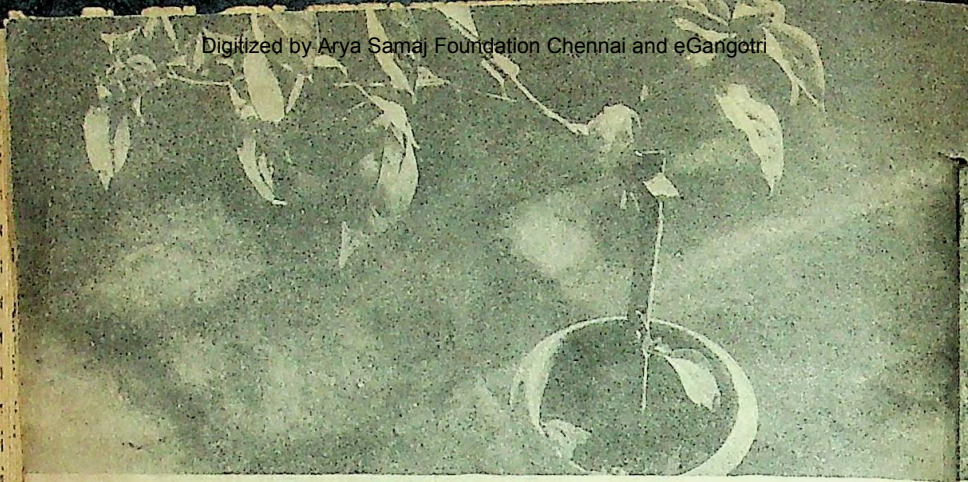

गमलों में लगे बूगनविलिया के रंगबिरंगे पौधे : गमलों में पानी नियमित डालते

इस बेल का उपयोग अनेक कामों में किया जाता है. झाड़ी के रूप में यह जानवरों से पूर्ण सुरक्षा प्रदान करती है. सजावट के लिए इसे पोर्च, सूखे पेड़ों की दीवारों आदि पर चढ़ाया जाता है. सभी अवस्थाओं में इस के रंगबिरंगे फूल देखने वालों का मन मोह लेते हैं.

शुरू में बूगनविलिया बेल की बहुत थोड़ी किस्में थीं. धीरेधीरे इस की किस्में बढ़ती गईं. आज इन की संख्या सैकड़ों में है. इन किस्मों को मोटे तौर पर दो भागों में बांटा जा सकता है—ग्लेवरा व स्पेक्टाबिलिस. ग्लेवरा ग्रुप के पौधे बंद अथवा खुले—दोनों स्थानों में पनप सकते हैं.

हां, कोहरा इन के लिए अवश्य हानिकारक होता है. इन पौधों में फूल भी जल्दी आने शुरू हो जाते हैं. सेंड्रीना इसी ग्रुप की एक किस्म है. इस के पौधे जब केवल एक फुट के होते हैं तभी उन में फूल आने लगते हैं. गमलों में भी ये पौधे बहुत अच्छी तरह उगते हैं. अपने इन्हीं गुणों के कारण इन छोटेछोटे पौधों को ड्राइंग रूम अथवा खाने की मेज पर सजाया जाता है.

सिफेरी किस्म के पौधे कुछ अधिक बड़े होते हैं, लेकिन सुंदरता में वे किसी से कम नहीं होते. ग्लेवरा ग्रुप की वेरीगेटा किस्म के पत्ते दो रंग के होते हैं. इन के पत्ते हरे व उन पर धब्बे होते हैं.

ग्लेवरा ग्रुप के पौधों के पत्ते अंडाकार होते हैं. इन के किनारे नुकीले होते हैं और रंग चमकीला हरा. ब्रेक्ट की शक्ल पान के पत्ते जैसी होती है. इन पौधों में वर्ष में कई दफा फूल आते हैं. ये फूल गुच्छों में लगते हैं और टहनियों पर इन के झुंड से दिखाई देते हैं.

बाड़ और झाड़ी के उपयुक्त

उष्ण कटिबंधीय जलवायु स्पेक्टाबिलिस ग्रुप के पौधों के अधिक अनुकूल है. इन का आकार तथा फैलाव ग्लेवरा की अपेक्षा अधिक होता है. इन की पत्तियां बड़ी तथा मोटी होती हैं. बाड़ अथवा झाड़ी के लिए ये पौधे अधिक उपयोगी हैं. इन में फूल जई की बालों के समान गुच्छों में लगते हैं.

समय के साथसाथ बूगनविलिया जाति में कई नई किस्मों का समावेश हुआ है. इन में मेरीपामर एक बहुचर्चित किस्म है. इस की एक ही डाल पर लाल तथा सफेद रंग के फूल खिलते हैं. इसी से मिलतीजुलती एक और किस्म 'कीमा' है. इस के फूल तो मेरीपामर की तरह सफेद तथा लाल रंग के होते ही हैं, साथ ही पत्ते भी दो रंग के होते हैं. इस के हरे पत्तों पर पीले धब्बे बड़े लुभावने लगते है.

सफेद शेर की तरह बूगनविलिया परिवार में भी पूर्णतया सफेद फूलों वाली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

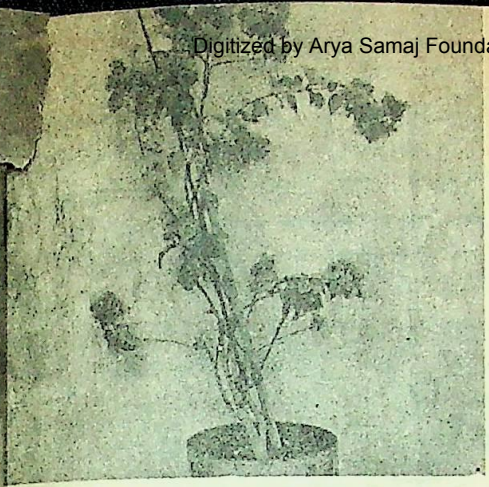

रहने से इन का सौंदर्य निखर उठता है.

एक किस्म है. इसे स्नोह्वाइट अथवा स्नोक्वीन कहते हैं. जब यह पौधा सफेद फूलों से लदा होता है तो वह दूर से बर्फ से ढकी पर्वत की चोटी के समान दिखाई देता है.

एनिड लंकास्टर तथा लेडी मेरी बियरिंग के फूलों का रंग पीला होता है. महारा के फूलों में बैंगनी तथा गुलाबी रंगों का सम्मिश्रण रहता है.

साधारणतया बूगनविलिया के पौधे कमजोर से कमजोर मिट्टी में भी हो सकते हैं, स्वस्थ व घने पौधे तैयार करने के लिए समयसमय पर खाद डालना जरूरी है. वर्ष में एकदो बार खाद डालना पर्याप्त होता है. स्लज, गोबर की खाद अथवा कंपोस्ट में से किसी भी खाद का प्रयोग किया जा सकता है. इस बात का ध्यान रहे कि कोई भी खाद कच्ची न हो. यदि खाद कच्ची होगी तो वह दीमक को अपनी ओर खींच लेगी. दीमक खाद के साथसाथ पौधों के तने तथा जड़ों को भी हानि पहुंचाती है. प्रत्येक पौधे के लिए एक टोकरी खाद पर्याप्त होती है. खाद डालने के बाद गुड़ाई कर के उस मिट्टी में मिला देना चाहिए.

बूगनविलिया के पौधों को बहुत अधिक पानी की जरूरत नहीं होती. पूर्ण विकसित पौधों में तो हफ्ते दस दिन तक भी पानी न डालने से कोई हानि नहीं होती. गमलों में लगे पौधों में पानी बराबर डालना चाहिए. फूल आने के दोतीन महीने पहले पानी की मात्रा सीमित करने पर पत्ते झड़ जाते हैं. बाद में पानी की मात्रा बढ़ा देनी चाहिए. इस प्रकार पौधों में नया फुटाव शुरू हो जाता है, और कुछ अरसे में ही वे नए पत्तों तथा फूलों से लद जाते हैं. अधिकतर किस्मों में फरवरी और मार्च में फूल आते हैं, लेकिन अनेक किस्में वर्ष में कई दफा फूल देती हैं.

समयसमय पर इन पौधों की सूखी तथा बेकार शाखों को काटते रहना चाहिए. इस से पौधा स्वस्थ रहता है.

नए पौधे कलम लगा कर तैयार किए जाते हैं. इस के लिए मिट्टी भुरभुरी होनी चाहिए. चिकनी मिट्टी में जड़ें नहीं फूट पातीं और उन के विकास में भी रुकावट आ जाती है. अच्छा हो यदि दोमट, नदी की रेत तथा पत्ती की खाद को बराबरबराबर मात्रा में मिला कर तैयार किए गए मिश्रण का प्रयोग किया जाए. कलम लगाने के कुछ सप्ताह बाद उन में फुटाव आना शुरू हो जाता है. इस बीच मिट्टी को बराबर नम रखना चाहिए. भूमि का तापमान 65 से 70 डिग्री फारेनहाइट होने पर कलमों के फुटाव का प्रतिशत सब से अधिक होता है. जैसेजैसे तापमान में कमी अथवा बढ़ोतरी होती है फुटाव का प्रतिशत भी कम होने लगता है.

कलम लगाने के लिए छोटी उंगली के बराबर मोटाई की एक वर्ष पुरानी टहनियों में से नौनौ इंच लंबे टुकड़े काट लेते हैं. कच्ची लकड़ी में कम फुटाव आता है. कटे टुकड़ों को सीधा खड़ा कर के मिट्टी में गाड़ देते हैं. कलम को थोड़ा तिरछा गाड़ना चाहिए.

बूगनविलिया के कोई विशेष दुश्मन नहीं हैं, लेकिन दीमक इसे काफी हानि पहुंचाती है. दीमक जड़ों को खा जाती है और पौधा मर जाता है. दीमक से बचाव के लिए एल्ड्रीन का प्रयोग किया जाता है. एल्ड्रीन को सिंचाई के समय पानी में मिला कर डालने से लाभ होता है. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिडी टाप

यह नई जालीदार मिडी जो गरमी व सर्दी, दोनों मौसम में पहनी जा सकती है, देखने में आकर्षक व पहनने में आरामदेह है. इसे बेलबाटम और मैक्सी, दोनों के साथ पहना जा सकता है. यह दोनों चीजों पर खूब फबेगी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजस्थानी कोट

यह राजस्थानी कोट जो ठंडा होते हुए भी आप को कोट का काम देगा. हलकी सर्दी में आप इस को मैक्सी, स्कर्ट के साथ पहन सकती हैं. राजस्थानी कोट अत्यंत आकर्षक डिज़ाइनों में बन सकता है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेख • नीलमरानी

भावावेश को रोकिए

ऐसा न हो कि यह आप के लिए सिरदर्द बन जाए

जी हां, आप ने ठीक समझा, भावावेश अर्थात भावनाओं का आवेश.

मानव में कुछ कमजोरियां भी हैं. कुछ में कम होती हैं, कुछ में ज्यादा. हम समाज में रहते हैं. हमारा हर तरह के लोगों से मिलनाजुलना होता है. इसी लिए हमें खयाल रखना चाहिए कि हम कहीं भावनाओं के आवेश में कुछ कह तो नहीं रहे हैं. क्रोध में भी हम बहुत कुछ कह जाते हैं. बाद में हमें पछतावा होता है पर फिर पछताने से क्या लाभ?

जब हम किसी बात को गहराई से महसूस करते हैं तो जिन बातों से हमारे हृदय को सदमा पहुंचता है या जब हम क्रोध करते हैं उस वक्त हमारे मस्तिष्क में जो विचार तत्काल आते हैं उसे ही हम भावावेश कहते हैं. उस वक्त संयम बरतना कठिन हो जाता है,

सुरेंद्र का अपने दफ्तर में मनमोहन से किसी बात पर झगड़ा हो गया. मनमोहन उस से ऊंचे पद पर है. चुनांचे सुरेंद्र ने अपने बास से शिकायत कर दी कि लंच होते ही मनमोहन दो घंटे के लिए गायब हो जाता है. इस तरह शिकायत करने से उसे थोड़ी देर के लिए संतोष तो मिल जाता है, पर बाद में यही चीज उस के लिए बुरी साबित होती है. मनमोहन ने हैड आफिस में आवेदन कर के सुरेंद्र की बदली रुकवा दी. बाद में जब दोनों की भावनाओं का ज्वार ठंडा हुआ तो उन्हें अपने किए पर काफी पछतावा हुआ.

आप के बच्चे का पड़ोस के बच्चे से झगड़ा होता है. पड़ोसिन आप से उस की शिकायत करती है. आप आवेश में आ कर बच्चे को पीट डालती हैं. बाद में जब आप को पता चलता है कि आप का बच्चा निर्दोष था तो कैसा महसूस होता है? पड़ोसिन भी सोचती है कि क्यों बच्चे की शिकायत ले कर गई.

देखादेखी में भी आदमी गलत कदम उठा लेते हैं. आप के मुंह पर बाब हेयर कैसे लगेंगे, यह आप सोचिए. सहेली के कहने से ही आप अपने बाल कटवाने को तैयार मत होइए.

सहेलियों के बीच गपबाजी चल रही है. चायपकौड़ी का मजा लिया जा रहा है. आप हंसीमजाक के मूड में हैं. आप ने कहा, "अरे, मोटर वाली आंटी के घर क्या शानदार चाय और पकौड़ी बनती हैं!" आप इतना कह कर रुक जातीं तो शायद बात न बिगड़ती. साथ ही आप कह देती हैं, "बगल वाली आंटी के यहां पकौड़ियां ऐसी बनती हैं मानो वे सब उन की नाक हों."

बात बढ़ जाती है. फिर इतनी लड़ाई होती है कि घर में कोहराम मच जाता है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

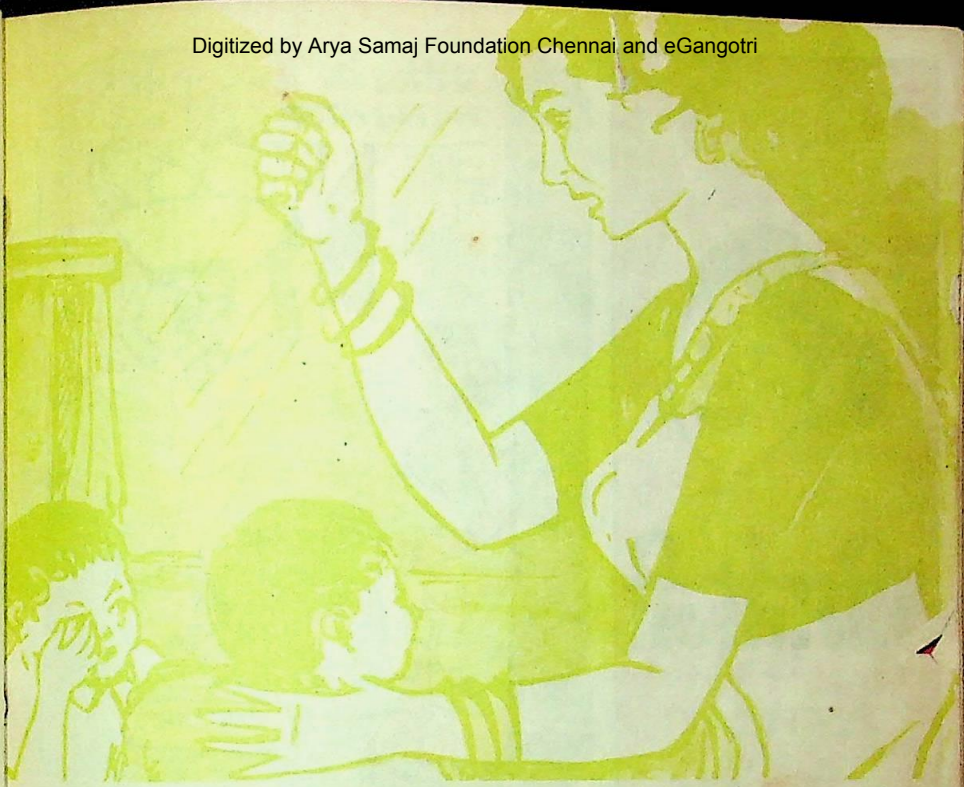

आप आवेश में आ कर बच्चे को पीट डालती हैं. बाद में जब आप को पता चलता है कि आप का बच्चा निर्दोष था तो कैसा महसूस होता है?

भावावेश में इनसान ठीक तरह सोच भी नहीं पाता. मीरा की शादी की बात चल रही थी. एक पार्टी में मीरा की सहेलियों ने कहा, "तुम्हारी तकदीर बड़ी तेज है." मीरा को गर्व हुआ. तुरंत घमंड में आ कर बोली, "अरे, शुक्र करो कि मैं उस से शादी करने को तैयार हूं. वरना सौ रुपल्ली वाले को आजकल कौन पूछता है." पार्टी में उपस्थित किसी लड़की ने यह बात लड़के के घर वालों तक पहुंचा दी. बात बिगड़ गई. मीरा आज तक कुंआरी बैठी है.

भावनाओं की शिकार सब से ज्यादा लड़कियां ही होती हैं. किसी लड़के से दोस्ती हो जाना अस्वाभाविक नहीं. बातें करना और ज्यादा से ज्यादा चाय पीना-पिलाना भी ठीक है. पर जब कोई उन्हें यह कहता है, "तुम बहुत सुंदर हो. मैं तुम्हारे बिना रह नहीं सकता. मैं तुम से शादी करना चाहता हूं," तो लड़कियां उस की बातों को सच मान कर अपना सब कुछ लुटा बैठती हैं. बाद में वे यही कहती हैं, "काश, मैं भावावेश में ऐसा कदम न उठाती!"

भावनाओं का उफान थोड़ी देर ही रहता है पर उतने समय में ही इतना कुछ हो जाता है कि भविष्य में मुसीबत खड़ी हो जाती है. मित्रता रखिए पर सदैव सचाई के ठोस धरातल पर रह कर ही कदम बढ़ाइए.

लोगों की एक आदत यह भी होती है कि भावावेश में अनापशनाप बक देते हैं. जब आप उन से शिकायत करती हैं तो वह दांत दिखाते हुए कहेंगी, "भई, जोश में बोल गए. हम ने तो मजाक किया था. बुरा मत मानना."

पर बाद में माफी मांगने से क्या होता है. अच्छा यही है कि हम भावनाओं के आवेश में न आ कर अपना मुंह हमेशा बंद ही रखें. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

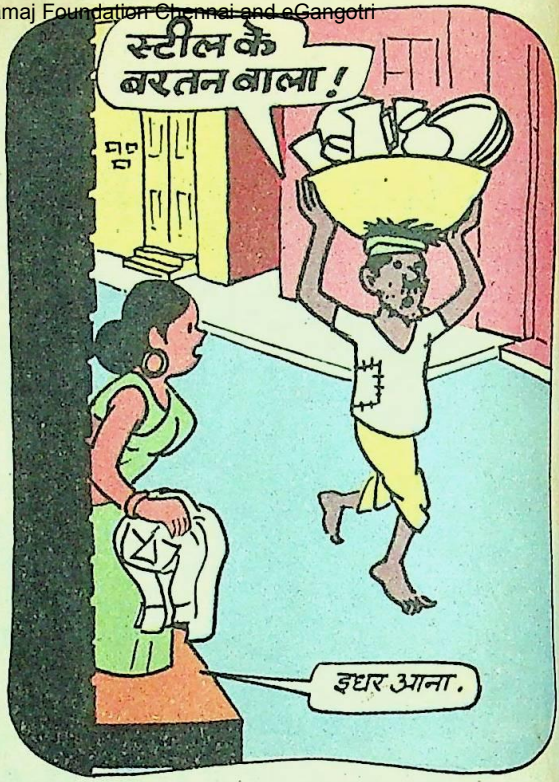

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेख • दलीपकुमार

टेटनस

ऐसा भयानक रोग जिस के बैक्टीरिया हमेशा वातावरण में मौजूद रहते हैं...

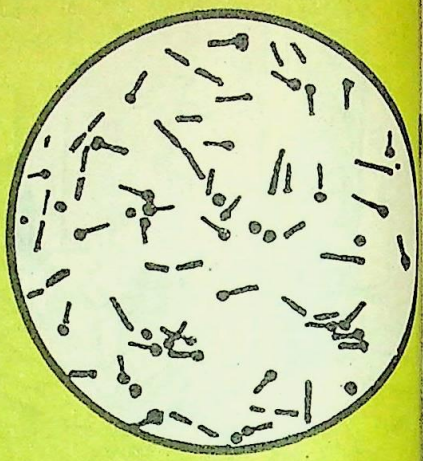

क्लासट्रिडियम टेटनी बैक्टीरिया

यह एक ऐसी भयानक बीमारी है, जिस का एक बार आक्रमण हो जाए तो 90 प्रति शत केसों में मौत हो जाती है, और मौत भी इतनी भयानक और पीड़ापूर्ण होती है कि दिल दहल जाता है.

इस का कारण क्लासट्रिडियम टेटनी नामक बैक्टीरिया हैं जो सूक्ष्मदर्शी के नीचे इस तरह लगते हैं जैसे एक ढोल तथा डंडा इकट्ठे जोड़ कर रख दिए गए हों.

इन की विशेषता है कि ये स्वस्थ त्वचा पर प्रहार नहीं कर सकते. ये तभी हानिकारक होते हैं जब कोई चोट लगी हो. ये वातावरण में हर समय विद्यमान रहते हैं और चोट लगे स्थान में घुस कर बढ़तेफूलते हैं. घोड़ा, गाय आदि घरेलू पशुओं के पेट में भी ये पाए जाते हैं. इसलिए खेतों में जहां गोबर की खाद डाली जाती है, इन की बहुतायत होती है.

आम तौर पर तो यह बीमारी गंभीर चोट से ही होती है, लेकिन कई बार साधारण सी चोट भी इस का कारण बन जाती है. यहां तक कि दाढ़ी बनाते समय ब्लेड लग जाए तो वह भी टेटनस का कारण बन जाता है.

इस के अतिरिक्त नवजात बच्चों में अंबलाइकल कार्ड की इन्फेक्शन, आपरेशन, डिलीवरी, गर्भपात आदि से भी टेटनस होती देखी गई है. इंजेक्शन की सुई को अगर ठीक से साफ न किया जाए तो वह भी टेटनस का कारण बन सकती है.

एक आम विश्वास है कि टेटनस तभी होती है, जब किसी लोहे की चीज से चोट लगी हो. यह बात गलत है. किसी भी तरह की चोट से टेटनस हो सकती है.

इन बैक्टीरिया की अन्य विशेषता है कि ये आक्सीजन की उपस्थिति में जिंदा नहीं रह सकते. अतः घाव में अगर दूसरे बैक्टीरिया भी हों तो ये बड़ी तेजी से बढ़ते हैं, क्योंकि दूसरे बैक्टीरिया सारी आक्सीजन खपा कर इन के लिए अनुकूल वातावरण तैयार करते हैं.

चोट लगने के दसपंदरह दिन तक टेटनस हो सकती है. अगर घाव चेहरे पर हो तो तीनचार दिन में ही लक्षण प्रकट हो जाते हैं. घाव में बैक्टीरिया तेजी से बढ़ते हैं. ये वहां पर दो जहरीले पदार्थ पैदा करते हैं. पहला होता है टेटनोस्पास्मिन, जो तंत्रिका संस्थान पर अपना प्रभाव डालता है. यह इतना जहरीला होता है कि एक ग्राम से भी कम मात्रा दस लाख चूहों को मार सकती है. दूसरा होता है टेटनोलाइसिन, जो खून के लाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्लासट्रिडियम टेटनी बैक्टीरिया चोट लगे स्थान में घुस जाते हैं. इसलिए चोट लगते ही तुरंत टेटनस टाक्सायड का टीका लगवा लेना चाहिए.

कणों को नष्ट कर देता है.

ये पदार्थ तंत्रिका संस्थान के रास्ते दिमाग तक पहुंच जाते हैं. कुछ भाग लसीका नलिकाओं द्वारा दिमाग तक पहुंचता है. अगर मात्रा अधिक हो तो खून में मिल कर अपना प्रभाव दिखाती है.

टेटनस के लक्षण

दिमाग में ये जहरीले पदार्थ सेलों के साथ चिपक जाते हैं. ऐसा कोई तरीका अभी तक नहीं मिला है जिस से इन जहरों को तुरंत नष्ट किया जा सके. ये स्वयं ही धीरेधीरे नष्ट हो जाते हैं. लेकिन उस से पहले ही मरीज की मृत्यु हो जाती है. बच्चों में 95% से भी अधिक तथा बड़ों में 60% के केसों में मौत हो जाती है.

अगर मरीज लक्षणों के प्रकट होने के चार दिन बाद जिंदा रहे तो बचने के अवसर काफी होते हैं.

इस में शरीर की सभी पेशियां अकड़ जाती हैं, विशेषतया चेहरे तथा गरदन की. जबड़ा कस जाता है, ठोड़ी छाती के साथ नहीं लगाई जा सकती. कई बार तो अकड़न इतनी अधिक होती है कि सिर्फ सिर का पिछला भाग तथा एड़ियां ही जमीन को छूती हैं. बाकी सारा शरीर ऊपर उठ कर धनुष का आकार धारण कर लेता है. लक्षण प्रकट होने पर प्रायः मौत हो जाती है. फिर भी कई बार एंटीटेटनिक सीरम तथा कीटाणुनाशक दवाइयों से बचना संभव हो सका है.

इस के लिए सभी घावों का उचित ध्यान रखा जाना चाहिए ताकि उन पर मिट्टी आदि न पड़े.

सब से जरूरी है कि हर आदमी को टेटनस के टीके लगवा लेने चाहिए. इन में टेटनस टाक्सायड प्रयोग होता है. इस की 0.5-1.0 मिलीलिटर मात्रा का टीका लगाते हैं. दूसरा टीका छः सप्ताह तथा तीसरा छः महीने बाद लगवाया जाता है. इस प्रकार तीन साल के लिए टेटनस से बचाव हो जाता है. इस के बाद हर तीन साल बाद एक टीका लगवा लेने पर टेटनस से बचाव हो सकता है. ●

CC-0. In Public Domain: Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सब अंग निखर गया...

रूप जब भी संवर गया होगा,
चित्र मन में उतर गया होगा.

फूल बन कर उन की वेणी में,
चंद्रमा तक ठहर गया होगा.

देख कर शोखियां निगाहों की,
आईना भी सिहर गया होगा.

चंपई चांदनी के साए में,
अंग, सब अंग निखर गया होगा.

आज प्राणों का एक परदेसी,
गंध पी कर गुजर गया होगा.

रेशमी अंगुलियों की शोखी से,
केश खुल कर बिखर गया होगा.

भूल कर उन की जफाओं को कमल,
आज मिलने मगर गया होगा.

—शिवप्रसाद 'कमल'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

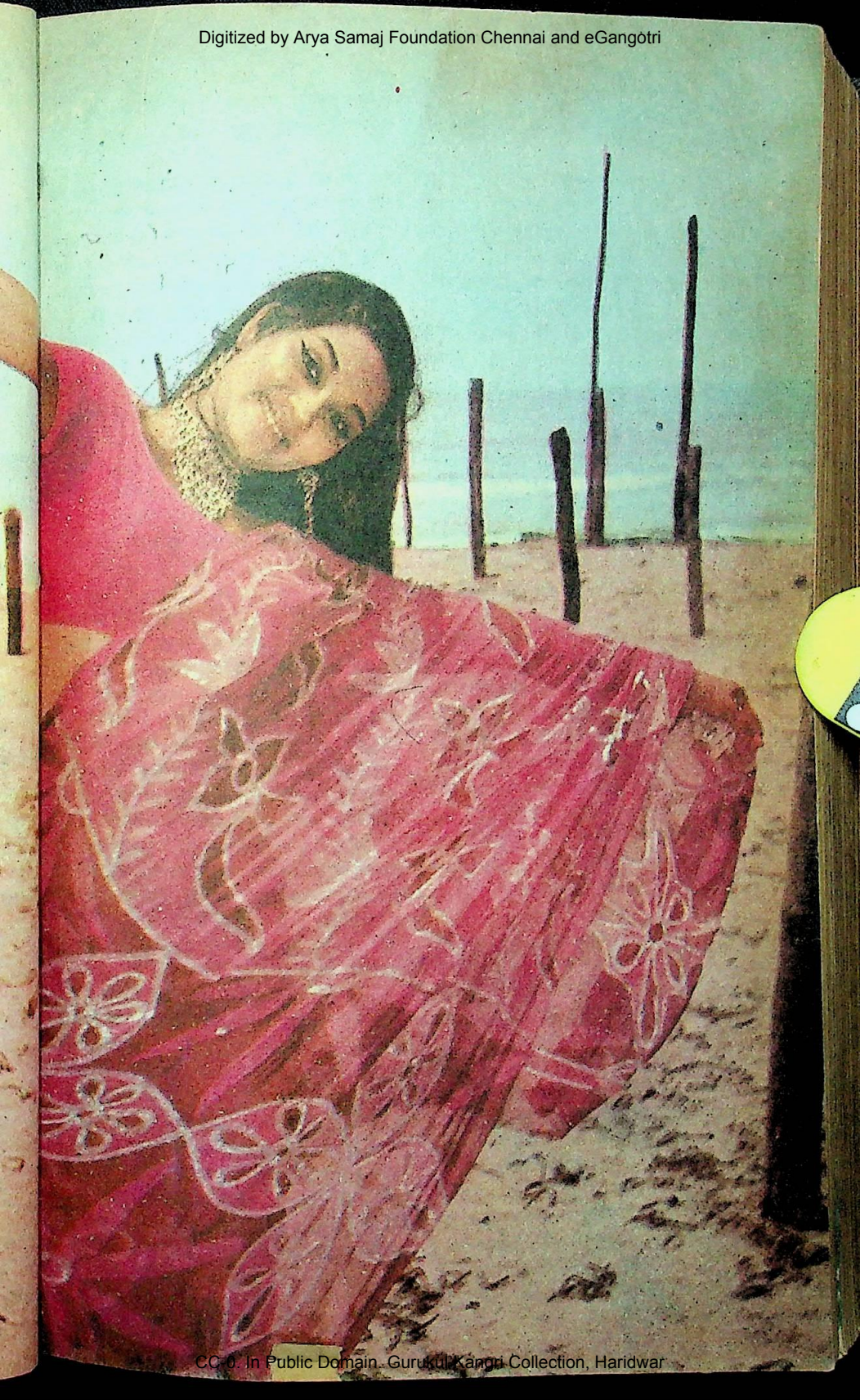

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठकों की समस्याएं

मैं एक संपन्न घराने की लड़की हूं. उमर 18 वर्ष है. जब मैं छोटी थी, नासमझ थी, एक लड़के ने मेरे साथ अनुचित व्यवहार किया. उस की बातों में आ कर 16 वर्ष की आयु में मैं ने उसे कुछ पत्र भी लिख दिए. अब मैं इतनी परेशान हूं कि पढ़ाई भी ठीक से नहीं कर पाती. फेल हो जाने का भी डर है, और यह डर भी है कि शादी के बाद मेरा क्या होगा. वह लड़का विवाहित है. घर वालों को बताते शर्म आती है. क्या करूं? क्या आत्महत्या कर लूं?

● आत्महत्या कायरता है और यह किसी भी समस्या का हल नहीं है. जब आप को अपनी गलती महसूस हो रही है तो अब उस लड़के से बिना लड़ाई किए मिलनाजुलना बंद कर दीजिए. जब भी वह बुलाए, कोई बहाना बना कर टाल जाइए. अकेले में तो कभी भी नहीं मिलना चाहिए. और फिर नासमझ उमर की गलती को भूल जाइए.

पढ़ाई के बाद अन्य हाबियों, खेलों, सामान्य अध्ययन में भी अधिक से अधिक व्यस्त रहने से आप को सहज होने में मदद मिलेगी. पढ़ाई पूरी करने के बाद विवाह आप करा सकती हैं. पति को इस गलती के बारे में कुछ बताने की आवश्यकता नहीं. निश्चित रहिए, विवाहित पुरुष आप के पत्रों को ले कर आप के आड़े नहीं आएगा. फिर भी उस की ओर से डर हो तो मां से सब कुछ बता कर उन से अपनी भूल की क्षमा मांग लीजिए. मातापिता स्वयं ही स्थिति संभाल कर आप की सुरक्षा की व्यवस्था करेंगे.

✦

मेरी 20 वर्षीया बहन जन्म से ही दमे की मरीज है. अच्छी से अच्छी जगह उस का इलाज करवा चुके हैं. पर डाक्टरों की राय में उस की बीमारी ठीक नहीं हो सकती. बहन के मन में यह बात इतनी गहरी लग गई है कि वह भीतर ही भीतर घुलती रहती है और कहती है कि शादी नहीं करेगी, क्योंकि बच्चों को भी यह रोग लग जाएगा. कभीकभी तो यहां तक कहती है कि तीस साल की उमर तक वह ठीक न हुई तो आत्महत्या कर लेगी. क्या करना चाहिए?

● आप की बहन शादी न करे तो अच्छा ही है. पर आप उस के मनोरंजन का और उसे अधिक व्यस्त रखने का ध्यान रखिए. यदि मानसिक दृष्टि से वह सहज व स्वस्थ हो पाएगी तो अपनी बीमारी पर भी बहुत कुछ काबू पा सकेगी. घबराने या चिंता करने के बजाए उस का मन बहलाने व उस के साथ अधिक समय बिताने या उस के लिए समय बिताने के लिए अच्छी व्यवस्था करने की बात सोचिए. परिणाम अवश्य अच्छा रहेगा.

✦

मैं बी. ए. प्रथम वर्ष का छात्र हूं. कुछ समय पूर्व की एक गलती के कारण घर से अलग हूं. नौकरी और पढ़ाई साथसाथ हो नहीं पाती. पिता प्रोफेसर हैं. घर की स्थिति अच्छी है, पर उन की ओर से अब कोई आशा नहीं है. दादाजी मेरी शादी करना चाहते हैं पर घर से दूर रहने के कारण लड़की वालों को मेरी वास्तविक स्थिति का ज्ञान नहीं है. मैं शादी करवा लूं तो गुजारा कैसे करूंगा? रास्ता बताइए.

● आप अपने दादाजी से खुल कर स्थिति बता दीजिए और जब तक पत्नी का भार अच्छी तरह उठाने लायक न हो जाएं, विवाह से दृढ़तापूर्वक इनकार करिए. कैरियर बनाने के साथ पिता और परिवार से संबंध सुधारने पर ध्यान दीजिए. विवाह उस के बाद ही करना ठीक होगा.

✦

मैं 25 वर्षीया अविवाहित सरकारी कर्मचारी हूं. पिछले एक साल से मेरे संबंध एक विजातीय लड़की से हो गए. उस ने बताया कि बचपन में उस का विवाह एक अनपढ़ लड़के से कर दिया गया था, लेकिन वह उस घर में जाना नहीं चाहती. ससुराल के गांव का वातावरण उसे रास नहीं आएगा. अब मेरे सहारे वह अपना घर छोड़ कर पढ़ाई कर रही है. नर्सिंग की ट्रेनिंग कर चुकी है. मैं अपने घरपरिवार से हार कर भी उस से शादी करने को तैयार हूं, पर यदि तलाक ले कर मुझ से शादी करेगी तो उस की बड़ी बहन जो उसी घर में ब्याही है, उसे भी ससुराल वाले छोड़ देंगे. यदि मैं उस से शादी नहीं करता तो उस की जिंदगी बरबाद हो जाएगी. उपाय सुझाइए.

● आप को उस लड़की की जिंदगी से इस तरह नहीं खेलना चाहिए था. गांव की जिंदगी बुरी होती है, यह सोचने के बजाए वह उस वातावरण को अपने व अपने को उस वातावरण के अनुकूल बनाने के बारे में सोचती तो ठीक था. अब भी यदि वह अपनी नर्सिंग ट्रेनिंग का लाभ गांव वालों को दे सके तो यह एक बड़ा काम होगा, जिस के लिए अपने जीवन में थोड़ा त्याग भी करना पड़े तो वह त्याग खुशी व संतोष ही देगा. यदि वह इस के लिए सहमत न हो तो तलाक ही एक मात्र उपाय है. तब भी इस में समय लगेगा, शीघ्र आप लोग नहीं कर पाएंगे. वकील की सलाह ले कर चलें.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं 18 वर्षीया युवती हूं. एक बार सीढ़ी से फिसल गई. मैं ने देखा, मेरे बेलबाटम पर खून के धब्बे थे. मासिक धर्म के दिन न थे. सहेलियों ने बताया कि जो झिल्ली प्रथम सहवास में फटती है, कभीकभी गिरने, रस्सी कूदने या भारी सामान उठाने से भी फट जाती है. क्या यह सच है? तब से मैं परेशान रहने लगी हूं कि विवाह के बाद कोई परेशानी तो नहीं खड़ी हो जाए.

● हां, ऐसा हो सकता है. बहुत से कारणों से झिल्ली फटने पर खून निकल आता है. आजकल यों भी लड़कियां लड़कों के खेलकूद में भाग लेती हैं तो यह अ... कि यह झिल्ली प्रथम सहवास में ... भी यह बात जानते हैं. इसी ... चिंतित होने की आवश्यकता ...

✦

मैं 18 वर्षीय छात्र हूं. ... पिता ने एक साल का वेतन ... एक सेठ के यहां नौकरी ... वहां एक युवक मुझ से ... करता है, जिस के द्वारा ... होता है. पिता द्वारा पहले ... मैं नौकरी छोड़ नहीं सक...

● आप पहले चुप ... अपने पिता से सारी बा... पिता सेठ से बात कर... ईमानदार व सच्चे आदमी ...

✦

हम बच्चा गोद लेने ... माध्यम से या ज्ञात माता ... लेना चाहते. दिल्ली, जयपुर ... स्थानों से बच्चा गोद लि...

● दिल्ली में ... में पूछताछ कर ...

1. फाउं... शक्ति नगर ...
2. स... अस्पताल ...
3. ...

है तो सुरभि से ... मरों का समूह उस ... है. यही हाल वासव- ... यह खबर फैलतेफैलते ... कानों में भी पहुंची. ... वदत्ता पर अपना सर्वस्व ... को तैयार थे, परंतु उस ... का उपभोग कोई नहीं ... नाट्य वर्ग उस की नृत्य ... का ही आस्वादन कर ... सुन राजा उस ... के लिए उत्कंठित हो ... शाम वासवदत्ता की ... पर जा पहुंचा.

राजा की सवारी वासवदत्ता की ... पर पहुंची, उस समय वासव- ... अपनी कला का प्रदर्शन कर रही ... और रईसों के मनचले युवा पुत्र उस ... हर अदा पर स्वर्णमुद्राएं लुटा रहे थे. ... अपनी कमर में अजीब लचक देती ... चितवनों से उन मनचले युवकों को ... घायल कर रही थी. नृत्य के साथ उस ... का गीत दूर से आती घंटियों की सुमधुर ... आवाज के समान प्रतीत हो रहा था. राजा को आया देख उस ने अपना नृत्य अधूरा छोड़ दिया और उस का स्वागत करते हुए बोली, "आइए, राजन, धन्य-भाग हैं मेरे जो आज आप के चरण इस दासी की कुटिया पर पड़े."

वारांगना वासवदत्ता राजा प्रसेनजित के राजप्रासाद और ऐश्वर्य को ठोकर मार कर एक भिक्षु कमलनयन को अपना दिल दे बैठी, लेकिन भिक्षु ने तो कुछ और ही सोच रखा था.

राजा ने नजर उठा कर उसे देखा तो देखता ही रह गया. उस का सौंदर्य उस की कल्पना से भी परे था. उसे विश्वास नहीं हो रहा था कि जो कुछ वह देख रहा था वह सत्य है. वह सोचने लगा, 'ऐसा अनुपम रूप, ऐसी मोहक कला और ऐसा मधुर कंठ क्या एक ही युवती में संभव है?'

राजा के आसन पर बैठने के बाद वासवदत्ता ने उस के आगमन की प्रसन्नता में अपना एक प्रसिद्ध नृत्य दिखाया. राजा प्रसेनजित वासवदत्ता की कला, उस के सौंदर्य और संगीत के अथाह सागर में जैसे खो सा गया. जब नृत्य और गायन समाप्त हुआ तो राजा ने अपने गले में पड़ा मोतियों का बहुमूल्य हार उतार कर वासवदत्ता के गले में डाल दिया. इस के बाद राजा महल में लौट आया. वह लौट तो आया था, पर उस का हृदय उसी अट्टालिका में कैद हो कर रह गया था. अब वह रोज संध्या समय वासवदत्ता की अट्टालिका पर जाता और जी भर कर उस का सौंदर्यपान करता.

जो वस्तु राजा को पसंद आ जाए उस पर सर्वसाधारण का अधिकार कैसे रह सकता है. अब वासवदत्ता का संगीत और नृत्य केवल राजा प्रसेनजित के लिए रह गया और एवज में उसे राजकोष

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठकों की समस्याएं

मैं एक संपन्न घराने की लड़की हूं. उमर 18 वर्ष है. जब मैं छोटी थी, नासमझ थी, एक लड़के ने मेरे साथ अनुचित व्यवहार किया. उस की बातों में आ कर 16 वर्ष की आयु में मैं ने उसे कुछ पत्र भी लिख दिए. अब मैं इतनी परेशान हूं कि पढ़ाई भी ठीक से नहीं कर पाती. फेल हो जाने का भी डर है, और यह डर भी है कि शादी के बाद मेरा क्या होगा. वह लड़का विवाहित है. घर वालों को बताते शर्म आती है. क्या करूं? क्या आत्महत्या कर लूं?

● आत्महत्या कायरता है और यह किसी भी समस्या का हल नहीं है. जब आप को अपनी गलती महसूस हो रही है तो अब उस लड़के से बिना लड़ाई किए मिलनाजुलना बंद कर दीजिए. जब भी वह बुलाए, कोई बहाना बना कर टाल जाइए. अकेले में तो कभी भी नहीं मिलना चाहिए. और फिर नासमझ उमर की गलती को भूल जाइए.

पढ़ाई के बाद अन्य हाबियों, खेलों, सामान्य अध्ययन में भी अधिक से अधिक व्यस्त रहने से आप को सहज होने में मदद मिलेगी. पढ़ाई पूरी करने के बाद विवाह आप करा सकती हैं. पति को इस गलती के बारे में कुछ बताने की आवश्यकता नहीं. निश्चिंत रहिए, विवाहित पुरुष आप के पत्रों को ले कर आप के आड़े नहीं आएगा. फिर भी उस की ओर से डर हो तो मां से सब कुछ बता कर उन से अपनी भूल की क्षमा मांग लीजिए. मातापिता स्वयं ही स्थिति संभाल कर आप की सुरक्षा की व्यवस्था करेंगे.

✦

मेरी 20 वर्षीया बहन जन्म से ही दमे की मरीज है. अच्छी से अच्छी जगह उस का इलाज करवा चुके हैं. पर डाक्टरों की राय में उस की बीमारी ठीक नहीं हो सकती. बहन के मन में यह बात इतनी गहरी लग गई है कि वह भीतर ही भीतर घुलती रहती है और कहती है कि शादी नहीं करेगी, क्योंकि बच्चों को भी यह रोग लग जाएगा. कभीकभी तो यहां तक कहती है कि तीस साल की उमर तक वह ठीक न हुई तो आत्महत्या कर लेगी. क्या करना चाहिए?

● आप की बहन शादी न करे तो अच्छा ही है. पर आप उस के मनोरंजन का और उसे अधिक व्यस्त रखने का ध्यान रखिए. यदि मानसिक दृष्टि से वह सहज व स्वस्थ हो पाएगी तो अपनी बीमारी पर भी बहुत कुछ काबू पा

राज्य में पूर्ण शांति थी और लोग संपन्न थे. सभी प्रजाजन आंतरिक सुरक्षा से आश्वस्त हो कर अपनेअपने व्यवसाय की उन्नति में लगे हुए थे. राज्य धनधान्य से परिपूर्ण था. जब सर्वत्र भौतिक समृद्धि तो लोगों का भोगविलास की ओर पूर्व [illegible]षित होना स्वाभाविक है और कोसल नौकर[illegible] नियम का अपवाद न था. पिता प्र[illegible]धानी अयोध्या में वासवदत्त उन की अ[illegible] मेरी शादी क वारांगना की बड़ी धूम थी के कारण लगी जबान पर उस का नाम स्थिति का ज्ञान चंदरी थी. गौर वर्ण, चौड़ी गुजारा कैसे करूंगे बड़ी से विशाल नेत्र, उ[illegible]

● आप अपने [illegible] गुलाबी होंठ, मुक्त बता दीजिए और जब [illegible]वल दंतपंक्ति, उभरे तरह उठाने लायक न[illegible] पूर्वक इनकार करिए. [illegible]ल. उस के सभी अं[illegible] पिता और परिवार [illegible] थे. रूपवती होने [illegible] ध्यान दीजिए. विवाह [illegible] ठीक होगा.

[illegible] डाल दिया...

मैं 25 वर्षीया अविव[illegible] हूं. पिछले एक साल से मे[illegible] लड़की से हो गए. उस [illegible] उस का विवाह एक अन[illegible] गया था, लेकिन वह [illegible] चाहती. ससुराल के [illegible] रास नहीं आएगा. अ[illegible] घर छोड़ कर पढ़ाई [illegible] ट्रेनिंग कर चुकी है. [illegible] कर भी उस से शादी करने [illegible] तलाक ले कर मुझ से शादी क[illegible] बड़ी बहन जो उसी घर में [illegible] भी ससुराल वाले छोड़ देंगे. यदि मैं [illegible] नहीं करता तो उस की जिंदगी [illegible] जाएगी. उपाय सुझाइए.

● आप को उस लड़की की जिंदगी से [illegible] तरह नहीं खेलना चाहिए था. गांव की जिंद[illegible] बुरी होती है, यह सोचने के बजाए वह [illegible] वातावरण को अपने व अपने को उस वातावरण के अनुकूल बनाने के बारे में सोचती तो ठीक था. अब भी यदि वह अपनी नर्सिंग ट्रेनिंग [illegible] लाभ गांव वालों को दे सके तो यह एक [illegible] काम होगा, जिस के लिए अपने जीवन में [illegible] त्याग भी करना पड़े तो वह त्याग खुशी [illegible] संतोष ही देगा. यदि वह इस के लिए सहमत [illegible] हो तो तलाक ही एक मात्र उपाय है. तब [illegible] इस में समय लगेगा, शीघ्र आप लोग नहीं [illegible] पाएंगे. वकील की सलाह ले कर चलें.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साथसाथ उस का गला भी अत्यंत सुरीला था.

उस पर शास्त्रीय संगीत के ज्ञान ने उस की प्रतिष्ठा और भी बढ़ा दी थी. नृत्य करती तो यों लगता मानो बादलों के बीच बिजली चमक रही हो. रोज संध्या समय रईसों के मनचले युवा पुत्र उस के आकर्षण में खिंचे चले आते, उस की कला का रसास्वादन करते और फिर सैकड़ों स्वर्णमुद्राओं के साथसाथ अपना हृदय भी उस के चरणों में अर्पित कर, गई रात घर लौटते.

जब फूल खिलता है तो सुरभि से आकृष्ट हो भ्रमरों का समूह उस पर मंडराने लगता है. यही हाल वासवदत्ता का भी हुआ. यह खबर फैलतेफैलते राजा प्रसेनजित के कानों में भी पहुंची. रसिक भौंरे वासवदत्ता पर अपना सर्वस्व न्योछावर करने को तैयार थे, परंतु उस के अपूर्व सौंदर्य का उपभोग कोई नहीं कर सका. आभिजात्य वर्ग उस की नृत्य और संगीत कला का ही आस्वादन कर सका.

ये सब बातें सुन राजा उस वारांगना को देखने के लिए उत्कंठित हो उठा और एक शाम वासवदत्ता की अट्टालिका पर जा पहुंचा.

जब राजा की सवारी वासवदत्ता की अट्टालिका पर पहुंची, उस समय वासवदत्ता अपनी कला का प्रदर्शन कर रही थी और रईसों के मनचले युवा पुत्र उस की हर अदा पर स्वर्णमुद्राएं लुटा रहे थे. वह अपनी कमर में अजीब लचक देती हुई चितवनों से उन मनचले युवकों को घायल कर रही थी. नृत्य के साथ उस का गीत दूर से आती घंटियों की सुमधुर आवाज के समान प्रतीत हो रहा था. राजा को आया देख उस ने अपना नृत्य अधूरा छोड़ दिया और उस का स्वागत करते हुए बोली, "आइए, राजन, धन्यभाग हैं मेरे जो आज आप के चरण इस दासी की कुटिया पर पड़े."

वारांगना वासवदत्ता राजा प्रसेनजित के राजप्रासाद और ऐश्वर्य को ठोकर मार कर एक भिक्षु कमलनयन को अपना दिल दे बैठी, लेकिन भिक्षु ने तो कुछ और ही सोच रखा था.

राजा ने नजर उठा कर उसे देखा तो देखता ही रह गया. उस का सौंदर्य उस की कल्पना से भी परे था. उसे विश्वास नहीं हो रहा था कि जो कुछ वह देख रहा था वह सत्य है. वह सोचने लगा, 'ऐसा अनुपम रूप, ऐसी मोहक कला और ऐसा मधुर कंठ क्या एक ही युवती में संभव है?'

राजा के आसन पर बैठने के बाद वासवदत्ता ने उस के आगमन की प्रसन्नता में अपना एक प्रसिद्ध नृत्य दिखाया. राजा प्रसेनजित वासवदत्ता की कला, उस के सौंदर्य और संगीत के अथाह सागर में जैसे खो सा गया. जब नृत्य और गायन समाप्त हुआ तो राजा ने अपने गले में पड़ा मोतियों का बहुमूल्य हार उतार कर वासवदत्ता के गले में डाल दिया. इस के बाद राजा महल में लौट आया. वह लौट तो आया था, पर उस का हृदय उसी अट्टालिका में कैद हो कर रह गया था. अब वह रोज संध्या समय वासवदत्ता की अट्टालिका पर जाता और जी भर कर उस का सौंदर्यपान करता.

जो वस्तु राजा को पसंद आ जाए उस पर सर्वसाधारण का अधिकार कैसे रह सकता है. अब वासवदत्ता का संगीत और नृत्य केवल राजा प्रसेनजित के लिए रह गया और एवज में उसे राजकोष

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से खर्च के लिए दो सहस्त्र स्वर्णमुद्राएं मिलने लगीं. राजा ने उसे रहने के लिए राजमहल में ही एक विशाल कक्ष दे दिया जहां उसे सब सुविधाएं प्राप्त थीं. किंतु अब उस की हालत सोने के पिंजरे में बंद पंछी जैसी हो चुकी थी. राजा प्रसेनजित जैसेतैसे अपना जरूरी काम निबटा कर अधिकांश समय इसी रूप-राशि के आस्वादन में बिता देता. वह जैसेजैसे इस अनिंद्य रूपराशि का रसपान करता उस की प्यास वैसेवैसे बढ़ती ही जाती. अब वासवदत्ता से एक क्षण भी अलग रहना उस के लिए कठिन था.

मन बड़ा विलक्षण है. यद्यपि प्रसेनजित वासवदत्ता पर अपना सर्वस्व लुटाने को तैयार था और वह भी उसे अपना तन अर्पण कर झुकी थी, पर उसे राजा से आंतरिक प्रेम न था. यह सब एक प्रकार से व्यापार मात्र था, क्योंकि एक दिन जब वह प्रभातकाल में उठ कर अपने झरोखे से बाहर का दृश्य देख रही थी अचानक उस की दृष्टि एक युवा भिक्षु पर पड़ी. पहली ही दृष्टि में वह उस के नेत्रों में समा गया और वह उस से मन ही मन प्यार करने लगी.

अब रोज सुबह जब वह बौद्ध भिक्षु भिक्षा हेतु भ्रमण पर जाता तो वासवदत्ता अपने झरोखे में बैठ कर उसे निहारती रहती. कुछ ही दिनों बाद वह गौरवर्ण भिक्षु उस के स्वप्नों में भी आने लगा. वह राजा प्रसेनजित के साथ रंगरलियां तो मनाती, पर उस के मन में सदैव उस भिक्षु की ही छवि अंकित रहती. उस भिक्षु का नाम कमलनयन था. वह एक संपन्न व्यापारी का पुत्र था, परंतु तथागत के सिद्धांतों का उस पर इतना प्रभाव पड़ा कि वह अपनी सारी जायदाद छोड़ कर बाल्यावस्था में ही भिक्षु बन गया.

एक दिन राजा प्रसेनजित कहीं बाहर गए थे. मौके का लाभ उठा कर वासवदत्ता ने अपनी दासी को भेज कर कमलनयन को अपने कक्ष में बुला लिया. दासी ने भिक्षु को आदरपूर्वक आसन पर बैठाया और वासवदत्ता को उस के आने की सूचना दी. वासवदत्ता ने उस दिन अपना अपूर्व शृंगार किया. वह बारबार दर्पण में अपनी छवि देखती और स्वयं अपने ऊपर मोहित हो उठती. कुछ समय बाद वह हंस की चाल से चलती हुई कमलनयन के सम्मुख उपस्थित हुई. कमलनयन ने नजर उठा कर देखा तो चकित रह गया. इतनी सुंदरता उस ने अपने जीवन में कभी नहीं देखी थी.

उस की मुखमुद्रा देख कर वासवदत्ता मुसकराई और उस के संकेत करते ही वीणावादक ने मधुर तान छेड़ दी. अन्य वादकों ने भी उस का साथ दिया और वासवदत्ता के घुंघरुओं की मधुर झंकार ने उस में मिल कर एक अपूर्व समां बांध दिया. कमलनयन के सम्मुख वासवदत्ता ने उस दिन अपनी पूर्ण प्रवीणता का प्रदर्शन किया. कमलनयन ने ऐसा नृत्य अपने जीवन में कभी नहीं देखा था. वह मोहित हो कर वासवदत्ता के नृत्य में ऐसा लीन हो गया कि उसे पता ही न चला कि वासवदत्ता ने कब नृत्य समाप्त कर दिया. उस की विचारधारा उस समय टूटी जब उस ने वासवदत्ता को अपनी गोद में पाया.

कमलनयन के लिए यह घड़ी अग्नि परीक्षा की थी. एक ओर अपूर्व रूपराशि अपनी कला और समस्त वैभव के साथ उस के चरणों में आ कर लोट गई थी और दूसरी ओर उस की अंतरात्मा उसे रहरह कर उस के कठोर व्रत की याद दिला रही थी. उस ने तथागत के मार्ग का अनुसरण करने के लिए बहुत सोचविचार के बाद समस्त मोह का त्याग कर ही संन्यास लिया था. अब उस का जीवन उस का नहीं, बल्कि बुद्ध संघ और धर्म का था.

वह अजीब दुविधा में था. एक ओर वह सोच रहा था कि दान की हुई वस्तु पर अब उस का अधिकार ही क्या है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

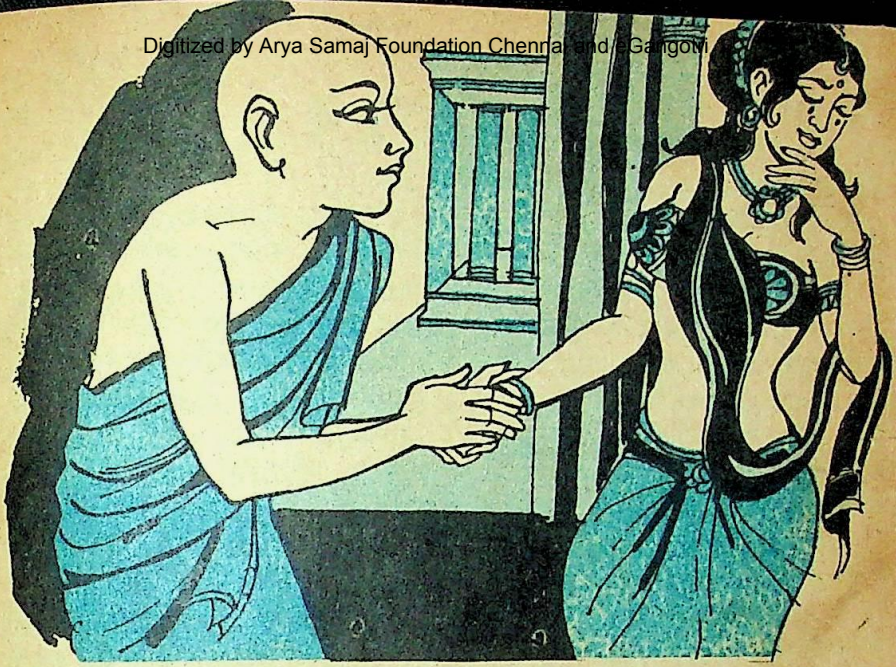

वासवदत्ता ने व्यग्रता से कहा, "भिक्षु, आज मैं सचमुच पागल हो गई हूं. जब से तुम्हें देखा है, मुझे कुछ भी अच्छा नहीं लगता."

दूसरी ओर स्वयं अपने को अर्पित करने को आई, उस अपूर्व सुंदरी को ठुकराना भी उसे कठिन लग रहा था. परेशान हो कर उस ने अपनी आंखें बंद कर लीं और तथागत का स्मरण किया. तत्काल ही उसे मार्ग दिखाई पड़ा. उस से वासवदत्ता को धीरे से उठाया और बोला, "वासवदत्ते, यह क्या पागलपन है?"

वासवदत्ता ने व्यग्रता से कहा, "भिक्षु, आज मैं सचमुच पागल हो गई हूं. जब से मैं ने तुम्हें देखा है, मुझे कुछ भी अच्छा नहीं लगता. मेरे हृदय में तुम समा गए हो. यह रूप, यह वैभव, यह कला सब कुछ तुम्हारी है. बस, तुम्हारे एक संकेत की आवश्यकता है. मैं अपना सर्वस्व न्योछावर कर सकती हूं. तुम कहो तो यथासंभव धन ले कर मैं तुम्हारे साथ तत्काल चल सकती हूं. मुझे और कुछ नहीं चाहिए. बस, तुम्हारी आवश्यकता है. तुम मुझे अपना लो, भिक्षु."

कमलनयन ने संयत हो कर कहा, "वासवदत्ते, अभी वह अवसर नहीं आया है. अभी तुम्हें मेरी जरा भी आवश्यकता नहीं है. मैं प्रतिज्ञा करता हूं कि जब भी तुम्हें मेरी आवश्यकता होगी, मैं अवश्य तुम्हारे पास आऊंगा."

"निष्ठुर, पर वह अवसर कब आएगा? मैं तुम्हें कहां ढूंढ़ूंगी, कहां संदेश भेजूंगी? यह तो बताओ, मुझे और कितनी प्रतीक्षा करनी पड़ेगी?" वासवदत्ता ने विकल हो कर कहा.

कमलनयन मुसकरा कर बोला, "वासवदत्ते, जब वह अवसर आएगा तब तुम्हें संदेश भेजने की आवश्यकता नहीं होगी. मैं स्वयं तुम्हारे पास पहुंच जाऊंगा. तुम्हें मुझे ढूंढ़ने की भी आवश्यकता नहीं पड़ेगी. मैं स्वयं तुम्हें खोज लूंगा. धीरज रखो और उचित अवसर की प्रतीक्षा करो." इतना कह कर भिक्षु धीरेधीरे कक्ष से बाहर हो गया.

विरहिणी वासवदत्ता ज्योंज्यों भिक्षु की बात पर विचार करती, त्योंत्यों उस की बुद्धि भ्रमित होती जाती. उस के वचनों का गूढ़ार्थ उस की समझ में न आता. वह बारबार सोचती कि आखिर वह कौन सा अवसर होगा जब भिक्षु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वयं उसे सहारा देगा. उस ने कई बार कमलनयन के पास संदेश भेजे, कई बार वह स्वयं उस की कुटिया पर गई, पर उसे सदा एक ही उत्तर मिलता, "जब तुम्हें मेरी आवश्यकता होगी, मैं स्वयं तुम्हारे पास चला आऊंगा."

इधर वासवदत्ता बौद्ध भिक्षु के प्रेम में डूबी हुई थी, उधर उस के विरुद्ध कुचक्र रचा जा रहा था. वासवदत्ता के प्रति राजा का अत्यधिक प्रेम उस की अन्य रानियों को बिलकुल पसंद नहीं था. एक दिन पटरानी ने राज्य के मंत्री को रनिवास में बुलाया और बोली, "मंत्रिवर, मैं यह क्या देख रही हूं? उसे किसी तरह रोको, चाहे इस के लिए कुछ भी उपाय क्यों न करना पड़े."

"मैं स्वयं वासवदत्ता और महाराज के प्रेम को राज्य के हित में नहीं मानता. पर क्या करूं, महाराज उस के रूप पर बुरी तरह मुग्ध हैं. हां, इधर मैं ने सुना है कि वासवदत्ता आजकल एक सेठ के पुत्र पर आसक्त है और उस से चोरीछिपे मिलती है."

"तो यही मौका है महाराज और वासवदत्ता के मध्य घृणा की दीवार खड़ी करने का. किसी भी तरह महाराज के मन में यह भर दो कि वासवदत्ता उन पर नहीं, नगरसेठ के पुत्र पर आसक्त है."

"जो आज्ञा, महारानी," मंत्री रानी के कक्ष से बाहर आ गया.

धीरेधीरे सब ने मिल कर राजा प्रसेनजित के मस्तिष्क में यह बात भर दी कि वासवदत्ता अपना सर्वस्व किसी और को लुटा रही है. राजा आखिर मनुष्य ही था. उस ने नगरसेठ के पुत्र से अपनी तुलना की तो वह उसे अपने से सभी बातों में श्रेष्ठ लगा. आखिर उस के पास वैभव और अधिकार के सिवा और है ही क्या? हीनता, ईर्ष्या और रनिवास के षड्यंत्रों ने राजा पर विजय पाई. एक दिन राजा ने वासवदत्ता की सारी संपति जब्त कर के उसे श्मशान में छोड़ दिया और राज्य में मुनादी करवा दी कि जो व्यक्ति वासवदत्ता को आश्रय देगा उसे राजद्रोह के अभियोग में दंडित किया जाएगा.

अब राजाज्ञा का उल्लंघन करने की हिम्मत किस में थी. वासवदत्ता फटेपुराने कपड़े पहने श्मशान भूमि पर जा बैठी. धीरेधीरे सूर्य अस्त हो गया. अंधकार ने सब ओर अपना अधिकार जमा लिया और गीदड़ों की आवाजें आने लगीं. वासवदत्ता अकेली भयभीत सी वहां बैठी आंसू बहा रही थी. आखिर वह जाए भी तो कहां, उसे चारों ओर निराशा दिखाई पड़ रही थी.

आधी रात बीत गई. वासवदत्ता को उस समय आश्चर्य हुआ जब उस ने एक प्रकाशपुंज को अपनी ओर आते देखा. वह धीरेधीरे उस के पास आ गया. वासवदत्ता ने उसे पहचान लिया. वह आगंतुक कमलनयन था, जो हाथों में मशाल लिए उस के सामने उपस्थित था. उस ने एक गहरा निश्वास लिया, बोली, "भिक्षु, अब तुम मेरे पास क्यों आए हो? अब मेरे पास कुछ भी नहीं है."

कमलनयन ने उत्तर दिया, "वासवदत्ते, मैं ने तुम्हें वचन दिया था कि जब तुम्हें मेरी आवश्यकता होगी, मैं स्वयं तुम्हारे पास आ जाऊंगा. आज वह अवसर आ गया है. मैं ने दो अच्छे अश्वों का इंतजाम कर लिया है. प्रभात होतेहोते हमें कोसल की सीमा से बाहर जाना है. तुम शीघ्र चलो."

डूबते को तिनके का नहीं, बल्कि नाव का सहारा मिला. दोनों तुरंत घोड़ों पर सवार हो गए और उन्हें सरपट दौड़ाते नगर से बाहर आए. सवेरा होते ही वे कोसल की सीमा से बाहर जा चुके थे. उगते हुए सूर्य को उन्होंने प्रणाम किया और उसी के प्रकाश में नए जीवन पथ पर चल पड़े जहां स्वार्थ और वासना का नहीं, बल्कि प्रेम और सेवा का महत्त्व था. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

OBM-5255 HIN

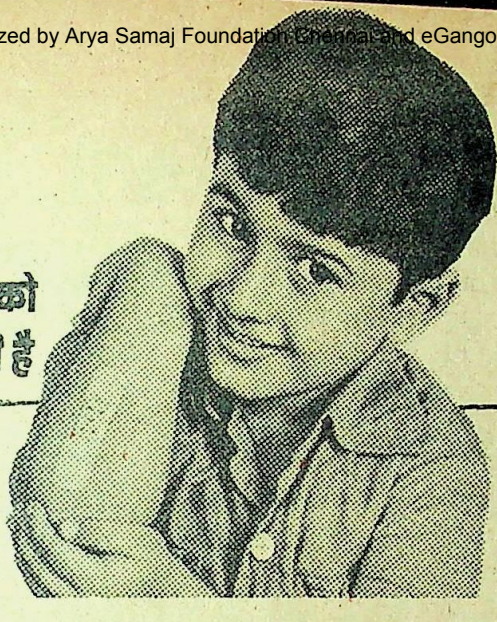

जब रवि को
चोट लग जाती है

रवि की माताजी छूत से बचाव के लिए हमेशा BAND-AID BRAND पट्टियों पर ही भरोसा करती हैं

खुले घाव को हमेशा छूत लगने का डर रहता है। इसी लिए समझदार माएँ सुरक्षा और आराम के लिए केवल बैन्ड-एड ब्रान्ड पट्टियों पर ही भरोसा करती हैं।

बैन्ड-एड ब्रान्ड पट्टियाँ कीटाणुओं से घावों की रक्षा करती हैं और कार्यसिद्ध ऐन्टीसेप्टिक मर्क्युरोक्रोम घाव को आराम पहुँचाती है और अच्छा करती है।

सावधानी बरतिए— बैन्ड-एड ब्रान्ड पट्टियाँ लगाइये। हमेशा कुछ पट्टियाँ अपने पास रखिए।

बैन्ड-एड ब्रान्ड
पट्टियाँ केवल
जॉन्सन एण्ड जॉन्सन ही बनाते हैं।
Johnson & Johnson*

मर्क्युरोक्रोम से औषधियुक्त

*Trademark © J&J 75

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब! नीबुओं की सनसनाती ताज़गी

अनोखा निराला.
अदभुत ताज़गी वाला.
लिरिल.
ताज़गी का साबुन.
पहाड़ी नदी
की तरह ताज़ा.
नीबुओं की सनसनाती
ताज़गी वाला —
हरा लहरिया.
गहरी सुगंध, भरपूर झाग.
लिरिल. तुझे बनाए
निखरी निखरी
नार नवेली.

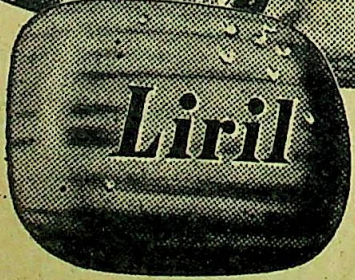

लिरिल

ताज़गी का साबुन

अंग अंग ताज़गी की जलतरंग के लिए.

हिन्दुस्तान लीवर का एक उत्कृष्ट उत्पादन

लिंटास् - LR.16-77 HI

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

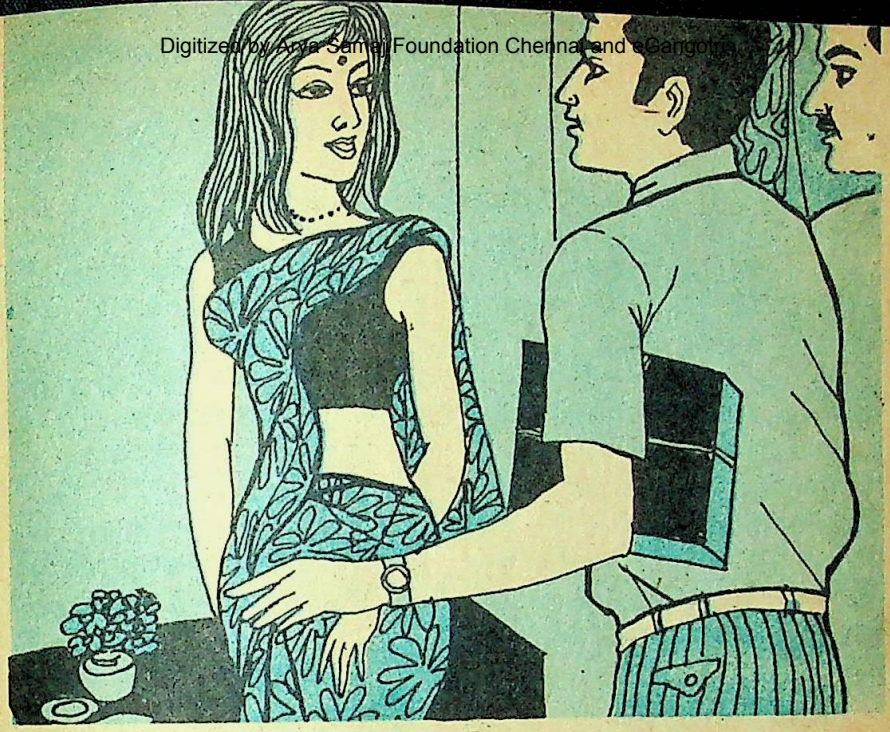

इंद्रधनुष के रंग

राखी के मनमस्तिष्क पर अजीत की शानशौकत का ऐसा रंग चढ़ा कि वह मृग-तृष्णा के जाल में फंसती चली गई. उस रंग में उस के प्यार के रंग भी फीके पड़ गए...

वह जेल से लौट कर घर में घुसी तो उसे लगा मानो चारों तरफ अंधेरा छा रहा है. प्यास से जैसे उस का दम घुटा जा रहा था. सोफे पर लेटते ही उस ने मीनू को पानी लाने के लिए कहा. फिर अपनी आंखें बंद कर लीं.

मीनू असली मुरादाबादी मीनाकारी की ट्रे में चांदी का गिलास रख कर पानी ले आई. उस की आवाज सुन कर वह उठ बैठी. आंख खुलते ही उस की दृष्टि गिलास और ट्रे पर पड़ी तो उसे एक झटका सा लगा.

"नहीं, मीनू, नहीं, इसे बाहर फेंक दो. घर में कांसे या पीतल का कोई गिलास हो तो मुझे उसी में पानी पिला दो." वह फिर आंख मूंद कर लेट गई.

पुलिस घर से सभी कीमती सामान बरामद कर के ले जा चुकी थी. पर कुछ छोटीमोटी वस्तुएं अब भी रह गई थीं. उन्हें देख उसे जेल में बंद पवन का ध्यान हो आया है. आज वह अभी पवन से ही

कहानी • माया प्रधान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिल कर आ रही है. बंद आंखों के अंधेरे में धुंधले चित्र उभरते आ रहे हैं. वह बड़े धैर्य से एकएक चित्र को अलग-अलग छांटना चाह रही है. शायद कोई चित्र उस में ऐसा हो जो उस के समूचे व्यक्तित्व का सही दर्पण बन सके.

मीनू कांच के गिलास में पानी ले कर आ खड़ी हुई है. उस की उंगलियों ने गिलास को कस कर पकड़ रखा है. शायद उस ने भी अपनी बुद्धि से परिस्थिति को आंक लिया है. वह इस घर में पिछले चौदह वर्षों से नौकरी कर रही है.

एक गहरी सांस खींच कर राखी ने खाली गिलास मीनू को लौटा दिया और लेटते ही आंखें बंद कर लीं. उस के मन-मस्तिष्क में सोलह वर्ष पूर्व की एक तसवीर उभर आई. उस दिन उन के विवाह की पहली वर्षगांठ थी. सुबह से ही दोनों उमंग से भरे हुए थे.

पवन सोच रहा था कि वह राखी को आश्चर्यचकित कर देगा. राखी सोच रही थी आज वह सिर्फ पवन की पसंद का ही शृंगार करेगी. पवन को खाने में जो चीजें सब से अधिक भाती हैं, वही तैयार करेगी. अपनीअपनी तरह से दोनों ही विवाह की वर्षगांठ मनाने की योजना में तल्लीन थे.

शाम को जब पवन घर में घुसा तो उस की एक बगल में पैकेट था और साथ में था उस का बचपन का मित्र अजीत. आते ही पवन बोला, "देखो, राखी, शादी में यह नहीं आ सका. विदेश गया हुआ था. पर अब भी मेरा यार आया तो मौके पर ही है. शादी के मौके पर न सही तो शादी की वर्षगांठ पर ही सही."

अजीत ने चौंक कर दोनों को देखा. "अच्छा, तो आज आप लोगों की शादी की सालगिरह है." फिर पवन को बांहों में भर कर बोला था, "भई, बहुतबहुत मुबारक हो. पहले मालूम होता तो कुछ तोहफा ले कर आता."

"तुम आज के दिन हम लोगों के साथ हो, बस यही बहुत है," पवन ने उत्साह से भर कर कहा था.

अजीत ने चारों तरफ दृष्टि घुमाई और बोला, "पर बड़ा सन्नाटा कर रखा है. आज के दिन कोई हंगामा, पार्टी, पिकनिक कुछ भी नहीं?"

पवन और राखी मासूम बच्चों की तरह उस की तरफ देखने लगे जैसे पूछ रहे हों, यह सब क्या होता है? आज का दिन तो नितांत हम दोनों का अपना है. इस में हंगामा कैसा? पर उन्हें अपनी इस प्रश्नवाचक दृष्टि का उत्तर भी बहुत शीघ्र मिल गया था.

दो माह बाद ही अजीत ने अपने विवाह की पांचवीं वर्षगांठ मनाई थी. पवन और राखी को भी पार्टी में बुलाया था.

जगमगाते हुए कमरे में आर्केस्ट्रा की धुन पर थिरकते जोड़े, खाने की मेज पर सजे तरहतरह के व्यंजन और थिरकते हुए लोगों के बीच चल रहा ह्विस्की और जिन का दौर. विवाह की वर्षगांठ इस तरह भी मनाई जा सकती है, इस की तो उन दोनों ने कल्पना भी नहीं की थी. उस रात दोनों की आंखों में नींद के बजाए अजीत की शानदार पार्टी चलचित्र की तरह घूमती रही थी. जिस मंजिल की तलाश में भटकते हुए आज पवन सीखचों के पीछे जा खड़ा हुआ है, उस मंजिल के नींव की पहली ईंट शायद उसी दिन रख दी गई थी.

शादी की अगली वर्षगांठ तक वे एक बच्चे के मातापिता बन चुके थे. एक तरफ उन के खर्चे बढ़ गए थे और दूसरी तरफ चीजों के दाम पहले जैसे - ी थे. दोनों के हौसले पस्त हो गए थे, इस बार न पवन राखी के लिए साड़ी ला सका था और न राखी ने ही उस की पसंद का शृंगार किया था.

राखी ने नौकरी कर ली थी ताकि बढ़ते हुए खर्चे कुछ पूरे हो सकें और रहन-सहन में सुधार हो सके. उन्हीं दिनों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मीनू चाय का प्याला ले आई..उस ने चाय का प्याला देते हुए पूछा, "साहब जमानत पर नहीं छूटे?"

उन्होंने बच्चे की देखभाल के लिए मीनू को रख लिया था. वह दिन राखी के जीवन में अनोखी खुशी ले कर आया था जब वह पहली बार अपना वेतन ले कर घर आई थी. पर वह खुशी दूध के उफान की तरह बहुत शीघ्र दब गई. उसी शाम अजीत एक आंधी सी ले कर आ गया. "यह क्या, पवन, पत्नी से नौकरी करवा कर इस महंगाई से जूझने का प्रयत्न कर रहे हो? तुम खुद भी तो बहुत कुछ कर सकते हो," अजीत ने कहा था.

"मैं?" पवन चौंका था. "नौकरी तो मैं कर ही रहा हूं."

"पर होता क्या है तुम्हारे इन चार सौ और भाभी के ढाई सौ रुपयों से? तुम चाहो तो इस से कहीं अधिक कमा सकते हो."

अजीत तो तूफान छोड़ कर चला गया, पर पवन और राखी रात भर उस में भटकते रहे थे.

राखी की आंखों में अब हर पल अजीत का बंगला, कार, दसियों नौकर-चाकर और ब्यूटी सैलून के भारीभारी बिल चुका कर परी का भ्रम पैदा करती उस की पत्नी, घूमने लगे. क्या वह उस की पत्नी से ईर्ष्या करने लगी थी? नहीं, बस एक मृगतृष्णा थी जो उस के मन की गुफा में धीरेधीरे करवटें लेने लगी थी.

उन दिनों उन के घर में अजीत का आनाजाना बहुत बढ़ गया था. राखी जब भी उस की पत्नी को देखती, उस के मन में कुछ होने लगता. सुंदर तो राखी भी कम न थी, पर उस के सौंदर्य को गृहस्थी और नौकरी की थकान ने कहीं का न रखा था. एक तरफ अजीत की पत्नी थी, ढाईतीन सौ की साड़ियों में लिपटी हर पल अपने सौंदर्य के प्रति सजग रहती. कार से उतरती तो लगता जैसे कोई रानी पधारी है. सदा महंगेमहंगे होटलों में खाती और घूमती. दूसरी तरफ राखी थी जिस के जीवन में मनोरंजन का कोई स्थान ही न था.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरा बच्चा भी जल्दी ही गया था. बच्चे, नौकरी और गृहस्थी की थकान ने उसे उग्र स्वभाव का बना दिया था. उस की घुटन अंगारे बन कर जबान से दहकने लगी. पवन जितनी देर घर में होता उसे यही सुनना पड़ता, "यह भी कोई जीवन है? कुछ खरीदने का मन हो तो खरीद नहीं सकते. इस घर की किचकिच से ऊपर भी कोई जिंदगी है, यह हम लोग कभी जान भी नहीं पाएंगे."

पवन मुसकरा कर कहता, "लगता है, अजीत का ऐश्वर्य तुम्हें भरमा रहा है."

वह चिढ़ जाती, "हां, भरमा रहा है. क्या तुम्हारा मन नहीं करता कि जीवन को घसीटने के बजाए झरने की कलकल धारा की तरह हंसतेहंसते बिताया जाए?"

पवन गहरी सांस खींच लेता. "मन तो करता है, पर सब को हर खुशी हासिल नहीं होती. हमारे पास जो कुछ है उसी में हमें संतोष करना चाहिए."

"तुम भाग्यवादी बन गए हो. अजीत ने तुम्हें कितनी बार अपने नए व्यापार में शरीक होने को कहा है, पर तुम. . ."

पवन हंस देता, "हम सरकारी नौकर हैं, राखी, हम कोई व्यापार नहीं कर सकते."

"व्यापार चमक जाए तो नौकरी छोड़ी भी जा सकती है," राखी क्रोध से कहती.

धीरेधीरे ऐसी बातों का असर पवन पर भी होने लगा था. अकसर वह भी कहने लगा, "अजीत, हमें भी फलतेफूलते देखना चाहता है. मैं यों ही उस की बात मानने से डरता हूं."

यह प्रभाव इतना बढ़ा कि एक दिन वह आंख मूंद कर अजीत के काले धंधे में शामिल हो गया. आरंभ में उसे अजीत के धंधे के बारे में सही ज्ञान न था. पर जब उसे मालूम हुआ तो राखी को उस बारे में कुछ बताना उचित नहीं समझा. बहुत जल्द ही घर में पैसों की वर्षा शुरू हो गई. कर्ज चुका गई. शानदार फ्लैट खरीद लिया गया. बहुत जल्द साड़ियों और जेवरों के ढेर लग गए. अलगअलग कार्यों के लिए अलगअलग नौकर रख लिए गए. उस के स्वप्नों का इंद्रधनुष मन के आकाश पर उग आया और वह अपनी खुशी को संभाल नहीं पा रही थी.

मीनू चाय ले आई. उस ने आंख खोल कर देखा और उठ बैठी. सिर बहुत भारी हो रहा था. मीनू ने उसे प्याला थमाते हुए पूछा, "साहब जमानत पर नहीं छूटे?"

राखी की आंखों में छोटेछोटे मोती छलक आए. बोली, "मीनू, मेरी हर कोशिश बेकार गई. उन्हें जमानत पर नहीं छोड़ा गया."

मीनू उस का दुख समझ रही थी पर उस के लिए कुछ कह पाना कठिन था.

रात खाने पर बैठते ही राखी ने प्लेट सरका कर कहा, "मीनू, मुझे एक दम सादा खाना दो." और फिर धीरे से बुदबुदाई, "पेट ही तो भरना है."

मीनू केवल एक सब्जी और रोटी प्लेट में डाल कर उस के सामने खिसकाते हुए धीरे से बोली, "माफ करना, मेम साहब, यही सब पहले सोचा होता तो साहब आज. . ."

उस ने चौंक कर मीनू को देखा. शाम से वह अपनेआप को मन के दर्पण में तलाश रही थी, पर मीनू ने एक पल में उस प्रतिबिंब को उस के सामने ला दिया. सचमुच उस ने कब यह जानने की कोशिश की कि वह कौन सा व्यापार है जिस में इतनी तेजी से पैसा बरसने लगा है. उसे तो बस यही खुशी थी कि वह भी अजीत की पत्नी की तरह अपनी हर इच्छा की पूर्ति के लिए पर्स खोल कर मनमाने रुपए बिखेर सकती है. तब उस ने यह नहीं सोचा था कि उस की इच्छाएं उसे इस मंजिल तक ले आएंगी कि पवन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पढ़ाई-लिखाई या खेल-कूद से थकान?

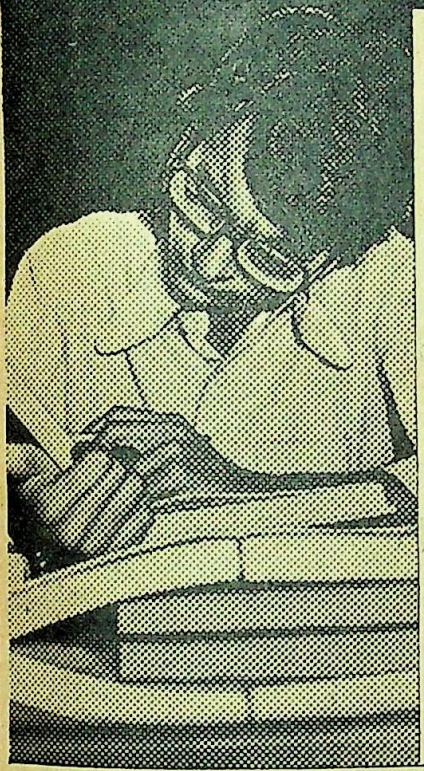

ग्लैक्सोज़-डी तुरंत शक्ति देता है!

शरीर की शक्ति का पांचवां हिस्सा दिमाग़ के लिए व्यय होता है और यह शक्ति सिर्फ़ ग्लूकोज़ से प्राप्त होती है। इस खोई हुई शक्ति को दुबारा हासिल कीजिए— ग्लैक्सोज़-डी लीजिए। और हां, इस से खेलकूद का उत्साह भी उमड़ने लगता है।

ग्लैक्सोज़-डी पानी, चाय, कॉफी और फलों के रस के साथ तो स्वादिष्ट है ही, वैसे भी मजेदार है।

पलों में
शक्ति का संचार

ग्लैक्सोज़-डी® एक ग्लैक्सो उत्पादन

dCP/GL/32 g. Hin.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो भी पकायें स्वादिष्ट बनायें
और सब छोड़िये अपनाईये
गगन
वनस्पति

गगन वनस्पति में कुछ भी पकाइये, अधिक स्वादिष्ट हो जाता है।

गगन विशेष रूप से तैयार सबसे बढ़िया और शुद्ध वनस्पति तेलों से बनाया गया है। और इसमें विटामिन ए और डी भी है। गगन वनस्पति विशुद्ध, बिलकुल सफेद, गंध रहित समान बारीक दानेदार है। तेज आग या ताप में भी इसमें धुआं नहीं निकलता है। इससे बनाये गये भोजन में स्वाभाविक स्वाद बना रहता है। इसलिये इसमें बनाये गये भोजन से अधिक आनन्द आता है। गगन वनस्पति का इस्तेमाल कीजिये, सारा परिवार फर्क पसंद करेगा। इसके दाने बतायेंगे कि यह कितना शुद्ध है और इसकी सफेदी इसकी सच्चाई का प्रमाण है।

SOBHAGYA

गगन वनस्पति में अद्वितीय !

को जेल की हवा खानी पड़ेगी. वह प
की जीवनसंगिनी है, पर उस ने स्वयं
उसे गलत रास्ते पर चलने के लिए वि
कर दिया.

अजीत पकड़ा गया था और अजीत
साथ पवन भी. दोनों के घरों
तलाशी हुई थी और हर कीमती
सरकारी अधिकार में ले ली गई
लेकिन उन तमाम चीजों से भी अधि
महत्त्वपूर्ण था पवन का चला जाना,
शूल की तरह उसे चुभ रहा था.

प्लेट को अपनी तरफ सरका
उस ने धीरे से कहा, "हां, मीनू, क
हम दोनों सिर्फ एकदूसरे के लिए
थे. फिर हम दोनों बस पैसों के लि
जोने लगे. यही हम से गलती हो गई.

उस के सपनों का इंद्रधनुष खंडह
हो कर गिर गया था. उसे लगा,
चाहती तो यह इंद्रधनुष उस के मन
आकाश पर कुछ इस तरह भी टिका
सकता था कि उस के सातों रंग के
प्यार के रंग होते, सिर्फ प्यार के
वहां हीरों और अशरफियों की दमक
होती.

पवन उस के लिए प्यार भरा छो
सा उपहार ला कर उसे चौंकाया करत
वह पवन की पसंद का शृंगार कर
उस की प्रतीक्षा किया करती, और
दोनों निकट होते तो वे क्षण बस
दोनों के लिए होते.

"काश, मैं उन क्षणों को बांध
रख सकी होती!" कांपती हुई आवा
के साथ ही उस की आंखों से सागर उम
आया.

मीनू के सिवा हर नौकर को
जवाब दे चुकी थी. आज उसे लग
था कि इस मकान को भी त्यागना होग
एक नए सूर्योदय के साथ उसे पवन
प्रतीक्षा करनी होगी. शायद इस बार
नया इंद्रधनुष बनाने में सफल हो जा
जिस के सातों रंग केवल प्यार के हों.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेख • सत्यप्रकाश हिंदवान

बच्चों पर नजर रखिए

नहीं तो एक दिन वे आप के लिए ऐसी समस्या बन जाएंगे कि पछताने के अलावा और कोई चारा नहीं रहेगा...

परीक्षा की कापियां जांचते समय यह बात दिमाग में कौंधी कि काश, मांबाप भी बच्चों को स्कूल भेज कर ही अपनी जिम्मेदारी की इतिश्री न समझ लेते, बल्कि प्रेम से घर पर भी कुछ सिखाने की कोशिश करते तो कितना अच्छा रहता.

इस से पहले कि मैं कुछ और लिखूं, मैं इन कापियों में लिखे उन कुछ रोचक अंशों का उल्लेख करना चाहूंगा जो कालिदास की शैली की मुख्य विशेषताओं पर पूछे गए प्रश्न के उत्तर में लिखे गए थे.

"कालिदास की सब से बड़ी विशेषता यह है कि उन में यत्रतत्र की शैली शीघ्र मिल जाती है. उन की शैली विश्व-विख्यात है. कालिदास ने अपनी शैली की ख्याति सारे विश्व में फैला रखी है. उन की शैली में बड़ी रोचकता मिलती है. कालिदास स्वयं बड़े ही दुखी रहते थे, इसलिए कालिदास कुछ समय तक तो दुखमय ही रहे. वह बुद्धि में बृहस्पति के समान माने जाते थे. परंतु उन की शैली में कहींकहीं बड़ी रोचकता पाई जाती है. कालिदास, जिन्होंने अपने देश के लिए बड़ेबड़े कार्य किए. उन की शैली बड़ी ही सुंदर थी और उन्होंने शैली संसार में विख्यात कर रखी थी."

कालिदास की शैली भले ही यत्रतत्र की न रही हो, पर यह शैली वास्तव में यत्रतत्र की नई शैली कही जा सकती है.

"कालिदास ने अपनी पुस्तक में सुंदर-सुंदर नाटकों का वर्णन किया है. कालिदास के नाटक बहुत लिखे पाए जाते हैं. इन्होंने कई नाटक, कई लेख तथा अधिक मात्रा में संस्कृत के अनुवादों का प्रयोग किया है."

पढ़ कर लगा कि ग्यारहवीं कक्षा के छात्रों को दिमागी कसरत से बचाने के लिए कालिदास ने यदि एक ही पुस्तक लिखी होती तो क्या ही अच्छा होता. छात्रों को उन के नाटक खोज निकालने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के लिए इतना कष्ट न करना पड़ता.

"इन की शैली की सब से बड़ी विशेषता यह है कि इस में राजा दिलीप की स्तुति का बहुत वर्णन किया गया है. महाकवि कालिदास की शैली महाकवियों में पाई जाती है. वह एक ऐसे वीर पुरुष थे, जिन्होंने अपनी शैली संसार में विख्यात कर रखी थी."

शायद छात्रा को यह आत्मज्ञान हुआ हो कि कालिदास ने अपनी तलवार के बल पर यह सब किया. वह संस्कृत के महानतम कवि जो थे. वह तलवार चलाना तो जानते ही होंगे.

"कालिदास ने विचारात्मक, गवेषणात्मक और आलोचनात्मक शैलियों का वर्णन किया है. इन की भाषा अत्यधिक उपमाओं के ऊपर सुशोभित है."

रहा होगा प्रश्न हिंदी साहित्य के लेखकों की शैली का और प्रयोग कर दिया कालिदास की शैली के विषय में.

घोटा का असर

"कालिदास ने संस्कृत में नाटक लिखे तथा यह हिंदी के कवि भी माने जाते हैं. इन्होंने हिंदी में भी कविताएं लिखी हैं. यह पहले बहुत लुटेरे थे, रास्ते चलते लोगों के पास जो कुछ भी होता था, लूट लेते और अपने परिवार का पालनपोषण किया करते थे. इन्होंने संस्कृत का प्रचार किया और पुस्तकों का संपादन भी किया. इसी से यह संस्कृत के प्रसिद्ध नाटककार कहलाए."

इन के इस कथन से हिंदी कविता का प्रचलन काफी प्राचीन लगता है. इसलिए अब शोध कर के कितने ही व्यक्ति पीएच. डी. की उपाधि पाने के अधिकारी अवश्य बन जाएंगे.

"अलंकारप्रियता तपोवन की शकुंतला में सहज शृंगार की भांति फिर भी उन की नैसर्गिक एवं सरल प्रिययुक्त है. कालिदास की निरीक्षण एवं अवधारणा शक्ति की निरक्षता थी. उन का पांडित्य भी अभययुक्त है."

यहां घोटा छात्रा को टोटा दे गया

"जिस प्रकार की शैलियां महाकवि कालिदास ने लिखी हैं, उस के समान अच्छी शैली किसी भी भाषा की नहीं है. उन की शैलियों में बहुत व्यापकता पाई जाती है. आप की भाषा में भी भाषा का प्रयोग किया गया है, वैसी भाषा कहीं प्राप्त नहीं है तथा वैसी भाषा का प्रयोग कहीं भी मालूम नहीं होता।

वही संस्कृत भाषा के अकेले हुए हैं, अन्य कोई नहीं, शायद इन्होंने नई बात खोज निकाली है.

"इन्होंने अनेक ग्रंथों की रचना है जिन में अनेक भाषाओं का प्रयोग अच्छी तरह किया है. इन्होंने विभिन्न प्रकार की शैलियों का प्रयोग भी अच्छी तरह किया है. इन की भाषा भावपूर्ण स्पष्ट है क्योंकि इन्होंने अपनी भाषा जहांजहां पर भी प्रयोग किया है, वहां पर स्पष्ट रूप से किया है."

इस छात्रा की सम्मति में कालिदास बड़े भारी भाषावैज्ञानिक थे. इसलिए भाषा को वह जितना समझते थे उस उतना ही स्पष्ट प्रयोग किया करते इस के लिखने से ऐसा ही बोध होता।

"कालिदास ने संस्कृत का प्रचार विदेशों में भी किया, इसी लिए यह संस्कृत के नाम से पुकारे जाते हैं. इन की प्रथम सम्राट पर निर्धारित है."

यह इतिहास की छात्रा प्रतीत होती है. हिस्ट्री, ज्योग्राफी बड़ी बेवफा, रात को रटी और दिन को सफा, यह पंक्ति ठीक ही लगती है.

"महाकवि कालिदास की भाषा बोली तथा गूढ़ है. आप ने अपने उपदेश का प्रचार करने के लिए कई बार विदेश का भ्रमण किया. आप की भाषा में शैली हैं. इन शैलियों में आप की भाषा शैली ने ऊंचा स्थान प्राप्त किया है."

इस हिसाब से तो हिंदी देश में प्राचीन काल से ही साहित्य की तथा साधारण की भाषा रही है. अतः भाषाओं की अपेक्षा राष्ट्रभाषा के रूप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंदी भाषा के प्रयोग का औचित्य नितांत युक्तिसंगत है--यह इन के कथन से स्पष्ट है.

"अपनी शैली के कारण भारतीय आदर्श में बहुत उच्चतम स्थान प्राप्त किया हुआ है और यह संस्कृत कवियों में एक महाकवि माने जाते हैं. अतः हम यह कह सकते हैं कि इन की शैली बहुत ही सुंदर है जिस से बालकों के मस्तिष्क पर अत्यंत प्रभाव पड़ता है."

प्रभाव न पड़ा होता तो ऐसा सुंदर उत्तर कैसे लिखा होता?

"इन की शैली इतनी सरल और सुबोध है जिसे साधारणजन भी पढ़ कर उस का आनंद उठा सकते हैं. अतः कालिदास ने खून और पसीने से मस्तिष्क में उत्पन्न उपज का संसार में प्रतिपादन किया और उन के बदले संसार से कीर्ति पाने की कभी इच्छा नहीं की है."

जैसे इन्होंने ऐसा उत्तर लिख कर नंबर पाने की इच्छा नहीं की.

"यह अपनी शैली में सुख का वर्णन किया करते थे. अपनी शैली में भी सुख-दुख का ही वर्णन किया है. महाकवि कालिदास की भाषा इत्यादि आज की संस्कृति है. आधुनिक कवियों के लिए अनुकरणीय है."

अभिभावक का उत्तरदायित्व

शायद यह कह कर छात्रा ने आधुनिक कवियों को नया दिशाबोध कराया है.

उत्तर पुस्तिकाओं से उद्धृत उपर्युक्त अंश शोध के नएनए विषय नहीं तो क्या हैं? स्पष्ट है कि अधिकतर छात्रछात्राएं अच्छी तरह समझ कर नहीं पढ़ते. बस पढ़ना है इसलिए जैसेतैसे पढ़ कर परीक्षा पास करना अपना उद्देश्य मान कर चलते हैं. ऐसा प्रायः इसलिए भी होता है कि अभिभावक उन्हें ऐसा करने के लिए प्रेरित करते हैं, अन्यथा थोड़ाबहुत ध्यान दिया जाए तो ऐसी बात नहीं कि छात्रछात्राएं रुचि ले कर न पढ़ें.

यह उत्तरदायित्व अभिभावकों पर

बात ऐसे बनी

मेरी दीदी की नईनई शादी हुई थी. जीजाजी का एक दोस्त नवविवाहित जोड़े के लिए समस्या बना हुआ था. वह जबतब आ जाता था और उस की एक बैठक तीनचार घंटे से कम नहीं होती थी. समयसमय पर दीदी भी उस के रोज आने की शिकायत जीजाजी से दबे स्वर में करतीं, परंतु कुछ भी स्पष्ट रूप से कहना संभव न था.

एक बार वह आया और बड़े अनौपचारिक ढंग से बोला, "हीरोहीरोइन क्या कर रहे हैं?"

जीजाजी ने बड़े ही सहज स्वर में उत्तर दिया, "अभी तक तो 'विलेन' की प्रतीक्षा कर रहे थे."

इस के बाद उसे जबतब टपक पड़ने की अपनी आदत छोड़नी ही पड़ी.

—रेणु गुप्ता, नजीबाबाद

✦

मैं एक बार दिल्ली से आ रहा था. बस स्टेंड पर आ कर मैं ने टिकट बाबू से आधा टिकट मांगा. मेरी उमर तो बारह साल से कम थी, परंतु कद कुछ अधिक था. अतः उस ने पूछा, "तुम्हारी उमर क्या है ?"

मैं ने बेझिझक कहा, "ग्यारह साल छः महीने."

तब वह मुसकरा कर बोला, "तुम तो शादीशुदा लगते हो, फिर भी आधा टिकट मांगते हो!"

मैं ने तुरंत कहा, "माफ करना, ससुर साहब, मैं आप को पहचान नहीं पाया था." यह सुनते ही लाइन में खड़े यात्री हंसने लगे और उस ने झेंप कर मुझे आधा टिकट दे दिया.

—पंकजकुमार जैन, खतौली ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही आता है कि वे देखें कि उन के बच्चे स्कूल का काम नियमित रूप से करते हैं या नहीं. अगर नहीं तो क्यों? इस का समाधान खोज निकालना उन का कर्तव्य है.

यह आवश्यक नहीं कि हम हर विषय के पंडित हों, लेकिन हर विषय के बारे में सामान्य ज्ञान जिज्ञासावश भी प्राप्त किया जा सकता है, जो समयसमय पर छात्र के तदविषयक ज्ञान की जानकारी आप को करा ही सकता है.

अभिभावकों को चाहिए कि वे अपने बच्चों को कुशाग्रबुद्धि छात्र बनने के लिए प्रोत्साहित करें और स्वाध्याय की ओर प्रेरित करें. केवल ट्यूशन के बल पर परीक्षा पास करवाना छात्र को अपंग बनाना है. उन्हें वाचनालयों और पुस्तकालयों की महत्ता का ज्ञान कराना चाहिए ताकि वे विभिन्न प्रकार की पुस्तकें पढ़ कर अपनेआप प्रश्नों का सही हल खोज निकालने में सक्षम हो सकें.

छात्र अपने मित्रों की देखादेखी विषय ले लेते हैं. उन्हें इस बात का प्राय ज्ञान नहीं होता कि उन के लिए भविष्य में उन विषयों की कितनी उपयोगिता है इसलिए छात्र को अपनी रुचि के अनुसार विषय का चयन करने में अभिभावक को उस की सहायता करनी चाहिए अन्यथा प्रतिभा के कुंठित होने की आशंका रहती है.

आज के युवा आक्रोश का एक कारण यह भी है, क्योंकि व्यावहारिक जीवन में उन की पढ़ाई की अनुपयोगिता उन्हें आगे चल कर खलती है.

महज डिग्री या सर्टिफिकेट पाने के लिए पढ़ाना मूर्खता है. यह आवश्यक है कि अभिभावक पहले से इस ओर जागरूक रहें ताकि आगे चल कर वे अपनी संतान के लिए व्यवसाय ढूंढ़ने में परेशान न हों.

आगरा के वितरक : मेसर्स लक्ष्मी एजेंसीज कारपोरेशन, 320, महात्मा गांधी रोड, (सुभाष पार्क के सामने) आगरा-2, फोन : 73443

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मायके के उपहार

लेख • क्षमा चतुर्वेदी

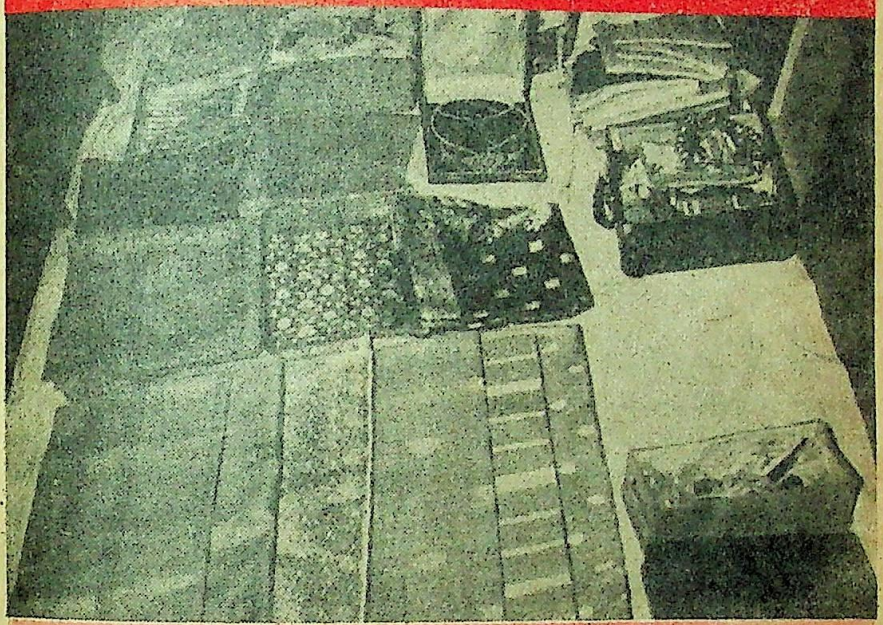

स्नेह और प्रेम के प्रतीक ये उपहार जानेअनजाने पतिपत्नी के मधुर संबंधों में कड़वाहट क्यों भर देते हैं?

अपने विवाह की वर्षगांठ पर भी रमा ने अच्छीखासी पार्टी का आयोजन कर डाला था. हलके सिंदूरी रंग की कांजीवरम की खूबसूरत सी साड़ी में सजीसंवरी वह सब मेहमानों में अलग ही दिखाई पड़ रही थी.

"बहुत ही प्यारी साड़ी है. सुशीलजी ने विवाह की वर्षगांठ पर आप को उपहार में दी होगी," प्रशंसा के शब्द कहने से मैं अपनेआप को रोक नहीं पाई थी.

"अरे, कहां, यह तो मां ने भेजी है. चाहे विवाह की वर्षगांठ हो या कोई तीजत्योहार. वह कभी भी साड़ी भेजना नहीं भूलती हैं. यह भला कहां उपहार देंगे. शादी की पहली सालगिरह पर एक साड़ी लाए भी तो इतनी मामूली कि मैं लाज के मारे पहन ही न सकी."

मैं एकाएक ही सकते में आ गई थी. पास ही खड़े सुशीलजी पर दृष्टि गई. क्रोध के आवेश में उन का चेहरा तन गया था. शायद कोई तीखा सा उत्तर देने से वह भी नहीं चूकते, पर मुझे देख कर न जाने क्या सोच कर चुपचाप वहां से चले गए. पर सारी बातों से बेखबर रमा अपनी ही धुन में कहे जा रही थी.

कुछ घर की • कुछ जग की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अब आप को क्या बताऊं, सदा से अच्छा पहनाओढ़ा, पर शादी के बाद जब से इस घर में आई, सारे हालात ही बदल गए. वह तो मां ही हैं, जो हमेशा किसी न किसी बहाने कुछ न कुछ भेज देती हैं, जिस से इज्जत बनी रहे."

वक्त का खयाल रखें

मैं अवाक थी. सुशीलजी अच्छेखासे सम्मानित अफसर थे. ऐसी कोई कमी भी कभी मुझे उन के घर में दिखाई नहीं दी कि रमा को किसी तरह की कोई शिकायत हो. फिर भी वह क्यों अपने पति से इतनी असंतुष्ट थी? कुछ कहने से पहले कम से कम मौके का तो ध्यान रख ही सकती थी.

पार्टी के बाद काफी देर तक हास्य-विनोद का कार्यक्रम चलता रहा. मजेदार गपशप और कहकहों में लोग डूबे हुए थे, पर सुशीलजी सब से अलग चुपचाप उखड़े से मूड में बैठे हुए थे. उत्सव की समाप्ति पर जब लोगों ने पतिपत्नी की सम्मिलित तसवीर उतारनी चाही तब भी वह बहाना बना कर टाल गए.

लौटते वक्त मैं रास्ते भर मायके से मिलने वाले इन स्नेह उपहारों के बारे में सोचती रही. ये उपहार तो स्नेह और प्रेम के प्रतीक होते हैं. फिर भी कभीकभी जानेअनजाने ये पतिपत्नी के मधुर संबंधों में विष के बीज क्यों बो देते हैं? मुझे एक पुरानी घटना याद आ गई.

उन दिनों हम लोग दूसरे शहर में थे. पड़ोस में ही राकेशजी का मकान था. उन की पत्नी मीरा धनवान पिता की इकलौती बेटी थी, बेहद लाड़प्यार में पली. लड़का डिप्टी कलक्टर है, यही देख कर पिता ने विवाह कर दिया. पर जब शादी के बाद मीरा ससुराल आई तो देखा कि घर का रहनसहन बहुत ही मामूली स्तर का है. पिता के न होने की वजह से छोटे भाईबहनों का भार भी राकेशजी पर ही था. ऐसी हालत में वह पत्नी की फैशनपरस्ती के सब शौक पूरे करने में असमर्थ थे, जो अब तक वह पिता के घर में करती आई थी.

मायके पहुंचते ही मीरा ने अपनी दर्दभरी दास्तान कह सुनाई. घर वाले यदि उसे समझाबुझा कर ससुराल के स्तर के अनुसार ही अपनेआप को ढालने की सलाह देते तो शायद स्थिति सुधरने की कुछ संभावना भी थी, किंतु इस के विपरीत भावुकता में आ कर पिता ने अपनी बेटी को हर महीने एक मोटी रकम ऊपरी खर्च के लिए देने का वादा कर लिया. अब क्या था, मीरा को बातबात में अपने पति पर ताना मारने का मौका मिल गया था.

"तुम्हारा दिया तो खर्च करती नहीं हूं. मायके का है सब कुछ." परिणामस्वरूप पतिपत्नी के बीच तनाव के बादल गहरे होते चले गए. शादी के पंदरहसोलह वर्ष बीतने के बाद भी अभी तक पतिपत्नी के बीच किसी तरह का सामंजस्य नहीं हो पाया है. मां के रुख को देख कर बच्चों के मन में भी पिता के प्रति असम्मान की भावना आ गई है.

मांबाप की गलती

कहीं तो मातापिता अपनी अधिक संपन्नता के कारण लड़की को इस तरह की मदद दे कर उस के दांपत्य जीवन में कटुता घोल देते हैं और कहीं उस वर्ग के लोग हैं, जो पुरानी रूढ़िवादी परंपराओं को निभाने के लिए अपने आवश्यक खर्च में कटौती कर के तरहतरह के उपहार तीजत्योहार पर लड़कियों को भेजते रहते हैं. परिणाम दोनों ही दशा में दुखद होते हैं. कहीं दांपत्य जीवन में दरार पड़ती है तो कहीं लड़कियां मायके वालों के लिए भारी हो उठती हैं.

कहने का मतलब यह नहीं है कि मायके से कुछ भी लेना बिलकुल ही बंद कर दिया जाए, किंतु किसी भी स्नेह उपहार को स्वीकार करने से पहले भलीभांति परख लेना चाहिए कि यह हमारे लिए अति आवश्यक है या महज ऊपरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शान, झूठे आडंबर और अहं भाव बनाए रखने के लिए ही हम इसे स्वीकार कर रहे हैं? कहीं पति को इस से ठेस तो नहीं पहुंच रही हैं. मायके वालों के लिए भी इस तरह की भेंट देना कहीं भारी तो नहीं पड़ रहा है.

सुबोध से उस की मां इसलिए अप्रसन्न थी कि वह अपनी बहनों को कभी तीजत्योहार या किसी उत्सव पर कपड़े इत्यादि नहीं भेजता है. सुबोध का कहना था, "सभी बहनें तो अपनीअपनी ससुराल में सुखीसंपन्न हैं और फिर चार बहनें हैं. किसे दूं, किसे नहीं. इन्हीं को देता रहा तो मेरी अपनी गृहस्थी कैसे चलेगी."

मां के तेवर चढ़ जाते, पर जानती थी कि सुबोध धुन का पक्का है. कितना भी समझाओबुझाओ, करेगा वही जो उस के मन में है.

जरूरत पर मदद?

पर पिछले साल जब कहीं जाते समय सुबोध अपनी बहन शुभा के यहां रुका तो पाया कि वे लोग काफी तंगी में दिन बिता रहे हैं. शुभा के पति लंबी बीमारी के कारण छुट्टी पर थे. कई महीनों से तनख्वाह रुकी हुई थी. बड़ी कठिनाई से गृहस्थी की गाड़ी खिंच रही थी. शुभा भी इतनी स्वाभिमानी थी कि किसी के आगे हाथ नहीं फैलाया. न ही मायके वालों को कोई खबर दी. सुबोध का दिल भर आया, चुपचाप बहन को अलग कमरे में ले जा कर रुपयों की गड्डी हाथ में थमा दी, "जरूरत के लिए रख लो."

"नहीं, नहीं, भैया," शुभा संकोच से भर उठी थी, "इन्हें मालूम होगा तो दुखी होंगे."

"शुभा," सुबोध ने जोर दे कर कहा, "अगर जीजाजी को बुरा लगे तो बाद में स्थिति संभलने पर तुम मुझे लौटा देना, पर अभी रख लो."

और इस के बाद भी कई बार आ कर सुबोध इसी तरह की मदद करता रहा. बहन का हृदय भाई के प्रति कृतज्ञता से भर उठा था.

अपना अहंभाव और शान बनाए रखने के लिए मायके से उपहार पाने की ललक क्या सुखी गृहस्थी के लिए उचित है?

किंतु ऐसे उदाहरण तो बिरले ही मिलेंगे. प्रायः रमा और मीरा जैसी महिलाएं ही मिलेंगी, जिन की शादी को साल भर हुआ हो या दस वर्ष—मायके से कुछ न कुछ पाने की उन की ललक बनी ही रहती है. अपना अहंभाव और शान बनाए रखने के लिए वे निस्संकोच भारी उपहार मायके वालों से लेती रहती हैं. भले ही परिणाम कितने ही दुखद क्यों न हों. मधुर संबंध भयानक संघर्ष और तनावों में ही क्यों न परिणत हो जाएं. इसी लिए औचित्य इसी में है कि सारे पहलुओं पर समझदारी से सोचविचार कर के ही इस तरह के उपहार स्वीकार किए जाएं. कहीं ऐसा न हो कि आप के द्वारा लिए गए ये स्नेह उपहार आप के जीवन को जहर बना दें? ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ये पत्नियां

मेरी पत्नी को एक हिंदी दैनिक के रविवारीय परिशिष्ट में छपा अपना साप्ताहिक भविष्य पढ़ने की बड़ी उत्सुकता रहती थी, जिसे या तो वह खुद पढ़ लेती या फिर बड़ी लड़की से पढ़वा कर सुनती. जब कभी मैं उर्दू का अखबार लेता तो मुझ से भी आग्रह करती कि 'यह हफ्ता आप के लिए कैसा रहेगा?' के अंतर्गत मैं उस का राशिफल पढ़ कर सुनाऊं.

मैं कभी ठीकठीक पढ़ कर सुना देता, कभी नमकमिर्च लगा कर, पांचसात बातें अपनी ओर से बढ़ा कर सुना देता. फिर वह दोनों राशिफलों का समन्वयय करती और फलानुसार कभी खुश होती और कभी कंठित. मैं मन ही मन मुसकराता रहता, क्योंकि मुझे इन राशिफलों की वास्तविकता का पता है कि इन राशिफलों में कोई विशेष बात नहीं होती.

इन में साधारण सी बात होती है जैसे स्वास्थ्य का ध्यान रखें, शत्रु दबे रहेंगे, खर्च आमदनी से अधिक होगा, पेट में गड़बड़ का डर, फलां तिथि निषेध मेहमान आने की संभावना इत्यादि.

सभी पत्रिकाओं में प्रकाशित साप्ताहिक भविष्य में घूमफिर कर यहीं बातें पढ़ने को मिलती हैं.

एक बार मेरी पत्नी सिलाई करते करते मशीन रोक कर बड़ी लड़की से बोली, "रेखा, देखो बेटा, मेरे राशिफल में क्या लिखा है?"

लड़की ने मां की बताई राशि को पढ़ कर सुनाना शुरू किया. मैं भी वहीं बैठा उर्दू अखबार पढ़ रहा था, मगर मेरे कान उधर ही लगे हुए थे. लड़की जल्दीजल्दी राशिफल पढ़ने लगी उस में एक पंक्ति आई, 'पुराने मित्रों की सहायता से काम बन जाएंगे.' सुन कर मेरी हंसी छूट गई और मैं ने कहा, "बेटा, इसे जरा अपनी मम्मी को दोबारा पढ़ कर सुनाओ. उस ने ध्यान से न सुना हो."

"लड़की ने वह पंक्ति दोहराई तो पत्नी ने झल्ला कर कहा, "यह क्या बकवास लिखी है?"

मैं ने कहा, "तुम तो अपने राशिफल को सदा ही ठीक समझती हो और फिर अपने पुराने मित्रों से सहायता ले कर काम निकालना क्या अपराध है? कितना अच्छा होता कि मेरा भी तुम्हारे उन पुराने मित्रों से परिचय हो जाता."

बात मजाक की थी लेकिन वह चिढ़ गई और लड़की के हाथ से समाचार पत्र छीन कर परे फेंक दिया. मैं उस के मुंह पर आए उतारचढ़ाव को देखदेख कर खुश हो रहा था. मैं हंसी को दबा कर बोला, "आखिर हो क्या गया? तुम्हारे नाम की और न जाने कितनी स्त्रियां होंगी, उन में से किसी न किसी पर तो वह फिट बैठेगी ही, और यदि तुम्हें बुरा लगा हो तो तुम अपना भविष्य मत पढ़ा या सुना करो."

अब वह अपना साप्ताहिक भविष्य पढ़ने में कोई दिलचस्पी नहीं रखती. कम से कम मेरे सामने तो नहीं, आंख बचा कर पढ़ लेती हो तो मालूम नहीं.

—इंद्र वर्मा, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यंजन डबल रोटी के

सब के मन के...

भरवां डबल रोटी

सामग्री : सैंडविच बनाने के काम आने वाली एक बड़ी डबल रोटी, दो प्याले दूध, दो बड़े प्याज, मिर्च अपनी रुचि के अनुसार, एक बड़ा टमाटर, धनिए की पत्तियां (कटी हुई), दो गाजर, 100 ग्राम हरी मटर, दो उबले हुए आलुओं के कतले, दो उबले हुए अंडों के टुकड़े.

विधि : एक डबल रोटी ले कर उस के चारों ओर आधा इंच के करीब छोड़ कर बाकी बीच का हिस्सा तेज चाकू से काट कर निकाल लें. अब घी गरम कर के उस में संभाल कर इस खोखली डबल रोटी को तल लें. जब वह गुलाबी हो जाए तो उसे निकाल कर किसी बरतन में रख लें. घी गरम कर के उस में प्याज को लाल करें. फिर उस में उबले हुए आलू, मटर, गाजर और टमाटर डाल दें. जब खूब लाललाल भुन जाएं तो ऊपर से हरी मिर्च और कटी हुई धनिया डाल दें. अब इसे अलग किसी बरतन में निकाल लें.

पहले की तली हुई खोखली डबल रोटी में यह तैयार मसाला भर दें. इस के बाद इसे एक बड़ी प्लेट में रख कर टमाटर, गाजर, उबले अंडों के टुकटों आदि से सजा लें. आप की खानें की मेज पर इस प्लेट से चार चांद लग जाएंगे.

डबल रोटी के दही बड़े

सामग्री : डबल रोटी के 6 टुकड़े, आधा किलो गाढ़ा मट्ठा, नमक, जीरा, अदरक, हरी मिर्च, हरी धनिया, काला नमक, घी.

विधि : सब से पहले अंदाज से पिसा हुआ काला और सादा नमक मट्ठे में डाल दें.

अब डबल रोटी के एक टुकड़े के चार टुकड़े कर के उस के चारों कोनों को कैंची से काट कर गोलगोल कर लें. इसी प्रकार डबल रोटी के अन्य सभी टुकड़ों के गोल टुकड़े तैयार कर लें. इस के बाद कड़ाही में घी डाल कर उसे गरम करें. गरमगरम घी में डबल रोटी के टुकड़ों को डाल कर लाललाल तल लें. उन्हें निकाल कर मट्ठे में डालती जाएं. जब सब टुकड़े मट्ठे में डाल चुकें तब ऊपर से कटी हुई हरी मिर्च, अदरक और हरी धनिया डाल दें. दही बड़े तैयार हो गए.

ब्रेड रोल्स

सामग्री : डबल रोटी के 6 टुकड़े, 250 ग्राम उबले आलुओं का भरता, उबली हुई 100 ग्राम मटर, पिसा हुआ नमक, जीरा, घी, एक चम्मच अमचूर, कटी हुई हरी धनिया, पिसी हुई लाल मिर्च.

In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विधि : कड़ाही में पोस्ता सा घी डालें. जब घी गरम हो जाए तो उस में आधा चम्मच जीरा डालें. जीरा लाल हो जाने पर आलू का भरता (आलू बिलकुल महीन न हो) और मटर डाल दें. ऊपर से अंदाज से पिसा हुआ नमक डालें. जब गुलाबीगुलाबी भुन जाए तो ऊपर से पिसी हुई लाल मिर्च, हरी धनिया और कटी हुई अदरक डाल दें. इसे एक बरतन में निकाल लें.

अब कड़ाही को आंच पर रख कर उस में घी डालें. पास ही में किसी गहरे बरतन में पानी ले कर आधा चम्मच पिसा हुआ नमक डालें. डबल रोटी के तीन टुकड़ों के किनारों को कैंची से काट दें और फिर उन टुकड़ों को नमक मिले पानी में एक मिनट के लिए भिगो दें. अब हाथ से दबादबा कर डबल रोटी का पानी निकाल दें. डबल रोटी के प्रत्येक टुकड़े को हथेली पर रख कर और उस पर तैयार किया हुआ आलू का मसाला रख कर लंबाई में गोलगोल लपेट दें. किनारों को अच्छी तरह अंदर की ओर मोड़ें. आलू बाहर न निकलने पाए. इसे गरम घी में डाल कर गुलाबीगुलाबी तल लें. ब्रैड रोल्स खाने के लिए तैयार हैं.

डबल रोटी की सब्जी

सामग्री : कसा हुआ एक चौथाई हरा नारियल, डबल रोटी के पांच टुकड़े, 20 ग्राम आलू, एक गांठ हलदी, आठ लाल मिर्चें, 50 ग्राम धनिया, दो बड़े प्याज, लहसुन के सात दाने, 50 ग्राम दही, आधा चम्मच शक्कर, नमक अंदाज से, हरी धनिया कटी हुई, घी.

विधि : डबल रोटी के एक टुकड़े के चार टुकड़े इस प्रकार करें कि पांच टुकड़ों से बीस टुकड़े हो जाएं. इन्हें घी में गुलाबी गुलाबी तल कर अलग कर लें. फिर भगोने में आलू डाल कर घी में लाललाल भून लें. इस के पश्चात जरा ज्यादा घी में कटा हुआ प्याज डाल दें. जब प्याज लाल हो जाए तब उस में पिसा हुआ मसाला (हलदी, धनिया, मिर्च, लहसुन, प्याज) डाल कर भूनें.

इस तरह जब मसाला खूब भुन जाए तब उस में कसा हुआ नारियल और आलू डाल दें.

इसे ढक कर धीमी आंच में भूनें. भूनते समय दही को पानी में गाढ़ागाढ़ा घोल कर डाल दें. जब खूब भून लें तब शोरबे के लिए गरम पानी डालें.

एक बार शोरबे में उबाल आ जाए पर उस में तली हुई डबल रोटी भी डाल दें. जब देख लें कि सब चीजें पक गईं तब उस में आधा चम्मच चीनी डालें. जब शोरबा बन जाए तब भगोना उतार लें.

अब ऊपर से हरी धनिया डाल दें. आप की मजेदार सब्जी तैयार है.

—मनोरमा श्रीवास्तव 'मनोज'

विशेषांकों का सेट

सरिता के निम्न विशेषांक सेटों के रूप में उपलब्ध हैं. चारों का मूल्य केवल 6 रु. (रजिस्टर्ड डाक खर्च सहित).

1. कढ़ाई विशेषांक (दिसंबर द्वितीय, 1974). हर प्रकार की कढ़ाई के तीस से अधिक नमूने.
2. बुनाई परिशिष्टांक (अक्तूबर द्वितीय, 1975). आधुनिक डिजाइनों के नौ नमूने.
3. दीपावली विशेषांक (नवंबर प्रथम, 1975). 250 पृष्ठों का अंक, जिस में 14 कहानियां, 15 लेख और शाश्वत रहने वाली सामग्री है.
4. रजत जयंती अंक (दिसंबर प्रथम, 1972) 350 पृष्ठों का संग्रहणीय अंक.

आज ही पूरा सेट मंगाइए. 6 रु. का मनीआर्डर निम्न पते पर भेजिए :

सरिता,
रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-55.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिन्नभूतों के साए

क्या इन ढोंगों का आधार मनोवैज्ञानिक नहीं है?

लेख • मोहम्मद हुसेन

सरिता, अप्रैल (प्रथम), 1975 में 'बच्चे के जन्म से पहले और उस के बाद' (लेख : जहीर न्याजी) पढ़ कर मुझे इसलिए प्रसन्नता हुई कि मुसलिम लेखकों एवं विचारकों ने भी अब मुसलिम समाज में व्याप्त बुराइयों का परदाफाश करने का साहस किया है. पिछले कुछ दिनों से हमीद साहब ने 'राजस्थान पत्रिका' में 'इसलाम अपने ही आईने में' स्तंभ के अंतर्गत मुसलिम समाज में प्रचलित अंधविश्वासों एवं रूढ़िवादी रीतिरिवाजों के फिलाफ कलम उठाई है.

यह अच्छी बात है. वस्तुतः मुसलिम समाज की बुराइयों का सही विश्लेषण मुसलिम विचारक ही कर सकते हैं. यह मानसिक क्रांति की शुरुआत है, जिस के आशाजनक परिणाम निकल सकते हैं. परंतु मुसलिम समाज सुधारकों को मुसलिम समाज की इस मनोवैज्ञानिक स्थिति को अच्छी तरह समझ लेना चाहिए कि धर्म के नाम पर इन लोगों से अच्छा या बुरा कुछ भी कराया जा सकता है, इसलिए सुधार की बात इसलाम धर्म के व्यापक दायरे में रह कर ही कही जानी चाहिए.

श्री जहीर न्याजी ने अपने लेख में यह प्रश्न उठाया है कि मुसलिम समाज में पीरीफकीरी में अंधी श्रद्धा क्यों है? आओ, हम इस प्रश्न पर जरा गहराई से विचार करें.

इस प्रश्न का उत्तर पाने के लिए हमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तीन बातों का जवाब देना होगा

(1) पीरीफकीरी व जिन्नभूतों के चक्कर का इसलाम धर्म से क्या संबंध है?

(2) क्या सारा मुसलिम समाज इस चक्कर में है?

(3) इस चक्कर के पीछे कोई अन्य मनोवैज्ञानिक समस्याएं एवं परिस्थितियां तो नहीं हैं?

जहां तक पहले प्रश्न का संबंध है, इस का उत्तर यही है कि इसलाम के मौलिक सिद्धांतों से इस का कोई सरोकार नहीं है. ये सब क्रियाएं कुरान और हदीस के नियमों के मुताबिक नहीं हैं. शरीअत इस की इजाजत नहीं देती. फिर यह चक्कर कहां से और कैसे आरंभ हुआ? वास्तव में देखा जाए तो इन सब सामाजिक रूढ़ियों का आरंभ भारत की धरती पर हुआ है. इस के भी दो कारण स्पष्ट नजर आते हैं. एक तो भारत में जितने मुसलमान हैं उन में से अधिकांश के पूर्वजों ने अपने मूल धर्म को छोड़ कर इसलाम को स्वीकार किया है. उन्होंने अपने धर्म को तो बदल दिया, परंतु अपने पुराने सामाजिक रीतिरिवाजों का पालन जारी रखा, केवल उन का चोला बदल दिया.

परंपरागत रूढ़िग्रस्त संस्कार

मेरा स्वयं एक ऐसे समुदाय से संबंध है जो पहले राजपूत था और बाद में मुसलमान हो गया. आज भी मेरे समुदाय के लोग अपने नाम के साथ चौहान, परिहार, सूर्यवंशी, सोलंकी, भाटी आदि गोत्र जोड़ते हैं. जितने भी सामाजिक रीतिरिवाज हैं वे सब राजपूतों के से हैं. फर्क सिर्फ इतना है कि पहले जिन संस्कारों के लिए पंडित बुलाया जाता था, अब मौलवी बुलाया जाता है और संस्कृत के श्लोकों के स्थान पर अरबी के श्लोक बोले जाते हैं. कुछ रीतिरिवाजों के नाम बदल कर उर्दू या अरबी के शब्दों का प्रयोग किया जाने लगा. मगर अधिकांश मामलों में तो नाम भी वही हैं.

शायद इसी प्रकार मूर्तिपूजा के प्रतीक के रूप में मजारपरस्ती, जादूटोनों के स्थान पर तावीजगंडों और मनौती के स्थान पर मिन्नत को स्थान मिल गया. धर्म बदल लेने से उन लोगों का भौगोलिक वातावरण तो नहीं बदला. गैर मुसलिम समाज के और उन के बीच में लोहे की दीवारें तो खड़ी नहीं हो गईं. भारतीय संस्कृति के प्रभाव से इसलाम संस्कृति अछूती तो नहीं रही. फलस्वरूप ये मुसलमान, जो पहले शायद निम्न वर्ग की हिंदू जाति से संबंध रखते थे, अपने उन अंधविश्वासों और रूढ़ियों को अपने साथ लेते आए और आज भी उन बेड़ियों को अपने पांवों में डाले खींचते जा रहे हैं.

इसलाम में सूफीवाद

इस मजारपरस्ती की शुरुआत के पीछे जो दूसरा कारण रहा, वह था इसलाम में सूफीवाद का आरंभ जो भारत में जमा और फलाफूला है. यह भारतीय संस्कृति के प्रभाव से ओतप्रोत है.

अब प्रश्न यह उठता है कि इन इसलाम विरोधी प्रवृत्तियों को बढ़ावा किस ने दिया? उत्तर स्पष्ट है कि कुछ स्वार्थ परस्त मुल्लाओं, मुजाविरों और फकीरों ने. उन्होंने यह अनुभव किया कि बैठेबिठाए रोजी चल जाती है, बिना हाथपांव चलाए खाना मिल जाता है तो क्यों न इस को बढ़ावा दिया जाए. उन्होंने ही इन सब बातों को इसलाम धर्म का अनिवार्य अंग सिद्ध करने का प्रयास किया.

अब दूसरा प्रश्न यह सामने आता है कि क्या सारा मुसलिम समाज इस पीरीफकीरी के चक्कर में पड़ा हुआ है? इस का उत्तर तो श्री जहीर न्याजी ने भी दिया है कि सारा मुसलिम समाज इस बुराई में लिप्त नहीं है. मुसलमानों में तीन वर्ग स्पष्ट दिखाई देते हैं. एक तो वह जिस ने आधुनिक शिक्षा प्राप्त की है और आर्थिक दृष्टि से अन्य वर्गों से बेहतर है. दूसरे, वे जिन्होंने धार्मिक शिक्षा पाई है और सामान्य आर्थिक स्तर के लोग हैं और तीसरे, वे जिन्होंने किसी भी प्रकार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की शिक्षा नहीं पाई है. पढ़ने के नाम पर चंद आयतें रट ली हैं और उर्दू की पहली किताब पढ़ कर एकदो रिसाले पढ़ लिए हैं. इस वर्ग में कुछ लोग आर्थिक दृष्टि से संपन्न भी हैं परंतु अधिकांश निम्न आर्थिक स्थिति में अपना जीवन यापन करते हैं. इन में से कुछ ग्रामीण भी हैं जिन की वेशभूषा भी गैर मुसलिमों जैसी है. ये लोग कुरान शरीफ का नाम लेते हुए भी डरते हैं और मौलवी साहब का एक लफ्ज भी इन के लिए खुदाई हुक्म है.

वास्तव में मुसलमानों का यह तीसरा वर्ग ऐसा है जिस को धर्म के नाम पर आसानी से गुमराह किया जा सकता है. और इस वर्ग की संख्या भी अधिक है. इन लोगों को न दीन का ज्ञान है और न दुनिया का. इन के रहनसहन, रीतिरिवाज एवं धार्मिक भावनाएं तथा सोचनेविचारने के तरीके बिलकुल अलग दिखाई देते हैं. मुझे तो ऐसा लगता है कि इन लोगों का एक तीसरा इसलाम है, जो वास्तविक इसलाम से बिलकुल भिन्न है. इन्हीं लोगों में पीरीमुरीदी का चक्कर सब से अधिक है, जो इन की सामाजिक पृष्ठभूमि, वर्त-

हमारी बेड़ियां

मुझे प्रैक्टिस शुरू किए अभी एक वर्ष भी नहीं हुआ है. कुछ दिनों पहले मुझे एक प्रसव कराने के लिए जाना पड़ा. वहां मुझे बताया गया कि बच्चे को बाहर आए आधा घंटा हो गया है किंतु गर्भनाल अभी तक पूरी तरह बाहर नहीं निकला है तथा बच्चे और मां, दोनों की हालत खराब है.

मैं ने शीघ्र जा कर देखा कि बच्चा चारपाई से नीचे लटका उलटीसीधी सांसें ले रहा है. जब मैं ने पूछा कि बच्चे का नाल क्यों नहीं काटा गया तो मुझे बताया गया कि उन के यहां नाल तब तक नहीं काटा जाता जब तक खराई बाहर नहीं आ जाती, और उस से पहले काटने से देवी मां नाराज हो कर बच्चे को उठा लेती है.

मैं अपना माथा ठोंक कर रह गया. समय कम था. यह निश्चित था कि चंद मिनट बीत जाने पर बच्चा दम तोड़ देगा. किंतु मुझे कोई नाल नहीं काटने दे रहा था. किसी प्रकार मैं ने उन औरतों का ध्यान दूसरी ओर लगाया और उन की मरजी के खिलाफ नाल काट दिया. मुझे कृत्रिम श्वास क्रिया द्वारा बच्चे को पूर्ण स्वस्थ करने में आधा घंटा लग गया. इस बीच नाल भी बाहर आ गया.

बाद में मुझे पता लगा कि देवी मां के प्रकोप का भय दिखा कर दाई अधिक समय लगा रही थी और बच्चे तथा मां की जिंदगी से खेलते हुए परिवार को ठगने की ताक में थी.

—र. स. वार्ष्णेय, अलीगढ़

पिछले दिनों मेरे बड़े भाई साहब की शादी हुई थी. भाभीजी घर पर आ गईं. वह सब काम करतीं, किंतु खाना नहीं बनातीं थीं, क्योंकि हमारे यहां रिवाज है कि बहू के पहली बार घर आने पर उस से दो महीने तक खाना नहीं बनवाया जाता.

कुछ दिनों बाद ही हमारे घर के सदस्यों को किसी विवाह पर शहर से बाहर जाना पड़ा. तब घर में केवल मैं, भाईसाहब और भाभीजी रह गए. जब शाम हुई तो यह कठिनाई हुई कि खाना कौन बनाए, क्योंकि भाभीजी को तो दो महीने तक खाना बनाना नहीं था. परिणाम यह हुआ कि हम तीनों को चार दिन तक होटल में भोजन करना पड़ा.

—संजीव गुप्ता, लुधियाना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मान शैक्षिक [illegible] हुए स्वाभाविक है.

यदि इन लोगों के इस अंधविश्वास और रूढ़िवादिता की तह तक पहुंचने का प्रयास किया जाए तो हम अपने तीसरे प्रश्न का भी उत्तर पा लेंगे कि क्या इस चक्कर के पीछे धार्मिक भावना के अतिरिक्त कोई अन्य मनोवैज्ञानिक, सामाजिक अथवा आर्थिक परिस्थिति तो काम नहीं कर रही है?

शुरू में ही यह स्पष्ट हो जाना आवश्यक है कि जिन्नभूतों के चक्कर में लिप्त व्यक्तियों में पुरुषों की तुलना में स्त्रियों की संख्या बहुत अधिक है. और स्त्रियों में भी अविवाहिता कम और विवाहिता अधिक, प्रौढ़ा एवं वृद्धा कम और नवयुवतियां अधिक. मैं यहां पर कुछ उदाहरण प्रस्तुत कर रहा हूं, जिन को मैं ने बहुत ही निकट से देखासुना है.

बांझपन का जिन्न

मेरे पड़ोस में एक युवती रहती थी, मांसल शरीर, गौर वर्ण और आकर्षक चेहरा. उस का विवाह एक मरियल से युवक से हो गया. कुछ समय तक दांपत्य जीवन ठीक से चलता रहा. वर्ष बीतते गए, मगर उस युवती के कोई संतान नहीं हुई. परिवार में कानाफूसी आरंभ हुई कि बहू तो बांझ है, लड़के की दूसरी शादी कर दी जाए. बहू को भनक मिली तो वह घबरा गई. आने वाली सौत और उस के पश्चात उस पर टूटने वाले कहर की कल्पना कर के वह कांप उठी. उस ने पीरोंफकीरों के चक्कर लगाने शुरू कर दिए.

उसे बताया गया कि उस पर एक बहुत ही पाक जिन्न का साया है, जो उस को मां बनने से रोक रहा है, क्योंकि मां बनने पर वह पाक नहीं रह सकेगी और इस से जिन्न की बेअदबी होगी. उस ने एक चिल्ला बांधा और लगी सिर धुनने. उसी दौरान उस ने यह स्पष्ट कर दिया कि यदि लड़की के खाविंद ने दूसरी शादी की तो जिन्न सारे खानदान को [illegible] कर देगा. परिवार वालों फिर कभी दूसरी शादी का नाम नहीं लि वह युवती पीरोंफकीरों और मजारों चक्कर काटती रही. उस का पति बेचा मरियल तो था ही, थोड़े समय बाद उस टी. बी. हो गई और वह अल्लाह प्यारा हो गया. यदि स्त्री को मां ब का भय न हो और पति का साया भी सि पर न हो तो कदम बहक सकते हैं. य यही हुआ.

चस्के का भूत

मेरे पड़ोस में एक परिवार रह था. उन का मकान मेरे घर की छत साफ दिखाई देता था. एक कोठरी औ उस के आगे चारदीवारी से घिरा अहा था. परिवार की आर्थिक एवं सामाजि स्थिति अत्यंत दयनीय थी, परंतु संत के मामले में अल्लाह की सारी रह उसी घर पर बरसती थी. दो लड़कि किशोरावस्था की दहलीज को पार कर यौवनावस्था में पहुंच चुकी थीं मगर शा करना एक समस्या था.

सर्दियों का मुझे पता नहीं गरमि में सारा परिवार बाहर सोता था औ पतिपत्नी उन सब बच्चों की उपस्थि में जो हरकतें करते थे वे जानेअनजा नजर आ जाती थीं, और शर्म से मुंह फे लेना पड़ता था. ऐसे वातावरण में प उन लड़कियों का चरित्र बिगड़ता गया.

महल्ले के लड़कों की आमदर बढ़ने लगी. किसी प्रकार लड़कियों पिता ने दो लड़कों को फांस कर लड़कि उन के गले मढ़ दीं. एक लड़की के बारे सुना कि ससुराल में उस को कैद अनुभव होने लगी. होटलों की चाय पी का जिस को चस्का पड़ जाए उस को घ की चाय से तृप्ति नहीं होती. लड़की बाहर निकलने के लिए हाथपांव मा मगर बेड़ियां सख्त कर दी गईं.

कुछ दिनों बाद मैं ने सुना कि उ लड़की को भूत लग गया है. उस मजारों पर ले जाया जाने लगा. विशेष

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवन में कई खुशियों के पल होते हैं

सरदर्द को आपकी खुशियां बिगाड़ने न दीजिये

२ ऐस्प्रो लीजिये

माइक्रोफ़ाइन्ड ऐस्प्रो दर्द को जल्दी खींच निकालता है

A.G.62.HN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

मैक्स फ़ैक्टर का हिप्नोटीक टॅल्क

उनकी पसन्द, जिन्हें चाहिये अनोखापन

मैक्स फ़ैक्टर के हिप्नोटीक टॅल्क में जगप्रसिद्ध हिप्नोटीक परफ़्यूम मिली है. आपका मन मोहने वाली ख़ुशबू जो आपको दिनभर तरो-ताज़ा बनाये रखती है.

जगप्रसिद्ध सौंदर्य प्रसाधनों के निर्माता **मैक्स फ़ैक्टर** *की देन!*

©१९७४ मैक्स फ़ैक्टर एंड कं. इंटरनेशनल.
कॉपीराइट कन्वेंशन के अधीन सर्वाधिकार सुरक्षित

Shilpi–MF–1A/74 HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ने राय दी कि यह भूत बहुत ही खतरनाक है, इस को वश में करना असंभव है. रात हो या दिन, लड़की घर से भाग निकलती, घंटों उसे ढूंढ़ा जाता फिर वह अपनेआप वापस आ जाती. पूछने पर प्रेत लगने की तरह बकझक करने लगती और कहती, "हम इस लड़की को घुमाने ले गए थे. अगर किसी ने इस को रोका तो उस की गरदन तोड़ देंगे." अब वह लड़की आजाद थी. कोई भी उसे कहीं आनेजाने से नहीं रोकता था. भय से आतंकित परिवार के सदस्यों ने कभी उस का पीछा भी करने का साहस नहीं किया. वह लड़की यही तो चाहती थी. अब वह बहुत खुश रहती थी. उस को बाजार की चाय मिलती रही.

डाइन की विदाई

एक परिवार में एक लड़की नईनई ब्याह कर लाई गई. सासननदों ने उस लड़की का जीना हराम कर दिया. हर तरह का काम उस से कराया जाता और ऊपर से तानाकशी, मारपीट, खानेपीने की तकलीफ और रातदिन का कलह. लड़की तंग आ गई. उस ने एक पड़ोसिन के आगे अपना रोना रोया तो वह उस को एक पीर की दरगाह पर ले गई.

मुजाविर ने सारी बातें सुन कर निदान बताया कि लड़की जब अविवाहित थी तो इस ने एक औरत का दिल दुखाया था जो डाइन थी और उसी का इस पर असर है. उस डाइन ने ऐसा माहौल बनाया कि अब यह लड़की अपनी ससुराल में खुश नहीं रह सकती. थोड़े दिनों बाद वह खेलने लगी. जब कभी उसे सासननदों द्वारा सताया जाता तो वह खेलने लग जाती. उस पर सवार डाइन उन सासननदों को फटकार कर कहती कि अगर उन्होंने इस लड़की को सताया तो वह इस के पति को खा जाएगी. सासननदें उस लड़की से डरने लगीं और वह लड़की पीरों की मजारों पर जाने के बहाने घरेलू कामों से मुक्ति पा लेती. ननदों की शादी हो गई और सास मर गई. फिर उस लड़की की डाइन भी उस से विदा हो गई

जिस प्रकार एक बहू ने अपनी सासननदों के अत्याचारों से छुटकारा पाने के लिए डाइन के असर का प्रयोग किया था उसी प्रकार एक मां ने अपने बेटे को पत्नी के चंगुल से निकाल कर अपने वश में करने के लिए उस का प्रयोग किया. मां पहले तो बीमार पड़ी. पीरोंफकीरों ने बीमारी का कारण बताया कि उस औरत का मृत पति उस से बहुत प्रेम करता था, जब उस ने अपनी विधवा को दुखी देखा तो वह उस के शरीर में प्रवेश कर गया है. इस तरह लड़के का बाप उस की मां के शरीर में आ कर बोलने लगा और उस ने अपने पुत्र को नसीहत दी कि यदि किसी ने भी उस की विधवा को सताया तो वह उस का सर्वनाश कर देगा. बेटे को चाहिए कि वह अपनी मां की हर इच्छा की पूर्ति करे.

मां की अद्भुत बीमारी

मातृभक्त पुत्र अपनी कलकी की तनख्वाह में मां को पीरों की मजारों के दर्शन के लिए कई शहरों की सैर कराता रहा और मां की हर इच्छा की पूर्ति करता रहा. अपनी पत्नी और बच्चों के प्रति वह बिलकुल उदासीन हो गया. आज जब मैं उस युवक की हालत देखता हूं तो उस पर दया आने लगती है. बेचारा समय से बहुत पहले ही बूढ़ा हो गया है. कभीकभी मेरी मां उस की मातृभक्ति का उदाहरण मुझे देती है तो मैं केवल मुसकरा कर रह जाता हूं.

एक दूसरे महल्ले में एक अधेड़ उमर की औरत रहती थी. पति का देहांत हो गया था और संतान कोई थी नहीं. गुजारा कैसे हो? इस समस्या का समाधान भी उस औरत ने इसी प्रक्रिया से कर लिया. उस ने अपने घर के एक ताक को बाबा का स्थान बना डाला. रोज शाम को उस के शरीर में बाबा आने लगे.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Shilpi-MF-1A/74 HIN
कॉपीराइट कन्वेंशन के अधीन सर्वाधिकार सुरक्षित

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आसपास की औरतें उस के पास आने लगीं. धीरेधीरे उस की प्रसिद्धि सारे शहर में फैल गई. जो भी स्त्री अपनी समस्या ले कर आती, बाबा उस का कारण बताते और साथ ही कोई उपचार भी बताते. उस ताक पर कुछ भेंट चढ़ाना पड़ता था. इस प्रकार उस औरत का गुजारा चलता रहा.

एक बार मेरी मां मुझे उस स्थान पर ले गई. उस औरत के शरीर में आ कर बाबा बोल रहे थे. मैं उस औरत के सामने बैठ गया, सलाम किया और शुद्ध उर्दू और अरबी का प्रयोग करते हुए वार्तालाप शुरू किया. बाबा की बोलती बंद हो गई, क्योंकि वह औरत मेरी भाषा नहीं समझ सकी. एक पहुंचे हुए बाबा और अरबी की एक आयत भी याद न हो! मैं ने स्पष्ट घोषणा कर दी कि यह सब ढोंग है. इस पर तूफान खड़ा हो गया और वहां एकत्र औरतों ने मुझे डांटना शुरू कर दिया.

रोजीरोटी के लिए ढोंग

उस घटना के कुछ दिनों बाद मैं अचानक सख्त बीमार पड़ गया. मां ने पूछताछ आरंभ की तो पता चला कि इस लड़के ने एक बार बाबा के स्थान का अपमान किया था इसी लिए बीमार कर दिया गया. इलाज बताया गया कि इस को जावरा (म. प्र.) ले जाया जाए. मां बहुत पीछे पड़ीं, रोईधोईं, समझाया-बुझाया, मगर मैं जावरा जाने के लिए तैयार नहीं हुआ. मेरी जिद का भी सबब यह बताया गया कि बाबा, जिन्होंने इस पर असर कर दिया है, जावरा नहीं ले जाने देते हैं, क्योंकि जावरा में उन को कैद कर के यातनाएं दी जाएंगी. घर वालों ने योजना बनाई कि मुझे जबरदस्ती गाड़ी में बिठा कर और जरूरत पड़े तो बांध कर जावरा ले जाया जाए.

एक दिन मैं घर से भाग निकला और बगैर किसी को सूचित किए अस्पताल जा पहुंचा. एक बहुत ही दयालु डाक्टर ने मेरी चिंताजनक हालत देखी. उसी समय मेरी पूरी तरह से जांच की गई. पता चला कि मुझे 'वेट प्लुरिसी' है. फौरन मुझे भरती किया गया और बाद में मैं धीरेधीरे पूर्ण स्वस्थ हो गया. मेरी बीमारी की सारी बातें जब परिवार वालों को मालूम हुईं तो सब को विश्वास हो गया कि बाबा की बात ढोंग थी.

चुड़ैल कौन?

महल्ले की एक स्त्री मेरी मां के पास आया करती थी. वह मां से कहती थी कि इस महल्ले में रोज रात को एक चुड़ैल घूमा करती है और उस के घर के पीछे आ कर विचित्र आवाजें किया करती है. उस ने यह बात सारे महल्ले में फैला रखी थी. सारी औरतें भयभीत थीं. मेरी मां छत पर सोती थीं और कहा करती थीं कि उस ने भी उस चुड़ैल को देखा है. मेरे आग्रह पर उस ने मुझे भी उस चुड़ैल को दिखाया. मैं ने देखा कि एक स्त्री लंबा सा घूंघट काढ़े एक गली से निकल कर दूसरी गली में मुड़ गई. मैं ने समय नोट किया और फिर एक रात को उस स्त्री के घर के सामने छिप कर बैठ गया जिस ने यह अफवाह फैला रखी थी.

कुछ समय बाद मैं ने देखा कि वह स्त्री अपने घर से निकली और जोर से चीत्कार किया, फिर एक ओर को चल दी. मैं उस के पीछेपीछे चलने लगा. एक मकान के दरवाजे पर वह स्त्री रुक गई. नीचे बैठ कर फिर उस ने एक चीत्कार किया. मकान का दरवाजा खुला. एक आदमी ने बाहर झांका और उस स्त्री को अंदर ले कर दरवाजा बंद कर लिया. मेरे चेहरे पर मुसकराहट फैल गई. कई बार मैं ने ऐसा देखा. एक बार मैं ने उसे रास्ते में पकड़ लिया. वह सकपका गई. मुझे एक तरफ ले जा कर कहने लगी, "बाबू, तू किसी से कहना मत, तू चाहे तो मेरे साथ...!" मैं ने उस के साथ कुछ नहीं किया, न ही उस का रहस्य खोला.

जाहिर है कि अपने व्यभिचार को छिपाने के लिए उस ने यह तरीका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपनाया था.

मेरा एक मित्र है जो बाहर नौकरी करता है. महीने में एकाध बार कभी आता था तो मुझे मिला करता था और कहता कि उस की मां पर किसी ने जादू करवा दिया है और कभी उस की मां कहती कि उस का दादा उस के शरीर में आता है. उस ने बताया कि मां के पेट में बहुत जोर से पीड़ा होती है और मां रातरात भर तड़पती है और कहती है कि उसे जावरा भेज दिया जाए. बेचारा मेरा मित्र परेशान था.

मैं ने उस की मां की इस 'बीमारी' का पता लगाने का प्रयास किया तो पता चला कि जब तक मेरा मित्र बाहर रहता था तो उस की मां भलीचंगी रहती थी, आराम से सोती थी और जिस दिन वह मित्र घर पर आता, उसी दिन उस की मां की हालत भयंकर रूप धारण कर लेती थी. वह कमजोर अवश्य हो गई थी. मैं ने अपने मित्र को सलाह दी कि थोड़े दिन वह अपनी मां को अपने साथ ले जाए. वह अपनी मां को साथ ले गया. वहां उस ने एक डाक्टर का इलाज करवाया और वह ठीक हो गई. फिर एक बार वह अपनी मां को घर छोड़ गया और फिर वही शिकायत शुरू हो गई. मां ने फिर जिद की कि उस को जावरा भेज दिया जाए. इस पर उस ने मां की उपेक्षा शुरू करदी.

उपर्युक्त प्रसंगों से यह निर्णय निकलता है कि विभिन्न परिस्थितियों में अपनी समस्याओं के समाधान हेतु जिन्नभूतों का सहारा लिया जाता है पर वास्तव में ऐसी कोई बात है नहीं. यह एक अंधविश्वास ही है और इस चक्कर में अधिकतर वे ही लोग पड़े हुए हैं, जो अशिक्षित हैं. मुसलिम समाज सुधारकों को वास्तविकता का अध्ययन कर इस अंधविश्वास को दूर करने का प्रयास करना चाहिए. ●

यह किस देशप्रदेश की भाषा है?

इस स्तंभ में जनजीवन से दूर, उलझी हुई व कठिन भाषा के नमूने प्रकाशित किए जाते हैं ताकि हिंदी को बेजान व किताबी भाषा बनने से रोका जा सके. प्रकाशित उद्धरणों पर दस रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाती हैं. कृपया उद्धरण के साथ प्रकाशक का नाम, प्रकाशन का वर्ष तथा पृष्ठ संख्या भी लिखें.

—संपादक

"श्वेतपाषाणों की दीर्घ और विस्तृत शोभा से सोपानों पर एक मंदिम आलोक प्रतिध्वनित होता हुआ वापी के जल में उतर जाता और राज्यश्री के सुडौल सुंदर शरीर पर उस के गौरवर्ण में केंद्रित हो कर नयनों को तुला पर टांग देता. जल को नीले और सुनहले कमल अपनी भीर से आक्रांत किए हुए थे. नीले मृणाल खा कर कभीकभी श्वेत भव्य राजहंस मरकत की शिलाओं पर चल कर ऋंकार करते, कभी अपनी लंबी श्वेत और कोमल ग्रीवा झुका कर उत्फुल्ल पुंडरीक में से मकरंद खाने लगते. मंदिम समीरण दूर स्थित वातायानों में से भीतर प्रवेश करता और बहुत ही हलके स्पर्शों से उन मांसल कमलों की सुरभि को मुग्ध सा सूंघ लेता और फिर हट कर गोलाकार वलभियों के नीचे एक मनोहर गुंजार भर कर धीरेधीरे बुझे हुए दीपाधारों पर पड़ते, प्रकाश के अधमुंदे होठों को धीरे से चूम कर प्रासाद की भीतों पर बने सुंदर चित्रों को सुंदरी युवती के पारदर्शी वस्त्रों की भांति रगड़ कर बाहर लय हो जाता."

—रांगेयराघवः चीवर (प्रेषिका : कांता वर्मा, इंदौर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंतर्जातीय विवाह

समाज जब लड़केलड़की को समान अधिकार देता है तो मनपसंद जीवनसाथी का चुनाव क्यों नहीं करने देता?

अंतर्जातीय विवाह करना कोई गुनाह नहीं है. फिर भी जो लोग दूसरी जाति में विवाह करते हैं वे न मालूम क्यों समाज की नजरों में गुनाहगार समझ लिए जाते हैं.

मेरा विवाह भी दूसरी जाति में हुआ है और मेरे साथ भी वही कुछ घटा है, जो ऐसा करने वालों के साथ घटता है.

मेरा जन्म मध्यम वर्ग के परिवार में हुआ. मेरे पिता एस. डी. ओ. हैं. उन की बदली कुछकुछ समय बाद एक स्थान से दूसरे स्थान पर होती रहती है. जब मेरे मातापिता हजारीबाग में थे और मैं इंटर में पढ़ती थी, तब मेरे पति भी उसी कालिज में बी. ए. में थे. पहले से जान-पहचान के कारण मैं पढ़ाई में अकसर उन से मदद लिया करती थी. एक दिन बातोंबातों में उन्होंने मुझ से विवाह की इच्छा प्रकट की. जाति भेद के कारण मैं ने उन से पूछा "क्या परिवार वाले इस संबंध के लिए राजी हो जाएंगे?"

इस पर वह बोले, "मैं तुम्हें चाहता हूं. मैं ने निश्चय कर लिया है कि विवाह करूंगा तो तुम से वरना सारा जीवन शादी किए बिना ही बिता दूंगा."

कुछ समय बाद मैं ने बी. एससी. कर ली और वह नौकरी करने लगे. मैं भी उन्हें पसंद करती थी. जब मैं ने अपने पिता से कहा कि मैं उन से विवाह करना चाहती हूं तो वह गुस्से से भर गए और उन्होंने मुझे बुरी तरह डांटा.

लेकिन अपने मातापिता के विरोध के बावजूद हम दोनों ने मंदिर में जा कर विवाह कर लिया.

आज मेरी शादी हुए पांच साल गए हैं. शादी से पहले मेरी कई सहेलि ने यह कह कर डराया था कि इस प्रक के विवाह सफल नहीं होते, लेकिन मैं इस परिणाम पर पहुंची हूं कि जब प पत्नी दोनों के मन एकदूसरे से मिलते तो उन के संबंध हरगिज नहीं टूट सक परिवार तो पतिपत्नी के मेल से ही का रहता है. हां, इस में थोड़ी सावधा अवश्य बरतनी पड़ती है. तभी वा जीवन अच्छे ढंग से बीत सकता है.

अंत में मेरा यही कहना है कि प और पत्नी का, जाति चाहे जो भी जीवन तभी सुखी रह सकता है जब के मन एकदूसरे से मिलते हों. आपस संबंध स्थापित करने के लिए जात के बंधन तोड़ने बहुत जरूरी हैं. इन बं के कारण ही आज हमारे समाज में कि ही अरमानभरे दिल टूट जाते हैं और अपने मनचाहे साथी नहीं मिल पा क्योंकि लोग अकसर पैसे के लालच में कर या अपने अहं भाव के कारण अ बच्चों की जिंदगी तबाह कर देते हैं.

आज जब समाज लड़के और ल को समान अधिकार देता है तब उन्हें अ जीवनसाथी का चुनाव करने का अधि भी होना चाहिए.

—माधुरीकुमारी सिन्हा

सरिता के मार्च (प्रथम) 1976 अंक आप ने अंतर्जातीय विवाह पर अनुभव पढ़ा था. इसी श्रृंखला के अंत प्रस्तुत हैं एक अन्य पाठिका के अनु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नया ज़बर्दस्त झाग

पाण्ड्स शैम्पू

देखभाल और सफ़ाई एक साथ

पाण्ड्स शैम्पू के चुलबुले बुलबुले आपके लिए कितने अनुकूल...झाग ही झाग, जो आपके बालों को प्यार से भर जाएं, सहलाएं... चाहे बाल कितने भी लंबे हों. घने घने गहरे, झाग जो ठहरे, जड़ से सिरे तक बालों में जानदार चमक भरें, उन्हें साफ़ करें.

अपने बालों को पाण्ड्स शैम्पू की बाहों में दे दीजिए, दोस्ती खूबसूरत कैसे होती है, ये देख लीजिए.

चीज़ब्रो-पाण्ड्स इन्क. (सीमित दायित्व के साथ यू एस ए में स्थापित)

लिंटास - CPC. SH. 1-77 HI

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी • कस्तूरचंद जैन

मृत्युदंड

दीपचंद मेरे दूर संपर्क के आत्मीय होते थे. मृत्यु के समय उन की आयु 34 वर्ष की थी. अपने पीछे वह अपनी 26 वर्षीया जन्मांध विधवा तथा वृद्धा मां को छोड़ गए हैं. संपत्ति के नाम पर कुछ घरेलू सामान, बरतन व कपड़े तथा एक हजार रुपए की एक बीमा पालिसी, जिस में दुर्घटना से मृत्यु होने पर दोगुनी राशि के भुगतान की शर्त है, छोड़ गए हैं. उन की मृत्यु दुर्घटना में हुई. उन का, किसी अज्ञात ट्रक या गाड़ी से, कुचला हुआ शव रात्रि को 11 बजे एक महानगर के मुख्य मार्ग पर पाया गया.

किसी राहगीर ने शव को सड़क पर पड़े देख कर नजदीक की पुलिस चौकी को खबर दी. पुलिस के आने से पूर्व ही लाश के चारों ओर एक छोटा सा मजमा लग चुका था. पुलिस ने जामातलाशी ली. जेब में कुछ रुपए नकद तथा कुछ पत्रादि निकले. उसी से पुलिस को पता चला कि मृतक अजमेर में किसी व्यापारी के यहां मुलाजिम था. सेठजी का टेलीफोन नंबर भी उन कागजों में मिल गए. पुलिस ने अजमेर सेठजी को टेलीफोन किया.

दीपचंद की मृत्यु के बाद उन की मृत्यु का प्रमाणपत्र लेने रमेश बाबू पहुंच तो गए, लेकिन वह यह नहीं समझ सके कि हर आदमी उन्हें नोचखसोट कर खा क्यों जाना चाहता है?

सेठजी से पता लगा कि मृतक वहां जाने से पूर्व नौकरी छोड़ने का नोटिस दे गया था. परंतु सेठजी ने तुरंत मृतक की पत्नी व ससुर को खबर भेजी और उस रात उन को ले कर उस महानगर के लिए रवाना हो गए. वहां आने पर लाश की शिनाख्त करने व आवश्यक खाना पूरी करने के बाद लाश कब्जे में ले कर श्मशान में उस का दाह संस्कार कर दिया गया.

मृतक की जामातलाशी में से निकला माल लेने ससुर पुलिस चौकी गए. वहां पता चला कि माल पुलिस थाने के माल खाने में जमा है और माल लेने के लिए पहले इलाका मजिस्ट्रेट की अनुमति लेनी होगी.

ससुर ने अगले दिन एक वकील से आवश्यक आवेदन लिखवा कर इलाका मजिस्ट्रेट के सामने पेश करने के लिए मजिस्ट्रेट के सरिश्तादार को दे दिया. बाबू ने आवेदन ले कर रख लिया और उन्हें इंतजार करने को कहा.

अपराह्न के चार बजने को आए परंतु बाबू ने आवेदन साहब के सामने पेश नहीं किया. अंत में निराश हो कर डरतेडरते वह स्वयं मजिस्ट्रेट के सामने जा कर खड़े हो गए. मजिस्ट्रेट के पूछने पर उन्होंने थाने से माल वापस लेने की अनुमति मांगी.

मजिस्ट्रेट ने उन्हें लिखित आवेदन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करने को कहा. तब मजिट्रेट को पता चला कि लिखित आवेदन उन के सरिश्तादार के पास सवेरे से ही पड़ा है. मजिट्रेट ने सरिश्तादार को डांटा और आवेदन पर थाना अध्यक्ष की रिपोर्ट मांगी.

बेचारे ससुर तुरंत स्कूटर किराए पर ले कर थाने गए. परंतु थानेदार किसी तफतीश में गए हुए थे. कुछ समय बाद जब थानेदार लौटे तो उन्होंने तुरंत आवेदन पर रिपोर्ट लिख दी. परंतु शाम हो चुकी थी. अगले दिन आवश्यक कानूनी कार्यवाही के पश्चात ससुर थाने में जमा मृतक का माल ले कर अजमेर लौट गए.

मुझे दीपचंद की मृत्यु का पता तब चला जब मेरे एक भतीजे का अजमेर से पत्र आया. अजमेर लौटने के बाद ससुर को बीमा पालिसी का पता चला और उन्होंने जीवन बीमा निगम के अजमेर कार्यालय से संपर्क किया. बीमा निगम ने ससुर से दुर्घटना के बारे में महानगर के थाने में दर्ज एफ.आई.आर. की नकल लाने को कहा. अजमेर से आनेजाने का

मौत के बाद भी इतनी औपचारिकताएं? बेचारी पत्नी क्या करती?

दूसरे दरजे का किराया संपन्न व्यक्ति के लिए, हो सकता है कुछ भी न हो, परंतु रोज कुआं खोद कर पानी पीने वाले व्यक्ति के लिए वह खर्च बहुत है. विशेषकर जब यह भी पता न हो कि इस प्रकार के काम को निपटाने में कितने दिन लगेंगे. छुट्टी के वेतन की कटौती के अलावा वहां रहनेखाने का खर्च ऊपर से.

यह सब सोच कर ससुर ने वहां के अपने दूर और नजदीक के रिश्तेदारों की याद करनी शुरू की और अंत में उन्होंने मेरे भतीजे को थाने से एफ. आई. आर. की नकल ले कर भेजने को लिख दिया. थाना मेरे भतीजे के निवास से काफी दूर पड़ता था. दूर तो मेरे मकान से भी था. परंतु कार्यवश मुझे प्रायः रोज ही उस थाने के पास एक कार्यालय में जाना पड़ता था. इसलिए मेरे भतीजे ने यह काम मुझे सौंप दिया.

मैं थाने गया. स्वागतकक्ष से मुझे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थाने के अभिलेखागार में भेज दिया गया. अभिलेखागार में बैठे व्यक्ति ने वरदी नहीं पहन रखी थी. मैं उस का नाम व पद नहीं जान सका. पूछा भी नहीं. उन्होंने मुझे ससम्मान बैठाया. मृतक का नाम लेते ही, उन्होंने मुझे मुकदमा नंबर आदि सब जबानी ही बता दिया और पूछा, "क्या बीमा के लिए चाहिए?"

मेरे 'हां' करने पर उन्होंने मुझे दूसरे दिन आने को कहा. दूसरे दिन जाने पर उन्हीं सज्जन ने एक मिनट की देरी किए बिना नकल मेरे हाथ में थमा दी. मैं पुलिस अधिकारी की सज्जनता व कार्य-कुशलता से बहुत ही प्रभावित हुआ. मन ही मन निश्चय भी किया कि एक पत्र उच्च पुलिस अधिकारियों को अपने सुखद अनुभव के बारे में लिखूंगा. मन ही मन आपातकालीन स्थिति की भी सराहना की, जिस ने सरकारी कर्मचारियों को कुछ नम्र व चुस्त बना दिया था.

कुछ दिन बाद भतीजा दस्तावेजों की एक नई फेहरिस्त ले कर हाजिर हुआ. बीमा निगम के अजमेर कार्यालय ने यह फेहरिस्त मृतक के ससुर को दी थी. इस फेहरिस्त में पुलिस डिस्पोजल रपट और पोस्टमार्टम की रपट की नकल, मृतक की शिनाख्त करने वालों के बयानों की नकल, श्मशान घाट में मृत्यु पंजीकरण की नकल शामिल थीं. मैं फिर थाने गया.

मुझे देखते ही अभिलेखागार में बैठे अधिकारी बोल उठे, "एफ. आई. आर. की रिपोर्ट तो आप को मिल चुकी है, अब क्या चाहिए?"

मैं ने उन्हें अपनी आवश्यकता बताई. उन्होंने उत्तर दिया कि मामले की तफतीश अब भी जारी है, इसलिए मिसिल की डिस्पोजल रपट तो मिल ही नहीं सकती. बाकी कागजों के लिए उन्होंने मुझे संबंधित पुलिस चौकी में जा कर वहां के अधिकारी से मिलने को कहा.

परंतु जाना चाहने के बावजूद मैं वहां नहीं जा सका. कारण वह चौकी और ढाईतीन मील दूर थी. एक रात को भतीजा फिर हाजिर हो बोला, "चाचाजी, अजमेर वाले यहां हुए हैं. कल आप जिस तरह भी हो, वाला काम जरूर करा दें." मैं मन मन अपनी सुस्ती पर शर्मिंदा हुआ.

अगले दिन प्रातः मैं अजमेर सज्जन को ले कर पुलिस चौकी गया. बार ससुर नहीं आ पाए थे, के एक पड़ोसी आए थे. चौकी के ही एक पुलिस अधिकारी कागजों से भरा एक थैला लिए शायद सवारी की इंतजार कर रहे थे. पूछा, "चौकी अधिकारी से मिलना क्या वह अंदर हैं?"

उत्तर मिला, "मैं ही हूं. कीजिए."

मेरे आने का उद्देश्य सुन कर "दो दिन पूर्व ही मैं ने मिसिल दफ्तर कर दी है. आप को सब नकलें थाने से ही मिलेंगी." मेरे मना करने

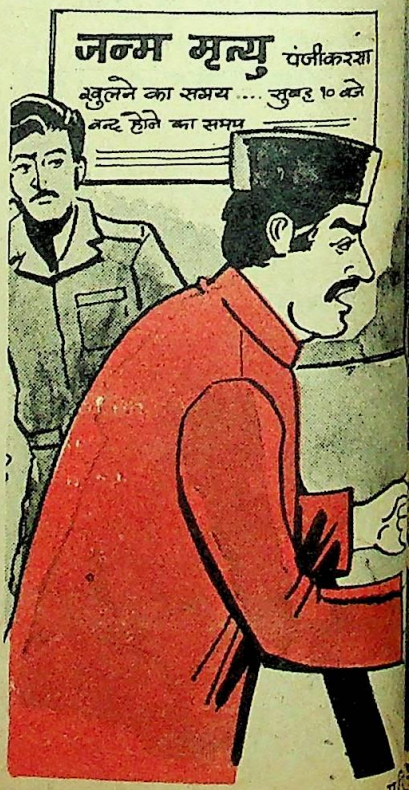

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी वह हमें अंदर ले गए और अपनी बही खोल कर मिसिल के संदर्भ लिखवा दिए.

इस बार थाने के अभिलेखागार में हमें दो अधिकारी बैठे मिले. पहले वाले सज्जन ने पूछा, "क्या आप का काम नहीं हुआ?"

मैं ने उन्हें बताया कि मिसिल आप के पास ही आ गई है. दूसरे अधिकारी ने इस तथ्य का अनुमोदन किया.

मेरे साथी रमेश बाबू ने उन कागजात के बारे में बताया, जिन की नकल चाहिए थी.

दूसरे अधिकारी ने कहा, "आप को कप्तान साहब के यहां आवेदन करना पड़ेगा. वहां से हुक्म आने पर आप को नकलें मिल जाएंगी."

पहले अधिकारी ने कहा, "परंतु उस में तो तीनचार मास निकल जाना मामूली बात है."

रमेश बाबू बोले, "मैं अजमेर से खास इसी काम के लिए यहां आया हूं. मेरा अपना कोई स्वार्थ नहीं है. केवल पड़ोसी के नाते अपना कर्तव्य निभा रहा हूं. गरीब अंधी विधवा का इस बीमे की राशि के अतिरिक्त और कोई सहारा नहीं है. आप कोई ऐसी तरकीब बताइए जिस से ये कागजात आजकल में ही मिल जाएं."

पहले अधिकारी ने मेरी ओर इशारा करते हुए कहा, "देखिए, पहली बार हम ने इन्हें बिना एक पैसा लिए ही नकल दे दी थी. परंतु इस बार..."

इशारा स्पष्ट था, चाहे वाक्य अधूरा ही छोड़ दिया गया था. परंतु मेरे मन पर तो एफ. आई. आर. की नकल लेते समय का तथा उस दिन का पुलिस चौकी अधिकारी का सद्व्यवहार छाया हुआ था. सोचा शायद प्रशंसा के एक वाक्य से इन के मन में सहानुभूति की मात्रा बढ़ जाए. बोला, "आप ने तो न पैसा लिया और न परेशान ही किया."

पता नहीं अभिनय था या वास्तविकता, परंतु कुछ संकोच दिखाते हुए दूसरा अधिकारी बोला, "देखिए, जिन से नकल करवानी है वह बिना लिए नहीं मानेंगे."

बातचीत से एक बात स्पष्ट हो गई थी. बीमा निगम की औपचारिकताएं पूरी करने के लिए विभिन्न दस्तावेजों की थाने से नकलें मांगने वाले हम प्रथम व्यक्ति नहीं थे. इस प्रकार की सौदेबाजी विशेषकर एक गरीब विधवा के मामले में, मुझे बिलकुल अच्छी नहीं लगी. मैं किसी तरह वहां से निकल भागने का बहाना ढूंढ़ने लगा.

मैं ने कहा, "रमेश बाबू, मुझे तो

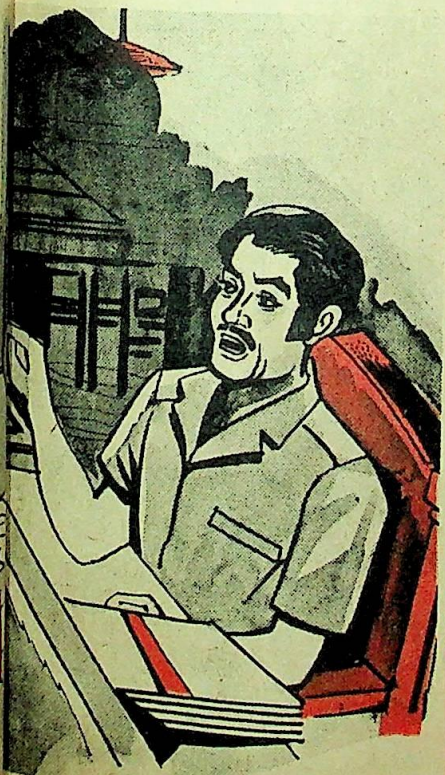

रमेश बाबू श्मशान पहुंचे तो बाबू ने कहा, "जलाने की लकड़ी वाले रजिस्टर में तो आप का इंदराज है, परंतु जन्ममृत्यु की बही में आप ने रपट नहीं दर्ज कराई."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने काम पर पहुंचना है. कल फिर आ जाएंगे."

बाहर निकल कर मैं ने रमेश बाबू से कहा, "यह तो स्पष्ट रिश्वत है. मैं इस प्रकार काम कराने के सर्वथा विरुद्ध हूं."

"आप क्या समझते हैं कि मेरे पास पैसा फालतू है? हो सकता है, ये पैसे मुझे अपनी ही गांठ से देने पड़ें. विधवा स्त्री से तो मांग न सकूंगा. उस के बाप से शायद मिल जाएं. आप ही बताइए, क्या करूं? आप के विचार में कप्तान साहब से आवेदन पर हस्ताक्षर करा कर नकलें लेने में कितना समय लगेगा? एक दिन, एक सप्ताह, एक मास या और भी अधिक? और थाने में कितने चक्कर काटने पड़ेंगे? जब उन्होंने पैसे लेने की ठान ही ली है तो आप क्या सोचते हैं कि वे बिना चक्कर कटवाए नकलें दे देंगे? एकदो दिन की बात हो तो मैं ठहर जाता हूं. एक महीने में भी यदि आप ला कर भेज देने का आश्वासन दें तो मैं अपनी खूनपसीने की कमाई का पैसा गैरकानूनी ढंग से न खर्चूं." और यह कह कर वह मेरे मुख की ओर देखने लगे.

परंतु न तो मेरे पास उन के किसी प्रश्न का संतोषप्रद उत्तर था और न मैं भावुकता में आ कर नकलें लेने का उत्तरदायित्व लेने को तैयार था. रमेश बाबू को वहीं छोड़ कर मैं अपने काम पर चला गया और रमेश बाबू मेरे कहने पर पुलिस कप्तान के कार्यालय में.

सायंकाल रमेश बाबू का फोन आया. कप्तान साहब अपने कार्यालय में नहीं मिले, आवश्यक कार्य से कहीं गए हुए थे. वह लौट कर थाने गए और एक घंटे में ही उन्हें आवश्यक कागजों की नकलें मिल गईं.

जब उन्होंने अधिकारियों से पूछा कि कितने पैसे खर्च होंगे तो उत्तर मिला था, "आप खुद समझदार हैं, जो उचित समझें, दे दीजिएगा."

रमेश बाबू का विचार था पांचदस रुपए में ही फैसला हो जाएगा. परंतु नक्शा तैयार करने के बाद जब उन से कहा गया कि काम तो दो सौ रुपए का है परंतु आप सौ ही दे दीजिए तो एक दम तो रमेश बाबू भी आकाश से गिर पड़े. उन की जेब में उस समय 55 रुपए ही थे. अंत में पचास पर फैसला हो गया.

बीमा निगम की आवश्यकतानुसार अस्पताल, श्मशान से तथा पोस्टमार्टम विभाग से भी एकएक प्रमाणपत्र लेना जरूरी था. थाने से निपट कर रमेश बाबू श्मशान गए. वहां के बाबू ने भी उन्हें ससम्मान कुरसी पर बैठाया और अपनी बहियां देख कर बोला, "जलाने की लकड़ी का रजिस्टर में तो आप का इंदराज है, पर जन्मृत्यु बही में आप ने रपट दर्ज नहीं कराई. इस का तरीका केवल यही है कि आप निगम स्वास्थ्याधिकारी को एक हलफनामा और आवेदन दें. उन का आदेश मिलने पर पहले मृत्यु बही में इंदराज होगा और फिर आप को नकल मिलेंगी.

"आप कचहरी जा कर दो रुपए का एक टिकट खरीद लें. मैं यह मजमून तैयार हूं. इस शपथपत्र को टाइप करा कर प्रथम श्रेणी के मजिस्ट्रेट से तसदीक करा कर जल्दी ले आइए. मैं कोशिश करूंगा कि आज शाम तक ही साहब से आज्ञा करा दूं. आप बाहर से आए हुए हैं, इस का काम जितनी जल्दी हो जाए अच्छा है. हां, आवेदन पर लगाने के लिए चालीस पैसे का एक सरकारी टिकट और लेते आएगा."

जब रमेश बाबू ने कहा कि वह दिल्ली में किसी मजिस्ट्रेट से वाकिफ नहीं हैं तब शपथपत्र की तसदीक कैसे हो बाबू ने उन्हें शपथपत्र तसदीक कराने का तरीका भी बता दिया और चलते चलते जल्दी करने की फिर ताकीद कर दी. टैक्सी ले कर रमेश बाबू कचहरी के टिकटफरोश के यहां जा कर दो रुपए का टिकट मांगा. प्रश्न हुआ, किस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहिए. रमेश बाबू ने कारण बता दिया.

इस बार सूचना मिली, "दो रुपए का कागज खजाने में नहीं है. चाहो तो आठ रुपए वाला दे दूं."

मरता क्या न करता, हां कर दी. रमेश बाबू को टिकट देतेदेते फरोश बोला, "चालीस पैसे का टिकट व दरखास्त का फार्म भी तो लीजिए, पचपन पैसे और दीजिए.

रमेश बाबू दरखास्त का फार्म नहीं लेना चाहते थे. उन का इरादा सादे कागज पर स्वयं ही आवेदन लिख कर पंदरह पैसे बचाने का था. परंतु स्टांप फरोश ने बिना फार्म खरीदे टिकट देने से इनकार कर दिया. जहां दो रुपए की जगह आठ रुपए का स्टांप खरीदा था वहां पंदरह पैसे और सही.

रमेश बाबू ने टिकट व फार्म दोनों ही खरीद लिए. दो रुपए दे कर शपथपत्र टाइप कराया और पांच रुपए खर्च कर मजिस्ट्रेट से तसदीक और फिर स्कूटर किराए पर ले कर तुरंत श्मशान पहुंचे. बाबू ने शपथपत्र ले लिया, आवेदन लौटा दिया."

"साहब के दस्तखत हो जाने दो, ले लूंगा. आप कल 11 बजे टेलीफोन कर यहां आ जाइए." रमेश बाबू ने ये सारी बातें मुझे बताईं.

शपथपत्र वाली बात मुझे नहीं जंची, परंतु जो खर्च होना था वह तो हो ही गया था. चुप रहा. अगले दिन 11 बजे रमेश बाबू ने श्मशान फोन किया. बाबू ने उत्तर दिया कि उस ने आज के लिए नहीं, आगामी कल के लिए कहा था. श्मशान से निराश हो कर रमेश बाबू पोस्टमार्टम से प्रमाणपत्र लेने गए.

वहां पर बाबू ने कहा, "जब तक आप थाने से मिली नकल यहां जमा नहीं कराएंगे, तब तक आप को कोई प्रमाणपत्र नहीं दिया जा सकता."

परंतु वहां के एक चिकित्साधिकारी डाक्टर अजय ने जब उन का दुखड़ा सुना तो उन्होंने बाबू को आदेश दिया कि एक थाने की रपट की एक सादी नकल बना कर रख लो. तसदीकशुदा नकल इन्हीं के पास रहने दो और पोस्टमार्टम का प्रमाणपत्र बना कर मेरे पास ले आओ. इस प्रकार डाक्टर अजय के हस्तक्षेप से पोस्टमार्टम का प्रमाणपत्र मिलने में विशेष कठिनाई नहीं हुई.

शाम को जब रमेश बाबू मुझे मिले तो उन्होंने बताया कि अब केवल श्मशान का प्रमाणपत्र बाकी है.

मैं ने पूछा, "जब पुलिस की रपट व पोस्टमार्टम के प्रमाणपत्र से यह साबित हो जाता है कि दीपचंद दुर्घटना में मारे गए तो श्मशान के प्रमाणपत्र की क्या जरूरत है?"

रमेश बाबू बोले, "मैं भी समझता हूं कि अब श्मशान के प्रमाणपत्र की कोई आवश्यकता नहीं होनी चाहिए, परंतु बीमा वालों का निर्देश है कि श्मशान का प्रमाणपत्र भी अवश्य चाहिए."

मैं ने उसी समय अपने एक पुराने परिचित बीमा एजेंट को फोन किया. उस ने भी बताया कि पुलिस की रपट और

मुकरने के लिए...

साफ कह दीजिए, वादा ही किया था किस ने,
उज्र क्या चाहिए, झूठों को मुकरने के लिए.
—साकिब लखनवी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पोस्टमार्टम के प्रमाणपत्र के अभाव में श्मशान का प्रमाणपत्र भी अनिवार्य है, परंतु श्मशान का प्रमाणपत्र यही तो साबित करेगा कि दीपचंद के शव का दाह संस्कार हुआ. मान लो, मैं शव का जल प्रवाह कर देता हूं या किसी मेडिकल कालिज को दान दे देता हूं अथवा टुकड़े-टुकड़े कर मछलियों को खिला देता हूं. तब क्या बीमा निगम रुपया नहीं देगा?"

परंतु इस का उत्तर कौन दे? रुपए की जरूरत मृतक की विधवा को है. भूखी मरेगी तो वह. बीमा निगम के अधिकारीगण की वेतनवृद्धि व पदोन्नति तो बदस्तूर कायम रहेगी. विधवा को यदि उन के विरुद्ध शिकायत है तो अदालत की शरण जाने से उसे किस ने मना किया है?

तीन दिन तक बराबर चक्कर लगाने के बाद भी श्मशान के प्रमाणपत्र के मिलने में कोई प्रगति नहीं हुई.

अगले दिन किसी कारणवश मुझे निगम के कार्यालय में जाना पड़ गया. काम निपटा कर लौट रहा था कि अचानक एक कमरे के बाहर 'जन्ममरण पंजीकरण' का बोर्ड लगा देख कर दीपचंद की मृत्यु के प्रमाणपत्र के बारे में याद आ गया. अंदर गया. पूछताछ की. पता लगा कि एक वर्ष तक मृत्यु का रिकार्ड श्मशान में ही रहता है और क्योंकि मृत्यु को अभी तीन मास ही हुए हैं, इसलिए प्रमाणपत्र श्मशान से ही मिलेगा.

शपथपत्र की जरूरत के बारे में पता नहीं चल सका. वैसे वहां के अधिकारी की राय में जब मृत्यु का पंजीकरण हो चुका है तो शपथपत्र की आवश्यकता नहीं होनी चाहिए. शपथपत्र की जरूरत केवल उसी हालत में होती है जब पंजीकरण न हुआ हो और जब दाह संस्कार उस श्मशान में किया गया और लकड़ी के रजिस्टर में मृतक का नाम लिखा है तो मृत्यु का पंजीकरण न होने का तो कोई तर्क ही नहीं.

उस शाम को रमेश बाबू ने फोन नहीं किया, बल्कि वह स्वयं ही आए. आज भी प्रमाणपत्र नहीं मिल पाया था. मैं ने पूछा, "क्या बाबू ने आवेदन ले लिया है?"

वह बोले, "नहीं."

"क्यों?"

"उस का कहना है कि जब तक साहब के हस्ताक्षर न हो जाएं, आवेदन देने का कोई लाभ नहीं, और रुकना तो मेरे लिए संभव नहीं. सोच रहा हूं कि यदि कल प्रमाणपत्र मिल गया तो ठीक है, वरना लौट जाऊंगा. तब आप ही को भागदौड़ कर प्रमाणपत्र हासिल कर के भेजना पड़ेगा."

मैं ने रमेश बाबू से अगले दिन श्मशान पर मिलने का समय निश्चित किया. अगले दिन प्रातः ही बचपन के अपने एक मित्र को, जो निगम में एक उच्चाधिकारी थे, फोन किया. उन्होंने निश्चित समय पर अपने निजी सहायक को मेरे पास श्मशान भेजने की 'हां' कर ली.

परंतु आज बाबू ने इत्तला दी कि साहब के हस्ताक्षर हो गए हैं और वह आज प्रमाणपत्र बना कर साहब के हस्ताक्षर के लिए भेज देगा और आशा है कि कल प्रमाणपत्र हमें मिल जाएगा. अब निजी सहायक ने अपना परिचय दिया और मेरे बारे में बताया कि मैं साहब का मित्र हूं और प्रमाणपत्र आज मिल ही जाना चाहिए.

"मैं तो इन साहब का काम जल्दी से जल्दी करने की जीजान से चेष्टा कर रहा हूं. परंतु मजबूरी थी, साहब के हस्ताक्षर नहीं हो पाए. अब भी अपना काम तो मैं आज ही पूरा कर दूंगा परंतु साहब के हस्ताक्षर तो मैं नहीं कर सकता."

"कोई बात नहीं, आप प्रमाणपत्र तैयार कर के मुझे दीजिए. मैं स्वयं साहब के दफ्तर जा कर उन के हस्ताक्षर करा लूंगा."

प्रमाणपत्र तैयार होने में प्रायः समय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पॉयज़ नहाने के तुरन्त बाद की ताज़गी को दिनभर बनाये रखती है

पॉयज़ डियोड्रन्ट पसीने की बदबू से छुटकारा दिलाती है, आपके सामीप्य को सदा सुहावना बनाती है। त्वचा पर किसी भी प्रकार का बुरा असर नहीं पड़ता और न ही कपड़ों पर दाग। आप दिनभर जिस्म को महकता और खुद को तरोताज़ा महसूस करेंगी। रॉल ऑन कन्टेनर और सुविधाजनक स्प्रे कॅन में। दो खुशबू - बूके और वाइल्डफ्लावर।

पॉयज़

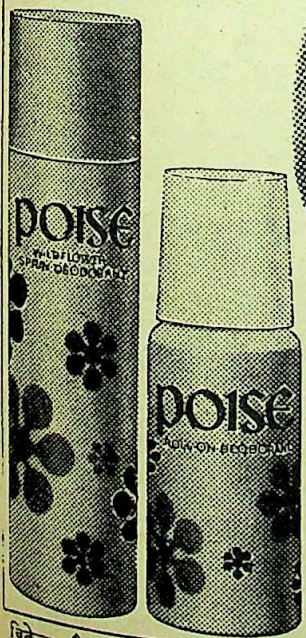

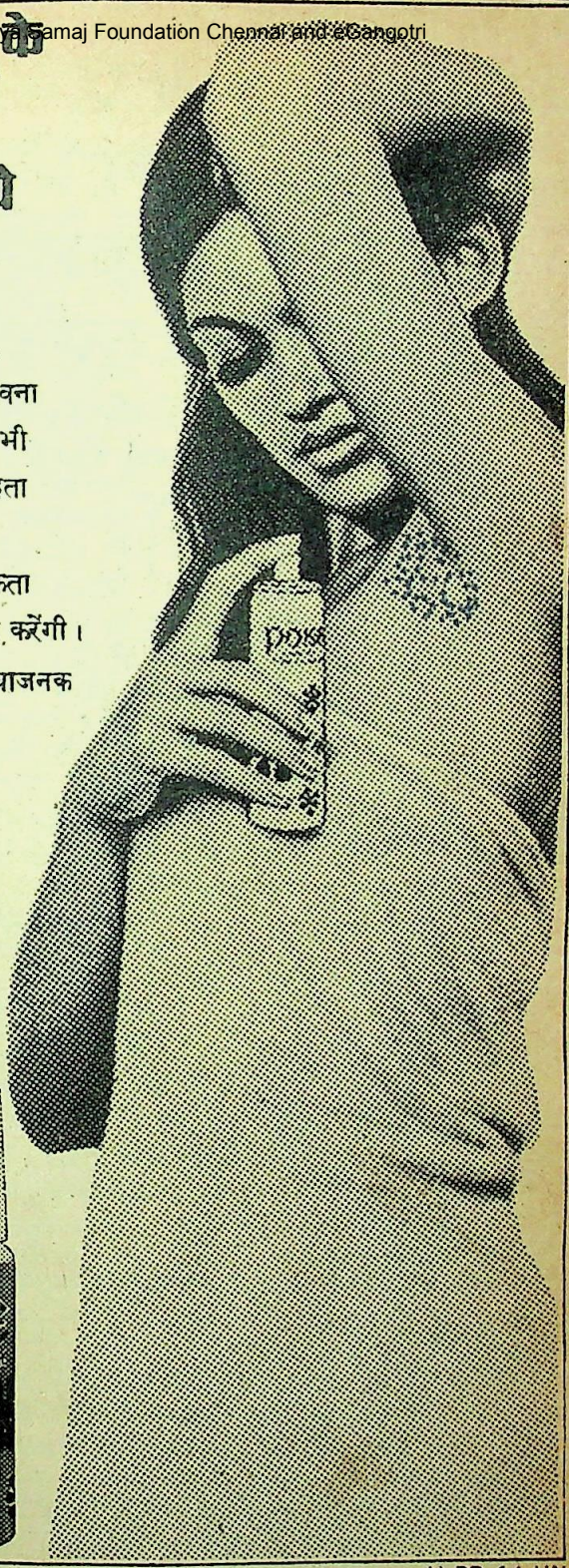

विक्रेता - रैलीज़ इण्डिया लिमिटेड

U-PD-14 HN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

दाँतों के डाक्टरों की राय में
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नियमित रूप से दाँत ब्रश करने और मसूढ़ों की मालिश करने से मसूढ़ों की तकलीफ़ और दाँतों की सड़न दूर ही रहती है

देखिए, फोरहॅन्स टूथपेस्ट नियमित इस्तेमाल करनेवालोंने अपने आप क्या लिखा है :

'बारह साल की उम्र से ही मैंने फोरहॅन्स से दाँत साफ़ करने शुरू कर दिये थे। आज मैं बीस साल का होने जा रहा हूँ। पहली बार फ़ोरहॅन्स इस्तेमाल करते समय मेरे मसूढ़ों में कुछ तकलीफ़ थी। अब वह तकलीफ़ नहीं रही। पहले, रात के समय दाँतों को ब्रश करने की मेरी आदत नहीं थी। बाद में रोज रात को १० बजे पढ़ाई करते समय आपके विज्ञापन सुन-सुनकर मेरी यह 'नयी आदत' पड़ गयी है।'

(सही) एस. मित्तल,
बी.ई. (इलेक्ट्रिकल), पटियाला।

'...लगभग एक साल पहले मैंने देखा कि मेरे दाँत पीले पड़ने लगे हैं, हालांकि मैं सिगरेट नहीं पीता...मेरे पिताजी ने,... जो पिछले ३० साल से "फ़ोरहॅन्स" से ही दाँत साफ़ करते रहे हैं, मुझे दूसरे टूथपेस्ट के बजाय "फ़ोरहॅन्स" से दाँत साफ़ करने की सलाह दी। कमाल है! मेरे दाँत जितने साफ़ और अच्छे होने चाहिए, वैसे हो गये। मुझे यह कहना पड़ेगा कि आपके आश्चर्यजनक टूथपेस्ट-**फ़ोरहॅन्स**—में वे सभी गुण हैं जिनका आप प्रचार करते हैं। इसका रहस्य यह है कि यह **दाँतों के डाक्टर का बनाया हुआ टूथपेस्ट है।**"

(सही) एस. एस. चटर्जी, एम.ए.
कोयम्बटूर।

(इन पत्रों की फोटोस्टॅट कॉपी आप जैफ़्री मैनर्स एण्ड कं. लि. के किसी भी कार्यालय में देख सकते हैं)

दाँतों की समुचित देखभाल के लिए रोज सवेरे और रात को फ़ोरहॅन्स टूथपेस्ट और फ़ोरहॅन्स डबल-एक्शन टूथब्रश इस्तेमाल कीजिए...और नियमित रूप से डाक्टर की सलाह भी लेते रहिए!

मुफ़्त! "आपके दाँतों और मसूढ़ों की रक्षा" नामक रंगीन सूचना-पुस्तिका। **(TO-87)**

अपनी प्रति* प्राप्त करने के लिए (डाक-खर्च के लिए) २५ पैसे के टिकट इस कूपन के साथ इस पते पर भेजिए: मैनर्स डेण्टल एडवाइज़री ब्यूरो, पोस्ट बैग नं. १००३१, बम्बई-१

नाम: _____ उम्र: _____

पता: _____

* कृपया जिस भाषा की पुस्तिका चाहिए, उसके नीचे रेखा खींच दीजिए: अंग्रेजी, हिन्दी, मराठी, गुजराती, उर्दू, पंजाबी, बंगाली, आसामी, तामिल, तेलगु, मलयालम, कन्नड़।

फ़ोरहॅन्स दाँतों के डाक्टर का बनाया हुआ टूथपेस्ट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घंटा लगा. इस दौरान वहां और भी कई व्यक्ति प्रमाणपत्रों के लिए आए और उन में से प्रायः सभी अपने साथ एकएक शपथपत्र लाए थे.

जब साहब के हस्ताक्षर हेतु प्रमाणपत्र तैयार हो कर निजी सहायक के हाथ में आ गया तो मैं ने प्रश्न किया, "यह शपथपत्र का क्या चक्कर है?"

"बात यह है कि इन्होंने शव का यहां दाह संस्कार तो किया और लकड़ी-खाते में इंदराज भी करा दिया, परंतु इन्होंने 'जन्ममरण की बही में रपट नहीं लिखवाई." और बाबू ने प्रमाणस्वरूप मुझे दोनों रजिस्टर दिखाए.

श्मशान में दाह संस्कार के लिए लकड़ी तभी मिलती है जब मृतक का संबंधी मृतक के बारे में पूरा विवरण लिखवा दे. मैं यह जानता था. इसलिए प्रश्न किया, "क्या लकड़ी की बही में मृतक का विवरण लिखते समय आप ने इन्हें बताया था कि इन्हें फिर दोबारा आ कर जन्ममरण की बही में भी इंदराज कराना पड़ेगा?"

"पर यह इंदराज कराने का दायित्व तो इन का है. देखिए, बाहर इस बारे में बोर्ड भी लगा हुआ है."

"पर यह क्या हर रोज मुरदा जलाने श्मशान आते हैं, जो इन को इन नियमों की बारीकियों के बारे में जानकारी हो? इन्होंने जब एक बार आप को मृतक का विवरण लिखवा दिया तब क्या आप का यह फर्ज नहीं था कि इन्हें बताते?"

वहां के कार्यकलाप से मैं जो समझा वह यह था कि वे लोग जानबूझ कर जन्म-मरण की बही में इंदराज नहीं करते. मृतक के संबंधी को प्रथम तो ऐसे समय होश ही कम रहता है और दूसरे उसे यह क्या पता कि जो रपट वह लिखवा रहा है वह जन्ममरण की बही में नहीं, लकड़ी की बही में लिखा जा रहा है. जिन लोगों को मृतक की मृत्यु के प्रमाणपत्र की जरूरत नहीं पड़ती उन को तो कोई फर्क नहीं पड़ता और जिन को जरूरत पड़ती है, नियमों के चक्कर से बचने में ही अपनी भलाई समझते हैं.

मैं ने एक प्रश्न और किया, "मान लिया कि जन्ममरण की बही में इंदराज नहीं हुआ, परंतु क्या आप के लिए यह उचित नहीं था कि आप पहले ही दिन इन का आवेदन लेते?"

"परंतु इस से क्या फर्क पड़ता है?"

"फर्क यह है कि यदि कोई आप के विरुद्ध शिकायत करने का साहस भी करे तो आप आराम से कह सकते हैं कि जब इस ने आवेदन ही नहीं दिया तब प्रमाण-पत्र कैसा?"

रमेश बाबू उसी दिन सायंकाल लौट गए.

एक सप्ताह बाद उन का एक पत्र आया. पोस्टमार्टम के प्रमाणपत्र में मृतक की आयु 29/30 वर्ष लिखी है, जब कि वास्तविक आयु 34 वर्ष थी. दूसरे पुलिस की रपट में पिता का नाम घीसालाल और श्मशान में घीसाराम लिखा था. असली नाम घीसाराम है, इसी लिए बीमा निगम से रुपए मिलने में देर हो रही है. हो सकता है, आखिर में बीमा निगम पर मुकदमा ही करना पड़े.

पत्र पढ़ कर मुझे एक ऐसे व्यक्ति की याद आ गई जिसे पुलिस ने जुआ खेलने के आरोप में गिरफ्तार कर लिया था. वास्तविकता यह थी कि उसे जुआ खेलना तक न आता था. परंतु फिर भी अदालत में उस ने अपराध को बिना हिचक स्वीकार कर लिया था और सहर्ष पचास रुपए जुरमाना दे कर घर आ गया था. निरपराध होने पर भी अपराध स्वीकार करने का कारण पूछने पर उस ने बताया था कि कि अपराध स्वीकार करना स्वयं को निरपराधी साबित करने से अधिक सस्ता था. निरपराध साबित करने के लिए वकील की फीस, अदालत की पेशियां और उस के बाद भी फैसले की अनिश्चितता. इस प्रकार पता नहीं कितने पचास रुपए खर्च हो जाते. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनौतियों का व्यापार

किसी चीज को प्राप्त करने के लिए मेहनत करने की बजाए देवीदेवताओं की प्रार्थना कर के पाने की आशा करना क्या समय और पैसे की बरबादी नहीं है?

मनुष्य कामनाओं का दास है. उस की इच्छाओं और लालसाओं का कहीं अंत नहीं है. जो कंगाल और भूखा है, वह चाहता है कि उसे किसी तरह पेट भर भोजन मिल जाए. परंतु पेट भर भोजन मिल जाने से कामना पूरी नहीं हो जाती. बढ़िया वस्त्र चाहिए, अच्छा घर या हो सके तो महल चाहिए, जवान, हो सके तो सुंदर पत्नी चाहिए, संतान, पुत्र और पुत्री दोनों चाहिए. यह सूची कहीं समाप्त नहीं होती. जितना कुछ प्राप्त होता जाता है, कामना उस से आगे चौगुनी बढ़ती जाती है. यदि विश्व की सारी धनराशि, सारा वैभव भी किसी व्यक्ति को दे दिया जाए, तो भी उस की कामना तृप्त होने वाली नहीं है.

फिर संसार के अधिकांश लोग वैभव-हीन हैं. उन में से प्रत्येक लालसाओं से पीड़ित है. छोटीछोटी लालसाएं—कोई एक नौकरी मिल जाए, संतान नहीं हो रही है वह हो जाए, प्रेम में सफलता प्राप्त हो जाए, शत्रु का नाश हो जाए. जब अपने प्रयत्न से सफलता प्राप्त नहीं होती तब मनुष्य देवीदेवताओं की शरण लेता है. उन से प्रार्थना करता है और मनौतियां मनाता है. बेरोजगार बेटे की मां मनौती मनाती है : 'अगर मेरे बेटे की नौकरी लग जाए तो मैं सवा रुपए का प्रसाद बांटूंगी.' मुगल बादशाह अकबर ने मनौती मानी थी कि 'अगर मेरे घर में पुत्र हो जाए तो मैं पैदल ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह की यात्रा करूंगा.'

अर्थशास्त्र का नियम है कि जिस चीज की मांग हो, उस के मिलने का भी प्रबंध हो जाता है. समझदार लोगों ने देखा कि कामनाओं से ग्रस्त लोग देवी-देवताओं को रिश्वत दे कर अपना काम निकलवाने का कोई साधन चाहते हैं. अतः हिंदू मंदिरों और मुसलमानों की दरगाहों में इस का प्रबंध कर दिया गया.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनसा देवी, मनोकामना देवी, चिंतापूर्णी देवी आदि के अलगअलग मंदिर बन गए. आशय सब का एक है—आप की इच्छा पूरी होगी. सामान्यतया सभी मंदिरों के लिए यह प्रचार किया जाता है कि जो व्यक्ति सच्ची श्रद्धा से उस मंदिर में जाता है, उस की इच्छा अवश्य पूर्ण होती है.

सच्ची श्रद्धा की शर्त इसलिए लगा दी गई है, जिस से वे लोग भुलावे में पड़े रहें, जिन की इच्छा पूरी नहीं हुई है. वे यही समझें कि श्रद्धा में ही कोई कमी थी.

मनौती का यह व्यवसाय कितने जोरों से चलता है, यह देखना हो तो किसी भी बड़े मंदिर में या किसी पीर की दरगाह में जाइए. हरिद्वार में पहाड़ी के ऊपर बने मनसा देवी के मंदिर के आसपास पेड़ों पर अनगिनत रंगीन कपड़े की कतरनें बंधी हुई हैं और हर रोज सैकड़ों नई बंधती हैं. ये प्रत्येक किसी कामनाग्रस्त व्यक्ति द्वारा बांधी गई हैं.

तिरुपति मंदिर की मनौती

आंध्र प्रदेश में तिरुपति का मंदिर, कश्मीर में वैष्णव देवी का मंदिर और अजमेर में ख्वाजा चिश्ती की दरगाह इस कार्य के लिए विशेष रूप से प्रसिद्ध हैं.

तिरुपति में बालाजी का मंदिर एक ऊंची पहाड़ी पर बना है. लोग पहले कोई मनौती मान लेते हैं और जब वह पूरी हो जाती है, तब तिरुपति जा कर अपना सिर मुंडवाते हैं. यह सिर मुंडवाना शाब्दिक और आलंकारिक, दोनों अर्थों में होता है. बाल मुंडवाना मनौती पूरा करने का आवश्यक अंग है और चढ़ावा चढ़ाना गौण अंग. इस प्रकार मनौती मनाने वाले और इच्छा पूरी हो जाने पर तिरुपति पहुंचने वाले कितने लोग होते हैं, इस का अनुमान इस बात से लग सकता है कि इस मंदिर की वार्षिक आय एक करोड़ रुपए से अधिक है.

प्रति दिन मंदिर के बाहर दर्शनार्थियों की कतार लगती है, जो बहुत बार एक मील लंबी होती है और दर्शनार्थी को दर्शन करने से पहले चारपांच घंटे या इस से भी अधिक प्रतीक्षा करनी पड़ती है. कतार में खड़ेखड़े लोग थक कर परेशान न हों, इसलिए रास्ते में पत्थर की बनी बेंचें बना दी गई हैं.

भक्त चाहे जितने श्रद्धालु हों, किंतु मंदिर के प्रबंधक लौकिक बुद्धि से रहित नहीं हैं. इस मंदिर का प्रबंध भी यात्रियों की विपुल संख्या के अनुरूप ही है. मंदिर की धर्मशालाएं पहाड़ी से नीचे तिरुपति स्टेशन के पास ही हैं. वहां 18 मील दूर तिरुमल पहाड़ी पर जाने के लिए मंदिर की अपनी ही बसें चलती हैं. इन बसों में एक सूचनापट्ट टंगा है, जिस में लिखा है कि जो यात्री मनौती पूरी करने आए हैं, उन्हें अपना मुंडन मंदिर के नियत मंडप में ही करवाना चाहिए. बाहर मुंडन कराने से वह मनौती भगवान को नहीं लगती.

इस सूचना का मर्म समझने के लिए यह जानना उचित होगा कि इस मंदिर में मनौती पूरी करने के लिए पुरुष ही नहीं,

ख्वाजा चिश्ती की दरगाह : मनौतियां मानने वालों का मुख्य आकर्षण

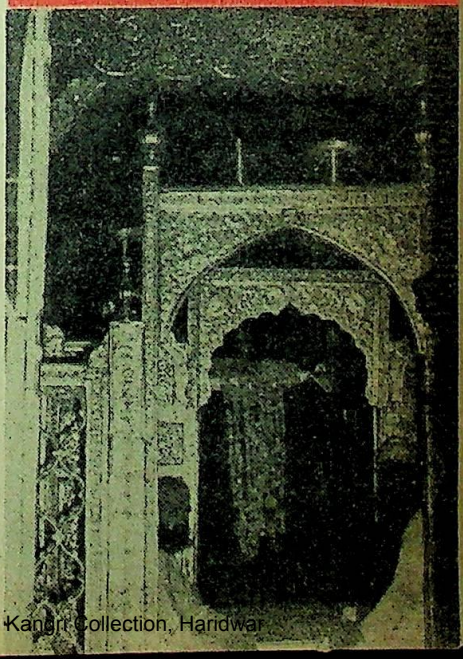

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्त्रियां भी अपने सिर मुंडा डालती हैं.

एक महिला के लंबे बालों का मूल्य 75 या 100 रुपए होता है, क्योंकि इन का निर्यात होता है. मंदिर के नियत मंडप में बैठे नाई सिर मुंडने की मजदूरी डेढ़ या दो रुपया लेते हैं. इस मंदिर के बाहर बैठे नाई 50 पैसे में या मुफ्त भी महिलाओं का मुंडन करने को तैयार रहते हैं. आखिर बाल तो नाई के पास ही रह जाते हैं. इन निजी नाइयों की प्रतिद्वंद्विता को समाप्त करने के लिए उपरिलिखित सूचनापट्ट बसों में टांगा गया है, जिस से यात्री सावधान रहें कि नियत मंडप से बाहर मुंडवाए गए बालों की मनौती भगवान तक पहुंचती ही नहीं. मनौती भगवान तक पहुंची या नहीं, इस का फैसला मंदिर के प्रबंधक ही करते हैं.

इसी प्रकार अजमेर में ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह मुसलमानों का प्रसिद्ध तीर्थ है. चिश्ती साहब तेरहवीं शताब्दी में भारत आए थे और शांतिपूर्ण उपायों से भारत में इसलाम का प्रचार करने वालों में प्रमुख थे. उन के शिष्यों ने उन के साथ अनेक चमत्कारों का संबंध जोड़ दिया था. उन की दरगाह का माहात्म्य इतना बढ़ा कि सन 1569 में सलीम के जन्म के रूप में अपनी संतान की कामना पूरी हो जाने पर बादशाह अकबर पैदल चल कर इस दरगाह में पहुंचा था. उस ने यहां कुछ इमारतें भी बनवाई थीं.

उस के लगभग 100 वर्ष बाद शाहजहां ने इस दरगाह का कुछ अंश बनवाया, जो संगमरमर का बना हुआ है. इतने प्रतापी बादशाहों के आगमन से इस दरगाह का महत्त्व बढ़ जाना स्वाभाविक ही था. इस के विषय में यह प्रचार किया गया कि यहां से कोई खाली हाथ नहीं लौटता अर्थात यहां आने वाले हर व्यक्ति की मनोकामना पूर्ण होती है.

दरगाह का प्रबंध इस दृष्टि से बढ़िया है कि दरगाह के खादिम (सेवक, एक

मनौती पूरी न हो तो व्यक्ति यही समझता है कि उस की श्रद्धा में कोई कमी रह गई और वह फिर मनौती मानता है : गंगाघाट पर स्नानार्थियों की भीड़.

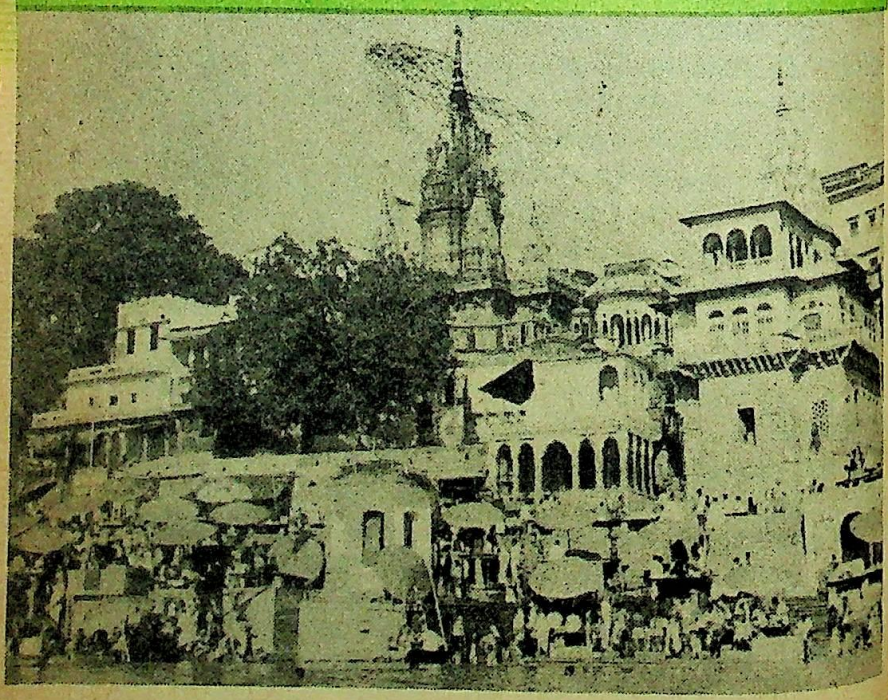

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकार के पंडे) दरवाजे के अंदर से ही दर्शक के साथ लग लेते हैं. दर्शक चाहे या न चाहे, वे उसे जल्दीजल्दी अपनी तोतारटंत भाषा में बताते चलते हैं—यह दरवाजा अलाउद्दीन खिलजी ने बनवाया, यह मसजिद अकबर बादशाह ने बनवाई, यह हिस्सा शाहजहां ने बनवाया, इन देगों में पुलाव पकता है, इस देग में 60 मन चावल पकता है और उस दूसरी देग में 120 मन. एक देग चढ़वाने में 10 हजार रुपए खर्च आता है, ये देगें उर्स के मौके पर चढ़ाई जाती हैं और तब पुलाव लुटता है, इत्यादि.

चिश्ती की दरगाह : तीर्थ क्यों?

इस के बाद वे दर्शक को दरगाह के बरामदे में संगमरमर के फर्श पर बिछी दरी पर बैठने को कहते हैं. वहां चारपांच व्यक्ति रजिस्टर खोले बैठे होते हैं. दर्शक को बिठा कर उस का नामपता लिखा जाता है. उस के बाद उस से प्रेम से पूछा जाता है कि इस दान वाले खाने में कितनी रकम भर दी जाए. रकम कम जान पड़ने पर उसे थोड़ा बढ़ाने का आग्रह भी किया जाता है. मुझे लगा कि बिना जेब हलकी किए किसी को लौटने नहीं दिया जाता. उस के बाद दर्शक को ख्वाजा की कब्र के दर्शन कराए जाते हैं.

फूलमालाओं से लदी संगमरमर की इस कब्र पर भी कुछ चढ़ावा चढ़ाने की आशा की जाती है. अंत में वह खादिम, जो शुरू से ही दर्शक के साथ हो गया था, अपनी सेवा का प्रतिफल पाने की आशा करता है. दीन स्त्रियां भी बैठी होती हैं. जो बेवा और लाचार होती हैं. दर्शकों को सलाह दी जाती है कि यदि वे उन्हें कुछ देना चाहें तो दे दें. मतलब यह है कि जेब खाली कराने का तरीका हिंदू तीर्थों से कुछ विशेष भिन्न नहीं है.

अजमेर में आप को यह कहने वाले भी बहुत लोग मिलेंगे कि जो ख्वाजा की दरगाह पर जाता है, वह खाली हाथ नहीं लौटता. आखिर इतने लोग निःस्वार्थ हो

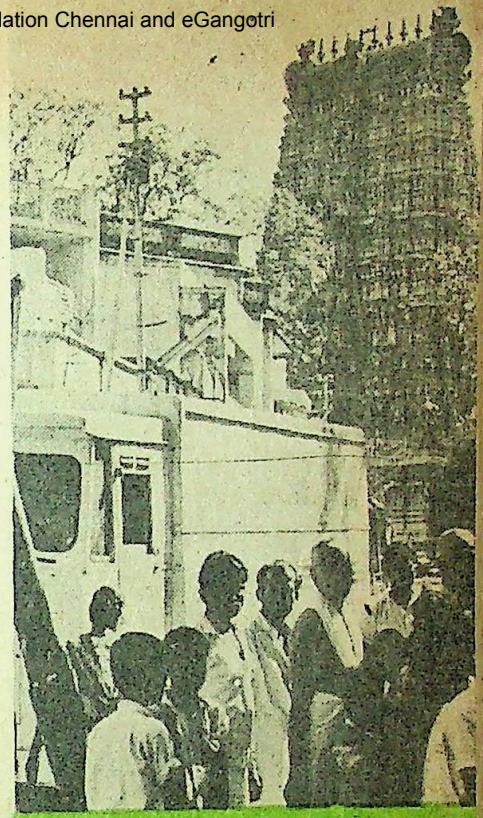

मंदिर के बाहर दर्शनार्थियों की भीड़ : अंधश्रद्धा के कारण लोग कितना नुकसान उठाते हैं?

कर गलत बात क्यों कहेंगे? पहली बात तो यह है कि इस बात को कहते हुए व्यक्ति यह समझता है कि वह एक भली बात कह रहा है. दूसरी बात यह है कि ख्वाजा की दरगाह की ख्याति और माहात्म्य बढ़ने में स्थानीय लोगों का आर्थिक स्वार्थ है. हर साल लाखों व्यक्ति दरगाह में आते हैं. उन से नगरवासियों को आय होती ही है.

एक दुकानदार से उस के व्यापार-व्यवसाय का हाल पूछने पर उस ने कहा, "इस ओर पुष्कर बैठा है और उस ओर ख्वाजा. इसलिए गुजारा मजे में हो रहा है." इन हिंदू और मुसलिम तीर्थयात्रियों के सहारे बहुत से नगरवासियों की जीविका चलती है. वे क्यों नहीं ख्वाजा और पुष्कर का माहात्म्य बखानेंगे? हरि-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वार और प्रयाग में भी तो नवरात्रियों का कुछ प्रभाव होता है. अनायास ही तीर्थ का माहात्म्य बखानने लगते हैं.

आखिर इन मनौतियों के पूरा होने का रहस्य क्या है? लोगों की मनौतियां पूरी होती हैं, तभी तो लोग वहां जाते हैं और वे ही नए लोगों को भी मनौती का मार्ग सुझाते हैं.

मजे की बात यह है कि मनौती पूरा होने का रहस्य कुछ भी नहीं है. हर व्यक्ति केवल उसी वस्तु की कामना करता है, जिसे पा सकने की उसे कुछ संभावना होती है. आशय यह है कि मनुष्य की कामना असीम अवश्य है, परंतु वह एकएक कदम कर के ही आगे बढ़ती है. कोई निपट कंगाल एक ही छलांग में करोड़पति बनने की कामना नहीं करने लगता.

मनौती का रहस्य

प्रायः मनौतियां ऐसी होती हैं कि जिन के पूरा होने की 50 प्रतिशत संभावना तो होती ही है. नौकरी मिलना, मुकदमा जीतना, संतान जन्म, प्रेम में सफलता आदि ऐसी ही समस्याएं हैं. ऐसी दशा में देवीदेवताओं और पीरों का काम काफी आसान हो जाता है. जो काम स्वयं होना ही था, उस का श्रेय उन्हें मिल जाता है.

दूसरी बात यह कि मनौती मानने के बाद व्यक्ति दोगुने आत्मविश्वास के साथ अभीष्ट सिद्धि के प्रयत्न में जुट जाता है.

इस के बाद भी बहुत बड़ी संख्या ऐसे लोगों की होती है, जिन की मनोकामनाएं पूरी नहीं हो पातीं. उन की इस असफलता का प्रचार कोई नहीं करता.

इस विषय में मुझे एक व्यावसायिक संस्था का उदाहरण याद आता है. यह संस्था एक दवा का विज्ञापन करती थी, जिस में उस दवा के प्रयोग से शर्तिया पुत्र पैदा होने का दावा किया जाता था. पुत्री पैदा होने की दशा में पूरा दाम वापस लौटाने की शर्त थी. वह दवा खूब बिकती थी.

दवा का प्रभाव कुछ भी नहीं था. जिन के यहां स्वतः पुत्र होता था, उस का श्रेय दवा को मिल जाता था. जिन के यहां पुत्री होती थी, उन में से भी बहुत से लोग आलस्यवश या संकोचवश दाम वापस नहीं मांगते थे. दाम वापस मांगने वालों की संख्या बहुत ही कम थी. इस आधार पर विज्ञापनदाता ईमानदारी के साथ कह सकते थे कि उन की दवाई सचमुच प्रभावशाली है.

मनौतियां सफल होने के प्रचार का रहस्य केवल यह है कि जिन लोगों की मनौतियां सफल नहीं हुईं, वे संगठित हो कर इस प्रचार का भंडा नहीं फोड़ते, जब कि जिन लोगों के आर्थिक स्वार्थ पूरे होते हैं, वे इस प्रचार के लिए भरसक प्रयत्न करते हैं. ●

दिले दीवाना...

ठुकराए जा रहे हैं खुद अपने दयार में,
और इसलिए कि भटकें न राहे वफा से हम.

✦

जिन खयालात से हो जाती है वहशत दूनी,
कुछ उन्हीं से दिले दीवाना बहलते देखा.

—असर लखनवी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

OBM-5800-HIN-R

"मैं चाहती हूं कि मेरी नन्ही बेटी अधिक फुर्तीली, स्वस्थ और जानदार बने ! इसलिए मैं उसे हर दिन बोर्नविटा देती हूँ।"

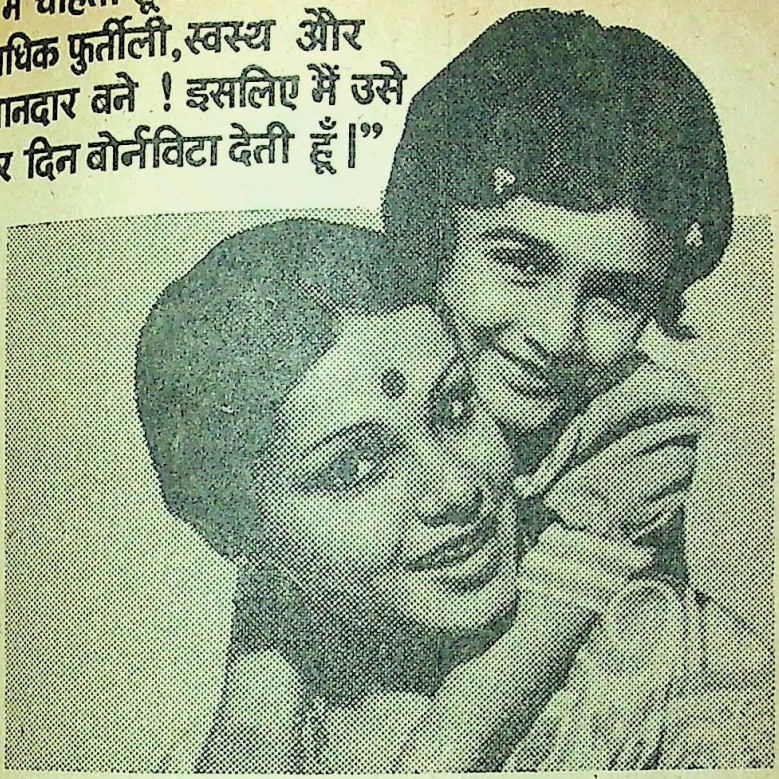

"अब उसके साथ-साथ चलने के लिए मुझे भी बोर्नविटा चाहिए।"

"मेरा पूरा परिवार दिन में दो बार बोर्नविटा पीता है। मेरे पति बोर्नविटा देने का आग्रह करते हैं क्योंकि मॉल्ट, दूध, ग्लूकोज़ और चीनी के अलावा बोर्नविटा कोको से खूब भरपूर है। वे कहते हैं कि कोको हमें उपलब्ध सबसे अधिक संकेंद्रित (कॉन्सेन्ट्रेटेड) शक्ति-दायक आहारों में से एक है। और किसी दूसरे मॉल्टयुक्त पेय आहारों के मुक़ाबले बोर्नविटा में अधिक कोको होता है। बोर्नविटा में मिला हुआ कोको उसे ज़्यादा स्वादिष्ट भी बनाता है। मेरी छोटी बेटी को बोर्नविटा बहुत पसंद है—और मुझे मालूम है कि बोर्नविटा से उसकी विकसित होती हुई मांस पेशियों, हड्डियों और दिमाग़ के लिए आवश्यक भरपूर पोषक उसे मिलने में मदद होती है। इसके अलावा और अन्य पेय आहारों की बनिस्बत बोर्नविटा अधिक किफ़ायती है। मैं हर दिन (अन्य पेय आहारों के समान) एक कप में दो चम्मच बोर्नविटा मिलाती हूँ और मेरे बोर्नविटा का डिब्बा कई अधिक दिनों तक चलता है। आज़माकर खुद देख लीजिए।"

कॅड्बरिज़

बोर्नविटा

शक्ति, उत्साह और स्वाद के लिए आदर्श पेय आहार।

हर डिब्बे मे ज़्यादा प्याले - हर प्याले में ज़्यादा स्वाद!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विम से जगमग चमकदार सफ़ाई

इसमें ५०% अधिक झाग की शक्ति है

न चिकनाहट !
न खरोंचें !
न चिपका पाउडर !

विम क़ीमत चुकाए २५% से अधिक की बचत ये पैक खरीदने पर

विम से हर चीज़ चमक उठती है.

हिन्दुस्तान लीवर का यह उत्कृष्ट उत्पादन केवल ६०० ग्राम और २.५ किलोग्राम के पैक में मिलता है और कभी बुरा नहीं

लिंटास V.47-77 HI

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ये पति

एक बार मैं अपने पति के साथ अपने पुत्र बबलू को ले कर एक सहेली के विवाह की वर्षगांठ पर गई थी. वहां जब मैं अपनी सहेलियों से बातें कर रही थी, तभी बबलू ने इन से पूछा, "पापा, एक आदमी एक से अधिक शादियां क्यों नहीं कर सकता? सरकार ने ऐसा कानून क्यों बनाया?"

यह सुन कर मेरे पति ने मेरी सभी सहेलियों की ओर देख कर कहा, "बेटा, जो लोग अपनी रक्षा खुद नहीं कर पाते, उन की रक्षा सरकार करती है."

सुनते ही सारा हाल ठहाकों से गूंज उठा.

—मधु गुप्ता, लखीमपुर खीरी

✦

मेरे पति घर के कामकाज में मेरी बिलकुल मदद नहीं करते. अभी कुछ दिन पहले की बात है, मैं खाने की मेज से पहले उठ कर बरतन साफ करने लगी. वह तब तक कोई पत्रिका देखते हुए खाना खा रहे थे. जब वह खाना खा कर प्लेट लिए रसोई में आए, तब मैं बरतन धो कर हाथ पोंछ रही थी. उन्होंने पहले तो प्लेट रख दी. फिर कुछ सोच कर स्वयं

ही प्लेट धोने लगे. जब मेरा ध्यान गया तो मैं ने पूछा, "क्या कर रहे हो? आज यह मेहरबानी कैसे?"

वह बड़े प्यार से बोले, "अरे, डौली, अगर मेरा बस चले तो..."

किसी अच्छे से भावुक संवाद की आशा में मैं इन से सट गई तो इन्होंने वाक्य पूरा किया, "अगर मेरा बस चले तो सर्दी में ठंडे पानी से प्लेट धोना तो दूर, खाना खा कर मैं अपने हाथ तक नहीं धोऊं."

—शकुंतला पुरोहित, हरिद्वार

✦

मेरे भाई साहब बड़े हाजिर जवाब हैं. भाई साहब की लंबाई कुछ कम है. उन की शादी के दूसरे दिन की बात है

कि मैं, भाई साहब, भाभीजी, उन की सहेलियां व परिवार के अन्य लोग बैठे हुए गपशप कर रहे थे. इतने में एक लड़की, जो कि भाभीजी की सहेली थी, भाभीजी से बोली, "दीदी, हमारे जीजाजी तो बहुत ही छोटे हैं. मेरे बराबर ही हैं."

भाई साहब तुरंत उस लड़की से बोले, "मुझे क्या पता था, वरना मैं आप से ही शादी करता." इस समय उस लड़की का चेहरा देखने लायक था. उस के बाद किसी ने भी भाई साहब से मजाक करने की हिम्मत नहीं की.

—सुरेश शर्मा, नैनीताल ○

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पिघलता हुआ पत्थर

जुमे की दोपहर को जब सलमा नहा-धो कर गुसलखाने से बाहर निकली तो उस के चाचा उसे देखते ही रह गए. चची खा जाने वाली नजरों से उसे घूरने लगी. सलमा ने नए सिले कपड़े पहन रखे थे और गीले बालों को तौलिए से रगड़रगड़ कर पोंछ रही थी. उस का भराभरा गेहुआं जिस्म नहाने के बाद और निखर आया था जैसे शबनम में नहाया हुआ फूल हो सुतवां नाक, बड़ी शरबती आंखों और बेदाग कपोलों वाले चेहरे पर और सलोनापन छा गया था. ऐसा रूप चाचा व चची के लिए तो वह खतरे का सूचक बन गया था.

भतीजी को निरंतर घूरते रहने के कारण चची बिगड़ पड़ीं, "ऐ, क्या खा ही जाओगे मुई छोकरी को?"

चचा ने सकपका कर चची की ओर देखा और गंभीर मुद्रा बना ली.

चची ने अब सलमा को आड़े हाथों लिया, "मैं भी तो जानूं, क्या जरूरत आ पड़ी है, इस तरह सजनेसंवरने की. ऐसे लच्छन होते हैं कहीं बेवाओं के? किसी दिन हमारे मुंह पर कालिख मलोगी—कालिख."

सलमा ने घूम कर चची की ओर देखा. क्रोध व पश्चाताप की मिलीजुली भावना से वह तिलमिला उठी. यह पहला अवसर तो नहीं था जब चची ने टोका हो, कहने के लिए बहुत सारे शब्द एकाएक भीड़ की तरह मुंह में आ कर इकट्ठे हो गए थे. लेकिन चची से उलझना बेकार समझ उस ने फिर से बालों को झंझोड़ना शुरू कर दिया.

चची ने कहा, "अरे, तू सुनती भी नहीं, मैं क्या कह रही हूं?"

इस बार सलमा ने बालों की ओट में से अपना चेहरा निकाला और आंखें चची के चेहरे पर टिका दीं. फिर बोली, "क्या सुनूं? एक दिन का मामला हो तो कोई परवा भी करे. यहां तो रोज ही ताने सुनने पड़ते हैं."

"तो क्या मैं गलत कहती हूं...एक खाविंद को तो खा गई. अब किस के घर

बेवा सलमा की जिंदगी में एक बार फिर बहार आ गई. वह सारी खुशियां अपने दामन में बटोर कर रख लेना चाहती थी, पर उस का पति सलाम किसी और की जुस्तजू में था...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में जा कर आग लगाएगी?"

"आग लगाना तो तुम्हारा काम है, चची. मैं कहीं आतीजाती नहीं, किसी से कुछ कहती तक नहीं. हां, अच्छे कपड़े पहनने का शौक है तो क्या वह भी छोड़ दूं, मरे हुओं के पीछे. फिर ऐसे जीने से फायदा ही क्या है?"

"तो डूब मर किसी कुंएबावड़ी में, ताकि पिंड तो छूटे."

"डूब कर मरें मेरे दुश्मन...मैं तो जीऊंगी और छाती ठोंक कर जीऊंगी. आखिर मैं तुम्हारे रहम व करम पर तो जीती नहीं हूं. खुद कमाती हूं."

"हां...तभी तो इतने दीदे दिखा रही है."

"चुप भी करो," चचा ने चची को डांटा, "जब देखो, बेचारी गरीब को डांटती रहती हो. क्या हो गया, नए कपड़े पहन लिए तो? इनसान का दिल ही तो है."

फिर वह सलमा के करीब आ कर उस के सिर पर हाथ फेरते हुए बोले, "चची की बातों का खयाल न किया कर, मेरी बच्ची."

सलमा चचा के सीने से लग गई—"सच बताइए, चचा जान, क्या मैं आप लोगों पर बोझ हूं?"

"कौन कहता है?" चचा ने भाव विह्वल हो कर कहा. फिर उसे अलग करते हुए कहा, "बेटी, तू चाहे तो यह रोजरोज की झिकझिक खत्म हो सकती है. एक शख्स है मेरी नजर में. इस सिलसिले में तेरी भी राय जानना है. जरा नमाज से फारिग हो कर आ जाऊं, फिर तफसील से बातें होंगी."

इतना कह कर उन्होंने खूंटी पर से टोपी उतारी और सिर पर रखते हुए बाहर निकल गए.

अपना मंतव्य प्रकट करने के बाद चचा देर तक सलमा की ओर टकटकी लगाए देखते रहे थे. सलमा तुरंत ही जवाब नहीं दे पाई थी. वह अकस्मात निर्णय लेने की स्थिति में नहीं थी.

सलाम की वहशियाना हरकतें बढ़ती गईं. लाख कोशिशों के बावजूद सलमा उसे न रोक सकी.

चचा ने एक बार फिर स्थिति स्पष्ट करते हुए कहा, "ठंडे दिल से गौर कर लेना, सलमा. ऐसी जल्दी भी नहीं है. आदमी भला मालूम होता है. बेचारे की पहली बीवी मर चुकी है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चारपांच बच्चे हैं. अपना घर का मकान है. पास में स्कूटर भी है. ठेकेदारी के काम में बहुत घूमना पड़ता है न. मेरा खयाल है, तुझे किसी किस्म की तकलीफ नहीं होगी. तेरे सामने सारी जिंदगी पड़ी है. क्या तू इसे रोरो कर व उलाहने सुन कर गंवाना चाहती है?"

"चचा जान, मैं ने इस बारे में कभी सोचा ही नहीं था कि कभी मुझे...एकदो दिन में जवाब दूंगी," सलमा ने फिलहाल निर्णय टालने की गर्ज से कहा.

"कोई बात नहीं, बेटी. जो होगा तेरी मरजी के मुताबिक होगा. मैं तुझ पर जबरदस्ती नहीं करना चाहता. तेरी जिंदगी का सवाल है, इसलिए सोचसमझ कर जवाब देना. अगर तू समझती है कि तुझे यतीम समझ कर निकालना चाहता हूं तो अभी ना कह दे."

"नहीं, चचा जान, मैं आप के लिए ऐसा सोचती भी नहीं हूं." सलमा ने कहा, "चची भी दिल की बुरी नहीं हैं. इन्होंने जिंदगी में जो कुछ देखा, उसे ही देखते रहना चाहती हैं, इसी लिए झगड़ा पैदा होता है."

"बहरहाल यह अच्छी बात नहीं है कि तुम दोनों इस तरह झगड़ती रहो. आखिर इस का खात्मा होना ही चाहिए," चचा ने निर्णयात्मक स्वर में कहा.

सलमा द्वारा निर्णय लेने से पूर्व चचा जान ने उस के होने वाले पति को एक दिन खाने पर बुलाया. सलमा ने उसे भरपूर नजरों से देखा, परखा और जांचा. बैठने के अंदाज, बालों के सलीके व लिबास से यह मालूम होता था कि वह ऊंची सोसाइटियों में अधिक उठाबैठा है. हर कोण से गांभीर्य का परिचय मिल रहा था. उमर भी खास नहीं लगती थी.

सुखी गृहस्थी के आकर्षण ने सलमा के उदास मन पर दस्तक दी और वह पुनः विवाहिता कहलाने के लिए तत्पर हो उठी. बेबसी के मनहूस साए से पिंड छुड़ाने का सुनहरा अवसर वह खोना नहीं चाहती थी. पति की मृत्यु के पश्चात पुरुष के संसर्ग की इच्छा ने उसे कई बार उद्वेलित किया था, लेकिन हर बार उस ने बड़ी बेदर्दी से उन इच्छाओं को नाग फनों की तरह कुचल कर रख दिया था. आज वे नाग फन एक साथ उस पर हमलावर हुए तो उस के बदन की सारी शिराओं को झंझोड़ने लगे.

दरवाजे से हट कर वह अपने पलंग पर जा गिरी और तेजतेज सांसें लेने लगी. बड़ी देर बाद वह अपनी सांसों पर काबू पा सकी. उसी दिन सलमा ने पुनः निकाह में जाने की स्वीकृति दे दी.

चचा के दिल जैसे एक भारी बोझ उतर गया था. ऐसा उन्होंने महसूस किया. इस के विपरीत चची ने, जो हमेशा सलमा की जान की दुश्मन बनी रहती थी, उस की बिदाई पर सौसौ आंसू बहाए. सलमा के निजी सामान के साथ सिलाई व कशीदे की मशीनों को ले जाते देख उस का दिल बैठ गया.

ये मशीनें ही थीं जिन की वजह से चची की गृहस्थी सहज रूप से चल रही थी. चूंकि नएनए तर्ज के कपड़े सीने और उम्दा कशीदा निकालने में सलमा की दूरदूर तक शोहरत थी इसलिए अच्छे घरानों की बेटियांबहुएं उन के घर आती रहती थीं. इस तरह उन घरानों से भी परिचय हो गया था जिस की कल्पना भी नहीं की जा सकती थी. अब सलमा के चले जाने से वह संपर्क सूत्र टूट जाएगा और परिचय आधारहीन होने पर अपना महत्त्व खो देगा तथा वह पासपड़ोस में गर्व से न बतिया सकेगी.

उस ने सलमा को खींच कर अपनी छाती से लगा लिया जैसे वह उस की जाई बेटी हो और उस से बिछोह का गम वह बरदाश्त नहीं कर पा रही है.

मोहम्मद सलाम कैसा ठेकेदार था, वह सलमा को आते ही मालूम हो गया.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

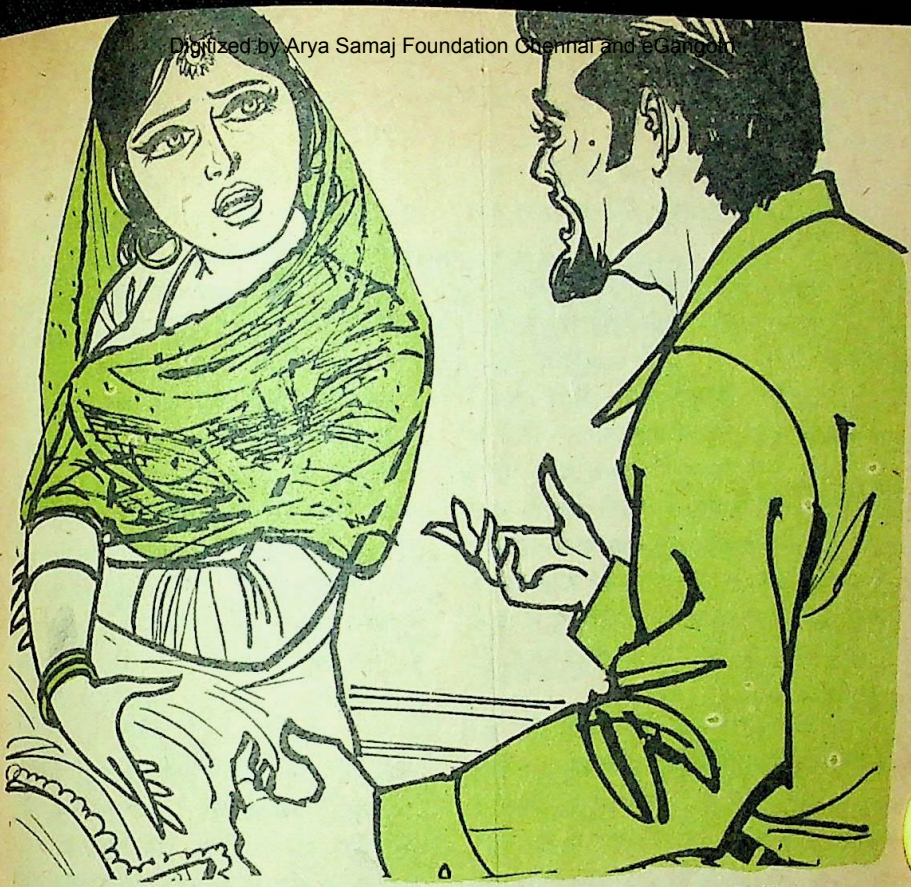

सलमा बोली, "मैं तो इतना ही जानती हूं कि आप ने मेरी जिंदगी में जहर घोल रखा है." यह सुन कर सलाम का मुंह बंद हो गया.

ठेकेदारी तो मात्र एक बहाना था, वह तो दिनरात मटरगश्ती किया करता था. वह कई बच्चों का पिता था. एक अदद बहू का ससुर भी. शीघ्र ही सलमा को यह मालूम हो गया कि उस के पति को स्त्री की इतनी आवश्यकता न थी कि निकाह करना पड़े. एक रखैल थी जिस के घर में उस के रात व दिन गुजरा करते थे. सुबह होते ही वह स्कूटर ले कर निकल जाता और रात गए तक वापस लौटता. वह भी अकसर शराब के नशे में चूर.

यह सब देख कर सलमा सन्न रह गई. उसे लगा, उस के साथ षड्यंत्र किया गया है. एक कैद से छूट कर वह दूसरी कैद में आ गई है. पति के रोबीले व्यक्तित्व ने प्रारंभ में कुछ ऐसा भयभीत किया कि वह चाह कर भी कई रोज प्रतिवाद न कर पाई.

एक रोज धैर्य का बांध टूट गया और उस के मुंह से निकल ही पड़ा. "अगर यही आप की जिंदगी है तो मुझे क्यों लाए?"

"बच्चों की देखभाल के लिए." सलाम ने लापरवाही से जवाब दिया.

"यह काम तो कोई आया भी कर सकती थी."

सलाम ने वहशियाना अंदाज से पत्नी की ओर देखा. उस की आंखों में लाल डोरे सुर्ख अंगारों से चमक रहे थे, "मुझे आया की नहीं, बीवी की जरूरत थी."

"कैसी बीवी की? जो रातों को देर तक मियां का इंतजार करे और अपनी नींदें हराम."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था कि जागा करो. घोड़े बेच कर सोओ तुम, मेरी बला से!"

सलमा की आंखों में आंसू आ गए. वह बोली, "क्या मेरा आप पर कोई हक नहीं है?"

"हक? क्या चाहती हो मुझ से?"

"एक बीवी अपने शौहर से क्या चाहती है?"

"जिरह अच्छी कर लेती हो?" सलाम व्यंग्य से मुसकराया. "लेकिन सुनो, मैं जबानदराजी पसंद नहीं किया करता. मरने वाली ने सारी जिंदगी उफ तक न की थी और चुपचाप मर गई और तुम आते ही अपने हक की बातें करने लगी हो. यही क्या कम है कि मैं ने तुम्हें शौहर का नाम दिया है, एक इज्जत की जिंदगी दी है."

"बेइज्जत वहां भी नहीं थी मैं. आप की मेहरबानी का शुक्रिया. लेकिन अगर सिर्फ नाम से ही बेवाओं की जिंदगी गुजर सकती है तो वे नया खसम क्यों करें?"

सलाम गुस्से में कांपने लगा. सहसा वह क्रूर हंसी हंसा और एकदम सलमा पर झपट पड़ा, "अब मैं जान गया हूं, तुम क्या चाहती हो?"

उस ने ताबड़तोड़ हाथ मारने शुरू किए.

"यह आप क्या कर रहे हैं?" सलमा ने पीछे हटते हुए कहा.

"प्यार कर रहा हूं, मेरी जान." सलाम ने उसे भुजाओं में कसते हुए कहा.

"नहीं!" सलमा घबरा कर बोली, "आप को मेरी जान की कसम!"

उस की प्रार्थना सलाम की क्रूर हंसी में दब गई. उस ने आननफानन में सलमा के कपड़े तारतार कर दिए. उन की छीनाझपटी, आक्रमण व प्रतिरोध की आवाजों से बच्चे जाग पड़े और नई अम्मी की दुर्दशा व अब्बा का वहशियाना ढंग देखने लगे.

सलमा ने लपक कर एक चादर खींच ली और एक कोने में दुबक कर बैठ गई.

"तुम लोग क्या देख रहे हो?" सलाम ने एक डांट लगाई, "भागो वरना एकएक की चमड़ी उधेड़ दूंगा."

अब्बा के क्रोध से परिचित बच्चे तत्काल अपनेअपने बिस्तरों में जा घुसे तथा दम साध कर क्रोध की आगामी प्रतिध्वनि सुनने का प्रयास करने लगे. लेकिन उस के बाद ऐसा कुछ न घटा. थोड़ी देर तक अब्बा के गुर्राने की आवाजें आती रहीं, फिर खर्राटे सुनाई देने लगे. नई अम्मी की देर तक सिसकने की आवाजें आती रहीं. बच्चे जो नई अम्मी से आशंकित थे. इस घटना के बाद उन के दिलों में उस के लिए सहानुभूति उमड़ आई थी.

रात की घटना ने सलाम पर कोई प्रभाव नहीं डाला था मगर सलमा के लिए वह जीवनमरण का प्रश्न बन गई थी. जिन कल्पनाओं को संजोए वह इस घर में आई थी. उन को साकार देख पाने की ललक उस के लिए चुनौती बन चुकी थी. वह ऐसे दोराहे पर खड़ी थी जहां से लौटना उस के लिए कठिन था, तो आगे बढ़ना और भी मुश्किल. उसे चची का घर याद आने लगा जहां उसे सब से प्यार व स्नेह मिलता था.

चची के उलाहनों में भी वह प्यार के दर्शन कर लेती थी. लेकिन यहां? काश, वह इस निकाह के लिए राजी न होती. जब वह पुरुष के बिना रहने की अभ्यस्त हो चुकी थी तो क्यों उस ने पौरुष के सामने घुटने टेक दिए? वह निर्भर भी तो नहीं थी किसी पर. खुद कमाती थी. लेकिन नारी की सार्थकता पुरुष के बिना अधूरी रहती है.

हर नारी अपने सुखी घर-संसार की कल्पना करती है. लेकिन तब उसे क्या मालूम होता है कि कल्पना अकसर मनुष्य के साथ खिलवाड़ कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टिनोपाल* का नया नाम

रानीपाल+

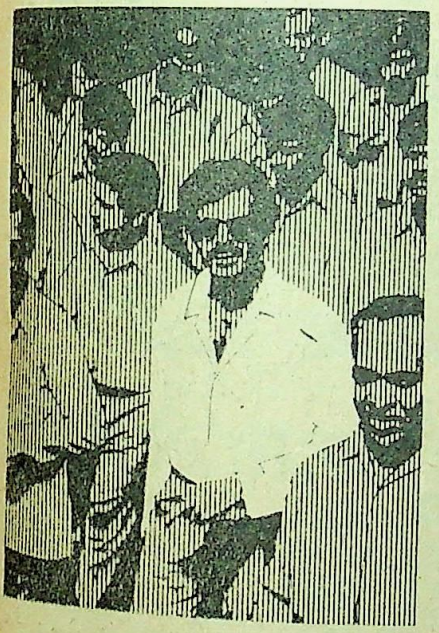

सूती वस्त्रों के लिए
रानीपाल+

सिन्थेटिक और
ब्लैंडिड वस्त्रों के लिए
रानीपाल+-एस

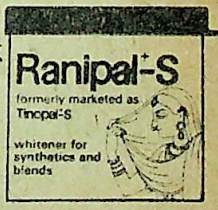

वही चीज़, वही काम, लेकिन अब नया नाम

सर्वोत्तम सफ़ेदी के लिए रानीपाल+

Suhrid Geigy
LIMITED

+सुहृद गायगी लि. का ट्रेडमार्क. * पहले सीबा - गायगी लि. से प्राप्त लाइसेन्स के अधीन बेचा जाता था.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लॅक्मे वैनिशिंग क्रीम

रूप रंग की छटा बिखेरे

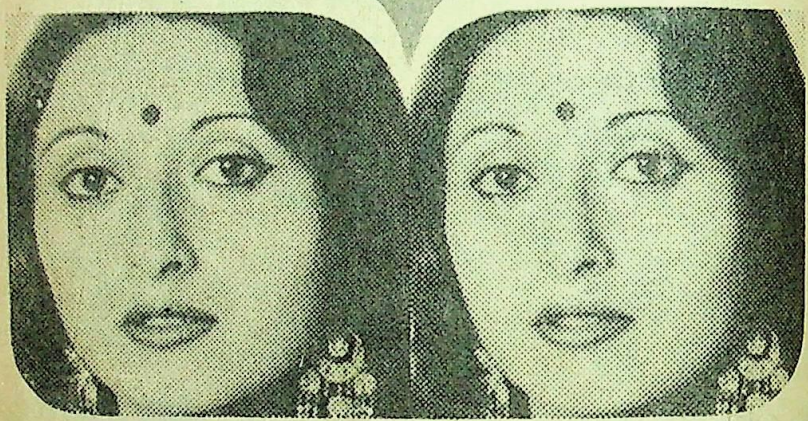

कौन न उस को प्यार से छेड़े

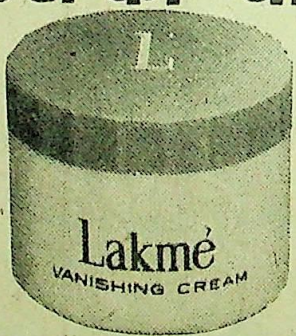

आप पर लोगों की निगाहें पड़ी कि रुकी रह गईं. इस मनोरम सौंदर्य और रूप की उज्ज्वलता का रहस्य है लक्मे वैनिशिंग क्रीम. हल्का-फुल्का और बिल्कुल प्राकृतिक श्रेष्ठ मेक-अप का आदर्श आधार,-लक्मे वैनिशिंग क्रीम

सब कुछ रूपरंग के हक में

लॅक्मे

dCA/L-VC-LT/10 HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाती है. सपनों के महल धड़ाम से गिर पड़ते हैं और मुहब्बत का नशा काफूर हो जाता है.

सलमा ने हर संभव प्रयत्न किया कि वह नए वातावरण की अभ्यस्त हो जाए. इस में वह कुछ सीमा तक सफल भी हो गई थी, लेकिन सलाम की पैशाचिक प्रवृत्ति बारबार उसे विचलित कर देती थी. बात बेबात हाथ व चाबुक उठा लेने का क्रम बढ़ता चला गया था. सलाम खामोशी चाहता था और सलमा किसी न किसी बात पर टोक उठती थी.

बाद में वह अपने कहे का पश्चात्ताप करती व घावों को सहलाती रहती. कभीकभी तो उसे निर्वस्त्र कर के आंगन में खड़ा कर दिया जाता. जब तक पति जागता रहता, उसे खड़ा रहना पड़ता था. उस के सो जाने पर वह बिना आहट किए अपने कपड़े पहनती और सोने का उपक्रम करती. लेकिन ऐसी घटना के बाद नींद किसे आती है? वह अपने भाग्य को कोसने लगती.

'भाग्य के भरोसे मैं कब तक बैठी रहूंगी?' एक दिन उस ने सोचा. 'सुख के प्रपंच में वह कब तक दुख को गले लगाती रहेगी और कब तक आंसुओं के घूंट पीती रहेगी.'

"मैं पूछती हूं, मुझ में क्या खोट है?" उस ने साहस कर के पूछा.

"कुछ भी नहीं?"

"मैं आप की पहली बीवी नहीं हूं."

"जानता हूं."

"इस के बावजूद आप मुझे मारते-पीटते हैं, मेरा, तिरस्कार करते हैं जानवर की तरह समझते हैं."

"नहीं, तुम तो बहुत सुंदर स्त्री हो."

"फिर आप उस कुटनी के घर क्यों जाते हैं?"

"यह दिल का सौदा है. तुम नहीं समझोगी. तुम्हें तो रोटीकपड़ा मिल ही रहा है."

"मैं भिखारिन नहीं हूं. आप की ब्याहता बीवी हूं. अगर मुझे मालूम होता कि आप मेरे साथ ऐसा सुलूक करेंगे तो कभी न आती. क्या मिला मुझे यहां आ कर?"

"क्या चाहिए था तुम्हें?"

"अगर दे सकते हैं तो...अगर दे सकते हैं...तो..." वह हकलाने लगी—फिर एकदम उगल दिया. "तलाक दे दीजिए."

"अच्छा!" व्यंग्यपूर्वक बोला सलाम, "तलाक चाहिए तुम्हें? जाओ, अदालत के दरवाजा खटखटाओ. भले घर की औरतें ही तो अदालतों में जाया करती हैं. जाओ, शौक से जाओ. मैं तो यह जुल्म नहीं करूंगा. लेकिन सोच लो, बसाबसाया घर उजाड़ कर कौन सी दुनिया बसाने जाओगी?"

"मैं जानती हूं, आप क्यों मेरी अना (अहम भावना) से खेल रहे हैं. औरत हूं न? औरत छुटकारा चाहे तो उसे गवाह चाहिए शौहर की रजामंदी चाहिए, वरना उसे अदालत का दरवाजा खटखटाना पड़ता है और मर्द के लिए कोई भी शर्त नहीं होती. चंद जुमले ही औरत की कायनात उजाड़ने के लिए काफी होते हैं. यही सोच कर शेर हो रहे हैं न आप?"

"वाकई तुम बड़ी समझदार हो," सलाम ढिठाई से हंसा. "मरहूमा तो बिलकुल जाहिल थी. उस के मुकाबले में तुम जहीन हो और खूबसूरत भी. मैं तुम से प्यार करने लगा हूं. आओ, मेरी आगोश में आ जाओ."

"खबरदार, जो कदम बढ़ाया...मैं आप के साए से भी दूर रहना चाहती हूं...आप...आप इनसान नहीं है, भेड़िए हैं—वहशी दरिंदे!"

"और सब से बढ़ कर तुम्हारा मालिक. तुम्हारा शौहर, मेरे कदमों के नीचे तुम्हारी जन्नत है?"

"तो रौंद डालिए अपने पैरों से और कर दीजिए मेरा खात्मा. इस जहन्नुम से

-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो छुटकारा मिले." इतना कहते हुए सलमा के रुलाई फूट पड़ी. जाने क्या सोच कर सलाम ने उसे पकड़ कर गले लगा लिया. सलमा देर तक उस के कंधे से लगी सिसकती रही और सलाम उस की पीठ थपथपाता रहा. उस क्षण ऐसा लगा था, सलाम की क्रूरता बीवी के आंसुओं में बह चुकी है. लेकिन ऐसा नहीं था. यह तो मर्द के मूड की बात होती है. चाहे जब बीवी को प्यार करने लगे. चाहे जब...

कुत्ते की दुम की भांति सलाम ने सीधा होना सीखा ही न था. फितरत ही कुछ ऐसी थी. धीरेधीरे यह होने लगा कि सलमा अपने साथ जो माल और जर लाई थी, वह भी पति छीन कर ले जाने लगा. जाने कैसे उन्हीं दिनों सलमा को रहमान का खयाल आ गया. रहमान उस का चचेरा भाई था और उस के दुख-सुख का साथी. परिणाम की परवा किए बिना उस ने रहमान को आने के लिए एक चिट्ठी लिख दी.

"आज रात की गाड़ी से रहमान आ रहा है, जल्दी आइएगा," उस ने सलाम से कहा था.

स्कूटर पर किक मारता पैर ठिठक गया. "कौन रहमान?"

"इतनी जल्दी भूल गए उसे, दो दिन आप के साथ रहा था वहां. स्टेशन पर विदा करने भी आया था."

"तुम्हारा भाई?"

"हां..." सलमा बोली, "अब वह यहीं रहा करेगा."

"किस खुशी में?" सलाम की भृकुटि पर बल पड़ गए. रहमान के आगमन की खबर उस के भीतर कहीं चुभ गई थी. चचेरेममेरे रिश्ते कभीकभी संदेह की स्थितियां ला देते हैं.

"कोई छोटाबड़ा कारोबार कर लेगा." सलमा ने उत्तर दिया, "आप का सहयोग भी मिलता रहेगा."

सलाम ने तीखी नजर से सलमा को घूरा. एक जोर की किक मारी और फर्राटे मारता हुआ स्कूटर भाग निकला.

आशा के विपरीत उस दिन सलाम जल्दी लौट आया था. अपनी अनुपस्थिति में रहमान की उपस्थिति को वह स्वीकार नहीं कर पा रहा था शायद. जो लोग खोखले होते हैं, उन्हें दूसरे भी विगलित दिखलाई पड़ते हैं. अपनी प्रेमिका के पति की अनुपस्थिति का अनुचित लाभ उठाने वाले सलाम के दिल में रहमान का आगमन विश्वासघाती संदेह को उपजा गया था. इसी लिए कहते हैं शायद कि जिस के जैसे विचार होते हैं उसे वैसी दुनिया नजर आती है.

रहमान के आने से सलमा को बड़ा बल मिला. उस की उपस्थिति में अधिकांशतः सलाम सहज बने रहने का प्रयास करता. यद्यपि अंदर ही अंदर वह कुढ़ता रहता. सलमा अब प्रसन्न दिखाई देती थी. क्यों न हो, रहमान उस का हमख्याल था. उस के दुखसुख का साथी.

एक पुरुष वह था जिसे वह पति कहती थी, जो उस की छाती पर तांडव नृत्य करता लगता. एक पुरुष यह था जो उस का भाई था और सगे से बढ़ कर था, जिस के सामीप्य से जिंदगी आसान लगती थी. रहमान ने उस की जिंदगी बदल कर रख दी थी. अब वे दोनों खूब खुशगपियों में मशगूल रहते. बाजारों में खरीदफरोख्त के लिए इकट्ठे जाते. कभीकभी घूमने सपाटे के लिए भी निकल पड़ते. कभी एकाध सिनेमा भी देख लेते. सलाम को अधिक समय घर में ही रहने लगा था.

वह अब सलमा व रहमान के संबंधों को संदेह की कसौटी पर परखने लगता. जब कुछ नजर न आता तो झुंझला कर बाल नोचने लगता. एक दिन ऐसी झुंझलाहट में उस ने कहा, "रहमान से कहो कि वह यहां से चला जाए."

"क्यों चला जाए?" सलमा ने पूछ कर पूछा.

"बस, यह मेरा हुक्म है."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक मां होने के नाते शिशु-पालन के
महत्व को आप से ज्यादा कौन समझ सकता है...

नया पप्पू फीडर इसी समझ और एक नये प्रतीक के साथ आता है–

भरोसे का प्रतीक

ये रहीं पप्पू की वे विशेषताएं जो इसे सबसे भरोसेमन्द फीडर बनाती हैं:

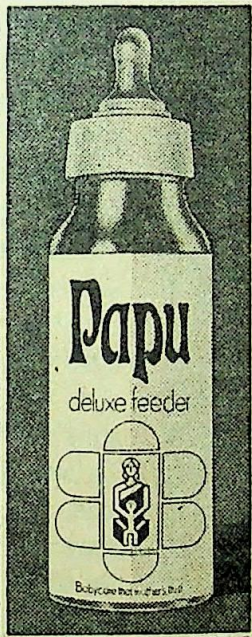

इसकी बॉटल ऊंचे तापमान पर मजबूत किये गये कांच की बनी है। इसलिए सुरक्षा के हिसाब से भरोसेमन्द।

बेजोड़ 'निपल कवर' निपल को पूरी तरह ढककर रखता है। इस तरह छोड़ा हुआ दूध व निपल भी सुरक्षित रहता है। इसलिए स्वच्छता व बचाव की दृष्टि से भी भरोसेमन्द।

खास आकार के निपल के कारण बच्चा दूध आराम से पीता है और पेट में हवा भी कम जाती है। यह निपल पारदर्शी और अपारदर्शी दो तरह का आता है और बार बार गरम पानी से साफ करने पर भी खराब नहीं होता। इसलिए स्वास्थ्य के हिसाब से भरोसेमन्द।

खास टिकाऊ पदार्थ का बना ढक्कन, एकदम अच्छी तरह लगता है और न तो लीक होता है, न खटकता है और न ही उबलने पर इसका आकार बिगड़ता है। इसलिए सुविधा के हिसाब से भी भरोसेमन्द।

दो आकारों में: स्टैण्डर्ड और मिनि

पप्पू

फीडर और निपल

अगली बार आप जब भी फीडर लें, बॉटल और निपल पर 'पप्पू' नाम देखकर ही लीजिए। शिशु के स्वास्थ्य और आपकी सुविधा के लिए यह जरूरी है।

मां की मान्य शिशु पालन की राह।

U-PP.1.HN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हुक्म देना जानते हैं तो उसी से कह दीजिए. आप का साला है वह."

"मैं नहीं कहता उस से. तुम कहो."

"मैं भी नहीं कहती. उस के यहां रहने में मुझे कोई आपत्ति नहीं है."

"लेकिन मुझे है. वह मुझे एक आंख नहीं भाता."

"आखिर किया क्या है उस ने?"

"कुछ भी न किया हो लेकिन मुझे उस का यहां रहना बिलकुल पसंद नहीं."

"मुझे पसंद है."

सलाम ने विषैली दृष्टि से घूरा उसे, "आखिर सच कुबूल कर ही लिया न, बदजात! तुम मेरी आंखों में धूल झोंक कर गुलछर्रे उड़ाना चाहती हो."

"गुलछर्रे आप को मुबारक...वह मेरा भाई है, सगे से भी बढ़ कर."

सरिता
1971 के छमाही सेट
अब केवल 10 रुपए में

हर सेट में लगभग 80 कहानियां, 150 लेख, 40 कविताएं, धारावाही उपन्यास तथा ढेरों अन्य रोचक सामग्री, जो आज भी आप का मनोरंजन तो करेगी ही, साथसाथ आप का ज्ञानवर्धन भी करेगी. यदि इन अंकों को आप ने अभी तक नहीं पढ़ा है तो आज ही मनीआर्डर भेजिए.

रजिस्टर्ड डाक से मंगाने के लिए रु. 1.50 अतिरिक्त.

मनीआर्डर कूपन पर यह लिखें : "प्रथम/द्वितीय, 1971 के सरिता के सेट के लिए धन."

दिल्ली प्रकाशन, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-55.

"भाईबहनों के रिश्तों से वाकिफ हूं मैं...अगर तुम ने उसे वा न भेजा तो समझो...समझो, मैं कुछ कर सकता हूं."

"मैं उस दिन का इंतजार कर रही हूं."

सलाम पिघल पड़ा, "सलमा, तुम्हें कैसे समझाऊं. मैं...मैं...रहमान की मौजूदगी बिलकुल बरदाश्त नहीं कर पा रहा हूं."

"धीरेधीरे बरदाश्त करने लगो मेरी तरह आप भी अभ्यस्त हो जाएंगे."

"ओफ्फो, सलमा!" यह पराजय की पराकाष्ठा थी.

सलमा मुसकराई—"एक शर्त पर. सिर्फ एक शर्त पर. रहमान वापस लौट सकता है."

"जल्दी बताओ, क्या शर्त है तुम्हारी?" इतना विवश व असहाय कभी नहीं देखा था सलाम को.

सलमा ने तटस्थ भाव से कहा, "जिस दिन मेरी सौत के घर जाना छोड़ देंगे, उसी रोज रहमान लौट जाएगा."

"तुम मुझे ब्लैकमेल करना चाहती हो?" सलाम गुस्से से कांपने लगा.

"मैं नहीं जानती, ब्लैकमेल क्या होता है? मैं तो सिर्फ इतना जानती हूं कि आप ने मेरी जिंदगी में जहर घोल रखा है. मुझे सुख के धोखे में दुख के गड्ढे में धकेल दिया है. मेरे अधिकारों पर कुठाराघात किया है आप ने." सलमा भावावेश में आते हुए बोली, "औरत मर्द से चाहती क्या है—प्यार ही न? वह भी तुम नहीं दे सकते तो मैं बेवा या परित्यक्ता ही भली!"

सलाम निरुत्तर सा पत्नी का मुंह ताकता रह गया.

जिस दिन से रहमान लौटा है, हर चीज घर की खूबसूरत लगने लगी. रहमान को दीर्घ नाटक से मुक्ति मिली थी तो सलमा को प्यार का अहसास दिलाने वाला पति. सलाम को घर में शांति और तृप्ति.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिवर्तन

व्यंग्य • सत्यप्रकाश संगर

पंजाब में आज की और कुछ वर्ष पूर्व की बस यात्रा में बहुत परिवर्तन आ आ चुके हैं. पहले कंडक्टर सामान को स्वयं छत के ऊपर रखवाते थे और उस के गुम हो जाने का जिम्मा भी लेते थे. ड्राइवरों और कंडक्टरों की वरदी पर कोई प्रतिबंध नहीं था. वे शलवार पहनें अथवा पाजामा, तहमद बांधे या चड्डी, कमीज पहनें या कुरता—और चाहें तो कुछ भी न पहनें. न पोशाक की पाबंदी, न उस के रंग की.

परंतु अब तो उन्हें वरदी पहननी होती है और वह भी खाकी रंग की. इस का असर न केवल उन के व्यक्तित्व पर, बल्कि दिलदिमाग पर भी पड़ता है. ड्राइवर अब एक सम्मानित और प्रतिष्ठित व्यक्ति है और अपनेआप को बहुत महत्त्वपूर्ण समझता है. पहले की तरह उसे सवारियों और बस मालिक की खुशामद की जरूरत नहीं. वह सरकारी नौकर है और अपने उत्तरदायित्व को भलीभांति समझता है. बस भरी हो या खाली, समय होते ही अपनी सीट पर आ जाएगा. हार्न बजा कर बस को स्टार्ट करेगा. पीछे मुड़ कर वह सवारियों की ओर निगाह उठा कर नहीं देखेगा, जैसे वे जीवित स्त्रीपुरुष नहीं मिट्टी के ढेले हों. यदि यात्रियों के स्थान पर बोरियां लदी हों तो वह उन्हें अधिक महत्त्व देगा.

मुसाफिरों के बजाए उसे निर्जीव बस और उस के इंजन से संबंध है और उस के कानों को कंडक्टर की घंटी से. कंडक्टर की घंटी से रुकी हुई बस को चला देगा और चलती हुई बस को रोक देगा. मार्ग में किसी मुसाफिर के हाथ दिखाने पर भी, कंडक्टर की घंटी के बगैर वह बस को कभी नहीं रोकेगा. घंटी सुनते ही वह यात्रियों से खचाखच भरी हुई गाड़ी को तुरंत रोक देगा.

सवारी से उसे कोई मतलब नहीं, न उस के किसी प्रश्न से. उस से बात करने के बजाए आप किसी पेड़ से बात कर सकते हैं. कंडक्टर को सवारियों से जरूर मतलब होता है, क्योंकि उसे टिकट काटने और पैसे वसूल करने होते हैं. परंतु वह भी उन्हें जीवित स्त्री या पुरुष नहीं, केवल मशीन के पुरजे समझता है.

एक पुलिस सब इंस्पेक्टर के आ जाने के बाद कंडक्टर और ड्राइवर की हालत देखने लायक हो गई, लेकिन जब बस रुकी तो मेरी भी सूरत मुहर्रमी हो उठी...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह विशेष प्रश्न पूछेगा और विशेष बात करेगा

"कहां का?"

"पठानकोट का."

"दो रुपए सात आने."

सवारी खामोशी से उसे पैसे दे देगी और वह चुपचाप उस की ओर टिकट बढ़ा देगा और दूसरी सवारी से वही प्रश्न करेगा. पैसे लेने और टिकट काटने से अधिक उस की दृष्टि में सवारी का कोई महत्त्व नहीं. यदि यात्रियों के बजाए ईंट और पत्थर उसे पैसे दे सकते तो वह उन्हें भी इसी प्रकार किसी भाव से उत्प्रेरित हुए बिना टिकट काट कर दे देगा और शेष पैसे भी. यदि कोई सवारी यह कहने का दुस्साहस करे, "सरदारजी, ऊपर छत पर सामान तो सुरक्षित है न?" तो उत्तर में वह तुरंत कहेगा, "सामान की जिम्मेदार सवारी है." और फिर उसी सांस में चिल्ला कर कहेगा, "टिकट के बिना कोई और सवारी..."

परंतु दृढ़ संकल्प रखने वाली यदि कोई सवारी, मानअपमान की उपेक्षा कर, यह कहने का दुस्साहस कर बैठे, "कंडक्टर साहब, सवारी तो गाड़ी के अंदर बैठी है और सामान छत के ऊपर पड़ा है," तो सरदारजी का चेहरा पूर्ववत भावशून्य रहेगा और वह उसी प्रकार रुखाई से कहेगा, "टिकट के ऊपर लिखा है--पढ़ लीजिए. जिस के पास टिकट नहीं वह ले ले."

और मामला समाप्त--कंडक्टर की तरफ से. परंतु मुसाफिर के ऊपर वज्र आ गिरता है. बस के अंदर बैठा वह छत पर रखे सामान की कैसे निगरानी कर सकता है? उस के पास अलाद्दीन का चिराग तो है नहीं. बस हर छोटेबड़े स्थान पर रुकती है. सड़क के किनारे भी रुक जाती है. यात्री उतरते हैं, बैठते हैं, सामान उतारते हैं, रखते हैं और आप अंदर बैठे हुए सामान के जिम्मेदार हैं. आप का मन संसार की सब बातों से हटा कर सामान में उलझा हुआ है. बस रुकी. एक व्यक्ति छत के ऊपर चढ़ा. उस के कपड़े जैसे तेल में भीगे हुए थे. शायद तेली था. उस ने अपना सामान उतारा--ट्रंक, बांस और पीपे.

"हो गया?" कंडक्टर ने पूछा.

"हो गया."

उस ने घंटी बजाई और ड्राइवर ने गाड़ी चलाई.

मुझे याद आया कि सड़क के किनारे सफेद रंग का ट्रंक पड़ा था. तेली के पास सफेद रंग का ट्रंक कैसे हो सकता है! उस ने अवश्य गलती से या जानबूझ कर मेरा ट्रंक उतार लिया. दिल की धड़कन तेज हो गई और साथ ही नाड़ी की गति भी. उस ट्रंक में मेरे सब कपड़े थे--रेशमी और गरम सूट, कमीजें और शेरवानियां. दम घुटने लगा. मुझे यह चिंता हुई कि यदि बस इसी गति से और नाड़ी इसी तेजी से चलती रही तो ट्रंक से हाथ धोने के साथसाथ जान से भी हाथ धोना पड़ेगा. क्यों न कंडक्टर से इस विषय में कुछ कहूं. दिल कड़ा कर के मैं ने उस की ओर देखा. परंतु उसे पाषाण के समान मूक देख साहस मेरा साथ छोड़ गया.

हृदय की धड़कन और हाथ की नब्ज तेज हो गई. मस्तिष्क ने हृदय को समझाया कि आखिर इतना डरने का क्या कारण? क्या वह यमराज है जो निगल जाएगा? मैं ने साहस बटोरते हुए पूछा, "सरदारजी, तेली के सामान के साथ शायद मेरा सफेद ट्रंक भी उतर गया."

"कौन सा तेली?" सरदारजी जैसे स्वप्न से चौंक कर कहा.

"जो अभी उतरा है."

"बाबूजी, गाड़ी नहीं रुक सकती. अगले स्टैंड पर उतर कर आप अपना सामान देख सकते हैं."

मैं एक कड़वा घूंट भर कर रह गया. और कर भी क्या सकता था. कुछ देर बाद बस रुकी तो तुरंत बाहर निकल आया.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कंडक्टर खड़ाखड़ा घूरता रहा. मैं उसी सीट पर आगे को हो कर बैठ गया. जिंदालाश लालाजी और भूतपूर्व नायब तहसीलदार मेरी ओर देख रहे थे.

तेजी से कदम उठाता हुआ छत पर चढ़ा. ट्रंक को पा कर हर्ष से फूल उठा. परंतु यह क्या? बस तो चल पड़ी, मैं ने घबरा कर बुलंद आवाज से शोर मचाया.

"सरदारजी, कंडक्टर साहब, रोको, बस को रोको. मैं अभी छत पर सामान गिन रहा हूं."

बड़ी मुश्किल से बस रुकी. मैं जल्दीजल्दी छत से उतरने लगा. घबराहट में पांव लोहे की सीढ़ी पर से फिसल गया. टांगें नीचे लटक गईं. यदि हाथ साथ न देते तो मुंह के बल सड़क पर गिर पड़ता. संभलसंभल कर नीचे उतरा और बस के अंदर दाखिल हुआ. सब मुसाफिर टकटकी बांध कर मेरी ओर देख रहे थे जैसे मैं घोर पाप का भागी होऊं.

कंडक्टर क्रोध से बोला, "बाबूजी, आप ने नाक में दम कर दिया है."

मैं ने अभियुक्त के समान दोष स्वीकार करते हुए कहा, "जरा सामान."

"सामान! सामान ले कर बस में आ जाते हैं जैसे रेलगाड़ी हो."

मुझे इस आक्षेप से इतना कष्ट नहीं हो रहा था जितना सीट न मिलने से. बस फिर चल पड़ी थी. कोई खाली सीट नजर नहीं आ रही थी और मेरी सीट पर तीन मन की एक जिंदा लाश बैठी थी. जिंदा लाश के निकट जा कर मैं ने क्रोध से कहा, "लालाजी, यह मेरी सीट है."

"आप की है? बड़े हर्ष की बात है. आप भी बैठ जाइए. रोकता कौन है?"

"जगह भी तो हो."

"इस में मेरा क्या दोष है?"

"मैं जालंधर से बैठा आया हूं."

"तो अब थोड़ी देर खड़े रहिए."

"लालाजी, आप आप को यहां से उठना होगा."

"तो उठ जाऊंगा," उन्होंने शांतिपूर्वक उत्तर दिया. "जरा दम तो लेने दीजिए. बस के लिए आधी फरलांग भागना पड़ा. जय लाटांवाली! जय भोलेनाथ!"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं खामोश खड़ा रहा. बस चलती रही. पास बैठी बुढ़िया उलटी करने और चिल्लाने लगी. परंतु बस तो मशीन है, उसे दूसरों के कष्टों से क्या. जब रुकती तो कुछ मुसाफिर उतरते. परंतु बैठने वालों की संख्या अधिक होती. भीड़ इतनी कि सांस लेना कठिन. तंग आ कर एक सवारी ने कहा, "सरदारजी, हर बात की हद होती है. आप हैं कि सवारियां बैठाए चले जा रहे हैं."

कंडक्टर ने एक तेज निगाह उस पर डाली जैसे खा जाने का इरादा हो और बोला, "बाबूजी, यदि आप को न बैठाते तो पता चलता. जाने वाले को कैसे न बैठाए."

कुछ देर बाद बस रुकी तो खाकी वरदी पहने एक साहब अंदर चढ़े थे. तो बस इंसपेक्टर पर इंसपेक्टर जनरल मालूम दे रहे थे. कशमीरी जवान, गोरा रंग, लंबा कद, गठा हुआ शरीर, चेहरे पर गांभीर्य, रोबीले.

वह टिकट चैक करने आए थे, सवारियों का कष्ट सुनने और दूर करने नहीं. सवारियों के प्रति उन का वही व्यवहार था जो ड्राइवर और कंडक्टर का. हां, अकड़ उन से कहीं अधिक थी. टिकट चैक करने के बाद एक सवारी को उन्होंने सीट से उठाया और स्वयं जम गए. कंडक्टर और इंसपेक्टर आपस में बातें करने लगे.

अगले स्टाप पर कुछ लोग उतर गए. इंसपेक्टर और कंडक्टर सीटों पर बैठे रहे. मैं खड़ा रहा और पांचसात दूसरे लोग भी. कुछ मिनट बाद बस फिर रुकी. सड़क के किनारे पुलिस के एक सब इंसपेक्टर खड़े थे, जिन के सिर पर न पगड़ी थी, न बाल, परंतु चेहरे से रोब टपकता था. वह बस में चढ़े और बोले, "कितनी सवारियां ज्यादा हैं?"

"साहब...जरा...कुछ..." कंडक्टर ने कहना चाहा.

"बकवास मत करो. साफसाफ उत्तर दो. कहां हैं चैकर? अच्छा, यह [illegible] है--इस में साठ सवारियां हैं." फिर [illegible] खड़े हुए हेड कांस्टेबल से उन्होंने [illegible] "करो चालान. ये [illegible]वारियां खड़ी [illegible] हैं?"

कंडक्टर चुप रहा.

"अच्छा आप और चैकर साहब [illegible] हुए हैं और सवारियां खड़ी हैं. सीटें [illegible] मुसाफिरों के लिए हैं, तुम्हारे और [illegible] के लिए नहीं," वह कंडक्टर को [illegible] कर बोला, "यदि चैकर के लिए [illegible] नहीं है तो वह खड़ा हो जाए. समझे [illegible]

"जी, जनाब."

पहली बार कंडक्टर के मुंह से [illegible] शब्द सुन कर सवारियों के चेहरों [illegible] हर्ष की हलकी सी झलक नजर [illegible] कशमीरी चैकर का सब के सामने अप[illegible] होते देख सवारियों ने संतोष की [illegible] गहरी सांस छोड़ी.

"यदि फिर कभी ऐसी हरकत [illegible] तो तुम्हारे लिए अच्छा न होगा."

"जी, साहब, इस बार क्षमा [illegible] दीजिए. फिर कभी ऐसा न होगा."

"ड्राइवर, तुम भी सुन लो."

"जी, जनाब," ड्राइवर खिसि[illegible] सा हो कर बोला.

पुलिस इंस्पेक्टर उतर गए [illegible] बस चल दी.

ड्राइवर, कंडक्टर और चैकर [illegible] ऐसा सम्मान होने से सब सवारियां प्र[illegible] थीं ओर वे तीनों जलेभुने बैठे थे. [illegible] स्टाप पर पांचछः सवारियां उतर [illegible] कोई नई सवारी नहीं बैठाई गई. [illegible] फिर चली. मार्ग में तीनचार स्थानों [illegible] मुसाफिरों ने बस को रोकने के लिए [illegible] दिखाया, लेकिन कंडक्टर ने उन के [illegible] की कोई परवा न की.

परंतु अब स्थिति में परिवर्तन [illegible] चुका था. मुसाफिरों का साहस बढ़ [illegible] था. अंगरेजी सूट में सुसज्जित, परंतु [illegible] उस का कुप्रभाव दूर करने के लिए [illegible] पर पगड़ी बांधे हुए, एक सज्जन [illegible] विभाजन से पूर्व पिंडी में नायब तह[illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुरुष की पोषाक ही उसके चरित्र की अभिव्यक्ति है.

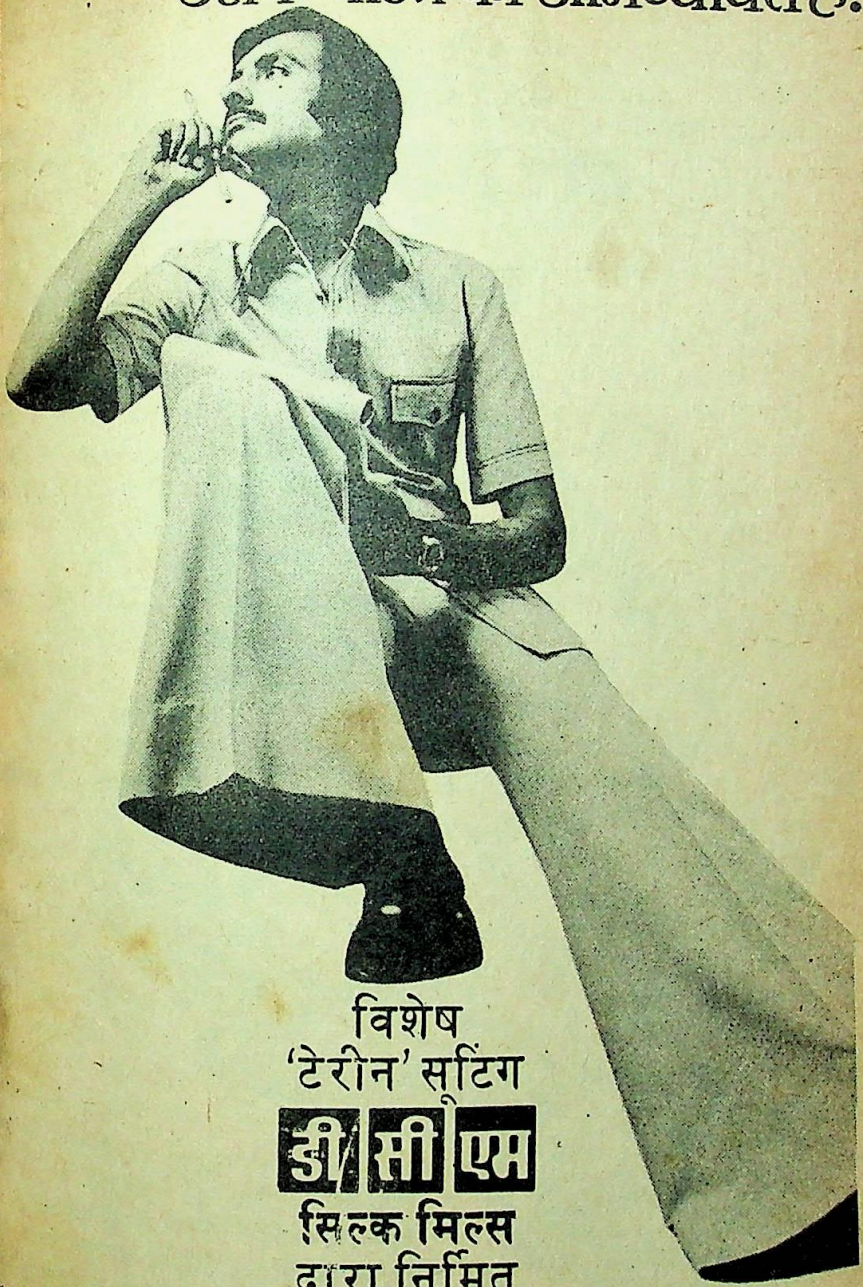

विशेष
'टेरीन' सूटिंग

डी सी एम

सिल्क मिल्स
द्वारा निर्मित

चैक. धारियां. रंग.
बुनावटें. आज के नवयुवक
की सज्जा के लिए
डी सी एम के सुझाव.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रंगरूप जिससे बचपन झांके

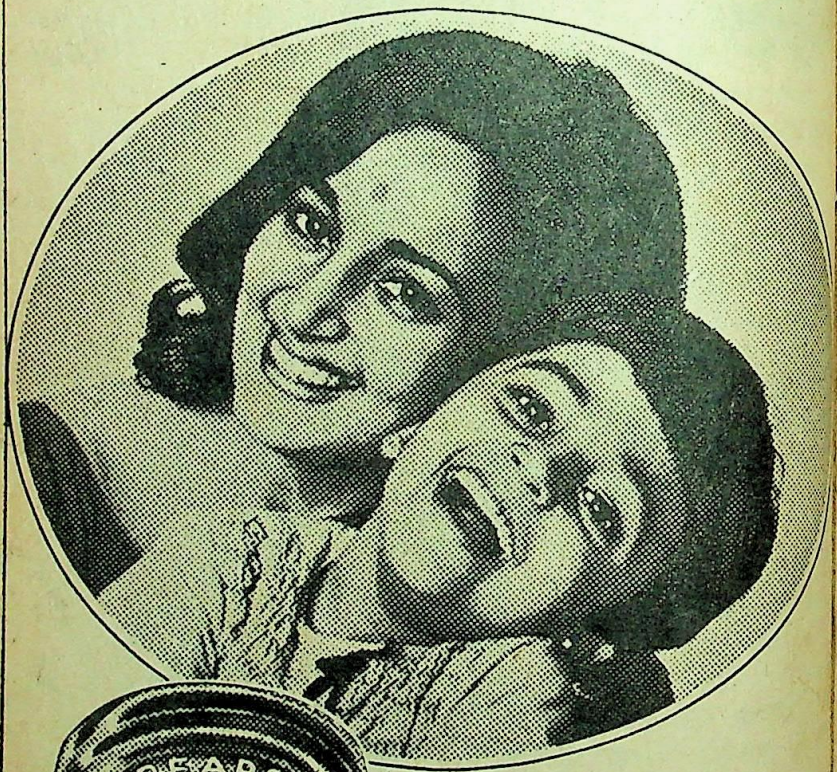

पियर्स—असली ग्लिसरीन साबुन

अपनी त्वचा को पियर्स की कोमल देखभाल में रखिए. हर पारदर्शक टिकिया—साबुन बनाने में सौ बरसों के अनुभव का सबूत. पियर्स कोमल है—और कितना शुद्ध, आप वास्तव में इसके आरपार देख सकते हैं.

पियर्स से आप की त्वचा में भोला लड़कपन झलकता है

हिन्दुस्तान लीवर का उत्पाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

लिटास-PS.56-77

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दार थे और अब सवारियों को सवारी, अचानक बोल उठे, "मिस्टर ड्राइवर, गाड़ी रोको."

'क्या बात है?" ड्राइवर ने पीछे मुड़ कर देखे बिना गाड़ी को पूर्ववत तेज भगाते हुए पूछा.

"तुम पहले गाड़ी रोको. तुम नहीं जानते मैं डिप्टी कलक्टर रह चुका हूं."

ड्राइवर ने रफ्तार धीमी कर बस को रोक लिया. जिंदा लाश लालाजी डिप्टी कलक्टर का नाम सुन कर कांपने लगे. शेष मुसाफिर तन कर अपनीअपनी जगह पर बैठ गए.

"क्या बात है?" ड्राइवर ने पूछा.

"बस को पीछे लौटा कर सड़क पर खड़ी सवारियों को बैठाओ."

"वे तो बहुत पीछे रह गईं."

"कोई बात नहीं," उस ने गंभीरता से कहा.

"देर हो जाएगी. हम पहले ही बहुत लेट हैं."

"कोई हर्ज नहीं."

"हर्ज कैसे नहीं?" कंडक्टर गुस्से से बोला.

"तुम्हें लौटानी पड़ेगी, नहीं तो अगले स्टाप पर चल कर पता चल जाएगा. सरकारी गाड़ी है, किसी के घर की नहीं. लोगों की है, जनता की है. तुम समझते हो, मैं कुछ नहीं जानता. घास नहीं काटी, कलक्टरी की है, मिस्टर, कलक्टरी."

"आप का मतलब डिप्टी कलक्टर से है?" मैं ने उस की भूल सुधारते हुए कहा.

"एक ही बात है. मैं कई मास आफीशिएटिंग कलक्टर भी रहा. लेकिन डिप्टी कलक्टरी क्या कम होती है?" उन्होंने गंभीरता से कहा.

सब लोग सिर हिला कर उन की बात का अनुमोदन कर रहे थे.

कंडक्टर क्रोध में भर कर बोला, "अच्छा, लौटाओ. हमें क्या? अगर देर

न ड्राइवर था, न कंडक्टर...मैं कभी इधर देखता, कभी उधर, लेकिन मेरा ट्रंक कहीं नजर नहीं आया...अचानक बस के टिकट पर देखा तो दिमाग ही चकरा उठा...

हो गई, तो आप लोगों का ही नुकसान होगा."

ड्राइवर ने विवश हो कर बस को वापस लौटाया और सड़क पर खड़ी सवारियों को बैठा कर बस को भगाया. सब सवारियां सीटों पर बैठीं थी और दो की जगह अब भी खाली थी. ड्राइवर गुस्से से बस को भगाए लिए जा रहा था, जैसे उसे उलटा कर ही दम लेगा. अगले स्टाप पर बस कुछ देर के लिए रुकी. जब मैं पानी पी कर लौटा तो अपनी सीट पर एक छोटे बच्चे को खेलते हुए देखा. साथ वाली सीट पर घूंघट निकाले एक स्त्री आ बैठी थी. बच्चा मेरी सीट पर खड़ा था और पिछली सीट पर अपनी मां की गोद में बैठे हुए दूसरे बच्चे से खेल रहा था. मैंने सोचा कि मुझे अपनी सीट के पास खड़ा देख कर उस की मां उसे गोद में ले लेगी, लेकिन वह टस से मस न हुई.

मैं उसी सीट पर आगे को हो कर बैठ गया ताकि बच्चा खेलता रहे. परंतु धैर्य की कोई सीमा भी होती है. चाहे आप के बगल में घूंघट वाली स्त्री ही क्यों न बैठी हो. पंदरह मिनट बाद यह सीमा पहुंच गई और दिल को कड़ा कर के उस स्त्री से मैं ने कहा, "बच्चे को गोद में ले लीजिए."

जिंदा लाश लालाजी और भूतपूर्व नायब तहसीलदार मेरी ओर देख रहे थे. परंतु मेरे प्रश्न के उत्तर में उस स्त्री ने गरदन को बल दे कर घूंघट को दोनों हाथों से जरा ऊपर उठा कर मेरी ओर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुसकान भरी दृष्टि से देखा. शायद किसी अन्य समय मेरी दशा कुछ और होती, परंतु इस समय में लज्जा से पानीपानी हो रहा था. उस स्त्री की आंखें मुझ से कह रही थीं, 'मूर्ख, मेरी शक्ल देख कर यह अनुमान नहीं लगा सकते कि मैं नवविवाहिता हूं? यह दो वर्ष का बच्चा मेरा कैसे हो सकता है.'

परंतु मैं उस समय उस की मनोवैज्ञानिक परिस्थिति का विश्लेषण करने नहीं बैठा था. उस की मुसकराहट के बदले में मुसकरा नहीं सकता था, क्योंकि मुझे अपने सिर के बाल बहुत प्यारे थे. चाहे वे तेजी से झड़ ही क्यों न रहे हों. दूसरे, मैं ने पूरी सीट के पैसे दिए थे. "बच्चे को अपनी गोद में ले लीजिए." यह सोच कर कि शायद वह मेरी बात नहीं समझी, मैं ने फिर उस स्त्री से कहा.

"दूसरे का बच्चा मैं कैसे ले लूं?" वह लज्जा से गरदन दोहरी करती हुई बोली. शायद वह समझी कि बच्चा मेरा है.

"ओह!" अब लज्जित होने की मेरी बारी थी. मैं ने पिछली सीट वाली स्त्री से वही प्रश्न किया.

वह मेरी ओर देख कर बोली, "बाबूजी, एक ही उमर के मेरे दो बच्चे कैसे हो सकते हैं?"

"जुड़वा भी तो होते हैं," मोटे लाला बोले.

"जुड़वां होंगे तेरे! तेरी मां के! तेरी बहन के!" वह स्त्री एकदम उत्तेजित हो कर बोली. "मुस्टंडा कहीं का, तुझे शरम नहीं आती."

लेकिन यह शरम का नहीं, काम का समय था—बच्चे की मां को ढूंढ़ने का काम.

"यह किस का बच्चा है?" मैं ने चिल्ला कर पूछा.

"अपने बाप का...और किस का?"

"लेकिन किस बाप का?"

कोई उत्तर न मिला.

"कौन सा बच्चा?" फौज का एक सिपाही, जैसे नींद से जाग कर और अपनी सीट से जरा उठ कर बोला.

"अरे, यह तो जमादार साहब का है जो अभी टांडा में उतरे थे."

"वही जो आधा दरजन बच्चे लिए बैठे थे?" कंडक्टर ने पूछा.

"हां, हां, वही."

लालाजी बोले, "लोगों को ट्रंक और बिस्तर भूलते तो सुना था, लेकिन बच्चे भूलने की तो यह बिलकुल अनोखी बात है."

"यदि बच्चे अधिक हों तो कैसे न भूलें. अंगरेजी लिबास पहने एक नवयुवक बोला.

"या अल्लाह!" एक कश्मीरी मोटर की छत की ओर मुंह उठा कर कहने लगा.

"वाह गुरु!" एक सरदारजी के मुंह से निकला.

"हरे कृष्ण! हरे कृष्ण!" मोटे लालाजी कहने लगे.

अगले स्टाप पर कंडक्टर ने उस बच्चे को एक दुकानदार के हवाले किया कि पता कर के उसे उस के पिता के पास भिजवा दे.

बस रुकी तो मुझे फिर सामान की चिंता हुई. छत पर जा कर सामान को देखा. ट्रंक तो था, परंतु बिस्तर नहीं था. मेरे होश गुम हो गए, परंतु कंडक्टर से कैसे कहूं? सारे सामान को उलटपलट कर देखा. एक गंदे काले बिस्तर में, जो एक ओर से काफी फटा हुआ था, मुझे अपना कंबल नजर आया. हो सकता है कि वैसा ही कंबल किसी दूसरे का हो. परंतु उस पर मेरा निशान भी था. अब चोरी पकड़ी गई. स्पष्ट था कि किसी ने मेरे बिस्तर का सामान अपने बिस्तर में डाल लिया है और मेरा बिलकुल नया होलडाल ले उड़ा है. परंतु मैं ने भी खूब चोरी पकड़ी. कंडक्टर को आवाज दे कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जवानी आई तो मुहांसे भी आए,
मुहांसों को फैलने से रोके,
मिटाए, चेहरे को सुन्दर बनाए

एस्कमेल*

जवानी में शरीर से अनावश्यक चिकनाई पैदा होती है जिसके कारण मुहांसों के कीटाणु फैलते हैं. एस्कमेल में दो तेज़ असर औषधियां हैं जो मुहांसों को सुखाकर ख़त्म कर देती हैं.

एस्कमेल का मुहांसों पर असर :

तोड़ने या फटने से मुहांसे फैलते हैं. इन्हें हाथ नहीं लगाना चाहिए.

साफ़ और गीली रूई पर एस्कमेल लेकर उसे सारे चेहरे पर लगाइए.

एस्कमेल त्वचा की चिकनाई दूर करती है और मुहांसों का नाश करती है.

दुनिया भर में डाक्टर मुहांसों के लिए एस्कमेल रेकामेंड करते हैं.

SKF

स्मिथ क्लाईन एंड फ्रेंच का उत्पादन एस्कमेल* यह रजिस्टर्ड ट्रेडमार्क है.

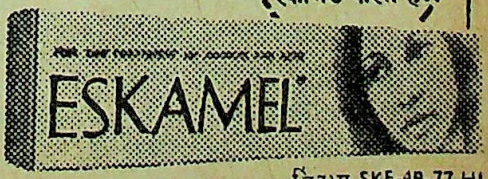

लिटास-SKF-4B-77 HI

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं ने छत पर बुलाया. वह बड़बड़ाता हुआ आया और बोला, "बाबूजी, क्या बात है? आप लोग खामख्वाह देर कर रहे हैं."

"मेरा बिस्तर चोरी हो गया है और उस का सामान इस बिस्तर में है."

कंडक्टर ने बिस्तर खोला. उस में मेरा सब सामान था, मैं हैरान भी हुआ और लज्जित भी. परंतु मेरा भी क्या दोष था? कंडक्टर ने मेरी ओर ऐसे देखा जैसे मैं ने खून कर दिया हो. दंड देने के विचार से उस ने घंटी के बजाए चिल्ला कर कहा, "चलो!" लेकिन दूसरे ही क्षण न जाने उसे मुझ पर क्यों दया आ गई. बोला, "रोक कर."

इस प्रकार हर दसपंदरह मिनट बाद रुकतीरुकती बस अपनी मंजिल पर पहुंची. उस के रुकते ही ड्राइवर और कंडक्टर उतर कर एक क्षण में अदृश्य हो गए. अब इन की जिम्मेदारी समाप्त हो गई थी और उन की जगह कुलियों की एक सेना ने ले ली थी. कुछ कुली बस की छत पर चढ़ गए और सामान नीचे फेंकने लगे. दूसरे उस सामान को दबोचने लगे. ऐसा लगता था कोई कानून नहीं, कोई प्रबंध नहीं.

मैं घबरा कर बस से उतरा. वह गिरा मेरा बिस्तर, वह रहा ट्रंक. अटैची केस कहीं नजर ही नहीं आ रहा. मैं ने बस का चक्कर काटा, वह रहा बाईं ओर. फिर दूसरा चक्कर. फिर पूरा उलटा चक्कर. परंतु ट्रंक कहां गया?

मैं ने कुलियों से पूछा. वे क्या जाने. सवारियों से पूछा. उन्हें क्या पता. तमाशबीनों से पूछा. कोई उत्तर नहीं मिला. अब किस से पूछूं? न ड्राइवर का पता, न कंडक्टर का. सहसा मुझे अपनी छड़ी और छतरी का ध्यान आया, जो अभीअभी गाड़ी के अंदर पड़ी थीं. घबराया हुआ फिर बस के अंदर गया, परंतु वे भी गायब थीं. कहूं तो किस से. हाथ जेब में टिकट पर जा पड़ा. उसे निकाल कर पढ़ा, लिखा था: 'सामान की जिम्मेदारी सवारी की है.' ●

पासा पलट गया

मेरे बड़े भाई उन दिनों विश्वविद्या- लय के छात्र थे. एक दिन जब एक न शिक्षक कक्षा में आए तो उपस्थिति ले समय एक मनचले छात्र ने अपना नाम आने पर खड़े हो कर कहा, "यस मैडम."

सुनते ही कक्षा में हंसी गूंजने लगी किंतु अध्यापक महोदय ने बड़ी शालीनत से पैन रोक कर कहा, "ये इश्क मोहब्ब की तासीर कोई देखे, अल्लाह भी मज को लैला नजर आता है."

अब तो पूरी कक्षा ठहाकों से गूं उठी. बेचारे मजनू की हालत तो सचमु में दर्शनीय थी. —कांती शुक्ला, लखनऊ

✦

मेरा चचेरा भाई अरुण हाजिर जवाबी के कारण परिवार में बड़ा लोक प्रिय है. हर किसी को उस की बात क तुरंत करारा उत्तर देना उस की आद है. परंतु एक बार उसे भी मुंह की खाना पड़ी.

मेरी फुफेरी बहन की शादी थी बरात अंदर खाना खा रही थी. अरुण हम लोग इंतजाम देख रहे थे.

खाना खाने के बाद जीजाजी बोले "साले साहब, इतनी खातिर कर रहे हैं कुछ पानीवानी भी पिलाओगे या नहीं?"

आदत से लाचार अरुण ने तुर जवाब दिया, "जरूर, हम ने तो बड़ोंबड़ों को पानी पिलाया है, जनाब. लीजि आप को भी पिलाए देते हैं."

इस पर जीजाजी ने जवाब दिया "हम ने कब कहा कि तुम ने बड़ोंबड़ों पानी नहीं पिलाया है, पर, साले साहब हमारे सामने भी अच्छेअच्छे पानी भरे हैं, पिलाने की बात तो बाद में है पहले पानी भरो तो सही."

उस के बाद तो अरुण कट कर गया. —संतोषकुमार वर्मा, नई दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेख • अभिषेक

हृषिकेश मुखर्जी

व्यावसायिक फिल्मों का सफल निर्देशक

हृषिकेश मुखर्जी का नाम आज के व्यावसायिक फिल्मों के निर्देशकों में प्रमुख है. बड़े सितारों के साथ अच्छी फिल्में बना कर सफलता पाना हृषि दा के लिए एक आम बात हो गई है. फिल्में सभी बनाते हैं, लेकिन विषय के ज्ञान के साथसाथ दर्शकों की रुचि और फिल्मों के प्रति उन के मनोविज्ञान का ज्ञान बहुत कम लोगों को है. हृषि दा उन चंद निर्देशकों में से हैं, जो उस मनोविज्ञान को जानते हैं.

फिल्म में निर्देशन ही सब कुछ नहीं है. संपादन, पटकथा, संगीत से ले कर तकनीकी ज्ञान तक निर्देशक के लिए बहुत आवश्यक है. हृषिकेश ने अपना फिल्मी जीवन का प्रारंभ बिमल राय के साथ संपादन से किया, लेकिन फ़िल्म के अन्य पक्षों की ओर भी उन का ध्यान था.

संपादन से निर्देशन की ओर उन का प्रथम प्रयास रहा दिलीप कुमार, मीनाकुमारी अभिनीत 'मुसाफिर'. इस फिल्म में जीवन के कड़वेमीठे घूंट से भरे एक ऐसे व्यक्ति का यथार्थ चरित्र चित्रण है जो उसे जन्म से यौवन, विवाह, फिर मृत्यु की ओर ले जाता है.

आज से 10 वर्ष पहले फिल्मों में इस तरह का प्रयोगात्मक प्रयास साधारण बात नहीं थी, एक बहुत ही जोखिम का काम था. आज भी वह 'मुसाफिर' को अपनी श्रेष्ठ कलाकृति मानते हैं.

'अनाड़ी' में नारी के सहज स्नेह और प्यार का जो मार्मिक चित्रण किया गया है वह अद्वितीय है. 'अनुराधा' में त्यागमयी करुणा की कहानी कही गई है, जो अपने एकमात्र प्रिय शौक संगीत को छोड़ कर अपने पति को प्रसन्न करने के लिए अकेलेपन से जूझती हुई भी तनिक उफ नहीं करती है. 'अनुराधा' की विशेषताओं ने ही उसे वर्ष का सर्वश्रेष्ठ चित्र का राष्ट्रपति पुरस्कार दिलवाया.

'बावर्ची' ने, जिस में नायक ने कई परिवारों को टूटने से बचाया है, सब को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक नया सबक दिया है.

'आनंद' में कैंसर के रोगी की कहानी है जो यह जानते हुए कि कुछ महीनों बाद उस की मृत्यु निश्चित है, फिर भी लोगों को खुशियां देता रहता है. इस फिल्म में वास्तविकता का स्पर्श इतना अधिक है कि जिस ने भी फिल्म देखी है, भूल नहीं पाएगा.

नए कथानकों पर फिल्म

इन फिल्मों के बाद एक और फिल्म है 'नमकहराम' जो मालिक और मजदूर के बीच संघर्ष की कहानी पर आधारित है.

'अनुपमा' में एक ऐसी लड़की की कहानी फिल्माई गई है, जिस का पिता, उसे अपनी पत्नी की मृत्यु का कारण समझ कर, उस से नफरत करता है और उसे एक अनजानी कैद में जकड़े रहता है. अधिकांशतः संवाद की जगह शर्मिला की आंखों से अभिनय कराया गया है.

'सत्यकाम' वातावरण के साथ समझौता न करने वाले युवक (धर्मेंद्र) की कहानी है, जो अंत तक सत्य पर चलता है.

फिल्म माध्यम के विषय में उन का विचार है, "यदि एक कवि या शायर अपनी कविता या शायरी सुनाता है तो अधिक से अधिक हजार या दो हजार लोग सुनते हैं और समझते हैं. कोई कहानी या उपन्यास सिर्फ सीमित पाठक ही पढ़ पाते हैं. लेकिन फिल्म एक ऐसा माध्यम है, जिसे हजारों लाखों लोग देखते हैं और प्रभावित भी ज्यादा होते हैं. इसी लिए मैं ने फिल्म का माध्यम अपनाया, जिस से मैं अधिक से अधिक लोगों तक अपना कोई संदेश और अपनी कोई बात पहुंचा सकता हूं."

कुछ महीनों पहले हृषिकेश की तीन फिल्में प्रदर्शित हुईं—'चुपकेचुपके,' 'मिली' और 'चैताली'. 'चुपकेचुपके' एक हास्य फिल्म थी. प्रायः वह अभी तक गंभीर फिल्में (बीवी और मकान को छोड़ कर) बनाते आए हैं. 'चुपकेचुपके'

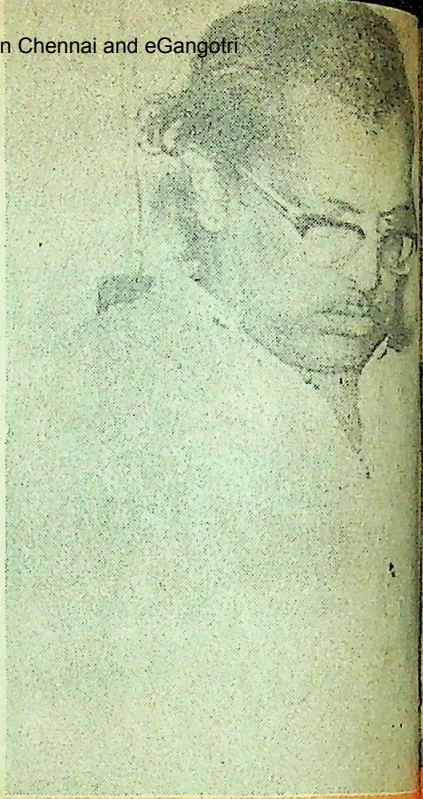

फिल्म निर्देशक हृषिकेश मुखर्जी

में एक ताजगी है और यह फिल्म शुरू से अंत तक दर्शकों को हंसाती है, लेकिन उस हंसी में एक मादकता है, एक खुलापन है. संवादों और भावाभिव्यक्ति की सहायता से हंसाने की ऐसी सामग्री बहुत भली है. 'चुपकेचुपके' ने यह साबित कर दिया है कि धर्मेंद्र कामेडी भी कर सकता है.

'मिली' एक गंभीर फिल्म थी, जो 'चुपकेचुपके' के बाद प्रदर्शित हुई. इस फिल्म में यह दिखाया गया है कि एक क्रोधी, दिलजला और मांबाप के स्नेह से वंचित मायूस नायक (अमिताभ) स्वयं में इतना आत्मकेंद्रित है कि इर्दगिर्द की दुनिया का प्रभाव उस पर नहीं पड़ता.

वह अपने दुख में इतना दुखी है कि उसी घुटनभरी जिंदगी में जीना चाहता है. लेकिन एक बार अचानक उस की मुलाकात मिली (जया) नाम की एक लड़की से होती है, वह उस से प्यार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धर्मेंद्र और सायरा के साथ 'चैताली' के सेट पर : कुछ गंभीर मसला है.

कर बैठता है. धीरेधीरे उसे मालूम होता है कि मिली स्वयं एक ऐसे रोग से ग्रस्त है जिस से मृत्यु निश्चित है. मिली स्वयं इस बात को जानती है कि वह बचेगी नहीं, इसलिए वह अपने प्रेमी (अमिताभ) को अपने से दूर रहने को कहती है.

लेकिन नायक का पवित्र प्रेम और उस का जीवन वही मिली है. यहां नायक एक बदमिजाजी, क्रोधी और सख्त इनसान से, नम्र, उदार और व्यवहारकुशल युवक बन कर, मिली के सारे दुख ले लेना चाहता है. वह अपने सभी दुख भूल जाता है और मिली के दुखों को बांट कर जीने की हिम्मत देता है. वह मिली से विवाह कर के दूर चला जाता है.

'चैताली' ने सायरा जैसी ग्लैमरमय अभिनेत्री को एक कलाकार के रूप में मान्यता दिलाई. इस फिल्म को बिमल राय अधूरा छोड़ गए थे. उसी शैली और सूझबूझ से हृषि दा ने 'चैताली' का निर्माण करने की कोशिश की. यह एक गंभीर, किंतु भावुकता से भरी फिल्म थी.

'चैताली' की चैती—एक ऐसी नारी की कहानी है जो होश संभालते ही लोगों को धोखा देती है, घरों में घुस कर चोरी करती है. चोरी करना उस का पेशा हो गया था.

बाद में चल कर वही चैती सुधर जाती है, उस का विवेक जाग उठता है और प्रेम ने उस में परिवर्तन ला दिया. उस का चरित्र अचानक बहुत ऊंचा उठ गया और वह इतनी त्यागमयी और सुशील युवती हो गई कि कोपभाजन के स्थान पर वह लोगों की स्नेहभाजन की पात्र हो गई. लेकिन 'चैताली' असफल रही.

हृषिकेश मुखर्जी के निर्देशन में बनने वाली फिल्मों में से 'नौकरी,' 'अर्जुन पंडित' और 'कोतवाल साहब' शीघ्र ही प्रदर्शित होने वाली हैं. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"नस पर नस चढ़ना
क्रिकेट के पेशेवर खिलाड़ियों
के लिए भारी मुसीबत है,"

क्लाइव लॉयड कहते हैं,

"आयोडेक्स
से मैं चुस्त
दुरुस्त
रहता हूं"

आयोडेक्स-पीड़ा हरे, अच्छा करे

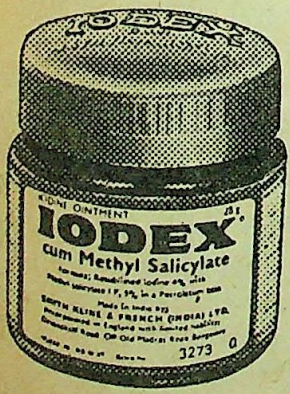

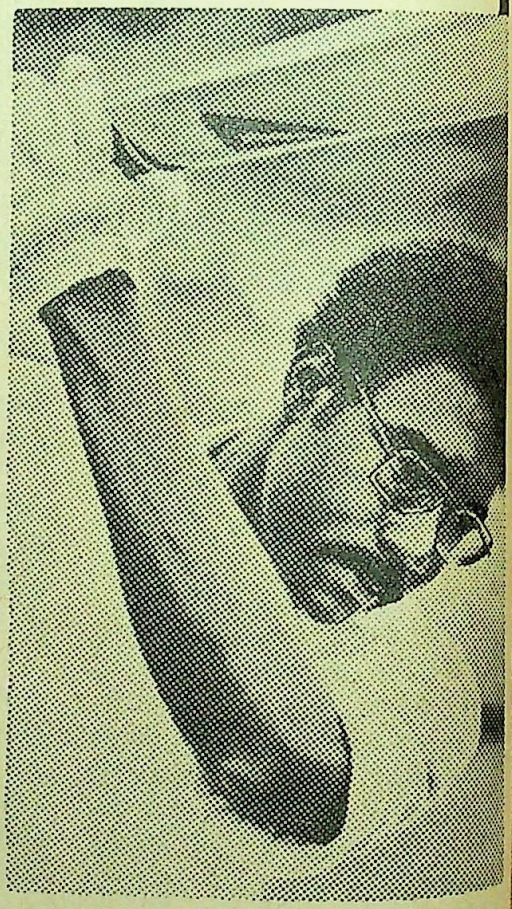

आयोडेक्स मलिए-काम पर चलिए

लिंटास-IODEX. 6-75 HI

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दीर्घायु का रहस्य

रूसी वैज्ञानिकों व. व. फ्रोलकिस तथा व. व. बेजरुकोव ने चूहों की आयु 30-40 प्रतिशत बढ़ाने में सफलता पाई है. उन्होंने दावे के साथ कहा है कि अच्छा, मनभावन परंतु मात्रा में कम खाना दीर्घायु का मूल रहस्य है. इस के विपरीत अधिक खाना तथा उस के कारण मोटापा मनुष्य को जल्दी बूढ़ा कर देते हैं, अंततः उस की आयु भी घटा देते हैं. चालीस वर्ष की आयु के बाद अधिक कैलोरी खाद्य हृदय तथा रक्त संचार प्रणाली को खराब कर देते हैं, खून जमने के तत्त्वों को बढ़ाते हैं तथा अनावश्यक चर्बी चढ़ाते हैं, जो मौत को निमंत्रण है. बिना चिकनाई दूध तथा शाकाहारी भोजन आयु को बढ़ाने में सहायक होते हैं. अधिक चिकनाई तथा मांसाहार उमर को कम करते हैं.

राष्ट्रीय जीवाश्म उद्यान

भारतीय भूविज्ञान सर्वेक्षण संस्था जगहजगह पर राष्ट्रीय जीवाश्म उद्यान स्थापित करेगी, जिस में लाखोंकरोड़ों वर्ष पुराने जीवजंतुओं व वनस्पतियों के अवशेष रखे जाएंगे तथा उन के आधार पर उन के माडल बना कर यह दर्शाया जाएगा कि उस युग के जीव कैसे थे. पांडीचेरी के निकट तिरुवक्कराई में दो करोड़ वर्ष पुराने पेड़ों के नमूने बनाए गए हैं. इस संस्था ने तीन अरब साल पुराने जीवाश्मों का लेखाजोखा किया है. कोयला खदानों के जीवाश्म लगभग दो अरब साल पुराने होते हैं.

हाल ही में इस संस्था ने हैदराबाद के नेहरू पार्क को एक प्रागैतिहासिक सरीसृप का माडल तैयार कर के दिया. इस प्रकार के नमूने बच्चों के लिए बड़े आकर्षक एवं ज्ञानवर्धक होते हैं.

तिरुवक्कराई उद्यान प्रागैतिहासिक पेड़ों के तनों के अवशेषों से भरा हुआ है. पहलेपहल लोग इन अवशेषों के पास जाने से डरते थे क्योंकि उन्हें दंतकथाओं के आधार पर बताया गया था कि ये राक्षसों की हड्डियां और अस्थिपंजर हैं. एक अवशेष के बारे में तो प्रचलित था कि यह राक्षस भगवान विष्णु द्वारा मारा गया था. एक अवशेष 100 फुट लंबा तथा पांच फुट व्यास का है. अनुमान है कि ये अवशेष दो अरब वर्ष पुराने पेड़ों के हैं. अवशेषों के अध्ययन से पता चलता है कि दो अरब वर्ष पहले यहां की जलवायु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उमस वाली थी, जो कालांतर में सूखी हो गई है. पुराने जमाने में यहां सदाबहार हरेभरे जंगल थे, जैसे भारत के पूर्वी क्षेत्रों में अभी भी हैं.

भारतरूस सहयोग

दिल्ली दूरदर्शन पर एक साक्षात्कार के दौरान रूसी इंटरकासमास परिषद के उप प्रधान श्री न. स. नोविकोव ने 2 दिसंबर, 1975 को बताया कि भविष्य में रूस के मंगल तथा शुक्र ग्रह पर जाने वाले अंतरिक्षयान भारतीय उपकरणों से लैस होंगे.

भारत के दूसरे उपग्रह की क्षमता भी पहले उपग्रह आर्यभट से अधिक होगी. दूसरा उपग्रह 35 के स्थान पर 125 आदेश ग्रहण कर सकेगा. आर्यभट 2400 संदेशकण प्रति सेकंड भेजता है जब कि दूसरा उपग्रह 1,00,000 संदेशकण प्रति सेकंड भेजेगा. रूस दूसरे उपग्रह के लिए रासायनिक तथा सौर बैटरी, टेपरिकार्डर तथा घूर्णन संयत्र प्रदान करेगा. बाकी प्रारूप, संरचना और बनावट भारतीय होगी. इस उपग्रह द्वारा हिमालय पर्वत, मैदानी क्षेत्र तथा समुद्र का सर्वेक्षण संभव होगा. मौसम संबंधी जानकारी भी मिल पाएगी.

सुरक्षा के लिए भी उपग्रहों का बहुत महत्त्व होता है. याद कीजिए वे दिन जब अमरीकी उपग्रह द्वारा क्यूबा स्थित रूसी प्रक्षेपणास्त्रों का पता ही नहीं लगा, बल्कि चित्र भी प्राप्त हुए और कैनेडी ने ख्रुश्चेव से इन्हें हटाने के लिए कहा. समय रहते विश्व युद्ध तब टल गया था. इसी प्रकार हमारे भू उपग्रह हमारी सीमाओं पर पड़ोसी देशों की गतिविधियों पर नजर रख सकते हैं. चीन का इरादा तिब्बत पठार से भारत के विभिन्न नगरों तथा सामरिक महत्त्व के स्थानों जैसे इसपात या तेल संयंत्रों पर प्रक्षेपणास्त्रों द्वारा निशाना साधना है. यदि हमें इन ठिकानों की सही जानकारी हो तो हम भविष्य में उपग्रह द्वारा सीमा के उस पार टेलि-विजन कैमरों द्वारा नजर रख सकते हैं. कभीकभी आत्मरक्षा में वार भी करना पड़ता है. तब यही उपग्रह हमारी आंखों का काम करेंगे.

हाथी को पेट दर्द

उड़ीसा से एक बड़ा मनोरंजक तथा साथ ही गंभीर समाचार, एक मेडिकल रिप्रेजेंटेटिव (दवाई बिक्री एजेंट) द्वारा मिला. उस के अनुसार बाजार से अचानक उदर शूल की सभी दवाइयां एक शहर से गायब हो गईं. बाद में पता चला कि सरकस के एक हाथी को पेट में ऐसा दर्द हुआ कि डाक्टर ने एक बाक्स दिन में तीन बार लिख दिया. इस प्रकार करीब 1500 गोलियां प्रतिदिन उस के उपचार में लग जातीं. ठीक ही तो है, जितना बड़ा जीव, उतनी अधिक दवाई की मात्रा.

चूहा बागान

सरकारी आदेश पर कलकत्ता में कर्जन पार्क स्थित चूहा बागान पर म्यूनिसिपल कमेटी ने धावा बोल कर सारी की सारी जनसंख्या को नष्ट कर दिया और उन के घरघरौंदे बंद कर दिए. कई वर्षों से यह कलकत्ता का आकर्षक मनोरंजन केंद्र था और यहां कई विदेशी पर्यटक भी आया करते थे. लोग इन्हें चने फेंक कर लड़वाते और मजा लेते.

बहुत से नागरिकों ने इस सामूहिक बीजनाश पर रोष प्रकट किया है. प्रकृति में प्रत्येक जीव का स्थान व उपयोग है. क्या ये चूहे कोई नुकसान कर रहे थे? क्या ये चूहे कोई बीमारी फैला रहे थे? हमारे घर, खेत या गोदाम में अगर चूहे परेशान करें तो उन्हें मारना या भगाना शायद जायज होगा. परंतु कर्जन पार्क के चूहे आखिर हमारा क्या बिगाड़ रहे थे?

—सुरेंद्रमोहन अरोरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिल्म समीक्षा

★★★★अति उत्तम ★★★उत्तम ★★मध्यम ★साधारण ○बेकार

★ कभीकभी

निर्माता : यशराज फिल्म्स प्राइवेट लि.
निर्देशक : यश चोपड़ा
मुख्य कलाकार : अमिताभ बच्चन, वहीदा रहमान, शशि कपूर, राखी, ऋषि कपूर, नीतू सिंह, नसीम, परीक्षित साहनी

व्यावसायिक दृष्टिकोण से बनाई गई फिल्म 'कभीकभी' में निर्माता बाक्स आफिस के फार्मूले जुटाने में इस कदर डूब गया है कि कहानी का उद्देश्य ही ले डूबा है. शुरूशुरू में लगता है कि 'कभी-कभी' कोई गंभीर प्रेम कहानी है लेकिन अंत तक आतेआते स्टंट बन जाती है. अवैध संतान की जिस समस्या को निर्माता उठाना चाहता है वह तो मध्यांतर के बाद ही आती है और पूरी तरह से उभर भी नहीं पाती.

अमित (अमिताभ बच्चन) नाम का शायर पूजा (राखी) से प्रेम करता है, लेकिन पूजा की शादी विजय खन्ना (शशि कपूर) से हो जाती है और अमित की शादी अंजलि (वहीदा रहमान) से होती है, जो विवाहपूर्व एक बच्चे की मां बन चुकी थी. उस बच्ची पिंकी (नीतू सिंह) का पालनपोषण डाक्टर कपूर (परीक्षित साहनी) तथा शोभा (सिम्मी) करते हैं. पिंकी से ही पूजा और विजय का बेटा विक्रम (ऋषि कपूर) प्यार करता है. बाद में इस रहस्य का पता चलता है और अंत में काफी उतारचढ़ाव के बाद अमित पिंकी को अपना लेता है.

यह कहानी एक ऐसे अत्याधुनिक परिवारों की है, जिस में छोटेबड़े के बीच कोई भेदभाव नहीं. बेटा बाप से शराब पीने की मांग कर सकता है, मां से उस के कालिज जीवन के रोमांस के बारे में प्रश्न कर सकता है तथा मां-बाप अपने बच्चों को इश्क लड़ाने और लड़की पटाने के लिए भड़काते हैं. परिवार के सदस्यों के बीच साफगोई जरूरी है, लेकिन वह इस हद तक तो न हो कि समाज पर गलत प्रभाव डाले.

पिंकी, स्वीटी और विक्की के प्रेम का त्रिकोण बना कर निर्माता ने फिल्म में आलिंगनों की भरमार कर दी है. जब भी मौका मिलता है वे चिपक जाते हैं. ऐसा लगता है कि उन के पास और कोई काम ही नहीं है.

शशि कपूर जब भी परदे पर आया है, उस के हाथ में जाम था. उसे एक मस्तमौला के रूप में दिखाने की कोशिश की गई है, लेकिन उस की उछलकूद और हरकतों को देख कर दर्शकों को हंसी आती है. यही हाल बंदरछाप ऋषि कपूर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

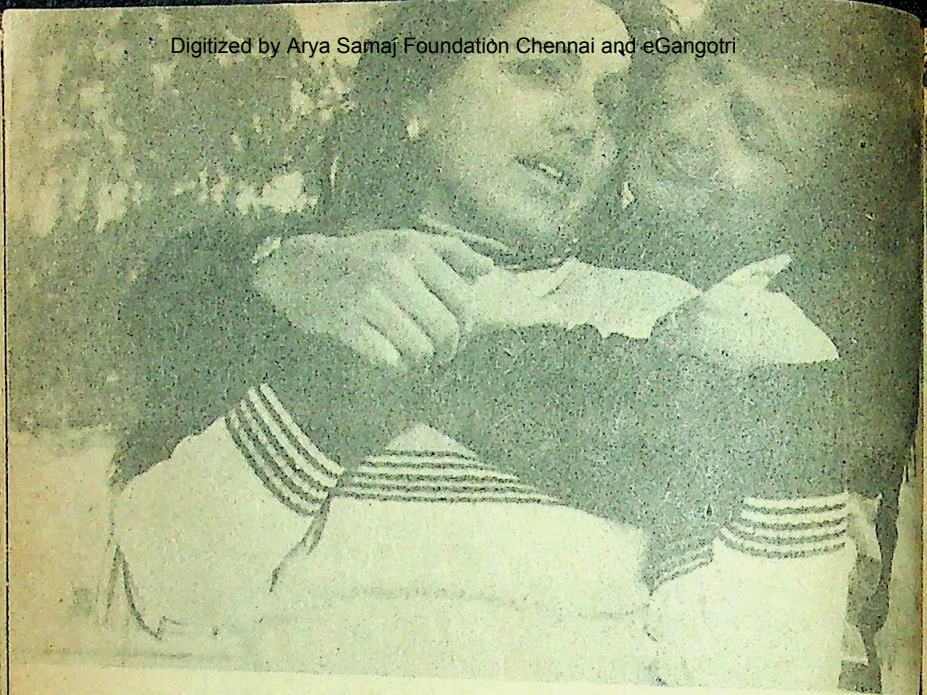

नीतू सिंह और ऋषि कपूर : वही पुरानी उछलकूद और बारबार आलिंगन, 'कभीकभी' में इन सब के अतिरिक्त क्या है?

का भी है. वह बातबात में अपने पिता राज कपूर की नकल उतारने की कोशिश करता है.

अमिताभ बच्चन न शायर ही लगता है, न ठेकेदार. वह अपनी दोनों भूमिकाओं में असफल रहा है. वहीदा रहमान भी अपने पात्र के अनुरूप भावों को अभिव्यक्ति नहीं दे पाई है. उमर के साथ उस की अभिनय क्षमता भी घटती लग रही है. उस के मुकाबले राखी भारी पड़ती है. वह जिस रूप में भी--प्रेमिका, पत्नी और मां--परदे पर आई है, पूरी तरह छा गई है. उस के आगे जो भी पात्र आता है, दब जाता है.

डाक्टर की छोटी सी भूमिका में परीक्षित साहनी ने अच्छा काम किया है. एक अल्हड़ और चंचल लड़की के रूप में नीतू सिंह प्रभावित करती है; लेकिन उसे अपने मोटापे को कम करने की ओर ज्यादा ध्यान देना चाहिए. नई लड़की नसीम की अभिनय क्षमता का सही उपयोग निर्माता नहीं कर सका है.

फिल्म के मुख्य पात्रों का मेकअप उमर के अनुरूप नहीं है. कहानी के अनुसार उन की जितनी आयु होनी चाहिए मेकअप वैसा नहीं है. यह कमी बहुत खटकती है.

सागर सरहदी के संवाद बहुत जानदार हैं. के. जी. का छायांकन बहुत अच्छा है. फिल्म में यदि कोई प्रशंसनीय चीज है तो फिल्म का छायांकन ही है.

फिल्म में शराब का खूब दौरदौरा है. कोई घर का दृश्य नहीं है जिस में शराब की बोतलें कलाकृतियों की तरह सजा कर न रखी गई हों. और उन का उपयोग भी किया गया है. एक तरफ सरकार शराबबंदी की बात करती है, दूसरी तरफ ऐसी फिल्मों पर अपनी 'स्वीकृति' की छाप लगा देती है. यदि फिल्में संसद नहीं होती हों तो कहा जा सकता है कि सरकार क्या करे? पर जब एकएक इंच

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हेलो शैम्पू आपकी तरह के बालों का देखरेख करता है।

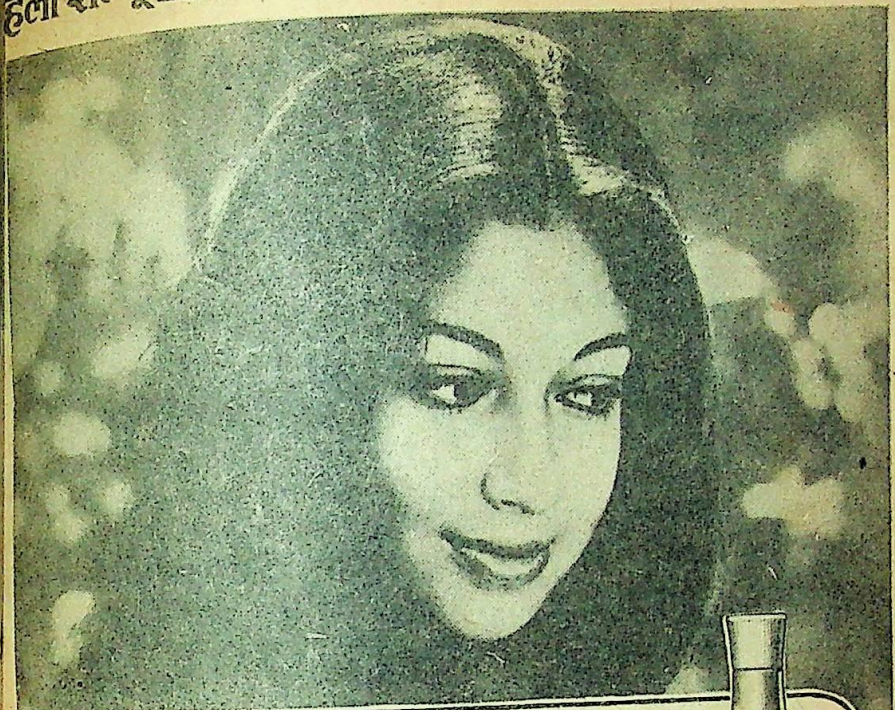

मुलायम, रेशमी बाल– हेलो कॉस्मेटिक शैम्पू से

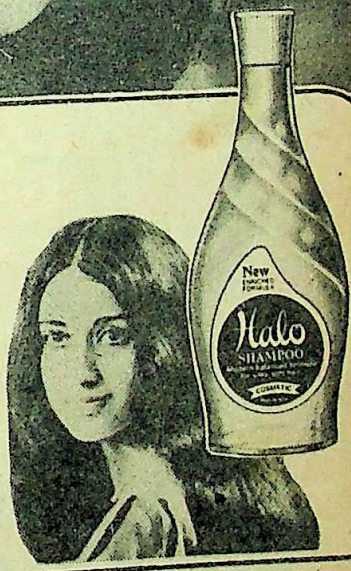

अपने बालों को ऐसी मनमोहक चमक दीजिये जो आज के फैशन की मांग है। हेलो कॉस्मेटिक शैम्पू से। यह अपने विशेष रूप से संतुलित फ़ार्मूले के कारण आपके बालों की वास्तविक रेशमी मुलायमियत फिर से लौटा देता है।

हेलो की देखरेख—
बालों के स्वाभाविक स्वास्थ्य के लिये

हेलो एग शैम्पू : अपने बालों को स्वस्थ, आकर्षक और लचीले बनाइये—एग प्रोटीन से भरपूर फ़ार्मूले से।

हेलो लेमन-फ़्रेश शैम्पू : आपके तेलिया बालों को साफ़ करके उनमें स्वाभाविक चमक भर देता है।

हेलो कॉन्सेन्ट्रेट शैम्पू : थोड़ा-सा ही लगाने से ढेरों झाग निकलता है जो आपके बालों को मुलायम और संवारने योग्य बनाता है।

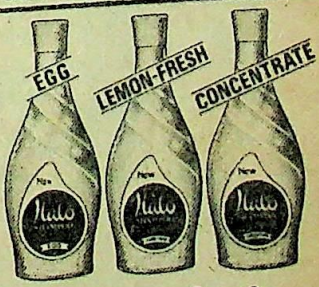

सिर्फ़ हेलो शैम्पुओं में ही पूर्णरूप से संतुलित फ़ार्मूला है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस बार गर्मी के मौसम में आपके बच्चे को घमौरी कहाँ निकलेगी ?

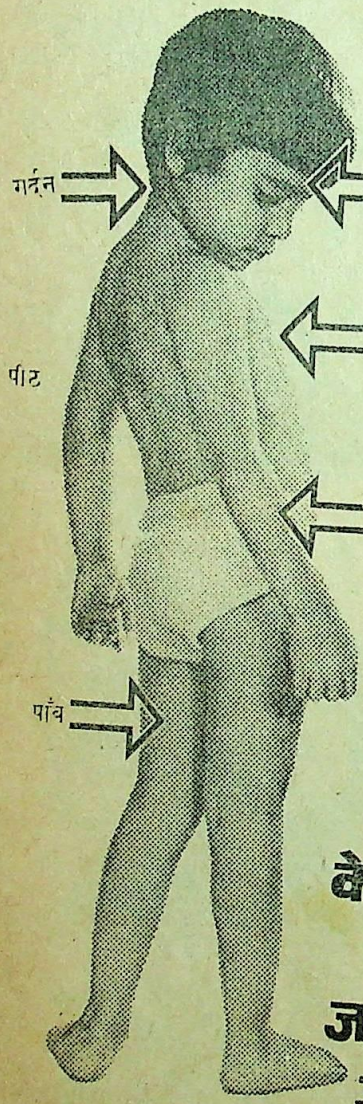

जहाँ भी घमौरी निकले तुरंत जॉन्सन्स प्रिकली हीट पाउडर से दूर कीजिये। केवल जॉन्सन्स प्रिकली हीट पाउडर ही एक ऐसे प्रमाणित औषधियुक्त फॉर्मूलेवाला है जो ३ तरह से अपना करता है :

- पसीना सोख लेता है, त्वचा छिद्रों को बंद नहीं होने देता।
- बैक्टेरिया का जमाव रोकता है।
- आराम और शीतलता देता है, तुरंत अच्छा कर देता है।

नहाने के बाद और सोने के समय पूरी तरह जॉन्सन्स प्रिकली हीट पाउडर छिड़किये। घमौरी से तुरंत आराम दिलाने के लिए माताओं का विश्वसनीय केवल यही एक औषधियुक्त पाउडर है।

चंदन की सुगंध में भी मिलता है

केवल जॉन्सन्स* प्रिकली हीट पाउडर जलन और चुभन से जल्दी आराम देता है।

OBM-431 5/R HIN

Johnson & Johnson*

Trademark © J&J 75

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरकारी अधिकारी जांच कर पास करते हैं तो इस प्रकार के दृश्यों को देख कर यही समझा जा सकता है कि सरकार इन का समर्थन करती है.

○ अपने दुश्मन

निर्माता : जीतेंद्र एंटरप्राइजेज
निर्देशक : कैलाश भंडारी
मुख्य कलाकार : रीना राय, नरेंद्र, धर्मेंद्र, संजीवकुमार, राकेश पांडे, देवकुमार, इम्तियाज, शमीम, राजेंद्र हकसर, मोहन चोटी

एक गिरोह का नेता हमारे देश के दूसरे देश के साथ हुए समझौते की फोटो प्राप्त करना चाहता है. सिंह (राकेश पांडे) की सहायता से रंजना (शमीम) यह फोटो हासिल कर के लिपस्टिक में छिपा देती है और ब्रजेश (धर्मेंद्र) की जेब में डाल देती है. इस लिपस्टिक को हासिल करने की अनेक कोशिशें होती हैं, पर अंत में गिरोह नष्ट कर दिया जाता है.

फिल्म की इस बेसिरपैर की कहानी में अधिक से अधिक हिंसा एवं मारधाड़ भरने की कोशिश की गई है. ब्रिजेश की मुंहबोली अंधी बहन रेशमा (रीना राय) घर में अकेली है और लिपस्टिक प्राप्त करने के लिए दो गिरोहों के व्यक्ति एक-एक कर के घर में आते हैं और उन की हत्याएं होती चली जाती हैं. घर में लाशें भर जाती हैं, लेकिन रेशमा को पता नहीं चलता. फिल्म की मूल कहानी से भटक कर निर्देशक केवल इसी दृश्य के चित्रण में व्यस्त रहा है और इसे उकताहट की सीमा तक लंबा खींच गया है.

फिल्म की यही विशेषता है कि इस में मेहमान कलाकार भरे पड़े हैं. धर्मेंद्र, संजीवकुमार, राकेश पांडे, देवकुमार और इम्तियाज आदि अनेक मेहमान कलाकार हैं, जो कहानी को कहीं भी उभरने नहीं देते. निर्देशक इन का अधिक से अधिक लाभ उठाने में ही लगा रहा है. लचर कहानी में अभिनय की दृष्टि से भी सभी प्रभावहीन हैं. केवल धर्मेंद्र के कुछ दृश्य मनोरंजक कहे जा सकते हैं.

कमर जलालाबादी और वर्मा मलिक जैसे प्रतिभाशाली गीतकारों और संगीतकार कल्याणजी आनंदजी की प्रतिभा किसी काम नहीं आई. कैलाश भंडारी निर्देशित 'अपने दुश्मन' देख कर जो मानसिक पीड़ा होती है, उस से सिनेमा हाल में दर्शक अपनेआप को ही अपना दुश्मन समझने लगता है.

○ जिंदा दिल

निर्माता : स. व. फिल्म्स इंटरनेशनल
निर्देशक : सिकंदर खन्ना
कहानी : के. डी. शोरी
मुख्य कलाकार : जाहिरा, ऋषि कपूर, नीतू सिंह, प्राण, पिंचू कपूर, रूपेशकुमार

सूबेदार हेमराज शर्मा (प्राण) अपने दो जुड़वां बच्चों में से अरुण (ऋषि कपूर) की अपेक्षा केवल (राजेश लहर) को अधिक प्यार करता है. अपने पिता के प्यार को पाने के लिए अरुण अपनी प्रेमिका रेखा (जाहिरा) को पिता के कहने पर छोड़ देता है. रेखा का विवाह केवल से हो जाता है. अरुण बंबई चला जाता है. वहां एक तस्कर प्रतापसिंह (पिंचू कपूर) की लड़की ज्योति (नीतू सिंह) अरुण से प्यार करती है. तभी अरुण को अपनी मां का पता चलता है. अंत में मां के अलग रहने का रहस्य खुलता है.

फिल्म का रहस्य अंत में अलग से जोड़ा प्रतीत होता है. कहानी में कृष्ण कांत शुक्ला की पटकथा में ऐसी घटनाएं नहीं जो फिल्म को चलाने में सहायक हों. फिल्म में पहले पात्रों का चयन कर के उस के अनुसार कहानी और पटकथा लिखी प्रतीत होती है. हर पात्र निर्देशक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के संकेत पर नाटकीय रूप में दिखाई देता है.

फिल्म असंगत घटनाओं और ऊल-जलूल हरकतों से भरी हुई है, जिन्हें तर्क की दृष्टि से नहीं देखा जा सकता. मार-पीट के दृश्यों में निर्देशक ने ट्रिक फोटो-ग्राफी द्वारा नायक से बहुत उछलकूद कराई है. शराब को इतना बहाया है कि हर पात्र शराब में डूबा दिखाई देता है. यही नहीं, पिता और पुत्र गम भुलाने के बहाने एक साथ शराब पीते हैं. शायद फिल्म के निर्माता, निर्देशक 'गम की दवा' के रूप में शराब का विज्ञापन करना चाहते हैं.

पहाड़ों पर नायक जहां ऊनी कपड़ों से अपने को ढांपे रहता है वहीं निर्देशक शरीर प्रदर्शन के लिए रेखा और ज्योति को अर्धनग्न रूप में दिखाता है. पहाड़ों पर कार दुर्घटना के बाद भी अरुण और ज्योति का सुरक्षित पहुंचना भी कम 'आश्चर्यजनक' नहीं लगता.

जाहिरा कसबे के डाक्टर की लड़की है लेकिन आधुनिक लड़की की तरह रहती है. नायक के साथ नाचने व चिपटने के अलावा कहीं कुछ नहीं कर पाती.

नीतू सिंह चंचल और आधुनिक लड़की के रूप में अच्छी लगती है, लेकिन नायक के साथ की गई उछलकूद उस की अभिनय प्रतिभा कम करती है.

राजेश लहर केवल के रूप में बुत बना रहा है. ऋषि कपूर भी बेकार की 'याहू टाइप' उछलकूद करता है.

पूरी फिल्म में प्राण ही का अभिनय कुछ थोड़ा वास्तविक सा है, यद्यपि यहां भी वह एक ही लीक पर चलने वाला है. रूपेशकुमार खलनायक के रूप में अत्यंत नाटकीय है. पिंचू कपूर छोटी सी भूमिका में ठीक है.

वर्मा मलिक की तुकबंदी को लक्ष्मी-कांत प्यारेलाल ने पूरे आर्केस्टा के शोर में बांधा है. संवाद चुस्त हैं. संपादन में गति है जो थोड़ाबहुत दर्शक को बांधे रखती है.

○ शंकरशंभु

निर्माता : ए. के. मूवीज

निर्देशक] चांद
कहानी]

मुख्य कलाकार : सुलक्षणा पंडित, विनो खन्ना, फिरोज खां, अनवर, अजी बिंदु, सुधीर, सुलोचना, ललि पवार

शंकर (फिरोज खां) और (विनोद खन्ना) चंबल के दो डाकू हैं वहां से भाग कर बंबई पहुंच जाते हैं लोगों को लूट कर गरीबों में धन बां हैं. शंकर की मुलाकात एक गरीब लड़ शालू (सुलक्षणा पंडित) से होती दोनों एकदूसरे को प्यार करने लगते हैं.

एक तस्कर कुंदन (अनवर हुसै शालू को उठा ले जाता है. शंकरशंभु से शालू को छुड़ाते हैं और उस तस्करी खत्म करते हैं. तभी पता चल है कि शंभु और शालू बचपन में एक दुर्घटना में खोए हुए पुलिस इंस्पेक जनरल रंजीत (अजीत) के बच्चे हैं.

'शंकरशंभु' भी डाकुओं की फि है, लेकिन लेखक, निर्देशक चांद ने फि में थोड़ा सा परिवर्तन कर दिया है अन्य डाकुओं की तरह शंकरशंभु जंग में रह कर गांव वालों को लूटने अपेक्षा बंबई में बड़ेबड़े सेठसाहूकारों तस्करों को जेम्स बांड तरीके से लूटते हैं.

शंकरशंभु के करिश्मे किसी तिलस्मी डाकू से कम नहीं. बिल्डिंग कितनी ऊंची क्यों न हो, उन्हें ऊपर पहुंचने में देर नहीं लगती. बंबई की सारी पुलिस, आई जी. के सामने से भी वह बच्चों की तरह निकल कर भाग जाते हैं. शंकरशंभु उलटीसीधी हरकतें दिखाने के लिए निर्देशक ने बंबई पुलिस को खिलौना बना दिया है.

लेखक, निर्देशक चांद ने इस फिल्म में अपनी पुरानी सभी फिल्मों के फार्मूले को दोहराया है. बचपन में पुलिस अफ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

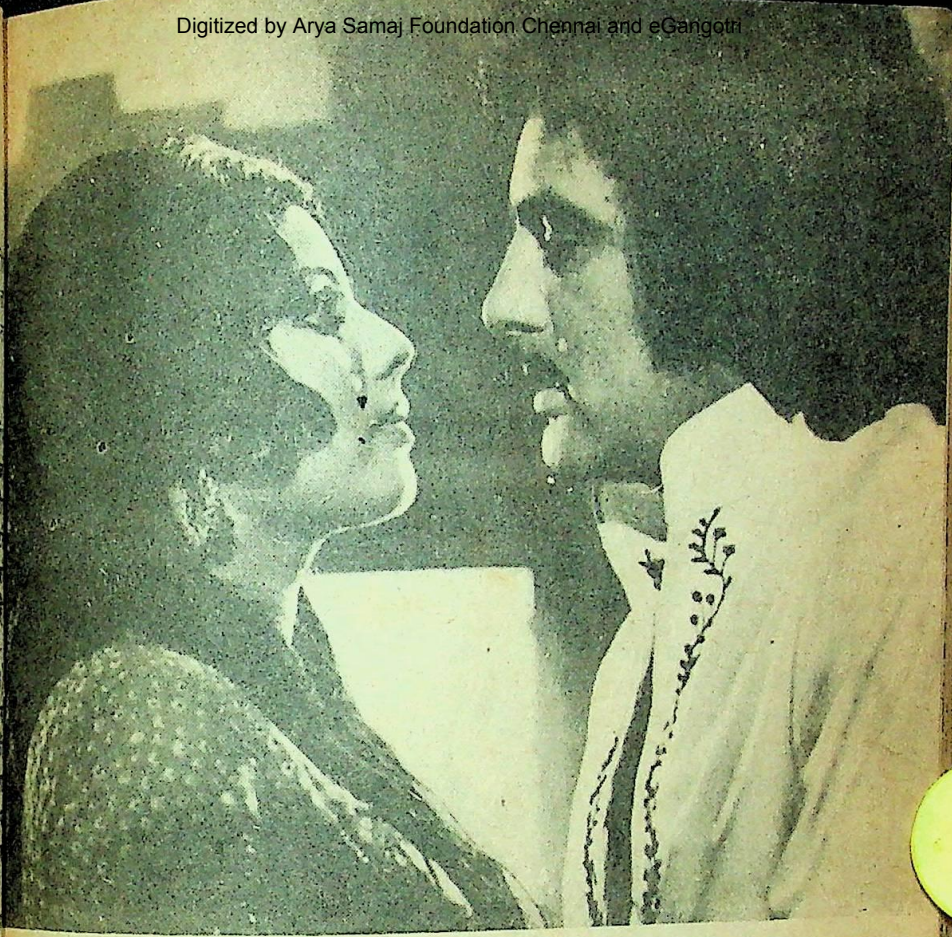

शंकर (फिरोज खां) और शालू (सुलक्षणा पंडित) : फिल्म 'शंकरशंभु' के एक प्रणय दृश्य में.

कारी रंजीत के बच्चों को अलग करना, दो डाकुओं की दोस्ती, मुजरे, खलनायक के दांवपेंच, डाकू की प्रेमिका, अपहरण और लंबीचौड़ी गोलीबारी के बाद सब का मिलन, इस के अतिरिक्त फिल्म में देखने के लिए कुछ नहीं.

फिरोज खां और विनोद खन्ना दोनों को अधिक समय परदे पर रखा है. फिर भी दोनों अपने अभिनय से कहीं प्रभावित नहीं करते. फिरोज खां की आवाज भी उस का साथ नहीं देती. अभिनय की तो उस से आशा नहीं की जा सकती.

सुलक्षणा पंडित को अभिनय का अधिक अवसर नहीं मिला. फिर भी उस में आकर्षण है. अजीत और अनवर हुसैन अपने पुराने रूप में हैं. ललिता पवार और सुलोचना भी काम चला गई हैं. सुधीर नाटकीय ही रहा है. जगदीप की अपेक्षा भगवान अधिक हंसाता है.

साहिर लुधियानवी के गीतों में एक कव्वाली ही "हम लूटने आए हैं..." कल्याणजी आनंदजी के संगीत में अच्छी बन पड़ी है, लेकिन निर्देशक ने उस का प्रस्तुतीकरण बहुत ही अटपटे रूप में किया है.

बी. गुप्ता का छायांकन अत्यंत साधारण है. के. बी. पाठक की पटकथा और संवाद भी फिल्म को कोई गति नहीं देते. पी. एस. बागले का संपादन भी फिल्म को नहीं बांध सका है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बढ़ता बचपन बलवान बने-
इनक्रिमिन* से

बचपन के दिन, फलने-फूलने, बढ़ने के दिन! इन दिनों बच्चों का शरीर फूल की तरह खिलता है- विकसित होता है, इन्हें इनक्रिमिन सिरप ज़रूर दीजिये। फिर देखिये, खाने से आनाकानी के बजाये इनकी भूख कैसे जाग उठती है— खाया पिया तन को लगने लगता है। लाभदायक विटामिन और लोहतत्वों से परिपूर्ण इनक्रिमिन में, विशेष अमीनो एसिड, लायसिन भी शामिल है- जो आहार के सभी पोषक तत्वों को ग्रहण करने में सहायता देता है।

इनक्रिमिन* टॉनिक

ड्रॉप्स—२ महीने से २ साल के बच्चों के लिये
सिरप— १४ साल तक के बच्चों के लिये

अधिक आहार से अधिक बढ़ाये-
खाया पिया अंग लगाये!

डाक्टरों का विश्वासपात्र नाम Lederle सायनामिड इन्डिया लिमिटेड का एक विभाग
*अमेरीकन सायनामिड कम्पनी का रजिस्टर्ड ट्रेड मार्क

Sista's INC-362 D R/76 H

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

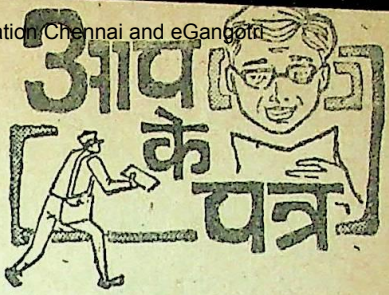

हम ने तथा हमारे (विराज) समाज के अन्य बंधुओं ने सरिता का फरवरी (प्रथम) अंक पढ़ा. 'ग्वालियर संभाग में डाकू संत्रास' (लेख : गंगाप्रसाद ठाकुर) में पृष्ठ 55 पर किरार जाति की गणना निम्न जातियों के साथ की गई है. पढ़ कर खेद हुआ. लेखक ने किरार जाति को निम्न माने जाने की बात किस आधार पर लिखी है?

—बालमुकुंद किराड़, आगरा

✦

फरवरी (प्रथम) अंक में 'पति' (लेख : तिलकराज गोस्वामी) पढ़ा. पति ही तो है जिस के कारण लड़की विवाहोपरांत अपने प्रियजनों को छोड़ कर ससुराल आती है. ससुराल के अन्य सदस्य उसे समझें या न समझें, किंतु यदि पति उस की सुखसुविधा का ध्यान रखता है, उस की भावनाओं की कद्र करता है तो वह अपना जीवन सार्थक समझती है.

—कुसुमलता माहेश्वरी, बोकारो

✦

फरवरी (प्रथम) में 'मिनी सम्मेलन' (व्यंग्य : श्याम शुक्ल) आजकल के लोगों में अपने नाम को चमकाने की तथा अखबारों में छपाने की बढ़ती हुई लालसा पर सुंदर कटाक्ष है.

—विशनदास निहालानी, जोधपुर

✦

फरवरी (प्रथम) अंक में स्तंभ 'श्रीमतीजी' के अंतर्गत हम पेपर हाकरों पर जो व्यंग्य किया है वह हम लोगों के लिए हानिकारक है. ग्राहक हम पर छींटाकशी करते हैं, जिस से कि हम पेपर हाकरों को शर्मिंदा होना पड़ता है. अतः अनुरोध है कि ऐसा व्यंग्य भविष्य में न करें.

—दशरथप्रसाद सिंह, शहरपुर

✦

जनवरी (द्वितीय) अंक में 'सरित प्रवाह' पा कर अत्यंत हर्ष हुआ. इस के बिना पाठकों को बहुत ही कुंठा और खीझ उत्पन्न होती थी. वैसे इस के बंद होने का कारण सब को पता था ही.

—मगनलाल, मेरठ

✦

जनवरी (द्वितीय) अंक में '1975 का फिल्मी संगीत' (लेख : दिलीप गुप्ते) में लेखक ने 'अपने रंग हजार' का गीतकार आनंद बक्षी को बताया है, जब कि उस के गीतकार अनजान थे. इसी प्रकार फिल्म 'चुपकेचुपके' का गीतकार आनंद बक्षी की जगह योगेश को बताया गया है.

—महावीरप्रसाद, सरदारशहर

✦

सरिता के जनवरी (द्वितीय) अंक में 'कुंभ मेला' (लेख : विराज) पढ़ा. इस पाखंडवाद के प्रति जो वितृष्णा मन में घुट रही थी, मानो उस को बल मिल गया.

मेरी हार्दिक इच्छा यह है कि अगली बार यह वीभत्स प्रदर्शन न हो. क्या सरकार को ऐसे अनुचित प्रदर्शन पर रोक लगाने का अधिकार नहीं है? क्या धर्मभीरु अशिक्षित जनता को इतना बढ़ावा दे कर कुंभ स्नान के लिए महीनों पूर्व अखबार और आकाशवाणी द्वारा प्रचार कर के बुलाने के स्थान पर यह संदेश नहीं दिया जा सकता कि सर्वोच्च धर्म और तीर्थ अपने क्षेत्र में ही सत्य और कर्म को अपना कर अपने महल्ले, नगर और देश का उत्थान करना है?

—पद्मा शर्मा, ऋषिकेश

✦

जनवरी (द्वितीय) अंक में '1975 का फिल्मी संगीत' (लेख : दिलीप गुप्ते) में लेखक ने सी. अर्जुन को नया संगीतकार बताया है, जब कि वह काफी पुराने हैं.

—रवींद्रकुमार अग्रवाल, गोरखपुर

✦

जनवरी (प्रथम) में प्रकाशित 'मृगतृष्णा' (लेख : बसंती माथुर) पढ़ा. मैं इस लेख से सहमत हो कर भी यह स्पष्ट कहना चाहूंगा कि आज देश में महिलाओं ने समानाधिकार की बात उठा कर जो सफलता अर्जित की है, वह एक भ्रम है. और इस भ्रम के महल में आज पारिवारिक समस्याओं और परेशानियों का बोलबाला है, जिस के द्वार पर धनलोभी चौकीदार खड़े हुए हैं. इस अशांति के मध्य आज स्त्रियों ने अपना स्त्रीत्व खो दिया है.

मैं इस पक्ष में कतई नहीं हूं कि स्त्रियां प्रशासनिक या अन्य कार्यों के लिए अनुपयुक्त हैं. मगर आज इन की नौकरी करने की भेड़चाल से युवकों की बेरोजगारी बढ़ी है. परित्यक्ता, तिरस्कृत और विधवा बहनों के उत्थान एवं भरणपोषण की समस्याएं भी बढ़ी हैं. यदि इन को नौकरियां प्रदान कर दी जाएं तो इन की यह भरणपोषण की समस्या हल हो सकती है. मगर इस समानाधिकार के राग ने आज देश में पारिवारिक कलह को जन्म दिया है. बच्चों को मां के प्यार से वंचित रखा है. महिलाओं को चाहिए कि वे इस राग को छोड़ कर अपने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बालसन

हेयर रीमुवींग (बाल साफ)

क्रीम

कोमल त्वचा के बाल साफ करने के लिए

बालसन

केश काला

सफेद

बालों को प्राकृतिक रंग जैसा काला करने के लिए

बालसन सेल्ज कारपोरेशन, दिल्ली-६

देश भर में डीलरों की आवश्यकता है !

भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त आयुर्वेदिक ग्रंथों में आंखों के लिए काजल सुरमा के अनेक गुण लिखे हैं. आंखों को नीरोग और सुंदर बनाने के लिए

भीमसेनी

काजल (एलायुक्त)

आधुनिक ढंग और आयुर्वेदिक औषधियों से बी. फार्मा एवं वैद्यों द्वारा निर्मित

भीमसेनी काजल अमेरिका, जर्मनी, फ्रांस, हालैंड, बेल्जियम आदि अनेक देशों को निर्यात होता है. लाखों परिवारों में रोजाना प्रयोग होता है.

मुरारी ब्रदर्स मार्केट कनाट प्लेस दिल्ली ११०००१

समुदाय की बेसहारा बहनों के उत्थान के विषय [illegible] की पीढ़ी के पौधों को मातृत्व से सींचें, ताकि एक सुखमय समाज व देश की रचना की जा सके.

—अवधेशनारायण प्राण, लखनऊ

✦

दहेज संबंधी जो क्रांतिकारी विचार सरिता में समयसमय पर प्रकाशित होते रहते हैं, मैं उन का खुले दिल से अनुमोदन करता हूं. मैं ने स्वयं अंतर्जातीय विवाह किया है और दहेज के नाम पर न तो कोई मांग की और न ही किसी प्रकार का दहेज लिया. मेरी शादी घर वालों की मरजी से ही हुई थी और मेरी मां भी सरिता की पाठक होने के नाते मेरे विचारों की समर्थक थी. लड़की वाले बहुत गरीब आदमी हैं और उन को शादी लखनऊ से दिल्ली में आ कर करनी थी, अतः जो कुछ जमापूंजी उन के पास थी वह भी आनेजाने में खर्च हो गई अतः वे बेचारे चाहते हुए भी लड़की को कुछ न दे पाए. मेरी मां को ऐसी उम्मीद कदापि न थी कि वे लोग बिना कुछ भी दिए शादी कर देंगे.

वैसे तो वह भी जैसा कि मैं ने ऊपर लिखा इन बातों के खिलाफ थी, परंतु वह चाहती थी कि जो कुछ भी मिले उसे वह अपनी लड़की अर्थात मेरी बहन को दे दें, जिस की शादी मेरी शादी के दूसरे दिन ही रखी गई थी. परंतु जब उधर से कुछ नहीं मिला तो बाद में उन्होंने मेरी पत्नी को तंग करना शुरू कर दिया और मुझ से भी कहा कि मैं अपने ससुराल वालों से रुपए मांगूं. इन्हीं बातों को ले कर घर में झगड़ा बढ़ता गया और अंत में तंग आ कर मुझे घर से अलग होना पड़ा.

अलग होने पर मुझे अपने घर में से, मेरी ही खरीदी गई एक भी वस्तु न लेने दी गई. परंतु मैं ने इस की भी कोई परवा न की. आज मुझे अलग हुए करीब डेढ़ वर्ष हो चुके हैं और एक छः महीने का बच्चा भी है. मेरा गृहस्थ जीवन हर प्रकार से सुखी है.

दहेज के संबंध में आजकल सरकार भी कानून बना रही है. परंतु जब तक लोगों के विचार नहीं बदलेंगे, कानून बनाने से भी कोई फायदा नहीं होगा और मैं समझता हूं कि सरिता इस बारे में काफी कुछ कर रही है. बड़ोंबड़ों के न सही अगर युवकयुवतियों के विचार ही इस बारे में बदले जा सकें तो भी काफी हैं.

—रनवीरकुमार वर्मा, गुड़गांव

✦

आप आवरण पृष्ठ पर किसी अभिनेत्री आदि की तसवीर न दे कर हर बार एक अनजाना चेहरा देते हैं, यह बहुत अच्छा है. पर मेरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नया
ग्लॉस'एन ग्लो
शैम्पू

अतिरिक्त
शक्तिशाली
फिर भी
किफ़ायती

नया ग्लॉस'एन ग्लो शैम्पू झाग से भरपूर और क्वालिटी में बेजोड़ है। बालों को मुलायम, रेशमी, चमकीला और सजीव बनाता है। सिर्फ़ कीमत में ही नहीं, यह इस्तेमाल में भी किफ़ायती है—थोड़े में ही ज़्यादा काम। पसन्द के लिये ३ विभिन्न किस्में—एग व प्रोटीन, लेमन और हर्बल जो सचमुच कोमल से कोमल बालों की सही देखभाल करता है।

ग्लॉस'एन ग्लो : शक्तिशाली किफ़ायती शैम्पू जो बहुत दिनों तक चलता है।

कैलकटा केमिकल का एक उत्पादन

In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैवाहिक विज्ञापन

26 वर्षीया, सिख, तलाकशुदा, 400 रु. कद 5'-3", कन्या के लिए योग्य सिख, हिंदू खत्री, अरोड़ा वर चाहिए. विधुर, तलाकशुदा को प्राथमिकता. लिखें : वि. नं. 699, सरिता, नई दिल्ली-55.

28 वर्षीया, वैश्य, डबल एम. ए., बी. एड., सुंदर सुशील कन्या के लिए कार्यरत वर चाहिए. लिखें : वि. नं. 700, सरिता, नई दिल्ली-55.

21½ वर्षीया, राजपूत, एम. एससी. कन्या के लिए योग्य, सजातीय वर चाहिए. लिखें : वि. नं. 701, सरिता, नई दिल्ली-55.

20 वर्षीया, राजपूत, एम. एससी. अध्ययनरत कन्या के लिए योग्य, सजातीय वर चाहिए. दहेज नहीं. लिखें : वि. नं. 702, सरिता, नई दिल्ली-55.

22 वर्षीया, रस्तोगी, ग्रेजुएट, सुंदर, स्वस्थ, अविवाहित कन्या हेतु उपयुक्त, स्वावलंबी वर चाहिए. लिखें : वि. नं. 703, सरिता, नई दिल्ली-55.

22 वर्षीया, ब्राह्मण कद 5'-1", गृहकार्य में कुशल, एम. ए. कन्या के लिए सुशिक्षित वर चाहिए. लिखें : वि. नं. 704, सरिता, नई दिल्ली-55.

सुंदर, सुशील, बी. एससी तथा एम. ए. (इकोनोमिक्स) में अध्ययनरत. माहेश्वरी कन्या के लिए सुशिक्षित, सुंदर वर की आवश्यकता है. व्यवसायरत को प्राथमिकता. लिखें : वि. नं. 705, सरिता, नई दिल्ली-55.

22 वर्षीया, तेली (साहू), हिंदी भाषी, कद 5'-4", बी. एससी. (गृह विज्ञान), गौरवर्ण, संपन्न परिवार की कन्या के लिए सजातीय वर चाहिए. लिखें : वि. नं. 706, सरिता, नई दिल्ली-55.

26 वर्षीया, क्षत्रिय, अति सुंदर, आकर्षक व्यक्तित्व, गौरवर्ण, स्वस्थ, कद 5'-2', सुशील, गृहकार्य दक्ष, बी. एड., अध्यापिका (पंजाब) हेतु क्षत्रिय/अरोड़ा एम. बी. बी. एस. डाक्टर वर चाहिए. भाई उच्च शिक्षित. लिखें : वि. नं. 708, सरिता, नई दिल्ली-55.

24 वर्षीया, चौरसिया, एम. ए., प्रतिष्ठित परिवार की सुगृहिणी कन्या हेतु सजातीय योग्य वर चाहिए. लिखें : वि. नं. 709, सरिता, नई दिल्ली-55.

सजातीय वर चाहिए. दहेज नहीं लिखें : वि. नं. 710, सरिता, नई दिल्ली-55.

22 वर्षीया, कुर्मी क्षत्रिय, एम. एससी. बी. एड., कद 5'-3", सुंदर, गृहकार्य में दक्ष कन्या हेतु सजातीय, कार्यरत वर चाहिए. विधुर राजपत्रित अधिकारी. लिखें : वि. नं. 711, सरिता, नई दिल्ली-55.

25½, वर्षीय, भटनागर, राजकीय सेवारत 375 रु., मासिक कद 5'-7", युवक हेतु आकर्षक कन्या व 19½ वर्षीया, बी. ए., कद 5', आकर्षक कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. जाति बंधन नहीं. लिखें : वि. नं 712, सरिता, नई दिल्ली-55.

26 वर्षीय, दिगंबर जैन, म. प्र. के एम. डब्ल्यू. डी. में डिवीजनल एकाउंटेंट, कद 5'-9", गेहुआं रंग, स्वस्थ युवक हेतु सुंदर कन्या की आवश्यकता है. उपजाति बंधन नहीं. लिखें : वि. नं. 713, सरिता, नई दिल्ली-55.

25 वर्षीय जैन, इंजीनियर, कद 5'-8", गेहुआं रंग, स्मार्ट एवं सुंदर, मध्यप्रदेश राजपत्रित अधिकारी के लिए सुंदर कन्या की आवश्यकता है. उपजाति बंधन नहीं. लिखें : वि. नं. 714, सरिता, नई दिल्ली-55.

45 वर्षीय, सिंघल गोत्र अग्रवाल, विधुर, निजी व्यापार में रत, मासिक आय चार अंकों में के लिए सजातीय, लगभग 30 वर्षीया, जीवन साथी की आवश्यकता है. कृपया लिखें : वि. नं. 715, सरिता, नई दिल्ली-55.

27 वर्षीय, पंजाबी अग्रवाल, एम. बी. बी. एस., पी. सी. एम. एस., कद 167 सें. मी. युवक हेतु सैंडीको कन्या चाहिए. दहेज नहीं. लिखें : वि. नं. 716, सरिता, नई दिल्ली-55.

20 वर्षीय, चौरसिया, आकर्षक व्यक्तित्व, मधुर स्वभाव, खुशमिजाज, इंजीनियरिंग कालेज में अध्ययनरत युवक हेतु सजातीय, अतिसुंदर, मधुर स्वभाव, स्लिम, स्वस्थ, पढ़ीलिखी वधू चाहिए. युवक का पिता ए क्लास अफसर है. लिखें : वि. नं. 717, सरिता, नई दिल्ली-55

25-26 वर्षीय, सैनी, व्यवसायी युवक हेतु 16-20 वर्षीया कन्या चाहिए. लिखें : वि. नं. 718, सरिता, नई दिल्ली-55.

37 वर्षीय, एम. ए., शोधकार्य में संलग्न, मध्य प्रदेश शासकीय सेवा में शिक्षक, निस्संतान विधुर हेतु स्वस्थ एवं गृहकार्य में दक्ष कन्या अथवा निस्संतान विधवा चाहिए. दहेज, जाति बंधन नहीं. प्रथम बार में पूर्ण विवरण लिखें : वि. नं. 719, सरिता, नई दिल्ली-55.

21 वर्षीय, पंजाबी महाजन, इंटरमीडिएट, प्रतिष्ठित व्यवसायी परिवार के सुंदर, मंगली

सरिता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरिता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यदि आप महज पत्नी-प्रेमी, मौज-शौक से डरने वाले सीधे-सादे संकोची किस्म के दकियानूस आदमी हैं, तो फेबीना से दूर ही रहिए !

नहीं तो, आप की ओर कितनी ही नजरें उठेंगी...
कितनी सुंदर, कितनी दिलकश नजरें !

फेबीना
सूटिंग्स और शर्टिंग्स
बीना सिल्क मिल्स
इंदौर, मध्य-प्र० फोन : ४९१३२९.

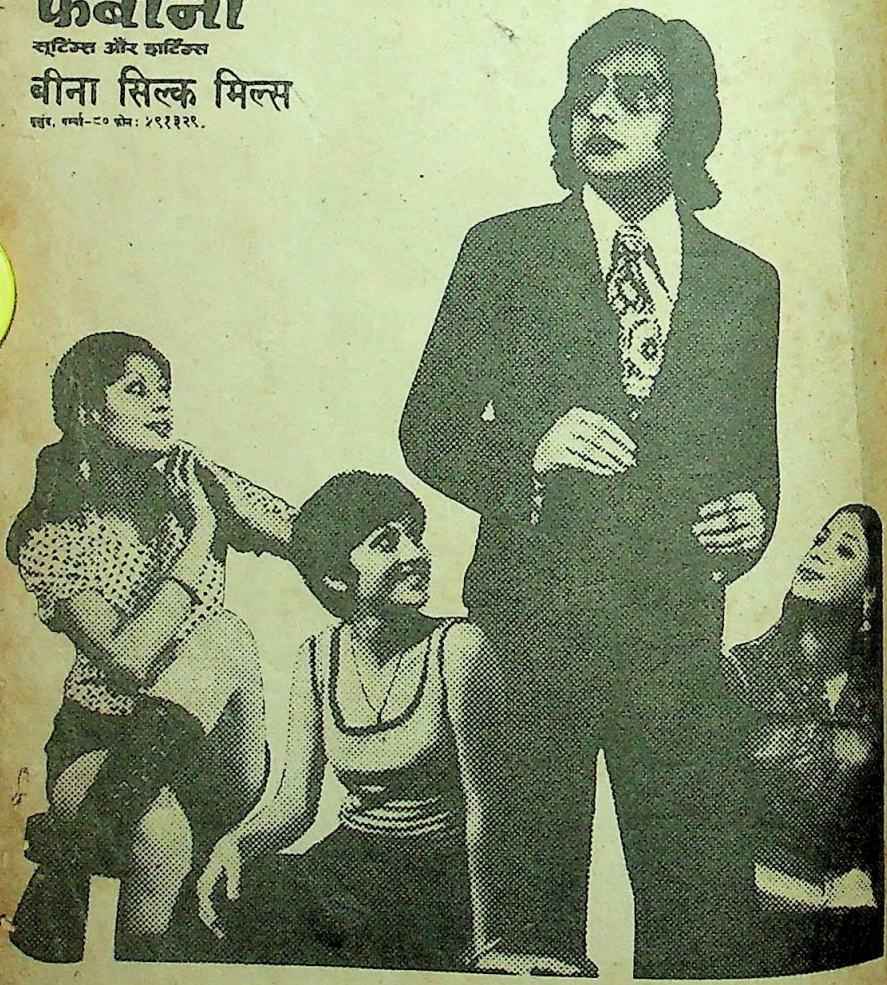

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्टार पब्लिकेशंज प्रा० लि०

★ जिन्हें "भारतीय पुस्तकों के निर्यात में असाधारण प्रदर्शन" पर 1974-75 का निर्यात पुरस्कार प्राप्त हुआ है !

★ जिन की ओर से प्रकाशित स्टार बुक्स ने हिन्दी प्रकाशन में बिक्री के नए-नए प्रतिमान स्थापित किए हैं !!

★ जिन की 'स्टार लायबेरी योजना' ने भारत के छोटे२ नगरों में हजारों-लाखों पाठकों को कम मूल्य की उपयोगी 'स्टार बुक्स' घर बैठे और भी कम मूल्य में प्रस्तुत कर 'पठन-रुचि-विकास' में महत्वपूर्ण योगदान दिया है !!!

अब अपनी गौरव पूर्ण परम्परा में प्रस्तुत करते हैं ये नई स्टार बुक्स

राजवंश
का 'सन्देह' के बाद नया उपन्यास
रात और दिन
3/-

राजवंश
का नया सामाजिक उपन्यास
नारी-नटेश्वर
4/-

समीर
का एक और उपन्यास
मृग-तृष्णा
3/-

गुप्तदूत
की नवीनतम जासूसी रचना
हत्या और हत्यारे
3/-

ख्वाजा अहमद अब्बास
की चुनी हुई अप्रकाशित कहानियां
लव इन मसूरी
3/-

कुसुम अंसल
उदास प्राण के बाद
का रोचक उपन्यास
नीव का पत्थर
3/-

उर्दू के सुविख्यात शायर
मीर तक़ी मीर
की चुनी हुई उर्दू
शायरी
3/-

भगवान श्री रजनीश
के अप्रकाशित प्रवचन
अमृत की दिशा
3/-

विजय कुमार गुप्त
का 'संकल्प' के बाद नया उपन्यास
बेदाग़
3/-

करोड़ों व्यक्तियों के पूज्य
साईं बाबा के सन्देश
3/-

● अधिक पृष्ठ ● अधिक रोचक ● अधिक आकर्षक

अपने नगर के बुकस्टालों से खरीदिये

कुछ चुनी हुई अन्य स्टार बुक्स

भैरवी	(शिवानी)	3/-
आखिरी दांव	(भगवतीचरण वर्मा)	3/-
आग की लकीर	(अमृता प्रीतम)	3/-
उनकी कहानी	"	3/-
२७ डाउन	(रमेश बक्षी)	3/-
पिंजरा	(नया आवरण)	4/-
गेलार्ड	(गुरुशरन नन्दा)	4/-
शीशे की दीवार	"	2/-
सितारों से आगे	"	2/-
सफर	(गुरुदत्त)	5/-
दीन-दुनिया	"	4/-
परम्परा	"	4/-
दर्द पराया	"	3/-
प्यासे नैना	(राजवंश)	2/-
शिकायत	"	2/-
संदेह	(राजवंश)	3/-
कांच के सपने	(समीर)	3/-
सुबह के भूले	"	2/-
अवारा	"	2/-
एक भूल	(लोकदर्शी)	3/-
घायल	"	3/-
विवेक	"	2/-
खून के बदले में	(गुप्तदूत)	3/-
भयानक आवाजें	"	2/-
लहू के धब्बे	"	2/-
उर्वशी	(रामधारीसिंह दिनकर)	5/-
तल्खियां	(साहिर लुधियानवी)	3/-
१९७६ में आपका भाग्य	(साप्ताहिक राशिफल)	3/-
चाकर गाथा	(विमल मित्र)	3/-
कलंक	(शिवकुमार जोशी)	3/-
संकल्प	(विजयकुमार गुप्त)	3/-
अचला	(सेठ गोविंद दास)	2/-
सफलता कैसे मिले ?	(समर बहादुरसिंह)	3/-
जीवन दर्शन	(भगवान रजनीश)	3/-
हंसना मना है	"	2/-
याद रही बातें	(अभयकुमार जैन)	3/-
नीरज के लोकप्रिय फिल्मी गीत		3/-

अपने नगर के बुक स्टालों से खरीदें या हमें लिखें

स्टार पब्लिकेशंज (प्रा०) लि०,
आसफ अली रोड, नई दिल्ली-११०००२

स्टार का नाम भारतीय पुस्तक व्यवसाय का प्रतीक है !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

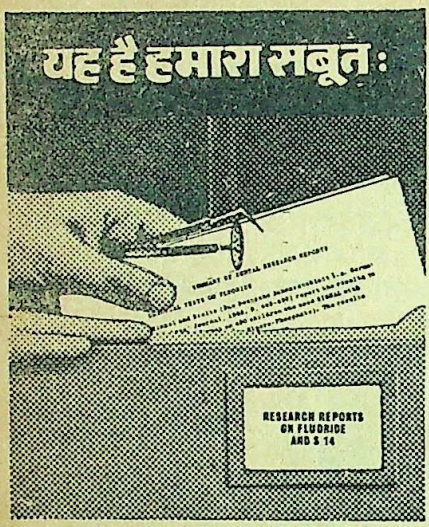

केवल सिग्नल फ़्लोराइड साबित करती है कि यह दांतों की सड़न और सांस की दुर्गंध रोक देती है,

दंत-सफ़ाई के एक अनोखे आधार में.

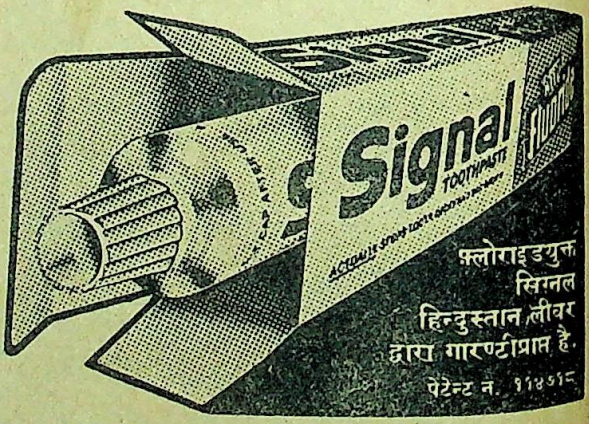

केवल सिग्नल फ़्लोराइड के पास है सबूत-

अपने दंत-चिकित्सक से पूछिए.

लिंटास - SGF,63-75 HI

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरिता

फरवरी (प्रथम) 1976

अंक 499

सामाजिक व पारिवारिक पुनर्निर्माण की पाक्षिक पत्रिका

संपादक व प्रकाशक

विश्वनाथ

[illegible] भारत सरकार द्वारा [illegible] है.

[illegible] में प्रकाशित सभी रचनाओं [illegible] दिल्ली प्रेस प्रकाशन [illegible] सुरक्षित है. इसलिए बिना [illegible] कोई रचना किसी प्रकार उद्धृत [illegible] नहीं जानी चाहिए.

[illegible] भेजी गई रचनाओं की [illegible] के लिए कार्यालय उत्तरदायी [illegible] है. टिकट लगा, पता लिखा [illegible] साथ होने पर ही अस्वीकृत [illegible] लौटाई जाएंगी.

[illegible] में प्रकाशित कथा साहित्य में [illegible] पात्र, घटनाएं व संस्थाएं [illegible] हैं और वास्तविक [illegible], स्थानों, घटनाओं या [illegible] से उन की तिथियों की प्रकार [illegible] केवल संयोग मात्र है.

[illegible] प्रेस प्रकाशन पत्र के लिए [illegible] दिल्ली प्रेस, [illegible] में मुद्रित.

[illegible] प्रकाशन कार्यालय: [illegible] सराय रोहिल्ला [illegible], नई दिल्ली-55.

एक प्रति : 2.00 रु.
वार्षिक : 40.00 रु.
दो वर्ष : 75.00 रु.
विदेश में (समुद्री डाक से)
एक वर्ष : 80.00 रु.

कथा साहित्य

घूरे वाली लड़की	रमा अग्निहोत्री	36
अनुमान और रहस्य	शिवकुमार दुबे	42
मिनी सम्मेलन	श्याम शुक्ल	84
अवसर का लाभ	अजीज अफसर राही	92
खच्चर	कुमुद भटनागर	117
अब खाई सो खाई	सत्यकुमार	124
चमत्कार	कुसुम गुप्ता	147
छोटी सी मुलाकात	सुनीलकुमार श्रीवास्तव	156

लेख

1975 का हिंदी साहित्य	सुदर्शन चोपड़ा	19
भक्ति	सुरेश किसलय	28
ग्वालियर संभाग में डाकू...	गंगाप्रसाद ठाकुर	52
खरीदने से पहले	दिनेश सेठी	63
बारसीलोना	पुष्पा ओझा	67
न्यूजीलैंड क्रिकेट दल...	वीरेंद्र शुक्ल	76
पति	तिलकराज गोस्वामी	99
बच्चों में अभद्रता	वेदप्रकाश	106
सिफलिस	दलीपकुमार	112
सड़क दुर्घटना	आज्ञाराम प्रेम	131
परदा	इंद्रारानी	138
न्यूड वेव फिल्में	योगेंद्रपाल सिंह	143

कविताएं

सफर कट जाए	इंदिरा परमार	35
झुके नयन	इसाक 'अश्क'	82

स्तंभ

सरित प्रवाह	15	हमारी बेड़ियां	83
पासा पलट गया	48	बात ऐसे बनी	123
ये पति	66	बच्चों के मुख से	130
श्रीमतीजी	74	जीवन की मुसकान	142
नए फैशन	78	चंचल छाया	171
पाठकों की समस्याएं	80	आपके पत्र	173

आवरण : सुभाष कंबोज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ENTERTAINMENT AT YOUR FINGER TIPS!

RADIO CEYLON

For family radio entertainment, there's not but nothing, to beat RADIO CEYLON best in sheer entertainment, in English, and Tamil, comes to you with unsurpa power and clarity. Comb the various bands and see which station tops the RADIO CEYLON of course!

ENGLISH—Daily 0600 to 1000 hours	15425 KHZ 9720 KHZ 6075 KHZ
1800 to 2300 hours	15425 KHZ 9720 KHZ 7190 KHZ
HINDI — Mondays 0600 to 1000 hrs 1200 to 1400 hrs 1900 to 2300 hrs	through Satu 11800 KHZ 7190 KHZ 11800 KHZ 6075 KHZ
HINDI—Sundays only 0600 to 1400 hrs 1900 to 2300 hrs	11800 KHZ 7190 KHZ 11800 KHZ 6075 KHZ
TAMIL — Daily 1630 to 1900 hrs	11800 KHZ 6075 KHZ 7190 KHZ
MALAYALAM—Daily 1530 to 1630 hrs	11800 KHZ 6075 KHZ 7190 KHZ
TELUGU — Daily 1430 to 1550 hrs	11800 KHZ 6075 KHZ 7190 KHZ
KANNADA — Daily 1400 to 1430 hrs	11800 KHZ 6075 KHZ 7190 KHZ

ADVERTISERS SEEKING EXPORT MARKETS CONTACT

RADIO ADVERTISING SERVICES

Cecil Court
Landsdowne Road,
Bombay 1
Tel: 213046-47
Grams: RADONDA

30 Fifth Trust
Cross Street,
Mandavelipakkam
Madras 28
Tel: 73736

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टी. मार्क

यह है वूलमार्क

शुद्ध, नयी ऊन

शुद्ध और मिलावट-रहित ऊन का प्रतीक— सारे संसार में !

प्रकृति का अनुपम रेशा—ऊन

शुद्ध, नये ऊनी उत्पादनों की
शुद्धता का प्रमाण है—वूलमार्क।
ऊनी उत्पादनों की उत्तमता की
पूरी जाँच-परख करके ही
उन पर वूलमार्क
लगाया जाता है।
इंटरनेशनल वूल सेक्रेटेरियट का
इस पर पूरा नियंत्रण रहता है।
इसलिये सूटिंग, स्वेटर,
हाथ-बुनाई की ऊन, शॉल,
शॉल वगैरह ख़रीदने से पहले
अपने विश्वास के लिये
वूलमार्क अवश्य देख लें।

ऊन के स्वाभाविक गुण	आपको लाभ
कुचालक (सर्दी दूर, शक्ति की बचत)	ऊन से शरीर का तापमान सामान्य बना रहता है। इसलिये ऊनी वस्त्र आरामदेह होते हैं। इससे शक्ति भी बनी रहती है: यही कारण है कि क्रिकेट खिलाड़ी-गर्मियों में भी ऊनी कपड़े पहनते हैं।
प्रत्यास्थता (लचीलापन)	ऊनी कपड़ों में सिलवटें नहीं पड़ती। उनका रूप और आकार यथापूर्व रहता है क्योंकि उनमें एक स्वाभाविक लचक है।
रंगाई-क्षमता	ऊन, रंगों को आसानी से स्थायी तौर पर जज़्ब कर लेती है, इसलिये इसे विविध रंगों में रंगना संभव है। इसके अलावा इसकी रंगछटा बड़ी पक्की, निखारपूर्ण और आकर्षक होती है।
अनाम्यता (टिकाऊपन)	ऊनी वस्त्र ज़्यादा चलते हैं क्योंकि उनमें ज़्यादा से ज़्यादा ऐंठन, मरोड़ या फैलाव सहने की शक्ति है।
अग्नि-रोधकता	ऊन पर आग का असर जल्दी नहीं होता। यह आग से न पिघलती है, न टपकती है है और न ही लपटें पकड़ती है। इसीलिये संकटकाल में लोग आग बुझाने के लिए ऊनी कम्बल ही इस्तेमाल करते हैं।
प्राकृतिक गठन	ऊन की प्राकृतिक बनावट के कारण इसका रूप और आकार स्थायी बनाये रखना संभव है। इसीलिये ऊनी वस्त्रों की कटाई और सिलाई करना बड़ा सुविधाजनक है।

नयी, मिलावट-रहित, शुद्ध ऊन की पहचान—वूलमार्क

CMIWS-30-162-HN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

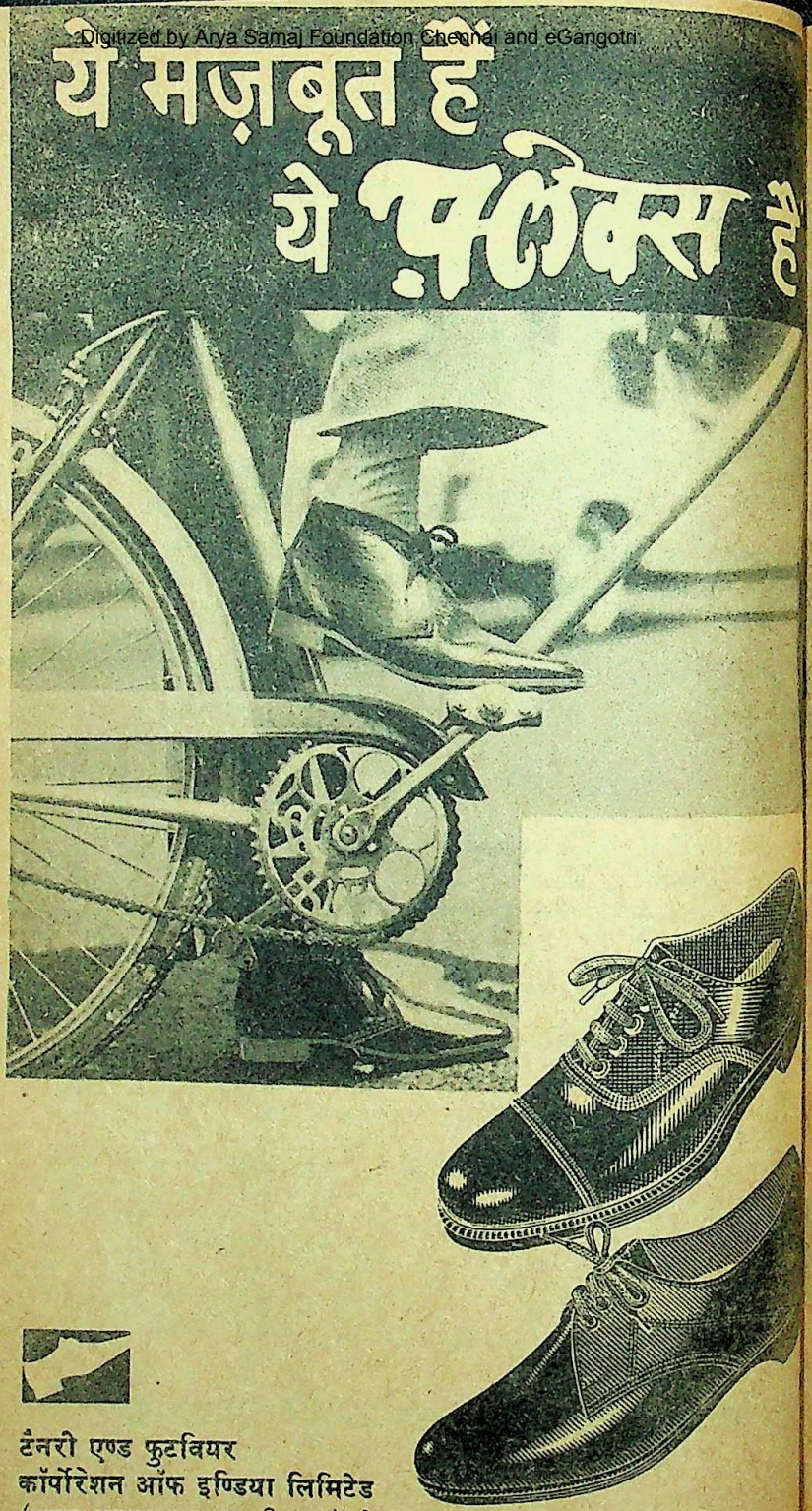

टैनरी एण्ड फुटवियर
कॉर्पोरेशन ऑफ इण्डिया लिमिटेड
(भारत सरकार का एक प्रतिष्ठान) पोस्ट बाक्स नं० ३२९, कानपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

OBM-5800

"मैं चाहती हूँ कि मेरी नन्ही बेटी अधिक फुर्तीली, स्वस्थ और जानदार बने ! इसलिए मैं उसे हर दिन बोर्नविटा देती हूँ।"

"अब उसके साथ-साथ चलने के लिए मुझे भी बोर्नविटा चाहिए।"

"मेरा पूरा परिवार बोर्नविटा पीता है। मेरे पति बोर्नविटा देने का आग्रह करते हैं क्योंकि मॉल्ट, दूध, ग्लूकोज़ और चीनी के अलावा बोर्नविटा कोको से खूब भरपूर है। वे कहते हैं कि कोको सबसे अधिक संकेन्द्रित (कॉन्सेन्ट्रेटेड) शक्तिदायक आहार है जो हमें उपलब्ध है। और किसी दूसरे पेय आहारों के मुकाबले बोर्नविटा में अधिक कोको होता है। बोर्नविटा में मिला हुआ कोको उसे ज़्यादा स्वादिष्ट भी बनाता है। मेरी छोटी बेटी को बोर्नविटा बहुत पसन्द है — और मुझे मालूम है कि उसे बोर्नविटा से वह सब पोषण भरपूर मिल रहा है जो उसकी विकसित होती हुई मांसपेशियों, हड्डियों और दिमाग के लिए ज़रूरी है। इसके अलावा और अन्य पेय आहारों की बनिस्बत बोर्नविटा अधिक किफ़ायती है। मैं हर दिन (अन्य पेय आहारों के समान) एक कप में २ चम्मच बोर्नविटा मिलाती हूँ और मेरे बोर्नविटा का डिब्बा कई अधिक दिनों तक चलता है। आज़माकर ख़ुद देख लीजिए।"

कॅडबरिज़

बोर्नविटा

शक्ति, उत्साह और स्वाद के लिए आदर्श पेय आहार।

हर डिब्बे से ज़्यादा प्याले. हर प्याले में ज़्यादा स्वाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरिता को सामाजिक क्रांति अब

सरिता परिवार की ओर से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गांवों की ओर

एक नई पत्रिका

भूभारती

भूभारती ग्रामीण समाज के लिए एक अनूठी मासिक पत्रिका है. इस का उद्देश्य जहां गांवों में रहने वालों तक कृषि व अन्य ग्रामीण उद्योगधंधों के बारे में नई जानकारी पहुंचाना है, वहीं उन के मनोरंजन व ज्ञानवर्द्धन के लिए उच्च स्तर की सामग्री भी देना है.

भूभारती के हर अंक में ऐसी रोचक, प्रेरणात्मक कहानियां होती हैं जिन में मनोरंजन के साथ ग्रामीण समाज की अनेक समस्याओं का सहज और सरल हल भी होता है.

इस के लेख कृषि तक ही सीमित न हो कर गांवों में चलाए जा सकने वाले उद्योगधंधों, घरों की साजसज्जा, परिवार व आसपास वालों से व्यवहार, देशविदेश की घटनाओं की जानकारी आदि तक सब लिए हैं.

इस की गुदगुदाने वाली कविताएं, चुटीले कार्टून तथा आकर्षक छपाई आप का मन मोह लेगी.

भूभारती अपनी तरह की अकेली ऐसी पत्रिका है जिसे गांव में रहने वाला हर शिक्षित व्यक्ति—स्त्री, पुरुष, युवा, बच्चे सभी पढ़ना चाहेंगे.

100 पृष्ठों की रोचक सामग्री • मूल्य केवल 1 रुपया

विशेष रियायती मूल्य पर तुरंत वार्षिक ग्राहक बनिए. 11 रु. के स्थान पर 29 फरवरी, 1976 तक केवल 8.25 रु. दीजिए. पंचायतों व ग्रामीण स्कूलों के लिए केवल 6.25 रु. आज ही निम्न पते पर मनीआर्डर भेजिए :

भूभारती, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-55.

मुझे/हमें भूभारती का वार्षिक ग्राहक बना लीजिए. वार्षिक शुल्क

रु._____ म. आ. नं._____ तिथि_____ द्वारा भेजा जा रहा है.

नाम _____

पता : मकान नं._____ गली_____

डाकखाना_____

जिला_____ राज्य_____ पिन कोड_____

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

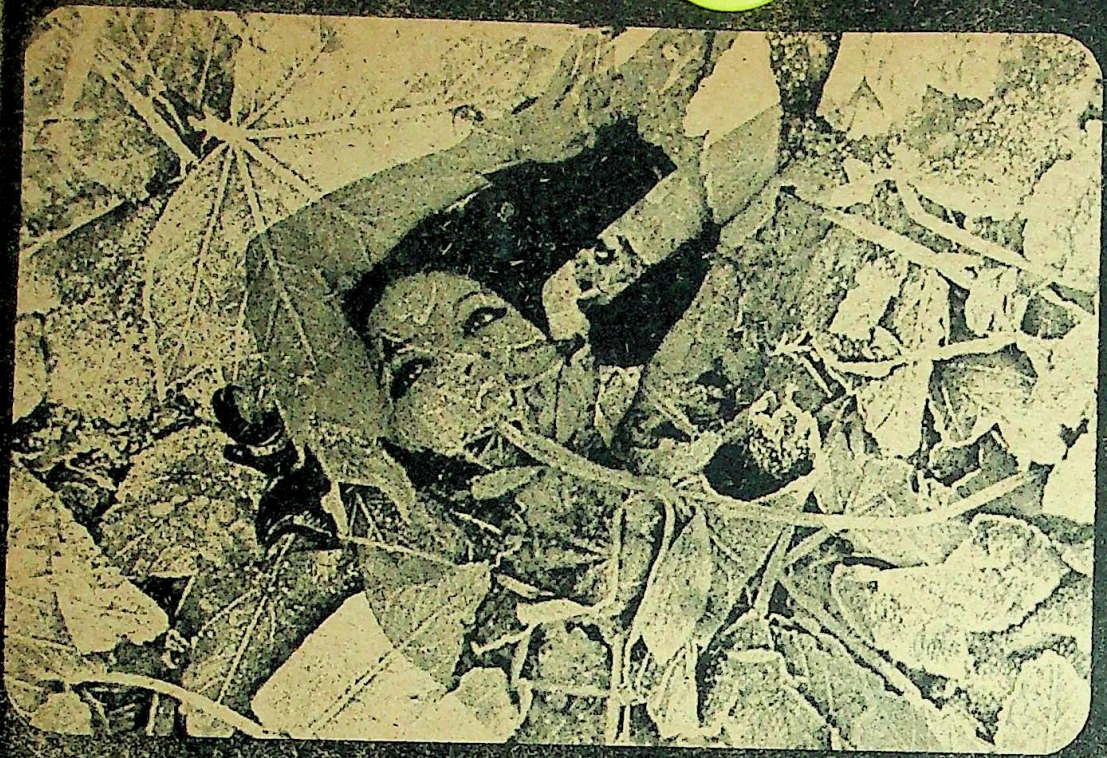

जी में आता है कभी कभी
बहारों के साये से निकल कर
खिज़ाँ के दौर में कदम रखें
बेफ़िक्र खड़े देखें शाखों से
बिछड़ना पत्तों का
और कभी खामोशी से
गिरना-बिखरना पत्तों का
दुनिया के फ़िक्र से आज़ाद
कपड़ों की कैद से भी आज़ाद
चलो जाएं बहुत दूर जहाँ
मिलते हैं ज़मीनो आसमाँ
उन आज़ाद आवारा पत्तों पर
एक नाम लिखा हो अपना भी
इक याद तुम्हारी साथी हो
कुछ सच हो और कुछ सपना भी !

नवसारी शर्टिंग्स
अनोखा एहसास

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जवानी आई तो मुहांसे भी आए,
मुहांसों को फैलने से रोके,
मिटाए, चेहरे को सुन्दर बनाए

एस्कमेल*

जवानी में शरीर से अनावश्यक चिकनाई पैदा होती है जिसके कारण मुहांसों के कीटाणु फैलते हैं. एस्कमेल में दो तेज़ असर औषधियां हैं जो मुहांसों को सुखाकर ख़त्म कर देती हैं.

एस्कमेल का मुहांसों पर असर :

तोड़ने या फटने से मुहांसे फैलते हैं. इन्हें हाथ नहीं लगाना चाहिए.

साफ़ और गीली रूई पर एस्कमेल लेकर उसे सारे चेहरे पर लगाइए.

एस्कमेल त्वचा की चिकनाई दूर करती है और मुहांसों का नाश करती है.

दुनिया भर में डाक्टर मुहांसों के लिए एस्कमेल रेकामेंड करते हैं.

स्मिथ क्लाईन एंड फ्रेंच का उत्पादन
एस्कमेल* यह रजिस्टर्ड ट्रेडमार्क है.

लिटास-SKF-4B-77 H

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहनने, छूने और दिखने में—
हर पहलू से उत्कृष्ट सृजन।
अरविंद की देन।

शानदार ७ मिलों में से एक

Interpub/AM/28/75 Hin

दुकानें ● मोहन ब्रदर्स, क्लॉक टॉवर, ७५२, चांदनी चौक, दिल्ली-६ ● भँवरलाल मूथा
ड सन्स, एस.एम.एस. हाइवे, जयपुर ● बन्सल ब्रदर्स, जी. टी. रोड, नाकोदर चौक, जलंधर शहर
(पंजाब) ● चन्दूलाल दुर्गाप्रसाद, बाँकीपुर, पटना-४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अरित प्रवाह

जिस प्रकार धर्म व अध्यात्म के क्षेत्र में पुरोहित वर्ग जनता को स्वर्ग के सब्जबाग दिखा कर भुलावे में डालता है और उस की जेबें साफ करा देता है उसी प्रकार राजनीतिक क्षेत्र में नेता लोग जनता को बराबर यही कहते रहते हैं कि हमें शक्ति दो, गद्दी पर बैठाओ, देखो, हम तुम्हें क्याक्या सुविधाएं देंगे और हर प्रकार के अभाव से मुक्त कर देंगे. न कोई बेकार रहेगा, न दवादारू, शिक्षा, मकान, खानाकपड़ा इत्यादि की कमी होगी. पालने से ले कर श्मशान तक सरकार आप की अच्छी तरह देखभाल करेगी. जनता इस भुलावे में आ जाती है और इस प्रकार के सरकारवादियों को गद्दी पर बैठा देती है, यह सोच कर कि बड़ी आसानी से स्वर्ग पृथ्वी पर ही मिल गया.

परंतु होता कुछ और ही है. नेतागण शक्ति हाथ में पहुंचते ही अंधाधुंध खर्च करते हैं—आखिर उन्हें हरेक को रोटी, कपड़ा, मकान, रोजगार, चिकित्सा खेल-तमाशे—सभी तो मुहैया करने हैं. परंतु इन सब के लिए पैसा चाहिए—इस संसार में कोई भी चीज मुफ्त नहीं मिलती. अब वे रोज नएनए टैक्स लगाते हैं, जिस से माल व सेवाओं की कीमतें बढ़ जाती हैं. जब टैक्स चरम सीमा पर पहुंच जाते हैं तो वे कागजी नोट छाप कर बाजार से सामान और सेवाएं खरीदते हैं. यहां भी वही हाल होता है—कीमतें बढ़ जाती हैं, रुपए का मूल्य घट जाता है, सरकार को दिवालियापन की नौबत आ जाती है. जो सुविधाएं सरकार जनता को मुहैया करती है, वे बड़ी महंगी पड़ती हैं—इन की लागत तो जनता को ही देनी होती है परंतु यदि वह स्वयं सीधे ही खरीदती तो काफी बचत रहती. पर क्योंकि सरकारी अमला बीच में होता है, इसलिए वह सब हिस्सा बंटाता है, धन नष्ट करता है.

अभी पिछले दिनों आस्ट्रेलिया व न्यूजीलैंड में यही हुआ. वहां पिछले तीन वर्ष से वामपंथी मजदूर दलों की सरकारें थीं, जिन्होंने वही सब कुछ किया जो ऊपर बताया गया है. नतीजा यह हुआ कि कीमतें बढ़ गईं, सरकार पर बड़ा बड़ा कर्ज हो गया और दोनों देशों की मुद्राएं देशीय व विदेशी बाजारों में लुढ़कने लगीं. आस्ट्रेलिया में कुछ मंत्री विदेशों से ऋण लेने में भ्रष्टाचार करते पाए गए और देश में बड़ा आर्थिक संकट आ गया.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न्यूजीलैंड में हुए चुनाव साधारण तरीके से हुए और उस में वामपंथी मजदूर दल को हरा कर दक्षिणपंथी राष्ट्रीय दल जीत गया. आस्ट्रेलिया में भी श्री ह्विटलम के मजदूर दल को बहुत बुरी तरह मुंह की खानी पड़ी और श्री फ्रेजर का उदार दल बहुमत से जीत गया. यद्यपि यहां जिस प्रकार श्री ह्विटलम को गद्दी से गवर्नर जनरल ने बरखास्त किया था, आशा यह थी कि जनता का समर्थन उन्हें ही प्राप्त होगा. पर जनता भलीभांति समझ गई कि पृथ्वी पर स्वर्ग बिना कड़ी मेहनत किए, त्याग किए नहीं आ सकता, चाहे राजनीतिबाज कितने ही लुभावने वादे क्यों न करें.

✦

अब तक जम्मू और कश्मीर राज्य में चावल, आटा, ईंधन व बिजली जनता को सस्ते दामों पर मिलती थी, यानी लागत से बहुत कम मूल्य पर. इस का कारण यह था कि यह एक सीमांत राज्य था और पाकिस्तान वहां की जनता को बरगला सकता था. परंतु इस सस्तेपन का बोझ कहीं तो पड़ना ही था. जो घाटा होता था, वह केंद्रीय सरकार, यानी बाकी के देश की जनता उठाती थी

जब से शेख अब्दुल्ला ने मुख्य मंत्री की गद्दी संभाली है, वह इसी फिराक में हैं कि यह 'भेंट' (या रिश्वत, जो भी आप समझें) बंद करनी चाहिए और कश्मीरी जनता को आत्मनिर्भर होना चाहिए. इसलिए उन्होंने यह भेंट पहले की अपेक्षा कम कर दी है, जिस का नतीजा यह हुआ कि कश्मीर में चावल इत्यादि के भाव बढ़ गए और बाकी देश के दामों के लगभग बराबर हो गए. इस पर शेख अब्दुल्ला की काफी आलोचना हुई, जुलूस निकाले गए और सभाएं की गईं. परंतु अंत में जनता बात मान गई. जनता यदि यह समझ जाए कि सरकार अपने पास से कुछ नहीं कर सकती—वह तो केवल जनता से ही धन वसूल कर के जनता में बांट सकती है, तो बहुत सी राजनीतिक व आर्थिक समस्याओं का हल जल्दी हो जाए और वातावरण साफ रहे.

✦

पिछली 8 जनवरी, 1976 को चीन के प्रधान मंत्री और वरिष्ठ नेता श्री चाऊ एन लाई का देहांत हो गया. संसार के राजनीतिज्ञों में श्री चाऊ का बहुत ऊंचा स्थान माना जाएगा. वह राजनीतिबाज न हो कर असली अर्थ में राजनीतिज्ञ थे. उन्होंने अपने देश चीन को, एक पिछड़े, भूखे, कमजोर, गृहयुद्ध में लगे हुए राष्ट्र से उठा कर संसार की तीसरी बड़ी शक्ति बना दिया. निःसंदेह उन के पीछे श्री माओ त्से तुंग थे, परंतु राजनीति में जो लचकीलापन आवश्यक होता है और जो श्री माओ में नहीं है, श्री चाऊ में था. इसी कारण जब पिछले दिनों सांस्कृतिक क्रांति के दौरान चीन में बहुत बड़ी उथल-पुथल मची और अनेक बड़े नेता चोटी से गिरा कर धूल में मिला दिए गए, श्री चाऊ अपनी जगह कायम रहे.

श्री चाऊ की पंडित जवाहरलाल नेहरू से भी बड़ी दोस्ती थी. परंतु इस मित्रता पर 1962 में बहुत बड़ा आघात लगा जब चीनी सेनाओं ने भारत पर यकायक आक्रमण कर के भारत के एक काफी बड़े भाग पर कब्जा कर लिया. लेकिन बाद में मालूम हुआ कि यह आक्रमण इतना अप्रत्याशित नहीं था, जितना कि भारतीय जनता को उस समय बताया गया था. भारत सरकार को चीनी गतिविधि के बारे में काफी जानकारी थी, जिस का पता जनता को आक्रमण के बाद ही दिया गया. यदि पहले ही से इस के विरुद्ध मोर्चाबंदी कर ली गई होती तो भारत को इतनी बेइज्जती और इतनी हानि नहीं सहनी पड़ती.

इस विषय में इतना और कहा जा सकता है कि अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में जितनी चीन की पैरवी भारत ने की उतनी, सिवा रूस के, किसी अन्य देश ने नहीं की थी और उस पर भी चीन ने हमेशा भारत को हिकारत से देखा और आज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी देखता है. कहा नहीं जा सकता कि इस नीति में श्री चाऊ का कितना हाथ था.

✦

इस वर्ष से देश में एक नई शिक्षा प्रणाली जारी की जा रही है, जिस के अंतर्गत स्कूलों का पाठ्यक्रम बजाए 11 वर्ष के 12 वर्ष कर दिया गया है. इस प्रणाली को आम तौर से 10+2+3 कहा जा रहा है—10 वर्ष साधारण स्कूल के, 2 वर्ष उद्योग, कामधंधा सीखने के और 3 वर्ष कालिज में डिग्री प्राप्त करने के लिए.

इस नई योजना का उद्देश्य लगभग वही है जो पहले उच्चतर माध्यमिक योजना का था, जिस के अंतर्गत स्कूलों का पाठ्यक्रम 10 वर्ष की बजाए 11 वर्ष कर दिया गया था—कालिजों में विद्यार्थियों की भीड़ को रोकना और उन्हें बजाए डिग्री लोलुप बने रहने के स्कूल के बाद कामधंधे में लगा देना. अब यह सोचा जा रहा है कि विद्यार्थी स्कूल के 10 वर्ष बाद 2 वर्ष कुछ कामकाज सीख कर अपने धंधे में लग जाएगा और केवल थोड़े से व्यक्ति कालिजों में प्रवेश लेंगे.

परंतु यह योजना भी सफल नहीं होगी, जब तक कि डिग्री का मोह समाप्त नहीं होगा. आज बिना बी. ए. की डिग्री के किसी युवकयुवती की कोई पूछ नहीं होती. कहीं नौकरी नहीं मिलती, कोई काम नहीं देता, यहां तक कि बैंक कर्ज भी नहीं देते. सरकारी कार्यालयों में भी बिना डिग्री के केवल चपरासी की नौकरी मिलती है. उच्च व्यावसायिक शिक्षा में भी बिना डिग्री के प्रवेश मिल नहीं सकता है—न वकील बनने के लिए, न डाक्टर बनने के लिए, न चार्टर्ड एकाउंटेंट बनने के लिए.

इसलिए जब तक सरकार डिग्री की यह अनिवार्यता समाप्त नहीं करती, तब तक इस प्रकार की योजनाएं सिवा स्कूल अधिकारियों के लिए सिरदर्द पैदा करने और राष्ट्र का पैसा बरबाद करने के कुछ और लाभ नहीं पहुंचा सकेंगी.

आजकल भारत के संविधान में मूलभूत परिवर्तन करने की बहुत चर्चा हो रही है. कहा जा रहा है कि वर्तमान संविधान गरीब वर्ग की उन्नति में बाधा डालता है: सरकार गरीबों को राहत देने के लिए जो कदम उठाती है, न्यायपालिका उसे रद्द कर देती है. इसलिए न्यायपालिका को कानून बनाने और उन पर अमल करने की प्रक्रिया में हस्तक्षेप करने का कोई अधिकार नहीं होना चाहिए.

परंतु यह आरोप निराधार है, क्योंकि गरीबी को हटाने के लिए यह कतई आवश्यक नहीं कि आप अमीरों से उन की संपत्ति छीन कर उस का सरकारीकरण कर दें. भारत में अमीर लोग तो अवश्य हैं और गरीबों के मुकाबले उन में से कुछ का रहनसहन बहुत अच्छा है. पर यदि इन लोगों से संपत्ति छीन कर गरीबों में बांट भी दी जाए तो कितने गरीब अमीर हो जाएंगे—प्रत्येक व्यक्ति के हिस्से में कितने रुपए आएंगे? इस के साथसाथ अमीर व्यक्ति जो भी कामकाज करता है और जिस के कारण वह अधिक कमाता है वह ठप्प हो जाएगा और अंत में देश को नुकसान ही होगा.

एक बात जो आम तौर से समझी नहीं जाती, पर महत्त्वपूर्ण है: कोई भी व्यक्ति धनवान तभी बन सकता है जब वह दूसरों की कोई मांग, इच्छा या सुविधा की पूर्ति करता है. जब तक उस का माल या उस की सेवा अन्य लोग खरीदेंगे नहीं उस को कोई मुनाफा नहीं हो सकता. इसलिए जो आदमी अमीर बनता है वह दूसरों की सेवा, दूसरों की कोई जरूरत पूरी कर के ही बन सकता है. (यहां चोरीडकैती, मिलावट इत्यादि को छोड़ दीजिए, क्योंकि ये अपराध हैं और न तो इन के द्वारा कमाया हुआ धन ज्यादा टिकता है, न ऐसा करने वाला व्यक्ति).

कहा जा सकता है, आदमी अमीर मुनाफाखोरी से बनता है, टैक्स बचा कर बनता है. पर यहां भी जब तक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[illegible] नहीं उस कुछ बचत नहीं होगी और माल बिकेगा तभी जब लोग उस माल को रुपया दे कर खरीदेंगे. इस प्रकार वही व्यक्ति अमीर बन सकता है जो दूसरों से अधिक जनता की सेवा करता है---चाहे वह माल बनाताबेचता हो, चाहे वह वकालत करता हो, चिकित्सा करता हो, इंजीनियर हो या आडीटर हो, चाहे आर्टिस्ट हो या फिल्म अभिनेता हो.

हां, यह तो ठीक है कि अधिक धन बेईमानी, चोरी मिलावट आदि से भी कमाया जा सकता है, पर वहां उन्हें रोक कर, मुकदमा चला कर, सजा दे कर बंद किया जाना चाहिए. पर जो वास्तविक, सही कानूनी तौर से माल बेच कर, सेवाएं दे कर पैसा कमाए उस से धन छीनने का मतलब देश को गरीब बनाना है, अमीरी बढ़ाना नहीं.

केवल धन और संपत्ति के बंटवारे से देश समृद्ध नहीं हो सकता यह बात सरकार ने अब स्वीकार कर ली है, क्योंकि अब कहा जा रहा है "कड़ी मेहनत, अनुशासन और लगन" से ही गरीबी मिट सकती है. जब गरीबी केवल कड़ी मेहनत, अनुशासन से ही मिट सकती है तो संविधान को देश की समृद्धि में रुकावट कहना कहां तक उचित है?

✦

एक सुप्रसिद्ध जरमन स्नायु विशेषज्ञ डा. क्लोस क्लौसन के अनुसार आजकल मानव के लिए सिगरेट पीना सब से बड़ा खतरा है. उन का कहना है कि जब कोई व्यक्ति सिगरेट का कश लगाता है तो उसे कुछ राहत सी महसूस होती है. पर उसी क्षण धुआं उस के मस्तिष्क को हानि पहुंचाना शुरू कर देता है---यह धुआं खून के रासायनिक नियंत्रण को बिगाड़ देता है, जिस का सीधा असर दिमाग पर होता है.

इस के अलावा सिगरेट पीने वाला न केवल अपना नुकसान करता है, बल्कि आसपास बैठे उन व्यक्तियों को भी हानि पहुंचाता है जिन की नाक में उस [illegible] छोड़ा हुआ धुआं जबरदस्ती घुस जाता [illegible]

जिस प्रकार आप किसी के थूक [illegible] पास बैठनेचलने से घृणा करते हैं, [illegible] प्रकार यह भी आवश्यक है कि दूसरों [illegible] छोड़े हुए सिगरेटबीड़ी के धुएं से [illegible] जाए. यह धुआं भी थूक व पेशाबपख़ाने की तरह गंदगी फैला कर हानि पहुंचा[illegible] है.

✦

भारत सरकार ने नशाबंदी के अभिय[illegible] के अंतर्गत शराब बनाने वाले कार[illegible] खानों के विस्तार पर रोक लगा दी [illegible] नए कारखानों के लिए लाइसेंस देना [illegible] कर दिया है और सभी माध्यमों द्वा[illegible] शराब की बिक्री के लिए विज्ञापनों [illegible] प्रतिबंध लगा दिया है.

सरकार का यह कदम ठीक ही है---इस की बड़ी आवश्यकता भी थी, क्योंकि पिछले दस वर्षों में सरकार की ओर [illegible] शराब बनाने के उद्योग को पूरा प्रोत्साह[illegible] दिया जाने लगा था. अनेक शराब बना[illegible] के कारखानों को लाइसेंस दिए गए, सर[illegible]कारी बैंकों व वित्त निगमों से कर्ज दि[illegible] गया और पूरे प्रचार का प्रबंध किय[illegible] गया. यहां तक कि पिछले दिनों पंजा[illegible] सरकार ने सारे पंजाब व दिल्ली में [illegible] विज्ञापन पट्ट लगाए थे कि पंजाब [illegible] (जिस का अर्थ है पांच नदियां) अब एक छठी नदी बहाई जाएगी---शराब की!

सरिता की ओर से शराब बंदी का हमेशा समर्थन किया गया---सरिता [illegible] कभी भी शराब के व सिगरेट के विज्ञा[illegible]पन स्वीकार नहीं किए गए, जिन से लाखों रुपए मिल सकते थे.

शराब व सिगरेट---वेश्यावृत्ति, चोरी, डकैती, बेईमानी व अन्य आदतों के समान पूरी तरह तो कभी भी समाप्त नहीं की जा सकती; ये मानव की कमजोरियां हैं और हमेशा चलती रहेंगी. [illegible] यह तो आवश्यक नहीं कि इन्हें सामाजि[illegible] व सरकारी मान्यता या प्रोत्साहन [illegible] मिले.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

गतांक से आगे
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

1975 का हिंदी साहित्य

निजी अनुभूतियों की बासी कहानियां, कल्पना लोक में विचरने वाली कविताएं और तमाम ऊलजलूल रचनाएं—ऐसा साहित्य किस काम का जो पाठक का न मनोरंजन करे, न उसे कोई प्रेरणा दे?

लेख • सुदर्शन चोपड़ा

अनूदित उपन्यासों में इस वर्ष भी बंगला, उर्दू तथा पंजाबी उपन्यासों की ही अधिक संख्या रही, पर उल्लेखनीय बहुत कम हैं.

विमल मित्र का 'चरित्र' यह सिद्ध करने का प्रयत्न करता है कि लाख मुसीबतों के बावजूद जीवन जीने योग्य है. चाहे कोई चारा न रहे, चाहे सारे रास्ते बंद हो जाएं, फिर भी कहीं न कहीं से कोई राह निकल ही आती है, जिस पर चल कर जीया जा सके.

विमल मित्र के ही 'आजकलपरसों' तथा 'गुलजारीबाई' दो लघु उपन्यास हैं—एक प्राचीन काल की पृष्ठभूमि पर, तो दूसरा आधुनिक काल की. लेकिन दोनों में एक समानता यह है कि मानव की नियति बड़ी विचित्र है और यह विचित्रता हर युग में एक जैसी ही रही है.

प्रसिद्ध बंगला चित्रकार अवनींद्रनाथ ठाकुर के लघु उपन्यास 'शकुंतला' में चित्र अधिक सशक्त हैं. चित्रकार ने शकुंतला के जीवन की घटनाओं को अपनी तूलिका से चित्रित करने के उद्देश्य से यह छोटा उपन्यास लिखा लगता है. उपन्यास सचित्र है.

पंजाबी के प्रसिद्ध लोकप्रिय उपन्यासकार सोहनसिंह सीतल का उपन्यास 'युग बदल गया' पंजाब के विशिष्ट चरित्रों को बदलते परिवेश में चित्रित करता है.

इस उपन्यास पर गत वर्ष साहित्य अकादमी पुरस्कार भी दिया गया था.

अमृता प्रीतम का उपन्यास 'कोई नहीं जानता' एक नारी के अंतर्लोक की मार्मिक कथा कहता चलता है. अनेक स्थलों पर भावातिरेक में आंसूतोड़क भी बन जाता है.

'आंख मिचौनी' (रमेश गुप्त) एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही स्थिति से जूझते विभिन्न लोगों की कहानी है.

इस उपन्यास का हर पात्र जिंदगी की सचाइयों की सही तसवीर पेश करता है.

'बंधन मुक्ति' (रमेश गुप्त) आज की नारी के अंतर्द्वंद्व की कहानी है जो स्वावलंबन की ओर बढ़ती है, लेकिन दफ्तर में भी वह बुरी तरह छटपटाने लगती है.

एक कामकाजी दंपति की संघर्षपूर्ण कथा का इस में बहुत ही रोचक चित्रण हुआ है, जो आज की खोखली जिंदगी की परतें खोलती जाती है.

'एक बूंद सागर की' (विमल वेद) एक ऐसा उपन्यास है जो बंबई के निम्न वर्ग की सच्ची तसवीर पेश करने के साथसाथ श्रमिक समस्याओं की भी एक अपूर्व व्याख्या करता है

'लेमसू का रहस्य' (मदन मसीह) बाजार में दिनोंदिन जाली नोटों और टिकटों की संख्या बढ़ती जा रही थी. आखिर कहां से आ रहे थे ये? कौन छाप रहा था इन को? रहस्यों से भरी यह कहानी पाठक को बांधे रहती है. इस में घटनाओं का तानाबाना रोचक ढंग से बुना गया है.

जानीपहचानी कहानियां

कहानी संग्रहों में भगवतीचरण वर्मा के 'मोर्चाबंदी' में लेखक की अधिकांश ताजा कहानियां हैं जो 'सारिका' के अंकों में लगातार छपती रही थीं, परंतु कथ्य का ताजापन किसी एक भी कहानी में नहीं है.

शशिप्रभा शास्त्री के 'अनुत्तरित' में आधुनिक परिवेश पर लिखी तथा पुरानी संवेदना को सही सिद्ध करती तेरह कहानियां हैं.

'मेरी प्रिय कहानियां' पुस्तक माला के अंतर्गत इस वर्ष मात्र दो उल्लेखनीय संग्रह आए हैं. एक है रामकुमार का तथा दूसरा रमेश बक्षी का.

रामकुमार की आठों की आठों कहानियां : 'पिकनिक,' 'समुद्र,' 'जापान पेन,' 'रवा,' 'डंक,' 'चोरी,' 'रेकार्ड' तथा 'एक चेहरा' बढ़िया कहानियां हैं तथा कथा पाठकों की जानीपहचानी एवं बहुचर्चित हैं.

दर्द और संवेदना से परिपूर्ण

रमेश बक्षी की लगभग सारी कहानियां पारिवारिक संघर्षों तथा पीढ़ियों के टकराव का दर्द लिए हुए हैं. 'शबरी,' 'पिता पर पिता' तथा 'एक अमूर्त तकलीफ' छूने वाली कहानियां हैं. बक्षी की अधिकांश रचनाओं में बदलाव की तकलीफ से अधिक बदलाव को सहन कर जाने का दर्द अधिक टीसता है.

श्रीकांत वर्मा के संग्रह 'संवाद' की अधिकतर कहानियां काव्य संवेदना लिए चलती हैं. कविता की तल्खी और भावातिरेक हर कहीं दिखाई पड़ते हैं. कुल मिला कर यह आज के संवेदनशील बौद्धिक व्यक्ति की त्रासदी की कथाएं हैं.

'रथचक्र' हिमांशु जोशी का दूसरा कहानी संग्रह है, जिस की बारहों कहानियां आम आदमी की पहचान कराने का प्रयत्न करती कहानियां हैं. घर, परिवार, रिश्ते, नौकरी, मजदूरी, घुटन, टूटन आदि का यथातथ्य चित्रण इस संग्रह की कहानियों में मिलता है. दिन भर कारखाने में खटखप कर जब कोई कामगार आता है तो उसे कैसी रिक्तता का बोझिल एहसास अपने भीतर होता है या फिर पिता की मृत्यु के बाद जब कोई घर लौटता है तो उसे कैसे लगता है, ऐसी जानीपहचानी अनुभूतियां पाठक के मन में घिरघुमड़ आती है इन्हें पढ़ते समय.

नाटक भी कथा साहित्य का ही एक महत्त्वपूर्ण अंग है. पर एक लंबे अरसे तक रंगमंच के अभाव में हिंदी नाटक मृतप्राय हो चुका था, जो अब पिछले कुछ वर्षों में पुनर्जीवित हो रहा है, लेकिन धीरे धीरे.

रंगमंच की तकनीक तथा संप्रेषण के तत्त्व कुछ भिन्न होने के कारण अभी अच्छे नाटकों की यहां कमी है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्पष्ट दृश्यों, सरल व सशक्त भाषा तथा गहरे कथ्य वाले नाटक तो अंगुलियों के बराबर लिखे गए हैं.

सातवें दशक में कलकत्ता, दिल्ली, इलाहाबाद और पटना आदि नगरों में रंगमंच का नए ढंग से संगठन किया गया. कुछ कुशल रंगकर्मियों ने एक विशिष्ट दर्शक वर्ग तो तैयार कर लिया है, पर अच्छे नाटकों की कमी रंगकर्मियों और दर्शकों, दोनों को अखर रही है. यही कारण है कि हिंदी रंगमंच पर अन्य भाषाओं--बंगला, मराठी, गुजराती, कन्नड़, अंगरेजी आदि के हिंदी अनुवाद ही अधिक खेले जाते दिखाई पड़ते हैं.

आलोच्य वर्ष में प्रकाशित हिंदी नाटकों में उल्लेखनीय हैं : 'पैर तले की जमीन' (मोहन राकेश), 'तीसरा हाथी' (रमेश बक्षी), 'केंचुआ' (मुद्राराक्षस), 'अपनी पहचान' (सुदर्शन चोपड़ा), 'रस गंधर्व' (मणि मधुकर), 'व्यक्तिगत' (डाक्टर लक्ष्मीनारायण लाल) तथा 'सूर्य की अंतिम किरण से पहली किरण तक' (सुरेंद्र वर्मा).

हिंदी नाटक मृतप्राय

मोहन राकेश के अंतिम तथा अधूरे नाटक 'पैर तले की जमीन' को उन के मरणोपरांत कमलेश्वर ने पूरा किया था. इस नाटक में मृत्यु से आतंकित व्यक्तियों की बौखलाहट को चित्रित किया गया है.

रमेश बक्षी ने 'तीसरा हाथी' में मृतप्राय पुरानी पीढ़ी के प्रति नई पीढ़ी का रोष प्रकट किया है. पुरानी पीढ़ी के प्रतिनिधि पात्र पिता को लकवा मार गया है तथा नई पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करती उस की कुढ़ीचिढ़ी संतान अपने उस अधरंगमारे पिता के प्रति संचित घृणा व्यक्त करती दिखाई देती है, जो अपने परिवार को मरते दम तक अपने ही इशारों पर नचाना चाहता है. पिता मंच पर न होते हुए भी टूटते हुए परिवार की धुरी बना रहता है, परंतु संतान अपने रोगी पितृत्व का बोझ ढोने से साफ इनकार करती हुई पुरातन के प्रति नए

सेलूलाइड की दुनिया की चकाचौंध से जो साहित्यकार खुद ही पथभ्रष्ट हो गए हैं, उन से क्लासिक की अपेक्षा करना क्या कोरी कल्पना नहीं है?

के विद्रोह को सूचित करती है.

सुदर्शन चोपड़ा के 'अपनी पहचान' का मूल कथ्य यह है कि जिस क्षण व्यक्ति स्वयं को सहीसही पहचान लेगा उसी क्षण वह स्वतः ही समाप्त हो जाएगा.

मुद्राराक्षस का नाटक 'केंचुआ' आज के आदमी की बौद्धिक तकलीफ को मूर्त रूप देने का सफल प्रयास है.

डाक्टर लक्ष्मीनारायण लाल ने 'व्यक्तिगत' में समाज में पनप रहे एक ऐसे विशिष्ट वर्ग का चित्रण किया है, जो धन के आधार पर अपनी हर इच्छा पूरी कर लेना संभव समझता है, तथा अपनी कोई भी इच्छा अपूरित रहने देना उसे गवारा नहीं.

सुरेंद्र वर्मा ने 'सूर्य की अंतिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक' में मानवीय संपर्कों को बड़ी गहराई में डूब कर देखने विश्लेषण की कोशिश की है. इस नए नाटककार में अत्यधिक संभावनाएं दिखाई देती हैं. लगता है, भावी हिंदी रंचमंच को जिस प्रकार के नाटककार की तलाश थी, वह सुरेंद्र वर्मा ही सिद्ध होंगे.

हिंदी काव्य का तो जैसे अब युग ही बीत चला दिखाई देने लगा है. इस क्षेत्र में तीन अतियां दिखाई देती हैं.

(1) अध्यात्म के अंधकार में खो गए बचेखुचे इक्कादुक्का पुराने कवि, (2) साहित्य क्षेत्र में प्रवेश कर रहे अति भावुक स्वर अथवा भावुकता को सयत्न बुहार फेंकने का नाटक करते अत्याधुनिकता प्रदर्शित करते कवि, तथा (3) कवि सम्मेलनीय कवि जो लगभग सारे के सारे फिल्मी संसार में सरक गए.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में से तीसरी कोटि के लोगों को तो आलोच्य वर्ष में कोई संकलन नहीं आया, क्योंकि वे अतिव्यस्त रहे फिल्मी संगीतकारों के लिए बोल उपलब्ध कराने में. और पहली कोटि के कवियों में से लेदे कर मात्र एक ही जीवित हैं, जिन का नाम है सुमित्रानंदन पंत.

'सत्यकाम' : निरर्थक प्रयास

पंतजी का नूतन प्रबंध काव्य 'सत्यकाम' एक तपस्वी की भावनाओं को अतुकांत वाणी देने का एक निरर्थक काव्य प्रयास है, उन की पहली काव्य कृतियों से भी अधिक ऊलजलूल और बेमानी बकवास. काव्यांश उद्धृत कर के मैं अपने पाठकों को अधिक बोर नहीं करना चाहता. मात्र उन के इस प्रबंध काव्य की भूमिका के कुछ अंश यहां दे रहा हूं :

"वैदिक युग का यह काव्य अपने उन्मेषों, प्रेरणाओं तथा विचार भावनाओं की चैतसिक उन्मुक्तता में उन्मुक्त छंद के पंखों पर ही सहज, स्वाभाविक तथा मर्मस्पर्शी उड़ान भर सकेगा. इस दृष्टि से मैं ने इस में तुकांत चरणों का प्रयोग उचित नहीं समझा है. सत्यकाम मूलतः धरती के जीवन का काव्य है, सच्चे अध्यात्म की परिणति, जैसा कि स्वामी विवेकानंद भी कहते थे...भारतीय परंपरावादी मनीषा को धरती के स्तर पर उतरने के लिए अनेक वैचारिक सोपानों की सहायता लेनी पड़ी है, जो इस काव्य में एक अनिवार्य एवं स्वाभाविक श्रृंग बन गए हैं. सत्यकाम में साधना का सत्य तथा काव्य का सत्य तदात्कार हो गए हैं. कथा भाग का कृश मुख्यतः छांदोग्य उपनिषद से लिया गया है, जिस के अनुसार सत्यकाम निर्जन में तृष, अग्नि, हंस और मद्गु चार देवों से भी दीक्षा लेता है. शेष कल्पना तथा अनुभूति प्रसूत है."

पहले तो आप यह बताइए, इस कवि की गद्य भाषा में लिखी गई भूमिका से आप के पल्ले कुछ पड़ा? या कि आप यही पूछते रह जाएंगे कि यह किस देशप्रदेश की भाषा है? दूसरे यह कि मान लें भाषा आप शब्दकोष की सहायता से समझ भी लें तो यह कवि महाशय इस भूमिका के माध्यम से जिस काव्य कथ्य को समझाना चाहते हैं वह काव्यपाठ के उपरांत भी क्या आप के पल्ले कुछ डाल सकेगा? कम से कम मेरे पल्ले तो कुछ नहीं पड़ा. यह पूरा प्रबंध काव्य पढ़ कर हो सकता है, आप इस वैदिक प्रसंग से कोई नया विचार पा जाएं.

अक्षय जैन के कविता संग्रह 'काला सूरज' में एक जूझ है, जिजीविषा है. कवि कहता है, 'मृगतृष्णा के सामने क जाना स्थितियों से असंयुक्त हो जाना है. 'मातमपुरसी' तथा 'भ्रष्टाचार' शीर्षक कविताएं बहुत अच्छी बन पड़ी हैं.

संवेदना के साक्षी या भटकाव

केदारनाथ कोमल के संग्रह 'कोहरे से निकलते हुए' में से मात्र ये पंक्तियां ही उद्धृत कर देना काफी है, "शब्दशब्द में सुलगती है आग, जवान खयालों के जिस्म पर कितने भद्दे लगते हैं आदेशों के दाग."

सोहन शर्मा का संग्रह 'विकल्प के पक्ष में' कवि की सन 72 से 75 तक की कविताएं हैं. इस की सब से सशक्त कविता है 'बुरादे का आदमी.'

बलभद्रसिंह सुलभ के संग्रह 'समुद्रगा' की सारी कविताएं सामान्य होते हुए भी पठनीय हैं, विशेष रूप से 'तुम और ये.'

नवाबसिंह चौहान के संग्रह 'बुझा न दीप प्यार का' की कविताएं पढ़ कर छायावादी युग की याद ताजा हो जाती है. 'चाह तो है ढूंढ़ लें है प्रेममय संसार सारा' और 'मैं प्रिय...मरने का अरमान लिए फिरता हूं,...'मुसकान लिए फिरता हूं,' या फिर 'तुलसी के राम कहां, सूर के श्याम कहां,' आदि उदाहरण ही कवि की संवेदना के पर्याप्त साक्षी हैं.

इस संवेदना की तुलना में प्रस्तुत है आज की युवा पीढ़ी के प्रतिनिधि कवियों संकलन 'परिवेश' (स. कृष्णकुमार शर्मा)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में संकलित 54 कवियों में से कुछ चुने हुए कवियों की एकएक दोदो पंक्तियां.

'आज के सवालों को अनजाने कल पर हम यों कब तक टालते रहें' (देवेंद्र शर्मा 'इंद्र'), 'शर्मनाक शर्तों पर समझौता कर न सके, इस कारण पीछे को छूट गए हम' (इसाक 'अश्क'), 'राहों में शीशे, ऊपर तनी सलाख, कहांकहां दृष्टियां गड़ाएं हम' (महेश्वर तिवारी), 'वही कुहासा वही अंधेरा, वही दिशाहारा सा जीवन, इतिहासों की अंधशक्तियां जाने हमें कहां ले जाएं' (प्रेम शर्मा), 'बिछावन भी छोटे, फिर कैसे ओढ़ें हम रेशमी मुखौटे' (इंदु कौशिक), 'कभी नहीं सोचा था उम्र चढ़ी आजादी टांगेगी आदमी सलीब पर' (विद्यानंदन राजीव).

'खून हो गया पानी खंडखंड जीने में' (नारायणलाल परमार), 'मन पर बीते वर्षों का संताप गठरी सा बंधा इकट्ठा है, ढोना जिसे न ठट्ठा है' (छंदराज), 'जीवन ऐसे जिया रख दिया तूफानों में दिया' (रीता चौधरी), 'बे मौसम गंधाते शब्दों का क्या करूं, अर्थ कहीं भीड़भरे जंगल में खो गया' (सुरेश किसलय), 'बेच दिए हम ने जितने हम से संबंध बिके' (सुरेंद्रकुमार 'श्लेष').

'अर्थ रख कर भी हम व्यर्थ हैं आजकल' (कुंवर बेचैन), 'आशियां ने आग छू ली और हम खामोश हैं, दर्द तिनके का किस से कहें हम?' (चैतन्य), 'अर्ध सरकारी कैलेंडर सा आज का हर आदमी वक्त की दीवार पर लटका हुआ' (रामकुमार कृषक), तथा 'तेज धूप खा गई हर कली, तपिश ने झुलस दिया हर गुलाब' (पूनम).

इन कविताओं की संवेदना आज के व्यक्ति की सही संवेदना है, जो सहज रूप से व्यक्त हुई है.

रावण एक व्यक्तित्व

सन 1975 में प्रकाशित विविध विषयक साहित्य में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण पुस्तक है. 'हिंदी प्रबंधकाव्य में रावण' शीर्षक एक शोध प्रबंध (डाक्टर सुरेशचंद्र निर्मल) [illegible] सब से बड़ी विशे[illegible] रावण संबंधी आम[illegible] बार तर्क और प्रभा[illegible] हुआ है. लेखों और [illegible] 'सरिता' ने ही इ[illegible] थी, परंतु व्यापक [illegible] प्रयास पहली बार इसी शोध प्रबंध के माध्यम से हो पाया है. शोधकर्ता ने प्राचीन तथा आधुनिक साहित्य के साक्ष्यों के आधार पर ही रावण के व्यक्तित्व को सहीसही रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया है.

सीताहरण में अनुचित क्या?

रामरावण विरोध के मूल कारण तीन हैं. (1) राम अथवा उन के इंगित पर लक्ष्मण द्वारा हुआ शूर्पणखा का घातक अपमान, (2) रावण द्वारा किया गया सीता हरण, (3) राम के हाथ से मर कर मोक्ष प्राप्त करने की रावणेच्छा.

इन तीनों कारणों का सांगोपांग विश्लेषण कर के लेखक ने इन तीनों पक्षों की सारी भ्रांतियां दूर कर दी हैं.

अपनी बहन के अपमान का बदला लेने के लिए रावण ने सीताहरण किया, इस तरह पहला और दूसरा कारण संबंधित है. लेकिन जहां तक शूर्पणखा के अपमान का संबंध है, वहां राम और लक्ष्मण दोषी ठहरते हैं. क्योंकि उस काल में स्त्री स्वातंत्र्य को देखते हुए शूर्पणखा का प्रणय निवेदन कतई नैतिक था.

विश्वास ही विश्वास

अनजाने आदमी पर विश्वास करना और जाने हुए योग्य पुरुष पर संदेह करना ये दोनों बातें एक समान अनंत आपत्तियों का कारण होती हैं.

—तिरुवल्लुवर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में से तीसरी करीति राम द्वारा यह झूठ आलोच्य वर्ष में कि लक्ष्मण अविवाहित है, क्योंकि वे के पास जाओ, सर्वथा अनैतिक कारों कोर फिर शूर्पणखा की नाक काट और न केवल अनैतिक कृत्य था, बल्कि अपराध भी था. इस के अतिरिक्त खर-दूषण सहित चौदह हजार रावणसेना का संहार भी राम ने किया. इस प्रकार अपनी बहन के अपमान तथा अपनी सेना के संहार को न सह कर यदि रावण ने प्रतिशोध की भावना से सीताहरण किया तो कौन सा पाप किया?

और जहां तक राम के हाथों मर कर रावण की मोक्ष प्राप्ति की इच्छा का प्रश्न है. वह मात्र रामभक्त तुलसी की निराधार तथा असामाजिक कल्पना है, और कुछ नहीं.

पुरोहित निर्मित राम वनगमन योजना

वास्तव में रामरावण बैर के मूल कारण दो थे. पहला तो ऊपर बता चुके हैं और दूसरा था सांस्कृतिकराजनीतिक. लेखकानुसार कहें तो यह कि रामरावण युद्ध में दो भिन्न संस्कृतियों की परंपरागत पारस्परिक बैर भावना कार्य कर रही थी. महर्षि अगस्त्य, विश्वामित्र और वशिष्ठ जैसे आर्य कवि पहले से ही इस की भूमिका और योजनाएं तैयार कर चुके थे.

माना तो यह गया है कि राम वनगमन तथा रामरावण युद्ध की योजना पुरोहितों द्वारा बनाई गई थी. राम वनगमन से पूर्व ही यह वर्ग अगस्त्य की अध्यक्षता में ब्राह्मण संस्कृति यानी आर्य संस्कृति के प्रचारकों का एक समूह दक्षिण भेज चुका था, जो जगहजगह आश्रम बना कर अपनी संस्कृति का प्रचार कर रहा था. अब तो बस राम को दक्षिण लाने की देर थी. अतः वे शीघ्र ही उसे वन भेजना चाहते थे.

गुरु वशिष्ठ अयोध्या में इस योजना का संचालन करने वालों के अगुआ थे. यहां पर यह बात भी गौर करने की है कि ये तथाकथित अहिंसावादी ऋषिमुनि शुरू से आखिर तक युद्ध के हथियारों और सैन्य प्रशिक्षण के द्वारा राम को लड़ाई के लिए तैयार करते रहे. अयोध्या में विश्वामित्र, वशिष्ठ, भारद्वाज, शरभंग, सुतीक्ष्ण, जग्नि और अगस्त्य आदि सब के सब इस भीषण षड्यंत्र में शामिल थे.

राम का अपनी सौतेली मां के चाहने पर वनगमन, सीता और लक्ष्मण का उन के संग जाना, और वनवास के लिए वन भी दक्षिण भारत का ही चुनना (जब कि और इलाकों के वनों की बनिस्बत दक्षिण भारत के वन कहीं अधिक खतरनाक थे) आदि सब कुछ किसी पूर्व-नियोजित कार्यक्रम के ही अंग थे. और यह कार्यक्रम तैयार किया था आध्यात्मिक क्रांति के प्रवर्तक आर्य ऋषियों ने. वे दक्षिण में आर्य सभ्यता प्रचारित कर अनार्य रावण के राज्य विस्तार को रोकना चाहते थे.

नई उपलब्धियां

'हिंदी बंगला नाटक' नामक एक पुस्तक (डाक्टर माहेश्वर) एक अन्य महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है इस वर्ष के समीक्षात्मक साहित्य की. इस में किया गया तुलनात्मक अध्ययन पहली बार हिंदी और बंगला के नाट्य साहित्य को समग्र रूप से पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करता है.

'बुरे फंसे' (डाक्टर बरसानेलाल चतुर्वेदी) में पंदरह सुंदर व्यंग्य लेख संकलित हैं. लेखों के विषय सामाजिक हैं, शैली चुस्त और भाषा सहज है.

'सामाजिक विघटन' (कृष्णदत्त भट्ट) में संसार भर में फैले सामाजिक बिखराव के कारणों का विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है. इस बिखराव में भारत की स्थितियों का भी यथातथ्यपूर्ण चित्रण विवेचन किया गया है. समाजशास्त्रीय अध्ययन को आगे बढ़ाने वाली यह पुस्तक अत्यंत उपयोगी है.

'लहरों के राजहंस : विविध आयाम' (जयदेव तनेजा) में मोहन राकेश के नाटक 'लहरों के राजहंस' की सृजन-प्रक्रिया से ले कर उस के प्रस्तुतीकरण तक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की ब्योरेवार समीक्षा प्रस्तुत की गई है. किसी एक साहित्यिक कृति पर पूरी एक पुस्तक लिखने की यह परंपरा स्वस्थ है. इस से कृति की सर्वांगीण विवेचना संभव हो जाती है.

'अमीर खुसरो : भावात्मक एकता के अग्रदूत' (सं. डाक्टर मलिक मुहम्मद) खुसरो के व्यक्तित्व और कृतित्व पर विचारपूर्ण लेखों का सुंदर संकलन है. इस में पैंतीस लेख हैं, जिन्हें चार खंडों में बांटा गया है. प्रायः लेखों की दृष्टि शोधार्थी है.

'चार चित्रकार' (अशोक मित्र) में रवींद्रनाथ ठाकुर, गगेंद्रनाथ ठाकुर, अवनींद्रनाथ ठाकुर तथा यामिनी राय के सृजन का गंभीर विवेचन किया गया है.

'कथा साहित्यः मेरी मान्यताएं' (डाक्टर देवराज उपाध्याय) में अंतर्मन के आधार पर तथा देशकाल की सीमा से ऊपर उठ कर रचनाकार के मन के संदर्भ में चर्चा की गई है. इस प्रकार इसे मनोवैज्ञानिक समीक्षा ग्रंथ भी कह सकते हैं.

'हिंदी उपन्यासः एक नई दृष्टि' (डाक्टर इंद्रनाथ मदान) में पिछले चालीस वर्षों में लिखे गए उपन्यासों के परिवर्तित स्वरूपों की चर्चा है.

'सेतु निर्माता' (यशपाल जैन) में ऐसे लोगों के संस्मरण संकलित किए गए हैं जिन्होंने किसी न किसी प्रकार से किन्हीं दो देशों के बीच पुल का काम किया हो.

'वातायन' (शिवानी) संस्मरणात्मक लेखों का संग्रह है. लेखों के विभिन्न विषय हैं, जैसे साहित्य, फैशन, राजनीति, आडंबर, धार्मिक अनाचार आदि.

'दिल्ली की रोमांचक सत्यकथाएं' (राधेश्याम गोस्वामी) में सच्ची कहानियों के माध्यम से दिल्ली के इतिहास को प्रस्तुत किया गया है. हर कहानी इतिहास की एक जीतीजागती तसवीर है.

'अंतरा' (अज्ञेय) में फुटकर विचार

यह किस देशप्रदेश की भाषा है?

इस स्तंभ में जनजीवन से दूर, उलझी हुई व कठिन भाषा के नमूने प्रकाशित किए जाते हैं ताकि हिंदी को बेजान व किताबी भाषा बनने से रोका जा सके. प्रकाशित उद्धरणों पर दस रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाती हैं. कृपया उद्धरण के साथ प्रकाशक का नाम, प्रकाशन का वर्ष तथा पृष्ठ संख्या भी लिखें.

—संपादक

"प्रियतम! अयि मनमानस, लोकनिवासिनि, प्रेमप्रतिमे! कविशिरोमणि, कविताकामिनी, कांत कवियों ने जिस के विराट वैभव को अपने सुमधुर स्वरों में व्यक्त किया है ऐसे इस जनमनरंजन प्रभात के समय का यह पीताभ शशि, मानो परकीया नायिका, शर्बरी के साथ, इच्छापूर्वक विहार कर लेने के बाद मंदमंद गति से कलंक रूप अंजन जावकादि धारण किए, स्वकीया प्रतीची के यहां जा रहा है. उषा सखी व्यंग्य से दीप दिखला रही है."

मोहनलाल महतो 'वियोगी' : कवि (प्रेषक : उमेशप्रसाद वर्मा, दरभंगा)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संकलित है—कहीं की पूर्व-कृति, कहीं की तरह के. विचारों के छोटेछोटे टुकड़े कहींकहीं गद्य काव्य का स्वाद देते हैं.

'भारतीय संस्कृति' (डाक्टर राजकिशोर सिंह) में सिंधु संस्कृति, महाकाव्यकालीन संस्कृति, पौराणिकयुगीन संस्कृति, मौर्यकालीन संस्कृति, गुप्त-कालीन संस्कृति आदि कालखंडों का सांस्कृतिक विवेचन प्रस्तुत किया गया है.

'अपराधिकी' (बदरीनारायण सिन्हा) में अपराधों के विभिन्न कारणों तथा मानव की स्वाभाविक प्रवृत्तियों आदि की उपयोगी तथा ज्ञानवर्द्धक चर्चा की गई है.

उपयोगी साहित्य

'भारतीय चलचित्रों का इतिहास' (फिरोज रंगूनवाला) में न केवल फिल्मों का इतिहास, बल्कि समीक्षात्मक मूल्यांकन भी प्रस्तुत किया गया है.

'चंद सतरें और' (अनीता राकेश) में पत्नी के संस्मरण हैं—दिवंगत पति तथा साहित्यकार मोहन राकेश से संबंधित.

'अपोलो का रथ' (श्रीकांत वर्मा) में यूरोप यात्रा के संस्मरण हैं.

'भटकता राही' (आलोक भट्टाचार्य) एक यात्रा संस्मरण है. लेखक ने अमरीका, स्पेन तथा अन्य कई देशों की यात्रा के दौरान हुए खट्टेमीठे अनुभवों को कलमबद्ध कर के ऐसी तसवीर पेश की है कि पाठक को लगता है, वह खुद यात्रा कर रहा है.

'प्रेम, विवाह और सेक्स के प्रति बदलते हुए दृष्टिकोण' (डाक्टर प्रमिला कपूर) एक स्वस्थ समाजशास्त्रीय विश्लेषण है.

'युवतियों से' (सावित्रीदेवी वर्मा) में यह बताया गया है कि किस तरह से युवतियां पति, पुत्र, सास और घर के अन्य प्रियजनों के प्रति भूमिकाएं निभाएं. रोचक उद्धरणों के माध्यम से लेखिका ने पुस्तक को और भी उपयोगी बना दिया है.

बाल साहित्य

बाल साहित्य के नाम पर इस भी अधिकतर स्तरहीन साहित्य अधिक छपा है. नई पीढ़ी के बच्चों पुस्तक प्रेम पूर्वापेक्षा कहीं अधिक है. अतः उन की रुचियों को विकृत करने वाली जासूसी या परीकथाएं आदि दे कर ज्ञानवर्द्धक और प्रेरक पुस्तकें अधिकाधिक प्रकाशित होनी चाहिए, क्यों कि यही वह स्थल है जहां बांध लगा कर घटिया साहित्य की बाढ़ को रोका जा सकता है.

बालमन को अगर हम ने जासूसी आदि घटिया किस्से कहानियां पढ़ने का चस्का लगा दिया तो यही बच्चे बड़े हो कर मात्र रोमांचकारी विकृत कथाएं ही मांगेंगे. और अगर हम उन्हें इसी उम्र में सोचविचार के माध्यम से मनोरंजन करने की आदत डाल देंगे तो निश्चय ही वे बड़े हो कर विचारपूर्ण साहित्य की मांग करेंगे.

उल्लेखनीय बाल उपन्यास

आलोच्य वर्ष में उल्लेखनीय बाल उपन्यासों में हैं वीरकुमार अधीर के उपन्यास 'अंदर की दुनिया,' 'टाफियों का पेड़,' तथा 'एक घंटे बाद'. इन में से भी 'अंदर की दुनिया' अच्छा उपन्यास है. इस में एक ऐसे बालक की मानसिक स्थिति का चित्रण किया गया है जिसे आईना छूने से मना कर दिया जाता है.

मना किए जाने पर वह आईने के भीतर का संसार देखने को उत्सुक हो जाता है. वह आईने में प्रवेश कर जाता है—कुछ इस तरह से जैसे कोई अपने मन में झांक कर अपने भीतर के संसार में दाखिल हो जाए. आदमी के अंदर के आईने के अक्स उभार कर यानी मनोवैज्ञानिक ढंग से अनेक महत्त्वपूर्ण बातें बड़ी ही सरल, सुबोध भाषाशैली में कह डाली गई हैं.

बच्चों के लिए अन्य महत्त्वपूर्ण उपन्यास हैं—सुशील कपूर के 'शुक्र की खोज' तथा 'आदमी की कहानी.' दोनों ही उपन्यास बहुत ही सरल और रोचक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शैली में लिखे गए हैं.

'शुक्र की खोज' में अंतरिक्ष में अपने विमान के साथ भटक गए एक वैज्ञानिक के खोज की कहानी है, जिसे लापता और मृत घोषित कर दिया गया था. दीपू नाम का एक बालक अपने मंगलवासी मित्र के साथ किस तरह अंतरिक्ष से उन्हें ढूंढ़ लाने में सफल हो जाता है—इसी का वर्णन इस उपन्यास में बहुत आकर्षक ढंग से किया गया है.

अपने दूसरे उपन्यास 'आदमी की कहानी' में लेखक ने आदमी के विकास और उन्नति की कहानी बहुत ही सरल ढंग से लिखी है.

'सम्राट चंद्रगुप्त' (राधेश्याम गोस्वामी) एक ऐतिहासिक उपन्यास है. इस में चंद्रगुप्त मौर्य की रोचक कथा है, जिस ने संपूर्ण भारत पर राज्य किया था. बच्चों के लिए यह पुस्तक बहुत ही उपयोगी और ज्ञानवर्धक है.

प्रेरक बाल कहानियां

'पंचतंत्र' (विष्णु शर्मा) की कहानियां उद्देश्यपूर्ण, मनोरंजक होने के साथ-साथ शिक्षाप्रद भी हैं. बच्चों के लिए ही नहीं, बड़ों के लिए भी यह पुस्तक उपयोगी है.

बाल कथाओं के संकलनों में आलोच्य वर्ष की उपलब्धि है 'सुनो बच्चो अपनी कहानियां' (बलबीर त्यागी). इस संग्रह में पंदरह कहानियां हैं. सभी कहानियां एक से एक बढ़ कर रोचक, प्रेरक और ज्ञानवर्धक हैं.

बालगीत संकलनों में उल्लेखनीय हैं 'दादी अम्मा मुझे बताओ' (बालस्वरूप राही) तथा 'सुमन बालगीत' (डाक्टर शेरजंग गर्ग). ये दोनों 'नर्सरी टाइम्स' यानी शिशु गीतों के संकलन हैं. इन में बड़े ही प्यारेप्यारे तथा बच्चों को बहलाने-रिझाने के साथसाथ ज्ञान बढ़ाने वाले गीत हैं.

'आजादी का गीत' (निरंकारदेव सेवक) में भी बच्चों की जुबान पर झट चढ़ जाने वाले प्यारे प्रेरक गीत हैं.

'बालोपयोगी चिट्ठियां' (प्रयाग) में रोचक पत्रों द्वारा बच्चों को अनेक विषयों की जानकारी बड़े ही रोचक ढंग से देने का सफल प्रयास किया गया है.

अंत में हम इस लेखमाला का समापन करते हुए एक बात का स्पष्टीकरण कर देना आवश्यक समझते हैं कि जिन पुस्तकों का उल्लेख हम ने किया है केवल वे ही उल्लेखनीय हैं, जो छूट गई हैं वे निकृष्ट हों, ऐसी बात नहीं.

गत वर्ष प्रकाशित साहित्य की विभिन्न प्रवृत्तियों का विश्लेषण प्रस्तुत करना ही हमारा मुख्य उद्देश्य रहा. हमें आशा है, आम हिंदी पाठक को वास्तविक स्थिति से परिचित कराने में यह विश्लेषण सहायक सिद्ध होगा. ●

"यदि पति से झगड़ा हो गया तो मायके जाने की क्या जरूरत है? तुम उन्हें जो सब्जी पसंद न हो, वह खिलाखिला कर बोर क्यों नहीं करतीं?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेख • सुरेश किसलय

भक्ति

जीवन से पलायन का दूसरा नाम

किसी चमत्कारपूर्ण ढंग से फल प्राप्त करने की इच्छा से किसी के प्रति अंधविश्वासपूर्ण श्रद्धा रखने को भक्ति कहते हैं. चमत्कार से तात्पर्य है कर्म किए बिना किसी फलप्राप्ति की लालसा. दरअसल भक्ति कामचोर व्यक्तियों का दर्शन (फलसफा) है जिस का जन्म अकर्मण्यता एवं शक्तिहीनता से होता है.

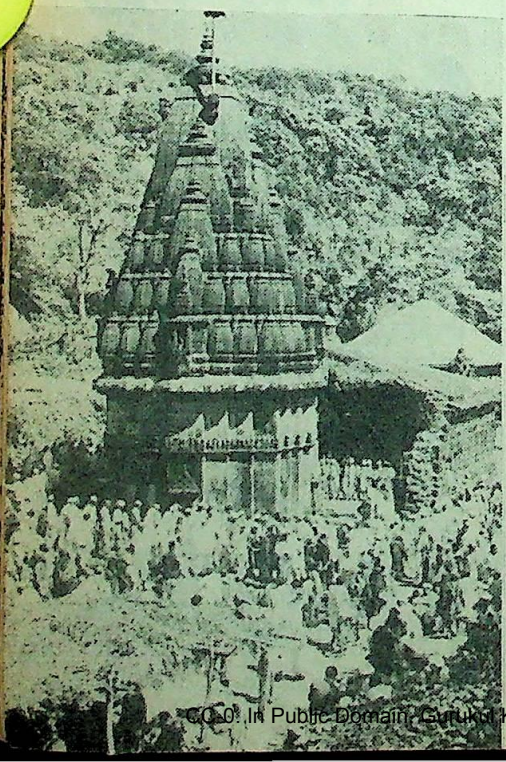

इतिहास साक्षी है, जब भी भारतीयों को पराजय के दिन देखने पड़े हैं भगवान के प्रति उन की निष्ठा बढ़ी है. हिंदी साहित्य का तथाकथित साहित्यिक दृष्टि से स्वर्णकाल (भक्तिकाल) इस का साक्षी है.

भक्ति एक प्रकार की पिनक है, जो लत लग जाने पर आसानी से नहीं छूटती. सत्संगों में बैठने, धूनी रमाने, ध्यान लगाने, पूजा करने में भी एक प्रकार का आनंद आता है जो कि उतना ही नकली है जितना कि एल. एस. डी. भांग, चरस, अफीम आदि का नशा.

ठीक इन्हीं नशों की तरह भक्ति के नशे में भी आदमी का संबंध वास्तविक जगत से छूट जाता है और वह दिवा-स्वप्नों की खयाली दुनिया में विचरण करने लगता है.

कपोलकल्पित पुराण कथाएं, रामायण आदि उसे वास्तविक लगने लगती हैं. आज से करोड़ों साल पहले घटी घटनाओं को वह प्रत्यक्ष देखना शुरू कर देता है और एक काल्पनिक बैकुंठ में जाने की तैयारी करना शुरू कर देता है.

मंदिर के मुख्यद्वार पर भक्तों की भीड़ : क्या भक्ति कर्मविमुख व्यक्तियों का दर्शन नहीं है?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

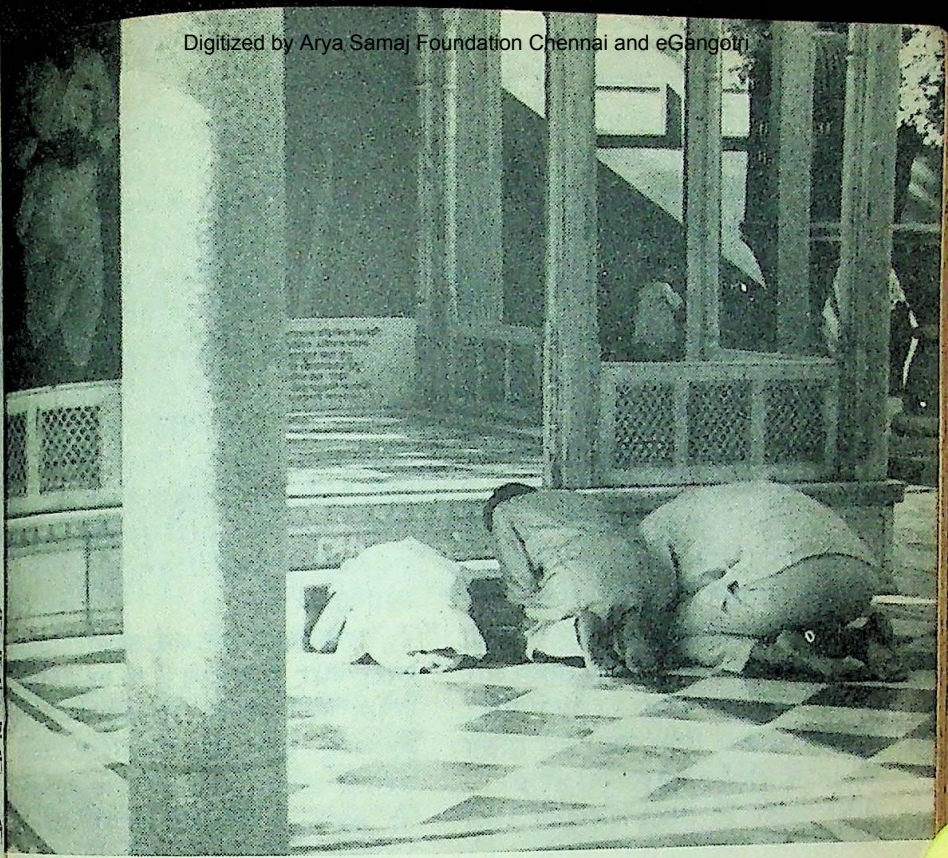

मंदिर में माथा टेकते हुए भक्तजन : बिना कर्म किए फल की कामना करना क्या आज की समस्याएं हल कर देगा?

इस प्रकार भक्ति एक प्रकार से दृश्य जगत से अदृश्य जगत की ओर मूर्खताभरी छलांग है.

भक्ति के दो आवश्यक उपकरण हैं—भक्त और इष्ट. भक्त और इष्ट के बीच पंडेपुरोहितों की भूमिका दलाल अथवा कमीशन एजेंट जैसी है.

भारत में मंदिर एक ऐसा व्यवसाय है जिस में कभी मंदी नहीं आती, बल्कि दिन ब दिन तेजी और उछाल आता है. भक्तों की कतारें बढ़ती जाती हैं और उसी अनुपात से मंदिरों का विस्तार होता रहता है. अन्य दुकानों की ही तरह जो मंदिर जितना तड़कभड़क वाला तथा विशाल होगा अथवा जिस का प्रचार एवं विज्ञापन अधिक होगा उस की उतनी ही अधिक आमदनी होगी.

यही कारण है कि एक ही भगवान होने के बावजूद कुछ मंदिरों में भीड़ बहुत कम होती है, तो कुछ में इतनी अधिक कि पुलिस की व्यवस्था के बावजूद लोग कुचल कर मर जाते हैं.

आप अकसर मंदिरों में पूजा के लिए जाते होंगे. पर क्या आप ने कभी सोचा है कि मंदिर का निर्माण कैसे हुआ? इसे किस ने बनाया? संभवतः नहीं. आप तो बस जाते हैं और माथा टेक कर लौट आते हैं. कम से कम आप इतना तो जानते ही होंगे कि मंदिर भगवान ने तो नहीं बनाया.

दुकान की ही तरह मंदिर का निर्माण करवा कर उसे चलवाना एक कला है, जिसे कुशल व्यापारी ही जानते हैं. पहले कुछ लोग मिल कर मौके की जगह ढूंढ़ते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं उस के बाद किया यह जाता है कि कोई पुरानी सी मूर्ति अथवा लिंग जमीन में चने के दानों के साथ गाड़ दिया जाता है. उसे पानी देते रहने से धीरेधीरे मूर्ति बाहर निकलने लगती है. तब एकदम धुआंधार प्रचार किया जाता है कि अमुक स्थान पर भगवान प्रकट हुए हैं.

भक्तों एवं अंधश्रद्धालुओं की भीड़ उमड़नी शुरू हो जाती है और चढ़ावा चढ़ने लगता है. धीरेधीरे मंदिर का फर्श पक्का होने लगता है और उस पर छोटा सा चंदोवा तान दिया जाता है, फिर कुछ तिलकधारी पंडित मोटेमोटे सेठों के पास चंदे की रसीदें ले कर जाते हैं. सेठों में आपस में धन देने की एक प्रकार की प्रतिस्पर्धा उत्पन्न कर दी जाती है.

नतीजा यह होता है कि धन का अंबार लग जाता है. हर हफ्ते सत्संग और कीर्तन करवा कर जनता का ध्यान मंदिर की ओर आकृष्ट किया जाता है. सत्संग के अंत में मंदिर की दुरावस्था पर प्रकाश डाला जाता है. भक्त श्रद्धापूर्वक अपने बच्चे के पेट से रोटी काट कर धन [illegible] शुरू कर देते हैं. देखते ही देखते मंदि[illegible] एक की जगह बीसों मूर्तियां हो जा[illegible] और वहां एक भव्य प्रासाद बन जाता[illegible]

धीरेधीरे मंदिर के महात्म्य को [illegible] मनोवैज्ञानिक तरीके से प्रचारित कि[illegible] जाता है, जैसे कि अमुक के बच्चे [illegible] होते थे उस ने अमुक मंदिर में जा [illegible] मन्नत मांगी तो उस की मुराद पूरी [illegible]

भारत अभावों का देश है. यहां [illegible] कौन है जिस की मुराद पूरी हुई [illegible] लिहाजा मुरादेंमन्नतें मांगने वालों [illegible] भीड़ बढ़ने लगती है और मंदिर स्थापि[illegible] करने वालों की चांदी हो जाती है [illegible] इस प्रकार मंदिररूपी दुकान पूरी त[illegible] स्थापित हो जाती है.

कुछ दिनों बाद जब सरकारी अ[illegible] कारी उधर से गुजरते हैं तो वह सरका[illegible] जमीन को घिरी देख भौचक्के रह ज[illegible] हैं. परंतु चाह कर भी कोई कारर[illegible] करने में असमर्थ रहते हैं. यदि वह [illegible] भी करने की सोचते हैं तो उन्हें धार्मि[illegible]

मंदिर और घाट : नदी में नहाना, घंटी बजाना और फिर मंदिर के दर्शन करा कर दक्षिणा लेना एक व्यवसाय नहीं तो और क्या है?

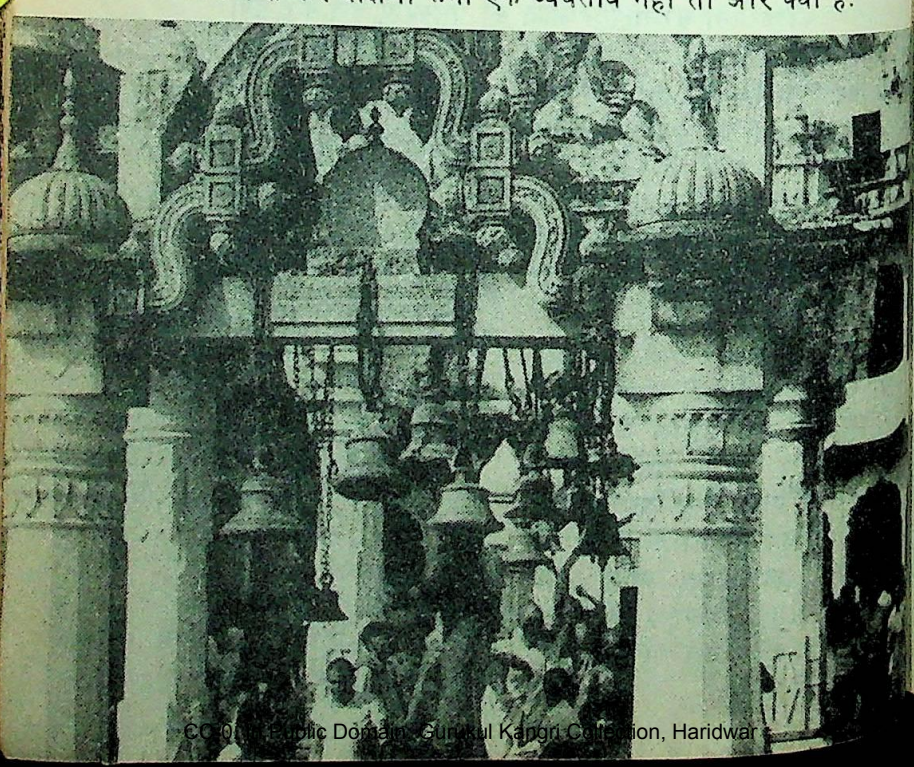

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

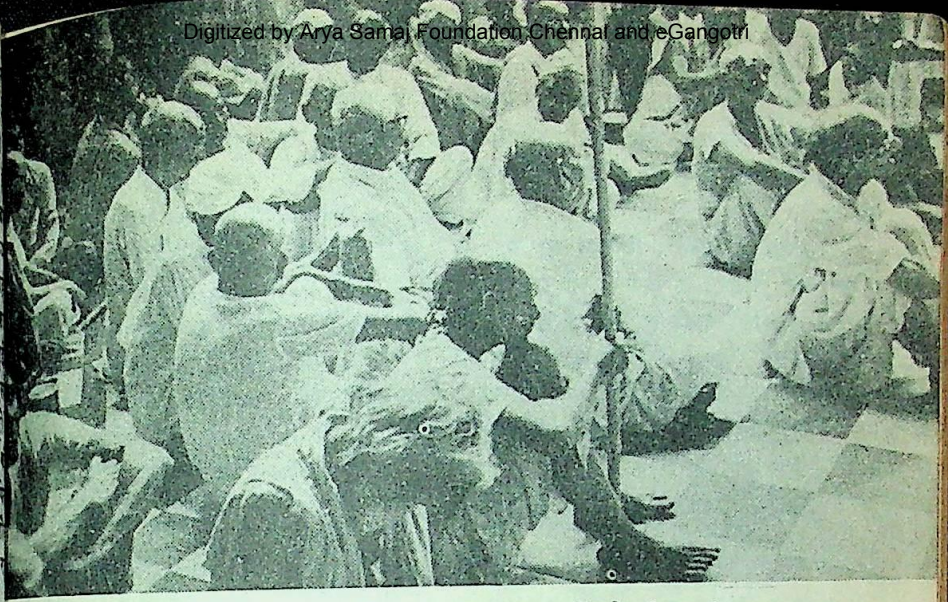

मंदिर में सत्संग : सत्संग क्या हमारे विचारों और व्यवहारों को थोड़ा भी बदल पाया है?

फसाद का डर रहता है. दूसरे स्वयं उन की धार्मिक भावनाएं उन के आड़े आती हैं. इस प्रकार वे चुपचाप मंदिर को बरदाश्त कर लेते हैं और जमीन भी सरकार के हाथ से निकल जाती है.

मंदिर एक प्रकार से जनता का धार्मिक तरीके से शोषण करते हैं. इस से सांप भी मर जाता है और लाठी भी नहीं टूटती. मंदिर इस प्रकार के जाल होते हैं. जहां शिकारी को कोई उद्यम नहीं करना पड़ता, बल्कि शिकार स्वयं आ कर उस जाल में फंस जाता है. जनता के धार्मिक अंधविश्वासों का फायदा उठा कर वे उस का मनचाहा शोषण करते हैं और उस का धन, अन्न चूस जोंक की तरह फूलते जाते हैं.

मंदिरों के धन पर कोई टैक्स नहीं होता जब कि कुछेक मंदिरों की कमाई तो लाखों रुपए प्रति वर्ष है. यह संपूर्ण राशि वहां के मठाधीशों के हाथ में रहती है. वे उस का मनमाना उपयोग करते हैं. बहुत सारे मंदिरों में तो मूर्तियां ही नहीं, उन के चबूतरे और स्तंभ भी सोने के बने हुए हैं.

मंदिरों के महंत खुल कर चरस, भांग, अफीम का सेवन करते हैं. यहां तक कि कुछेक मंदिरों (देवी तथा भैरव आदि के मंदिर) में तो शराब तक चढ़ती है और वही प्रसाद के रूप में वितरित की जाती है. जाने क्यों जिसे हम सामाजिक दृष्टि से इतनी घृणा की दृष्टि से देखते हैं उसे मंदिर के माध्यम से ज्यों का त्यों स्वीकार कर लेते हैं.

सड़े और गंदे प्रसाद को भक्त अमृत की तरह ग्रहण करते हैं. कुछेक लोगों को तो प्रसाद खाने से भयानक छूत की बीमारियां होती देखी गई हैं. अंधविश्वास की पराकाष्ठा देखिए कि कुछ लोग तो मंदिर को धोवन का पानी तक भी पी जाते हैं.

महानगरों में मंदिरों की समस्या दिन ब दिन उग्र रूप लेती जा रही है. जहां भी जमीन का जरा सा हिस्सा नजर आता है वहीं कुछ दिनों में पक्का मंदिर नजर आने लगता है. छोटी से छोटी गली में जहां आदमी भी आसानी से नहीं निकल सकता मंदिर बना दिए जाते हैं. मंदिर बनाने वाले सारे कानूनों को किनारे रख सड़क के बीचोंबीच मंदिर बनाने से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस का नतीजा यह होता है कि मंदिर तो अपनी जगह से नहीं खिसकते, हां, सड़कें ही खिसका कर बनानी पड़ती हैं, जिस से शहर की सुंदरता एवं यातायात व्यवस्था, दोनों में ही रुकावट पड़ती रहती है.

सड़कों के एकदम किनारे या बीचों-बीच बने मंदिरों के कारण भी यातायात दुर्घटनाएं होती देखी गई हैं. होता यह है कि श्रद्धालुजन वाहन चलाते हुए भी अपने इष्ट को नमस्कार करने का लोभ संवरण नहीं कर पाते. इस प्रक्रिया से वाहन के संतुलन पर उन का नियंत्रण नहीं रहता और दुर्घटना हो जाती है.

दुर्घटनाएं

यही कारण है कि मंदिरों के सामने दुर्घटनाओं की संख्या अपेक्षाकृत अधिक होती है. छोटे मंदिर एक तरह से बड़े मंदिरों के लघुसंस्करण हैं. जहां छिटपुट दुकानदारी होती है. यह मंदिर तंग गलियों के आलों, दीवारों, पुराने पेड़ों के तनों आदि पर बनाए जाते हैं.

इन मंदिरों से एक तरफ जहां जनता के समय और धन की हानि होती है. वहां दूसरी ओर कुछ लोगों के पेट बढ़ते जाते हैं. ये जनता को अकर्मण्य बनाते हैं तथा उस की जमीन पर बलात कब्जा करते हैं.

आज जरूरत इस बात की है कि जनता अंधविश्वासों के कूप से निकले और नए वैज्ञानिक तर्कसंगत जगत में अपनी भूमिका को पहचाने तभी वह मंदिरों में रहने वाले इन ठगों के चंगुल में निजात पा सकती है, वरना वे दिन दूर नहीं जब शहर की हर दूसरीतीसरी दुकान एक मंदिर होगी.

दिल्ली शहर में ही बीसियों ऐसे स्थान गिनवाए जा सकते हैं, जहां एकदो साल पहले खाली जमीन थी और वहां अब अनधिकृत रूप से मंदिर बन गए हैं. दरीबे की जामा मसजिद वाली तरफ, आधी सड़क को घेरता हुआ सा एक पेड़ था. इस से पहले कि सड़क चौड़ी करने मंदिर बनाए गए हो गया. पहले पे आसपास का हिस्सा पक्का किया फिर वहां संगमरमर का चबूतरा तदुपरांत वहां मूर्तियां भी प्रतिष्ठित दी गईं.

इसी तरह चांदनी चौक में फ के पास वाले मैदान में एक कोने में कबूतरों को बाजरा पड़ता था, न किस ने वहां 300 गज की जगह घेर मंदिरों की पूरी शृंखला बना दी जोगीवाड़े, मालीवाड़े आदि की गलियों में भी भगवान अनेक जगह भेद कर आले में बैठ गए.

रथयात्रा का दृश्य : भक्तों की भीड़ भाड़, जेबकतरों की मौज.

मंगलवार के दिन वहां का दृ देखने वाला होता है. पंडितजी सड़क रखे एक स्टूल पर बैठ जाते हैं श्रद्धालुओं की भीड़ प्रसाद चढ़ाने के लि टूट पड़ती है.

यातायात में रुकावट

इस से सारा यातायात रुक जाता है कोई कुछ कहे तो भगवान से पहले के भक्तों के कोप का भाजन बने.

लाल किले की खाई के साथ जा वाली सड़क पर भी मंदिर का निर्मा कल की ही बात है. वहां पहले एक बाब चिमटा गाड़ कर बैठता था. अब वह एक अच्छाखासा मंदिर है. मजे की बा तो यह है कि मंदिर ठीक सड़क के बीचों बीच बना हुआ है. लेकिन जो बोले कुंडा खोले.

मंदिरों की तरह ही दरगाहों, गु द्वारों, मसजिदों की पूरी सूची गिनवा जा सकती है, तो यातायात के लि समस्या बनी हुई हैं. आश्रम, प्याऊ आदि भी जगह घेरने में सहायक सिद्ध होते हैं.

इन मंदिरों की नींव हमारे अं विश्वासों एवं धर्मभीरुता पर खड़ी है. ज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

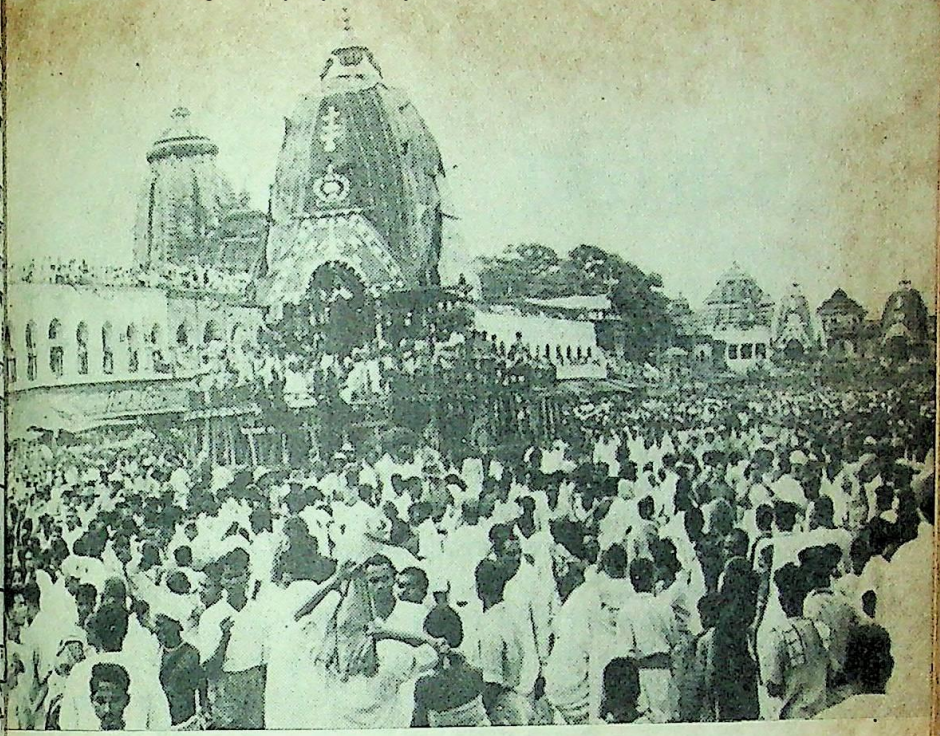

तक अंधविश्वास हमारा पीछा नहीं छोड़ता, मंदिरों व मसजिदों का निर्माण जारी रहेगा और हमारी भूमिका, यदि हम समझदार हैं तो मूक दर्शक की रहेगी और यदि अंधविश्वासी हैं तो श्रद्धालु भक्त की.

पीपल पूजना

पीपल पूजना भी हमारे यहां भक्ति के अंतर्गत आता है. पीपल को यदि काटना हो तो सरकारी अधिकारी भी सौ बार सोचते हैं. न जाने पीपल काटते ही कौन सी गाज उन के परिवार पर गिर पड़े?

नतीजा यह होता है कि सड़कों और गलियों के बीचोंबीच पीपल निर्भय हो कर बढ़ते हैं और नागरिकों के लिए समस्या बनते हैं.

कई बार तो एक यह तमाशा भी देखने में आया है कि किसी पुरानी दीवार में से पीपल फूट आया और बढ़ने पर अपने भार से मकान की दीवार को ले बैठा. लेकिन किसी की भी यह हिम्मत नहीं हुई कि उसे आरंभिक अवस्था में उखाड़ देता. मकान ढहता है तो ढह जाए, लेकिन पीपल के अस्तित्व पर कोई आंच न आने पाए. वाह रे, अंधविश्वास!

सैयद के आले

सैयद के आले भी धीरेधीरे संक्रामक रोग की तरह गलीकूचों में फैलने लगे हैं. छोटेछोटे आले बाद में बड़े हो जाते हैं और वहां खूब धूप अगरबत्ती और दीये जलते हैं.

प्रसाद भी चढ़ाया जाता है एक खाली आले में. प्रसाद चढ़ाने से न जाने लोग कौन से अर्थ की सिद्धि करना चाहते हैं.

यह हमारे इन्हीं धार्मिक अंधविश्वासों का फल है कि हम इतने दिन गुलाम रहे. न जाने कब यह भक्ति और पुरोहितों का मंदिरनुमा तिलिस्म टूटेगा और हम एक स्वस्थ वातावरण में सांस ले सकेंगे. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आप देश के लिए क्या कर रहे हैं?

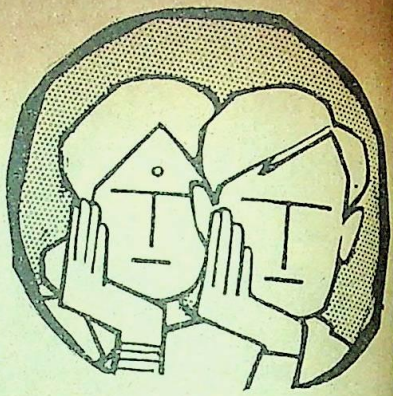

आप देश के लिए क्या कर रहे हैं?

आप पूछ सकते हैं—मैं क्या करूं?

आप अपना और अपने बच्चों का वर्तमान और भविष्य नेताओं के हाथों सौंपने के बजाए इतना तो कर ही सकते हैं :

● जो भी काम आप के जिम्मे हो उसे पूरा करें. अगर आप अपना काम पूरी लगन से करते हैं तो स्वयं अपनी क्षमता बढ़ा रहे हैं, अपनी उन्नति कर रहे हैं, चाहे उस का पैसा मिले या नहीं. आज हर क्षेत्र में कर्मनिष्ठ व्यक्ति की बहुत मांग है. अगर वर्तमान संस्था में आप को अपनी मेहनत का पूरा मुआवजा नहीं मिलता तो दूसरी संस्था देगी.

● न अन्याय सहें, न अन्याय करें. आप समाज की महत्त्वपूर्ण इकाई हैं. समाज की प्रगति के लिए आवश्यक है कि उस की हर इकाई अन्याय के विरुद्ध हो.

● अपनी गली, महल्ले, नगर के प्रबंध में दिलचस्पी लें. उसे दूसरों के भरोसे न छोड़ दें. कुप्रबंध और दुर्व्यवस्था के विरुद्ध संबंधित अधिकारियों को पत्र लिखते रहें. हो सकता है आप के दोचार पत्रों का कोई असर न हो पर वे आप की बिलकुल अवहेलना नहीं कर सकते. स्थानीय दैनिक पत्रों के संपादकों को भी पत्र लिखें (वे स्थानीय समस्याओं से संबंधित पत्रों की प्रतीक्षा में रहते हैं). अपने क्षेत्र के निगम सदस्य, विधायक या संसद सदस्य को भी पत्र लिखें और उन से महल्ले के व्यक्तियों के साथ मिलते रहें. और जब तक दुर्व्यवस्था ठीक न हो जाए, चैन से न बैठें.

● अपना फालतू समय किसी स्थानीय समाजसेवी संस्था में लगाएं. पुस्तकालय, स्कूल, चिकित्सालय सभी जगह निःस्वार्थी व्यक्तियों की आवश्यकता है. असंतुष्ट हो कर बैठे रहने से न आप बदल सकेंगे, न समाज, न देश.

रोजीरोटी का प्रबंध तो भिखारी, आवारा पशु और गली के कुत्ते भी कर लेते हैं. पर आप पढ़ेलिखे हैं, सोचविचार कर सकते हैं. कामधंधे में लगे हैं, अपने परिवार की जिम्मेदारी उठाए हैं, इसी लिए यह आवश्यक है कि आप अपने आप से पूछें कि...

आप देश के लिए क्या कर रहे हैं?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स बस्ती में अलगअलग नंबर के
. जिन में बीसबीस परिवार रहते
त्येक हाते के लिए अलगअलग
ाय है.
गा सुबह चार बजे के करीब
य जा रही थी कि वहीं पास के
ढेर से उसे किसी बच्चे के रोने
ाज सुनाई दी.
कूड़े के ढेर के पास पहुंच भी न
कि दूसरे हाते की कुछ स्त्रियां
पहुंच गईं. उन स्त्रियों में मुस-
रिवार की भी एक स्त्री थी. उस
क कर उस नन्ही सी बिटिया को
लिया. आसपास खड़ी हुई स्त्रियां
र कर खड़ी हो गईं और लड़की
रीक्षण करने लगीं. लड़की एक सुंदर
में लिपटी थी. उस के कपड़ों से

किया था, य
पास चोट के
गंगा ने
गौरवर्ण, सु
को गोद लेने
उस मुसलि
पालूंगी." दो
गंगा की
न थी. यहां
रही होगी.
बस्ती में चह
चारों ओर
लगी. गंगा
को ले कर
तो किसी
पुलिस के अ
बढ़ गया.

ह होतेहोते पूरी बस्ती में उस अन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहाँ रमा अग्रहोत्री

घूरे वर्त लड़

ए

?

कर रहे हैं?
क्या करूं?
बच्चों का वर्तमान और भविष्य नेताओं के हाथों
कर ही सकते हैं :
के जिम्मे हो उसे पूरा करें. अगर आप अपना काम
स्वयं अपनी क्षमता बढ़ा रहे हैं, अपनी उन्नति कर
मिले या नहीं. आज हर क्षेत्र में कर्मनिष्ठ व्यक्ति
मान संस्था में आप को अपनी मेहनत का पूरा

हलकीहलकी ठंड पड़ने लगी थी.
ही बस्ती में अंधेरा छा जाता.
रात होने पर तो बस्ती में कुछ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी देता अन्यथा नहीं. कालोनी के शरारती लड़के हमेशा जगहजगह पर लगे हुए खंभों के बल्ब तोड़ डालते.

इस बस्ती में अलगअलग नंबर के हाते हैं. जिन में बीसबीस परिवार रहते हैं. प्रत्येक हाते के लिए अलगअलग शौचालय है.

गंगा सुबह चार बजे के करीब शौचालय जा रही थी कि वहीं पास के कूड़े के ढेर से उसे किसी बच्चे के रोने की आवाज सुनाई दी.

वह कूड़े के ढेर के पास पहुंच भी न पाई थी कि दूसरे हाते की कुछ स्त्रियां भी वहां पहुंच गईं. उन स्त्रियों में मुसलिम परिवार की भी एक स्त्री थी. उस ने लपक कर उस नन्ही सी बिटिया को उठा लिया. आसपास खड़ी हुई स्त्रियां उसे घेर कर खड़ी हो गईं और लड़की का निरीक्षण करने लगीं. लड़की एक सुंदर कपड़े में लिपटी थी. उस के कपड़ों से लग रहा था कि वह किसी [illegible] है. नाजायज तरीके से जन्मी इस कन्या को उन लोगों ने मारने का भी प्रयत्न किया था, क्योंकि बच्ची के गले के आसपास चोट के निशान थे.

गंगा ने उस नन्ही, फूल सी कोमल, गौरवर्ण, सुडौल नाकनक्श वाली कन्या को गोद लेने की इच्छा प्रकट की. लेकिन उस मुसलिम स्त्री ने कहा, "मैं इसे पालूंगी." दोनों में कहासुनी हो गई.

गंगा की स्वयं की उमर भी अधिक न थी. यही कोई उन्नीसबीस वर्ष की रही होगी. सुबह जब उजाला फैल गया, बस्ती में चहलपहल हो गई. पूरी बस्ती में चारों ओर उस कन्या की चर्चा होने लगी. गंगा और उस स्त्री में उस कन्या को ले कर जब काफी गरमागरमी हो गई तो किसी ने पुलिस में सूचना दे दी. पुलिस के आते ही वातावरण में कौतूहल बढ़ गया. कन्या अभी तक मुसलिम स्त्री

सुबह होतेहोते पूरी बस्ती में उस अनजान नन्ही बच्ची के चर्चे जोर पकड़ गए. पुलिस के आते ही कौतूहल बढ़ गया...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो की गोद में था.

पुलिस वाले ने उस कन्या का निरीक्षण किया, फिर उस मुसलिम स्त्री की ओर देख कर बोला, "तेरे कितने बच्चे हैं?"

"पांच."

"हां, हुजूर, दो सौत के भी हैं," पीछे से किसी व्यक्ति ने कहा.

"इतनी महंगाई में तू इसे कैसे पालेगी? पहले अपने बच्चे तो संभाल."

"नहीं, सरकार, अल्लाह ने दिया है, तो पल ही जाएगी. जहां ये सब खातेपीते हैं, वहीं इस की भी गुजरबसर हो जाएगी."

"नहीं, नहीं, तू पहले अपने और सौत के बच्चे संभाल ले. तेरे लिए वही बहुत है."

फिर मुड़ कर गंगा से बोला, "तू तो अभी कम उमर की लगती है. तुझे क्या जरूरत पड़ गई इसे लेने की?"

"हु...जू...र," कह कर वह सिर नीचा कर के चुपचाप खड़ी हो गई.

"सरकार, इस का मन लगा रहेगा," पास खड़े हुए उस के भाई ने कहा.

"क्यों, क्या आदमी ने छोड़ दिया है?"

"हां, सरकार, शराबीकबाबी था. दिनरात हायहत्या किया करता था, तो यहां आ गई."

"दूसरा ब्याह क्यों नहीं किया?"

"राजी ही नहीं होती है."

"अच्छा, अच्छा, ठीक है, लड़की यही रखेगी."

फिर उस ने मुड़ कर मुसलिम स्त्री से कहा, "इसे दे दो."

उस स्त्री ने गंगा की गोद में लड़की को डाल दिया.

गंगा की उदासी दूर होने लगी. वह इस बिटिया को तनमन से पालने लगी. उस ने उस का नाम गायत्री रखा. बड़ी धूमधाम से उस की छठी की और बताशे बांटे. बस्ती के श्रमिक स्कूल की अध्यापिकाएं गायत्री के लिए छोटेछोटे झबले, खिलौने लाईं.

जब गायत्री पांच वर्ष की हो गंगा ने उस का नाम बस्ती के हो में लिखवा दिया. सुंदर सी गायत्री टीचर की प्यारी थी. वह तीव्र बुद्धि थी.

गायत्री की पढ़ाई की ओर देख कर गंगा उसे बराबर पढ़ाती जैसेजैसे वह बड़ी होती जा रही थी वैसे बहुत सुंदर होती जा रही थी के बच्चे उसे 'घूरे वाली लड़की' चिढ़ाते थे. एक दिन जब वह घर तो गंगा से लिपट कर बहुत रोई!

"क्या बात है, गायत्री? मारा है तुझे?" गंगा ने पूछा.

"अम्मा, वह जो 42 नंबर कमला, श्यामा और सरजू हैं, घूरे वाली लड़की कहते हैं."

"कहने दे, तू वहां मत जाया

"मैं वहां नहीं गई थी. मैं तो से चुपचाप आ रही थी. बोलो, ये मुझे घूरे वाली लड़की क्यों कहते

गंगा की समझ में नहीं आ रहा था वह किस प्रकार उस के इस प्रश्न उत्तर दे. जब गायत्री बहुत पीछे पड़ तब उस ने कहा, "तू सुंदर है और हो कर गंगा काछिन की बिटिया है तुझे तो किसी बड़े परिवार की बिटि होना चाहिए था, इसलिए वे कहते हैं."

"नहीं, अम्मा, यह भी कोई चि की बात है."

"यही बात है, बिटिया. घूरे में हीरा पड़ा हो न तो वह दूर से ही कता है. इसी तरह तू भी मुझ जाति के परिवार में अलग ही है," गंगा ने समझाते हुए कहा.

गंगा ने गायत्री को तो समझा लेकिन स्वयं 42 नंबर हाते में जा उन बच्चों को तथा उन की माताओं खरीखोटी सुना आई.

गंगा की स्नेहिल छत्रछाया में गा सुंदर, समझदार और सयानी होने धीरेधीरे वह स्कूल से कालिज में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

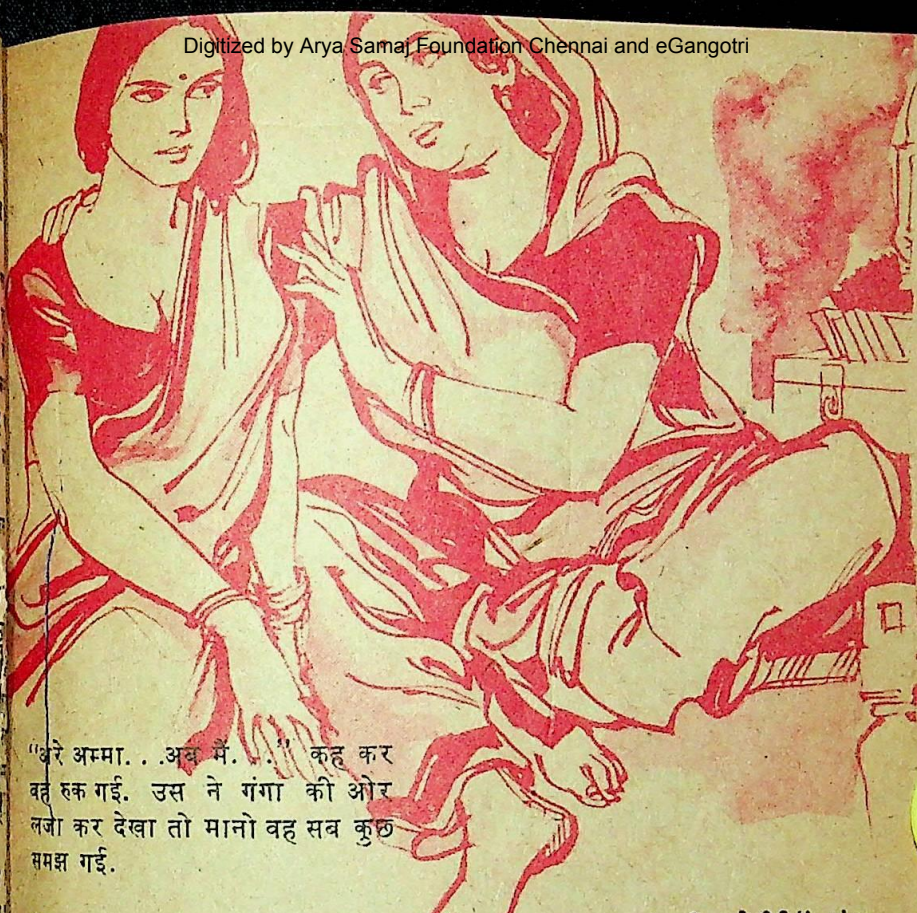

"अरे अम्मा. . .अब मैं. . ." कह कर वह रुक गई. उस ने गंगा की ओर लजा कर देखा तो मानो वह सब कुछ समझ गई.

गई. उस के रहनसहन में परिवर्तन आ गया. कपड़े उस के कीमती तो न होते, लेकिन वह उन्हें बड़े सलीके से पहनती. उस की सुंदरता कालिज में प्रसिद्ध थी. वह कालिज के अन्य कार्यक्रमों में भी भाग लेती थी. कालिज के सालाना उत्सव में उसे कक्षा में प्रथम आने के साथसाथ अभिनय इत्यादि में भी पुरस्कार मिला करते.

पढ़ाई की ओर उस की इतनी अधिक रुचि देख कर गंगा कहती, "गायत्री, तू इतना अधिक पढ़ कर क्या करेगी. हम लोगों में पढ़ाईलिखाई का कोई महत्त्व नहीं है. छोटी जाति में लड़के ही नहीं पढ़ते हैं, तू तो लड़की है."

"नहीं, अम्मा, मैं तो पढ़ूंगी, खूब पढ़ूंगी," गायत्री अपनी बड़ीबड़ी आंखें दाएंबाएं घुमा कर कहती.

"तो फिर तेरा ब्याह कैसे होगा?"

"मैं ब्याह नहीं करूंगी."

"तो क्या कुंवारी रहेगी?" गंगा स्नेह से डांट कर कहती.

"मैं तो पढ़ूंगी. चाहे मेरा ब्याह हो, या न हो."

गंगा मन ही मन सोचने लगती, 'यह ठीक ही कह रही है. पढ़ लेगी तो जीवन संभल जाएगा. और फिर सुंदर है, यदि कोई चाहेगा तो ब्याह कर लेगा. नहीं तो पढ़लिख कर अपनी गुजरबसर कर लेगी.'

और एक दिन जब गायत्री को बैंक में अच्छी नौकरी मिल गई तो बस्ती के लोगों की आंखें खुली की खुली रह गईं. बस्ती में चारों ओर खुसरपुसर होने लगी.

कोई कहता, "घूरे वाली लड़की ने तो कमाल कर दिया." कोई कहता, "ऐसे बच्चे तो होशियार निकलते ही हैं." कोई कहता, "घूरे के भी कभी न कभी दिन बहुरते हैं." कोई कहता, "आयहाय...गंगा के तो भाग्य ही खुल गए,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बेचारी किसी तरह मजदूरी कर कर गुजर-बसर करती थी."

नौकरी करने के बाद वह एक महीना बस्ती में रही, फिर उस ने अच्छे से महल्ले में एक छोटा सुंदर सा घर किराए पर ले लिया.

जब मांबेटी दोनों बस्ती छोड़ कर अपने घर में जाने लगीं तो गंगा का भाई बहुत दुखी हुआ. उसे गायत्री और गंगा से बहुत स्नेह था. उस समय हाते के सभी लोग उसे बिदा करने आए थे.

गंगा का भाई बहुत रोया और गायत्री के सिर पर हाथ फेरते हुए बोला, "बिटिया, तू जिस लायक थी आखिर तू ने अपने को वैसा ही बना कर छोड़ा. तू तो हम गरीबों के यहां किसी तरह पल गई. इतनी अच्छी नौकरी तुझे मिल गई है, तो...तू तो मुझे भूल ही जाएगी?"

"नहीं, मामा, मैं तुम को कैसे भूलूंगी. तुम ने मुझे कितना स्नेह दिया है. अपनी गोद में लिएलिए सब्जी तौला करते थे. भला मैं तुम्हें कैसे भूल सकती हूं?"

थोड़ाबहुत, नहीं के बराबर सामान ले कर वह अपने घर में चली आई.

धीरेधीरे उस ने घर को सजा लिया. आधुनिक उपयोग की सभी वस्तुएं जुटा लीं. अच्छेभले घर के स्त्रीपुरुष उस से मिलने आते. समाज में उस का सम्मानित स्थान हो गया. उस के रहनसहन में उन्नति हो गई. अब कोई नहीं कह सकता था कि यह वही गायत्री है जो गंगा काछिन के यहां पली. जिस के फटेपुराने कपड़ों में जाने कितने पैबंद लगे रहते थे और जो श्रमिक बस्ती के बच्चों के साथ खेला करती थी.

एक दिन वह बैंक से घर जरा जल्दी आ गई थी. सुबह का बासीपन उस ने नहाधो कर दूर किया, आलमारी से फालसाई रंग की साड़ी और ब्लाउज निकाल कर, पहन कर गंगा के पास गई और बोली, "अम्मा, देखो, मैं कैसी लगती हूं?"

"बहुत सुंदर."

"अम्मा, आज मेरा एक मित्र वाला है."

"इस में कहने की क्या बात है मित्र तो रोज ही आते हैं."

"नहीं, अम्मा, आज..." इतना कर वह रुक गई. फिर बड़ी कठिन वह बोली, "आज कोई खास आएंगे."

"मैं समझी नहीं."

"अरे, अम्मा, अब मैं..." या कर वह फिर रुक गई. एक क्षण बा ने गंगा की ओर लजा कर देखा तो कुछकुछ समझ गई और मुसकरा बोली, "अच्छा."

इतने में कालबेल बज उठी तो उ जा कर दरवाजा खोला. मित्र को ने सोफे पर बिठाया और दौड़ कर के पास गई और उसे बुला कर ले उस ने गंगा का अपने मित्र से परि करवाते हुए कहा, "यह मेरी मां हैं."

"नमस्ते, माताजी," युवक ने हाथ जोड़ कर कहा.

"और, अम्मा, यह मेरे मित्र यह कह कर वह लजा गई. उस के गालों में अरुणिमा घिर गई.

गंगा अनजान बनते हुए बो "अच्छा."

"माताजी, मैं गायत्री के साथ विवा करना चाहता हूं," युवक ने बिना झिझक के एक ही बार में यह वाक्य दिया.

"मैं तो इस के विवाह के लिए कब से चिंतित हूं, लेकिन..."

"लेकिन, क्या माताजी?"

"कुछ नहीं, बेटा, तुम इसे सुखी रखना. मैं तुम से इस के विषय साफसाफ बता दूं. कहीं ऐसा न हो शादी के बाद कुछ उलटीसीधी बातें और इसे कष्ट दो."

"ऐसी क्या बात है?"

"यह बिटिया मुझे घूरे पर मिली थी. न इस की मां का पता है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प का. मैं ने इसे बड़े लाड़प्यार से पाला है. अब तुम सोच लो कि ऐसी लड़की से तुम विवाह करना पसंद करोगे?" गंगा ने बताया.

"मुझे यह बात कभी गायत्री ने नहीं बताई."

"वह क्या बतलाती बेटा, उसे कुछ मालूम ही नहीं था. जब कहीं से कुछ सुन कर आती भी तो मैं समझाबुझा कर उस का मन को साफ कर देती. मैं उस से हमेशा यही कहती रहती, यह सब तुझे चिढ़ाने के लिए कहते हैं."

युवक कुछ उदास सा हो गया. उस की समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या कहे कि चल दे. वह सामने की खिड़की से सामने लान का दृश्य देखने लगा. माली लान में लगे सभी पौधों पर पानी डाल रहा था. गायत्री अंदर जाने क्या करने गई थी कि अभी तक आई ही नहीं. शायद जलपान का प्रबंध करने लगी होगी.

जब कुछ क्षण व्यतीत हो गए युवक ने गंगा की बात का कोई उत्तर नहीं दिया, तो वह बोली, "क्यों बेटा, यह बात खल गई न?"

"नहीं," उस ने बहुत धीमे स्वर में कहा.

"फिर क्या बात है?"

युवक कुछ ऊहापोह में पड़ गया तो गंगा बोली, "मैं पहले ही जानती थी कि तुम यह नहीं सुन सकोगे. लेकिन, बेटा, इस के केवल मातापिता ही तो नहीं हैं. यह उन लड़कियों से किस बात में कम है, जिन के मातापिता होते हैं? पढ़ीलिखी है, सुंदर है, सुशील है और फिर इस बेचारी का क्या दोष है? दोष तो [illegible] वाले का है. जिस ने इतनी बड़ी नादानी की. मैं ने तो इसे अपना समझा और जब तक जीवित रहूंगी अपना समझूंगी. चाहे तुम साथ दो या न दो, चाहे कोई साथ दे या न दे?"

इतना कह कर गंगा उत्तर की प्रतीक्षा करने लगी. वातावरण बड़ा गंभीर हो गया था. युवक शून्य में देखता हुआ जाने क्या सोच रहा था.

जब उसे कोई उत्तर न मिला तो वह बोली, "एक कायर ने जन्म दे कर गलती की है और दूसरा कायर शादी न कर के गलती करने जा रहा है."

यह बड़बड़ाते हुए वह उठने को हुई कि गायत्री ट्रे ले कर अंदर आ गई. गंगा को उठते हुए देख कर वह बोली, "अरे, अम्मा, तुम कहां जा रही हो? बैठो न."

युवक ने ज्यों ही गायत्री को देखा तो मुसकरा कर बोला, "अम्मा, मैं तैयार हूं. इस महीने की दस तारीख को मैं बरात ले कर आऊंगा."

गंगा की आंखों में मारे प्रसन्नता के आंसू आ गए. वह अपनी आंखें पल्ले से पोंछती हुई बाहर चली गई. गायत्री सिर झुका कर प्याले में चाय डालने लगी.

युवक ने चाय का प्याला हाथ में ले कर एक घूंट चाय पी और धीरेधीरे अपनी पलकें उठा कर उस को देखते हुए बोला, "कमाल कर दिया है, इस घूरे वाली लड़की ने!"

गायत्री यह सुन कर एकटक उस की ओर देखने लगी. फिर बोली, "तुम भी मुझे हाते के लड़कों की तरह चिढ़ाते हो." ●

खता याद नहीं...

अब किस की थी उस वक्त खता, याद नहीं,
किस तरह से हम हुए जुदा, याद नहीं.
है याद वो गुफ्तगू की तल्खी लेकिन,
आजाद! तो गुफ्तगू थी क्या, याद नहीं.

—जगन्नाथ आजाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

शिवकुमार दुबे

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुमान और रहस्य

'ओह, आप हैं, जीजाजी! अंदर आइए.' कहते हुए प्रदीप उन्हें घर के अंदर ले

घर बैठेबैठे बोरियत सी महसूस होने लगी तो मैं ने रीगल में परसों ही से लगी एक नई फिल्म देखने का निश्चय किया और कपड़े बदल कर टाकीज पर जा पहुंचा. वहां जा कर सिनेमाप्रेमी जनता का जो हुजूम मुझे नजर आया, उस से स्पष्ट हो टिकट मिलना असंभव है. मैं झुंझ "अब क्या किया जाए?"

तुरंत ही एक विचार दिमाग गया. अपने भावी ससुराल की भी दसपंदरह रोज हो गए हैं, क्यों चल कर थोड़ीबहुत गपशप की और अगले ही क्षण मैं अपने गंत ओर बढ़ चला.

अपने ही शहर के एक मा तीन महीने पूर्व मेरी सगाई शीला—मेरी मंगेतर—अपने भा में दूसरे नंबर पर आती है. ऊपर और नीचे से भी. बड़ी बहन रम शादी को सात वर्ष हो चुके हैं. पति एक गजटेड अफसर है और दूसरे शहर में रहते हैं. छोटा भाई मैट्रिक में पढ़ रहा है.

ससुराल के बारे में मैं पता क्याक्या सोच रहा था कि अचानक ने मुझे पुकारा, जिस से मेरी यह वि शृंखला टूट गई. मैं ने चौंक कर पु वाले की ओर देखा. आफिस में करने वाला मेरा एक सहयोगी अजय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओर तेजी से बढ़ता आ रहा था.

मैं ने रुक कर पूछा, "कहो भई, अजय, कहां ले जा रहे हो अपना जुलूस?"

"बस, यों ही, यार. इधर जा रहा था—तुम दिखाई पड़ गए. सोचा कि साथसाथ ही चलते हैं."

"अवश्य चलो, दोस्त. रास्ता आसानी से कट जाएगा. तुम शायद अपने मामाजी के घर जा रहे हो?"

मेरी बात सुन कर अजय जोरों से हंसने लगा. फिर बोला, "प्यारे, तुम गलती पर हो. जानते नहीं, मैं एक स्वाभिमानी इनसान हूं. और ऐसे लोग सिर्फ वहीं जाना पसंद करते हैं, जहां उसे इनसान ही समझा जाता हो—जहां इनसानियत का मापदंड दौलत न हो."

मैं ने सोचा, शायद अजय मेरा प्रश्न नहीं समझ पाया है, अतः मैं ने स्पष्ट करते हुए कहा, "अजय, मैं आप के मामाजी के बारे में कह रहा हूं."

"हांहां, मैं समझ गया, दोस्त, तू मेरे मामा के बारे में ही पूछ रहा है. उन मामाजी के बारे में, जिन की नेहरू मार्ग पर तीन मंजिली कोठी है, कार है, तीन हजार रुपए महीने की आमदनी है और..."

"हां, हां, उन्हीं के बारे में पूछ रहा हूं, यार," बात काटते हुए मैं बोला.

"तो सुन," अजय बताने लगा, "यह ठीक है कि मेरे तथाकथित मामाजी संपन्नता से परिपूरित हैं. लेकिन, दोस्त, वस्तुतः उन की यह तमाम दौलत और वैभव धूल के बराबर है क्योंकि जैसेजैसे उन के पास दौलत आती जा रही है वैसेवैसे ही अपने मित्ररिश्तेदारों के प्रति अलगाव की भावनाएं उन के मन में भरती जा रही हैं."

"परंतु इस से तुम्हें क्या फर्क पड़ता है?" मैं ने उस के अंतःस्थल की भावनाओं को कुरेदते हुए पूछा.

"फर्क क्यों न पड़ेगा, दोस्त? जो इनसान दौलत के नशे में अपनों को पहचानना तक भूल जाए उसे मामा अथवा चाचा कैसे माना जाए? जब मेरे मामा

हेमंत की बात सुन कर मैं स्तब्ध रह गया. बहुत सी बातें जो मैं उगलना चाह रहा था मन ही मन दबा बैठा...सिर्फ अनुमान के आधार पर मैं ससुराल में अंटशंट बकने लगता तो कितना अनर्थ हो जाता!

के पास आज की सी दौलत नहीं थी तब वह हमें अपना समझते थे, घर जाने पर प्रेम से बिठाते थे. लेकिन दिल में भावनाएं कम होती गईं, ज्योंज्यों उन की तिजोरी भारी होती गई. आज यदि हम

अजय ने गंभीर हो कर कहा, "ठीक है कि मेरे मामाजी संपन्न हैं लेकिन उन की दौलत धूल के बराबर है."

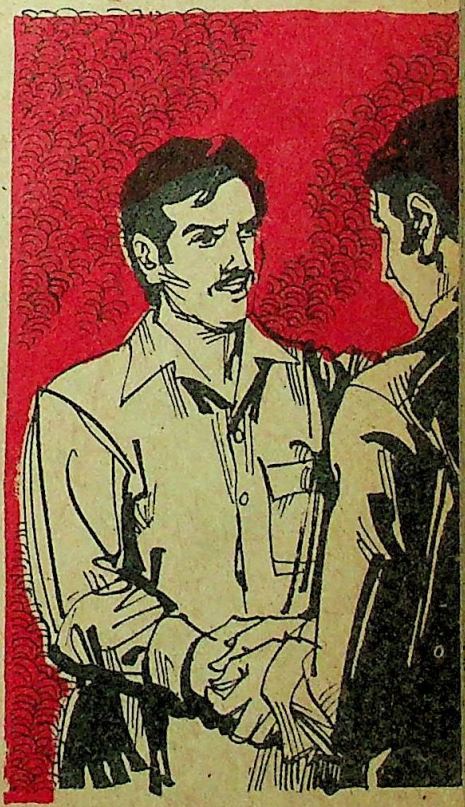

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोग उन के घर पहुंच जाएं तो वहां हमें बेकार समझा जाता है. हमारे जाने का यह अर्थ लगाया जाता है कि हम उन की विलासिता से आकर्षित हो कर वहां जाते हैं."

"हां, अजय, ऐश्वर्य पा कर अधिकांश मनुष्य अपनेआप को ही भूलने लगते हैं," मैं ने उस से सहमत होते हुए कहा.

कुछ क्षणों की चुप्पी के पश्चात अजय आगे कहने लगा, "ठीक ही कह रहे हो तुम. मैं इसी लिए पिछले साल भर से अपने इन मामाजी के घर की ओर चाह कर भी न जा सका, क्योंकि वहां हमारी इज्जत नहीं है. आधे घंटे तक खड़ेखड़े ही बातें कर के चले आओ, कोई वहां बैठने को भी नहीं कहता.

"दो घंटे धूप में तपते हुए उन के घर किसी बीमार की तबीयत देखने पहुंच जाओ, चायनाश्ते की औपचारिकता तो दूर रही, एक गिलास पानी को भी नहीं पूछा जाता है. कई बार ऐसा हुआ है, दोस्त, कि एक घंटे उन की विशाल कोठी में रुकने के बाद भी पड़ोस के होटल में [illegible] मैं ने सोचो, दोस्त, ऐसा वैभव किस काम का? ऐसे लखपति चाचामामा से तो वे गरीब पड़ोसी अच्छे, जो सुबहशाम प्रेम से रामराम तो कर लेते हैं."

अजय की बातें मेरे दिल में उतर गईं. गरीब रिश्तेदारों के प्रति रईसजादों का अपमान व तिरस्कारभरा व्यवहार आज प्रायः हर जगह देखने में आता है.

मैं ने प्रत्युत्तर में कहा, 'सच कहूं, अजय, वाकई ऐसे लोगों के घर का पानी तो पीना भी नहीं चाहिए, वरना हमारी नीयत भी ऐसी ही हो सकती है. ऐसी दौलत भी क्या जो मानवमानव में भेद की खाई बनाए, जो समस्त मानव मूल्यों को ही खंडित कर दे?"

"हमतुम भले ही ऐसा कहते रहें, प्यारे, पर भौतिकता के युग में ऐसे सिद्धांत पर अमल कितने लोग करते होंगे! आज तो प्रायः हर जगह पैसे को पूजा जा रहा है, हर स्थान पर कुरसी, पद, दौलत ही इनसानियत व प्रतिष्ठा के मापदंड बन गए हैं. न जाने दुनिया से

मम्मी ने मुझे झकझोर कर उठाते हुए कहा, "अभीअभी प्रदीप आया था. उस के जीजाजी को खाने पर बुलाना है."

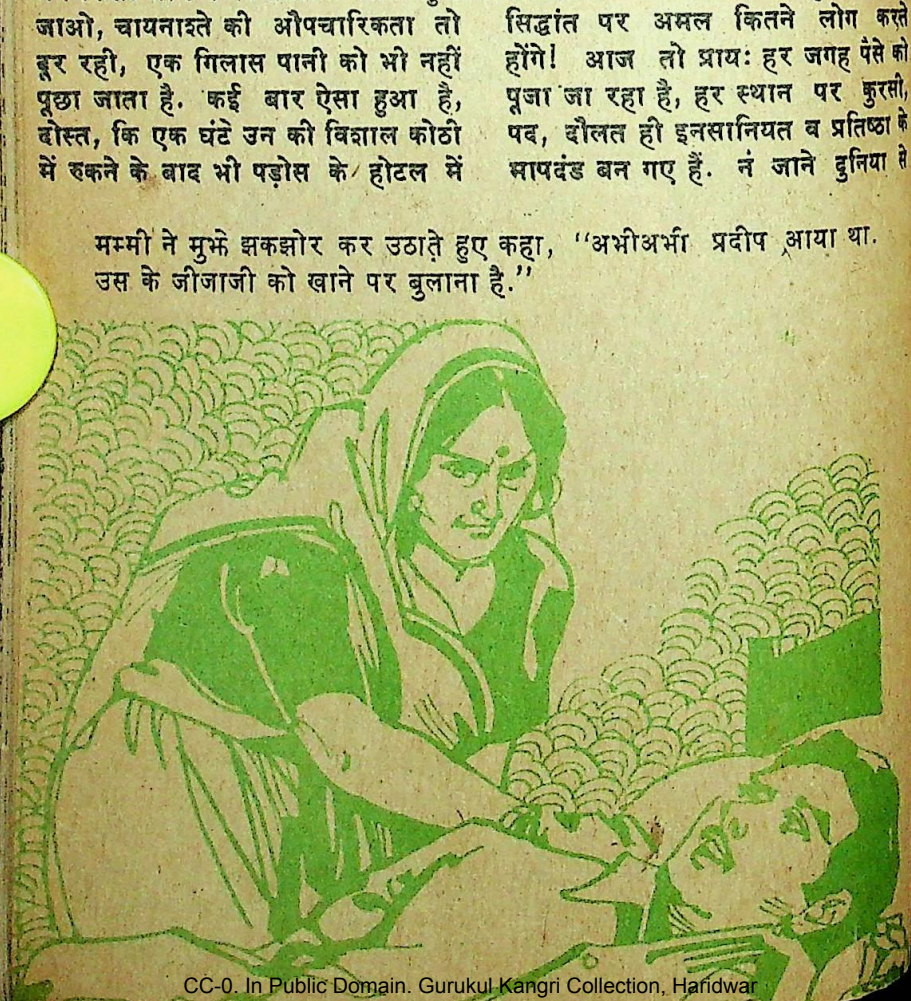

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दौलत का नशा कब उतरेगा?" अजय ने मायूसी भरी फलसफाना आवाज में कहा.

"यह तो तब तक चलता रहेगा, अजय, जब तक नोटपरक लोग दुनिया में मौजूद हैं. अब दुनियादारी की चिंता कब तक करें. आओ, एकएक कप काफी पी लें, क्योंकि अपनी तो मंजिल आ गई है." अपनी ससुराल को निकट आते देख मैं ने इस वार्तालाप का समापन करते हुए कहा और हम दोनों एक होटल में घुस गए.

जिस समय ससुराल पहुंचा उस समय प्रदीप व उस की मां ही घर पर थे. काफी देर तक हम तीनों इधरउधर की बातें करते रहे. तभी शीला भी आ गई, जो कि अपनी किसी सहेली के साथ फिल्म देखने गई हुई थी. अपने घर के ड्राइंगरूम में मां व भाई के अलावा मुझे भी उपस्थित पाया तो अगले ही क्षण वह रसोई की ओर भाग गई, और हम तीनों को हंसी आ गई. फिर अंदर से प्लेटों की खनखनाहट सुनाई देने लगी और हमारे लिए नाश्ता तैयार हो कर आ गया.

नाश्ता मेज पर रख कर शीला चाय बनाने के लिए चली गई. हम लोग नाश्ता कर रहे थे कि कालबेल घनघना उठी. प्रदीप उठा और दरवाजा खोल कर देखा, सामने उस के बड़े जीजाजी हेमंत खड़े थे.

"ओ, जीजाजी, आप हैं. आइए-आइए, अंदर आ जाइए," प्रदीप ने कहा और उन्हें अंदर ले आया. आ कर हेमंत ने मुझ से हाथ मिलाया और एकदो इधर-उधर की बातें कीं.

"आज आप बेमौसम इधर कैसे आ निकले, जीजाजी साहब नंबर एक?" प्रदीप पूछ बैठा.

"अरे, भई, सरकारी दौरे पर यहां आया हुआ था. काम खत्म हो गया तो इधर मिलने चला आया."

"रजनी की तबीयत कैसी है अब? पिछले पत्र में उस ने लिखा था कि उस की तबीयत खराब है," प्रदीप की मां पूछने लगीं.

"अब तो बिलकुल ठीक है. मामूली

ससुरजी प्रदीप को डांट कर बोले, "क्यों रे नालायक, तुझे इतना नहीं पता कि कौन सी थाली कहां लगानी है?"

सर्दीजुकाम का चक्कर था," उत्तर मिला.

"और आप की दवाई?"

"अपनी दवादारू तो चलती ही रहती है, बंद ही कब होती है?" हंसते हुए हेमंत यानी प्रदीप के जीजाजी नंबर एक ने कहा.

"अरे, जीजाजी, आप कब आए? मुझे तो पता ही नहीं चला." कहते हुए शीला ने चाय की ट्रे हाथ में लिए कमरे में प्रवेश किया. ट्रे में तीन प्याले चाय थी, जो उस ने क्रमशः मुझे, अपनी मां को व प्रदीप को दे दी.

"आप भी चाय लीजिए न." मैं ने औपचारिकता प्रदर्शित करते हुए अपनी चाय हेमंत की ओर बढ़ा कर कहा.

"नहीं, भई, हम ऐसी 'चालू' चाय पीने वालों में से नहीं हैं. अपने लिए तो स्पेशल चाय बन कर आएगी, तब पीएंगे," हेमंत ने उत्तर दिया, जिसे सुन एक ओर जहां मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ वहीं प्रदीप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और मेरी सास, दोनों मुसकरा कर रह गए. किसी ने भी अपने बड़े दामाद से वह चाय पीने का आग्रह नहीं किया.

शीला उठ कर गई और मिनटों में एक कप चाय बना कर लाई, जिसे हेमंत-जी चुस्कियां लेले कर पीने लगे.

अब शीला भी वहीं बैठ गई. सब लोग अपने एक नंबर दामाद से बातें करने में व्यस्त हो गए. कहांकहां घूम आए हैं, नौकरी में तरक्की का सिलसिला कहां तक पहुंचा है, कार कब खरीद रहे हैं? ढेरों प्रश्न गोलियों की तरह हेमंत पर दागे जा रहे थे, जिन के वह अपनी ही स्टाइल से उत्तर भी दे रहे थे.

ऐसे में मुझे अजय के मामा वाला किस्सा याद आ गया, जिस के याद आते ही यहां मुझे अपनी उपस्थिति की महत्त्व-हीनता का बोध हुआ. बड़े जीजा क्या आ गए, ये लोग मेरी उपस्थिति ही भूल गए? क्या मैं यहां का दामाद नहीं हूं? समूह में बैठ कर किसी एक ही व्यक्ति की बातों पर केंद्रित हो जाना क्या मेरी उपेक्षा नहीं है? यह तो सरासर अपमान है. मैं ने सोचा, और यहां से रवाना होने का इरादा कर उठते हुए कहा, "अच्छा, तो अब आप लोग बातें कीजिए. मुझे एक आवश्यक काम याद आ गया है, इसलिए आज्ञा चाहूंगा."

ससुराल से उठ कर मैं सीधा घर की ओर चल दिया क्योंकि काम का तो बहाना था. वस्तुतः मैं वहां से अपनी उपेक्षा के कारण चला आया था. मेरा मस्तिष्क, जिस में घंटे भर पहले ही अजय ने इनसानइनसान के बीच भेदभाव के विरोध में बहुत सी बातें भरी थीं, बहुत शीघ्रता से नएनए विचार नईनई कल्पनाएं पैदा करने लगा.

सब पैसे की माया है, कुरसी का आकर्षण है, जो हेमंत में व मुझ में इतना अंतर पैदा कर रहा है. ससुराल वाले हेमंत की ओर कैसे खिंचे रहते हैं. भला वह मेरी इतनी आवभगत करें भी क्यों? मुझे हेमंत की भांति 'स्पेशल' चाय क्यों पिलाएंगे? दामाद हूं तो क्या हुआ, गज-टेड अफसर जो नहीं हूं, हेमंत की तरह बारह सौ रुपए महीना जो नहीं कमाता हूं. तभी तो मेरी ऐसी बेइज्जती की जाती है. लाट साहब 'स्पेशल' चाय पिएंगे. मैं एक क्लर्क हूं, इस का मतलब यह तो नहीं होता है कि मैं समान सम्मान का हकदार भी न समझा जाऊं.

राह चलते हुए इनसान का मस्तिष्क यदि कल्पनाओं में खोया होता है तो रास्ता कब कट गया, पता ही नहीं चलता. पैदल ही मैं ने घर तक का रास्ता कैसे तय कर लिया, इस का घर पहुंच कर ही मुझे विचार आया. मैं चूंकि थक गया था अतः सीधा अपने कमरे में गया और आराम करने की नीयत से पलंग पर लेट गया.

अब शरीर भले ही आराम कर रहा हो किंतु दिमाग को कहां आराम मिला. उस में तो वही वैचारिक भूचाल आया हुआ था. मेरी यह एक व्यक्तिगत कम-जोरी (या विशेषता) रही है कि मैं कहीं भी, कभी भी, किसी भी जगह अपने अथवा दूसरे इनसान के साथ भेदभाव नहीं सह सकता हूं. आज शीला के घर हुए वाकयात और अजय के साथ उस के मामा के घर हुई घटनाओं में मुझे बहुत साम्य नजर आ रहा था.

मैं सोचने लगा, 'शीला के घर वाले मेरे व हेमंत के बीच भी तो वही भेद कर रहे हैं जो आज प्रायः हर स्थान पर अमीर व गरीब के बीच होता रहता है. क्या हेमंत किसी दूसरे ग्रह से आया हुआ प्राणी है जो वह 'स्पेशल' चाय पीता है? क्या क्लर्क एक अच्छा दामाद नहीं हो सकता है? फिर अभी तो मेरी व शीला की सिर्फ सगाई ही हुई है और वहां का ऐसा रंगढंग है. शादी के बाद मुझे कितना हेय समझा जाएगा?'

विचारों का तारतम्य और आगे बढ़ा तो कल्पनाएं भी आगे बढ़ीं. 'ऐसी रिश्ते-दारी से तो अच्छा है कि मैं शीला के बजाए किसी गरीब घर की लड़की से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शादी कर लूं. एक ऐसा घर ढूंढ लूं जहां पंखे, कूलर व चकाचौंध की सामग्री भले ही न हो, किंतु जहां अपनापन हो, वातावरण में सौजन्यता व अनुराग बिखरा पड़ा हो.'

विचारों में खोया हुआ मैं कब नींद की गोद में पहुंच गया, पता ही नहीं चला. दो घंटे बाद मुझे झकझोर कर मां ने उठाया. कहने लगी, "अभीअभी प्रदीप आया था. उस के बड़े जीजाजी आए हुए हैं. कल ही वापस जाने वाले हैं, इसलिए कल सबेरे दोनों दामादों को खाने पर बुलाया है. पहले तो सोचा कि तुझ से पूछ लूं पर फिर खयाल आया कि इस में पूछने की बात ही क्या है! तू है भी फुरसत में, और जब प्रेम से बुलाने आए हैं तो जाने में क्या हर्ज? सो, मैं ने हां कर ली है."

जिस उलझन से नींद मुझे बमुश्किल निकाल पाई थी, नींद से जागते ही मां ने मुझे एक बार फिर उसी में ला पटका. इच्छा हुई, कहूं कि खाना खिलाने बुलाया है या अपमान करने को? अपने टाईसूट वाले दामाद को स्टील की थाली में परोस देंगे और मुझे पत्तल पर, क्योंकि मैं गरीब जो हूं. यदि ऐसा हुआ तो क्या वह भोजन मुझ सा स्वाभिमानी व्यक्ति खा पाएगा? तिरस्कार की भावना से परोसी हुई मिठाई से तो वह जहर ज्यादा अच्छा होता है जो प्रेम से दिया जाए.

काफी समय तक अपनेआप से तर्क-वितर्क करने के बाद मैं ने निश्चय किया कि मैं खाना खाने अवश्य जाऊंगा, और ठान कर जाऊंगा कि यदि आज भी मेरे साथ भेदभाव का बरताव हुआ तो यकीनन मैं वहां से रिश्ता खत्म कर के ही आऊंगा. उस द्वार पर कभी कदम न रखूंगा जहां सम्मान भी जेब देख कर किया जाए.

नियत समय पर मैं पहुंच गया. कुछ देर इधरउधर की बातें कीं, फिर खाना खाने बैठ गए. बैठक के साथ वाले कमरे में लकड़ी के तीन पाट रखे हुए थे. एक पर ससुरजी बैठ गए, दूसरे पर मैं एवं तीसरे पर 'दामाद नंबर एक' यानी हेमंत.

बैठने के बाद मैं ने एक नजर हम तीनों की थालियों पर डाली और देखते

"तुम ने गलत सुना कि मैं ने एक लखपति से शादी की है, बल्कि मेरी वजह से ही वह लखपति बना. शादी से पहले तो वह करोड़पति था."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही मेरा पूरा शरीर तमतमा उठा. अपमान इस सीमा तक पहुंच गया. ससुर-जी व हेमंत की थालियों में मावे की बनी हुई तीनतीन प्रकार की मिठाइयां परोसी हुई थीं, जब कि मेरे सामने रखी हुई थाली में मात्र दालचावल, सब्जी व पूड़ी ही थी.

मेरे लिए यह बात असहनीय थी. मैं तिलमिला उठा. मैं ने एकदम उठ खड़ा होने तथा सब लोगों को खूब खरीखोटी सुनाने के लिए कुछ ही क्षणों में स्वयं को तैयार कर लिया.

लेकिन स्थिति ने एकाएक पलटा खाया. ससुरजी की नजरें जैसे ही थालियों की ओर गईं, वह एकदम चौंक से गए और कहने लगे, "अरे, क्षमा कीजिएगा. गलती से आप दोनों की थालियां बदल गई हैं." फिर प्रदीप को डांटते हुए बोले, "क्यों रे नालायक, तुझे इतनी भी समझ नहीं कि कौन सी थाली कहां लगानी है?"

मेरी इच्छा हुई कि कह दूं कि साहब, थालियां आप ने बिलकुल सही लगवाई हैं—अपनेअपने स्तर के अनुरूप. आप दोनों अफसर श्रेणी के जीव हैं, मिठाइयां खा सकते हैं, जब कि मैं ठहरा एक अदना सा बाबू. मिठाइयां खाना क्या जानूं. पर इस से पूर्व कि मेरी बात जुबान पर आ पाए, मामला समझते हुए दामाद नंबर एक फरमाने लगे, "अरे, हां, साले साहब, आप ने तो 'रामू की टोपी श्यामू के सिर' वाली कहावत चरितार्थ कर दी. हमारी स्पेशल थाली अपने दो नंबर के जीजाजी को दे दी."

"नहींनहीं, श्रीमानजी, थालियां बहुत सोचसमझ कर ही लगाई गई हैं," मैं

पासा पलट गया

मेरी मां अत्यंत मितव्ययी हैं. एक दिन शाम को वह फेरी वाले से साड़ी खरीद रही थीं. उन्होंने 20 रु. की एक सस्ती सी साड़ी खरीदी. उसी समय हमारी एक पड़ोसिन, जो कि उस दिन सुबह ही मेरी मां से 25 रु. उधार ले कर गई थीं, कहने लगीं, "आप ने तो बड़ी सस्ती साड़ी खरीदी. इतनी सस्ती साड़ी तो मैं पहन ही नहीं सकती."

इस पर मां ने तपाक से उत्तर दिया, "हम तो सस्ती ही चीजें खरीदते हैं. यदि सस्ती न खरीदूं तो लोगों को उधार कहां से दूंगी?" सुनते ही पड़ोसिन का मुंह शर्म से लाल हो गया.

—रामेती यादव, जबलपुर

✦

एक बार मैं बस द्वारा गुड़गांव से दिल्ली जा रहा था. बैठने की जगह न होने के कारण मैं खड़ा रहा. बस में पिछली सब से लंबी सीट पर चार लड़के बैठे थे. इतने में एक बूढ़ा आदमी बस में चढ़ा. सीट न मिलने पर उस ने उन लड़कों से थोड़ी जगह देने की प्रार्थना की. लेकिन वे लड़के बोले, "जाजा, बुड्ढे, टिकट ली है, आराम से बैठेंगे." बूढ़ा आदमी चुप हो कर वहीं खड़ा हो गया.

इतने में एक लड़की बस में चढ़ी. उन लड़कों ने आंखों ही आंखों में कुछ इशारा किया और उस लड़की के लिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बोल उठा.

"हरगिज नहीं, साहब. हमारी स्पेशल थाली में आप कैसे भोजन कर सकते हैं? जानते नहीं, हम ने उस रोज चाय भी स्पेशल ही पी थी और आज खाना भी स्पेशल खाएंगे." हेमंत हंसते हुए मुझ से कहने लगे.

व्यंग्यपूर्वक मैं ने भी उत्तर दिया, "हांहां, साहब, आप को तो स्पेशल खानापीना मिलना ही चाहिए. आप गजटेड अफसर जो हैं, बारह सौ रुपए तनख्वाह पाने वाले. हम कैसे आप की बराबरी कर सकते हैं?"

एक निःश्वास ले कर हेमंत कहने लगे, "ईश्वर न करे, साहब, कि आप को कभी हमारे जैसा स्पेशल खाना खाना पड़े. हम तो यह सब मजबूरीवश कर रहे हैं. इसे प्रकृति का चमत्कार ही कहिए कि वह जिसे खाने के लिए अच्छी हालत में शरीर देती है, उस के पास पर्याप्त पैसा नहीं होता और जिस के पास पैसों का ढेर होता है वह चाह कर भी खा नहीं पाता. आप ही सोचिए, इतना कमाते हुए भी फीकी चाय पीना और बिना शक्कर के पकवान खाना मुझे अच्छा लगता होगा?"

"क्या, फीकी चाय, फीके पकवान?" मैं ने बात समझ पाने में असमर्थता प्रकट की.

"जी, हां, श्रीमानजी. अभी शायद आप को पता नहीं है कि मैं डायबिटीज का मरीज हूं. डाक्टर ने मेरे लिए शक्कर का इस्तेमाल बिलकुल बंद करवा दिया है. जब मिठास के बिना काम नहीं चलता तो ऐसे में चायकाफी वगैरा में डालने के लिए डाक्टर ने कुछ गोलियां दे रखी हैं,

---

जगह खाली कर दी. एक लड़का उस लड़की से बोला, "बैठ जाइए."

लड़की उन की भावना को समझ चुकी थी. उस ने बैठना स्वीकार नहीं किया और वह बूढ़ा आदमी फौरन उस खाली सीट पर बैठ गया. अपनी हार पर लड़कों का झेंपना स्वाभाविक था.

—तिलक गुलाटी, गुड़गांव

✦

यह उन दिनों की बात है कि जब हम एम. एससी. फाइनल में थे. मैं और मेरे तीनचार मित्र प्रतिदिन मध्यांतर के समय एक होटल पर चाय पीने चले जाते थे.

एक दिन उस होटल वाले ने बिलकुल खराब चाय बना कर दी तो मेरा मित्र बोला, "आज चाय तो बिलकुल खराब बनी है."

यह सुन कर वह होटल वाला बोला, "बाबूजी, सौ दिन में एक दिन खराब चाय बन गई तो क्या हुआ?"

तभी उठते समय अचानक मेरे उसी मित्र से दो गिलास गिर पड़े और टूट गए. होटल मालिक ने गिलासों के पैसे मांगे तो मैं ने कहा, "सौ दिन में एक दिन गिलास टूट गए तो क्या हुआ?"

यह सुनते ही उस का चेहरा उतर गया और उस ने चुपचाप चाय के पैसे उठा लिए.

—राजेंद्रकुमार, उदयपुर

✦

एक दिन मैं तथा मेरे चाचाजी बाजार घूमने गए. हम बाजार में घूम रहे थे कि एक जानपहचान वाले दुकानदार जिन की जूतों की दुकान थी, चाचाजी से मजाक करते हुए बोले, "आइए लालाजी, आप के लायक मेरे यहां बहुत जूते पड़े हैं."

चाचाजी भी तुरंत बोले, "आप के जूते तो बहुत पड़े होंगे, लेकिन मेरे पैर का नहीं पड़ा होगा."

यह सुनते ही उस दुकानदार की हालत देखने लायक हो गई.

—राकेशकुमार गोयल, आगरा ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो शक्कर का काम देती है, इसी लिए मैं उस दिन भी आप के साथ चाय न पी सका और आज भी मेरे लिए परोसी गई थाली मिष्ठान्नरहित है."

हेमंत की बात सुन कर मैं स्तब्ध हो कर रह गया. बहुत सी बातें मेरे जहन से आ कर गले में अटकी हुई थीं और सब लोगों पर बरस पड़ने को बेताब हो रही थीं, पर इस अनपेक्षित मोड़ ने उन सब बातों को पुनः पेट में उतर जाने पर विवश कर दिया.

जिसे मैं अपमानजनक भेदभाव का बरताव समझ बैठा था वह तो एक सर्वथा अकल्पित मजबूरी निकली. अच्छी ही हुआ जो बिना सोचेसमझे मैं ने किसी को कुछ भलाबुरा नहीं कहा. यदि मात्र अनुमानों के आधार पर आज यहां मैं कुछ अंटशंट बकने लग जाता तो कितना अनर्थ हो जाता?

'संभव है दूसरी बातें भी उस पहलू से न हुई हों जैसा कि मैं सोचता हूं. 'जीजाजी नंबर एक से ज्यादा बातें करने का यह अर्थ भी तो हो सकता है कि चूंकि वह शीघ्र ही जाने वाले थे इसलिए थोड़ी ही देर में सारे हालचाल पूछ लेने की बेताबी में ऐसा हुआ हो. मुझ से ज्यादा हंसीमजाक न करने के पीछे भी हो सकता है कि नईनई रिश्तेदारी या मेरा अपरिचित स्वभाव जिम्मेदार हो.' किसी भी मामले की तह में जाए बिना फैसले करना कितना मूर्खतापूर्ण होता है, यह मैं समझ गया.

ससुराल में आज का खाना मुझे बहुत रुचिकर लगा. डट कर खाने के बाद जब मैं घर की ओर लौट रहा था तो मैं महसूस कर रहा था कि कोई जरूरी नहीं कि सब लोग अजय के मामा जैसे हों. आज मुझे मेरे साससुर सालेसाली सभी बहुत भले लग रहे थे. और शीला, वह तो रात को सपने में भी आई थी. ●

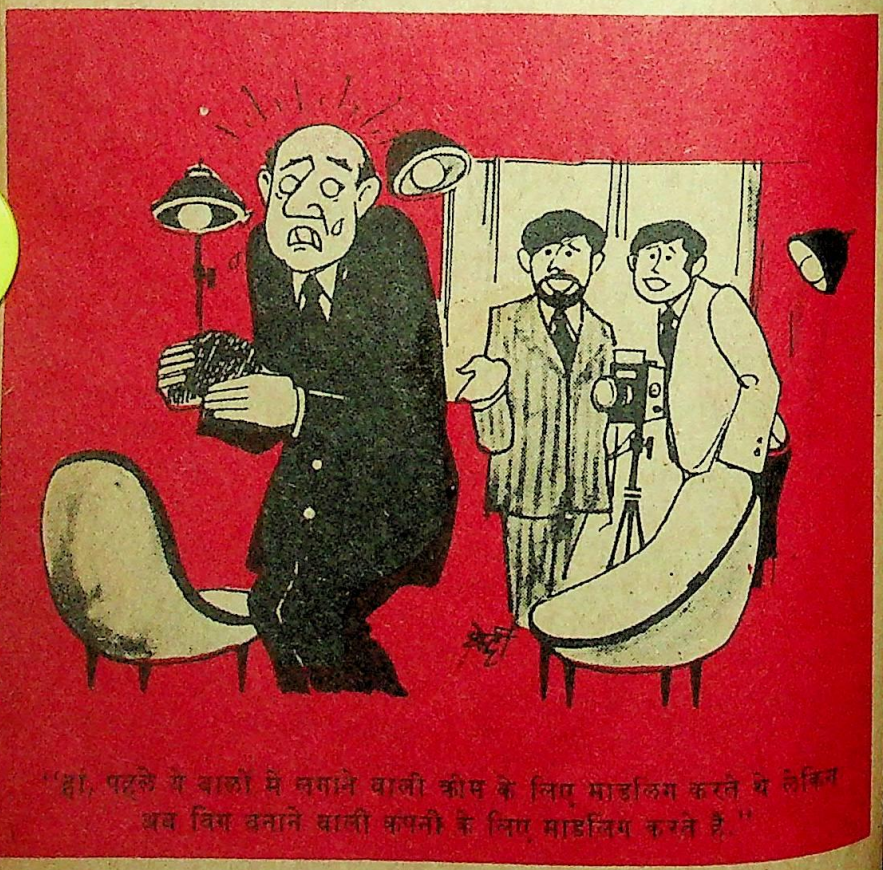

"हां, पहले मैं बालों में लगाने वाली क्रीम के लिए माडलिंग करते थे लेकिन अब विग बनाने वाली कंपनी के लिए माडलिंग करते हैं."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सांस में दुर्गंध जुदाई कराये...

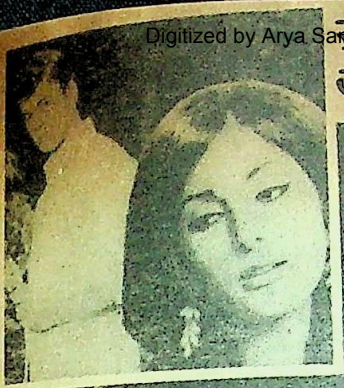

कोलगेट इनको फिर से मिलाये

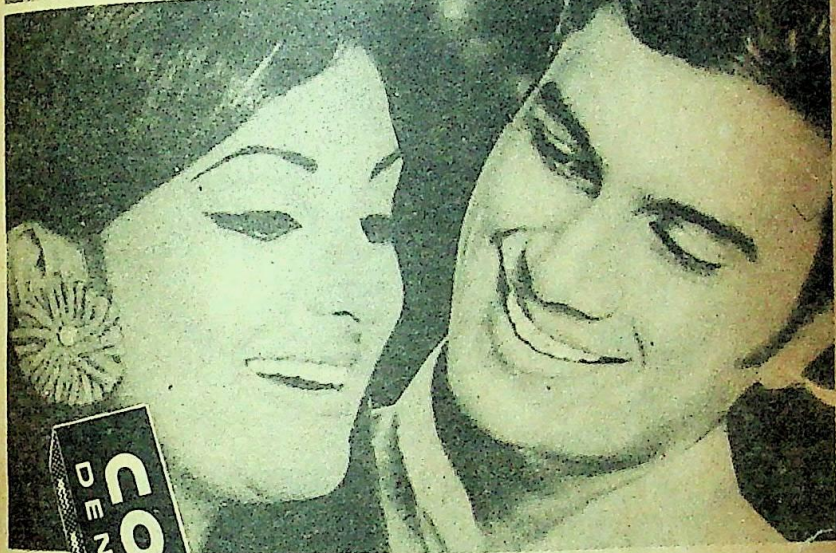

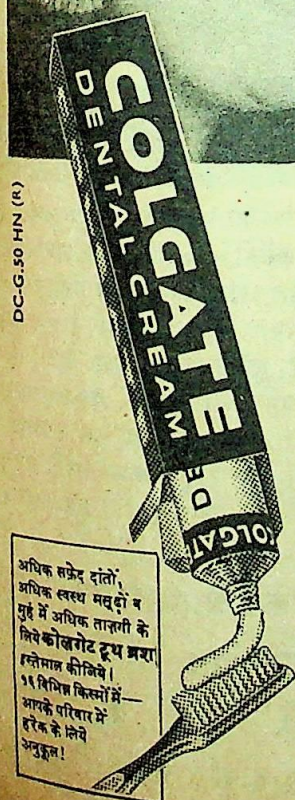

अधिक सफ़ेद दांतों, अधिक स्वस्थ मसूड़ों व मुंह में अधिक ताज़गी के लिये कोलगेट टूथ ब्रश इस्तेमाल कीजिये। १६ विभिन्न किस्मों में— आपके परिवार में हरेक के लिये अनुकूल!

DC-G.50 HN (R)

कोलगेट डेन्टल क्रीम से सांस की दुर्गंध रोकिये... दंतक्षय का दिनभर प्रतिकार कीजिये!

वैज्ञानिक परीक्षणों से यह सिद्ध हो चुका है कि १० में से ७ लोगों के लिए कोलगेट सांस की दुर्गंध को तत्काल ख़त्म कर देता है और खाना खाने के तुरंत बाद कोलगेट विधि से दांत साफ़ करने पर अब पहले से अधिक लोगों का—अधिक दंतक्षय रुक जाता है। दंत-मंजन के सारे इतिहास की यह एक बेमिसाल घटना है। क्योंकि एक ही बार दांत साफ़ करने पर कोलगेट डेन्टल क्रीम मुंह में दुर्गंध और दंतक्षय पैदा करने वाले ८५ प्रतिशत तक कीटाणुओं को दूर कर देता है। इसका पिपरमिंट जैसा स्वाद भी कितना अच्छा है—इसलिए बच्चे भी नियमित रूप से कोलगेट डेन्टल क्रीम से दांत साफ़ करना पंसद करते हैं।

ज़्यादा साफ़ व तरोताज़ा सांस और ज़्यादा सफ़ेद दांतों के लिए...

दुनिया में अधिक लोग दूसरे टूथपेस्टों के बजाय कोलगेट ही खरीदते हैं!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छत्तरपुर (म. प्र.) में आत्मसमर्पण समारोह में सर्वोदय नेता जयप्रकाश नारायण के साथ डाकू गिरोह का सरदार मूरतसिंह.

लेख • गंगा प्रसाद ठाकुर

ग्वालियर संभाग में डाकू संत्रास

मध्य प्रदेश का ग्वालियर संभाग भारत में डकैती के संत्रास से सर्वाधिक पीड़ित क्षेत्र है. पिछले पंदरहवीस वर्षों के अपराध संबंधी आंकड़े इस कथन की बोलती हुई तसवीर पेश करते हैं. 1950 में यहां 291 डकैती, 192 हत्याएं और फिरौती धन के लिए 56 अपहरण हुए. बाद में इस में कुछ कमी आई, परंतु अपहरण की घटनाओं में वृद्धि हुई. शायद

डकैतों के आत्मसमर्पण का रहस्य सामयिक परिस्थितियों में नहीं, उन के हृदय परिवर्तन करने वाले विचारों में निहित था...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छत्तरपुर में डाकुओं द्वारा आत्मसमर्पण : ये पुलिस के सिपाही नहीं, डाकू हैं जो आत्मसमर्पण की प्रतीक्षा में हैं.

डकैतों का हृदय परिवर्तन हो गया और उन्होंने हत्या करने के बजाए फिरौती धन पाने के लिए अपहरण का तरीका अधिक पसंद किया, ताकि बिना खूनखराबा किए उन के उद्देश्य की पूर्ति हो जाए. 1970 में अपहरण की 297 घटनाएं दर्ज की गईं, अर्थात 20 वर्षों में अपहरण की घटनाओं में पांच गुना से भी अधिक वृद्धि हुई.

चंबल, कुंवारी, सिंध आदि की घाटियों में व्याप्त असामान्य अपराध की यह स्थिति भूतकाल से चली आ रही है. चंबल घाटी और उस से लगे राजस्थान और उत्तर प्रदेश के क्षेत्रों के लोगों में यह दृढ़ विश्वास प्रचलित है कि मुरैना जिले के कोंथर ग्राम में एक ऐसा कुआं है, जिस के जल में ऐसा रासायनिक तत्त्व है जो उसे पीने वाले व्यक्ति में हत्या या लूट की प्रवृत्तियां उत्पन्न करता है.

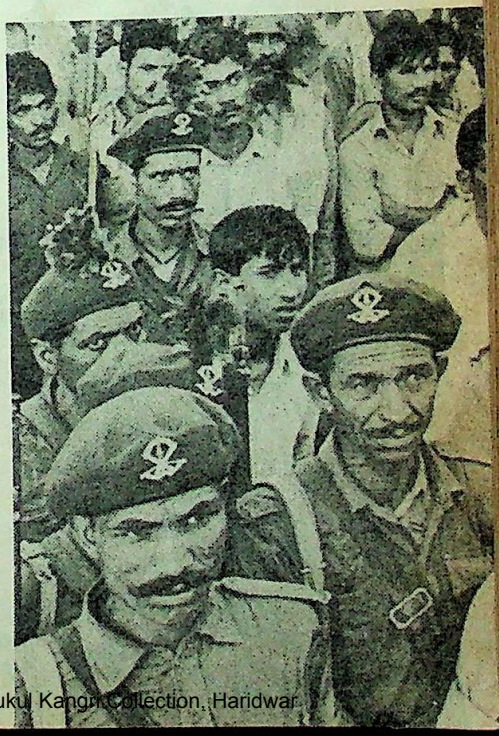

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस क्षेत्र में अभी भी ऐसी कहानियां प्रचलित हैं कि ग्वालियर के महाराजा माधवराज सिंधिया ने इस कुएं का जल पिया था तो उन्होंने अनुभव किया था कि उन का स्वभाव असाधारण रूप से उग्र हो गया था, फलतः उन्होंने कुआं बंद करने और उक्त भूमि को राजसात करने का आदेश दिया था. यदि इसे कल्पना ही माना जाए (क्योंकि सरकार द्वारा गठित विभिन्न आयोगों ने इसे कल्पना ही माना है) तो भी इस बात में काफी सचाई है कि मुरैना जिले के कोंथर सहित कतिपय गांवों ने गत 50 वर्षों में बीसियों खूंखार डाकू पैदा किए हैं.

इस क्षेत्र की असामान्य अपराध स्थिति के उदय और बने रहने के कारणों पर विचार के पूर्व इस क्षेत्र तथा निकटवर्ती क्षेत्रों का विशिष्ट स्वरूप और अनेक शताब्दियों से चला आ रहा अपराधों का इतिहास भी देखना जरूरी है.

ग्वालियर संभाग में भिंड, मुरैना, ग्वालियर, दतिया, शिवपुरी तथा जिले शामिल हैं. इस के उत्तरी भाग जिला भिंड और जिला मुरैना का भाग शामिल है. इस के दक्षिणी भाग जिलों ग्वालियर, शिवपुरी, दतिया मुरैना जिले के मध्यवर्ती तथा दक्षिण भाग और जिला गुना शामिल हैं.

इस क्षेत्र में कई नदियां बहती जैसे चंबल, पहूज, पार्वती, कुंवारी, सि आदि. चंबल के तटों पर विस्तृत बी हैं, जो कहीं उथले हैं किंतु अधिकांश गहरे हैं. ये बीहड़ कुंवारी तथा सिंध तटों पर भी हैं.

चंबल नदी एक ओर राजस्थान तथा उत्तर प्रदेश राज्यों तथा दूसरी ओर मध्य प्रदेश की बीच की सीमा रेखा बनाती है. यह क्षेत्र कुछ कुछ त्रिभुजाकार है, जि का शीर्षबिंदु उत्तर प्रदेश के इटावा के लगभग है. इन बीहड़ों के अतिरिक्त जो एक ऐसा क्षेत्र है जहां पहुंच प सरल कार्य नहीं है, यहां सघन वन भी जो मुरैना, ग्वालियर, शिवपुरी, गु

नवजीवन शिविर में डाकू गिरोह के सरदार मूरतसिंह के साथ बैठे हुए उस के सफेदपोश साथी : अब हम जनता के साथ हैं.

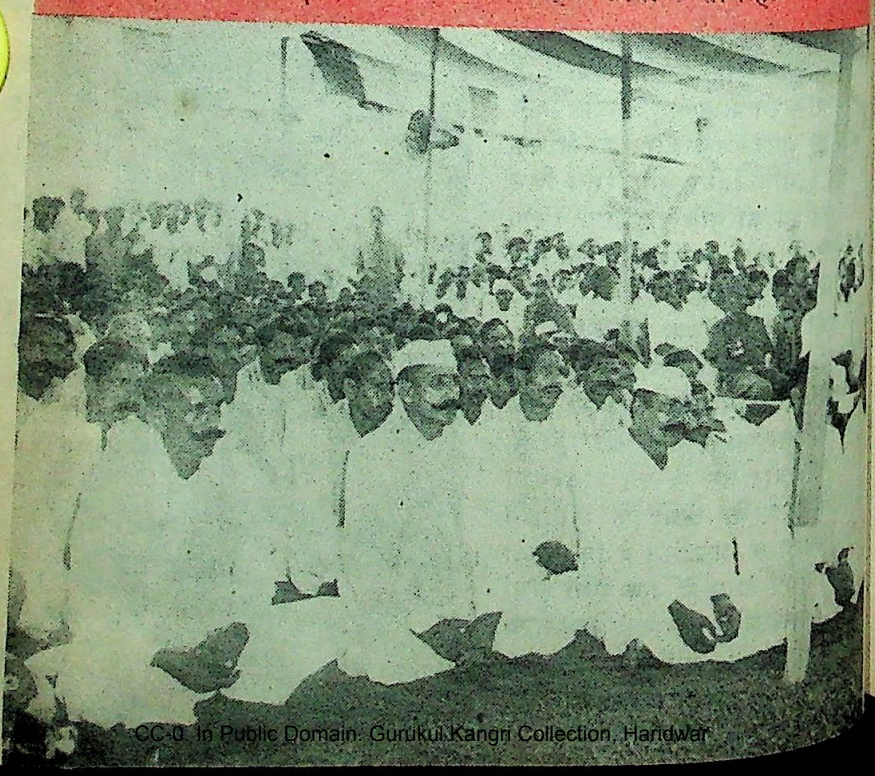

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तत्कालीन मुख्य मंत्री प्रकाशचंद्र सेठी बागी मूरतसिंह को चर्खा भेंट करते हुए : आइए, नए जीवन की शुरुआत कर्म और शांति के प्रतीक चर्खे से करें.

तथा दतिया जिलों के अधिकांश भागों में फैले हुए हैं. इन में से कुछ वन, विशेषत: मुरैना, शिवपुरी तथा ग्वालियर जिलों के वन विस्तृत क्षेत्र में फैले हुए हैं. मुरैना जिला आकार में लंबा है और लगभग 250 मील तक फैला हुआ है. चौड़ाई तुलनात्मक रूप से कम है जो 20 से 40 मील तक है. दतिया जिला बहुत छोटा है जिस में दतिया और लहार केवल दो ही तहसीलें हैं.

इस क्षेत्र की पैदल यात्रा कभी करें तो आप पाएंगे कि यहां ऐसे घने जंगल और बीहड़ हैं कि जिन में डाकू आसानी से छिप सकते हैं तथा फरार हो सकते हैं. इस क्षेत्र में कृषि क्षेत्र के बराबर ही बीहड़ों से घिरा छ: लाख एकड़ क्षेत्र है.

यहां रहने वाली जातियों में ठाकुर, गूजर तथा ब्राह्मण खुद को उच्च वर्ग का मानते हैं. इस के अतिरिक्त जाटव, चमार, मीना, किरार, रावल, काछी तथा अहीर निम्न माने जाते हैं. आश्चर्य की बात तो यह है कि उच्च तथा निम्न, दोनों ही वर्गों के डकैत गिरोह आप को मिलेंगे. 1953 के प्रारंभिक माहों में आठ सूचीबद्ध गिरोहों में से तीन ठाकुरों के और चार गूजरों के नेतृत्व वाले थे. 1960 के 13 सूचीबद्ध गिरोहों में चार का नेतृत्व ठाकुर, चार का गूजर, दो का काछी, एक का ब्राह्मण, एक का किरार, और एक का अहीर कर रहे थे. 1969 के 25 गिरोहों में से 13 का ठाकुर, तीन का गूजर और दो का नेतृत्व काछियों के हाथों में था.

ठाकुर तथा गूजर, दोनों ही योद्धा जाति के लोग हैं और उन में से कुछ के वंशज भूतकाल में शासन कर चुके हैं. तोमर वंशी राजाओं में, जिन्होंने 11 वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध तक दिल्ली पर शासन किया था, अनंगपाल तोमर अंतिम शासक था. पृथ्वीराज चौहान ने, जो अनंगपाल का भतीजा था, उस के राज्य पर आक्रमण किया और अपने अधीन कर लिया. राजा अनंगपाल को अपने वंश सहित जिन में बीसा, बत्तीसिया तथा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिया गया.

अनंगपाल और उस के अनुयायियों को, जो पृथ्वीराज की शक्तिशाली सेनाओं का सामना न कर सके, दक्षिण की ओर और आगे बढ़ना पड़ा तथा चंबल और कुंवारी के बीहड़ तथा उन के पास के जंगलों में शरण लेनी पड़ी जो दक्षिण की ओर सैकड़ों मील तक फैले हुए हैं. उस क्षेत्र में जिस में तोमर वंश के इन परिवारों ने शरण ली 'तोमर घर' कहलाने लगा.

ये युद्धप्रिय स्वाभिमानी व्यक्ति कुछ समय तक अपने उन गौरवपूर्ण दिनों को नहीं भूले, जब कि उन के वंशजों ने दिल्ली पर शासन किया था और अनियंत्रित शक्ति का सुख भोगा था. इसी भावना से प्रेरित हो कर इन्होंने एक ऐसा स्वप्न संजोया था कि वे दिल्ली पर पुनः अपना अधिकार स्थापित कर लेंगे.

विदेशी आक्रमणों का प्रभाव

विदेशी मुसलमानों के लगातार आक्रमणों ने उन के इस स्वप्न को साकार नहीं होने दिया. कुछ साहसी परिवार दक्षिण की ओर चले गए और उन्होंने ग्वालियर के किले तथा उस के आसपास के क्षेत्रों पर अधिकार कर लिया. वहां उन्होंने 14वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में तोमर राज्य की स्थापना की. यह स्थिति सन 1523 तक बनी रही जब कि राजा मानसिंह की मृत्यु के बाद उन का राज्य प्रथम मुगल शासक बाबर द्वारा हस्तगत कर लिया गया.

फिर भी अन्य तोमर परिवार पिछड़े हुए और कम समृद्ध क्षेत्र में रहते रहे और उन्होंने उस क्षेत्र की अन्य जातियों जैसे जाटव, चमार, सिंहरिवा, किरार आदि पर जो सीधीसादी और शांतिप्रिय थीं, अपना प्रभुत्व बनाए रखा. आरंभ में, वे राजकोष के प्रहरी दलों को लूट लिया करते थे. इन लूटमारों के पीछे कदाचित राजनीतिक प्रयोजन भी रहा होगा, किंतु दिल्ली में मुगल शासन के सुदृढ़ हो जाने और उस के भारतीय उपमहाद्वीप के बड़े भाग पर फैल जाने के साथ राजनीतिक दृष्टि से अभिप्रेरित इन क्रियाविधियों ने कालांतर में संगठित रूप का रूप ले लिया.

अंगरेजों का आगमन

मुगल राज्य के कमजोर होने से पेशवाओं के अधीन मराठा और उन के सैनिक सूबेदार सिंधिया और होल्कर की शक्ति का विस्तार होने के साथ ही इस क्षेत्र में इन ठाकुरों तथा गूजरों का सिंधियाओं से संघर्ष हुआ जिन्होंने ग्वालियर तथा उस के आसपास के क्षेत्र में अपना राज्य स्थापित कर लिया था. चूंकि उन्होंने नवीन शासकों का आधिपत्य स्वीकार नहीं किया था, इसलिए उन्हें भूमिधारी के रूप में अपने अधिकार से वंचित किया गया. युद्धप्रिय होने के कारण वे लूटमार से जीवनयापन करते रहे. तथापि वे अपने को 'बागी' या 'विद्रोही' मानते थे.

मराठा शासन के कमजोर होते ही 19वीं शताब्दी के प्रथम 25 वर्षों में संपूर्ण भारत पर अंगरेजों का प्रभुत्व स्थापित हो गया, किंतु इस से पहले कि व्यवस्था तथा शांति स्थापित कर सकते, इन लुटेरी जातियों की गतिविधियां ठगों और पिंडारियों द्वारा निष्क्रिय कर दी गईं. इन ठगों तथा पिंडारियों का अंततः 19वीं शताब्दी के मध्य से पहले कर्नल स्लीमैन द्वारा सफाया करा दिया गया. तथापि यह नहीं कहा जा सकता कि इस संपूर्ण अवधि के दौरान ये ठाकुर और गूजर निष्क्रिय बैठे रहे. हम ने डाकू गंजेराम का नाम सुना है, जिसे मानसिंह के समय 'ग्वालियर का रोबिनहुड' कहा जाता था और जो 19वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में सक्रिय रहा था.

इसी प्रकार अन्य भी हैं, जैसे गंभीर सिंह, जो शताब्दी के मध्य में सक्रिय था, रोहर बरनाई के जमींदार तथा खाल दोली के गूजर अर्थात सूरतराम, चुन्नी, सारदा और आयुर्बल, जो 19वीं शताब्दी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के अंतिम 25 वर्षों में अर्थात सन 1886 से 1900 तक सक्रिय रहे थे.

'डकैती तथा ठगी' विभाग द्वारा, जो ब्रिटिश शासन द्वारा स्थापित किया गया था, रखे गए आंकड़े यह दर्शाते हैं कि ग्वालियर क्षेत्र में डकैती दूरदूर तक फैली थी.

विशेष डकैती विरोधी कार्य के अंतर्गत 1954 में आठ गिरोहों में से, तत्समय विद्यमान चार गूजर गिरोहों का, जिन के मुखिया जगरामसिंह, शंकर और पृथ्वी थे, पूर्णतः सफाया कर दिया गया. मानसिंह, लाखनसिंह, सुल्तानसिंह गूजर तथा मालवीय बढ़ई के शेष चार गिरोह डकैतियां करते रहे. मानसिंह के गिरोह का, जिसे उस समय भयानक समझा जाता था, अगस्त, 1954 में सरगर्मी से पीछा किया गया. इसे 26, 28 तथा 30 अगस्त, 1954 को भिंड जिले के कई स्थानों पर रोका गया और मुठभेड़ के लिए विवश किया गया.

इन में से एक मुठभेड़ में मानसिंह का पुत्र तहसीलदारसिंह गंभीर रूप से आहत हुआ और बाद में उसे गिरफ्तार कर लिया गया. उस पर उत्तर प्रदेश में मुकदमा चलाया गया जिस में उसे दोषी ठहराया गया तथा मौत की सजा दी गई. इस सजा की पुष्टि इलाहाबाद उच्च न्यायालय तथा उच्चतम न्यायालय द्वारा की गई. तथापि, बाद में राष्ट्रपति के आदेश द्वारा यह सजा आजीवन कारावास में परिवर्तित कर दी गई.

इस घटना की, जिस के परिणामस्वरूप तहसीलदारसिंह गिरफ्तार कर लिया गया, मानसिंह के गिरोह में भीषण प्रतिक्रिया हुई. उन्हें यह आशंका हुई कि भंदवा कलां के निवासियों के जरिए पुलिस को उन की गतिविधियों के बारे में जानकारी प्राप्त होती थी. अतएव इस का बदला लेने के लिए वे साहिबकापुरा गए और उन 12 अहीरों को गोली मार दी, जिन के बारे में उन्हें यह विश्वास था कि वे भंदवा कलां के अहीरों के संबंधी थे.

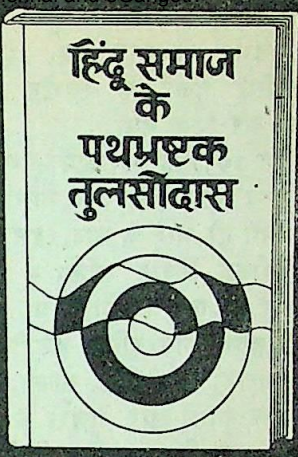

संत कवियों की प्रशंसा की परंपरा चली तो आलोचकों ने तुलसी को हिंदी साहित्य का सूर्य घोषित कर दिया. प्रशंसा की चकाचौंध में किसी ने यह सोचने की चेष्टा नहीं की कि तुलसी वास्तव में हिंदू समाज के पथप्रदर्शक थे या पथभ्रष्टक?

तुलसी की वास्तविकता पाठकों के सामने ला कर रखना ही इस पुस्तक का उद्देश्य है. इस से पाठकों को तुलसी साहित्य के बारे में एक नई दृष्टि से सोचने की प्रेरणा मिलेगी.

मूल्य रु. 8. डाक खर्च रु. 2.

स्कूलोंकालिजों के अध्यापकों के लिए 50 प्रतिशत की छूट. मनीआर्डर द्वारा 5 रुपए भेजिए. वी. पी. पी. से भेजना संभव नहीं है.

विश्व विजय प्रकाशन

एम-12, कनाट सरकस,
नई दिल्ली-1.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक वर्ष के बाद 25 अगस्त, 1955 को, मानसिंह और उस का पुत्र साहबसिंह एक मुठभेड़ में मारे गए. इसी वर्ष सुल्तानसिंह गूजर के गिरोह का भी सफाया कर दिया गया.

सन 1957 के प्रारंभ में, अर्थात वर्तमान मध्य प्रदेश राज्य का निर्माण होने के लगभग दो माह के बाद, इस क्षेत्र में 13 सूचीबद्ध गिरोह सक्रिय थे जिन में मानसिंह के एक विश्वासपात्र सहयोगी रूपा ब्राह्मण, लाखनसिंह, हजूरी, अमृतलाल किरार, गब्बरसिंह, कल्ला, पुतली तथा अन्य काछी और गूजरों के गिरोह आते हैं. कुल मिला कर 13 गिरोह थे.

डाकुओं द्वारा तबाही

इस समय की बिगड़ती हुई अपराध स्थिति के संबंध में पुलिस की समीक्षा का उल्लेख 'हिस्ट्री आफ मध्य प्रदेश पुलिस' के पृष्ठ 355 पर किया गया है, जो निम्नानुसार है :

"सन 1957 के प्रारंभ में, स्थिति यहां तक बिगड़ गई थी कि सिविल प्रशासन समाप्तप्राय हो गया था. रूपा लोगों की हत्या करने और उन्हें लूटने में लगा था. लाखन ग्रामवासियों से चंदे के रूप में लाखों रुपए की रकम ऐंठ रहा था. गब्बर ने नाक काटने और लोगों को आतंकित करने का एक क्रूर अभियान प्रारंभ कर दिया था.

"डाकू कल्ला एक मुठभेड़ में उप निरीक्षक भाजेकर की हत्या करने और एक कांसटेबल को गंभीर रूप से आहत करने के बाद, पुलिस से अभी भी बचता फिरता था. हजूरी, पन्ना और बारेलाल ने अविवेकपूर्ण बलात्कारों, हत्याओं और डकैतियों द्वारा तबाही मचा रखी थी. कुदियां गांवगांव में लूटमार कर के दिनप्रतिदिन शक्तिशाली होता जा रहा था. यह स्थिति बड़ी भयानक थी.

"पुलिस दल के कर्मचारियों को छोड़ अन्य किसी भी शासकीय अधिकारी को अपने घर से बाहर निकलने का साहस नहीं होता था. ग्रामीण जनता बदमाशों की दया पर अपना घरबार छोड़ कर निकटवर्ती बीहड़ों में बिना सोए रात बिताती थी. दिन या रात में किसी भी समय जानमाल की कोई सुरक्षा नहीं थी.

"24 मार्च, 1957 को स्थिति बदल हो गई. उस दिन पन्ना ने अपने गिरोह के सदस्यों के साथ मुरैना जिले के महुआ थाने के गुढा ग्राम में आठ ब्राह्मणों की हत्या कर दी, क्योंकि वह उन्हें अपने भाई अतरा को गिरफ्तार कराने के लिए जिम्मेदार समझ रहा था."

इस आतंक की समाप्ति हेतु विशेष पुलिस अभियान चलाया गया जिस के फलस्वरूप 1967 के अंत तक 60 डकैत गोली के शिकार हुए तथा 262 गिरफ्तार हुए. पुलिस के अनुसार इन के पास से 134 आग्नेयास्त्र, 2060 राउंड गोलाबारूद, जिन में एक टामीमशीनगन, 12 माउजर, इक्कीस 303 राइफलें आदि शामिल थीं, जब्त किए गए.

1959 के अंतिम 5 मासों में अमृतलाल, (जिस ने 11 व्यक्तियों का एकसाथ अपहरण कर सवा लाख रुपए वसूले थे) लालसिंह, रूपा, कल्ला, लच्छी, श्रीफला और बारेलाल के गिरोहों का पूर्णतः सफाया किया गया.

डकैती और लूटपाट

1960 के आरंभ में एक स्थानीय गिरोह, जिस का मुखिया मसूदपुर का बाबू गूजर था, सक्रिय हो गया और बंबईआगरा मार्ग पर चंबल पुल के पास जयपुर के 45 सामाजिक कार्यकर्ताओं की एक बस को लूट कर तहलका मचा दिया. बाद में वह पुलिस की गोली से मारा गया. इसी दौरान देवीलाल ने मानपुर में डकैती डाली और 70 हजार रुपए लूटे व पांच व्यक्तियों की हत्या की. उसी ने लाखन के गिरोह के साथ मिल कर सहसराम (थाना बोरमी) में दूसरी डकैती डाल एक लाख 70 हजार रुपए की संपत्ति लूटी. पन्ना ने चार का अपहरण किया और मुखबिरी के संदेह में सात चमारों व एक अन्य को गोली से उड़ा दिया.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नवंबर, 1962 में रतन व उस के साथी तथा दिसंबर में लाखन पुलिस गोली के शिकार हुए. 1962 में हरविलास व लक्ष्मीनारायण गिरोहों का भी सफाया कर दिया गया. इस के बाद भी 1971 में नएपुराने 25 डकैत गिरोह सक्रिय थे.

गिरोहों को शस्त्रादि की पूर्ति

इन डकैत गिरोहों की सब से बड़ी शक्ति है शस्त्र तथा गोलाबारूद, जिस से वे निहत्थे व निर्दोष व्यक्तियों को आतंकित कर हत्या, डकैती व अपहरण जैसे जघन्य अपराध और पुलिस का सफलतापूर्वक मुकाबला करते हैं. इन के पास 303 राइफलों के अतिरिक्त हथगोले और मशीन कारबाइनस, अर्धस्वचालित राइफलें भी पाई गई हैं.

ये हथियार इन्हें युद्ध के दौरान पाकिस्तानियों द्वारा छोड़े गए शस्त्र भंडार, भूतपूर्व रियासतों, बड़े शहरों के अवैध कारखानों, पुलिस, सेना के भंडारों से गुप्त रूप से या चोरी द्वारा तथा उन नागरिकों से मिलते हैं जो इन की मदद करते हैं या जो इन के रिश्तेदार हैं. सीमा क्षेत्रों से भी ये शस्त्र प्राप्त करते हैं, जहां शस्त्र रखने की छूट है. इस कार्य के लिए उन्हें स्थानीय शस्त्र विशेषज्ञों और कारीगरों की सहायता भी मिल जाती है.

इस क्षेत्र की यह प्रवृत्ति सांस्कृतिक वातावरण की देन है. ऐसा भी हो सकता है कि यहां के स्वाभिमानी लोगों को, जो कभी शासक थे तथा पराजय स्वीकार नहीं करते थे, अपने गौरव की रक्षार्थ अपराध ही एक सुविधाजनक तरीका प्रतीत हुआ हो. व्यक्तिगत प्रतिशोध और लूट ने संगठित हिंसा का स्थान ले लिया हो, ऐसा भी हो सकता है. वैसे आम तौर पर यहां की निम्न परिस्थितियां उन को अपराध की ओर बढ़ाने के लिए काफी हद तक जिम्मेदार कही जा सकती हैं : ऊंचनीच का भेद, प्रतिशोध की भावना, पारिवारिक वैमनस्य, छिपने के लिए घने जंगल व बीहड़, आवागमन की सुविधाओं की कमी, पुलिस का क्षीण बल और जीवनोपार्जन के अपर्याप्त साधन.

यद्यपि ठाकुरों (विभिन्न उप जाति भदौरिया, तोमर, सिकरवार, रावल व राजपूत) और गूजरों की शूरवीरता की स्वस्थ एवं गौरवपूर्ण परंपराएं भी रही हैं, तथापि वे हमेशा बौद्धिक रूप से पिछड़े व अज्ञान में डूबे रहे हैं. इन्होंने जीवकोपार्जन हेतु कृषि को कभी नहीं अपनाया. फलतः इन में दुस्साहसी लोग पशु चुराने तथा डाकेजनी करने लगे. इसे पहले घृणास्पद अपराध नहीं माना गया, जिस से इन्हें प्रोत्साहन मिला. इन के प्रति सहानुभूति रखने वाला तथा मदद देने वाला वर्ग

पुरुष महिलाओं से ज्यादा बातूनी

पुरुष महिलाओं की अपेक्षा ज्यादा बातूनी होते हैं. वे दोगुनी से ले कर दस गुनी अधिक बातें करते हैं.

समाजशास्त्र के प्रोफेसर वारेन फेरेल ने, जो 'द लिबरेटेड मैन' नामक पुस्तक के लेखक भी हैं, मैक्सिको में अंतर्राष्ट्रीय महिला वर्ष के उपलक्ष्य में आयोजित विश्व सम्मेलन में यह सिद्ध कर दिया है. पांच प्रयोगों के आधार पर उन्होंने सिद्ध किया कि पुरुष ज्यादा बोलते हैं.

एक प्रयोग स्टाप वाच के माध्यम से किया गया ताकि यह पता लग सके कि एक निश्चित समय में ज्यादा देर तक कौन बोलता है. इस से सिद्ध हुआ कि पुरुष महिलाओं से दोगुना से ले कर दस गुना तक ज्यादा बोलते हैं.

In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पैदा हो गया.

सफलतापूर्वक डकैती डालने से इन का वर्चस्व कायम होने लगा. इन से संबंध रखने व इन्हें मदद देने वाले लोग भी इन का आर्थिक, सामाजिक व राजनीतिक लाभ उठाने लगे. ये डकैत अपने परिवार के लोगों के नाम बेनामी संपत्ति तक खरीदते हैं.

यदि कोई ठाकुर या गूजर डाकू हो जाता है तो उन के परिवार या समाज वाले खुद को ज्यादा सुरक्षित महसूस करते हैं तथा डकैतों को सम्मानजनक 'बागी' शब्द से संबोधित करते हैं. इसी प्रकार डकैतों को आश्रय देने, भोजन तथा शस्त्रादि की सप्लाई करने, चोरी का माल गलाने, पुलिस की गतिविधियों की सूचना देने वाले व्यक्तियों का ऐसा जाल सा बिछ जाता है जो कि डकैत गिरोहों को पनपाता और बनाए रखता है.

डकैती निवारक उपाय

डकैती निवारण के लिए आवश्यक है कि बाल्यकाल से समुचित शिक्षा दी जाए, उस का अधिकाधिक प्रसार, प्रचार हो. ऐसे नाटक, कहानी व अन्य साहित्य का सृजन किया जाए जो इस कृत्य के प्रति लोगों में मनोवैज्ञानिक परिवर्तन कर उन में मानवीयता तथा कर्त्तव्यबोध की भावना जगा सकें. सामाजिक परिवर्तन के प्रयास हों, ताकि विभिन्न जातियों में व्याप्त कट्टरपन, विद्वेष व प्रतिशोध की भावना दूर की जा सके और हिंसा, डकैती, अपहरण जैसे अमानवीय कृत्यों के प्रति उन्हें निरुत्साहित किया जा सके. इस के लिए पर्याप्त मनोवैज्ञानिक उपाय भी काम में लाए जा सकते हैं.

बीहड़ क्षेत्रों को कृषि योग्य बनाने, आर्थिक प्रगति के अन्य साधन, जैसे आवागमन की सुविधा, उद्योगधंधों का खोलना, ऋण प्राप्ति की सुविधा आदि के प्रयास किए जाने चाहिए. कानूनों में पर्याप्त परिवर्तन या संशोधन किया जा सकता है, जिस से अपराध करने या अपराधियों को प्रश्रय देने वालों के विरुद्ध सख्त कार्यवाही संभव हो सके.

इस सब के साथ पुलिस बल में वृद्धि, उन्हें आधुनिक शस्त्रास्त्र, संचार व आवागमन के साधन मुहैया करने के साथ उन की सेवाशर्तों में सुधार, अच्छे कार्यों पर विशेष पुरस्कार आदि की सुविधाएं दे कर उन्हें ज्यादा सक्षम बना कर व जन सहयोग की परिस्थितियों का निर्माण कर इस बुराई को काफी हद तक कम किया जा सकता है.

सामाजिक परिस्थितियां दोषी

इस संबंध में मैं मध्य प्रदेश उच्च न्यायालय के सेवानिवृत्त न्यायाधीश श्री वी. आर. नेवासकर के 25-1-72 को प्रस्तुत जांच प्रतिवेदन का यह उद्धरण पेश करना चाहता हूं जो कि इस बुराई के मूल कारणों और उस की समाप्ति की सही दिशा की ओर स्पष्ट संकेत करता है :

"समुदाय के कतिपय वर्गों में इस बुराई की ऐतिहासिक परंपरा विद्यमान है. उन में विद्यमान सामाजिक परिस्थितियां उन्हें अपराधी बनने की ओर प्रेरित करती हैं. समाज के लोग उन का समर्थन करते हैं. समुदाय के अन्य वर्गों के लोग उन के एजेंट या शरणदाता बन जाते हैं. लाभ प्राप्त करने की भावना भी इस क्षेत्र में घर कर लेती है और इस आतंक के दीर्घकाल तक बने रहने के कारण यह एक व्यवसाय बन जाता है और उस के नायक, भाट और उपजीवी उत्पन्न हो जाते हैं.

"इस क्षेत्र में कभीकभी राजनीति भी प्रवेश कर जाती है. बुराई से बुराई का जन्म होता है और ऐसी सहायता यों ही नहीं दी जाती बल्कि उस के लिए राजनीतिज्ञों को डाकुओं के कुकृत्यों में उन का चोरीछिपे सहयोग कर के इस की भारी कीमत अदा करनी पड़ती है. इस का उत्तरदायित्व उन लोगों पर है जो ऐसे अपराधियों का उन्मूलन करने के बजाए उन्हें पैदा करते हैं, उन्हें सहन करते हैं, उन की सहायता करते हैं, उन्हें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनोखी बात, एक में दो स्वाद

कॅड्बरिज़

चॉकलेट एक्लेअर्स

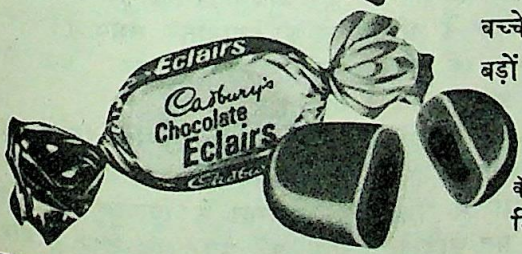

बच्चे प्यार से खायें,
बड़ों का भी मन ललचाये।

कॅरामेल में घिरा पौष्टिक
मिल्क चॉकलेट

C-2 HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रोत्साहन देते हैं और उन के अस्तित्व तथा उन की वृत्ति चालू रहने से बहुधा लाभ उठाते हैं.

"जब तक ऐसी परिस्थितियां बनी रहेंगी तब तक किसी विशिष्ट गिरोह के मुखिया या किसी अन्य गिरोह के मुखिया को समाप्त कर देने से कोई फर्क नहीं पड़ेगा, क्योंकि जब तक उन का निर्माण करने वाली और उन्हें कायम रखने वाली परिस्थितियां विद्यमान रहेंगी तब तक एक मुखिया को समाप्त कर देने से दूसरा मुखिया पैदा हो ही जाएगा."

आत्मसमर्पण किस से प्रेरित?

छठे और सातवें दशक में ग्वालियर संभाग के डकैतों ने आत्मसमर्पण किया, जिसे न केवल राष्ट्रीय बल्कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपने ढंग की अनूठी घटना बताया गया. लोगों ने कहा, यह चमत्कार भारत जैसे देश में ही संभव हो सकता है. इस के पीछे सर्वोदय संत आचार्य विनोबा भावे की प्रेरणा और विचार थे. बाद में सर्वोदय नेता श्री जयप्रकाश नारायण ने इस दिशा में पहल की. इस बात को ले कर काफी विवाद उठ खड़ा हुआ कि आत्मसमर्पण श्री जयप्रकाश के प्रयास से संभव हुआ कि मध्य प्रदेश के मुख्य मंत्री श्री प्रकाशचंद्र सेठी तथा उन के प्रशासन की दक्षता, चुस्ती और दृढ़ता से उत्पन्न भय के कारण.

वैसे यह निर्विवाद है कि इस कार्य में भूतपूर्व बागी श्री तहसीलदारसिंह, लोकमन, माधोसिंह, मोहरसिंह का महत्त्वपूर्ण योगदान था. इस बात से भी इनकार नहीं किया जा सकता कि जब तक डकैतों के दिलों में ही आत्मसमर्पण की भावना नहीं पैदा हो, जबरदस्ती से उन्हें इस काम के लिए मजबूर नहीं किया जा सकता. इस दिशा में उन्हें सोचने के लिए विवश किया संत भावे के विचारों ने, और कानून से उन्हें हर संभव रियायत दिलाने और आत्मसमर्पण की व्यवस्था की शासन ने.

वैसे डकैतों का आत्मसमर्पण कोई नई बात नहीं थी. ग्वालियर के महाराजा माधवराव सिंधिया ने भी इस दिशा में सफल प्रयोग किया था. परिणामतः अप्रैल, 1920 में 97 डकैतों ने आत्मसमर्पण किया.

मध्य प्रदेश में कुल 512 डकैतों ने स्वेच्छा से आत्मसमर्पण किया. इन में से 280 अभी तक छूट चुके हैं और 232 अभी जेलों में हैं.

डाकू परिवारों और डाकू पीड़ित परिवारों को बसाने के साथ ही अपराधी को सुधार कर उसे समाज का उपयोगी अंग बनाने का सुधारवादी रवैया अपनाते हुए म. प्र. शासन ने 14 नवंबर, 1973 को गुना जिले के मुंगावली में राज्य की पहली खुली जेल की स्थापना कर देश के समक्ष एक नया उदाहरण रखा. यह अभिनव प्रयोग पूर्णतः सफल रहा. यहां के लोगों को डेयरी फार्म तथा दूसरे उद्योगों के लिए बैंकों से धन दिलाया गया. इस सफलता से उत्साहित हो शासन ने सितंबर, 75 में लक्ष्मीपुर (पन्ना जिला) में आत्मसमर्पणकारी बागियों के लिए दूसरी खुली जेल 'नवजीवन शिविर' की स्थापना की, जिस में 50 बागियों के रखे जाने की व्यवस्था है.

यहां भी व्यवसाय व उद्योग हेतु बैंकों से ऋण दिलाया जा रहा है. साथ ही इस शिविर में 45 हेक्टेयर क्षेत्र कृषि के लिए भी सुलभ होगा.

इन बागियों के बीच आज भी सर्वोदयी कार्यकर्ता सतत काम करते रहते हैं. आत्मसमर्पणकारी इन बागियों की दिनचर्या अब आप बिलकुल बदली हुई पाएंगे, इन का ज्यादातर समय खेतीबाड़ी, गाय-भैंसों की सेवा तथा अन्य कार्यों में बीतता है.

यह सही है कि इतने डाकुओं के आत्मसमर्पण के बाद भी ग्वालियर संभाग इस समस्या से बिलकुल मुक्त नहीं हो पाया है. मगर अब डकैती, हत्या और अपहरण की घटनाएं बहुत ही कम हो गई हैं और डाकुओं के आतंक से त्रस्त निवासी इस समय बहुत सी राहत महसूस कर रहे हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेख • दिनेश सेठी

खरीदने से पहले

अच्छी तरह देखभाल लें, कहीं आप धोखा तो नहीं खा रहीं.

एक श्रीमतीजी की व्यथा कल देखने को मिली. उन्होंने बताया, "मैं ने जयपुर की एक मशहूर कपड़े की दुकान से एक साड़ी खरीदी. साड़ी कीमती थी और 700 रुपए में दीपावली पर पहनने के लिए खरीदी थी. बड़ी उमंगों से साड़ी ले कर घर गई. सोचा कि दीपावली के दिन ही इसे पहनेंगे, अत: अलमारी में रख दी.

"दीपावली के दिन साड़ी निकाली, उसे जब पहनने लगी तो वह छोटी थी. देखा, कहीं पलटे में डबल तो नहीं आ गई, किंतु नहीं, वह तो छोटी ही थी. नापने पर मालूम हुआ कि वह $4\frac{1}{2}$ मीटर की है, जब कि होनी चाहिए थी 5 मीटर की.

"दिल बहुत दुखी हुआ. मजबूरन उस समय दूसरी साड़ी पहननी पड़ी. उसे वापस लपेट कर दुकानदार के पास गई और उसे साड़ी बदलने को कहा.

"पहले तो वह टालने लगा कि खुली हुई साड़ी नहीं लूंगा, फिर न जाने क्या सोच कर बोला, 'अच्छा, इसे छोड़ जाओ, कंपनी में भिजवा दूंगा. वहां से जब बदल दी जाएगी तो आप को दे दूंगा.'

"पंदरह दिन बाद जब दुकानदार के पास गई तो यह कह कर उस साड़ी को लौटा दिया कि कंपनी ने बदलने से इनकार कर दिया है. हम क्या कर सकते हैं? आप को ले जाते वक्त ही देखनी

विश्वसनीय दुकानदार से खरीदी गई चीज की खराब होने की संभावना कम रहती है.

CC-0. [illegible] Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहिए थी. मजबूरन साड़ी को वापस लाना पड़ा.

"अब आप ही बताइए कि जैसेतैसे कर के तो रुपए संजोए थे और उस से साड़ी भी मिली तो ऐसी कि कहीं पहन कर भी न जा सके."

मैं भी क्या कह सकता था? मैं ने कहा, "आप को साड़ी दुकान पर ही खोल कर, देख कर लानी चाहिए थी."

इस पर वह बोलीं, "भाई साहब, बात तो आप ठीक कहते हैं. किंतु जो साड़ी इतनी महंगी है और बंधी हुई है उसे एक बार तो देख कर यह अंदाजा ही नहीं लगाया जा सकता कि वह छोटी होगी या खराब होगी. दूसरे, यदि आप की बात मान भी लें तो दुकानदार कहेगा कि यदि साड़ी खुल गई तो फिर आप को लेनी ही पड़ेगी. ऐसे में कौन बेवकूफ बनेगा? क्योंकि हो सकता है कि घर जा कर यह समझ में आए कि इस मेहंदी रंग वाली साड़ी से तो वह गुलाबी ज्यादा सुंदर थी, तो कम से कम बंधी हुई साड़ी को दुकानदार बदल तो देगा."

राजन को अपनी बेटी की शादी के लिए गहने बनवाने थे. अतः सोना लेने बाजार गया. उस ने सोचा कि बनेबनाए जेवर ठीक नहीं होते हैं अतः सोना ले कर मनपसंद जेवर बनवा लेंगे. बाजार में पहले तो उन्हें सब ने सोना देने से ही इनकार कर दिया क्योंकि शुद्ध सोना, जो कि बेचना अपराध है, खुलेआम देने की हिम्मत कोई नहीं कर सकता.

कुछ देर घूमने से एक दलाल के हाथ लग गया. दलाल उस के पास आया और उस ने महसूस किया कि आदमी सही है तो उसे एक तरफ ले जा कर कहा कि आप को एक बिस्कुट (सोने की दस तोले वजन की लंदन की एक सिल्ली होती है. आकारप्रकार बिस्कुट की तरह होने से उस का नाम ही 'बिस्कुट' है) दिलवा देता हूं. किंतु किसी को खबर नहीं होनी चाहिए.

राजन ने चुपचाप उस से बिस्कुट लिया और सुनार के पास गया. सुनार ने जब उसे काटा तो मालूम हुआ कि वह शुद्ध चांदी का है. उस के ऊपर सोने का पानी चढ़ाया गया है और लंदन की नकली सील व नंबर लगे हुए हैं. अब बेचारा राजन क्या करता, सिर पीट कर रह गया.

कई बार फेरी वाले जो अधिकतर अन्य प्रांतों के होते हैं ऐसे समय में लोगों के घरों में जाते हैं. जब कि मर्द लोग बाहर होते हैं. वे घर की औरतों को सस्ती चीजें दिखला कर खरीदने को प्रोत्साहित करते हैं. जो चाय बाजार में 15 रुपए किलो है वह आप को 8 रुपए किलो में दे रहे हैं. अखरोट 3 रुपए किलो, घी शुद्ध 12 रुपए किलो. ऐसे में किस का जी नहीं ललचाएगा.

वे बाकायदा आप को नमूने की थोड़ी चाय देंगे जो कि आप उस समय पी कर देख सकते हैं. कुछ अखरोट फोड़ कर दिखाएंगे और आप पाएंगे कि वे एकदम अच्छे हैं.

उन के जाने के बाद जब आप चाय की पत्तियों को उबालेंगे तो पता चलेगा कि वह तो फेंकने लायक है. इसी तरह अखरोट भी सड़ेगले होंगे. ऊपर की परत देसी घी की होगी, किंतु अंदर शुद्ध वनस्पति घी भी आप को नहीं मिलेगा.

वे काम में ली हुई चाय की पत्तियों को सुखा कर उस में थोड़ी खुशबू मिलाते हैं. घी में हलका घी नीचे डाल कर ऊपर से देसी घी की परत लगा देते हैं. नमूने के तौर पर वे आप की आंखों में धूल झोंक कर आप को अपने पास से बढ़िया नमूना दे देते हैं, जिसे देख कर आप समझते हैं कि बढ़िया चीज है.

स्मगलिंग (चोरी छिपे विदेशों से आया माल) के माल में तो साधारण नागरिक अकसर ठगे जाते हैं. आजकल विदेशी घड़ियां सब पसंद करते हैं. कुछ दिन बाद मालूम होता है कि घड़ी डुप्लीकेट है. इसी तरह टेपरिकार्डर के भी कैसेट भी बहुधा डुप्लीकेट होते हैं. ये कुछ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

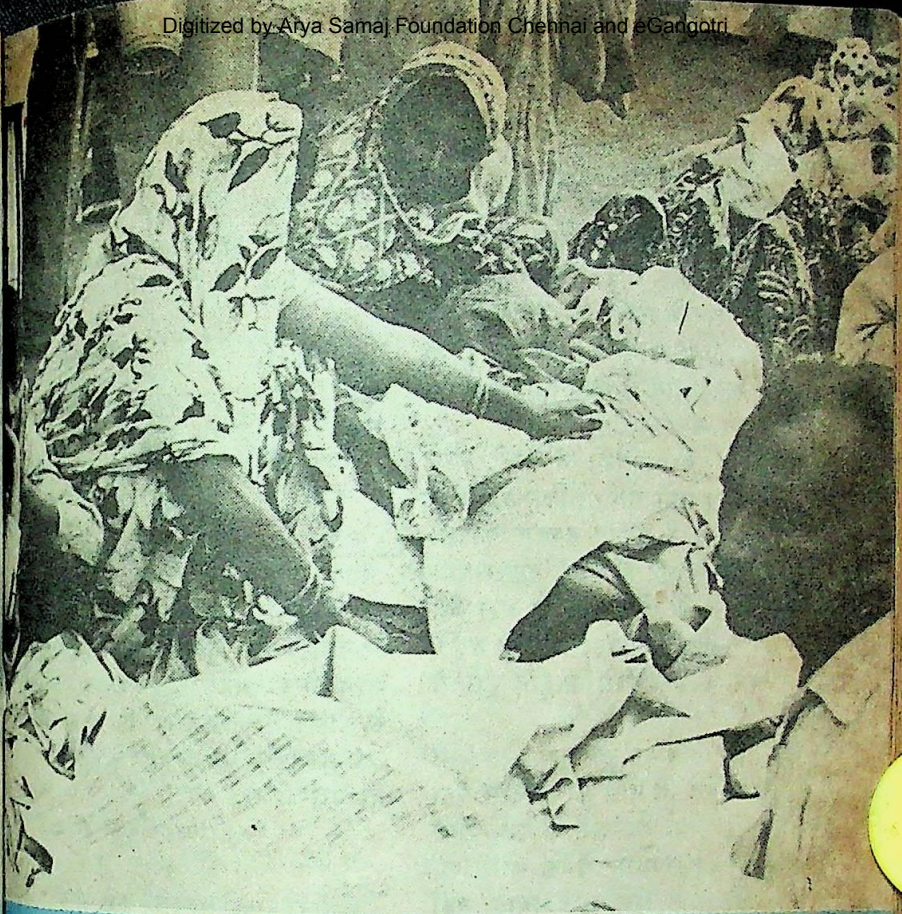

कपड़ा लेते समय अच्छी तरह देख लेना चाहिए कि वह खराब, छोटा या भीतरी तहों से कटा हुआ न हो.

दिन तो ठीक चलते हैं, फिर खराब हो जाते हैं.

यह तो मैं ने आप को कुछ उदाहरण दिए हैं. वास्तविकता यह है कि काफी चीजों में आजकल बेईमानी होने लगी है. अतः आप को किसी भी वस्तु को खरीदने से पहले अच्छी तरह देख लेना चाहिए. इस के लिए यदि नीचे लिखी बातों को ध्यान में रखा जाए तो आप अच्छी व सही वस्तु खरीद सकते हैं :

● जो भी वस्तु आप खरीदें अपने विश्वसनीय दुकानदार या विश्वसनीय व्यक्ति से ही खरीदें, जिस से कि यदि वह चीज गलती से खराब भी आ गई हो तो वह बदल दे.

● जब भी आप कपड़ा खरीदें, उसे वहीं खोल कर देख लें, जांच कर लें कि वह कटा हुआ, खराब या छोटा तो नहीं है. साड़ियों में विशेष सावधानी बरतें और वहीं दुकानदार से नपवा लें.

● फेरी वालों से जो कि आप को सिर्फ एक ही बार दर्शन दें, उन से कभी भी सस्ते के चक्कर में माल न खरीदें, क्योंकि ये आप को दोबारा दर्शन नहीं देंगे.

● स्मगलिंग के माल का बहिष्कार करें और स्वदेशी वस्तुओं का ही प्रयोग करें, ताकि डुप्लीकेट होने का भय न हो और कोई खराबी होने पर आप दुकानदार से कह भी सकें.

ऐसा करने से कुछ हद तक आप नुकसान उठाने से बच सकते हैं. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ये पति

मेरे एक मित्र का विवाह हुए केवल सात माह हुए थे. एक दिन भाभी ने उस से पचास रुपए मांगे तो उस ने कहा, "हेमा, रुपया तो चाहे जितना ले लो, किंतु हमारे घर के लोगों का खयाल है कि अगर कोई बीवी शादी के बाद एक साल के भीतर अपने पति से रुपए मांगती है तो उस का पति मर जाता है."

उस के बाद भाभी ने कभी भाई साहब से रुपए नहीं मांगे, लेकिन यह बात उन के दिमाग में हमेशा चक्कर काटती रही कि इन के घर में ऐसा विचार क्यों है? मियांबीवी के बीच की बात और वह भी रुपए पैसों की, आखिर किस से कहें? साहस कर के एक दिन उन्होंने मुझ से पूछ ही लिया.

उन की बात सुन कर मुझे बहुत हंसी आई. मेरा मित्र भी पास के कमरे में बैठा सब सुन रहा था. वह शर्म से पानीपानी हो गया. अब हालत यह है कि भाभी को उन की सच बात पर भी विश्वास नहीं होता है.

—राजेंद्रकुमार शर्मा, रायपुर.

मेरे पति मेरे बरतन धोने से बहुत चिढ़ते हैं. एक बार इन के एक दोस्त और उन की पत्नी चाय पर निमंत्रित थे. मैं ने बिलकुल नया टी सेट, जो कि यह तीन दिन पहले ही लाए थे, निकाल लिया. चाय पीने के बाद यह सोच कर कि टी सेट नया भी है और महंगा भी, कहीं नौकर तोड़ न दे, मैं बरतन धोने चली गई.

कुछ देर तक मुझे मेहमानों के बीच न देख कर ये खुद भी रसोई में आ गए. मुझे बरतन धोते देख कर इन्होंने एक लात बरतनों में मारी, जिस से वह टी सेट वहीं ढेर हो गया. यह देख कर मेरी आंखें भर आईं तो इन्हें अपनी गलती महसूस हुई.

मेहमानों के जाने के बाद भी मैं इन से नहीं बोली. दूसरे दिन मैं सब भूल कर काम में लग गई. किंतु यह अपने व्यवहार से इतना शर्मिंदा थे कि शाम को जब घर आए तो इन के हाथ में बिलकुल वैसा ही एक टी सेट था.

—कांती बिसारिया, आगरा

✦

मेरी एक सहेली कुछ काली तथा मोटी है. एक दिन वह पीले रंग की साड़ी पहन कर अपने पति के पास गई. उस के पति उस समय किसी कार्य में व्यस्त थे. उस ने अपने पति से कहा, "देखिए तो मैं कैसी लग रही हूं?"

पति महोदय ने उस की ओर देखे बिना ही कहा, "बहुत सुंदर लग रही हो."

थोड़ी देर बाद वह फिर बोली, "आप ने मेरी तरफ तो देखा ही नहीं."

पति ने उस की ओर देख कर कहा, "बहुत सुंदर लग रही हो."

वह फिर बोली, "अरे, आप ने मुझे कोई उपमा तो दी ही नहीं."

तब उस के पति ने मुसकराते हुए कहा, "ऐसी लग रही हो जैसे सरसों के खेत में भैंस खड़ी हो." सुनते ही वह नाराज हो कर वहां से खिसक गई.

—सरिता गुप्ता, शिवपुरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बारसीलोना

लेख •
पुष्पा ओझा

बारसीलोना—संगीत नृत्य के कलात्मक वातावरण से ओतप्रोत, सैलानियों के लिए प्रफुल्लता ताजगी बिखेरता एक बंदरगाह.

बुलफाइट का देश स्पेन. पर जहां धार्मिक उत्सव भी ऐसे संगीत और नृत्यों में ढाले जाते हैं कि राह चलता स्पेनी पथिक भी मंत्रमुग्ध हो उन में शामिल होने के लिए बाध्य हो उठे और बाहर से आया विदेशी पर्यटक इन सब को देख झूमने लगे. उसी स्पेन के बारसीलोना में कुछ और भी है, और ऐसा है कि यहां आने वाले सैलानियों को रिझा लेता है. शायद कुछ वैसी ही उत्फुल्लता, जिस की तुलना या तो हम कभी नवाबी मस्ती के दौर से गुजरते अपने लखनऊ से कर बैठेंगे अथवा नई ताजगी की लहरों में तैर रहे पश्चिम जरमनी के मनमौजी और खुले दिल म्यूनिख से.

बारसीलोना स्पेन का सब से अधिक व्यस्त बंदरगाह है, साथ ही मैड्रिड के बाद इस देश का सब से बड़ा शहर भी. उन्नीस लाख जनसंख्या वाला यह औद्योगिक

बारसीलोना की ही एक चौड़ी सपाट सड़क तथा प्रसिद्ध गिरजा 'सायराडा फामिलिया'

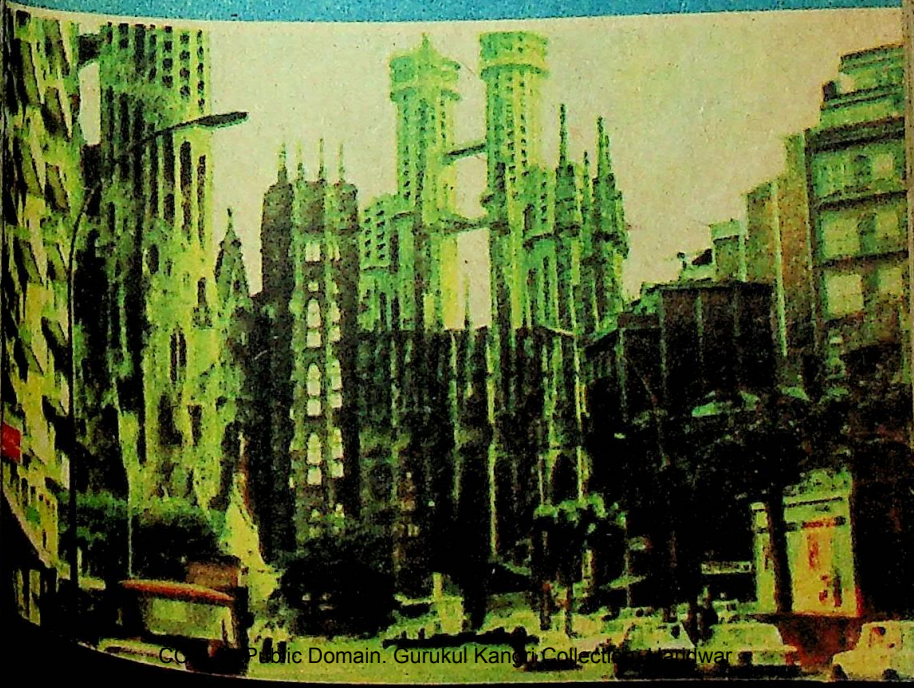

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शहर, आधुनिकता के साथ साथ अपने ने हस्तशिल्प के लिए भी विश्वविख्यात है. जहां बारसीलोना के कलात्मक वातावरण ने जान मिरो तथा पाब्लो पिकासो जैसे महान चित्रकार संसार को दिए वहीं बुलफाइट जैसे मनुष्य और पशु के क्रूर खेल को भी एक कलात्मकता प्रदान कर दी.

स्पेन के दो सब से बड़े बुलफाइट केंद्र बारसीलोना में ही हैं. उसी बारसीलोना की एक झलक देखने और उस झलक के माध्यम से बारसीलोना को जानने और समझने की कोशिश में हम लोग कोस्टा ब्रावा से बारसीलोना की ओर खिंचे चले आए थे.

कोस्टा ब्रावा से बारसीलोना की बहत्तर किलोमीटर की दूरी, जो भूमध्यसागरीय तटों और पीरानीज पर्वतों के ऊंचेनीचे मार्गों को ले कर बनी है, हम ने बस द्वारा तय की थी. आठ बजे सुबह पर्यटक कार्यालय की बस अन्य यात्रियों के साथ हमें एकत्रित करती हमारे आवास स्थान 'होटल फानाल' से चली थी.

पर्वतीय मार्ग की छटा

होटल फानाल के परिचित कुछ चेहरे भी बस में दिखे, किंतु अन्य अपरिचित यात्रियों की भांति ही ये सब लोग, एक होटल में रहते हुए भी, हमारे लिए अनजान बने रहे थे, सिवा सुबहशाम मिलने पर एकदूसरे को शुभ अभिवादन करने के. सुबह की हवाओं में हलका सर्द तीखापन था, किंतु सब मिला कर सुहावना वातावरण, बीचबीच में पड़ने वाले छिटपुट बाजार, ब्लेनेस मालग्राट, सेलेल्ला, इन के समुद्रतटों पर आ उमड़ने वाला विदेशी जनसमूह. फिर जाने कब धीरेधीरे ये दृश्यावलियां थमने लगती हैं.

अब पीरानीज पर्वतीय मार्ग का भान स्पष्ट होने लगता है. इसी घुमावदार और ऊंचीनीची सड़क तय करने के बीच, हमारी चार वर्षीय पुत्री नींद या थकान के कारण अपनी सीट से लुढ़क मेरी गोद में आ गई थी. इस घुटेघुटे से समय में पीछे की ओर से आते धुएं के छल्ले हमें और भी असुविधाजनक जान पड़ने लगते हैं. नाक और मुंह में घुसते धुओं के छल्लों का सिलसिला बढ़ता ही चला जाता है. पीछे गरदन घुमा कर देखती हूं, एक दुर्बल से चेहरे की यूरोपी युवती मुंह और हाथों के कौशल से सिगरेटी धुएं के बादल बनाने में व्यस्त चित्त है.

धूम्रपान का शौक मेरे पति महोदय भी नहीं रखते, किंतु यदि कोई सभ्य बैठ कर धूम्रपान करता भी रहे तो हम लोगों के लिए यह ऐसा असह्य नहीं, क्योंकि सिगरेट का धुआं सिरदर्द का कारण न बन जाए. सहसा बंद खिड़की की ओर हम लोगों की दृष्टि आकर्षित होती है. पति महोदय समीप की खिड़की का शीशा एक ओर सरका देते हैं. किंतु एक मिनट भी नहीं बीतता कि फटाक की आवाज के साथ धूम्रपान वाली युवती खिड़की बंद कर देती है. ठीक भी है. वह खिड़की

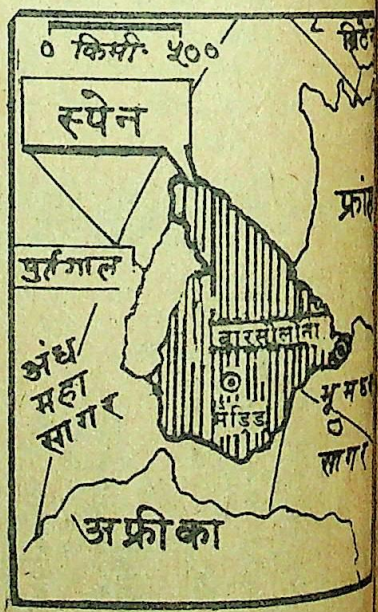

बारसीलोना स्पेन का सब से व्यस्त बंदरगाह है साथ ही मैड्रिड के बाद देश का सब से बड़ा शहर भी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

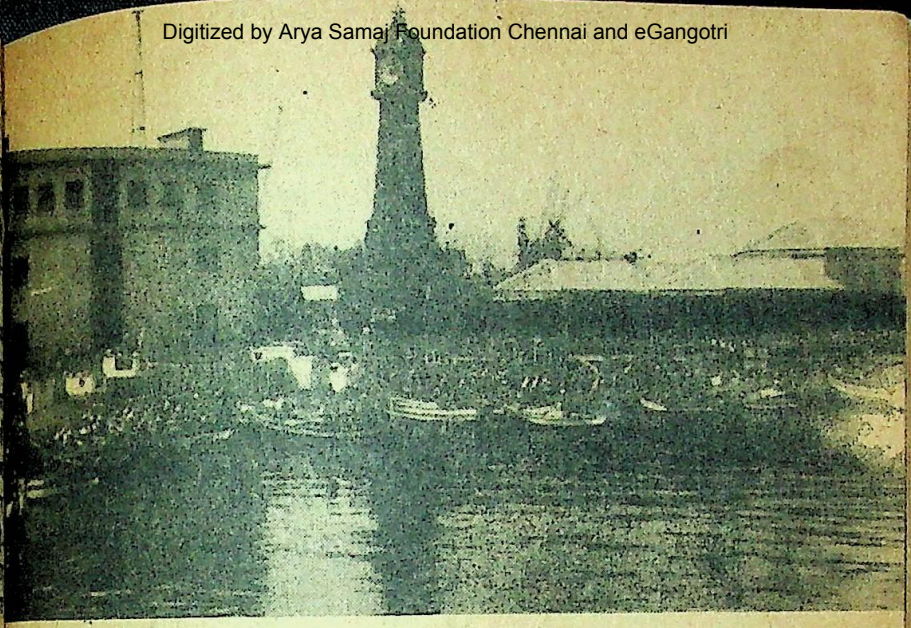

बारसीलोना बंदरगाह का दृश्य : पंक्ति में खड़ी पर्यटक नौकाएं.

उन लोगों के काफी निकट पड़ती थी और ठंडी हवा जो हम जैसे सिगरेट के धुएं से त्रस्त लोगों को ताजगी देने लगी थी, उन के लिए असुविधाजनक रही होगी.

मेरे पति कुछ दूर की खिड़की, जहां की सीटें खाली पड़ी थीं, खोल देते हैं. किंतु मिनट बीतते न बीतते फट, खिड़की फिर बंद हो जाती है. संकरे चेहरे वाली वह युवती बिना किसी क्षमा प्रार्थना, किसी अफसोस के, अपना चश्मा पोंछती, हमें अंगरेजी में आगाह करती है कि ठंड ज्यादा है और उस के बच्चे को ठंड जल्द लग जाती है. लहजा शुद्ध कोकनी का था.

समझते देर नहीं लगती कि वह अंगरेज है. क्षमा हम लोग भी नहीं मांगते. मैं उस के चार या पांच वर्ष के उस के जैसे ही पतले चेहरे वाले बच्चे को एक बार उड़ती निगाह से देख भर लेती हूं. उस का पति इस पूरे घटनाचक्र के बीच एक खिसियानी सी मुसकान चेहरे पर ओढ़े, सब कुछ निहारता रहा था. तभी गाइड घोषणा कर देता है कि हम लोग बारसीलोना के निकट आ चुके हैं.

आधुनिक बारसीलोना मध्ययुगीन स्पर्श से अछूता नहीं बचा है. यहां की सड़कें भी इस नए और पुराने का अच्छा-भला समन्वय प्रस्तुत करती हैं. नई सड़कें चौड़ीसपाट, जहांतहां एकदूसरे को काटती चली जाती हैं. यहां की संकरी सड़कें 'रोंडाज' कही जाती हैं, कब हम सागर तटवर्तीय सड़क से हट कर, शहर के बीच में आ गए थे, इस का पता तब लगा जब बस के गाइड ने बारसीलोना की सुप्रसिद्ध सड़क 'एंटोनिया प्रियो डी रीवेरा' पर आ चुकने की सूचना दी.

'प्रियो डी रीवेरा' बारसीलोना की एक महत्त्वपूर्ण सड़क ही नहीं, अपने सौंदर्य और आकर्षण के लिए भी विख्यात है. सड़क के दोनों ओर सजी वृक्षों की पंक्तिबद्ध कतारें. एक ही सड़क पर इतने विभिन्न प्रकार के झुरमुट सा बनाते असंख्य वृक्ष गाइड के अनुसार इतनी लंबी सड़क पर इतने अधिक वृक्ष विश्व में कहीं और नहीं हैं.

मुड़ कर हम लोग 'रामब्लास' मार्ग पर आ गए थे. एक साथ आधुनिक और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मध्ययुगीन कला का एहसास दिलाती गगनचुंबी इमारत, ऊंचीऊंची खिड़की वाली पुरानी इमारतें और प्राचीन गिरिजाघर. कुछ दूर पर 'रामब्लास डेस्सान खोसे' दिखाई पड़ जाता है. फूलों की प्रेमी स्पेनी जनता यहां बाकायदा खूबसूरत रंगबिरंगे फूलों का क्रयविक्रय करने

युगीन जहाजों के बचेखुचे अवशेष और उन अवशेषों से झलकती स्पेन की जहाज निर्माण कला की दक्षता पर्यटकों को आश्चर्यचकित कर देती है. वहां से निकलते ही सामने भूमध्यसागरीय नीला जल दिखाई देने लगता है. यह बिलकुल समीप ही स्थित है कोलंबस

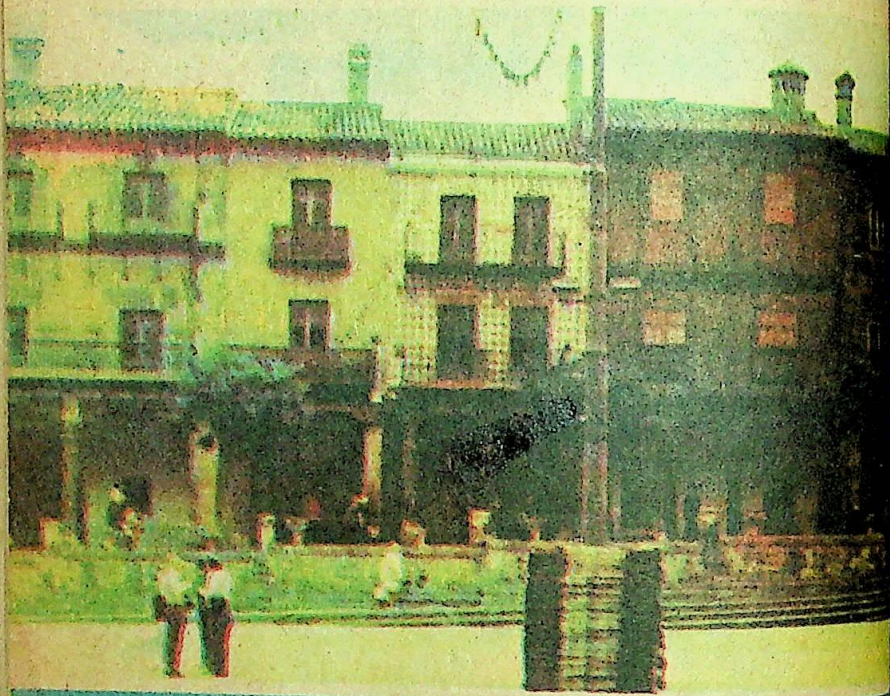

ऊंचीऊंची खिड़कियों वाली इमारतें : आधुनिकता से परे हट कर भी साफ-सुथरी और सुरुचिपूर्ण.

के लिए हर सुबह फूलों के इस बाजार में जुटती है.

फूलों के बाजार 'रामब्लास डेस्सान' से निकल तथा कुछ सड़कों का जाल पार करते हम आगे बढ़ते हैं तो संग्रहालय 'मुसेयो मीराटियो' (जलपोत संग्रहालय) आ जाता है. जलपोत निर्माण में स्पेन पंदरहवीं सदी से ही आगे बढ़ चुका था. सोलहवीं सदी के आतेजाते तो यह देश यूरोप का अग्रणी देश पोत निर्माण में अग्रणी बन चुका था. अब भी बड़ेबड़े जलयानों का निर्माण स्पेन का मुख्य व्यवसाय है और साथ ही विदेशी मुद्रा का एक स्रोत भी. 'मुसेयो मीराटियो' में मध्य-

स्मारक. उस निडर, अडिग व्यक्ति की यादगार, जिस ने अनेक बाधाओं को झेल अपने प्राणों पर खेल कर 'नई दुनिया' (अमरीका) खोज निकालने का साहसिक कार्य किया था.

लेकिन इतना समय नहीं था कि लिफ्ट द्वारा ऊपरी मंजिल पर जा कर आठ मीटर ऊंची कोलंबस की कांस्य प्रतिमा के दर्शन कर पाते. हम लोग आगे बढ़ जाते हैं, यहां कुछ ही दूर पर बंदरगाह से लगा 'सांतामारिया' नजर आने लगता है. यह पंदरहवीं सदी के पाल के परदे ओढ़े 'सांतामारिया' जहाज की हूबहू नकल है. इसी में कोलंबस ने 'नई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुनिया' (अमरीका) की ढूंढ़ में कोलोन वासियों के लिए खोज निकाला था.

इस बीच फैलीफैली 'आवेनिडा पासियो डे कोलोन' को पार करती बस आगे बढ़ने लगती है. दोनों ओर लगे ताड़ के वृक्ष इस मार्ग को विशेष सौंदर्य प्रदान करते हैं. भूमध्यसागरीय

सभी सड़क के एक मोड़ पर लगे बड़े से पोस्टर पर आंखें ठहर जाती हैं. एक डरावने तथा खूंखार बैल से जूझती और उलझती किसी 'बुलफाइटर' की रंगीन चुस्त पोशाक में आकर्षक आदमकद तसवीर. यह सदियों से प्रचलित 'दी कोरीडा डे टोरोस' (बुलफाइट) पशु और

महल की छत पर बना नारंगी के वृक्षों का उद्यान.

जलवायु स्पेन के लिए प्रकृति की विशेष देन है, जहां दक्षिण ओर की समुद्रपार की अफ्रीकी हवाओं को इस ने रोका है, वहीं स्पेन को इतने विभिन्न प्रकार के पेड़पौधों, फलफूलों से लाद दिया है कि अनायास ही इस देश को फल और फूलों का देश कहने को मन चाहने लगता है.

गाइड के संकेत पर हरी मखमली दूब के लानों, रंगबिरंगे फूलों, सफेद फव्वारे की जलधारा से सजे पार्क पर ही हमारा ध्यान अटका रह जाता है कि इस बीच डाक घर की विशाल इमारत, मुख्य रेलवे स्टेशन और अन्य कई गगनचुंबी इमारतें आ कर निकल जाती हैं.

मनुष्य की युद्ध क्रीड़ा, मध्ययुग की तरह अब भी स्पेन में लोकप्रिय है. बाहर से आने वाले विदेशी पर्यटक, जो अपने मशीनी व्यस्त और तनावपूर्ण जीवन से बेहद उबे हुए होते हैं, उन का यह पर्याप्त मनोरंजन करती है.

'बुलफाइट' के केंद्रों को ले कर भी बारसीलोना, मैड्रिड के बाद दूसरे स्थान पर आता है. स्पेन के सब से बड़े दो क्रीड़ास्थल तथा इन दो बुलफाइट क्रीड़ास्थलों में बैठने वाले दर्शकों के लिए पंदरह हजार से ले कर बीस हजार सीटों की क्षमता भी पर्यटकों के लिए बारसीलोना के आकर्षण का एक कारण है. किंतु जाने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्यों पशु और मनुष्य की यह क्रूरतापूर्ण क्रीड़ा अपने गले न उतर पाई थी और शायद यही कारण रहा कि स्पेन जा कर भी और इस देश के विशेष राष्ट्रीय मनोविनोद को देखने के अनेक अवसर मिलने पर भी हम लोग 'बुलफाइट' न देख सके.

खुलीखुली एविंडा से हट कर अब हम लोग संकरी रोंडाज (स्पेन की गोलाकार तंग सड़कें या गलियां) की ओर बढ़ चले थे. यह बारसीलोना का पुराना भाग था. आडंबररहित दुकानें, पुरानी ऊंचीऊंची खिड़कियों वाली इमारतें, जो भले ही आधुनिक साजसज्जा न होते हुए भी साफसुथरी और सुरुचिपूर्ण प्रतीत होती थीं. यूरोप का वह पिछड़ा हुआ देश रहा है. जहां औद्योगीकरण की दौड़ बहुत देर से आरंभ हुई थी. बहुत वर्ष पंदरहवीं और सोलहवीं सदी के मध्य तक, दूसरे देशों (दक्षिण अमरीकी देश) के चांदी और सोने की खानों के बल पर, सुख भोगने वाला ऐश्वर्यशाली स्पेन, उपनिवेश के अपने साम्राज्य में ही उलझा रहा, देश की सामूहिक उन्नति की ओर ध्यान ही न दे सका. हम आधुनिक स्पेन को छोड़, उस मध्ययुगीन स्पेन के भवनों में प्रवेश करने जा रहे थे, जो समय उस का स्वर्णिम काल कहलाया करता था.

दीर्घाकार हाल

चौदहवीं सदी का बना एक सार्वजनिक भवन, नाम था 'प्लासा डेस्सान खाइए.' इस विशाल भवन के दीर्घाकार हाल और विशेष शैली के बने भीतरी प्रांगण वास्तव में प्रशंसा के लायक थे. इस के समीप ही दूसरी दिशा में बना महल है, जिस का अधिकांश भाग अब राज्य की प्रशासकीय काररवाइयों के काम आता है, किंतु उस के कुछ दर्शनीय भाग अब भी पर्यटकों के लिए खुले छोड़ दिए गए हैं. इस भाग की चर्चा करना इसलिए भी आवश्यक हो जाता है, क्योंकि इसी भाग में महल की छत के ऊपर 'पातियो डे लौस नारंजोस' के संतरे के वृक्ष यात्रियों को सब से अधिक आकर्षित करते हैं. महल के ऊपरी भाग में स्थित यह संतरों का उद्यान मध्ययुग की एक आश्चर्यजनक वस्तु जान पड़ता है.

संतरों के पेड़ अब भी फलों से लदे थे, किंतु गाइड के अनुसार अफसोस होता था कि ये पीले रंग के रसीले दिखने वाले फल स्वाद के लिए नहीं थे, केवल देखने भर के लिए थे. तभी गाइड पंदरहवीं सदी की बनी गैलरी के गोथिक वास्तुकला शिल्प की कुछ बारीकियां स्पष्ट करता है और हम उस भव्य हाल जैसी गैलरी के शिल्प की पेंचीदगियों को समझने का प्रयास करते वापस सीढ़ियां उतर आते हैं.

विशाल महल

उत्तरी कोने में खड़ा विशाल महल 'प्लासा डेस्सान खाइए' एक बार फिर दिखाई पड़ने लगता है. किंतु इस बार उधर न मुड़ कर, हम लोग गाइड के साथ सीधे केथेड्रल की ओर चल देते हैं. केथेड्रल सांताक्रूज के प्रवेश के साथ ही विशप के महल जैसे भवन की झलक मन प्रभावित किए बिना नहीं रहती. अब हम लोग केथेड्रल के 'डीन' के घर के आंगन में आ कर कुछ देर के लिए ठहर जाते हैं. यह आंगन एक बरामदे, अनेक संतरे वृक्षों तथा फव्वारे से सजा था. हम लोगों के साथ बंधेबंधे बच्चों को तो मानो इस भाग में आ कर ही इतनी देर बाद राहत मिली थी. देखतेदेखते बच्चे उस फव्वारे के जल से मन बहलाने लगे थे. मैं अपने चार वर्षीया बच्ची को उस फव्वारे के जल से खेलने के लिए रोकती हूं तो वही कोकनी अंगरेजी कंठ स्वर सुन पड़ता है, 'आल दि चिल्डरेन आर एलाइक' (सब बच्चे एक समान होते हैं.)

आगे बढ़ कर देखती हूं कि बस वही सिगरेट पीने वाली महिला मुसकरा रही थी. उस का पुत्र भी वैसे ही फव्वारे के जल में हथेलियां डुबोडुबो कर खेल में मस्त था. सुना था वैर की बेल बड़ी तेजी से बढ़ा करती है. किंतु मैं अब सोचने लगी थी कि उसे काटने के लिए मैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

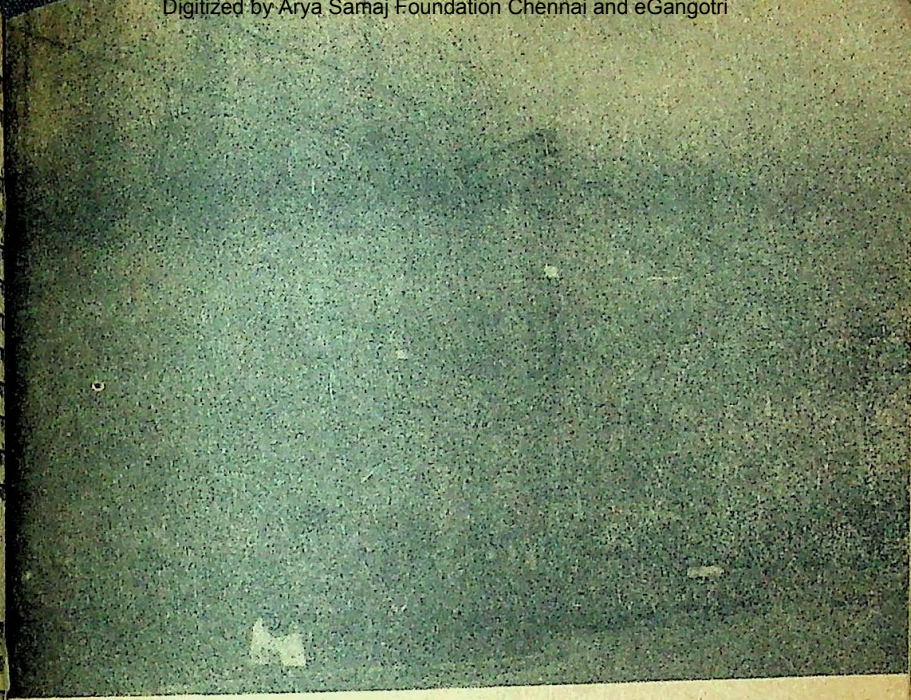

बंदरगाह के बाहर निकलते ही बारसीलोना का दृश्य मन को मोह लेता है.

युक्त मुसकान के एक कटाक्ष की कैंची से अच्छा और कुछ नहीं. उस की बात का समर्थन किए बिना मैं भी नहीं रहती.

'भारत से ही आ रही हैं न?' वह प्रश्न करती है, किंतु मेरे 'हां' के छोटे से उत्तर से उस की संतुष्टि नहीं होती.

मैत्रीपूर्ण मुसकान

हमारे स्थायी यूरोप आवास के विषय में भी जानने की उस को उत्सुकता होती है. मैं बताती हूं कि यों तो दो वर्ष से हम लोग पश्चिम जरमनी में हैं, किंतु जल्दी ही अब भारत वापस लौट जाने वाले हैं. एक विशेष उत्साह और चमकीली आंखों के साथ वह भी बताना शुरू करती है, वह स्वयं तो अंगरेज है, किंतु उस का विवाह एक जरमन से हुआ है, इसलिए दोनों भाषाएं अंगरेजी और जरमन उस के लिए समान हैं, फिर भी इंगलैंड में जितना मन लगता है पश्चिम जरमनी में नहीं.

तब तक गाइड का आह्वान सुन पड़ा था और हम लोग अपनेअपने बच्चों को संभाले आतुर भीड़ में शामिल हो जाते हैं. केथेड्रल के विशाल कक्ष, उस के वास्तु-शिल्प की बारीकियां तथा विश्लेषण सुनते और जानते हम आगे बढ़ रहे थे. हम ने प्रसिद्ध मध्ययुगीन धार्मिक 'क्रास' और सुप्रसिद्ध मूर्ति 'पिटी' मां मरियम की गोद में झूलती सौम्य ईसा मसीह की निर्जीव देह वहां देखी.

दोपहर के एक बजे तक प्रसिद्ध ऐतिहासिक संग्रहालय 'मुसेयो डे हिस्टोरिया डे ला थियोडाड' देखने का कार्यक्रम था. संग्रहालय की विशेषता यह भी थी कि यह तीन भागों में बंटा, तीन कालों का संग्रहालय था. हम यात्रियों के पास सीमित समय था, इसलिए कुछ विशेष भागों को ही हमें दिखाया जाना था. वैसे भी इस तीन मंजिले विशालकाय संग्रहालय को देखने के लिए कई सप्ताह भी काफी न होंगे, जहां कि रोमन समय के खंडहर से ले कर उन्नीसवीं सदी के अवशेष तक

(शेष पृष्ठ 167 पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

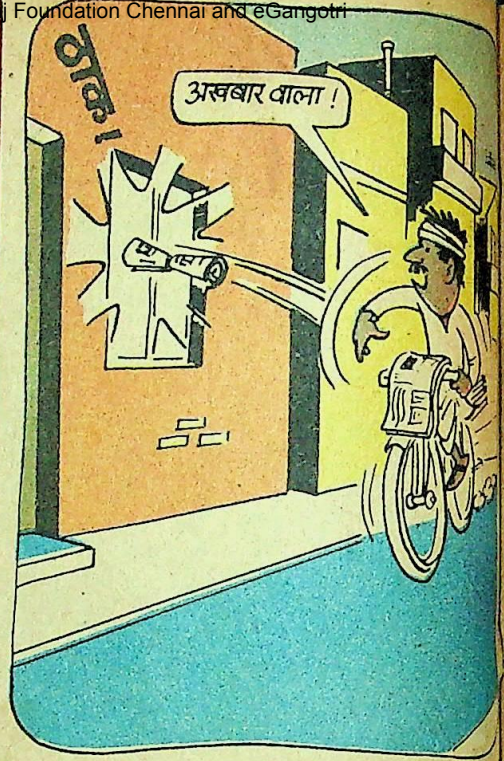

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरी सुबह.

अखबार वाला!

ओह!

कप प्लेट टूट गए. क्या तुम ने उसे अखबार धीरे फेंकने को नहीं कहा?

मैं ने कहा था, लेकिन वह मानता ही नहीं.

ठीक है, अखबार बांटने का ढंग मैं उसे सिखाऊंगी.

पहली तारीख को.

लीजिए, बीबीजी बिल. बारह रुपए अखबार के और आठ रुपए पचास पैसे पत्रिकाओं के. कुल बाइस रुपए पचास पैसे.

ठीक है...

... और यह लो तुम हमारा बिल. पंद्रह रुपए खिड़की के शीशे के और सात रुपए कप प्लेट के.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न्यूजीलैंड क्रिकेट दल का भारत दौरा

भारतीय महिला क्रिकेट के इतिहास की शुरुआत कितनी विचित्र!

लेख • वीरेंद्र शुक्ल

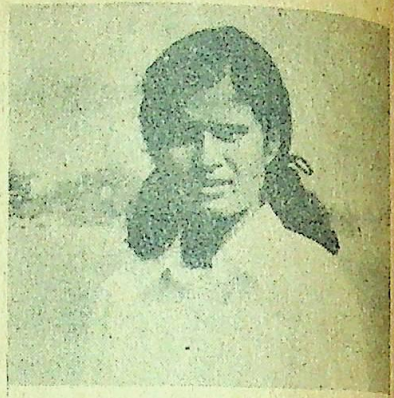

आस्ट्रेलिया के साथ हुए कलकत्ता में तीसरे टेस्ट की भारतीय कप्तान —सुश्री रूपा बसु

भारत में महिला क्रिकेट की शुरुआत को अभी कुछ साल ही गुजरे हैं. 1971-72 में ही भारतीय महिलाओं ने क्रिकेट की दुनिया से नाता जोड़ा. बैट, बाल, पैड, ग्लब्स आदि की जानकारी हासिल की और 'ग्राउंड' में उतर पड़ीं. शुरुआत बंबई से हुई और अब यह भारत के लगभग हर प्रदेश में अपनी पहचान बना चुका है.

1972 में भारतीय महिला क्रिकेट एसोसिएशन की स्थापना लखनऊ में हुई और बाकायदा महिलाओं की राष्ट्रीय क्रिकेट प्रतियोगिता 1973 में पूना में अप्रैल में खेली गई. प्रतियोगिता की समाप्ति के बाद वहीं एक नेशनल कोचिंग कैंप लगा, जिस में देश के विभिन्न हिस्सों की 30 लड़कियों ने 17 मई से 1 जून तक प्रशिक्षण लिया. महिलाओं में क्रिकेट खेल के प्रति अभिरुचि जगाने के लिए यह सब जरूरी भी था, क्योंकि यह शुरुआत थी.

वैसे अब भी भारतीय महिला क्रिकेट नवजात अवस्था में ही है. क्योंकि अभी भी यह सब सीमित स्तरों पर, सीमित महिलाओं द्वारा ही हो रहा है. लेकिन यह मानना होगा कि यह अवस्था भी उत्साहवर्धक ही है, अब तक राष्ट्रीय प्रतियोगिता ही आयोजित होती रही. लेकिन अब अंतर विश्वविद्यालयी महिला क्रिकेट प्रतियोगिता की शुरुआत और इस में विभिन्न विश्वविद्यालयों की छात्राओं के भाग लेने से और इस प्रतियोगिता के हर साल होने से यह तय है कि महिला क्रिकेट का प्रचारप्रसार तेजी से होगा.

28 फरवरी, 1975 को आस्ट्रेलियाई महिला क्रिकेट टीम भारत के अपने तीन सप्ताह के दौरे के बाद बंबई से वायुयान द्वारा सिडनी लौट गई थी. न उन के आने पर शोर हुआ था और न ही जाने पर चरचा या बहसों का क्रम चला. चुपचाप आई थी और चुपचाप वापस लौट गई थी.

लेकिन क्या पुरुष क्रिकेट के साथ भी ऐसा होता है? नहीं, तब स्थिति दूसरी होती है. पूरा माहौल ही क्रिकेटमय हो जाता है. क्या बच्चा, क्या जवान, क्या बूढ़ा—सभी की आंखों में एक जिज्ञासा का भाव और होठों पर "स्कोर क्या है?" का शब्द होता है. अखबार से ले कर रेडियो तक मुखर हो उठते हैं. अखबारों में अधिक से अधिक कालम और आकाशवाणी द्वारा आखों देखा हाल—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोगों के दिमाग पर इतना छा जाता है कि आदमी क्रिकेट के अलावा सोच भी नहीं पाता. सब कुछ छोड़छाड़ लोग रेडियो के पीछे लग जाते हैं.

ऐसे वक्त मैदान को दूर से नमस्कार करने वाले लोग भी अपना क्रिकेट ज्ञान दर्शाने से बाज नहीं आते. यानी तब क्रिकेट ही क्रिकेट होती है. बात से ले कर बहस का मुद्दा क्रिकेट ही होती है. लेकिन यही सब जब महिलाओं द्वारा हुआ तो न अखबार उतना मुखर रहा और न आकाशवाणी ही उतना चिल्लाया.

घोर आश्चर्य की बात तो यह कि क्रिकेट दीवाने महिला क्रिकेट के प्रति उदासीन रहे. आर. शांता और रूपा बसु का नाम कितनों ने कारण सहित जाना?

महिला क्रिकेट बात और बहस का विषय नहीं बना. लोगों ने खेल में कम और खिलाड़ियों में ज्यादा दिलचस्पी दिखाई. क्या ऐसा ही होना चाहिए था?

यह भारत में महिला क्रिकेट के न केवल शुरुआत के दिन ही थे, वरना किसी विदेशी महिला क्रिकेट दल का प्रथम भारत आगमन भी था. यह शुरुआत थी भारतीय महिला क्रिकेट के इतिहास की. इतिहास की शुरुआत तो सुंदर ढंग से होनी चाहिए थी. पर हुआ क्या? न खिलाड़िनें चर्चित हो सकीं, न उन्हें सराहा गया और न ही उन्हें प्रोत्साहन मिला. वे खेलतीं रहीं, हम देखते रहे. अच्छा नजारा रहा. नाजुक कलाइयों में सख्त गेंद और लकड़ी के बल्ले को देख कर बहुतों का दिल भी बांसों उछला होगा, पर सही दिशा में किसी का दिमाग नहीं गया. आखिर क्यों?

तीनों टेस्ट अनिर्णीत

उस बार न्यू साउथ वेल्स (आस्ट्रेलिया) की विकेट कीपर सैसिलिया विल्सन के नेतृत्व में आई टीम का भारत में हुआ तीनों तीन दिवसीय टेस्ट (पूना, दिल्ली और कलकत्ता) अनिर्णीत रहा.

इस बार पाट मैकलवी के नेतृत्व में आ रही न्यूजीलैंड की क्रिकेट टीम 5 तीन दिवसीय टेस्ट—कलकत्ता (24 से 26 जनवरी), लखनऊ (6 से 8 फरवरी), पूना (14 से 16 फरवरी), बंगलौर (21 से 23 फरवरी) और मद्रास (27 से 29 फरवरी) खेलेगी.

45 दिन के भारत भ्रमण पर 20 जनवरी को मद्रास पहुंचने वाली अतिथि टीम इन 5 टेस्टों के अतिरिक्त एक दिन के 5 मैच क्षेत्रीय टीमों से—जमशेदपुर में पूर्वीक्षेत्र से (22 जनवरी), मध्य क्षेत्र से वाराणसी में (28 जनवरी), उत्तर क्षेत्र से चंडीगढ़ में (3 फरवरी), पश्चिमी क्षेत्र से बंबई में (12 फरवरी) और दक्षिणी क्षेत्र से हैदराबाद में (19 फरवरी), खेलेगी. 15 सदस्यीय मेहमान टीम दौरे का अपना एक मात्र दो दिवसीय मैच संयुक्त विश्वविद्यालय से दिल्ली में 31 जनवरी और 1 फरवरी को खेलेगी. ●

द्वितीय राष्ट्रीय महिला क्रिकेट प्रतियोगिता की विजेता पश्चिमी बंगाल की टीम.

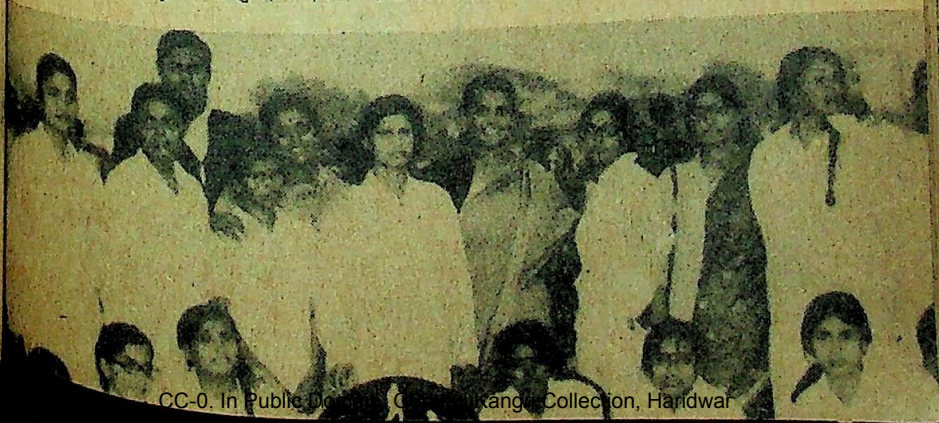

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नकली जेवर

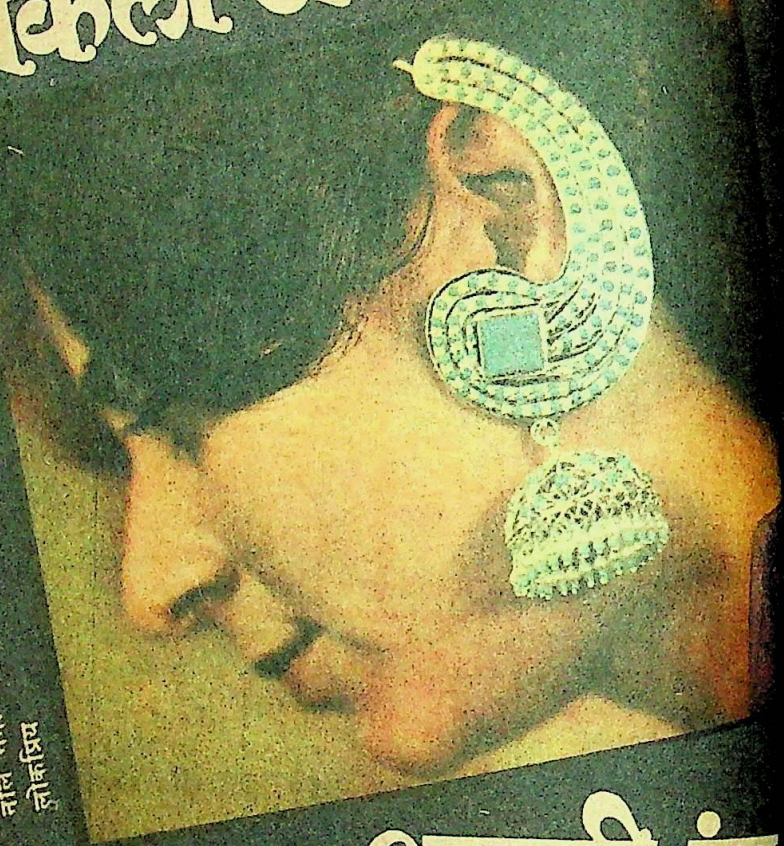

असली रंग

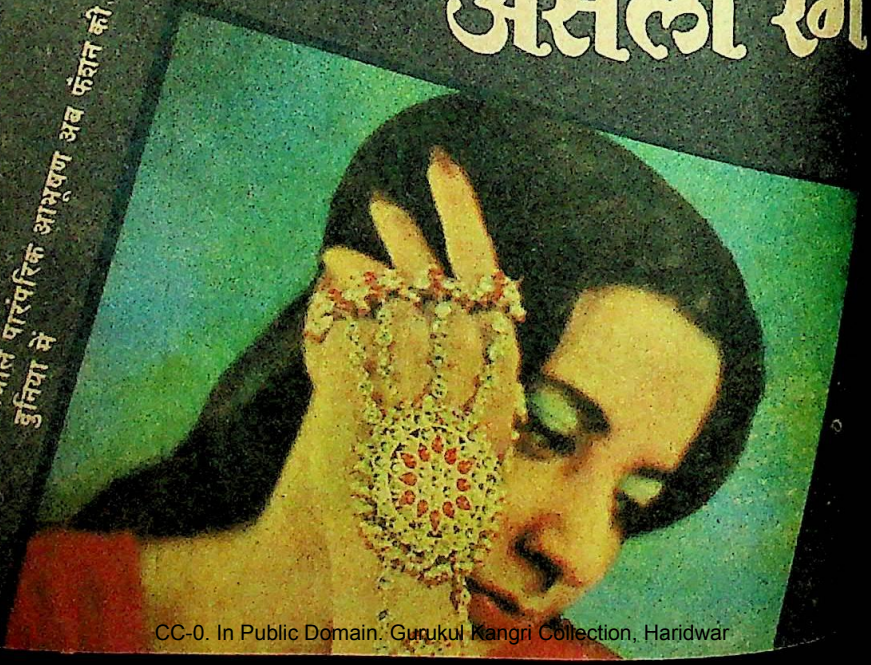

सजीले पारंपरिक आभूषण अब फैशन की दुनिया में

नीले नगों जड़े झुमके आधुनिकाओं में लोकप्रिय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

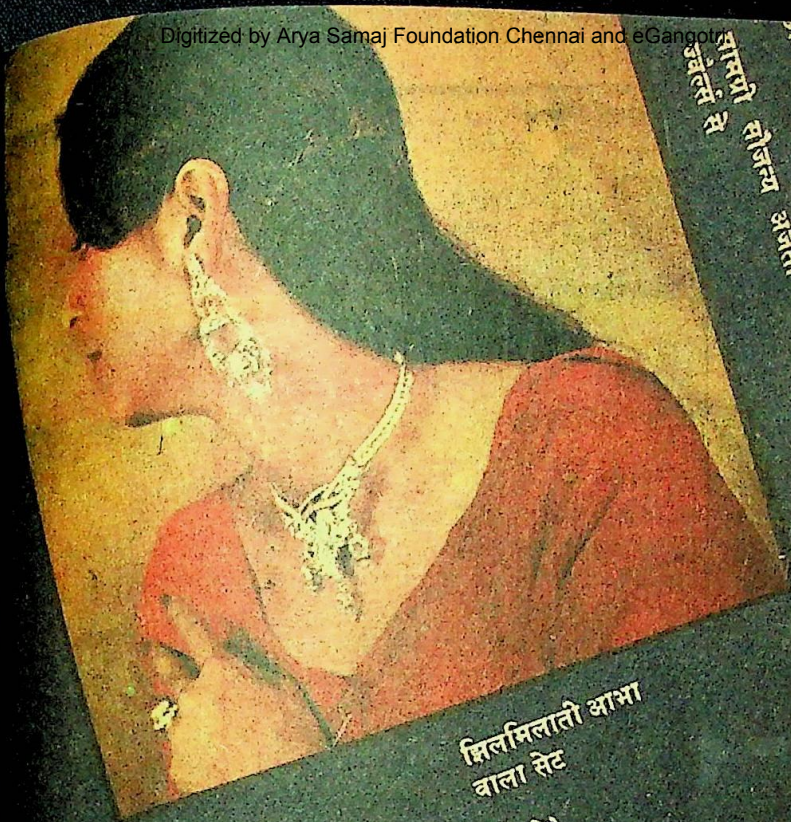

फोटो : अनिल सूद
सामग्री सौजन्य अजंता
ज्वेलर्स से

झिलमिलाती आभा
वाला सेट

गले का रानीहार : हलके-
फुलके परिधान के साथ पहनने
के लिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठकों की समस्याएं

मैं 25 वर्षीया युवती हूं. चार वर्ष पूर्व विवाह हुआ था. हम दोनों पतिपत्नी काम करते हैं, फिर भी बड़े परिवार की जिम्मेदारी के कारण खर्च पूरा नहीं पड़ता और अच्छी खुराक न ले पाने से स्वास्थ्य गिरता जा रहा है. इस गिरावट का असर हमारे यौन संबंध पर भी पड़ा है. कोशिश कर के भी मैं रुचि नहीं ले पाती और मेरे इस ठंडेपन के कारण पति निराश रहने लगे हैं. क्या करना चाहिए?

आप शरीर और मन दोनों से स्वस्थ नहीं हैं, इसी लिए यह अरुचि और ठंडापन है. एक तो यह भ्रम निकालिए कि अच्छी खुराक का मतलब महंगी खुराक है. आप सस्ती चीजों से भी पौष्टिक भोजन प्राप्त कर सकती हैं.

कच्ची सब्जियों का सलाद और मौसम के सस्ते फल, दलिया, भुने चने, भुनी मूंगफली, दालें आदि सभी चीजें पौष्टिक व स्वास्थ्यवर्धक हैं. दूध न ले सकें तो सपरेटा दूध में भी 'वसा' छोड़ शेष सभी पौष्टिक तत्त्व हैं. अंडे, पनीर की जगह अंकुरित अनाज छोंक कर नाश्ते में लें, इस से उतनी ही प्रोटीन मिलेगी. चने, मूंगफली में भी प्रोटीन होता है. आप किसी चिकित्सक से परामर्श भी लें. वह आप दोनों को विटामिन लेने की सलाह देगा.

✦

मैं एक विवाहित, स्वस्थ, सुंदर, सरकारी कर्मचारी हूं. पत्नी भी शिक्षिका है, सुंदर है. शादी दस वर्ष पूर्व हुई थी. हमारे दो प्यारेप्यारे बच्चे भी हैं. जीवन हर तरह से सुखी था.

कोई अभाव न था. पर कार्यालय की मैं एक लड़की मेरे जीवन में आ गई. उसे भी अब बहुत प्यार करता हूं. दूसरा विवाह करता हूं तो पत्नी आत्महत्या की बात करने लगती है और उस लड़की से विवाह नहीं करता तो वह भी यही बात कहती है. मैं दोनों को नहीं छोड़ सकता. क्या करूं? उस लड़की की सगाई अन्यत्र हो चुकी है.

आप एक पत्नी के रहते कानूनी दृष्टि से भी दूसरा विवाह नहीं कर सकते, सामाजिक दृष्टि से तो यह अनुचित है ही, पूर्व पत्नी के प्रति अन्याय भी. आप को दूसरी युवती (प्रेमिका) को ही छोड़ना होगा, अन्यथा विवाह के बाद उस का दांपत्य जीवन भी बरबाद होगा. उसे सलाह दीजिए कि जहां सगाई हुई है, वहां विवाह करा ले.

✦

मैं 18 वर्षीया, द्वितीय वर्ष की छात्रा हूं. छोटी थी तो बहुत रोया करती थी और सुलाने के लिए मुझे थोड़ीथोड़ी अफीम दे दिया करती थीं. तब तो कोई असर नहीं हुआ पर बड़ी हुई हूं तो वह नशा जब तब मुझ पर छाया रहता है. इस से सोचने की शक्ति क्षीण हो गई है व पढ़ाई में नुकसान होता है. यह नशा कैसे उतरेगा?

आप की माताजी ने पहली गलती की अफीम देने की, व दूसरी की आप को यह बात बताने की, जो अब आप के मन की ग्रंथि बनती जा रही है. बचपन में अफीम देने से आप का दिमाग पढ़ाई में कुछ कमजोर हो सकता है, वह नशा अब नहीं छा सकता. यह आप का वहम है. इसे जल्दी मन से निकालिए और मेहनत से अपनी दिमागी शक्ति बढ़ाइए. आप इस बारे में किसी चिकित्सिक से परामर्श भी लें.

✦

मेरी उमर 18 वर्ष है. सातआठ वर्ष की आयु में किसी ने बहका कर तीनचार बार यौन संबंध स्थापित किया, फिर कुसंगति में पड़ कर हस्तमैथुन करने लगी. इस से हीन भावना से घिर गई हूं. वैवाहिक जीवन के बारे में चिंतित हूं. मेरी कमर के नीचे दोनों ओर कुछ लकीरें भी उभरी हुई दिखती हैं. प्रथम बार मासिक स्राव पर खुजली हुई थी, यह उस का असर है या यौन संबंध का? क्या विवाह के बाद पति को मेरे हस्तमैथुन के बारे में पता चल जाएगा?

आप अपने भावी वैवाहिक जीवन के बारे में चिंता छोड़ उसे सुखी, स्वस्थ व नामंजस बनाने के बारे में सोचिए और इस कुटेव से ध्यान हटाने के लिए स्वयं को अच्छी पुस्तकों के अध्ययन और हाबियों में व्यस्त रखिए.

अश्लील उपन्यास पढ़ना, गरम पदार्थों का सेवन, रात को देर से खाना व गरिष्ठ भोजन लेना छोड़िए. सुखी दांपत्य व वैवाहिक जीवन पर कुछ अच्छी पुस्तकें भी पढ़िए. पति से अपनी इन मूर्खताओं की कुछ चर्चा करने की आवश्यकता नहीं. वैवाहिक जीवन में रुचि लेने पर आप की यह आदत बिलकुल छूट सकेगी. पहले भी धीरेधीरे इस पर विजय पा इसे कम करने की कोशिश करें.

✦

घर में हम दो ही सदस्य हैं, मैं व मेरी मां. पर मां का मिजाज इतना गरम है कि वह छोटी-छोटी बात पर क्लेश करती हैं. रोटी खिलाने तक का ताना देती हैं. इस से मेरा मन इतना परेशान रहता है कि कभीकभी आत्महत्या कर लेने को जी करता है. आप ही कोई सुझाव दीजिए.

आप ने कभी उन के दृष्टिकोण से भी उन्हें समझने की चेष्टा की है क्या? क्या मालूम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कितने कष्ट सह कर उन्होंने आप को इतना बड़ा किया हो? या किन कटु अनुभवों ने आज उन का स्वभाव कटु बना दिया हो? आप मां की बातों का बुरा मानने के बजाए उन्हें हमदर्दी दीजिए. कभी, जब वह बात करने के मूड में हों, उन से खुल कर बात कीजिए. कोई भी मां अपनी बेटी का अहित नहीं चाहती. आप से यदि वह कुछ रोकटोक करती होंगी तो आप के हित में ही. हां, उन का यह समझाने का तरीका गलत है. इसे मांबेटी के परस्पर समझौते से ही सुधारा जा सकता है. कृपया मां को समझने की कोशिश करिए व उन्हें सहानुभूति दीजिए. वह अपना रवैया जरूर बदलेंगी.

✦

मेरी शादी को पांच वर्ष पूरे हुए. अभी तक जीवन सुखी था, पर जब से मेरे पति कुछ महीने विदेश रह कर आए हैं, उन का रवैया बदल गया है. वह मेरी उपेक्षा करने लगे हैं व अपनी विदेशी सहेलियों की रंगरेलियों में गुम रहते हैं. वहां उन्होंने जो कुछ भी किया है वह मैं ने बरदाश्त कर लिया है पर अब मेरी उपेक्षा मुझे बरदाश्त नहीं, इसी लिए मेरा मानसिक संतुलन भी बिगड़ गया है. एक प्यारा सा बच्चा है, उस का खयाल कर के कुछ कदम भी नहीं उठा पाती. क्या करूं?

जराजरा सी बात पर मानसिक संतुलन बिगाड़ लेना ही हमारी आज की अनेक समस्याओं की जड़ है. विदेशी रहनसहन व आजाद लड़कियों की चकाचौंध स्वाभाविक है, पर आप यह मत भूलिए कि यह असर उन पर अस्थायी रूप से ही रहेगा.

यही कारण है कि अधिकांश भारतीय पुरुष अपनी इस प्रारंभिक कमजोरी से उबरने के बाद भारतीय संस्कृति के कट्टर उपासक बन जाते हैं. फिर आप लड़कियों से मैत्री का संबंध रंगरेलियों से ही क्यों जोड़ती हैं? भारत से बाहर युवकयुवतियों की मैत्री को बुरा नहीं समझा जाता. अब बदलती दुनिया के साथ आप को भी अपने दृष्टिकोण में उदारता लानी चाहिए.

'बरदाश्त नहीं' की अपेक्षा इसे सामान्य ढंग से लीजिए. आप इस बात की उपेक्षा कर के देखिए, आप के पति आप की उपेक्षा नहीं करेंगे. किसी भी समस्या का हल परस्पर विश्वास व समझ से निकलता है, कलह से नहीं. आप का सहयोग मिलेगा तो आप के पति शीघ्र अपनी गलती महसूस करेंगे.

✦

मैं 29 वर्षीय अत्यंत निर्धन, अभावग्रस्त व्यक्ति हूं. पेशे से अध्यापक हूं. मातापिता वृद्ध हैं. पिताजी मिट्टी के बरतन बना कर गुजर करते हैं. मैं एक गंभीर रोग से भी ग्रस्त हूं. मैं बालबाल कर्ज में फंसा हूं. किस प्रतिष्ठान से सहायता मिल सकती है? उस का पता क्या है?

आजकल अध्यापक न तो अत्यंत निर्धन की श्रेणी में आता है, न इतना दीन कि उसे दूसरों की सहायता पर जीने की अपेक्षा करनी पड़े.

जहां तक रोग का प्रश्न है, उस का इलाज भी अस्पतालों में निशुल्क प्राप्त है. बालबाल कर्ज में फंसने के कुछ कारण और भी होने चाहिए.

मिट्टी के बरतन बनाने के काम को हीनता की नहीं, कला व कारीगरी की दृष्टि से देखिए. आप व आप की माताजी भी बचे समय में इस काम में हाथ बंटाएं या आप कुछ ट्यूशनें कर लें तो आर्थिक संकट से मुक्ति पा सकते हैं.

✦

मैं एक धनी परिवार की लड़की हूं. तीन वर्ष पूर्व एक सजातीय युवक हमारे घर आया-जाया करता था. उस से प्यार हुआ और हम एक दिन प्रभु को साक्षी मान, मांग में सिंदूर भर, तन से भी एक हो गए. मैं उसे अपना पति मानती हूं. पर एक दिन शराब के नशे में उस ने हमारे घर कुछ गलत हरकतें कीं, तब से मेरी मां उस के नाम से भी चिढ़ती है.

उस की अच्छी नौकरी है, पीना भी छोड़ दिया है, पर मैं घर वालों को कैसे समझाऊं? मैं अपनी मां का अनादर भी नहीं कर सकती. हमारी शादी नहीं हुई तो हम दोनों का जीवन बरबाद हो जाएगा.

आप की इस जानकारी का आधार क्या है कि अब वह लड़का सुधर गया है? केवल उस के कहने पर ही निर्भर न रह कर बाहर से भी चुपचाप उस के बारे में पूरी जानकारी प्राप्त करिए.

यदि वह वास्तव में अब ठीक है और आप को विश्वास है कि वह जीवन भर आप का साथ ठीक निभाएगा, तो आप अपनी कुछ मित्रों को साथ ले कर आर्यसमाज में शादी कर सकती हैं. (यदि आप दोनों बालिग हैं तो) यदि आप को भी उस के बारे में कुछ संदेह हो तो नासमझ उमर की एक गलती के बाद अब दूसरी गलती विवाह की न करें और मातापिता का कहना मान सही व्यक्ति से विवाह कर लें. जीवन भर का साथ केवल भावुकता से नहीं निभ सकता, न ही प्रभु को साक्षी मान, मांग में सिंदूर भर लेने से आप पतिपत्नी बन जाते हैं. इस सारे प्रश्न पर व्यावहारिक दृष्टि से सोचसमझ कर निर्णय लीजिए तभी समस्या सुलझ सकती है.

—कंचन ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

झुके नयन

छाया. प्रदीपचंद्र

प्रथम बार की भेंट तुम्हारी,
अब तक भूल नहीं पाया हूं.

किसी पहाड़ी झरने जैसा
खिलखिल कर मुसकाना,
किसी नीमटहनी में उलझे
हिमकर सा इठलाना.
अंकित है अंतर पर यों ही
बांहों झूल नहीं पाया हूं.

झुके नयन, कनखी से चलते
मधुसंवाद इशारे,
सूर्य रश्मि से दिपदिप करते
कंगनजड़े सितारे.
अन्य किसी उर्वशी रूप के
हो अनुकूल नहीं पाया हूं.

सुघर तर्जनी पर आंचल के
वे गंधायित फेरे,
बारबार हैं घूम रहे
सचमुच मानस में मेरे.
वर्षों खोजा बहुत खोज पर
रस का मूल नहीं पाया हूं.
प्रथम बार की भेंट तुम्हारी
अब तक भूल नहीं पाया हूं.

—इसाक 'अश्क'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारी बेड़ियां

कुछ दिन पहले की बात है, हम सभी भाईबहन बाहर बैठे हुए थे. हम ने देखा कि एक औरत, जो कि काफी बूढ़ी थी, अपने हाथ में एक भारी थैला लिए हमारी तरफ आ रही है. वह काफी थकी हुई प्रतीत हो रही थी. वह हमारे पास आ कर बैठ गई और कुछ देर बाद मुझ से बोली, "बिटिया, तुम किस जाति की हो?"

मैं समझ गई कि वह जाति क्यों पूछ रही है. अतः मुझे हंसी आ गई और अचानक मैं कह उठी, "अम्मा, हम मुसलमान हैं." जब कि वास्तव में हम लोग हिंदू ब्राह्मण हैं. बस यह सुन कर वह यह कहती हुई उठ गई, "बिटिया, पानी पीना था, लेकिन अब..." और वह आगे बढ़ने लगी.

उसे देख कर लगता था कि वह काफी प्यासी थी. परंतु क्योंकि उस से कह दिया था कि हम मुसलमान हैं, इसलिए उस ने हमारे घर पानी नहीं पिया. उस के थोड़ी ही दूर जाने पर हम ने देखा कि वह अचानक गिर गई. हम दौड़ कर उस के पास पहुंचे तो देखा कि वह बेहोश हो गई थी. हम लोग उसे उठा कर अपने घर ले आए. उस के मुंह पर पानी के छींटे मारे और चम्मच से उस के मुंह में पानी डाला. थोड़ी देर में वह होश में आ गई और जोरजोर से शोर मचाने लगी कि 'आप लोगों ने मेरा धर्म नष्ट कर दिया.'

क्योंकि वहां काफी भीड़ जमा हो गई थी अतः सभी ने उसे यह कह कर सांत्वना दी कि 'ये लोग ब्राह्मण हैं,' तब कहीं उसे शांति हुई.

—स्मिता शर्मा, सुरीर

*

मेरा एक मित्र बी. एससी. का छात्र था. जब परीक्षा में केवल दो दिन बाकी थे अचानक उस के चाचा का निधन हो गया क्योंकि उन के कोई संतान न थी इसलिए सारा क्रियाकर्म उसे ही करना पड़ा.

तीसरे दिन जब वह परीक्षा केंद्र पर जाने की तैयारी में था तो ब्राह्मण लोग इस बात पर अड़ गए कि मृतक की अस्थियां भी उसे ही लानी पड़ेंगी, क्योंकि चिता में अग्नि प्रज्ज्वलित करने वाला वही था. उस के लाख समझाने पर भी कि 'किसी अन्य रिश्तेदार से यह काम करा लो या फिर केवल तीन घंटे रुक जाओ, मैं परीक्षा दे कर वापस आते ही चाचाजी की अस्थियां लाने श्मशान चलूंगा,' वे अड़ियल ब्राह्मण नहीं माने. विवश हो कर उसे परीक्षा छोड़नी पड़ी जिस से उस का पूरा एक साल व्यर्थ हो गया.

—कमलाकर कुलकर्णी, चांदूर रेलवे

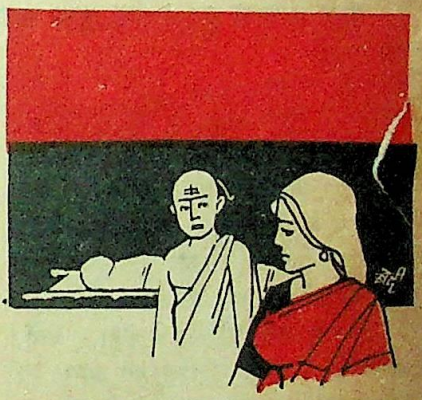

हमारे पड़ोस में एक शिक्षित ब्राह्मण परिवार रहता है. उन के यहां कुछ ऐसी रीति है कि यदि किसी की मृत्यु हो जाती है तो एक साल तक किसी भी लड़की या लड़के की शादी नहीं हो सकती. उन की बड़ी लड़की करीब 25 साल की हो चुकी है. हर साल उस की शादी तय हो जाती है, परंतु दुर्भाग्यवश उस के खानदान में किसी न किसी की मृत्यु हो जाती है जिस के कारण शादी नहीं हो पाती. यह सिलसिला करीब चारपांच साल से चल रहा है. इसी कारण उस की शादी अभी तक नहीं हो सकी और एक समस्या उत्पन्न हो गई है.

—शिवकांत त्रिपाठी, कानपुर ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिनी सम्मेलन

अंतर्राष्ट्रीय महिला वर्ष के समापन पर आयोजित अखिल भारतीय महिला मिनी सम्मेलन में पहुंच कर ही पत्रकारों को मालूम हुआ कि इस सम्मेलन का रहस्य क्या है?

रजनी की प्रातः जो आंख खुली तो नजर कैलेंडर से जा टकराई और उस ने अलसाई नजर से जो देखा तो सचमुच वर्ष बदल गया था. बुदबुदाई, "लो, पहली जनवरी भी आ गई."

पास में सोए पतिदेव ने कहा, "क्यों, नववर्ष की पहली तारीख का आना भी तुम्हें अच्छा नहीं लगा क्या? बड़ी मुश्किल से रामराम कर के तो जैसेतैसे पिछला वर्ष बिताया है."

"नहीं, यह बात नहीं है, मैं तो कह रही थी कि समय बीतते भी कोई देर नहीं लगती. देखिए न, अंतर्राष्ट्रीय महिला वर्ष पूरा समाप्त हो गया, पर हम कुछ भी नहीं कर पाए," रजनी ने उबासी लेते हुए कहा.

"और करने को रह ही क्या गया? चूल्हाचौका तो हमें संभलवा ही दिया फिर भी अगर कोई कसर रह गई हो तो अब हम करने के नहीं. महिला वर्ष समाप्त हुआ और अब हम तुम्हारे पति परमेश्वर हैं." संजीव ने बिना मूंछों के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रजनी मुसकराई, "कोई एक सदियों में वर्ष में ही तुम मर्दों की सदियों की हरामखोरी थोड़े ही जा सकती है, इस के लिए तो कम से कम एक महिला सदी ही घोषित करनी होगी."

पतिदेव उठ बैठे और बोले, "अरे, रे, धीरे बोलो, श्रीमतीजी, दीवारों के भी कान होते हैं. आज के इस भेड़ चाल युग में किसी ने सुन लिया तो सचमुच में ही पूरी सदी घोषित हो जाएगी." फिर बड़े ही नाटकीय अंदाज में उन्होंने पत्नी के पैर छूने का अभिनय किया और दीन स्वर में बोले, "ऐसा अन्याय मत करो, महादेवी, नहीं तो हम निरीह पति मारे जाएंगे."

रजनी ने कटाक्ष किया, "लगता है, अभिनय का प्रशिक्षण पूना फिल्म हो." फिर टेलीफोन अपने पास सरका कर डायल करने लगी.

रजनी अपने को एक सामाजिक कार्यकर्त्री मानती है और यही उस की 'हाबी' है. कोई भी सामाजिक अथवा राजनीतिक उत्सव हो, वह अवश्य वहां पहुंचेगी और प्रयत्न यह रहेगा कि किसी प्रकार स्टेज पर पहुंच जाए और मुख्य अतिथि के साथ फोटो में अवश्य आ जाए. यों अधिकतर वह फोटोग्राफर को पहले ही सावधान कर देती है और नतीजा यह है कि उस का ड्राइंगरूम उस की विभिन्न मुद्राओं में अनेक तसवीरों से

उठते ही रजनी की निगाह कैलेंडर से जा टकराई. वह बुदबुदाई, "लो, नव वर्ष भी आ गया."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भरा पड़ा है.

उस की यह 'हाबी' अब तो रोग की सीमा तक पहुंच गई है. जब कभी कोई सम्मेलन नहीं होता तो बेचारी अपने घर पर ही किसी प्रकार की गोष्ठी का आयोजन कर लेती है जो पति की जेब को भारी पड़ती है, पर बेचारे जी मसोस कर रह जाने के अलावा कर ही क्या सकते हैं. यों इस रोग के लिए रजनी निर्दोष है क्योंकि यह रोग उसे विरासत में मिला है. रजनी की मां भी समाज सेविका थीं और उस की मां में भी ये गुण विद्यमान थे.

दोपहर के दो बजे उन की सहेलियों का, नहीं नहीं मान्य प्रतिनिधियों का आना शुरू हो गया और ढाई बजते-बजते यह संख्या दस तक पहुंच गई, फिर भी माला और शीला का पदार्पण नहीं हुआ तो बेचारी रजनी को अपना सेवक दौड़ाना पड़ा.

वास्तव में आयोजकों को कार्यक्रम को विधिवत शुरू करने के लिए बेटी के विवाह से कम मेहनत नहीं करनी पड़ती और इस का अनुभव रजनी को कई दफा हो चुका है.

इन दोनों के आने पर रजनी कार्यक्रम को विधिवत शुरू करने के लिए खड़ी हुई और कहने लगी, "बहनो, आज हम एक बड़े ही गंभीर विषय पर विचार करने हेतु एकत्रित हुई हैं. आप जानती हैं कि पिछला वर्ष अंतर्राष्ट्रीय महिला वर्ष था और वह समाप्त भी हो गया. पर यदि हम सचाई से समीक्षा करें तो हमें मानना होगा कि हमारी उपलब्धियां नगण्य थीं. यों यह भी सच है कि सदियों से महिलाओं का शोषण होता रहा है और केवल एक महिला वर्ष से विशेष उपलब्धि हो भी नहीं सकती. इस के लिए तो पूरी शताब्दी को ही महिला उत्थान सदी घोषित कराना होगा. सौभाग्य से इस समय देश की प्रधान मंत्री भी एक महिला ही हैं, पर बेचारी वह अकेली क्या कर सकती हैं, जब तक कि हम खुद ही आगे नहीं आएं और अपने कार्यक्रम एवं ठोस प्रस्ताव प्रस्तुत नहीं करें."

बीच में ही रीता बोल पड़ी, "अरे, अरे, आप तो वास्तव में ही नेताओं की तरह भाषण करने लग गईं."

रजनी ने कहा, "मेरा आग्रह है कि आप इस विषय को मजाक में न लें तो अच्छा है."

जवाब विभा ने दिया, "अरे, भई, मजाक का प्रश्न ही कहां है, हम ने तो आप को अपना नेता मान ही रखा है, आप के मन में जो भी प्रस्ताव है उन को बिना सुने ही पारित समझा जाए."

एक जोरदार ठहाका हुआ. कुछ खिन्न सी होती रजनी बोली, "मैं अपने प्रस्ताव ही पास नहीं कराना चाहती, बल्कि सभी सोचसमझ कर अपने प्रस्ताव रखें."

स्वेटर बुनने में लीन सलमा ने बिना सिर उठाए ही कहा, "बात यह है, रजनी, कि कभीकभार तो हम एकत्रित होती हैं और वह समय भी हम ने यदि इन प्रस्तावों में लगा दिया तो घर बीती बातें रह ही जाएंगी. मेरा प्रस्ताव यह है कि प्रस्ताव बनाने का काम मोहिनी को दे दिया जाए जिस ने अभीअभी डाक्टरेट ली है."

और सलमा का प्रस्ताव करतल ध्वनि से सर्वसम्मति से मान लिया गया तो बेचारी मोहिनी को कागज पेन ले कर प्रस्ताव बनाने में जुटना पड़ा. आधे घंटे बाद उस ने निम्न प्रस्ताव विचारार्थ रखे :

● महिलाओं का सदियों से शोषण होता आया है, अतः केवल सन 75 के एक महिला वर्ष में समस्या का समाधान नहीं हो सकता, इसलिए पूरी बीसवीं सदी को ही महिला उत्थान सदी घोषित किया जाए.

● महिलाओं को संसद तथा विधान सभाओं में उन की संख्या के आधार पर प्रतिनिधित्व दिया जाए यानी पचास प्रतिशत स्थान महिलाओं के लिए सुरक्षित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घोषित हों.

● सदियों से पुरुष वर्ग सत्ता में रहता आया है, अब कम से कम महिला उत्थान सदी में विश्व में केवल महिलाओं की सत्ता हो.

● सरकारी नौकरियों में महिलाओं का बड़ा अल्पमत है अतः जब तक पचास प्रतिशत स्थान महिलाएं प्राप्त न कर लें तब तक केवल महिलाओं की ही नियुक्ति हो और पुरुषों की नियुक्ति पर पाबंदी लगा दी जाए.

● बच्चों के नाम के साथ मातृवंश का प्रयोग हो.

● विवाह के बाद पुरुष पत्नी के घर रहे.

● महिलाओं को कार्यालय में एक

विभा ने रजनी की बात का जवाब देते हुए कहा, "तुम्हारे प्रस्ताव को बिना सुने ही पारित समझा जाए."

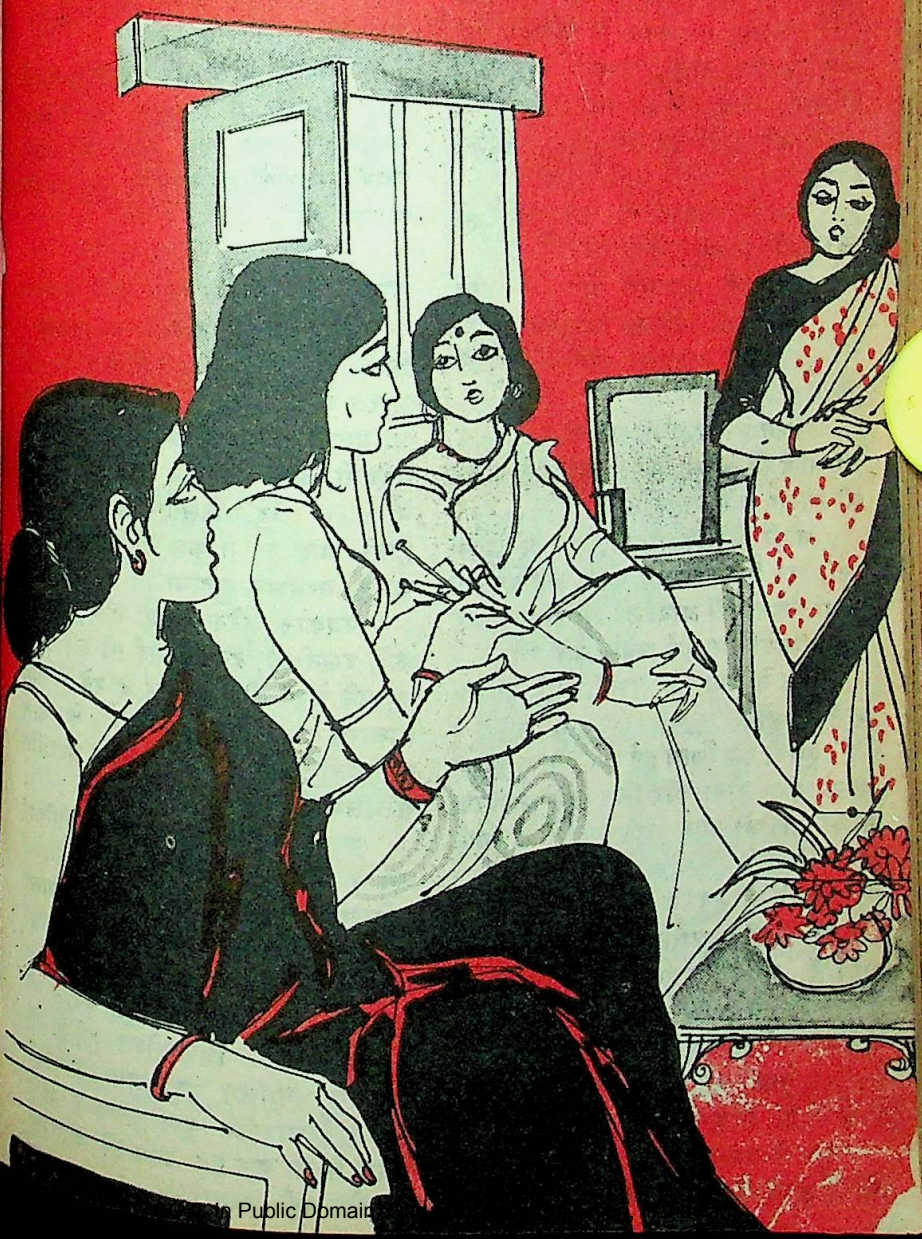

In Public Domain

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घंटे देर से आने की छूट हो.

● रेल तथा बस में आधे स्थान महिलाओं के लिए सुरक्षित हों.

● सदियों से महिलाओं को कम वेतन दे कर उन का शोषण किया जाता रहा है, अतः अब महिलाओं को पुरुषों के मुकाबले अधिक वेतन दिया जाए.

● गृहकार्य के लिए गृहिणियों को भी वेतन दिया जाए.

तालियों की गड़गड़ाहट के बीच सभी प्रस्ताव एक स्वर से स्वीकार कर लिए तो रीता बोली, "रजनी, भाषण तो हो गया, पर चाटण का क्या प्रबंध है?"

"अरे, भई, वह भी होगा," रजनी बोली.

"तो शुभ कार्य में देरी क्यों हो रही है?" शीला ने पूछा.

"एक दो अखबार वाले भी आने वाले हैं, वे आ जाएं तो आप का चाटण भी शुरू करें," रजनी ने बात साफ करते हुए कहा.

माला बोली, "तो यह बात है, हम भी सोचें कि आज ये प्रस्ताव पास करने की नौबत क्यों आ पड़ी."

थोड़ी देर गप्पों का बाजार गरम रहा, पर फिर भी जब कोई संवाददाता आता नजर नहीं आया तो उपस्थित मान्य प्रतिनिधियों का धैर्य जवाब देने लगा.

एक ने कहा कि, "भई, मेरे वो तो आते ही होंगे."

दूसरी को चिंता हुई कि, "पप्पू स्कूल से आ गया होगा और फिर इन अखबार वालों का भी क्या भरोसा कि वे आएं ही न."

तभी नौकर ने आ कर सूचना दी कि दो व्यक्ति अखबार के कार्यालय से आए हैं. महिला समुदाय सजग हो भावपूर्ण मुद्रा में बदल गया. कुरसियां ठीक कर ली गईं और रजनी ने आगे बढ़ कर उन भद्र पुरुषों को अपना परिचय दिया, साथ में देर से आने का उलाहना भी.

एक ने सफाई दी, "रजनी, हमें देरी मकान ढूंढ़ने में हो गई थी. हम ने सोचा था कि अखिल भारतीय सम्मेलन हो रहा है अतः हम शामियाने देखते रहे, पर यहां तो कोई शामियाना नजर नहीं आ रहा है. फिर अखिल भारतीय महिला सम्मेलन आप ने इस छोटी सी जगह पर कैसे किया?"

"श्रीमानजी, यह अखिल भारतीय महिला मिनी सम्मेलन था. लगता है, आप ने निमंत्रणपत्र भी नहीं पढ़ा है. आप पत्रकारों में यही तो खराबी है कि बिना पढ़े ही सब कुछ जानने का दावा करते रहते हैं," रजनी ने कहा.

पत्रकार चौंके और बेचारों ने जेब से कार्ड निकाला तो सचमुच उस में मिनी सम्मेलन लिखा था. झेंपते हुए बोले, "पर इस मिनी सम्मेलन से आप का क्या मतलब है?"

रजनी इस प्रश्न के लिए पहले ही तैयार थी, बोली, "मिनी का मतलब है मिनी यानी सूक्ष्म. अब देखिए न, यदि भारत के हर गांव से एक एक प्रतिनिधि भी बुलाया जाता तो वह संख्या लाखों में पहुंचती. अतः उस पर खर्च भी करोड़ों में आता. और महिलाएं अपव्ययी नहीं होतीं, अतः हम ने कुछ चुनी प्रतिनिधियों का ही सम्मेलन बुलाया."

पत्रकार कुरेदते हुए बोले, "क्षमा करें, रजनीजी, इन में कई तो हमें जाने-पहचाने चेहरे ही दिखलाई दे रहे हैं, जैसे मालाजी व शीलाजी हमारे घर के पास ही रहती हैं. फिर यह अखिल भारतीय सम्मेलन कैसे हो गया?"

रजनी अचकचाई, पर कच्ची गोलियां उस ने भी नहीं खेली थीं, उत्तर दिया, "दिल्ली में रहने से क्या होता है. माला महाराष्ट्र में जनमी, वहीं बड़ी हुई, वहीं पढ़ाईलिखाई हुई तो क्या वह महाराष्ट्रीयन नहीं हुई? उसी प्रकार शीला बंगाल की है. वहीं उस की शिक्षादीक्षा हुई है तो क्या उसे बंगालिन नहीं माना जाएगा? यदि कोई भारतीय कुछ समय के लिए विदेश में जा कर रह आए तो क्या वह भारतीय नहीं रहता?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मरदद!
मरदद!

केवल एक

अवेदन®

प्लस

से जल्दी और
निश्चित आराम!

SQUIBB®
SARABHAI CHEMICALS PRIVATE LIMITED
® ई. आर. स्क्विब एंड सन्स इन्कॉ. का रजिस्टर्ड ट्रेडमार्क है
जिसके अनुशप्त उपयोगकर्ता हैं : एस. सी. पी. एल.

Shilpi-SC-6A/74 Hin

जी.ई.सी.
आसरम्
बल्ब

वोल्टेज के
उतार-चढ़ाव से
बे-असर

OBM—4493A/3/HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ड्युरेक्स गोसामर

लुब्रिकेटेड प्रोटेक्टिवज्

प्राकृतिक आनन्द का आभास देनेवाला एकमात्र कन्डोम

* खास प्रकार के लुब्रिकेन्ट "सेन्सिटॉल" से लुब्रिकेट किए गये
* पूर्ण सुरक्षा के लिए इलेक्ट्रॉनिक विधि से जांचे गये.

अगली बार जब भी आप कन्डोम खरीदें – याद रखें – 'ड्युरेक्स' गोसामर या फिर नीचे दिया गया कूपन भरकर भेज दें.

उत्तम सुरक्षा और उचित आराम के लिए — **ड्युरेक्स**

टी.टी. कृष्णामाचारी एण्ड कंपनी
५ लज चर्च रोड, पोस्ट बॉक्स नं. २९०१, मद्रास ६०० ००४
कृपया मुझे पांच ड्युरेक्स प्रोटेक्टीवज् कन्डोम का एक पैकेट भेज दीजिए. मैं रु. १.६५ का पोस्टल ऑर्डर भेज रहा हूँ.
(मूल्य रु. १.२५ + ०.४० पै. डाक खर्च) (S)

नाम _____

(कृपया साफ-साफ लिखें) _____

पता _____

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

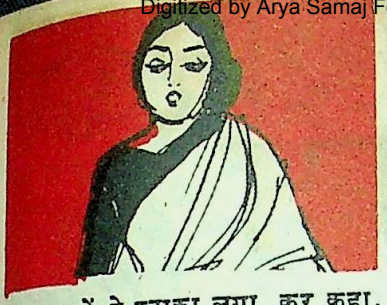

पत्रकारों ने ठहाका लगा कर कहा, "बधाई हो, रजनीजी, इस नए और अनूठे तरीके की. इस प्रकार तो आप दिल्ली में ही पलों में अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन बुला सकती हैं."

रजनी सिटपिटाई, पर इतने में ही नाश्ता आ गया और विषय बदल गया. एक पत्रकार ने चुटकी ली, "मुझे तो डर था कि मिनी सम्मेलन में मिनी नाश्ता ही न हो, पर नाश्ता तो अखिल भारतीय स्तर का है."

नाश्ता करते हुए एक पत्रकार ने पूछा, "आप का आगे क्या प्रोग्राम है?"

"हमारा एक प्रतिनिधि मंडल प्रधान-मंत्री तथा राष्ट्रपति से भेंट कर प्रस्तावों को कार्यान्वित करने पर जोर देगा," रजनी ने बताया.

यह सूचना अन्य मान्य प्रतिनिधियों के लिए भी नई थी, पर उन्होंने वातावरण की महत्ता के अनुरूप आदर्श गंभीरता ओढ़े रखी. थोड़ी देर बाद पत्रकारों ने विदा मांगी तो रजनी ने प्रस्तावों की प्रतिलिपि देते हुए कहा, "ये फोटोग्राफर भी कभी समय पर नहीं आते, पर ठहरिए. मैं आप को पुरानी फोटो दे देती हूं," कह कर वह फोटो जड़े फ्रेम की तरफ अपनी फोटो निकालने बढ़ी तो एक पत्रकार ने कहा, "उस की कोई आवश्यकता नहीं, रजनीजी. फोटो का तो ब्लाक बनाना पड़ता है और उस में काफी समय लग जाता है, हम तो समाचारों पर अधिक ध्यान देते हैं."

रजनी के चेहरे पर एक क्षण के लिए विषाद की झलक दिखाई दी पर तत्क्षण सहज होते हुए उस ने मुसकराहट के साथ विदा दी, पर मन ही मन आशंकित थी कि पत्रकारों को बुलाना व्यर्थ गया और शायद समाचार भी नहीं छपे. पर पत्रकार नमकहराम नहीं निकले.

दूसरे दिन के पत्र में एक कोने में समाचार दो लाइन में छपा था : "ग्रेटर कैलाश की आठदस महिलाओं ने मिल कर अखिल भारतीय महिला सम्मेलन का रिहर्सल किया, जिसे उन्होंने मिनी सम्मेलन का नाम दिया. उन की मांग है कि बीसवीं सदी को महिला उत्थान सदी घोषित किया जाए."

पर यह समाचार रजनी को संतुष्ट नहीं कर सका, वह बुदबुदा रही थी, "देखती हूं, प्रधान मंत्री और राष्ट्रपति से मिलने पर ये समाचार और फोटो कैसे नहीं छापते हैं." ●

ALL UNDER ONE ROOF

ESTD : 1958

ELECTROLYSIS
THOUSANDS HAVE BEEN CURED OF UGLY SUPERFLUOUS HAIR PERMANENTLY IN INDIA & ABROAD

PROP. MRS. A. GARKAL
EX-BEAUTICIAN OF TAO CLINIC LONDON

SLIMMING
BY SCIENTIFIC MACHINES

HAIR DRESSING
BY ROSHAN LAL

BEAUTY TREATMENT
INDIVIDUAL FACE MASSAGE
BRIDAL MAKE-UP
WAXING MANICURE ETC.

DELHI ELECTROLYSIS & BEAUTY CLINIC
40, HANUMAN ROAD, NEW DELHI-110001. TELEPHONE : 311297

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अवसर का लाभ

अब्दुल सत्तार की सलाह सुन कर मुहम्मद अली ने कहा, "मैं बहुत जल्दी बेगम को चलता करूंगा."

एक के बाद दूसरी, दूसरी के बाद तीसरी शादी करते समय मुहम्मद अली को किसी तरह की परेशानी न हुई लेकिन चौथी शादी के बाद उन की आंखें खुल गईं.

जागीरदार मुहम्मद अली को अपने मुसाहिब अब्दुल सत्तार बेग मिर्जा तथा उस के पूर्वजों पर बहुत नाज था. अब्दुल सत्तार बेग मिर्जा के पूर्वज, मुहम्मद अली के पूर्वजों की मुसाहिबगीरी पानीपत के तीसरे युद्ध के पूर्व से करते चले आए थे. पानीपत के तीसरे युद्ध में जागीरदार मुहम्मद अली के पूर्वज मराठों की ओर से लड़े थे. जो पूर्वज मराठों की ओर से से युद्ध में भाग ले रहे थे, वह अब्दुल सत्तार बेग मिर्जा के तत्कालीन पूर्वज तथा अपने मुसाहिब को भी अपने साथ युद्ध में ले गए थे.

जब पानीपत के युद्ध में इब्राहीम गारदी, सदाशिव राव भाऊ इत्यादि प्रमुख नेता मारे गए और मराठों का पक्ष दुर्बल होने लगा तो मुहम्मद अली के तत्कालीन पूर्वज की रगों में देशभक्ति का लहू दौड़ने लगा. उन्होंने तलवार म्यान से निकाल कर युद्ध भूमि में कूद कर अपने प्राण देश के लिए दे देने की ठानी.

परंतु इस से पहले कि वह युद्ध की लपटों में कूदते, तुरंत ही सत्तार बेग के तत्कालीन पूर्वज ने उन्हें ऐसा करने से रोकते हुए कहा, "हुजूर, आप यह क्या नादानी कर रहे हैं?"

कहानी • अजीज अफसर 'राही'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"देख नहीं रहे हो, खासखास रहनुमा मारे जा चुके हैं. मेरा खून खौल रहा है. अपने रहनुमाओं की तरह कुछ बहादुरी दिखा कर मर जाना चाहता हूं."

"हुजूर, जरा दिमाग से सोचिए, मरने से आप को क्या मिलेगा? हार तो होगी ही, आप अपनी जागीर लौट चलिए. अहमद शाह अब्दाली हिंदुस्तान में ठहरेगा नहीं. मराठों की ताकत खतम समझिए. ऐसे में जागीर को पनपाने का अच्छा मौका मिलेगा. जान है तो जहान है. मेरा कहा मानिए और चुपचाप जंग के मैदान से भाग निकलिए. हुजूर, अवसर का लाभ उठाइए."

पानीपत के युद्ध में रत मुहम्मद अली के तत्कालीन पूर्वज को अब्दुल सत्तार बेग मिर्जा के पूर्वज एवं अपने मुसाहिब का परामर्श व्यावहारिक लगा. अतः वह युद्ध के मैदान से भाग निकले. वहां से भाग कर उन्होंने अवसर का लाभ उठाया. मराठों की क्षीण शक्ति का लाभ उठा कर अपनी जागीर में वृद्धि कर ली. यदि मुहम्मद अली के वह पूर्वज अपने मुसाहिब का परामर्श न मानते तो आज मुहम्मद अली ही न होते, क्योंकि उस पूर्वज के युद्ध के पश्चात ही संतान उत्पन्न हुई थी.

इस के बाद भी मुहम्मद अली के पूर्वजों को अब्दुल सत्तार के पूर्वज मुसाहिबा की हैसियत से परामर्श देते रहे. इस समय भी जागीर समाप्त होने पर भी अब्दुल सत्तार बेग मिर्जा ने मुहम्मद अली का साथ नहीं छोड़ा था और समय-समय पर उचित परामर्श देता रहता था. इसी लिए मुहम्मद अली को सत्तार बेग मिर्जा तथा उस के खानदान पर बहुत नाज था.

इस समय मुहम्मद अली अब्दुल सत्तार की बड़ी व्यग्रता से प्रतीक्षा कर रहे थे. उन्हें बहुत आवश्यक परामर्श लेना था. जैसे ही अब्दुल सत्तार बेग मिर्जा ने कमरे में कदम रखा मुहम्मद अली उस की ओर लपकते हुए बोले.

नई नवेली दुलहन का घूंघट उठा कर मुहम्मद अली चौंके. ..उन्हें लगा कि ऐसा चेहरा पहले कभी देखा है.

"हम तुम्हारा ही इंतजार कर रहे थे. बहुत जरूरी सलाह लेनी है."

"आप ने मुझे इस लायक समझा, यह आप की दरियादिली है, हुजूर, वरना बंदा किस लायक है," अब्दुल सत्तार बेग ने बड़ी ही नम्रता से लगभग आधा झुकते हुए कहा.

"अब्दुल सत्तार, इस वक्त हम बड़ी उलझन में फंसे हुए हैं. तुम तो जानते हो कि पिछली दो बेगमें खुद ही खुदा को प्यारी हो गई थीं. इस तरह हम तीसरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शादी आराम से कर सके थे. पर यह तीसरी तो मरने का नाम भी नहीं लेती."

"क्या हुजूर की निगाह किसी चौथी पर पड़ चुकी है?" अब्दुल सत्तार मुसकराते हुए बोला.

"अब्दुल सत्तार, तुम वाकई समझदार आदमी हो." इस बार मुहम्मद अली भी मुसकराए.

"तो, हुजूर, आप इन बेगम साहिबा को भी रहने दीजिए और चौथी शादी भी कर लीजिए. कानूनन आप ऐसा कर सकते हैं, इस में कोई दिक्कत की बात नहीं है."

"नहीं, अब्दुल सत्तार, हम बासी फूल और ताजे फूल को एक साथ सूंघना पसंद नहीं करते. कोई ऐसा रास्ता बताओ कि सांप भी मर जाए और लाठी भी न टूटे. नए माल को लाने के लिए पुराना माल हटाना ही होगा."

"तो, हुजूर, अवसर का लाभ उठाइए, यानी मौके का फायदा," अब्दुल सत्तार बेग मिर्जा ने कहा.

"तुम्हारा मकसद क्या है? साफसाफ कहो." मुहम्मद अली ने बेसब्री से पूछा.

"हुजूर, आप बेगम साहिबा को तलाक दे दीजिए, एवज में जो रकम देनी होगी, वह तो हुजूर के दोतीन दिन के दस्तरखान के खर्च के बराबर भी न होगी." अब्दुल सत्तार ने अपना परामर्श देते हुए कहा, "इस तरह आप आइंदा भी चाहें तो तलाक दे कर तय महर का रुपया अदा कर के, अपनी बीवी से छुटकारा पा सकते हैं. इस अवसर का लाभ उठाइए, हुजूर."

"तुम बहुत दूर की कौड़ी लाए हो, अब्दुल सत्तार, मैं बहुत जल्द ही बेगम को तलाक दे कर और एक हजार रुपया दे कर चलता करूंगा."

तलाक देने में जागीरदार मुहम्मद अली को कोई दुविधा का सामना न करना पड़ा. पता नहीं मुसलिम समाज ने किस बात का ध्यान रख कर पुरुषों को तलाक के मामले में इतनी सुविधा प्रदान कर रखी है कि मात्र तीन बार मुंह से कह देने से तलाक हो जाता है. मुसलमानों की कुछ जातियों में तो पांच रुपयों तक के महर तय होते देखे जा सकते हैं. इन जातियों में इसी लिए तलाक भी आम तौर पर होते रहते हैं.

जागीरदार मुहम्मद अली के लिए एक हजार रुपया कोई बड़ी चीज न थी. उन्होंने अपनी पत्नी को तलाक दे कर एक हजार रुपया पकड़ा दिया. पत्नी बहुत रोई, गिड़गिड़ाई. उस ने जागीरदार मुहम्मद अली के पैर पकड़ कर कहा कि वह बांदी की तरह उस की खिदमत करती रहेगी. परंतु मुहम्मद अली के कान पर जूं तक नहीं रेंगी.

बेचारी अपने आंसू पोंछते हुए दरवाजे से बाहर हो गई. वह कहां गई, इस का फिर किसी को पता न चला. जागीरदार मुहम्मद अली ने अपनी चौथी शादी बड़ी धूमधाम से की. नईनवेली दुलहन पा कर जागीरदार मुहम्मद अली खुशी से फूले नहीं समाए.

धीरेधीरे इस घटना को 16 वर्ष बीत गए. इस बीच जागीरदार मुहम्मद अली को अपना विवाह करने के कई अवसर प्राप्त हुए. कभी उन की पत्नी का देहांत हो जाता, तो कभी परस्पर मतभेद के बहाने वह अपनी पत्नी को तलाक दे देते. इस प्रकार एक बुद्धिमान व्यापारी की भांति वह प्रत्येक अवसर का लाभ उठाते रहे, अर्थात हर बार विवाह करते रहे. ऐसा करने में उन के समक्ष किसी भी प्रकार का विरोध उत्पन्न नहीं हुआ, क्योंकि मुहम्मद अली जो कुछ भी कर रहे थे, मुसलिम कानून के अनुसार कर रहे थे.

"हुजूर, 16 वर्ष की लड़की मिल रही है. खुदा का शुक्र अदा कीजिए और फिर शादी के लिए तैयार हो जाइए." अब्दुल सत्तार बेग मिर्जा ने मुहम्मद अली को प्रसन्नता का समाचार दिया.

"अमा, क्या मेरी जिंदगी में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लीजिये
वॉटरबरीज़ विटामिन टॉनिक–
विटामिनों, खनिजों और
लोहे से युक्त सर्वथा परिपूर्ण टॉनिक

जब आप शक्ति की कमी से थकावट, कमजोरी और चिड़चिड़ापन महसूस करते हैं तब आपको उन अधिकांश टॉनिकों से जिनमें सिर्फ विटामिन या लोहा या खनिज मिले होते हैं, बेहतर टॉनिक चाहिये।

आपको वॉटरबरीज विटामिन टॉनिक चाहिये। यह एक संतुलित फ़ार्मूला है जिसमें **वृद्धि और शक्ति के लिये विटामिन, स्वस्थ रक्त के निर्माण के लिये लोहा तथा भूख बढ़ाने और पाचन ठीक रखने वाले तत्व मिले हैं।**

शक्ति, ताक़त और स्फूर्ति के लिये प्रतिदिन वॉटरबरीज विटामिन टॉनिक लीजिये।

वॉटरबरीज़ विटामिन टॉनिक
पूरे परिवार के लिये
सर्वथा परिपूर्ण टॉनिक

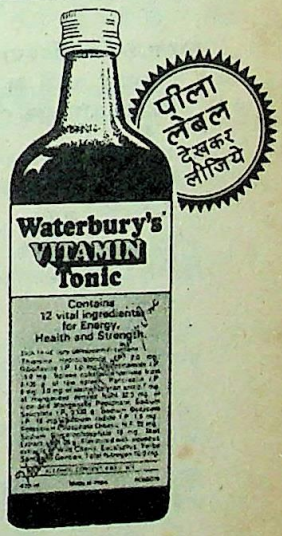

Grant 10 MN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अली भी प्रसन्नता में भर कर बोले

"हुजूर, मैं कल ही भोपाल से लौटा हूं. वहीं पर लड़की वालों से मुलाकात हुई थी. जुमेराती में सामान खरीदते हुए एक झलक लड़की की भी देखने को मिली. खुदा की कसम हीरा है, हीरा, फिर भी हुजूर देखना चाहें तो फोटो आ सकता है."

"अमा, गोली मारो फोटो को. तुम्हारी पसंद पर हमें भरोसा है. शादी की तारीख तय कर लो," मुहम्मद अली ने अपने विश्वासपात्र मुसाहिब से कहा.

निश्चित समय पर जागीरदार मुहम्मद अली की बरात भोपाल गई और विवाह के बाद वापस लौट आई. जागीरदार मुहम्मद अली अति प्रसन्न थे. उन्हें जीवन में एक बार पुनः नई कली को मसलने का अवसर प्राप्त हो रहा था.

मुहम्मद अली धीरेधीरे उस पलंग की ओर बढ़े जहां उन की नई पत्नी [illegible] घूंघट डाल [illegible] हुई थी. अपने दोनों हाथों से मुहम्मद अली ने अपनी पत्नी का घूंघट उठा दिया. परंतु जो चेहरा मुहम्मद अली ने देखा, उस ने उन्हें कुछ चौंका सा दिया. उन्हें लगा, ठीक इसी तरह का चेहरा उन्होंने कभी देखा है. दिमाग पर बहुत जोर डालने पर भी वह याद न कर पाए कि ऐसा चेहरा कहां देखा है.

मुहम्मद अली ने अपनी पत्नी को बांहों में भर लिया था. उन के होंठ पत्नी के होंठों से टकराने वाले थे, परंतु पत्नी के गले में जो चांदी का तावीज पड़ा हुआ था, उस पर दृष्टि पड़ते ही वह उस से एकदम विलग हो कर चारपाई से दूर खड़े हो गए. उन्हें लगा जैसे सैकड़ों बिच्छुओं ने एक साथ काट लिया हो.

"यह तावीज तुम्हारे पास कहां से आया?" मुहम्मद अली ने अपनी पत्नी से प्रश्न किया.

"मेरी मां का है."

"तुम्हारी मां का क्या नाम था?"

"आयशा बेगम."

"या, अल्लाह, यह मैं क्या सुन रहा हूं!" मुहम्मद अली के मुंह से निकला और उन्होंने शीघ्र ही एक प्रश्न और किया :

"तुम्हारे बाप कहां हैं? क्या तुम्हारी शादी भोपाल में जिन्होंने की है, वही तुम्हारे बाप हैं?"

"नहीं, उन के यहां हमारी मां किराए पर रहने कहीं से आई थीं. कहते हैं कि मैं उन्हीं के यहां पैदा हुई थी. बहुत पूछने पर भी उन्होंने मेरे बाप का नाम नहीं बताया. वह यही कहती थीं, कि नसरीन का बाप बहुत बड़ा आदमी है, पर उस ने उन्हें तलाक दे दिया है. अम्मी के मरने के बाद मकान मालिक ने मुझे पाला और उन्होंने ही मेरी शादी की है."

मुहम्मद अली अपना सिर पकड़ कर जमीन पर बैठ गए. अब उन्हें स्पष्ट

विशेषांकों का सेट

सरिता के निम्न विशेषांक सेटों के रूप में उपलब्ध हैं. तीनों का मूल्य केवल 6 रु. (रजिस्टर्ड डाक खर्च सहित).

1. कढ़ाई विशेषांक (दिसंबर द्वितीय, 1974). हर प्रकार की कढ़ाई के तीस से अधिक नमूने.
2. बुनाई परिशिष्टांक (अक्तूबर द्वितीय, 1975). आधुनिक डिजाइनों के नौ नमूने.
3. दीपावली विशेषांक (नवंबर प्रथम, 1975). 250 पृष्ठों का अंक, जिस में 14 कहानियां, 15 लेख और शाश्वत रहने वाली सामग्री है.

आज ही पूरा सेट मंगाइए. 6 रु. का मनीआर्डर निम्न पते पर भेजिए:

सरिता,
रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-55.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जल्द आराम पाने के लिए तेज़ असर और विश्वसनीय एनासिन लीजिए

तेज़ असर–एनासिन में वह दर्द-निवारक दवा ज़्यादा है, जिस की दुनिया-भर के डॉक्टर सिफ़ारिश करते हैं। इसी लिए एनासिन दर्द से जल्द आराम दिलाती है।

विश्वसनीय–एनासिन आपके डॉक्टर की दवाई की तरह दवाओं का नपा-तुला सम्मिश्रण है। इसी लिए एनासिन पर लाखों लोगों को पूरा भरोसा है।

एनासिन बदन के दर्द, दाँत के दर्द, सर्दी-जुकाम और फ़्लू की पीड़ा से भी जल्द आराम दिलाती है।

तेज़ असर और विश्वसनीय

एनासिन

भारत की सब से लोकप्रिय दर्द-निवारक दवा

Regd. User of TM Geoffrey Manners & Co., Ltd.

A/2/B-74

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त आयुर्वेदिक ग्रंथों में आंखों के लिए काजल सुरमा के अनेक गुण लिखे हैं. आंखों को नीरोग और सुंदर बनाने के लिए

भीमसेनी काजल (एला युक्त)

आधुनिक ढंग और आयुर्वेदिक औषधियों से बी. फार्मा एवं वैद्यों द्वारा निर्मित

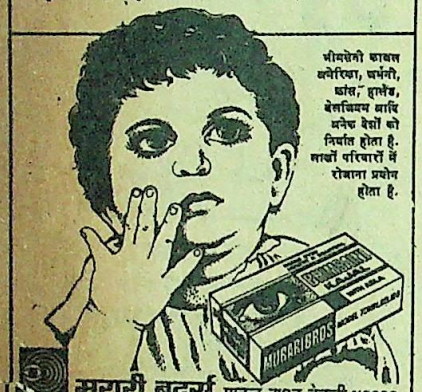

भीमसेनी काजल अनेरिया, चर्मनी, छांत, हार्मेंड, बेलजियम आदि अनेक देशों को निर्यात होता है. लाखों परिवारों में रोजाना प्रयोग होता है.

मुगारी ब्रदर्स माडल टाउन देहली-110009

2 अनुपम उत्पादन

बालसन

हेयर रीमुवींग (बाल सफा)

क्रीम

कोमल त्वचा के बाल साफ करने के लिए

बालसन

केश काला

सफेद

बालों को प्राकृतिक रंग जैसा काला करने के लिए

बालसन सेल्ज कारपोरेशन, दिल्ली-६

देश भर में डीलरों की आवश्यकता है !

मालूम हो गया कि उन की पत्नी के [illegible] में उन की ही पुत्री बैठी हुई है और [illegible] पुत्री 16 वर्ष पूर्व तलाक दी हुई आयशा बेगम की पुत्री है.

उन्हें लगा जैसे दरवाजे पर खड़ी हुई आयशा बेगम जोर का ठहाका लगा कर कह रही है, "हुजूर, उठिए और बढ़िए पलंग की तरफ. अवसर का लाभ उठाइए. आप तो अवसर का लाभ उठाने में माहिर हैं न!"

मुहम्मद अली अधिक बैठे न रह सके. वह तुरंत उठ कर अपने दीवानखाने में चले गए. कमरे को सब ओर से बंद कर के उन्होंने एक कागज पर जल्दीजल्दी कुछ लिखना प्रारंभ किया.

जब दिन काफी निकल आया और मुहम्मद अली अपने दीवानखाने से बाहर नहीं निकले तो उन की पत्नी ने घर के अन्य लोगों को बताया कि वह रात से ही दीवानखाने में बंद हैं.

पहले तो उन्हें बहुत आवाजें दी गईं. जब नहीं बोले तो किवाड़ जोरजोर से खटखटाए गए. अंत में किसी अज्ञात आंशका से भयभीत हो कर किवाड़ों को तोड़ना पड़ा. आशंका उचित ही थी. मुहम्मद अली पृथ्वी पर मृत पड़े हुए थे. उन की अंगूठी खाली थी. उन्होंने हीरा खा लिया था.

पास पड़े कागज पर लिखा था "वास्तव में मुसलमान पुरुषों के तलाक के अनियंत्रित अधिकार पर अंकुश लगाया जाना चाहिए. यदि ऐसा नहीं होता है तो मुसलमान स्त्रियां उपेक्षा की पात्र बनी रहेंगी तथा अनुचित अवसर का लाभ उठा कर पुरुष तलाक देते रहेंगे. इसी अवसर के लाभ के चक्कर में मैं ने अपनी पुत्री के साथ काला मुंह कर लिया होता. यद्यपि खुदा ने मुझे इस गुनाह से बालबाल बचा दिया है, फिर भी मेरी पुत्री मेरी ही पत्नी बन कर मेरे सामने आई, यही क्या मरने के लिए कम बात है. अतः मैं इस दुनिया से अब हमेशा के लिए बहुत दूर जा रहा हूं."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पति

पति यदि इस बात की अवहेलना न करे कि पत्नी का भी अपना एक दृष्टिकोण हो सकता है तो समस्याएं अपनेआप सुलझ सकती हैं.

लेख • तिलकराज गोस्वामी

विवाह के बाद प्रायः यह होता है कि कुछ समय तक पतिपत्नी परस्पर आदरमान, शिष्टाचार निभाते हैं, एकदूसरे की भावनाओं का खयाल करते हैं, लेकिन फिर धीरेधीरे जराजरा सी बात पर मनमुटाव होने लगता है.

इस आपसी मनमुटाव की स्थिति के लिए पत्नी की अपेक्षा पति कहीं अधिक उत्तरदायी होता है. उसे इस बात का ध्यान नहीं रहता कि उस की पत्नी अपने मातापिता, भाईबहनों व अन्य प्रियजनों से अलग हो कर उस परिवार में आई है जिस के सदस्य उस के लिए अजनबी हैं.

हमारे समाज में परंपरा ही कुछ ऐसी रही है कि विवाह के पूर्व ही लड़के के दिमाग में यह बात अच्छी तरह बैठा दी जाती है कि विवाहोपरांत उसे अपनी पत्नी के ऊपर अपने अखंड स्वामित्व के अधिकार को पूरी तरह से जमाए रखना है. और इस अधिकार की रक्षा से ही उस के पुरुषत्व की रक्षा होगी. उसे यह कोई नहीं बताता कि जोरजबर की अपेक्षा शिष्टता व स्नेह से किसी के हृदय को जीतना कहीं अधिक अच्छा होता है.

पति पत्नी पर अपने जबरदस्ती के एकाधिकार के संबंध में सोचेगा ही नहीं, यदि विवाह के पूर्व ही उसे इस बात का ज्ञान करा दिया जाए कि नारी स्वभावतया वात्सल्यमयी, सम्मानमयी तथा त्यागमयी होती है. थोड़ा सा स्नेह-आदर पा कर वह अपना सर्वस्व पति और परिवार के लिए न्योछावर करने की भावना रखती है.

इस के विपरीत यदि जानबूझ कर उस की भावनाओं को ठेस पहुंचाई जाए, उसे अपमानित किया जाए तो वह किसी भी दशा में इसे सहन नहीं करती. अतएव एक व्यवहारकुशल पति के लिए यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आवश्यक होता है कि वह अपने पतित्व के अधिकार की रक्षा करते हुए भी उस की मनोभावनाओं, अधिकारों और सब से बढ़ कर उस की मानमर्यादा का पूरा-पूरा ध्यान रखे.

कुछ पति स्वभाव से ही नुक्ताचीं और बाल की खाल उतारने वाली प्रवृत्ति के होते हैं. वह अपनी बुद्धि तथा विवेक से काम न ले कर प्रायः अपने परिवार के सदस्यों की झूठी बातों को महत्त्व दे कर पत्नी को डांटनेडपटने व अपमानित करने लगते हैं, जिस के प्रत्युत्तर में पत्नी भी पति तथा घर के अन्य जनों को बुराभला कहने लगती है.

इस आपसी तूतू, मैंमैं से घर का वातावरण खराब हो जाता है. पति भूल जाता है कि प्रत्येक स्त्री दूसरों से अपनी प्रशंसा सुन कर पुलकित हो उठती है. विशेष रूप से जब वह अपने पति के मुख से अपने गुणों व कामों की सराहना सुनती है तो उस के हर्ष की सीमा नहीं रहती. एक व्यवहारकुशल पति अवसरानुसार पत्नी के गुणों की प्रशंसा कर के उस के मन को मोह लेता है.

अपनी प्रशंसा सुन कर कोई पत्नी कितनी खुश होती है, इस का एक उदाहरण प्रस्तुत है. अभी गत माह मैं दिल्ली अपने एक मित्र के यहां गया. वह हिंदी के एक सुपरिचित लेखक हैं. चायपान करते समय वह अपनी पत्नी के सहयोगी स्वभाव की चर्चा करते हुए बोले, "मित्र, लेखन क्षेत्र में जो भी सफलता मैं ने पाई है, उस का बहुत बड़ा श्रेय मेरी इन श्रीमतीजी को जाता है. यदि इन का उचित सहयोग मुझे प्राप्त न हुआ होता तो शायद मैं लेखक न बन पाता. मेरी लापरवाही से तो तुम परिचित हो ही. यही हैं जो मेरी किताबों, पत्रपत्रिकाओं व लेखनसामग्री की सफाई, देखभाल करती हैं और उन्हें यथास्थान रखती रहती हैं. समय मिलने पर मेरी रचनाओं को टाइप तक कर देती हैं. सच तो यह है कि इन्होंने मेरे जीवन में खुशियां बिखेर दी हैं."

पत्नी के बीमार होने पर उस की देखभाल अगर पति स्वयं करे तो इस में बुराई क्या है?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पति के मुख से अपनी प्रशंसा सुन कर पत्नी का मन प्रफुल्लित हो उठता है. . .

मित्र की बात सुन कर मैं ने उन की पत्नी पर एक नजर डाली. पति द्वारा अपनी प्रशंसा सुन कर उस के चेहरे पर लज्जा व एक अद्भुत प्रकार की प्रसन्नता झलक आई थी.

एक आदर्श पति अपनी पत्नी की पसंदनापसंद, खानपान, पहनावे व अन्य अनेक प्रकार की रुचियों में रुचि लेता है. अपनी सच्ची दिलचस्पी दर्शा कर वह उस के मन में अपना अलग स्थान बना लेता है. होता यह है कि जब पत्नी पति के साथ किसी मित्ररिश्तेदार या पार्टी आदि में जाने की तैयारी करते समय पति से पूछती है कि वह कौन सी साड़ी पहन कर चले तो वह जवाब देता है, "अरे भई, यह भी मुझे ही बताना होगा? जो तुम्हें अच्छी लगे पहन लो. वहां किस के पास इतनी फुरसत है कि कोई तुम्हारी साड़ी की ओर देखे."

पति के साधारण रूप में कहे गए शब्द पत्नी के मन को अवश्य ही आघात पहुंचाते हैं. वह निरुत्साहित सी हो मन मसोस कर रह जाती है. इस के विपरीत कुशल पति ऐसे अवसर का लाभ उठा कर पत्नी के हृदय पर अपने स्नेह की छाप अंकित कर देता है.

अभी कल शाम की ही बात है. मैं एक मित्र के यहां पहुंचा. वे पतिपत्नी किसी के यहां जाने की तैयारी कर रहे थे. पत्नी तैयार हो कर ड्राइंगरूम में मेरे पास बैठे अपने पति के पास आई और धीरे से पूछा, "क्यों, जी, कान में क्या पहनूं—टाप्स या बालियां?"

मित्र मुसकराते हुए बोले, "अरे, भई, तुम कुछ भी न पहनो तब भी बहुत अच्छी लगती हो. वैसे मुझ से पूछती ही हो तो सुनो, तुम्हारे कानों में झुमके खूब फबते हैं."

विश्वास मानिए पति के शब्द सुन कर पत्नी के मुख पर जो प्रसन्नता नाची वह देखने योग्य थी.

मतलब यह कि यदि आप चाहते हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि पत्नी के मन से आप के प्रति स्नेह आदर कम न होने पाए तो ऐसे अवसरों पर अपना सुझाव देने से न चूकें. यदि आप को अधिक जानकारी नहीं है कि किस साड़ी के साथ कौन से रंग का ब्लाउज मैच करता है, कैसे मेकअप के साथ जूड़े का डिजाइन कैसा होना चाहिए तो भी आप अपनी ओर से उसे राय अवश्य दें.

यकीन मानिए, वह आप के सुझाव की कदर करेगी. याद रखें कि अधिकांश महिलाएं अपने पति की रुचि को ही ध्यान में रख कर अपना बनावशृंगार करती हैं, कपड़ेगहने आदि पहनती हैं.

पति से अपेक्षा

पति के चरित्र का महत्त्व पत्नी की दृष्टि में बहुत होता है. कोई भी पत्नी यह नहीं चाहती कि उस का पति शराबी, दुराचारी, जुआरी, अथवा बेईमान हो, बल्कि इस के विपरीत वह उस व्यक्ति को आदर्श पति मानती है जो कर्तव्यनिष्ठ, दूसरों का विश्वासपात्र, जिज्ञासु, साहसी तथा अपनी भुजाओं व मस्तिष्क की शक्ति पर भरोसा करने वाला हो.

बहुत कम महिलाएं ऐसी होती हैं जिन्हें पति की पारिवारिक संपत्ति में विशेष रुचि होती है. आज की पढ़ीलिखी लड़कियां किसी लखपति सेठ के साधारण पढ़ेलिखे व बेईमानी से जीविका अर्जित करने वाले लड़के को पसंद नहीं करतीं. वे अपने से अधिक तीव्र बुद्धि वाले तथा अपनी योग्यता और परिश्रम से जीविका चलाने वाले किसी डाक्टर, प्रोफेसर, इंजीनियर, सेना के अधिकारी या लेखक-पत्रकार को अपना जीवनसाथी बनाना अधिक पसंद करती हैं.

जहां पत्नी यह पसंद करती है कि उस का जीवनसाथी उच्च चरित्र का स्वामी हो, वहां वह पति से भी इस बात की अपेक्षा करती है कि वह उस के व्यवहार, कार्यकुशलता और सब से बढ़ कर उस के चरित्र पर भरोसा रखे, यदि किसी कारणवश वह परेशान, अस्वस्थ हो या काम करने में उ[illegible] कोई लाचारी हो तो आदर्श पति [illegible] दायित्व होता है कि वह उस की प[illegible] को समझ कर सहानुभूतिपूर्वक उ[illegible] निदान खोजने का प्रयास करे.

हमारे समाज में कतिपय [illegible] नारी को 'तिरिया चरित्र' व 'नारी[illegible] के विशेषण दे कर उसे अपमानित [illegible] रखा है. जब वह सचमुच बीमार [illegible] होती है तो भी कुछ व्यक्ति उस के [illegible] में गलत धारणा रख कर समय र[illegible] की देखभाल नहीं करते और बाद [illegible] हो जाने पर पछताते हैं.

पत्नी की बीमारी की अवस्था यदि घर के अन्य सदस्य उस की [illegible] अच्छी तरह ध्यान दें तो भी पति का कर्तव्य होता है कि वह स्वयं पूरी [illegible] से उस की देखभाल करे. कभीकभी [illegible] भी होता है कि पत्नी किसी ऐसे [illegible] पीड़ित हो जाती है जिस में घर के [illegible] लोग उस की सेवा करने में संकोच [illegible] परहेज करते हैं. ऐसी दशा में पति [illegible] दायित्व और अधिक बढ़ जाता है. [illegible] ऐसे अवसर पर वह पूरी निष्ठा से [illegible] की सेवा व सहायता कर उसे स्व[illegible] प्राप्त करने में सहायता देगा तो [illegible] ही अपने दांपत्य जीवन को सुखी बना[illegible]

विचारों में समता

पारिवारिक कलह का एक बहुत [illegible] कारण यह भी होता है कि पति पत्नी [illegible] विचारों तथा भावनाओं को समझने [illegible] कोशिश ही नहीं करता. उस की भाव[illegible] को बिना समझे अपनी ही हांकते [illegible] और जबरदस्ती अपने ही विचारों [illegible] फैसलों को पत्नी पर थोपने से उ[illegible] मन को जो आघात पहुंचते हैं [illegible] परिणामस्वरूप दांपत्य जीवन में [illegible] कटुता उत्पन्न हो सकती है उस का [illegible] मान सहज ही लगाया जा सकता है [illegible] आवश्यकता इस बात की होती [illegible] समझदार पति पत्नी की भावनाओं [illegible] ध्यान में रख कर उन की कदर करे [illegible] इस तरह अपने पारिवारिक जीवन [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवन में कई खुशियों के पल होते हैं

सरदर्द को आपकी खुशियां बिगाड़ने न दीजिये

२ ऐस्प्रो लीजिये

माइक्रोफ़ाइन्ड ऐस्प्रो दर्द को जल्दी खींच निकालता है

ASPRO
Nicholas

A.S.66.HN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

अधिक सुखमय बनाने का प्रयास करें.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हम प्रायः देखते हैं कि कई अत्यधिक रूपवती तथा आकर्षक व्यक्तित्व वाली महिलाओं को बेजोड़ कुरूप पति मिल जाते हैं, लेकिन फिर भी उन का दांपत्य जीवन आकर्षक दिखने वाले जोड़ों की अपेक्षा कहीं अधिक आनंदमय होता है. यदि इस सुख का रहस्य खोजने की आप कोशिश करें तो आप पाएंगे कि वे कुरूप पति अपनी पत्नियों की सुखसुविधा का पूरापूरा ध्यान तो रखते ही हैं, लेकिन सब से विशेष बात उन में यह होती है कि वे कभी भी उन की भावनाओं को ठेस पहुंचाने की कोशिश नहीं करते.

उस दिन पारिवारिक समस्याओं पर बातचीत करते हुए मैं ने अपने डाक्टर मित्र से पूछा कि क्या उन की पत्नी उन से साड़ियां या आभूषण आदि लाने की फरमाइश या तकाजा आदि नहीं करतीं?

सरिता
1971 के छमाही सेट
अब केवल 10 रुपए में

हर सेट में लगभग 80 कहानियां, 150 लेख, 40 कविताएं, धारावाही उपन्यास तथा ढेरों अन्य रोचक सामग्री, जो आज भी आप का मनोरंजन तो करेगी ही, साथसाथ आप का ज्ञानवर्धन भी करेगी. यदि इन अंकों को आप ने अभी तक नहीं पढ़ा है तो आज ही मनीआर्डर भेजिए.

रजिस्टर्ड डाक से मंगाने के लिए रु. 1.50 अतिरिक्त.

मनीआर्डर कूपन पर यह लिखें : "प्रथम/द्वितीय, 1971 के सरिता के सेट के लिए धन."

दिल्ली प्रकाशन, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-55.

उन्होंने कहा, "मेरी श्रीमती को पढ़ीलिखी हैं. उन्हें गहनों आदि का विशेष शौक नहीं है. जहां तक वस्त्रों की बात है, मैं वर्ष में तीन साड़ियां अवश्य ही उन्हें प्रेमोपहार के रूप में देता हूं. एक साड़ी पत्नी के जन्मदिवस पर, दूसरी विवाह की वर्षगांठ पर और तीसरी दीपावली के त्योहार पर. किसी भी साड़ी का मूल्य दो तीन सौ रुपए से कम नहीं होता. इस से श्रीमतीजी के तकाजा करने का प्रश्न ही पैदा नहीं होता."

उपहार पाने की लालसा

उन्होंने आगे बताया कि दूसरों से उपहार पाने की कामना लगभग सभी में होती है, किंतु बच्चों तथा महिलाओं में इस तरह की लालसा तनिक अधिक होती है.

पत्नी स्वयं बाजार जा कर कितनी कीमती वस्तुएं खरीद लाए, वह मन से चाहती है कि कभीकभी उस का पति बिना उसे बताए उस की रुचि के अनुरूप कोई चीज ला कर उसे उपहार स्वरूप दे. पति द्वारा दी हुई ऐसी वस्तु पत्नी के प्रति उस के स्नेह व आदर का प्रतीक होती है.

अकसर पत्नियां इस बात की शिकायत करती रहती हैं कि उन के पति अपने दफ्तर या व्यापार के कर्तव्यनिर्वाह में इतने लीन रहते हैं कि उन्हें घरपरिवार की कोई चिंता नहीं होती. बच्चे पढ़ते लिखते हैं या आवारागर्दी करते हैं, घर में कोई बीमार है या किसी आवश्यक वस्तु की कमी है, इस की उन्हें चिंता नहीं रहती.

पत्नी में यह एक स्वाभाविक इच्छा होती है कि उस का पति कुछ समय उस के लिए भी निकाले. कभी सिनेमा या थिएटर पर ले जाए और कभी बच्चों में बैठ कर हंसेखेले. कर्त्तव्यनिष्ठ होना बहुत अच्छा गुण है, लेकिन कर्त्तव्य की बलिवेदी पर बिना किसी विशेष कारण के अपने दांपत्य सुख की आहुति दे देना अकलमंदी नहीं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

everest/120/PP-hn

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीभ चिढ़ाना जैसी गंदी आदतों से बच्चा दूसरों की नजर में गिर जाता है.

बच्चों में अभद्रता

हर समय उपेक्षा और तिरस्कार कर के आप अपने बच्चे को अभद्र तो नहीं बना रहे?

लेख • वेदप्रकाश

शाम को घूमतेघूमते महेशजी के यहां जा पहुंचा. देखा तो अजीब सा लगा. वह कमरे में बैठे अखबार पढ़ रहे थे और उन की पत्नी अपने आठ वर्षीय पुत्र विवेक को बुरी तरह डांट रही थीं. मुझे देख कर उन्होंने डांटना बंद कर दिया और हाथ मटका कर कहने लगीं, "जब देखो बदतमीजी, नाक में दम कर दिया. इसे दे कर पता नहीं कुदरत हम से किस जनम का बदला ले रही है!" कहतेकहते उन्होंने विवेक को दोतीन थप्पड़ जड़ दिए और रसोईघर की ओर चली गईं.

विवेक वहीं कोने में गरदन झुकाए सहमा सा खड़ा रहा. उस का चेहरा तमतमा रहा था. मुझे बड़ी हैरानी हुई कि बच्चा डांट खा रहा था और महेशजी बैठे अखबार ऐसे पढ़ रहे थे जैसे उन्हें कुछ पता ही न हो.

"क्या बात हुई?" मैं ने पूछा.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

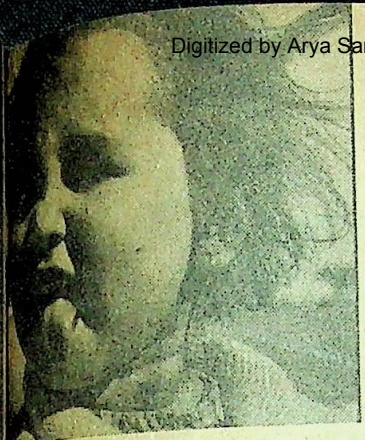

"अजी, बच्चे हैं. शैतानी करते हैं तो डांट खाते हैं, पिटते हैं. यह तो चलता ही रहता है. तुम सुनाओ क्या हाल है?" उन्होंने अखबार एक ओर रखते हुए कहा.

इतने में उन की श्रीमतीजी रसोई-घर से कमरे में आ गई और बात बीच में ही काट कर बोलीं, "जब देखो नालायकी. हर रोज कोई न कोई शिकायत. इस की उमर के गिनती के पांच बच्चे हैं महल्ले में, पांचों ने मिल कर सारा महल्ला सिर पर उठा रखा है. रामलाल की बुढ़िया मां को सारा दिन चिढ़ाते रहते हैं. बेचारी रोज शिकायत ले कर आती है. बताओ, जी, उस बुढ़िया से इन्हें क्या लेनादेना? महीनों हो गए इसे डांटतेपीटते, कोई असर ही नहीं है."

रामलाल की बुढ़िया मां को ले कर बातों का सिलसिला शुरू हुआ. बात में से बात निकलती चली गई. करीब एक घंटे की बातचीत के बाद हम लोग इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि बुढ़ापे के कारण रामलाल की मां सठिया गई है. वास्तव में बच्चों का कोई दोष नहीं है. उसे

बच्चे की बात न सुनने पर वह सहम जाता है और आप की उपेक्षा करने लगता है...

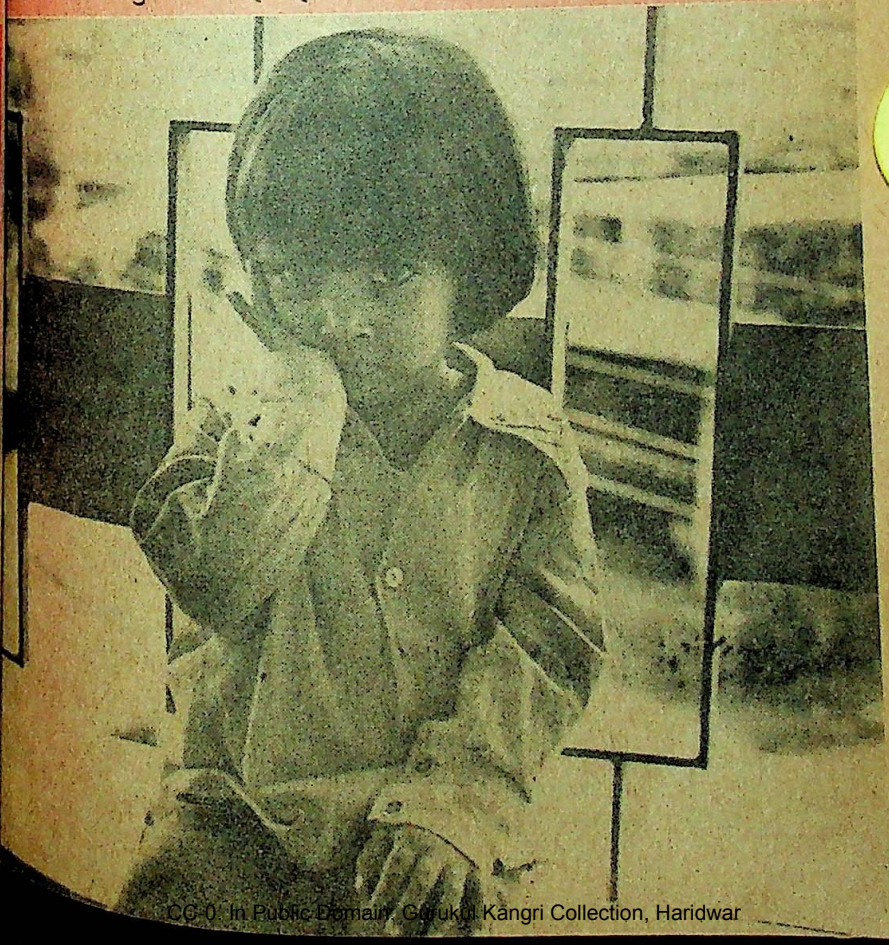

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो गई है. वह सोचती है कि संतान के सारे बच्चे उसे तंग करने के लिए ही पैदा हुए हैं. इन बच्चों को देखने मात्र से ही वह इन्हें गाली देना, कोई न कोई चीज उठा कर इन की ओर फेंकना शुरू कर देती है. बच्चे नकलची होते ही हैं. स्वाभाविक है. बच्चे भी उस की इन बातों का जवाब ऐसे ही देते थे.

'जैसा कहो, वैसा सुनो' वाली बात शत प्रतिशत सत्य है. विशेष रूप से बच्चों के लिए अच्छा व्यवहार एक प्रकार का आदानप्रदान है. यदि हम चाहते हैं कि बच्चे अच्छा व्यवहार करें तो हमें भी उन के साथ अच्छा व्यवहार करना चाहिए.

बच्चा जिद्दी क्यों?

परिणाम यह हुआ कि महेश की श्रीमतीजी को अपनी गलती माननी पड़ी. उन की ही तरह अनेक ऐसे मातापिता हैं जो बच्चे की जरा सी शिकायत पर बिना सोचेसमझे उसे डांटनापीटना शुरू कर देते हैं. धीरेधीरे बच्चा जिद्दी हो जाता है, जिस से उस के विकास पर बुरा असर पड़ता है. उस के मन में बड़ों के प्रति आदर भी कम हो जाता है. कभी-कभी वह मानसिक रूप से विकृत भी हो जाता है.

हमारे देश में अधिकतर मातापिता बच्चों की उपेक्षा या तिरस्कार करते हैं, जिस से बच्चों के अहं को ठेस पहुंचती है और वे अभद्र हो जाते हैं.

पिछले दिनों मुझे अपने एक मित्र परिवार के साथ खरीदारी करने जाना पड़ा. छोटामोटा सामान खरीदने के बाद नंबर आया, उन के सात वर्षीय पुत्र नरेश के लिए पैंट का कपड़ा खरीदने का. कपड़े की दुकान पर पहुंचे. बच्चे को पैंट का कपड़ा दिखाने के लिए कहा गया. सेल्समैन बड़ा हंसमुख और चतुर था.

कपड़ा दिखाने से पहले उस ने मुसकरा कर नरेश से पूछा, "भाई, कैसा कपड़ा लोगे. सादा या डिजाइनदार?"

सेल्समैन का प्रश्न सुन कर नरेश ने मातापिता की ओर विस्मय से देखा, सेल्समैन समझ रहा है, मुझे कपड़ा खरीदना है. खरीदना आप को है न, मम्मी, मुझे तो पहनना है."

यदि हम नरेश के इस उत्तर का विश्लेषण करें तो निष्कर्ष निकलेगा उस के लिए अपना कोई अस्तित्व नहीं है. कपड़ा खरीदना तो दूर रहा, अपनी पैंट के लिए डिजाइन चुनने असमर्थ है. बड़ों के सामने वह अपने को कुछ भी नहीं समझ रहा है. यह मांबाप द्वारा बच्चे की उपेक्षा का परिणाम है. आगे चल कर बच्चे की भावना उस में हीनता का रूप धारण कर लेती है, जिस का अंततः परिणाम होता है, अभद्रता. बच्चे के विचारों उस की रुचियों में एक सीमा तक स्वतंत्र चिंतन आवश्यक है जो बच्चे के मातापिता तथा अन्य बड़ों के व्यवहार पर निर्भर करता है.

काफी दिन बाद घर गया था. अम्मा से किसी विषय पर बात हो रही थी बीच में मेरा नौ वर्षीय भतीजा राहुल बोल पड़ा.

आपसी बातचीत में. . .

अम्मा ने उसे एक थप्पड़ जड़ते हुए कहा, "जब कोई आपस में बात करे तो बीच में नहीं बोलना चाहिए."

राहुल चुप हो कर बैठ गया. मेरी और अम्मा की बात करीब आधा घंटा तक चली. वह बेचारा मायूस हो कर बहुत सा शांत बैठा रहा. जब अम्मा से मेरी बात खत्म हो गई तो पुचकार कर राहुल से मैं बोला, "हां, बेटे, अब तुम बोलो."

झट से कूद कर वह मेरी गोद में आ बैठा और लगा स्कूल की, दोस्तों की, अध्यापकों की, घर की कहानियां सुनाने. बच्चों के पास और क्या है. इसी बीच अम्मा बोल पड़ीं. तुरंत मैं ने उन्हें रोक कर कहा, "देखो, अम्मा, जब तुम बात कर रही थीं तो राहुल इंतजार करता रहा. अब जब तक राहुल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

बात करे तुम इंतजार करो."

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुन कर अम्मी को आश्चर्य हुआ और ठेस भी लगी. यह एक आम बात है. जैसा हम बच्चों को सिखाते हैं, कभी-कभी हम स्वयं उस का उलटा करते हैं, जिस का बच्चे के व्यवहार पर ही नहीं, पूरे व्यक्तित्व पर बुरा प्रभाव पड़ता है. अधिकतर लोग अपनी बातों में बच्चों का बोलना सहन नहीं कर पाते. लेकिन जब बच्चे बात करते हैं तो हम यह भूल जाते हैं.

इसी तरह का एक और उदाहरण याद आ रहा है. यह तो आप जानते हैं कि आजकल सुबह उठ कर बच्चों से 'गुड-मार्निंग' और रात को 'गुडनाइट' कहलवाने का फैशन चल रहा है 'थैंक्यू' और 'सारी' का भी जोर है. यदि मम्मी बच्चे को नाश्ता भी देती है तो कुछ घरों में सिखाया जाता है कि बच्चा 'थैंक्यू' कहे. यदि बच्चे ने नहाने में देर कर दी है और मां डांट रही है तो बच्चा 'सारी' कहे. ये सारी बातें सभ्यता का प्रतीक मानी जाती हैं. चाहे मातापिता इन शब्दों का प्रयोग न करें, लेकिन बच्चे द्वारा करना आवश्यक माना जाता है.

ऐसे ही हमारे साथ एक किराएदार हैं. वह रोज सुबह उठ कर अपनी तीन वर्षीय पुत्री से कहते हैं, "बिट्टो, तुम ने आज हम से 'गुडमार्निंग' नहीं की?"

कभीकभी उन की बिट्टो कह देती है, "आज नहीं, कल करूंगी." और बिट्टो के पिताजी हंस कर कहने लगते हैं, "कोई बात नहीं, बिट्टो. आज मूड नहीं है, कल कर लेना."

ऐसी दशा में मातापिता को चाहिए कि 'तुम ने आज हम से गुडमार्निंग नहीं की' कहने की जगह स्वयं उस से गुड-मार्निंग करें. जिस से बच्चे में यह भावना जागृत हो कि बड़े लोग उस के बारे में सोचते हैं और उस के अंदर सही प्रकार से एक अच्छी आदत का विकास हो.

कभीकभी बच्चों में अभद्रता के लिए मातापिता प्रत्यक्ष रूप से ही उत्तर-

अभद्र बच्चे बड़ेबूढ़ों को भी छेड़ने से नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक मित्र सुधीर के यहां काफी पी रही था. तभी उन की चार वर्षीया पुत्री पूनम आई और मेज से 'ऐश ट्रे' उठा कर मेरे प्याले में उलटती हुई बोली, "आप की काफी में चीनी डाल रही हूं." और हंस कर फुदकती हुई कोने में जा कर खड़ी हो गई.

मुझे तो गुस्सा आ गया. लेकिन तुरंत ही मेरा गुस्सा आश्चर्य में बदल गया, जब पूनम की मां जोर से ठहाका लगा कर कहने लगी. "यह लड़की कितनी तेज है. कहने को चार साल की है, पर इस की कल्पना देखो." और उसे कोने से पकड़ गोदी में भर कर पुचकारने लगीं.

अच्छा व्यवहार

यद्यपि ऐसे उदाहरण कम ही मिलते हैं, लेकिन कुछ मातापिता अपने बच्चों को अभद्र व्यवहार करने से रोकने के बजाए इस प्रकार प्रोत्साहन देते हैं नतीजा यह होता है कि बच्चे में दूसरे के अधिकारों का आदर करने की भावना पनप नहीं पाती. बच्चे को ऐसे अप्रिय कार्य करने से रोकना बहुत आवश्यक है, अन्यथा दूसरों के मन में उस के प्रति प्यार की भावना कम होती जाती है. मातापिता को बच्चे को इस बात का ज्ञान कराना अत्यंत आवश्यक है कि अच्छे मानवीय संबंधों का आधार अच्छा व्यवहार ही है.

इस का अर्थ यह कदापि नहीं कि बच्चों को छोटीछोटी बातों पर भी टोका जाए. अपने विकास के दौरान अपरिपक्वता के कारण बच्चे में थोड़ीबहुत अभद्रता स्वाभाविक है. उदाहरण के लिए घर में कोई अतिथि आ जाते हैं तो भद्र और सभ्य बच्चे भी अपना अस्तित्व और उपस्थिति जताने के लिए शैतानी करने लगते हैं. ऐसी दशा में बच्चे को रोकना तो चाहिए, लेकिन उसे यह महसूस नहीं होने देना चाहिए कि वह एक असभ्य बालक है.

बच्चे के अभद्र व्यवहार के समय उस की उमर, विकास तथा सामान्य परिस्थितियों को ध्यान में रख कर सहनशील होना भी आवश्यक है. लगभग एक वर्ष पहले की बात है. मेरे चाचाजी जो शतरंज के अच्छे खिलाड़ी हैं अपने एक मित्र नागरजी के यहां गए और उन के तेरह वर्षीय पुत्र रमेश के साथ शतरंज खेलने लगे. हालांकि रमेश उस समय शतरंज सीख ही रहा था, लेकिन अच्छा खेल लेता था. उस का खेल देख कर मेरे चाचाजी ने कहा कि एक दिन वह शतरंज का अच्छा खिलाड़ी बनेगा. रमेश बहुत खुश हुआ.

अभद्र व्यवहार

चाचाजी ने उसे चैलेंज कर दिया और दूसरे खेल में वह बुरी तरह हार गया. वास्तव में मेरे चाचाजी उसे सिखाना चाहते थे कि शतरंज में बहुत अधिक सावधानी की आवश्यकता है. लेकिन रमेश वहां से मायूस हो कर चला गया और दूसरे कमरे में जा कर बुरी तरह रोने लगा.

यह भी कहा जा सकता है कि खिलाड़ी होने के नाते रमेश को ऐसा व्यवहार नहीं करना चाहिए था. कुछ मातापिता इस दशा में रमेश को डांट भी सकते थे, लेकिन उस की मां ने चाचाजी से कहा, "रमेश अभी सीख रहा है. छोटा है, इसलिए अपनी हार पर रो पड़ा. हालांकि उसे ऐसा नहीं करना चाहिए था लेकिन धीरेधीरे वह अपनी इस गंदी आदत को सुधार रहा है."

यदि रमेश की मां उसे डांटती या मारती तो शायद लाभ के स्थान पर हानि ही होती. हो सकता था रमेश शतरंज खेलना ही बंद कर देता. बच्चे के ऐसे संघर्ष के समय बड़ों को उस के प्रति आस्था, आदर व सत्कार दिखाना चाहिए.

सामाजिक परिस्थितियां दिन ब दिन बदल रही हैं. कुछ वर्ष पूर्व आप के लिए जो बातें अच्छे आचरण का प्रतीक थीं आज शायद उन का अर्थ बिलकुल बदल गया है. ऐसे अनेक अवसर होते हैं जब आप अपने बच्चों से सहमत नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होते. ऐसी दशा में आज कह कर उन के विचारों का निरादर करने का अर्थ होगा आप बदलते मानवीय संबंधों की वास्तविकता एवं सत्यता से मुंह मोड़ रहे हैं.

मेरे विचार से आज के बच्चे में या लड़केलड़कियों में अभद्र व्यवहार का कारण हमारा आज का समाज है, जिस में सामूहिक रूप से उन का कोई अस्तित्व ही नहीं है. जहां एक ओर व्यक्तिगत रूप से मातापिता अपने बच्चों के लिए सब कुछ करते हैं वही मातापिता दूसरे बच्चों के प्रति कैसा व्यवहार करते हैं? यहां मेरा तात्पर्य 'सामाजिक मातापिता स्नेह' (सोशल पेरेंटिंग) से है, जहां मातापिता केवल अपने ही बच्चों से नहीं, बल्कि सारे समाज व देश के बच्चों के प्रति प्रेमभाव रखते हों.

अच्छा आचरण तथा व्यवहार प्रेमपूर्ण सुखमय जीवन की आशा से ही संभव है. यदि हम अपने व्यवहार से बच्चों में यह भावना पैदा करें कि सामाजिक सुख व सुखमय भविष्य उन के ही जीवन में निहित है तो कोई कारण नहीं कि उन का व्यवहार न सुधरे. इस के लिए हमें उन के अस्तित्व को पहचान कर उन की भावनाओं व विचारों का आदर भी करना होगा.

आज के बच्चे कल के नागरिक हैं. किसी भी देश का भविष्य बच्चों के विकास पर निर्भर होता है. हमें सामूहिक रूप से बच्चों के अंदर उन के अस्तित्व के प्रति आस्था जागृत करनी होगी. उन को यह विश्वास दिलाना होगा कि वे समाज की, देश की सब से मूल्यवान धरोहर हैं, तभी सुखमय समाज का स्वप्न साकार हो सकता है. ●

Trade Mark G.E.C. and Osram Permitted User—The General Electric Company of India Limite
OBM-4378A/4 H

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिफलिस

एक संक्रामक यौन रोग

लेख • दलीपकुमार

यौनांग के अतिरिक्त पुरुष के होंठ और चेहरे पर भी फोड़ा हो जाता है.

मेरे बड़े भाई के दोस्त डाक्टर हैं. अपने दोस्त का छोटा भाई होने के नाते वह मुझे बहुत प्यार करते हैं. छुट्टियों में मैं जब घर जाता हूं तो उन के पास अवश्य जाता हूं.

इस बार जब मैं उन के पास गया तो वह खाली ही बैठे थे. हम इधरउधर की बातें करने लगे. अभी कुछ समय भी नहीं बीता था कि एक मरीज आ गया. हमारी बातें बंद हो गईं.

डाक्टर साहब उन से बात करने लगे. "फरमाइए, कैसे आना हुआ?"

"जी, मुझे इलाज करवाना है."

"क्या हुआ आप को?"

"जी, वह. . . वह. . ." मेरी तरफ देख कर हिचकिचाया.

"घबराइए नहीं, वह भी डाक्टर हैं. डाक्टरी पढ़ रहे हैं. इसी साल मेडिकल कालिज में नाम लिखाया है." डाक्टर साहब ने तसल्ली दी.

"जी, बात दरअसल यह है कि मेरे गुप्तांग में एक फोड़ा हो गया है."

"कहां पर है?" डाक्टर ने पूछा.

"जी, बिलकुल सामने वाले हिस्से पर."

"दर्द होता है."

"जी, बिलकुल नहीं और वास्तव में मैं इसी लिए आया हूं, क्योंकि मैं ने कहीं पढ़ा था कि यह बहुत ही भयानक यौन रोग की प्रारंभिक अवस्था है. इस में गुप्तांग में एक दर्दरहित फोड़ा हो जाता है," रोगी ने कहा.

"आप ने ठीक पढ़ा है. इस बीमारी को 'सिफलिस' कहते हैं. आप ने बहुत अच्छा किया जो अभी आ गए. मैं आप के हिम्मत की दाद देता हूं, क्योंकि लोग इन बीमारियों को छिपाने की कोशिश करते हैं. परिणामस्वरूप बीमारी नियंत्रण से बाहर चली जाती है. फिर उस का ठीक होना मुश्किल हो जाता है."

डाक्टर चोपड़ा ने उस की परीक्षा की, फिर बोले, "आप ये दवाएं लीजिए और भोजन में फलों व कच्ची सब्जियों की मात्रा बढ़ा दें."

डाक्टर साहब ने दवाएं लिख कर दे दीं. रोगी फीस दे कर चला गया. मेरे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मन में उत्सुकता सी जाग उठी.

मैं ने डाक्टर साहब से इस बारे में पूछा तो कहने लगे, "तुम्हें भी पढ़ा देंगे, ऐसी भी क्या जल्दी है?"

"नहीं, कुछ तो बताइए," मैं ने जिद की.

वह कुछ बोलने ही लगे थे कि एक मरीज और आ गया. उस से खाली भी नहीं हुए थे कि तीनचार और मरीज आ जाने से भीड़ सी हो गई.

संक्रामक रोग

वह कहने वाले, "यार, तुम इतवार को घर आ जाना, वहीं बात करेंगे."

"जी, बहुत अच्छा," कह कर मैं वापस चला आया. जब मैं इतवार को उन के घर गया तो वह कुछ पढ़ रहे थे. नमस्ते कर के बैठने के बाद मैं ने यों ही पूछ लिया, "क्या पढ़ रहे हैं?"

"सिफलिस. सोचा, अच्छी तरह से पढ़ लूं."

"तो फिर बताइए कुछ."

"यह बीमारी एक बैक्टीरिया ट्रेपोनेमा पेलीडम के कारण होती है. यह एक वेनीरियल रोग है, यानी ऐसा रोग जो यौन संबंधों से फैलता है."

"फैलता है या होता है?" मैं ने टोका.

"फैलता है यानी कि एक औरत को सिफलिस हो तो जो पुरुष उस के साथ संभोग करेगा उसे भी सिफलिस होने का खतरा है. इसी तरह अगर पुरुष को सिफलिस हो तो औरत को खतरा है. लगभग 95 प्रतिशत मामलों में यही कारण होता है. वैसे यह बिना संभोग के भी फैल सकता है, जैसे चुंबन या इसी तरह की अन्य क्रियाओं से. डाक्टर भी इस को फैलाने का कारण बन सकता है."

"डाक्टर? वह किस प्रकार?" मैं हैरान था.

"अगर डाक्टर किसी सिफलिस के मरीज को देखने के बाद बिना अच्छी तरह हाथ साफ किए दूसरे मरीज को देखने लगे तो हो सकता है कि कुछ बैक्टीरिया उस के हाथों पर ही रह गए हों, जो कि मरीज (दूसरे) पर जा सकते हैं," उन्होंने समझाया.

"फिर तो यह बड़ी खतरनाक बीमारी है."

"बिलकुल और उस से भी खतरनाक बात यह है कि इस की प्रारंभिक अवस्था में गुप्तांग पर जो फोड़ा होता है, वह दर्दरहित होता है. आम तौर पर जिस मरीज को इस का या यौन रोग होने का पता हो, वह इसे छिपाने की कोशिश करता है. अगर कोई इस के यौन रोग

सिफलिस से ग्रस्त महिला : स्तन पर फोड़ा.

होने से अनभिज्ञ हो तो वह इस के दर्द न होने के कारण परवा ही नहीं करता. परिणामस्वरूप दोनों परिस्थितियों में रोगी डाक्टर की सलाह नहीं ले पाता."

"इस की प्रारंभिक अवस्था में फोड़ा गुप्तांग में ही होता है या और भी कहीं हो सकता है?" मैं ने पूछा.

"गुप्तांग पर ही होता है. पुरुष में शिश्न पर तथा स्त्री में योनि के छिपे भाग में, जो कि इन बैक्टीरिया के लिए बहुत ही उपयुक्त स्थान है."

"किसी रोगग्रस्त पुरुष या औरत से संभोग के कितनी देर बाद बीमारी प्रकट होती है?"

"दस से पचास दिन बाद. वैसे आम-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तौर पर 5 दिन के बाद. इस समय के दौरान बैक्टीरिया खून या लिफेटिक के रास्ते सारे शरीर में पहुंच जाते हैं. यह फोड़ा कुछ दिन बाद फूट जाता है, फिर अपनेआप ही ठीक भी हो जाता है. कभी-कभी वहां पर तांबे के से रंग का एक दाग सा रह जाता है. इसी समय के दौरान गुप्तांग के आसपास जांघों पर गिल्टियां सी हो जाती हैं, जो कि लिफ नोडस के बड़े हो जाने के कारण होती हैं. यह सभी कुछ दर्दरहित होता है, लेकिन अगर इन में किसी दूसरी तरह के बैक्टीरिया भी प्रविष्ट हो जाएं तो फिर दर्द होने लगता है.

होंठ पर भी फोड़ा

"बहुत ही कम मामलों, में फोड़े होंठों पर, मुंह पर या औरतों के छातियों के चूचक पर भी पाए जाते हैं. फोड़ा फटने से जो मवाद निकलता है वह बहुत ही संक्रामक होता है.

"इस अवस्था में अगर रोग का इलाज करवा लिया जाए तो काबू पाया जा सकता है क्योंकि पेनिसिलीन आदि दवाइयां इस बैक्टीरिया के लिए बहुत घातक होती हैं."

"और अगर इलाज न करवाया जाए तो?" मैं ने जिज्ञासा प्रकट की.

"तो जैसे कि मैं कह चुका हूं कि फोड़ा अपनेआप ठीक होने लगता है. मरीज समझता है कि चलो ठीक हो गया, लेकिन वास्तव में यह अंदर ही फैल रहा होता है. करीब दो या तीन महीने बाद इस के लक्षण फिर से प्रकट होते हैं. इस बार सारे शरीर पर उभार से हो जाते हैं. रंग तांबे जैसा हो जाता है. इन उभारों में पानी भी हो सकता है, मवाद भी हो सकती है और वैसे ही गिल्टियां भी हो सकती हैं. यह सभी बहुत संक्रामक होते हैं. ज्यादातर हाथपैरों पर होते हैं. लेकिन मुंह, होंठों इत्यादि पर भी हो सकते हैं. सारे शरीर की लिफ नोडस बड़ी हो जाती हैं—विशेषतया गरदन के पीछे वाले हिस्से की. इस में मस्तिष्क भी ग्रस्त होता है, लेकिन लक्षण प्रकट नहीं होते."

"फिर समय के साथ यह ठीक लगता है. अगर इलाज न करवाया तब भी?" मैं ने पूछा.

"हां तब भी. फिर एक से कई बाद फिर यह पूरे जोर से उभरता इस बार यह अंदरूनी अंगों यानी जिगर, तिल्ली आदि पर हमला है. वास्तव में शरीर में कोई भी ऐसा नहीं जिसे यह इस अवस्था में प्रभ न कर सकता हो. इस में मुंह की बनाने वाली हड्डी में छेद हो जाते तथा भोजन मुंह से नाक में आ जाता नाक का वह भाग जो माथे से मि है नीचे बैठ जाता है. स्वरयंत्र में आ जाने के कारण आवाज भारी जाती है. जिगर भी अपना काम ठी नहीं कर पाता.

वीर्य में बैक्टीरिया

"जिगर ही क्या सभी अंग नि हो जाते हैं. टेस्टिज की लपेट में आ के कारण वीर्य में भी बैक्टीरिया जाते हैं. शरीर की सब से बड़ी महाधमनी का आंतरिक व्यास कम जाता है यानी कि वह तंग हो जाती वाल्व भी ठीक से काम नहीं कर महाधमनी की दीवारों में झुर्रियां जाती हैं."

"फिर उस के बाद?"

"कई बार रोगी कुछ समय के ठीक हो जाता है. कई बार यह उसी तरह ही अगली अवस्था कि चौथी अवस्था में आ जाता है. अवस्था दो से 15 साल बाद तक है. यह उन रोगियों में होती है जो इलाज नहीं करवाते या जिन में बार ठीक होने के बाद इन्फेक्शन हो जाए. इस में केंद्रीय तंत्रिका (सेंट्रल नर्वस सिस्टम) के लक्षण होते हैं.

"इस में आंख की ऊपरी पलक वश्यक रूप से नीचे आ जाती है एक वस्तु की दो दिखने लगती हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

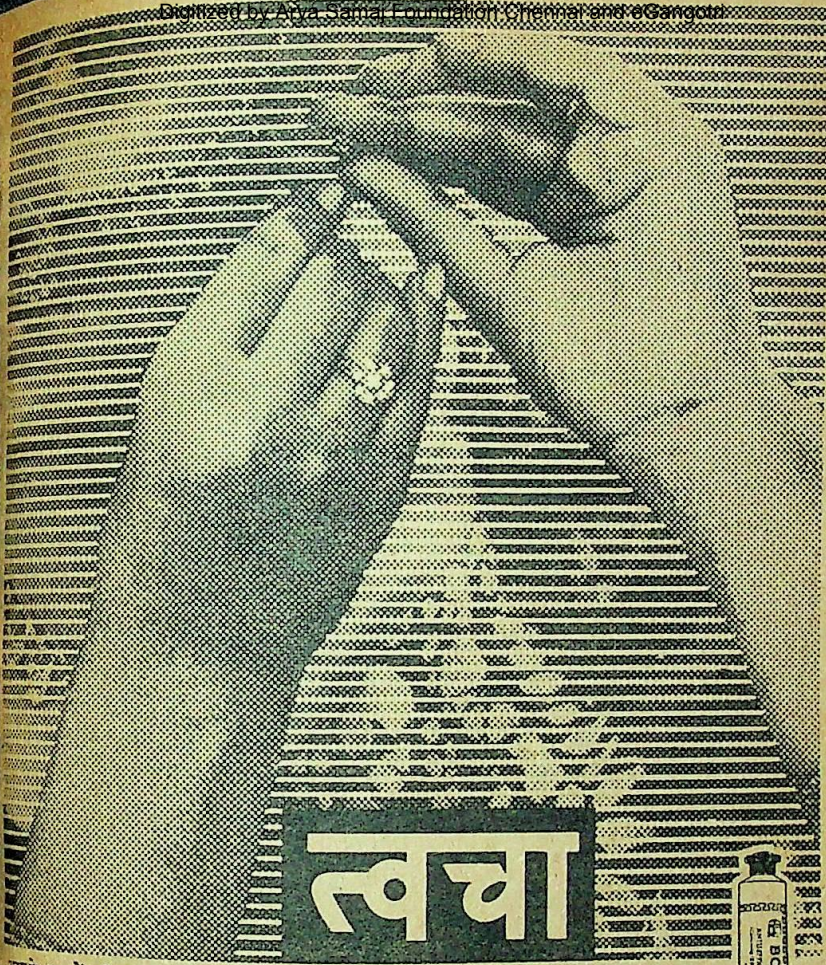

त्वचा

आपके हाथों की त्वचा हाथ-मुँह धोते समय, काम करते समय या खेलते समय निरन्तर रगड़ खाती रहती है। और इस लगातार घर्षण से त्वचा में यदि कोई विकार आ जाय, तो आश्चर्य की बात नहीं! बहुतों के हाथों की त्वचा खुरदरी, शुष्क और फटी-फटी हो जाती है।

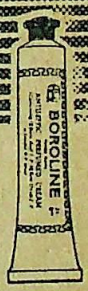

बोरोलीन

एण्टीसेप्टिक सुगन्धित क्रीम

इसके सुखद व शान्तिप्रद उपादान आपके हाथों की उचित देखभाल करते हैं। त्वचा पर हल्की-सी मालिश से यह जीवाणुनाशक मृदु सुगन्धित क्रीम फौरन तरल रूप लेकर रोमकूपों में गहराई तक प्रवेश कर जाती है और त्वचा की शुष्कता एवं छोटे-मोटे सभी प्रकार के संक्रमण को रोकती है। बोरोलीन के रहते आप परेशान न होइये। आपके हाथों की त्वचा सम्बन्धी सारी परेशानियों को दूर करेगी—बोरोलीन।

जी. डी. फार्मास्युटिकल्स प्रा. लि. बोरोलीन हाउस ● कलकत्ता-७००००३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की आंखों में भंगपन का आभास होता है. मस्तिष्क की धमनियों में खून जम जाता है. हाथपैरों में दर्द होने लगता है. दर्द की लहर दौड़ती सी महसूस होती है. इस अवस्था में दर्द की अनुभूति इतनी तीव्र होती है कि लंबर पंक्चर (केंद्रीय तंत्रिका संस्थान में पाया जाने वाला द्रव निकालने के लिए रीढ़ की हड्डी के निचले भाग में छेद किया जाता है) का दर्द भी अनुभव नहीं होता.

"उस की स्थान की अनुभूति समाप्त हो जाती है, यानी अगर उसे आंखें बंद कर के पैर का अंगूठा पकड़ने को कहा जाए तो वह नहीं पकड़ सकेगा. समय की अनुभूति भी नहीं रहती. चाल में शराबी की तरह लड़खड़ाहट होती है. चलते समय पैरों में बहुत अंतर होता है. अपना पैर बहुत ऊपर उठा कर एकदम धरती पर दे मारता है. अगर उस की आंखों में टार्च द्वारा रोशनी की जाए तो पुतलियां संकुचित नहीं होंगी. शरीर के किसी बड़े जोड़ में गति बंद हो जाती है. लेकिन दर्द नहीं होता. पैरों में भी दर्द-रहित फोड़े हो जाते हैं.

कमजोरी ही कमजोरी

"फिर शरीर में बहुत अधिक कमजोरी आ जाती है. यहां तक कि उठनेबैठने में भी मुश्किल होती है. आत्मनियंत्रण, सहीगलत का निर्णय समाप्त हो जाता है. इस अवस्था के बावजूद रोगी अपनेआप को बहुत खुश महसूस करता है. फिर शारीरिक शक्ति समाप्त हो जाती है. बोलने में भी लड़खड़ाहट आ जाती है. रोगी बेहोश हो जाता है. फिर कोई अंग मारा जाता है.

"वैसे यह अवस्था आजकल बहुत कम रोगियों में होती है, क्योंकि उस पर पहले ही काबू पा लिया जाता है."

"डाक्टर साहब, इस का इलाज?"

"पहली दो अवस्थाओं में रोगी को निश्चित रूप से ठीक किया जा सकता है. बाद में सिर्फ कोशिश की जा सकती है."

"और रोकथाम?"

"रोकथाम के लिए यह जरूरी है कि रोगी के जिन के साथ यौन संबंध हो उन को चैक किया जाए. यह रोग तथा-कथित उच्च परिवारों में, होस्टलों में रहने वाले विद्यार्थियों में या यात्रादि से लौटे विद्यार्थियों में अकसर पाया जाता है. और हां, यह रोग जन्मजात भी हो सकता है."

"वह किस प्रकार?"

गर्भावस्था में सिफलिस

"अगर गर्भावस्था में मां में सिफलिस के कीटाणु मौजूद हैं तो यह बच्चे में भी पहुंच जाते हैं. इस प्रकार के बच्चे का कद छोटा होता है. ये बच्चे या तो मृत हुए पैदा होते हैं या फिर उन के हाथपैर काम नहीं करते. तिल्ली भी बहुत बड़ी होती है.

"सारे शरीर पर सिफलिस के दाने होते हैं. बच्चा बहरा भी हो सकता है, अंधा भी हो सकता है. उस के शरीर का कोई भी अंग भीतरी या बाहरी रोगग्रस्त हो सकता है. यह भी हो सकता है कि बच्चा जन्म के समय ठीक हो, लेकिन बाद में किसी ऐसे रोग का शिकार हो जाए."

"ऐसी भयानक बीमारी के बारे में सरकार को लोगों को सावधान कर देना चाहिए."

"इन बीमारियों के बारे में न जाने कितनी बातें मेडिकल पत्रिकाओं में छपती हैं."

"डाक्टर साहब, उन पत्रिकाओं को जनसाधारण तो पढ़ते ही नहीं. आजकल तो जनसाधारण में प्रचार करने की है. इस के लिए सरकार को कदम उठाना चाहिए."

"फिर भी, आजकल तो अधिकांश मामले शुरू में ही नियंत्रित कर लिए जाते हैं. अगर सभी मरीज शुरू में बिना शिक्षक की सलाह लें तो किसी को बड़ा खतरा उठाना ही पड़े."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

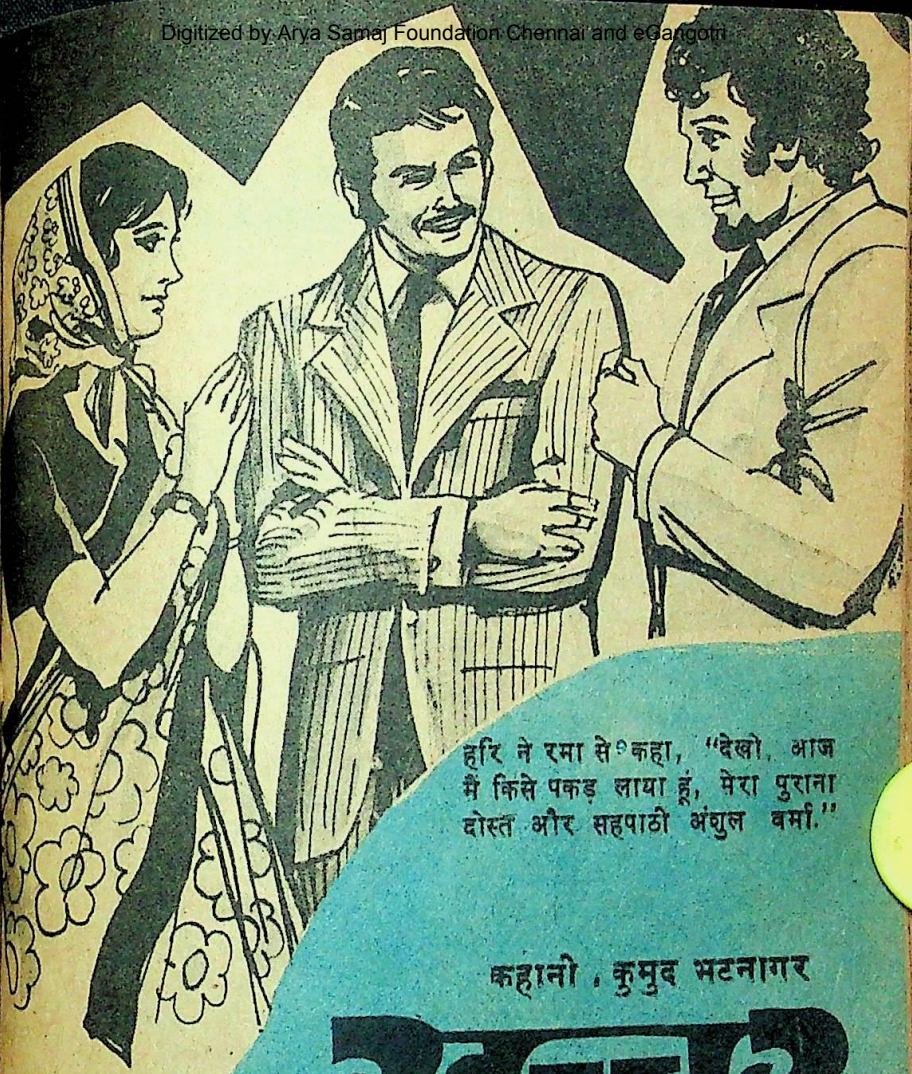

हरि ने रमा से कहा, "देखो, आज मैं किसे पकड़ लाया हूं, मेरा पुराना दोस्त और सहपाठी अंशुल वर्मा."

कहानी . कुमुद भटनागर

खबर

हरि अपने बाल सखा अंशुल से मिल कर बड़ा प्रसन्न हुआ लेकिन इंदु को देखते ही उसे चक्कर आने लगे...

"माफ कीजिएगा, क्या आप लखनऊ के श्री हरिशंकर हैं?"

अखबार पढ़ते व्यक्ति ने सिर उठा कर प्रश्नकर्ता की ओर देखा और पहचानते ही उठ कर आत्मीयता से हाथ मिलाते हुए बोला, "अरे, अंशुल तू? यहां क्या कर रहा है?"

"शायद वही जो तू कर रहा है, मद्रास जाने वाले हवाईजहाज की इंतजार."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो तू भी मद्रास चल रहा है? साथ रहेगा फिर तो. कितने साल के बाद मिल रहे हैं हम दोनों?" हरि ने अंशुल का हाथ पकड़ कर अपने पास बैठाते हुए पूछा.

"पंदरहसोलह साल तो हो ही गए होंगे. तेरी शादी पर ही आखिरी मुलाकात हुई थी. उस के बाद तो लखनऊ जाने का मौका ही नहीं लगा. एक बार दिल्ली में तेरे बड़े भैया मिल गए थे, उन्होंने बताया था कि तू विदेश चला गया है और वापस आना नहीं चाहता."

"हां, इरादा तो यही था. मकान-वकान भी खरीद लिया था. लेकिन, यार, अपना देश अपना ही होता है, विदेश में वह बात नहीं होती. सो दो साल हुए लौट आया. मद्रास में एक फ्रेंच फर्म का टेक्नीकल मैनेजर हूं. तू सुना, क्या कर रहा है?"

"मेरी एक छोटी सी फैक्ट्री है, विद्युत उपकरण बनाने की."

"सच? फिर तो तू उद्योगपति बन गया. कहां खोली है फैक्ट्री?" हरि ने उत्साह से पूछा.

"पूना के पास लोनी में. मुझे भी जरमनी से लौटे अभी चार ही वर्ष हुए हैं. कुछ पैसा वहां से लाया था, कुछ यहां सरकारी मदद मिल गई सो फैक्ट्री खोलने में आसानी हो गई. और सुना, भाभी कैसी हैं? बच्चे तो अब बड़े हो गए होंगे?"

"हां, बड़ी लड़की नौ साल की है, छोटा लड़का सात साल का है. तेरा परिवार कितना बड़ा है?"

"फिलहाल तो एक ही लड़का है, वैसे शादी हुए भी अभी पांच ही वर्ष हुए हैं."

"यानी तू जरमनी से ही शादी कर के आया है?"

"हां, मगर लड़की भारतीय और उत्तर प्रदेश की ही है."

"फिर तो शादी करने में कुछ दिक्कत नहीं पड़ी होगी. न परिवार वालों को ही एतराज होगा."

"दिक्कत तो कुछ मत पूछ. घर वालों के एतराज की बात तो अलग रही, पहले लड़की ही नहीं मानती थी. बहुत तपस्या के बाद जा कर कहीं देवीजी पसीजीं तो घर वाले लगे हल्ला करने. बड़ी मुश्किल से सब को समझाया."

"मगर जब लड़की भारतीय और अपने ही प्रांत की थी तो फिर क्या मुश्किल थी?"

"दूसरों को इस शादी के लिए मनाते-मनाते अपनी तो हालत खराब हो गई. कुछ लड़की के अपने व्यक्तिगत कारण थे, कुछ परिवार वालों के अपने रूढ़िवादी तर्क."

"लेकिन तेरी उस से मुलाकात कैसे हुई?"

"वह भी उसी इंस्टीट्यूट में प्रशिक्षण ले रही थी, जहां मैं काम कर रहा था."

"यह भी खूब रही. मैं ने भी उस लड़की से शादी की जो मेरे साथ इंगलैंड में काम करती थी," हरि ने हंसते हुए बताया, "है वह भी भारतीय ही, मगर पारसी है."

"लेकिन, हरि, तेरी शादी तो लखनऊ में हो गई थी न, कालिज छोड़ने के एकदम बाद?" अंशुल ने चौंक कर पूछा.

"छोड़, यार, वह भी कोई शादी थी? वह तो घर वालों की तरफ से छोड़ा गया एक शिगूफा था," हरि ने लापरवाही से कहा.

इस से पहले कि अंशुल कुछ बोलता, यात्रियों को जहाज में बैठ जाने के लिए कहा गया. दोनों जा कर सुरक्षा तलाशी की लाइन में खड़े हो गए. जहाज में दोनों की सीटें साथसाथ थीं. इधरउधर की बातों के बाद अंशुल ने अचानक पूछा, "फिर उस लड़की का, मेरा मतलब है कि तेरी पहली बीवी का क्या हुआ हरि?"

"वह मेरी बीवी कहां से हो गई यार? मैं ने उसे देखा भर ही था. शादी अपने में कोई रस्म होती है न कि लड़की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लड़की को दूसरे फेरे से पहले अकेले नहीं छोड़ा जाता, सो अपनी तो गौना होने की नौबत ही नहीं आई. उस से पहले ही मेरा इंगलैंड जाने का कार्यक्रम बन गया. उस के बाद तो घर वालों से ही संबंध टूट गए..."

"तो उस बदनसीब का पता कहां से चलता?" अंशुल बात काट कर बोला, "मुझे न जाने क्यों ऐसी लड़कियों से बहुत हमदर्दी है, जिन्हें उन के पति बिलावजह छोड़ देते हैं."

:

"मैं ने बिलावजह नहीं छोड़ा. मेरा उस निपट गंवार, देहातिन से कैसे काम चलता? शादी इनसान को अपने बराबर की ही लड़की से करनी चाहिए. अब तूने जो शादी की है तो जरूर लड़की के गुण देख कर की होगी?"

"हां, रूप और बुद्धि का सामंजस्य देख कर. वह निश्चय ही बहुत अच्छी महिला है. मैं तो सोच भी नहीं पाता कि उस का प्रतिदान कैसे करूं. अगली बार जब बंबई आओ तो लोनी का चक्कर भी लगाओ, मुलाकात हो जाएगी."

"अच्छी बात है, आ जाऊंगा. पूना तक तो आता ही हूं, लोनी वहां से करीब ही है. लेकिन एक शर्त है, अंशुल, मद्रास में तुझे मेरे साथ ही ठहरना पड़ेगा."

"ठहर जाऊंगा, लेकिन भाभी को किसी प्रकार की असुविधा तो नहीं होगी?"

"अरे नहीं, उसे कैसी असुविधा?"

"अचानक किसी मेहमान के आ टपकने से कुछ न कुछ दिक्कत तो हो ही है, रहने को कमरी ठीक करो, खाने-पीने का..."

"नौकर है यह सब करने के लिए," हरि ने बात काट कर कहा.

"फिर ठीक है. मद्रास में घरेलू नौकर मिल जाते हैं?"

"मालूम नहीं. मुझे तो कंपनी की तरफ से रसोइया, ड्राइवर और माली मिले हुए हैं. माली की बीवी और बच्चे घर के दूसरे छोटेमोटे काम कर देते हैं सो घरेलू नौकर रखने की जरूरत ही नहीं पड़ती," हरि ने बताया, "इन विदेशी कंपनियों की नौकरी में ये सुविधाएं बहुत मिल जाती हैं."

"लेकिन अपने व्यापार के समान कुछ भी नहीं. शुरू में जरूर कुछ दिक्कत होती है. पर जब एक बार जम जाएं. तो फिर सब ठीक हो जाता है."

"अपने व्यवसाय की तो बात ही दूसरी है. चाहता तो मैं भी यही था, लेकिन अकेले व्यापार संभालना मुश्किल होता है और भरोसे का साझीदार तलाशना उस से भी मुश्किल."

"साझीदार कभी रखना ही नहीं चाहिए. अगर बहुत ही विस्तृत व्यापार है तो बात दूसरी है," अंशुल बोला. "मुझ से कई लोगों ने साझेदारी करनी चाही, लेकिन मैं ने सरकारी कर्ज लेना उस से बेहतर समझा."

"मगर अकेले सब संभालते कैसे हो?"

"अकेला कहां हूं, भई? मेरी बीवी

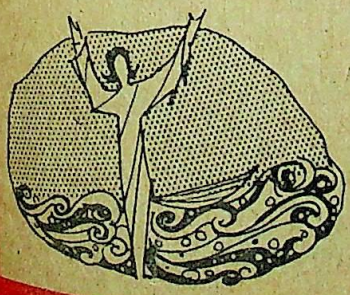

नादान बन गए...

जो लोग जानबूझ कर नादान बन गए,
मेरा खयाल है कि वे इनसान बन गए.
मंझदार तक पहुंचना तो हिम्मत की बात थी,
साहिल के आसपास ही तूफान बन गए.

—अब्दुल हमीद 'अदम'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी तो है. उत्पादन और कारखाने की देखभाल वह कर लेती है, बाहर की दौड़-धूप मैं कर लेता हूं."

मद्रास हवाई अड्डे पर हरि को लेने उस का ड्राइवर आया हुआ था.

"साहब, रास्ते में मेम सा'ब को 'ब्यूटी पारलर' से लेना है," ड्राइवर ने कुछ देर के बाद कहा.

"ठीक है, गाड़ी उधर से निकाल लो," हरि ने लापरवाही से कहा.

"क्यों, क्या किसी पार्टी में जाना है जो भाभी 'ब्यूटी पारलर' गई हैं?" अंशुल ने पूछा.

"नहीं, यार, वहां तो वह हर रोज ही जाती है, किसी रोज बुढ़ापा रोकने का इलाज, किसी रोज मुटापा घटाने का, वही औरतों वाले चोंचले और कुछ नहीं."

"अपने को इन चोंचलों का कोई तजरुबा नहीं है क्योंकि काम करने की वजह से अपनी बीवी एकदम छरहरी और चुस्तदुरुस्त रहती है. दूसरे इतनी फुरसत भी नहीं रहती कि बेकार के चोंचलों में फंसे" अंशुल ने कहा.

ड्राइवर बाजार में गाड़ी रोक कर कहीं चला गया और कुछ देर के बाद आ कर बोला, "मेम साहब तो दास मेम साहब की गाड़ी में चली गईं, साहब."

"रमा, देखो, आज मैं किसे पकड़ लाया हूं," हरि बरामदे में खड़ी स्थूलता की ओर अग्रसर होती हुई युवती को संबोधित कर के बोला. "मेरा पुराना दोस्त और सहपाठी अंशुल वर्मा."

"माफ करें, बिन बुलाया मेहमान आप को तीनचार रोज तक कष्ट देगा," अंशुल ने अभिवादन करते हुए कहा.

"कष्ट कैसा? आप का स्वागत है," रमा मुसकरा दी और नौकर को पुकार कर बोली, "रत्नम, साहब का सामान मेहमानों वाले कमरे में लगा दो और रामचंद्रन से खाना तैयार करने को भी कह देना."

"हां, यार, अब बता क्याक्या बन रहा है तुम्हारी फैक्ट्री में?" हरि ने कुछ देर के बाद पूछा.

"फिलहाल तो झेनर डायड बना रहे हैं," अंशुल ने बताया.

"झेनर डायड?" रमा जैसे चौंक पड़ी, "ठीक से बन गए?"

"जी, हां, और बाकायदा बिक भी रहे हैं, अभी तक तो कोई शिकायत भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं आई कहीं से," अंशुल बोला. "है तो चीज थोड़ी पेचीदा मगर इस की बाबत इतनी जबरदस्त है कि दिक्कतों के बावजूद हम ने वही बनाने बेहतर समझे."

उस के बाद तीनों झेनर डायड और अन्य उपकरण बनाने में जो दिक्कतें आती हैं, उन के विषय में बातें करने लगे. अंशुल यह देख कर बहुत प्रभावित हुआ कि जितना तकनीकी ज्ञान उसे या हरि को था उतना ही रमा को भी था.

"आप कहीं काम कर रही हैं क्या?"

"जी नहीं, घर और बच्चों की झिक-झिक के साथ नौकरी का झंझट नहीं चलता," रमा ने उत्तर दिया. "दूसरे कुछ जरूरत भी नहीं है, हरि सब कुछ कुशलतापूर्वक चला रहा है."

"लेकिन इस तरह तो आप का सब तकनीकी ज्ञान व्यर्थ हो जाएगा."

उत्तर दिया, [illegible] बजने लगी, रमा उठ कर फोन सुनने चली गई.

रात को खाने की मेज पर कई प्रकार की चीजें देख कर अंशुल ने कहा, "बहुत कुछ बना लिया, भाभीजी."

हरि खिलखिला कर हंस पड़ा, "भाभीजी को स्वयं भी मालूम नहीं होगा कि क्याक्या बना है. अपना रसोइया बहुत होशियार है, वह मौके के मुताबिक खाना तैयार कर देता है."

अगले दोतीन दिनों में अंशुल ने देखा कि रमा का अधिकांश समय या तो फोन पर किसी से बतियाते, पत्रिका अथवा उपन्यास पढ़ते या घर से बाहर व्यतीत होता है. यह भी कोई जरूरी नहीं कि वह बच्चों या हरि के घर लौटने के समय घर पर ही हो. एकाध बार पूछने पर पता चला कि वह कहीं ताश खेलने या फिल्म देखने गई हुई है.

मद्रास से लौटने के दोतीन महीने

अंशुल ने हरि से पूछा, "तेरी शादी तो लखनऊ में हो गई थी न?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाद अंशुल को एक रोज अचानक हरि का फोन मिला कि वह पूना आया हुआ है और उस से मिलने के लिए लोनी आ रहा है. अंशुल ने उसे कारखाने का पता बताते हुए वहीं आ जाने को कहा. हरि कारखाना देख कर बहुत ही ज्यादा प्रभावित था.

"इस सब का श्रेय अपनी भाभी को देना, उसी का विभाग है यह."

"लेकिन भाभी हैं कहां?"

"कुछ ही देर पहले घर चली गई हैं."

"क्यों, तबीयत वगैरा तो ठीक है न?"

"नहीं, तबीयत खराब की परवा कर के तो वह घर जाती भी नहीं. मुन्ने के दूध का समय था और शाम के चाय नाश्ते का भी."

"क्यों, नौकर नहीं है क्या?"

"नहीं, नौकर, आया सब हैं, पर बच्चे का दूध और अपना खानापीना तो खुद ही देखना पड़ता है, नौकर सफाई से काम थोड़े ही करते हैं," अंशुल बोला. "चलो अब हम लोग भी घर चलें."

रास्ते में अंशुल ने उसे बताया कि वे लोग कारखाने का विस्तार करने वाले हैं. क्याक्या नए उपकरण बनाएंगे और कितने प्रतिशत लाभ अधिक होगा, आदि विषयों पर भी बातें हुईं.

"इतना लाभ हो जाएगा?" हरि ने हैरानी से पूछा.

"हां, यह तो पहले साल का मुनाफा बता रहा हूं. अगले साल जब कर्ज और सूद नहीं देना पड़ेगा तो लाभ और भी ज्यादा होगा."

"मान गए, भई, अपनी इतनी आय तो शायद नौकरी खत्म होने तक भी न हो," हरि बोला.

"तभी तो कह रहा हूं कि तू भी एक छोटा सा कारखाना लगा ले. माल बिकवाने का जिम्मा मेरा," अंशुल ने कहा, "बैंक से कर्ज भी दिलवा दूंगा."

"लेकिन व्यवसाय में इन के अलावा भी कई पचड़े होते हैं, मैं अकेला क्याक्या करूंगा?"

"अकेला क्यों, भाभी भी तो हैं."

"रमा को इन सब चीजों में कोई रुचि नहीं है."

"क्या बात करता है? भाभी को तकनीकी ज्ञान तेरे से ज्यादा ही होगा. अगर रुचि न होती तो इतनी पढ़ाई कैसे करतीं, या इंगलैंड कैसे जातीं?"

"इंगलैंड जाने को ही तो पढ़ाई की थी. रमा के सभी भाई पढ़ने विदेश गए थे. जब इस ने भी जाने की इच्छा प्रकट की तो इस के पिता ने कहा कि यदि वह भी किसी तकनीकी विषय में विशेषज्ञता प्राप्त करना चाहे तो ठीक है, वरना पेंटिंग वगैरा के छिटपुट कोर्स करने को वह नहीं भेजेंगे. कुशाग्र बुद्धि तो थी ही सो इलेक्ट्रोनिक्स में एम. एससी. कर ली और व्यावहारिक प्रशिक्षण के लिए इंगलैंड चली गई. लेकिन शादी के बाद वह काम करने को तैयार नहीं है. कहती है कि यदि जीविकोपार्जन करने का झंझट रखना चाहती तो शादी की जहमत क्यों गले डालती."

"नौकरी के लिए तो उन का कहना ठीक है, लेकिन यदि तुम दोनों मिल कर कोई काम करो तो वह अवश्य साथ देंगी."

"पूछ चुका हूं, भई, वह किसी किस्म के चक्कर में नहीं पड़ना चाहती."

"पर इस तरह तो उन के इतने वर्षों के परिश्रम से प्राप्त किए ज्ञान को जंग लग जाएगा."

"यही मैं ने भी समझाया था, लेकिन रमा ठहरी आरामतलब, आलस की मारी."

"यदि बुरा न मानो तो एक बात कहूं, हरि? भाभी आलस की ही नहीं, विलासिता और फैशन की मारी भी हैं."

"ठीक कहता है." हरि आह भर कर बोला, "क्या बताऊं, दोस्त, अपनी किस्मत ही ऐसी है. एक बीवी एकदम अनपढ़देहातिन मिली थी, दूसरी एकदम फैशनपरस्त."

"यदि तुम चाहते तो देहातिन को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पढ़ालिखा कर अपने उपयुक्त बना सकते थे."

"छोड़, अंशुल, खच्चर को कितना भी रगड़ो, घोड़ी नहीं बना सकते और अपनी स्थिति के मुताबिक मुझे तो एकदम रेस की घोड़ी चाहिए."

अंशुल ने एक सुंदर से बंगले के सामने गाड़ी रोक दी. अंदर से स्टीरियो सिस्टम पर किसी तेज विदेशी धुन की मादक संगीत लहरी गूंज रही थी.

"इंदु को काम करते समय तेज पाप संगीत सुनने का बेहद शौक है." अंशुल ने उसे ड्राइंगरूम में बैठाते हुए कहा, "तू यहां बैठ, मैं इंदु को बुला लाऊं."

"जी, बांदी स्वयं उपस्थित है," की आवाज पर चौंक कर दोनों ने दरवाजे की ओर देखा. हरि को लगा कि वह चक्कर खा कर गिर पड़ेगा. दरवाजे में खड़ी आधुनिक, परंतु सुरुचिपूर्ण ढंग से सजीसंवरी पतलीलंबी, आकर्षक युवती और कोई नहीं, उस की पहली बीवी इंद्रावती थी. हरि को लगा कि वह उसे बिलकुल वैसे देख रही थी जैसे रेसकोर्स की घोड़ी किसी ठेले में जुटे खच्चर को देख रही हो. ●

बात ऐसे बनी

मेरी सहेली की शादी थी. वेदी के समय दूल्हा कहने लगा, "जब तक स्कूटर नहीं दोगे, मैं आगे नहीं बढ़ूंगा."

सहेली के घर वालों ने कहा, "इस समय शादी हो जाने दो, फिर हम कोशिश करेंगे." लेकिन दूल्हा माना नहीं.

तभी मेरी सहेली ने बेझिझक हो कर कहा, "जब तक मुझे मुंहदिखाई में हीरों का हार नहीं मिलेगा, मैं शादी नहीं करूंगी."

थोड़ी देर विचारविमर्श करने के बाद शादी होने लगी. सब लोगों की आंखें दुलहन की ओर लगी थीं. सभी लोग उस के साहस और बुद्धि की प्रशंसा करने लगे.

—विजय, कोटद्वार

✦

मेरे एक निकट संबंधी प्रायः मेरे घर शाम के समय पहुंचते और अगले दिन सुबह वापस जाते. उन की आदत थी कि मेरे छः वर्षीय पुत्र से सिगरेट लाने को कहते, "अरे भई, पंकज, जरा एक सिगरेट का पैकेट तो ले आना और देखना पैसे मेरी पैंट की जेब में से ले लेना."

मेरा लड़का शिष्टतावश पैसे हमेशा अपनी मम्मी से लेता और पैकेट ला कर उन के हवाले कर देता.

पिछले महीने की बात है. एक बार उन्होंने सिगरेट का पैकेट लाने की फरमाइश की. इस पर मेरा लड़का उन की पैंट, जो दूसरे कमरे में पड़ी थी, उठा लाया. उन महाशय के हाथ में पैंट थमाते हुए उस ने कहा, "चाचाजी, मम्मी तो किसी काम से पड़ोस वाली आंटी के यहां गई हैं, आप पैसे दे दीजिए."

उन्होंने पचास पैसे निकाले और कहा, "ऐसा करो, तुम दो सिगरेट ले आओ, वही काफी होंगी. पैकेट होता है तो मैं ज्यादा पी जाता हूं," उस दिन के बाद से वह जब भी आते हैं, पंकज को सिगरेट लेने नहीं जाना पड़ता.

—हरिश्चंद्र चौहान, नई दिल्ली ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

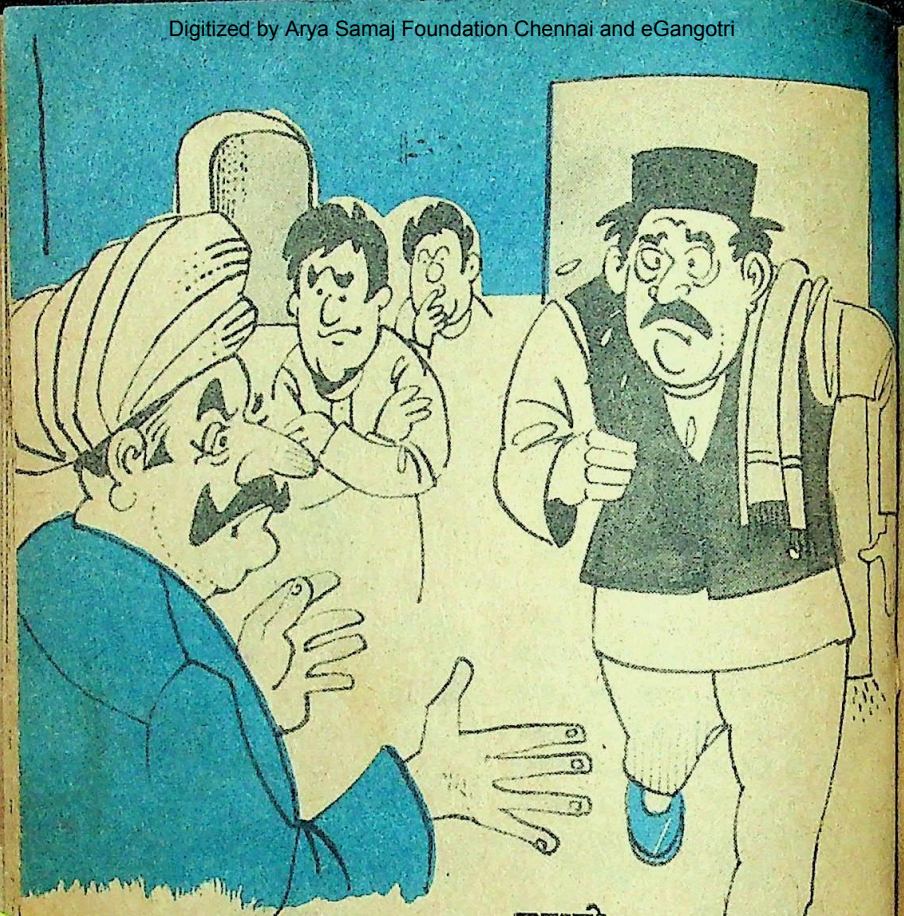

कुंवर साहब का नाई हांफता हुआ लगन ले कर आ पहुंचा. सामान के नाम पर उस के कंधे पर सिर्फ एक अंगोछा था.

कहानी

•

सत्यकुमार

अब ब्याह दो

मौजीपुरा के ठाकुर बलभद्र सिंह के कोई लड़की नहीं थी, तीन लड़के थे. लड़के ख़ास काबिल नहीं थे. सब से बड़ा राजेंद्र तीन साल से कम किसी कक्षा में नहीं टिका. दसवीं तक पहुंचतेपहुंचते तो उस की पढ़ने की उमर ही निकल चुकी थी. उस ने पढ़ना छोड़ दिया.

मझले गजेंद्र को ताश और सुलफे का चस्का लग गया था. सब से छोटा सुरेंद्र अभी बारह साल का था तथा कुछ होनहार लगता था.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लड़के की शादी पर ठाकुर बलभद्रसिंह ने दानदहेज पहले ही पक्का कर लिया था. ऐन मौके पर समधी कुंवर साहब ने ऐसा नाटक रचा कि ठाकुर साहब को मुंह की खानी पड़ी...

रवाई

ठाकुर साहब अच्छे खातेपीते परिवार के थे. उन के पूर्वज जमींदार थे और काफी जमापूंजी छोड़ गए थे. फिर भी ठाकुर के लालच का ठिकाना नहीं था. लड़कों की शादी के लिए आने वालों से वह सीधे मुंह बात ही नहीं करते थे. बात करते थे तो दहेज के नाम पर इतना मुंह फाड़ते थे कि आने वाला अपना सा मुंह ले कर लौट जाता था. लड़के तो दो कोड़ी के भी नहीं थे, फिर कोई क्यों खर्च करे?

धीरेधीरे सारी बिरादरी में उन की बदनामी हो गई. लोगों ने आना कम कर दिया. गांव वाले पीठ पीछे कहने लगे—"राजेंद्र की तो गाड़ी गई."

तभी एक दिन सुना कि नागौर के कुंवर निरंजनपाल सिंह अपनी लड़की का रिश्ता राजेंद्र के साथ पक्का कर गए हैं. ठाकुर साहब चुस्तचौकस थे. कितना रुपया लगन, टीका, दरवाजे आदि पर लिया जाएगा, सब तय कर लिया था.

नागौर किसी जमाने में छोटी रियासत रही थी, इसलिए वहां कभी राज्य करने वालों के वशंज अभी तक कुंवर साहब कहलाते चले आ रहे हैं. वैसे उन की माली हालत मौजीपुरा के ठाकुर से उन्नीस ही बैठती थी. लड़कियां भी चार थीं, अतः गांव वालों को ताज्जुब हो रहा था कि ठाकुर बलभद्र की दहेज की शर्तें कुंवर निरंजन ने कैसे मान लीं?

ठाकुर के यहां जोरशोर से तैयारियां होने लगीं. लगन का दिन आ गया. आ क्या चला भी गया, पर कुंवर साहब के यहां से रस्म का तयशुदा सामान व नकदी ले कर कोई नहीं पहुंचा. गांव वालों को अपने लड्डू खटाई में पड़ते दिखने लगे. ठाकुर साहब के मुंह पर हवाइयां उड़ने लगीं. कहीं शिकार हाथ से निकल तो नहीं गया?

पर नहीं, शिकार निकला नहीं था. दियाबत्ती के लगभग दो घंटे बाद नागौर का नाई हांफता हुआ पहुंचा. वह लगन ले कर आया था, पर सामान के नाम पर उस के कंधे पर केवल एक अंगोछा था. स्नान आदि करा के जब उसे खाना खिलाने बिठाया गया तो उस ने थाली एक ओर सरका दी तथा सुबकसुबक कर रोने लगा.

बहुत पूछने पर काफी देर बाद उस ने बतलाया, "कुंवर साहब की पत्नी की तबीयत बहुत खराब है. घड़ी, दो घड़ी की मेहमान हैं. इलाज को दिल्ली के बड़े अस्पताल में ले गए हैं. पिछले पंदरह दिनों से पानी की तरह पैसा बहा रहे हैं. कोई पचास हजार तो मेरे देखतेदेखते खर्च हो चुके हैं. लगन की तो टाल हो गई थी. पर जब डाक्टरों ने आज उम्मीद दिलाई कि शायद बच जाएं तो कुंवर साहब ने कहा कि शुभ घड़ी में लगन का दस्तूर तो कर आ, लेनदेन तो फिर होता रहेगा."

नाई ने अंटी से एक कलदार रुपया निकाल कर ठाकुर की ओर बढ़ा दिया. ठाकुर बड़े चक्कर में था. नाई के आंसुओं से गांव के सभी बड़ेबूढ़े पिघल गए थे. ठाकुर को हिचकिचाते देख कर एक बुजुर्ग बोले, "बलभद्रा, सोचविचारी क्या करे है. लगन चढ़ाओ और लड्डू बंटवाओ."

शादी की तारीख आ गई. ठाकुर साहब ने पहले ही तय कर लिया था कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बरात में पांच सौ आदमी आएंगे. सुबह से ही पूरे गांव में हांका लग रहा था. दोपहर तक निकलना हो पाया. शाम तक नागौर पहुंचे.

कुंवर साहब ने बड़े ठाट का इंतजाम कर रखा था. गांव से दो मील दूर अपनी पुरानी मढ़ी में बरात को ठहराया था. पचास मील दूर शहर से उन्होंने बरफ मंगाई थी. शरबत इतना ठंडा और मीठा था कि बस पीते ही चले जाओ. कोई सौ आदमी बरातियों की देखभाल, टहल सेवा के लिए तैनात थे.

अंधेरा होते ही गढ़ी की पूरी चारदीवारी दीपकों के प्रकाश से जगमगाने लगी.

धूमधाम से बरात चढ़ी. द्वारचार का समय हो गया. पंडितजी ने पूजन प्रारंभ कर दिया, पर कुंवर साहब का कहीं पता ही नहीं था. बहुत खोजने पर पता चला कि भीतर के कमरे में ईंट हाथ में लिए तिजोरी तोड़ने की कोशिश में पसीनेपसीने हो रहे हैं. चाबी कहीं मिल नहीं रही थी. दरवाजे पर दिया जाने वाला सारा सामान तथा नकदी उसी अलमारी में थी. पर स्टील की अलमारी, ईंट से कहां टूटती?

दोनों ओर के लोगों ने समझाया कि बरात तो अभी तीन दिन रहेगी. दरवाजे का सामान कल भिजवा देना. मुहूर्त निकला जा रहा है, दरवाजे की रस्म करो.

कुंवर साहब इतने उदास और लज्जित थे कि मुंह छिपाने के लिए उन्होंने साफे का छोर मुंह पर डाल लिया था.

पहले फेरे पड़ने थे और फिर दावत होनी थी. बहुत से बराती जनवासे लौट गए. घर के और खास रिश्तेदार रह गए. पूजन प्रारंभ हुआ. कन्यादान का समय आ गया. कुंवर साहब का फिर पता नहीं था. अब की बार तो वह घर के किसी कोने में नहीं मिले. लोग चारों ओर लालटेनें ले कर खोजने निकल गए.

घंटे भर खोजने, पुकारने के बाद गांव की सीमा पर जहां जंगल की ओर का रास्ता आ कर मिलता था, वहां वह बंदूक कंधे पर रखे खड़े मिले.

गुस्से में बलबला रहे थे, "साले की नाक कटा दी. गोली मार दूंगा. नालायक, कमीना कहीं का..." उन की बड़ी बड़ी आंखें लाल सुर्ख हो कर निकल पड़ने को हो रही थीं.

पता चला कि तिजोरी की चाबी उन का शराबी लड़का चितरंजन अपने साथ ले गया है. वह दोपहर से ही शिकार को गया हुआ है.

बहुत खोजने पर कुंवर साहब गांव के बाहर खड़े मिले. वह किसी शर्त पर घर लौटने को तैयार न थे.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुंवर साहब बौखला रहे थे. जंगल की ओर जरा सा खड़का होते ही बदूक दागने की स्थिति में आ जाते. अब की बार वह किसी शर्त पर घर लौटने को तैयार नहीं थे.

उधर बरातियों के पेट में चूहे कूद रहे थे. आखिर जब ठाकुर साहब खुद समधी को मनाने आए तब कुंवर साहब लौटे.

हर्र लगी न फिटकरी, फेरे भी पड़ गए. शादी हो गई.

इस सब चकल्लस में रात का डेढ़ बज गया. दो बजे बरात दावत खाने बैठी. पांच सौ आदमी लगभग एक फर्लांग तक, दो पंक्तियों में, आमनेसामने मुंह किए, भूख से व्याकुल बैठे थे. पत्तल, दोने, सकोरे, कुल्हड़ आदि रखे जा रहे थे. कुंवर साहब स्वयं एकएक चीज का मुआयना कर रहे थे. वह पंगत के बीच में नंगे पैर चल रहे थे. उन के पीछे एक नौकर नागोरी जूते लिए चल रहा था.

वह बड़ी मुस्तैदी से टूटे कुल्हड़, फटी पत्तलें आदि हटवा रहे थे तथा परसने वालों को जल्दी करने की ताकीद कर रहे थे. फिर वह एक तरफ से बरातियों से परिचय करने लगे. डाक्टर, तहसील-

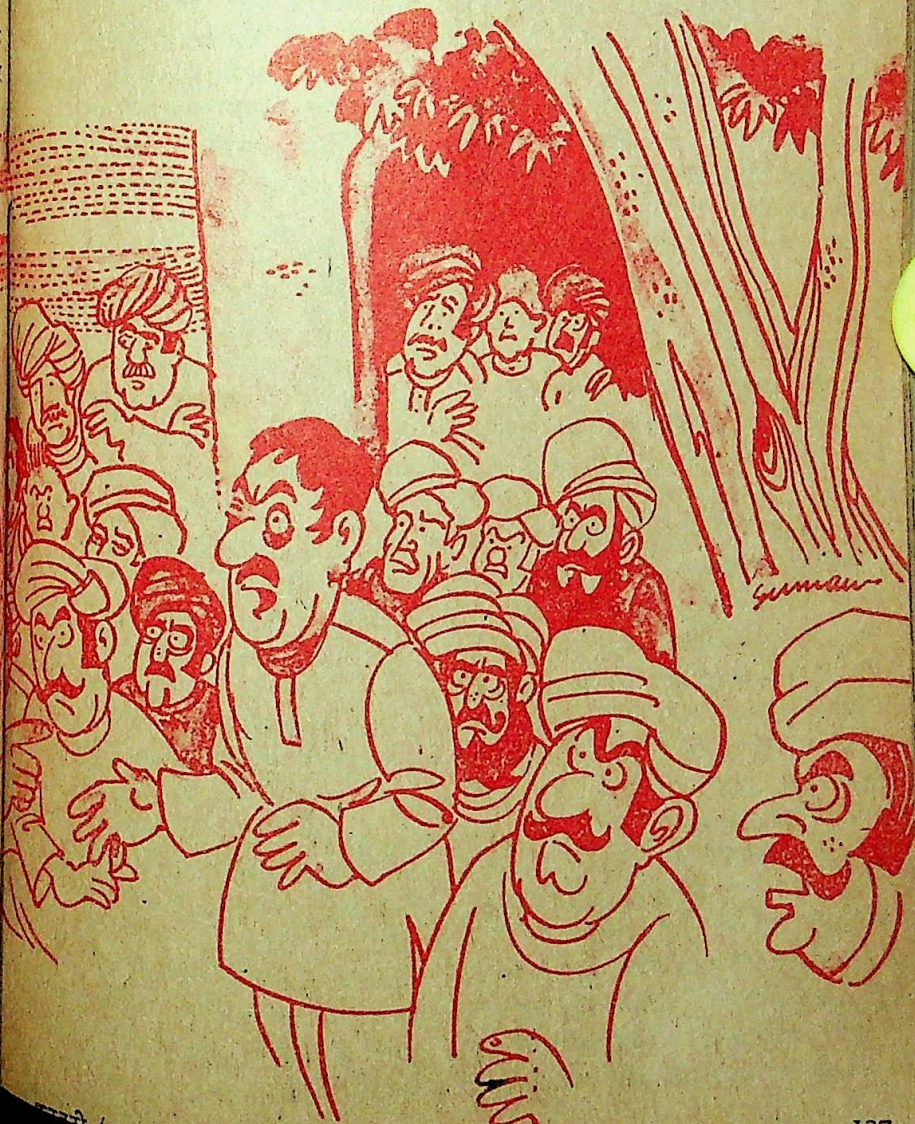

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दार, दरोगा, हाकिम, नंबरदार, पटवारी, मास्टरजी, ओवरसियर इत्यादि. अचानक कुंवर साहब एक बराती के आगे ठिठक गए. फिर रात के सन्नाटे में उन की बुलंद आवाज गूंज गई, "इस को क्यों लाए?"

वह एक काने आदमी के सामने खड़े थे.

यही नहीं. उन्होंने पीछे चल रहे नौकर के हाथ से हाथ पैर की जूती ले कर तड़तड़ दोतीन उस आदमी के सिर पर जमा दीं.

वह बरस रहे थे, "तू क्यों आया? तेरी वजह से यह सब हो रहा है. शादी में सब गड़बड़ तेरी वजह से हो रही है. हमारे खानदान की नाक कटवा दी. उठ, उठ यहां से! चल, भाग जा."

चारों ओर हंगामा मच गया. लोग पत्तलें छोड़छोड़ कर उठ बैठे. भूख नौदो ग्यारह हो गई. अपमान की ज्वाला से बराती जलने लगे. ठाकुर बलभद्र सिंह का बुरा हाल था. उन की भुजाएं रहरह कर फड़क उठती थीं. उधर कुंवर साहब का सारा गांव काने व्यक्ति को कोस रहा था तथा ठाकुर साहब की निंदा कर रहा था कि काने आदमी को बरात में क्यों लाए.

तनाव बढ़ गया. ठाकुर साहब की तरफ से कहलवाया गया कि कुंवर साहब अपनी गुस्ताखी के लिए माफी मांगें नहीं तो हम बरात लौटा ले जाएंगे.

कुंवर साहब ने ताव में जवाब भिजवा दिया, "माफी मांगे मेरी जूती. कल लौटते हों तो अभी लौट जाएं. रंग में भंग करा दिया. हजार आदमियों का खाना खराब करवाया."

कुंवर साहब के खास लोग जानते थे कि खाना तो बरात के लिए बनवाया ही नहीं गया था.

ठाकुर परेशान. बिना बहू के खाली हाथ घर कैसे लौटे? इस से तो बड़ी थूथू होगी. पहले जमाने में तो लड़झगड़ कर वधू को एक प्रकार से जीत कर ले जाया जाता था. आल्हाखंड के किस्से इन बातों से भरे पड़े हैं, पर ठाकुर तो तैयारी से तो आए नहीं थे.

तभी कुंवर साहब की हवेली की तरफ से आकाश को छूती लपटें उठीं. किसी ने खबर दी कि गांव के सारे लोग लाठी, बल्लम लिए इधर ही दौड़े आ रहे हैं. उन का विश्वास है कि किसी बराती गुंडे ने आग लगाई है.

फिर क्या था? आधे से अधिक बराती तो अपना बोरियाबिस्तर उठा कर रेलवे स्टेशन की ओर दौड़ पड़े. शेष भी धीरेधीरे खिसकने लगे. बरात में क्या आए, अच्छीखासी सजा पाई. भूखे अलग रहे और अब दक्षिणा में पिटाई.

ठाकुर साहब की हालत पतली हो गई. घरातियों का हमला तो नहीं हुआ परंतु घबरा कर ठाकुर साहब को विदा के लिए संदेश भिजवाना पड़ा.

खुशामद के बाद कुंवर साहब ने यह कहते हुए विदा करना स्वीकार कर लिया, "तुम्हारी मरजी, करा ले जाओ, विदा. वैसे भी फेरे पड़ गए हों अब तो लड़की तुम्हारी हो ही गई. पर मैं विदा में क्या दूंगा, मेरा तो सब कुछ जल कर बरबाद हो गया. शादी क्या, मेरी तो बरबादी हो गई."

कुंवर साहब के खास लोग जानते थे कि न तो कल चितरंजन शिकार को गया था? हां, किसी कोठरी में लेटा मच्छरों का शिकार अवश्य करता रहा होगा और न ही कुंवर साहब की हवेली में आग लगी थी. बाहर के घेर में फूस इकट्ठा कर के, आग लगा कर नाटक किया गया था.

ठाकुर साहब ने निश्चय कर लिया था कि कुंवर साहब की लड़की तब तक विदा नहीं करेंगे, जब तक कि वह नाक नहीं रगड़ जाएं. पर कुंवर साहब भी एक ही घाघ थे. लड़की को पहले ही समझा दिया था कि परेशान न होना. कुंवर साहब ने बिटिया को बुलाने की खबर ही नहीं भेजी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हाथों और शरीर की देखभाल के लिए अब एक सौंदर्यसाधन

...वेसलीन इन्टेन्सिव केयर लोशन से. अपने हाथों और कोहनियों में केवल कुछ बूंदें कोमलता से मलिए, और हाथों में कोमलता का फ़र्क़ महसूस कीजिए. कितने खूबसूरत हाथ! फटे अंगूठों और फटी एड़ियों के बारे में सावधानी बरतिए. अपनी त्वचा को अंग अंग कोमल और अनुकूल बनाए रखने के लिए ये लोशन इस्तेमाल कीजिए. अतिरिक्त गुणकारी, चिपचिपाहट रहित फ़ार्मूला— वेसलीन इन्टेन्सिव केयर लोशन.

दो साइज़ों में मिलता है— १०० मि.ली. और १८० मि.ली.

वैसलीन® इन्टेन्सिव केयर® लोशन

अंग अंग की पूरी पूरी देखभाल

चीज़ब्रो पाण्ड्स इन्क. (सीमित दायित्व के साथ यूएसए में स्थापित)

लिंटास - VICL. 2-77 HI

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब शादी को छः महीने हो गए तो ठाकुर साहब ने खुद ही खबर भिजवाई. कुंवर साहब स्वयं ही लड़की को लिवाने पहुंचे.

उन की कार फलों व मिठाइयों से बुरी तरह लद रही थी. डिग्गी कपड़े के थानों से अटी पड़ी थी. ठाकुर साहब के दर्शन होते ही उन्होंने पांच हजार रुपए के नोटों की गड्डी उन की ओर बढ़ाते हुए कहा, "शादी का मेरा इतना ही बजट था, जो संकल्प किया था वह हाजिर है. पर आगे से आप किसी से दहेज तय नहीं कीजिएगा."

ठाकुर कान पकड़ते हुए बोले, "भूल खाई सो खाई, आगे खाऊं तो राम दुहाई."

बच्चों के मुख से

मेरा छोटा भाई चमन बहुत ही चंचल एवं शरारती है. किसी भी वस्तु को लेने के लिए जिद्द करने लगता है. एक दिन मम्मी ने उसे बहुत प्यार से समझाया, "बेटे, किसी के सामने कोई चीज नहीं मांगनी चाहिए." यह बात उस ने अपने मन में बिठा ली.

संयोगवश उसी दिन शाम को पिताजी के कुछ मित्र घर पर आए. चमन अपनी आदत के अनुसार मेहमानों से भी कुछ शरारत कर बैठा. अतः मम्मी ने उस से कहा, "बेटा, इन से इसी समय माफी मांगो."

कुछ सोच कर वह बोला, "मम्मी, आप ने ही तो कहा था कि मेहमानों के सामने कुछ मांगना नहीं चाहिए. यह चले जाएंगे, तब मैं माफी मांग लूंगा."

इस पर आगंतुक मेहमान और हम सब अपनी हंसी न रोक सके.

—नत्थूसिंह सोलंकी, पानी

हम लोग अपनी बेबी निर्मल के साथ खेल रहे थे. मैं ने यूं ही बेबी से पूछा, "तुम मम्मी के साथ रहोगी या पापा के साथ?"

बेबी बोली, "हम तो मम्मीपापा दोनों के साथ रहेंगे."

मैं ने कहा, "मम्मीपापा की लड़ाई हो जाएगी, तब किस के साथ रहोगी?"

थोड़ा सा मुंह बिचकाते हुए वह बोली, "तब मैं ससुराल चली जाऊंगी."

—कुंतीदेवी, कानपुर

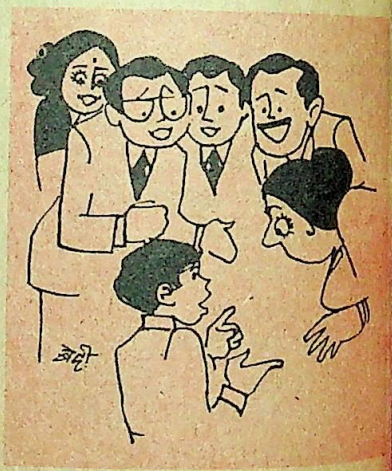

हमारे पड़ोसी की छोटी बेबी बड़ी दिलचस्प बातें करती है. एक दिन वह कहने लगी, "डैडी, क्या आप आले में रूमाल बिछा कर सो सकते हैं?"

डैडी बोले, "नहीं बेटे, आले में रूमाल बिछा कर कैसे सोया जा सकता है?"

तब बेबी ने कहा, "इस में कौन सी बड़ी बात है? रूमाल आले में बिछाइए, सोइए कहीं और."

उस की बात पर हंसे बिना नहीं रहा जा सका. —संजय अग्रवाल, बिलासपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

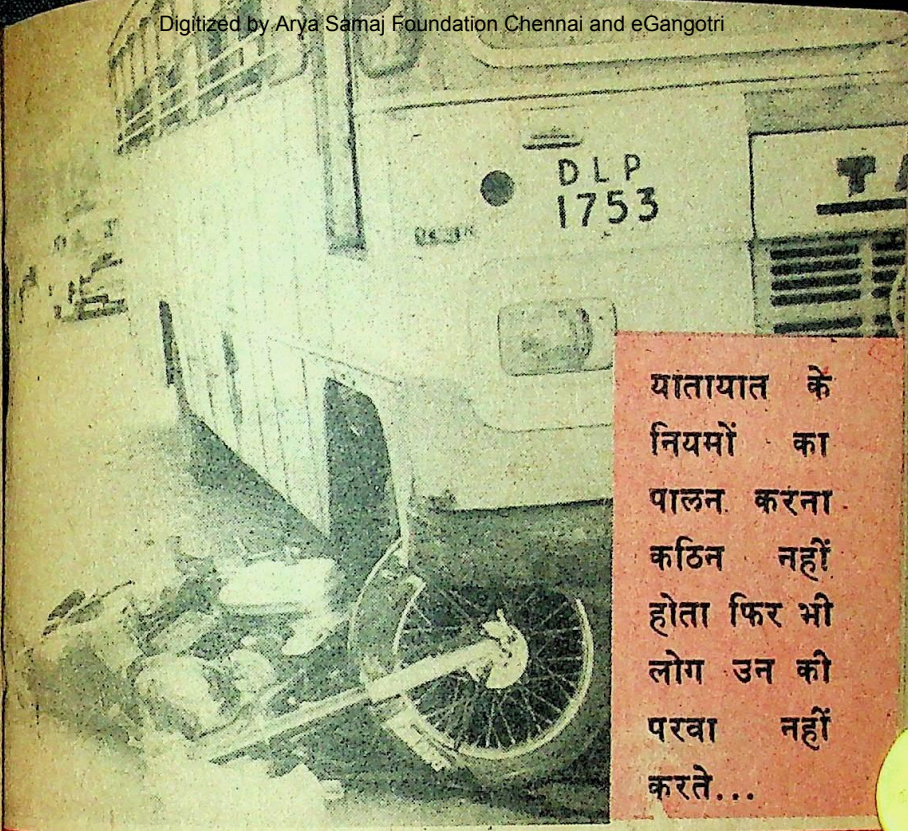

यातायात के नियमों का पालन करना कठिन नहीं होता फिर भी लोग उन की परवा नहीं करते...

लेख · आज्ञाराम प्रेम

सड़क दुर्घटना

बस तेजी से पहाड़ी संकरे मार्गों को पार करती हुई बढ़ती जा रही थी. हर मोड़ पर 'कभी नहीं पहुंचने से तो अच्छा है देर से पहुंचें,' 'बचाव से ही बचाव है.' 'रात को डिपर प्रयोग करें,' 'धीरे चलो, इतनी भी क्या जल्दी है?' मोटेमोटे अक्षरों में दीवारों पर लिखे नारे पीछे छूटते जा रहे थे और नएनए सामने दीख रहे थे. मैं उन्हें बड़े ध्यान से पढ़ता हुआ मन ही मन दोहरा रहा था कि तभी घरंघरं की आवाज आई और देखते ही देखते हमारी बस एक पहाड़ी से जा भिड़ी, जिस पर लिखा था 'जय माता दी.'

भयानक क्रंदन, चीखपुकार की आवाजें आने लगीं. ड्राइवर बुरी तरह सीट में फंस गया था. देखते ही देखते लोग बाहर निकलने लगे. कुछ और बसें भी आ गईं. सवारियों को निकाला गया. निकट के अस्पताल पहुंचाया गया. 45 व्यक्ति बस में सवार थे. इस दुर्घटना में 10 दम तोड़ गए. शेष 15 घायलों की हालत अत्यंत गंभीर थी.

मैं इस दुर्घटना में बालबाल बच

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

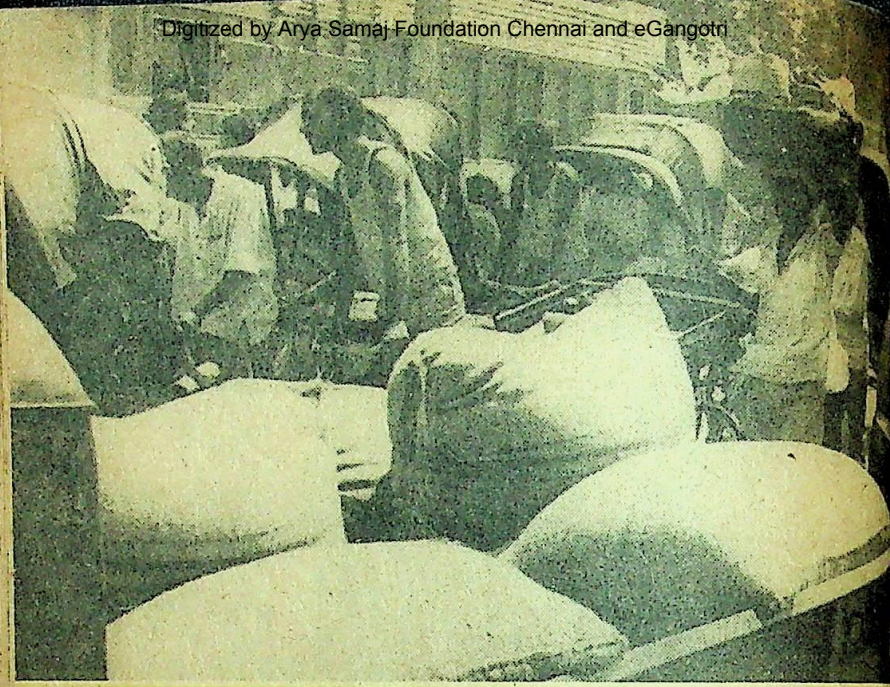

तंग संकरी सड़क पर अनगिनत वाहन : कोई किसी की नहीं सुन रहा.

गया. मुझे मामूली चोट भी नहीं आई. लेकिन उस हृदय विदारक दृश्य का आतंक अभी भी मेरे मनमस्तिष्क पर छाया हुआ था कि तीसरे ही दिन मैं ने यह खबर पढ़ी कि नवांशहर (जालंधर) के विसाला रेल फाटक पर ट्रैक्टर ट्राली और रेल में भयंकर दुर्घटना से सात लोग दम तोड़ गए. इन में से पांच की घटना-स्थल पर ही मृत्यु हो गई जब कि दो अस्पताल में दम तोड़ गए. मृतकों में चार

बस की ट्रक से टक्कर : किसे उत्तरदायी ठहराया जाए?

पुरुष और तीन महिलाएं थीं. इस गांव 15 व्यक्ति ट्रैक्टर ट्राली पर सवार कर भाटड़ा खुर्द गांव से निकटवर्ती ग्राम में हुई किसी संबंधी की मौत शोक व्यक्त करने जा रहे थे. जब लग साढ़े सात बजे प्रातः ट्रैक्टर उपरोक्त फाटक पार करने लगा तो मालगाड़ी धक्का मारा जिस से ट्रैक्टर एक फर्लांग दूर जा कर गिरा और उस के टुकड़े हो गए.

23 अगस्त की शाम मैं दफ्तर से आ रहा था. मेरी गली में कुछ लोग एकत्रित थे. पूछने पर पता चला, मेरा पड़ोसी बस दुर्घटना में गंभीर रूप से घायल गया है और उसे अस्पताल पहुंचाया है. पता चला कि गोराया के निकट रोडवेज की दो बसों में भयंकर टक्कर परिणामस्वरूप छः लोग मर गए हैं 20 घायल हो गए हैं. ड्राइवर के अनुसार बस का एक टायर फटा हुआ था साइड काटने के प्रयास में दोनों में टक्कर हो गई.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ये दुर्घटनाएं कोई एक दिन की बात नहीं, हर रोज ऐसी दुर्घटनाएं होती हैं और हजारों असमय ही मौत का ग्रास बन जाते हैं.

अकेले पंजाब में साल में एक हजार के लगभग ऐसी दुर्घटनाएं होती हैं जो भयंकर कही जा सकती हैं. उन में से अनुमानतः 500 दुर्घटनाएं ऐसी होती हैं जिन में मौतें होती हैं और एक सर्वेक्षण के अनुसार 500 से 750 लोग मौत का ग्रास बन जाते हैं. पंजाब तो क्षेत्रफल की दृष्टि से सब से छोटा और समतल मैदानी प्रांत है. भारत के अन्य राज्यों में दुर्घटनाओं में मरने वालों की संख्या इस से भी अधिक है.

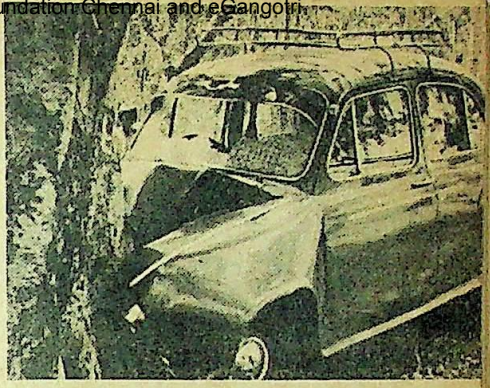

जरा सी असावधानी बरती नहीं कि बस, कार पेड़ से जा टकराई.

सड़क दुर्घटनाओं में मृत्यु दर बराबर बढ़ती जा रही है. देहाती और शहरी क्षेत्रों के तेजी से विकास और औद्योगीकरण के परिणामस्वरूप सड़क यातायात की दर में बराबर वृद्धि होती जा रही है. माल तथा यात्रियों के यातायात के लिए परिवहन सुविधाओं की मांग में भारी वृद्धि हो गई है.

दुर्घटनाएं प्रायः निम्न कारणों से होती हैं :

- गाड़ियां खराब होने से.
- पैदल चलने वाले लोग, छकड़े, साइकिल, बाजारों और सड़कों पर चलने वाले पशु, धीमी गति से चलने वाले वाहन

सड़क पर चलने का सामान्य ज्ञान हो तो फिर दुर्घटनाएं कैसे हो सकती हैं?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी दुर्घटना के कारण बनते हैं.

- सड़क के बीच जहांतहां पड़ी रुकावटें.
- सड़क पर यातायात के संकेतों का अभाव.
- रात के समय मरम्मतस्थलों में उचित प्रकाश की व्यवस्था न होना.
- रात के समय पुलिस गश्त का अभाव.
- धीमी गति से चलते वाहनों में उचित प्रकाश का अभाव.
- वाहनों की गति को चैक करने के लिए सड़कों पर चैक पोस्टों या कंप्यूटरों का अभाव.
- रात के समय लंबी दूरी की गाड़ियां तेज चलाना.
- शराब पी कर गाड़ी चलाना.
- यातायात में तीव्रता, हर व्यक्ति में आगे निकल जाने की होड़ और सड़क पर चलने के सामान्य ज्ञान का अभाव.

घर से निकल कर जरा बाजार में पहुंचा था. एक रिक्शा वाला एक पैदल यात्री से टकरा गया. पैदल यात्री कहने लगा, "क्या दिखाई नहीं देता?"

हर रोज बाजारों, गलियों, सड़कों पर ये शब्द सुनने को मिल जाते हैं, "क्या तुम होश में हो, कल रात सोए नहीं, घर से लड़ कर आए हो, क्या अंधे हो, क्या शराब पी रखी है, क्या बीमा करवा रखा है, घर वालों से झगड़ा हो गया है?"

दुर्घटनाएं शराब के कारण

एक सर्वेक्षण के अनुसार अधिकांश [illegible]एं शराब पीने से ही होती हैं. [illegible] के एक डाक्टर के सर्वेक्षण के अनुसार एक शहर में साल में 100 दुर्घटनाएं हुईं जिन में से 40 दुर्घटनाओं में से 200 लोग मर गए. सौ में से 50 दुर्घटनाएं प्राणघातक थीं. इन में से 30 दुर्घटनाएं शराब के कारण थीं. उक्त डाक्टर ने बताया कि मैं अमृतसर से जालंधर की ओर अपने काम से जा रहा था. रैया में एक कार में कुछ सवारियां बैठी थीं. उन्होंने शराब पी रखी थी. वे कार को ले कर हमारे आगे से बड़ी [illegible] गति से निकल गए, लेकिन जब थोड़ी [illegible] दूर हम आए तो देखा कि कार एक [illegible] से टकरा कर चकनाचूर हो गई है [illegible] चार लोग मरे पड़े हैं.

वाहन चलाते समय मदिरापान

ड्राइवर शराब पीते हैं. इन में [illegible] से कम शराब घरों की कारें चलाने [illegible] प्राइवेट ड्राइवर पीते हैं. टैक्सी ड्राइ[illegible] और ट्रक ड्राइवर तो शराब में धुत [illegible] कर गाड़ियां चलाते हैं. जब एक मामू[illegible] चाय पीने वाला व्यक्ति भी लंबी यात्रा [illegible] वाहन चलाते वक्त सो जाता है तो [illegible] शराब पी कर रात को ट्रक या [illegible] चलाता है वह दुर्घटना नहीं करेगा [illegible] क्या करेगा?

शराब चाहे पैदल यात्री ने पी [illegible] हो या किसी ड्राइवर ने, वह दुर्घटना [illegible] कारण बन सकती है, क्योंकि उस [illegible] सोचने की शक्ति समाप्त हो जाती है. [illegible] लड़खड़ा कर चलने लगता है. उस [illegible] हावभाव में तालमेल नहीं रहता. उस [illegible] स्मरणशक्ति समाप्त हो जाती है. न केवल [illegible] वह शारीरिक तौर पर निष्क्रिय हो जा[illegible] है, अपितु भीड़ में से गुजर सकने [illegible] अयोग्य हो जाता है. मानसिक तौर [illegible] भी वह असंतुलित हो जाता है और [illegible] के बीचोंबीच चलने लगता है.

आप बाजार में स्कूटर या साइकि[illegible] पर बैठ कर जा रहे हैं. सामने से रिक्[illegible] साइकिल या कार में सवार आ रहा [illegible] आप को नमस्ते करता है. आप का [illegible] भंग हो जाता है. आप भूल जाते हैं [illegible] बाजार में हैं, बस आप जरा सा विच[illegible] हुए कि दुर्घटना हो गई. कोई सुंदर [illegible] सड़क पर जा रही है, कुछ लोग उस [illegible] ओर देख रहे हैं, ध्यान दूसरी ओर [illegible] जाता है. और दुर्घटना हो जाती है.

जालंधर, अमृतसर जैसे शहरों [illegible] लीजिए जो न तो कलकत्ता, मद्रास, [illegible] या दिल्ली की तरह बड़े शहर हैं और [illegible] ही छोटे गांव. यहां 26 साल पहले की [illegible] हजार की जनसंख्या के लिए बने [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में अब पांच या छः गाड़ी वाले लोगों को चलना होता है. सड़कें अत्यंत छोटी हैं, लेकिन यातायात दस गुना बढ़ गया है. दुर्घटनाओं के लिए तीव्र यातायात भी एक कारण है. युवा वर्ग में शेखी भी इस का एक कारण है.

अमृतसर अस्पताल में एक डाक्टर मित्र के पास बैठा था तभी एक जोड़े को लाया गया जो कि गंभीर रूप से घायल था. डाक्टर की बड़ी कोशिश के बावजूद वह युवक तो मर गया, हां लड़की बच गई. जब लड़की से दुर्घटना का कारण पूछा गया तो उस ने बताया कि हम दोनों पतिपत्नी स्कूटर पर सवार जा रहे थे कि सामने से एक ट्रक आया. उस की दोनों आंखें (लाइटें) चमक रही थीं. युवक पति कहने लगा कि इन दोनों लाइटों में से

चौराहों पर वाहनों के रोक के लिए उचित प्रबंध होना चाहिए.

स्कूटर गुजारूं? जब तक मैं रोकूं स्कूटर पूरे जोर से ट्रक से टकरा गया और उस के बाद हमें पता नहीं क्या हुआ.

दुर्घटनाएं तो हो जाती हैं, लेकिन जब दूसरे व्यक्ति वहां से गुजरते हैं तो घायलों को देख या दुर्घटनास्थल की उपेक्षा कर लोग प्रायः भाग जाते हैं. ऐसा क्यों? जब इस संबंध में जानने का प्रयास किया तो यही पता चला कि घायलों को अस्पताल पहुंचा देने पर ही बात खत्म नहीं हो जाती. अपितु पुलिस वाले इन लोगों को इतना तंग करते हैं कि एक बार मानवता का कर्तव्य निभाने वाले व्यक्ति को अनेक बार पुलिस वालों की ओर से तंग होना पड़ता है.

अगर सरकार यातायात के नियमों का कठोरता से पालन कराए और शराब पी कर गाड़ी चलाने की मनाही हो और शराब पी कर गाड़ी चलाने वाले को कड़ी से कड़ी सजा की व्यवस्था हो तो सचमुच सड़कों पर होने वाली मौतें कम हो सकती हैं.

दुर्घटनाओं से बचने के लिए खराब गाड़ियों को सड़कों पर न चलाया जाए. थोड़ी सी खराबी पर ही बस को वर्कशाप में ले जाया जाए. पैदल चलने वाले लोगों, छकड़ों, साइकिलों, पशुओं तथा अन्य वाहनों को सदैव बाईं ओर चलाया जाए तथा बड़ी सड़कों पर, जहां द्रुतगामी वाहन चलते हैं, ऐसे वाहनों को न चलने दिया जाए.

सड़कों पर जहांतहां पड़ी रुकावटों

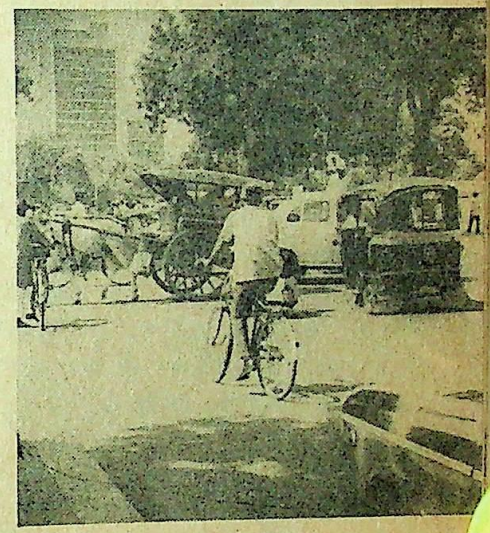

को हटा देना चाहिए. सड़क पर चलते समय यातायात के संकेतों का पूरी दृढ़ता से पालन करना चाहिए. जहां यातायात के संकेतों का अभाव हो, वहां विशेष रूप से सावधानी की आवश्यकता है.

चौराहों, मोड़ों पर संकेतों का विशेष ध्यान रखना चाहिए और अंधे मोड़ों तथा सड़कों पर चलते समय हार्न का प्रयोग करना चाहिए. रात को चलते समय हार्न का प्रयोग करना चाहिए. रात को चलते समय लाइट का विशेष ध्यान रखना चाहिए. यदि किसी प्रकार लाइट में कोई कमी हो तो अच्छा है, रात में यात्रा न की जाए. कहीं जल्दबाजी दुर्घटना का कारण ही न बन जाए.

प्रायः देखने में आया है कि रात के समय पुलिस गश्त का अभाव रहता है. ऐसी अवस्था में यातायात विभाग को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूचित किया जाए और स्वयं सावधानी से काम लिया जाए क्योंकि हर नागरिक को स्वयं ही यातायात के नियमों का पालन करना चाहिए. असावधानी का बहुत बड़ा दंड मौत भी हो सकता है तो क्यों न मौत को रोका जाए?

बाजार में चलते समय इस बात का खयाल नहीं करना चाहिए कि सावधानी मेरा नहीं, किसी दूसरे व्यक्ति का काम है. अगर हर व्यक्ति सावधानी से काम लेगा तभी हर व्यक्ति का जीवन सुरक्षित होगा.

सड़कों पर बच्चों द्वारा गिल्लीडंडा, क्रिकेट, फुटबाल, वालीबाल खेलना तथा बाजारों में जहांतहां टेंट लगा कर जगह को रोक लेना भी यातायात में अवरोध पैदा करना है और इस से भी अनेक दुर्घटनाएं हो जाती हैं. सड़क पार करते समय संकेत का विशेष ध्यान रखना चाहिए. बाजार में खड़े हो कर गप्पें लड़ाना, जहां दिल करे खड़े हो जाना भी दुर्घटना का कारण बन सकता है.

देहातों में दुर्घटनाएं

दुर्घटनाओं का कारण देहात में बसों का अभाव भी है. छकड़ों, ट्रकों, ट्रालियों टेंपुओं आदि में बेतहाशा सवारियां बिठाने से जहां उन का संतुलन बिगड़ जाने से दुर्घटनाएं हो जाती हैं, वहां अंधाधुंध चलाने से वाहन खराब भी हो जाते ऐसे वाहनों में बहुत कम अवसरों पर सवारी करनी चाहिए या फिर ड्राइवर सावधानी बरतने के लिए कहा जाना चाहिए.

प्रायः देहात में विवाहशादियों में बसों का अभाव रहता है तो ट्रालियों, टेंपुओं का सहारा लेना पड़ता ऐसे अवसरों पर जहां सरकार को उचित बसों की व्यवस्था करनी चाहिए वहां लोगों को भी विशेष सावधानी से काम लेना चाहिए.

हर मनुष्य का जीवन और मृत्यु अपने हाथ में है. थोड़ी सी सावधानी से जिंदा रख सकती है और थोड़ी सी असावधानी उसे मौत के मार्ग पर भेज सकती है. तो फिर क्यों न सावधानी से ही काम लिया जाए?

दुर्घटनाओं से बचना जहां मनुष्य के हाथ में है, वहां सरकार का भी कर्तव्य है कि यातायात के संकेतों की समुचित व्यवस्था की जाए और ट्रैफिक के निरीक्षण तथा पुलिस की गश्त की समुचित व्यवस्था हो और रात को लंबे सफर की यात्रा करने वाले ड्राइवरों का निरीक्षण किया जाए. इस से दुर्घटनाएं कम हो सकती हैं और हर वर्ष हजारोंलाखों लोग जो बिना किसी कारण के मौत के मुंह चले जाते हैं, उन्हें बचाया जा सकता है.

विरह निवारण

रायसिंहनगर. यहां एक व्यक्ति ने अपनी प्रिय पत्नी की इसलिए हत्या कर दी कि कहीं उस की मौत के बाद उस की पत्नी को रोना न पड़े.

ग्राम ठंडी में चोखाराम नाई ने अपनी 40 वर्षीया पत्नी की अपने घर में कस्सी से हत्या कर दी. इस हत्या की जानकारी मिलते ही आसपास के लोगों ने उसे पकड़ लिया. जब उस से पूछा गया कि उस ने यह दुष्कर्म क्यों किया, तो उस ने कहा कि यदि वह अपनी पत्नी से पहले मर जाता तो उस की पत्नी को रोना पड़ता. इस रोने को वह पसंद नहीं करता, इसलिए उस ने उस की हत्या की है.

—राजस्थान पत्रिका, जयपुर (प्रेषक : खेमचंद चंदानी, बारन)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

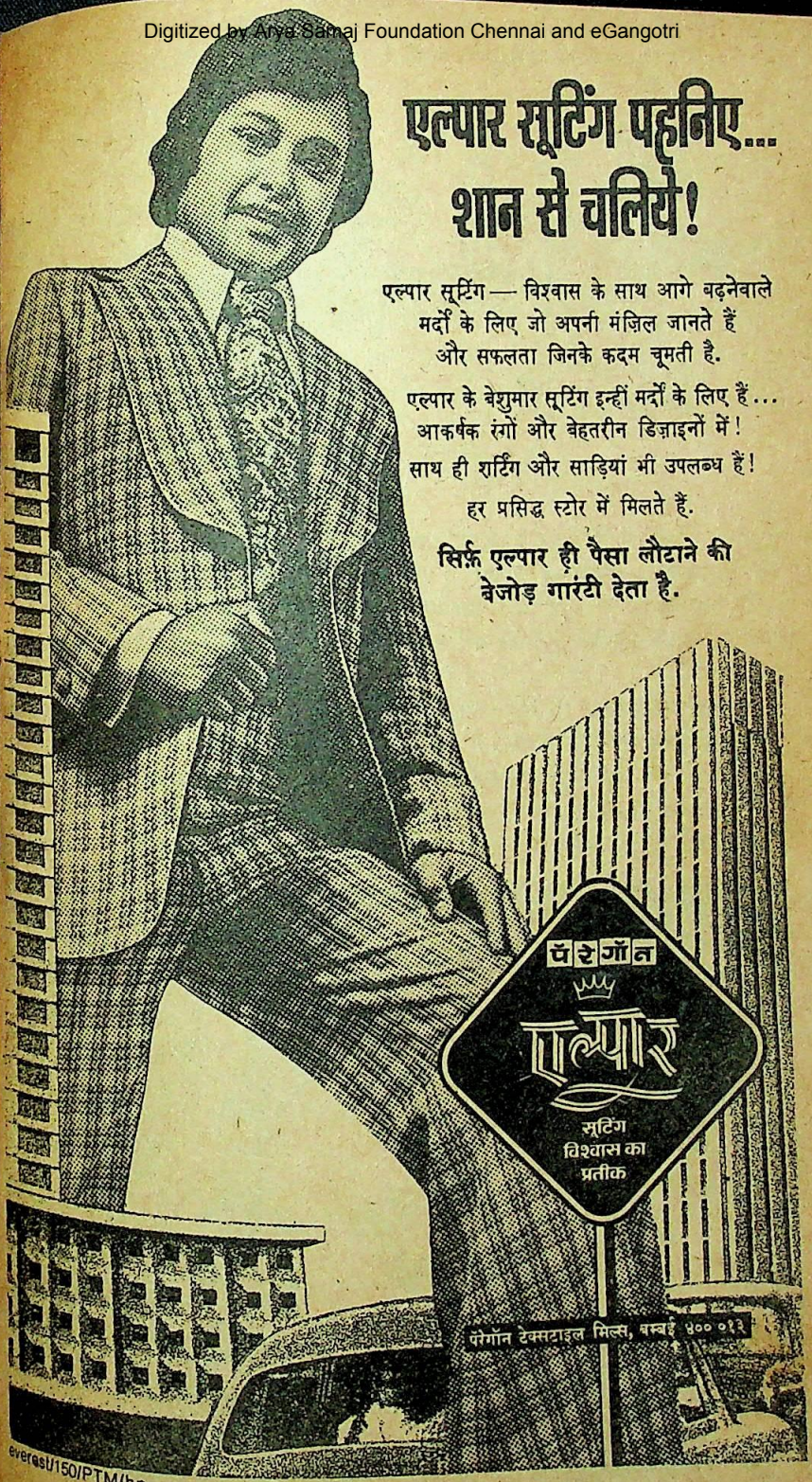

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परदा

लेख • इंद्रारानी

महिलाओं को घर की चारदीवारी में कैद रख कर उन्हें नासमझ बनाए रखने का साधन...

मैं तो परदे की बात, पर परदे में रखने योग्य नहीं. कभीकभी सोचती हूं कि जब नारी ने परदे को अपनाया होगा तो सचमुच उस की अक्ल पर परदा पड़ गया होगा.

परदा पहलेपहल मुसलिम देशों में शुरू हुआ था और उन के साथसाथ भारत में आया. जिन प्रदेशों में मुसलमानों का आधिपत्य अधिक रहा वहां तो यह चला, जहां मुसलमान नहीं पहुंचे या कम पहुंचे जैसे दक्षिण, वहां परदा नहीं रहा. आज मुसलमानों का आधिपत्य समाप्त हुए 150 वर्ष हो गए.

युग बीता, परिस्थितियां बदल गईं पर नारी उस विवशता के परदे से आज भी वैसे ही चिपकी है जैसे रोगी कंबल से. आज स्वतंत्र भारत ने अट्ठाइस वर्ष की लंबी अवधि तय कर ली है. कहने को प्रगति भी की पर अभी भी गांवों से ले कर शहरों तक स्त्रियां छोटाबड़ा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

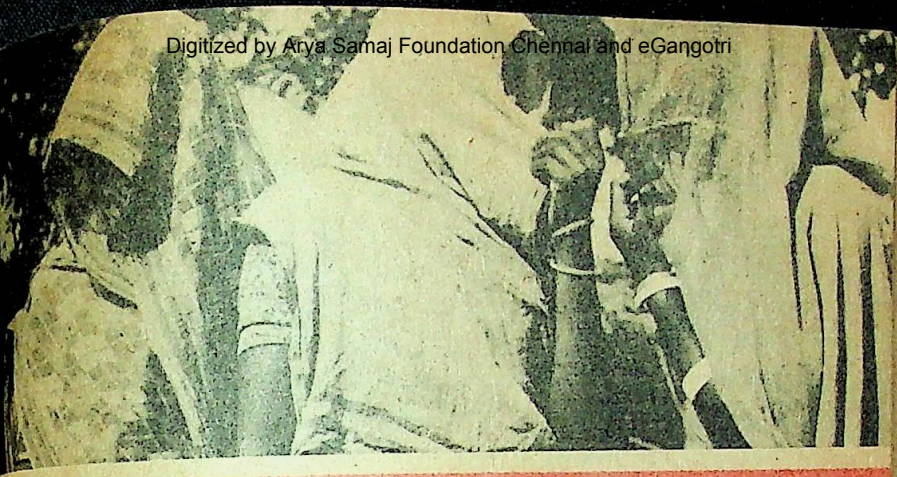

पनघट पर पानी भरने गईं और रास्ते में जेठससुर टकरा गए...

परदा किए खड़ी हैं. क्यों?

हम अपने पुराने संस्कारों और अपनी रूढ़ियों को नहीं छोड़ पा रहे. आज की आधुनिक नारियां भी विवाह होते ही परदे में कैद हो जाती हैं और उन के आधुनिक विचारों के पति समाज के आगे खिसियानी हंसी हंसते रहते हैं.

परदे का मतलब परदा ही है लेकिन हंसी तब आती है जब लोग आधुनिक भी बनते हैं और रूढ़िवादी भी. हर मातापिता चाहते हैं कि अपने पुत्र के लिए सुंदर, सुशील, गुणवती लड़की खोज निकाले. उधर पुत्र भी चाहता है कि उस की पत्नी ऐसी हो जो उस के साथ कदम से कदम मिला कर चल सके.

लड़की को देखने लगभग पूरा परिवार जाता है. उस के साथ हंसहंस कर बातें होती हैं और मिलबैठ कर चाय का दौर भी चलता है. पर जैसे ही वह लड़की अपनी बहू बन कर आती है, सास की पहली हिदायत मिलती है, 'बहू, ससुर-जेठ से परदा करना. उन के सामने मुंह न खोलना. इन मामलों में 'ये' जरा सख्त हैं.' अब कोई जरा उन से पूछे कि जिस बहू को इतने चाव से पसंद किया है अब परदा करवाने से क्या लाभ?

यह एक कटु सत्य है कि जिन घरों में परदे का रिवाज है, वहां के एक प्रतिशत पुरुष भी दावे से नहीं कह सकते कि उन्होंने परदे में रहने वाली स्त्री (कोई भी संबंध हो सकता है) की कभी भी जानेअनजाने शक्ल नहीं देखी.

इधर नारी भी परेशान है. प्रत्येक नारी की यह हार्दिक अभिलाषा होती है कि वह अपने ससुराल वालों पर अच्छा प्रभाव छोड़े और जब परदे की बात सामने आती है, तो चाहे वह परदे का कितनी विरुद्ध क्यों न हो, एक अंतर्द्वंद्व में फंस कर रह जाती है. जहां पति का सहयोग हो वहां तो बात बन जाती है. जहां पति महोदय तटस्थता का रुख अपनाते हैं वहां बेचारी पत्नियां एक बार जो परदे से चिपकती हैं तो लगभग उमर भर चिपकी रहती हैं.

मेरी एक सहेली हैं रीमाजी. उन के पति गांव के हैं, काफी पढ़ेलिखे और समझदार. शादी के बाद वे दोनों शहर में ही रह रहे हैं. पर जब गांव से किसी के आने का समाचार आता है तो रीमा बुरी तरह बड़बड़ाने लगती हैं. मेरे यह पूछने पर कि वह इस का विरोध क्यों नहीं करतीं. वह एकदम उबल पड़ीं, 'मैं क्या जानती थी कि इतना पढ़लिख कर भी 'ये' इतना साहस नहीं रखते. जब पुरुष ज्ञान रखते हुए भी किसी गलत परंपरा का विरोध नहीं कर सकता तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कई बार मन होता है कि इस परदे को उतार फेंकूं पर गृहक्लेश के भय से मन-मसोस कर रह जाती हूं.'

गांवों में परदा

गांवों में मध्य व उच्च वर्गों में सर्वत्र परदा विराजमान है. ससुर से परदा, जेठ से परदा, देवर से परदा, समधी से परदा, ननदोई से परदा. कहते हैं कि जेठ से बहू को इसलिए परदा करना चाहिए कि उस का पति और जेठ लगभग हमउमर होते हैं. गांव में प्रत्येक उस पुरुष से, जो उमर व रिश्ते में बड़ा हो, औरतों का परदा करना लाजमी होगा. यह सच है कि परदे में छिपी हर चीज का अपना अलग आकर्षण होता है और फिर परदे के पीछे नारी? मैं पूछती हूं क्या गांवों में परदा होने से वह ज्यादा सुरक्षित रहती है? शहरों से अधिक वहां ऐसी घटनाएं होती रहती हैं—जेठ का छोटे भाई की पत्नी से संबंध, पराई स्त्री से गांव के किसी व्यक्ति का संबंध, जिन में कई औरतों व लड़कियों के गांव से भाग जाने की वारदातें भी हैं. और इन सब के पीछे नारी की अज्ञानता का परदा है जो उस की सूझ-बूझ को घर की चारदीवारी में कैद कर के नासमझ बनाए रखने में सहायता करता है.

शहर की नारियां, जो पति के दोस्तोंपरिचितों के आने पर अपनी प्रसन्नता प्रकट करती हैं और जब तक वे रहते हैं उन की रुचियों को देखते हुए उन की आवश्यकताओं की पूर्ति करती हैं. पर जैसे ही उन्हें पता चलता है कि उन के ससुराल से कोई संबंधी आ रहा है तो उन के आते ही वे एक कोने में दुबक जाती हैं.

बस अब पत्नी की ड्यूटी खाना पका कर रख देने भर को रह जाती है. उधर रिश्तेदार भी घर के छोटे बच्चों से जी बहलाते हैं (यदि हैं तो) और बहू कहलाई जाने वाली पत्नियां दूसरे कमरे में कैद हो जाती हैं. वे मन ही मन प्रार्थना करती हैं कि कब इस बोरियत से छुट्टी मिले, क्योंकि रिश्तेदारों के रहते कहीं आनेजाने की वह सुविधा नहीं रह पाती.

शहर में परदा क्यों?

कितने शर्म की बात है कि हम गैरों के साथ मिलबैठ सकते हैं पर अपनों के साथ पाबंदियां लगाते हैं. पत्रपत्रिकाओं के कार्टूनों व जिन पुरुषों को यह शिकायत रहती है कि उन की पत्नियां उन के घर वालों को देख कर सिरदर्द का बहाना बना लेती हैं. यदि स्वयं विश्लेषण करें तो अधिक बेहतर होगा.

आबादी से घिरे शहर और शहरों के छोटेछोटे कमरों में बसे लोग. मान लें आप के पास दो कमरे का फ्लैट है जिस में आप अपने मातापिता व बीवी के साथ रहते हैं. पंखा सिर्फ बेडरूम में ही है. अब दोपहर को बीवी काम कर के चाहेगी कि दो मिनट कमर सीधी कर ले. पर वहां सासससुर हैं, इसलिए परदे के कारण वह अपने भाग्य को कोसती दूसरे कमरे या रसोई में पड़ रहेगी. यह भी हो सकता है कि इस के विपरीत हो. क्या अपनों का यह फर्ज नहीं कि वह अपने से बड़े या छोटे का ध्यान रखें, पर यह तो तब ही होगा जब बड़े बहू को बेटी समझते हुए उसे कुछ आजादी दें.

हमारी एक मकानमालकिन थीं. कभी उन के ससुर बहू की बेपरदगी के सख्त खिलाफ थे पर एक दिन ऐसा आया कि उन के आधे शरीर को लकवा मार गया. बेटे की बहू ने काफी सेवा की, यहां तक कि अपने हाथों से उन का मलमूत्र भी

डर नहीं...

दमकते हृदय और स्वच्छ अंतरंग के लिए दुनिया में डर की कोई बात नहीं है.

—हैसन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

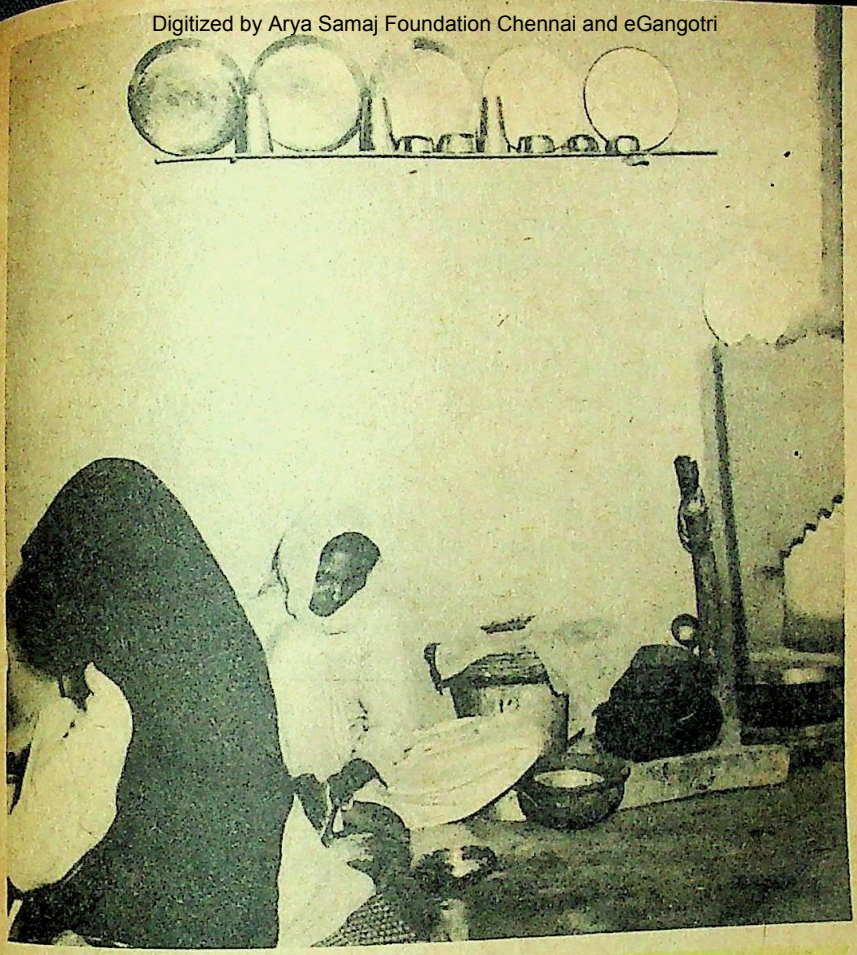

परदा बहू और ससुराल वालों के मध्य दूरी बनाए रखता है. .

उठाया. जब कभी अपनी बहू को देखते तो हृदय गदगद हो उठता, अगर वह परदे की ओट ले कर सेवा से जी चुरा लेती तब? क्या बेटा दिनरात पिता की सेवा कर सकता था?

कई परिवारों का विघटन भी इसी परदे के कारण ही होता है. जहां एक कमरे से दूसरे कमरे में जाने पर परदा करना पड़े तो कोफ्त होगी ही. वह परदा भी जबरदस्ती का परदा होता है जहां आगे तो परदा लगता है पर पीछे अर्ध-नग्न पीठ के दर्शन होते रहते हैं.

ससुराल वाले कहते हैं कि पराई लड़की उन्हें अपना नहीं समझती. ननद, देवर, जेठ कुछ ऐसे ही विचार धारण किए रह हैं. पर वे अपने मन में झांकें और बताएं कि क्या उन्होंने उसे उचित स्थान दिया है? जब ससुर पिता समान हैं तो परदा क्यों है? जेठ बड़े भाई समान हैं तो परदा किसलिए? ननददेवर भाई-बहन का प्रतिरूप हैं तो उन में ईर्ष्याद्वेष किसलिए है?

समय की मांग है कि समाज चेते. इस से पहले कि नारियां बगावत पर उतर आएं, पुरुषों को स्वयं ही नारियों को परदे से मुक्त कर देना चाहिए. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवन की मुसकान

स्कूल के चपरासी को अपनी पत्नी की चिकित्सा के लिए 400 रुपयों की तत्काल जरूरत थी. उस ने प्रोविडेंट फंड में से ऋण की प्राप्ति के लिए प्रार्थनापत्र दिया, लेकिन दफ्तर के बाबुओं की लापरवाही से अर्जी अटकी रही. उधर उस की पत्नी का फौरन आपरेशन होना जरूरी था, अन्यथा उस की जिंदगी खतरे में पड़ सकती थी.

चपरासी की परेशानी स्कूल के प्रधानाध्यापक ने समझी और उसे बुला कर 400 रुपए अपने पास से दे दिए. यह देख कर पास में बैठा हुआ बाबू बोला, "सर, पी. एफ. लेने के लिए इस से एक अधिकार पत्र आप के नाम लिखवा देता हूं."

प्रधानाध्यापक ने कहा, "उस की कोई जरूरत नहीं. उस की पत्नी की जिंदगी इन रुपयों से ज्यादा कीमती है. वैसे भी सोचिए घर के बुजुर्ग आप को या मुझे खर्च के लिए जो रुपए देते थे, क्या उस के लिए कोई लिखापढ़ी कराते थे? स्कूल एक परिवार है और आप लोगों ने मुझे इस परिवार का बुजुर्ग माना है. इस नाते मेरा भी कुछ फर्ज है."

प्रधानाध्यापक महोदय की उदारता ने न केवल चपरासी की पत्नी को नई जिंदगी दी, बल्कि लोगों को अपना दृष्टिकोण बदलने के लिए मजबूर भी किया.

—गुणवंती त्रिवेदी, अजमेर

मेरे पिताजी को नौकरी की बहुत आवश्यकता थी. एक जगह वह इंटरव्यू में गए तो वहां अपने एक मित्र को भी देखा. पिताजी ने उस मित्र से कहा, "तुम्हारी यहां काफी जानपहचान है, इसलिए यह नौकरी तुम्हें मिल ही जाएगी. मेरा आना बेकार हुआ. तुम मेरी परिस्थिति जानते ही हो, मेरे लिए कहीं और प्रयत्न करना." मित्र ने कुछ उत्तर नहीं दिया. पिताजी इंटरव्यू दे कर घर आ गए.

आश्चर्य की बात कि शाम को उस फैक्ट्री से नियुक्तिपत्र आ गया. पिताजी और सारा परिवार खुश हो गया. पिताजी मिठाई ले कर अपने मित्र के पास गए, बोले, "नौकरी मिल गई. लेकिन यह मेरी समझ में नहीं आया कि तुम्हारी वहां इतनी जानपहचान है, फिर भी तुम्हें यह नौकरी क्यों नहीं मिली?" मित्र ने कोई जवाब नहीं दिया, केवल खुशी व्यक्त की.

महीने भर बाद फैक्ट्री के मालिक

ने पिताजी को किसी काम से अपने घर बुलाया. वहां बातों ही बातों में उन्होंने बताया, "यह नौकरी हम तुम्हारे मित्र को देने वाले थे, लेकिन उस ने तुम्हारी सिफारिश कर के कहा कि मुझे नौकरी की इतनी आवश्यकता नहीं है, जितनी मेरे इस मित्र को है. अगर आप मुझ पर कृपा करते हैं तो यह नौकरी मेरे मित्र को दीजिए. मैं आप का आभारी रहूंगा."

उन मित्र की उदारता का परिचय प्राप्त होने पर हमारे आश्चर्य का ठिकाना न रहा.

—चंद्रकांत त्रिवेदी, अजमेर ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न्यूड वेव फिल्में

लेख
•
योगेंद्रपाल सिंह

एक बार तत्कालीन पोप ने आधुनिकाओं के उघरेपन पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा था कि औरतों को पर्याप्त परिधानों से स्वयं को ढंकना चाहिए ताकि वे यौन उत्तेजना का साधन न बनें. इसी कथन पर चुटकी लेते हुए सुप्रसिद्ध नाटककार एवं सिद्धहस्त हाजिर-जवाब बर्नार्ड शा ने टिप्पणी की थी कि 'श्रीमान पोप सरासर गलत हैं. स्त्रियां जितने ही कम कपड़े पहनेंगी उतनी ही वे

नारी सौंदर्य के नग्न प्रदर्शन को क्या कला कहा जा सकता है?

In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कम सेक्सी लगेंगी.

शायद शा का विचार सही है. वही घूंघट और बेघूंघट का प्रश्न है. आवरण-युक्त सुंदरी के प्रति हमेशा उत्सुकता बनी रहती है. उस का जरा सा ही अंग खुलने से जो सेक्स प्रवाह होता है वह स्ट्रिपटीज या कैबरे करने वाली अर्द्धनग्नता से नहीं. आवरण स्वयं में स्त्री का महानतम आभूषण है. निर्वसन शरीर को एक बार देखने के बाद फिर बचा ही क्या रहता है?

भारतीय फिल्म जगत में इन दिनों न्यूडवेव का जोर है. जहां पहले फिल्म निर्माता 'ए' सर्टिफिकेट से खौफ खाते थे, आज वहीं अपनी फिल्मों पर उस का ठप्पा लगवाने की चेष्टा करते हैं. दर्शक इस ठप्पे से खिंचे चले आते हैं, वे ऐसा सोचते हैं. कुछ हद तक यह सही भी है. लेकिन 'ए' सर्टिफिकेट की फिल्में भी अच्छी कहानी के अभाव में फ्लाप गई हैं.

'चेतना' इसलिए चली कि उस में दर्शाया गया नंगापन स्थिति के अनुकूल था. फिर शत्रुघ्न सिन्हा के तीखे संवाद व अदाकारी ने फिल्म को बचा लिया. रेहाना सुल्तान न्यूड वेव की प्रवर्तक मान ली गई.

'दस्तक' में एकदो कलात्मक दृश्यों को छोड़ कर कहीं भी रेहाना के शरीर का प्रदर्शन नहीं है. सशक्त कहानी व निर्देशन ने फिल्म को सफलता प्रदान की, न कि 'ए' सर्टिफिकेट के ठप्पे ने. दर-असल इस फिल्म को ऐसे सर्टिफिकेट की आवश्यकता ही नहीं थी. सुरुचिपूर्ण, कलात्मक फिल्मों पर सेंसर अपना यह दाग क्यों लगाता है जब कि अनेक फूहड़, अश्लील फिल्में यों ही साफ बच जाती हैं.

प्रश्न फिल्मों में नंगेपन का है. पहले की कई तारिकाओं में गहरी यौन संचेतना जागृत करने वाला आकर्षक बदन व अदाकारी थी, यद्यपि वे न्यूड वेव जैसी

अश्लील हरकतें और अंग प्रदर्शन : न्यूडवे

बारबार आलिंगन और बलात्कार : 'दोराहा' फिल्म में अनिल धवन और राधा सलूजा.

CC-0. In Public Domain. Gurukul K[illegible] Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

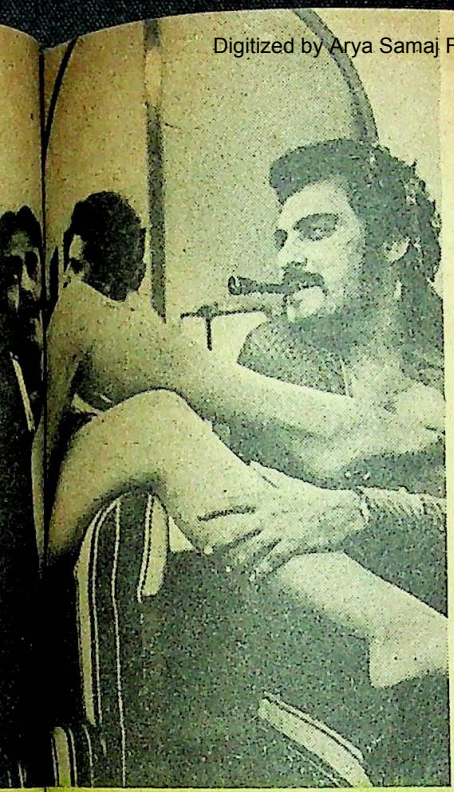

न्यूडवेव फिल्मों में इस के अलावा क्या है?

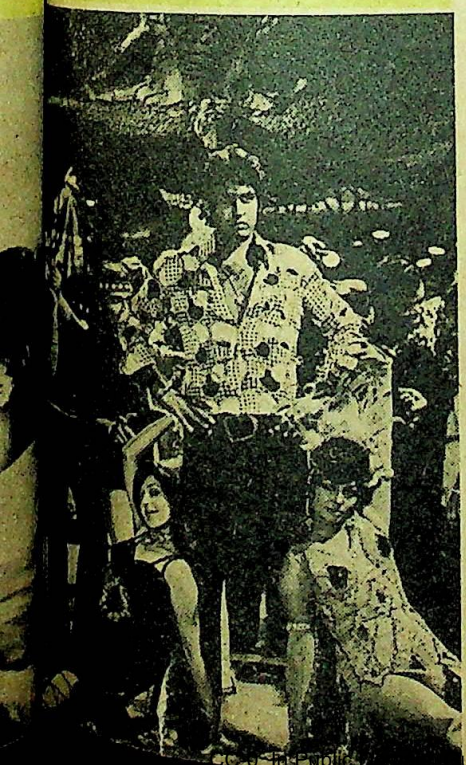

प्रक्रिया से अपरिचित थीं. सुलोचना, सुरैया, नरगिस, मुनव्वर सुल्ताना, गीता बाली, मधुबाला, बीना राय आदि अपने समय की प्रसिद्ध तारिकाओं में से किस ने अपने शरीर को उघार कर दर्शकों को बहलाने अथवा फिल्मी दुनिया में छा जाने का यत्न किया?

सुरैया ने लिखा है कि उस के जमाने में जरा भी शरीर के किसी अंग के खुले रह जाने पर निर्देशक चीख उठता था और सभी जानते हैं कि सुरैया मोहक सेक्सी आवाज, हावभाव और अभिनय से अपने समय की चहेती अभिनेत्री थी. उस की बेहद कमजोर फिल्म भी महज उस के नाम के कारण चल जाती थी. कल्पना कीजिए नरगिस को रेहाना के रूप में फिल्म चेतना में. नरगिस की सारी इमेज ही चौपट हो जाएगी.

'मेला,' 'अंदाज,' 'विरहा की रात,' 'दीदार' व 'मदर इंडिया' की नरगिस ने कहीं भी अंग प्रदर्शन किया हो तो. 'दीदार' की ढंकीढंकाई आधुनिका बाब हेयर नरगिस 'जरूरत' की काल गर्ल के रूप में बेहद ही जुगुप्सित लगती. 'अंबर' में एक-दो उस के भौंडे दृश्य थे, जिस में उस ने अपने शरीर को काफी उघारा था, लेकिन नरगिस को कभी भी 'अंबर' जैसी फिल्म के साथ याद नहीं किया जाएगा.

मधुबाला में अपार यौन आकर्षण था. उस ने लाखों दर्शकों पर एकछत्र राज्य किया. लेकिन याद कीजिए, किसी भी फिल्म में आप ने उस की जांघें देखीं अथवा उस के वक्षस्थल को आधा उघरा हुआ पाया? 'महल' में कैमरा ज्यादातर उस के खूबसूरत चेहरे पर ही केंद्रित रहा.

इसी प्रकार आप उस की फिल्में 'अमर' तथा 'मुगलेआजम' की याद कीजिए.

बीना राय की 'काली घटा' और 'अनारकली' उस के भोले, लावण्यपूर्ण चेहरे तथा आकर्षक देहयष्टि के बल पर

नायक एक नायिकाएं दो : दर्शकों को आकर्षित करने का नया तरीका.

Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर्याप्त सेक्स का संचालन कर पाई थी, न कि आज की सस्ती तारिकाओं की भांति, जो नाचते समय कूल्हों और छातियों को मटकाने व तौलिए में आधी निर्वसना हो कर गाने तथा मटकमटक कर उछलनेकूदने को ही सेक्स पैदा करने का विश्वस्त साधन समझती हैं.

तौलिए में आधी ढंकी योगिता बाली स्वस्थ सेक्स का नहीं, बल्कि विकृत सेक्स का प्रतीक है. इसी प्रकार है बेचारी रेखा, जो कहती है कि ये फिल्म वाले उसे न जाने कब साड़ी पहनाएंगे? पुरानी कड़ी में हम 'समाधि,' 'शिकस्त,' 'मुनीमजी' की मासूमियत और छलकते यौवन की धनी नलिनी जयवंत को भी याद कर सकते हैं.

मैं ने मीनाकुमारी की बस एक ही फिल्म ऐसी देखी है जिस में उस ने अंग प्रदर्शन किया था—वह थी 'फुटपाथ,' जिस में उसे उघरे वक्ष के साथ नल के नीचे नहाते दिखाया गया है. उस दृश्य के पोस्टर भी खूब लगे थे. लेकिन दिलीपकुमार के नायक होते हुए भी फिल्म नहीं चली.

न्यूड वेव के अंतर्गत मीनाकुमारी की कोई परिकल्पना कर सकता है? एक लंबे समय तक दर्शकों को प्रभावित करने वाली यह महान अभिनेत्री यदि केवल अपने शरीर को माध्यम बना कर अभिनय करती तो उस की क्या गति होती? ऐसा हो ही नहीं सकता था.

'दोराहा' के रेपसीन में यदि वह होती तो भी दर्शकों की निगाहें उस के भयाक्रांत चेहरे पर, उस के होंठों से निकलती हलकी चीखों व शब्दों पर ही केंद्रित हो कर रह जातीं, न कि उस की फटी हुई चोली और उघरी हुई जंघाओं पर.

बस, यहीं अभिनय की श्रेष्ठता का सवाल उठता है. 'बेनजीर' और 'पाकीजा' की नाचने वाली वेश्या मीनाकुमारी पर भी किसी ने बुरी नजर नहीं डाली. वह तवायफ की भूमिका अत्यंत शालीन तरीके से निभा गई.

मांसल सौंदर्य वाली वैजयंतीमाला को ग्लैमर के शौकीन राज कपूर ने 'संगम' में काफी अनावृत और भड़कीले रूप में पेश किया, लेकिन 'साधना' और 'देवदास' (इन दोनों ही चित्रों में वैजयंती ने तवायफ की भूमिका निभाई थी) की वैजयंती एक भिन्न अभिनेत्री थी.

आवश्यक नहीं कि अंगप्रदर्शन और सेक्सी दृश्य किसी फिल्म की सफलता का केंद्रबिंदु बनें. अगर यही बात होती तो उन्नत छातियों का उघड़ा प्रदर्शन करने वाली मांसल पद्मिनी राज कपूर की 'मेरा नाम जोकर' को बचा गई होती. दरअसल तीसरा हिस्सा, जिस की नायिका वह है, फिल्म का कमजोर हिस्सा है.

वहीदा रहमान अत्यंत कुशल अभिनेत्री रही है. क्या आप को उस की कोई भी श्रेष्ठ फिल्म याद आती है, जिस में उस ने शरीर को माध्यम बना कर दर्शकों को रिझाया हो? 'गाइड' में वह कई स्थलों पर सेक्सी लगी है, लेकिन पूर्णतः आवृत रूप में.

सायास अंगप्रदर्शन, जो कि कहानी से कहीं भी तालमेल नहीं खाता है, हमारे फिल्म उद्योग में छूत का रोग बन गया है. यह रीना राय, राधा सलूजा, रेखा, रेहाना, जीनत आदि के लिए फिल्म के तिलिस्मी दरवाजे भले ही खोल दे, लेकिन सफलता अभिनयकुशल जया भादुड़ी जैसी कलाकार को ही मिलेगी.

रेहाना में अभिनय क्षमता है, लेकिन उसे यह मालूम होना चाहिए कि नग्नता कला नहीं है और न ही स्थायित्व का कोई अचूक मानदंड ही. रेखा जो फिल्म से बाहर कई जोरदार वक्तव्य दे चुकी है, खुद फिल्म वालों के एकांगी व्यवहार से परेशान है.

निर्माता और निर्देशक व्यावसायिक सफलता की पूर्ति के लिए भद्दी नग्नता को कला के नए आयाम की संज्ञा भले ही दें, लेकिन यह एक विकृति है और फिर बर्नार्ड शा के शब्दों का अर्थ समझा जाए तो इस से कोई औरत यौनाकर्षक भी नहीं लगती.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

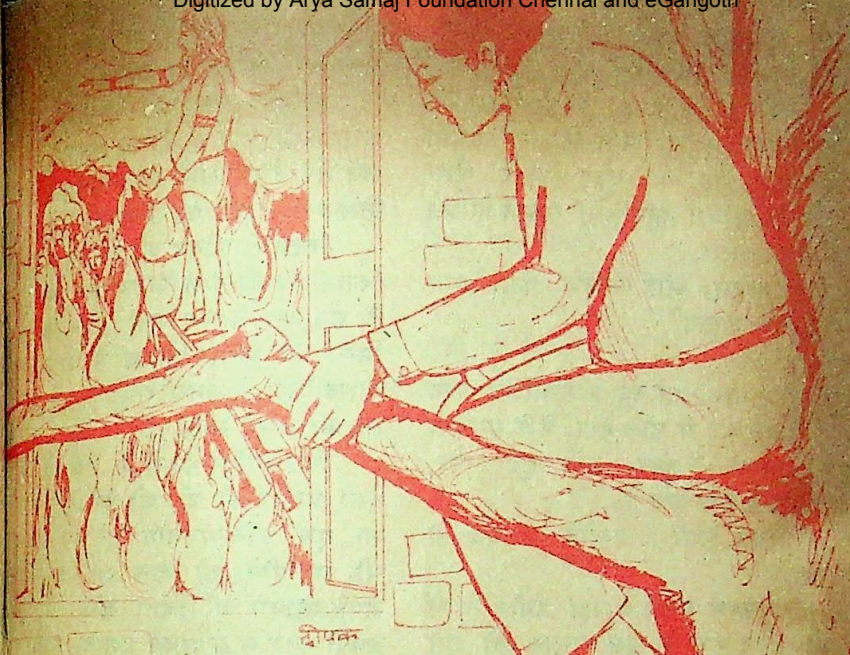

कहानी - कुसुम गुप्ता

मैसूर का मनोहारी वृंदावन उद्यान देखने के बाद जब हम बांध के दाहिनी ओर खड़ी अपनी कार के समीप पहुंचे तो विनोदी स्वभाव का मेरा अभिन्न मित्र तिलकराज कुछ विचारमग्न सा ठिठक कर खड़ा रह गया.

उस समय शाम के ठीक पांच बजे थे. अप्रैल का अंतिम सप्ताह था. दोपहर से थोड़ी सी उमस थी, अतः आकाश मेघाच्छन्न हो गया था. किसी भी क्षण

स्वामीजी का अग्नि आरोहण भक्तों के लिए चमत्कार था और मेरे लिए. . .

चमत्कार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्षा हो सकती थी. बांध के उस ओर था लक्ष्मी उस के पांवों में लोटती थी
कावेरी...उस के परे क्षितिज पर रहरह कर बिजली चमक रही थी.

मैं बांध के ऊपर, भव्य होटल के नीचे मंत्रमुग्ध सा खड़ा वृंदावन उद्यान को निहार रहा था. सुंदर फव्वारे, फूल-पत्तियां, कृत्रिम नहर तथा उद्यान के अंत में सुंदर झील.

"कहिए, भाई साहब, कैसा लगा वृंदावन उद्यान?"

गीता भाभी का वह अप्रत्याशित प्रश्न सुन कर मैं चौंक गया. मैं ने मुसकरा कर कहा, "सुंदर, अति सुंदर पर, भाभीजी, एक बात है..."

"वह क्या?" उन्होंने आश्चर्य से पूछा.

"फिल्म वालों ने यहां रंगीन चित्रों की शूटिंग कर के इस उद्यान को ऐसे रोमांटिक रूप से चित्रित किया है कि बस पूछो मत. फिल्मों में यह उद्यान जितना आकर्षक लगता है, उतना वास्तविकता में नहीं."

"रंगों का चमत्कार ही कुछ ऐसा होता है." भाभी ने मुसकराते हुए कहा.

"चमत्कार!" तिलक विचारमग्न सा खड़ा हुआ बुदबुदाया.

"अब क्या प्रोग्राम है?" भाभी ने उद्यान की ओर देखते हुए पूछा. पता नहीं यह प्रश्न उन्होंने मुझ से पूछा था या तिलक से?

मन ही मन में अपना अगला कार्यक्रम निश्चित करने लगा. चार दिन पूर्व मैं मैसूर आया था. एक सरकारी संस्थान के कर्मचारियों के प्रशिक्षण सत्र में मुझे सतर्कता प्रक्रिया पर तीन भाषण देने थे. आज प्रातः मेरा अंतिम भाषण था.

तिलकराज मेरा सहपाठी था. बी. ए. तक हम दोनों साथी रहे. बी. ए. करने के बाद वह मैसूर आ गया और उस ने यहां एक रेस्तोरां खोल लिया. धीरेधीरे उस ने अपने उद्यम, परिश्रम तथा ईमानदारी से अभूतपूर्व तरक्की की. आज वह एक विशाल होटल का मालिक

और मैं उच्च शिक्षा प्राप्त कर
सरकारी सेवा में आ गया.

तिलक साल, दो साल में दिल्ली
आता और मुझ से अवश्य मिलता, क
जब मेरे मैसूर आने का कार्यक्रम बना
तिलक की खुशी का ठिकाना न रहा.

विद्यार्थी जीवन की मित्रता के बंध
कितने मजबूत तथा आत्मीयता भरे हो
हैं, इस का प्रमाण मुझे मैसूर आ
मिला. मैं हवाई जहाज से आया
तिलक कार से बंगलौर पहुंचा, मैसूर
लगभग अस्सी मील दूर.

पिछले तीन दिनों में उस ने मे
ऐसी खातिर की थी, जो मेरे लिए जी
का एक अविस्मरणीय अनुभव बन
थी. खानेपीने की बात छोड़िए, उस
अपने व्यापार की चिंता छोड़ कर
अपनी कार में वृंदावन उद्यान, पर्वत
बना देवी का मंदिर, मैसूर महाराज
महल आदि संपूर्ण दर्शनीय स्थलों की
करा दी थी.

मैसूर में काम खत्म हो चुका
मैं वहां के संपूर्ण दर्शनीय स्थल
चुका था. अतः मैं ने अगले दिन शाम
फ्लाइट से दिल्ली लौट जाने का नि
कर लिया.

इधर मैं मन ही मन अपने आग
कार्यक्रम के विषय में सोच रहा था, उ
वे दोनों पतिपत्नी कुछ खुसरपुसर
रहे थे.

तभी हल्की वर्षा होने लगी.

तिलक कार में घुस गया और ड्राइ
की सीट पर बैठ गया. उस के बाद
भाभी और अंत में मैं कार की अ
सीट पर जा कर बैठ गए.

इस से पूर्व कि तिलक कार स्
करता, मैं ने गीता भाभी से कहा, "
कार्यक्रम के बारे में पूछ रही थीं न?
खयाल से मुझे कल शाम की प
से..."

"क्यों, क्या चार दिन में ही भा
जी की याद सताने लगी?" गीता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ने मेरी बांह में चुटकी काट कर खिल-
खिला कर हंसते हुए पूछा.
"यार, वह तो कल देखा जाएगा.
इस समय तो मैं तुझे सर्वेश्वर आश्रम
दिखाने ले जा रहा हूं."
"सर्वेश्वर आश्रम? यह कहां है?"
"यहां से कोई चौदह किलोमीटर
दूर है."
"वहां क्या खास बात है?"
"वहां चल कर संत सर्वेश्वरया के
दर्शन करेंगे."

मेरा मन वितृष्णा से भर गया. मैं ने
निस्पृह स्वर में कहा, "तिलक, घर चलो.
क्यों व्यर्थ में पेट्रोल फूंकते हो? जितना
वहां आनेजाने में पेट्रोल फुंकेगा, उसे
बचाओगे तो दो बीघा खेत में डालने
योग्य खाद बनेगी."

तिलक विक्षिप्तों की भांति खिल-

भाभी ने कहा, "मैं आज से स्वामीजी की शिष्या बन गई हूं."
तो मैं ने भी कह दिया, "मुझे भी महान उपलब्धि हुई है."

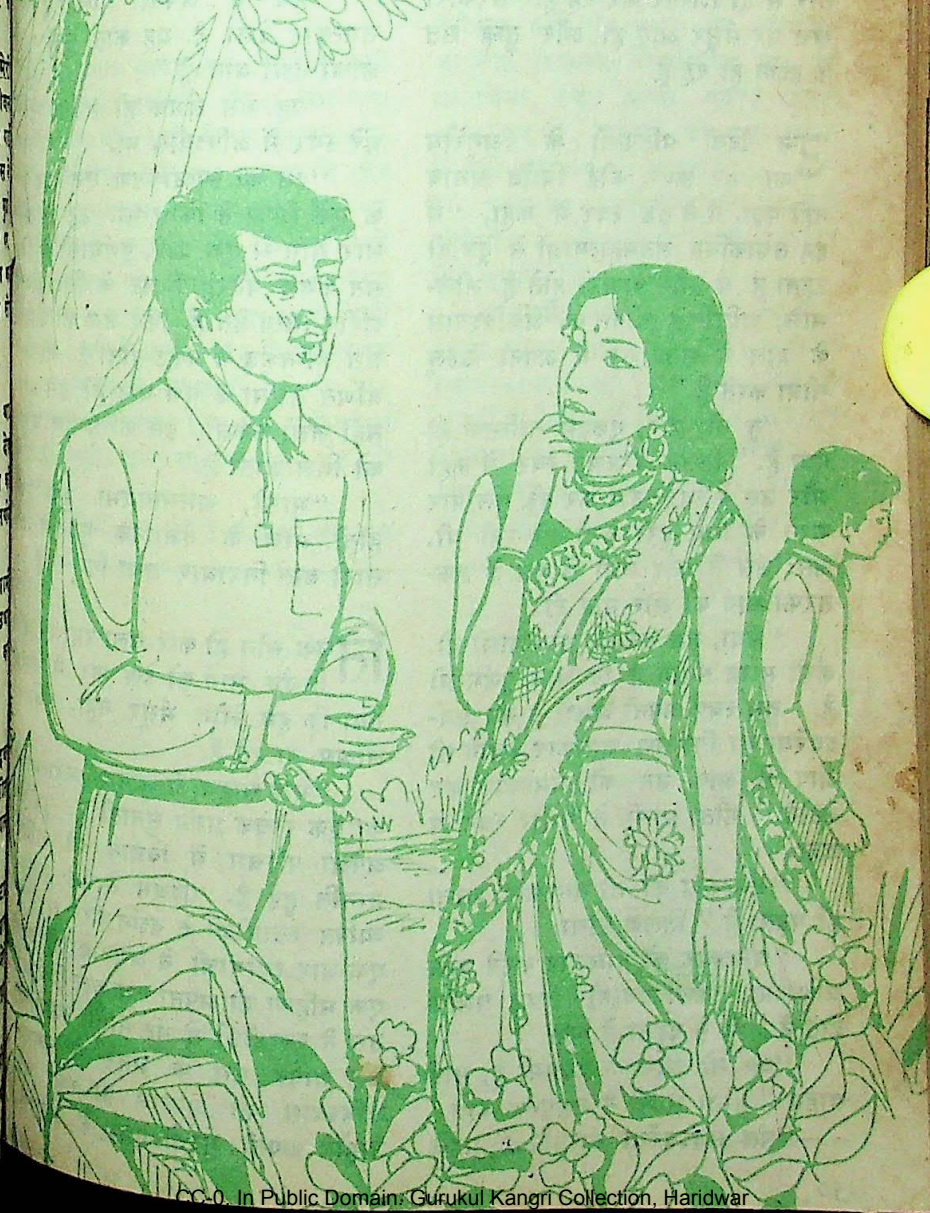

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खिला कर हंस पड़ा. फिर उपहास भरे स्वर में बोला, "प्रशासक हो, अतः तुम्हें जनकल्याण की चिंता होना स्वाभाविक है. पर अपनी आत्मा की शांति के लिए धर्म की खाद डालने का भी कुछ प्रबंध करो, मेरे यार."

"भाई साहब, सर्वेश्वरैया बड़े पहुंचे हुए संत हैं. देशविदेश में उन की ख्याति फैली हुई है. दूरदूर से भक्त लोग उन के दर्शनार्थ यहां आते हैं."

"तुम्हारा सौभाग्य है जो तुम एक तीर से दो शिकार कर रहे हो. सरकारी खर्च पर मैसूर आए हो और तुम्हें संत के दर्शन हो रहे हैं.

उन दिनों पतिपत्नी के अनुरोध का मेरे ऊपर कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ा. मैं ने ठंडे स्वर में कहा, "मैं इन तथाकथित संतमहात्माओं से दूर ही रहता हूं. ये लोग पाखंडी होते हैं. भोले-भाले, अशिक्षित लोगों को अंधविश्वास के जाल में फंसा कर ये अपना उल्लू सीधा करते हैं."

"तू तो, यार, एकदम नास्तिक हो गया है." तिलक ने उखड़े स्वर में कहा और उस ने कार स्टार्ट कर दी. पुल पार करने के लिए हरी बत्ती हो रही थी. अतः उस ने कार तेजी से पुल के इक-तरफा मार्ग की ओर मोड़ दी.

"भैया, तुम सचमुच भाग्यशाली हो. कैसा सुखद संयोग है कि आज पूर्णमासी है. तुम स्वयं अपनी आंखों से संत सर्वेश्वरैया का विलक्षण चमत्कार देखोगे तो आप से आप उन को नमस्कार कर बैठोगे," गीता भाभी ने गंभीर स्वर में कहा.

"चमत्कार को तो नमस्कार करना ही पड़ता है," तिलक बोला.

"चमत्कार को नमस्कार करने वाले अशिक्षित, अंधविश्वासी तथा धर्मांध होते हैं." मैं ने दृढ़ता से कहा.

"यह तो आप की हठधर्मी है, भाई साहब," गीता भाभी ने बलपूर्वक कहा.

"संत सर्वेश्वरैया वास्तव में पहुंचे हुए संतमहात्मा हैं, उन्हें अलौकिक शक्ति प्राप्त है. चलो, चल कर स्वयं अपनी आंखों से देख लो. यह असंभव, अविश्वसनीय, अकल्पनीय चमत्कार वह मात्र केवल एक बार पूर्णमासी के दिन करते हैं. आठदस फीट ऊंची अग्नि लपटें उठती रहती हैं. संत सर्वेश्वरैया उन्हीं लपटों शिखाओं से प्रकट होते हैं भक्त जनों के लिए उपहार ले कर."

"असंभव...बिलकुल असंभव," ने ऊंचे स्वर में कहा.

"हम ने अपनी आंखों से चमत्कार देखा है. यह कानों सुनी नहीं आंखों देखी बात है."

"यह कैसे संभव हो सकता है?" मेरे स्वर में अविश्वास था.

"इस का स्पष्टीकरण एक बार के एक शिष्य ने किया था. उस के सार मास में एक बार, पूर्णमासी के संत केवल पंदरह मिनट के लिए शरीर त्याग देते हैं. फिर उन की आत्मा उस अग्निकुंड में प्रकट होती है. गीता वर्णित आत्मा के गुण याद हैं? इसे नहीं जला सकती, इस का प्रमाण को मिल जाता है."

"भाभी, आत्मावात्मा कुछ होती. आज के वैज्ञानिक युग में सारी बातें निराधार तथा निर्मूल हैं."

तिलक मौन हो कार चला रहा था. निर्जन मार्ग को देख कर मैं गया कि हम लोग मैसूर नहीं, सर्वेश्वरैया आश्रम जा रहे हैं.

"भाई साहब, मैं आप को महात्मा का एक रोचक प्रसंग सुनाती हूं. पूर्व अपेक्षा पश्चिम में विज्ञान की उन्नति हुई है. पश्चिम से भी व्यक्ति स्वामीजी के दर्शन करने आते एक बार स्वामीजी ने अमरीका से एक महिला को अपना चमत्कार दिखाया उस ने स्वामीजी से भेंट मांगी. स्वामीजी को शायद उस के अंतर में अविश्वास का आभास हो गया उन्होंने अपनी मुट्ठी हवा में उछाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन के हाथ में अमरीका की बनी एक घड़ी आ गई. उस पर मेड इन यू. एस. ए. स्पष्ट लिखा था. घड़ी का नंबर तथा कंपनी का नाम भी खुदा हुआ था."

"यह तो स्पष्ट रूप से स्वामीजी के हाथ की सफाई रही होगी."

"भाई साहब, पहले पूरी बात तो सुन लीजिए, वह अमरीकी महिला आश्चर्यचकित रह गई. पर आप की तरह उस के मन में भी अविश्वास था. अतः उस ने इस विषय में आगे जांचपड़ताल की.

वह अमरीका वापस गई. उस ने घड़ी की निर्माता कंपनी में जा कर पता लगाया कि वह घड़ी किस खुदरा व्यापारी को बेची गई. यह सूचना ले कर वह उस दुकानदार के पास गई. वह यह पता लगाना चाहती थी कि यह घड़ी किसी व्यक्ति को बेची गई थी? परंतु दुकानदार ने बताया कि यह घड़ी बिकी नहीं थी, बल्कि अमुक दिन से अकस्मात उस की दुकान से गायब हो गई थी. यह वही तारीख थी जिस दिन संत सर्वेश्वरैया ने वह घड़ी उस महिला को भेंट में दी थी.

अमरीकी महिला ने संत को यह सब तार द्वारा बताया. उस से अमरीका के अनेक समाचारपत्र तथा पत्रिकाओं में यह विलक्षण घटना प्रकाशित कराई. अब स्वामीजी की अमरीका में धाक जम गई है."

"तो वह अमरीका कब जा रहे हैं?" मैं ने हंसते हुए, उपहास भरे स्वर में पूछा.

"तो क्या आप को इस बात पर भी विश्वास नहीं?" भाभी के स्वर में घोर आश्चर्य था.

"जी, नहीं, मेरा मन यह कभी भी स्वीकार नहीं कर सकता कि स्वामीजी का कोई विश्वस्त, स्वामीभक्त भूत, प्रेत या जिन्न, पलक झांपते, पंदरह हजार मील दूर से, न्यूयार्क की एक दुकान से घड़ी चुरा कर ले आएगा."

"पर वह अमरीकी महिला झूठ क्यों बोलेगी? अमरीका के पत्र यह समाचार क्यों छापेंगे?"

"भाभी, यह सब प्रचार स्टंट है... केवल प्रचार मात्र है. हमें और आप को स्वामीजी तथा उस अमरीकी महिला के संबंधों के विषय में क्या पता? रहा इस समाचार के प्रकाशित होने का प्रश्न, तो क्या भारत और क्या अमरीका, हर देश में पत्रकारिता की एक बड़ी कमजोरी है

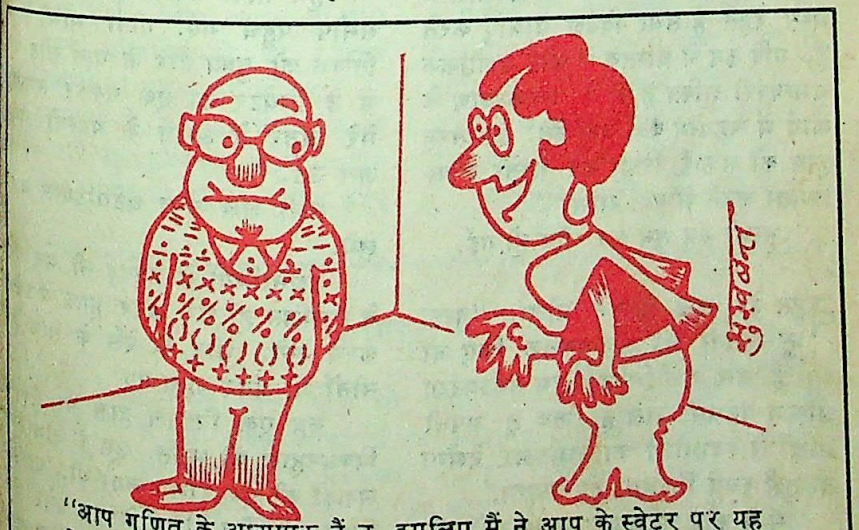

"आप गणित के अध्यापक हैं न, इसलिए मैं ने आप के स्वेटर पर यह डिजाइन बनाया है."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

और वह है सनसनीखेज समाचार प्रकाशित करना, चाहे वे आधारहीन ही क्यों न हों."

भाभी मौन हो गईं.

"भाभी, इस पूरी कहानी में एक बहुत बड़ा कमजोर पक्ष है, जिसे हमारा अंधविश्वासी मन देख नहीं पाता. जब वह महिला घड़ी वाले की दुकान पर गई तो उस दुकानदार ने यह कैसे बता दिया कि अमुक तारीख से वह विशेष घड़ी गायब है? क्या दुकानदार रोज अपने स्टाक की जांच करता था? जिस दुकान में हजारों घड़ियां हों, वहां स्टाक की जांच वर्ष में एक बार ही होती है, रोज नहीं."

"भैया, तुम मानो या न मानो, पर स्वामीजी हैं बड़े चमत्कारी संत."

"होंगे. उस से क्या अंतर पड़ता है? भारत में गोगिया पाशा, सरकार आदि विश्वविख्यात जादूगर हुए हैं. स्टेज पर अपने चमत्कार दिखा कर वे दर्शकों को दंग कर देते हैं. ये तथाकथित संतमहात्मा भी हाथ की सफाई दिखाने वाले जादूगरों से कम नहीं. पर आखिर इन चमत्कारों से कौन सा जनहित और जनकल्याण होता है? ये संत लोग भक्तों से चढ़ावा और भेंट ऐंठ कर स्वयं भोगविलास में मस्त रहते हैं तथा विदेश यात्राएं करते हैं. यदि इन में वास्तव में कोई अलौकिक चमत्कारी शक्ति है तो ये जनकल्याण के कार्य में सहयोग क्यों नहीं देते? इस तरह हाथ की सफाई दिखा कर सस्ती लोकप्रियता लूटने से क्या लाभ?"

भाभी यह सुन कर मौन हो गईं.

बहुत देर बाद तिलक बोला, "यार, तू इतनी देर से बकबक किए जा रहा है. बस पांच मिनट में हम सर्वेश्वरैया आश्रम पहुंचने वाले हैं. जब तू अपनी आंखों से स्वामीजी का चमत्कार देखेगा तो तुझे स्वयं विश्वास हो जाएगा."

मैं ने कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं की. पर मन ही मन मैं ने एक कटु निर्णय कर लिया. मैं सतर्कता प्रक्रिया का विशेषज्ञ हूं. मैं अपराध की जांच कर के अपराधी को पकड़ने में मैं सिद्धहस्त हूं. इस विषय पर मैं भाषण भी देता हूं. मैं स्वामीजी के इस तथाकथित चमत्कार का रहस्योद्घाटन कर के ही रहूंगा.

अगले पांच मिनट में हम तीनों सर्वेश्वरैया आश्रम पहुंच गए. एकांत जनजीवन से दूर वह रमणीक स्थान था. काफी बड़े क्षेत्र में बागबगीचे और कुंज तथा खोपरे के वृक्ष लगे थे.

बीच में एक पीली सी कोठी थी.

आश्रम में दर्शनार्थियों की बड़ी भीड़ थी. आश्रम के बाहर कारों का जमघट था. दूर पास से काफी लोग आए हुए थे. लुंगी तथा बनियान पहने श्याम रंग के व्यक्तियों का चारों तरफ जमघट था.

स्वामीजी के अग्निआरोहण समारोह में पंदरह मिनट शेष थे, अतः हम तीनों बगीचे में टहलते रहे.

मैं ने आश्रम का सूक्ष्म निरीक्षण किया. दाहिने कोने में एक विशाल थियेटर सा बना था. गीता भाभी ने बताया कि स्वामीजी का अग्निआरोहण वहां होने वाला है.

हम तीनों उस विशाल थियेटर के समीप पहुच गए. गीता भाभी ने तिलक को मुख्य द्वार के पास छोड़ा. मैं ने थियेटर का एक चक्कर लगाया. मेरे अंतर में आशा के सहस्त्रों दीप जल उठे.

तभी शंख तथा घंटेघड़ियाल बजने लगे.

दर्शनार्थियों में भगदड़ सी मच गई. वे उत्तेजित हो कर अंदर हाल में प्रवेश करने लगे. भीड़ के रेले के साथ हम तीनों भी अंदर पहुंच गए.

वह एक विशाल हाल था, एकदम पिक्चरहाल की भांति. उस के बीचोंबीच लकड़ी की एक रेलिंग लगी थी. दर्शनार्थियों की भीड़ रेलिंग के इस ओर थी. रेलिंग के उस ओर हाल के अंतिम छोर पर एक विशाल सा हवनकुंड बना था.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था जिस में ढेर सी सूखी लकड़ियां और कुंड से अग्नि की समिधा जल रही थी. कुंड से अग्नि की लपटें सातआठ फीट ऊंची उठ रही थीं.

हाल के उस ओर लड़की के रेलिंग के साथसाथ स्वामीजी के शिष्य प्रहरियों की भांति पंक्ति बनाए खड़े थे और किसी भी दर्शक को उस लकड़ी की सीमा रेखा के पास नहीं आने दे रहे थे.

मैं भीड़ में धक्कमधुक्का करते हुए लकड़ी की रेलिंग तक पहुंच गया. परंतु शीघ्र ही उन प्रहरियों ने मुझे वहां से खदेड़ दिया.

रेलिंग के समीप ही एक संगीत मंडली बैठी थी. मृदंग, मंजीरे, शंख तथा अन्य वाद्ययंत्रों का शोर बढ़ता जा रहा था.

दर्शनार्थियों के हृदय की धड़कनें तेज होती जा रही थीं.

वह बहुत बड़ा विशाल हाल था. छत भी काफी ऊंची थी. परंतु वहां मेरा दम घुटने लगा. एक तो विशाल जन-समुदाय, फिर विशाल हवनकुंड में जलती अग्नि, गरमी के कारण मुझे पसीना आ गया.

बाहर गोधूलि की बेला के आगमन के कारण तरल सा अंधकार छा गया था, अंदर हाल में भी अंधेरा व्याप्त हो गया था. केवल अग्निशिखाओं की रक्तिम आभा प्रकाश का सृजन कर रही थी.

अनायास मैं ने देखा कि हाल के अंतिम छोर पर, हवनकुंड के बाईं ओर की खिड़की खोल दी गई थी. शायद हाल के उस भाग में अवस्थित धुआं तथा उष्मा भर गए थे.

मैं प्रसन्नता से नाच उठा. खुली खिड़की मेरी सफलता की दुंदु भी बजा रही थी.

मैं भजनकीर्तन में मस्त, आगत चमत्कार की आशा में खड़ी उस अंध-विश्वासी भीड़ में से निकल कर हाल से बाहर आ गया. मैं तेजी से थियेटर की बाईं ओर गया. खुली खिड़की के ठीक सामने एक वृक्ष था. मैं ने जूते खोले और लपक कर उस पर चढ़ गया. वृक्ष की प्रथम डाल पर चढ़ते ही मुझे हाल के अंदर हवनकुंड के इस ओर का दृश्य स्पष्ट दिखाई देने लगा.

हाल के अंदर भक्तों की जयजयकार तथा वाद्ययंत्र के संगीत का शोर गूंज रहा था. प्रतिपल अंधेरा गाढ़ा होता जा रहा था.

संतजी के प्रहरियों ने तभी हवनकुंड में ढेर सारी लकड़ियां तथा सामग्री झोंक दी. अग्नि की भूखी शिखाएं अपनी लाल-लाल जीभें लपलपातीं हाल की छत की ओर उठने लगीं.

तभी मुझे वास्तविक चमत्कार के रहस्य के दर्शन हो गए. शायद स्वामीजी के शिष्यों ने असावधानी से काम लिया था. शायद उन्हें इस की कल्पना भी नहीं होगी कि कोई बौद्धिक व्यक्ति यहां आ कर उन के इस तथाकथित चमत्कार का परदाफाश करने का प्रयास भी करेगा.

हवनकुंड के पीछे से, फर्श के अंदर

निगाहों में

निगाहों में अंधेरे के सिवा कुछ भी नहीं लेकिन,
तफक्कुर में जमाले सुबहे ताबां ले के आया हूं!
सिवा इस के अब ऐ 'आजाद,' मेरा बस कहां तक है,
अंधेरी रात में जिक्रे चिरागां ले के आया हूं!

—जगन्नाथ आजाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से लाल रंग की एक सीढ़ी धीरेधीरे ऊपर आने लगी. फर्श से लगभग चारपांच फुट ऊपर उठ कर वह स्थिर हो गई. तभी फर्श के नीचे से (जहां से सीढ़ी निकली थी) केवल एक लंगोटा पहने, सर्वथा नग्न एक संत धीरेधीरे सीढ़ी पर चढ़ने लगा. उस के सीधे हाथ में एक थाली थी.

अगले ही क्षण घोर निनाद गूंज उठा. स्वामी सीढ़ी के अंतिम डंडे पर पहुंच कर ठिठका. फिर उस ने बिजली की सी गति से बाएं हाथ से थाली में से वस्तुएं उठाउठा कर हाल के दूसरे भाग में खड़े दर्शनार्थियों की ओर फेंकनी प्रारंभ कर दीं.

हाल में चीत्कार गूंज उठा. सांप्रदायिक दंगे जैसी उस स्थिति की कल्पना मैं बाहर पेड़ पर चढ़ा भी कर सकता था. दर्शक स्वामीजी द्वारा फेंके गए प्रसाद-स्वरूप उपहारों को लूटने में व्यस्त हो गए होंगे.

कुछ क्षण में वह सीढ़ी स्वचालित सी नीचे खिसकने लगी. स्वामीजी उस के अंतिम डंडे पर खड़े थे. पलक झपकते ही वह भूमिगत हो गए.

मैं वृक्ष से नीचे उतर आया. जूते पहन कर मैं हाल के मुख्य द्वार पर पहुंच गया. कुछ लोगों को प्रसाद मिल गया था. वे अभिभूत से स्वामीजी की जयजयकार करते हाल से निकल रहे थे.

मुझे वहां में देखे हुए 'मोलिन रू' शो की याद आ गई. उस में भी ऐसे ही एक ग्लास टैंक स्टेज के नीचे से निकलता और शो समाप्त होते ही फिर से स्टेज के नीचे चला जाता था.

एक तो हाल में अंधेरा, फिर मन में घोर अंधविश्वास का अंधकार. अग्नि की लाल लपटों के पीछे से लाल रंग की सीढ़ी अदृश्य हो जाती है. केवल स्वामीजी दिखाई देते हैं. लगभग चालीसपचास फीट दूर से देखने पर स्वामीजी तथा लपटों के बीच का अंतर नष्ट हो जाता है. फिर विज्ञान का नियम है कि गरमी के कारण 'ओब्जेक्ट' पास आ जाता है. जून की गरमी में कोलतार की सड़क पर चलते लगता है जैसे अगले कुछ कदमों पर पानी बिखरा पड़ा है, पर वास्तव में वह पानी ही होता है.

कितने वैज्ञानिक ढंग के चमत्कार से स्वामीजी ने जनता को मूर्ख बनाया हुआ था.

मैं ने देखा कि तिलक तथा गोपी बेहद खुश, किंतु भीड़ में मुझे तलाशते हुए हाल के बाहर चले आ रहे हैं.

मुझे देखते ही वे दोनों बारीबारी से चहक पड़े.

"अरे, तुम तो बड़ी सफाई से बाहर आ गए. देख लिया न अपनी आंखों से यह अद्वितीय चमत्कार? अब तो विश्वास हो गया होगा?" तिलक गर्व से बोला.

"मुझे तो स्वामीजी की यह चांदी की प्रतिमा हाथ लगी. संकेत रूप से मुझे उन का आशीर्वाद मिला है. मैं तो आज से स्वामीजी की शिष्या बन गई हूं," गोपी भाभी आदर भाव से बोलीं.

"तुम्हें कुछ मिला, यार?" तिलक ने उत्सुकतापूर्वक पूछा.

"हां, मुझे भी एक महान उपलब्धि हुई है."

"क्या?" दोनों ने समवेत स्वर में पूछा.

"घर चलो, वहीं शांतिपूर्वक कुछ विस्तार से बताऊंगा."

चापलूसी का प्याला

चापलूसी का जहरीला प्याला आप को तब तक नुकसान नहीं पहुंचा सकता जब तक कि आप के कान उसे अमृत समझ कर न पी जाएं.

—प्रेमचंद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐटेक्स्

सौंदर्य प्रसाधन

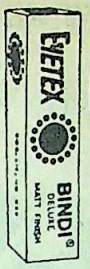

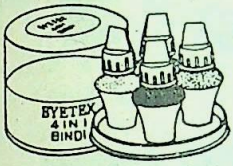

ARAVIND LABORATORIES MADRAS-600 033

आपके घर की लक्ष्मी...

- सुन्दर
- मजबूत
- बे आवाज

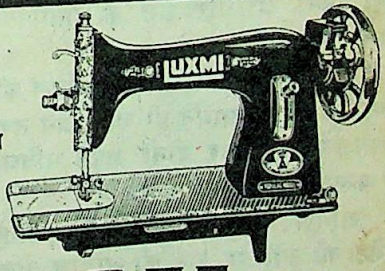

LUXMI सिलाई मशीन

निर्माता :
मैसर्स सी. आर. ऑलक एण्ड सन्स लि०, लुधियाना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नीरू अनिल को देख कर चौंकी. दोनों की आंखें मिलीं और फिर नीचे झुक गईं, लेकिन...

छोटी मुलाकात

कहानी • सुनीलकुमार श्रीवास्तव

गरमी की छुट्टियों में नीरू अपनी भाभी के पास शहर आई थी, गांव से तमाम इरादे ले कर, सपनों के सिंदूरी महल बनाए थे उस ने. वह अपनी मां के पास गांव में ही रहती थी. तभी उस की सगाई अनिल के साथ पक्की हो गई थी. विवाह अगले साल होने वाला था. अनिल इंजीनियरिंग अंतिम वर्ष का छात्र था. वह शहर में अपनी मौसी के यहां रहता था और उस के मातापिता दूसरे शहर में.

नीरू की भाभी का घर अनिल की मौसी के घर के सामने ही था. अब तक अलगअलग रह कर दोनों अपने भविष्य की कल्पना अकेले करते थे.

अनिल कालिज जाने के लिए लोहे के गेट को खोलता, खट की आवाज नीरू के दिल को धड़का देती. वह घर में कोई काम करती, लेकिन मन इधर ही लगा रहता कि कब गेट खुलता है, कब बंद होता है. जैसे ही सुबह सवा नौ बजे गेट खट से खुलता, नीरू का मासूम हृदय तेजी से धड़कने लगता. वह भाग कर कोठे पर पहुंचती और चोरीचोरी निहारती. अनिल गेट को बंद कर के अपनी डायरी को साइकिल के कैरियर में लगाता. पता नहीं यह जानबूझ कर करता था या आदत के अनुसार. साइकिल के स्टैंड को पैर से सीधा कर के एक तिरछी नजर सामने मकान पर डालता और फिर अगेर पीछे मुड़े पैडिल पर पांव मारने लगता.

नीरू उसे तब तक तेज निगाहों से देखती रहती जब तक कि गली के मोड़ पर मुड़ न जाता. फिर कुछ सोचती हुई आ कर स्टोव पर चढ़ी पतीली को बड़ी घबड़ाहट से संभालती कि कहीं भैया भाभी ने हमारी चोरी तो नहीं देखी.

दिन भर नीरू बस अनिल के ख्यालों में डूबी रहती. किसी तरह बेचैनी में शाम गुजरती. अपने को वह कभी किसी कहानी की नायिका मानती, तो कभी फिल्मी कहानी की हीरोइन: बस विचारों में ही खोई रहती. गेट पर खट की आवाज हुई, दिल धक से हुआ और पीछे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुड़ कर खिड़की में से परदे का सहारा ले कर झांका, दूध वाला था. उस ने एक गहरी सांस ली और परदे को अनमने ढंग से छोड़ कर अलग हो गई.

घड़ी ने चार बजाए. उस की हृदय की गति तेज होने लगी और पौने पांच बजते ही वह छत पर पहुंची और बड़ी बेसब्री से इंतजार करने लगी. कभी गली के मोड़ को देखती, कभी गेट को. किसी साइकिल को आती देख कर उस की उत्सुकता बढ़ने लगती, लेकिन वह उस के कपड़ों से भली भांति परिचित थी.

करीब दस मिनट बाद उस को अनिल दिखाई दिया. उस की शर्ट का ऊपरी बटन खुला था. शायद गरमी की वजह से खोल रखा था. घुंघराले बाल उस के माथे पर कुंडली मारे लटक रहे थे. चेहरे पर चमकते पसीने से मालूम होता था कि काफी थका है. नीरू का जी चाहा कि भाग कर जल्दी से उस का पसीने से चमकता हुआ चेहरा अपने हाथों से पोंछ दे, लेकिन मन मसोस कर रह गई. अनिल ने ऊपर नजर उठाई. नीरू से नजर टकराई. वह एकटक उसे देखती रही. अनिल ने अचकचा कर अपनी निगाहें नीची कर लीं. नीरू उसे तब तक देखती रही जब तक वह गेट बंद कर के अंदर दाखिल न हो गया.

रात में भैयाभाभी आपस में जब नीरू की शादी के बारे में सलाह मशवरा करते तो वह अपनी चारपाई पर चुपचाप लेटी बातें सुनने की कोशिश करती. बातों में अनिल का नाम सुन कर वह एकदम रोमांचित हो जाती.

भैया हमेशा ही उस की तारीफ किया करते, "घर बैठे इतनी आसानी से अनिल जैसा लड़का मिला है! लगता है, हमारी आधी चिंताएं दूर हो गईं. बस रिजल्ट निकलने दो, फिर देखो, अनिल को कितनी अच्छी नौकरी मिलती है."

घर जाने का आग्रह करने पर अनिल ने नीरू को अपनी ओर खींच लिया... नीरू ने कोई विरोध न किया...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नीरू इन बातों से बहुत ही प्रभावित होती. हर समय घर के लोग उस के गुणों का बखान करते. पड़ोस की मीरा चाची भाभी से जैसे सिफारिश के तौर पर कहतीं, "बहन, लड़का तो तुम ने बहुत माकूल ढूंढ़ा. नीरू और अनिल की जोड़ी खूब जंचेगी. अब जल्दी से कर डालो शादी."

पिछले सोमवार पड़ोस के पिंकू का जन्म दिन था. वहां पर महिला मंडली में नीरू और अनिल की शादी का जिक्र छिड़ गया. नीरू उस समय अपने को बड़ी अकेली महसूस कर रही थी. बात करते समय औरतें नीरू को एक नजर देख भी लेतीं. नीरू मारे शर्म और ग्लानि से मानो जमीन में धंसी जा रही थी. सभी की निगाहें उस की ओर केंद्रित थीं, वही बातों का केंद्र बनी थी. दिल चाहा कि वहां से उठ कर भाग जाए लेकिन मन ही मन उसे भी बातों में रस आ रहा था. निगाहें नीची किए वह सुनती और मादक विचारों में उलझती जाती.

नीरू जितना ही अनिल के बारे में सुनती उतना ही उस की दिलचस्पी बढ़ती. उसे उस के ऊपर बहुत विश्वास आता जा रहा था. उस के प्रति आत्मीयता बढ़ती जाती. जाने क्यों इतना प्रेम अनिल के लिए समाता जा रहा था. इतने पास और संभव होते हुए भी आज तक दोनों कभी आमनेसामने एकदूसरे से मिले नहीं थे. मन में अकसर यह इच्छा उठती कि कभी सामने मिलें, बात करें, ज्यादा नहीं तो एक नजर से देख ही लेंगे और फिर बुरा ही क्या है? जिस के साथ जीवन भर का बंधन हो उस से बात भी न की जा सके, मिल भी न सकें? उस समय इन सब का क्या महत्त्व रह जाता है जब समय गुजर जाए, कुछ कर सकने की स्थिति न रह जाए. लेकिन हिम्मत कभी नहीं पड़ती. जितना उत्साह था, उतना ही डर भी कि कहीं किसी ने देख लिया तो? तो बवंडर खड़ा हो जाएगा. इसी को ध्यान में रखते हुए अनिल और नीरू ने कभी ऐसे कदम नहीं बढ़ाए.

मौसीजी नीरू के घर उस की भाभी के पास कोई काम होता तो चली जाया करती थीं और नीरू भी कभी दोपहर के समय मौसीजी के यहां आ जाती थी. उस समय जब अनिल कालिज में होता या घर से कहीं बाहर होता था. इस बात का पहले वह अपने घर में ही पता लगा लेती थी. मौसीजी उसे बहुत स्नेह करती थीं.

अगर कभीकभार नीरू उन के काम में शिष्टाचारवश मदद देने को उठती तो प्यार से डांट देती थीं, "अरे, यह क्या करती हो? जाओ, बैठो, अभी अच्छा नहीं लगता."

ज्यादा देर उसे बैठने भी नहीं देती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थीं, क्योंकि आसपड़ोस वालों की बातों का भी डर रहता था कि महल्ले वाले कल को यह न कहने लगें कि वह तो पहले से आतीजाती थी.

एक दिन मौसीजी मोनी के स्वेटर के लिए ऊन खरीदने बाजार गई थीं. घर में केवल अनिल ही था. मोनी स्कूल पढ़ने गई थी. वास्तव में अनिल उस दिन जल्दी ही कालिज से आ गया था. उस समय दोपहर का समय था. सभी लोग अपनेअपने आफिस वगैरा गए हुए थे. बाहर गली में सन्नाटा सा लग रहा था. नीरू घर में बैठी एक पत्रिका पढ़ रही थी. मन हुआ कि मौसीजी के पास हो आए, यही सोच कर वह मौसीजी के घर की ओर चल पड़ी. गेट का गेट खोला.

जैसे ही अनिल कालिज जाने के लिए गेट खोलता नीरू का मासूम दिल धड़क उठता... वह कोठे के छज्जे पर से उसे चोरीचोरी निहारती...

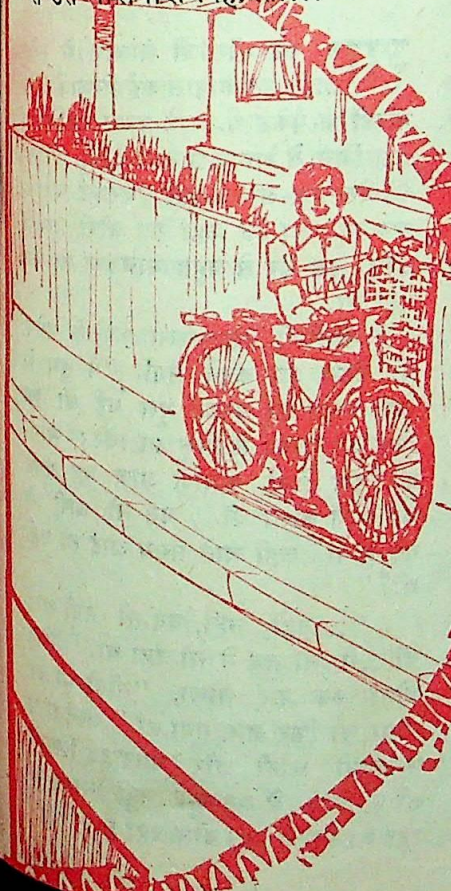

खट की ज्यों ही आवाज हुई, अनिल मसहरी पर लेटेलेटे सामने लगे बड़े से ड्रेसिंग टेबल के शीशे में देखने लगा. वह ड्रेसिंग टेबल इस ढंग से रखी थी कि बाहर से आने वाले व्यक्ति का प्रतिबिंब उस शीशे में पहले ही दिख जाता था. अनिल गेट बंद कर के अंदर आती हुई नीरू को देख कर एकदम से चौंक पड़ा. हाथ में ली हुई 'सरिता' को कभी देखता, फिर कभी शीशे को. इतने में नीरू कमरे के दरवाजों के बीच आ कर खड़ी हो गई.

नीरू अनिल को देख कर चौंकी. अनिल भी अपनी घबराहट को छिपाने का व्यर्थ प्रयास करने लगा. नीरू और अनिल की आंखें मिलीं और फिर नीचे झुक गईं. नीरू इस अप्रत्याशित मुलाकात के कारण सब भूल गई.

कमरे में चारों ओर ढूंढ़ती निगाहों से देखती, कांपती आवाज में बोली, "मौसीजी...नहीं हैं क्या?"

"वह बाजार गई हैं," अनिल जवाब दे कर नीरू के चेहरे की ओर देखने लगा.

वह असमंजस में पड़ गई कि वापस चली जाए या...

नीरू की चुप्पी और कुछ आगे कहने की स्थिति को देखते हुए स्वयं अनिल ने कहा, "बैठिए."

नीरू मसहरी के पास ही रखे सोफे पर सकुचाते और झिझकते हुए बैठ गई. इस समय उस की मनोदशा बड़ी ही दयनीय लग रही थी मानो सोफे में ही धंसी जा रही थी. अनिल को एक चोर निगाह से देख कर जल्दी ही आंखें इधर-उधर घुमा लीं जैसे किसी को ढूंढ़ रही हो. उस के मन में शायद किसी के आ जाने का डर बना था कि कहीं कोई आ न जाए.

दोनों में से अब कोई बातचीत करने में पहल नहीं कर रहा था. वातावरण काफी शांत मालूम हो रहा था. बस आंखें मिलतीं और झुक जातीं. आखिर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से आप जल्दी चले आए?" और उस के चेहरे की तरफ देखने लगी.

"हां, आज मौसीजी को ऊन लेनी थी, इसी लिए जल्दी आने को कहा था."

नीरू सोच रही थी कि आखिर अब क्या बोले. लज्जा और शर्म के कारण कुछ हिम्मत नहीं हो रही थी लेकिन फिर यह सोच कर कि पता नहीं यह अपने मन में क्या सोचें इसी लिए बोल पड़ी, "आप के इम्तहान कब तक होंगे?"

नीरू ने प्रश्न किया किंतु यह अनुमान नहीं लगा पा रही थी कि मैं क्या पूछ रही हूं. कहीं शर्म और भावावेश में गलत तो नहीं बोल रही हूं. वह खुद अपनेआप को संभाल पाने में असमर्थ हो रही थी.

"अभी कुछ पता नहीं," अनिल को शायद यह अच्छा नहीं लग रहा था. वह विचार कर रहा था कि यह समय औपचारिकता में ही बीत जाएगा. साथ ही अनिल यह भी सोच रहा था कि इन क्षणों में मर्यादा और शिष्टता को ध्यान रखते हुए सम्मान भी न गिरने पाए. कहीं कोई अनुचित शब्द न निकल जाए.

फिलहाल दोनों इस समय कठिन परीक्षा में थे. यदि एक प्रतियोगी, तो दूसरा निर्णायक और अगर दूसरा प्रतियोगी तो पहला निर्णायक. फिर करीब दस मिनट तक अनिल और नीरू आपस में बातें करते रहे. कभी मुसकराते, कभी नीरू शरमा कर आंखें झुका लेती, और दुपट्टे के छोर को अंगूठे में लपेटते हुए जवाब देती. इस दस मिनट की छोटी सी मुलाकात में शायद उन लोगों ने शब्दों से कम, लेकिन चेहरे के भावों से ज्यादा बातें की. दोनों के बीच एक गज की दूरी बराबर बनी रही.

घड़ी पर निगाह डालते हुए अनिल चाहे मन से या न चाहते हुए भी बोला, "मौसीजी अब शायद आ रही होंगी."

नीरू उस के कहने का मतलब समझ गई और सोफे से उठते हुए धीरेधीरे बोझिल कदमों से दरवाजे की ओर बढ़ी. दरवाज पर रुक कर नीरू ने अनिल को अतृप्त निगाहों से देखा. इन निगाहों में अनिल ने यह पढ़ने का प्रयास किया कि इस समय नीरू के लिए जाना बोझ की तरह लग रहा था. दूसरे, वह जानती थी कि रुकना ठीक नहीं है, लेकिन जाते भी नहीं बनता था.

अनिल और नीरू की आंखें फिर टकराईं और एक हलकी मुसकराहट के साथ, जिस में शायद बिछुड़ने की वेदना का भी थोड़ाबहुत मिश्रण था, वह जी को कड़ा कर के चली गई. अनिल उसी जगह से शीशे में देखता रहा, जब तक वह गेट को बंद कर के अपने घर में चली न गई. अनिल ने शीशे में से यह भी देखा कि नीरू ने गेट को बंद करते समय एक नजर शीशे पर डाली थी कि शायद कुछ दिख जाए, लेकिन उसे कुछ दिखाई नहीं दिया.

शाम को मौसीजी बाजार से लौट आईं. उन के पास कई लिफाफे और कपड़ों के पैकेट थे. एक डब्बा रंगबिरंगा था, जिस में शायद ऊन लाई थीं. मौसी को देख कर अनिल कुछ घबराहट महसूस कर रहा था कि कहीं यह चोरी खुल न जाए. इस डर से बहुत भौंचक्का सा लग रहा था.

मौसीजी पंखा चला कर के सोफे पर बैठते हुए कहने लगीं, "मैं तुम से जाते समय यह कहना भूल गई थी कि पिंकू की मम्मी से पिंकू का स्वेटर मांग कर रख लेना, क्योंकि आज वह अपने घर जाने वाली थीं. अब तो चली भी गई होंगी. कहीं जाते समय आई तो नहीं थीं?"

"...नहीं, नहीं, वह तो नहीं आई थीं...मैं तो तब से सो रहा था." फिर थोड़ा रुक कर बोला, "थोड़ी ही देर सोया था फिर जाग गया था." जल्दबाजी में अपनी चोरी और घबराहट छिपाने की कोशिश में वह खुद नहीं समझ पा रहा था कि मैं क्या बोल रहा हूं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मौसीजी अनिल के चेहरे से कुछ पढ़ने का प्रयत्न करती हुई बोलीं, "क्या बात है, तुम परेशान से लग रहे हो?"

"कुछ नहीं, दरअसल अभी सोते हुए एक डरावना सपना देख कर चौंक पड़ा था." अनिल ने बात संभालने की कोशिश की.

"धत् पगले, सपना देख के डर गया. अरे, अब तो तेरी शादी होने वाली है." हंसते हुए मौसी ने कहा और स्नेह से देखती हुई सामानों के बंडल खोल कर अनिल को दिखाने लगीं. अनिल सामान जरूर उलटपुलट रहा था, लेकिन मन में उथलपुथल हो रही थी. वह संयमित नहीं हो पा रहा था.

उसी रात में मौसीजी रसोई में खाना बना रही थीं. मोनी वहीं बैठ कर खाना खा रही थी. मोनी उन से कुछ बातें कर रही थी. उस के मुंह से अपना नाम सुन कर वह चौंक पड़ा. वह बगल वाले कमरे में बैठा पढ़ रहा था. उस का मन अनजाने ही बारबार चौकन्ना हो जाता. जब सुनने का प्रयत्न किया तो सुन कर उस के हाथपांव ठंडे होने लगे.

मोनी कह रही थी, "मम्मी, जब आप बाजार गई थीं तब नीरू भाभी आई थीं. वह अनिल दादा से बातें कर रही थीं."

मौसीजी का स्वर सुनाई दिया. वह बहुत धीरे से बोलीं, "दोनों कहां बैठे थे?"

"मैं ने देखा नहीं, मैं उस समय स्कूल से वापस आई थी. [illegible] और नीरू भाभी की आवाजें आ रही थीं. मैं अपना बस्ता बरामदे में ही छोड़ कर बाहर खेलने चली गई थी. अंदर जाती तो दादा खेलने के लिए मना कर देते," मोनी ने हंसते हुए कहा.

"मोनी, देख, यह बात किसी से कहना नहीं," मौसी ने उसे समझाते हुए कहा.

"क्यों मम्मी?" मोनी ने आग्रह के स्वर में पूछा.

आगे उस ने सुनने का प्रयत्न नहीं किया. किताब सामने खुली रखी थी. लेकिन किताब के काले अक्षर इस समय धुंधले दिखाई दे रहे थे. वह विचारमंथन में डूब रहा था. रात में खाना खाते समय मौसीजी से आंखें नहीं मिला पा रहा था. वैसे मौसीजी ने इस प्रकार का कोई व्यवहार नहीं किया कि जिस से उन के नाराज होने का पता चलता.

अनिल को इस बात से अब बहुत दुःख हो रहा था. उसे अपने पर बड़ी ग्लानि हो रही थी. वह अपने को कोसने लगा. पता नहीं कहां से आज जल्दी घर आ गया था. अगर समय से आता तो शायद ऐसा न होता. मैं ने तो इस के लिए सोचा भी न था. अपनी तरफ से ऐसा कोई काम भी नहीं किया था. अब मैं क्या करूं, जब वही कमरे में आ गई. क्रोध और आवेश में आ कर अब वह सारा दोष नीरू को दे रहा था. अगर वह उस समय न आई होती तो न यह सब

मुहब्बत की है...

अनगिनत लोगों ने दुनिया में मुहब्बत की है,
कौन कहता है कि सादिक न थे जजबे उन के.
लेकिन उन के लिए तशहीर का सामान नहीं,
क्यों कि वो लोग भी अपनी ही तरह मुफलिस थे.

—साहिर लुध्यानवी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बवाल होता. मैं आज वह मौसीजी की नजरों में गिरता. जाने मौसीजी हमारे बारे में क्या सोच रही होंगी कि हम दोनों किस प्रकार से मिले हों. तभी तो मोनी से पूछ रही थीं कि दोनों कहां बैठे थे?

गलती वह नीरू पर ही थोप रहा था. मैं कोई बुलाने गया था. अब कमरे में आ गई तो क्या मैं उस से बात भी न करूं? क्या बैठने को न कहूं? पता नहीं ऐसा करने पर वह मन में क्या सोचती? अब धीरेधीरे अनिल के गुस्से का रुख बदल रहा था. वह सारा दोष इस समाज को देने लगा. भला यह भी कोई नियम है. ऐसी भी क्या परंपराएं हैं. अरे, मैं ने बात की है तो अपनी होने वाली पत्नी से ही, किसी दूसरे की पत्नी से तो बात नहीं की. आज नहीं तो कल शादी भी हो जाएगी. वह, जिस से जिंदगी भर का साथ हो उस से क्या बोल भी न सकूं? यह भला कौन सा कायदा है. सारे लोग नीरू से बोलें, हंसेबतियाएं तो सब ठीक है, मैं ने जरा देर मिल कर बात कर ली तो इतना बड़ा बवंडर खड़ा हो गया. खैर, जो भी होगा अब देखा जाएगा. ज्यादा से ज्यादा यही तो कि नीरू से शादी नहीं होगी, न हो. हमें ऐसी शादी नहीं करनी है जिस में इस प्रकार की अड़चनें आ जाएं.

इस प्रकार के तर्कपूर्ण विचारों को सोचते हुए किसी निष्कर्ष पर अनिल न पहुंच सका और इस उथलपुथल में सो गया. फिर दोतीन दिन तक इसी प्रकार की बातों को सोच कर उस का दिमाग खराब हो जाता. उसे न तो नीरू की शक्ल अच्छी लग रही थी, न किसी से हंसनाबोलना. वह बड़ा शांत और खोया-खोया सा रहने लगा था.

जाने किस तरह नीरू को भी इस बात की खबर लग गई कि मौसीजी को हम लोगों के मिलने वाली बात का पता चल गया है. लेकिन मौसी ने न तो नीरू से पूछा था और न किसी से इस विषय में पता लगाने का प्रयास किया था. पहले दोतीन दिन तो उसे कुछ पता नहीं चला. समझा होगा कि शायद किसी को इस के बारे में मालूम न हुआ हो. लेकिन दोतीन दिन से वह अनिल के चेहरे को देख कर उसे कुछ शक हो रहा था कि कुछ गड़बड़ जरूर हो गई है. उस के दूसरे दिन उसे इस के बारे में मालूम हुआ और अनिल को देख कर उसे पूरा विश्वास हो गया.

ज्यों ही वह अनिल को देखती अनिल नजरें मिलने पर झट से आंखें नीची कर लेता था और चेहरा तब तक ऊपर नहीं उठाता जब तक या तो गेट के अंदर नहीं हो जाता या गली के मोड़ पर मुड़ नहीं जाता. एकाध बार फिर उस से निगाहें मिलाने की कोशिश की. लेकिन फिर वही अनिल की नाराजगी प्रकट करती हुई और अनजान सूरत देखती तो मन मसोस कर रह जाती. तब से नीरू का बुरा हाल था. उसे बड़ा डर लगने लगा था कि कोई कुछ पूछ बैठे तो क्या जवाब दूंगी.

रात में जब सोने के लिए लेटी तो आंखों में नींद नहीं थी. उसी विषय के बारे में सोच रही थी. 'मेरी कुछ समझ में नहीं आता मैं क्या करूं. अगर उस दिन मुझे पता होता कि मौसीजी बाजार गई हैं तो मैं न जाती और फिर कमरे के दरवाजे पर पहुंच कर जब वह सामने आ गए तो क्या बिना बोले चुपचाप लौट आती, यह तो कोई तुक नहीं थी. जैसे ही उन्हें दरवाजे से देखा वैसे ही अगर लौट पड़ती तो मन में पता नहीं क्या सोचते. यही कि अपनेआप पर बड़ा घमंड है, बात भी नहीं कर सकती, जरा देर रुक भी नहीं सकती. मैं तो बड़ी असमंजस में पड़ गई थी. क्या करती?

वैसे मैं अपनेआप तो बैठने नहीं गई थी. अब बैठने को कह रहे थे तो शिष्टाचार और सभ्यतावश बैठना ही चाहिए. उन्होंने ही बैठने को कहा था. अगर वह ऐसा न करते तो मेरी हिम्मत न पड़ती. सब उन्हीं की वजह से हुआ. उन को भी पता नहीं इतनी देर में क्या मिल गया. मैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब सामने भी न पड़ूंगी. मुझे उन की सूरत तक नहीं देखनी. अपने जी को कड़ा कर लूंगी."

नीरू भी इस प्रकार से सोचे बिना न रह सकी कि अगर दो शब्द बोल लिए तो कौन सा अपराध किया. बोली तो अपने पति से ही, किसी गैर आदमी से तो नहीं. हर तरह की अच्छीबुरी बात कहनीसुननी है उस से अगर आज दो मिनट बैठ कर बातें कर लीं तो कौन सा पहाड़ टूट पड़ा? यह लोग सब इसी तरह की बातों का बतंगड़ बना देते हैं. होगा, जो होगा सो देखा जाएगा.

इस विषय में मौसीजी के चिंतित न होने का कारण दूसरा ही था. दरअसल वह इस बात से उलझन में नहीं थीं कि अनिल और नीरू आपस में शादी से पहले मिले, बल्कि इस बात से परेशान हो रही थीं कि अगर यह बात अनिल के घर वालों को मालूम हो गई तो लोग क्या सोचेंगे? यही न कि अनिल और नीरू पहले भी कई बार मिले होंगे, अकसर मिलते रहते होंगे. उन के लड़के के कारण मुझे भी यह सब बर्दाश्त करना पड़ेगा. अगर जीजी ने यह अंदाजा लगाया कि नीरू अच्छे चरित्र वाली नहीं है तभी तो इस प्रकार की हिम्मत की या हमारा लड़का अनिल मौसी के पास रह कर उच्छृंखल हो गया हो तो क्या होगा.

अब मैं क्या करूं? तमाम बातों को सोचते हुए इसी बात पर संतोष किया कि अगर किसी को इस का पता न चले तभी ठीक है, वरना मुझे भी साफसाफ बताना पड़ेगा. हालांकि इस से मुझे बहुत दुख होगा.

वह थोड़ाबहुत अनिल और नीरू के ऊपर भी बड़बड़ाई थीं, "अनिल को मैं ऐसा नहीं समझती थी कि इस प्रकार का कदम उठाएगा. मैं उसे बहुत सीधा समझती थी. मुझे बहुत विश्वास था अनिल पर. लेकिन अनिल ने सब पानी फेर दिया. खुद भी बदनाम होंगे और हमें भी बदनामी मिलेगी सो अलग से. अरे, जरा देर की ही तो बात थी. समझदारी से काम लिया होता."

नीरू को भी बुराभला कहने से नहीं छोड़ा. पता नहीं क्या जल्दी पड़ी

जन्मोत्सव, विवाह
व अन्य
शुभ अवसरों पर

पुस्तकें भेंट में दीजिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थी? जाने कहां से आ टपकी? थोड़ी देर बाद ही आ जाती. मैं नीरू से बड़ा स्नेह करती थी, कितना प्यार था उस के लिए. उस ने भी हमारा कोई ध्यान न दिया. अब उस की भाभी से कहूंगी कि जल्दी से नीरू की शादी कर दो. ज्यादा दिन घर में रखना ठीक नहीं है.

अब अनिल ज्यादा समय पढ़ने में बिताता. लेकिन शायद मन तो नहीं लगता था फिर भी उसी में अपने को उलझाए रखने में एक सहारा महसूस होता था क्योंकि उतनी देर के लिए बाकी बातें भूल ही जाता था. अगर कुछ न होता तो लिखता ही रहता. खाने के समय खाना खा लेता था. अब न किसी से ज्यादा बात करता था और न पहले जैसा खुल कर हंसता, बोलता. एक तरह से खिचांखिचा रहने लगा था.

मौसीजी उस के अजीब व्यवहार को समझ नहीं पा रही थीं. उन के मन में चिंता बढ़ती जा रही थी.

करीब एक हफ्ते बाद शाम के समय अनिल मेज पर सरिता पढ़ रहा था. थोड़ी देर बाद ऊब कर 'सरिता' बंद कर दी. जेब से एक गोली निकाली और खा कर पानी पीने लगा.

मौसीजी ने पूछा, "अनिल, क्या बात है, तुम्हारी तबीयत तो ठीक है?"

"इस समय सिर दर्द कर रहा है," अनिल ने जवाब दिया.

मौसीजी कुरसी खींच कर उसी के पास बैठ गईं और कहने लगीं, "तुम इधर कई दिन से काफी सुस्त लग रहे हो. क्या बात है?" यह कह कर उस के चेहरे की तरफ देखने लगीं, "शायद उस दिन वाली बात से परेशान हो, जब मैं बाजार गई थी?" कह कर प्रश्नसूचक निगाहों से अनिल की तरफ देखा, लेकिन वह कुछ बोल न सका. हाथ में पकड़े शीशे के गिलास के पानी को देखता रहा जो टेबल लैंप की रोशनी से खूब चमक रहा था.

मौसीजी ने समझाते हुए कहा, "देखो, अनिल, मैं तुम्हारे मन की बात जानती हूं. मैं ने इस के लिए तुम से अभी तक कोई जिक्र नहीं किया, लेकिन इधर तुम्हारी हालत देखते हुए मुझे कहना पड़ रहा है.

शायद तुम मुझे समझ नहीं पाए हो. तुम्हारे और नीरू के मिलने से मुझे कोई नाराजगी नहीं है. मुझे सोचना इस बात से पड़ता है कि अगर यह बात तुम्हारी माताजी तक पहुंच गई तो तुम्हीं बताओ वह क्या सोचेंगी, उन्हें कितना दुख होगा इस बात से. मैं यह नहीं चाहती कि तुम दोनों आपस में बात न करो. मैं तो चाहती हूं कि तुम दोनों को जिंदगी भर साथ रहना है. अगर अभी से एक-दूसरे के व्यवहार, आदतों और गुणों को जान लो तो यह तुम्हारे लिए ही नहीं, बल्कि दोनों के लिए अच्छा है. भला उस दिन अगर एकदूसरे के बारे में जान पाए, जब शादी हो चुकी हो तो क्या फायदा. बाद में एकदूसरे को यह न कह सको कि मुझे पहले नहीं मालूम था, वरना ऐसा न होता. इस तरह की कोई गलतफहमी न रहे.

"मुझे तुम दोनों को देख कर जितनी खुशी होती है कि मैं ही जानती हूं. तुम भी हमारे लड़के ही हो. हमें भी उतनी ही प्रसन्नता होती है. मैं यह चाहती हूं कि तुम दोनों हमेशा खुश रहो और जीवन में सुखी रहो. हां, थोड़ा समाज को भी देख कर चलना है कि कल को कोई किसी प्रकार की बात पर उंगली न उठाए, समझे. और फिर तुम इतने बड़े हो, शादी के लायक हो, तुम्हें खुद इन सब बातों को सोचना चाहिए..."

मौसी ने कब अपनी बात समाप्त की, अनिल को कुछ पता ही न चला. वह अब भी गिलास को सामने मेज पर रखे दोनों हाथों से पकड़े था. जब उसे होश आया तो देखा मौसीजी उठ कर जा चुकी थीं.

थोड़ी देर बाद उस ने देखा मौसीजी एक गिलास में दूध ला कर मेज पर रख गईं और खाना बनाने में व्यस्त हो गईं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनिल जब दूध पी चुका तो बड़ा आराम महसूस कर रहा था. उसे लग रहा था कि बहुत बड़ा बोझ उतर गया हो.

एक दिन घर में सब लोग फिल्म देखने गए थे. अनिल घर में अकेला था. नीरू के यहां उस की भाभी अंशू को ले कर अस्पताल गई थी. अनिल अपने कमरे के दरवाजे पर खड़ा था. नीरू अकेलेपन के कारण खिड़की के पास आ कर बैठ गई थी. अनिल ने हाथ के इशारे से उसे बुलाया. वह खिड़की के आधे परदे को हटा कर इधर देखने लगी. पहले नीरू ने आनाकानी की, लेकिन दोबारा उस के आग्रह करने पर गेट खोल कर अंदर आ गई.

दरवाजे पर आ कर खड़ी हो कर पूछा, "क्या है, क्यों बुलाया है?"

अनिल ने सोफे पर बैठते हुए जवाब दिया, "यहां आओ?"

नीरू खड़ी ही रही. अनिल ने हाथ पकड़ कर उसे पास वाले सोफे पर बैठाते हुए पूछा, "क्या बात है, नाराज हो क्या?"

वह हाथ छुड़ाते हुए बोली, "मैं क्यों नाराज हूं, नाराज तो आप ही इतने दिनों से हैं, ठीक से देखते भी नहीं."

अनिल ने मुसकराते हुए जवाब दिया, "दरअसल मैं मौसीजी के कारण परेशान था. परसों मौसीजी ने मुझे समझाते हुए सारी बात बता दी है. उन के मन में किसी प्रकार का गुस्सा नहीं है. मुझे समझा रही थीं."

"नीरू ने रुखाई से पूछा, "क्या समझा रही थीं?"

"यह भी कोई बताने की बात है. यही कह रही थीं कि जरा सोचसमझ कर चला करो और क्या, ठीक ही तो कह रही थीं."

अनिल की बात सुन कर नीरू ने संतोष की सांस ली, "मुझे तो बड़ा डर लगने लगा था."

"तो क्या अब डर नहीं लगता," उस ने चुटकी ली.

"अपनी कहो, क्या आप को डर नहीं लगता," नीरू ने मुसकराते हुए शरारत के स्वर में कहा, "इस समय मुझ से कोई पूछेगा तो कह दूंगी कि इन्होंने ही मुझे बुलाया था."

अनिल ने नहले पर दहला मारा, "मैं कह दूंगा, अपनेआप आई थी. देख लो, हमारे ही घर में बैठी हो."

"तो मैं जा रही हूं," उठते हुए एकदम नीरू बोली.

"ऐ, जाती कहां हो?" हाथ पकड़ कर अपनी ओर खींच लिया. एकाएक अनिल ने उसे अपने बाहुपाश में भर लिया. नीरू ने कोई विरोध नहीं किया. इस समय दो प्रणयी सुधबुध खो कर समाज की सब सीमाओं से अलग हो कर एकदूसरे से आलिंगनबद्ध थे. ऐसा लग रहा था कि अब किसी का न तो डर रह गया, न किसी प्रकार की चिंता. कुछ ही क्षणों में नीरू को होश आया तो अपनेआप को छुड़ा कर अपने घर भाग गई. ●

मंजिलें तै हुईं...

तेरी याद से हुए महव हम,
तेरे जहन से हम उतर गए.
ये भी मंजिलें थीं कि तै हुईं,
ये भी मरहले थे गुजर गए.

—जगन्नाथ आजाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चमड़ी के रोगों के लिए

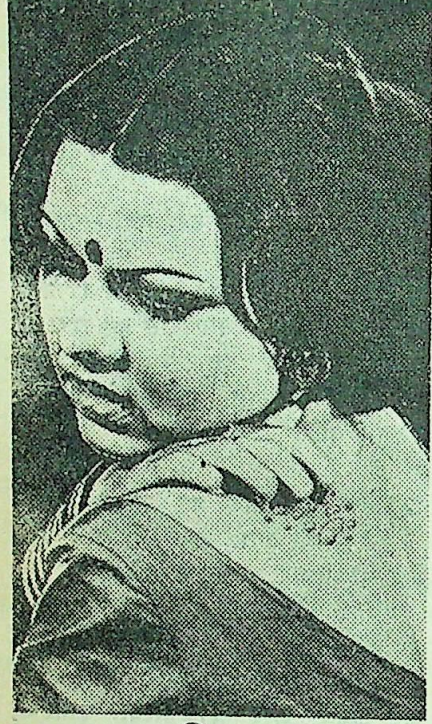

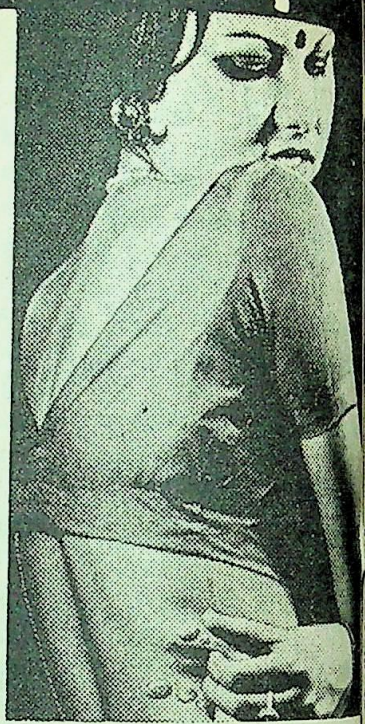

गहराई तक जानेवाला मलहम-अमृतांजन डर्मल ऑइंटमेंट

चमडी के साधारण मलहम, चमडी के भीतर गहराई तक नही जा सकते. परंतु अपने अनोखे सम्मिलित पदार्थों के अत्यंत असरदार गुणो के कारण, अमृतांजन गहराई तक जा सकता है. यह चमड़ी के रोगों की जडों तक जाकर उनको मिटाता है और चमडी को फिर से स्वस्थ बनाता है दाद, खाज और चमड़ी की अन्य बीमारियों को दूर करने के लिए अमृतांजन डर्मल ऑइंटमेंट एक आदर्श दवा है. आज ही एक डिबिया खरीदें!

अमृतांजन लिमिटेड, १४/१५ लज़ चर्च रोड, मद्रास ६०० ००

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बारसीलोना

(पृष्ठ 73 से आगे)

शामिल किए गए हों.

हमें जो भाग दिखाया गया था उसी के एक कक्ष में चौदहवीं सदी का बना एक राजसिंहासन भी है. भव्य वास्तुशिल्प से युक्त इस राजसिंहासन कक्ष का महत्त्व इस की बनावट या विशालता के ही कारण इतना नहीं, बल्कि इसलिए भी है कि राजसिंहासन कक्ष इतिहास के पन्नों पर भी अति उल्लेखनीय और चर्चित रहा है. इसी राजसिंहासन हाल में ही अमरीका की दुर्गम यात्रा से वापस लौटे कोलंबस ने स्पेन के केथोलिक सम्राट फर्डीनांड से मुलाकात की थी. यहीं उस सम्राट फर्नेनांड को अन्य मूल्यवान भेंटों के साथ चार अमेरिकन मूल निवासी रेड इंडियनों को भी उपहारस्वरूप भेंट किया था.

दिन के एक बजते न बजते हम लोग एक व्यस्त सड़क के साफसुथरे होटल की दूसरी मंजिल पर आ कर बैठ चुके थे. अधिकांश यात्रियों के पास उन का 'पैक्ड-लंच' था. हम लोग भी इस प्रकार के 'लंच पैकेट' की व्यवस्था कर के चले थे. यूरोप में इस प्रकार के 'लंच पैकेट' का बहुत प्रचलन है. ये लंच पैकेट जिन होटलों में यात्रियों के रहनेठहरने की व्यवस्था होती है, तैयार करा लिए जाते हैं. रेस्तोरां की अपेक्षा यह प्रबंध कहीं अधिक अच्छा भी रहता है. यह कम खर्चीला होता है.

यद्यपि स्पेन में खानेपीने की वस्तुएं अन्य यूरोपीय देशों की अपेक्षा कहीं सस्ती पड़ती हैं, फिर भी भारी संख्या में आने वाले पर्यटकों के कारण, होटलों के कमरे तथा खानेपीने की वस्तुओं के दाम कुछ ऊपर चढ़ने आरंभ हो जाते हैं. स्पेन के प्रति अन्य विदेशी पर्यटकों की उत्सुकता के कारण पर्यटन संबंधी व्यवसाय स्पेन में अति प्रचलित है और शायद पर्यटन स्पेन का विदेशी मुद्रा पाने का अच्छाखासा साधन भी बन चुका है.

हम लोगों ने संतरे के रस के ठंडे पेय के साथ अपना दोपहर का ठंडा भोजन समाप्त किया था. यद्यपि पनीर और सासेज सैंडविच के साथ चाय या काफी कहीं उपयुक्त ठहरती, किंतु इस समय हलकी गरमी महसूस होने लगी थी और धूप की तेजी कुछकुछ परेशान कर देने वाली थी. यहां पीने के पानी से कहीं अधिक सस्ता फलों का रस हुआ करता है. यूरोपीय देशों के लिए स्पेन एक बहुत बड़ा फलों का बाजार है, जिस प्रकार हमारे भारत में एक बगीचे की सज्जा आम, केले और अमरूदों के पेड़ों के बिना पूरी नहीं होती, उसी प्रकार स्पेन में भी एक बगीचे की कल्पना संतरे, मौसमी, खूबानी और आड़ू के बिना नहीं की जा सकती.

फल ही फल

दिन का दो से चार बजे तक का समय हमारा अपना था. चाहे तो होटल में चाय, काफी या ठंडे पेय पीते हुए गुजार दें, या फिर वहां बारसीलोना के बाजार देखने की गरज से कुछ छोटीमोटी खरीदारी का विचार अपना लें. हम लोगों ने दूसरे विचार को ही प्रधानता दी.

पश्चिम जरमनी में बहुत लोगों के मुंह से स्पेन के चमड़ा उद्योग के बारे में सुना था. कोस्टा ब्रावा के छोटेछोटे बाजारों में भी चमड़े की जाकेट, पर्स और चमड़े की बनी चीजें झूलती, सजी देखी थीं. सोचा, क्यों न एक बार बारसीलोना में भी इन चीजों को देखापरखा जाए? उस क्षेत्र में जिस ओर हम निकले थे, केवल एक सुपरमार्केट की ऊंची इमारत थी. यह बारसीलोना की बहुचर्चित सुपरमार्केट पश्चिम जरमनी या इंगलैंड के किसी भी साधारण स्तर के सुपरमार्केट से अधिक न रही होगी. यदि कहा जाए कि स्पेन अभी अन्य पश्चिमी यूरोपीय देशों की भांति आधुनिक शैली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की साजसज्जा या दुकानों के रखरखाव में काफी पीछे है तो गलत न होगा. जूते आदि यहां पश्चिम जरमनी की अपेक्षा कहीं अधिक सस्ते थे, किंतु उन की बनावट तथा ऊपरी साजसज्जा पुराने फैशन को ले कर की गई थी.

महिलाएं व्यस्त

महाद्वीप के अन्य देशों की भांति स्त्रियां दुकानों, कार्यालयों तथा बाहरी कार्यों में व्यस्त नजर आती हैं, पर उन की संख्या उतनी अधिक नहीं जितनी फ्रांस, जरमनी और इंगलैंड की स्त्रियों की है. किंतु जो चीज हमें यहां सब से ज्यादा प्रभावित करती थी, वह था यहां के लोगों का मृदु व्यवहार. किसी भी चीज के पूछने पर, स्त्री या पुरुष दुकान कर्मचारी का 'सी सी सैन्योर, सी सी सैन्योरा (हांहां, श्रीमान, श्रीमती) का स्वीकारात्मक उत्तर, नम्रता लिए मैत्रीपूर्ण व्यवहार और आने वाले नए विदेशी ग्राहक को भरसक संतुष्ट करने का प्रयत्न.

शायद यही सब कारण रहा था कि बिना किसी विशेष जरूरत के मैं ने 'वाइल्ड लेदर' का एक बड़ा सा पर्स खरीद डाला था. यह बटुआ खरीद कर मेरे पति और मैं दोनों ही प्रसन्न थे, क्योंकि इस पर्स के साथसाथ यहां स्पेन के लोगों की मैत्रीपूर्ण गर्मजोशी की मुसकराहट भी जुड़ी थी. एक बिलकुल दूसरी तरह का अनुभव, जो इंगलैंड और पश्चिम जरमनी के खरीदारी के अनुभवों से मेल नहीं खाता था और साथ ही यह भी एक विश्वास कि अनजान होने के कारण हम इस पराए देश में ठगे नहीं गए हैं.

दुकान से बाहर निकलते ही रास्ते में एक पाकिस्तानी सज्जन से सामना हो जाता है. यह सज्जन उसी दिन बारसीलोना पहुंचे थे और बिना किसी होटल प्रबंध के परेशान बने घूम रहे थे. हम लोगों की ओर ध्यान जाते ही, जैसे डूबते को तिनके का सहारा मिल जाता है. लपक कर पूछते हैं, "क्या पाकिस्तान से."

हम लोगों का उत्तर निश्चय ही उन की आशा के विपरीत होता है, "नहीं भारत से."

लेकिन इस से जरा भी प्रभावित बिना वह अपनी बीती सुनाने लगे कैसे वह मैड्रिड से सुबह यहां पहुंचे. तो अपने कामकाज में व्यस्त रहे. कारण होटल का प्रबंध न हो पाया अब बारसीलोना के किसी होटल में ठहरने का ठिकाना नहीं.

अपनी बात की पुष्टि करते हुए फिर कहने लगे थे, "कोई इंतजाम हो नहीं सकता, जनाब. इतने टूरिस्ट आ रहे हैं तो होटलों में क्या जगह रहेगी?"

लेकिन हम स्वयं भला उन सज्जन के लिए कुछ कर भी कैसे सकते थे, कि कुछेक घंटों के लिए बारसीलोना हों और शाम होते इस शहर से लौटने वाले हों? मेरे पति अपनी मजबूरी करते हैं, फिर क्षमा भी मांग लेते हैं. वह महाशय हमारी बात पूरी होते होते आंखों से ओझल भी हो जाते शायद किसी होटल की तलाश में हमारी ही तरह किसी एशियाई, भारत अथवा पाकिस्तानी की ओर से सहायता पा जाने की आशा में.

व्यस्त बंदरगाह

बस हमें बारसीलोना के उस बंदरगाह के पास छोड़ देती है, जहां एकदो बडेबड़े जहाजों के साथ छोटे जहाज या स्टीमरों की भीड़ भी नजर आने लगती है. बंदरगाह के निकट माल ढोने में अनेकों 'क्रेन' खड़े दिखाई पड़ते हैं, ही यात्रियों की सुविधा तथा मनोविज्ञान के विचार से कुछ 'इलेक्ट्रिक रोप ट्राली' का भी प्रबंध है. बिजली के तारों पर फिसलती ये ऊपर लटकी ट्रालियां यात्रियों को एक विशेष आनंद और रोमांच साथ बारसीलोना की झलक पाने सहायता करती हैं.

एक स्टीमर हमारी इस छोटी समुद्र यात्रा के लिए तैयार खड़ा हमारी यात्रा का यह अंतिम चरण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिन की तेज धूप ढलने लगी थी, ऐसी हलकी ठंडक में बदलने लगी थी, जब कि हलके ऊनी स्वेटर या कार्डीगन की आवश्यकता महसूस होती हो. फिर भी हलकी पड़ती इस फैलीफैली धूप के बीच शीतल समुद्री हवा का स्पर्श, सभी कुछ मिला कर इतना सुखकर था कि अब तक के ऐतिहासिक भवनों और संग्रहालयों में साथसाथ घसीटे गए बच्चों के ऊबे और मुरझाए चेहरे भी पूरी खुशी के साथ चमकने लगे थे. इन सब के बीच स्टीमर में बैठे एक स्पेनी गिटारवादक की वाद्य धुन वातावरण को और भी मनोहारी बनाए थी.

शाम के समय जब हम लोग वापसी के लिए बस में आए तो केवल एक ही क्षोभ मन में रह जाता था कि बारसीलोना में बीता यह समय, इतनी जल्दी न बीतता या थोड़ा सा यह समय और खिंच पाता. यात्रियों के एकत्रित होने पर बस चल पड़ती है और फिर संगीतप्रेमी स्पेन का एक गीत बस में मुखर हो उठता है. स्पेनी भाषा के इस गीत के शब्द समझ नहीं पड़ते. फिर भी इतने दिन से स्पेनी लोगों के संपर्क में रहने के कारण कुछ शब्द स्पष्ट होने लगते हैं. 'आडिओस ओ एसपान्या' (विदा, ओ स्पेन)...बस फिर वापसी के लिए समुद्र तट छोड़ पीरानीज की पर्वतीय राहों पर कोष्टा ब्रावा की ओर बढ़ने लगती है. ●

सरिता के लेखक

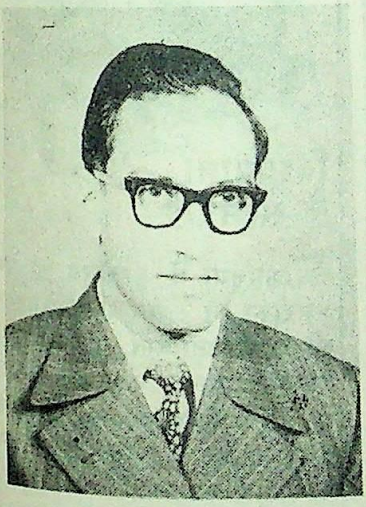

श्याम शुक्ल

पृष्ठ 84 पर प्रकाशित व्यंग्य 'मिनी सम्मेलन' के लेखक श्याम शुक्ल राजस्थान में सहायक अभियंता हैं. वह साहित्यिक व वैज्ञानिक विषयों पर लिखते रहते हैं.

तिलकराज गोस्वामी

पृष्ठ 99 पर प्रकाशित लेख 'पति' के लेखक तिलकराज गोस्वामी स्नातकोत्तर हैं और इलाहाबाद में कार्यरत हैं. कहानियां तथा लेख लिखते रहते हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खराश-
खांसी से
झट आराम...

वोकासिल

चौकोर, हरी
खांसी की
टिकिया

VOCACIL COUGH DROPS
VOCACIL

U-VOC-4 Hin

रामेश्वर टांटिया
के साथ द्वीपों
महाद्वीपों की सैर
कीजिए

20/-
डाक खर्च
अतिरिक्त

विश्वयात्रा
के संस्मरण

कैलीफोर्निया में हालीवुड की चमचमाहट, अमरीका की राजधानी वाशिंगटन, पेरिस की जगमगाती रातें, हीरों का देश बेल्जियम, मार्क्स के बाद का रूस, पिरामिडों की धरती मिस्र, झीलों और द्वीपों का देश फिनलैंड, रात में चमकने वाले सूर्य की धरती स्वीडन और अन्य बहुत से रोमांचपूर्ण अनुभवों तथा रोचक संस्मरणों का सजीव चित्रण...

आज ही अपने पुस्तक विक्रेता से लें.

विश्वविजय प्रकाशन

प्राप्य: दिल्ली बुक कंपनी
एम-12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-1

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिल्म समीक्षा

★★★★अति उत्तम ★★★उत्तम ★★मध्यम★ साधारण ○बेकार

○ धरम करम

निर्माता : रा. क. फिल्म्स
निर्देशक : रणधीर कपूर
कहानी : प्रयागराज
मुख्य कलाकार : रेखा, रणधीर कपूर, राज कपूर, प्रेमनाथ, पिंचू कपूर, नरेंद्रनाथ, अलका

लगभग बीसबाईस वर्ष पहले राज कपूर ने 'आवारा' फिल्म का निर्माण किया था. उस में एक उच्च शिक्षित, सभ्य घराने का बच्चा किसी बदमाश द्वारा अपहरण करा कर उसे गंदे वातावरण में पलवाया था. उस फिल्म में राज कपूर ने यह प्रमाणित किया था कि बच्चा किसी भी घर का क्यों न हो. वह जिस वातावरण में पलेगा बड़ा हो कर वैसा ही बनेगा.

'धरम करम' फिल्म में राज कपूर 'आवारा' के विपरीत कथानक ले कर आया है. इस में वह कहता है कि वातावरण कैसा भी रहे खून का असर नहीं बदलता. शायद इसी लिए गायक का बेटा शंकर दादा की लाख कोशिशों के बावजूद बुरा नहीं बन पाता और अशोक के घर में पलने वाला शंकर दादा का बेटा अच्छा नहीं बन पाता.

गंदी बस्ती का शंकर (प्रेमनाथ) अपने बच्चे को अच्छा बनाने के लिए एक प्रसिद्ध गायक अशोक (राज कपूर) के घर में छोड़ आता है और उस के बच्चे को उठा लाता है. एक आदमी की हत्या करने के अपराध में शंकर को 14 वर्ष की सजा हो जाती है. शंकर के साथी धरम (रणधीर कपूर) को मारपीट कर बदमाश बनाने की पूरी कोशिश करते हैं, लेकिन सफल नहीं होते.

इस बीच धरम की मुलाकात अशोक से होती है और वह संगीत की ओर आकर्षित होता है. उधर शंकर का लड़का रणजीत (नरेंद्रनाथ) बड़ा हो कर तस्करी करता है. शंकर दादा जेल से छूट कर आता है तो फिर जबरदस्ती धरम को बदमाश बनाने की कोशिश करता है. अंत में अशोक को उन का वास्तविक बेटा धरम मिल जाता है.

प्रयागराज की कहानी में कोई नयापन नहीं. साथ ही कहानी का उद्देश्य समाज के लिए बहुत हानिकारक हो सकता है. पता नहीं, लेखक किस अंधविश्वास या कुंठा से ग्रस्त है कि वह सोचता है कि खून का प्रभाव कभी परिवर्तित नहीं हो सकता. इस से तो यह धारणा बनती है कि अपराधी, खूनी के बच्चे भी अनिवार्य रूप से उसी की तरह बदमाश ही बनेंगे. फिर तो इन अपराधियों को मार देने के अतिरिक्त कोई उपाय ही नहीं रहता. और क्या जितने भी कलाकार उभरे हैं वे केवल कलाकार मातापिता की संतान थे?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रणधीर कपूर के निर्देशन में गति तो है पर दृश्यों को बहुत लंबाई तक खींचा गया है. इस कमजोरी को संपादन में भी दूर नहीं किया जा सका. फिल्म में दो ही बातें दिखाई देती हैं—नायकनायिका की उछलकूद, रोमांस तथा मारपीट, गोलीबारी.

राज कपूर की फिल्मों में अब तक गीतसंगीत ही सब से सशक्त पक्ष रहा है. लेकिन इस बार एक गायक पर आधारित होते हुए भी इस फिल्म में गीतसंगीत ही सब से निकृष्ट रहे हैं. "तेरा धरम है तेरा..." गीत बारबार पृष्ठभूमि में सुनाई देता है. और अच्छा है.

प्रयागराज के संवाद कहींकहीं चुस्त हैं तो कहीं पर एकदम घटिया स्तर पर उतर आते हैं. बसंती (रेखा) के मुंह से बहुत अशिष्ट व अश्लील संवाद बुलवाए हैं. शरीर प्रदर्शन की कमी अलका ने पूरी कर दी है. मारपीट, गोलीबारी, हत्या के भी सभी फार्मूले भरे हुए हैं.

राज कपूर की भूमिका में गंभीरता है. लेकिन पता नहीं क्यों स्टेज पर उतरते ही उस का 'जोकर' रूप स्पष्ट होने लगता है.

प्रेमनाथ तो पूरी फिल्म में 'ओवर एक्टिंग' का शिकार रहा है. हर संवाद को वह अपने ढंग से बोलने में महत्व समझता है.

रणधीर कपूर ने जानवरों की तरह खूब उछलकूद की है. रेखा को निर्माता ने नायक के साथ उछलकूद करने और अंगप्रदर्शन के लिए ही रखा है. तारू दत्त का छायांकन अच्छा है. •

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह जान कर अत्यधिक प्रसन्नता हुई कि आप ग्रामीण क्षेत्रों के लिए एक विशिष्ट पत्रिका 'भूभारती' के प्रकाशन का शुभारंभ कर रहे हैं. वास्तव में ग्रामीण क्षेत्रों के लिए एक ऐसी पत्रिका का होना नितांत आवश्यक है, जो सरल, रोचक, मनोरंजक, ज्ञानवर्धक व उपयोगी सामग्री गांव के उन पाठकों को दे सके जो अधिक पढ़ेलिखे नहीं होते, किंतु जिन के अज्ञान को दूर किए बिना राष्ट्र की प्रगति की संभावना कम हो जाती है.

यद्यपि कुछ प्रकाशन संस्थान हैं, जिन्होंने इस क्षेत्र में कुछ किया है, किंतु उन का प्रसार उतना नहीं हो पाया, जितना होना चाहिए था. फिर पत्रिका के रूप में तो ऐसा कोई प्रकाशन देखने में आया ही नहीं है. कुछ कृषि संबंधी पत्रिकाएं हैं अवश्य, लेकिन वे मात्र तकनीकी जानकारी देने के कारण नीरस रही हैं और अपना पाठक वर्ग बढ़ा नहीं सकीं. दूसरे, उन का विषय कृषि के दायरे तक सीमित रहा है.

सरिता, मुक्ता, चंपक, आदि के द्वारा आप विगत दिनों में जो समाजोपयोगी, बालोपयोगी व युवकोपयोगी रोचक एवं उद्देश्यपूर्ण सामग्री देते रहे हैं, उस से आशा की जाती है कि 'भूभारती' अपने उद्देश्य में अवश्य सफल रहेगी. मैं 'भूभारती' का हृदय से स्वागत करते हुए सफलता की कामना करता हूं.

—ब्रजकिशोर पटेल, सोनासांवरी

✦

दिसंबर (द्वितीय) अंक में प्रकाशित 'अज्ञात विष' (लेख : डा. उमाशंकर रायजादा) पढ़ा. वास्तव में यह लेख सरिता के पाठक वर्ग तथा उस के सामाजिक दायरे से अज्ञात विष को समाप्त करने में काफी सहायक होगा, ऐसी मुझे आशा है.

लेकिन प्रश्न यह है कि जनसाधारण को इस अज्ञात विष का पान कराने में किस का हाथ है? मेरे विचार से इस में सब से बड़ा योगदान प्रशिक्षित तथा उच्च प्रशिक्षित डाक्टर वर्ग का है. क्या आज एक साधारण व्यक्ति इन 'अच्छे' डाक्टरों की फीस वहन कर सकता है? उन की फीस उसी अवस्था में वहन करता है, जब रोगी अपनी अंतिम अवस्था के करीब पहुंच चुका हो. और उस समय अच्छे से अच्छा डाक्टर भी कुछ करने में असमर्थ होता है.

लेखक ने लिखा है कि 'आम आदमी साधारण खांसी, ठंड, जुकाम के लिए दवाएं कैमिस्ट से पूछ कर ही ले आता है.' प्रश्न उठता है कि कौन व्यक्ति चाहेगा कि उस की खूनपसीने की कमाई में से एक बड़ा भाग केवल डाक्टर की फीस के रूप में ही निकल जाए?

आजकल हर युवक डाक्टर मैडिकल

कालिज से निकलने के बाद पैदल चलना बुरा समझता है. इसलिए वह कार का ख्वाब देखता है, और फिर ये ख्वाब बढ़ते चले जाते हैं. इन ख्वाबों को पूरा करने के लिए ख्वाबों के साथ-साथ उस की फीस बढ़ती जाती है. और इस तरह वह जैसेजैसे अनुभव प्राप्त कर के योग्य चिकित्सक बनता जाता है, उस के और जनता के बीच पैसे की दीवार ऊंची होती जाती है.

गांव वालों की, जो कि इस अज्ञात विष से सर्वाधिक पीड़ित हैं, हालत तो और भी बुरी है. वहां तो कोई डाक्टर किसी भी कीमत पर जाने के लिए तैयार ही नहीं होता, चाहे उसे कितनी ही सुविधाएं क्यों न दी जाएं.

इस संदर्भ में सार्वजनिक अस्पतालों का योगदान शून्य के बराबर है. बल्कि कई जगह तो वे इस अज्ञात विष को देने में सहायक बने हुए हैं. डाक्टर की कुरसी पर बैठ कर कंपाउंडर बड़े रोब से नुस्खा लिखते हैं. अगर बड़े शहरों में अच्छे अस्पतालों की व्यवस्था है भी, तो भीड़ इतनी होती है कि व्यक्ति को अंततः नीमहकीम पर ही आश्रित होना पड़ता है.

—महेंद्रपाल सिंह, नई दिल्ली

✦

दिसंबर (द्वितीय) अंक में 'अज्ञात विष' (लेख : डा. उमाशंकर रायजादा) में दी गई जानकारी व सुझाव बहुमूल्य हैं. परंतु एक आम आदमी के लिए क्या यह संभव है कि वह हर छोटीमोटी बीमारी के लिए चिकित्सकों की शरण ले सके? मेरी राय में इस में दो बाधाएं हैं, एक समय की तथा दूसरी आर्थिक.

आर्थिक कठिनाई से मेरा मतलब डाक्टरों की अधिक फीस से है. क्या मैं डाक्टरों से यह नम्र निवेदन कर सकता हूं कि वे थोड़ा जनहित की भावना से भी कार्य करें तथा अपने पेशे को शुद्ध व्यापार ही न समझें. वे अपनी फीस इस प्रकार से निश्चित करें कि गरीब आदमी कहीं फीस के डर से घर में ही पड़ा तड़पता न रह जाए.

—ब्रजेशकुमार, पीलीभीत

✦

दिसंबर (द्वितीय) अंक में 'रानादिल' (कहानी : योगेंद्र किसलय) पढ़ी. इस से पूर्व भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरिता में उन की एक कहानी 'अनठा चौहर' पढ़ने का अवसर प्राप्त हुआ था. लेखक ने ऐतिहासिक कहानियां लिख कर इतिहास की तरफ रुचि को और अधिक बढ़ा दिया है. मेरी राय में इस प्रकार की कहानियां आज के युवा वर्ग का अच्छा पथप्रदर्शन करेंगी. उन्हें पता लग सकेगा कि हमारे पूर्वज क्या थे, और उन के उसूल क्या थे. आशा करता हूं, भविष्य में भी आप ऐसी कहानियों को स्थान देंगे.

—ओम कपूरिया, बीकानेर

✦

दिसंबर (द्वितीय) में 'दूर के ढोल' (लेख : अश्विनी केशव) में सचमुच आज के अधिकांश घरों की कहानी को सजीव कर दिया गया है. काश, स्कूल कालिजों में पढ़ीलिखी युवतियां इसे हृदयंगम कर अपने गृहस्थ जीवन को स्वर्ग बनातीं. —मोतीलाल दमानी, कलकत्ता

✦

दिसंबर द्वितीय) में प्रकाशित 'धार्मिक फिल्में' (लेख : देवेंद्र मोहन) अच्छा लगा. कुछ वर्ष पहले धर्म के नाम पर पंडे, लोगों से मनचाहे पैसे ठगा करते थे. पर अब वह काम पंडितों की बजाए फिल्म निर्माताओं ने शुरू कर दिया है.

इन फिल्मों को देखने के बाद, दर्शक के मन में यदि ईश्वर के प्रति थोड़ाबहुत सम्मान पहले से होता भी है, तो वह भी जाता रहता है. फिल्मों में जो चमत्कार, जिन्हें शक्ति कहा जाता है, दिखाया जाता है, उन्हें आज का दर्शक स्वीकार नहीं कर पाता.

कई सौ वर्षों की गुलामी के बाद अब कहीं जा कर भारत में से अंधविश्वास खत्म होने जा रहा था कि इन फिल्मों के माध्यम से पुनः अंधविश्वास की आंधी प्रारंभ हुई है. इस आंधी को रोका जाना चाहिए.

—कमलकुमार चोपड़ा, दिल्ली

दिसंबर (प्रथम) अंक में 'एक और रिश्ता' (कहानी : इंद्रारानी) में सुकोमल रिश्तों की चर्चा थी. ऐसा रिश्ता जो जातिपांति और धर्म, वर्ण आदि से परे, मानवता का रिश्ता होता है. यही संबंध पारस्परिक मिथ्याडंबरों से मानव को मुक्त कर सकता है. —सीता श्रीवास्तव, आगरा

✦

दिसंबर (प्रथम) में प्रकाशित 'सूरज डूब गया' (कहानी : रजनी गोपालन) में लेखिका, मृणाल का चरित्र अच्छी तरह वर्णित करने में असफल रही है. मृणाल शादी से पूर्व अपने पापा से कहती है कि, "पापा, मैं शैलेंद्र को और उस के फक्कड़पन को बदलने की कोशिश करूंगी." लेकिन वह कहीं भी शैलेंद्र की हीन भावना को बदलने की कोशिश नहीं करती, अपितु अपने विचार और व्यवहार से शैलेंद्र की हीन भावना को और अधिक बल प्रदान करती है. उदाहरणार्थ क्लर्क के पद से अफसर के पद के लिए परीक्षा देते समय मृणाल यह जानती है कि शैलेंद्र पढ़ाईलिखाई में कमजोर है और वह अफसर के पद के लिए हो रही परीक्षा में उत्तीर्ण नहीं होगा. और यदि वह (मृणाल) अफसर के पद पर नियुक्त हो जाती है तो शैलेंद्र में हीन भावना का और अधिक विकास होगा. फिर भी वह (मृणाल) अफसर के पद के लिए परीक्षा देती है, जब कि वे दोनों आर्थिक दृष्टि से भी संपन्न हैं. मृणाल को चाहिए था कि वह अपनी अफसरी की परीक्षा को छोड़ कर शैलेंद्र की हीन भावना को बदलने का प्रयास करती. उस का यह कदम शैलेंद्र के फक्कड़पन को बदलने में महत्त्वपूर्ण प्रमाणित हो सकता था और वह अपने पापा से कहे हुए शब्दों को सही प्रमाणित कर सकती थी. तब शैलेंद्र हीन भावना से ग्रस्त होने के कारण आत्महत्या करने को विवश नहीं होता. —अशोक 'निर्मोही,' रोहतक

✦

दिसंबर (प्रथम) अंक में 'दहेज' (लेख : शंकरप्रसाद श्रीवास्तव) पढ़ा. दहेज आजकल केवल वाद विवाद या चर्चा का विषय बना हुआ है. इस कुप्रथा को जड़ से उखाड़ फेंकने के प्रयत्न बहुत ही कम हो रहे हैं. आज हमारे वर्तमान समाज में कथनी कुछ और है, करनी कुछ और. इस कुप्रथा का विरोध तो सभी करते हैं, परंतु जब समय आता है, तब सभी चुप्पी साध जाते हैं. केवल संविधान या कानून इसे नहीं रोक सकते. इस के लिए संपूर्ण विचारधारा में परिवर्तन आवश्यक है.

—अतुलकुमार, हैदराबाद

✦

दिसंबर (प्रथम) अंक में 'प्रेत की विदाई' (कहानी : सत्यकुमार) बहुत ही अच्छी लगी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतवर्ष आजादी मिलने के पूर्व एकमात्र ही अंधविश्वासों में जकड़ा है. कम से कम इस कहानी को पढ़ने वालों का विश्वास तो भूतप्रेतों में कम होगा ही. आज के वैज्ञानिक युग में भूतप्रेतों पर विश्वास करना बिलकुल ही अबुद्धिमत्ता है. —राजकमल कोठारी, जोधपुर

✦

दिसंबर (प्रथम) अंक में 'अपराध फिल्मों का दुष्प्रभाव' (लेख : सुधीर रस्तोगी) बहुत ही अच्छा लगा. नकल करने में हिंदुस्तान हमेशा आगे रहता है और यही कारण है कि आजकल का युवा समाज फैशन में इस तरह बह रहा है जैसे बरसाती पानी में मिट्टी, जिस का पानी में मिलने के बाद अपना कोई अस्तित्व ही नहीं रहता. यहां तक कि कई युवक डाक्टर व इंजीनियर आदि बनने के बाद भी फिल्मी कलाकार बनने की कोशिश करते हैं, अपना कर्तव्य भूल कर परदे पर आना चाहते हैं.

—आनंदसिंह नेगी, हरिद्वार

✦

नवंबर (द्वितीय) अंक में 'हिंदू चिंतन की रूपरेखा' (लेख : कुमार आनंद) बड़ा ही प्रेरणादायक है. लेखक ने हिंदू चिंतन पर सारगर्भित लेख लिख कर पाठकों को सोचने, समझने और धर्म ग्रंथों का सही विश्लेषण करने को बाध्य कर दिया है. वास्तव में आज जरूरत इस बात की है कि हमारे धर्म ग्रंथों में जो भी सार्थक है, उसे स्वीकारा जाए और जो निरर्थक है उस का बहिष्कार किया जाए. परंतु खेद है कि अपने आप को समाज सुधारक और सुलझे विचारों वाला समझने वाले युवक ही बार में काम पड़ने पर अंधविश्वास और पाखंडवाद के अधिक शिकार होते हैं.

ऐसे युवकों की हालत पर उस समय तो और भी तरस आता है, जब वे धर्म ग्रंथों का अर्थ समझे बिना ही पंडितजी के आदेशानुसार रेशमी कपड़े में लिपटे पोथीपत्रों की ही पूजा कर डालते हैं. जब युवक ही समय आने पर मदारी का बंदर बन जाते हैं तो हिंदू चिंतन का अध्ययन और विश्लेषण नए सिरे से कौन करेगा? मैं पुनः इस लेख के लिए लेखक को हार्दिक धन्यवाद देना चाहता हूं.

—मदनलाल, लादड़िया

✦

आजकल एक बीमारी कुछ सरकारी कर्मचारियों को लगी हुई है और वह बीमारी है 'मेडिकल बिल' की. डाक्टर से परचा लिखवाया और एक निश्चित प्रतिशत पर किसी दवाओं की दुकान से बिल लिया. कभीकभी इस में डाक्टर का भी प्रतिशत बंधा होता है.

मेरे एक मित्र हैं. वह अकसर झूठा बिल बनवाते रहते हैं. हद उस समय हुई जब कि उन्होंने एक बार अपनी पत्नी के नाम से बिल कटवाया. मैं ने कहा, "भाभीजी, तो अपने घर गई हुई हैं, फिर दवा किस के लिए लोगे?"

"भाई, दवा कौन लेता है? अपने राम तो थोड़ी सी तकलीफ में ही पचासंसाठ प्रतिशत कमा लेते हैं." सुन कर मुझे बहुत ही अफसोस हुआ. ऐसे कर्मचारी देश का क्या भला सोचेंगे?

—ए. गोपाल, भोपाल ●

आप मांग कर खाते हैं?
मांग कर कपड़े पहनते हैं?
मांग कर बसट्राम व रेल में सफर करते हैं?
मांग कर सिनेमा देखते हैं?
मांग कर रेस्त्रां में चायकाफी पीते हैं?
तब
मांग कर पत्रपत्रिकाएं व पुस्तकें क्यों पढ़ते हैं?

निजी पुस्तकालय आप की शोभा है, आप के परिवार की शान है, उन्नति का साधन है.
मांग कर नहीं, खरीद कर पढ़िए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यक्तिगत विज्ञापन

वैवाहिक विज्ञापन

शांडिल्य गोत्रीय अटेर के दीक्षित परिवार की 20 वर्षीया, एम. ए. प्रीवियस में पढ़ रही सुंदर, सुशील, गृहकार्य में दक्ष कन्या के लिए सुयोग्य, कार्यसंलग्न, सजातीय वर की आवश्यकता है. कृपया लिखें : वि. नं. 375, सरिता, नई दिल्ली-55.

23 वर्षीया, अग्रवाल, निःसंतान, तलाकशुदा, स्वस्थ, सुंदर युवती, हेतु सजातीय वर चाहिए. संतानरहित विधुर मान्य है. लिखें : वि. नं. 376, सरिता, नई दिल्ली-55.

24 वर्षीया, ब्राह्मण, बी. एससी., सुंदर, स्वस्थ, आकर्षक, गौरवर्ण, कद 5'-2", गृहकार्य दक्ष, सुशील कन्या हेतु किसी अच्छी, उच्च पद या अच्छे व्यापार में संलग्न, सुंदर, स्वस्थ, ब्राह्मण वर चाहिए. दहेज क्षमा. लिखें : वि. नं. 377, सरिता, नई दिल्ली-55.

21 वर्षीया, माहेश्वरी, एम. ए., कद 5'-2½", सुंदर, गृहकार्य दक्ष कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. शीघ्र लिखें : वि. नं. 378, सरिता, नई दिल्ली-55.

29 वर्षीया, बीसा अग्रवाल, गेहुआं रंग, एम. ए., लेक्चरर कन्या के लिए सुयोग्य, सजातीय वर चाहिए. दहेज नहीं. साधारण शादी. निःसंतान विधुर स्वीकार्य. लिखें : वि. नं. 379, सरिता, नई दिल्ली-55.

23 वर्षीया, चौहान राजपूत, मांगलिक, सुंदर, सुशील, गृहकार्य दक्ष, एम. ए. छात्रा हेतु सजातीय डाक्टर, इंजीनियर, प्रोफेसर, उच्च पदाधिकारी वर चाहिए. लिखें : वि. नं. 380, सरिता, नई दिल्ली-55.

23 वर्षीया, गौड़ ब्राह्मण, इंटर, गौरवर्ण कन्या हेतु वर चाहिए. लिखें : वि. नं. 381, सरिता, नई दिल्ली-55.

17 वर्षीया, कद 5'-2", गेहुआं रंग, गृहकार्य में दक्ष, मूक व वधिर कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. शारीरिक दोषयुक्त युवक को वरीयता जाति बंधन नहीं. लिखें : वि. नं. 382, सरिता, नई दिल्ली-55.

31 वर्षीया, कायस्थ, ग्रेजुएट, प्रशिक्षित, गृहकार्य में निपुण, कुंवारी कन्या हेतु वर चाहिए. जाति बंधन नहीं, सुयोग्य विधुर भी आमंत्रित. लिखें : वि. नं. 383, सरिता, नई दिल्ली-55.

30 वर्षीया, कान्यकुब्ज, एम. ए., एम. एड., शिक्षण कार्यरत, सद्गुणी कन्या हेतु सजातीय वर चाहिए. लिखें : वि. नं. 384, सरिता, नई दिल्ली-55.

21 वर्षीया, शांडिल्य गोत्रीय, सरयूपारीण ब्राह्मण, एम. ए., बी. एड., गृहकार्य में दक्ष कन्या के लिए सेवारत, सजातीय वर चाहिए. दहेज नहीं. लिखें : वि. नं. 385, सरिता, नई दिल्ली-55.

26 वर्षीया, पंजाबी सारस्वत ब्राह्मण, शिक्षित, सुंदर, गृहकार्य दक्ष, कद 165 सें. मी. कन्या हेतु वर चाहिए. लिखें : वि. नं. 386, सरिता, नई दिल्ली-55.

22 वर्षीया, सरयूपारी उत्तर प्रदेशीय ब्राह्मण, साफ रंग, सुंदर, सुशील, घरेलू, कद 5'-2½", एम. ए. (राजनीति), एयरफोर्स अफसर कन्या हेतु सजातीय, डिफेंस अफसर, डाक्टर, कार्यरत इंजीनियर, गजटेड अफसर वर चाहिए. शीघ्र विवाह. लिखें : वि. नं. 387, सरिता, नई दिल्ली-55.

23½ वर्षीया, माहेश्वरी, बी. काम., एलएल. बी., कद 5'-4", नीमगौरवर्ण, सुशील, स्मार्ट, गृहकार्य में दक्ष, प्रगतिशील, सुशिक्षित परिवार की कन्या हेतु स्वजातीय, सुयोग्य वर चाहिए. पूर्ण विवरण सहित लिखें : वि. नं. 388, सरिता, नई दिल्ली-55.

23¾ वर्षीया, अग्रवाल गोयल, ग्रेजुएट, सुंदर, इकहरा बदन, गृहकार्य में निपुण, कद 5'-1", कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. अच्छा विवाह. लिखें : वि. नं. 389, सरिता, नई दिल्ली-55.

24½ वर्षीया, यादव, एम. ए. (अंगरेजी), आकर्षक, साफ रंग, इकहरा शरीर, कद 5'-2", मृदभाषी, विनम्र, गृहकार्य निपुण, प्रतिष्ठित उत्तर प्रदेशीय परिवार की कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. लिखें : वि. नं. 390, सरिता, नई दिल्ली-55.

25 वर्षीया, जैन, एम. ए., बी. एड., सुंदर, सुशील, गृहकार्य दक्ष, कद 5', कन्या हेतु स्वावलंबी, उच्च पदाधिकारी, स्वस्थ, सुंदर, कुलीन वर चाहिए. जाति बंधन नहीं. दहेज के इच्छुक पत्रव्यवहार न करें. लिखें : वि. नं. 391, सरिता, नई दिल्ली-55.

25 वर्षीया, कान्यकुब्ज, एम. एससी. प्रथम श्रेणी, म. प्र. शासकीय सेवा में व्याख्याता, गौरवर्ण कन्या के लिए व्याख्याता, डाक्टर, इंजीनियर या शासकीय सेवा में सजातीय वर चाहिए. लिखें : वि. नं. 392, सरिता, नई दिल्ली-55.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरिता

जनवरी (द्वितीय) 1976

अंक 498

सामाजिक व पारिवारिक पुनर्निर्माण की पाक्षिक पत्रिका

संपादक व प्रकाशक

विश्वनाथ

[illegible] भारत सरकार द्वारा [illegible] है.

[illegible] में प्रकाशित सभी रचनाओं [illegible] अधिकार दिल्ली प्रेस समाचार [illegible] सुरक्षित हैं. इसलिए बिना [illegible] रचना किसी प्रकार उद्धृत [illegible] चाहिए.

[illegible] भेजी गई रचनाओं की [illegible] के लिए कार्यालय उत्तरदायी [illegible] टिकट लगा, पता लिखा [illegible] साथ होने पर ही अस्वीकृत [illegible] लौटाई जाएंगी.

[illegible] में प्रकाशित कथा साहित्य में [illegible] स्थान, घटनाएं व संस्थाएं [illegible] हैं और वास्तविक [illegible], स्थानों, घटनाओं या [illegible] से उन की किसी भी प्रकार [illegible] केवल संयोग मात्र है.

[illegible] प्रेस समाचार पत्र के लिए [illegible] द्वारा दिल्ली प्रेस, [illegible] में मुद्रित.

[illegible] प्रकाशन कार्यालय : [illegible] नेताजी सुभाष रोड, [illegible] नई दिल्ली-55.

एक प्रति : 2.00 रु.
वार्षिक : 40.00 रु.
दो वर्ष : 75.00 रु.
विदेशों में : (समुद्री डाक से)
एक वर्ष : 60.00 रु.

[illegible] : श्री. [illegible]

कथा साहित्य

नए रिश्ते — शशि जैन 52
एक और अभिनय — विकेश निझावन 62
बस एक रात — मुकारब खान 'आजाद' 99
जब हमें बिच्छू ने काटा — शकुंतला शर्मा 108
अंधेरे से उजाला — लीला रूपायन 133
करवा चौथ का जाल — विजयकुमार शर्मा 'देवेंद्र' 148
लौट आओ अम्मा — आनंद 156

लेख

1975 का हिंदी साहित्य — सुदर्शन चोपड़ा 19
डा. लीला आजगांवकर — शशिप्रभा भारती 29
अमरीका की स्वतंत्रता... — रामसहाय पांडेय 35
कुंभ मेला — विराज 42
राम कृष्ण का कालनिर्णय — बंशीधर त्रिपाठी 67
भविष्यवेत्ता — सुरेश किमलय 73
पाबंदी लड़कों पर — दिनेश सेठी 84
मांगने वाले — निर्मला गोस्वामी 92
शादी — शीला गुप्ता 115
बच्चों की गंदी आदतें — वीरेंद्रकुमार सक्सेना 120
संबंध और दरार — ऋषिवंश 125
शाल — सुमन मिसुरिया 128
स्वेटर : बच्चोंयुवकों के लिए — उषा चौहान 131
रंगबिरंगा स्वेटर — विमला गर्ग 132
मां तो मां है... — आप के विचार 162
1975 का फिल्मी संगीत — दिलीप गुप्ते 164

कविताएं

झुकीझुकी आंखों में — शिवप्रसाद 'कमल' 50
पलकें झुका लो — चंद्रभान भारद्वाज 83

स्तंभ

सरित प्रवाह 16
बच्चों के मुख से 51
जीवन की मुसकान 56
पाठकों की समस्याएं 81
श्रीमतीजी 94
बात ऐसे बनी 97
एक कदम आगे 107
देशप्रदेश की भाषा 124
पासा पलट गया 130
ये पत्नियां 141
चंचल छाया 171
आप के पत्र 173

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्कृष्ट वस्त्रों की परिभाषा

—अरविंद

शानदार ७ मिलों में से एक

लालभाई ग्रुप के वस्त्र

Interpub/AM/29/75 H

खुदरा दुकानें: ● मोहन ब्रदर्स, क्लॉक टॉवर, ७५२, चांदनी चौक, दिल्ली ● भँवरलाल मूथा एण्ड सन्स, एस.एम.एस. हाइवे, जयपुर ● बन्सल ब्रदर्स, जी.टी. रोड, नाकोदर चौक, जलंधर शहर (पंजाब) ● चन्दूलाल दुर्गाप्रसाद, बाँकीपुर पटना-४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ड्युरेक्स गोसामर

लुब्रिकेटेड प्रोटेक्टिवज्

प्राकृतिक आनन्द का आभास देनेवाला एकमात्र कन्डोम

* खास प्रकार के लुब्रिकेन्ट "सेन्सिटॉल" से लुब्रिकेट किए गये
* पूर्ण सुरक्षा के लिए इलेक्ट्रॉनिक विधि से जांचे गये.

अगली बार जब भी आप कन्डोम खरीदें – याद रखें – 'ड्युरेक्स' गोसामर या फिर नीचे दिया गया कूपन भरकर भेज दें.

उत्तम सुरक्षा और उचित आराम के लिए — **ड्युरेक्स**

टी.टी. कृष्णामाचारी एण्ड कंपनी
५ लज चर्च रोड, पोस्ट बॉक्स नं. २९०१, मद्रास ६०० ००४
कृपया मुझे पांच ड्युरेक्स प्रोटेक्टीवज् कन्डोम का एक पैकेट भेज दीजिए. मैं रु. १.६५ का पोस्टल ऑर्डर भेज रहा हूँ.
(मूल्य रु. १.२५ + ०.४० पै. डाक खर्च) (S)

नाम _____

(कृपया साफ-साफ लिखें) _____

पता _____

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आज ही ख़रीदिये
६० रु० तक की बचत कीजिये

प्रत्येक
एच एम वी **फ़ियेस्टा**
ट्रान्स-मेन्स के साथ

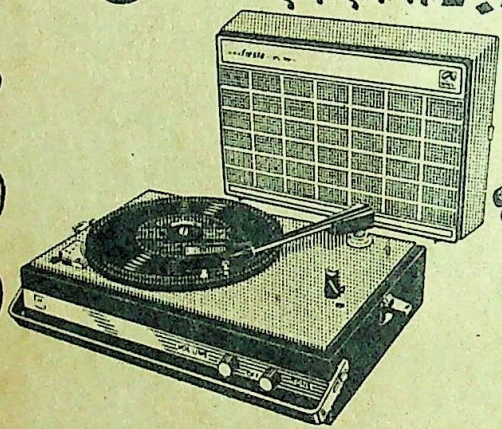

१ एल पी रिकार्ड मुफ़्त

साथ ही
अन्य १० एलपी
की ख़रीद पर
आकर्षक छूट

प्रत्येक एच एम वी
डिस्कोफोन
के साथ

१ एल पी मुफ़्त

साथ ही
अन्य ५ एलपी
की ख़रीद पर
आकर्षक छूट

HMV

अपने एचएमवी डीलर से मिलिये
हिज़ मास्टर्स वायस
उज्ज्वल भविष्य का प्रतीक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वर्ण से भी कीमती
उपहार आपकी
पत्नी के लिये–
आजीवन आय

जीवन बीमा निगम द्वारा गृहलक्ष्मी योजना का शुभारम्भ

गृहिणी के लिए स्थायी तौर पर आर्थिक सुरक्षा प्रदान करने के लिए जीवन बीमा की एक योजना खासतौर पर बनाई गई है।

(सभी नव-विवाहित नौजवान जोड़ों के लिए आकर्षक)

अन्तर्राष्ट्रीय महिला वर्ष में जीवन बीमा निगम की गृहलक्ष्मी योजना गृहणियों के लिए एक उपहार है। यह एक मासिक आय देने का वायदा करती है। यह उसे दूसरों पर अधीन होने से बचाती है।

एक पति द्वारा अपनी पत्नी के प्रति प्रेम प्रकट करने का यह सबसे अच्छा उपाय है। उपहार के तौर पर यह स्वर्ण से ज्यादा अच्छा है। स्वर्ण तो बेकार पड़ा रहता है, परन्तु इस पालिसी द्वारा महीने दर महीने, एक वर्ष के बाद दूसरे, यानी उसको जीवन भर एक नियमित आमदनी होती रहती है। सोना चुराया भी जा सकता है, परन्तु गृहलक्ष्मी पालिसी को नहीं।

यह धन सिर्फ उसी का है—कोई इसे हाथ भी नहीं लगा सकता।

यह धन उसे ही मिले, इसलिए इस पालिसी पर ऋण नहीं दिया जाता। उसे भुगतान प्रतिमास या प्रतिवर्ष किया जाता है—एक मुश्त नहीं जिससे फ़ालतू खर्चों का आकर्षण पैदा न हो। इस पालिसी के भुगतानों को इस्टेट ड्यूटी से छूट दिलाने का प्रबन्ध किया जा सकता है।

न्यूनतम १० रु प्रतिमास प्रीमियम देने पर भी यह। पॉलिसी मिल सकती है जिससे कि पत्नी को ५५ वर्ष की आयु से ३० रु. प्रतिमास नियमित रूप से मिलेंगे।

यह आपकी पत्नी के लिए अदभुत उपहार है। विलम्ब न करें। ४० वर्ष से कम आयु के सभी पति निकटतम शाखा कार्यालय में विस्तृत विवरण प्राप्त करने के लिए पधार सकते हैं। या किसी एजेन्ट से पूछताछ करें।

लाइफ इन्श्योरेन्स कारपोरेशन आफ इण्डिया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नन्ही करुणा जीवन-भर अपंग ही रहती...

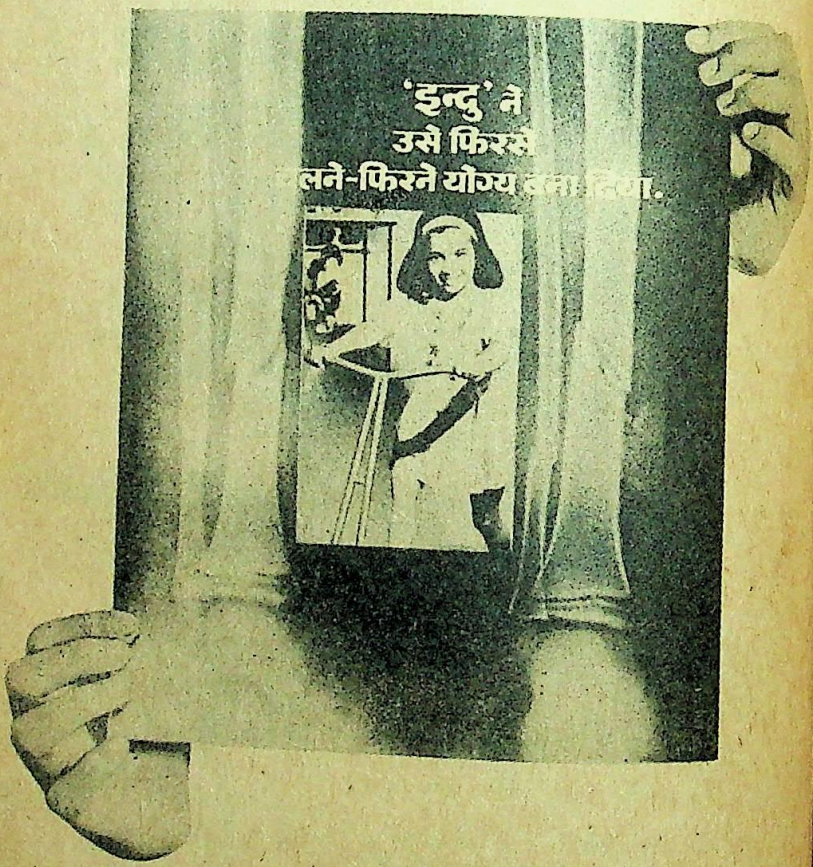

SAA/HPF/1938 HN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पांच वर्ष की नन्ही करुणा शाम के ५.३५ बजे कनॉट-प्लेस में दुर्घटनाग्रस्त हो गई. कार के पहियों के रुकने की चीख गूंज उठी—कुछ ही पलों में... परंतु तब तक बहुत देर हो चुकी थी.

अस्पताल में इन्दु एक्स-रे फिल्म ने नुकसान की पुष्टि की: जिससे मालूम हुआ कि यह एक बहुत ही कठिन, और गंभीर, कई हड्डियों का फ्रैक्चर है.

इन्दु एक्स-रे फिल्म की स्पष्टता से ज्ञात हो सका कि हड्डियों के छोटे-छोटे महीन टुकड़े कहां तक फैले हैं और हड्डी के टूटने की सही जगह कौन सी है (जिसके ठीक से न मालूम होने पर करुणा जीवन-भर अपंग ही रह जाती).

आज वह खुशियों के सागर में झूम रही है.

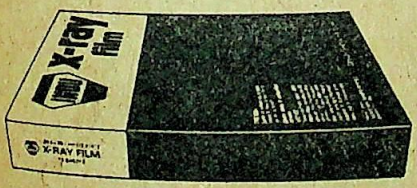

INDU®

इन्दु को बहुत-बहुत धन्यवाद.

सिर्फ यही एक विशिष्ट उदाहरण नहीं है. सही मायनों में, सिर्फ एक ही साल में, अपने ही देश में पूरी तरह से बनी फिल्म – इन्दु फिल्म – द्वारा पता लगाये गये मामलों की संख्या कुल १ करोड़ से भी ज़्यादा है जो किसी भी स्टैण्डर्ड से एक प्रभावशाली कीर्तिमान है!

इन्दु श्रृंखला के उत्पादन — भारत को आत्मनिर्भर बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं.

इन्दु एक्स-रे फिल्म. इन्दु सिने पॉज़िटिव इन्दु सिने साउन्ड निगेटिव. इन्दु रोल फिल्म. इन्दु फोटोग्राफ़िक पेपर्स. इन्दु मीडियम कॉन्ट्रास्ट ग्राफ़िक आर्ट्स फिल्म. इन्दु डाइपॉज़िटिव. इन्दु डाक्युमेंट कॉपिंग पेपर.

INDU

ब्लॉक एन्ड व्हाइट में उत्तम क्वालिटी का जीता-जागता सबूत—इन्दु फिल्म

हिन्दुस्तान फोटो फिल्मस् मेन्युफेक्चरिंग कं. लि.
[भारत सरकार का प्रतिष्ठान]
इन्दुनगर, ऊटकमंड ६४३ ००५.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पैरों में मोच?

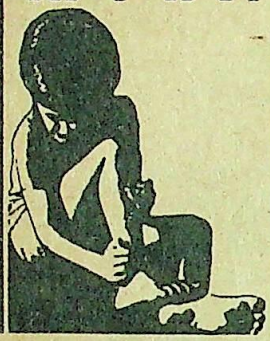

आयोडेक्स मलिए, जो पीड़ा हरे, अच्छा करे

दूसरे बाम पीड़ा से आराम भले पहुंचाएं, आयोडेक्स आराम पहुंचाने के साथ साथ अच्छा भी करती है. क्योंकि इसमें आयोडीन मिली है.

जोड़ों और मांसपेशियों की पीड़ा के लिए एकमात्र बाम — आयोडेक्स.

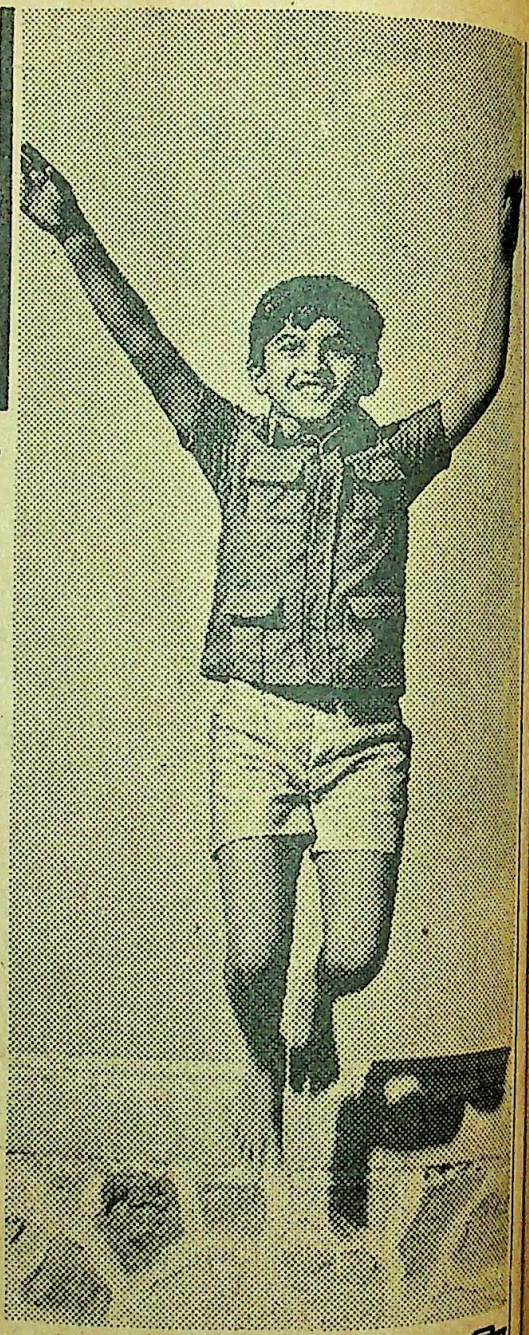

आयोडेक्स मलिए-अपने काम पर चलिए

लिंटास-IODEX. 8-75 HI

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनोखी बात, एक में दो स्वाद

कैड्बरिज़
चॉकलेट एक्लेअर्स

बच्चे प्यार से खायें,
बड़ों का भी मन ललचाये।

कॅरामेल में घिरा पौष्टिक
मिल्क चॉकलेट

C-1 HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरिता की सामाजिक क्रांति अब

सरिता परिवार की ओर से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गांवों की ओर

एक नई पत्रिका

भूभारती

भूभारती ग्रामीण समाज के लिए एक अनूठी मासिक पत्रिका है. इस का उद्देश्य जहां गांवों में रहने वालों तक कृषि व अन्य ग्रामीण उद्योगधंधों के बारे में नई जानकारी पहुंचाना है, वहीं उन के मनोरंजन व ज्ञानवर्द्धन के लिए उच्च स्तर की सामग्री भी देना है.

भूभारती के हर अंक में ऐसी रोचक, प्रेरणात्मक कहानियां होती हैं जिन में मनोरंजन के साथ ग्रामीण समाज की अनेक समस्याओं का सहज और सरल हल भी होता है.

इस के लेख कृषि तक ही सीमित न हो कर गांवों में चलाए जा सकने वाले उद्योगधंधों, घरों की साजसज्जा, परिवार व आसपास वालों से व्यवहार, देशविदेश की घटनाओं की जानकारी आदि तक सब लिए हैं.

इस की गुदगुदाने वाली कविताएं, चुटीले कार्टून तथा आकर्षक छपाई आप का मन मोह लेगी.

भूभारती अपनी तरह की अकेली ऐसी पत्रिका है जिसे गांव में रहने वाला हर शिक्षित व्यक्ति—स्त्री, पुरुष, युवा, बच्चे सभी पढ़ना चाहेंगे.

100 पृष्ठों की रोचक सामग्री • मूल्य केवल 1 रुपया

विशेष रियायती मूल्य पर तुरंत वार्षिक ग्राहक बनिए. 11 रु. के स्थान पर 29 फरवरी, 1976 तक केवल 8.25 रु. दीजिए. पंचायतों व ग्रामीण स्कूलों के लिए केवल 6.25 रु. आज ही निम्न पते पर मनीआर्डर भेजिए :

भूभारती, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-55.

मुझे/हमें भूभारती का वार्षिक ग्राहक बना लीजिए. वार्षिक शुल्क रु._____ म. आ. नं. _____ तिथि_____ द्वारा भेजा जा रहा है.

नाम _____

पता : मकान नं._____ गली_____

डाकखाना_____

जिला _____ राज्य_____ पिन कोड_____

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरित प्रवाह

पिछले लगभग छः महीनों से यह स्तंभ अपरिहार्य कारणों से बंद रहा. इस से पाठकों को जो असुविधा हुई उस के लिए हमें खेद है. परंतु हमारा विश्वास है कि हमारे पाठक, जिन के बल पर सरिता इतनी तीव्रता से बहती चलती है, स्थिति समझते हैं. और इस अंतराल के होने पर भी उन का हमारे प्रति स्नेह बना रहा है. इस के लिए हम उन के प्रति आभारी हैं.

पिछला वर्ष 1975, भारत के लिए बहुत ही अधिक उथलपुथल, आशानिराशा व आत्मनिरीक्षण का रहा है. अनेक मान्यताएं, जिन्हें शाश्वत समझा जा रहा था, समाप्त होती दिखाई पड़ीं और उन की जगह नया कुछ नजर भी नहीं आया. परंतु इतने बड़े प्राचीन, विचित्र व विभिन्न तौरतरीकों वाले देश के लिए जो भी कुछ हुआ कोई अनहोनी बात नहीं थी. हमारे इतिहास में बराबर इस प्रकार के ज्वार-भाटे आते रहे हैं, और आगे भी आते रहेंगे.

आवश्यकता इसी बात की है कि जनसाधारण अपना संतुलन बनाए रखे और अपनी कमजोरियों को ढूंढ़ने व दूर करने की कोशिश करे, जिन के कारण देश अकसर भटकता रहा है—और मार खाता रहा है.

सरिता की स्थापना और प्रकाशन का मुख्य उद्देश्य ही यही था और है—बजाए दूसरों को अपने पिछड़ेपन, अपनी गुलामी, अपनी गरीबी का उत्तरदायी ठहराने के, इन के कारणों को हम स्वयं अपने में टटोलें और प्रकाश में लाएं. इस प्रयत्न में सरिता को अकसर कठिन समस्याओं से जूझना पड़ा है. परंतु हमें हर्ष है कि आज देश का एक बहुत बड़ा वर्ग देश की समस्याओं को इसी दृष्टि से देखता है और सरिता के इस प्रयास से अकसर रुष्ट होते हुए भी उस से सहमत होता है.

✦

पिछले वर्ष वर्षा अच्छी हुई और दूरदूर तक फैली रही. इस से प्रायः सभी फसलें कई वर्षों की अपेक्षा अधिक हुईं जिस के कारण अनाज, कपास, पटसन, तिलहन इत्यादि की कीमतों में काफी गिरावट आई. इस के साथ ही सरकार ने भी अपने कुछ खर्च काटे और मुद्रा-स्फीति पर थोड़ा अंकुश लगाया. नतीजा यह हुआ कि मूल्य सूचकांक पिछले वर्ष की अपेक्षा लगभग सात प्रतिशत गिर गया. जहां पिछले वर्षों में यह मूल्य स्तर 10-12 प्रतिशत और 1974 में 30 प्रतिशत बढ़ रहा था इस वर्ष थोड़ा घटा है. इस का स्वागत किया जाना चाहिए, और आशा की जानी चाहिए कि आगे भी सरकार अपने पर नियंत्रण रखेगी अपना खर्च आमदनी से बढ़ने नहीं देगी, न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नए नोट छाप कर बाजार में फैलाएगी. मूल्यों के घटनेबढ़ने के ये दोनों प्रमुख कारण हैं.

✦

बिहार राज्य में धनबाद की चासनाला कोयले की खान में पिछले 28 दिसंबर को एक बहुत बड़ी दुर्घटना हो गई, जिस के कारण 300 से अधिक खनिक मारे गए. जिस खान में ये काम कर रहे थे वहां अचानक पानी भर गया, और इतना भर गया कि इन को निकाला नहीं जा सका.

सरकारी सूत्रों ने कहा है कि यह सब कुछ इतनी तीव्रता और शीघ्रता से हो गया कि खान के अधिकारियों को कुछ करते नहीं बना. वास्तव में क्या हुआ यह तो खुली जांच ही बताएगी. परंतु जनसाधारण के लिए यह मानना आसान नहीं है कि इस विषय में पूरी सावधानी बरती ही गई थी.

पिछले दिनों सरकारी खानों के प्रबंध के बारे में काफी चर्चा रही है, और सरकार के मंत्रियों ने भी स्वीकार किया था कि सरकारीकरण के बावजूद इन खानों की हालत खराब है और इसी कारण सरकार ने एक उच्च अवकाशप्राप्त फौजी अफसर को इन सरकारी कोयला खानों का सर्वोच्च अधिकारी नियुक्त किया था, ताकि वहां कुछ अनुशासन व व्यवस्था बनाई जा सके.

बहरहाल यह तो कहा ही जा सकता है कि यदि इस प्रकार की दुर्घटना किसी निजी व्यवसाय वाली खान में हुई होती तो देश भर में उस के प्रबंधकों को कड़े से कड़ा दंड देने की मांग उठ खड़ी होती.

✦

पश्चिमी अफ्रीका में स्थित अंगोला में एक दूसरा वियतनाम बनने के आसार नजर आ रहे हैं. जब पुर्तगालियों ने अंगोला पर से अपना आधिपत्य समाप्त किया तो उस समय वहां कोई संगठित राजनीतिक दल नहीं था जो सत्ता को संभाल लेता. राजनीतिज्ञों की [illegible] क्षमता थी और न ही उन का जनता में विश्वास था. इसलिए पुर्तगाली गवर्नर बिना किसी अंगोलावासी को सत्ता सौंपे, पुर्तगाली झंडे को उतार कर जहाज पर चढ़ गया और एलान कर दिया कि अब अंगोलावासी जानें, हम तो चले—अलविदा.

इस के बाद वहां गृहयुद्ध प्रारंभ हो गया. एक दल को रूस का समर्थन प्राप्त हो गया, दूसरे को अमरीका और (महान आश्चर्य) चीन का. एक तीसरा दल है, जिस की पीठ दक्षिणी अफ्रीका थपथपा रहा है.

अब इन तीनों दलों में आपसी मारकाट मची है और गोरे (व पीले) शक्तिशाली राष्ट्र अपने स्थायी वैरभेद को वहां गोली और बारूद के माध्यम से प्रकट कर रहे हैं.

दक्षिणी अफ्रीका ने कुछ सिपाही इस युद्ध में भेजे थे, परंतु ज्यादा नहीं. इस के विपरीत रूस के आदेश पर क्यूबा ने अपने पांच हजार सैनिक अवश्य भेज दिए हैं.

अमरीका क्योंकि वियतनाम गृहयुद्ध में फंस कर अपार जन व धन खो चुका है और सारे जग में अपना मखौल उड़वा चुका है, इसलिए अमरीकी संसद की सीनेट ने अंगोला के लिए एक भी डालर देने से इनकार कर दिया है. इस से अमरीका के राष्ट्रपति फोर्ड की स्थिति बड़ी दयनीय हो गई है, क्योंकि वह कह रहे हैं कि अंगोला को रूसी पंजे से बचाना अमरीका की सुरक्षा के लिए बहुत आवश्यक है.

लेकिन कोई यह पूछ सकता है, अमरीका को अंगोला से क्या लेनादेना है? जब अमरीका की बगल ही में स्थित क्यूबा कम्युनिस्ट और रूस के प्रभाव में है और इस से अमरीका का कुछ नहीं बिगड़ा, तो 2000 मील दूर अंगोला में रूसी समर्थित प्रशासन स्थापित होने से क्या न्यूयार्क या वाशिंगटन जमीन में धंस जाएंगे?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिनों 100 दिन का एक कोयला बचाओ' अभियान शुरू किया था. इस के अंतर्गत 3880 व्यक्तियों को रेलवे का कोयला चुराने के अभियोग में गिरफ्तार किया गया. इन में से 311 रेलवे कर्मचारी थे.

रेलवे के खर्च का सब से बड़ा भाग ईंधन, कोयला व डीजल तेल है; और यह सर्वविदित है कि इन दोनों की विस्तृत रूप से चोरी होती रही है. यह चोरी रेलवे कर्मचारियों की मिलीभगत के बिना नहीं हो सकती, इसलिए अधिकारियों द्वारा 311 कर्मचारियों की गिरफ्तारी पर कोई आश्चर्य नहीं होना चाहिए.

✦

आप को यदि सड़क द्वारा देश में भ्रमण करने का मौका मिला हो तो आप ने देखा होगा कि आप मुश्किल से 20-25 मील चले कि सड़क पर लोहे (या लकड़ी) का डंडा लगा हुआ है जिस पर लिखा है—"ठहरिए." यह नगरपालिकाओं द्वारा चुंगी वसूल करने का स्थान होता है, जहां कुछ टैक्स दिए बिना आप आगे नहीं बढ़ सकते. यदि आप के पास कोई माल-असबाब नहीं है तब भी आप को ठहरना तो होता ही है. अब हिसाब लगाइए यदि आप को दिल्ली से बंबई, कलकत्ता या मद्रास जाना हो तो कितनी बार, कितनी देर के लिए रुकना होगा और अपने सामान पर चुंगी देनी होगी.

क्योंकि उद्योगव्यापार में समय का भी बड़ा मूल्य होता है, इसलिए माल-सामान के यातायात में इन चुंगियों द्वारा अवरोध कितने नुकसान करते हैं, यह समझना कठिन नहीं है.

समयसमय पर हर ओर से मांग की जाती रही है कि जब मालसामान पर सेल्स टैक्स लगा है, उत्पादन शुल्क है, तब इस जगहजगह की चुंगी की क्या आवश्यकता है. पर क्योंकि ढर्रा चला आ रहा है इसलिए कोई कुछ नहीं करता और देश का आर्थिक नुकसान होता चला जा रहा है.

हमारी सरकारी अर्थव्यवस्था में सब से अजीब बात यही है—टैक्स और टैक्स और फिर टैक्स पर टैक्स. पहले आप कच्चे माल पर उत्पादन टैक्स दीजिए, फिर इस पर बिक्री कर. जब यह कच्चा माल फैक्ट्री पहुंचेगा तो रास्ते में चुंगी कर दीजिए. जब माल तैयार हो तो फिर सब पर उत्पादन शुल्क, बिक्री कर और फिर यातायात चुंगी. जब उपभोक्ता उसे खरीदेगा तो वह फिर बिक्री कर दे और इन सब के ऊपर आय कर और जो बाकी बचा उस पर संपत्ति कर और अंत में एक कर और बाकी है—उत्तराधिकार कर—एस्टेट ड्यूटी.

इन करों के लगाने, वसूल करने और देने में देश के एक बहुत बड़े जनसमुदाय को अपना समय बरबाद करना होता है और धन खर्च होता है जो किसी को लाभ नहीं पहुंचाता. यदि इन सब करों को एक ही जगह एक ही बार हर वर्ष ले लिया जाए तो क्या हर्ज है? इन विभिन्न करों द्वारा एक साधारण शहरी व्यक्ति की आय का बहुत बड़ा हिस्सा सरकारी खजाने में चला जाता है जहां लगभग दो तिहाई से तीन चौथाई एकत्र करने तथा प्रशासनिक खर्च में लग जाता है—केवल एक तिहाई या एक चौथाई जनता को व्यवस्था, सुरक्षा व विभिन्न सरकारी सेवाओं आदि के रूप में वापस मिलता है.

✦

गुजरात में जनता मोर्चे की सरकार ने पंचायतों व नगरपालिकाओं के चुनाव कराए जिन को अब तक की कांग्रेस सरकारें टालती आ रही थीं. इन चुनावों में गांवों की पंचायतों में जनता मोर्चे को 29.75 लाख और कांग्रेस को 29.55 लाख मत मिले व नगरपालिकाओं में जनता मोर्चे को 7.5 लाख व कांग्रेस को 5 लाख. इस प्रकार दोनों गुटों की हारजीत लगभग बराबर रही.

अन्य राज्यों में भी स्थानीय संस्थाओं के चुनाव हो जाएं तो ठीक रहेगा. देश के वातावरण में थोड़ी ताजगी आ जाएगी. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

1975 का हिंदी साहित्य

संकुचित मनोवृत्ति, सतही दृष्टिकोण और ग्लैमर की दुनिया में खोए हुए साहित्यकार कब तक साहित्य के सूत्रधार बने रहेंगे.?

इस वार्षिक लेखमाला के अंतर्गत पिछले कुछ वर्षों से हिंदी साहित्य में छाते जा रहे जिस सन्नाटे की बारबार चर्चा की जा रही है, उस का संबंध पुस्तकों के अभाव से नहीं, बल्कि वैचारिक सन्नाटे से है.

गत वर्ष पुस्तकें कुछ कम प्रकाशित नहीं हुईं, लेकिन तेजी से उभरती हुई बाजारोन्मुखी प्रवृत्ति पूरे हिंदी पुस्तक संसार पर छा गई. इस संकट की आशंका तो थी ही, पर वह इतनी शीघ्र आ जाएगा, इस की आशा न थी. क्योंकि इस प्रकार की स्थितियां एक खासी लंबी प्रक्रिया में पड़ कर ही परिपक्व संपन्न हुआ करती हैं.

पर यह महामारी आई कहां से?

शायद इस पक्ष पर आज तक किसी ने ध्यान नहीं दिया. दिया भी हो तो इस पर अधिक माथापच्ची करने की जरूरत नहीं समझी. पर यह बड़ा ही महत्त्वपूर्ण पक्ष है. और इस का न केवल सहीसही विश्लेषण करना अनिवार्य हो आया है, बल्कि इस दिशा में अत्यधिक सतर्क हो कर रोकथाम की आवश्यकता भी उत्पन्न हो गई है.

आम धारणा यह है कि हिंदी फिल्मों के कुप्रभाव स्वरूप यह प्रवृत्ति पहले दर्शक वर्ग के मस्तिष्क में पली और फिर उन की मांग पसंदवश पुस्तक जगत में आ घुसी.

ऊपरी दृष्टि से यह बात सही दिखाई देती हुई भी, पूर्ण सत्य नहीं.

यहां पहली बात तो यह कि हम भ्रमवश जिन्हें हिंदी फिल्में कह देते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है उन में से 99 प्रतिशत उर्दू फिल्में होती हैं और साथ ही में यह कि आज हिंदी पुस्तकों के तथाकथित लोकप्रिय लेखकों में से 99 प्रतिशत हिंदी के लेखक ही नहीं हैं. हिंदी लेखक होना तो दूर की बात है, वे हिंदी में अपने हस्ताक्षर अब भी शायद ही कर सकते हों, और न ही अपने नाम से छपी हिंदी पुस्तकों को ही पढ़ सकते हैं. चाहे वे गुलशन नंदा हों, रानू हों, कृश्नचंदर हों कि छद्मनामों से लिखने-छपने वाले शतप्रतिशत लोग हों—सब के सब उर्दू के लेखक हैं.

लेखकों में दरबारी प्रवृत्ति

प्रश्न यहां उर्दू के विरोध का नहीं, बल्कि उर्दू लेखकों की दरबारी वृत्ति का है, जिस के कारण पर पसंदीदा चीजें लिखी जाने की परंपरा हमारे यहां पड़ी, पनपी और अब बुरी तरह फैल कर हिंदी साहित्य को लगभग खा चली है.

इस प्रवृत्ति की सब से बड़ी विशेषता यह है कि यह कच्ची समझ के पाठकों को कोई नई बात समझाने के बजाए पिटीपिटाई बातें ही उन के मस्तिष्कों में पकाने का प्रयास करती है. परंपरागत मान्य नैतिकता पर स्वीकृति की मोहर लगाती चलती है. साथसाथ कहींकहीं रुलाती चलती है, तो कहीं हंसाती-गुदगुदाती भी रहती है. आतंकित कर रोंगटे खड़े कर देने वाले प्रसंग डालने से भी नहीं चूकती. संक्षेप में यह कि रोमांस और रोमांच का एक चटपटी चाट—बारह मसालों सहित, जिसे चाट कर पाठक अपनी जिंदगी के सारे मसालों को भूल जाए—कम से कम थोड़ी देर के लिए. जैसे नशा कर के कोई कुछ देर के लिए अपने समक्ष उपस्थित वास्तविकता से पलायन कर जाता है.

अतः प्रकट है कि इस प्रकार की बारह मसालों की नशीली चाट को साहित्य नहीं कहा जा सकता, क्योंकि साहित्य तो परमानंद सहोदर है और परमानंद की प्राप्ति अपने जीवन को सुख-प्रद बना लेने से है, और जीवन सुखप्रद बनता है अपने समक्ष उपस्थित हर प्रकार की समस्याओं को सुलझा कर, न कि उन्हें भुला कर. और यह सुलझन आती है विचार करने से. जब कि इस प्रकार के लोकप्रिय साहित्य में विचार नाम की कोई चीज नहीं होती. होता है तो उलटे अविचार यानी विचार विरोधी अथवा विचार अवरोधक नशा. और विचार विरोधी कोई भी चीज साहित्य नहीं कही जा सकती.

साहित्य के नाम पर इधर सब से अधिक पुस्तकें धर्म, धर्मगुरुओं, आधुनिक भगवानों, ज्योतिष, परलोक विवरण, पूर्वजन्म, अगले जन्म आदि बोदी बकवादों पर आई हैं.

देख कर आश्चर्य होता है और कष्ट भी कि आज हमारे पाठक इस प्रकार के अविचारों और अंधविश्वासों में फंसे हुए हैं.

धर्म का चक्कर

एक लंबे काल तक अविराम गति से चला आने वाला अविचारी हिंदू संस्कृति का चक्र ही आज तक हमारे अधिकांश पाठकों को इन अंधविश्वासों के चक्कर में उलझाए हुए है. हमारे यहां दीनतादरिद्रता को महिमामंडित करने वाली लंबी सांस्कृतिक परंपरा है. फल-स्वरूप उद्यम को चालाकी का पर्याय माना जाता रहा है. उद्यम के अभाव में अधिकतर लोग दीन बने हुए हैं. हमारे यहां अविद्या रोग का भी कोई कारगर उपायउपचार आज तक ढूंढ़ा नहीं जा सका है. अतः जनसंख्या वृद्धि के साथ-साथ अपढ़मूर्खों, दीनदरिद्र, अंधविश्वासी समूहों की संख्या भी उत्तरोत्तर बढ़ती चली जा रही है.

ऐसी स्थिति में चांदी हो रही है उन लोगों की जो ज्योतिष विद्या, भूतप्रेत विद्या, परामनोविज्ञान विद्या आदि अविद्याओं की आड़ में मूर्खों, दरिद्रों को और अधिक मूर्ख बनाने और मूंड़ने का अवसर इस बीच चंद बाजारू व्यावसायिकों के सहयोग से पा गए हैं. वह बात अलग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है कि मुंडने का अधिकांश लाभ व्याव-
सायिक कमा जाते हैं. फिर भी मैं ऐसे
लेखकों को अधिक दोषी पाता हूं.

आर्यसमाज की स्थापना शताब्दी
तथा महावीर की ढाई हजारवीं जयंती
के अवसरों पर इस वर्ष पुस्तक जगत में
कागज, स्याही तथा श्रम का जितना
अधिक अपव्यय हुआ है उतना शायद ही
पिछले कई दशकों में कभी हुआ हो.
अधिक पढ़ेलिखे लोगों को भी मैं ने यह
कहते सुना है कि इधर धर्म का पुनर्जागरण
फिर आरंभ हो रहा है. विश्वधर्म महा
सम्मेलन तथा धर्म संबंधी भाषण और
पुस्तक प्रकाशन आदि का ही यह समूह
सम्मोहित करने वाला कुप्रभाव है.

ग्लैमर की चकाचौंध

फिल्मोन्मुख तथा फिल्मानुगत
साहित्यिक प्रवृत्ति भी आलोच्य वर्ष में
अपेक्षा बढ़ी है, फलस्वरूप इस प्रकार
का साहित्य शुद्ध बंबइया फिल्मों के
रूपस्वरूप ही पाठकों को परोसा गया.
गत वर्ष इसी वार्षिक स्तंभ में हिंदी
साहित्य में चलने वाली जिस 'काली आंधी'
का उल्लेख किया गया था वह आंधी अब
आलोच्य वर्ष का मौसम बन छा गई है
और अतीत को भविष्य बनाने का प्रयास
सही दिखाई देती है. 'आगामी अतीत'
नामक उपन्यास (कमलेश्वर) इस का
ज्वलंत उदाहरण है, जो 'मौसम' नामक
फिल्म का तलछट (बाइप्राडक्ट) है.

फिल्मानुगता साहित्यिक प्रवृत्ति का
एक अन्य चमत्कार भी इस वर्ष देखने में
आया है. और वह यह कि फिल्मी नामों
से पूर्व प्रकाशित साहित्यिक कृतियों के
असली नाम और चेहरे तक फिल्म नामा-
नुसार कर उन के नए नामकरण वाले नए
संस्करण निकलवा डाले हैं. उदाहरणार्थ
'अमृत बक्षी' का उपन्यास 'अठारह सूरज
के पौधे' ज्यों का त्यों नए संस्करण में
'ब्लैक डाउन' के नाम से छपा है तथा इस
नए सजिल्द संस्करण के मुखपृष्ठ पर
फिल्म अभिनेत्री राखी तथा अभिनेता रेना
के चित्र छपे हैं.

परंपरागत नैतिक मान्यताओं की वकालत कर के जिंदगी की सचाइयों से पलायन करने वाले साहित्यकार क्या समाज को नई दिशा दे सकते हैं?

साहित्य क्षेत्र के अनेक अन्य लोग भी इस वर्ष फिल्म के ग्लैमरीय क्षेत्र में प्रविष्ट हुए हैं. अद्यतन कैंजुअल्टीज हैं महावीर अधिकारी तथा रामावतार त्यागी (फिल्म : 'जिंदगी और तूफान.')

यहां थोड़ा रुक कर एक बात और कह देनी आवश्यक लग आई है कि फिल्मी ग्लैमर का आकर्षण हिंदी साहित्यकारों के लिए कोई नई बात नहीं. प्रेमचंद भी कभी खिंचे थे, अश्क भी, भगवतीचरण वर्मा भी तथा और भी कई, लेकिन वे सब जल्दी ही लौट आए, क्योंकि जान गए थे कि उन्हें सृजन करना है, ग्लैमर सम्मोहित नहीं होना. जब कि इधर स्थिति यह हो रही है कि आज के हिंदी साहित्य-कार शायद यह जान चुके हैं कि सृजन अब उन के बलबूते का नहीं रह गया, अतः ग्लैमर का भोग क्यों न किया जाए!

ऊपर मैं ने जिन पुराने हिंदी साहित्य-कारों के प्रत्यावर्तन की बात कही है उन्हीं के साथ या आगेपीछे कई उर्दू साहित्यकार भी बंबई गए थे. कृश्नचंदर, ख्वाजा अहमद अब्बास, राजेंद्रसिंह बेदी, अली सरदार जाफरी, साहिर लुधियानवी, नक्श लायलपुरी, कैफी आजमी, जांनिसार अख्तर वगैरा. लेकिन मजे की बात है कि उन में से कोई एक भी तो वापस नहीं लौटा. क्यों? अकारण नहीं, जाहिर है कि उर्दू अदब की दरबारी प्रवृत्ति फिल्मी दुनिया की दरबारदारी के माफिक बैठी.

एक अन्य प्रवृत्ति जो इधर बड़ी तेजी से उभरी है वह है सच का लेबल लगा कर झूठ बेचने की. और ये तथाकथित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हत्या, ठगी, डकैती आदि की सनसनी लिए रहती हैं. यानी मनुष्य की उस आदिम हिंस्र वृत्ति को पुनः भड़काने का प्रयत्न, जिस का उदात्तीकरण करने के प्रयास सहस्रों वर्षों से चल रहे हैं.

अब तक तो हम ने तथाकथित लोकप्रिय साहित्य की प्रवृत्तियों की चर्चा की. अब लीजिए, तथाकथित गंभीर साहित्य की प्रवृत्तियों की बात. इस कोटि के साहित्य के नाम के साथ भी मैं ने जो तथाकथित शब्द लगाया है, वह सप्रयोजन ही लगाया है क्योंकि आलोच्य वर्ष में कोई एक भी ऐसी कृति नहीं आई जिसे वास्तव में गंभीर अर्थात चिंतनात्मक कहा जा सके.

लगता है, हिंदी लेखकों के पास चिंतन के लिए कोई नया विचार है ही नहीं.

चिंतन का अभाव

विचार के नाम पर इन के पास यदि कुछ है तो मात्र घरगृहस्थी या प्रेमव्रेम के क्षेत्र की सीमित सोचें, या फिर मजदूर-मालिक के संबंधों अथवा छिटपुट दैनंदिनी समस्याओं में ही उलझा हुआ है वह. यह भूल कर कि वह पत्रकार नहीं, साहित्यकार है, सृजेता है, और उसे नए विचार का सृजन करना है.

नए विचार की अभिव्यक्ति ही सही अर्थ में गंभीर साहित्य है.

पुराने विचार को किसी नए आयाम में प्रस्तुत करने वाली अभिव्यक्ति भी कुछकुछ गंभीर साहित्य के अंतर्गत रखी जा सकती है.

परंतु पुराने विचार के घिसेपिटे आयामों को ही मात्र अलग भाषाशैली में प्रस्तुत करना तथाकथित वाली कोटि में ही आ सकता है.

ऐसे साहित्य को हम भले ही अविचारी साहित्य न कह सकें, लेकिन विचार को आगे न बढ़ा कर उस में गतिरोध उत्पन्न करना या सन्नाटा पैदा करना भी तो विचार विरोधी कृत्य ही कहा जाएगा.

यहां सामान्य पाठक के मन में प्रश्न उठ सकता है कि यदि विचार में नवीनता के प्रति इतना आग्रह है तो इसी एक बात को यदि सर्वाधिक महत्त्व पूर्ण मान लिया जाए तो क्या आज का अधिकतर हिंदी साहित्य गंभीर साहित्य की कोटि से बहिष्कृत न हो जाएगा?

इधर कुछ समय से समानतावादी समूहवादी स्वर क्योंकि हमारे देश में पूर्व पेक्षा अधिक मुखर हो गूंजने लगा है, इस लिए लोकरुचियों का अनुगमन तथा लोकरंजनकारी शुद्ध मनोरंजक रचना का भी पूर्वापेक्षा अधिक बोलबाला हो पड़ने लगा है.

साहित्यकार या मजदूर?

विश्व साहित्य में अनेक ऐसी विप्लवशील पुस्तकें मौजूद हैं जिन्होंने चिंतन क्षेत्र में हलचल मचा दी. परंतु क्या विश्व की तीसरी बड़ी भाषा हिंदी अपनी ओर से एक भी ऐसी पुस्तक प्रस्तुत कर सकी है?

जहां का साहित्यकार स्वयं को श्रमजीवी कहने में गौरव अनुभव करता है वहां वैचारिक सृजन मात्र एक भ्रम इतर और हो भी क्या सकता है? क्योंकि विचार प्रतिभा की उत्पत्ति है, श्रम की नहीं.

और श्रम पर्याय है मशक्कतमजदूरी का, न कि मस्तिष्क तथा चिंतन सृजन का, अतः विचार के महत्त्व को नकार कर श्रम के महत्त्व को जो स्वीकार लेते हैं उन्हें फिर विचार या चिंतन नकार देता है. उन्हें साहित्यकार की कोटि से हटा कर मात्र एक श्रमकार कामगार बना डालता है. और कोई भी कामगार मात्र अपने स्वामी द्वारा प्रदत्त पारिश्रमिक (धन और प्रशंसा के रूप में) के लिए ही अपने तनमन, मस्तिष्क की मजदूरी करता है. वह उन्मुक्त, स्वतंत्र होकर अपने मस्तिष्क तंत्र के यंत्र को चिंतन सृजन के लिए संचालित नहीं कर सकता.

अतः यह अकारण नहीं है कि साहित्यकार की सोच के सूत्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेखक मौलिक विचारों को पहचानकर लाभान्वित, वेश्यावास, शराबबंदी, दहेज, अनमेल विवाह, विवाहेतर यौनसंबंध आदि.

विश्वव्यापी स्तर पर आज तक जो बड़े राजनीतिक, धार्मिक तथा सामाजिक षड्यंत्र रचे गए हैं उन का विश्लेषण करने की आवश्यकता भी किसी लेखक ने अनुभव नहीं की. मानवीय व्यवहार के मूल संचालक तत्त्वों का विश्लेषण करने का कष्ट भी किसी ने नहीं उठाया.

छिटपुट सामाजिक समस्याओं में ही फंस कर रह गए हैं हमारे ये साहित्यकार—उदाहरणार्थ छूतछात, जातिपाति,

लेकिन इन छिटपुट समस्याओं के भी कोई कारगर हल सुझा सकने में यह असमर्थ रहे हैं, क्योंकि इन की एप्रोच ही रूमानी किस्म की रही है और ऐसी एप्रोच इस कारण है कि वस्तुस्थिति की तह तक पहुंच कर छिद्रान्वेषण करने में उन की दृष्टि असमर्थ रही है.

आलोच्य वर्ष के दौरान पुस्तक जगत में एक स्वर यह भी उभरता सुनाई दिया कि पुस्तकें अब 'मास मीडिया' के अंतर्गत

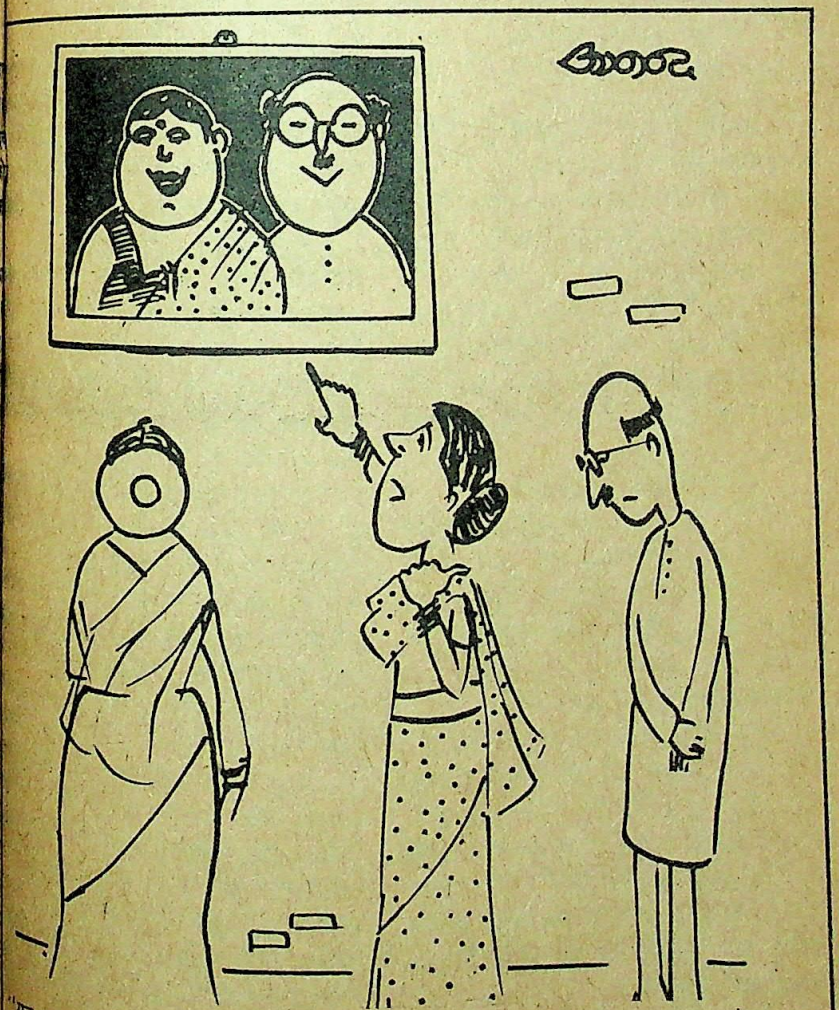

"यह हमारी उन दिनों की फोटो है जिन दिनों इन को ओवर टाइम मिलता था."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्थान [illegible] हैं. [illegible] जनसाधारण तक कोई संवाद पहुंचाने तथा जनसमूह को प्रभावित करने का साधन बन चली हैं.

ऐसे साधनों में अब तक जो प्रमुख माने जाते रहे हैं वे हैं--सिनेमा, रेडियो, टेलीविजन तथा पत्रपत्रिकाएं. और जिस प्रकार इन साधनों का बड़े पैमाने पर दुरुपयोग होने लगा है तथा ये साधन संवाद का साधन बनने के स्थान पर जिस तरह रुचिभ्रष्टा, सस्ते मनोरंजन और व्यापार के साधन बन कर रह गए हैं, उसी तरह का साधन बन चली हैं अधिकांश रुचिभ्रष्टा, सस्तीमनोरंजनकारी पुस्तकें.

साहित्य के नाम पर?

सिनेमा के नाम पर प्रधान हैं घटिया बंबइया फिल्में. रेडियो के नाम पर विविध भारती की विज्ञापन प्रसारण सेवा तथा हर समय कहीं चीखते फिल्मी गाने, टेलीविजन के नाम पर भी अब तक तो प्रधान रही हैं मात्र बंबइया फिल्में तथा फिल्मी नाचगानों की रील कतरनें (चित्रहार कार्यक्रम). उस पर अब यहां भी अब चालू हो गई है विज्ञापन प्रसारण सेवा.

पत्रपत्रिकाओं में अधिकतर की हालत यह है कि 75 प्रतिशत सस्ता मनोरंजन करने वाले किस्सेकहानियां और बाकी में साप्ताहिक या मासिक भविष्यफल, तीजत्योहार, सेक्स तथा अपराध की सनसनीपूर्ण सूचनाएं, अभिनेत्रियों के नंगेअधनंगे चित्र तथा फूहड़ लतीफे आदि.

जन समूह से संवाद का माध्यम बन कर हिंदी पुस्तकों ने भी घुमाफिरा कर यही सब कुछ परोसा है अपने मंदबुद्धि पाठकों को और अधिक बुद्धि भ्रष्ट करने के लिए और यह 'मासमीडियाई' प्रवृत्ति हमारे साहित्य में इस वर्ष कहीं अधिक उभर कर हमारे सामने आई है. यह लेखन धर्म नहीं है.

लेखन धर्म क्या है? मैं समझता हूं कि अपनी प्रयोगशाला में बैठ कर अपनी किसी जिज्ञासा को परखनलियों में उं[illegible] जांचने की प्रक्रिया में पड़े किसी वैज्ञा[illegible] तथा अपने लेखन कक्ष में बैठ कर अ[illegible] किसी जिज्ञासा को...किसी वैचा[illegible] वांछा को शब्दों में उड़ेलने की प्रक्रिया [illegible] पड़े किसी लेखक में कोई आधारभूत [illegible] मुझे नहीं लगता.

पर जो लोग (लेखक) लेखन [illegible] उपयोगी कला के रूप में नहीं मानते [illegible] फिर यह मान लेना होगा कि वे [illegible] लेखन के रूप में प्रयोग कर पाने [illegible] असमर्थ हैं.

गिनेचुने उपन्यास

प्रवृत्तियों की चर्चा के बाद अब [illegible] आते हैं विभिन्न विधाओं की उल्लेख[illegible] पुस्तकों की चर्चा पर. प्रमुख [illegible] उपन्यास के क्षेत्र पर दृष्टि डालने [illegible] प्रतिष्ठित उपन्यासकारों पर ही स[illegible] पहले ध्यान जाना स्वाभाविक होता [illegible]

मन्मथनाथ गुप्त का नवीन[illegible] उपन्यास 'रात और दिन' तथा डा[illegible] प्रभाकर माचवे का आठवां उपन्यास 'फि[illegible] लिए'--मात्र ये दो कृतियां ही पु[illegible] उपन्यासकारों के खेवे की और [illegible] आलोच्य वर्ष में हिंदी साहित्य को [illegible] स्वरूप प्राप्त हो सकी हैं.

डाक्टर माचवे अपने उपन्यास 'फि[illegible] लिए' की भूमिका में एक ऐसे तथ्य [illegible] स्वीकार करते हैं, जिसे पुरानी पीढ़ी [illegible] कम ही लेखक स्वीकार तो क्या मह[illegible] भी शायद कर पाते हों. वे कहते हैं, [illegible] नहीं जानता कहां तक अपनी बात [illegible] पाया हूं, पर मन उद्वेलित अवश्य [illegible] दिन ब दिन पुराने आदर्शों पर [illegible] धुंधली होती जाती है, पर कोई [illegible] बेहतर सवेरा नजर भी नहीं आता [illegible] ऐसी खंडित मनःस्थिति में केवल [illegible] संतोष की बात है कि सैकड़ोंहजारों [illegible] साधारण हैं जो मेरी ही तरह की [illegible] स्थिति में हैं. और शायद उन का [illegible] अनुभव इस रचना को और अधिक [illegible] का बनाए."

परंतु यह उपन्यास जनसाधार[illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पढ़ने के लिए है ही नहीं क्योंकि साधारण व्यक्ति को न तो अपनी उमर के इस मोड़ पर पहुंच कर अपनी पुरानी मान्यताएं धुंधली होती लगती हैं, न ही नई किसी की चाह होती है. वह तो सांचेबद्ध आदर्शों के सहारे चुपचाप जीवन जीता चलता है—निर्द्वंद्व भाव से.

आज के आदमी की तसवीर

जो हो 'किसलिए' आज के आदमी की खंडित मनःस्थिति का काफी बारीकी से चित्रण करता चलता है.

इस उपन्यास में मुख्य खंड हैं, जिन में धर्म, अर्थ तथा काम विषयक पतनोन्मुखी प्रवृत्तियों का अंकन किया गया है. इस में लेखक नाम का एक अमूर्त पात्र है जो अपनी डायरी लिखता चलता है. उपन्यास का कथानक छः परिवारों की अलगअलग लगने वाली कहानियां हैं, परंतु लेखक पात्र की डायरी के अंश इन कहानियों को जोड़ते चले जाते हैं. यह लेखक पात्र उन छः परिवारों में घटित होने वाली घटनाओं का द्रष्टा भी है.

संक्षेप में कहें तो यह उपन्यास जीवन दर्शन को समझने की छटपटाहटी तलाश है, परंतु इस का कलेवर इतना छोटा है कि यह छटपटाहट भी पूरी तरह उभर कर नहीं आ पाती.

मन्मथनाथ गुप्त का 'रात और दिन' सरकारी अधिकारियों की थोथी नैतिकता का परदाफाश करने वाला रोचक उपन्यास है. किसी वैचारिक शोध के चक्कर में पड़े बिना उपन्यासकार एक व्यंग्य कार्टूनिस्ट की तरह छिटपुट चित्र उकेरता चलता है. पत्रकार की सी कटुता भी लेखक का बल में उभरती है.

कुछ सरकारी अफसरों का रोजमर्रा का जीवन किस तरह सुरा और सुंदरी में डूबा हुआ है. इस के खासे चटपटे चित्रण तथा कहींकहीं पैना वार करते वाक्य वाण भी हैं.

मन्मथनाथ गुप्त का कहना है कि भारत समाजवाद की ओर डगें भर रहा है, पर उस में बाधक हैं ऐसे सरकारी कर्मचारी, जो किसी विचारधारा या समाजपद्धति के प्रति प्रतिबद्ध नहीं, उन का एक ही लक्ष्य है—मौज करो और स्वाभाविक रूप से मौज करो.

जब तक हमारी सरकार समाजवाद का नाम भर ले रही थी, जैसे लोग राम-राम जपते हैं, तब तक इन अधिकारियों को ले कर निभ गया, पर जब से समाजवाद की ओर ठोस कदम उठने लगे तब से आफतें आ गई हैं.

उच्च अधिकारी वर्ग का आईना

उपन्यास में न तो कहीं उन ठोस कदमों का कोई उल्लेख है और न समाजवाद की कोई व्याख्या वांछा. पूरे कथानक का मात्र लक्ष्य लगता है, उच्चाधिकारी वर्ग की निजी एय्याशी भरी जिंदगी का मनोरंजक नजारा करना, क्योंकि ऐसे मनोरंजक नजारे निम्न अथवा मध्यम वर्ग के जीवन पटल पर दिखाए नहीं जा सकते थे. फिर भी उपन्यासकार ने अधिकारी वर्ग के आंतरिक जीवन को निकट से देखा है. साफ लगता है कि लेखक स्वयं भी कभी उसी बिरादरी का अंग रह चुका है.

पुरानी पीढ़ी के लोकप्रिय उपन्यास-

जीवित रचना

सब से जीवित रचना वह है जिसे पढ़ने से प्रतीत हो कि लेखक ने अंतर से सब कुछ फूल की तरह प्रस्फुटित किया है.

—शरतचंद्र (पत्रावली)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कार गुरुदत्त [illegible] इस वर्ष तीन उपन्यास आए हैं--'महाकाल,' 'प्रारब्ध,' और पुरुषार्थ' तथा 'सफर.' परंतु वैचारिक दृष्टि से पठनीय एक भी नहीं है. क्योंकि तीनों में लेखक प्राचीन पूर्वाग्रहग्रस्त मान्यताएं ले कर चलता है. 'महाकाल' में तो लेखक ने एक विचित्र ही स्थापना कर दी है कि महाकवि कालिदास को विक्रमादित्य ने कशमीर नरेश बना कर भेजा और कालिदास ने अनेक वर्षों तक सफलतापूर्वक राज्य संचालन भी किया तथा एक षोडशी कन्या से विवाह कर संतानोत्पत्ति भी की.

'प्रारब्ध और पुरुषार्थ' में गुरुदत्त ने शहंशाह अकबर के निजी यौन जीवन के बारे में अनेक रहस्योद्घाटन किए हैं.

'सफर' में गुरुदत्त कांग्रेस और महात्मा गांधी पर छींटाकशी करते चलते हैं. समझ में नहीं आता कि जब गुरुदत्त अपने बृहत् उपन्यास 'दो लहरों की टक्कर' में कांग्रेस की स्थापना से ले कर गांधी की मृत्यु तक के विशाल कैनवास पर लगभग दो हजार पृष्ठ भर गालियां कांग्रेस तथा गांधी को बहुत पहले ही दे चुके हैं तो अब इन छोटेमोटे उपन्यासों में उसी पर छींटे कसने की क्या आवश्यकता थी.

नारी और पुरुष

डाक्टर लक्ष्मीनारायण लाल का उपन्यास 'शृंगार' यह कहना चाहता है कि पुरुष के भीतर एक शाश्वत पुरुष भी होता है तथा इसी प्रकार नारी के अंदर एक शाश्वत नारी. और ये शाश्वत नर-नारी मात्र आत्मा के धरातल पर ही परस्पर मिल पाते हैं और आत्माओं के मिलन में शरीर तो मात्र एक सेतु का कार्य करता है.

उपन्यास का नायक श्रीमंत और नायिका पेरिन अपने विवाहित जीवन से ऊब कर संबंधविच्छेद कर चुके होते हैं कि कालांतर में पुनः मिल जाते हैं सहसा एक दिन महाबलीपुरम में, और इस मिलन पर उन्हें लगने लगता है कि उन की तो आत्माएं ही परस्पर मिल चुकी हैं. पर इस पुनर्मिलन के समय दोनों ही पुनर्विवाहित हो चुके थे--श्रीमंत मीनाक्षी से और पेरिन अशोक टंडन के साथ. अतः पुनः अपनेअपने जोड़े से तलाक लेना पड़ता है. उन्हें तलाक लेदे कर श्रीमंत और पेरिन कुछ समय तक इकट्ठे भटकते रहते हैं--कभी केरल तो कभी बस्तर और फिर दिल्ली लौट आते हैं. दोनों वैभवपूर्ण परिवार के सदस्य हैं अतः दोनों के पिताओं को यह स्थिति असह्य लगती है. अतः श्रीमंत अंततः मजदूरी करने लग जाता है और पेरिन के साथ सुखपूर्वक जीवनयापन करने लगता है.

डाक्टर लाल के इस उपन्यास पर कोई अन्य टिप्पणी करने से पूर्व एक अन्य उपन्यास की चर्चा अनावश्यक नहीं होगी.

जिंदगी से ऊब

वह है एक नई लेखिका मृदुला गर्ग का उपन्यास 'उस के हिस्से की धूप.' इस में भी एक पूर्व तलाकित जोड़े का पुनर्मिलन चार साल बाद अचानक ही एक दिन नैनीताल में हो जाता है. चार वर्ष इन में परस्पर तलाक का कारण भी पतिपत्नी के संपर्कों में आ गई ऊब थी. पर ऊब केवल नायिका की ओर से ही व्यक्त होती थी क्योंकि पति अति व्यस्त फैक्ट्री मैनेजर है. पत्नी कथा लेखिका होने के साथसाथ कालिज में हिंदी की लेक्चरर भी है, फिर भी वह अपने पति की तरह व्यस्त नहीं रह पाती.

वह पति की व्यस्तता के प्रति ईर्ष्या अथवा कुढ़न में यह महसूस करने लगी थी कि उस का पति उसे प्यार नहीं करता और यह कि वह प्यार की भूखी है. उसे प्यार मिलता है एक अन्य लेक्चरर मित्र से. लगता है कि वह निहाल हो गई है. अतः अपने पति से तलाक ले कर दूसरा विवाह कर लेती है.

वह मन ही मन फिर कहीं त्रस्त हो जाती है. अपने दूसरे पति की व्यस्तता से भी. पूर्व पति से पुनर्मिलन होता है तो वह अपने काम की व्यस्ततावश एक दिन उस से विदा ले चला जाता है और वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...ारी अंतर्द्वंद्व में ग्रस्त हो सोचती है तो ...ती है कि किसी भी अन्य के संगसाथ ...व्यस्त हो कर राहत नहीं मिल सकती. ...राहत अगर पा सकती है तो मात्र ...ने काम में अतिव्यस्त हो कर ही. अपने ...काम में व्यस्तता ही व्यक्ति को परितोष ...सकती है और बकौल इस कथा नायिका ...कि 'इस से और कोई नतीजा न भी ...निकले, कम से कम मुझे यह तसल्ली ...हो कि जो कुछ मैं कर सकती थी मैं ...किया.'

अब मैं डाक्टर लाल के 'शृंगार' ...मृदुला गर्ग के 'उस के हिस्से की ...' पर टिप्पणी करते हुए कह सकता ...कि लगभग समान जमीन पर होते हुए ...दोनों के केवल कथ्य नितांत भिन्न ...गए हैं. बल्कि कथ्य भेद ने जहां एक ...डाक्टर लाल के पात्रों को रूमानी ...र के गुडियापटोले बना डाला, वहीं ...री ओर मृदुला के पात्र जीवंत जीवन ...न के जन्मदाता बन गए हैं.

कथ्य भेद के संदर्भ में एक और बात यह है कि कथ्य यदि किसी वैचारिक शोध की प्रक्रिया में से अनायास उभरता चला जाता है तो स्वतः ही अपनी सहज रवां शैली और शब्द ओढ़ता चलता है, परंतु यदि किसी पूर्व निर्धारित पूर्वाग्रह को कथा के तानेबाने में फिट करने का प्रयास हो तो भाषाशैली का बनावटीपन छिपाए नहीं छिपता, जैसे कि 'शृंगार' में.

रमेश बक्षी का नवीनतम तथा लगभग एक दशक बाद आया उपन्यास 'खुलेआम' एक ऐसे त्रस्त व्यक्ति के मानसिक हड़कंप की कंपकंपाती भागती सी कहानी या कहानीनुमा नोट्स हैं, जो अपने दोस्तों के माध्यम से व्यस्त हो जीता रहता है. यों भीतर कहीं वह इतना अकेला है कि अपने अकेले घर में मित्रों की हर समय लगी रहने वाली भीड़ भी उस का एकांत त्रास भर नहीं पाती, पत्नी छोड़ गई है उसे. प्यार के फिजूल झमेले में या तो उसे विश्वास नहीं या फिर इस पर से विश्वास कहीं बेतरह टूट कर उसे भीतर तक तोड़ गया है.

"किसी ऊंची पहाड़ी से घाटी में तेजी से चले चलो, मुझे आत्महत्या करनी है."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने ही तरह के मिलों का कंटीला अस्तित्व उसे कहीं अपने परिवेश में मिसफिट लगता है. फिर भी वह चलते रहना और ऐसे चलते रह कर जिंदा रहना चाहता है. क्षण में जीना ही जीने का रहस्य है उस की दृष्टि में. पूरे जीवन के फैलाव को देखने से इसलिए कतराता है कि कहीं अपने पड़ोसी रामदयाल यू. डी. सी. की तरह उसे भी आत्महत्या न करनी पड़ जाए.

गांव की कहानी

रामदरश मिश्र का उपन्यास 'जल टूटता हुआ' भारत की ग्रामीण संस्कृति की सहजता का पक्षधर बन कर धार्मिक मान्यताओं के विघटन, सामाजिक मूल्यों के बिखराव तथा अंधविश्वासों के विनाश की प्रक्रिया में नई करवट लेते हुए ग्रामीण व्यक्ति समूह की मार्मिक कहानी कहता चलता है. आकार में बृहत होते हुए भी उपन्यास का घटनाक्रम रोचकता को टूटने नहीं देता.

मधुकर सिंह का उपन्यास 'सब से बड़ा छल' गांव की पृष्ठभूमि पर लिखा [illegible] तथा मर्मस्पर्शी घटना[illegible] सहजसुबोध चित्रण है.

योगेशकुमार का 'टूटतेबिखरते [illegible] अमरीका की पृष्ठभूमि पर लिखा [illegible] उपन्यास है. इस का नायक योगी [illegible] जाता है विज्ञापनकला का प्रशिक्षण [illegible] अमरीकी समाज में विज्ञापन का [illegible] बताना ही इस उपन्यास का मुख्य [illegible] है. व्यावसायिकता के शिकंजे में [illegible] पढाती मानवता का चित्रण है.

महेंद्र भल्ला का उपन्यास '[illegible] तरफ' भी विदेशी पृष्ठभूमि पर है [illegible] इस में अमरीका न हो कर इंग्ल[illegible] तथा इस का मुख्य कथ्य है रंगभे[illegible] नीति के फलस्वरूप वहां पर अपमान[illegible] घुटा जीवन जीने को विवश काले [illegible] की अनुभूतियां.

गोपाल उपाध्याय का उपन्यास '[illegible] टुकड़ा इतिहास' कुमाऊं अंचल [illegible] पिछड़े इलाके की अंतर्कथा है. [illegible] नायिका एक हरिजन युवती है, [illegible] ब्राह्मण से विवाह कर के अपना [illegible] झेलती है और अंत में विद्रोहिणी हो [illegible] राजनीति में कूद पड़ती है – [illegible]

ज्ञान की परिधि

जब ज्ञान इतना घमंडी बन जाए कि वह रो न सके, इतना गंभीर बन जाए कि वह हंस न सके और इतना आत्मकेंद्रित बन जाए कि वह अपने सिवा और किसी की चिंता न करे, तो वह ज्ञान अज्ञान से भी ज्यादा खतरनाक होता है.

—खलील जिब्रान

✦

थोड़ा पढ़ना अधिक सोचना, कम बोलना, अधिक सुनना यही बुद्धिमान बनने का उपाय है.

—टेंगो

✦

ज्ञान का अंतिम लक्ष्य चरित्रनिर्माण होना चाहिए.

—मो. क. गांधी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डा. लीला आजगांवकर

"स्त्रियों के लिए डाक्टरी पेशा अब उतना सुरक्षित और सम्मानजनक भी नहीं रह गया है. डाक्टरों को रात में देरसवेर, जगहबेजगह मरीज को देखने जाना पड़ता है. महिला डाक्टरों के सामने तो ऐसे समय में बड़ी कठिनाई सामने आती है. किसी अनजानी जगह अकेले जाना खतरे से खाली नहीं है. मैं तो अपने क्लीनिक से बाहर मरीजों को तब तक देखने नहीं जाती जब तक कि उन का परिवार पूर्वपरिचित न हो. गांवों में तो डाक्टरों की सुरक्षा का कोई प्रबंध नहीं है. पार्टीबाज नेता और बड़े-बड़े अफसरों की नजरों में उन की कोई इज्जत नहीं होती. कभीकभी तो वे गांव में अकेली काम करने वाली महिला डाक्टरों से मनमाने तरीके से पेश आते हैं."

लेख • शशिप्रभा भारती

अध्यवसाय, श्रम और लगन ने जिन्हें कहां से कहां पहुंचा दिया...

उपरोक्त विचार व्यक्त करने वाली समाजसेविका डा. श्रीमती लीला आजगांवकर द्वारा डाक्टरी व्यवसाय अपनाने की कथा अत्यंत रोचक है.

महाराष्ट्र के सतारा जिले में करहाड़ नामक एक कसबा है. वहां गंगाधर देवलेकर और श्रीमती जानकी नामक सुना दंपति रहते थे. सर्राफी और लेनदेन के रोजगार से अच्छी तरह निर्वाह हो रहा था. अचानक रोजगार में घाटा हो गया. मकान और जमीनजायदाद बिकने की नौबत आ गई. बेआबरू होने के भय से गंगाधर पत्नी और पांच छोटेछोटे बच्चों को छोड़ कर गायब हो गए. कोई कहता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है, वह संयासी हो गए, पर उन का क्या हुआ, इस का अभी तक किसी को पता नहीं लगा.

गंगाधर देवलेकर की पांच संतानों में तीसरी संतान लीला थी. लीला से बड़े दो भाई और छोटे एक भाई और बहन थे. जब वह परिवार पिता की छत्रछाया से अलग हुआ, उस समय लीला की उमर पांच साल की थी. परिवार के भरणपोषण के लिए माता ने खेत पर और दूसरों के घर मजदूरी करना आरंभ किया. इस के अलावा घर में भी सिलाई का काम कर के कुछ कमा लेती थी.

दस वर्ष की वय से लीला ने भी दूसरों के घर बरतन मांजने और कपड़े धोने के काम में हाथ बंटाना शुरू कर दिया. साथ ही वह दिन में सरकारी स्कूल में पढ़ने भी जाया करती थी.

करहाड में पूरा निर्वाह न होने के कारण लीला की मां बच्चों को ले कर निकटवर्ती गांव बत्तीस शिराले चली गई. कुछ दिनों बाद लीला का बड़ा भाई मैट्रिक पास कर के मात्र 15 रुपए माहवार पर नौकरी करने लगा. दूसरा भाई फेरी लगा कर थोड़ाबहुत सामान बेचता और पढ़ाई भी करता. मेहनतमजदूरी में मां का साथ देते हुए लीला ने वर्नाक्यूलर फाइनल (मिडिल) की परीक्षा दी और सारे बोर्ड में पांचवें नंबर पर आई.

लीला आजगांवकर : कुछ आवश्यक तकनीकी शब्दों को छोड़ कर चिकित्सा विज्ञान की पढ़ाई मातृभाषा में होना उचित.

अध्ययनशीलता

लीला की पढ़ने में अत्यंत रुचि थी. किंतु घर में शिक्षा तो दूर, पेट भरना मुश्किल हो रहा था. इसलिए यह तय हुआ कि करहाड के एक रिश्तेदार वकील के घर रह कर उन का घरेलू काम संभाल ले. वेतन का तो कोई सवाल ही नहीं था. अपना पेट पाल ले, यही पर्याप्त था. वहां उमर के लिहाज से लीला के ऊपर बहुत काम था. घर की सफाईधुलाई, चायपान और वकील साहब के बच्चों की देखभाल आदि दूसरे सभी काम लीला को ही करने पड़ते थे. सारा दिन काम करते ही बीत जाता था.

इस प्रकार डेढ़ साल बीत गया. दूसरी सहेलियों को पढ़ते देख कर लीला मन मसोस कर रह जाती. एक दिन हिम्मत बटोर कर लीला ने वकील साहब से कहा कि मुझे भी हाईस्कूल में दाखिल करा दीजिए. घरेलू काम करने वाली नौकरानी पढ़ाई की बात करे—यह बात भला मालकिन कैसे सहे? फलस्वरूप लीला को तुरंत गांव वापस भेज दिया गया.

माता घर के कष्टों से ऊब गई थी. घर पहुंचने पर एक व्यक्ति के भोजन की चिंता और बढ़ गई. गरीबी इतनी थी कि रोटी पकाने के लिए लकड़ी भी बेलदार के कैंप से चुरा कर लाई जाती थी. लीला ने फिर से मेहनतमजदूरी में मां का हाथ बंटाना शुरू कर दिया. खेतों में मजदूरी करने के लिए बड़ी उमर का होना जरूरी था, इसलिए लड़कियों के कपड़े छोड़ कर काम पाने के लिए लीला को मां की फटी धोती पहननी पड़ती थी. खेतों में काम करते और घर में पिसाई-कुटाई करते डेढ़ साल बीत गया.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

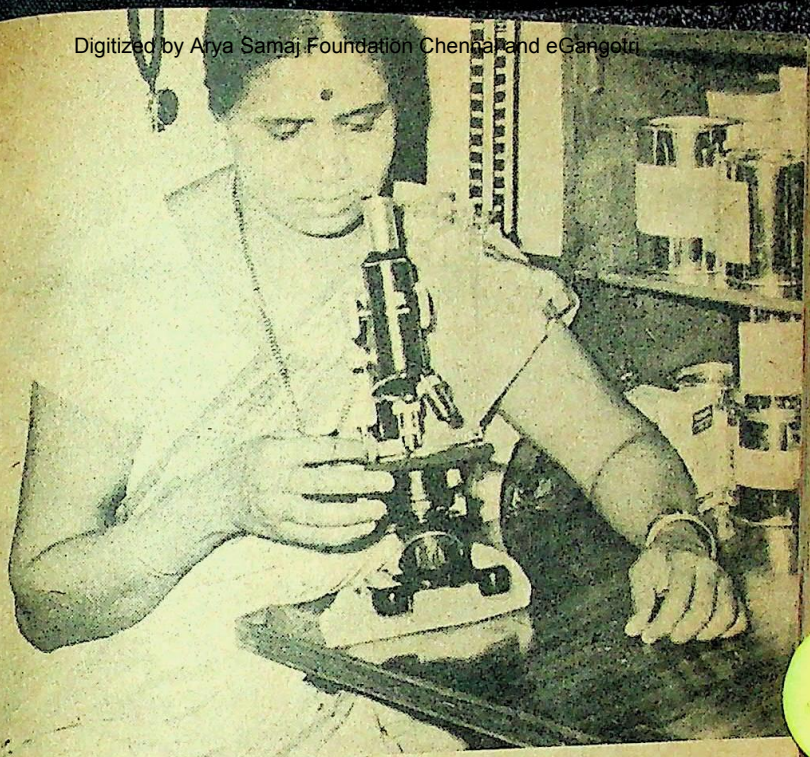

(ऊपर) लैबोरेटरी में व्यस्त लीलाजी
(नीचे) सपरिवार लीलाजी : पतिपत्नी डाक्टर होने पर जीवन में एकरसता होते हुए भी कहीं कटुता नहीं.

बिना पढ़ाई के लीला का मन उचटने लगा. इसलिए लीला ने करहाड जा कर एक दूसरे वकील रिश्तेदार से गिड़गिड़ा कर प्रार्थना की कि मुझे स्कूल भेज दें. बदले में मैं उन का सारा काम कर दूंगी. इसी समय उन का सब जज के पद पर पंढरपुर को तबादला हो गया. लीला उन के परिवार के साथ पंढरपुर चली गई. वहां हाईस्कूल में पढ़ने लगी. लीला घर का सारा काम निबटा कर स्कूल में सब से पहले पहुंच जाती थी.

यहां दस महीने बीते थे कि अचानक बीमार पड़ गई. अस्पताल में दाखिल करा दिया गया, सख्त बीमारी में अस्पताल के सहानुभूतिशील डाक्टरों के उपचार से लीला को नया जीवन मिला. यह बीमारी ही लीला के लिए नया मोड़ सिद्ध हुई. लीला ने देखा कि आश्रयहीन, दरिद्र रोगियों को देखने जब डाक्टर आता है तो उन दीनहीनों के हृदय भर आते हैं और आंखें आंसुओं से तर हो जाती हैं. उन रोगियों को डाक्टर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक शब्द से पीड़ा

अगर तुम्हारे एक शब्द से भी किसी को पीड़ा पहुंचती है तो तुम अपनी सब नेकी नष्ट हुई समझो.

—संत तिरुवल्लुवर

✦

हमारा सदा यही लक्ष्य रहता है कि हमारा जीवन सुख आनंद से परिपूर्ण हो.

—स्वेटमार्डेन

देवदूत सा लगता है. फलस्वरूप लीला के मन में भविष्य में डाक्टर होने की बात जम गई.

खबर मिलने पर माता लीला को देखने अस्पताल आईं और कुछ स्वस्थ होने पर अपने गांव बत्तीस शिराले ले गईं. लीला वहां न्यू इंगलिश स्कूल में पढ़ने लगी. प्रधानाध्यापक बड़े सहृदय व्यक्ति थे. उन्होंने लीला की मदद की. बदले में लीला उन के घर का काम कर दिया करती थी. झरने पर पानी भरने जाती तो वहां बालू पर गणित के सवाल हल किया करती. सहेलियों के घर जा कर लालटेन के दीये के उजाले में पढ़ाई करती. उन्हों ने हौसला बंधाए रखा. लीला मैट्रिक की परीक्षा में प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुई. इस के बाद कालिज में दाखिला लेने के लिए मां को ले कर कोल्हापुर चली आई. यहां न रहने का ठिकाना था, न पैसे थे. पैरों में चप्पल तक नहीं, कपड़े भी पुराने, इन आपदाओं को झेलते हुए उन्हों ने राजाराम कालिज में दाखिला पाया. कई छात्रवृत्तियों के सहारे, जिन में कुछ ऋण स्वरूप थीं, उस ने पढ़ाई जारी रखी. यहां भी मांबेटी ने पेट पालने के लिए सिलाई का सहारा लिया. यहां बी. एसीसी. प्रथम श्रेणी में पास की.

अब लीला को अच्छी नौकरी मिल गई. पिता उस ने बिना बताए ही पुनः मेडिकल कालिज में दाखिले के लिए आवेदन किया और प्रवेश भी मिल गया.

मेडिकल की पढ़ाई बहुत खर्चीली थी, और लीला के पास पुस्तकें खरीदने के लिए भी पैसे न थे. किंतु जहां चाह है, वहां राह है. कालिज के लेडी होस्टल में परजीवी (पैरासाइट) की तरह रहने लगी. सहेलियों की बड़ी कृपा थी. उन्हीं की पुस्तकों, उन्हीं के कपड़ों, यहां तक कि उन्हीं के भोजन में हिस्सा बंटा कर अध्ययन करने लगी. जब होस्टल सुपरिटेंडेंट आता तो एक कमरे से दूसरे कमरे में भाग जाती. अंत में यहीं से सन 1960 में एम. बी. बी. एस. पास की.

डाक्टरी के बाद

डाक्टरी पास करने के बाद बंबई में नौकरी करते हुए डी. जी. ओ. और डी. सी. एच. के डिप्लोमे प्राप्त किए, आगे चल कर एम. डी. के लिए थीसिस भी प्रस्तुत की.

बंबई में ही एस. एस. आजगांवकर से परिचय हुआ और 1967 ई. में विवाह हो गया. श्री आजगांवकर गोपालकृष्ण गोखले द्वारा स्थापित 'सर्वेंटस आफ इंडिया' के आजीवन सदस्य हैं. बंबई सोशल रिफार्म एसोसिएशन के सचिव के नाते कुशल संगठनकर्ता हैं. दोनों का यह अंतर्जातीय विवाह है. श्री आजगांवकर की माताजी ने लीला को पुत्री के समान स्नेह दिया. नौकरी छोड़ कर स्वतंत्र व्यवसाय करने के लिए अपनी सारी जमापूंजी और जेवर दे दिया.

डा. लीला क्लीनिक 'शंकर' का उद्घाटन 26 अगस्त, 1968 को बंबई उच्च न्यायालय के भूतपूर्व न्यायाधीश बी. एस. नाइक द्वारा किया गया था.

महिला डाक्टर का पुरुष डाक्टर से विवाह करने के बारे में डा. लीला का कथन है, "एक विवाहित महिला के नाते मैं तो यही कहूंगी कि एक डाक्टर को डाक्टर से हरगिज विवाह नहीं करना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...हैं. इस से पारिवारिक वातावरण ...बदल जाता है. मर्ज और मरीज की ...र समय एक सी बातें होने से एकरसता ...बन जाती है. मर्ज, मरीज और दवा ...लिखा और दूसरी बात ही नहीं ...ती."

...क्टरी के नए छात्रों के स्तर और ...र्स के माध्यम के बारे में वह कहती ...धीरे धीरे मेडिकल छात्रों का स्तर गिर ...है. छात्रों की संख्या बढ़ रही है, ...स्टाफ उतना ही रहता है. पहले जहां ...डाक्टर के साथ चारपांच छात्रों का ...होता था. वहां अब 25 छात्रों का ...काम करता है. परिणामस्वरूप व्याव-...रिक ज्ञान में वे कोरे रह जाते हैं. उन्हें ...साइड क्लीनिक पर मरीज की जांच ...ने, अपने ज्ञान को मरीज की हालत ...मिलाने और प्रश्न पूछने का अवसर ...नहीं मिल पाता.

साथ ही शिक्षा का माध्यम भी छात्रों ...लिए शुरूशुरू में एक बड़ी बाधा बन ...ता है. यदि अंगरेजी के आवश्यक ...नीकी और पारिभाषिक शब्दों के साथ ...या पाठ्यक्रम ... हिंदी में होने लगे तो विषय को समझना छात्रों के लिए आसान हो जाएगा, क्योंकि बाद में तो अपने मरीजों के साथ लगभग सभी डाक्टरों को हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में ही बात करनी पड़ती है.

डा. लीला आजगांवकर के दो छोटे बच्चे, पुत्री हेमांगिनी और पुत्र हर्षवर्धन हैं. उन के भविष्य के बारे में लीलाजी कहती हैं, "मेरे बच्चे बड़े होने पर श्री आजगांवकर के सामाजिक कार्यों के अनुभवों से यथोचित लाभ उठाएं, यही मेरी कामना है."

अपने जीवन ध्येय के बारे में डा. लीला का कथन है, "अब तो मैं दीन-दुखियों की सेवा करना चाहती हूं. गरीबों के लिए निःशुल्क दवा की व्यवस्था करना चाहती हूं. अपने गत जीवन की स्मृतियों से कभीकभी दुखी हो जाती हूं. पर मुझ में आशावादिता और सेवा की भावना है, किसी प्रकार की कटुता नहीं है. यही मेरा सुख है." ●

वधू हासिल करने के लिए 90 हजार रु. और कार

त्रिपोली. तेल उत्पादक देश लीबिया में विवाह योग्य कन्याओं की कीमत काफी अधिक हो गई है. वधुओं के पिता अब तक लगभग 3500 डालर नकद, एक ऊंट, भेड़ और कुछ स्वर्ण मुद्राएं मांगते रहे थे, लेकिन अब उन्होंने अपनी फीस में बहुत वृद्धि कर दी है. अब यह मात्रा 12,000 डालर नकद (लगभग 90 हजार रुपए), एक नई कार, परंपरागत रूप से दिया जाने वाला ऊंट, एक या दो भेड़ें हो गईं. नकद 35,000 डालर की भेंट लिया जाना भी कोई विचित्र बात नहीं रही है.

अब लीबिया की क्रांतिकारी सरकार ने इस प्रथा के विरुद्ध जनता को शिक्षित करने के लिए एक जबरदस्त अभियान छेड़ा है. उस ने त्रिपोली में अनेक पोस्टर लगाए हैं, जिन में एक पर लिखा है, 'विवाह धन पर आधारित नहीं वरन एक इसलामी बंधन है.'

हाल में गृह मंत्रालय ने उन पिताओं की निंदा की थी जो 'अपनी पुत्रियों को ऊंटों के समान बेचते हैं.' सरकार अकसर मुफ्तियों (मुसलिम धार्मिक नेता) को देशव्यापी टेलीविजन पर पेश कर के उन से विवाह की बढ़ती हुई कीमत के विरुद्ध प्रचार करती है.

इस स्थिति के फलस्वरूप काफी लीबियाई पुरुष ट्यूनीशिया और मिस्र में जा कर विवाह कर रहे हैं, जहां केवल 20 डालर दे कर ही वधू मिल जाती है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आप देश के लिए क्या कर रहे हैं?

आप देश के लिए क्या कर रहे हैं?

आप पूछ सकते हैं—मैं क्या करूं?

आप अपना और अपने बच्चों का वर्तमान और भविष्य नेताओं के हाथों सौंपने के बजाए इतना तो कर ही सकते हैं :

● जो भी काम आप के जिम्मे हो उसे पूरा करें. अगर आप अपना काम पूरी लगन से करते हैं तो स्वयं अपनी क्षमता बढ़ा रहे हैं, अपनी उन्नति कर रहे हैं, चाहे उस का पैसा मिले या नहीं. आज हर क्षेत्र में कर्मनिष्ठ व्यक्ति की बहुत मांग है. अगर वर्तमान संस्था में आप को अपनी मेहनत का पूरा मुआवजा नहीं मिलता तो दूसरी संस्था देगी.

● न अन्याय सहें, न अन्याय करें. आप समाज की महत्त्वपूर्ण इकाई हैं. समाज की प्रगति के लिए आवश्यक है कि उस की हर इकाई अन्याय के विरुद्ध हो.

● अपनी गली, महल्ले, नगर के प्रबंध में दिलचस्पी लें. उसे दूसरों के भरोसे न छोड़ दें. कुप्रबंध और दुर्व्यवस्था के विरुद्ध संबंधित अधिकारियों को पत्र लिखते रहें. हो सकता है आप के दोचार पत्रों का कोई असर न हो पर वे आप की बिलकुल अवहेलना नहीं कर सकते. स्थानीय दैनिक पत्रों के संपादकों को भी पत्र लिखें (वे स्थानीय समस्याओं से संबंधित पत्रों की प्रतीक्षा में रहते हैं). अपने क्षेत्र के निगम सदस्य, विधायक या संसद सदस्य को भी पत्र लिखें और उन से महल्ले के व्यक्तियों के साथ मिलते रहें. और जब तक दुर्व्यवस्था ठीक न हो जाए, चैन से न बैठें.

● अपना फालतू समय किसी स्थानीय समाजसेवी संस्था में लगाएं. पुस्तकालये, स्कूल, चिकित्सालय सभी जगह निःस्वार्थी व्यक्तियों की आवश्यकता है. असंतुष्ट हो कर बैठे रहने से न आप बदल सकेंगे, न समाज, न देश.

रोजीरोटी का प्रबंध तो भिखारी, आवारा पशु और गली के कुत्ते भी कर लेते हैं. पर आप पढ़ेलिखे हैं, सोचविचार कर सकते हैं. कामधंधे में लगे हैं, अपने परिवार की जिम्मेदारी उठाए हैं, इसी लिए यह आवश्यक है कि आप अपने आप से पूछें कि...

आप देश के लिए क्या कर रहे हैं?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अमरीका की स्वतंत्रता के 200 वर्ष

लेख • रामसहाय पांडेय

ऐसे राष्ट्र के संघर्षमय दिनों की कहानी जिस के विशाल वैभव, राजनीतिक जाग्रति, वैज्ञानिक उन्नति तथा सैन्य शक्ति का आज सभी देश लोहा मानते हैं...

यूरोप के इतिहास के अनुसार स्पेन के एक नाविक कोलंबस ने 1492 में अमरीका को खोज निकाला था. भारत की समुद्री रास्ते से खोज करता हुआ वह 12 अक्तूबर को अमरीका के पास बहामा द्वीप में जा पहुंचा था. इस से पूर्व यूरोप वालों को तो अमरीका का पता ही नहीं था. कोलंबस ने पहली यात्रा 1492 में, दूसरी 1493 और चौथी 1498 में की.

संविधान सभा को संबोधित करते हुए अमरीका के पहले राष्ट्रपति जार्ज वाशिंगटन : एक सशक्त संविधान आवश्यक.

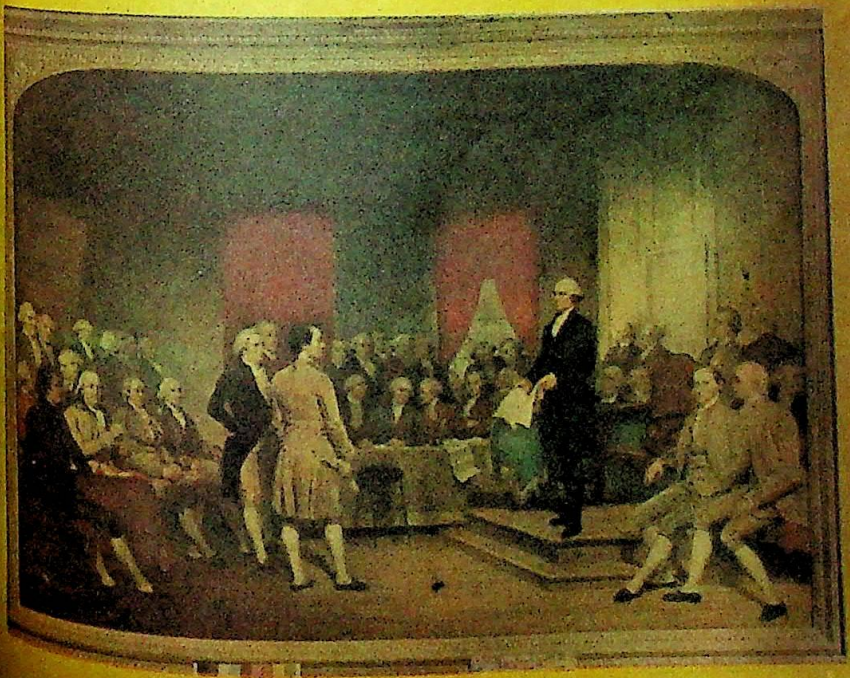

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत में काम गया है, इसी लिए उसे 'इंडिया' का नाम दिया. इस कारण ही यूरोप के लोग यहां के आदिवासियों को आज भी 'रेड इंडियन' कहते हैं.

इस बात के प्रमाण भी मिलते हैं कि कोलंबस के अमरीका पहुंचने से हजारों वर्ष पूर्व भारत के साहसी यात्री अमरीका पहुंच चुके थे. 500 वर्ष पूर्व ग्रीनलैंड के उत्तरी लोग भी अमरीका तक जाते थे. वहां जा कर रहते भी थे. यह सिलसिला कई शताब्दियों तक चलता रहा. ये रेड इंडियन कहे जाने वाले बहुत ही प्राचीन काल में एशिया से अमरीका तक पहुंचे थे. उन का धर्म, रीतिरिवाज और आवास निर्माण की कला बहुत हद तक प्राचीन भारत के वासियों से मिलती थी. जिस समय अमरीका का पता चला, उस समय यूरोप में तहलका मच गया. उस से पहले यूरोप में भारी परिवर्तन हो रहे थे.

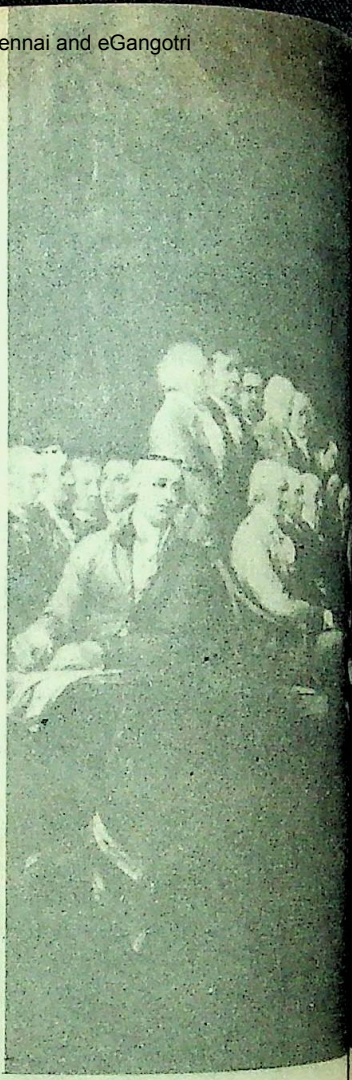

नई दुनिया की खोज

कोलंबस को स्पेन के बादशाह फर्डिनेंड और रानी इजाबेला ने तीन जहाज दे कर भारत भेजा. कोलंबस से पूर्व यूरोप वाले पृथ्वी को चपटी मानते थे. कोलंबस को विश्वास हो गया था कि पृथ्वी गोल है, अतः वह अंध महासागर के पश्चिम की ओर बढ़ता गया. तीन मास बाद वह बहामा पहुंचा. इस भूभाग को भारत ही समझ कर उस ने इस पर अपना झंडा गाड़ दिया.

कोलंबस ने जिस नई दुनिया का पता लगाया, उस की ओर यूरोप वालों का आकर्षण बढ़ा. 1497 में इटली का निवासी जान केबट इंग्लैंड की सहायता से उत्तरी अमरीका के हेलीफेक्स स्थान पर पहुंचा, जिसे उस ने चीन समझा. 1499 में इटली के अमेरिगों ने दक्षिणी अमरीका का पता लगाया. इसी के नाम से इस नई दुनिया का नाम अमरीका पड़ गया. प्राचीन भारतीय साहित्य में जिस पाताल देश का उल्लेख आता है, वह अमरीका ही है. वैसे आज भी 'अमरीका' नाम का न कोई देश है और न कोई राष्ट्र. जिसे सामान्यतः अमरीका कहते हैं, उस का वास्तविक नाम संयुक्त राज्य अमरीका है अर्थात अमरीका के ऐसे राज्य जो मिल कर एक हो गए.

वास्तव में 'अमरीका' उस महाद्वीप का नाम है, जिस के ऊपर के भाग को उत्तरी अमरीका है निचले भाग को दक्षिणी अमरीका और बीच के भाग को केंद्रीय अमरीका कहा जाता है. दक्षिण अमरीका में ब्राजील, अर्जेंटाइना, चिल्ली, बेनेजुएला, गायना, सूरीनाम, पैराग्वए,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"स्वतंत्रता का जन्म" : 2 अगस्त, 1776 के दिन 13 उपनिवेशों के 56 प्रतिनिधियों ने मिल कर घोषणा पत्र पर हस्ताक्षर किए.

उरुगुए ईक्वेडोर, कोलंबिया, और बोलीविया, नाम के ही ग्यारह देश हैं. केंद्रीय अमरीका में मेक्सिको, ग्वाटेमाला, अलसैल्बडोर, होएंडूयूराज, निकारागुआ, कोस्टारिका और पनामा नाम के सात देश हैं. उत्तरी अमरीका में दो देश हैं. संयुक्त राज्य अमरीका को ही सामान्यतः अमरीका कह दिया जाता है.

200 वर्ष पूर्व जिस समय इस देश का जन्म हुआ था तो इस देश में केवल 13 राज्य ही सम्मिलित हुए थे. इन 13 राज्यों पर अंगरेजों का राज था और इन राज्यों में बसने वाले लोग ब्रिटेन, फ्रांस, जरमनी, इटली, पुर्तगाल और स्पेन इत्यादि यूरोपीय देशों से भाग कर यहां आए थे. इन लोगों की कोई एक कौम नहीं थी. सामान्यतः वह अपनीअपनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टूटीफूटी अंग्रेजी भी बोलते थे.

इन 13 राज्यों का कुल क्षेत्रफल लगभग दो लाख वर्ग मील था, और कुल जनसंख्या लगभग 12 लाख. ये सब राज्य अटलांटिक महासागर के तट पर, अथवा इस के निकट थे.

1782 में इन राज्यों के पश्चिम में स्थित काफी बड़ा भूभाग भी संयुक्त राज्य अमरीका में शामिल हो गया. उस समय इस का क्षेत्रफल 8,65,000 वर्ग मील हो गया और जनसंख्या 39,29,000 हो गई. 1803 में संयुक्त राज्य अमरीका ने फ्रांस का कुछ क्षेत्र खरीद लिया.

सन 1810, 1813 और 1818 में स्पेन और ब्रिटेन ने अपने कुछ क्षेत्र संयुक्त राज्य को दे दिए. इस समय इस देश का क्षेत्रफल 17,49,000 वर्गमील हो गया और जनसंख्या 96,38,000 तक फैल गई. 1845 में इस देश ने 'टैक्सास' के एक विस्तृत

जान ट्रूबेला का कलाचित्र 'दि बेटल आफ बुंकेर हिल'

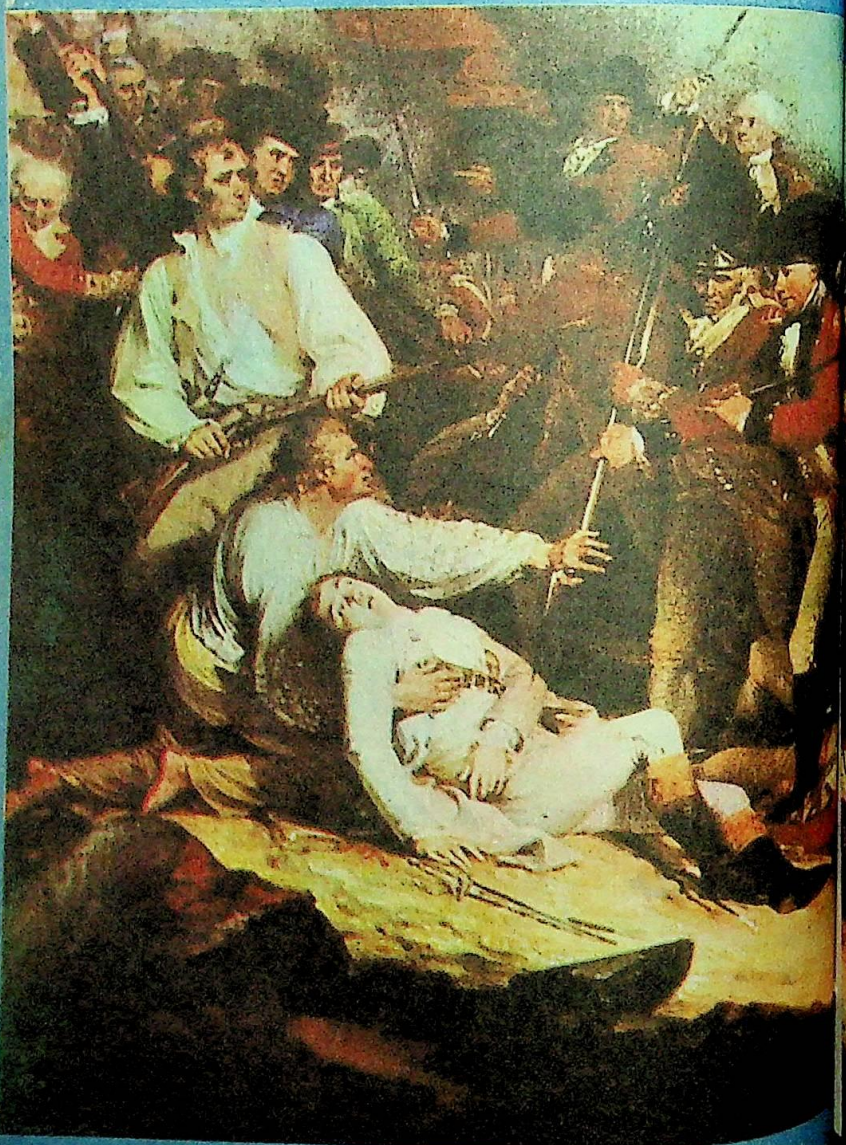

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्षेत्र पर सैनिक शक्ति से कब्जा कर लिया. 1846 में प्रशांत महासागर के तट पर ओरेगान का क्षेत्र ब्रिटेन से खरीद लिया. 1848 में मैक्सिको पर दबाव डाला गया कि वह प्रशांत महासागर के किनारे पर फैला हुआ अपना व्यापक क्षेत्र संयुक्त राष्ट्र संघ के हवाले कर दे. इस दबाव को प्रभावशाली बनाने के लिए 'मैक्सिको' में दंगे करा दिए गए, लूटमार करा दी गई और अराजता की स्थिति पैदा कर दी. अंततोगत्वा मैक्सिको ने बाध्य हो कर अपना यह व्यापक क्षेत्र इस देश के सुपुर्द कर दिया. इस नए क्षेत्र के मिलने पर संयुक्त राज्य अमरीका का कुल क्षेत्र-फल 29,40,000 वर्ग मील हो गया और आबादी 231,92,000 तक पहुंच गई. 1893 में इस देश ने एक और मैक्सिको का क्षेत्र दबाव डाल कर उस से हथिया लिया.

1867 में संयुक्त राष्ट्र ने रूस के मूर्ख

स्वतंत्रता आंदोलन में यह लड़ाई महत्त्वपूर्ण सिद्ध हुई.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जार से अलासका का पूरा क्षेत्र 7.2 लाख डालर में खरीद लिया. केवल इस क्षेत्र का क्षेत्रफल 5,86,432 वर्गमील है. इस से सस्ती जमीन संसार के इतिहास में न कभी खरीदी गई, न ही आगे खरीदे जाने की कोई संभावना है. यह कीमत दो पैसे में 12,080 वर्गमील पड़ती है. अलासका के इस में शामिल होने के कारण संयुक्त राज्य का कुल क्षेत्रफल 35,41,000 वर्गमील हो गया और कुल आबादी तीन करोड़ 85 लाख 58 हजार हो गई.

भानुमती का कुनबा

1898 में, अर्थात आज से 77 वर्ष पूर्व अमरीका ने प्रशांत महासागर के हवाई नाम के द्वीपसमूह पर पहले व्यापारिक, फिर आर्थिक और बाद में राजनीतिक कब्जा कर लिया. अंत में उसे संयुक्त राज्य में शामिल कर लिया. इस पर उस का क्षेत्रफल 35,47,000 वर्गमील हो गया और आबादी 6,29,80,000 हो गई.

परंतु यह आबादी केवल इन क्षेत्रों के इस देश में शामिल होने से ही नहीं बढ़ी, प्रत्युत यूरोप, अफ्रीका तथा एशिया से आ कर इस देश में आबाद होने वालों के कारण भी बढ़ी.

यूरोप के विभिन्न देशों से विभिन्न मजहबों, भाषाओं, संस्कृतियों और विचारधाराओं के लोग इस दुनिया में आ कर बस गए. इसलिए भी कि यूरोप उन के लिए तंग होता जा रहा था. अफ्रीका से लाखों लोग गोरों की जमीनों पर काम करने के लिए दास बना कर लाए गए.

एशिया से वे लोग यहां आए, जिन्हें रोजगार की तलाश थी. ऐसे लोग भी आए, जो अपने देशों में निरंतर गुलामी के कारण बड़े दुःखी हो गए थे. इस तरह के लोग आते रहे, उन के देश स्वतंत्र हो गए, फिर भी वे अपने देशों को वापस नहीं गए, अमरीका में ही बस गए. समय पा कर वैसे भी आबादी बढ़ती गई, इस देश में आबादी 21 करोड़ से ऊपर है.

इस तरह देश के क्षेत्रफल और आबादी में नएनए राज्यों के समावेश से निरंतर बुद्धि होती रही. भौगोलिक, सांस्कृतिक अथवा ऐतिहासिक दृष्टि से इस में कोई मूलभूत एकता नहीं है. विशालता और विविधता इस का विशेष गुण है. हिमाच्छादित पर्वतों से ले कर मरुभूमि तक विविध प्रकार की भौगोलिक स्थिति वाले क्षेत्र, जिन में हर प्रकार की जलवायु उपलब्ध है, इस में सम्मिलत हैं.

यह भानुमती का कुनबा है, जिस में कहीं का रोड़ा और कहीं की ईंट लगी हुई है. परंतु अमरीका की विशेषता इस बात में है कि इस ने विश्व भर से आए हुए ईंटों और पत्थरों को इस प्रकार आत्मसात किया है कि अमरीका वास्तविक अर्थों में एक कुटुंब का प्राणवान राष्ट्रपुरुष बन गया है.

विशिष्ट संस्कृति

सभी अमरीकी, चाहे वे किसी देश से भी आए हुए हों, अपनेआप को अमरीकन कहलाने में गर्व महसूस करते हैं. ये लोग यह दावा करते हैं कि उन की एक विशिष्ट अमरीकी संस्कृति है. इतनी भयंकर विविधता में इस तरह की एकता का संचार अमरीका के निर्माताओं की एक ऐसी उपलब्धि है, जिस पर वे जितना भी गर्व करें, कम ही है. अमरीकी जीवन की इस एकता का सब से बड़ा प्रभावी कारण अंगरेजी भाषा है. हवाई से ले कर प्यूरटोरीको तथा अलास्का से ले कर मिसीसिपी तक सारे संयुक्त राज्य अमरीका में समान रूप से अंगरेजी बोली और समझी जाती है. वास्तव में अंगरेजी 20 प्रतिशत से भी कम लोगों की पैतृक भाषा है, मगर आज वह देश की राज्य भाषा भी है, और राष्ट्रीय भाषा भी.

किसी नए बसे हुए व्यक्ति को नागरिकता प्रदान करने से पूर्व उसे विशेष रूप से कुछ महीनों तक अंगरेजी पढ़ाई जाती है. साथ ही उसे अमरीकी इतिहास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह पेंटिंग स्वतंत्रता की घोषणा तथा स्वतंत्रता दिवस—4 जुलाई, 1776 का प्रतीक मानी जाती है. यह आज भी लोगों को प्रेरणा देता है.

की शिक्षा दी जाती है. उस में पास होने पर ही अमरीकी नागरिकता प्रदान की जाती है. इस शिक्षा को वे 'अमरीकीकरण का पाठ्यक्रम' कहते हैं.

भाषा के अतिरिक्त अन्य बात, जिस ने सभी पुराने और नवागंतुक अमरीकनों को एक सूत्र में बांधने में बड़ा रोल अदा किया है, वह यह कि प्रत्येक अमरीकी के दिल में अपने ऐतिहासिक महापुरुषों के प्रति आस्था और निष्ठा है. पहले प्रवासी, जिन्होंने 16वीं शताब्दी

(शेष पृष्ठ 142 पर)

थामस जेफरसन : स्वतंत्रता की घोषणा पत्र के रचयिता और अमरीका के तीसरे राष्ट्रपति.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

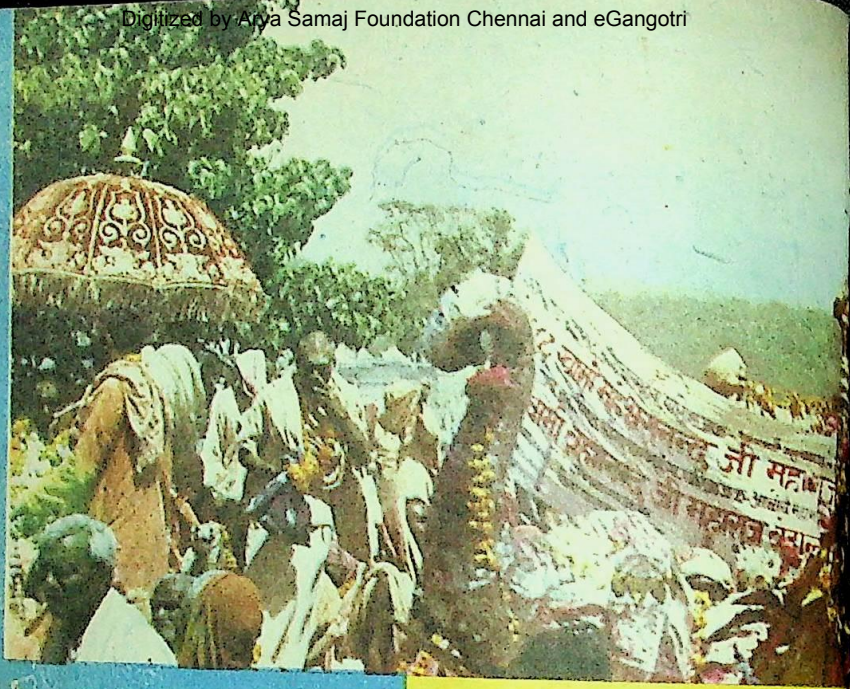

कुंभ मेले में एक महंत की शोभा यात्रा : वीतरागी होते हुए राजसी ठाट से मोह किए. . . (ऊपर)

महिलाएं भी इस धंधे में पीछे नहीं हैं. महिला महंत (नीचे)

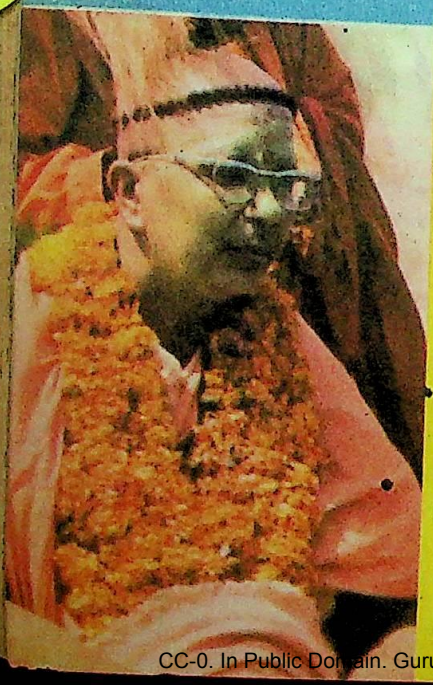

लेख • विराज

कुंभ मेला

क्या धर्म की आड़ में पुरोहितों के निजी हितों और अंध भक्तों के मानसिक विलास का आयोजन मात्र नहीं है?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

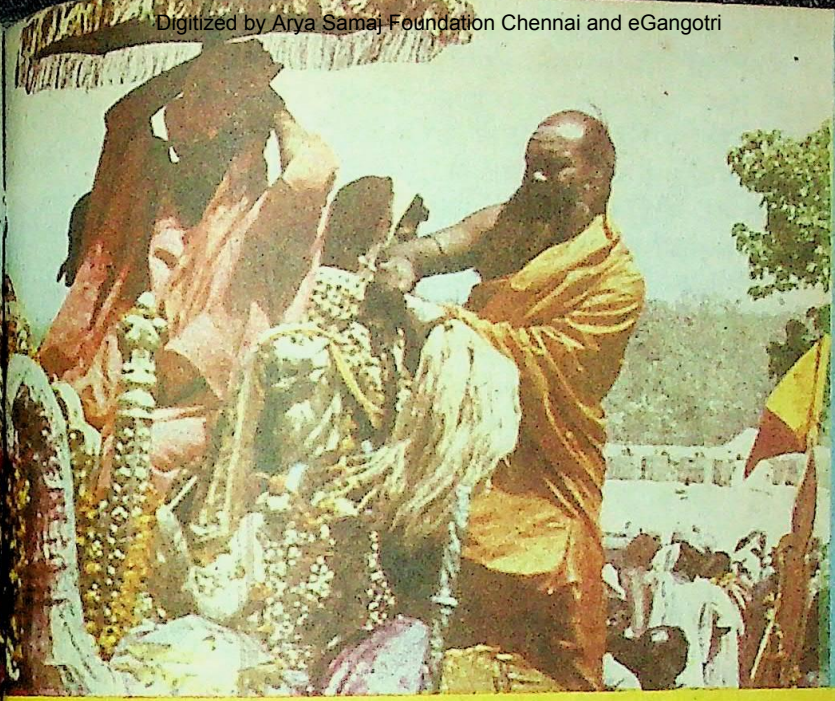

कुंभ मेला हिंदुओं का सब से बड़ा मेला है. यह हर बारह वर्ष बाद क्रमशः हरिद्वार, प्रयाग, नासिक और उज्जैन में लगता है. इस का अर्थ यह है कि इन में से प्रत्येक स्थान पर हर बारहवें साल कुंभ का पर्वस्नान होता है, पर वह एक साथ नहीं, अपितु बारीबारी से. उदाहरण के लिए सन 1974 में हरिद्वार में कुंभ मेला हुआ तो उस के तीन साल बाद प्रयाग में, उस के तीन साल बाद नासिक में और उस के तीन साल बाद उज्जैन में कुंभ मेला होगा. हरिद्वार में गंगा, प्रयाग में गंगायमुना का संगम, नासिक में गोदावरी और उज्जैन में क्षिप्रा नदी है. इन नदियों में स्नान पुण्यदायक माना जाता है.

मुझे सन 1938, सन 1950, सन 1962 और सन 1974 में हरिद्वार में हुए कुंभ मेलों का स्मरण है. यह आश्चर्य की बात है कि इन सभी

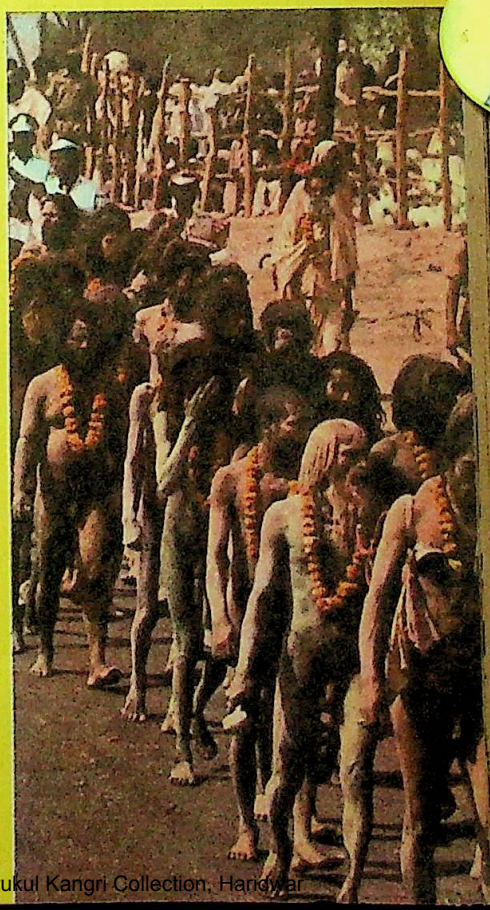

कुंभ मेले में नंगे साधुओं का जुलूस : धार्मिक ढोंग अथवा घटिया और छिछले स्तर का भद्दा तमाशा?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेलों से पहले यह प्रचार किया गया था कि ग्रहों और नक्षत्रों का जैसा अद्भुत योग इस कुंभ मेले पर पड़ रहा है, वैसा महाभारत के समय से ले कर अब तक और कभी नहीं हुआ. पता नहीं, इस बात का कोई महत्त्व है या नहीं, फिर भी अल्पशिक्षित जनता इस प्रकार की बातों से प्रभावित होती ही है.

हरिद्वार का कुंभ मेला 13 या 14 अप्रैल को होता है. ग्रहों की गणना के हिसाब से तिथि में थोड़ा सा परिवर्तन हो जाता है. सन 1974 का कुंभ 14 अप्रैल को हुआ, किंतु उस से पहले तीनों कुंभ 13 अप्रैल को हुए थे, परंतु कुंभ मेले का श्रीगणेश उस से लगभग तीन मास पहले ही हो जाता है.

महंतों का नगराभिनंदन

हरिद्वार में संन्यासियों के अनेक बड़े-बड़े अखाड़े हैं : निरंजनी अखाड़ा, जूना अखाड़ा, महानिर्वाणी अखाड़ा, उदासीन अखाड़ा, निर्मल अखाड़ा इत्यादि. ये अखाड़े किसी समय मुसलिम आक्रमणकारियों से हिंदू तीर्थस्थानों की रक्षा के लिए बने थे. इन का संगठन सैनिक ढंग का है और इन की शब्दावलियां भी सैनिक नमूने की हैं. हर अखाड़े की अपनी छावनी होती है. इन अखाड़ों के केंद्र सारे भारत में हैं और देश में जगहजगह इन के पास बड़ी जमीन और जायदादें हैं, जिन से इन का खर्च चलता है. जनवरी महीने से ही इन अखाड़ों के महंत भारी धूमधाम के साथ हरिद्वार आने लगते हैं. प्रत्येक महंत के आने पर शहर में शानदार जुलूस निकाला जाता है. महंत लोग हाथियों या घोड़ों पर बैठ कर राजसी ठाट से छावनी में प्रवेश करते हैं. उन के साथ काफी बड़ी संख्या में उन के अनुयायी साधु भी होते हैं.

शिवरात्रि, माघ संक्रांति आदि पर्वों पर भी स्नान होता है. इन स्नानों के लिए संन्यासी लोग बड़ेबड़े शानदार जुलूस निकाल कर हर की पौड़ी पर पहुंचते हैं. ये जुलूस ही कुंभ की असली शोभा है. इन जुलूसों में बड़ी संख्या में नागे साधु भी सम्मिलित होते हैं. ये नग्न साधु सारे साल नंगे नहीं रहते, किंतु इस अवसर पर बिलकुल वस्त्रहीन हो कर जुलूस में सम्मिलित होते हैं.

सन 1974 के कुंभ में इन साधुओं के जो जलूस निकले, वे निश्चय ही हमारे साधुवर्ग के घटिया मानसिक स्तर के द्योतक थे. एक ओर तो नग्न साधुओं का जुलूस में सम्मिलित होना इस बात का द्योतक था कि ये साधु वीतराग, अपरिग्रही लोग हैं और उस के साथ ही बेंड-बाजों का प्रबंध इतने बड़े पैमाने पर किया गया था कि फिजूलखर्ची को देख कर आश्चर्य होता था. महंत लोग बैलठेलों के ऊपर रखी गई कुरसियों और शानदार गद्दियों पर बैठे थे. इन बैलठेलों को बैल नहीं, आदमी खींच रहे थे. यह प्रबंध इसलिए करना पड़ा कि मेला अधिकारी ने जुलूसों में हाथियों को ले जाने पर रोक लगा दी थी. अन्यथा ये महंत लोग हमेशा सजे हुए हाथियों पर ही निकलते थे.

जुलूस एक तमाशा

नंगे साधुओं के जुलूस का मैं इस के सिवा कोई औचित्य नहीं समझ पाया कि यह भी एक तमाशा था, जिसे देखने के लिए आकर्षित हो कर लोग आते थे. ऐसे भक्तों और भक्तिनों की भी कमी नहीं थी, जो नागों के जुलूस के गुजर जाने के बाद उस मार्ग की धूल को बटोर कर अपने सिर पर डालते थे.

इन नागा साधुओं का दृश्य भी कोई प्रभावोत्पादक नहीं था. जीर्णशीर्ण, या फूले हुए रुग्ण शरीर; उन के व्यवहार में भी सौम्यता नहीं थी. बहुत से साधु तो आपस में अशोभन हासपरिहास करते चलते चल रहे थे. यह देख कर मेरे अचरज का पार न रहा कि एक नंगा जवान साधु सिर पर गेंदे के फूलों की माला लपेटे सड़क पर पैरों से ताल देते हुए नाच रहा था. इस नृत्य का कोई धार्मिक महत्त्व हो सकता है, यह मेरी समझ में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

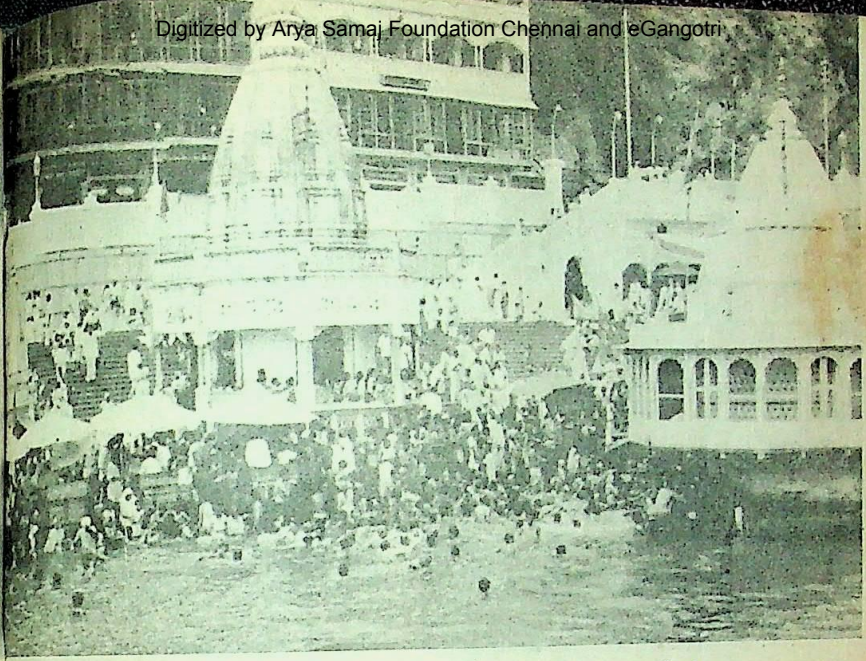

हरिद्वार में गंगा के तट पर हर की पौड़ी : इस स्थान पर स्नान करने के लिए हर कुंभ यात्री को एक बड़ी कीमत अदा करनी पड़ती है.

परे की बात है.

इस कुंभ पर महंतों में एकदो महिलाएं भी थीं. इन महिलाओं ने अपने आश्रम बनाए हुए हैं और उन के भक्तों की कमी नहीं है. अपने प्रभाव के कारण उन्हें भी इस जुलूस में सम्मानित स्थान प्राप्त हुआ था.

वैरागी लोगों की छावनी कनखल में गंगा के पार थी. वैरागी लोग संन्यासियों से अलग हैं. ये लोग संन्यासियों के नंगा हो कर जुलूस में निकलने को बहुत बुरा मानते हैं. वैरागियों का जीवन तपस्या तथा दरिद्रता से अधिक ग्रस्त होता है. संन्यासियों के अखाड़ों में तो जीवन की, विलास की भी सब सुविधाएं उपलब्ध रहती हैं, परंतु वैरागियों के संगठनों के पास वैसी धनसंपत्ति नहीं है. वे लोग विनम्र भी अधिक जान पड़े.

पर मजे की बात एक पुलिस के अफसर ने सुनाई. उस ने बताया कि कल यहां दो महंतों में एक फ्रांसीसी तरुणी को ले कर फौजदारी हो गई. वह युवती हिंदू धर्म के रहस्यों का ज्ञान प्राप्त करना चाहती थी. एक ही जगह टिके हुए उन दोनों महंतों में से प्रत्येक का आग्रह था कि वह उसे अपनी शिष्या बनाएगा. मैं ने उस युवती को भी देखा और एक महंत के घुटने पर बंधी पट्टी भी देखी. दूसरा महंत उस समय वहां नहीं था.

कुंभ के अवसर पर श्रद्धालु और धनी भक्तों की कमी नहीं रहती. यह बात इस तथ्य से स्पष्ट हो जाएगी कि इन दिनों प्रायः सभी अखाड़ों में भंडारे होते हैं. भंडारे का अर्थ है साधुओं तथा विद्यार्थियों को भोजन कराना. कोई भंडारा किसी एक अखाड़े के अपने ही साधुओं और विद्यार्थियों के लिए होता है. इस में भोजन करने वाले लोगों की संख्या थोड़ी होती है. भक्त सेठ जितने लोगों को भोजन कराने की इच्छा प्रकट करता है, उस के अनुसार ही साधुओं का प्रबंध किया जाता है. जिस भंडारे में सब अखाड़ों के लोगों को भोजन कराया जाता है, उसे 'समष्टि भंडारा' कहा जाता है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

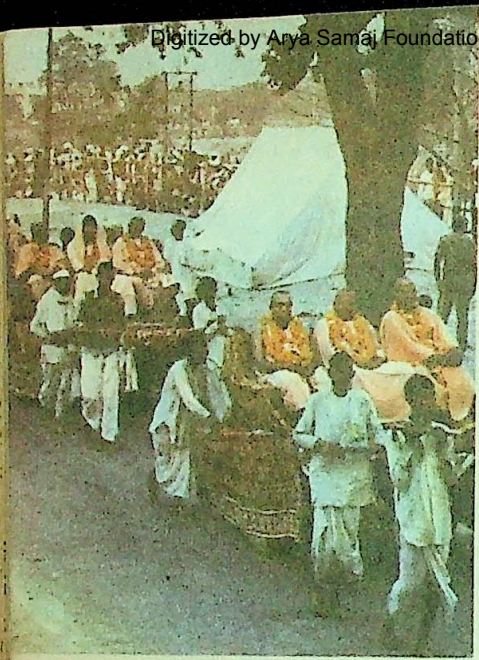

इस प्रकार के भंडारे में भोजन करने वाले लोगों की संख्या पांच हजार तक हो सकती है. भंडारे में साधारणतया पूरी, सब्जी, एक या दो मिठाइयां, रायता और खीर का प्रबंध किया जाता है. केवल भोजन करा देने से ही दानी व्यक्ति की मुक्ति नहीं हो जाती. प्रत्येक भोजन करने वाले साधु को दो रुपए और विद्यार्थी को एक रुपया दक्षिणा के रूप में देना पड़ता है. प्रतिष्ठित साधुओं और महंतों की दक्षिणा 11, 21 या 51 रुपए तक होती है. इस से प्रत्येक भंडारे पर होने वाले व्यय का अनुमान किया जा सकता है.

इस पर भी दानी भक्तों की संख्या इतनी अधिक थी कि एक अखाड़े में कुंभ की तिथि 14 अप्रैल से बीसियों दिन पहले से ले कर कुंभ के दस दिन बाद तक के सब दिन किसी न किसी दानी ने

कुंभ मेले में महंतों के आगमन पर बैलठेलों में एक जुलूस द्वारा नगराभिनंदन : पाखंड और फिजूलखर्ची किस उद्देश्य की पूर्ति हेतु... (ऊपर)

मुंह से आग निकालता हुआ जादूगर : भोलेभाले लोगों से पैसे ऐंठने के लिए कुंभ मेले से बढ़ कर अवसर कहां मिलेगा? (नीचे)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुंभ मेले में नृत्य का स्वांग रचाए एक धार्मिक मंडली : रोजीरोटी के लिए यही एक मात्र सहारा. (ऊपर)

पालथी लगाए, हाथ उठाए, नाखून बढ़ाए एक साधु: धर्म के नाम पर स्टंट. (नीचे)

अपने लिए आरक्षित करवाए हुए थे. यदि कोई अन्य व्यक्ति उसी अखाड़े में भंडारा करवाना चाहता, तो वह उन दस दिनों के बाद ही करवा सकता था.

इन भंडारों के लिए मेला अधिकारी की ओर से नियत मूल्य पर आटा, मैदा, वनस्पति, तेल, चीनी मिलती थी. कई अखाड़े वालों ने कुंभ के बाद आटे, मैदे और चीनी की बोरियां की बोरियां बाजार में ऊंचे दामों पर बेचीं.

इस कुंभ में तरहतरह के साधुओं का जमघटा था. कोई दिन भर, कम से कम जब तक दर्शक देखते हों, एक पांव पर खड़ा रहता था, कोई एक हाथ उठाए ऊर्ध्वबाहु बना हुआ था. एक साधु रेत में मुंह गाड़े घुटनों के बल बैठा रहता था. एक साधु कांटों की शय्या पर लेटा था. लेटने का प्रबंध इस प्रकार किया

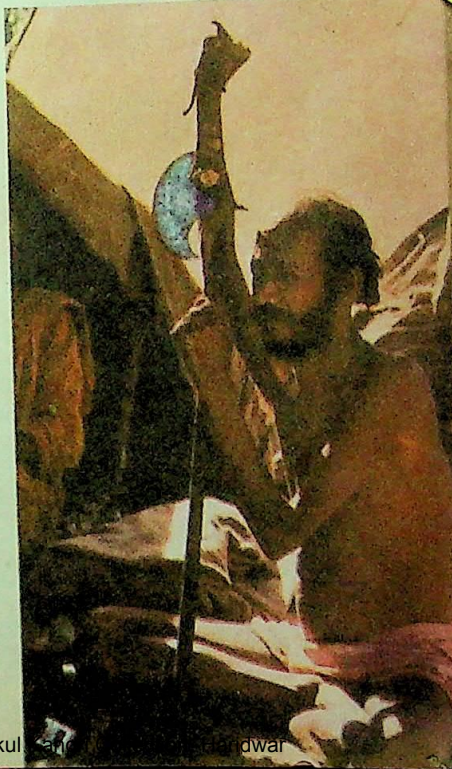

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकार के तपों का प्रदर्शन किया गया था. परंतु यह तप सच्चा नहीं था, केवल दिखावे के लिए था. कुछ साधु तो अपना फोटो लिए जाने पर बहुत रोष प्रकट करते थे. उन को बड़ी शिकायत यह थी कि ये फोटो खींचने वाले हमारे फोटो खींच कर बहुत पैसा प्राप्त करते हैं और हमें कुछ नहीं देते. एक ने तो कहा भी, "सौ का नोट रख और फिर चाहे जितने फोटो खींच."

भद्दा प्रदर्शन

आचार्य रजनीश, जो अपने को भगवान रजनीश कहलवाने लगे हैं, महेश योगी और बाल योगेश्वर के भी अपने-अपने शिविर थे. बाल योगेश्वर का शिविर तो उस के अपने आश्रम प्रेमनगर में ही था, बाकी दो ने अस्थायी शिविर बनाए हुए थे. मुझे इन में सब से भद्दा और अरुचिकर प्रदर्शन 'भगवान रजनीश' के अनुयायियों का लगा. इन में से अधिकांश विदेशी थे. वे बहुत थोड़े वस्त्र पहने पागलों की तरह नाचतेकूदते थे और कुछ देर बाद जमीन पर इस तरह लेट जाते थे कि जैसे वे समाधि में लीन हो गए हों.

मुझे इस में जरा भी संदेह नहीं था कि यह सब एक भद्दा और गंदा ढोंग था. एक दिन नील धारा के तट पर इन में से दो विदेशी हमें मिले. वे न छापने योग्य अश्लील भाषा में बेहूदा बातें कर रहे थे और बीचबीच में 'भगवान' रजनीश का उपहास कर रहे थे. उन का आशय यह था कि रजनीश समझता है कि वह हमारा गुरु है, पर असल में हम उस के गुरु हैं. मैं ने सोचा कि गुरुशिष्य ठीक ही आ मिले हैं.

महेश योगी के शिविर में विज्ञान की आड़ ले कर योग का जो स्पष्टीकरण या व्याख्या की गई थी, वह और जो चाहे जो हो, किंतु एकमात्र अंधविश्वास को बढ़ाने के उद्देश्य से की गई थी. पर ऐसा

प्रजापिता ब्रह्मकुमारियों का शिविर इस दृष्टि से दर्शनीय था कि वहां उज्ज्वल श्वेत साड़ियां पहने अनेक ब्रह्मकुमारियां बहुत से ऊटपटांग बनाए गए चित्रों का कुछ रहस्यमय अर्थ समझा रही थीं. वे जो कुछ कहती थीं, उस का क्या आशय और क्या उद्देश्य था, काफी देर यत्न करने के भी उसे समझ सकना कठिन था. मुझे लगा कि इन लोगों की उलझी हुई और अस्पष्ट शब्दावली केवल अनपढ़ लोगों को प्रभावित कर सकती है.

नीलधारा के भी पार, दूर गंगा की रेती में देवरिया बाबा ने अपनी झोंपड़ी बनाई हुई थी. कुटिया न कह कर इसे झोंपड़ी कहना इसलिए उचित होगा क्योंकि यह मोटी बल्लियों के सहारे जमीन से आठनौ फुट ऊंचाई पर बनी थी. सीढ़ी के सहारे ऊपर चढ़ना पड़ता था. परंतु दर्शक लोग ऊपर नहीं जा सकते थे. देवरिया बाबा झोंपड़ी के अंदर बैठा रहता था.

जब घंटे आध घंटे में नीचे पांचसात सौ या इस से भी अधिक दर्शकों की भीड़ जमा हो जाती थी, तब वह दर्शन देने के लिए झोंपड़ी से बाहर आता था. दोचार वाक्य बोल कर वह कुछ देर चुपचाप खड़ा रहता था.

उस के बाद झोंपड़ी के अंदर जा कर झोंपड़ी के फर्श में से एक पटरा हटा कर उस में आठदस किलो बताशे नीचे गिरा देता था. इस सब में रहस्यमय कुछ भी नहीं था, पर श्रद्धालु लोगों को यह भी कुछ दैवीय सी घटना जान पड़ती थी कि झोंपड़ी के फर्श में से बताशे गिरते हैं. बाबा के शिष्य इन बताशों को लोगों में बांटते थे. लोग इन्हें लेने के लिए बहुत लालायित रहते थे और जिन्हें ये नहीं मिल पाते थे, वे अपने को अभागा समझते थे.

पहले जो कुंभ मेले हुआ करते थे, उन में लोग एकएक महीना आ कर हरिद्वार में रह जाते थे. जमाना सस्ता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होती थी. पर इस कुंभ में लगभग चालीस लाख आदमी आए और उन में देर तक हरिद्वार में रहने का सामर्थ्य नहीं था. अतः मेले की असली भीड़ दस अप्रैल से भरनी शुरू हुई. चौदह अप्रैल को स्नान करने के बाद शाम तक ही एकचौथाई भीड़ तो वापस लौट भी गई. इतने थोड़े समय में, इतनी छोटी जगह में इतने लोगों के आ भरने से अनेक समस्याएं उत्पन्न हो जाती हैं.

खानेपीने का सामान जुटाना, रहने की व्यवस्था करना, चोरों, जेबकतरों और ठगों से बचाव करना, किसी भी एक स्थान पर भीड़ एकत्र न होने देना आदि कठिन समस्याएं होती हैं. पहले मेलों में बहुत बार लोग भीड़ के रेले में ही दब कर मर जाते थे. पिछले अनुभवों से लाभ उठा कर प्रबंध अच्छा किया गया था, अतः कोई बड़ी दुर्घटना नहीं होने पाई.

उस के बाद की हर [illegible] लाख व्यक्ति बहुत थोड़े समय के लिए हरिद्वार में आए थे, फिर भी वे सारे शहर को दुर्गंध से भर गए थे. शौचालयों का यथेष्ट, वस्तुतः यथेष्ट प्रबंध तो हो नहीं सकता, प्रबंध होने पर भी अधिकांश ग्रामीण लोग शौचालयों से बाहर ही शौच करना पसंद करते थे. इस से स्वास्थ्य अधिकारियों के लिए कितनी बड़ी समस्या उत्पन्न हो जाती है, इस का ध्यान उन्हें बिलकुल नहीं था, इसलिए कुंभ के तुरंत बाद हरिद्वार छोटामोटा नरक सा ही बन गया था. कोई आश्चर्य नहीं कि पर्व बीतते ही लोग इस नरक से निकल भागने को बेचैन हो गए और पहली सवारी मिलते ही वापस लौट पड़े. 16 अप्रैल को ही भीड़ एकचौथाई भी नहीं रह गई थी.

उसी दिन शाम को मैं भी लौट पड़ा.

"उठिए, होश में आइए. 'घर में बिल बहुत हो गए हैं' से मेरा मतलब चूहों के बिल से था न कि उधार के बिल से..."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इधर देखो
मौसम उतरा है आंगन में,
गंध लो वेणी में हरसिंगार
गमक उठे प्राणों की झील
रतनारे नयनों में
आज लो काजल की डोर.
यह अभिसार की बेला
दर्पण को देख लो भर नजर,
तुम अनुपमा सी
बन कर ओ प्रिया!
घूंघट की ओट आज
झकीझकी आंखों में
रच लो सपनों के
दोहो संसार.
सुनो मगर कान में
कितना बहका है मौसम,
भूल रहा अपना भी नाम
आओ बांहों के निकट
बांध दो एक बार फिर
मन को मेरे
प्यार का निमंत्रण.

—शिवप्रसाद 'कमल'

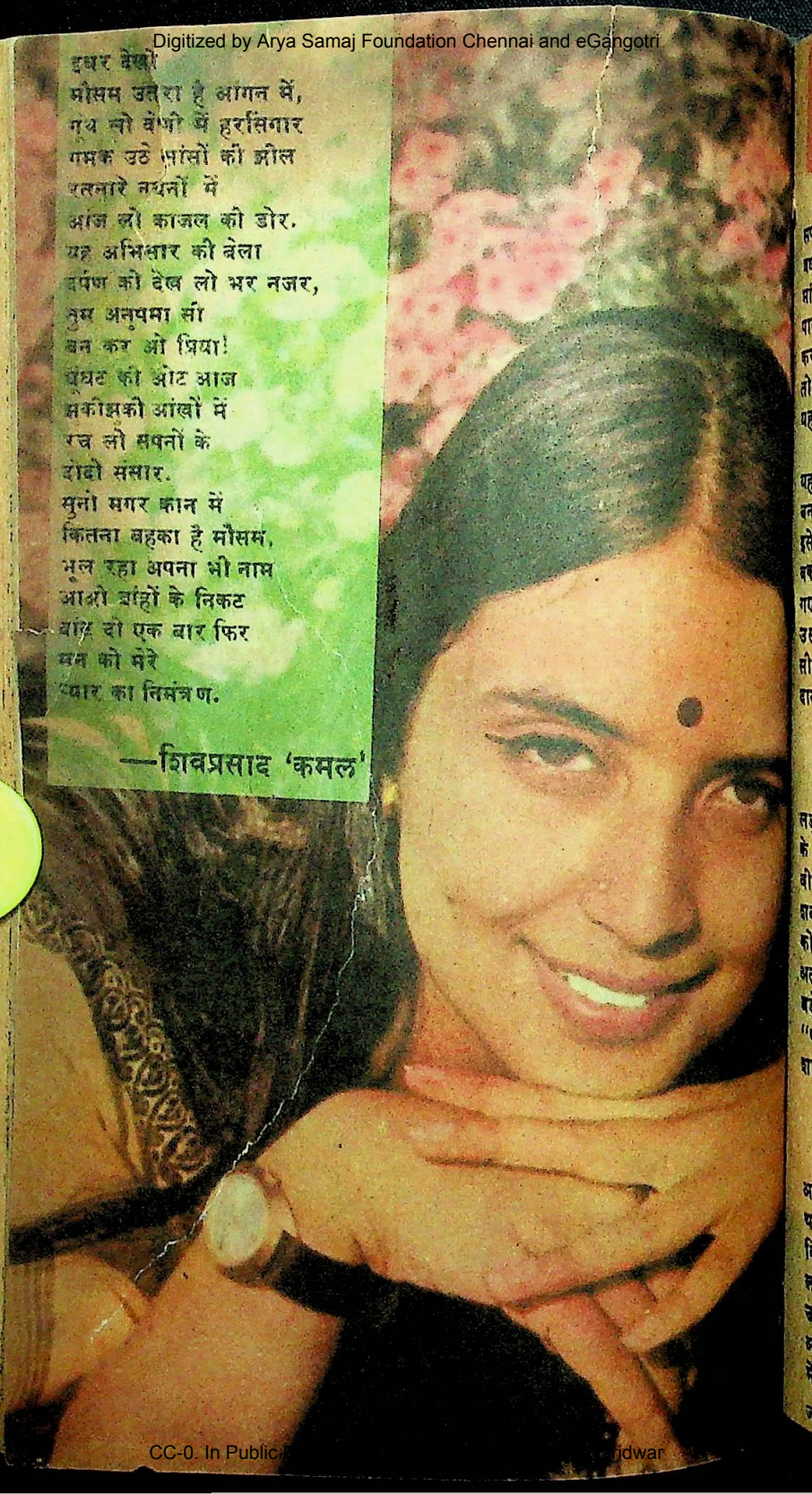

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बच्चों के मुख से

पिछले दिनों हमारे बड़े भाईसाहब सपरिवार घर आए हुए थे. उन की सात वर्षीया बेटी सीमा बहुत शैतान है. हमारी मां पान की शौकीन होने के कारण अपने पास हमेशा पानदान रखती हैं. यहां आ कर सीमा ने पहली बार पानदान देखा तो मां से उत्सुकतावश पूछा, "दादीजी, यह क्या है?"

मां ने प्यार से समझाया, "बेटा, यह पानदान है. इस में पान और उस को बनाने का सामान रहता है न, इसी लिए इसे पानदान कहते हैं." दूसरे दिन उस वक्त हम लोग हंसतेहंसते लोटपोट हो गए जब स्कूल जाती हुई मेरी बहन को उस का खाने का डब्बा पकड़ाते हुए सीमा ने कहा, "बुआ, आप अपना खानदान तो यहीं भूले जा रही हैं."

—निशा गहलौत, लखनऊ

✦

एक बार मेरे एक मित्र अपने बड़े लड़के संदीप को हिंदी पढ़ा रहे थे. उन के पास ही उन की चार वर्षीया लड़की वीनू बैठी थी. उन्होंने संदीप से 'क्रूरता' शब्द का विलोमार्थक शब्द पूछा. संदीप को इस का विपरीत शब्द नहीं आता था अतः वह चुप रहा. तभी वीनू, जो कि बड़े ध्यान से सुन रही थी, बोली, "पाजामा." दरअसल उस ने क्रूरता को शायद कुरता समझ लिया था.

—क.ख.ग., फरीदाबाद

✦

पिछली गरमियों की छुट्टी में मैं अपने एक मुसलिम मित्र के यहां गया था. उन के यहां चर्चा चल रही थी कि भविष्य में आदमी चांद पर रहने लगेंगे. तभी उन का छोटा भतीजा बोल उठा, "चाचाजान, चांद पर रहने वाले आदमी अपनी ईद कैसे मनाएंगे?" वास्तव में प्रश्न तर्कपूर्ण था. फिर भी हम सब

—प्रेमपालसिंह राठौर, चांदपुर

✦

मेरी भाभीजी का लड़का विकास बहुत शैतान तथा जिद्दी है. एक दिन वह अपने छोटे भाई की दूध की शीशी लिए घूम रहा था. भाभीजी बारबार शीशी रख देने के लिए कह रही थीं, लेकिन विकास नहीं माना. इसी बीच शीशी गिर कर टूट गई.

भाभीजी रसोई से ही डांटती हुई आईं, "इतनी देर से रखने को कह रही थी, अब तोड़ दी न."

इस पर विकास बड़े भोलेपन से बोला, "बारबार कह रही थीं तो मेरे हाथ से छीन कर क्यों नहीं रख दी थी?"

हम सब के साथ भाभीजी भी विकास की इस उक्ति पर खिलखिला कर हंस पड़ीं.

—नीलिमा कक्कड़, बदायूं

✦

मेरे एक मित्र इस हद तक हिंदी प्रेमी हैं कि बातचीत भी उच्च हिंदी या संस्कृत में करते हैं. एक बार मैं अपने

छोटे भाई के साथ जा रहा था कि उन से मुलाकात हो गई. तुरंत पूछ बैठे, "कुत्र गच्छसि?" अर्थात कहां जा रहे हो?

मेरे उत्तर देने से पूर्व ही मेरा छोटा भाई बोल पड़ा, "बुद्धम शरणम् गच्छामि." सुन कर हमें अनायास ही हंसी आ गई.

—नरेंद्रसिंह चौहान, पौड़ी ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नए रिश्ते

कहानी • शशि जैन

रानो घर में दौड़ती हुई घुसी. बस्ता एक तरफ पटक कर वह सरला से लिपट गई.

"दादी बुआ, दादी बुआ, आज हमें मम्मी मिली थीं. हमें मम्मी मिली थीं, दादी बुआ."

रानो बड़े उत्तेजित स्वर में बताती जा रही थी कि मम्मी ने उसे क्याक्या खिलाया, क्याक्या कहा.

सरला उस की बातें सुनती रही, उस के सिर और शरीर को सहलाती रही. न रानो के स्वर की उत्तेजना कम हुई थी और न ही सरला के शरीर पर उस के नन्हे हाथों की पकड़ ढीली पड़ी थी. वह अपनी समस्त शक्ति से दादी बुआ के शरीर से चिपटी रही जैसे वही एकमात्र उस का सहारा थी. कुछ ही देर में रानो की उत्तेजना आंसू बन कर टपकने लगी.

"मम्मी घर क्यों नहीं आतीं, दादी बुआ? वह दूसरे घर में क्यों रहती हैं? सब की मम्मी घर में रहती हैं, मेरी मम्मी क्यों नहीं रहतीं? मैं भी यहां नहीं रहूंगी, मैं भी मम्मी के पास जाऊंगी, दादी बुआ."

रानो का रोना बढ़ता ही जा रहा था. सरला की समझ में नहीं आ रहा था कि वह उसे कैसे चुप कराए. वह उसे चिपटाए हुए उस का शरीर सहलाती रही. रानो की व्यथा उस की स्वयं की व्यथा बनती जा रही थी. उस की आंखें रहरह कर भरी आ रही थीं. रानो की मम्मी घर पर क्यों नहीं रहतीं, यह क्या वह स्वयं ही समझ सकी थीं?

जब वह बूढ़ी होने पर यह बात नहीं जान पाई थीं कि रानो की मम्मी उस के साथ क्यों नहीं रहतीं तो बेचारी रानो ही कैसे समझ सकती थी? वह और रानो तो अल्पबुद्धि थे, यह सब नहीं समझ सकते थे, परंतु प्रदीप तो अपने को बड़ा बुद्धिमान समझता था. क्या उस के पास ही इस बात का कोई उत्तर था और नंदा ही क्या इस का उत्तर जानती थी? वे दोनों समझते हैं कि वे जानते हैं, पर शायद वे भी नहीं जानते कि वे दोनों मिल कर क्यों नहीं रह सके.

वह रानो को कस कर छाती में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगाए रही, जैसे इसी से वह उसे दुनिया के सारे दुखों से बचा लेगी. उस के हाथों के नीचे नन्हा सा शरीर सुबकता हुआ हिचकोले ले रहा था. वह मन ही मन अपना सारा स्नेह और ममता रानो पर उड़ेल रही थी. धीरेधीरे रानो शांत होने लगी और कुछ ही देर में वह बचपन की शांत गहरी नींद में खो गई. उस का आंसुओं की लकीरों से भरा मासूम चेहरा वेदना की साकार मूर्ति लग रहा था.

जिस नन्ही सी कोमल कली को मां की छाया में पलना चाहिए था, उसे मां-विहीना कर के कड़ी धूप में झुलसने को छोड़ दिया गया था.

वह आंगन में खाट पर बैठ कर सब्जी काटने लगी. मन बहुत सी उलझी हुई गुत्थियों में उलझने लगा.

सत्य क्या है, कौन जान सकता है? वह जीवन में बहुत सी कमियों को झेलती रही थी. पति को बहुत कम उमर में खो दिया था. वह उसे निस्संतान छोड़ गया था. वह इन अभावों को सहती हुई अकेला जीवन व्यतीत करती रही. परंतु नंदा को तो सब कुछ मिला था—एक स्वस्थ, सुंदर पति तथा फूल सी प्यारी बिटिया. उस ने किस तरह, कैसे उन्हें हाथ से निकल जाने दिया? क्या उस के लिए पति तथा पुत्री का कोई महत्त्व नहीं था? कुछ तो होगा बहुत ही बड़ा, बहुत ही महत्त्वपूर्ण, जो इन अभावों की पूर्ति कर सका होगा.

वह तो अपने पतिविहीन तथा संतानहीन जीवन को एक यातना समझ कर जी रही थी, परंतु नंदा के लिए इन दोनों का होना ही शायद यातना बन गया था, तभी वह अपने खून और जिगर के टुकड़े को छोड़ कर जा सकी थी. अन्य दिनों की तरह वह आज भी इस प्रश्न को टटोलती रही, पर कोई उत्तर न पा सकी.

प्रदीप आ गया था.

"रानो कहां है, बुआ? दिखाई नहीं दे रही, क्या बाहर खेलने गई है?"

"सो रही है."

प्रदीप और नंदा को बेटी के जीवन का प्रश्न सहसा इतना बड़ा लगा कि उन्हें अपने आपसी रिश्ते तुच्छ व नगण्य लगने लगे...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस लिए! तबीयत तो ठीक है!" प्रदीप चिंतातुर हो उठा.

"तबीयत तो ठीक है, पर उस का मन ठीक नहीं है," प्रदीप प्रश्नचिह्न बना उसे देखता रहा.

"आज उसे उस की मम्मी मिली थीं."

"क्या नंदा यहां आई थी?"

"नहीं. वह स्कूल के बाद उसे मिली थी. रानो लौटी तो बेहद उत्तेजित थी. घर आ कर मम्मी को याद करती रोते-रोते सो गई."

"कैसी नादानी है नंदा की. बच्ची से मिल कर उसे इस तरह हिला देने का क्या मतलब है? यह तय हो चुका है कि बिना मेरी अनुमति के वह रानो से मिलने की चेष्टा नहीं करेगी. उस ने ऐसा क्यों किया?" क्रोध के मारे प्रदीप की कनपटी की नसें फड़क रही थीं.

वह चुपचाप बैठी सब्जी काटती रही. वह क्या उत्तर दे इन प्रश्नों का. या तो वह पागल है या ये लोग, प्रदीप और नंदा, जो प्राकृतिक सत्य को झुठला कर कोई दूसरा सत्य स्थापित करने की चेष्टा कर रहे हैं. मां अपनी कोख जायी बेटी से बिना अनुमति नहीं मिल सकती? यह कैसा और कहां का नियम है? क्या खून के रिश्तों को कानून के दायरे से घेरा जा सकता है?

प्रदीप दन्नाता हुआ बाहर जाने लगा.

उस ने टोका, "प्रदीप, कहां जा रहा है? चाय तो पी ले, सुबह का भूखाप्यासा है."

"नहीं, बुआ, भूख नहीं है. जरा काम से जा रहा हूं."

"मुझे पता है तू कहां जा रहा है. क्रोध कर के मत जा, प्रदीप. सब संबंध तोड़ देने के बाद तुझे क्रोध करने का हक भी कहां रह गया है?"

"नहीं, बुआ, अब चुप रहने से काम नहीं चलेगा. वह एकदो बार पहले भी ऐसा कर चुकी है. खुशी से रहती रानो से मिल कर वह उसे कितने दिनों के लिए तोड़ जाती है. रानो अपनी जिंदगी से दूर जा कर अलग हो जाती है. रानो के दिमाग पर कितना गहरा और स्थायी असर पड़ सकता है. मैं ऐसा नहीं होने दे सकता."

वह बड़ी अनमनी सी हो उठी.

"तुम लोग पढ़ेलिखे हो और होशियार, मैं अनपढ़ और गंवार, पर इतना जरूर कह सकती हूं कि रानो की जिंदगी आज नहीं, तुम और नंदा दोनों मिल कर बहुत पहले ही तोड़ चुके हो. जिस पौधे को कुशल माली की देखरेख में यत्नपूर्वक सुरक्षित रख कर पाला जाना चाहिए था उसे तो तुम झंझावात में अकेला छोड़ चुके हो. मां से मिलने पर कुछ नया घटित नहीं होता, केवल उस के अंदर दबाढंका विद्रोह ही उभरता है. बच्चा चाहे कुछ और न समझे, पर मां से गहरे लगाव की बात उसे समझनी नहीं पड़ती. इस बेचारी के तो मां है, यह कैसे भूल सकती है? तेरी मां तो तुझे दसबारह साल का छोड़ कर मर गई थी, क्या तुझे कभी उस की याद नहीं आई?"

प्रदीप क्षण भर को शर्मिंदा सा हो उठा.

"नहीं, बुआ, यह ठीक नहीं है. नंदा से मिलेगी तो यह उस की कमी और भी ज्यादा महसूस करेगी. उसे भूल नहीं सकेगी. जो मिल नहीं सकता, उसे भूल जाना ही अच्छा है."

सरला चुप हो गई. बहस करना बेकार था. मानअपमान का प्रश्न इस घर को तोड़ चुका था, पर वह अब भी खत्म नहीं हुआ था. सब कुछ देखतेबूझते भी वह मन ही मन यह प्रार्थना करती रहती है कि किसी तरह इस टूटे घर में फिर से बहारें आ जाएं.

बुआ की बात से प्रदीप के दिमाग में उबलता हुआ लावा कुछ ठंडा होने लगा था, परंतु फिर भी वह नंदा के व्यवहार से जरा भी प्रसन्न नहीं था. उस ने नंदा के भाई के घर फोन मिलाया. नंदा ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

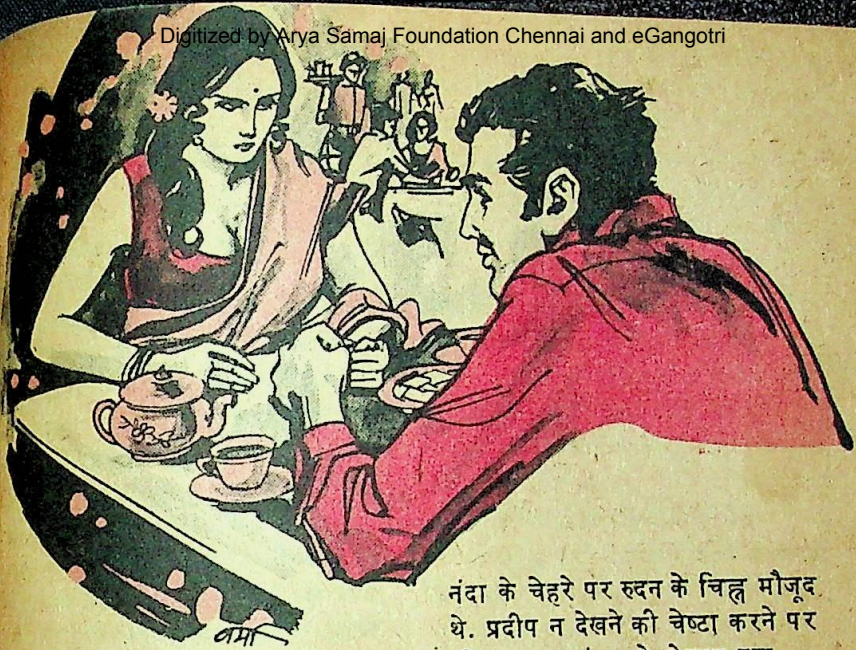

नंदा के चेहरे पर रुदन के चिह्न मौजूद थे. प्रदीप न देखने की चेष्टा करने पर भी बारबार नंदा को देखता रहा. . .

टेलीफोन पर बोल रही थी.

"हेलो, नंदा."

"कौन? आप?"

"तुम रानो के स्कूल गई थीं?"

"हां."

"तुम जानती हो, तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिए. रानो स्कूल से लौटी तो बेहद उत्तेजित थी. वह रोतेरोते सो गई. कम से कम अब तो तुम्हें हम लोगों को शांति में छोड़ देना चाहिए."

न चाहने पर भी प्रदीप के स्वर में सख्ती आ गई थी.

उत्तर में उधर से दबीदबी सिसकियां सुनाई पड़ रही थीं.

"हेलो, हेलो, नंदा."

नंदा रोती रही. प्रदीप का भी दिल सहसा बहुत भर आया. उस का दिल हुआ कि वह भी रोने लगे. उस ने कठिनाई से अपने को संयत किया.

"नंदा, कुछ देर को माडर्न काफी हाउस में आ सकती हो?"

"लोग देखेंगे तो क्या कहेंगे?"

"जरा देर के लिए आ जाओ, जो मैं तुम्हें समझाना चाहता हूं, वह फोन पर न हो सकेगा."

"अच्छा, आती हूं."

काफी हाउस के वातानुकूलित वातावरण में भी प्रदीप के माथे पर पसीना उभर रहा था. उसे लगा कि उस का सख्ती से सहेजा गया जीवन फिर से उखड़ने लगा है और भावनाओं की आंधी में सूखे पत्ते सा उड़ता चला जा रहा है. दिमाग विचित्र दांवपेंच में उलझने लगा. वह नंदा के साथ बिताए गए जीवन में घूमने लगा. उसे लगा सभी कुछ उलटपलट गया है.

उसे अधिक प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ी. शीघ्र ही नंदा उस के सामने बैठी थी. पहले से कहीं ज्यादा खूबसूरत और आकर्षक, हमेशा की तरह आसपास के लोगों की दृष्टि उस के गिर्द चक्कर काटने लगी. और हमेशा की तरह उस के हृदय में ईर्ष्या की नन्ही चिनगारी जलने लगी. उस ने तुरंत अपने को संयत किया. नंदा का सौंदर्य व आकर्षण और उस की स्वयं की ईर्ष्या प्रवृत्ति एक घर को नष्ट कर के काफी आहुति ले चुकी थी. उसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यत्नपूर्वक छिपाने पर भी नंदा के चेहरे पर रुदन के चिह्न मौजूद थे. वह अनदेखे की चेष्टा करने पर भी बारबार नंदा को देखता रहा. नंदा की बड़ीबड़ी आंखें उस पर स्थिर हो गई थीं और वह बेचैनी सी महसूस करने लगा था.

अस्थिरता की दशा में उस ने काफी चीजों का आर्डर दे दिया था. वह उस से बात शुरू करने के लिए कोई सूत्र ढूंढ़ने लगा.

"रानो ठीक रहती है?" नंदा ने ही झिझकते हुए पूछा.

"हां."

"ज्यादा याद तो नहीं करती?" नंदा का स्वर भीगने लगा था.

"तुम से मिलने से पहले तो नहीं करती."

नंदा को देख कर उसे लगा अब वह रो देगी.

"मुझे पता नहीं था कि मैं रानो को इतना याद करूंगी. हर समय उसी के बारे में सोचती रहती हूं. उसे देख कर मन को कुछ शांति मिली, पर क्षण भर को ही."

"यह सब तो पहले सोचना चाहिए था." प्रदीप का स्वर बेहद ठंडा था.

"उस समय तो हर चीज, हर व्यक्ति और हर भाव के प्रति मन में कटुता व्याप्त हो गई थी. रानो मुझ से इस तरह छिन जाएगी यह स्वप्न में भी नहीं सोचा था. कभीकभी मन बेहद भटक जाता है. वह नन्ही सी जान कैसे अपनी देखभाल करती होगी?" नंदा की आंखों से आंसू टपकने लगे थे.

"यह मिलना पूर्णतया सामान्य नहीं हो सकेगा. इस की तो प्रदीप को संभावना थी. परंतु फिर भी एक सार्वजनिक स्थान पर इस तरह भाव प्रदर्शन के लिए वह तैयार नहीं था. वह काफी परेशान सा हो उठा.

"आजकल क्या कर रही हो," वह

जीवन की मुसकान

बात इसी बरसात की है. हमारे कसबे के निचले भाग में पानी भर गया था. हम बाढ़ पीड़ितों की सहायता के लिए कपड़े व भोजन सामग्री बांटने गए थे. बहुत से मिट्टी के बने कच्चे मकान थे, जिन की हालत बहुत ही नाजुक थी. मैं, मेरी छोटी बहन व भाई एक गली से गुजर रहे थे कि एक बूढ़े व्यक्ति ने हमें रोक कर कहा, "बेटा, बहुत से घर बहुत कच्चे हैं. जो घर ज्यादा नाजुक दिखाई पड़ें, वहां तेजी से निकलना."

उस के बाद हम दोचार कदम ही आगे चले थे कि एक घर काफी खस्ता हालत में दिखाई दिया. हम तेजी से आगे बढ़ गए.

हम मुश्किल से दो मीटर ही आगे बढ़े होंगे कि वह मकान ढह कर गिर पड़ा. हम देखते ही रह गए.

अगर बूढ़े ने हमें सीख न दी होती तो शायद हम लोग बच न पाते. बूढ़े ने या शायद बाढ़ पीड़ितों की शुभकामनाओं ने हम लोगों को बचा लिया.

—चित्रा अग्रवाल, फरीदपुर

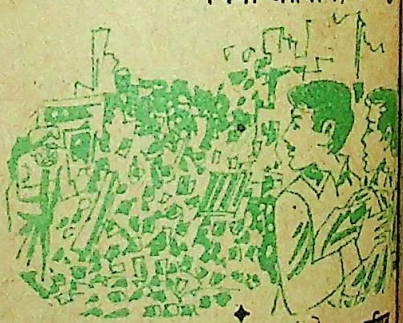

✦

मेरी छात्रावस्था में एक गणित अध्यापक ने मेरी शैतानी को देखते हुए एक चांटा मार कर मुझे डांटा और कहा, "तुम जिंदगी भर गणित में पास नहीं हो सकते." मैं उस अध्यापक को तंग किया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रातों की बात छोड़ कर व्यक्तिगत धरातल पर उतर आया.

"बंबई की एक फर्म में रिसेप्शनिस्ट हूं."

"तनख्वाह तो खूब मिलती होगी?"

"बड़ी फर्म है, अच्छा देते हैं. फिर भी रुचि अच्छी तनख्वाह में नहीं, काम में है. मुझ अकेली को कितना चाहिए. काम अच्छा है. नएनए चेहरे, काफी लोगों से मुलाकात, मन की भटकन से बची रहती हूं."

"दोबारा शादी करने की सोची?"

"एक बार का अनुभव क्या काफी नहीं?" स्वर में व्यंग्य छिपा था.

"फिर भी कभी तो सोचा होगा. तुम अभी जवान हो, खूबसूरत भी, कुछ समय बाद यह स्थिति नहीं रहेगी."

"जवान दिखने पर भी इस तरह के अनुभव स्त्री को मन से बूढ़ी बना देते हैं. फिर जो कभी न सोचा था वह हो गया, अब सोच कर ही क्या कर पाऊंगी?"

"कोई भी ऐसा है [illegible] और आकर्षित तो होते होंगे." प्रदीप अपनी बात पर अड़ा रहा. न चाहने पर भी ईर्ष्या की बेमालूम चिनगारी हवा पाने लगी.

नंदा उदास सी हंसी हंस दी.

"मेरातुम्हारा चोरसिपाही वाला रिश्ता तो खत्म हो चुका है, फिर छिपा कर भी क्या करना है. मैं स्वयं किसी की तरफ आकर्षित नहीं हूं. पर मेरे चारों ओर घूमने वालों की कमी नहीं है. जैसा कि तुम ने कहा मैं अभी खूबसूरत भी हूं, जवान भी."

"इस के लिए तुम क्या करती हो?"

"कुछ नहीं. मैं उन्हें घूमने देती हूं."

"शादी के पैगाम भी आते होंगे."

"हां, कई." नंदा नेपकिन को खोल-लपेट रही थी.

"फिर शादी क्यों नहीं की?" चिनगारी को फिर हवा मिली.

करता था, परंतु गणित में कड़ी मेहनत भी करता था. फलस्वरूप मैं गणित में प्रथम आया. मेरी खुशी का ठिकाना न रहा.

मैं अपने मित्रों के बीच जोरशोर से उस अध्यापक की निंदा करने लगा. मैं कहता, "अध्यापक भी कैसे बेवकूफ होते हैं, बिना सोचेसमझे छात्र को फटकारते हैं. अच्छा हुआ कि मेरी गणित की कापी उन अध्यापक ने नहीं जांची थी, वरना वह तो मुझे गणित में फेल कर देते."

एक दिन मेरे पिताजी के एक अध्यापक मित्र ने बातों ही बातों में पिताजी को बताया, "आप के बच्चे की जिंदगी सुधारने वाले हमारी शाला के गणित के अध्यापक हैं. अगर उन्होंने आप के बच्चे को फटकारा नहीं होता तो अन्य आवारा बच्चों की तरह वह भी बिगड़ जाता. उन्हीं अध्यापक ने आप के बच्चे की गणित की कापी जांची थी और प्रथम श्रेणी देते हुए उन्होंने मेरे सामने बहुत खुशी व्यक्त की थी."

यह सुन कर मैं उन अध्यापक की महानता देखता ही रह गया. आज मेरे अध्यापकीय जीवन में वह संस्मरण प्रकाश स्तंभ का कार्य करता है.

—रामावतार त्यागी, अजमेर ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में आस्था नहीं रही.

"बास कैसा है?"

"अच्छा है. वह भी मुझ से विवाह के लिए निवेदन कर चुका है."

"मान लेतीं. बड़ा बिजनेस है, रुपए-पैसे की बहार रहती." उन के आपसी अनेक मतभेदों में एक कारण नंदा का बेहद खर्चीला स्वभाव भी था.

"खयाल बुरा नहीं. वह पचपन का है. विधुर और गंजा. तीन लड़के, और दो लड़कियां भी हैं."

"फिर?"

"उस के बच्चों को यह विचार पसंद नहीं. सोचते हैं कि उन के पिता के धन की ताक में हूं. वह लोग इस विचार से काफी परेशान रहते हैं."

"तुम क्या सोचती हो?"

"कुछ सोचती नहीं, सिर्फ हंसती हूं. अच्छा, अपनी बताओ क्या कर रहे हो?"

"बस नौकरी."

"विवाह?"

"अभी तक तो चल रहा है. नहीं चलेगा तो मजबूरी है. रानो के खयाल से डर लगता है. उस ने रानो को पसंद न किया तो वह मासूम मारी जाएगी. मैं तो दिन भर दफ्तर में रहता हूं. उसे देख नहीं पाता. अभी तो बुआ उस की देख-रेख करती हैं, पता नहीं बाद में बुआ रहना पसंद करें या न करें."

"तुम यह नहीं कर सकते कि रानो को मुझे दे दो. तुम शादी कर लो. इस से सभी सुखी होंगे." नंदा का स्वर काफी उत्तेजित हो आया था.

"रानो को तुम्हें दे दूं? कभी नहीं, हरगिज नहीं. तुम उस की ठीक से देख-भाल नहीं कर सकोगी. अदालत में इतना झगड़ा कर के रानो को लिया है, तुम्हें नहीं दे सकता."

नंदा हंसी, "यह तो अदालत नहीं है. अदालत रानो को खुशियां नहीं दे सकी. तुम्हारी जिद थी, पूरी हो गई. अब तुम्हें स्वयं लग रहा है कि रानो तुम्हारे विवाह में बाधा है या विवाह के बाद वह सुखी नहीं रह सकेगी. रानो को मुझे देने के बाद इस का भय न रहेगा, तुम सुख से रहना."

"रानो को तुम्हें दे कर सुख से रहूं? तुम क्या अच्छी तरह उसे रख पाओगी?" प्रदीप का स्वर तेज हो गया था.

"मैं उस की मां हूं. बड़े कष्ट से उसे जन्म दिया है. मैं उसे ठीक से नहीं रख पाऊंगी? कम से कम विमाता से तो अच्छी तरह ही रखूंगी."

"नहीं, नंदा, रानो का भला मेरे पास रहने में ही है. तुम्हारा रिसेप्शनिस्ट का काम तुम्हें समय ही कम देगा. फिर तुम्हारे पास रह कर उसे वह शिक्षा कहां से मिलेगी, जो अच्छे बच्चे को मिलनी चाहिए. ऐश और आराम का जीवन बच्चों के लिए अच्छी शिक्षा नहीं है."

"अच्छा, मैं चलती हूं. बेकार की बातें सुन कर मन और खराब होता है. रानो का दुर्भाग्य है कि वह मेरे और तुम्हारे संयोग से पैदा हुई. मातापिता की गलती का परिणाम बच्चों को भुगतना पड़ता है. इस बात का इस से बड़ा प्रमाण और क्या हो सकता है."

नंदा उठ कर जाने लगी.

"वह बात तो तुम से कही ही नहीं जिसे कहने को तुम्हें बुलाया था. तुम रानो से मत मिला करो. वह तुम से मिल कर अस्थिर हो जाती है. टूट जाती है. जीवन से जुड़तेजुड़ते कट सी जाती है. फिर उसे सामान्य करना कठिन हो जाता है."

"मेरा कितना बड़ा दुर्भाग्य है? मां के होते हुए बेटी मातृहीना की तरह पल रही है."

नंदा की आंखों से मोटेमोटे आंसू गिरने लगे. उस ने उन्हें पोंछने का कोई उपक्रम नहीं किया. आतेजाते और बैठे लोग उसी की तरफ देखने लगे थे.

प्रदीप स्थिति से काफी त्रस्त हो उठा. अपनी बात दोबारा कहने या बढ़ाने का मौका नहीं था. वह जल्दी से बिल दे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर उठ खड़ा हुआ. नंदा वहीं मेज पर कोहनी टिका कर, सिर छिपा कर फफकने लगी.

उस ने नंदा को बांह का सहारा दे कर उठाया. नंदा रूमाल से मुंह पोंछती उस का सहारा ले कर लड़खड़ाती सी चलने लगी.

दोनों बाहर आ कर कार में बैठ गए. प्रदीप का हाथ नंदा को घेरे रहा.

प्रदीप के अंदर घुमड़ता क्षोभ हर क्षण गलता जा रहा था. वर्षों पहले हुए झगड़े उसे नाटक से लग रहे थे. इस नाटकों का अंत हुआ था--अदालत में संबंध विच्छेद के रूप में.

उसे महसूस हुआ कि अपनीअपनी राह जाने के प्रयास के बाद भी वे एक राह के ही राही बने रहे थे. नंदा प्रदीप को भूल सकी, पर रानो को नहीं भूल सकी थी. प्रदीप भी नंदा को भूलने की कोशिश करता रहा, पर रानो का हित-अहित उस के जीवन का प्रथम प्रश्न बना रहा. जो उस का रक्त अंश थी. नंदा के शरीर में पली थी.

रानो उन दोनों के मध्य हमेशा ही बनी रही है, बनी रहेगी. चाहे वह और नंदा दुनिया के अलगअलग कोनों पर कितने ही दूर चले जाएं, पर रानो के माध्यम से एक धागा उन दोनों को परस्पर बांधे ही रहेगा.

प्रदीप को लगा कि वह [illegible] निर्धारित भूमिका को छोड़ कर किसी और की ही भूमिका अदा कर रहे थे. वे दोनों ही अपने रास्ते से हट गए थे. पति-पत्नी का रिश्ता झुठलाना कठिन नहीं, किंतु मांबेटी का और पितापुत्री का रिश्ता कोई शक्ति झुठला नहीं सकती. बुआ जो कहती हैं, वह शायद ठीक ही है.

उस ने कार स्टार्ट कर दी और घर की तरफ मोड़ दी. नंदा चिरपरिचित रास्ते को पहचान रही थी. वह सीधी हो कर बैठ गई.

"वहां नहीं. रानो को देख कर मेरा कठिनाई से सहेजा हुआ दिल फिर छिन्न-भिन्न हो जाएगा. जिस रास्ते को पीछे छोड़ आई हूं. उस पर यदि चल ही नहीं सकती तो चाहे जैसे भी हो उस का मोह तो छोड़ना ही होगा."

रानो को फिर से देखने की, छाती से चिपटाने की अदम्य इच्छा उस के कलेजे में घुमड़ने लगी.

"क्या तुम रानो से नहीं मिलोगी? वह तुम्हें याद करती, रोतेरोते सो गई है. जागने पर तुम्हें देखेगी तो कितनी खुश होगी."

"तुम्हीं तो कह रहे थे मुझ से मिल कर वह टूट सी जाती है. दिल से और छलावा करने से क्या लाभ? उसे अब इस टूटे रिश्ते को स्वीकार करना सीख ही लेना चाहिए."

ALL UNDER ONE ROOF
ESTD : 1958

ELECTROLYSIS
THOUSANDS HAVE BEEN CURED OF UGLY SUPERFLUOUS HAIR PERMANENTLY IN INDIA & ABROAD
PROP. MRS. A. GARKAL
EX-BEAUTICIAN OF TAO CLINIC LONDON

SLIMMING
BY SCIENTIFIC MACHINES
HAIR DRESSING
BY ROSHAN LAL
BEAUTY TREATMENT
INDIVIDUAL FACE MASSAGE
BRIDAL MAKE-UP
WAXING MANICURE ETC.

DELHI ELECTROLYSIS & BEAUTY CLINIC
40, HANUMAN ROAD, NEW DELHI-110001. TELEPHONE : 311297

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रही थीं. जिस रानो को उस ने जन्म दिया था, दिनरात गोदी में झुलाया था, उस से क्या सचमुच ही उस का रिश्ता टूट गया है? नाता तो उस ने प्रदीप से तोड़ा था. रानो से कब, क्यों और किस तरह उस का नाता टूट गया?

प्रदीप चुपचाप कार चलाता रहा. कार रुकते ही नंदा पागलों की तरह अंदर भागी. रानो अब भी सो रही थी. उस का दिल हुआ वह उसे उठा कर सीने से चिपटा ले, पर वह उस के सिरहाने बैठी उसे देखती रही. आंखों से वात्सल्य छलकाती रही.

उस ने देखा कि प्रदीप की बुआ कमरे में आ रही हैं. उस ने उठ कर उन के पैर छुए. सरला ने नंदा को छाती से लगा लिया. नंदा का अपने पर रहासहा नियंत्रण भी समाप्त हो गया. वह बच्चों की तरह फूट पड़ी. सरला रानो की तरह नंदा को सहलाने लगी.

"बहू, मैं जानती हूं, मैं कमसमझ हूं. बस एक ही बात पूछना चाहती हूं कि तुम और प्रदीप आपस में झगड़ कर अपनीअपनी राह पर चल दिए. आपस में बनी नहीं, संबंध तोड़ दिया. ठीक ही किया, पर रानो को अकेला क्यों छोड़ दिया? तुम दोनों इतनी बड़ी दुनिया में रह भी लोगे, खुशियां भी ढूंढ़ लोगे, अपनेअपने घर भी बसा लोगे, पर क्या रानो का टूटा जीवन कभी साबुत हो सकेगा? कोई भी कसूर न होने पर भी सब से ज्यादा सजा रानो को ही मिल रही है. बोलो क्यों? ऐसा क्यों हो रहा है?"

प्रदीप भी कमरे में आ गया था.

सरला का प्रवाह रुक नहीं रहा था. वर्षों से मन में दबे प्रश्न अपना जवाब मांग रहे थे.

"मैं तो विधवा और निपूती हूं. पति और संतान की चाहना क्या होती है यह मुझ से ज्यादा कोई नहीं जानता. तुम लोग रुपएपैसों को संभाल कर बटुए और तिजोरी में रखते हो, पर एक अमूल्य जीवन को परे तले रौंद रहे हो. रानो अभी एक अविकसित, मुरझाई कली है, बड़ी होने पर वह सिर्फ एक अविकसित मुरझाया फूल बन कर रह जाएगी.

"तुम लोगों ने अपने मानअपमान और अहंपूर्ति के चक्कर में रानो के जीवन को प्रकाश और हवा के रास्ते क्यों बंद कर दिए? क्यों उस नन्हे से जीवन को दम घोट कर मार रहे हो? यदि तुम दोनों, जो वयस्क और समझदार हो, परस्पर समझौता नहीं कर सकते तो नासमझ रानो की जिंदगी से किस स्तर पर समझौता करने की अपेक्षा करते हो?"

प्रदीप और नंदा दोनों अपराधी से सिर झुकाए खड़े थे.

"प्रदीप, क्या तू अपनी जिद नहीं छोड़ सकता? बहू, तुम ही क्या अपने मानअपमान के प्रश्न को नहीं पी सकतीं? तुम लोग जो अपना जीवन जी चुके हो, रानो के जीवन और खुशियों की बलि क्यों ले रहे हो? क्या तुम उसे जीने का मौका नहीं दे सकते?"

सरला को लगा कि वह सहसा बहुत थक चुकी है और अपनी बात उन तक पहुंचाने में असमर्थ है.

उन्होंने अंतिम प्रयास किया, "प्रदीप और बहू, क्या तुम लोग फिर से एक साथ नया जीवन नहीं शुरू कर सकते? पुरानी गलतियों को भूल कर नए तरीके से अपने लिए न सही, रानो के लिए क्या यह टूटा घर फिर से साबुत नहीं बनाया जा सकता. ऐसा घर जहां रानो प्रसन्न रह सके, संपूर्ण जीवन जी सके."

सरला धीरेधीरे कमरे से बाहर चली गई. प्रदीप और नंदा सोती हुई रानो को देख रहे थे. उन्हें महसूस हुआ कि एक अदृश्य धागा अपने में लपेट कर नए रिश्तों से बांध रहा है—प्रदीप को, नंदा को और रानो को. सहसा लगा कि नन्ही रानो के जीवन का प्रश्न बहुत बड़ा है और उन दोनों के आपसी रिश्ते उस के आगे बिलकुल तुच्छ और नगण्य हो कर रह गए हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महान सहायक

व्यस्त माताओं के लिए स्वादिष्ट व्यंजन बनाना आसान !
अगर ये ३ सहायक साथी आपके साथ हों, तो हरदम
नई-नई चीज़ें बनाने की चाह से आपका मन झूम उठेगा !

ब्राउन एन्ड पोल्सन
कॉर्नफ़्लोर

आटे के साथ घुलमिलकर कबाब, समोसे और पेट्रिस को ख़स्ता और परतदार बनाता है। सूप और ग्रेवी को गाढ़ा बनाता है और उन्हें ज़्यादा नर्म और अधिक स्वादिष्ट बनाता है।

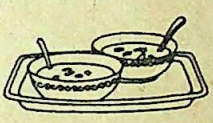

ब्राउन एन्ड पोल्सन
वैरायटी कस्टर्ड पाउडर

६ मनमोहक सुगन्ध ! घर में फालूदा, खीर, रबड़ी.. और आपके परिवार के मनपसन्द अनेक व्यंजन बनाने के लिए उत्तम।

रेक्स
बेकिंग पाउडर

केक, बिस्कट, पकौड़े, पूरी, गुलाबजामुन को हल्का और फूला हुआ बनाता है...थोड़ा-सा रेक्स बेकिंग पाउडर और कितना सारा मज़ा !

ब्राउन एन्ड पोल्सन और रेक्स
श्रेणी के उत्कृष्ट उत्पादन। उत्तम से उत्तम उपकरणों से बने और अत्यन्त सावधानी से तैयार किए गए बाज़ार में मिलने वाले सर्वोत्तम उत्पादन।

कॉर्न प्रॉडक्ट्स कम्पनी (इण्डिया) प्राइवेट लिमिटेड
श्री निवास हाउस, एच. सोसानी मार्ग, बम्बई-४००००१

OBM – 5457 HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक और अभिनय

बहन की सास ने जो कुछ कहा था यदि मैं सब कुछ घर पहुंचते ही उगल देता तो मां के दिल पर क्या बीतती...

कहानी • विकेश निझावन

उसे बहन पर गुस्सा आ रहा था. 'यह भी क्या मुसीबत है,' वह मन ही मन बुदबुदाने लगा, 'अभी पिछले मास ही तो इतना कुछ दे कर आए हैं. त्योहार तो यहां रोज ही आते रहते हैं आखिर कब तक लेनादेना चलता रहेगा... बहन के लिए कपड़े तो ठीक हैं, लेकिन हर बार सास और ससुर के कपड़े कौन देता है? लेने का लालच बना रहे तो रीतिरिवाज कह कर जो मर्जी मांग लो. रीतिरिवाज किस ने बनाए हैं, इन्हीं लोगों ने ही तो!'

उस ने मां की ओर नजर उठाई. उस का खयाल था कि मां से चिल्ला कर कहेगा कि इस बार हम कुछ नहीं देंगे उन्हें, लेकिन मां की ओर देखते ही वह जैसे कमजोर पड़ गया था.

"क्याक्या ले कर जाना है?" वह कुछ कठोरता से बोला.

"रज्जो और उस की सास के कपड़े तो मेरे पास रखे हैं, तू उस दिन अपने लिए कमीज का टुकड़ा लाया था न, वह जमाई बाबू को दे दे, अपने लिए तू अगले महीने ले लेना. थोड़ा सा फल भी ले जाना पड़ेगा. हां, मेरे पास दस का नोट है, वह ले जा."

मां ने साड़ी के पल्लू की गांठ से दस का नोट निकाला और उस की ओर बढ़ा दिया. उस का जी चाहा था, दस का नोट टुकड़ेटुकड़े कर दे, लेकिन कुछ सहज होते हुए बोला, "मां, अब वहां जाना बड़ा अजीब सा लगता है."

"क्यों?" मां कुछ चौंक सी गई थी.

"उन लोगों का स्वभाव ही अजीब है. जब भी जाता हूं, उस की सास... बस क्या बतलाऊं? वहम भी बहुत करते हैं वे लोग. जोजो कहते हैं, मुझे भी वही करना पड़ता है. समझ लो, पूरी एक्टिंग करनी पड़ती है. जितनी देर वहां बैठता हूं, घुटन सी महसूस होती रहती है."

"तुम्हें तो वहां एक घंटे में घुटन महसूस होने लगती है, जिसे सारी उमर वहां रहना है..." मां ने जो कटाक्ष किया, उस के आगे वह निरुत्तर हो गया था.

उस ने कलाई पर बंधी घड़ी की ओर देखा तो झट से उठ कर गुसलखाने में चला गया. तैयार हो कर बाहर आया तो मां बैग में कपड़े डाल रही थी.

वह जानता है, मां ने ये कपड़े कभी अपने लिए ही खरीदे होंगे. बाबूजी जब भी उसे कोई कपड़ा खरीदने को कहते तो वह चुपचाप ले लेती थी. लेकिन सिलवाने में जरूर आनाकानी कर देती. कभी बाबूजी गुस्सा भी करते तो वह मुसकराते हुए कहती, "मैं तो अब बूढ़ी हो गई हूं. बहू आएगी न, वह पहन लेगी."

ये सभी कपड़े मां ने शायद बहू के लिए ही रखे होंगे.

बैग उठा कर सीढ़ियों के पास पहुंचा तो एकाएक उसे जैसे कुछ याद हो आया. गरदन घुमाते हुए बोला, "कुछ नकद भी दे कर आना है?"

"मेरे खयाल में तो कोई जरूरत नहीं." क्षण भर के लिए मां ने उस के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

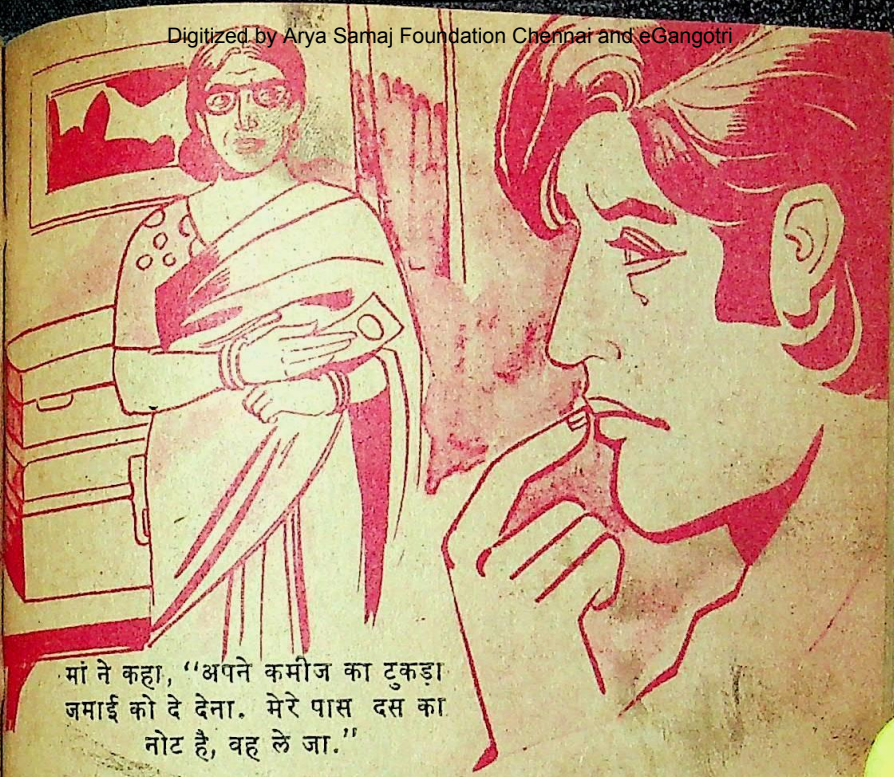

मां ने कहा, "अपने कमीज का टुकड़ा जमाई को दे देना. मेरे पास दस का नोट है, वह ले जा."

चेहरे की ओर देखा और फिर गरदन झुका ली.

उसे मां से यह पूछना कुछ व्यर्थ सा लगा, क्योंकि वह जानता था कि अगर नकद देना भी हुआ तो रज्जो स्वयं ही कह देगी.

गाड़ी में बैठेबैठे उसे यह सोचते हुए अच्छा लगा कि बहन नजदीक ही के शहर में ब्याही गई है. अगर कहीं दूर चली जाती तो...लेकिन दूसरे ही क्षण उस के मन में विचार आया कि यदि बहन का विवाह किसी दूर शहर में होता तो ज्यादा अच्छा था. नजदीक रहने से ही तो वे लोग रोज दिन कोई न कोई मांग कर बैठते हैं.

गाड़ी से उतर कर वह अपने कपड़ों की ओर देखने लगा. बैग नीचे रख कर टाई कसी. जेब में से कंघी निकाल कर करने का विचार आया, लेकिन कुछ और सोचते हुए बैग उठा कर आगे बढ़ गया. प्लेटफार्म से बाहर आया तो दोतीन रिक्शे वाले उस के पास आ गए थे.

"बाबूजी, रिक्शा?"

उस ने बैग एक रिक्शा वाले को थमा दिया. तनख्वाह अभी चार रोज पहले ही मिली थी, इसलिए वह निश्चित था. यों भी अब बहन के घर तक पैदल जाना उसे अच्छा नहीं लगता है. उसे याद है, पहली बार जब बहन के घर पैदल जा रहा था तो रास्ते में बहन का छोटा देवर मिल गया था. उस ने व्यंग्य करते हुए कहा था, "भाई साहब, इतना बोझ उठाए जा रहे हैं, कोई रिक्शा ही कर लिया होता."

उस के मुंह से ये शब्द सुन कर वह लज्जित हो उठा था. उसे डर था कि घर जा कर वह अवश्य ही सभी से कहेगा कि भाई साहब पैदल आ रहे थे. लेकिन घर जा कर वह कुछ नहीं बोला तो उसे राहत सी महसूस हुई थी.

कालोनी के शुरू होते ही रिक्शा वाला रुक गया.

"अरे, थोड़ा आगे ले चल न, साथ ही तो मकान है," वह कुछ झुंझलाते हुए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"बाबूजी, हम अंदर जाने का तो एक रुपया लेते हैं."

उस का जी चाहा था, रिक्शा वाले को एक तमाचा जड़ दे या फिर बैग उठा कर रिक्शा से कूद पड़े. लेकिन उस ने स्वयं को सहज बनाए रखा.

घर के पास पहुंचा तो बहन दरवाजे के पास ही खड़ी मिली. उस के चेहरे पर मुसकराहट देख कर उसे अच्छा लगा था.

"मैं सोच रही थी, पता नहीं तुम आओगे भी कि नहीं?"

उसे ड्राइंगरूम में बिठा कर बहन बाहर चली गई. लौटी तो हाथ में पानी का गिलास था.

"मां कैसी हैं?" पानी का गिलास उस की ओर बढ़ाते हुए वह बोली.

"ठीक है." और वह पानी के घूंट भरने लगा. तभी बहन की सास भीतर आई. उस ने उठ कर पांव छुए.

"बहू सुबह से तेरी राह देख रही है. यह सब सामान तो सूरज डूबने से पहले लाना चाहिए था. इस समय लाना तो अपशगुन माना जाता है."

उस ने अपने भीतर कड़वाहट सी फैलती महसूस की. मुसकराने का असफल प्रयास करते हुए वह सामने वाली कुरसी पर बैठ गया.

बहन ने बैग खोला और कपड़ों का डब्बा निकाल कर मांजी की ओर बढ़ा दिया. सास ने दोतीन बार कपड़ों को उलटापलटा, फिर कुछ धीमे स्वर में बोलीं, "गिनती तो पूरी है, लेकिन यह साड़ी तो घटिया लग रही है. मेरे लिए होगी न?"

अनायास ही उस की दृष्टि पहले मांजी के चेहरे पर, फिर बहन के चेहरे की ओर उठ गई. उस का खयाल था कि बहन कुछ कहेगी, लेकिन बहन को गरदन झुकाए देख वह कहीं भीतर तक टूट गया. उसे लगा, कपड़े घटिया होने की वजह से बहन भी शर्म महसूस कर रही है.

थोड़ी देर बाद मांजी उठ कर बाहर चली गईं. बहन की ओर देखते हुए वह धीमे स्वर में बोला, "तुम्हें कैसे लगे कपड़े?"

"ठीक हैं," बहन शून्यभाव से बोली.

"कुछ नकद भी देना है?" उस का स्वर कुछ अटक सा गया था.

"हां, इक्कीस रुपए दे देना. मांजी को ही देना."

इक्कीस रुपए सुनते ही वह घबरा उठा. अभी सारा महीना पड़ा है, कैसे कटेगा?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

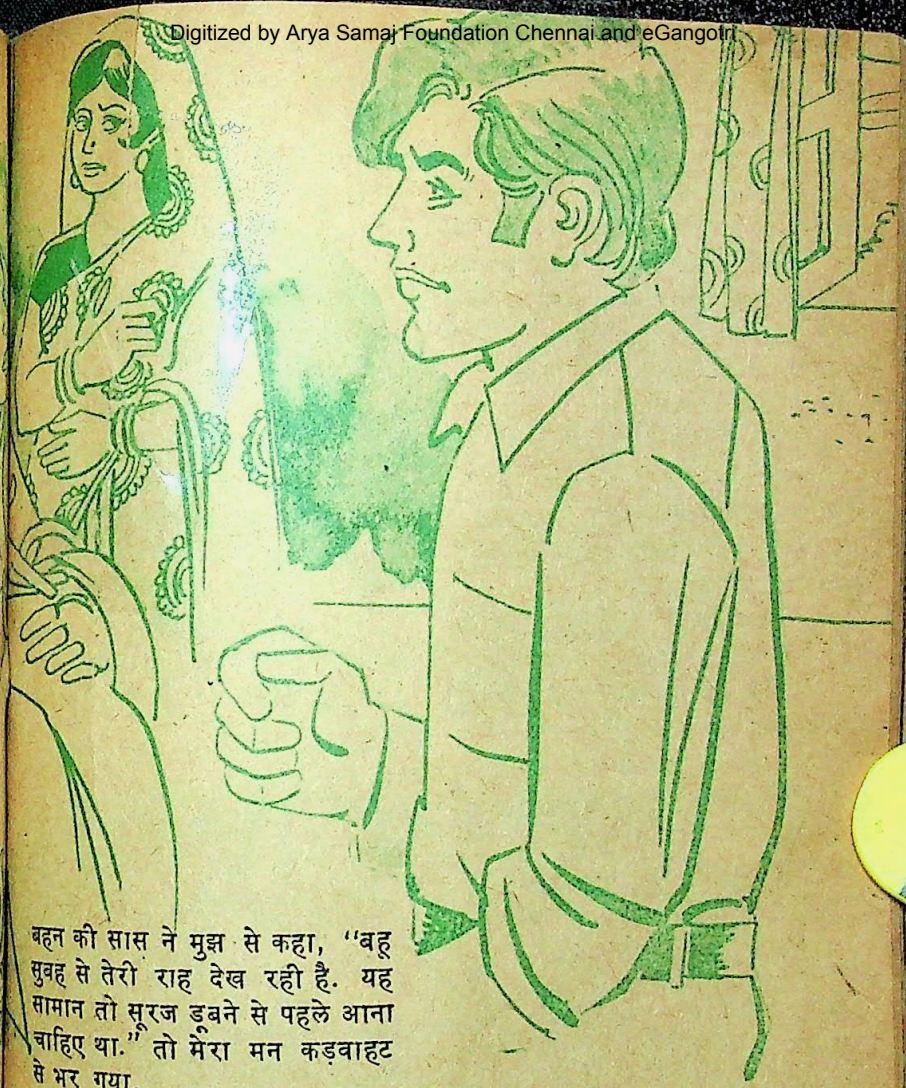

बहन की सास ने मुझ से कहा, "बहू सुबह से तेरी राह देख रही है. यह सामान तो सूरज डूबने से पहले आना चाहिए था." तो मेरा मन कड़वाहट से भर गया.

बहन उठ कर बाहर गई तो वह पर्स में से इक्कीस रुपए निकाल कर अलग करने लगा.

थोड़ी देर बाद बहन चाय की ट्रे लिए हुए भीतर आई. उस का मन हुआ कि चाय पीने से साफ इनकार कर दे, लेकिन तभी मांजी को भीतर आते देख वह खामोश ही रहा.

चाय पी कर उस ने कमीज की जेब से इक्कीस रुपए निकाले और मांजी को देने लगा.

"यह तो अपनी बहन को दो. आज तक कौन सा हम लेते आए हैं?"

वह प्रश्नवाचक दृष्टि से बहन की ओर देखने लगा.

"मांजी, एक ही बात है. आप रख लो न!"

"अच्छा, बहू कहती है तो रख लेती हूं, वरना मुझे तो किसी की चीज रख कर बोझ सा महसूस होता रहता है."

उस ने महसूस किया कि मांजी रुपए न लेने का मात्र अभिनय ही कर रही थीं. बहन से बात करने के लिए उसे शब्द ही नहीं सूझ रहे थे. जीजाजी के बारे में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ने पत्र में हीलिखा था कि वे दूर पर गए हुए हैं और दस तारीख को लौटेंगे.

थोड़ी देर बाद वह उठ खड़ा हुआ था. "अब मैं चलूंगा, दीदी."

बहन कुछ नहीं बोली. खामोशी से जमीन की ओर ताकने लगी थी.

मांजी को प्रणाम कर वह बाहर आ गया. उस ने सोचा था, बहन से मिल कर वह हलका हो जाएगा, लेकिन अब तो वह और अधिक बोझिल हो गया था.

गाड़ी का सफर उस से काटे नहीं कट रहा था. स्टेशन से बाहर आते ही उस ने रिक्शा कर लिया.

घर पहुंचा तो मां बरामदे में चारपाई पर लेटी हुई थी.

"तू आ गया?" मां उठते हुए बोली, "रज्जो कैसी है?"

"ठीक है," अनायास ही जैसे उस के मुंह से निकल गया था.

"कुछ कहती थी उस की सास?"

उस ने क्षण भर को मां की ओर देखा और गरदन झटकाते हुए बोला, "आते क्यों नहीं?"

"कुछ नकद भी दिया?"

"मैं तो दे रहा था, लेकिन उस की सास ने नहीं लिया."

"क्यों?"

"कहने लगी, 'पहले ही इतना कुछ ले आए हो.'"

"मैं कहती थी कि उस की सास बहुत अच्छी है. थोड़ेबहुत रीतिरिवाज तो चलते ही रहते हैं. अच्छा, अब बतलाओ, तुम्हें वहां एक्टिंग करनी पड़ी?"

उस का सिर घूमने लगा था. उसे लगा, वह अभी चक्कर खा कर गिर जाएगा. स्वर को दृढ़ बनाते हुए वह तेजी से कमरे की ओर जाते हुए बोला, "मां, अगर मुझे एक्टिंग करनी आती होती तो आज यहां होता?" •

जी ई सी ओसरम ट्यूब लाइट
वर्षों इस्तेमाल के बाद भी
नयी जैसी उज्ज्वल रोशनी

G.E.C. Osram
ट्यूब के छोर काले नहीं पड़ते अधिक घंटे
एक समान उज्ज्वल रोशनी मिलती है।

Trade Mark G.E.C. and Osram Permitted User—The General Electric Company of India Limited
OBM-4378A/4 HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राम कृष्ण का काल निर्णय

राम और कृष्ण काल के निर्धारण में लोक कथाओं को ही प्रामाणिक मानना बिलकुल भ्रामक है.

लेख • बंशीधर त्रिपाठी

राम एवं कृष्ण ऐतिहासिक पुरुष हैं अथवा गाथात्मक, इस प्रश्न पर आजकल बहुत बहस चल रही है. पुरातत्त्ववेत्ता ऐसी घटना को ऐतिहासिक नहीं मानते जिसे सिद्ध करने के लिए कोई भौतिक प्रमाण न हो. मेरी दृष्टि में, भौतिक प्रमाणों के अतिरिक्त अन्य गोचर प्रमाणों के आधार पर भी हम घटनाओं की ऐतिहासिक एवं अनैतिहासिक श्रेणियां निर्धारित कर सकते हैं, लोकविश्वास एवं लोकगाथा ऐसे ही गोचर प्रमाण हैं.

भारतीय साहित्य में राम एवं कृष्ण से संबंधित इतने गीत, इतनी कथाएं एवं इतने कर्मकांड प्रचलित हैं कि इन्हें गाथात्मक व्यक्तित्व मानना बड़ी भूल होगी. राम एवं कृष्ण के विषय में यह जनविश्वास प्रचलित है कि ये लोग अमुक स्थान पर पैदा हुए थे, इन की अमुक कर्मभूमि थी या इन की अमुक जन्मतिथि थी.

सामान्यतया गाथात्मक एवं काल्पनिक चरित्रों के विषय में समय एवं काल के संबंध में इतनी निश्चिततापूर्वक कोई बात नहीं कही जाती है और न इन से संबंधित कोई कर्मकांड एवं विश्वास समूहगत स्तर पर प्रचलित होते हैं.

यह अवश्य संभव है कि राम एवं कृष्ण से संबंधित घटनाओं का अतिरंजन कवियों एवं लेखकों ने किया हो, पर यह निश्चित है कि इतना सारा साहित्य पूर्णतः काल्पनिक व्यक्तियों के संबंध में जनमानस से नहीं उमड़ सकता.

राम एवं कृष्ण की ऐतिहासिकता एक समस्या है. दूसरी समस्या आजकल और खड़ी हो गई है. परंपरागतरूप से यही माना जाता है कि राम का काल कृष्ण से पहले है, परंतु कुछ लोग ऐसा मानने लगे हैं कि रामकाल कृष्णकाल के बाद आता है. प्रस्तुत लेख में समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से इसी प्रश्न पर विचार किया गया है.

जैसे पुरातत्त्वीय मान्यता है कि खुदाई में जो वस्तुएं ऊपरी परतों पर मिलती हैं, निचली परतों पर मिलने वाली वस्तुओं से वे उत्तरवर्ती होती हैं. उसी प्रकार एक समाजशास्त्रीय मान्यता है कि सामाजिक संस्थाएं एवं मूल्य प्रारंभ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

... असंगठित रहते हैं. कालांतर में उन में व्यवस्था तथा संगठन आता है. यह मान्यता तथ्याधारित एवं तर्कपूर्ण है. इस मान्यता के आधार पर यह कहा जा सकता है कि जिस सामाजिक व्यवस्था में अधिक संगठन एवं प्रकार्यशीलता होती है वह कम संगठित एवं प्रकार्यशील व्यवस्था से अधिक नवीन होती है.

कृष्णकाल रामकाल से पहले क्यों?

राम एवं कृष्णकाल की घटनाओं का विश्लेषण करने पर यह ज्ञात होता है कि रामकालीन सामाजिक संस्थाएं एवं मूल्य कृष्णकालीन संस्थाओं एवं मूल्यों की तुलना में अधिक परिष्कृत एवं संगठित हैं. इस के आधार पर यह कहा जा सकता है कि कृष्णकाल रामकाल से पहले आता है.

अब हम कुछ समाजशास्त्रीय मान्यताओं के आधार पर विस्तार से उभययुगीन संस्थाओं एवं मूल्यों पर विचार करेंगे.

कृष्णकाल में विवाह नामक संस्था अस्तित्व में तो थी परंतु इस में व्यवस्था का अभाव था. इस संस्था के प्रति जनप्रतिबद्धता बहुत कम थी. वैवाहिक वर्जनाओं, जैसे सपिंड, बहुपति आदि का ज्ञान सामूहिक स्तर पर कृष्णकाल में लोगों को अवश्य रहा होगा, पर उन में इतनी नियंत्रणशक्ति एकत्रित नहीं हो पाई थी कि सामूहिक व्यवहार उन से अनुशासित हो सके.

इन वर्जनाओं के उल्लंघन के अनेक उदाहरण महाभारत में मिलते हैं. कुंती कृष्ण की बुआ थीं अतः मातृपक्ष के आधार पर अर्जुनादि कृष्ण के फुफेरे भाई होते थे. अर्जुन सुभद्रा के फुफेरे भाई थे पर उन के विवाह पर किसी ने कोई आपत्ति नहीं की. इसी प्रकार अभिमन्यु का विवाह उन के अपने बड़े मामा बलराम की पुत्री शशिकला से हुआ था. ये दोनों विवाह सपिंड थे. इसी प्रकार द्रौपदी का बहुपति विवाह था. कुंती एवं माद्री के पांच पुत्र (अर्जुनादि) भी चार पतियों से थे. जनमानस इसे बुरा नहीं मानता था. बहुपत्नी विवाह भी कृष्णकाल में खूब प्रचलित था. स्वयं कृष्ण की आठ तो पट्टरानियां थीं और सोलह सौ सामान्य रानियां.

इस के विपरीत रामकाल में सपिंड एवं बहुपति विवाह के उदाहरण नहीं मिलते. सीमित बहुपत्नी विवाह के उदाहरण रामकाल में अवश्य मिलते हैं. मानवीय विवाह इतिहास, स्वच्छंद लैंगिक संबंध से एक वैवाहिक संबंध की कहानी है. बहुविवाह एवं लैंगिक संबंधों की विभिन्न कोटियां इन्हीं दोनों छोरों के बीच में आती हैं.

मूल्यों में निखार

मानवीय विवाह इतिहास के आधार पर कृष्णकाल को रामकाल से पूर्ववर्ती माना जा सकता है. रामकाल तक एक विवाह व्यवस्था को जनसमर्थन काफी सीमा तक मिल चुका था.

दूसरी समाजशास्त्रीय मान्यता यह है कि मूल्यों एवं वर्जनाओं का उदय सामूहिक परिस्थितियों में हुआ करता है. जैसेजैसे मानवीय अनुभवों में वृद्धि होती जाती है, मूल्यों के स्वरूप में निखार आता जाता है. एक पूर्व कल्पना है कि उत्तरवर्ती समाज व्यवस्था में पूर्ववर्ती व्यवस्था की तुलना में मूल्यों का स्तर वैचारिक आयाम पर ऊंचा होता है. इस दृष्टि से भी रामयुग की तुलना में कृष्णयुग पूर्ववर्ती लगता है.

दुःशासन द्वारा द्रौपदी का विवस्त्र किया जाना और द्रोणाचार्य जैसे व्यक्ति का उस पर कुछ न बोलना एक निम्नस्तरीय एवं अनैतिक कार्य का उदाहरण है. अभिमन्यु वध, धर्मराज का जुआ खेलना, लाक्षागृह में पांडवों को जीवित जलाने की साजिश, दुर्योधन का अश्वत्थामा से पांडवों का सिर मांगना और अश्वत्थामा का पांडवों के पुत्रों का सिर काट कर देना आदि ऐसे प्रसंग हैं जिन से लगता है कि महाभारतकालीन नैतिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यदि आप महज पत्नी-प्रेमी, मौज-शौक से डरने वाले सीधे-सादे संकोची किस्म के दकियानूस आदमी हैं, तो फेबीना से दूर ही रहिए !

वहाँ तो, आप की ओर कितनी ही नजरें उठेंगी...
कितनी सुंदर, कितनी दिलकश नजरें !

फेबीना
सूटिंग्स और शार्टिंग्स
बीना सिल्क मिल्स
सं. र्न्य-८० फोन: ५९१३२९.

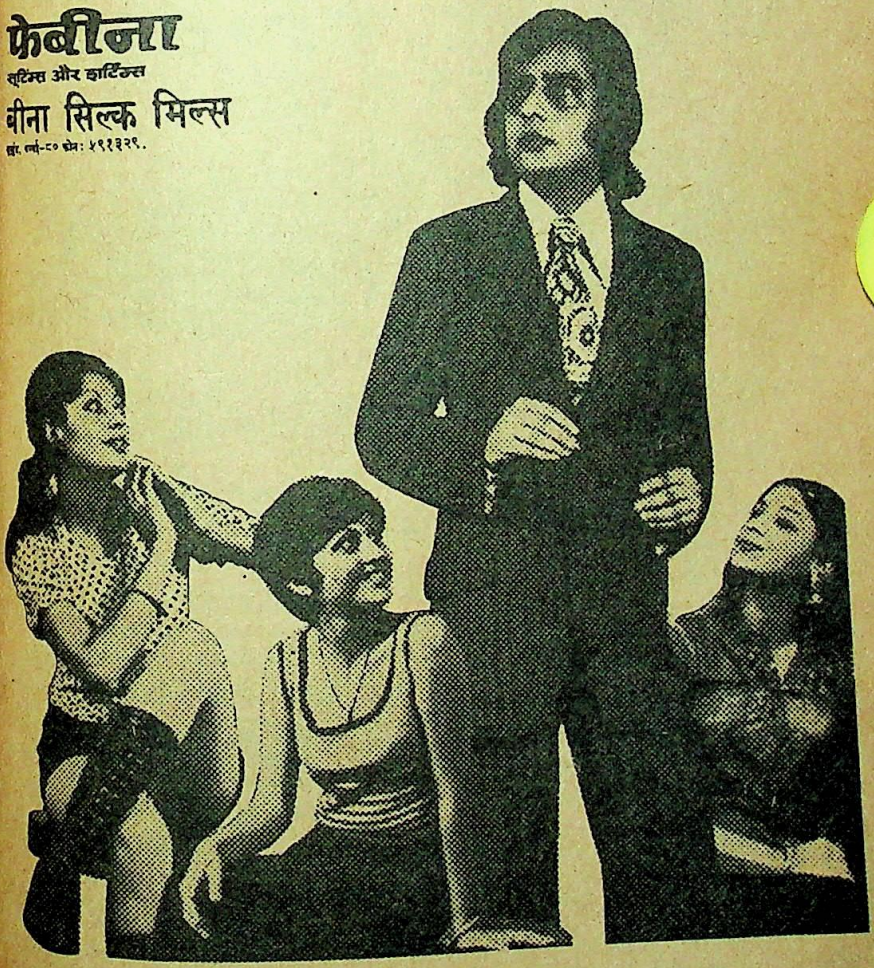

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एच एम टी की नई पेशकश

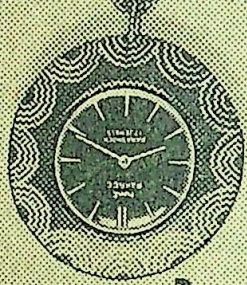

१७ ज्युएल का हार जो आपको सजाये और समय भी दर्शाये

अगर चाहें तो इसमें ब्रेसलेट वॉच भी है

एच एम टी की राखी, है घड़ी मतवाली, सबसे निराली। पेंडन्ट घड़ी का आकर्षक हार यानी दिल को छू लेने वाला यादगार उपहार जो सदा लुभाये—साथ निभाये। और आकर्षक भारतीय चित्रकारी से अलंकृत ब्रेसलेट, कलाई शोभाये—हर पल का एहसास दिलाये। डायल के चारों ओर नाज़ुक बिदरी चित्रकारी पर गौर किया आपने?

यह मोहक चित्रकारी हर घड़ी पर हाथ से काढ़ी जाती है, इसी लिये हर घड़ी अनुपम है।

एक दूसरे से भिन्न भी है और समान भी—क्यों कि हर घड़ी भीतरी गुणों व बनावट में समान है। राखी की १७ ज्युएल मूवमेंट, एंटीमगनेटिक व पैराशॉक गुण और धूल से सुरक्षित बनावट में आपकी आशाओं का सम्पूर्ण समावेश है।

यह अतुलनीय है, विश्वसनीय है—क्यों न हो जब इसे बनाते है, एच एम टी।

राखी दो मॉडलों में उपलब्ध है पेंडन्ट घड़ी और कलाई घड़ी

राखी

हर घडी स्वयं में विशेष है—नारी की विभिन्न पसंदों का निराला समावेश है!

hmt

राष्ट्र के समय-प्रहरी

एच एम टी वॉच डिवीज़न, बैंगलोर - ५६० ०५२.

PIN CODE FOR FAST MAIL

Sales-HMT-W-272-Hin-G76

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्तर रामकालीन स्तर की तुलना में अति निम्न था. यह निम्नता न केवल व्यक्तिगत एवं व्यावहारिक स्तर पर थी, वरन सामूहिक एवं वैचारिक स्तर पर भी थी.

तीसरी समाजशास्त्रीय मान्यता यह है कि उत्तरवर्ती एवं व्यवस्थित समाज में पूर्ववर्ती समाज की तुलना में मूल्यों, वर्जनाओं एवं कर्मकांडों की संख्या अधिक होती है और उन में अधिक औपचारिकता एवं नियमितता आ जाती है. इस दृष्टि से भी रामकाल कृष्णकाल के बाद का लगता है. रामकाल में बड़ेबड़े यज्ञों का वर्णन आता है. अश्वमेध यज्ञ तो बड़ा सामान्य था. रावणीय समाज में भी यज्ञ का प्रचार था. ऋषि लोग तो बस यज्ञ ही किया करते थे, पर कृष्णकाल में यज्ञों का वर्णन कम आता है.

चौथी समाजशास्त्रीय मान्यता यह है कि प्रारंभिक सामाजिक व्यवस्थाएं विखंडित एवं आत्माश्रित रहती हैं और धीरेधीरे उन की संरचना में विभेदीकरण आता है. इस प्रकार अनेक आत्माश्रित व्यवस्थाएं एक वृहत्तर [illegible] आ कर [illegible] हो जाती हैं.

इस मान्यता के आधार पर भी कृष्णकाल को रामकाल से पहले माना जा सकता है. महाभारत के युद्ध में अधिकतर उत्तरभारतीय समाज की सहभागिता का वर्णन है जब कि रामकाल में समस्त भारत एक इकाई के रूप में वर्णित है. उत्तरी एवं दक्षिणी भारतीय समाज रामकाल में एक वृहत्तर अंतर्क्रियाक्षेत्र में आ गया था.

पांचवीं समाजशास्त्रीय मान्यता है कि उत्तरवर्ती समाज तकनीकी दृष्टिकोण से पूर्ववर्ती समाज से उच्चतर स्तर पर रहता है. रामकाल में विमानों का वर्णन मिलता है. कृष्णकाल में विमान आदि का वर्णन नहीं आता है. निम्न स्तर तकनीक के अंतर्गत जादूटोना तथा अन्य तांत्रिक क्रियाएं आती हैं. कृष्णकाल में हमें जादूटोने का वर्णन अधिक मिलता है. पूतना आदि की क्रियाएं इसी श्रेणी में आती हैं. रामकाल में ऐसी तकनीकों का वर्णन नहीं

"श्रीमतीजी जब गुस्से में होती हैं तो कपड़े बहुत साफ धुलते हैं."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छठी समाजशास्त्रीय मान्यता है कि उत्तरवर्ती समाज की तुलना में पूर्ववर्ती समाज की पारिवारिक संरचना अधिक असंगठित होती है. यदि हम राम एवं कृष्णकालीन परिवारों की तुलना करें तो स्पष्ट होता है कि कृष्णकालीन परिवार अधिक असंगठित थे.

सुभद्रा एवं अभिमन्यु को पता ही नहीं था कि भीम की कोई हिडिंबा नामक पत्नी एवं घटोत्कच नामक पुत्र भी है. इसी प्रकार अभिमन्यु के अतिरिक्त अर्जुन का पुत्र बभ्रुवाहन भी है, इस का पता कम लोगों को था. विवाहपूर्व संतान हो जाना एक साधारण बात थी--कर्ण भी ऐसी ही संतान था.

एक और प्रमाण के आधार पर ऐसा माना जा सकता है कि कृष्णकाल रामकाल से पहले आता है. कृष्णकाल में राजनीतिक घटनाओं में ब्राह्मणों का स्थान नगण्य है, इस की तुलना में रामकाल में ब्राह्मण अधिक मुखर हैं. राम की सारी राजनीति का संचालन वे ब्राह्मण ही करते हैं.

भारतीय व्यवस्था के इतिहास के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि ब्राह्मणों का प्रभाव धीरेधीरे समाज पर बढ़ता गया. कृष्णकाल तक उन का प्रभाव समाज पर नहीं जम पाया था पर रामकाल तक आतेआते उन्होंने लगभग पूरी व्यवस्था को अपने नियंत्रण में कर लिया था.

वैसे रामकाल की उत्तरवर्तिता इस से भी सिद्ध होती है कि रामकालीन सामाजिक संरचना एवं क्रिया प्रतिमान आधुनिकयुगीन भारतीय प्रतिमान से, कृष्णयुगीन क्रियाप्रतिमान की तुलना में, अधिक मिलतेजुलते हैं.

चमत्कारों में विश्वास

भारतीय मानस चमत्कारों में विश्वास करता है. अतः संभव है कि रामकृष्ण संबंधी घटनाओं का महत्त्व बढ़ाने के लिए उन्हें अति प्राचीनता के सुनहरे आवरण में रख दिया हो और कालांतर में इस ने जनविश्वास का रूप ले लिया हो.

प्रागैतिहासिक घटनाओं के क्रम में उलटफेर होना असंभव नहीं है. ऐसी स्थिति में यह उपकल्पना काफी सशक्त लगती है कि रामकाल कृष्णकाल से उत्तरवर्ती है. वैसे इस बात पर बहुत दृढ़ता भी नहीं दिखलाई जा सकती. क्योंकि यह प्रश्न विज्ञानक्षेत्र के लगभग परिधिस्थ है.

परंपरागत रूप से माना जाता है कि राम एवं कृष्णकाल में दूरी बहुत अधिक थी. राम त्रेता में हुए थे और कृष्ण द्वापर के अंत अर्थात कलियुग के कुछ पहले.

ऐसा लगता है कि दोनों कालों में इतनी दूरी नहीं थी. इस का अनुमान कुछ उभयनिष्ठ पात्रों से लगता है. जांबवंत, राम एवं कृष्ण, दोनों कालों में उपस्थित रहते हैं. इसी प्रकार हनुमानजी अर्जुन के रथ की पताका पर रहते हैं. जो भी हो यह प्रश्न अति ही विवादास्पद है और इस पर निश्चयात्मक रूप से अभी तक कुछ नहीं कहा जा सका है.

विशेषांकों का सेट

सरिता के निम्न विशेषांक सेटों के रूप में उपलब्ध हैं. तीनों का मूल्य केवल 6 रु. (रजिस्टर्ड डाक खर्च सहित).

1. कढ़ाई विशेषांक (दिसंबर द्वितीय, 1974). हर प्रकार की कढ़ाई के तीस से अधिक नमूने.
2. बुनाई परिशिष्टांक (अक्तूबर द्वितीय, 1975). आधुनिक डिजाइनों के नौ नमूने.
3. दीपावली विशेषांक (नवंबर प्रथम, 1975). 250 पृष्ठों का अंक, जिस में 14 कहानियां, 15 लेख और शाश्वत रहने वाली सामग्री है.

आज ही पूरा सेट मंगाइए. 6 रु. का मनीआर्डर निम्न पते पर भेजिए:

सरिता,
रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-55.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भविष्यवेत्ता

ग्रहों के अनुसार दूसरों के भविष्य का लेखाजोखा बताने वाले भविष्य-वेत्ता क्या अपना भविष्य भी देख पाते हैं?

लेख • सुरेश किसलय

भय एक ऐसी आदिम भावना है जिस से मनुष्य चाह कर भी निजात नहीं पा सकता. भय का संबंध भविष्य से जुड़ा है. अनागत का भय सदैव मनुष्य के वर्तमान को प्रभावित करता रहता है. और मनुष्य जीवन भर करता भी क्या है—मात्र भविष्य के आसन्न भय के अमूर्त शत्रु के खिलाफ युद्ध की तैयारी. कल जाने क्या होगा—यह असुरक्षा की भावना उस के आत्मविश्वास की नींव को खोखला करती रहती है.

यही कारण है कि आदिकाल से मनुष्य अपने भविष्य को सुरक्षित बनाने के लिए न जाने क्याक्या उपाय करत

ये ज्योतिषी ग्रहों पर कम ग्राहकों से पैसे ऐंठने पर अधिक ध्यान देते हैं.

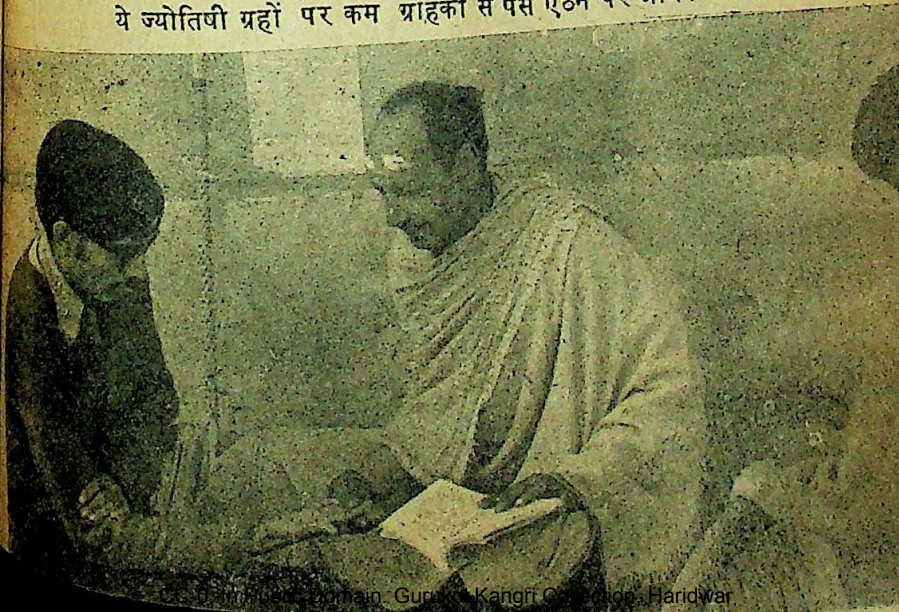

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो कर उस ने काल्पनिक देवता बनाए. दरअसल मनुष्य किसी देवता की नहीं वरन भय की उपासना करता है. भय से पूर्णतया मुक्त हो जाना ही शांति प्राप्त करना है. और शांति तो बड़ेबड़े महात्मा भी प्राप्त नहीं कर पाए. आदिकाल से आज तक अपने भविष्य का नियंता बनने के लिए मनुष्य अध्यात्म से ले कर विज्ञान तक के दरवाजे खटखटाता घूम रहा है.

भविष्य जिज्ञासा

कहने का तात्पर्य है कि मनुष्य आरंभ से ले कर अंत तक अपने भविष्य के बारे में जिज्ञासु बना रहता है. भविष्य के बारे में जानने की चाह उस की एक मनोवैज्ञानिक उत्कंठा है. इसी मनोवैज्ञानिक आवश्यकता को भुनाने के लिए संभवतः कतिपय चतुर लोगों ने एक काल्पनिक गणित गढ़ा और यह दावा करना आरंभ किया कि वे भविष्य बता सकते हैं. भिन्नभिन्न देशों में, भिन्नभिन्न प्रकार के लोगों ने भिन्नभिन्न ढंगों से ज्योतिष का विकास किया. नक्षत्रशास्त्र, सामुद्रिकशास्त्र, गणनाशास्त्र, कुंडलीशास्त्र, हस्तरेखा विज्ञान, इलहाम, दिव्यवाणी, रमल--न जाने कितने रूपों में इस गोरखधंधे की स्थापना हुई.

आशा के अनुरूप यह धंधा तेजी से चमका और इन तथाकथित त्रिकालज्ञों ने बादशाहों से ले कर फकीरों तक सब को जी भर कर छला. आज भी जनता की कमोबेश आस्था ज्योतिष पर बनी हुई है. बड़ेबड़े पढ़ेलिखे वैज्ञानिक और योग्य व्यक्ति भी इस का शिकार बनते देखे जा सकते हैं.

किसी भी गली अथवा बाजार से निकल जाइए आप को किसी न किसी पेड़ के नीचे बैठा हुआ एक आदमी अवश्य दिख जाएगा. उस के आगे एक पंचांग, कुछ एक हाथ के चित्र फैले होंगे. पीछे की तरफ किसी देवीदेवता की रहस्यमयी तसवीर होगी. धूप और लोबान जल रहा होगा. और वह व्यक्ति कुछ लोगों के हाथ पढ़पढ़ कर उन का भविष्य बता रहा होगा. ज्योतिषी मात्र सड़कों पर ही नहीं, बड़ेबड़े भव्य होटलों में भी बैठते हैं.

राजधानी के एक होटल में ऐसा ही एक ज्योतिषी स्थायी रूप से रहता है. संपूर्ण भारत में लाखों ऐसे भविष्यवक्ता हैं जो लोगों का भविष्य बताने का दावा करते हैं. इन में से किसी को डाकिनी सिद्ध है तो कोई काले जादू से मृतात्माओं से बात कर के सब बताता है.

इन ज्योतिषियों का धंधा चलता भी खूब है. लोग छोटी से छोटी परेशानी का इलाज पूछने के लिए इन लोगों की शरण में आते हैं. मकान की नींव रखने, चुनाव लड़ने, शादीब्याह का मुहूर्त निकलवाने से ले कर सट्टे और लाटरी के नंबर तक सभी कुछ पूछने के लिए इन की मदद ली जाती है.

राशि के आधार पर भविष्यवाणी

ये एक किस्म के 'छोटे भगवान, (मिनी गाड) होते हैं. ये आप को बताएंगे कि अमुक लड़की के गण आप से मिलते हैं, अथवा नहीं? आप उस से शादी कर सकते हैं अथवा नहीं? अमुक व्यक्ति को व्यापार में साझीदार बनाया जाना चाहिए अथवा नहीं. यहां तक कि यह आप को बताएंगे कि आप का आपरेशन किस तारीख को होना चाहिए. डाक्टर का कहना गलत हो सकता है लेकिन इन के मुंह से तो स्वयं भगवान बोलता है. कभी भगवान की बात भी कोई गलत हो सकती है!

अगर आप को पुराने ज्योतिष पर आस्था है तो आप को ऐसे ज्योतिषी मिल जाएंगे जो आप की राशि के आधार पर आप के पूरे भविष्य का खाका खींच कर रख देंगे. आप का भविष्य कुछ नक्षत्रों और ग्रहों से नियंत्रित हो रहा है और आप का भाग्य इस बात पर निर्भर करेगा कि आप का शनि या मंगल कौन से गृह में बैठा है. आप की अपनी पत्नी में लड़ाई मात्र इस कारण होती है क्योंकि आप का मंगल सूर्य की सातवीं राशि में बैठा है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवन में कई खुशियों के पल होते हैं

सरदर्द को आपकी खुशियां बिगाड़ने न दीजिये

२ ऐस्प्रो लीजिये

ASPRO
Nicholas

माइक्रोफाइन्ड ऐस्प्रो दर्द को जल्दी खींच निकालता है

A.G.62.HN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब
आधी क़ीमत में जगमग सफ़ेदी
स्वस्तिक
डिटर्जेण्ट धुलाई का पाउडर

जब भी 'स्वस्तिक' खरीदें, ६ रु. बचायें

ऑप्टिकल व्हाइटनर युक्त नया स्वस्तिक डिटर्जेण्ट धुलाई का पाउडर आपके कपड़ों को जगमग साफ़-सफ़ेद धोता है. महँगे उत्तम डिटर्जेण्ट धुलाई के पाउडरों की तरह 'स्प्रे-ड्राइड' होने के कारण यह पानी में बहुत जल्दी घुल जाता है. और धुलाई के बाद कपड़े जगमगाने, चमचमाने लगते हैं. इससे हर प्रकार के वस्त्र धोये जा सकते हैं, और फिर भी हर १ कि.ग्रा. पैक पर ६ रु. की बचत! यह १ कि.ग्रा. और ½ कि.ग्रा. के पॉलिपैक में मिलता है.

कम से कम दाम... ज़्यादा से ज़्यादा काम

1000 ग्राम का अधिकतम विक्रय मूल्य रु. 7.16 (स्थानीय कर अतिरिक्त)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आप किसी लड़की से इसलिए प्रेम नहीं करते कि वह बहुत सुंदर है, बल्कि इसलिए कि बुद्ध ग्रह वृश्चिक राशि के साथ आ मिला है. अगर आप बहुत दिनों तक किसी ज्योतिषी से मिलते रहेंगे तो आप को लगेगा कि चीजें आप के हाथ से निकल चुकी हैं और अब आप मात्र सितारों के चक्र पर निर्भर हैं.

ज्योतिष के अंधड़ की लपेट में आने से हमारे रविवारीय अखबार और पत्रिकाएं भी नहीं बच सकी हैं. जो लोग आर्थिक दृष्टि से कमजोर हैं और इन भविष्यवक्ताओं को पैसा दे पाने की स्थिति में नहीं हैं, वे अखबारों और पत्रिकाओं में अपना भविष्य पढ़ कर काम चला लेते हैं. यह बड़े दुख की बात है कि इस प्रकार के अंधविश्वासों को फैलाने में, मात्र सर्कुलेशन बढ़ाने की गरज से, बड़ीबड़ी जिम्मेदार पत्रिकाएं भी योगदान दे रही हैं. इन में प्रेम, व्यापार और समाज संबंधी भविष्यवाणियां होती हैं. महिलाओं की पत्रिकाओं में प्रेमियों से मिलने का और प्रेम के इकरार का उचित दिन और समय दिया होता है.

एक तमिल भाषा का दैनिक प्रथम पृष्ठ पर भविष्य से संबंधित पंक्तियां छापता था. एक बड़ा पाठक वर्ग इसे सब से पहले पढ़ने की आदत का शिकार हो गया था. भविष्य पढ़ने की यह लत शराब की लत में भी किन्हीं मायनों में बुरी है. उस में भविष्य वाणियां इस ढंग से आती थीं :

मेष : सुखद पत्र समाचार, वृषः अनपेक्षित धन की प्राप्ति, मिथुन : शुभ दिन, कर्क : अनपेक्षित व्यय, सिंह : लाभदायक दिन, कन्या : घरेलू प्रसन्नता, तुला : आर्थिक लाभ, वृश्चिक : लाभदायक सौदा, धेनु : नए व्यवसाय में सफलता, कुंभ : दुश्मनों से अनिष्ट, मीन : खराब स्वास्थ्य.

उपरोक्त सभी भविष्यवाणियां बिना किसी भी गलत होने के भय से एकदूसरी राशि के साथ परिवर्तित की जा सकती हैं. संभवतः ज्योतिषी रोज इन्हें उलटपलट

गुस्सा हो कर मायके चली जाने की धमकियां तो पुरानी हो गईं. मैं आज ही अपनी माताजी को पत्र लिखती हूं कि वह परिवार सहित आ जाएं."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर देता रहता था. अगर किसी के साथ भविष्यवाणी घट जाए तो ज्योतिषी का नाम हो गया. उदाहरण के लिए किसी मीन राशि वाले के यदि जरा सी खरोंच भी गल जाए तो वह कहेगा कि अखबार की बात ठीक थी, क्योंकि उस में खराब स्वास्थ्य की भविष्यवाणी की गई थी.

अगर मेष राशि वाले को कोई सुखद समाचार नहीं मिलता तो वह यह सोच कर अपने मन को बहला लेगा कि रविवार को तो डाक आती ही नहीं है. वह ज्योतिषी को इस बात के लिए कभी बुरा-भला नहीं कहेगा कि उस ने रविवार के दिन भी पत्र आने वाली बात कैसे लिख दी.

एक आम पाठक तो इन सब बातों को यों ही पचा जाता है, लेकिन अगर जरा सा भी गौर से सोचा जाए तो इन भविष्यवाणियों की कलई खुल जाती है. एक राशि के करोड़ों लोग होते हैं, उन सब का भविष्य कैसे एक सा हो सकता है?

भविष्यवाणी में संभावना

ज्यादातर भविष्यवाणी की भाषा ऐसी होती है जो अपने में संभावनाओं को छिपाए होती है. मान लीजिए, भविष्यवाणी में मीन राशि के लिए यह लिखा है, "संभल कर चलिए यह सप्ताह आप के दुश्मनों के लिए लाभदायक हो सकता है. संभल कर चलने पर आप को शत्रुओं पर विजय मिलेगी और वह आप का कुछ नहीं बिगाड़ पाएंगे." इस कथन में कौन सी भविष्यवाणी है यह तो भविष्यवक्ता ही जाने, लेकिन यह बात सब जानते हैं कि दुश्मन को देख कर हर आदमी संभल जाता है.

यह भविष्यवाणी कर्क राशि वालों के लिए भी ठीक बैठेगी और अन्य किसी राशि के लिए भी.

एक उदाहरण और लीजिए. कलकत्ता के एक साप्ताहिक ने कुंभ राशि वालों के लिए भविष्यवाणी की : "आप पर काफी परेशानियां आएंगी पर आप उन्हें सुलझा लेंगे. आप के पीछे लाभदायक शक्तियां भी काम कर रही हैं. अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखिए. क्या आप बहुत तेज गाड़ी चलाते हैं? यदि हां, तो मत चलाइए."

इन भविष्यवाणियों में मुसीबत दर्शा कर सुख का संकेत होता है. यदि लगातार दुख की बात हो तो लोग इन पत्रिकाओं को पढ़ना ही छोड़ दें. यह भी एक व्यापारिक कुशलता का गुण है, जिसे भविष्य के ये कुशल व्यापारी भलीभांति जानते हैं.

भवितव्य का गुलाम

भविष्यवाणी मनुष्य को भवितव्य का गुलाम बनाती है. मनुष्य यह मान कर चलना शुरू कर देता है कि उस की सभी गतिविधियां पूर्वनियोजित हैं. इसलिए वह कर्म से विरक्त हो कर भाग्य के हाथों की निर्जीव कठपुतली बन जाता है. अकर्मण्यता उसे पंगु बना देती है और वह आत्मनिर्णय के स्थान पर पचांग और होरोस्कोप की बात को अधिक प्रमाणिक मानने लगता है. चमत्कार और अंधविश्वास जैसे उस के जीवन के स्थायी मूल्य बन जाते हैं. बहुत सारे लोग तो इन लोगों की बातों में आ कर अपनी संतान तक को किसी भैरव या देवी की भेंट चढ़ाने में भी नहीं हिचकते. ये लोग उन्हें विश्वास दिलाते हैं कि ऐसा करने से उन्हें अणिमा, गरिमा आदि सिद्धियां प्राप्त होंगी.

हठ योग, नाथ पंथ, वज्रयान, गोरखपंथ, तंत्र साधना, रत्न विज्ञान और न जाने कितनी ही साधनाएं हैं जो भूत और भविष्य को जानने के लिए की जाती हैं. इन साधनाओं को करने के बाद ये लोग आम जनता के बीच आ उन्हें चमत्कृत कर, स्वयं पर उन का विश्वास बैठाते हैं. तदुपरांत उन्हें मनमाने ढंग से बेवकूफ बनाते हैं.

कितने ही अघोरी और सिद्ध श्मशान में रात भर शव साधना करते हैं और न जाने कितने ही चिमटा गाड़ कर धूनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समाते हैं कुछ लोग भविष्य दिखा देते हैं तो कुछ लोग प्लेन चिट पर भूतों से बात पूछ कर बताते हैं. सब का एक ही लक्ष्य होता है--जनता को चमत्कृत कर उसे ठगना.

ज्योतिषशास्त्र संभावनाओं एवं तुक्कों के मेरुदंड पर टिका हुआ है. ज्योतिषियों की भविष्यवाणी का आधार अकसर जन्म का समय होता है. जन्म के समय के अनुसार वह ग्रहों की स्थिति जान कर कुंडली बनाते हैं फिर तदनुसार भविष्यवाणी करते हैं.

यदि किसी कारण उन की संभावना-मूलक भविष्यवाणी गलत हो जाती है तो वह हमें ज्योतिष का दोष न मान कर भविष्य पूछने वाले का दोष मानते हैं. वे कहते हैं कि आप को संभवतः अपने जन्म का एकदम ठीक समय नहीं मालूम अथवा जिस अस्पताल में आप का जन्म हुआ होगा उन की घड़ी ठीक नहीं रही होगी, यानी अट भी मेरी चट भी मेरी, अंटा मेरे बाबा का.

यहां एक बात और भी बता देना रुचिकर रहेगा. होता यह है कि एक आदमी एक ही भविष्यवेत्ता को कुंडली न दिखा कर कई भविष्यवेत्ताओं को दिखाता है. सब अपनेअपने तरीके से भविष्य के कोलाबे जोड़ कर उसे बताते हैं. किसी न किसी भविष्यवेत्ता का तो तुक्का ठीक बैठेगा ही. जिस किसी का भी तुक्का ठीक बैठ जाता है उस पर भविष्य पूछने वाले का दृढ़ विश्वास जम जाता है और वह हमेशाहमेशा के लिए उस का मुरीद हो कर उस की स्थायी गिरफ्त में आ जाता है.

ज्योतिषियों का प्रयोग कूटनीतिक अर्थों की सिद्धि के लिए भी किया जाता रहा है. यह एक ऐसा अध्याय है, जो यद्यपि करोड़ों वर्षों से हमारे सामने हैं, फिर भी हम उस से अपनी आंखें मूंदे रहे हैं. कोई भी पौराणिक अथवा ऐतिहासिक उपाख्यान उठा कर देख लीजिए तो आप को ज्ञात होगा कि उस के फिसाद के मूल में कोई न कोई भविष्यवाणी कारण

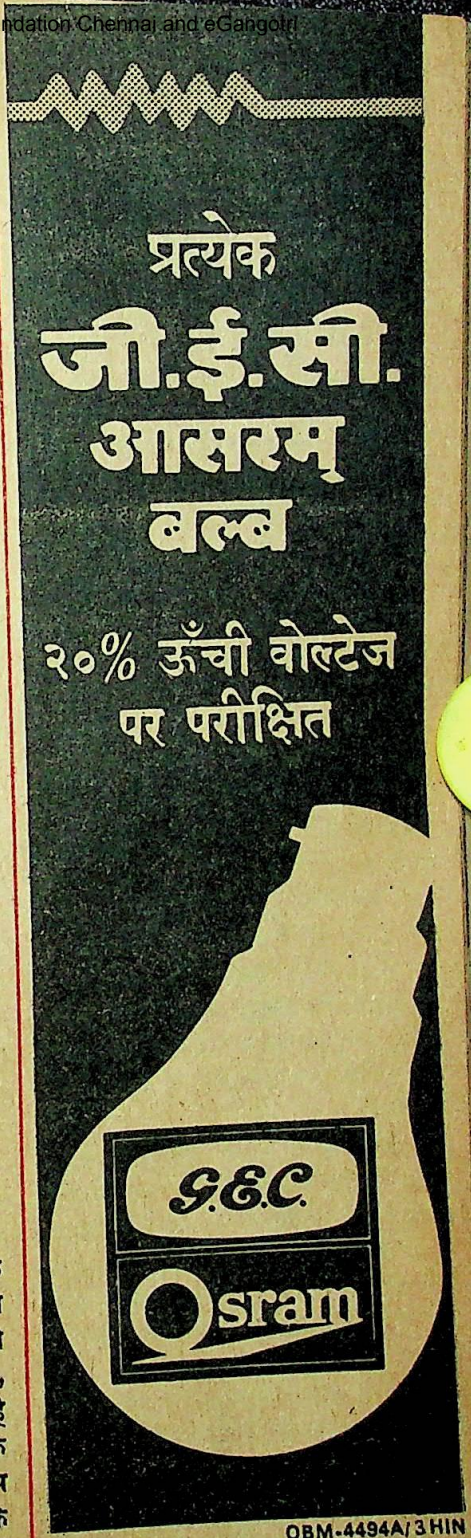

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उदाहरण के लिए कंस और कृष्ण का युद्ध लिया जा सकता है. यदि कंस को इस भविष्यवाणी द्वारा कि उस की बहन देवकी का आठवां पुत्र उस का हत्यारा होगा डरा कर आक्रांत नहीं किया गया होता तो वह भला इतने शिशुओं की हत्या क्यों करवाता? किसलिए वह अपने बहनबहनोई को कारावास में रख कर भीषण यातनाएं देता?

भविष्यवाणी से असामान्य व्यवहार

किसी व्यक्ति को आप यह कहें कि अमुक व्यक्ति उस की हत्या करेगा और साथ ही साथ उस से अपेक्षा करें कि वह हाथ पर हाथ धरे अपनी मृत्यु की प्रतीक्षा करता रहे—यह संभव नहीं. यह बात दावे से कही जा सकती है कि उस का व्यवहार असामान्य हो जाएगा. यही कंस के साथ हुआ, जो बाद में कृष्णकंस के युद्ध का कारण बना. कुल मिला कर इस झगड़े की मूल कूटनीतिक वजह भविष्य ही कही जाएगी. न भविष्यवाणी की जाती और न कृष्ण और कंस का युद्ध होता.

इस प्रकार यदि किन्हीं दो अच्छेखासे भले लोगों के बीच झगड़ा कराना हो तो उन में से किसी एक की कुंडली देख कर उसे दूसरे से खतरा बता दीजिए. फिर देखिए ज्योतिष का चमत्कार. कोई कारण नहीं कि दो प्रगाढ़ मित्रों में आपस में न ठन जाए.

ज्योतिष का किसी अच्छेखासे कर्मठ पुरुष को अकर्मण्य बनाने के लिए भी एक शक्तिशाली औजार के रूप में प्रयोग किया जा सकता है. आप उसे लगातार यह बताते रहिए कि कुछ दिनों बाद अचानक ही उस को कुछ चीजें उपलब्ध होने वाली हैं. इस से होगा यह कि वह कर्म के प्रति विमुख हो जाएगा और हाथ पर हाथ धरे भविष्यवाणी के सही होने की प्रतीक्षा करने लगेगा.

ठीक इसी प्रकार किसी को किसी भावी अनिष्ट के बारे में पूर्वज्ञान करा दीजिए, तब वह उस की रहीसही ऊर्जा एवं शक्ति भी समाप्त हो जाएगी और वह हताश हो कर माथे पर हाथ धर कर बैठ जाएगा.

भारत में अद्यतन पुरोहित और तथाकथित ऋषियों का बोलबाला रहा है. यही कारण है कि जनता अंधविश्वासों की दलदल में सदियों से धंसी रही है. कर्म की जगह त्याग और भाग्य को प्रधान मानने वाली भारतीय जनता आज अगर विश्व की वैज्ञानिक प्रगति के सामांतर कदम से कदम मिला कर नहीं चल पाती तो इस में जनता का दोष न हो कर उन लोगों का ही दोष है जिन्होंने इन्हें भवितव्य और भाग्यवाद का लंगड़ा दर्शन दे कर अकर्मण्य बना दिया है.

ऐसे लोगों ने जनता में अंधविश्वास और दब्बूपन की भावना फैला कर उन के वैज्ञानिक चिंतन और सामाजिक एवं आर्थिक विकास को रोक दिया है. भाग्य की टूटी बैसाखी को बगल में दबाए, दुर्दैव से भयाक्रांत एक अपढ़ और भोलाभाला मनुष्य कौन सी मंजिल पर पहुंच पाएगा? उस के किसी गंतव्य पर पहुंचने की परिकल्पना भी बेवकूफी होगी.

ज्योतिष में विश्वास क्यों?

आज भी आप किसी पढ़ेलिखे आदमी से पूछें कि क्या आप ज्योतिष पर विश्वास करते हैं, तो उस का जवाब होगा, 'हां, थोड़ाबहुत, इतने सालों से चला आ रहा ज्योतिष एकदम गलत नहीं हो सकता.'

दरअसल इस में उन का दोष न हो कर उन्हें विरासत में प्राप्त संस्कारों का दोष है. उन के मातापिता इस में विश्वास करते थे इसलिए वह भी. दरअसल ज्योतिष झूठ एक ऐसा है जो बारबार और भारी मात्रा में बोले जाने के कारण सत्य न होते हुए भी सत्याभास देता है. आज जरूरत इस बात की है कि इन भविष्यवक्ताओं और त्रिकालज्ञों की कलई खोल कर रख दी जाए और जनता को नए सिरे से इस के खिलाफ शिक्षित किया जाए.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठकों की समस्याएं

मैं 18 वर्षीय प्री मेडिकल की छात्रा हूं. डेढ़ वर्ष से एक विवाहित आदमी के प्रेमपाश में फंसी हूं, इसी लिए परीक्षा में फेल भी हो गई. घर वाले मुझ से नाराज रहते हैं व तानाकशी करते हैं तो और भी ध्यान उधर जाता है. कोशिश करती हूं भूलने की, पर भूल नहीं पाती. अकेलापन अनुभव करती हूं. क्या करूं?

● आप की समस्या परिवार से कटने व अकेलेपन से पैदा हुई है और ऐसे में ऊंचनीच का ध्यान किए बिना आप ने गलत मित्रता चुन ली. अब आप का हित इसी में है कि अपने भविष्य का ध्यान कर जल्दी से जल्दी उस से संबंध तोड़ लें और उस से मिलने की भी कोशिश न करें. आप के सामने मेडिकल कैरियर का लंबा अध्ययन पड़ा है, जो समय के साथ पूरा ध्यान और श्रम भी मांगता है. प्रारंभ में ही इस तरह भटक गईं तो कभी डाक्टर नहीं बन पाएंगी.

अकेलेपन की समस्या के दो ही उपाय हैं, एक तो परिवार में रुचि लीजिए, बड़ों को सम्मान व छोटों को प्यार दीजिए तथा घर के भाईबहनों के छोटेमोटे कामों में हाथ बंटा कर परिवार को अपना सहयोग दीजिए. निश्चय ही परिवार से भी आप को सम्मान, प्यार व सुरक्षा मिलेगी. दूसरे, अच्छे मित्र बनाइए. लड़केलड़कियां दोनों, और जब तक डाक्टर न बन जाएं किसी भी मित्रता को मित्रता तक ही सीमित रखिए. प्रेम व विवाह के लिए आगे बहुत समय पड़ा है.

✦

मैं बीस वर्षीय युवक हूं. मेरा दाहिना स्तन बढ़ गया है व उस में गांठें हैं जिन्हें दबाने पर दर्द होता है. शर्म लगती है, क्या करना चाहिए?

● किशोरावस्था से तरुणावस्था में आ कर अकसर शरीर की असमान वृद्धि हो जाती है. पूर्ण यौवन को प्राप्त होने पर यह असंतुलन अपने आप ठीक हो जाएगा, इसलिए चिंता छोड़ सहज होने का प्रयत्न करिए. ढीले व कुछ मोटे वस्त्र पहन कर तब तक इस कमी को छिपाया जा सकता है पर ठीक होने के लिए इस ओर से ध्यान हटाना बहुत आवश्यक है, अन्यथा इस ओर निरंतर चिंतन इस वृद्धि में सहायक हो सकता है. इस की उपेक्षा कीजिए. व्यस्त, सहज व प्रसन्न रहिए. आप शीघ्र ही ठीक हो जाएंगे.

मेरी उमर 17 साल है. नवविवाहिता हूं. उच्च प्रतिष्ठित घराने से संबंध रखती हूं. पति अभी शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं इसलिए प्रेम विवाह होने पर भी परस्पर समझौते से हम ने अभी यौन संबंध स्थापित नहीं किए. पर हुआ यह कि उन के बाहर जाते ही मैं बेचैन हो जाती हूं. सीने में आग सी लग जाती है. लगता है पति के पास दौड़ कर पहुंच जाऊं? क्या करना चाहिए?

● यौन संबंधों का पति की शिक्षा पर कोई दुष्प्रभाव नहीं पड़ना चाहिए. आप की बेचैनी आप के पति की पढ़ाई में भी बाधा डाल सकती है. पर इस का उपाय यही है कि आप लोग थोड़ेथोड़े समय बाद मिलते रहें और संतति निरोध के उपाय अपना कर परस्पर यौन संबंध बनाएं, ताकि बच्चा अभी न हो. समीप के परिवार नियोजन केंद्र पर जा कर निरोध के उपाय आप जान सकते हैं.

✦

मेरे चेहरे पर कई जगह मुंहासों के काले निशान हैं और बड़े रोम छिद्र भी हैं. इस से चेहरा भद्दा लगता है. उपाय बताइए. हिप भी भारी व बेडौल हैं. रंग भी सांवला है. क्या करना चाहिए?

● आप दिल्ली में रहती हैं. खर्च कर सकें तो किसी ब्यूटी क्लीनिक में जा कर अपना इलाज करवाइए, नहीं तो मुंहासों के काले दागों पर चिरौंजी घिस कर उस का लेप लगाइए. या दूध में नीबू का रस मिला कर लगाइए व कुछ समय बाद धो डालिए. इस से रंग भी निखरेगा. रोम छिद्रों के लिए पहले गरम पानी की भाप दे कर उन की सफाई करिए, फिर बर्फ का टुकड़ा मलने से छिद्र बंद हो जाएंगे. पर बर्फ का प्रयोग गरमी में ही करना चाहिए. सर्दी में छिद्र बंद करने के लिए एस्ट्रिंजेंट लगाइए. रूपरंग सुधारने के लिए खानपान सुधारिए व हिप के लिए विशेष व्यायाम करें.

✦

मैं 25 वर्षीया अविवाहिता युवती हूं. मुझे शुरू से ही बच्चों से अधिक प्यार रहा है, इसी लिए मूर्खतावश मैं दूसरों के छोटे बच्चों को चुपकेचुपके अपने स्तन चुसाती रही, इस से स्तन ढीले व निपल मोटे हो गए हैं और मैं परेशान हो गई हूं. मुझे क्या करना चाहिए?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

● कुछ दिन बस व्यंजन, तरकारी पहलिए. समय नहीं एकाध (55-60 की आयु में) तब और व्यायाम करिए व इधर से ध्यान हटा कर सहज व प्रसन्न रहिए और संभव हो तो शीघ्र ही विवाह कर लीजिए. आप की मातृत्व की भूख शांत हो जाएगी.

✦

शादी हुए चार वर्ष हुए. शुरू में हम पति-पत्नी देर बाद मिलते थे, तो मैं पत्नी को पूर्णतया संतुष्ट कर पाता था. अब नौकरी के बाद पत्नी को साथ ले आया हूं और स्वतंत्रता पा कर हम रात में, दिन में ज्यादा संभोग करने लगे. अब मैं शिथिल होने लगा हूं और पत्नी को पहले की तरह संतुष्ट नहीं कर पाता. इस समस्या का समाधान कीजिए.

● अति किसी भी चीज की ठीक नहीं होती. फिर भी यह शिथिलता अति संभोग के कारण नहीं, मानसिक ही होगी. आप किसी अच्छे डाक्टर से अपनी समस्या बताइए. वह आप को ट्रैंक्वलाइजर देगा जिस से आप को शिथिलता का अनुभव न होगा.

✦

मैं 18 वर्षीय छात्र हूं. कालिज में दो साल तक पढ़ चुका हूं. अपनी एक बचपन से चली आ रही आदत से दुखी हूं. रात को नींद में अकसर पेशाब निकल जाती है, जब कि कर के सोता हूं. सुबह उठ कर शर्मिंदगी के अलावा अपने कपड़े, बिस्तर धोने पड़ते हैं. क्या उपाय है इस का?

● आप अपनी जांच कराइए. पेशाब निकल जाने के कई कारण हो सकते हैं, पेट में कीड़े होना, मूत्रनली में कोई खराबी या मनोग्रंथि. डाक्टरी जांच में जो खराबी होगी उस का इलाज हो सकता है. आप दिन में पेशाब आने पर उसे काफी देर तक रोके रखने की आदत डालिए. सोते समय भारी गरिष्ठ खाना या गरम पेय लेना बंद कर दीजिए. भोजन सोने से दो घंटे पूर्व करें. सर्दी में दिन में गुड़ में काले तिल मिला कर कुछ दिन लगातार लेने से भी लाभ हो सकता है.

✦

मेरी आयु 19 वर्ष है. मैं मासिक धर्म से तंग आ चुकी हूं. इसे बंद करने के लिए कोई इंजेक्शन, दवा आदि बताइए.

● आप की नादानी पर हंसी भी आती है, खेद भी होता है कि हमारे देश की लड़कियां अपने शरीर तक से अनभिज्ञ हैं. मासिक धर्म न बंद हो सकता है, न करने का कोई प्रयत्न करना चाहिए. एक स्त्री के जीवन में यह स्वस्थता का चिह्न है कि उसे नियमित रूप से मासिक धर्म होता रहे और यह इस बात का प्राकृतिक प्रमाण है कि नारी मां बन सकती है. जब वह मां बनने प्रकृति अपनेआप यह कार्य बंद कर देती है. आप अपनी मां, भाभी किसी समझदार सहेली या लेडी डाक्टर से इसे ठीक तरह संभालने की सलाह लीजिए, बंद करने की बात सोचना मूर्खता है.

✦

मैं व एक सजातीय युवक बारहतेरह वर्ष की आयु से ही एकदूसरे के संपर्क में रहे हैं. दोनों परिवारों में भी मधुर संबंध है और वह मेरे बड़े भाई का मित्र भी है. अभी तक हमारे बीच कोई अनुचित संबंध नहीं रहा, न उस युवक ने कोई ऐसी चेष्टा की है. अब उस ने मुझ से विवाह का प्रस्ताव किया है और बड़ों से भी मेरी अनुमति चाही है. मैं भी उसे पसंद करती हूं पर समझ में नहीं आता क्या करूं? कहीं सामाजिक दृष्टि से इस विवाह को गलत तो नहीं समझा जाएगा?

● आप का प्रेमी युवक काफी समझदार मालूम होता है. दोनों परिवारों के बीच निकट का रिश्ता नहीं, मित्रता के मधुर संबंध हैं तो स्थिति विवाह के लिए हर तरह से अनुकूल है. आप अपनी स्वीकृति निस्संकोच दे दें.

✦

पांच महीने पूर्व मेरी सगाई हुई थी. उस के बाद मैं अचानक मोटी होती गई. मंगेतर चाहता है कि शादी के पूर्व अपना फिगर ठीक कर लूं. शादी में दो महीने रह गए हैं, शीघ्र पतले होने का उपाय बताइए.

● लगता है, सगाई की खुशी और निरंतर विवाह चिंतन से होने वाले भीतरी रासायनिक हारमोनल परिवर्तनों से आप में एकाएक यह परिवर्तन आया है. आप को अपनी खुराक व भावनाओं पर नियंत्रण रखना चाहिए था. अब पतला होना धीरेधीरे व्यायाम व डाइटिंग पर निर्भर करेगा.

शीघ्र प्रभाव के लिए आप नगर के किसी ब्यूटी क्लीनिक में जा कर यांत्रिक व्यायाम लें व 'ब्यूटीशियन' की राय से साथ में डाइटिंग भी करें. सुबह गरम पानी में एक नीबू का रस लें. नाश्ते में एक उबला अंडा, एक स्लाइस, साथ में चाय या सपरेटा दूध.

आप हर रोज लंच, डिनर में पहले प्लेट भर कच्ची सब्जियों का सलाद खाइए. फिर रोटी, दाल, सब्जी, घी, मक्खन, मलाई, तली चीजें बंद कर दें. केवल दालसब्जी में ही थोड़ा घी डालें या संभव हो तो छौंकी हुई दाल के साथ बिना घी की उबली सब्जी ही लें. यह क्रम व्यायाम के साथ निरंतर चलाइए, विवाह के बाद भी. तभी अंतर पड़ेगा.

—कंचन ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पलकें झुका लो...

...की जब सोलहों श्रृंगार तक पहुंची,
...बरसात से गली के पार तक पहुंची.
...ने मकाना उम्र का, कुछ बेहद अंगूरी,
...प्रकाश की तपे अंगार तक पहुंची.
...पांवों की महावर हाथ की मेहंदी,
...से चल कर नजर इकरार तक पहुंची.
...बिखरी हुई मासूम चेहरे पर,
...गुलाबों से चली कचनार तक पहुंची.
...कर जाने कहां तक और जाएगी?
...समुंदर की लहर इक ज्वार तक पहुंची.
...ऋतु का उत हवाओं की चुहलबाजी,
...हुई बदली मूसलाधार तक पहुंची.
...झुका लो या गिरा लो आंख तक घूंघट,
...काजल से बनी तलवार तक पहुंची.

—चंद्रभान भारद्वाज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और व्यायाम करिए व इधर
सहज व प्रसन्न रहिए औ
ही विवाह कर ली
भूख शांत हो जाए

शादी
पत्नी देर
तथा संत
पत्नी

दो लड़कों पर

इतनी अधिक क्यों?

लेख • दिनेश सेठी

मेरा एक मित्र है. उस की शादी हुए करीब तीन वर्ष हो चुके हैं. एक अच्छी फर्म में दूसरे शहर में नौकरी करता है. बड़ा ही मिलनसार है, जब भी यहां आता है, हर एक से मिलता है. किंतु उसे सिर्फ एक ही परेशानी है कि वह जब भी अपनी ससुराल वालों से मिलने जाता है और उस के पिता को इस बात का पता चल जाता है तो वह उसे बहुत झिड़कते हैं.

उस के पिता की वजह से ही उस की श्रीमतीजी भी अपने पीहर यदाकदा ही जा पाती हैं. लड़के की हमेशा इच्छा रहती है कि जब शादी कर के उन से रिश्ता कायम किया है तो उसे कायम ही रखा जाए, किंतु अपने पिता के आगे वह लाचार है.

उस के पिता को शादी में थोड़े से लेनदेन में कमी होने की वजह से लड़की वालों से घृणा हो गई है जब कि लड़के ने आज तक कभी इस बात पर ध्यान ही नहीं दिया.

लड़का जब भी बाहर रहता है तो पत्रव्यवहार अवश्य रखता है. ससुराल भी बराबर पत्र भेजता है, किंतु पिछले दिनों जरा सी बात का बतंगड़ बन गया.

लड़के ने हमेशा की तरह दीपावली की छुट्टियों में आने का एक पत्र अपने पिता को एवं एक पत्र अपनी ससुराल भेजा. न जाने डाक की गड़बड़ी से पिता को पत्र क्यों नही मिला. खैर, ससुराल में पत्र सही समय पर पहुंच गया. वे उसी के अनुसार लड़के के घर गए और उन के पिता से लड़के के बारे में पूछा.

उन के पिता ने जवाब दिया कि हमें तो मालूम नहीं कि आज आएगा. हमारे पास तो उस की कोई चिट्ठी नहीं आई है. लड़की वालों ने उस की चिट्ठी के बारे में बता कर कहा कि साहब उन्हें सुबह वाली मेल से आ जाना चाहिए. खैर, कल हम पता करेंगे. कह कर वह तो चले गए.

उधर लड़के को भीड़ की वजह से रात वाली गाड़ी में जगह नहीं मिल सकी. उस ने सोचा कि पत्नी भी साथ है अतः रात को ऐसी भीड़ में सफर करना ठीक नहीं होगा, सुबह वाली गाड़ी में बैठ कर चला जाए.

आते ही उस ने देखा कि पिता का मुंह फूला हुआ है. उन्होंने उस से बात भी नहीं की. लड़के ने सोचा कि आज दिन में कोई बात हो गई होगी, इस वजह से पिताजी का मूड ठीक नहीं है. अतः कल बात करेंगे.

किंतु दूसरे दिन भी वही हाल. लड़के ने तब इस का कारण जानना चाहा तो एकदम बिफर गए, "हम तेरे कौन होते हैं. तेरे तो अब ससुराल वाले ही सब कुछ हैं. उन्हें तो यहां आने का लिख देता है. हमें लिखने की जरूरत ही क्या है."

लड़के को जब वास्तविकता ज्ञात हुई तो कहने लगा कि मैं ने तो दो पत्र लिखे थे, यदि आप को नहीं मिला तो मैं क्या कर सकता हूं.

लड़के के पिता पर इस सफाई का कोई प्रभाव नहीं हुआ. वह खिंचे खिंचे रहने लगे. यहां आ कर पिताजी का मूड देख कर लड़के ने भी अपनी ससुराल वालों से मिलने जाना ठीक नहीं समझा.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

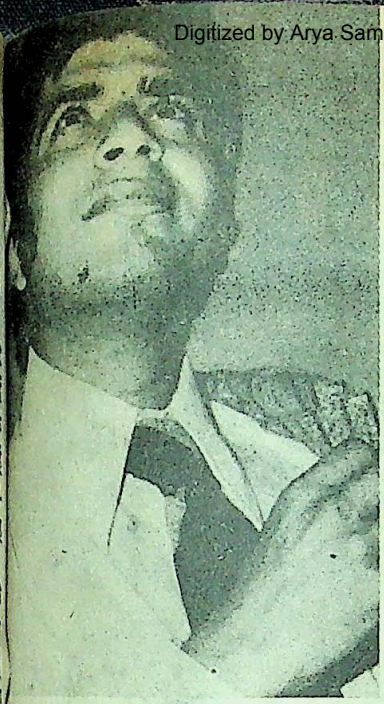

छुट्टियां समाप्त होते ही वह सीधा वापस चला गया.

उधर लड़के की ससुराल वालों ने देखा कि दामाद यहां आ कर दीपावली जैसे त्योहार पर भी मिलने नहीं आया तो उसे पत्र लिखना बंद कर दिया.

दो पाटों के बीच

अब हाल यह है कि न तो लड़के को ससुराल वाले ही पूछते हैं और न ही उन के घर वाले उन का ध्यान देते हैं. इस तरह बेचारा सीधासादा व्यक्ति दो पाटों के बीच पिस रहा है. उस का परिवार होते हुए भी वह ऐसा रहता है कि मानो निराश्रित हो.

अब एक अन्य उदाहरण लीजिए. मेरे स्वयं के जीजाजी काफी मिलनसार हैं. उन्हें अपने घर वालों से कभी कोई शिकायत नहीं हुई. ससुराल आनाजाना बराबर बना रहता है. हमें भी खुशी है कि इतने अच्छे व्यक्ति से जीजी का संबंध हुआ है. वह जब भी यहां आते हैं सभी जानपहचान वालों से मिलते हैं. बस यही बात मेरी अम्मा को खटकती है. वह उन्हें कहती [illegible] जब आप हमारे यहां आए हो तो कहीं और जाने की आप को क्या जरूरत है. हमारे यहां ही रहो. यह तो ऐसे ही हुआ जैसे किसी को बांध कर रख दिया जाए.

जीजाजी को यह पसंद नहीं है. वह कहते हैं कि घर पर भी मैं बैठाबैठा क्या करूं. यदि आप के रिश्तेदारों से भी मिलने चला जाता हूं तो आप को क्या परेशानी है.

किंतु नहीं, मेरी अम्मा की दलील यह है कि उन लोगों के जंवाई भी तो हमारे यहां हम से मिलने नहीं आते. फिर आप को ही क्या गरज है कि आप उन से मिलने जाओ. पहले हम हैं, पीछे हमारा परिवार. जब हम ही उन से ज्यादा बातचीत नहीं करते तो आप को भी वैसा ही करना चाहिए.

अब आप ही बताइए कि यह कौन सी दलील हुई. जब एक बार रिश्ता हो गया है और कोई व्यक्ति सभी से मिलने-जुलने लगता है, तो एकाएक उन से संबंध तोड़ना बड़ा मुश्किल हो जाता है.

होना यह चाहिए कि न तो लड़के के मांबाप को और न ही लड़की के मांबाप को लड़के या लड़की पर कहीं आनेजाने की रोक लगानी चाहिए.

प्रत्येक पति या पत्नी अपने दायित्व को अच्छी तरह समझते हैं. ऐसा नहीं हो सकता कि पत्नी अपने पीहर में जा कर बैठ जाए. मिलने वह अवश्य जाना चाहेगी और इस पर किसी तरह की पाबंदी भी नहीं होनी चाहिए.

इसी तरह लड़के को भी अपनी ससुराल में सब से मिलने की आज्ञा हो एवं ससुराल वालों के घर पर आने पर, पिता को उन के स्वागत की भी व्यवस्था करनी चाहिए. ऐसा न हो कि उन की तरफ ध्यान ही नहीं दिया जाए और उन के सम्मान को ठेस पहुंचे.

अतः घर वालों को चाहिए कि वे इस हकीकत को समझ कर अपने लड़के के प्रति कोई गलतफहमी दिमाग में न आने दें और न ही ताने मारें. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैक्सी

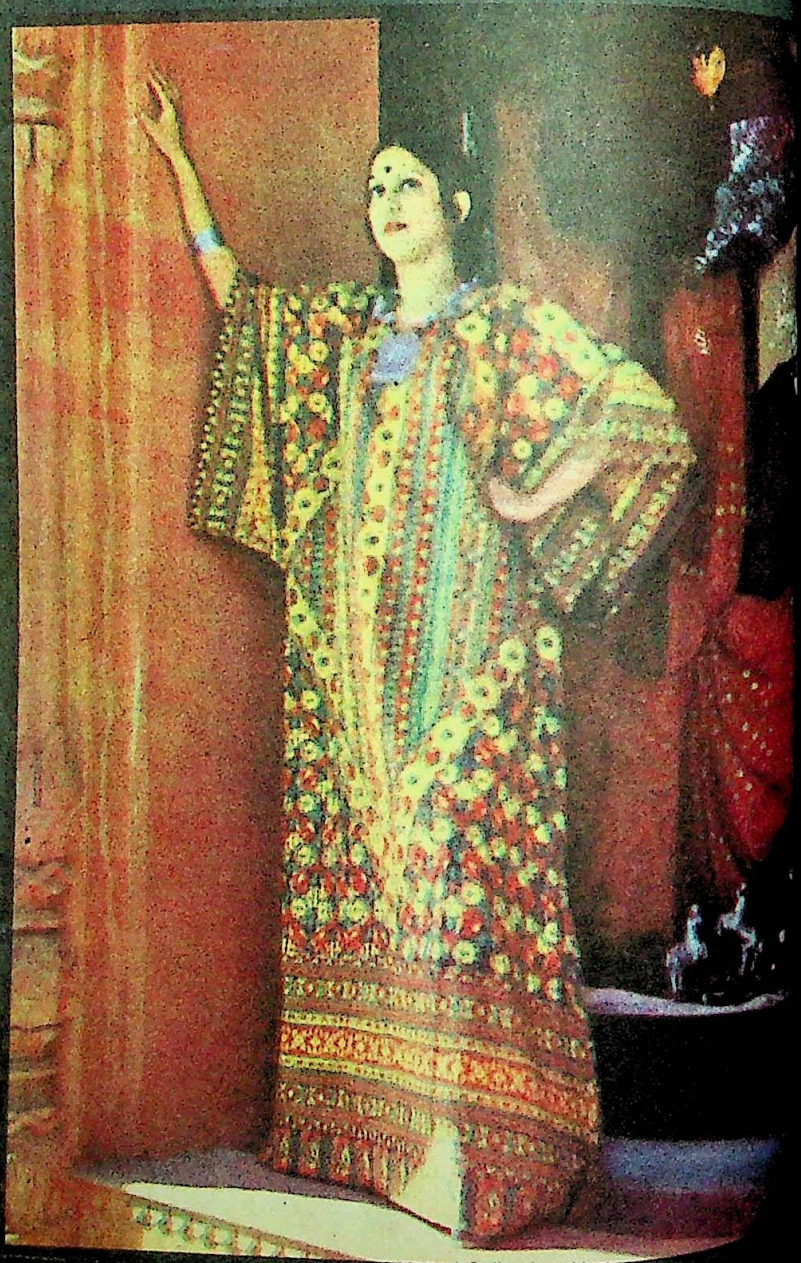

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हलके पीले रंग की प्रिंटेड बार्डर वाली आगे से खुली मैक्सी की बैल्ट का आकर्षण तो देखिए (ऊपर)

अंब्रैला कट बाजू, चौड़े बार्डर से युक्त यह प्रिंटेड मैक्सी पुरानी सिल्क की बार्डर-दार साड़ी से भी बनाई जा सकती है (सामने)

CC-0. In Public Domain. Sri Sadhu Kunjal Collection, Varanasi

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फूलों के गजरे

Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फूलों की महक और सुंदरता से ओतप्रोत सिर का जाल, झूमर, टीका और वेणियां (सामने, ऊपर)

(नीचे) सज्जा के लिए इन में फूलों के साथ रंगीन रेशम, किरण, गोटा और सलमा भी गूंथा जा सकता है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजस्थानी छटा समेटे चुन्नट और झालरदार फुल मैक्सी हर अवसर की पसंद (ऊपर)

हरेलाल रंग की धारीदार कलियों वाला लहंगा और मेलखाती चोली के साथ हरे रंग की ओढ़नी भी लें (सामने)

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

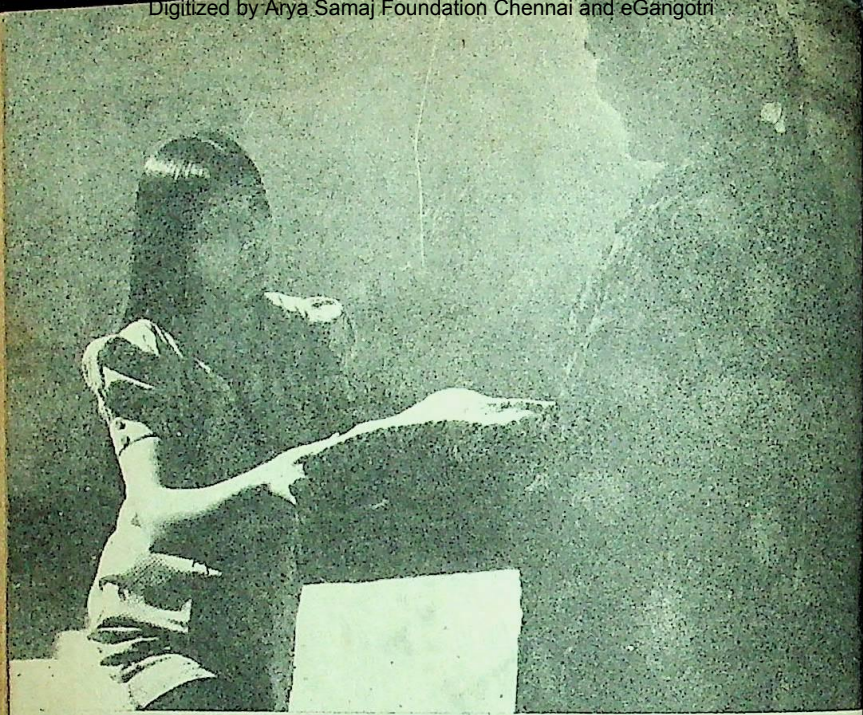

उस ने इस अंदाज से सामान मांगा कि मैं मना न कर सकी...

मांगने वाले

रोजमर्रा की छोटी से ले कर बड़ी वस्तुएं तक मांगने वाली ये पड़ोसिनें दूसरों की असुविधा का ध्यान क्यों नहीं रखतीं?

लेख • निर्मला गोस्वामी

उस दिन सर्दी कुछ अधिक थी. रात का भोजन कर के हम लोग अपनेअपने बिस्तरों में दुबके ही थे कि किसी ने बाहर का दरवाजा खटखटाया. बिस्तर छोड़ने की इच्छा नहीं थी लेकिन विवश हो कर दरवाजा खोलना पड़ा. बाहर बंटी की मां खड़ी थी.

मुझे देख कर वह बोली, "थोड़ा काफी का पाउडर देना, इन के दोस्त आ धमके हैं और उन्होंने काफी पीने की फरमाइश की है. बाजार बंद हो चुका है और काफी का डब्बा कल ही खाली हुआ है."

मैं ने काफी का डब्बा उस के सामने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रखते हुए कहा, 'इस में से ले लो.'

शिष्टता दिखाते हुए वह बोली, "अरे, नहीं, तुम्हीं थोड़ी सी कागज में डाल दो."

मैं ने तीनचार चम्मच डाल दिए तो वह 'बसबस बहुत है' करती हुई चली गई. मेरे लिए इनकार करना कठिन था.

अन्य विषयों के अलावा संगीता ने हाई स्कूल में गृहविज्ञान विषय भी लिया हुआ है. गृहविज्ञान की तैयारी के लिए कढ़ाईबुनाई संबंधी कोई पुस्तक लाने के लिए वह मुझे कई दिनों से कह रही थी. उस दिन शापिंग करती हुई एक बुकस्टाल पर पहुंची. अचानक 'सरिता' के बुनाई विशेषांक पर नजर पड़ी. एक नजर उस के पन्ने पलटे. अंक काफी पसंद आया. मुझे लगा कि इस अंक से संगीता को गृहविज्ञान की तैयारी में सहायता मिल सकती है और मैं ने 'सरिता' की एक प्रति खरीद ली.

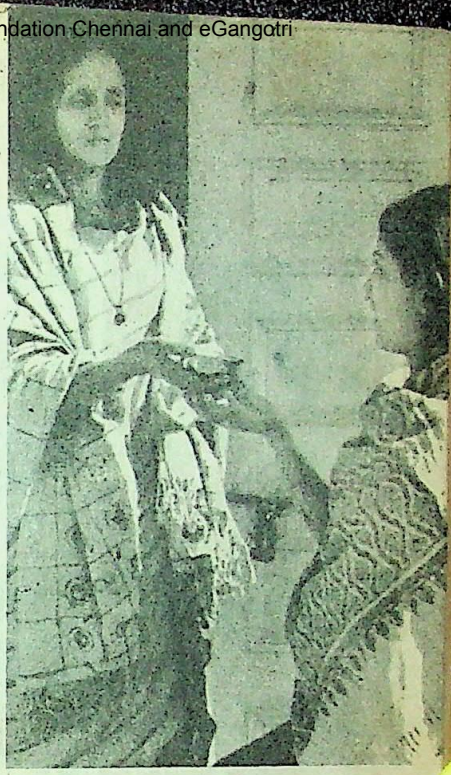

पत्रपत्रिकाएं खरीदें क्यों?

रिक्शा से उतर कर अभी अपनी गली में प्रवेश किया ही था कि आभा मिल गई. मेरे हाथ से 'सरिता' लेती हुई बोली, "अरे, 'सरिता' का बुनाई अंक आ गया. बहुत दिनों से इस की प्रतीक्षा कर रही थी. बहन, अभी देख कर पप्पू के हाथ भिजवा दूंगी."

पूरा दिन निकल गया. लेकिन पत्रिका उस ने नहीं भिजवाई.

अगले दिन संगीता स्वयं मांगने गई तो जवाब मिला, "मां से कहना, मेरी ननद पढ़ने के लिए ले गई है. एकदो दिनों में वह लौटा देगी तो मैं तुरंत ही भिजवा दूंगी."

पूरा सप्ताह बीत गया, लेकिन पत्रिका मुझे नहीं मिली. तब तक बाजार में भी वह अंक खत्म हो चुका था. आभा के इस व्यवहार से मैं बहुत निराश व परेशान हुई, लेकिन अब कर भी क्या सकती थी.

गत माह की बात है. एक दिन सुबह-सुबह हमारी पड़ोसिन शकुंतलाजी आ टपकीं. आगंतुका का मैं ने स्वागत किया, तो वह बोलीं, "बहनजी, आप को एक कष्ट देने आई हूं."

"कहिए, मैं आप की क्या सेवा कर सकती हूं?"

वह बोलीं, "बहनजी, बात यह है कि आज शाम की गाड़ी से एकदो दिन के लिए हम कानपुर जा रहे हैं. मेरा देवर मनोज है न, उस के रिश्ते की बातचीत वहां चल रही है. उस के लिए ही लड़की देखने जा रहे हैं. अभी कल ही पिंकी के डैडी मेरी तीनचार अच्छी साड़ियां ड्राईक्लीन करवाने के लिए दे आए हैं. अपनी वह फिरोजी रंग वाली बनारसी साड़ी दे दीजिए ताकि कानपुर का काम निपटा आऊं."

"हां, बैठिए. मैं देखती हूं."

(शेष पृष्ठ 96 पर)

यह आवश्यक नहीं कि कीमती सामान ही मांगा जाए...हलदीनमक की मांग भी अकसर बनी रहती है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

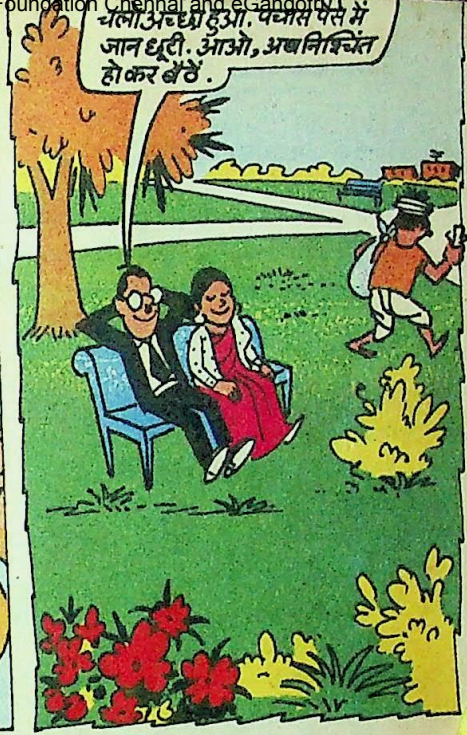

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मांगने वाले

(शेष पृष्ठ 93 से आगे)

दूसरे कमरे में जा कर अलमारी खोल कर एकदो मिनट सोचती रही कि साड़ी दूं या नहीं, क्यों न बनारसी के बजाए कोई दूसरी साधारण सी दे दूं, बाहर ले जाने का मामला है कहीं खराब न कर लाएं.

इतने में शकुंतलाजी वहीं मेरे पास ही अलमारी के सामने पहुंच गईं और बोलीं, "आप का यह कशमीरी शाल तो बहुत आकर्षक है, इसे भी दे दें, साड़ी के रंग के साथ खूब मैच करता है."

बनारसी साड़ी और फिर उस के साथ कीमती शाल भी! उन के शब्द सुन कर मैं भीतर से पत्ते की तरह कांप गई.

चीज दो और परेशानी मोल लो

तीन सौ की साड़ी और सवा सौ रुपए का शाल. भाई की शादी पर मां ने यह साड़ी दी थी वरना घर के बजट में कहां इतनी गुंजाइश कि खरीद सकते और यह शाल उन्हें बहुत पसंद है. गत वर्ष वह लखनऊ गए थे तो स्वदेशी नुमाइश से मेरे लिए खरीद कर लाए थे. साड़ी व शाल देने की बात यदि उन्हें मालूम हो गई तो मेरी शामत आ जाएगी.

कुछ क्षणों तक मस्तिष्क इसी उधेड़-बुन में रहा और फिर मैं ने उन्हें वे दोनों चीजें दे दीं. एक तो पड़ोसी के नाते कर्त्तव्य निभाने का प्रश्न था, दूसरे शादी की बातचीत का मामला था. इनकार करना मन को उचित न लगा. धन्यवाद देती हुई वह तो चली गईं, लेकिन चिंता के कारण मेरी परेशानी बढ़ गई.

शाम को जब पतिदेव आफिस से लौटे तो आते ही बोले, "अरे, भई, आज तुम्हारी खाना बनाने से छुट्टी."

"क्या मतलब?" मैं ने प्रश्नवाचक दृष्टि से उन से पूछा.

"मतलब यह कि अभी सात बजे बरात में चलना है. मेरे एक मित्र के भाई की शादी है. बरात में तुम्हें भी चलने को कहा है, इसलिए जरा जल्दी से तैयार हो जाओ. और सुनो, वह फिरोजी रंग वाली बनारसी साड़ी पहनना, तुम पर खूब फबती है. और हां, शाल भी साथ ले लेना, वापसी पर सर्दी बढ़ जाने की संभावना है."

अब इन्हें क्या जवाब दूं, कैसे कहूं कि साड़ी और शाल मैं ने अपनी पड़ोसिन को दे रखा है. आखिर कोई बहाना न बना पाई और असलियत उन्हें बतानी ही पड़ी. बताने पर उन्होंने क्या कहा होगा और मेरी क्या दशा हुई होगी, इस का अनुमान सहज लगाया जा सकता है.

चीज देने पर घर में क्लेश

पिछली गरमियों की बात है. हमारे दूर के रिश्तेदार बाबू खैरातीलाल की बेटी गीता का विवाह था. वह हमारे महल्ले में ही रहते हैं. पंडाल में लगाने के लिए उन्होंने अपने अड़ोसपड़ोस से कुछ टेबल-फैन मांग लिए थे. हमारा पंखा भी उन्होंने मंगवा लिया था. पंखा बिलकुल नया था और उस में कोई खराबी नहीं थी. लेकिन जब वह हमें वापस मिला तो उस का आसीलेटिंग नाब टूट चुका था. अब वह एक ही स्थान पर चलता था, घूम नहीं सकता था. रिश्तेदारी की बात थी, लड़की की शादी का मामला था, उन को उलाहना भी नहीं दे सकते थे, इसलिए चुप रह गए.

हमारे जीवन में प्रायः मांगने की इस आदत के कारण अनेक घटनाएं घटती हैं. परस्पर तूतू, मैंमैं तक की नौबत आ जाती है. लेकिन फिर भी हम यह सोचने का कष्ट नहीं करते कि आजकल जिस प्रकार हमारे लिए वस्तुएं खरीदना व बनाना मुश्किल है, उसी तरह दूसरों को भी परेशानी होती है.

दैनिक जीवन में तो अनेक छोटी-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कई चीजों की आवश्यकता रहती है, दूसरों से मांग कर कहां तक गुजारा किया जा सकता है! किसी विशेष अवसर पर बहुत मजबूरी की हालत में कोई चीज मांगनी पड़े तो कोई हर्ज नहीं, लेकिन दूसरों से मांगने की आदत को जीवन का एक हिस्सा बना लेना कहां तक उचित है?

अपने शौक को पूरा करने के लिए दूसरों से वस्त्र, गहने, रेडियो, पंखे, स्कूटर व पत्रपत्रिकाएं आदि मांगने में लोगों को तनिक भी संकोच नहीं होता. केवल अशिक्षित या कम पढ़ेलिखे लोग ही ऐसा नहीं करते, बल्कि सुशिक्षित तथा खाते-पीते परिवार के सदस्य भी ऐसा करने में पुरुषों की अपेक्षा महिलाएं मांगने की इस आदत का अधिक शिकार होती हैं. हमें यह विचार करना चाहिए कि जैसे कोई दूसरा हम से कोई वस्तु मांगे और फिर उसे तोड़ कर या खराब दशा में लौटाए तो जैसा कष्ट हमारे मन को होगा वैसा ही कष्ट उस व्यक्ति को भी हो सकता है, जिस से हम कोई वस्तु मांगें और फिर उसे लौटाएं ही नहीं और यदि वापस भी दें तो हालत बिगाड़ कर.

अतः पारस्परिक भाईचारा तथा प्रेमभाव बना रहे इस के लिए बहुत आवश्यक है कि जहां तक संभव हो हम दूसरों से वस्तुएं मांगने की इस आदत से बचें. ●

बात ऐसे बनी

एक बार मैं बस द्वारा मुरादाबाद से मुजफ्फरनगर आ रहा था. उस बस में एक ऐसे सज्जन थे, जो हर स्टाप पर उतरते और ज्यों ही बस चलने को होती, वह दुकानदार से चीज खरीद लेते और बिना पैसे दिए बस में चढ़ जाते. उन की यह चालाकी देख बस कंडक्टर ने बस रुकवा कर उन सज्जन से दुकानदार को पैसे दे कर आने को कहा.

इस के बाद वह महाशय किसी स्टाप पर नहीं उतरे.

—विवेककुमार सोनी, मुजफ्फरनगर

✦

मेरी सहेली एक बार अपनी ससुराल से अपने मैके आई. उस ने बहुत से गहने पहने हुए थे. जब वह रिक्शा में बैठ कर बस अड्डे से अपने घर की तरफ जा रही थी तो रास्ता सुनसान सा था. थोड़ी दूर जा कर रिक्शा वाला रुक गया और उस ने मेरी सहेली से गहने उतार कर देने को कहा.

वह पहले तो डरी, फिर उस ने बहुत ही गंभीर स्वर में कहा, "आजकल सोने के गहने कौन पहनता है. मैं ने तो बीस पैसे के सिक्कों के ये गहने बनवा लिए थे. ले, तू ही ले जा."

रिक्शे वाले ने सोचा कि इन गहनों का क्या करूंगा. और फिर उस ने उसे गांव से कुछ दूर ही छोड़ दिया, जिस से कि वह उसे पकड़वा न दे. अब मेरी सहेली ने कसम खाई कि गहने पहन कर कभी भी अकेली नहीं जाएगी.

—रेणु गुप्ता, देहरादून ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कम दाम में उच्च कोटि का साहित्य

विश्व पाकेट बुक्स

एक के बाद : पत्नी के होते हुए शिखा से रोमांस—पाप या पुण्य का?

अजंता : प्रेम और वात्सल्य भी उसे शांति न दे सके. आखिर उसे किस की तलाश थी?

मकड़ी का जाल : सुरक्षा का पूरा प्रबंध होने पर भी नीरा शाहिद ने जवाहरात लूट लिए. मगर कैसे?

लायड्स बैंक डकैती : काल्पनिक रहस्य-कथाओं से अधिक रोचक सत्यकथाएं.

नानावती का मुकदमा : अनैतिक प्रेम के दुष्परिणामों की सच्ची कहानी.

अंतरिक्ष के पार : कंप्यूटर हेरीकोल्ट-7 एक दिन दास से स्वामी बन बैठा. क्या मानव हार गया?

बच्चों की समस्याएं : परिवार में अशांति पैदा करने वाली बच्चों की समस्याएं व उन का समाधान.

अपने पराए : गृहस्थी के सुख को स्थाई रखने में सहायक मनोरंजक उपन्यास.

फिर वही : युवाओं की सैक्स के प्रति बदलती मान्यताएं व समस्या का समाधान लिए एक मर्मस्पर्शी कहानी.

—प्रत्येक रु. 3

परमाणुओं की लपट : भारतीय सेना के युवा अफसर के साहस और वीरता की रोमांचक कथा.

हत्यारी ताली : एक ताली के पीछे कई लोग दीवाने थे, मगर क्यों?

बच्चों के मुख से : बच्चों द्वारा कही गई कुछ भोली बातें जो एक मीठी गुदगुदी पैदा करती हैं.

—प्रत्येक रु.4

टूटा हुआ पुल : शहर की चकाचौंध, रंगीनियों की ओर आकृष्ट महेश जब सत्य से टकराया तो.

डाकुओं के घेरे में : डाकुओं की समस्या पर लिखा गया दिलचस्प उपन्यास.

—प्रत्येक रु. 5

नीली आंखों के दायरे : रहस्यपूर्ण शौकत महल. मालिक की हत्या और फिर?

विद्रोह के स्वर : नया जीवनदर्शन लिए युवा वर्ग का एक रचनात्मक विद्रोह.

भगवान विष्णु की भारत यात्रा : एक तीखा व्यंग्य उपन्यास.

आज ही अपने पुस्तक विक्रेता से लें.

विश्वविजय प्रकाशन

प्राप्य : **दिल्ली बुक कंपनी**, एम 12 कनाट सर्कस, नई दिल्ली-110001.
पूरा सेट लेने पर 5% की छूट, डाक खर्च माफ. आदेश के साथ पांच रुपए अग्रिम भेजें.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बस एक रात

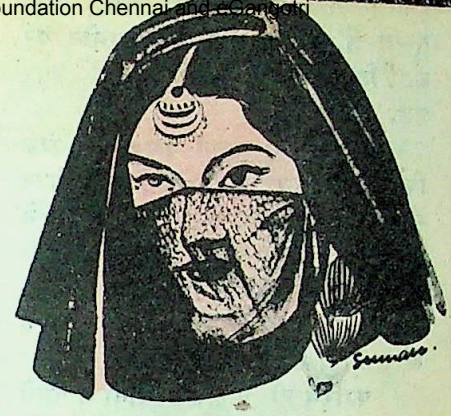

कहानी

मुकारबखान 'आजाद'

बसकरी पराए मर्द की बीवी बन कर एक रात गुजार दे तो दोबारा शादी हो सकती थी, अजीम इस बात के लिए कतई तैयार नहीं था...आखिर ऐन मौके पर काजीजी ने कुछ ऐसा किया कि सांप भी मर गया और लाठी भी नहीं टूटी...

रात का अंतिम पहर था, किंतु सितारों की चमक में कोई कमी नहीं आई थी. एक को छोड़ शेष तीनों दिशाएं काली चादरें ओढ़े रूठी बैठी थीं और पूर्व के उजाले को मुंह चिढ़ा रही थीं.

ऊंट सवार ने पलट कर पीछे बैठी बसकरी को देखा. वह जीन के पिछले आसन पर जमी चिपकी बैठी थी.

"देखो, डीडवाना आ गया है. यह ताल डीडवाना का ही है. इसी को 'खारड़ा' कहते हैं." अजीम खां ने बताया तो बसकरी ने अपनी आंखें झपकाईं, बाईं तरफ दूर तक फैला ताल साफ दीख रहा था. कहींकहीं पानी दर्पण की भांति चमक रहा था और सफेदी ऐसी थी कि बावजूद अंधेरे के भी वह साफ चांदी की चादर ओढ़े दिखलाई पड़ रहा था.

"क्या दौलतपुरा पीछे छूट गया?" पीछे से बसकरी ने जम्हाई ली.

"हां, उस से तो हम दो कोस आगे आ चुके हैं. बस सामने डीडवाना ही तो है."

"तो इतनी जल्दी शहर जा कर क्या करेंगे? क्या काजी सा'ब जाग गए होंगे?"

"जरूर जाग गए होंगे. ये अल्लाह, अल्लाह करने वाले जरा तड़के ही उठ जाते हैं. फिर अब तो फजर की नमाज का भी वक्त हो जाएगा. अजान होने वाली है."

अजीम खां ने ऊंट रोक लिया और फिर 'जहजह' कह कर उसे जहकाया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(जमीन पर बिठलाया) "लो, थोड़ा सुस्ता लें. उतरो." ऊंट को जमीन पर बैठा दिया गया तथा दोनों नीचे उतर पड़े.

बसकरी ने अपने कपड़ों को ठीक किया, इधरउधर देखा और फिर अंधकार में एक ओर चली गई. अजीम खां ने उधर पीठ कर ली और ऊंट की पीठ से टिक कर बीड़ी पीने लगा. जब बसकरी आ गई तो वह उसे नकेल थमा कर एक ओर झाड़ी की तरफ चला गया.

फारिग हो कर उन दोनों ने पानी के एक गड्ढे में हाथमुंह धोए और फिर ऊंट पर सवार हो कर शहर की तरफ चले गए.

शहर काजी के मकान के आगे जा कर मुंह अंधेरे ही किसी ने उन्हें पुकारा तो एक बुढ़िया ने दरवाजा खोल कर बाहर झांका. सामने एक आदमी ऊंट की नकेल पकड़े खड़ा था. ऊंट पर एक सफेद चादर में लिपटी युवती बैठी थी. बुढ़िया ने पूछा, "कौन हो, भाई?"

"मैं अजीम खां हूं. काजीजी से मिलना है. कोई जरूरी काम है, मां."

"अच्छा, भेजती हूं उन्हें." और वह वापस अंदर चली गई.

थोड़ी देर बाद काजीजी आए. उन्होंने अजीम खां को बैठक में बिठलाया और बसकरी को भीतर जनाने में भेज दिया.

"हां, कहो, कौन हो तुम? क्या चाहते हो, और तुम्हारी परेशानी का क्या सबब है?" काजी इनामुलहक ने आगंतुक की घबराहट भांपते हुए पूछा. आने वाला अजनबी गला साफ करता हुआ खंखार कर बोला, "मैं अजीम खां हूं और यह मेरी जोड़ायत (बीवी) है. मेरा गांव खाखोली और इस का गांव बेरी है." और अजीम खां रुक गया.

"हांहां, अच्छी बात है. मगर अपनी परेशानी का कारण तो बताओ?"

"जी, मैं ने गलतफहमी के कारण इसे तलाक दे दिया था. आदमी ही तो हूं, जी, अनपढ़ और गंवार. भला गलती किस से नहीं होती? मैं ने देखा यह सब डरानेधमकाने के लिए होता है. मगर अब जब मैं इसे लिवाने अपनी ससुराल गया तो मेरे होश उड़ गए." अजीम खां ने थूक निगला.

"क्यों?" इनामुलहक समझ कर भी अनजान बन गए

"क्यों क्या, इस के वालदन और वहां का मुल्ला बोले कि 'बसकरी अब तुम्हारी बीवी नहीं, यह अब तुम्हारे लिए हराम है. तुम इस के खाविंद नहीं हो.' सा'ब, मैं ने बड़ी कोशिश की मगर बात नहीं बनी. मैं बसकरी से मिल भी नहीं सका."

"यह बात तो ठीक ही है. तलाक के बाद बसकरी तुम्हारी बीवी कैसे रह गई? भला क्या इतना भी इल्म नहीं था तुम्हें?" काजी ने अचरज से कहा तो वह बोला, "नहीं जी, अगर इतना ज्ञान होता तो मैं तलाक देता ही क्यों?"

"खैर, फिर?"

"फिर क्या, जी, मुल्ला से मिला तो बोला हवाला कराओ तब दुबारा मिल सकती है." अजीम खां ने नीचे फर्श को देखा.

"अरे, हवाला नहीं 'हलाला' कहो. होगा और यह सही भी है. बिना हलाला कराए यह तुम्हें नहीं मिल सकती." काजी ने देहाती की भूल सुधारी.

"तो सुनो, जी. मैं मुल्ला से मिला तो उस ने बड़ी गंदी बात कही. बोला कि इसे पहले किसी दूसरे के साथ निकाह करना होगा और फिर इसे उस गैर मर्द के साथ...छिः छिः...कहते शर्म लगती है, जी. मुल्ला बड़ा फूहड़ बोला था...भला ऐसे 'हलाला' कराया जाता है?"

"देखो, अजीम खां, शरीयत में यही हुक्म है कि तलाकशुदा बीवी को अगर मर्द वापस लेना चाहे तो उसे वही सब करना होगा जो तुम्हारे मुल्ला ने बताया. सिर्फ एक रात वह तुम्हारी बसकरी को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

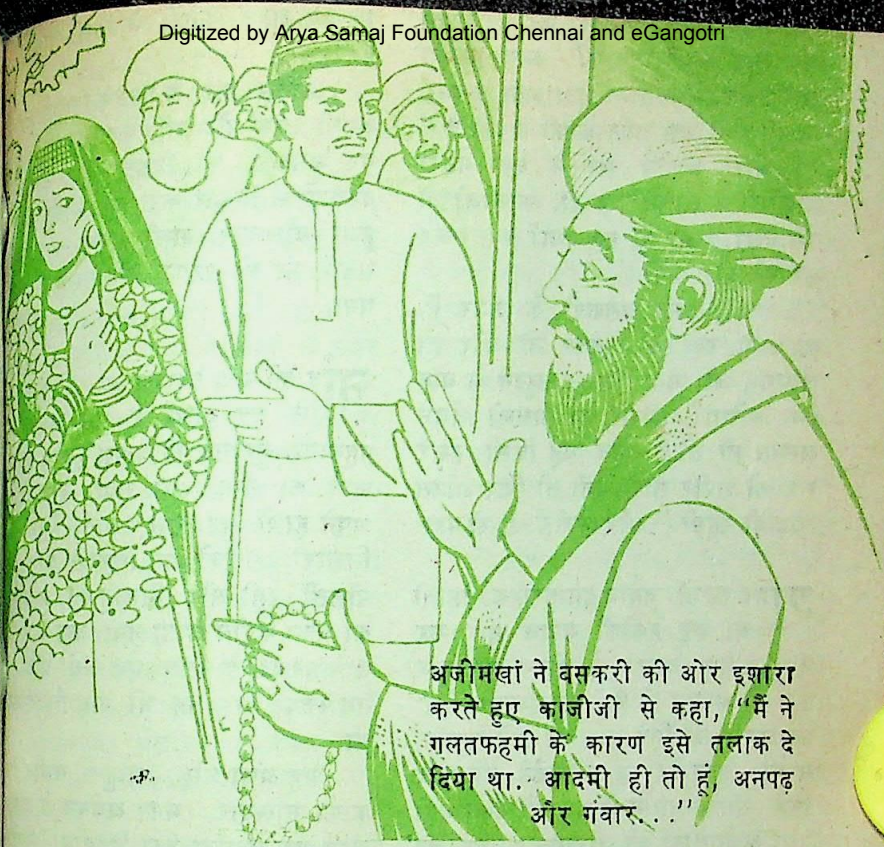

अजीमखां ने बसकरी की ओर इशारा करते हुए काजीजी से कहा, "मैं ने गलतफहमी के कारण इसे तलाक दे दिया था. आदमी ही तो हूं, अनपढ़ और गंवार. . ."

लेगा और सवेरे वापस तलाक दे देगा. तब इद्दत की मुद्दत, यानी तीन माह और कोई दस दिन के बाद यह तुम्हारे लिए हलाला हो जाएगी. तब तुम वापस इस के साथ निकाह पढ़ कर इसे बीवी बना सकोगे. समझे?" काजीजी ने अजीम खां को सकझोरा. अजीम खां चुप बैठा कुछ सोचता रहा.

"हां, एक रात, बस एक रात का ही सवाल है न?...मगर फकत निकाह से ही काम चल जाएगा कि वह मरदूद मेरी बीवी के साथ कुछ और भी करेगा?"

"वह सब कुछ करेगा. जों एक शाविंद अपनी बीवी के साथ करता है."

"ऐसी की तैसी." अजीम खां का हाथ सीधा लाठी पर गया, "साले का मैं कचूमर न निकाल दूं? मेरी बीवी को हाथ तो लगाए, जिंदा गाड़ देने की हिम्मत रखता हूं, काजीजी." अजीम खां तैश में आ गया.

"अरे भाई, उखड़ता क्यों है? मैं ने तो जब तू ने पूछा तो बताया है. वैसे मैं तुम्हारी पूरी मदद करूंगा. समझे?"

"और क्या. मैं तभी तो आप के पास आया हूं. साला मुल्ला क्या खाक जानता है." अजीम खां ने आक्रोश जताया और फिर गुपचुप बसकरी को वह रातों-रात यहां कैसे उड़ा कर लाया और कैसे वापस उस के पीहर पहुंचाएगा आदि बातें साफसाफ काजीजी को बतला दीं.

"यह तो तुम ने ठीक नहीं किया, अजीम खां, इस हाल में यह तुम्हारे लिए गैर औरत है. दीन मजहब के लिहाज से यह तेरे लिए हराम है. फिर रात के अंधेरे में इसे उड़ा कर लाना जुर्म भी तो है."

"साहब, अपनी जोड़ायत को लाना ही हराम है तो फिर हम जाएं कहां? इसी ने यह तरकीब बताई और हम आप के पास कोई तरीका पूछने की गरज से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आप हम फटकारेंगे तो फिर हम कहां जाएंगे? आप हमारा इंसाफ करें. मेहनताना पूरा अदा करूंगा, सा'ब. खेती इस साल काफी अच्छी है."

और अजीम खां ने एक गठरी काजीजी के सामने रख दी. काजीजी ने उसे देखा, "अरे रे, यह क्या? क्या गजब कर रहे हो, भाई?"

"जी, इसी बसकरी के जेवर हैं. यह आप रख लो. जेवर तो और हो जाएगा, जी, मगर अस्मत लुटने के बाद क्या बचेगा? औरत का असली जेवर अस्मत ही तो है. जब यह किसी दूसरे मर्द को शरीर सौंप देगी तो फिर औरत थोड़े ही रहेगी." और अजीम खां रो पड़ा.

शहर काजी जनाब इनामुलहक देहाती का यह हकीकी बयान सुन कर दंग रह गए. वास्तव में औरत का जेवर उस की अस्मत ही है. वह एकाएक ऐसी उलझन में जा गिरे जिस की उन्हें उम्मीद न थी. कुछ देर वह वहीं बैठे रहे और फिर भीतर आंगन में गए तो देखा यही हाल अजीम खां की जोड़ायत का था. वह काजीजी की घरवाली से लिपटी सुबक रही थी. रोने के कारण उस की आंखें सूजी हुई थीं और लाललाल हो रही थीं.

'ओह' काजीजी का दिल पिघल गया. उन्होंने बढ़ कर उस देहाती युवती के सिर पर हाथ फेरा. "बेटी, रोओ नहीं. मैं शहर काजी हूं. कोई तरीका जरूर निकालूंगा. तुम लोग जरा तसल्ली तो रखो." और फिर वापस बैठक में आ कर उन्होंने अजीम खां को अपनी योजना बताई, "तुम पांच तारीख को शाम के वक्त यह निकाह रख देना. मुल्ला से कह देना कि वह जिस के साथ चाहे बसकरी का निकाह पढ़ा दे और फिर वापस सवेरे तलाक दिलवाने का इंतजाम कर दे. मेरा नाम न लेना. मैं ऐन मौके पर आ कर तुम्हारी मदद करूंगा. इंशाअल्लाह. खुदा ने चाहा तो तुम्हारी इज्जत पर धब्बा न आने पाएगा. अब तुम लोग वापस चले जाओ और हां, यह किसी को न बताना कि हम शहर काजी से मिल कर आए हैं.

अजीम खां ने गरदन हिलाई और अपनी आंखें पोंछ लीं. वह उठा और ऊंट पर बसकरी को बिठला कर नागौरी दरवाजे से निकल कर चुंगीचौकी होता हुआ दौलतपुरा वाली सड़क के सहारे सहारे ऊंट को सरपट दौड़ाता हुआ चला गया.

चांद की पांच तारीख आ गई. बसकरी के घर वालों ने उसे नया जोड़ा पहनाया. सुहागन को वापस दुलहन बनाया जाने का ढोंग रचा गया. बसकरी ने अपने हाथों पर लगी अभागी मेहंदी को निखारा. पलकों पर थिरकते आंसू को पोंछती रही और निकाह की अदायगी का वक्त करीब आता गया. वहां के मुल्ला ने बसकरी के लिए एक अंधे प्रौढ़ को तय किया था. वह भी अब तैयार था.

यह अंधा प्रौढ़, अब्दुल मजीद था. काफी मालदार, मगर अंधेपन के कारण आज तक कुंआरा बैठा तिस्बीह (माला) फेर रहा था. जब बसकरी के 'हलाला' करने का सवाल उभरा तो वह सब से पहले मुल्ला से मिला. बिल्ली के भाग से ऐसे ही तो छींके टूटते हैं. बसकरी की जवानी और रूप के चर्चे वह आए दिन सुनता था. जब वह कुंआरी थी, एक बार इस ने उस पर डोरे डालने की कोशिश भी की थी पर कामयाब न हुआ.

अब खुदा ने उसे दोबारा मौका दिया था. उस ने मुल्ला की मुट्ठी गरम कर दी. बोला, "इमाम साहब, अगर वह हूर सिर्फ एक रात के लिए भी मिलती है तो भी सौदा महंगा नहीं. अल्लाह कसम, उसे आगोश में उठा कर चूम लूंगा तो वह मजा आएगा कि ताकयामत न भूलूंगा. फिर वह तो सब कुछ देगी, क्योंकि उसे हलाला होना है...क्यों?"

"अरे, नहीं, यार," तू चाहे ताजिंदगी उसे अपनी बना कर रख

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकता है. मगर कुछ खर्चवर्च करे तो सोचें..." मुल्ला मुसकराया.

"आप के मुंह में घीशक्कर. आला हुजूर, हुक्म तो करें. मैं उसे पाने के लिए सब कुछ कुरबान कर सकता हूं..." टटोल कर मजीद ने मुल्ला का हाथ थाम लिया और फिर पागलों की तरह उसे चूमने लगा.

"तो 2,000 रुपए अभी ले आ." मुल्ला ने धीरे से उस के कान में मंतर मार दिया:

"अभी लाया, मगर यह तो बताया नहीं कि वह मेरी कैसे हो जाएगी?"

"साला कुछ नहीं समझता. मैं कहता हूं तू सवेरे वापस उसे तलाक मत देना, बस. और जब तू तलाक नहीं देगा तो दुनिया की कोई ताकत उसे तुझ से छीन नहीं सकती. समझा?"

"समझ गया माईबाप, समझ गया." और एक चटखारा भर कर अंधा लकुटी टिकाटाटिकाता मसजिद से बाहर चला गया. आज मजीद के पांव धरती पर नहीं पड़ रहे थे.

मुल्ला ने सौदा तय कर लिया था और मजीद ने सवेरे वापस बसकरी को तलाक न देने की [illegible] एक साजिश तैयार खड़ी थी जिस का इल्म न तो अजीम खां को था, न बसकरी को और न उस के घरवालों को.

शाम को निकाह का वक्त करीब आ गया. जब शहर काजी डीडवाना से नहीं आए तो अजीम खां का दिल धड़क उठा. वह परेशान हो कर इधरउधर टहलने लगा. मगर जब दिल नहीं माना तो चुपचाप उठा और अपने ऊंट पर जीन कसने लगा.

ठोकर लगते ही उस का भूरिया ऊंट हवा हो गया. अजीम खां ने गिनगिन कर उस की पीठ पर बेंत मारनी शुरू कर दी और वह भूरिया गरदन लंबी कर के राकेट बना उड़ा जा रहा था. कीचक, छापरी, दौलतपुरा और फिर डीडवाने का ताल दीख पड़ा तो उस ने ऊंट को और तेज कर दिया.

अजीम खां ने काजीजी को पुकारा तो वही बुढ़िया बाहर निकली. उस ने अजीम खां को पहचान लिया. बोली, "बेटा, वह तो सामने वाले मकान में मिलादशरीफ पढ़ने गए हैं."

पहले **चंपक**

बाद में आइसक्रीम

या चाकलेट.....

चंपक आइसक्रीम या चाकलेट से बहुत सस्ता और बहुत अधिक गुणकारी है. ज्यादा मीठा खिलाकर बच्चे का स्वास्थ्य न बिगाड़िए—उसे चंपक पढ़ने को दीजिए और उस का दिमाग बढ़ाइए. उसे ज्यादा समझदार बनाइए.

चंपक

नन्हेमुन्नों को मीठी सीख देने वाली पत्रिका

नमूने की प्रति मंगाने के लिए 15 पैसे के डाक टिकट भेजिए: दिल्ली प्रेस नई दिल्ली-55.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अजीम खां ने पसीना पोंछा. उस की आंखों में अंधेरा उतर आया. वह ऊंट की नकेल थामे खड़े का खड़ा रह गया. उसे लगा--मुल्ला ने निकाह पढ़ा दी होगी. बसकरी को अंधा मजीद जबरदस्ती घसीट रहा होगा. ओह, अब वह उस की नहीं मजीद की है. क्या उस के मांबाप भी चुपचाप उसे उस मरदूद के साथ कमरे में बंद होते देख रहे होंगे? उफ! और अपने भीतर उठते भयंकर भूचाल को किसी तरह जब्त करता हुआ वह उस मकान के दरवाजे पर जा ठहरा जहां 'मिलाद शरीफ' पढ़ी जा रही थी.

वह मकान भीतरबाहर से रोशनी में चमक रहा था. हाजरीन बैठे थे. काजी की तकरीर चल रही थी. अजीम खां वहीं खड़ा रह गया. उस ने सोचा, 'मिलाद तो दस बजे से पहले क्या खत्म होगी? और तब तक क्या बचेगा? हाय! उस का सब कुछ लुट जाएगा. बेचारी बसकरी!' अजीम खां ने दरवाजे का सहारा लिया. उसे चक्कर आने लगे थे. उस की आंखें मुंद गई थीं. अजीम खां की आंखों में फिर वही दृश्य उभर आया. शायद मजीद ने उसे भीतर खींच लिया है. दरवाजे पर कुंडी चढ़ा ली है. अब वह उसे चारपाई की तरफ घसीट रहा होगा. उस के कपड़े उस ने फाड़ दिए होंगे... ओह! चारपाई पर...और अजीम खां के हाथ से लाठी छूट गई. वह चीख कर बेहोश हो गया.

उपस्थित जनसमुदाय के साथ ही काजीजी का ध्यान एकाएक उधर गया. लपक कर वह वहां पहुंचे तो सारी स्थिति उन के दिमाग में कौंध गई. अजीम खां अब उन की बैठक में लेटा था. जब होश आया तो उसे नीबू का रस दिया गया, "घबराओ नहीं, अजीम खां. मैं अभी इसी वक्त तुम्हारे साथ चलता हूं." काजीजी की आवाज उस के कानों में पड़ी.

"मगर अब तक क्या बचा होगा." वह बुदबुदाया. उस की आंखों से पानी बहने लगा था.

"तू फिक्र न कर. अभी कुछ नहीं हुआ. वह निकाह भी नहीं हुई. चलो, हम जल्दी चलें." काजी ने अजीम का हाथ पकड़ा तो वह उठ खड़ा हुआ.

मसजिद में पहुंच कर शहर काजी जनाब इनामुलहक ने मुल्ला को फौरन तलब दिया. उन्होंने बस्ती के चारपांच मुखिया मुसलमानों को भी बुलाया और जब इमाम साहब आ गए तो बोले, "क्या बसकरी की निकाह हो गई?"

"जी नहीं, आप का कारिंदा आ गया था. आप की इत्तला पा कर हम ठहर गए थे. आप ही ने तो पैगाम भेजा था कि निकाह मैं आ कर कराऊंगा. सब तैयारी है. आप ही का इंतजार था."

"अब्दुल मजीद कहां है? उसे बुला कर लाओ." और मुल्ला के जाने के बाद काजीजी ने मुसकरा कर अजीम खां को देखा. "मैं कह रहा था न, निकाह नहीं हुई. तुम तो नाहक घबरा रहे थे...लो, यहीं बैठ जाओ. अब कुछ गलत नहीं होगा." अजीम खां ने होंठों पर हाथ फेरा और अनमना सा काजीजी के पास ही बैठ गया.

जब अंधा मजीद, काजीजी के सामने आया तो उसे देख कर वह हंस पड़े. शानदार दमकती शेरवानी, गले में फूलों की ढेर सारी मालाएं, सफेद कपूर सा नैनसुख का पायजामा तथा गहगहाती इत्र की महक, चेहरे की खुरदरी दाढ़ी सफाचट. बूढ़ा बंदर नया लौंडा बनने का पूरा स्वांग कर चुका था. काजीजी ने अचरज और व्यंग्य से उस तथाकथित उम्मीदवार को एक बार फिर निहारा. अंधा हाथ में घड़ी अलग से बांधे था तथा फूटी आंखों पर काला चश्मा चढ़ा कर रंगे सियार की कारस्तानी को भी मात कर रहा था.

"क्या तुम सवेरे बसकरी को बाकायदा तलाक दे दोगे?" शहर काजी ने मजीद मियां से सवाल किया.

"जी हां, मुझे बसकरी से नहीं, बेचारे अजीम भाई से हमदर्दी है. मैं तो यह नहीं चाहता था. मगर सोचा चलो,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कमज़ोर रहने पर खाँसी-सर्दी आपका पीछा नहीं छोड़तीं

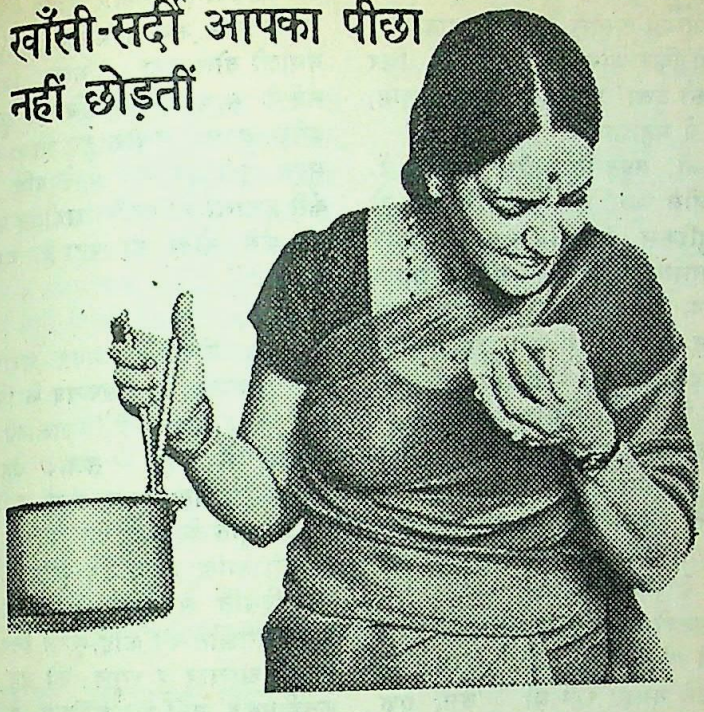

वॉटरबरीज़ कम्पाउण्ड लाल लेबल प्रतिरोधक शक्ति पैदा करने के साथ-साथ आराम भी देता है.

- स्थायी आराम पहुँचाने के लिए इसमें क्रियोसोट और गायकॉल मिले हैं.
- इसके अलावा इसमें कई ऐसे अनोखे टॉनिक उपादान मिले हैं जो लंबे अरसे तक प्रतिरोधक शक्ति बनाए रखते हैं.
- बार-बार होनेवाली खाँसी-सर्दी से आपको बचाता है.
- स्वास्थ्य और शक्ति बहाल करता है.

खाँसी-सर्दी का सबसे विश्वसनीय इलाज

वॉटरबरीज़ कम्पाउण्ड
लाल लेबल

वार्नर-हिन्दुस्तान का एक उत्कृष्ट उत्पादन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को उस की दुलहन वापस मिल जाएगी. बस इसी वास्ते..."

"अच्छा खयाल है, नेक इरादा है." काजीजी फिर व्यंग्य से मुसकराए. फिर मुल्ला को बुला कर पूछा, "क्यों जनाब, कैसे हैं ये महाशय?"

"जी, बहुत नेक और संजीदा हैं. बस अजीम भाई की भलाई के लिए ही बड़ी मुश्किल से तैयार हुआ है. सवेरे वापस तलाक दे देगा. बस यों समझिएगा कि रस्म अदायगी के लिए ही इसे मजबूरन बसकरी के साथ हम बिस्तर होना पड़ेगा." मुल्ला ने हिमायत की. उस के हाथ में एक उर्दू का रिसाला था.

"तो यह मुश्किल में न पड़े और न आप तकलीफ उठाएं. मैं ने इस काम के वास्ते दूसरा आदमी तजवीज कर लिया है." और काजीजी इतना कह कर बसकरी से मिलने चले गए.

बसकरी रोनाकलपना छोड़ कर बुत बनी आंगन में शांत बैठी थी. उस की अम्मां उसे समझा रही थी, "बस, एक रात का ही सवाल है, बेटी! सवेरे तुझे वापस तलाक मिल जाएगा. जबड़े भींच कर किसी तरह निकाल दे एक रात. तू कौन सी घिस जाएगी."

मगर बसकरी चुप रही. अपलक, शांत, गंभीर, समुद्र की तरह ठहरी हुई. शायद मजहब की आड़ से खेला जाने वाला यह नाटक उसे संज्ञाहीन कर चुका था. काजीजी ने उसे दिलासा दी और उस के चेहरे पर उठते भावों को, उस की गंभीरता को अपने अनुभवों के आधार पर तौला. फिर उठ कर जब वह बाहर आए तो मसजिद में अब्दुल मजीद व मुल्ला रज्जाक के बीच झगड़ा हो रहा था. मजीद ने मुल्ला से रुपए मांगे. मुल्ला मुकर गया और इस प्रकार उस साजिश का अपने आप ही भंडा फोड़ हो चुका था. काजीजी जल्दीजल्दी कदम उठा कर आए तो वहां काफी भीड़ जमा हो चुकी थी.

स्थिति का जायजा लेते हुए वह मुसकराए और फिर उन्होंने ऐलान किया, "अजीम खां के लिए बसकरी हलाल है. उन की परस्पर निकाह जायज है." अजीम खां ने चौंक कर ऊपर देखा. तभी कोई नमाजी बोल उठा, "भला, बिना कुछ मर्द के साथ बंधे, हमबिस्तर हुए और बगैर वापस तलाक हुए तथा इद्दत की मुद्दत पूरी हुए यह पहले पति के लिए कैसे हलाला हो गई? शरीयत के कानून को कैसे तोड़ा जा रहा है. यह सुधार कब से?"

"यह ठीक है, मगर शरीयत का कानून जिस मकसद के लिए बना है वह पूरा हो चुका है," काजीजी ने बुलंद आवाज में कहा, "तलाक बहुत बुरी स्थिति है. यह नौबत आए नहीं, इसी उद्देश्य पूर्ति के लिए यह कानून शरीयत में बना ताकि लोग डरें और इस घृणास्पद स्थिति से बचने के लिए तलाक से पहले समझौते की कोई सूरत निकाल लें. वरना अल्लाह व रसूल को यह तलाक कतई पसंद नहीं है. शरीयत के कानून का उद्देश्य यह है कि तलाक लेनेदेने वाले पछताएं, पश्चात्ताप करें और आइंदा ऐसी भूल करने की कोई हिम्मत न करें. इसी वास्ते यह शर्त डाली गई."

"और यहां शरीयत के उस मकसद की पूर्ति हो चुकी है," काजीजी ने इत्मीनान से कहा, "अजीम खां व बसकरी को अपनी भूल का खूब अहसास हो चुका है. इन्हें घोर पश्चात्ताप व आत्मग्लानि है. यह मैं खुद आजमा चुका हूं. अतः काजी पद की हैसियत से यह ऐलान करता हूं कि बिना किसी दूसरे के साथ हमबिस्तर हुए बसकरी अजीम खां के साथ वापस निकाह कर सकती है. मैं इस दंपत्ति को अपनी गृहस्थी बहाल करने की इजाजत देता हूं." काजीजी की बात सुन कर लोगों में सन्नाटा छा गया. मजीद का मन भर गया और मुल्ला का मुंह लटक गया.

"दूसरी बात यह है कि अगर ऐसा नहीं करता हूं तो बसकरी जरूर खुदकुशी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करेगी और अजीम खां की लाठी ने जाने किस का खोपड़ा फोड़ने को आमादा हो उठे. इस प्रकार प्राणों की रक्षार्थ भी ऐसा ऐलान जायज है."

काजी इमानुलहक ने तीसरी बात भी बताई. उन्होंने मुसलमानों को आगाह किया. "आप के मुल्ला व मजीद साहब की जालसाजी कितनी घातक थी, उसे आप जान चुके हैं. ऐसे लोग शरीयत को मजाक समझ कर अर्थ के अनर्थ करते हैं. ये न जाने कितने दंपत्तियों को परस्पर बिछुड़ा कर उन की जिंदगी तबाह करते हैं. मुझे यह कहते हुए अफसोस है कि मजीद का इरादा नेक नहीं था. अगर निकाह हो जाता तो सवेरे किसी हालत में यह इस बेगुनाह, बेचारी बसकरी को तलाक न देता. और इस प्रकार यह उस की गुलाम होने पर मजबूर हो जाती. ऐसी [illegible] चुका है. खैर, आप साहेबान तशरीफ रखें. मैं अजीम खां व बसकरी को वापस एक सूत्र में बांधता हूं." शहर काजी का इशारा पा कर बस्ती के लोग वहीं बैठ गए.

अगले दिन एक नया सूरज उगा. अजीम खां ने मुसकरा कर अपनी बसकरी की तरफ आंखें झपझपाईं. "बस, बस रहने दो. आइंदा भूल न कर बैठना, हां." और वह वियोगन, जोगन अपने जोगी की बांहों में झूल गई.

काजीजी ने बाद नमाज फजर उस दंपत्ति को मुबारकबाद दी तथा मुल्ला को मसजिद की इमामत से बर्खास्तगी का हुक्म सुना कर वह वापस शहर चले गए. बस्ती के लोग शरीयत का सही अर्थ जान कर आज बेहद खुश नजर आ रहे थे. ●

एक कदम आगे

सोवियत वैज्ञानिक आंख के जाले या मोतियाबिंद को वर्णातीत ध्वनि तरंग की मदद से निकाल देने का तरीका उपयोग में लाने लगे हैं. नेत्र रोगों के अखिल संघीय अनुसंधान संस्थान के निदेशक प्रोफेसर एन. कास्नोव का कथन है कि 50 से 60 के बीच की आयु में लगभग हर व्यक्ति को मोतियाबिंद की शिकायत हो जाती है और इस का एक मात्र इलाज शल्य चिकित्सा ही है.

वर्णातीत ध्वनि तरंग को मोतियाबिंद को दूर करने के औजार की तरह इस्तेमाल करना एक नई तरकीब है. इस में मरीज को दोएक दिनों के लिए अस्पताल में दाखिल होना पड़ सकता है या बहिरंग रोगी विभाग में ही उस का इलाज किया जा सकता है. इस से डाक्टर छः गुने मरीजों का उपचार कर सकता है और मरीज शीघ्र ही चंगे हो जाते हैं.

चीन में ऐसी नकली चमड़ी विकसित की गई है जो जले हुए ऊपरी भाग पर जल्दी से चिपक जाती है.

तीन वर्षों के परीक्षण से यह सिद्ध हो चुका है कि कोलाजेन को मनुष्य और पशुओं की चमड़ी के प्रभावकारी विकल्प के रूप में काम में लिया जा सकता है.

इस को बड़े पैमाने पर तैयार किया जा सकता है और इस के संग्रह में भी कोई कठिनाई नहीं है.

✦

हाल ही में उत्तरी जापान के एक चिकित्सक डा. सात्रु टेक्यामा ने कैंसर पीड़ितों के लिए एक रामबाण दवा खोज निकाली है. जापान रेड क्रास चिकित्सालय द्वारा यह दावा किया गया है कि ओ. के. 432 नामक जीवाणु औषधि से सिर तथा गले के कैंसर का इलाज किया जा सकेगा. प्रयोग के तौर पर जीभ, चेहरा, सिर तथा गले के कैंसर से पीड़ित 36 व्यक्ति चुने गए, जिन में से 19 व्यक्तियों का इलाज सफलतापूर्वक किया गया ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब हम

मित्र मंडली में जब बात बहुत से विषयों पर चलतेचलते किसी भी सीरियस बीमारी या एक्सीडेंट पर आतीं तो हमें बड़ी कोफ्त होती. लोग अपनी या अपने घर वालों की सुनाते समय बढ़बढ़ कर बातें मारते. "अजी, साहब, जब मुझे फर्स्ट हार्ट अटैक हुआ तो क्या कहते हैं, शहर के सभी बड़ेबड़े नामी डाक्टर केवल पचीस मिनट में इकट्ठे हो गए थे. क्या कहते हैं, फलां हास्पिटल में तो रूम मिलना ही एक समस्या है, वह तो कहिए, क्या कहते हैं, चाचाजी के भी बड़े रसूख हैं. क्या कहते हैं, बस फोन खटखटाया रूम फौरन मिल गया."

तीनतीन तो नर्सें रखी गई थीं चौबीसों घंटों के लिए. क्या कहते हैं, सभी तरह का आराम था वहां. हमारा हाल जानने के लिए सारा शहर तो जैसे टूट पड़ा था, पर क्या कहते हैं क्या मजाल कि डाक्टर हमारे कमरे की ओर किसी को फटकने भी दे. हां, प्रेस फोटोग्राफरों को तो क्या कहते हैं, हम ने डाक्टरों से कह कर स्पेशली यह छूट दिलवा दी थी. अब क्या कहते हैं, बात यह थी कि शहर के सभी तो हमारी बीमारी की खबर छापते सो उस के लिए हमारे फोटो की भी जरूरत पड़नी ही थी.

इस के अलावा क्या कहते हैं, यह अच्छा भी नहीं लगता कि कोई अपने पास किसी काम के लिए आए और अपन मना कर दें कि हम बीमार हैं. सोचते क्या कहते हैं, ले, भाई, फोटोग्राफर तेरा भी भला हो जाए. हमारा क्या जाता है.

ऐसी बातें सुन कर हम चुप हो जाते. हार्ट अटैक हमें तो क्या, हमारे किसी दूर-दराज के रिश्तेदार तक को भी कभी न हुआ था. जो उस की ही बातें सुना कर हम अपने...

एक भाई किसी रेल दुर्घटना में अपने बाएं पैर की तीन अंगुलियां गवां बैठे थे. जब भी कोई चर्चा चलती बड़ी शान से अपने पैर को आगे कर घंटों उस दुर्घटना का वर्णन करते. अब ऐसे समय पर भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिच्छू ने काटा

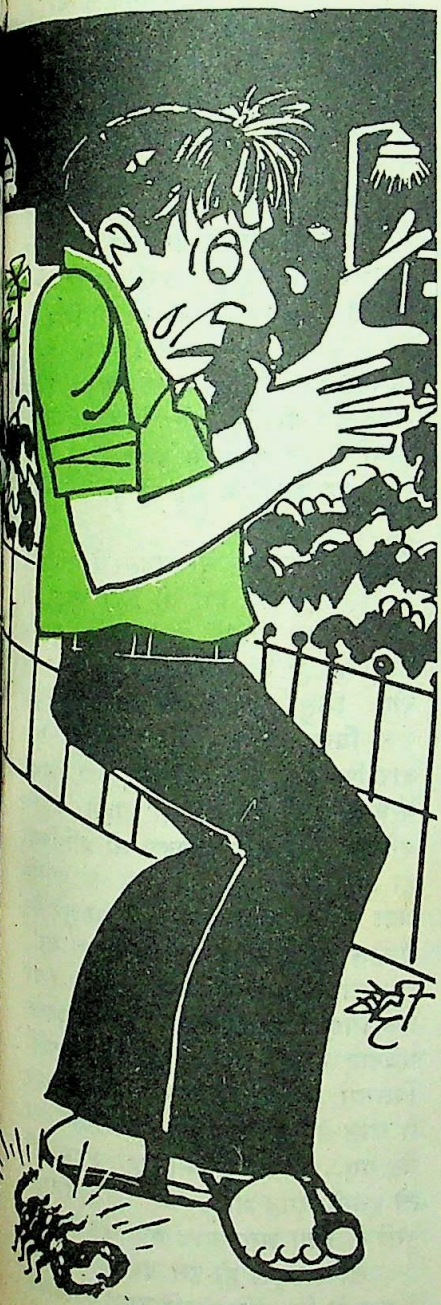

व्यंग्य • शकुंतला शर्मा

जब हम दूसरों को अपनी बीमारी का रोना रोते देखते तो बड़ी कोफ्त होती...काश, हमें भी कोई बीमारी हो जाती!

हमें मन मार कर चुप हो जाना पड़ता. हवाई दुर्घटना या रेल दुर्घटना तो बड़ी बात है, हम तो अपनी साइकिल से चार-छः बार गिर कर मामूली सी खरोंचे खाने के सिवा आए दिन होने वाली बस या ट्रक दुर्घटना के भी आज तक कभी शिकार न हुए थे.

पता नहीं कैसे कुछ लोगों के साथ दुर्घटनाएं होती रहती हैं. काश, कोई दुर्घटना हमारे साथ घटी होती तो हम भी अपने मित्रसंबंधियों को सहानुभूति प्रकट करने का अवसर प्रदान कर कृतार्थ करते और मित्रों में शान से बातें मारते, परंतु भाग्य में होती तब न!

हमें तो कभीकभार मौसमी बीमारी जुकाम, बुखार आदि के सिवा और कुछ कभी न होता और इस में तो हम घर के ही काली मिर्च, तुलसी आदि के काढ़े से ठीक हो जाते. यदि कभी गलती से जुकाम, बुखार के लिए डाक्टर के पास पहुंच भी जाते तो हमारी बीमारी का हाल सुन कर वह हमें ऐसी हिकारत भरी नजरों से देखता मानो कह रहा हो कि बस इसी बीमारी के लिए मेरे पास आए हो.

न वह हमारी छाती और पीठ स्टेथिस्कोप से देर तक देखता, न ब्लड प्रेशर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[illegible] पर लिटा कर हमारे पेट में उंगलियां गड़ागड़ा कर जिगर तिल्ली की ही जांच करता. बस ज्यादा से ज्यादा नब्ज देख कर गला देख लेता और पेनिसिलीन या एस्प्रीन जैसी कोई दवा लिख छुट्टी करता. यह भी नहीं कि कोई टानिक या इंजेक्शन आदि ही लिख दें.

हमें मन ही मन बड़ी तमन्ना थी कि हमें भी कोई ऐसी बड़ी बीमारी हो या ऐसी दुर्घटना ही हो जाए कि सब को लेदे की पड़ जाए, घर वालों का खानासोना मुश्किल हो जाए. किसी अस्पताल के स्पेशल रूम में हमें रखा जाए, डाक्टर गंभीर चेहरे और उतावले कदमों से हमारे कमरे में आजा रहे हों. मित्र, संबंधी चिंतित हो भागदौड़ कर रहे हों. बीवी जारजार आंसू बहाती आंचल फैला जिसतिस देवीदेवता की मनौती अपने सुहाग की रक्षा के लिए मांग रही हो. मन ही मन यह कल्पना भी किया करते कि पत्नी हमारे पलंग की पाटी से टिकी रोतेरोते बेहोश हो गई है. हम अपनी सूनीसूनी उदास सी आंखें उठा उसे देखते हैं, कमजोर सा हाथ मुश्किल से उठा उस की पीठ पर रख सांत्वना देने की असफल सी चेष्टा कर रहे हैं.

पर यह सब तो कुछ भाग्यशालियों को ही होता है. हम अपनी इस अभिलाषा पूर्ति के लिए इतने लालायित थे कि घर फूंक तमाशा देखने को भी तैयार थे. सच इसी लिए कभीकभी तो आत्महत्या तक करने को मन करने लगता किंतु इस को हम कार्यान्वित इसलिए न करते कि एक तो हमें मरने के नाम से ही डर लगता चाहे कोई और ही मरा हो. दूसरे,

हम अधिक सहनशील न थे, पता नहीं आत्महत्या करने में कितना कष्ट हो. तीसरे, यह कानूनन अपराध भी है और हम यथासंभव कोई ऐसा अपराध न करते कि वह सब पर प्रगट हो जाए.

खैर, भगवान के दरबार में देर है अंधेर नहीं. हुआ यों कि एक बार रात को हम अपने एक मित्र के साथ घूमने जा रहे थे कि अचानक ऐसा लगा कि कोई मोटा सा गरमगरम कांटा हमारे पैर के अंगूठे में जोर से चुभ गया है.

चौंक कर पैर झटका तो देखा कि पैर से दो कदम की दूरी पर एक बिच्छू महाशय अपनी दुम उठाए सरपट भागे जा रहे हैं. सोचा, काटा भी तो किस ने. पैर में एकदम जलन और दर्द होने लगा. मित्र से कहा कि तुरंत जा कर हमारे घर खबर कर दो कि हमें बिच्छू ने काट लिया है, तात्कालिक उपचार की तैयारियां कर रखें, हम आ रहे हैं.

मित्र तो एकदम चुस्तदुरुस्त थे, सो दौड़ लिए, दौड़े हम भी किंतु थोड़ी सी दूर ही. फिर तो हमें ऐसा लगने लगा कि सड़क पर ही लेट जाएं और जोरजोर से रोएं. किंतु एक तो हमें यह डर था कि उक्त बिच्छू की पत्नी या पति हमें एक बार फिर चूम कर अपने प्यार का तोहफा न दे दे, दूसरे हम यह भी चाहते थे कि वृश्चिक दंश के फलस्वरूप जो प्रतिक्रिया हो उसे हम घर पर ही सब के सामने अदा करें. कमबख्त का जहर भी पूरे पैर में फैल कर कूल्हे तक दर्द कर रहा था.

हांफतेहांफते मुश्किल से चल कर घर तक आए. घर के सामने ही बीवीबच्चे घबराए से खड़े थे. पहुंचते ही हमें पानी पिलाया. अंदर से बेचैन होने पर भी ऊपर से शांत से रह ड्राइंगरूम में दीवान पर बैठ गए. और बैठते भी कहां, बैडरूम में तो इतनी जगह भी न थी कि मिजाजपुर्सी के लिए आए लोग वहां बैठ सकते.

लेकिन बुरा हो इस दर्द का जो इस ने हमारी चिरसंचित अभिलाषा भी कायदे से पूरी न होने दी और हम बीमार होने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

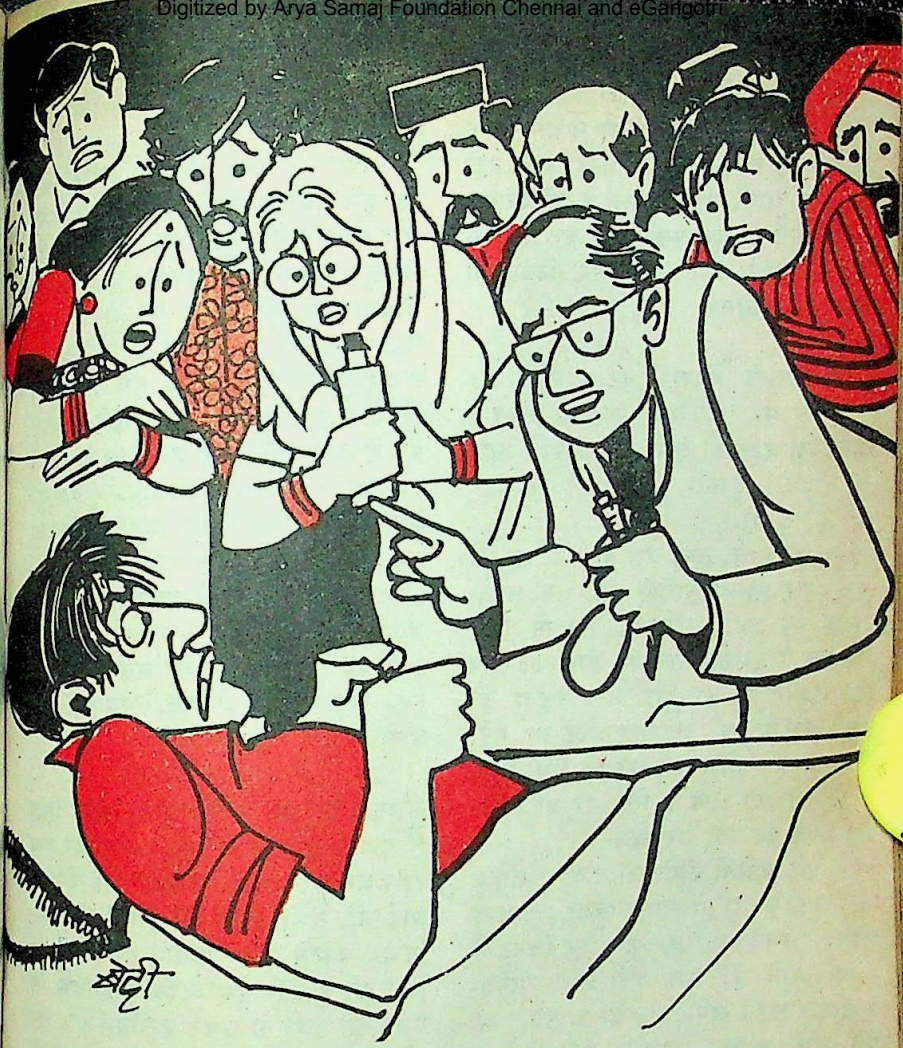

हमारे पैर में बिच्छू ने काटा तो अड़ोसीपड़ोसी अपनेअपने नुसखे लिए आ पहुंचे. डाक्टर ने भी देखतेदेखते दो इंजेक्शन लगा ही दिए...

या दुर्घटना होने पर जैसा अभिनय करने की कल्पना मन ही मन किया करते थे वे सब एक ओर रखी रह गई और हम ने सब कुछ भूल रोनाचिल्लाना शुरू कर दिया, बाकायदा नहीं बेकायदा.

घर भर में हड़कंप सी मच गई. पड़ोसी इकट्ठे हो गए. अब कोई पैर पर चूनानौसादर लगा रहा है तो कोई ग्रामोफोन का टूटा रिकार्ड ढूंढ़ रहा है. कोई पैर डालने के लिए चिलमची में गरम पानी ला रहा है तो कोई अमोनिया लगाने की सलाह दे रहा है. सब अपने-अपने नुसखे मुझ पर ही आजमाने की कोशिश में हैं.

एक साहब ने तो जो इलाज बताया उसे सुन कर हमें झुरझुरी छूटने लगी और मन ही मन सोचा कि दर्द चाहे ठीक हो या न हो या इस से अधिक बढ़ जाए पर यह उपचार हम हरगिज नहीं करेंगे. उन्होंने नुसखा तजवीज किया कि जिस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काटने वाली जगह पर बांध लीजिए. छि.; यह तो वही गले में मरा सांप लटकाने वाली बात हुई कि सांप न काटे तब भी जहर चढ़े. कोई क्षणक्षण में पानी पीने की सलाह दे रहा था तो कोई कह रहा था कि पानी तो बिलकुल न पीजिएगा. पानी पीने से खून पतला हो कर तेजी से दौरा करेगा और साथसाथ बिच्छू का जहर भी दौड़ेगा.

कई हमारी बेवकूफी पर अफसोस कर रहे थे. अरे यार, तुम्हें यह किस ने कहा कि रात को घूमो और चप्पल पहन कर घूमो, घूमना ही था तो जूते पहन कर ही घूमते.

एक बोले, तुम्हें देख कर बिच्छू से बच कर चलना चाहिए था. एक अपने-आप को बड़ा बुद्धिमान समझने वाले सज्जन ने तो यहां तक कह डाला कि आप को जमीन पर पैर रख कर चलना ही नहीं चाहिए था. शराफत आड़े आ गई, वरना कहने को मन चाहा कि जमीन पर नहीं तो क्या आप के सिर पर या आसमान पर पैर रख कर चलते.

एक पड़ोसी दौड़ेदौड़े डाक्टर साहब को बुलाने गए तो मालूम हुआ कि अभी रोजा खोलने बैठे हैं, बस 15 मिनट में आए जाते हैं. सुन कर लोग लानत-मलानत करने लगे. "अजी साहब, यह भी कोई डाक्टर हुआ कि एक की जान पर बन रही है वह आराम से खाना खा रहे हैं. अरे, डाक्टर को तो ऐसा होना चाहिए कि बाथरूम में हो या बेडरूम में, बुलाने पर तुरंत जैसा का तैसा दौड़ा चला आए." खैर, उसी समय डाक्टर साहब

गले में स्टेथस्कोप झुलाते हाथ में बैग लटकाए उपस्थित हुए. आते ही उन्होंने हमारे पैर के अंगूठे को स्प्रिट से साफ कर वृश्चिक दंश चिह्न देखने की चेष्टा की किंतु असफल रहे.

फिर क्या था सभी शक करने लगे कि हमें बिच्छू ने ही काटा है या किसी और मामूली से कीड़े ने, क्योंकि यदि बिच्छू काटता तो अपना डंक अवश्य छोड़ता. अब हम हैं कि एक ओर तो दर्द सहन कर रहे हैं और दूसरी ओर अपनी सफाई पेश कर रहे हैं कि हमें बिच्छू ने ही काटा है, हम ने अपनी आंखों से अपने पैर के पास उसे चलते हुए देखा है. इतना बड़ा था, एकदम काला स्याह. (अब यह बात अलग है कि बिच्छू जितना बड़ा था हम उस से अधिक बड़ा ही बता रहे थे. डाक्टर साहब ने दो इंजेक्शन हमारे अंगूठे में और दो बांहों में लगाए, कुछ गोलियां खाने को दीं और उन का असर देखने के लिए कुछ देर बैठे भी रहे. भगवान ऐसा भला डाक्टर सब को मिले.

इतनी देर में सभी पड़ोसी और मित्र इकट्ठे हो चुके थे. मूढ़े, कुरसियां कम पड़ने पर लान में चारपाइयां भी निकल आई थीं. सभी अपनी या दूसरों की सांप-बिच्छू काटने की घटनाएं और इलाज बता रहे थे और हम थे कि ड्राइंगरूम में बेचैन हो इधर से उधर कलाबाजियां खा रहे थे. कई तो "दैया रे दैया, चढ़ गयो पापी बिछुवा," "बिछुआ ने डंक मारा, हाय, हाय, हाय राम" जैसे बोल भी हाथपैरों से कुरसी आदि पर ताल दे कर अलाप रहे थे.

कुछ हमदर्द हमारे पास भी बैठे खड़े हमें धैर्य बंधा रहे थे, पर हम न मालूम क्या कर देते या कह देते कि सब एकदम हंस पड़ते. आप विश्वास करेंगे कि आंसू भरी आंखें लिए बीवी भी होंठों में मुस-कुरा जाती. अंगूठा तो इंजेक्शन लगते ही सुन्न हो गया था. कुछ 'दवागोलियों' इंजेक्शनों का असर हुआ होगा कि पांचछः घंटे यानी आधी रात के बाद जब सब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हाथों और शरीर की देखभाल के लिए अब एक सौंदर्यसाधन

...वेसलीन इन्टेन्सिव केयर लोशन से. अपने हाथों और कोहनियों में केवल कुछ बूंदें कोमलता से मलिए, और हाथों में कोमलता का फ़र्क़ महसूस कीजिए. कितने ख़ूबसूरत हाथ! फटे अंगूठों और फटी एड़ियों के बारे में सावधानी बरतिए. अपनी त्वचा को अंग अंग कोमल और अनुकूल बनाए रखने के लिए ये लोशन इस्तेमाल कीजिए. अतिरिक्त गुणकारी, चिपचिपाहट रहित फ़ार्मूला— वेसलीन इन्टेन्सिव केयर लोशन.

दो साइज़ों में मिलता है— १०० मि.ली. और १८० मि.ली.

वेसलीन® इन्टेन्सिव केयर® लोशन

अंग अंग की पूरी पूरी देखभाल

चीज़ब्रो पाण्ड्स इन्क. (सीमित दायित्व के साथ यूएसए में स्थापित)

लिंटास - VICL. 2-77 HI

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुबह के समय अभी थोड़ी देर आंख लगी ही थी कि तबीयत का हाल पूछने वालों का फिर आनाजाना शुरू हो गया. दर्द अभी भी काफी था पर काबिले बरदाश्त. सो हम स्वयं ही लोगों को अपना हाल बताते रहे. डाक्टर साहब से फिर इंजेक्शन लगवाए और दवा ली. अब तो हमें ऐसी नींद आई कि आने वाले आएं, हाल पूछें, पर हमारी नींद से बोझिल आंखें खोलने पर भी न खुलें. जबरदस्ती आंखें खोल बोलने कि कोशिश करें तो जीभ लड़खड़ा जाए. सोए तो पूरे दिन सोए, पूरी रात सोए और अगली सुबह जब सो कर उठे तो दर्द एकदम ठीक था.

बाद में दोचार दिन तक तो लोग पूछते रहे कि क्या हाल है अब, या सुना था कि आप को बिच्छू ने काट लिया. मामूली सा दर्द होता होगा. इस के बाद किस्सा खत्म, गोया हमें बिच्छू जैसे खतरनाक कीड़े ने न काट मक्खी ने काटा हो.

अब कभी जहरीले कीड़ेमकोड़े या सांप आदि की बातचीत चलती है और हम अपनी आपबीती सुनाने लगते हैं तो लोग या तो अनसुनी सी कर देते हैं या अजीब सी नजरों से देख कर चुप हो जाते हैं. ठीक भी तो है, कहां शेर और सांप, अजगर से दोदो हाथ करने की बातें और कहां बिच्छू. बेचारे हम, इतनी मुसीबत भी सही, फिर भी.

बच्चों के लिए

वैज्ञानिक विषयों पर रंगीन चित्रों से भरपूर सुंदर पुस्तकें

सितारे	5.00	रसायन-विज्ञान	5.00
हवाई जहाज	5.00	समय	5.00
मौसम	5.00	चुम्बक	5.00
हमारा शरीर	5.00	चंद्रमा	5.00
बिजली	5.00	वायु और जल	5.00
साहसपूर्ण यात्राएं	5.00	ध्वनि	5.00
मशीनें	5.00	प्रकाश और रंग	5.00
विज्ञान की बातें	5.00	मरुस्थल	5.00
हमारी पृथ्वी	5.00	प्रसिद्ध वैज्ञानिक	5.00
राकेट	5.00	ध्रुव प्रदेश	5.00
विज्ञान के खेल	5.00	समुद्र-विज्ञान	5.00
कीड़े-पतंगे	5.00	बुनियादी आविष्कार	5.00
आदमी की कहानी	5.00	कम्प्यूटर	5.00
परमाणु शक्ति	5.00	जीवन की कहानी	5.00
माइक्रोस्कोप	5.00	सूर्य की कहानी	5.00
गणित की कहानी	5.00		

डाक व्यय अतिरिक्त

वी. पी. से मंगाने के लिए 25 प्रतिशत धन अग्रिम मनीआर्डर से भेजें
25 रुपए की पुस्तकें लेने पर डाक व्यय मुफ्त, लेकिन मूल्य अग्रिम भेजें

दिल्ली बुक कंपनी

एम-12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेख • शीला गुप्ता

शादी

नईनवेली दुलहन से घर-गृहस्थी की बड़ीबड़ी जिम्मेदारियों की अपेक्षा कहीं गलतफहमियां न पैदा कर दे?

हिंदू समाज में शादी सिर्फ दो अपरिचित युवकयुवतियों को ही नहीं मिलाती, वरन अनेक अपरिचित लोगों का आपस में परिचय भी करवाती है और उन्हें एकदूसरे के बहुत ही नजदीक ला देती है.

सामाजिक तौर पर तो लोग एकदूसरे के नजदीक आ जाते हैं, मगर दिलों से या वास्तविकता में एकदूसरे के नजदीक आने में कुछ समय अवश्य ही लगता है. जहां समझ या धैर्य की कमी होती है वहां इस कुछ समय में ही ढेर सारी गलतफहमियां पैदा हो जाती हैं, जिन का प्रभाव अन्य रिश्तेदारों पर उतना नहीं पड़ता जितना कि नवविवाहित दंपति के जीवन पर पड़ता है.

शादी जहां एक ओर दो दिलों को मिलाती है वहीं यह ढेर सारी जिम्मेदारियां भी लाती है. चूंकि नवदंपति के लिए यह जिम्मेदारियां नई होती हैं, अतः

कुछ घर की • कुछ जग की

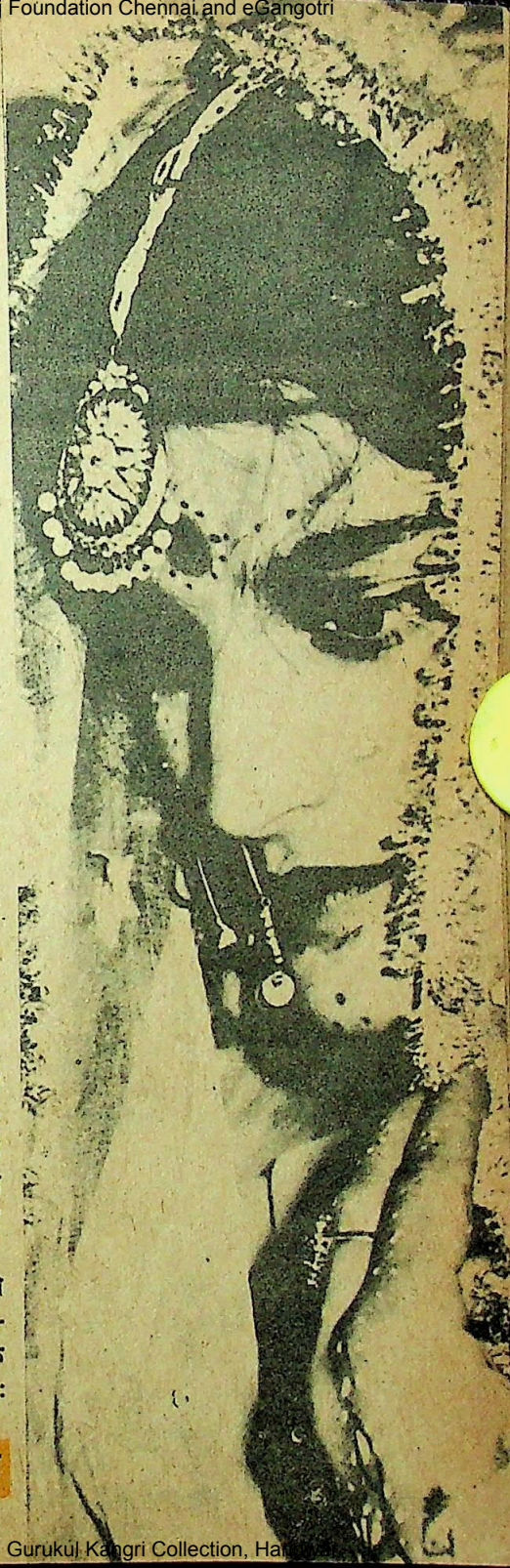

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन का [illegible] तियां होना स्वाभाविक है. ऐसे वक्त में घर के बड़े सदस्यों को धैर्य और समझदारी से काम लेना चाहिए.

होता क्या है कि शादी के तुरंत बाद ससुराल वाले लड़की से यह उम्मीद करने लगते हैं कि उस का व्यवहार एक पूर्ण युवती की तरह होना चाहिए, न कि एक अल्हड़ बाला की तरह. पर क्या यह संभव है? एक लड़की, जो कल तक माता-पिता की छत्रछाया में पूर्णरूप से स्वतंत्र थी, एक ही रात में तीनचार घंटे अग्नि के सामने बैठने से अपनेआप को एक गंभीर युवती या गृहिणी में कैसे बदल सकती है?

आलोचक न बनें

यद्यपि भारतीय नारी का यह एक महान गुण है कि वह अपनेआप को शीघ्र ही परिस्थितियों के अनुकूल ढाल लेती है, लेकिन ज्योंज्यों हमारे समाज में शिक्षा का विकास हो रहा है इस में कोई आश्चर्य की बात नहीं कि आधुनिक तौरतरीकों में पली भारतीय लड़की को भी अपनेआप को एक गंभीर युवती या गृहिणी में परिवर्तित करने में कुछ समय लगे.

अतः ससुराल वालों को चाहिए कि वे उस के व्यवहार पर एक आलोचक की दृष्टि रखने के बजाए उस पर पूर्ण स्नेह बरसाते हुए उसे अपनेआप को गंभीर युवती में परिवर्तित करने का पर्याप्त समय दें.

मेरी एक सहेली है. उस के पिता की जिद है कि घर में बहू की आवाज बड़े न सुनने पाएं और जब कभी भी बहू की आवाज उन के कानों में पड़ जाती है तो उन्हें ऐसा लगता है, जैसे किसी ने गरम तेल उन के कानों में डाल दिया हो.

आज भी हमारे समाज में ऐसे अनेक परिवार हैं जहां बहुओं की मुक्त हंसी पर भी पाबंदी होती है. बहू अपनी किसी सहेली के आने पर उस से पूर्ण स्वतंत्रता के साथ बात नहीं कर पाती, न ही किसी के हंसीमजाक के विषय पर खिलखिला कर हंस सकती है.

ऐसे वातावरण में उसे उस घर में अगर अपनत्व न महसूस हो तो आश्चर्य की कोई बात नहीं.

अकसर देखा गया है कि ऐसी छोटीमोटी बातों को ले कर बहू में अवगुण देखना प्रारंभ कर दिया जाता है और उस के आवरण में उस के तमाम गुणों को [illegible] दिया जाता है.

मायके को कैसे भूलें?

प्रायः ससुराल वाले अपनी बहू से यह आशा करने लगते हैं कि वह शादी के तुरंत बाद ही अपने मायके वालों को भूल कर ससुराल वालों में ही पूरी तरह घुल-मिल जाए. जब यह संभव नहीं हो पाता तो अनेक दोषारोपण होने लगते हैं.

ऐसे परिवारों में बहू का मायके जाना भी आपसी संबंधों में कड़वाहट पैदा कर देता है. जो लड़की अपने मांबाप, भाईबहनों के साथ बीसबाईस साल रही है, उन की याद आना और उन की ओर उस का झुकाव होना स्वाभाविक ही है. फिर कड़वाहट क्यों?

लड़की को बुलाने के मामले में माता-पिता को भी धैर्य एवं समझदारी से काम लेना चाहिए. जहां ससुराल वाले बहू का ज्यादा मायके आनाजाना पसंद नहीं करते, वहां उन को अपनी बेटी को कम से कम बुलाने की कोशिश करनी चाहिए, ताकि लड़की के सामने किसी प्रकार की समस्या पैदा न हो.

इस का एक पहलू और भी है. शादी के तुरंत बाद मातापिता द्वारा अपनी लड़की को बारबार बुलाए जाने से पति-पत्नी को, विशेष रूप से पति को, नव-विवाहित जीवन में जहां ढेरों अरमान होते हैं, एक दखल सा महसूस होता है और ऐसे वक्त में उन की यह आदत उन को अखरने लगती है, जिस से आपसी संबंध अच्छे नहीं रह पाते.

मेरी एक सहेली है. शादी के बाद जब वह अपने ससुराल गई तो उस की माताजी उसी रोज दोपहर में उस के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेडीमिक्स औषधियुक्त साबुन

चर्मरोगों के लिए डाक्टरों की सिफारिश

मेडीमिक्स
नहाने का एक उत्तम साबुन भी है, यह त्वचा और उस के सौंदर्य की रक्षा करता है।

मुंहासे | खारिश
काली कीलें | घमौरी
दाद | धोबी फेन
बालों की रूसी

CHOLAYIL PHARMACEUTICALS
1, Palayakara Street,
Madras-600 023.

आगरा के वितरक : मेसर्स लक्ष्मी एजेंसीज कारपोरेशन, 320, महात्मा गांधी रोड, (सुभाष पार्क के सामने) आगरा-2, फोन : 73443

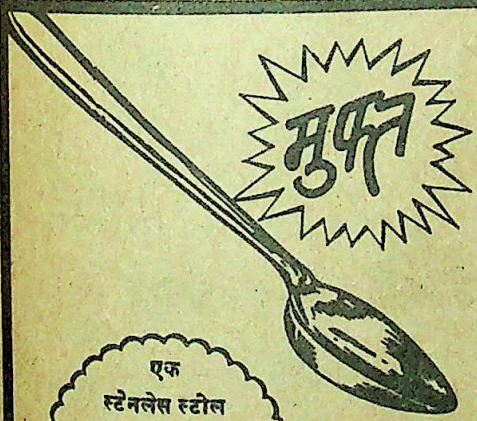

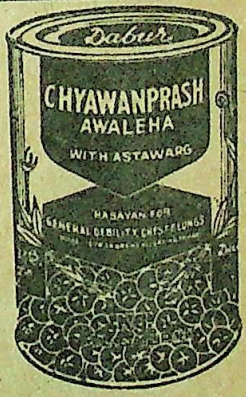

एक
स्टेनलेस स्टील
चाय-चम्मच
१ किलो पैकिंग
के साथ

डाबर
च्यवनप्राश

अवलेह (अष्टवर्गयुक्त) विटामिन 'सी' से भरपूर

खांसी, दमा, फेफड़ों की कमजोरी
वृद्धावस्था व रोग जनित दुर्बलता को दूर
कर शरीर को हृष्ट पुष्ट बनाता है

थोड़े से दिनों में सेवन कर सेहत बनायें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ससुराल पहुंच गई और प्रेमाश्रुओं के बीच उसे अपने यहां ले जाने की रट लगाने लगीं.

हालांकि वह अपने प्रयास में सफल तो नहीं हो पाई, मगर सहेली के सामने एक अजीब सी समस्या अवश्य खड़ी कर दी. वह किस की बात माने, ससुराल वालों की या अपनी प्रिय माताजी की?

मातापिता को चाहिए कि शादी के तुरंत बाद लड़की को अपने यहां बुलाने की रट न लगाए रहें, वरन नवदंपति को एकदूसरे के निकट आने का पूर्ण अवसर दें. उन्हें अपने अरमानों के मुकाबले उन के अरमानों को ज्यादा महत्त्व देना चाहिए.

मातापिता अपनी लाड़ली बेटी के बहुत से नाज उठाते हैं, मामूली सी बीमारी को बहुत महत्त्व दे डालते हैं. यह सब वे प्रेमवश ही करते हैं, लेकिन जब लड़की की शादी हो जाती है तो ससुराल वाले उस के वे नाज नहीं उठा पाते हैं. धीरेधीरे लड़की भी अपनेआप को बदल लेती है.

लेकिन शुरूशुरू में वह अपनी आदत के मुताबिक अपनी मामूली सी बीमारी को महत्त्व देती है तो साससुर उसे बहाना बताते हैं और इस प्रकार आपस में अविश्वास की भावना का जन्म होता है. अतः उन्हें चाहिए कि ऐसे नाजुक क्षणों में वे इसे बहाना न समझें, बल्कि उस की कोमल भावनाओं को समझें.

लेकिन इस का मतलब यह नहीं कि

बहू के हंसने बोलने जैसी छोटीछोटी बातों पर पाबंदी न रहे तो शायद वह ससुराल में अपनापन महसूस कर सके.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

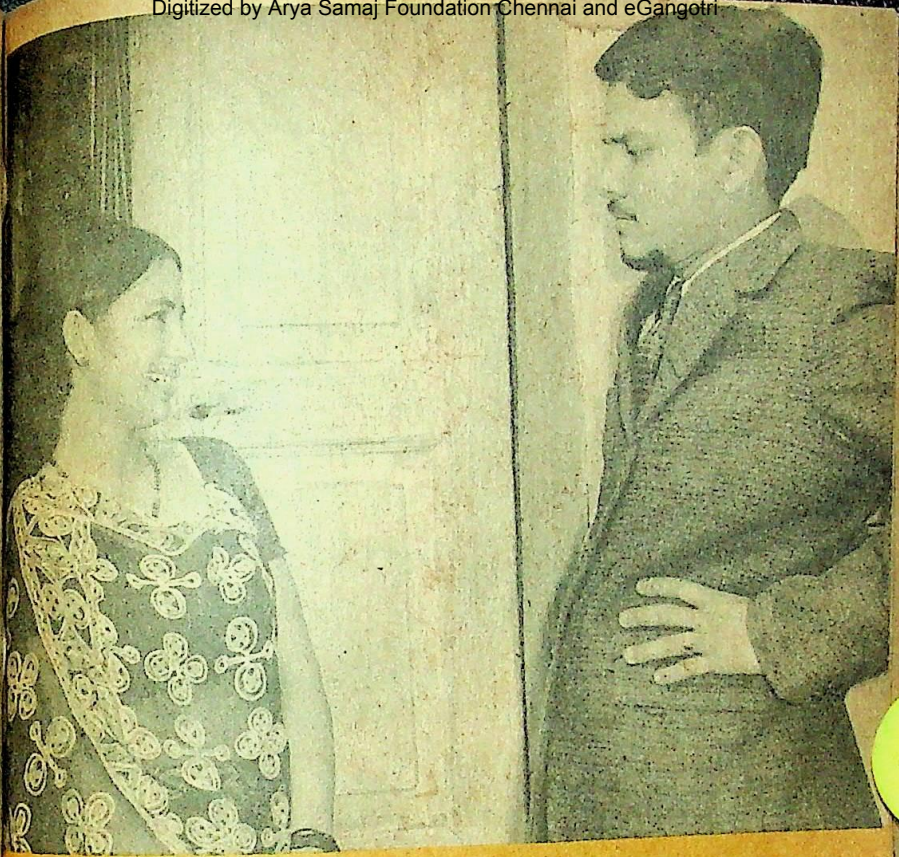

शादी होने के बाद अगर पति का आकर्षण पत्नी के प्रति बढ़ जाता है तो मातापिता को बुरा क्यों लगता है?

बहू या बेटी हर वक्त ही बहाना बना कर काम से जी चुराए और सासससुर या मातापिता उस की इस आदत को प्रश्रय देते रहें. लेकिन कुछ हद तक इसे नजरअंदाज करना ही चाहिए, ताकि अविश्वास की दीवार न खड़ी हो.

जब लड़का अविवाहित होता है तो उस का संपूर्ण प्रेम व आकर्षण मातापिता, भाईबहनों, आदि के लिए ही होता है. लेकिन जब उस की शादी हो जाती है तो उसे अपने इस प्रेम का कुछ हिस्सा अपनी पत्नी व ससुराल वालों को भी देना पड़ता है, अतः स्वाभाविक है कि उस का वह प्रेम व आकर्षण अपने घर वालों के प्रति उतना नहीं रह पाता, जितना शादी से पहले होता है.

अतः घर वालों को चाहिए कि वे इस हकीकत को समझ कर अपने लड़के के प्रति कोई गलतफहमी दिमाग में न आने दें और न ही ताने मारें. जैसे 'लड़का तो ससुराल का ही हो गया', 'यह तो बीवी का गुलाम है' इत्यादि से घर के वातावरण को बिगड़ने से बचाएं.

यदि घर के बड़े सदस्य शादी के बाद बदलते हुए वातावरण को, जो स्वाभाविक है, अत्यधिक महत्त्व न दें तो शादी के तुरंत बाद जो अनेक दीवारें गलतफहमी के कारण खड़ी हो जाती हैं उन्हें रोकने में सहायता मिल सकती है और इस से स्वच्छ वातावरण के साथ साथ नवदंपति का जीवन भी सुखमय होगा.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बच्चे का अंगूठा चूसना उस की स्वाभाविक मनोवृत्ति या मांबाप की लापरवाही?

बच्चों

छोटे बच्चों की हमेशा अंगूठा चूसना या मुंह से नाखून काटते रहने जैसी छोटी लेकिन नुकसानदेह आदतों को कैसे दूर किया जाए?

पिछले दिनों एक पार्टी में जाने का मौका मिला. हाल में दाखिल होते ही अकस्मात मेरी दृष्टि एक बालक पर केंद्रित हो गई. मेरे मित्र हरीश की गोद में चढ़ा उक्त बालक अपने दाहिने हाथ का अंगूठा चूस रहा था. परंतु हरीश बच्चे की इस हरकत से अनभिज्ञ, मेहमानों का हाथ मिला कर स्वागत करने में व्यस्त था. बच्चा अंगूठा चूसता न जाने किस दुनिया में खोया हुआ था.

श्रीमती शीला हमारे दफ्तर में ही काम करती हैं तथा स्वयं को जरूरत से ज्यादा आधुनिका समझती हैं. गांव के रहने वालों को तो ऐसे ताना देती हैं, जैसे सारी संस्कृति व सभ्यता उन्हीं के कब्जे में है.

एक बार उन के घर गया. घर खासा सजा हुआ था वाकई आधुनिक लग रहा था. परंतु तभी मेरी नजर एक कोने में बैठी उन की लगभग तीन वर्षीया लड़की पर गई, जो बरबस अपने दांतों से उंगलियों के नाखून काट रही थी.

अपनी बच्ची की इस हरकत से बेहद प्रसन्न हो कर श्रीमती शीला ने उसे गोदी में उठा लिया. बच्ची का नाखून काटने का क्रम अब भी जारी था.

हरीश या शीला के ही बच्चे इन आदतों से त्रस्त हों, ऐसी बात नहीं है. आज हमें किसी भी पार्टी, महफिल या उत्सव में अंगूठा चूसते या नाखून काटते बच्चे सहज ही दिखाई दे जाते हैं.

बच्चे में उक्त आदतों के कारण आकर्षण तो कम हो ही जाता है, इस के साथ ही साथ उस में अनेक रोग भी हो जाते हैं. नाखून काटना या अंगूठा चूसना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है. ऐसी आदतों के कारण हाथ की तथा नाखूनों की गंदगी पेट में चली जाती है तथा बच्चा अनेक बीमारियों से घिर जाता है.

बच्चे में उक्त आदतों का बीजारोपण बहुत कुछ मांबाप की लापरवाही का परिणाम होता है. बच्चे में अंगूठा चूसने या दांत से नाखून काटने जैसे दोष स्वतः उत्पन्न होते हैं. परंतु उक्त दोषों को बच्चे की आदत का रूप धारण कराने में माता-पिता का भी विशेष हाथ रहता है. क्योंकि इन आदतों के पड़ जाने पर भी मांबाप बच्चे पर कोई विशेष ध्यान नहीं देते तथा इन्हें महज बच्चे की स्वाभाविक मनोवृत्ति मान कर ही छोड़ देते हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की गंदी आदतें

मातापिता की उक्त धारणा निराधार है. उन्हें यह समझ लेना चाहिए कि बच्चे में उत्पन्न उक्त दोष बड़े खतरनाक हैं. इन से बच्चे का स्वाभाविक विकास भी रुक जाता है एवं उस का मानसिक विकास भी पूर्ण नहीं हो पाता. इस के साथ ही वे जिद्दी व दबंग भी हो जाते हैं.

बच्चे में उक्त आदतों के पनपने का मुख्य कारण मां के प्यार की कमी होता है. जो माताएं नौकरी करती हैं या अपना अधिकांश समय पासपड़ोस की औरतों से गपशप में बरबाद कर देती हैं, उन के बालक प्रायः इस रोग के शिकार हो ही जाते हैं.

काम की अधिकता होने पर भी मां बच्चे की सुध नहीं ले पाती. बच्चा जिद करता हुआ, रोताबिलखता हुआ किसी वस्तु को पाने के लिए उस के पीछे लगा रहता है. समय कम होने तथा काम की अधिकता के कारण भी मां को फुरसत नहीं मिलती. वह बच्चे से पीछा छुड़ाने के लिए उसे बुरी तरह झिड़क देती है या चपत भी जड़ देती है. बच्चा सहम जाता है तथा अपमानित सा कोने में बैठ कर अपना एकाकीपन दूर करने के लिए ही ऐसी गंदी आदतों का शिकार हो जाता है.

गोद के बच्चों में ये आदतें विशेषतः समय पर भोजन न मिलने या भूखे रहने के कारण पड़ जाती हैं. भूख से व्याकुल होने पर यदि बच्चे को दूध न दिया जाए तो वह अंगूठा चूसने लगता है. जिस से उसे थोड़ी राहत मिलती है. धीरेधीरे यही प्रक्रिया उस की आदत बन जाती है.

बच्चों को भरपेट भोजन न मिलने या संतुलित आहार की कमी के कारण भी उन की भूख नहीं मिटती. वे भूख से बेहाल हो कर अंगूठा चूसने लगते हैं. इस के अतिरिक्त यदि उन में कैल्शियम की कमी हो अर्थात उन्हें कैल्शियम के पदार्थ न दिए जाते हों, तब भी वे इस कमी को अपने नाखून काट कर पूरा करते हैं.

इस के साथ ही घर के गंदे व सुनसान वातावरण में भी बच्चा स्वयं में एकाकीपन का अनुभव करने लगता है. इस प्रवृत्ति के कारण वह अपने को बेसहारा व असहाय समझ कर एक कोने में बैठ

नाखून काटकाट कर बच्चे न जाने कितना मैल खा जाते हैं...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाता है. इसी कारण उसे अंगूठा चूसने या दांतों से नाखून काटने की आदतें स्वतः पड़ जाती हैं.

कुछ बच्चे स्वभाव से ही जिद्दी होते हैं. जब उन की मनोकामना पूरी नहीं होती तो वे रूठ जाते हैं, उन में कुंठा भर जाती है और यहीं से उन्हें अंगूठा चूसने व नाखून काटने की गंदी आदतें पड़ जाती हैं. इस के अतिरिक्त मांबाप के आपसी संबंध भी बच्चे में उक्त आदतों के उत्तरदायी हो सकते हैं. जब बच्चा घर में मांबाप को लड़तेझगड़ते देखता है तो वह सहम जाता है. उस का मन कोमल होता है तथा ज्यादा सोचने-विचारने की शक्ति उस में होती नहीं, अतः सहम कर वह कोने में बैठ जाता है और अंगूठा चूसने लगता है या नाखून काटने लगता है.

माताएं दोषी

कुछ प्रगतिशील कही जाने वाली माताएं भी बच्चों में उक्त आदतें फैलाने की दोषी हैं. बच्चा जब शुरूशुरू में उक्त हरकतें करता है तो वे उन्हें छुड़ाने के लिए उस की पिटाई करती हैं या फिर उस के हाथ में मिर्च या अन्य कड़वी वस्तु लगा देती हैं. परंतु ज्यादातर बच्चों की आदत फिर भी नहीं छूटती, उलटे वे जिद्दी हो जाते हैं.

इस के अलावा कुछ ऐसी भी माताएं हैं जो बच्चों की इन हरकतों को देख कर भी इन्हें छुड़ाने का कोई प्रयत्न नहीं करतीं. कई बार तो उन के जरूरत से ज्यादा लाड़प्यार से ऐसी हरकतें आदतों का रूप धारण कर लेती हैं. उन का यही लाड़प्यार बच्चे के स्वास्थ्य के लिए हानिकारक सिद्ध होता है.

बच्चे में ऐसी गंदी आदतों का बीजारोपण नौकरनौकरानियां भी करते हैं. जब कभी बच्चा रोता है तो वे उस का अंगूठा उस के मुंह में दे देते हैं. इस से बच्चा शांत तो हो जाता है, परंतु एक भयानक आदत का शिकार हो जाता है.

वैसे तो पैदा होने के बाद से ही बच्चा पैर या हाथ का अंगूठा चूसने लगता है. परंतु यह सब उस की स्वाभाविक प्रक्रिया होती है. अतः घबराने की आवश्यकता नहीं होती. परंतु छःसात महीने के बाद भी यदि बच्चे में उक्त आदतें विद्यमान हैं तो थोड़ा सोचने की बात है तथा इसी समय से बच्चे की इस प्रवृत्ति पर रोक लगाने की आवश्यकता है.

आप के बच्चे को भी यदि उक्त आदतें पड़ गई हैं तो इन्हें डांटडपट कर या मारपीट कर छुड़ाने की जरूरत नहीं है, क्योंकि आप के इस व्यवहार से बच्चा अधिक जिद्दी या चिड़चिड़ा हो जाएगा. साथ ही उस का मानसिक विकास भी अवरुद्ध हो जाएगा.

प्यार आवश्यक

इन आदतों से छुटकारा दिलाने के लिए बच्चों को पूर्ण प्यार दिया जाना चाहिए. परंतु प्यार देने का यह मतलब कदापि नहीं है कि आप उसे जिद्दी बना दें. यदि आप का बच्चा किसी वस्तु को पाने का हठ कर रहा है तो उसे वह चीज तुरंत दे देनी चाहिए. यदि आप वह चीज को दिलाने की सामर्थ्य नहीं रखते तो आप का कर्त्तव्य है कि उसे प्यार से समझाएं तथा उस का ध्यान परिवर्तित करने की कोशिश करें. इस के साथ ही उसे व्यस्त रखना भी जरूरी है.

छोटे बच्चों में अंगूठा चूसने व नाखून काटने की प्रवृत्ति का मुख्य कारण भूख होता है. अतः बच्चे को समय पर भोजन व दूध आदि देना नितांत आवश्यक है. इस के साथ ही बच्चे को कैल्शियम की कमी को भी पूरा करना चाहिए, क्योंकि अधिकांशतः वही बालक नाखून काटते हैं जिन में कैल्शियम की कमी होती है.

मातापिता को कभी भी बच्चों के सामने लड़नाझगड़ना नहीं चाहिए. इस से बच्चे के कोमल मन को ठेस पहुंचती है. बच्चे की उक्त आदतों को छुड़ाने का एक उत्तम तरीका तो यह है कि उसे सदा प्रसन्न रखें तथा अवकाश के समय में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खाँसी को पछाड़नेवाला चैम्पियन

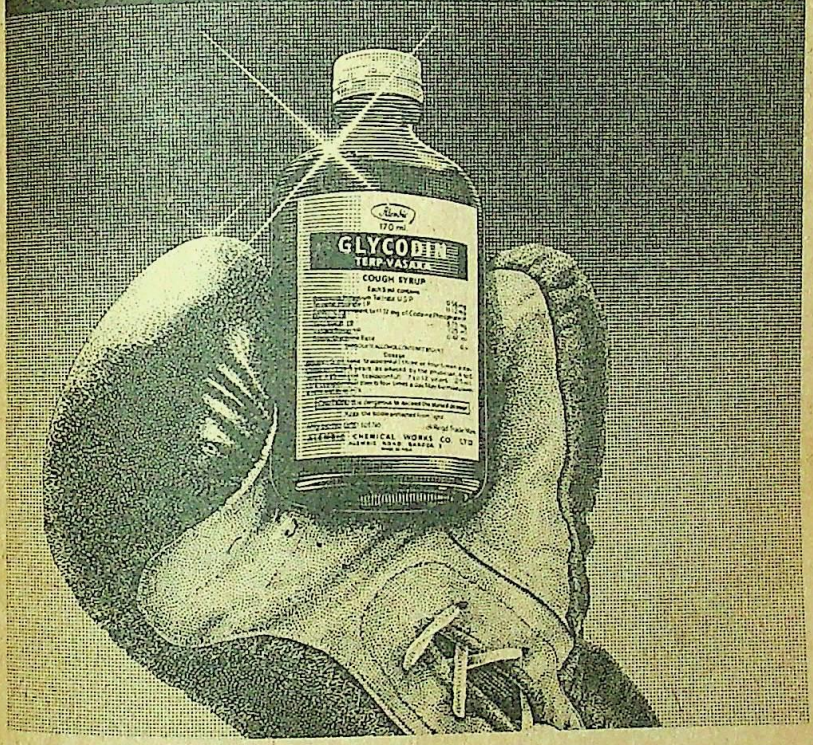

ग्लायकोडिन वर्षों से लाखों लोगों की खाँसी पर जल्द काबू पाने में खाँसी के अन्य इलाजों से ज़्यादा असरकारक और जोरदार साबित हुआ है □ ग्लायकोडिन दिमाग, गला, छाती और फेफड़ों जैसे खाँसी के चारों मोर्चों पर हमला कर खाँसी को मार भगाता है। ● तेज़ असर करनेवाला ● मधुर स्वादवाला ● किफ़ायती

ग्लायकोडिन—भारतभर में खाँसी का सबसे अधिक लोकप्रिय और विश्वसनीय इलाज. Alembic

everest/617r/ACW hn

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मात्र पति की आय से गुजारा आज के जमाने में कठिन है, अतः अधिकांश महिलाएं नौकरी करती हैं. अतः ऐसी माताओं को अपने बच्चे में एकाकीपन का अनुभव नहीं होने देना चाहिए. उस के लिए उन्हें काम पर जाते समय बच्चे को हर हालत में खुश रखना चाहिए. उसे किसी प्रकार की भी कमी महसूस नहीं होने देनी चाहिए.

काम पर जाते समय बच्चे को पढ़ने-लिखने का काम देना चाहिए, जिस से वह खाली समय में भी व्यस्त रहेगा. इस के अतिरिक्त उन्हें अच्छीअच्छी व ज्ञान-वर्धक पत्रिकाएं व पुस्तकें भी देनी चाहिएं. इस से उन का खाली समय कट जाएगा तथा उक्त आदतें भी छूट जाएंगी.

यदि छोटे बच्चों में अंगूठा चूसने की आदत जबरदस्त है तो आप उस के अंगूठे में टेप लगा सकती हैं. इस के अतिरिक्त बच्चों के नाखूनों को भी समयसमय पर काटते रहना चाहिए. इस से भी बच्चों की दांतों से नाखून काटने की आदत कम हो जाएगी.

माताओं को जान लेना चाहिए कि हाथों में मिर्च या अन्य कड़वी चीज लगाने से उन्हीं की परेशानी बढ़ेगी. इस तरह बच्चे का अंगूठा चूसना कभी भी कम नहीं होगा, इस के विपरीत हो सकता है कि आप के द्वारा लगाई गई मिर्च आदि के हाथ को वह आंख व नाक में लगा कर एक नई ही मुसीबत खड़ी कर दे.

अतः यदि आप का बच्चा भी इन आदतों से ग्रस्त है तो इन आदतों को समझबूझ कर ही छुड़ाने की कोशिश करें. कभी भी किसी घरेलू डाक्टर की सलाह न लें, कहीं ऐसा न हो कि आप पर भी 'नीमहकीम खतरे जान की उक्ति चरितार्थ हो जाए. ●

यह किस देश प्रदेश की भाषा है

इस स्तंभ में जनजीवन से दूर, उलझी हुई व कठिन भाषा के नमूने प्रकाशित किए जाते हैं ताकि हिंदी को बेजान व किताबी भाषा बनने से रोका जा सके. प्रकाशित उद्धरणों पर दस रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाती हैं. कृपया उद्धरण के साथ प्रकाशक का नाम, प्रकाशन का वर्ष तथा पृष्ठ संख्या भी लिखें.

—संपादक

"सुर और असुरों के मुकुट कुसुमों की रजराजि की परिमलवाहिनी, पितामह के कमंडुल की धर्मरूपी द्रवधारा, धरातल में सैकड़ों सगर सुतों को सुरनगर पहुंचाने की पुण्य डोरी-ऐरावत के कपोल घिसने से जिसके तट के हरिचंदन से तरुवर स्पंदन हो कर सलिल को सुरभित करते हैं, लीला से जहां की सुर सुंदरियों के कुचकलशों से कंपित जिस की तरल तरंग है, नहाते हुए सप्तर्षियों के जटा अटवी के परिमल की पुण्य बेनी हरिण तिलक मुकुट के विकट जटाजूट के कुहर भ्रांति के जनित संस्कार मानो कुटिल भौंरी, जलदकाल की सरसी, गंध से अंध हुई भ्रमर माला, छंदोविचित की मालिनी, अंध तमसा रहित भी तमसा के सहित भगवती भागीरथी हिमाचल की कन्या सी जगत को पवित्र करती हुई, नरक से नरकियों को निकारती इस असार संसार की असारता को सार करती है."

—ठाकुर जगमोहनसिंह : श्यामा स्वप्न (प्रेषक : सुरेंद्रकुमार त्रिपाठी, कानपुर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

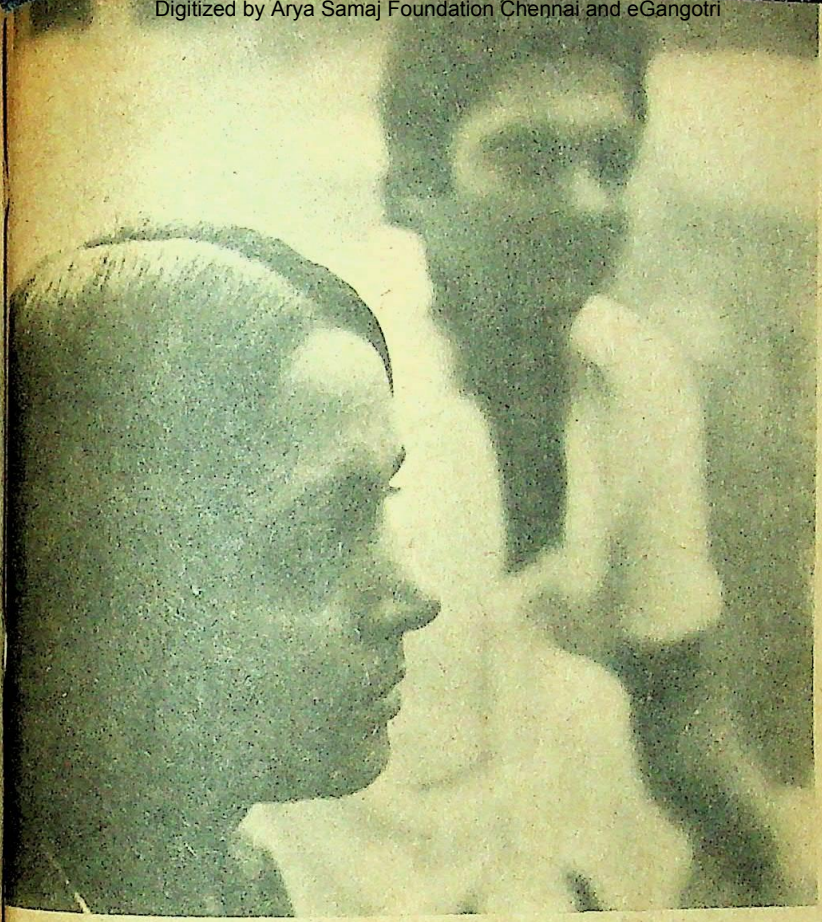

लेख • ऋषिवंश

संबंध और दरार

छोटी सी बात को प्रतिष्ठा का प्रश्न बना लेना क्या पतिपत्नी और परिवार के लिए सुखकर हो सकता है?

प्रायः देखने में आया है कि वर्षों के अच्छे संबंध अचानक किसी छोटी सी बात पर बिखर जाते हैं, और फिर संबंध विच्छेद के बाद हमें सारी उमर पश्चात्ताप होता है कि जरा सी बात को क्यों इतना तूल दे दिया.

अच्छी, उच्च शिक्षा प्राप्त लोग, जो अपने को बड़े खुले दिल का कहते हैं, भी छोटीछोटी बातों को ले कर बहक जाते हैं, जब कि अस्सी प्रतिशत मामलों में तो इस के पीछे केवल एकतरफा संदेह या गलतफहमी होती है.

मेरे एक कवि मित्र की शादी हुई. पत्नी को शादी के पूर्व उन्होंने नहीं देखा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था, परंतु पत्नी सर्वथा उन के अनुकूल थी. दस दिन साथ रहने के बाद पत्नी अपने मायके शादी में चली गई और क्षेत्रीय रीतिरिवाज के अनुसार अब एक साल बाद ही वह ससुराल में आ सकती थी.

मेरे मित्र महोदय ने उस के मायके एक पत्र लिखा और अधीर हो कर पत्र की प्रतीक्षा करते रहे. फिर पत्र का उत्तर न आने पर उन्हें काफी बुरा लगा और मन ही मन जाने क्याक्या धारणाएं करते रहे. वह एकदम गुमसुम रहने लगे. पूछने पर उन्होंने बताया कि क्या बात है और कहने लगे शायद वह मुझे पसंद नहीं करती था उसे और कोई चाहने वाले मिल गए होंगे.

मैं ने उन्हें समझाया कि उस की मजबूरियां हो सकती हैं. हो सकता वह मायके में कहीं दूसरी जगह चली हो या तुम्हारा पता खो गया हो. मेरे कहने पर एक पत्र और लिखने

अकसर गलतफहमि
देती हैं. तो फिर क्यों
में आपस में खुल

राजी हुए तो पता लगा कि उन की पत्नी किसी शहर में संगीत की शिक्षा प्राप्त करने गई है और इस के बाद पता लगा कि पत्नी गांव का पता तो जानती थी पर पति महोदय का शहर का दिया पता मायके में भूल गई थी तथा संकोचवश अपने पिता या मां से पता मांग नहीं सकी थी.

इसी कारण कई गलतफहमियां धीरे बढ़ कर संबंध में एक दरार पैदा कर देती हैं.

ऐसी स्थिति के उत्पन्न होते ही चाहिए कि पैदा हुए संदेह के बारे में खुल कर बात कर के उसे तुरंत खत्म कर दिया जाए.

कुछ लोग इसे अपनी प्रतिष्ठा का प्रश्न बना लेते हैं कि जब वह झुकना चाहती तो मैं क्यों झुकूं. और मुंह से सम्मान की चपेट में बड़े मधुर संबंध पल भर में समाप्त. कभीकभी ऐसा होता है कि दोनों चाहते हैं कि साथ रहें पहल कोई कर दे, पर वही अहम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पतिपत्नी की दूरियां बढ़ा सकते हुए संदेह के बारे में बात कर ली जाए...

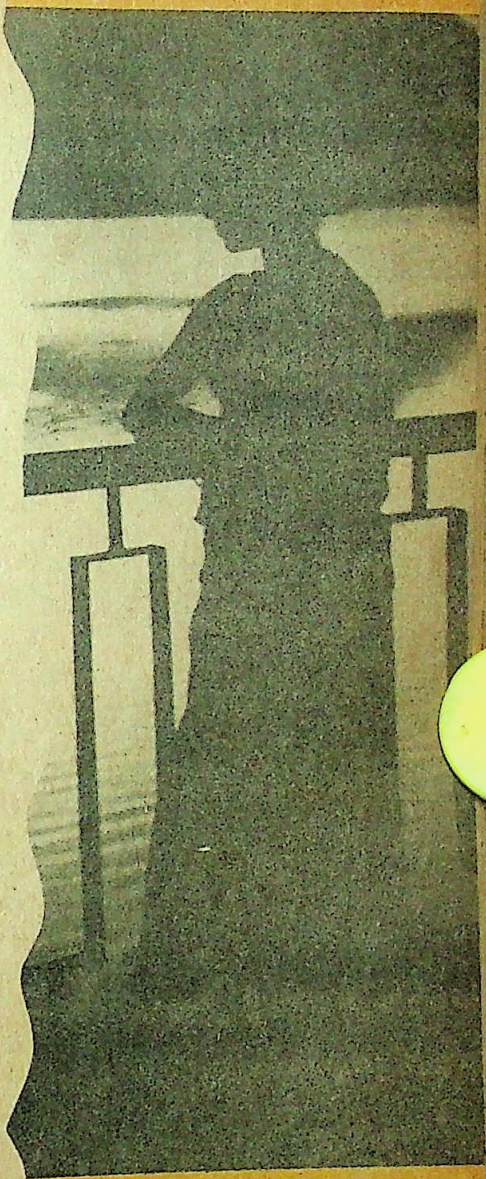

ईर्ष्या करने से रोक देता है. फिर वे अलग हो जाते हैं. इस का दुख उन्हें सारी जिंदगी रहता है.

पतिपत्नियों को तो चाहिए कि वे अच्छी तरह एकदूसरे के विचार, पसंद तथा रुचियों को समझ लें और उसी के अनुरूप चलें. पति महोदय चाहते हैं कि उन की पत्नी हमेशा मेरी ही बात करे, अन्य किसी पुरुष का नाम न ले तो क्या हर्ज है? जब उस के किसी से कोई संबंध नहीं हैं तो किसी का नाम ले कर क्यों अपने संबंधों में दरार डाले?

लोग किसी भी छोटी सी बात को प्रतिष्ठा का प्रश्न बना लेते हैं, जो कि नाजुक संबंधों पर कुठाराघात होता है. लेकिन जिन से इतने नाजुक रिश्ते हैं उन से किस बात का दुराव और छिपाव?

इलाहाबाद में हमारे महल्ले में एक दंपति रहते थे. पतिपत्नी दोनों काफी अच्छे और पढ़ेलिखे थे. उन के यहां पति महोदय के एक मित्र अकसर आते थे.

अचानक पति महोदय को लगा कि उन के मित्र और पत्नी कुछ काफी घुलेमिले रहते हैं. इसी बात पर उन्होंने बिना किसी ठोस प्रमाण के, संदेह के ऊपर, पत्नी को भलाबुरा कह दिया.

पत्नी भी झूठा इल्जाम सुन कर बहक गई और कहने लगी, "हां, मेरे उस से संबंध हैं और भी कइयों से संबंध हैं." बात बढ़ कर तलाक तक पहुंच गई. आज दोनों अलगअलग रहते हैं, इस प्रकार एक बसाबसाया घर 'शक' के कारण उजड़ गया.

इस तरह के शक को मन में पनपने ही नहीं देना चाहिए. जैसे ही कोई शक सिर उभारे फौरन उस का निराकरण कर देना आगे के लिए उचित रहता है, नहीं तो धीरेधीरे सीमा से बढ़ने पर संबंध विच्छेद ही एकमात्र रास्ता रह जाता है.

अतः संबंध को तोड़ने से पूर्व अच्छी तरह सोच लीजिए कि कहीं एक गलत कदम उमर का पश्चात्ताप न बन जाए. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोरंगी कढ़ाई वाला

शाल

हलकी ठंड में पहनने के लिए

यदि आप के पास बची हुई ऊन के रंगबिरंगे टुकड़े पड़े हों तो आप उन से सुंदर, मनमोहक एवं आकर्षक डिजाइन वाला शाल बना सकती हैं. इस से एक तो आप की बची हुई ऊन का भी उपयोग हो जाएगा और दूसरे हलकी ठंड में आप पार्टी वगैरा में भी इस को ओढ़ कर जा सकती हैं. तीसरे, इस में खर्च भी अधिक नहीं है. यह शाल दो रंगों से बनाया गया है—सफेद व कोकाकोला.

सामग्री : मैटी का कपड़ा दो मीटर. ऊन आप जितने भी रंगों का लें पर उन के रंग एकदूसरे से मेलखाते होने चाहिए. मैटी की सूई और कैंची.

बनाने की विधि : (जाली बनाने सर्वप्रथम आप ने जो मैटी का कपड़ा लिया है उस के दो तार छोड़ कर, तार निकालिए. पूरे जाल में इसी प्रकार दो छोड़ कर दो तार निकालते जाइए. इस के बाद आप शाल के दूसरी ओर भी इसी प्रकार दो तार छोड़ कर तार निकाल लीजिए. ऐसा करने से शाल में चौकोर जाली बन जाएगी. शाल के दोनों छोर पर जो धागे बचें उन को मिला कर अलगअलग बांध दीजिए. शाल में जितने रंगों की ऊन का प्रयोग करें वे सभी रंग फुंदने में भी लगाइए. इस के बाद आप शाल में फूल बनाइए. नीचे इस की विधि व ड्राफ्ट दिया है.

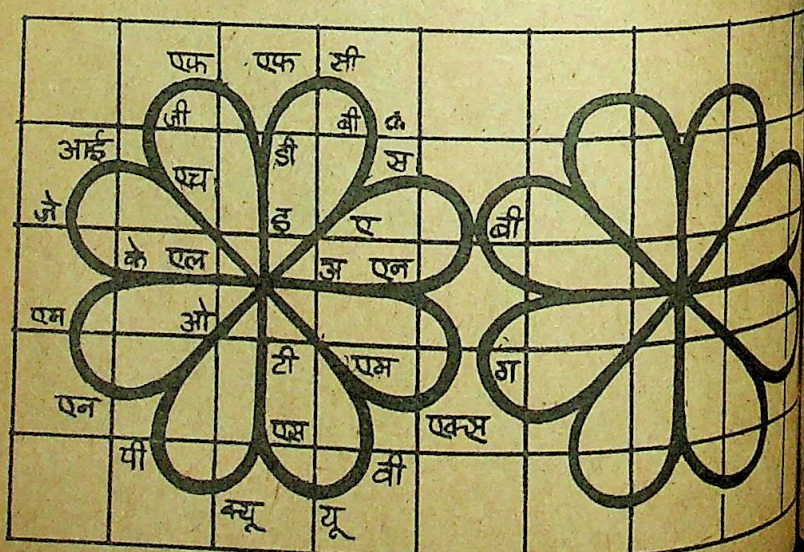

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फूल बनाना : ऊपर चित्र में फूल का जो डिजाइन दिया गया है उसे ध्यान से देखिए. बीच के दो खंड छोड़ कर तीसरे खंड से फूल बनाना शुरू करें. इस खंड का नाम चित्र में जीरो रखा गया है. इस चित्र में जो नाम दिए गए हैं, उन्हीं को देख कर आप डिजाइन बनाइए. यह आठ पंखुड़ियों का फूल है. इसे बनाने का तरीका क्रम से दो पंखुड़ियों में दिया गया है.

पहली दो पंखुड़ियां : सब से पहले आप जीरो में से सूई निकालिए. इस के बाद आप 'ए' लाइन के ऊपर से ले कर 'बी' लाइन के नीचे से सूई निकालिए. फिर 'सी' के ऊपर से ले कर 'डी' लाइन के नीचे से सूई निकाल कर जीरो में डाल कर फिर वापस 'इ' खंड में निकाल लीजिए. फिर 'डी' लाइन के ऊपर से निकाल कर 'इ' लाइन के नीचे डाल कर 'जी' लाइन के ऊपर से ले कर 'एच' के नीचे से जीरो से निकालिए.

दूसरी दो पंखुड़ियां : सूई को फिर 'एच' के ऊपर से डाल कर 'आई' के नीचे से निकालिए. फिर 'जे' के ऊपर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से तथा 'के' के नीचे से निकाल कर 'एल' लाइन के ऊपर से जीरो में डाल कर वापस 'एल' में सूई निकालिए. फिर 'के' लाइन के ऊपर से सूई ले जा कर 'एम' लाइन के नीचे से 'एन' लाइन के ऊपर से 'o' के नीचे से फिर जीरो में निकालिए. इस प्रकार आप की चार पंखुड़ियां तैयार हो गईं. इसी तरीके से आप आठों पत्तियां बनाइए. ये पत्तियां दोदो एकदूसरे के आमनेसामने रहेंगी.

आप फूल को दोहरा करिए. ऐसा करने से फूल सुंदर और दोनों तरफ से एक जैसा लगेगा. नीचे इन्हीं चार पंखुड़ियों को दोहराना बताया गया है.

पहली दो पंखुड़ियां : सूई को जीरो से निकाल कर 'ए' लाइन के नीचे से डाल कर 'बी' के ऊपर से 'सी' के नीचे निकालिए. फिर 'डी' के ऊपर से सूई 'इ' के नीचे से जीरो में निकालिए. फिर 'इ' लाइन के ऊपर से 'डी' लाइन के नीचे से 'एफ' लाइन के ऊपर से निकाल कर 'जी' के नीचे से 'एच' के ऊपर से जीरो में डाल कर वापस में 'एच' में निकाल लीजिए.

दूसरी दो पंखुड़ियां : 'एच' खंड में निकली हुई सूई को 'आई' लाइन के ऊपर से ले कर 'जे' लाइन के नीचे से 'के' लाइन के ऊपर से 'एल' लाइन के नीचे से जीरो में निकालिए. फिर 'एल' के ऊपर से ले कर 'के' लाइन के नीचे से निकाल कर 'एम' लाइन के ऊपर से डाल कर 'एन' के नीचे से जीरो में डाल कर सूई को वापस 'ओ' खंड में निकालिए. इसी प्रकार पूरा फूल डबल कर लीजिए.

लीजिए, फूल तैयार हो गया. अब ऊन को पीछे ले जा कर गांठ बांध कर सफाई से काट दीजिए. इस प्रकार हर रंग के फूल बनाइए. इस शाल को आप दोनों ओर से ओढ़ सकती हैं. ●

—सुमन मिसुरिया

पासा पलट गया

एक बार एक लड़की अध्यापिका पद के लिए इंटरव्यू देने गई. वहां प्रत्याशियों में सिर्फ एक लड़की और थी, जो उस की मित्र ही निकली. दोनों ने अपने मन में सोचा 'अगर मैं अकेली रहूंगी तो मेरी ही नियुक्ति हो जाएगी.' यही सोच कर दोनों उस नौकरी की बुराई करने लगीं. कहने लगीं, "यहां का तो वातावरण ही अच्छा नहीं है. मैं तो आ कर पछता रही हूं. इस से अच्छा तो यही है कि वापस लौट जाएं."

दोनों अपनेअपने घर जाने के लिए काफी दूर तक तो साथसाथ चलती रहीं, फिर अपनेअपने घर चली गईं. 'अब मैं अकेली रह गई हूं,' यह सोच कर दोनों पुनः कालिज गईं.

इसी बीच एक अन्य लड़की कालिज पहुंच चुकी थी. उसे अकेला प्रत्याशी देख कर उस की नियुक्ति कर ली गई थी.

दोनों लड़कियां कालिज में एकदूसरे को देख कर इतनी शर्मिंदा हुईं कि नजर नहीं मिला सकीं. दोनों लड़कियां मन ही मन अपनी स्वार्थपरता को कोस रही थीं.

—मिथिलेश अग्रवाल, हाथरस

✦

मेरा एक दोस्त फिल्म देखने व सिगरेट पीने का बहुत शौकीन है. एक दिन हम लोग फिल्म देखने गए. हम पान खा कर सिगरेट सिनेमा हाल में ले गए. कुछ समय पश्चात उस ने सिगरेट जलाने के लिए अगली सीट पर बैठे आदमी से माचिस मांगते हुए कहा, "ए भैया, जरा दियासलाई देना."

दियासलाई ले कर वह सिगरेट जलाने लगा तो प्रकाश में उस ने देखा कि जिस से दियासलाई मांगी थी, वह उस के पिताजी ही थे.

—राजेंद्रकुमार उपाध्याय, खिरकिया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

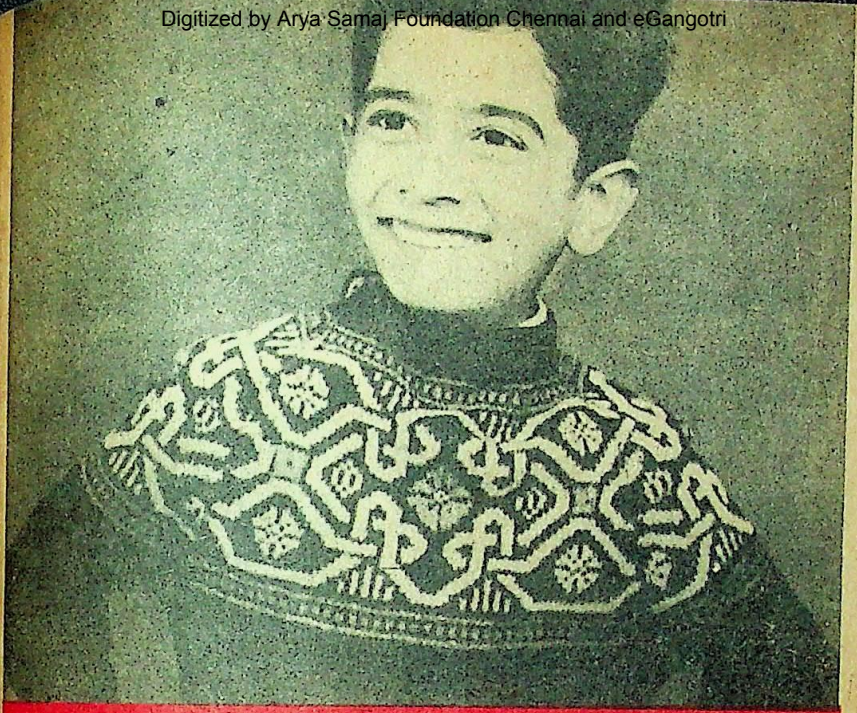

स्वेटर बच्चे और बड़ों के लिए

इस स्वेटर को युवक एवं बालक दोनों ही पहन सकते हैं.

सामग्री : नेव्ही ब्ल्यू रंग की 8 औंस ऊन, ब्राइट अथवा लेमन यलो 1 औंस एवं लाल एक औंस. इस प्रकार 3 रंग की कुल 10 औंस ऊन.

ग्राफ में बने नीले क्रास की जगह पीली ऊन लगानी है एवं लाल क्रास की जगह लाल ऊन लगानी है.

आगेपीछे के हिस्से : नेव्ही ब्ल्यू ऊन से 10 नंबर की सलाई से बार्डर में 90 फंदे डाल लीजिए. अपनी पसंद के अनुसार चौड़ा बार्डर बुन कर 10 फंदे बढ़ा लीजिए. इस प्रकार 100 फंदों का सादा (एक सीधी एवं एक उलटी सलाई) स्वेटर मुड्ढे तक बुनिए एवं ग्राफ में दिया डिजाइन डालिए.

आस्तीन : नेव्ही ब्ल्यू ऊन से 35 फंदे डालिए. पसंदानुसार चौड़ा बार्डर बुन कर 5 फंदे बढ़ाइए. प्रत्येक चौथी सलाई पर 1-1 फंदा बढ़ा कर मुड्ढे तक बुन लीजिए. मुड्ढे से पहले करीब 80 फंदे होने चाहिए. तत्पश्चात ग्राफ में दिया हुआ डिजाइन डाल लीजिए. फिर देखिए सुंदर सा स्वेटर तैयार हो जाएगा. ●

—उषा चौहान

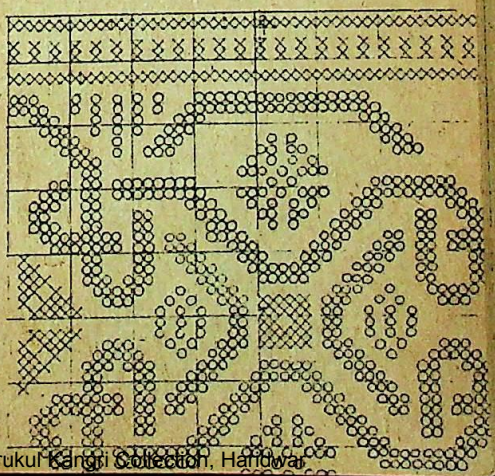

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रंगबिरंगा स्वेटर

आकर्षक उम्दा डिजाइन

इस स्वेटर में तीन बेलें डाली गई हैं. पहले 12 नंबर की सलाई से $2\frac{1}{2}$ इंच चौड़ा बार्डर (रिब) बुनिए. इस के बाद 10 नंबर की सलाई में फंदे उतारिए व बेल 'क' डालिए. इस के बाद क्रमशः 'ख' व 'ग' डालिए. प्रत्येक नमूने के बाद दोदो सलाइयां भिन्नभिन्न रंगों

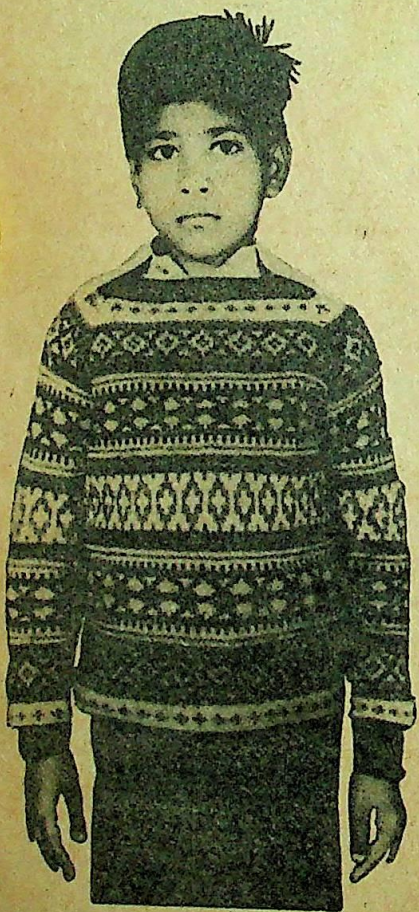

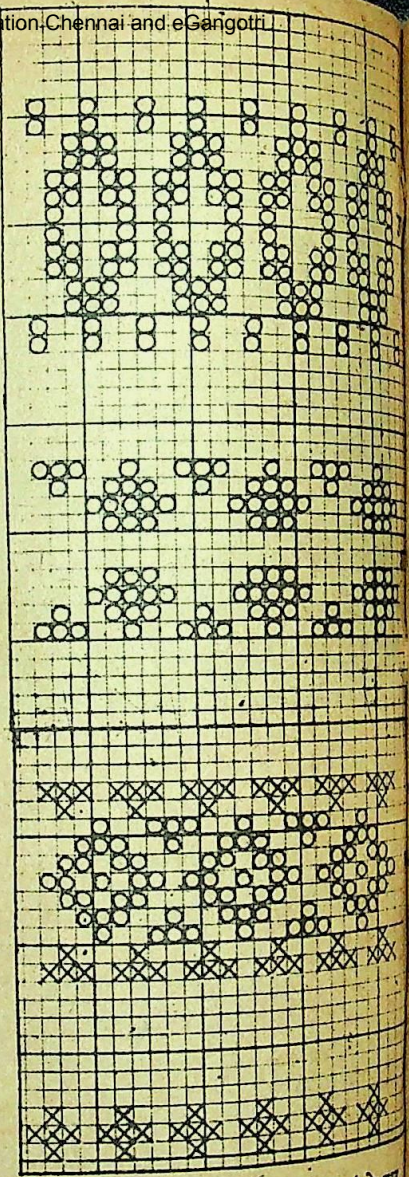

की ऊन से बनाइए. नमूने 'ग' के बाद पुनः क्रमशः 'ख' व 'क' डालिए. इसी प्रकार से बांहें बुनिए. सभी चीजें पूरी बनाने के बाद सभी फंदे एक सलाई में उतारिए. फिर सिर निकलने लायक चपटा गोल (नाव आकृति का) गला रख कर उस पर जिस रंग से रिब बुनी गई है उसी रंग की ऊन से उसी तरह पट्टी बना कर गला तैयार कीजिए. लीजिए सुंदर सा पुलोवर तैयार है.

—विमला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंधेरे से उजाला

कहानी - लीला रूपायन

पूरी कालोनी में बात फैल गई थी. जगहजगह पुरुषों के झुंड खड़े हुए थे. सभी के पास एक ही विषय था, 'सज्जन सिंह के यहां छापा पड़ गया है,' लेकिन विश्वास कोई भी नहीं कर पा रहा था कि ऐसा हो सकता है.

पूरी कालोनी में उन का कोई भी मित्र नहीं था, लेकिन दुश्मन भी कोई नहीं था. हां, कुछ लोग नाराज जरूर थे. वे भी ऐसे लोग थे, जो सज्जन सिंह मे काम करवाने गए थे और फिर बेरंग लौट आए थे. इसी वजह से कोई विश्वास नहीं कर पा रहा था, क्योंकि वह तो

बचपन से जूठन, थप्पड़ और गालियां खा कर भी निनू के मन में सिंह परिवार के प्रति गहरा लगाव था...सज्जन सिंह के बढ़ते जुल्मों से तिलमिला कर उस ने नई योजना बनाई.

मैं ने निनू को समझाया, "तुम कमला को ला कर अपनी बाईसाहब को मिला दो."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बदनाम थे कि सज्जन सिंह बड़े बेलिहाज आदमी हैं.

कोई पड़ोसी हो, या रिश्तेदार, वह किसी का काम नहीं करते. दो-टूक यही उत्तर देते हैं, "हर आदमी को अपनी लगन और मेहनत से आगे बढ़ना चाहिए, सिफारिश से नहीं." रिश्वत के नाम से वह लालपीले हो जाते थे. इसी लिए उन्होंने कालोनी में किसी से व्यवहार नहीं रखा था. उन का कहना था, "लोग दूसरों के यहां भले ही कुछ कम भेजें या न भेजें, लेकिन मेरे यहां टोकरे, टोकरियां भर कर चीज दे जाते हैं. यह रिश्वत नहीं तो क्या है. पहले मुझे माल खिलाते हैं, कुछ दिन बाद काम की फरमाइश ले कर चले आते हैं."

यही हैरानी का विषय था. जिस इनसान ने कभी आज तक किसी से रिश्वत नहीं ली, उस के यहां छापा कैसे पड़ सकता है. रहनसहन भी कोई बहुत बड़े स्तर का नहीं कि चांदी के दरवाजे हों या चांदी के बरतनों में खाते हों. नौकरों की भीड़भाड़ भी नहीं, वह भी बस ले दे कर दो हैं. एक घर का सारा काम करने वाली और एक खाना बनाने वाला निनू.

निनू भी इन के पास पूरे पंदरह साल से है. दस साल का था तो इन के पास आया था. तभी सज्जन सिंह की पत्नी ने बताया था, "निनू का बाप हमारे साहब के पास चपरासी है, उस की औरत नहीं है. बस यही एक लड़का है, और यह भी बुरी संगत में पड़ कर बिगड़ गया है. उस ने हमारे साहब से कहा है, "इसे अपने घर में नौकर रख लो, साहब, छोटी उमर में पत्ते खेलने लग गया है. तंबाकू भी पीने लगा है. आप के घर में रहेगा तो बुरी संगत से छूट जाएगा, लड़के की जिंदगी बन जाएगी."

पंदरह साल पहले तक तो स्वयं सज्जन सिंह और उन का परिवार पूरी कालोनी में सब के यहां आतेजाते थे. सभी उन के स्नेह और हमदर्दी के कायल थे. विशेष कर हमारे यहां तो उन का आनाजाना और भी अधिक था, क्योंकि पड़ोसी होने के अलावा दूर की रिश्तेदारी भी थी. यह तो लगन और मेहनत से जब सज्जन सिंह ऊंचे ओहदे पर पहुंच गए तो हर एक से मिलते रहना उन्हें खतरे से

खाली नहीं लगा. दोस्ती होगी तो लोगों के काम करने पड़ेंगे. लोगों के काम करने शुरू किए तो कई दुश्मन भी पैदा हो जाएंगे और बदनामी भी हो सकती है. बस इन्हीं कारणों से वह तटस्थ हो गए थे.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निनू को उन्होंने कभी प्यार नहीं दिया. बच्चों से ले कर बड़ों तक सभी यही कहते थे, "निनू...निनू तो पूरा गधा है. कोई काम ढंग से नहीं करता, बस खाना ही जानता है." सो उन के घर में निनू का नाम सभी भूल गए थे. उस का नाम गधा पड़ गया था.

निनू उन्हीं का क्या, सारे महल्ले का काम कर देता था. उसे भी चार पैसों का, या दो रोटियों का लालच होता था.

वही कहता था, "आज मेरे हाथ से कप का डंडी फूट गया और हमारा बाईसाहब ने हम को खाना नहीं दिया. काम बहुत किया, इसी लिए बहुत भूख सताता है."

एक रोज हमारे नौकर हरिया ने आ कर बताया था, "सुना, बाईसाहब, आज निनू को उस की बाईसाहब ने बहुत मारा."

"क्यों मारा, रे," मैं हैरानी से बोली थी.

निनू रोता हुआ हरिया के पास आया और बोला, "क्या तेरे को भी साहब लोग, बच्चा तंग करता है, मारता है."

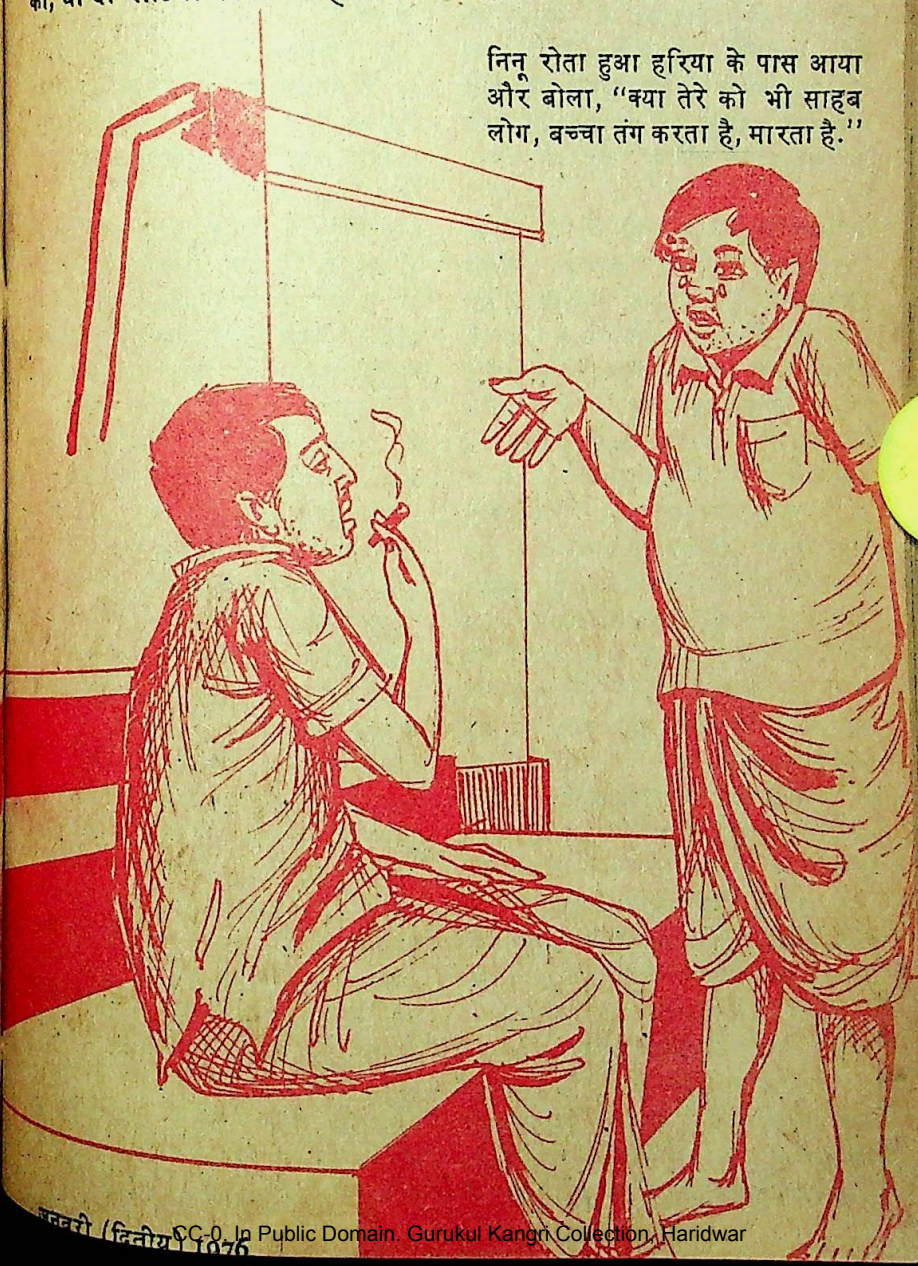

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"निनू से गाले हाला सटका फट गया था. बेचारे के गाल पर पूरा पंजा गड़ गया है. उस ने चायं भी नहीं पी. मैं ने उसे पिलाई है ठेले पर जा कर," हरिया दुख से बोला था.

बस इसी तरह मार खाते, भूखे रहते, निनू जवान हो गया था. सभी बच्चे जवान हुए थे. सज्जन सिंह के भी और कालोनी के भी. सभी तो तंदुरुस्त नजर आते थे, खिलेखिले से, लेकिन न जाने निनू की कैसी जवानी थी, पीलीपीली और दबीदबी सी, चलता भी ऐसे था जैसे भगवान ने उस की गरदन और कंधों को एक ही लेवल पर रख दिया हो. कभी उस की गरदन तनी हुई नहीं देखी थी.

सज्जन सिंह का भले ही परिवार सहित सब से संबंध टूट गया हो, लेकिन निनू अभी भी आता था. कभीकभी हम उस की बातों का मजा लेने के लिए यों ही पूछ लेते, "क्यों रे, निनू, पहले तो तेरे साहब, बाईसाहब और बच्चे सब से मिलतेजुलते थे, अब क्या हो गया? वे किसी से बोलते नहीं."

"हमारा साहब आप को मालूम, बड़ा आदमी हो गया है. परीक्षा में बैठा था, पास हो गया. कोई हमारी माफिक गधा थोड़े ही है. अभी तो और परीक्षा देगा. फिर और बड़ा हो जाएगा. तब तुम लोगों को मालूम, गाड़ी भी नया आ जाएगा." निनू सब कुछ भूल कर बड़े उत्साह से उत्तर देता.

"तुम्हें कैसे पता, बड़ा हो जाएगा और नई गाड़ी लाएगा?" हमारा हरिया पूछता.

"तू भी हमारी माफिक गधा है. अरे, हम को कैसे नहीं मालूम होगा. हम क्या उस घर का मेंबर नहीं है? सब लोग हम से बोलता है. निनू देखा, तुम कभी जिंदगी में कुछ नहीं कर सकेगा. हमारा पापा को देखो. हम को देखो. कितना आगे निकल गया है. कितना बड़ा आदमी बन गया है. यह सब अक्ल से आता है. तू तो बिलकुल गधा है. कभी कुछ नहीं करेगा. देखना, अभी हमारा नया गाड़ी आएगा," निनू पूरी कथा सुना देता.

एक दिन निनू रोतारोता आया था और सीधा हरिया के पास जा कर बोला था, "बता हरिया, तेरे को भी साहब लोग और बच्चा लोग तंग करता है, मारता है."

"नहीं तो."

"गधा, सूअर, पाजी, कुछ नहीं बोलता?"

"नहीं तो."

"तो हम को सब लोग ऐसा क्यों बोलता है. क्या हम सूअर दिखता है, पाजी दिखता है, गधा दिखता है," वह सिसक उठा था.

नहीं, निनू, तू तो बहुत अच्छा आदमी है," हरिया ने प्यार से कहा था.

"खाक अच्छा आदमी है. अच्छा आदमी होता, तो क्या सभी हम को जूता मारता? हम को डूब कर मर जाना चाहिए," वह रोतेरोते बोला था.

"तुम्हारे साथ वे लोग ऐसा सलूक क्यों करते हैं, निनू? तू जानबूझ कर सताता है उन्हें या गलती से हो जाता है," हरिया ने हमदर्दी से पूछा था.

"गलती से हो जाता है, हरिया. हम बहुत कोशिश करता है अच्छा बनने का, लेकिन क्या करें, यार. रात को भाजी में नमक ज्यादा गिर गया, तो भइया साहब ने चप्पल मार दिया."

"तू इन की नौकरी क्यों नहीं छोड़ देता, निनू? दूसरी तलाश कर ले. मुझ से बोल, मैं ढूंढ़ दूंगा," हरिया ने सलाह दी.

"नहीं रे, बाबा, हम ने इन का नमक खाया है. नमकहरामी करेगा, तो बाबा की आत्मा को बहुत दुख होगा. फिर हमारा इधर कौन है? किधर जाएगा. सभी लोग देस में रहता है. बाबा था, वह भी भगवान को प्यारा हो गया."

"तुम्हारी मां."

"वह तो हम को दो साल का छोड़ कर भगवान के घर चला गया था. बाबा ने हम को बड़ा किया. हम ने फिर भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाबा को बहुत तंग किया. हम बहुत छोटा था तो बाबा ने झगड़ा कर के अपना भाई लोग और महतारी को छोड़ दिया था."

"क्यों?"

"वह लोग बाबा को दूसरी शादी रचाने को बोलता था. बाबा ने उन का नहीं सुना. झगड़ा हो गया, बाबा ने ही हम से एक दिन गुस्सा में बोला था, 'तुम्हारा वास्ते हम ने शादी नहीं किया और तुम भी इतना नालायक निकल गया. हमारी जिंदगी बरबाद कर दिया.' अभी यही हमारा मांबाप है. अपने घर का मेंबर समझ कर डांट देता है. हम गलती नहीं करेगा, तो नहीं डांटेगा."

हरिया के साथ हो रही उस की बात मैं सुन रही थी. उस की ईमानदारी से प्रभावित हुए बिना मैं भी नहीं रह सकी. मैं ने सोचा, आजकल के नौकर मार तो दूर की बात है, मालिकों की डांट तक नहीं सुनते. एक के दस जवाब देते हैं. एक यह निनू है, जो मार खा कर भी उन की देहरी नहीं छोड़ना चाहता. मुझे याद है, एक दिन मेरे छोटे बच्चे ने स्कूल से आ कर हरिया से खाना मांगा था. शायद उस को बहुत भूख लगी थी. हरिया को देने में थोड़ी देर हो गई थी तो बच्चा गुस्से से बोला था, "जल्दी देता है कि बुलाऊं मम्मी को," तभी हरिया गुर्रा कर बोला था, "तो जाओ न, रोका किस ने है. आगे से मम्मी से ही ले लिया करो, मैं निनू की तरह गधा नहीं हूं जो तुम्हारे रोब में आऊंगा."

मैं उस समय तो चुप हो गई थी. बाद में बच्चे को ही समझाया था, "देखो, किसी से भी काम करवाना हो तो, गुस्से से नहीं, प्यार से करवाना चाहिए."

एक दिन निनू अपने कुरते के अंदर कटोरी छुपा कर लाया था. आते ही आंखों में आंसू भर कर बोला था, "बाईसाहब, आज हमारा फैसला करो. यह देखो, भाजी क्या खराब बना है...अच्छा है, बाईसाहब, जूठा नहीं है, चख कर देखो."

"लेकिन, निनू, हुआ क्या?" मैं ने उत्सुकता से पूछा था.

"आज साहब का दोस्त लोग खाना खाने आया था. बड़ा सेठ लोग था. हम ने आज बहुत मेहनत किया, बाईसाहब. बहुत तबीयत से खाना बनाया. सब ने हमारा तारीफ किया. एक सेठ साहब बोला, 'निनू, तुम इतना अच्छा खाना बनाता है, इस में क्या डालता है? हमारा नौकर लोग खाली बोम मारता है. काम कुछ नहीं करता.'

"हम ने बोला, 'हम बहुत मेहनत करता है, साहब, उस में अपना प्यार डालता है.'

"बस सब के जाने के बाद बाईसाहब ने हम को बहुत डांटा, बोला, 'अपने मुंह से अपनी तारीफ करता है. बेवकूफ, खाना अच्छा नहीं बना था, वह तुम्हारा मजाक बनाता था.'

" 'नहीं, वह खुले दिल से हमारा तारीफ करता था,' " हम ने बोला.

" 'इतनी बड़ी जुबान चलाता है, नमकहराम,' और साहब ने हमारा गाल पर थप्पड़ मार दिया, बाईसाहब."

करीब से गुजरा...

तेरे करीब से गुजरा हूं इस तरह कि मुझे
खबर भी न हो सकी मैं कहां से गुजरा हूं.
—जगन्नाथ आजाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"निनू, तू इतनी लताड़ सह कर भी उस घर को छोड़ना नहीं चाहता. तेरा जी नहीं जलता?" मैं ने दुखी मन से कहा था.

"जलता है, बाईसाहब, खूब जलता है. कभीकभी रात को नींद नहीं आता है. हम कभीकभी गांव जाने की भी सोचता है. वहां हमारा तीन चाचा है. उन का पांव पकड़ेगा, माफी मांगेगा, हमारा बाबा का खेत है उधर, चाचा लोग से मांग लेगा. लेकिन फिर मन धिक्कारता है, बाईसाहब, 'निनू तू नमकहरामी करेगा तो तेरे बाबा की आत्मा को बहुत दुख होगा. बाबा की आत्मा तुम्हें कभी माफ नहीं करेगा.' हम कितना छोटा था, जब हमारा साहब ने हमें अपने पास रखा था. इस घर में सब को हम प्यार करता है. बड़ा भइया बड़ा बहनजी के संग हम खेलता था. उन के लिए हम घोड़ा बनता था. अब उन को छोड़ कर कैसे जाएगा. बड़ा बहनजी की, बड़ा भइया की शादी होने वाला है. इस के बाद हम साहब से बोलेगा, एक दिन हमारी भी वह शादी बनाएगा," निनू एकदम जैसे अपना सब अपमान भूल गया था.

"किस से बनाएगा रे शादी?" मैं ने हंस कर पूछा था.

"कमला से."

"कौन कमला?"

"वह दूसरी कालोनी में काम करता है. हम बाजार में सौदा लेने जाता है, तो उधर मुलाकात होता है. हम दोनों का दोस्ती हो गया. फिर दोनों का मरजी हुआ कि शादी रचाएगा, अपना घर बनाएगा," और निनू शरमा कर चला गया था.

एक दिन निनू बहुत उदास आया था. पूछने पर उस ने बताया था, "कमला से हमारा शादी नहीं होगा, बाईसाहब."

"क्यों, कमला ने मना कर दिया?"

"नहीं, हमारा बाईसाहब ने मना कर दिया. वह बोलता है, 'तू गधा है, तू क्या शादी करेगा, उस लड़की का जिंदगी खराब कर के रख देगा. तू निकम्मा आदमी जिंदगी में कुछ नहीं कर सकता,' क्यों बाईसाहब, हम क्या सच में बिलकुल निकम्मा है?"

"ऐसा ही होता है, निनू, बड़ा आदमी अपने स्वार्थ में जब अंधा हो जाता है तो वह छोटे लोगों को निकम्मा, गधा और सूअर समझने लगता है. उस की अपनी इनसानियत मर जाती है, निनू. इसी लिए वह दूसरों को भी इनसान नहीं समझता," मैं दुखी मन से बोली थी.

"हम क्या करें, बाईसाहब. कमला बोलता है, 'जल्दी हां करो, नहीं तो हमारा महतारी दूसरी जगह बात पक्की कर के हम को रुखसत कर देगा. तब तुम कुछ नहीं कर सकेगा.' बाईसाहब, सभी लोग ऐसा बोलता है, 'तुम कुछ नहीं कर सकेगा.' कमला भी अब ऐसा बोलता है," निनू दुख से बोला था.

"तुम कमला को ला कर अपनी बाईसाहब से मिला दो. जब कमला बोलेगी, हम निनू से शादी करने को राजी है, तो तुम्हारी बाईसाहब फिर मना नहीं करेगी," मैं ने समझाया था.

"नहीं, नहीं, यह गलती हम नहीं करेगा. उस के सामने यह लोग मेरा अपमान कर देगा, तो हम कमला से आंख नहीं मिला सकेगा. हम ने उस से बहुत झूठ बोला है, बाईसाहब. हम ने कमला को बताया है, हमारा घर का लोग हमें अपना बच्चा का माफिक प्यार करता है. अब कमला के सामने हम अपना बेजती नहीं करवाएगा. फिर कमला हमारी क्या इज्जत करेगा?"

फिर कितने ही दिनों तक निनू न तो हमारे घर आया था, न ही हरिया से मिला था. मैं ने एक दिन हरिया से पूछा था, "निनू क्या यहां से चला गया? कभी दिखता नहीं."

उसी ने कहा था, "सुमीता बहनजी का रिश्ता तय हो गया है. दीवाली के दिन लड़के वाले शगुन लेने आ रहे हैं. उन के मकान की पुताई चल रही है न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो साफसफाई में लगा होगा. आतेजाते तो दिखता है पर बोला नहीं कभी, बहुत उदास सा लगता है."

और दो दिन बाद ही यह घटना घट गई थी. हरिया ही भागाभागा आया था और बोला था, "निनू के साहब के घर छापा पड़ गया, बाईसाहब."

"तुझे कैसे पता चला?" मैं हैरानी से बोली थी.

"मैं भाजी लेने जा रहा था तो राम-बाबू के नौकर ने कहा था. आप देखो तो सही, पूरी कालोनी में इसी छापे की चर्चा है. सभी झुंड के झुंड बना कर खड़े बातें कर रहे हैं?"

मन को बड़ा धक्का लगा. इतने भले आदमी के साथ किस ने दुश्मनी निकाली होगी? भले ही वह किसी का काम न करते हों, लेकिन इस तरह किसी को जलील तो नहीं करना चाहिए. दो दिन बाद ही बेटी का रिश्ता होने वाला है. आदमी के कुछ अपने उसूल भी होते हैं.

मैं ठगी सी दरवाजे में आ कर खड़ी हो गई थी. इतने में ही सामने से निनू आता दिखाई दिया. आज उस के चलने के ढंग को देख कर मैं हैरान रह गई. हमेशा दोनों कंधों में दबी रहने वाली गरदन इतनी ऊंची लग रही थी, जैसे किसी ने खींच कर ऊपर कर दी हो. कैसे छाती फुलाए वह शान से चला आ रहा था. आज उस की चाल में जो मस्ती थी, वह तो कभी देखने को नहीं मिली थी. क्या सज्जन सिंह को इतनी मुसीबत में देख कर इसे खुशी हो रही है? तब तो सच-मुच में यह गधा है.

मुझे दरवाजे में खड़ा देख कर वह मेरे पास ही चला आया और हंस कर बोला, "सुना, बाईसाहब?"

"हां रे, यह सब कैसे हो गया? सुमीता का तो रिश्ता होने वाला था. इतने अच्छे लोगों के साथ बुराई कर के किसी को क्या सुख मिला होगा?"

"आप उन को अच्छा बोलता है, बाईसाहब?" निनू आश्चर्य से बोला था.

जब महिलाएं फिल्म देखती हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का उपकार भले ही न किया हो, लेकिन किसी को दुख भी तो नहीं दिया. कभी किसी से रिश्वत नहीं ली, नाजायज काम नहीं किया."

"आप नहीं जानता, बाईसाहब. वह पिस्सू है पिस्सू. वह मच्छर की तरह ऊपर से नहीं काटता, पिस्सू की तरह कपड़ा के अंदर घुस कर काटता है, ताकि जिस को काटे वह तड़फता रहे, लेकिन कपड़ा खोल कर अपना तकलीफ किसी को न दिखा सके. छुप कर खून पीता है ताकि कोई पकड़ कर मसल न दे. यह गाड़ी, जमीन, जेवर, कपड़ा, किधर से आता है, आप को मालूम? रोज पार्टी होता है किसलिए, आप को मालूम? बड़ाबड़ा सेठ लोग आता है, जो खाने की प्लेट के नीचे रुपया छोड़ जाता है, कुरसी की गद्दी के नीचे जेवर छोड़ जाता है, ऐश ट्रे में हीरे की अंगूठी डाल जाता है."

"क्यों रे, तू देखता है सब कुछ?"

"हम उस घर का मेंबर है, बाईसाहब. गधा है तो क्या हुआ. पर हम उतना बेवकूफ नहीं है. सब के जाने के बाद हमारी बाईसाहब चील की माफिक सब बटोर लेता है. हम एक आंख बंद कर के दूसरा आंख से सब कुछ देखता है. पर चुप रहता है."

"उन्हीं में से किसी ने...?" मैं ने बात अधूरी छोड़ दी थी.

"नहीं, बाईसाहब, यह सब हम ने किया," उस ने मेरी बात पूरी कर दी.

"तुम ने, मैं आंखें फाड़े उसे देखती रह गई. तू ने नमकहरामी की है, निनू."

"नहीं, बाईसाहब. हम ने नमकहरामी नहीं की. पूरा एक महीना हो गया. हम ने इन का नमक खाना छोड़ दिया. इन का खाना नहीं खाया."

"क्या शादी कर ली? कमला खाना खिलाती थी?"

"शादी नहीं किया. कमला का भी नहीं खाया. ढाबे से खाता था. हमारी पगार का पैसा हमारे पास है. हम सोचता था कि पैसा होगा, तो कमला को रख पहनाएगा, इसी लिए खर्चा नहीं कर था. एक रोज हम ने बाईसाहब को बोला था, 'हम कमला से जरूर शादी करेगा उस की मां ने हम को बोला है, तुम करेगा, तो वह अपनी बेटी की शादी दूसरी जगह कर देगा.' आप ही बोलो बाईसाहब, हम यह कैसे देख सकेगा हमारा दुलहन को कोई दूसरा ले जाए तो हम क्या नामर्द है. आप हमारा शादी नहीं करेगा, तो हम यहां से चला जाएगा और कमला के साथ शादी बना कर अलग से रहेगा.

"तभी बाईसाहब ने हमारा गाल पर थप्पड़ मार दिया था और बोला 'नमकहराम, तू नौकरी छोड़ेगा, शादी करेगा, हम तेरे ऊपर चोरी लगा कर जेल करवा देगा.'

" 'हम ने चोरी नहीं किया तो जेल बंद करवा देगा' " हम को भी ताव आ गया था.

" 'वह तरीका हमें आता है.' बाईसाहब चिल्ला कर बोला था.

"हम को सभी जानता है, हम ऐसा काम नहीं कर सकता. हम इस घर का पुराना नौकर है.'

" 'तू कुछ नहीं कर पाएगा. दूर हो जा मेरी नजरों से. तेरे जो पर निकल आए हैं मैं उन्हें काट दूंगी. तू निकम्मा आदमी क्या करेगा, कुछ नहीं कर सकता. मैं कमला को बुला कर सब कुछ बता दूंगी कि यह तो गधा है, यह तेरा जीवन खराब कर देगा.'

"हम को बहुत गुस्सा आ गया था बाईसाहब, हम कुछ भी सह सकता है जूते खा सकता है लेकिन कमला से अलग नहीं हो सकता. हम को सब लोग बोलता है तुम कुछ नहीं कर सकता. हम ने सोचा, अब हम कर के बताएगा. हम सब को दिखा देगा. हम ने साहब के घर का खाना छोड़ दिया. हम ने नमकहरामी नहीं किया. अभी हम चूक जाता तो हमारी जिंदगी खराब हो जाता. हम ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोशिश किया. पुलिस को जा कर बता दिया. हम ने उन को बोला, "हम उन का पुराना नौकर है, झूठ नहीं बोलेगा. हम पर विश्वास करो. आप सब लोग की धरपकड़ करता है. हमारा साहब को भी पकड़ो, हम बताएगा सब कुछ किधर रखता है.

"हम ने अपनी बाईसाहब की ललकार को खरा कर दिया. वह बोला था, तू कुछ नहीं कर सकता, हम तुझे पकड़वा देगा.' हम ने बोला था, 'हमारे अंदर के आदमी को ललकारो मत. वह सोया है. उसे सोने दो. वह जग जाएगा तो बहुत अनर्थ हो जाएगा.' वह हंस दिया, हम को गधा बोला, और बोला, 'तू कुछ नहीं कर सकता,' हम ने कर के बता दिया.

"अब हम शादी बनाएगा. फिर हम कमला को ले कर अपने गांव चला जाएगा. हमारे बाबा का उधर जमीन है. हम बाबा के भाई से अपनी जमीन वापस लेगा. उधर खेती करेगा."

"वह तुम्हें जमीन देंगे, निनू?" मैं ने संशय में पूछा था.

"क्यों नहीं देगा, बाईसाहब. हम सच में गधा नहीं है. जमीन पर हमारा हक है. वह शराफत से नहीं देगा तो हम छीन लेगा. वह हमारा है, हमारे बाबा का. अब हमारा अंदर का सोया आदमी जाग उठा है. आप ने भी देख लिया, बाईसाहब, हम क्या नहीं कर सकता," और निनू यह कहता हुआ उसी मस्त चाल से चला गया. मैं जाते निनू को देखती रह गई और सोचती रही, निनू अब सब कुछ कर सकता है. ●

ये पत्नियां

एक दिन मैं अपने एक मित्र के घर पहुंचा तो बातों ही बातों में वह बोले, "क्या बताऊं, यार, आजकल जिंदगी का कोई भरोसा नहीं. पता नहीं मैं कब मर जाऊं."

मेरे कुछ कहने से पहले ही उन की पत्नी आई और मुझ से बोली, "इन्हें आप ही समझाइए न, भाई साहब. मैं तो इन से कहकह कर थक गई कि तुम अपना बीमा करा लो. लेकिन यह मानते ही नहीं." मैं तो मित्र और उस की पत्नी का मुंह ही देखता रह गया.

—नारायण सचदेव, अतर्रा

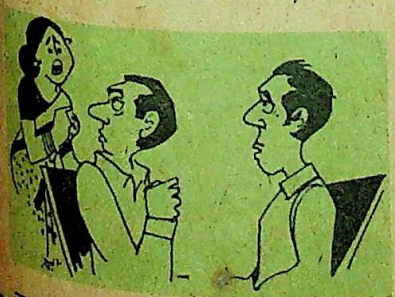

एक बार मेरे चाचाजी और चाचीजी में झगड़ा हो गया. रात को चाचाजी ने चाचीजी से खाना खाने के लिए कहा. पर चाचीजी ने कुछ न खाने की कसम खा ली.

चाचाजी ने ज्यादा मनाना उचित न समझ कर खाना खाया और सो गए. चाचाजी भी सो गईं. रात को रसोईघर में बरतन गिरने की आवाज सुन कर चाचाजी की नींद खुल गई. उन्होंने लाइट जला कर देखा कि चाचीजी भोजन पर हाथ साफ कर रही हैं. चाचाजी यह दृश्य देखते ही हंस पड़े. चाचीजी का चेहरा तो उस समय बस देखने ही लायक था.

—रमेशचंद्र मीना, इटारसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अमरीका की स्वतंत्रता के 200 वर्ष

(पृष्ठ 41 से आगे)

के अंत और 17वीं शताब्दी के शुरू से उन बस्तियों की नींव रखी, जिन्होंने 1776 में मिल कर संयुक्त राष्ट्र अमरीका का निर्माण किया, उन्हें अमरीका का पिता कहा जाता है. जिन जलपोतों में वे आए, जेम्ज जिन स्थानों पर वे सब से पहले उतरे और विलियम वर्ग जैसे स्थान, जहां पर उन्होंने अपनी राजधानी बनाई, को अपने पुराने रूप में खड़ा कर के उन्हें राष्ट्रीय यादगारों के रूप में प्रतिष्ठा प्रदान की गई है.

विलियम वर्ग में तो राकफेलर फाउंडेशन ने करोड़ों डालर खर्च कर के 17 वीं शताब्दी का वातावरण पैदा करने का सफल प्रयत्न किया है. पर्यटकों को वहां पर एक दिन में अमरीकी इतिहास, अमरीका तथा अमरीका के निर्माताओं के विषय में प्रत्यक्ष रूप में इतनी जानकारी दे दी जाती है, जितनी कि शायद पुस्तकों द्वारा 10 वर्ष में भी नहीं.

फिलाडेलफिया के सभा गृह इ[illegible] स्थानों को जिन का अमरीका के [illegible] वर्षों के इतिहास में कुछ भी स्थान [illegible] है, विशेष रूप से उन के पुराने [illegible] कायम रखने का योजनाबद्ध और [illegible] प्रयास किया गया है. प्रतिदिन प्र[illegible] स्कूलों में बच्चे तीरों और लकीरों [illegible] अमरीका के राष्ट्रीय झंडे की वंदना [illegible] हैं और राष्ट्रगान गाते हैं.

साधारण जनता और विशेष [illegible] अमरीकी दर्शन के कार्यक्रम बनाए [illegible] हैं, ताकि युवा पीढ़ी और जन साधा[illegible] में राष्ट्रीयता की भावना सजीव [illegible] अमरीकी लोग अपनी विविधताओं [illegible] कोसते नहीं, उसे स्वीकार करते हैं [illegible] उसे प्रभावी बनाने का प्रयास करते [illegible]

रूस और अमरीका संसार की [illegible] महाशक्तियां मानी जाती हैं. परंतु भौ[illegible] दृष्टि से संयुक्त राज्य अमरीका वि[illegible] का सब से अधिक समृद्ध देश है. [illegible] समृद्धि किसी एक वर्ग विशेष तक सी[illegible] नहीं, प्रत्युत देश के सभी लोग इ[illegible] लाभान्वित हो रहे हैं. यद्यपि धन [illegible] दृष्टि से एक वर्ग बहुत ऊंचा है, [illegible] न्यूनतम और उच्चतम आय में अपेक्षा[illegible]

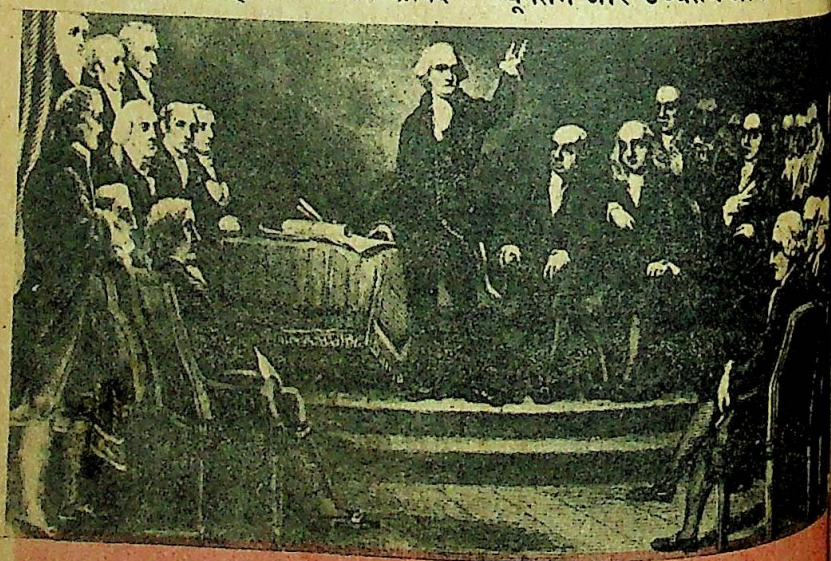

अमरीका के प्रथम राष्ट्रपति जार्ज वाशिंगटन फिलाडेलफिया के ऐतिहासिक सभा गृह में अमरीका के वरिष्ठ नेताओं के साथ.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहुत कम अनुपात है.

अमरीका की समृद्धि, वैज्ञानिक और औद्योगिक प्रगति का कारण उस के अपार प्राकृतिक साधन भी हैं. उपजाऊ भूमि, विद्युतशक्ति पैदा करने और सिंचाई के लिए उपयुक्त नदियां, लोहा तथा तेल आदि खनिज पदार्थों के अपार भंडार उस की समृद्धि का आधार हैं.

अमरीकी लोगों ने अपने अनथक प्रयासों से उन प्राकृतिक साधनों का विकास भी बड़े आश्चर्यजनक ढंग से किया है. अमरीकी लोगों में, श्रम की प्रतिष्ठा, स्वाभाविक अनौपचारिकता और ऊंच-नीच के कृत्रिम भावों के प्रति अनासक्ति की भावना होती है. वर्तमान वैज्ञानिक प्रगति और समृद्धि में इस तत्त्व का बहुत बड़ा स्थान है.

ये लोग सप्ताह में दो दिन छुट्टी मनाते हैं और हफ्ते में 40 घंटे काम करते हैं. परंतु एक घंटे में इतना काम कर डालते हैं जितना भारतीय श्रमिक दोगुने समय में भी इतना नहीं कर पाता. वैज्ञानिक कलपुर्जों के कारण इस काम की उत्पादकता और भी कई गुना बढ़ जाती है. इस के अतिरिक्त यह भी कहा जाता है कि अमरीका की प्रगति का कारण उस की अर्थ व्यवस्था भी है.

एक ओर पूंजीवाद के मौलिक सिद्धांतों को मान्यता दी गई है, अर्थात व्यक्तिगत संपत्ति, निजी उद्योग धंधों को चलाना और लाभ कमाने को प्रोत्साहन दिया जाता है. दूसरी ओर कर विधान से आर्थिक विषमता को कम करने और जनकल्याण के लिए धनिकों से धन प्राप्त करने की व्यवस्था भी है. सरकार उत्पादन और उद्योग के क्षेत्र में प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से नियंत्रण रखने को भी तैयार रहती है. मतलब यह कि उन की अर्थ व्यवस्था का रूप बड़ा व्यावहारिक है. और यह ही उस की सफलता का रहस्य है.

श्रम की महत्ता

संयुक्त राज्य अमरीका की वार्षिक

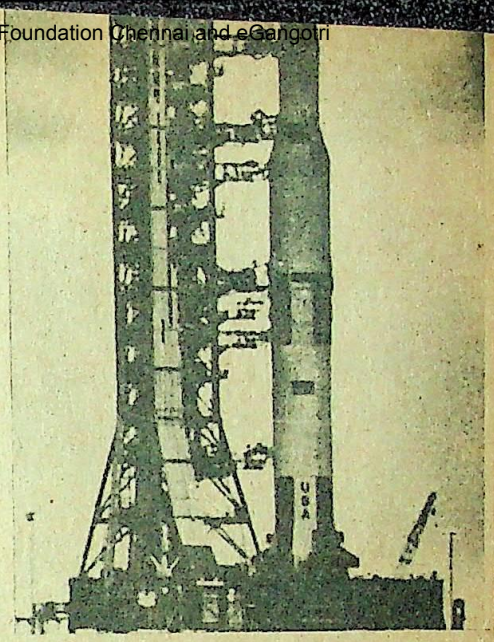

विज्ञान के बढ़ते चरण : अपोलो 11 के यात्रियों ने अंतरिक्ष को चीरते हुए पहली बार चंद्रमा पर पदचिह्न जमाए.

आय 10 खरब डालर से ऊपर है, वार्षिक व्यय 100 अरब डालर है. आधे से अधिक आय राष्ट्रीय सुरक्षा सेनाओं तथा प्रतिरक्षा के साधनों पर खर्च हो जाती है. अन्य देशों को भी करोड़ों डालरों की सहायता दी जाती है. देश भर में लगभग तीन लाख बड़े कारखाने हैं, जिन में लगभग दो करोड़ व्यक्ति काम करते हैं. एक खरब डालर इन लोगों को मजदूरी देने में खर्च हो जाता है. ये सब कारखाने कुल मिला कर दो खरब डालर से भी अधिक मूल्य का समान तैयार करते हैं.

इस तरह वर्तमान संयुक्त राज्य अमरीका का विकास काफी संघर्षों के बीच हुआ. यह संघर्ष 1593 से ले कर 1763 तक चलता रहा. अंगरेजों को यूरोप की कई शक्तियों से टकराना पड़ा. भीषण युद्ध के बाद जब 1763 में फ्रांस ने अपनी हार मान ली तो कनाडा का पूरा प्रदेश तथा मिसीसिपी नदी के पूर्व का भूखंड अंगरेजों को सौंप दिया गया. उस समय इंगलैंड के पास 13 अमरीकी उपनिवेश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

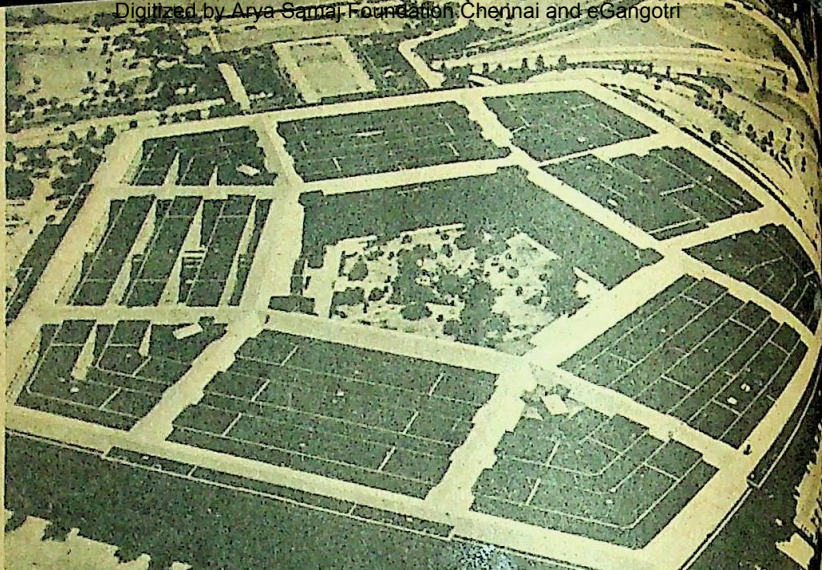

पेंटागन भवन : अमरीकी सैन्य शक्ति का मुख्यालय.

थे, जिसे एक देश के रूप में संबद्ध किया गया.

उत्तरी उपनिवेशों की भूमि पथरीली और कम उपजाऊ थी. शीत भी अधिक पड़ती थी. इन कारणों से वहां उद्योगों, कलकारखानों को प्रमुखता प्राप्त हो गई. दक्षिण उपनिवेशों की भूमि काफी उपजाऊ थी. वहां शीत भी कम थी, अतः वहां कृषि की प्रधानता हुई. कृषि वालों ने, इस काम के लिए गुलामों का उपयोग आरंभ कर दिया. इसी बात को ले कर अमरीका में भीषण गृहयुद्ध हुआ जिस से देश की एकता को ही खतरा पैदा हो गया, परंतु अब्राहम लिंकन के साहस ने उस को बचा लिया.

अमरीका में जो अधिकांश लोग आए थे, वे यूरोप में चल रहे भयानक धार्मिक अत्याचारों से बच कर भागे हुए थे, क्योंकि इन उपनिवेशों के शासन की बाग-डोर अंगरेजों के हाथ थी. उन्होंने 1649 में एक 'आफ टालरेंस की घोषणा कर दी थी, जिस के अंतर्गत सभी धर्म वालों को अपनेअपने विश्वास और मान्यताओं के अनुसार पूजा अर्चना करने की स्वतंत्रता प्रदान की गई थी.

इन उपनिवेशों में पहले तो एकता की भावना नहीं थी, परंतु धीरेधीरे स्वशासन की भावना जोर पकड़ने लगी. 1651 में इंगलैंड ने यह कानून बनाया और उसे बड़ी सख्ती से लागू किया. उस के अंतर्गत यह आदेश दिया गया कि उपनिवेशों से जो माल बाहर जाएगा अथवा जो लाया जाएगा, वह सब अंगरेजों के जहाजों से ही आया अथवा जाया करेगा. 1660 से 1663 तक इस कानून को बहुत सख्ती से लागू किया गया. फिर एक कानून यह भी बना दिया गया कि अमरीकी उपनिवेश केवल अंगरेजों से ही अपना माल खरीदें, और उन्हें ही अपना माल बेचें. अमरीका का उत्पादन बढ़ रहा था, वह इंगलैंड के अतिरिक्त अन्य देशों से भी व्यापार करना चाहता था. इंगलैंड बड़ी सख्ती से इसे रोक रहा था.

1765 में 'स्टाम्प एक्ट' नाम का एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नया कानून लागू किया गया, जिस के अनुसार अमरीका को सभी तरह के कागजों पर इंगलैंड की 'स्टाम्प' लगाने और टैक्स देने पर बाध्य किया गया. इस का अमरीका ने भारी विरोध किया. 1766 में 'स्टाम्प एक्ट' रद्द कर दिया गया. किंतु 1767 में 'टाउंशेंड एक्ट' पास किया गया, जिस के अंतर्गत अमरीका में आने वाले शीशे, कागज, चाय तथा अन्य अनेक वस्तुओं पर टैक्स लगाया गया.

स्वतंत्रता का आंदोलन

इस से विरोध की आग भड़क उठी. एक नारा लगा, "प्रतिनिधित्व दिए बिना कर लगाना घोर अत्याचार है." अमरीका में स्वतंत्रता की भावना जोर पकड़ गई. स्थानीय स्वशासन की भावना जोर पकड़ गई. उपनिवेशों में भी एकता की भावना जोर पकड़ गई. 13 उपनिवेश एक सूत्र में बंध गए. 1773 में एक दिन अंगरेजों का एक जहाज चाय ले कर अमरीका की बंदरगाह बोस्ट पर आया. अमरीका वालों ने चाय के संदूक समुद्र में फेंक दिए. भारी दमन चक्र चला, पर अंगरेज विरोधी भावनाएं तीव्र होती चली गईं.

1774 में अमरीकी महाद्वीप की प्रथम कांग्रेस का अधिवेशन फिलाडेलफिया नगर में हुआ. इस में सभी भागों के प्रतिनिधि सम्मिलित हुए. इस में अंगरेज सरकार से कुछ मांगें की गईं. मगर कुछ न हुआ, अतः 1775 में पुनः कांग्रेस का दूसरा अधिवेशन बुलाया गया, जिस में स्थानीय शासन की मांग की गई, इंगलैंड ने उसे अस्वीकार कर दिया. तब अमरीकी कांग्रेस के नेताओं ने जार्ज वाशिंगटन को सेनापति बना कर 17 जून 1775 को पूर्ण स्वतंत्रता की घोषणा कर दी. भीषण संघर्ष हुआ, और दमन चक्र का दौर भी चला.

अंततोगत्वा 19 अक्तूबर, 1781 को अंगरेजों ने पूरी तरह हार मान ली. 14 जनवरी, 1784 को अमरीका के 13 उपनिवेशों ने आपस में मिल कर संयुक्त राज्य अमरीका की स्थापना की घोषणा किया. एक नए राष्ट्र का जन्म हो गया. आरंभ में इस के 13 राज्य ही थे, परंतु अब 50 राज्य हैं और गत दो सौ वर्षों में इस की जनसंख्या 50 गुना और क्षेत्रफल 100 गुना बढ़ा है.

अमरीका का संविधान 1789 में बनाया गया. यह संविधान बड़ा बलशाली कहा जाता है. इस में कुल सात अनुच्छेद हैं. कार्यपालिका के सभी अधिकार राष्ट्रपति के पास होते हैं, जिस का चुनाव प्रत्येक बार वर्ष के बाद होता है. विधानमंडल का नाम कांग्रेस है, जिस के दो भाग हैं, एक को प्रतिनिधि सभा और दूसरे को सीनेट कहते हैं. प्रतिनिधि सभा का चुनाव हर वर्ष के बाद होता है. सीनेट राज्यों की सभा है, जिस में प्रत्येक राज्य दो प्रतिनिधि भेजता है.

कानून में लचीलापन

अमरीका का उपराष्ट्रपति सीनेट का अध्यक्ष होता है. राष्ट्रपति अपने मंत्रिमंडल का चयन स्वयं करता है. प्रत्येक मंत्री उन्हीं के प्रति उत्तरदायी होता है. कांग्रेस जो भी कानून बनाती है वे स्वीकृति के लिए राष्ट्रपति के पास जाते हैं. वह ही उन्हें कार्यान्वित भी करता है. वह राष्ट्र की सेनाओं का भी सब से बड़ा सेनाध्यक्ष है. युद्ध इत्यादि के मामले में उस के अधिकार असीम हैं.

कांग्रेस विशेष परिस्थितियों में उस की बात को काट सकती है, और यदि वह दो तिहाई बहुमत से उसे पुनः पास कर दे तो वह कानून बन जाता है. कांग्रेस के अधिवेशन के दिनों में यदि राष्ट्रपति 10 दिन तक किसी विधेयक के विषय में कुछ न कहे तो वह विधेयक स्वयमेव कानून बन जाता है. विदेश नीति के निर्धारण और संचालन का उत्तरदायित्व भी उसी पर होता है.

अमरीका की न्यायपालिका अलग और स्वतंत्र है. परंतु अमरीकी न्यायालय पुराने निर्णयों से बंधे हुए नहीं रहते. वे बदली हुई सामाजिक, राजनीति और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को ढालने में संकोच नहीं करते. वे कह देते हैं कि पहला निर्णय गलत था, अतः अब उस पर अमल नहीं किया जाना चाहिए. अमरीका की कानून प्रणाली में काफी लचीलापन है.

सारा अमरीकी राष्ट्र 4 जुलाई, 1976 को अपनी स्वतंत्रता की दो सौ साला जयंती मना रहा है. 'वाटरगेट' और 'वियतनाम' की घटनाओं के बाद यह एक ऐसा अवसर है जब कि अतीत में हुई घटनाओं पर ठंडे दिल से विचार किया जा सकता है जिन के आधार पर इस नए राष्ट्र की नींव रखी गई थी. भविष्य को और अधिक गौरवमय बनाने के लिए भी विचार किया जा सकता है.

राष्ट्रपति फोर्ड ने इस अवसर के लिए अपने संदेश में कहा कि आने वाले सौ वर्षों की सब से बड़ी चुनौती यह होगी कि व्यक्तिगत आजादी बहुत अधिक बढ़ती जा रही है. यह ठीक है कि हमारा देश स्वतंत्रता की भूमि है, परंतु स्वतंत्र सरकार वही ठीक हो सकती है, जो अपने पर नियंत्रण रखती हुई अपनी भूलों को भी सही रूप में देख सके. स्वतंत्र अर्थव्यवस्था भी वही ठीक मानी जाएगी, जो अपनी गलतियों को तुरंत सुधार लेती है.

भारत के जनमानस में अमरीका के लोगों और परंपराओं के प्रति बहुत ही सद्भावना व्याप्त है. यह तथ्य इसी बात से व्यक्त है कि भारत के राष्ट्रपति और प्रधान मंत्री ने इस अवसर पर अपने बधाई संदेश भेजे हैं.

प्रधान मंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने अपने संदेश में कहा, "जिन आदर्शों को ले कर अमरीका ने अपनी स्वतंत्रता का युद्ध लड़ा था, उस से कई राष्ट्रों को अपनी आजादी की लड़ाई लड़ने में बहुत प्रेरणा मिली थी. लिंकन और जेफरसन के शब्दों ने मुझे व्यक्तिगत रूप में भी बहुत उत्साहित किया था. उन से हमें अपने स्वतंत्रता संघर्ष में निरंतर स्फूर्ति प्राप्त होती रही.

"अमरीका ने इन दो सौ वर्षों में बहुत प्रगति की है, हमारी सद्भावना है कि यह निरंतर प्रगति के पथ पर आगे बढ़े. अमरीका के लोगों में लोकतंत्रीय भावनाएं स्थायी हों और आने वाले समय में विश्व के दो लोकतंत्र, भारत और अमरीका के संबंध सुखद और मैत्रीपूर्ण हों, यह हम मंगल कामना करते हैं." ●

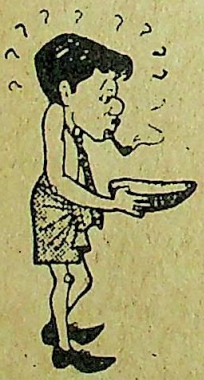

आप मांग कर खाते हैं?
मांग कर कपड़े पहनते हैं?
मांग कर बसट्राम व रेल में सफर करते हैं?
मांग कर सिनेमा देखते हैं?
मांग कर रेस्त्रां में चायकाफी पीते हैं?
तब
मांग कर पत्रपत्रिकाएं व पुस्तकें क्यों पढ़ते हैं?

निजी पुस्तकालय आप की शोभा है, आप के परिवार की शान है, उन्नति का साधन है.
मांग कर नहीं, खरीद कर पढ़िए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चमड़ी के रोगों के लिए

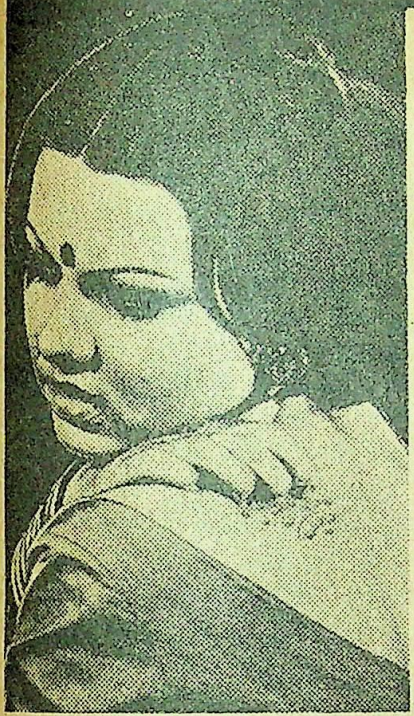

गहराई तक जानेवाला मलहम-
अमृतांजन डर्मल ऑइंटमेंट

चमड़ी के साधारण मलहम, चमड़ी के भीतर गहराई तक नहीं जा सकते. परतु अपने अनोखे सम्मिलित पदार्थों के अत्यंत असरदार गुणों के कारण, अमृतांजन गहराई तक जा सकता है. यह चमड़ी के रोगों की जड़ों तक जाकर उनको मिटाता है और चमड़ी को फिर से स्वस्थ बनाता है दाद, खाज और चमड़ी की अन्य बीमारियों को दूर करने के लिए अमृतांजन डर्मल ऑइंटमेंट एक आदर्श दवा है.

आज ही एक डिबिया खरीदें!

SAA/AM/1906 HN

अमृतांजन लिमिटेड, १४/१५ लज़ चर्च रोड, मद्रास ६०० ००४.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यंग्य • विजयकुमार शर्मा 'देवेंद्र'

करवा चौथ का जाल

पति बेचारा होता है यह तो मुझे पता था, परंतु इस हद तक भी बेचारा हो सकता है कि बेचारेपन में केवल उस का ही डंका बजे तथा बेचारों की सूची बनाने के निमित्त किए जा सकने वाले किसी संभावित सर्वेक्षण में वह 'बेचारों के सम्राट' की उपाधि से विभूषित किए जाने की क्षमता भी रखता हो, इस का अहसास मुझे पिछली करवा चौथ पर हो चुका था, जो इस करवा चौथ पर पूर्ण विश्वास में बदल गया.

पहले मैं इस करवा चौथ के समय घटी घटनाओं का ही वर्णन करूं ऐसी मेरी दिली इच्छा है. इस वर्ष की करवा चौथ के दिन तक मुझे तो यह पता ही नहीं था कि करवा चौथ आ गई है. वह तो एक सुबह, गरमियों में साढ़े छः तथा जाड़ों में साढ़े सात तक बिस्तर को शोभायमान करने वाली, मेरी पत्नी ने साढ़े पांच बजे ही गरम चाय से भरी केतली ला कर जब मेरे सिरहाने रखी हुई तिपाई पर रखी तथा शृंगार रस से ओतप्रोत अपनी नवीनतम कविता की पंक्तियों को मधुर स्वर में गुनगुनाते हुए मुझे जगाने के लिए मेरे बालों में अपनी नाजुक अंगुलियां फिराईं तो मेरा माथा ठनका.

मेरी आंखों के सम्मुख मेरे विवाहित जीवन के विगत दस वर्षों का इतिहास एक साथ घूम गया जिस के दम पर मैं दावे के साथ यह कह सकता हूं कि मेरी श्रीमतीजी ने जबजब भी मुझे घरेलू कामों में कस कर जोता है या मेरी जेब का वजन हलका किया है तबतब उन्होंने ऐसा ही, या इस से मिलताजुलता अपना मोहिनी स्वरूप दिखला कर मुझे भरमाया है तथा मैं बेजुबान, न चाहते हुए भी समयसमय पर उन के द्वारा फेंके गए जाल में पंख कटे पक्षी के समान फंसता गया हूं.

अन्य अवसरों के समान उस सुबह भी जब मैं ने 'डबल बैड' की पीठ से तकिया टिकाते हुए तथा उस के सहारे अपने को जमाते हुए प्रश्नात्मक दृष्टि से, तुरंत नहा कर आई हुई भीगे बालों वाली अपनी पत्नी की ओर देखा तो उन्होंने अपनी वाणी में संसार भर की सैक्रीन की मिठास घोलते हुए कहा, "बैड टी लीजिए न."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुबह ही पेट भर मिठाई खाने के बाद पूरे दिन बिना अन्न-जल के रहने का व्रत रख कर पत्नियां ऐसा जाल फैलाती हैं कि चतुर से चतुर पति भी बुद्धू बन जाता है.

"बेड टी...इतनी सुबह. वह भी आप के हाथ की बनी हुई," मैं सन्निपात में बड़बड़ाया.

"हां, हां, क्यों नहीं, क्या मुझे पता नहीं कि आप शादी से पहले इसी समय बेड टी लिया करते थे?" जल तरंग सी बजी.

"सो तो है, लेकिन आप भी इस समय बेड टी बना कर दे सकती हैं, इस को देख कर आश्चर्य अवश्य हुआ..." कहता हुआ मैं वाशबेसिन की ओर लपका. मुंह धो कर जब लौटा तो देखा कि श्रीमतीजी मेरे मनपसंद छोटे आकार के काफी सेट के प्याले में चाय उड़ेल रही हैं.

वैसे इस स्थान पर यह बता देना आवश्यक है कि इस सेट को श्रीमतीजी ने बंद कर के रख दिया था. उन के

मुझे भावुकता में बहता देख श्रीमतीजी ने अपने हथियार संभाले और बोलीं, "करवा चौथ का चांद कितना गुलाबी होता है तथा अमरीकी जाजेंट की गुलाबी चटक भी."

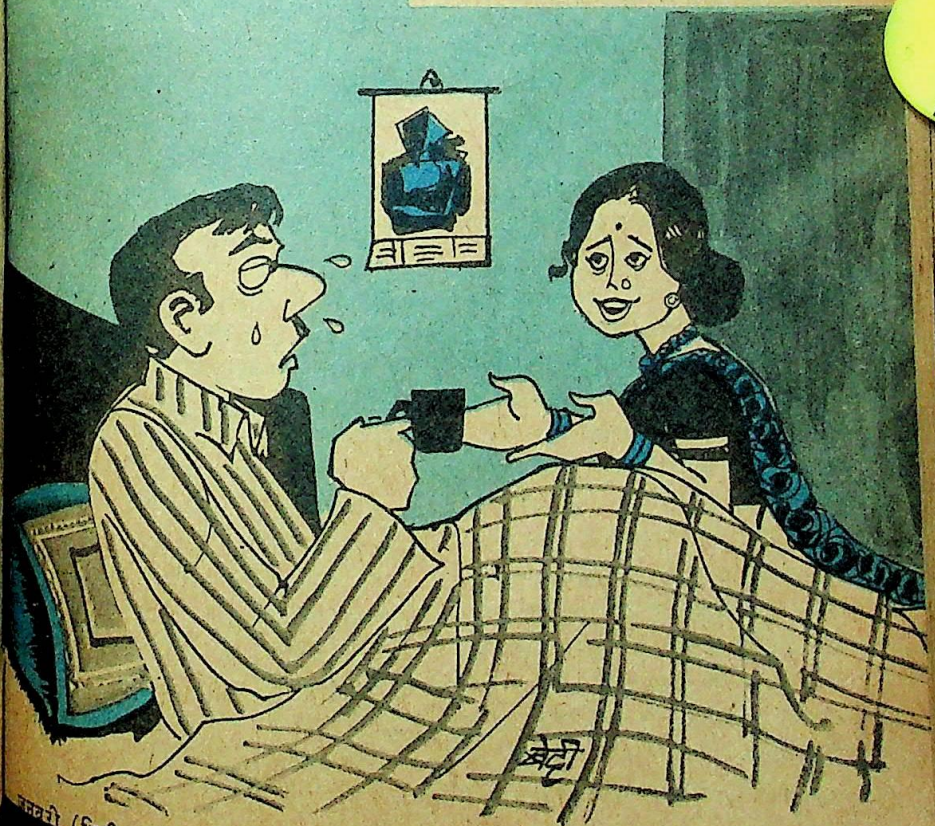

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिसाब से सामान्य आकार के प्याले में आधे आकार वाले इन प्यालों में डाल कर चाय पीना चोंचलेबाजी के अतिरिक्त कुछ और नहीं है.

उन्होंने प्याले में चाय उड़ेल कर जब मुझे दी तो आसपास दूसरे प्याले के दर्शन न होने के कारण मैं ने पूछ ही तो लिया, "क्या आप चाय नहीं लेंगी?"

"नहीं, आज मैं आप की समृद्धि तथा आप के सुख के निमित्त बिना अन्न-जल ग्रहण किए हुए ही पूरे दिन भगवान से प्रार्थना करूंगी. आप के शुभ के लिए आज उपवास रूपी अग्नि में तप कर निर्मल हुई मेरी आत्मा बड़ी से बड़ी शक्तियों का द्वार खटखटाएगी यानी आज करवा चौथ के अवसर पर मेरी भूखी अन्तरात्मा के रोमरोम से आप के जीवन में खुशियां भरने के निमित्त सर्व-शक्तिमान से याचना करने वाले गीतों की ध्वनि ही बाहर आएगी.

श्रीमतीजी ने जब दार्शनिकों जैसी भाव मुद्रा में ये पंक्तियां कहीं तो मेरा मन रहरह कर अपने प्रति श्रीमतीजी के दिल में समाए प्रगाढ़ प्रेम का अनुभव करने लगा उसी समय केतली से 'टीकोजी' हटा कर श्रीमतीजी ने मेरे मनपसंद प्याले को दूसरी बार चाय से लबालब भर दिया.

कुछ श्रीमतीजी द्वारा बोले गए मधुर संवादों तथा कुछ चाय से उठते मनमोहक 'फ्लैवर' को सूंघ कर मैं भावुक हो उठा तथा श्रीमतीजी के लिए अपने हृदय में भीतर तक पैठ गए प्रेम की झलक को उन्हें दिखाने के लिए उतावला हो उठा.

मुझे भावुकता में बहता देख श्रीमतीजी ने अपने हथियार संभाले और मेरी भावनाओं के लोहे को गरम हुआ देख उन्होंने अपनी फरमाइशों के हथौड़े से चोट करते हुए कहा, "करवा चौथ का चांद कितना गुलाबी होता है तथा 'अमरीकन जार्जट' की गुलाबी साड़ी पहन कर चंद्रमा को अर्घ्य दिए जाने वाले दृश्य को सोचसोच कर तो मैं प्रेमविह्वल हो उठती हूं. चंद्रमा गुलाबी होगा, चंद्रमा को अर्घ्य देने वाली गुलाबी साड़ी पहने होगी. ऐसे में चंद्रमा की गुलाबी किरणें जब गुलाबी साड़ी से टकरा कर छितराएंगी तो प्रेम की गुलाबी अनुभूतियां वातावरण में छा गए इस गुलाबीपन के संपर्क में आ कर क्या और अधिक गुलाबी नहीं हो जाएंगी?"

गुलाबी साड़ी लेने के लिए श्रीमतीजी ने चंद्रमा को ही गुलाबी बना डाला था. श्रीमतीजी की बातें सुन कर मैं सकते में आ गया तथा उन की मनमोहिनी अदाओं में फंस जाने पर मन ही मन पछतावा लगा, परंतु अब क्या हो सकता था? हां कर शाम तक ढ़ाई सौ रुपए की साड़ी को लाने का वादा मुझे करना पड़ा, जिस को मैं पिछले दो महीने से टालता आ रहा था. मेरे मुंह से साड़ी लाने की बात मनवा कर श्रीमतीजी मेरे पास से उठ कर अपने काम में लग गई थीं.

थोड़ी देर बाद जब मैं हजामत बना कर उठा तो श्रीमतीजी ने बाजार से लाने वाली चीजों की सूची थमा दी जिस में करवा, गेरु से ले कर घर की आवश्यकता की सब छोटीमोटी चीजें थीं. मैं सूची की एकएक चीज पढ़ता हुआ रहरह कर श्रीमतीजी की ओर देखने लगता क्योंकि इन चीजों में से कुछ को दफ्तर जाने से पूर्व ही दे कर जाना था.

मैं ने जल्दीजल्दी नहा कर तैयार होने की सोची तो मालूम पड़ा कि बाथरूम में पानी ही नहीं है. होता भी कैसे? उस का तो श्रीमतीजी ने सुबह उठ कर घर के सारे फर्श को दो बार रगड़ कर धोने में सदुपयोग जो कर लिया था तथा दूसरी मंजिल पर स्थित सब की टोटियां सूनी थीं इसलिए हार कर पहली मंजिल पर स्थित मकानमालिक के नल से पानी ढो कर दूसरी मंजिल पर स्थित अपने मकान में ला कर नहाया तथा चार बालटियां श्रीमतीजी के घरेलू उपयोग के निमित्त भी जुटाईं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं आसमान में आंखें गढ़ाए चंद्रमा को ढूंढ़ रहा था तथा नीचे से श्रीमतीजी चंद्रमा के उदय होने के बारे में जानने के लिए बांग दे रही थीं.

जल्दीजल्दी कपड़े पहन कर महल्ले की दुकानों से सामान ला कर पटका. नौ बज चुके थे पर जब रसोई में झांक कर देखा तो पाया कि श्रीमतीजी आलू छील रही हैं. मुझे देखते ही बोलीं, "मैं तो खाऊंगी नहीं, आप के लिए पुलाव बना दूं?"

"अब?" मैं ने घड़ी की ओर देख कर कहा तथा दफ्तर की कैंटीन से 'लंच पैकेट' मंगा कर खा लेने की बात कह कर श्रीमतीजी को पुलाव बनाने से रोक दिया तथा दफ्तर की ओर चल पड़ा. पता नहीं करवा चौथ के आशीर्वाद से या चारों ओर से घिर कर आई अपनी शामत के प्रभाव से दफ्तर में उस दिन कमरतोड़ काम आ पड़ा.

जैसेतैसे लंच पैकेट मंगा कर जब लंच खाने बैठा तो लंच पैकेट को खोलने पर जिस चीज के सर्वप्रथम दर्शन हुए वह थी पूड़ी से चिपटी हुई मृत मक्खी. शायद उस बेचारी ने भी करवा चौथ के उपलक्ष्य में उपवास रखने की सोची थी, जिस के लिए शायद वह भी पत्नियों की तरह आले रूपी पलंग पर, टोकरी रूपी बिस्तर पर लेटेलेटे मक्खे महोदय के शुभ की कामना कर रही थी कि सर्वशक्तिवान रसोइए ने गरमगरम पूड़ियां उस के ऊपर ला पटकीं.

जब मक्खीजी दिखीं तो चींटीजी कैसे पीछे रह जातीं? वह भी जब सूखी सब्जी बन रही थी तो उस में सती हो चुकी थीं. मतलब यह कि लंच पैकेट महोदय को श्रीमान रद्दी के टोकरेजी को सादर समर्पित कर के ठंडठंडा पानी पी कर फिर काम में जुट गया.

शाम को दफ्तर से उठ कर श्रीमतीजी द्वारा थमाई गई सूची के अनुसार खरीदारी की तथा छः बजे तक श्रीमतीजी के लिए गुलाबी साड़ी ले कर उन की सेवा में पुनः हाजिर हो गया. भूख के कारण मुरझा गए चेहरे तथा काम की अधिकता के कारण थक गए बदन को ले कर जब श्रीमतीजी के सामने पहुंचा तो उन्होंने देखते ही कहा, "क्यों, खाना नहीं खाया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या? मुझे भी नहीं बनाने दिया और खुद भी नहीं खाया, कितना सताते हो. करवा चौथ के दिन भी आप भूखे रहे, मेरा तो सारा उपवास, सारी साधना ही अकारथ गई."

श्रीमतीजी का भाषण रोकने के लिए हाथ में थमी साड़ी का पैकेट उन्हें थमा दिया. क्योंकि भूखे पेट में भाषण के शब्द घाव पर नमक जैसा काम कर रहे थे जब कि वह भाषणों द्वारा ही मेरा पेट भरने पर उतारू थीं. उधर श्रीमतीजी साड़ी देखने में लगीं, इधर मैं रसोई में घुस पड़ा. जल्दीजल्दी गैस पर एक कप चाय का पानी रखा तथा डब्बों से निकाल कर नमकीन एक प्लेट में पटकी. चाय बन गई तो इसे प्याले में भर कर नमकीन की प्लेट ले कर ड्राइंगरूम में टेबल के सामने कुरसी खींच कर आ जमा.

पत्नीजी साड़ी पा कर मेरे खानेपीने विषय में भूल चुकी थीं तथा भूखा होने और नाश्ता सामने होने के कारण मैं पत्नीजी की उपस्थिति से अनभिज्ञ था. हम दोनों अपनाअपना काम कर रहे थे, यानी मैं किसी भूखे बंगाली की तरह, जो भात को देख कर उस पर टूट पड़ता है, नमकीन और चाय पर टूट पड़ा था और श्रीमतीजी तरहतरह के भिन्नभिन्न डिग्री के कोणों में साड़ी को अपने बदन पर डालती हुई उस की विवेचना कर रही थीं.

हम दोनों ने अपनाअपना काम साथसाथ शुरू किया, साथसाथ ही समाप्त किया यानी मैं नाश्ता कर चुका था तथा श्रीमतीजी साड़ी की परख के कार्य से निवृत्त हो गई थीं.

उस के बाद सात बजे तक श्रीमतीजी ने खाना बनाने के कार्य से छुट्टी पा कर मुझे चंद्रमा देखने के लिए छत पर चढ़ा दिया, क्योंकि हमारे आंगन से चंद्रमा उदय होने के आध घंटे बाद ही दिखाई पड़ता है. इसलिए मुझे छत पर चढ़ कर उस की चौकीदारी का काम सौंपा गया था. मैं छत पर खड़ाखड़ा आसमान में आंखें गड़ाए चंद्रमा को ढूंढ़ रहा था तथा नीचे से श्रीमतीजी चंद्रमा के उदय होने के विषय में जानने के लिए हर दो मिनट बाद बांग दे रही थीं.

उस समय मेरी स्थिति बल्लेबाज के समीप 'सिली मिड आन' तथा 'सिली मिड आफ' पर फील्डिंग करने वाले क्रिकेट खिलाड़ी जैसी हो रही थी जिस की थोड़ी सी भी असावधानी होने पर बल्ले से टकरा कर गोली की गति से लौटी गेंद द्वारा, सिर खुलने की संभावना शतप्रतिशत हो जाती है. लेकिन 'सिली प्वाइंट्स' पर फील्डिंग करने वाले खिलाड़ी के सामने एक बल्लेबाज होता है परंतु मुझे चंद्रमा तथा श्रीमतीजी दोनों को बल्लेबाज समझ कर फील्डिंग करनी पड़ रही थी.

उस स्थान पर फील्डिंग का अर्थ है मैं उस कोने से, जहां से कि उगने के बाद सब से पहले दिखाई पड़ता है, चंद्रमा ढूंढ़ने का प्रयत्न करता तथा दौड़ कर मुंडेर के पास आ कर उस के न उगने की सूचना श्रीमतीजी को देता. जैसेतैसे समय बढ़ता जा रहा था, श्रीमतीजी का प्यास से बुरा हाल होता जा रहा था तथा उसी गति से वह अपनी बांगों में वृद्धि करती जा रही थीं तथा उसी गति से मुझे चंद्रमा को दौड़ कर देखने जाने और लौट कर श्रीमतीजी को बताने के कार्य में होने वाली फील्डिंग में तेजी लानी पड़ रही थी.

काफी ताबड़तोड़ 'फील्डिंग' कर लेने के बाद फरहाद द्वारा शीरीं को पाने के लिए खोदी गई नहर का राज मेरी समझ में आ गया था. चंद्रमा महोदय या तो मेरी 'फील्डिंग' से प्रसन्न हो गए थे या उन को प्यास से बेहाल श्रीमतीजी पर तरस आ गया था जो वह एक कोने से उगते हुए नजर आए.

उन को उगता देख कर मैं प्रेमनाथ 'स्टाइल' में अति नाटकीय मुद्रा में संवाद बोलता हुआ मुंडेर के पास आ कर गला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फाड़ कर चिल्लायीं, 'चंद्रमा निकल आया है, आ कर अर्घ्य दे दो. उस समय की मेरी भाव मुद्रा कुछ इस प्रकार की थी जैसे चंद्रमा खुद नहीं निकला हो, बल्कि आसमान का 'आपरेशन' कर के मैं ने ही उसे निकाला हो.

चंद्रमा को अर्घ्य दे कर श्रीमतीजी नीचे आईं. मैं भी रजिस्ट्री के साथ लगे किसी एकनोलेजमेंट ड्यू प्रपत्र के समान उन के साथ पीछेपीछे घिसटता हुआ नीचे उतरा. लेकिन जब नीचे आ कर श्रीमतीजी मेरे पैर छूने के लिए झुकीं तो मैं ने आंखें बंद कर लीं.

पता नहीं क्यों मुझे रहरह कर पिछली करवा चौथ की घटना याद आने लगी थी. पिछली करवा चौथ पर हमारे महल्ले के ही ललितजी की पत्नी जब अपने पति के पैर छूने झुकीं तो उन के मन में चुहुल सूझी. पैर छूने से पहले उन्होंने एक बार अपने पांच फुटे गोल-मटोल पति की ओर देखा तथा न जाने क्या सोच कर पैर छूने के बजाए पति के पैरों के तलवों में गुदगुदी कर दी. पैरों के तलवों में गुदगुदी होने से ललितजी 440 वोल्ट की बिजली से छू जाने पर लगने वाले धक्के के समान धक्के से ऊपर उछले.

उन का सिर छः फुट की ऊंचाई पर दीवार में ठुकी लोहे की मोटी खूंटी से टकराते बालबाल बचा परंतु उछलने की क्रिया में नीचे से ऊपर जाते समय ललितजी पर जिस खूंटी ने दया की थी, वह ऊपर से नीचे आने के क्षणों में उन की कमीज के कालर में फंस गई. भला हो उस दर्जी का जिस ने कमीज के बटनों को कमजोर धागे से सिया था जिस के कारण बटन अधिक अवरोध उपस्थित किए बगैर टूट गए तथा ललितजी खूंटी पर टंगे रहने के बजाए खूंटी को अपनी कमीज का तीन चौथाई भाग अर्पित कर के पत्नी के कदमों में धड़ाम से आ गिरे.

इस के बाद वह शीघ्र अपने पैरों पर खड़े होने के चक्कर की हड़बड़ाहट बारबार फिसल कर 'पद अंबुज गहि बारहिं बारा' वाले भाव में पत्नी के कदमों में बारबार उठउठ कर गिरने लगे तथा उन का यह क्रम तब तक चलता रहा जब तक कि पत्नी ने स्वयं उन्हें सहारा दे कर खड़ा नहीं किया. इस घटना को देख कर ललितजी के परिवार के सब सदस्य हंसतेहंसते लोटपोट हो गए, क्योंकि ललितजी को भी इस क्रिया में कोई खास चोट नहीं लगी थी इसलिए वह भी झेंप मिटाने के लिए सब की हंसी में शामिल हो गए.

जब इस घटना की सूचना महल्लेवालों को मिली तो ललितजी के मित्रों ने उन का नाम ललितजी से बदल कर दलितजी रख दिया, जिस को स्वयं ललितजी ने कुछ दिन बाद खुशीखुशी स्वीकार कर लिया तथा इसी नाम से आजकल धड़ाधड़ शायरी करते हैं. बात मेरी पत्नी द्वारा मेरे पैर छूने को चल रही थी. दलितजी के साथ घटी घटना का ध्यान कर के मैं ने अपने मन में रहरह के उठने वाली गुदगुदी को अपने चिकोटी काट कर बरबस दबा दिया. . .

जहां पिछली करवा चौथ ने ललितजी के नाम को दलितजी के रूप में बद

मुझे खबर नहीं

बस इतना जानता हूं कोई हम सफर
यह क्या मुकाम है मुझे इतनी खबर नहीं,
—जगन्नाथ आजाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वहां इस करवा चौथ ने चंद्रमणि को चरणामृत के रूप में ख्याति दिलाई. हुआ यह था कि जब इस करवा चौथ के दिन सुबह से ले कर शाम के आठ बजे तक पत्नी द्वारा काम में जोते जाने के बाद भी चंद्रमणि को पत्नी की झाड़ को सुनने को मिला तो वह उखड़ गए और दोनों में पंचम स्वर में वाक्युद्ध प्रारंभ हो गया.

पत्नी द्वारा उकसाए जाने पर चंद्रमणिजी मुंह से झाग फेंकते हुए बोले, "ऐसे करवा चौथ के व्रत से क्या लाभ ? यह तो मैं भी रख सकता हूं."

चंद्रमणिजी की बात सुन कर उन की पत्नी ने हाथ मटकाते हुए कहा, "और मैं ने जो चरणामृत लिया है?"

"वह भी मैं ले सकता हूं," कहते हुए चंद्रमणिजी, जब तक कि उन की पत्नी अवरोध उपस्थित करें, दौड़ कर पास रखी कटोरी में जग से पानी उड़ेल कर तथा पत्नी के अंगूठे को धोने के बाद उस में डुबो कर कटोरी के पानी को सटाक से पी गए.

ऊपर की मंजिल पर खड़े हुए इन दोनों की वाक्पटुता का मैच देखने वाले अवस्थीजी के लंगोटिया यार सोहनलाल 'खटाक्र' ने जब चंद्रमणिजी को पत्नी का चरणामृत लेते देखा तो उन्होंने वहीं से खड़ेखड़े तालियां बजाईं. तालियों की गड़गड़ाहट ने अवस्थी दंपति का ध्यान ऊपर की ओर खींचा जिस से वह दोनों खिसियानी हंसी हंसते हुए अपने शयनकक्ष में तिरोहित हो गए.

इस के बाद सोहनलाल 'खटाक' इस घटना को नमकमिर्च लगा महल्ले में लगातार दस दिनों तक नुक्कड़ नाटक के रूप में प्रस्तुत करते रहे थे. पहले तो अवस्थीजी झेंपे, परंतु बाद में उन्होंने एक प्रबल 'खेल भावना' का प्रदर्शन करते हुए अपने नवीन नामकरण को हंसतेहंसते स्वीकार कर लिया तथा आज कल किसी नवागंतुक द्वारा परिचय पूछे जाने पर अपना नाम चंद्रमणि उर्फ चरणामृत ही बताते हैं.

दलितजी तथा चरणामृत द्वारा करवा चौथ के अवसरों पर अपार यश के अर्जन को देख कर मेरे मित्र कौशिकजी के मथुरावासी शिष्य ओमपाल ने अभी से अगली करवा चौथ पर कुछ महान तथा अनूठा कर दिखलाने की घोषणा कर दी है.

उपरोक्त वादविवाद के बाद मैं तथा मेरे मित्र रामनिवासजी इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि पत्नियों द्वारा करवा चौथ का व्रत रखा जाना वास्तव में एक ऐसा जाल है जिस में पड़ कर ज्ञानी से ज्ञानी पति भी बुद्धू बन जाता है. यह बात दूसरी है कि इस प्रकार बुद्धू बनने में भी कुछ हाथ लगता है.

लेखकों के लिए सूचना

- सभी रचनाएं कागज के एक ओर हाशिया छोड़ कर साफसाफ लिखी या टाइप की हुई होनी चाहिए.
- प्रत्येक रचना के साथ वापसी के लिए केवल टिकट नहीं, टिकट लगा, पता लिखा लिफाफा आना चाहिए, अन्यथा अस्वीकृत रचनाएं वापस नहीं की जाएंगी.
- प्रत्येक रचना पर पारिश्रमिक दिया जाता है जो रचना की स्वीकृति पर भेज दिया जाता है.
- प्रत्येक रचना के पहले और अंतिम पृष्ठ पर लेखक के हस्ताक्षर होने चाहिए.
- स्वीकृत रचनाओं के प्रकाशन में अकसर देर लगती है, इसलिए इन के विषय में कोई पत्रव्यवहार नहीं किया जाता.

रचना इस पते पर भेजिए

संपादकीय विभाग,
सरिता
दिल्ली प्रेस,
नई दिल्ली-55.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कासल ऊनी सूटिंग पर है वूलमार्क

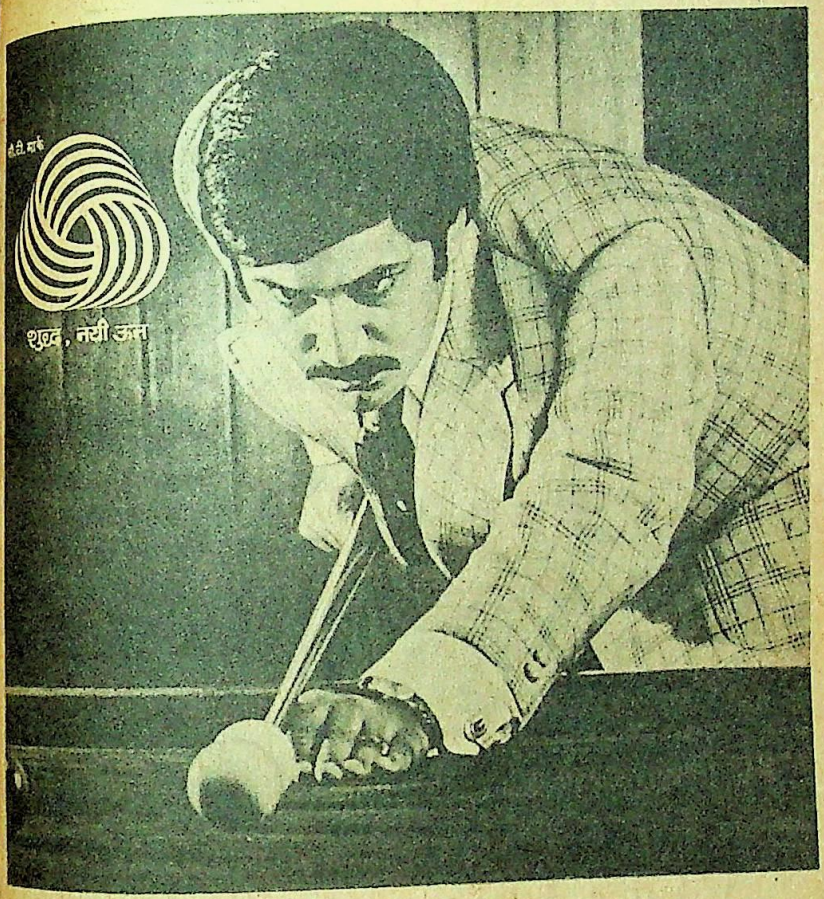

नयी, मिलावट-रहित, शुद्ध ऊन का अन्तर्राष्ट्रीय प्रतीक!

वूलमार्क— सारे संसार में ऊन के मिलावट-रहित, शुद्ध और नयी होने का एकमात्र विश्वसनीय प्रतीक है। आप पूरे विश्वास से अपनी मनपसंद स्टाइल में कासल* की शुद्ध ऊन की सूटिंग पहन सकते हैं क्योंकि इस पर वूलमार्क है।

नयी, मिलावट-रहित और शुद्ध ऊन की सूटिंग की पहचान — वूलमार्क

Castle Mills

CMIWS-27-182

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लौट आओ अम्मा

कहानी
•
आनंद

एक बार मां गई तो उस ने लौटने का नाम ही नहीं लिया...चुनमुन का नन्हा सा दिल हर पल मां को पुकारता. वह अपने पिता से मां का सा प्यार चाहता —लेकिन...

"मैं नहीं सोता आप के साथ!" कह कर चुनमुन उठ बैठा और अंधेरे में चारपाई के एक कोने में खिसक कर बैठ गया. सर्दियों के दिन थे, रात आधी बीत चुकी थी.

बाप ने झल्ला कर पूछा, "अब क्या बात है?"

वह रुआंसा हो कर बोला, "तुम मुझे रजाई क्यों नहीं देते?"

बाप भला क्या जवाब दे? सोएसोए रजाई जरा सी खिसक गई होगी, इस में उस का क्या दोष! पर उस उल्लू को तो मां के साथ सोने की आदत थी, जो सोए-सोए उस पर रजाई उढ़ा दिया करती और रात को दोचार बार उठ कर देखती भी थी कि चुनमुन का शरीर ठीक से ढंका हुआ है या नहीं. यह आदत बाप कहां से लाए.

सारे दिन जब काम कर के लौटता है तो फिर रात को नींद कहां उसे दो-चार बार उठने दे. उसे सोने के लिए बारबार मना कर जब बाप हार गया तो फिर दूसरी तरफ मुंह कर के लेट गया.

बस, फिर क्या था—चुनमुन लगा बाप को मुक्के मारमार कर कहने, "मेरी अम्मा को बुला दो, मैं उस का बेटा हूं."

यह सुनते ही रुलाई, जो बाप की छाती में पत्थर बनी अड़ी हुई थी, पीड़ा के धक्कों से चूरचूर हो गई. बाप फूटफूट कर रोने लगा.

बेटा पहले तो हैरान हो गया, फिर भयभीत स्वर में बोला, "न रो, बाऊजी, मैं सोऊंगा." कह कर झट से रजाई ले बिस्तर में घुस गया.

बाप को फिर सारी रात नींद नहीं आई. वह कभी इधर, कभी उधर करवट ले ले कर यही सोचता रहा कि चुनमुन को कैसे समझाए कि उस की अम्मा हमें छोड़ कर चली गई है. उसे मेरे यहां सुख नहीं मिला.

बापबेटे में वैसी न पट सकी, जैसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

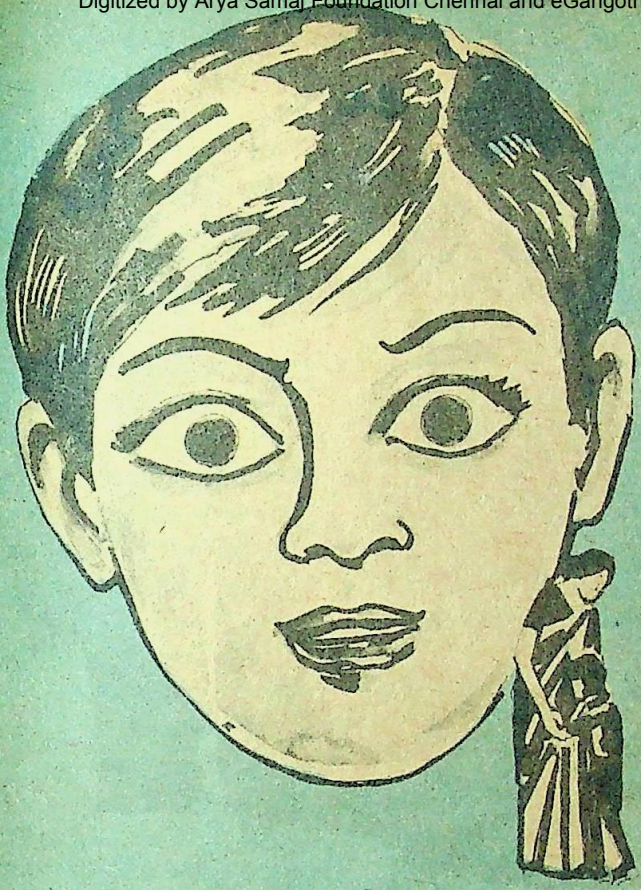

मां के बिना चुनमुन सहम गया... वह अपनी खीज नए ढंग से निकालता था.

मांबेटे में पटती थी. सुबह उठते ही बाप को दफ्तर जाने की होती. एक मामूली क्लर्क था, कोई अफसर तो था नहीं, जो दो घंटे देर से जा सकता. और उधर चुनमुन—वह तो सुबह कभी एक जगह रुक कर खाता ही नहीं था. एक रोटी का टुकड़ा बिस्तर पर खाया तो दूसरा मुर-गियों के कटघरे के पास, तीसरा कमोड पर—ये सब ढंग बाप को आते नहीं थे.

नतीजा क्या हुआ! खाना चुनमुन रूठ कर खाता था. खातेखाते गुस्से से उठ जाता, क्योंकि बाप उसे खिलाताखिलाता आप खाने लगता और बच्चे के बारे में भूल जाता. पहले तो नन्हा बच्चा दो-तीन बार देखता, जब फिर भी कौर उस की ओर न बढ़ता तो वह गुस्से से उठ कर चला जाता और बाप के बड़ा मनाने पर भी न लौटता. बस, गुस्से में बिस्तर पर लेट यही कहता, "मेरी अम्मा को बुला दो. मैं उस का बेटा हूं."

ये शब्द बाप के हृदय में दर्द का बवंडर उठा देने के लिए काफी होते. वह मुंह छिपा लौट जाता और बहते हुए आंसुओं को दूसरे कमरे में पोंछ लेता.

आज फिर बापबेटे में लड़ाई हो गई थी. बेटा बाप से कह रहा था, "बाऊजी, आज दफ्तर न जाओ. हम और तुम ताश खेलेंगे." पर बाप, जो एक मामूली क्लर्क था, कैसे दफ्तर से छुट्टी लेने की हिम्मत करे. उस ने बेटे का कहा नहीं माना. बेटा अपनी बात पर अड़ा हुआ था, झट जा कर जूते छिपा दिए.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अखबार में छपी खबर पढ़ कर चुनमुन की मां के चेहरे का रंग ही उड़ गया...

दूसरे ही क्षण बाप ने आ कर पूछा, "मेरे जूते कहां हैं?"

"मुझे नहीं मालूम." कह कर वह बिस्तरे पर बैठ गया.

"तू ने छिपाए होंगे," बाप ने बड़े प्यार से उस के पास आ कर कहा.

"नहीं."

"मैं कहता हूं, दे दे."

"नहीं."

"अरे, मुझे देर हो रही है," बाप ने गुस्से से भरा मुंह दूसरी तरफ कर के कहा.

"पहले ताश खेलो," वह हंस कर बोला.

बाप ने डरायाधमकाया--क्या करता बेचारा, और कोई पहनने को जूता ही नहीं था. लेकिन बेटे पर कोई असर नहीं. तब बाप उठ कर उस की ओर आया. वह हजरत झट से उठ दूसरे कमरे में चले गए. बाप अपना गुस्सा दबा रहा था, लेकिन ज्यों ही उस की नजर घर की पुरानी घड़ी पर पड़ी, उस की जान कांप गई. दफ्तर लगने में केवल पांच मिनट रह गए थे और साइकिल का रास्ता भी सोलह मिनट का था.

वह पल भर के लिए बौखला गया. जल्दी से फाइलें उठाईं और शीशे के सामने जा कर जल्दी से कंघी की. घूम कर देखा, जनाब पीछे बड़े आराम से ताश हाथ में लिए खड़े हैं. हर एक बात की कोई हद होती है, यह सोचते ही वह झल्ला उठा, "अबे, इस बार देदे, नहीं तो पीट दूंगा, समझा!"

इस बार ज्यों ही बेटा फिर भागने को घूमा, बाप ने दौड़ कर गरदन से पकड़ लिया और उस का कान पकड़ कर जोर से मरोड़ दिया, "ला तो कहां हैं? अबे, मुझे दफ्तर से निकलवाएगा?"

जब बेटा इतने जोर के बोल बाप के सुनता तो वह उस की टांगों से लिपट जाया करता और पतलून काटकाट कर अपना गुस्सा दिखा कर बाप को डरा दिया करता. फिर तो बाप हार जाता. हंस कर उसे गोद में उठा कहता, "अच्छा, अब बस--सुलह हो गई."

वह आज फिर उस की टांगों से लिपट कर लगा काटने. पर बाप को यही खयाल आ रहा था कि नंगे पैरों दफ्तर जाऊं! और फिर घड़ी भी तो बंद नहीं होती--दस बज चुके थे. वह बेटे का लाड़ भूल गया. दोचार चांटे लगा दिए और कड़क कर बोला, "ला जूते, अब लाएगा कि नहीं?"

बेटा रोतेरोते अपने खिलौने वाले बकस से जूते निकाल लाया. बाप के चले जाने के बाद अपनी मां की चारपाई के नीचे घुस कर बड़ा रोया और बड़ी देर रोरो कर वहीं पड़ा सो गया.

सारे दिन बाप का मन बड़ा दुखी हुआ. आज उस ने बच्चे को पहली बार मारा था. अगर वह अब भी रो रहा हो. न, न, यह उस से नहीं देखा जाएगा. दफ्तर छूटते ही उस ने साइकिल बड़े जोर से भगाई.

आज उस ने खाना न खा कर, उन पैसों से चुनमुन के लिए चाबी वाली मोटर खरीद ली थी. शायद मोटर देख वह फिर बाप की गोद में एक बार जोरों से लिपट जाए.

घर में आया तो चुनमुन कहीं नहीं मिला. भाग कर खिलौने के बकस को देखा--सभी खिलौने वहीं पड़े हुए थे. इस का मतलब वह अपने खिलौने ले कर पुष्पा चाची के घर भी नहीं गया. तो गया कहां?

वह बेटे को पुकारपुकार कर घर की ईंटें गिरा देता, यदि आंसू उस के गले में अटक कर उस की आवाज ही न खा जाते. निर्जीव सा हो कुरसी पर गिर रोने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगा. दूसरे ही क्षण उस कुछ याद आया. उस का अंगअंग कांपने लगा. वह भी अपनी मां से रूठता था तो मेरी चारपाई के नीचे घुस कर रोने लगता था. और अब तो वह मुझ से रूठा है...

सोचते ही दौड़ कर अपनी पत्नी की चारपाई के पास पहुंचा. दो नन्हेनन्हे पंर जरा से बाहर निकले हुए थे. झुक कर देखा, चुनमुन सो रहा था. उस की आंखों के नीचे आंसुओं के निशान अभी तक मौजूद थे. बाप बावला हो गया. उस ने बेटे के नन्हेनन्हे पैरों को सौसौ बार चूमा. बेटा जाग गया. उस ने बड़ी रुसवाई के साथ बाप की तरफ देखा और फिर दूसरी तरफ मुंह कर के लेट गया. बाप ने जब फिर मनाने वाले स्पर्श किए तो बेटे के वही मांस नोचने वाले शब्द सुनाई दिए. "चले जाओ, बाऊजी, मैं तुम्हारा बेटा नहीं हूं."

बाप दुखी हो कर उस के साथ जमीन पर लेट यही बोल पाया, "बस

कुछ देर तक दोनों इसी तरह खामोश एकदूसरे के साथ सटे पड़े रहे—कोई किसी से कुछ न बोला. कुछ देर बाद बाप ने अपने आंसू रोक, जेब से चाबी वाली मोटर निकाल बेटे के सामने रख दी. पहले तो बेटा देख कर भी चुप रहा और वैसे ही पड़ा रहा, जैसे उसे कुछ परवा नहीं. लेकिन थोड़ी देर बाद उस ने जरा सा घूम कर बाप की तरफ देखा. बाप ने आंखें मूंदी हुई थीं. फिर क्या था, बेटे ने मोटर उठाई और भाग गया.

बेटा तो पल भर में ही सब कुछ भूल यहांवहां भागभाग कर अपनी मोटर चलाने लगा, लेकिन बाप अपने काम में लग कर भी सुबह की बात नहीं भूल रहा था. दफ्तर की जरूरी चिट्ठियां वह अपने साथ ले आया था, पर एक भी चिट्ठी उस से न लिखी गई.

पत्रिका उठा कर वह उसी में खो जाने का प्रयत्न करने लगा. पर ज्यों ही हंसता, शोर मचाता हुआ चुनमुन पास से

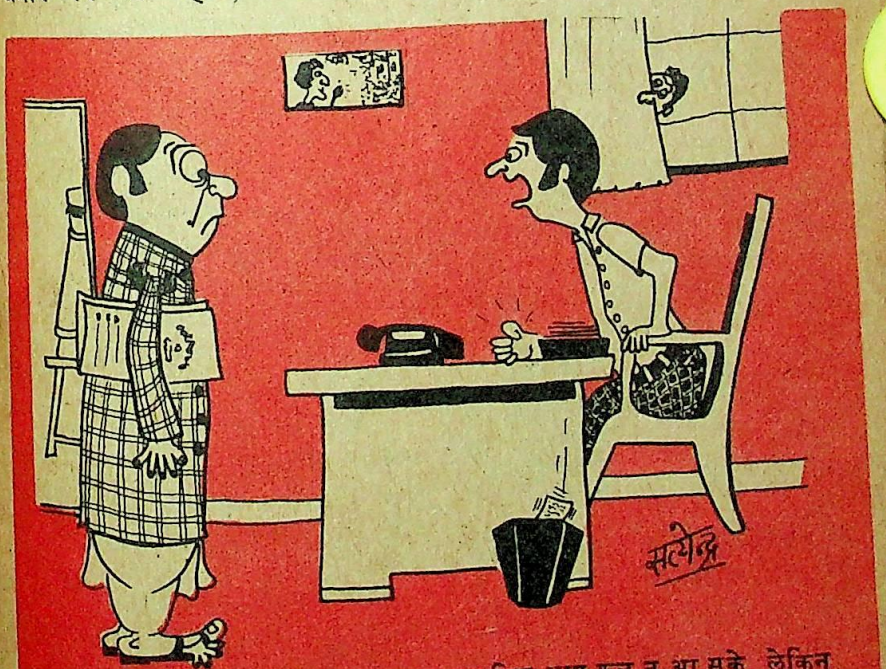

"खाना बनाते वक्त हाथ जल गया था, इसलिए आप कल न आ सके. लेकिन यह बहाना नहीं चलेगा. आप कोई नौसिखिया नहीं. आप की शादी हुए पूरे 10 वर्ष हो चुके हैं."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बवासीर
की पीड़ा
और जलन से,
बिना ऑपरेशन के,
शीघ्र आराम पाने
के लिए
हडेन्सा
मरहम
इस्तेमाल कीजिए !

2 अनुपम उत्पादन
बालसन
हेयर रीमुवींग (बाल सफा)
क्रीम
कोमल त्वचा के बाल साफ करने के लिए
बालसन
केश काला
सफेद
बालों को प्राकृतिक
रंग जैसा काला
करने के लिए
बालसन सेल्ज कारपोरेशन, दिल्ली-६
देश भर में डीलरों की आवश्यकता है !

मुसरता, बाप को मन पीड़ा से ही भर उठा. उसे बार बार यही खयाल आने लगता कि अगर चुनमुन की मां होती तो वह हमेशा यों ही हंसता, खेलता, शोर मचाता. और आज सुबह मैं ने तो इसे खेलने भी नहीं दिया. उस ने रो कर मुंह फेर लिया.

चुनमुन खेलताखेलता पास आ कर खड़ा हो गया और लिफाफे के पास पड़े कागज को देख कर बोला, "यह चिट्ठी है, बाऊजी?"

बाप बेटे को मारने पर सुबह से पछता रहा था. पास खड़े चुनमुन को झट गोद में ले लिया और एक बहुत बड़ा झूठ बोल गया, "हां, बेटे, यह तेरी अम्मा को लिखी है. इस के मिलते ही वह चली आएगी." शायद इस झूठ बोलने का एक ही कारण था--वह चाहता था उस का बच्चा एक बार, केवल एक बार इतना खुश हो जाए कि उस की गोद में चढ़ कर धूम मचा दे. अपने सुबह के व्यवहार से वह बहुत रो चुका था और सच ही इस झूठ ने बेटे को बड़ा प्रभावित किया. सुन कर वह बहुत खुश हुआ और लिफाफे और कागज की तरफ ध्यान से देखता हुआ, बाप की गोद में आप से आप चढ़, कूदकूद कर पूछने लगा, "कब आएगी? कब आएगी अम्मा?"

अब बेटे का उतावलापन देख झूठ को और आगे बढ़ाना पड़ा. बाप ने कह दिया, "जब इसे लाल डब्बे में डाल आएंगे, तेरी अम्मा आ जाएगी."

फिर बेटे को खेल कहां सुहाए! चाबी वाली मोटर वह वहीं चारपाई के नीचे भूल गया. बारबार कहता, "अब चलो न, बाऊजी, चिट्ठी लाल डब्बे में डाल देंगे."

बाप को हर बार यही कहना पड़ता, "जरा ठहर कर चलेंगे, बेटे." अब कह कर पछता रहा था, क्योंकि वह जानता था कि उसे मालूम ही नहीं है कि उस की अम्मा कहां है और जो मालूम भी हो तो क्या फायदा--वह लौट कर तो आएगी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...यह झूठ फंदा बन कर मेरे ... कोई ...
...बारबार सोच ... कहानी
...उसे मनाने को न मिला तो घबरा ...
...उस ने चादर मुंह पर लपेट ली और ...
...गया.

बेटा बारबार कह कर हार गया. लेकिन जब उसे मालूम ही हो चुका था कि ...ठो लाल डब्बे में डालते ही अम्मा आ जाएगी, तो फिर अम्मा को बुलाने में देरी ...सहन करता! उस ने सोचा, बाऊजी ...जाते तो न जाएं, मैं खुद ही डाल ...आ. पुष्पा चाची से पूछ लूंगा कि लाल ...डब्बा कहां होता है.

...पके से चिट्ठी उठा वह कमरे से निकल ...गया. बाऊजी देख न रहे हों, इस ...से उस ने पीछे एक बार भी न देखा. ...क पर आते ही पुष्पा चाची के घर ...चने के लिए दौड़ कर सड़क पार करने ...गा. लेकिन इस से पहले कि वह सड़क ...कर जाता, तेजी से आती हुई एक ...कार से टकरा गया. ड्राइवर ने बहुत

वह कार शहर के एक प्रसिद्ध दैनिक पत्र के विशेष संवाददाता की थी. उस ने उतरते ही बच्चे के हाथ के लिफाफे और खाली कागज को बड़े गौर से देखा, फिर भाग कर उस के बाप से जा कर पूछा, "बाहर एक बच्चा मेरी कार के नीचे आ गया है, कहीं आप का तो नहीं?"

बाप ने उसे और बोलने ही नहीं दिया. वहीं से बेटे का नाम ले कई बार पुकारा. फिर उस की नजर मेज पर गई, वहां न तो कागज ही था और न ही वह लिफाफा. आंधी की तरह भाग सड़क पर आ पहुंचा. हां, उस का ही तो बच्चा था. "चुनमुन, अरे, चुनमुन," कह कर वह रोने लगा.

अस्पताल जातेजाते बाप ने रोतेरोते अपनी सारी कहानी कह डाली. संवाददाता ने बड़ी ही सहानुभूति से उस को धैर्य बंधाया.

दूसरे दिन उस संवाददाता ने पहले

खांसी, जुकाम, फ्लू
से निश्चित आराम
पाने के लिए

त्रिशून
गोलियां

• सुरक्षित आयुर्वेदिक औषधि

• दस गोलियों की स्ट्रिप सभी जगह उपलब्ध

स्केबीज के कारण
जब खुजली
परेशानी बन जाए
तब जल्दी असर करने वाली

स्केबीजान
मरहम
इस्तेमाल कीजिए

• दस ग्राम की ट्यूब सभी जगह उपलब्ध

झण्डू फार्मेस्यूटिकल वर्क्स लि.
बंबई-400028

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर शहर में सनसनी फैला दी : "यह किस का बच्चा है जो अपनी मां को बुला रहा है, जहां भी हो उस की अम्मा—लौट आओ!"

इस रोमांचकारी कहानी ने हजारों लोगों को अस्पताल में ला इकट्ठा किया. लोग बच्चे को देखने के लिए बड़े उत्सुक थे. औरतें उस की मां को आड़े हाथों ले रही थीं. मर्द औरतों की बेवफाई पर कटाक्ष कर रहे थे और अंदर डाक्टर बच्चे की जान बचाने का पूरा प्रयत्न कर रहे थे.

कुछ ही मिनट बाद अंदर से 'अम्मा! अम्मा!' की आवाज आई.

डाक्टर बाहर निकल आए. बाप ने आंसू रोकते हुए अंदर जाने की आज्ञा

ताश निकाल कर कहना चाहा, "देखो तो, बेटे, मैं ताश ले आया हूं. तुम और हम..."

इतने में ही उसे धक्का लगा और वह गिरतेगिरते बचा. उस ने घूम कर देखा कि उस की पत्नी डाक्टरों और नर्सों को धक्का देती हुई चारपाई के पास पहुंच कर बेटे की चादर में मुंह लपेटे रोतेरोते कह रही है, "मैं आ गई हूं, बेटे."

बेटे ने बड़ी मुश्किल से हंसते हुए कुछ बोलना चाहा.

मां समझ गई, जल्दी से बोली, "हां, बेटे, तुम्हारी चिट्ठी मिल गई थी, इसी लिए तो आई हूं."

फिर उस ने क्षमायाचना करती हुई आंखों से उसे देखा, जो हाथ में ताश लिए वहां से हट कर कोने में खड़ा आंसू पोंछ रहा था. ●

मां तो मां है

सरिता के पिछले अंकों में सौतेली मांओं के खट्टेमीठे अनुभव प्रकाशित किए जा रहे हैं. इसी शृंखला में प्रस्तुत हैं एक और सौतेली मां के अनुभव...

सौतेली...ऊंह, सौतेली मां क्या होता है? मां तो मां है. मैं उसी घर में शादी करूंगी जहां प्यारेप्यारे, बड़ीबड़ी आंखों और उलझे हुए बालों वाले तीन बच्चे हों. हां, शादी से पहले मुझे सब कुछ पता था किंतु फिर भी निकाह के समय मैं ने हामी भर दी.

मैं ने सोचा कि अपने घर में भतीजों की देखभाल भी तो मैं ने मां की तरह ही की है तो क्या ससुराल में मैं अपने ही पति के बच्चों को मां का प्यार नहीं दे पाऊंगी? वे मेरी अपनी ही संतान के समान हैं.

सब कुछ जानबूझ कर भी इस घर में आ गई. इस एक साल के अंतराल में वे बच्चे मेरे बहुत निकट आ गए हैं. मैं ने भी तय किया कि इन्हीं बच्चों के भविष्य को मुझे संवारना है. किंतु बच्चों को प्यार करती हूं, तो बच्चों की फूफियां कहती हैं कि इस ने बच्चों पर जाने क्या जादू डाला है कि हमारे बच्चे हम से पराए हो गए हैं. चौबीस घंटे बस बच्चे हैं और उन की नई मां.

जब कभी तानों से दुखी हो कर मैं बच्चों से बोलना कम कर देती हूं तो कहती हैं, "आखिर सीधे मुंह बोलेंगे? है तो सौतेली मां." ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आधिकांश खिज़ाब बालों के ऊपर ही से रंगते हैं...

ट्रू-टोन

बालों में समा जाता है...

आपकी प्राकृतिक सुन्दरता को कायम रखता है.

तरल खिज़ाब

कोई भी पसंद कीजिए ट्रू-टोन तरल खिज़ाब या ट्रू-टोन जेल— न टपकने वाला गाढ़ा खिज़ाब.

जेल खिज़ाब

दोनों में हेअर-कंडिशनर मिला है जो आपके बालों को मुलायम और चमकीला बनाता है.

पहली बार खिज़ाब लगानेवाले हमारी मुफ़्त पुस्तिका 'हेअर डाइंग एक्सप्लेन्ड' मंगवायें:
जे. के. हेलीन कर्टिस लिमिटेड, जे. के. बिल्डिंग, बम्बई ४०० ०३८.

काले व ब्राउन रंगों में उपलब्ध. पुरुषों के लिए खास पॅक.

अपनी आवश्यकताओं के लिए लिखें:
मार्केटिंग डिवीज़न, जे. के. हेलीन कर्टिस लिमिटेड, बंबई व दिल्ली

everest/269/JKH-hn

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

1975 का फिल्मी

ऐसा लगता है मानो फिल्मों में संगीत है ही नहीं, संगीत के नाम पर ठठेरों की ठकठक ही है. जो जितनी जोर से ठोंके वही सब से बड़ा संगीतकार. कम से कम 1975 का संगीत तो यही कहता है. हां, बीचबीच में कुछ सुर जरूर मिल जाते हैं. लेकिन बाकी वही ठकठक. मदन-मोहन और फिर सचिनदेव बर्मन का उठ जाना भी इस वर्ष की दुखद घटनाएं हैं.

पिछले वर्ष की ही तरह इस वर्ष भी लक्ष्मीप्यारे के कारखाने का उत्पादन काफी हुआ. उन्होंने बेहद शोर मचाया, लेकिन 'प्रतिज्ञा,' 'अपने रंग हजार,' 'पोंगा पंडित' और 'आक्रमण' का संगीत

राहुलदेव बर्मन : हर गीत बोंगो और 'पापापापा' की घिसीपिटी धुन पर.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संगीत

पुराने जमे हुए संगीतकारों ने शोर के अलावा कुछ नहीं किया लेकिन नए संगीतकार और गायकों को अधिक अवसर क्यों नहीं दिया जाता?

लेख • दिलीप गुप्ते

कुछ ऐसा रहा जिस पर चर्चा की जा सकी है. यों सूची लंबी करने के लिए 'सेवक,' 'जग्गू,' 'अनाड़ी,' 'फ्री ...,' 'निर्माण' आदि में भी संगीत उन्हीं ...है.

'प्रतिज्ञा' में कान फोड़ने पर विशेष ...त की गई है. शुक्र है कि गीत कम ही 'अपने रंग हजार' में 'बिदाई' की ...न परोसी गई है. 'कालीकलूटी' ...गीत को न जाने क्यों कव्वाली जैसा ...कर सस्ता कर दिया गया है. 'पोंगा ...त' में 'जीजाजी' गीत जितना मजेदार ...र अश्लील भी) है, 'मैं जब छेड़ूंगा ...ना' उतना ही बोर है. 'तुझ से मिलने के पहले' गीत इन के गुरु कल्याणजी आनंदजी का ज्यादा मालूम होता है. 'आक्रमण' का 'फौजी गया जब गांव में' इस वर्ष के बोरतम गीतों का राजा है. दुख है, यह लोकप्रिय जोड़ी बेवक्त की बांसुरी और पेटेंट ताल पर अड़ी हुई है.

राहुलदेव बर्मन ने एकदो को छोड़ निराश ही किया है. वह संगीत से ज्यादा अपना नाम समझने लगा है. 'काला सोना' और 'वारंट' में सिर्फ अपना नाम ही दिया है. 'दीवार' में भी और क्या है? बड़ेबड़े सितारों के नाम के साथ एक और नाम. हां, 'आंधी' में जरूर कुछ कर दिखाया है. इस में 'परिचय' वाला माधुर्य

...मीप्यारे : संगीत के नाम पर भारी आरकेस्ट्रा के शोर के अतिरिक्त क्या दे सके?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है, जिसे हम स्वीकार करेंगे.

लेकिन क्या यह सही नहीं है कि इस के सभी गीत एकदूसरे से बहुत मिलते-जुलते हैं? जहां 'आंधी' की सभी तारीफ करते हैं वहां 'खुशबू' की सभी आलोचना. एक भी गीत फिल्म के वातावरण से मेल नहीं खाता. इत्रदानी में घासलेट की बू आना इसे ही कहते हैं. पिता तो मांझी गीतों का शहंशाह था. पुत्र ने बनने की कोशिश की तो कहीं का न रहा.

गीत में माधुर्य नहीं

'डोली चढ़ जाएगी' गीत बाहर सुनने में भले ही मधुर लगे, लेकिन सिनेमाहाल

शंकर जयकिशन : संगीत में अब पहले जैसा जादू कहां?

में सिर धुनने की इच्छा होती है. 'खेल-खेल में' के संगीत की तारीफ की जाएगी. इस में ताजगी है, स्वच्छंदता है. हां, बंगाली गीत का हिंदी संस्करण 'सपना मेरा टूट गया' एकदम निराश करता है. 'शोले' ने कोई कम निराश नहीं किया. पूरी फिल्म में न तो सुर देखा, न ताल. सिर्फ 'महबूबा' अपने रिद्म के लिए याद रह सकता है. लेकिन क्या ऐसा नहीं लगता कि कोई कुत्ता सिर उठा कर रो रहा है?

कल्याणजी आनंदजी को पिछले के मुकाबले कम फिल्में हाथ लगीं. लिए कम निराश किया. 'धर्मात्मा' एक ही धुन का बारबार इस्तेमाल गया है. हमारे संगीतकार अफगानी के नाम पर 'रबाब' के दोचार तार टुनाना ही अपनी सफलता मानते हैं. मामले में पुराने संगीतकार (सलिल चौधरी) अपवाद हैं.

'चोरी मेरा काम' का संगीत की ही तरह मजेदार है. कहींकहीं 'छलिया' की धुनों पर कैंची मारी गई है. 'हिमालय से ऊंचा' का संगीत फिल्म की ही नाकामयाब रहा. इन भाइयों को धुनों के नाम पर शायद गरबा भांगड़ा ही आता है. 'राही, ओ में गुजराती धुन ठूंसी गई है और गीत के बीच में 'अल्लाहो अकबर' भयानक तरीके से इस्तेमाल कर कोई वजह नजर नहीं आती. 'रफूचक्कर' इन की उल्लेखनीय है. 'खेलखेल में' की ही तरह इस भी ताजगी है, अल्हड़पन है, मिठास है.

नकल ही नकल

सोनिक ओमी ने 'उमर कैद,' 'खुश' और 'फौजी' में फिल्म को हुए संगीत दिया. पंजाबी धुनों का इस्तेमाल किया है. 'फौजी' में 'पिला जाम, पिला दे' की धुन बंगाल की रुना लैला के प्रसिद्ध सिंधी गीत 'धमाल मस्त कलंदर' की साफ नकल है.

रवींद्र जैन ने इस वर्ष चार फिल्मों में संगीत दिया. सिर्फ 'एक गांव की कहानी' को छोड़ दिया जाए तो तीन फिल्मों में वह सफल रहा है. 'तृष्णा' का संगीत जहां फड़कता हुआ है 'गीत गाता चल' में गंभीरता है, 'जासूस' में मनोरंजन है, मिठास का उस ने कहीं भी नहीं छोड़ा है, यह की सफलता है. लेकिन लोग 'सौदागर' और 'चोर मचाए शोर' वाला रवींद्र ढूंढ़ते रहे.

भप्पी लाहिड़ी ने 'जख्मी' के एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जयकिशन ने अपनी धुनों से 'चलता है चलते चलते' में बंगाली मित्र (अमानुष) है. उस ने बंगाल की कुछ मधुर धुनें दी हैं. वह हालांकि बंगाल के लिए नया नहीं है लेकिन हिंदी में यह उस की पहली ही फिल्म है. इस के पूर्व वह 'मुसाफिर' में 'इक आए, इक जाए मुसाफिर' गीत गा चुका है. 'अमानुष' में उस ने 'तेरे गालों को चूमूं,' 'कल के सपने' और 'दिल ऐसा किसी ने' की धुनें निराली ही बनाई हैं, हिंदी फिल्मों में उन का आगमन स्वागत योग्य है.

राजेश रोशन ने इस साल भी सिर्फ एक ही फिल्म (जूली) में संगीत दिया और प्रशंसा पाई. 'कुंवारा बाप' के गीत लोग गुनगुना ही रहे थे कि चारों ओर 'जूली' के गीत गूंजने लगे. शंकरजयकिशन के बाद यदि कोई आर्केस्टा को सही समझ पाया है तो वह है राजेश रोशन. इस फिल्म की धुनें कठिन होने के बावजूद मीठी हैं. अंगरेजी गीत 'माय हार्ट इज

बजा दी. 'चलतेचलते' के गीत काफी लोकप्रिय हो रहे हैं और हैं भी. लेकिन वह पंचम की तरह गायक का मोह टाले तो बेहतर होगा.

...तों की धूम

...पन चक्रवर्ती ने 'जमीर' में कोई काम नहीं किया. इस से तो जय (जान हाजिर है) ने धूम मचा दी. ...पातें पहले जयकुमार के नाम से 'लीबाई' में संगीत दे चुके हैं. इन के ...त में भी जोश है. कमलकांत (जय ...ता) ने लोगों की शराफत का नाजायज ...दा उठाया है, एक गीत तो 'धमाधम कलंदर' की बेशर्मी से की गई नकल श्यामजी घनश्यामजी (धोती, लोटा चौपाटी) में कम मेहनत की. नितिन (कैद) में नाकामयाब रहे.

एक ही फिल्म में संगीत दे कर वाह-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...बात मालूम होता है.

शंकरजयकिशन ने 'सन्यासी' के प्रचार में बड़े जोरशोर से अपनी वापसी का ढिंढोरा पीटा, पर असफल रहे. सारी धुनें पुरानी थीं. यही हाल 'दो झूठ' का रहा. हां, छतरी वाला गीत जरूर सुंदर था. सुनते हैं तो ऐसा लगता है मानो यह धुन शारदा के लिए बनाई गई हो. अच्छा ही हुआ, जो उस ने नहीं गाया. क्या ही अच्छा होता जो शंकर पहले ही समझदारी से काम लेते.

सी. अर्जुन नाग के कोई संगीतकार

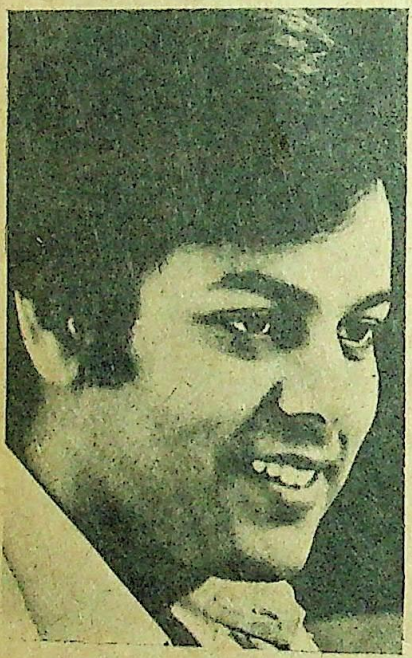

शैलेंद्र सिंह : 'बाबी' के बाद कहां खो गए.

'जय संतोषी मां' में आ कर हलचल मचा गए. हर गीत लोकप्रिय हुआ. वह बात छोड़िए कि जहांजहां 'संतोषी' शब्द आया है, गायकगायिका ने उसे 'संतोशी' गाया है. इस फिल्म से सी. अर्जुन ऐसे चमके हैं कि नएपुराने देखते ही रह गए. गरबा का उस ने काफी बुद्धिमानी से उपयोग किया है. प्रचार के अभाव में भी वह लोकप्रिय हुआ है.

मदनमोहन की मौत से गजलों की दुनिया लुट गई. एक ऐसा सुर खो गया जो फिर कभी नहीं मिलेगा. बदलते हुए सही संगीतकार के लिए भटकोगे. 'फिर की राहें' में मदनमोहन की गजलें याद रहेंगी.

सचिनदेव बर्मन की मौत से संगीत को एक बहुत बड़ी चोट लगी है. वे एक सूर्य थे जिस की रोशनी हर ओर चमकी. शास्त्रीय संगीत पर भी, पाश्चात्य संगीत पर भी और लोकधुनों पर भी. वह आज के संगीतकारों की तरह मौसमी बत्ती नहीं थे, जिस का प्रकाश सीमित

साहिर लुध्यानवी भी चालू किस्म के गीतों पर उतर आए.

क्षेत्र में पड़े.

बर्मन की दो फिल्मों—'चुपकेचुपके' और 'मिली' में निराशा ही हाथ लगी. फिर भी 'बड़ी सूनीसूनी है' (मिली) गुनाने को जी चाहता है.

नौशाद (सुनहरा संसार), अनिल (एक हंस का जोड़ा), चित्रगुप्त (बाबा और जानवर), रवि (घटना), (एक महल हो सपनों का) और बसंत देसाई (रानी और लालपरी) निष्प्रभ रहे.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किशोर एकदम फिर से ऊंचा रहा, हालांकि वह पिछले साल जितना ऊंचा नहीं है. वह आजकल गानों को टाल रहा है. व्यस्तता इस का एक कारण हो सकती है, एकमात्र नहीं. 'पोंगा पंडित,' 'धर्मात्मा,' 'शोले,' 'लफंगे' में उस ने बेगार ही टाली है. हां, 'अमानुष' के दर्दीले गीतों में वह निखर उठा है.

रफी को आगे खिसकने का मौका मिला है. संगीतकार उसे एकदम छोड़ना भी खतरे से खाली नहीं समझते. मन्ना डे को कव्वालियों के लिए बांध लिया गया है. यही हाल चंचल का भी है. संगीतकारों ने बेवजह चिल्लाने के लिए उसे अच्छा पकड़ रखा है.

शैलेंद्र सिंह के 'बाबी' के सिक्के जब खत्म हुए तब वह चेता. हालांकि वह संभल कर गा रहा है, लेकिन फिर भी अभी उसे रियाज की जरूरत है. वह मुकेश का प्रभाव छोड़ना चाहता है तो बेसुरा हो जाता है. मुकेश स्वयं कम बेसुरा नहीं है. 'चुपकेचुपके' में जैसे ही वह 'बागों में फूल खिलते हैं' गाता है, सारा हाल ठहाकों से गूंज उठता है. लगता है वह तय नहीं कर पाया है कि नाक से गाया जाए या मुंह से.

आशा भोंसले : सफल गायिका

लता मंगेशकर भी इस वर्ष कुछ नहीं कर सकी.

प्रदीप (जय संतोषी मां) और श्यामल मित्र (अमानुष) ने एकएक गीत गाया है, जो निस्संदेह अच्छे हैं. नए गायकों में अमितकुमार ('जान हाजिर है,' 'चोरी मेरा काम') ने अपने पिता की कापी की है. उसे नहीं भूलना चाहिए कि उसे अमितकुमार बन कर चमकना है, न कि किशोरकुमार. एक नई आवाज है जसपालसिंह की, उन्मुक्त, साफ और ताजगी भरी. इसे आगे आना चाहिए.

गायिकाओं में उषा मंगेशकर अचानक ही चमक उठी. 'छतरी न खोल' (दो झूठ), 'जीजाजी' (पोंगा पंडित), 'सौ बार की तोबा' (धोती, लोटा और चौपाटी और 'जय संतोषी मां' का हर गीत काफी पसंद किया गया. यह आवाज कमसिन है.

आशा भोंसले ने 'रफूचक्कर' में सूई जैसी बारीक आवाज पैदा कर के कमाल ही कर दिया. 'अमानुष' में भी उस ने अच्छा गाया. लता ने नौशाद (सुनहरा संसार) से ले कर राजेश रोशन (जूली) तक के साथ गाया. लोकप्रियता भले ही मिली हो, पर पिछले साल जैसी सफलता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं मिला. सुमन कल्याणपुर 'अपने रंग हजार' में कमजोर रहीं. उस का मुरकियां लेने का तरीका बहुत ही घटिया है. 'साजिश' में भी वह जमी नहीं.

नई आवाजें प्रीति सागर ('जूली' का अंगरेजी गीत), दिलराज कौर (जान हाजिर है) और कंचन ('रफू चक्कर,' 'धर्मात्मा,' 'चोरी मेरा काम') में से सिर्फ प्रीति के आगे आने के आसार हैं क्योंकि दिलराज गैर फिल्मी गायन में व्यस्त है और कंचन को सिवा कल्याणजी आनंदजी के कोई लिफ्ट नहीं दे रहा है. सुलक्षणा पंडित (उलझन) की राह कांटों से भरी है. वह खुद के ही गाने गा ले. दूसरों के लिए गाना मुश्किल जान पड़ता है.

शब्दों का मदारी कौन?

गीतकारों में शब्दों के मदारी आनंद-बख्शी का डमरू खूब बजा. उस ने नौशाद (सुनहरा संसार) से ले कर राजेश रोशन (जूली) तक के लिए गीत लिखे. तुकबंदी ही ज्यादा की है. 'प्रतिज्ञा' का पंजाबी लोकगीत तो समझ में आता है मगर 'जट्ट पगला पगला' की तुकबंदी नहीं. और 'अपने रंग हजार' का कालीकलूटी वाला गीत तो उर्दू साहित्य का दीवालिया-पन ही बताता है.

आनंद बख्शी की शिष्या माया गोविंद ने 'करा ले साफ करा ले' (कैद) लिख कर सिद्ध कर दिया कि वह भी अश्लील गीत लिखने में पीछे नहीं है. इंदीवर ने जहां 'अमानुष' में तेरे गालों को 'चूमूं झुमका बन के' जैसा कवित्वपूर्ण गीत लिखा है वहीं 'धर्मात्मा' में 'क्या खूब लगती हो, बड़ी सुंदर दिखती हो' जैसी तुकबंदी भी की है.

मजरूह एकदम नहीं चले. वर्मा मलिक ('उमर कैद,' 'चोरी मेरा काम,' 'संन्यासी.') और गुलशन बावरा ('रफू चक्कर,' 'खेलखेल में') अच्छे जमे. साहिर (जमीर) ने 'जहां सच न चले वहां झूठ सही, जहां हक न चले वहां लूट सही' लिख कर लोगों को कौन सी राह बताई है यह तो नहीं मालूम, लेकिन वह निश्चय ही अच्छी नहीं है.

गौहर कानपुरी ने एक ही गीत 'जलता है जिया' (जख्मी) में काफी लोकप्रियता हासिल कर ली. एम. जी. हशमत ('रंगा खुश,' 'फौजी,' 'संन्यासी') ने बेगार टाली है. 'रंगाखुश' का एक गीत 'छेड़ा जो मुझ को तो काटूंगी तुझ को' तो बड़ा ही हास्यास्पद है. गुलजार ('आंधी,' 'खुशबू'), योगेश ('मिली,' 'चुपकेचुपके'), रवींद्र जैन, तुलसी ('तूफान,' 'दो जासूस') में से योगेश ने 'बड़ी सूनीसूनी है' (मिली) जैसा गंभीर गीत बड़ा अच्छा लिखा है. गुलजार के गीतों में कवित्व अधिक है. शेष दोनों ने अच्छा मनोरंजन किया.

भजन लिखना जितना कठिन है, उतना आसान भी. प्रदीप ने 'जय संतोषी मां' में अच्छे भजन लिखे हैं तो महज तुकबंदी भी की है. शैली शैलेंद्र (जान हाजिर है) जमे. उन की कल्पना नवीन है, शब्द चयन सरल.

पिछले वर्ष की ही तरह इस वर्ष भी नए संगीतकारों ने कुछ कर दिखाया. बंधेबंधाए संगीत से अलग संगीत दे कर लोगों के कान खड़े कर दिए. श्यामजी-घनश्यामजी आउट हो गए. रवींद्र जैन और राजेश रोशन जमे रहे. भप्पी लाहिड़ी का कदम ठोस है. इन से उम्मीद की जाती है कि वह कुछ नया देंगे. शैली शैलेंद्र, गौहर कानपुरी से उम्मीद है कि वे आनंद बख्शी ब्रांड गीतों से छुटकारा दिलाएंगे. जसपाल सिंह, प्रीति सागर और सुलक्षणा पंडित को मौका चाहिए. ये नए सितारे ही कल का आसमान सजाएंगे. ●

सुंदरता का ह्रास

जो सुंदर है उस का कभी ह्रास नहीं होता, वरन वह अन्य सुंदर वस्तुओं में प्रवेश कर जाता है.

—टी. बी. एल्ड्रिच

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिल्म समीक्षा

★★★★अति उत्तम ★★★उत्तम ★★मध्यम★ साधारण ○बेकार

○ जिंदगी और तूफान

निर्माता : कीर्तिमान फिल्म्स
निर्देशक : उमेश माथुर
कहानी : महावीर अधिकारी
मुख्य कलाकार : योगिता बाली, साजिद-खान, रेहाना सुलतान, राकेश पांडे, कन्हैयालाल, अनवर हुसेन, मुकरी, हेलन, भगवान.

महावीर अधिकारी के उपन्यास 'तलाश' पर आधारित 'जिंदगी और तूफान' में अवैध संतान की समस्या को उठाया गया है, लेकिन फिल्म का प्रस्तुतीकरण इतना घटिया है कि लगता है, बलपूर्वक एक ऐसी समस्या पैदा की जा रही है जो कहीं है ही नहीं.

फिल्म में एक अनाथ युवक टोनी (साजिदखान) की कहानी है जो इस बात से परेशान रहता है कि लोग उसे हरामी समझते हैं. इसी कारण जहाज से उस की नौकरी छूट जाती है. इस के बाद क्रमशः चार युवतियां उस के जीवन में आती हैं—शराबखाना चलाने वाली मेरिन (सुलभा देशपांडे), एक मछुआरिन तारा (रेहाना सुलतान), एक फैशनेबल लड़की नलिनी (योगिता बाली) और नलिनी की नौकरानी भूरी (योगिता बाली की दोहरी भूमिका). अंत में वह भूरी में सच्चा प्रेम पाता है और उसे अपना लेता है.

प्रथम तो फिल्म में उठाई गई समस्या आज समाज में मौजूद ही नहीं है. अगर यह फिल्म आज से बीसपचीस साल पहले बनाई जाती तो संभवतः कुछ सफल रहती. इसी समस्या को ले कर 'धूल का फूल' अत्यंत सफल फिल्म बन चुकी है, जिस में समस्या को प्रभावपूर्ण रूप में हल के साथ प्रस्तुत किया गया था.

यहां 'जिंदगी और तूफान' में नायक अपने हरामी होने का खुद ही ढिंढोरा पीटता फिरता है. उस के द्वारा बारबार अपने लिए 'हरामी' शब्द प्रयोग करना दर्शकों के हृदय में उस के लिए दया का भाव पैदा न कर के घृणा और वितृष्णा ही पैदा करता है. (वह जहां इतने और झूठ बोलता है, वहां फर्जी बाप का नाम भी बोल सकता था.) रहीसही कसर फिल्म को फार्मूलावाद में घसीट कर पूरी कर दी गई है. कैबरे, मारपीट, प्रेम दृश्य आदि सभी कुछ भर दिया गया है, जिस से फिल्म बारबार पुराने ढर्रे पर आ जाती है.

इस बेकार फिल्म की बेकार कहानी में अभिनेता भी बेकार के भर दिए गए हैं. नायक साजिदखान फिल्म को ले डूबा है. दर्शकों को आकृष्ट करने के लिए तीनतीन नायिकाएं ली गई हैं, और योगिता की तो भूमिका ही दोहरी कर दी गई है, पर ये सभी असफल रही हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नई अभिनेत्री सुलक्षणा देसपांडे अपनी भावुक भूमिका में अवश्य जमी है, पर चारों ओर के प्रभावहीन वातावरण में वह भी मजाक का विषय बन कर रह गई है.

फिल्म की सब से बड़ी कमजोरी बेसिरपैर की पटकथा है. फ्लैशबैक बार-बार कहानी के मार्ग को रोक लेते हैं और कहानी आगे बढ़ने की बजाए पीछे खिसकने लगती है. महावीर अधिकारी ने ही संवाद भी लिखे हैं और बेजान हैं. रामावतार त्यागी, इंदीवर और राम भारद्वाज ने गीत लिखे हैं. इन में केवल रामावतार त्यागी का एक गीत अच्छा है. लक्ष्मीकांत प्यारेलाल भी बेसुरे हैं. क. द. माथुर की फोटोग्राफी साधारण है. फिल्म निर्देशन की दृष्टि से बुरी तरह असफल रही है.

○ दो ठग

निर्माता : नारंग फिल्म्स कंबाइन
निर्देशक : स. द. नारंग
मुख्य कलाकार : हेमा मालिनी, शत्रुघ्न सिन्हा, अजीत, देवकुमार, सारिका, सुलोचना, केश्तो मुखर्जी.

मारपीट और हत्याओं पर आधारित फिल्म 'दो ठग' केवल मनोरंजन को ही उद्देश्य बना कर बनाई गई है, लेकिन फिल्म का हर दृश्य किसी न किसी रूप में पहली फिल्मों की आवृत्ति मात्र होने से मनोरंजन की बजाए दर्शक को उकताहट ही मिलती है.

कोई स्वस्थ उद्देश्य सामने न होने से निर्माता मनोरंजन भरने के चक्कर में निम्न से निम्न स्तर पर उतर गया है और 'दो ठग' में केवल हत्याओं, मारपीट, कैबरे, प्रेम दृश्यों, मुजरों, रेस आदि को उल्टीसीधी तरतीब दे दी गई है और उन्हें किसी न किसी प्रकार कहानी में पिरो दिया गया है.

बास (अजीत) समाज में एक प्रतिष्ठित व्यक्ति है, पर भीतर ही भीतर वह स्मगलरों का एक गिरोह भी चलाता है. सहन सेठ (शत्रुघ्न सिन्हा) उसे बेनकाब करना चाहता है, पर बास उस की हत्या करवा देता है. कमला (हेमा) और रवि (शत्रुघ्न सिन्हा की दोहरी भूमिका) कुशल ठग हैं. ये दोनों भी गिरोह में शामिल हो कर अनेक छलप्रपंचों के बाद अंत में उसे समाप्त करते हैं.

कुछ वर्ष पहले किसी फिल्म में एक ही ठग, चोर, बेईमान या डाकू का होना काफी समझा जाता था. पर आजकल मनोरंजन की खुराक तेज करने के लिए उसे डबल कर दिया गया है. इसी लिए इन दिनों 'दो चोर,' 'दो बेईमान,' 'दो जासूस,' 'दो ठग' आदि फिल्में बनने लगी हैं. 'शोले' आदि फिल्मों में नाम भले ही दूसरे रख लिए जाएं, फार्मूला वही रहता है. भविष्य में शायद इस डबल को और भी डबल करना पड़े तब फिल्म में तीनतीन चारचार नायक और नायिकाएं डालनी पड़ेंगी.

'दो ठग' की उपरोक्त कहानी में निर्देशक ने बुद्धि और तर्क नाम की चीज को ताक पर रख दिया है और एक से एक मूर्खतापूर्ण दृश्य भर दिए हैं. कमला कभी ठग है तो कभी वेश्या बन कर मुजरा गाने लगती है. घोड़े की सवारी में तो वह कुशल है ही, पिस्तौल में भी अचूक निशानेबाज है. एक नन्हा लड़का, जिस ने कभी मोटर नहीं चलाई, अचानक मोटर ड्राइव करने लगता है और वह भी पूरी रफ्तार से पहाड़ी प्रदेश में. स्मगलरों के पास एक हेलीकाप्टर भी न जाने कहां से आ जाता है, जिस द्वारा वे नन्हे लड़के को जंगल में खोजते फिरते हैं.

अभिनय में हेमा को एक साधारण सी भूमिका ही निभानी पड़ी है, जिस में उसे कोई कठिनाई नहीं हुई. नृत्य के नाम पर भी उसे एक मुजरा ही प्रस्तुत करना पड़ा है.

शत्रुघ्न सिन्हा की पुरानी अकड़ कुछ कम हुई है, पर अभी पूर्णतः गई नहीं है. अन्य कलाकार अपने साधारण रूप में हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिसंबर (प्रथम) अंक में प्रकाशित 'सूरज डूब गया' (कहानी : रजनी गोपालन) एवं 'प्रायश्चित्त' (कहानी : कांता 'निशा') प्रभावित करती है.

'दहेज' (लेख : शंकरप्रसाद श्रीवास्तव) में चित्रित विचार केवल औपचारिक हो कर ही रह गए हैं. सभी जानते हैं कि यह प्रथा बुरी है, इसे दूर करना चाहिए, परंतु व्यावहारिक रूप में शायद ही कोई इस से परहेज करता होगा. इसे रोकने के लिए लड़कों को ही नहीं वरन् लड़कियों को भी आगे बढ़ना होगा.

—मंजू लता, नरही

✦

'सूरज डूब गया' कहानी हृदय को छू गई. परंतु एक ओर जहां मृणाल के प्रति संवेदना जागृत होती है वहां लेखक ने शैलेंद्र के साथ न्याय नहीं किया. आत्महत्या की बात कुछ स्वाभाविक नहीं लगी. मैं अनेक ऐसे दंपतियों को जानता हूं, जिन की पत्नियां उन से अधिक लायक, खूबसूरत और कमाने वाली हैं. उन में हीनता की भावना का यह मनोविश्लेषण सामान्य नहीं लगता.

लेखिका कुछ विशेष त्रुटियां भावावेश में शायद अनजाने कर गई है, अथवा उसे वैवाहिक जीवन का ज्ञान नहीं है. सारी कहानी एक लंबी प्रक्रिया सी लगती है, जो चारपांच साल से कम समय में पूर्ण नहीं हो सकती. पर लेखक ने उसे केवल दो वर्षों में सीमित रखा है. दो वर्षों में इतने अधिक परिवर्तन, जिस तेजी से चित्रित किए हैं—वे असंभव हैं. विवाह के बाद कम से कम दस माह तक कोई स्त्री मां नहीं बन सकती. अतः दो वर्ष बाद उस के बच्चे की आयु अधिक से अधिक चौदह महीने की होगी.

इस कहानी के अनुसार यह संभावना तीनचार मास की आयु से अधिक नहीं बैठती. फिर उस बच्ची का 'मम्मीपापा' कह कर रोना कुछ जमा नहीं. वैसे लेखिका इतने सशक्त मनोवैज्ञानिक विश्लेषण के लिए प्रशंसा की पात्र है.

—उमाशंकर रायजादा, जबलपुर

✦

दिसंबर (प्रथम) अंक पढ़ा. काफी रुचिकर लगा. विशेषतः 'एक और रिश्ता' (कहानी : इंद्रारानी) आकर्षक रहा. सांप्रदायिकता व अंधविश्वास को दूर करने का सजीव चित्रण किया गया है. 'प्रेत की विदाई' (कहानी : सत्यकुमार) पैशाचिक ढकोसलों की पोल है. 'दहेज' (लेख : शंकरप्रसाद श्रीवास्तव) एक क्रांतिकारी रचना है. आप को दहेज विरोधी लेखों को प्राथमिकता देनी चाहिए.

'आप के पत्र' स्तंभ के अंतर्गत प्रकाशित

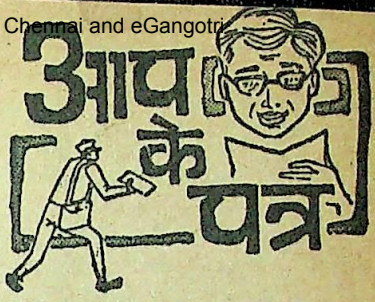

गिरजेश शर्मा, देवास, का पत्र पढ़ा. मैं उन के विचार से पूर्णतः सहमत हूं. पुरुषों का फैशन करना भारतीय संस्कृति के विरुद्ध है तो औरतों का फैशन करना क्या भारतीय संस्कृति के अनुकूल है? भारतीय सभ्यता में शादी के बाद ही औरत को श्रृंगार करना लिखा है, न कि शादी से पहले. अगर भारतीय संस्कृति को बिगाड़ने का दोष लगाया जाता है तो केवल पुरुष वर्ग पर ही क्यों? इस के लिए दोनों वर्ग ही जिम्मेदार हैं.

—आशुतोष पाठक, अलीगढ़

✦

दिसंबर (प्रथम) अंक में 'आप के पत्र' स्तंभ के अंतर्गत श्री गिरजेश शर्मा, देवास ने अपने पत्र में लड़कियों के तैयार हो कर घर से निकलने का एक मात्र उद्देश्य अपनी तारीफ कराना और लड़कों से कटाक्ष सुनना बताया है. क्या लड़कियां कहीं जाने के लिए अच्छे कपड़े न पहनें, तैयार हो कर न निकलें, तो क्या पुराने, मैले कपड़ों और बिना संवारे बालों के साथ बाहर निकल कर लड़कों से अपना मजाक उड़वाएं? क्योंकि लड़के तो कुछ भी कहने से नहीं चूकते.

क्या लड़के फैशन नहीं करते? क्या लड़कों के बनसंवर कर निकलने का उद्देश्य भी सिर्फ यही नहीं होता है कि लड़कियां उन की तारीफ करें? लेकिन लड़कियां तो उन पर कटाक्ष नहीं करतीं. एक लड़की अगर फैशन कर ले तो उसे दुनिया की नजरों का तो डर रहता ही है, उधर लड़कों से भी डरना पड़ता है कि कहीं वे कोई ऐसावैसा कटाक्ष न कर दें.

—मीरू गोयल, मोगा

✦

दिसंबर (प्रथम) अंक में प्रकाशित 'परमाणु बम' (लेख : महावीरसिंह मुंडिया) वैज्ञानिक जानकारी पूर्ण रचना है. परंतु आज के बदलते युग में परमाणु बम का विषय भी अब पुराना हो चला है. अब तो कई बड़े देश भयानक गैसों एवं कीटाणुओं की खोज कर कीटाणु और रासायनिक युद्ध की पूरी तैयारी कर चुके हैं. भावी युद्ध में बेझिझक इन अस्त्रों का प्रयोग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किया जाएगा. अन्य देश परमाणु बम इत्यादि बनाने में भले ही अत्यधिक उन्नति कर लें, लेकिन युद्ध के समय उन के ये हथियार धरे के धरे रह जाएंगे और एक इशारे पर कोई बड़ा देश पूरी दुनिया को मौत की नींद सुला कर विश्वविजयी होने का स्वप्न सहज ही पूरा कर लेगा.

नवंबर (द्वितीय) अंक में 'परीक्षा में नकल की प्रवृत्ति' (लेख : गोपालप्रसाद 'वंशी') पढ़ा. देश की अनेक ज्वलंत समस्याओं के समान परीक्षाओं में नकल की प्रवृत्ति भी शिक्षा जगत की एक जटिल समस्या है. संपूर्ण शिक्षा जगत इस समस्या पर गंभीरता से विचार कर रहा है तथा बोर्ड अथवा विश्वविद्यालय अनुचित साधनों के प्रयोग पर रोक लगाने के लिए प्रयत्नशील हैं.

किंतु स्थिति यह है कि जितनी दवाइयां आविष्कृत होती हैं, उतने ही रोग बढ़ जाते हैं. इसे सुलझाने के लिए जितने प्रयास किए जाते हैं, यह समस्या उतना ही जटिल रूप धारण करती जाती है. कारण, शिक्षा के वास्तविक उद्देश्य ज्ञान की प्राप्ति को भूल कर छात्र परीक्षा को ही सब कुछ समझ बैठे हैं. येनकेनप्रकारेण डिग्रियां प्राप्त करना उन का एक मात्र ध्येय रह गया है, ताकि रोजगार के अवसर उपलब्ध हो सकें.

दूसरी ओर हमारे पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन में आज छात्र के मन को वह शांति प्राप्त नहीं है जो अध्ययन के लिए आवश्यक है. बीमारी वृक्ष की जड़ तक फैल चुकी है. डालडाल और पातपात दवाई का छिड़काव अब निरर्थक है.

—नंदकिशोर अरोड़ा, जोधपुर

✦

नवंबर (द्वितीय) अंक में 'मैं चली जाऊंगी' (कहानी : शोभा ठाकुर) भारतीय ग्राम्या की कुरूपता की करुण कथा है. पति के अनेक अत्याचार सहन करते रहने पर भी चंपा उफ् तक नहीं करती और जब नहीं सहा जाता तो वह अपने पिता के पास चली जाती है और पुनर्विवाह करती है.

यदि यह नया विचार आज गांवगांव में व्यावहारिक रूप धारण कर ले तो मैं यह सोचती हूं कि गांव की अनेक अबोध नारियां अपने विषमय जीवन से छुटकारा पा सकेंगी.

—सीता श्रीवास्तव, आगरा

✦

सरिता का नवंबर(द्वितीय) अंक बहुत ही अच्छा लगा. ढेरों सामग्री और वह भी उच्च स्तरीय, अन्यत्र नहीं मिल सकती थी.

'प्रेम कपूर' (भेंटवार्ता : देवेंद्र मोहन) कुछ खास नहीं लगी. कृपया भेंटवार्ताओं की अपेक्षा फिल्म व्यवसाय के विषय में जानकारी दें तो अच्छा रहेगा.

बीस साल पहले की 'मेनका, रंभा, उर्वशी' (कहानी : ऊषा) बहुत ही अच्छी लगी. कृपया पुरानी कहानियों की संख्या बढ़ा दें.

—कमलकुमार चोपड़ा, दिल्ली

✦

नवंबर (द्वितीय) अंक में नंदकिशोर अरोड़ा, जोधपुर, ने अक्तूबर (प्रथम) अंक में प्रकाशित 'भोला किसान' (लेख : भोलासिंह क्षत्री) को भ्रांतिपूर्ण एंव मिथ्या बताया है. लगता है, नंदकिशोरजी को किसानों के बारे में केवल किताबी अनुभव है, वरना वह ऐसा आरोप नहीं लगाते. किसानों द्वारा सताया गया एक भूमिधर मैं भी हूं और मेरे व भोलासिंहजी की तरह और कितने ही भूमिधर इस व्यथा से पीड़ित हैं.

सरिता में अब तक 'बीस साल पहले' स्तंभ में प्रकाशित कहानियां प्रेरणादायक, स्वच्छ व मर्मस्पर्शी रही हैं. आशा है, ऐसी ही कहानियां 'सरिता' के आगामी अंकों में भी मिलेंगी.

—सुनील दत्त कौटिल्य श्रीवास्तव, भोगवारा

✦

नवंबर (द्वितीय) अंक पढ़ा. 'पति दोषी क्यों?' (लेख : निरंकारस्वरूप श्रीवास्तव) तथा 'पतिपत्नी के कार्य क्षेत्र' (लेख : श्रीकृष्ण अग्रवाल) पसंद आए. इस प्रकार का विचार आमंत्रण वस्तुतः सराहनीय प्रयास है.

—गौरीशंकर माहेश्वरी, बंबई

✦

नवंबर (द्वितीय) में प्रकाशित 'पंचायत' (एकांकी: गंगासहाय 'प्रेमी') वास्तव में सही है. गांव के भोलेभाले लोगों को धर्म के नाम पर इस प्रकार ही लूटा जाता है. लेकिन वीरेंद्र, जो कि दीनू को लुटने से बचाता है, पंचों को बारबार कानून की धमकी देता है. इस से साफ जाहिर होता है कि दीनू को बचाना वीरेंद्र के बलबूते के बाहर की बात है.

अगर वीरेंद्र के साथ चारपांच युवकों को पंचों से नैतिकता के लिए लड़ाया जाता तो एकांकी और अच्छा तथा उद्देश्यपूर्ण हो जाता.

—ललितकुमार सरावगी 'जुगनू,' फारबिसगंज

✦

मैं 'सरिता' विगत चारपांच वर्षों से लगातार पढ़ता आ रहा हूं. नवंबर (द्वितीय) में श्रीनंदकिशोर अरोड़ा द्वारा 'भोला किसान' (लेख : भोलासिंह क्षत्री) में किसानों के विषय में जैसा बताया गया है, वास्तव में वे उस से कहीं ज्यादा मतलबपरस्त तथा चुस्त होते हैं.

—ओमप्रकाश, धर्मपुरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यक्तिगत विज्ञापन

वैवाहिक विज्ञापन

20 वर्षीया, पांचाल ब्राह्मण, बी. ए., गृहकार्य में दक्ष कन्या हेतु सजातीय, सेवारत वर चाहिए. डाक्टर, इंजीनियर तथा प्रोफेसर को प्राथमिकता. पूर्ण विवरण सहित लिखें : वि. नं. 290, सरिता, नई दिल्ली-55.

26 वर्षीया, जैन ओसवाल, बी. ए., एम. ए. (हिंदी), बी. एड., शिक्षित, सुंदर, सुशील कन्या के लिए सजातीय वर चाहिए. शीघ्र लिखें : वि. नं. 247, सरिता, नई दिल्ली-55.

22 व 24 वर्षीया, विश्वकर्मा, शिक्षित, सुशील कन्याओं हेतु सुंदर, सुयोग्य, सजातीय, गजटेड अफसर वर चाहिए. विवाह शीघ्र. लिखें : वि. नं. 300, सरिता, नई दिल्ली-55.

27 वर्षीय, जाटव, एम. एससी., सरकारी कर्मचारी, आय 1000 रुपए मासिक, कद 167 सें. मी. हेतु सुंदर, गृहकार्य में दक्ष, सुशिक्षित, सुशील वधू चाहिए. लिखें : वि. नं. 301, सरिता, नई दिल्ली-55.

23 वर्षीया, अरोड़ा, एम. ए., बी. एड. कन्या के लिए सुयोग्य, सजातीय वर चाहिए. लिखें : वि. नं. 302, सरिता, नई दिल्ली-55.

21 वर्षीया, सिंहल, एम. ए. द्वितीय श्रेणी, सुशील, स्वस्थ, सुंदर, गृहकार्य दक्ष कन्या हेतु कार्यरत, सुयोग्य वर चाहिए. अच्छी शादी. जन्मपत्री सहित लिखें : वि. नं. 303, सरिता, नई दिल्ली-55.

20 वर्षीया, बीसा अग्रवाल, गौरवर्ण, सुंदर, सुशील, ग्रेजुएट, केंद्रीय सेवारत, 450 रुपए मासिक कन्या हेतु सुयोग्य, स्वावलंबी, सजातीय वर चाहिए. दहेज नहीं. विवाह उत्तम. लिखें : वि. नं. 304, सरिता, नई दिल्ली-55.

37 वर्षीया, डबल एम. ए., लेक्चरर गर्ल्स कालिज, सुशील, सुंदर व 21 वर्षीया, एम. ए., सुशील, सुंदर, पेंटिंग में निपुण, दोनों गृहकार्य दक्ष, खत्री कन्याओं हेतु सुयोग्य, सजातीय वर चाहिए. लिखें : वि. नं. 305, सरिता, नई दिल्ली-55.

28 वर्षीया, राजपूत, पोस्ट ग्रेजुएट, सुंदर कन्या हेतु योग्य वर चाहिए. शादी शीघ्र व बहुत अच्छी. जाति बंधन नहीं. लिखें : वि. नं. 306, सरिता, नई दिल्ली-55.

28 वर्षीया, कान्यकुब्ज ब्राह्मण, एम. ए. (डबल), बी. एड., अध्यापिका, गृहकार्य दक्ष, स्वस्थ, सुंदर, कन्या हेतु बारोजगार ब्राह्मण वर चाहिए. प्रथम बार में पूर्ण विवरण लिखें : वि. नं. 307, सरिता, नई दिल्ली-55.

28 वर्षीया, राजपूत, स्नातकोत्तर कन्या के लिए स्वजातीय, इंजीनियर, डाक्टर या उच्च पदस्थ योग्य वर चाहिए. लिखें : वि. नं. 308, सरिता, नई दिल्ली-55.

22 वर्षीया, गौड़ ब्राह्मण, सुंदर, इकहरा बदन, कद 5'-2", इंटरमीडिएट, गृहकार्य कुशल, बंबई स्थित कन्या हेतु सेवारत वर चाहिए. लिखें : वि. नं. 309, सरिता, नई दिल्ली-55.

22 वर्षीया, ग्रेजुएट, लंबी, सुंदर, कन्या के लिए जमशेदपुर/रांची/पटना/कलकत्ता में अच्छी सर्विस करता हुआ अग्रवाल/वैश्य वर चाहिए. लिखें : वि. नं. 310, सरिता, नई दिल्ली-55.

32 वर्षीया, आयु से छोटी दिखने वाली, पंजाबी ब्राह्मण, गौरवर्ण, स्लिम, ग्रेजुएट (होम साइंस), कार्यरत, आय 575 रुपए कन्या हेतु उच्च पद, उच्च शिक्षा व उच्च जाति का अविवाहित, हिंदीभाषी वर चाहिए. गुजरात में रहने वाले को प्राथमिकता. लिखें : वि. नं. 311, सरिता, नई दिल्ली-55.

22 वर्षीया, कायस्थ, सक्सेना, मध्य प्रदेश निवासी, एम. एससी. अध्ययनरत, सुंदर कन्या हेतु बारोजगार, योग्य वर चाहिए. जाति, दहेज बंधन नहीं. आडंबरहीन विवाह. पत्रव्यवहार हिंदी में करें. लिखें : वि. नं. 312, सरिता, नई दिल्ली-55.

22 वर्षीया, बी. एससी., मध्यप्रदेशीय, सुंदर, कद 5'-4", गृहकार्य में दक्ष कन्या हेतु सजातीय (जैसवाल, शिवहरे, चौकसे, राय) डाक्टर, इंजीनियर, मिलिट्री अफसर, व्यापारी वर चाहिए. शादी अच्छी व शीघ्र. लिखें : वि. नं. 313, सरिता, नई दिल्ली-55.

21 वर्षीया, एम. ए., कद 4'-6", मांगलिक, सुंदर कन्या हेतु पंजाबी क्षत्रिय वर चाहिए. लिखें : वि. नं. 314, सरिता, नई दिल्ली-55.

21 वर्षीया, जैन मित्तल, सुंदर, स्वस्थ, बी. ए. (दिल्ली) सिलाईकढ़ाई डिप्लोमा कन्या हेतु सजातीय वर चाहिए. प्रथम बार में पूर्ण विवरण लिखें : वि. नं. 315, सरिता, नई दिल्ली-55.

21 वर्षीया, श्रीवास्तव (दूसरे), एम. ए. फाइनल, गोरी, 5'-2½" लंबी, इकहरा बदन, सुंदर, सुशील, गृहकार्य में निपुण कन्या हेतु सजातीय, सुयोग्य वर चाहिए. कार्यरत डाक्टर इंजीनियर, प्रथम श्रेणी के अधिकारी को प्राथमिकता. उत्तम व शीघ्र विवाह. लिखें : वि. नं. 316, सरिता, नई दिल्ली-55.

24 वर्षीया, मैथिल ब्राह्मण, एम. ए.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(अंगरेजी), उच्च द्वितीय श्रेणी, कार्यदक्ष, सुशील, सुंदर, कद 5'-1" कन्या हेतु योग्य, मंगली वर चाहिए. जाति, दहेज बंधन नहीं. लिखें : वि. नं. 317, सरिता, नई दिल्ली-55.

27 वर्षीया, मारवाड़ी अग्रवाल, स्मार्ट, सुंदर, ग्रेजुएट, निस्संतान, कानूनी तलाकशुदा कन्या हेतु सजातीय, शिक्षित, विधुर युवक चाहिए. लिखें : वि. नं. 318, सरिता, नई दिल्ली-55.

22 वर्षीया, विश्वकर्मा, एम. ए. (हिंदी), संभ्रांत परिवार की कन्या के लिए उपयुक्त वर की आवश्यकता है. कृपया लिखें : वि. नं. 319, सरिता, नई दिल्ली-55.

24 वर्षीया, माहेश्वरी, बी. ए. कन्या हेतु वर चाहिए. जाति बंधन नहीं. साधारण विवाह. लिखें : वि. नं. 320, सरिता, नई दिल्ली-55.

22 वर्षीया, मध्य प्रदेश निवासी, जाट, बी. एससी., उज्ज्वल गेहुआं रंग, गृहकार्य में पूर्णतः दक्ष, कद 5'-3", चेहरे पर कुछ बहुत हलके चेचक के निशान, कन्या हेतु सजातीय, योग्य वर चाहिए. लिखें : वि. नं. 321, सरिता, नई दिल्ली-55.

18 वर्षीया, बी. ए., चौहान ठाकुर, कन्या हेतु सजातीय, आत्मनिर्भर वर चाहिए. प्रथम बार में ही पूर्ण विवरण. लिखें : वि. नं. 322, सरिता, नई दिल्ली-55.

32 वर्षीया, सरयूपारीण ब्राह्मण, एम. ए., बी. एड., शिक्षिका एवं 31 वर्षीय, गौरवर्ण, कद 5'-11", राष्ट्रीयकृत बैंक में कार्यरत, 900 रुपए मासिक आय, स्वस्थ एवं आकर्षक व्यक्तित्व वाले नवयुवक हेतु क्रमशः सजातीय वर एवं वधू चाहिए. लिखें : वि. नं. 323, सरिता, नई दिल्ली-55.

32 वर्षीय, जांगिड़ ब्राह्मण, वैद्य, अच्छी आय, चार वर्षीय संतान वाले विधुर हेतु शिक्षित व सुंदर वधू चाहिए तथा 19 वर्षीया, बी. एस. टी. सी. अध्ययनरत कन्या के लिए योग्य वर चाहिए. प्रथम बार में पूर्ण विवरण. लिखें : वि. नं. 324, सरिता, नई दिल्ली-55.

28 वर्षीय, कान्यकुब्ज ब्राह्मण, एम. एससी., केंद्रीय सेवारत, 650 रुपए आय युवक हेतु कन्या तथा 23 वर्षीया, स्वस्थ, सुंदर, बी. ए., बहन हेतु सुयोग्य वर चाहिए. आयुर्वेदिक डाक्टर कन्या एवं डाक्टर, इंजीनियर वर को प्राथमिकता. सविवरण शीघ्र लिखें : वि. नं. 325, सरिता, नई दिल्ली-55.

34 वर्षीय, कुशवाहा अविवाहित, कद 5'-4", 1300 रुपए मासिक आय, इंजीनियर के लिए सुंदर, सुशिक्षित, उपयुक्त वधू चाहिए. प्रथम बार में पूर्ण विवरण लिखें : वि. नं. 374 सरिता, नई दिल्ली-55.

26 वर्षीय, निगम, स्वस्थ, ग्रेजुएट रेंजर हेतु सुंदर वधू एवं एल. टी. कन्या हेतु लगभग 26 वर्षीय, कायस्थ वर शीघ्र चाहिए. शादी अच्छी. लिखें : वि. नं. 326, सरिता, नई दिल्ली-55.

26 वर्षीय, चौहान ठाकुर, कद 168 सें. मी., जूनियर इंजीनियर पद पर कार्यरत युवक हेतु सजातीय, सुशिक्षित कन्या चाहिए. दहेज बंधन नहीं. पूर्ण विवरण प्रथम बार में. लिखें : वि. नं. 327, सरिता, नई दिल्ली-55.

25 वर्षीय, शासकीय सेवारत, जैन, मासिक वेतन 600 रुपए युवक हेतु सजातीय कन्या चाहिए. लिखें : वि. नं. 328, सरिता, नई दिल्ली-55.

28 वर्षीय, माथुर, मैकेनिकल ड्राफ्टसमैन, मध्य प्रदेश शासन में कार्यरत हेतु सुयोग्य, पढ़ी-लिखी कायस्थ कन्या चाहिए. मध्य प्रदेश शासन शिक्षा विभाग में कार्यरत कन्या को प्राथमिकता. दहेज बंधन नहीं. लिखें : वि. नं. 329, सरिता, नई दिल्ली-55.

दहेज, जाति बंधन रहित 26 वर्षीय, सुंदर, उच्च राजपूत, एम. बी. बी. एस., राजकीय सेवारत डाक्टर हेतु सुंदर, गौरवर्ण, मेडिको कन्या चाहिए. सजातीय को प्राथमिकता दी जाएगी. लिखें : वि. नं. 330, सरिता, नई दिल्ली-55.

48 वर्षीय, स्थानीय, हिंदू, एकाकी, उच्च शिक्षित, संपन्न हेतु शीघ्र वधू चाहिए. बंधन नहीं. लिखें : वि. नं. 331, सरिता, नई दिल्ली-55.

28 वर्षीय, पर्वतीय अलमोड़ा जिला मूल निवासी, प्रतिष्ठित परिवार, स्मार्ट, कूर्माचली पांडे शाखा (यजुर्वेदीय ब्राह्मण) भारद्वाज गोत्र, 950 रुपए मासिक आय, इंजीनियर हेतु सजातीय/विजातीय, उपयुक्त सुकन्या चाहिए. विस्तृत विवरण कुंडली सहित लिखें : वि. नं. 332, सरिता, नई दिल्ली-55.

40 वर्षीय, हिंदू, शाकाहारी, संपन्न, 600 रुपए मासिक, एकाउंटेंट विधुर के लिए किसी भी दोषवश, अविवाहित, विधवा अथवा परित्यक्ता, आत्मनिर्भर पत्नी चाहिए. जाति बंधन नहीं. लिखें : वि. नं. 333, सरिता, नई दिल्ली-55.

25 वर्षीय, बी. ए. एम. एस. (अंतिम) युवक हेतु सरयूपारीण ब्राह्मण, सुंदर, सुशिक्षित वधू चाहिए. लिखें : वि. नं. 334, सरिता, नई दिल्ली-55.

बहुत धनी, अग्रवाल परिवार के, 27

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्षीय, कद 5'-5", सुंदर, [illegible] प्राप्त कुछ दिनों के लिए भारत आए [illegible] युवक के लिए सजातीय वधू चाहिए. लिखें: वि. नं. 335, सरिता, नई दिल्ली-55.

29 वर्षीय, उत्तर प्रदेशीय, कपूर, हायर सेकंडरी पास, ऊंचाई 6', मासिक आय 800 रुपए, राजस्थान में व्यापार में संलग्न युवक के लिए योग्य कन्या की आवश्यकता है. लिखें : वि. नं. 336, सरिता, नई दिल्ली-55.

31 वर्षीय, वाराणसी निवासी, शांडिल्य गोत्रीय ब्राह्मण, विधुर (दो पुत्र), पोस्ट ग्रेजुएट, [illegible], मासिक आय 800 रुपए, मैसूर में सेवा-[illegible] के लिए सजातीय, सुयोग्य जीवनसंगिनी चाहिए. लिखें : वि. नं. 337, सरिता, नई दिल्ली-55.

26 वर्षीय, जाटव, बी. ए. बी. एल., कार्य-[illegible] युवक के लिए सुंदर, पढ़ीलिखी वधू की आवश्यकता है. आदर्श विवाह के इच्छुक संबंध स्थापित करें. लिखें : वि. नं. 338, सरिता, नई दिल्ली-55.

23 वर्षीय, पालीवाल (ब्राह्मण), एम. एस. सी. कृषि, व्यवसाय में संलग्न, युवक हेतु [illegible], शिक्षित, सुयोग्य कन्या चाहिए. लिखें : वि. नं. 339, सरिता, नई दिल्ली-55.

33 वर्षीय, ग्रेजुएट, सरकारी कर्मचारी, [illegible], निस्संतान, कद 5'-6", मासिक आय [illegible] रुपए वर हेतु हिंदीभाषी कन्या चाहिए. [illegible], शिक्षा, दहेज बंधन नहीं. संपन्न परिवार [illegible] : वि. नं. 285, सरिता, नई दिल्ली-55.

35 वर्षीय, यादव, मोटर मैकेनिक (यू. पी. [illegible] में नौकर), मासिक वेतन 400 रुपए [illegible] सुशील कन्या की आवश्यकता है. लिखें : वि. नं. 340, सरिता, नई दिल्ली-55.

32 वर्षीय, मासिक आय 600 रुपए से [illegible], विधुर (दो लड़कियां—5,6 वर्षीया) [illegible] गुणवान, घरेलू वधू चाहिए. विधवा को [illegible]कता. लिखें : वि. नं. 341, सरिता, नई [illegible]-55.

[illegible] बिना दहेज शादी इच्छुक, उत्तर भारतीय [illegible] एम. बी. इंजीनियर (ग्वालियर) 600 [illegible] मासिक, 30 वर्षीय, प्रजापति (भार्गव [illegible] कुम्हार) कद 5'-7", सुंदर, गेहुआं वर्ण, [illegible] विरोधी, अकेले हेतु सुयोग्य वधू चाहिए. [illegible] बंधन नहीं. संपूर्ण विवरण प्रथम. लिखें : [illegible] नं. 342, सरिता, नई दिल्ली-55.

27 वर्षीय, ब्राह्मण, एम. बी. बी. एस., [illegible] हेतु डाक्टर वधू की आवश्यकता है. कोई [illegible] नहीं. शीघ्र विवाह. लिखें : वि. नं. [illegible], सरिता, नई दिल्ली-55.

40 वर्षीय, [illegible], विधुर (चार बच्चे) गवर्नमेंट कंट्रेक्टर म. प्र. में सुव्यवस्थित हेतु निःसंतान युद्ध विधवा, तलाकशुदा अथवा अन्य कन्याओं के विवरण आमंत्रित हैं. जाति बंधन नहीं. दहेज नहीं. सविवरण लिखें : वि. नं. 344, सरिता, नई दिल्ली-55.

26 वर्षीया, एम. ए., बी. एड., दिल्ली निवासी अध्यापिका हेतु सुयोग्य वर चाहिए. कुमांऊनी ब्राह्मण को प्राथमिकता. लिखें : वि. नं. 345, सरिता, नई दिल्ली-55.

28 वर्षीय, पंजाबी अरोड़ा, कद 5'-7", स्टेट बैंक कर्मचारी, मंगली वर हेतु, सुंदर, गृहकार्य में दक्ष, सुशिक्षित कन्या चाहिए. लिखें : वि. नं. 346, सरिता, नई दिल्ली-55.

24 वर्षीय, मैड़ राजपूत, एम. ए. इकनामिक्स, निजी व्यवसायरत युवक के लिए सुंदर, सुशिक्षित, लंबी, गौरवर्ण, सजातीय वधू चाहिए. लिखें : वि. नं. 349, सरिता, नई दिल्ली-55.

22½ वर्षीया, माहेश्वरी, गौरवर्ण, एम. ए. (फाइनल), कद 5'-1", कन्या हेतु वर चाहिए. लिखें : वि. नं 350, सरिता, नई दिल्ली-55.

17 वर्षीया, सिंहल, मिडिल, सुंदर, गृह-कार्य दक्ष, कद 5'-3", कन्या हेतु सजातीय, कार्यरत वर चाहिए. लिखें : वि. नं. 351, सरिता, नई दिल्ली-55.

44 वर्षीय, क्षत्रिय वेतन 800 रुपए, हेतु निःसंतान, सजातीय, 30-35 वर्षीया, विधवा, तलाकशुदा, शिक्षित जीवनसाथी चाहिए. लिखें : वि. नं 352, सरिता, नई दिल्ली-55.

19½ वर्षीय, बीसा अग्रवाल, इंटर, कद 167 सें. मी., संपन्न व्यापारी युवक के लिए सजातीय, सुंदर कन्या चाहिए. लिखें : वि. नं. 353, सरिता, नई दिल्ली-55.

19 वर्षीय, नेत्रहीन, संपन्न व सम्मानित परिवार के सरकारी कालिज में संगीत अध्यापक हेतु सुघड़ कन्या चाहिए. लिखें : वि. नं 354, सरिता, नई दिल्ली-55.

27 वर्षीय, सैनी, इंजीनियर युवक हेतु शिक्षित, आकर्षक व्यक्तित्व वाली वधू चाहिए. डाक्टर कन्या को प्राथमिकता. दहेज बंधन नहीं. लिखें : वि. नं. 355, सरिता, नई दिल्ली-55.

20 वर्षीया, राजपूत, सुंदर, मैट्रिक कन्या हेतु उच्च विचारधारा वाला शिक्षित युवक चाहिए. दहेज नहीं. विवाह शीघ्र. लिखें : वि. नं. 367, सरिता, नई दिल्ली-55.

23 वर्षीया, अग्रवाल, सिंहल गोत्र, हाई स्कूल पास, गृहकार्य में दक्ष, सुंदर कन्या हेतु योग्य वर चाहिए. अच्छी शादी. लिखें : वि.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विज्ञापनदाताओं के लिए

सरिता में वैवाहिक, गोद व अन्य व्यक्तिगत विज्ञापनों की दर 1 रुपए प्रति शब्द है और अंगरेजी पाक्षिक कैरेवान में 50 पैसे प्रति शब्द. यदि सरिता के साथसाथ वही विज्ञापन कैरेवान में भी प्रकाशित कराया जाए तो उस के लिए केवल 30 पैसे प्रति शब्द अतिरिक्त देना होगा, यानी केवल 1 रुपए 30 पैसे प्रति शब्द. अगर वही विज्ञापन सरिता, कैरेवान के साथ वूमंस इरा में भी प्रकाशित कराया जाए तो सिर्फ 1.50 रुपए प्रति शब्द लगेंगे.

मूल विज्ञापन के साथ 'विज्ञापन न ...सरिता, नई दिल्ली-55.' 6 शब्दों का मूल्य आवश्यक है. विज्ञापनदाता के 'निजी पते व फोटो सहित' वाले विज्ञापन स्वीकार नहीं किए जाते.

विज्ञापन के उत्तर में प्राप्त पत्र विज्ञापनदाता के पास भेजने की व्यवस्था करने के लिए 4 रुपए अतिरिक्त लिए जाएंगे.

विधवाओं, परित्यक्ताओं और जाति बंधन छोड़ कर विवाह करने वालों के वैवाहिक विज्ञापन आधे मूल्य पर स्वीकार किए जाते हैं. ऐसे विज्ञापनों में विज्ञापनदाता की जाति का भी उल्लेख नहीं होना चाहिए.

विज्ञापन का शुल्क व विवरण साफसाफ लिख कर इस पते पर भेजिए. विज्ञापन विभाग, सरिता, नई दिल्ली-55.

नं. 368, सरिता, नई दिल्ली-55.

30 वर्षीया, (कहार) एल. टी. ग्रेड रा... कीय इंटर कालिज उत्तर प्रदेश में सेवारत... मासिक आय 550 रुपए. कन्या हेतु सजातीय... शिक्षित, जीवनसाथी चाहिए. दहेजाकांक्षी क... करें. प्रथम बार में पूर्ण विवरण. लिखें : वि... नं. 369, सरिता, नई दिल्ली-55.

48 वर्षीय, भारद्वाज, निःसंतान भूमिहार ब्राह्मण, विधुर, सरकारी सेवक, 2000 रु. मासिक... हेतु निःसंतान विधवा अथवा कुमारी 20 से 3... वर्षीया, गौरवर्ण वधू चाहिए. डाक्टर, नर्स... शिक्षिका को प्राथमिकता. प्रांतीय बंधन नहीं... लिखें : वि. नं. 370, सरिता, नई दिल्ली-55.

23 वर्षीय, जैन, आकर्षक व्यक्तित्व, मधुर स्वभाव, खुशमिजाज, अत्याधुनिक, चार्टर्ड एकाउंटेंसी विद्यार्थी, धनवान को अति सुंदर मधुर स्वभाव, स्लिम, स्वस्थ, विधवा... गरीब लड़की चाहिए. बंधन नहीं. लिखें : वि... नं. 372, सरिता, नई दिल्ली-55.

29 वर्षीय, पंजाबी अरोरा, कद 5'-... राष्ट्रीय बैंक में सेवारत, 800 रुपए मासिक आय... हेतु वधू चाहिए. लिखें : वि. नं. 373, सरिता... नई दिल्ली-55.

गोद विज्ञापन

दीपावली, 1975 को उत्पन्न, प्रतिष्ठित अग्रवाल, सुंदर कन्या को गोद लेने के इच्छु... विवरण सहित लिखें : वि. नं. 347, सरिता... नई दिल्ली-55.

चार माह की सुंदर, गौरवर्ण, अग्रवाल कन्या को गोद लेने के इच्छुक, संपन्न व्यक्ति... लिखें : वि. नं. 348, सरिता, नई दिल्ली-55.

रिक्त स्थान

आवश्यकता है गृहविज्ञान विशेषज्ञ की जो पाक विद्या, बुनाई, कढ़ाई, सिलाई, आंतरिक साजसज्जा, शिशु पालन इत्यादि पर अनुसंधान/शोध हेतु केंद्र का संचालन कर सकें. अनुभवी महिलाएं आवेदन करें. पो. बा. 515, सरिता, नई दिल्ली-55.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने गालों में गुलाबों की रेशमी ताज़गी जगाइए

...ाबी गुलाबी दमक-हर मौसम
...रेशमी रौनक। नई जॉन्सन्स*
...बी कॉम्प्लेक्शन क्रीम आपके
...हरे पर रेशमी कोमलता जगाती
...। आपके चेहरे पर सौंदर्य के
...ाब खिल उठते हैं। केवल
...ॉन्सन्स बेबी कॉम्प्लेक्शन क्रीम
...-दिन आपके चेहरे की त्वचा
...कोमल बनाए रखती है,
...ुपूर्वक सुरक्षा जगाए रखती है।
...थोड़ी सी ज़्यादा क़ीमत दी
...ते हैं वो आपके चेहरे पर बड़ी
...ुभूति के रूप में लौट आती है।

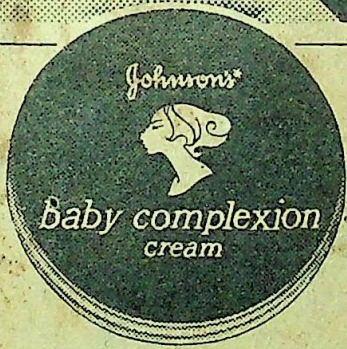

यह गुलाबी गुलाबी क्रीम आपके रूपरंग में अनोखी आभा जगाती है, इसकी खुशबू त्वचा में रचबस जाती है।

नई जॉन्सन्स* बेबी कॉम्प्लेक्शन क्रीम से अपने चेहरे पर रेशमी कोमलता रचाइए

* Trademark © J&J 75

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब आपका बच्चा बॉटल से
दूध पीने लायक हो जाय तो
आंख मूंदकर लीजिए –

पप्पू

–अधिक सावधानी से बनाया गया फीडर

ये रहीं पप्पू की
वे विशेषताएं जो
इसे सबसे भरोसेमन्द
फीडर बनाती हैं :

• इसकी बॉटल मजबूत
कांच की बनी है।
इसलिए सुरक्षित है।

• खास आकार के
निपल से बच्चे के पेट
में हवा कम जाती है।
इसलिए स्वास्थ्य के
लिए अच्छा है।

• टिकाऊ
ढक्कन लीक-प्रूफ है
और उबलते पानी में
चटकता नहीं।
इसलिए सुविधाजक है।

• बेजोड़ निपल कवर
निपल को ढककर धूल
व कीटाणुओं से सुरक्षित
रखता है। इसलिए
स्वच्छता की दृष्टि से भी
अच्छा है।

पप्पू

फीडर और निपल

पप्पू दो आकारों
में मिलता है :
स्टॅण्डर्ड और मिनि।

मां की मान्य शिशु-पालन की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरिता

जनवरी (प्रथम) 1976
अंक 497

सामाजिक व पारिवारिक पुनर्निर्माण की पाक्षिक पत्रिका

सम्पादक व प्रकाशक
विश्वनाथ

...शीर्षक भारत सरकार द्वारा ...ट्रेड मार्क है.

...में प्रकाशित सभी रचनाओं ...अधिकार दिल्ली प्रेस समाचार ...द्वारा सुरक्षित हैं. इसलिए बिना ...और रचना किसी प्रकार उद्धृत ...की जानी चाहिए.

...अर्थ भेजी गई रचनाओं की ...के लिए कार्यालय उत्तरदायी ...है. टिकट लगा, पता लिखा ...साथ होने पर ही अस्वीकृत ...लौटाई जाएंगी.

...में प्रकाशित कथा साहित्य में ...स्थान, घटनाएं व संस्थाएं ...काल्पनिक हैं और वास्तविक ...व्यक्तियों, स्थानों, घटनाओं या ...से उन की किसी भी प्रकार ...समानता केवल संयोग मात्र है.

...प्रेस समाचार पत्र के लिए ...द्वारा दिल्ली प्रेस, ...में मुद्रित.

...प्रकाशन कार्यालय : ...रानी झांसी रोड, अंडेवाला ..., नई दिल्ली-55.

एक प्रति : 2.00 रु.
वार्षिक : 40.00 रु.
दो वर्ष : 75.00 रु.
विदेशों में : (समुद्री डाक से)
एक वर्ष : 60.00 रु.

...आवरण : बी. सत्यमूर्ति

कथा साहित्य

विडंबना	प्रभात त्यागी	35
प्रतिज्ञा	राधिकाप्रसाद गौतम	72
क्षमा	मोहिनी जोशी	85
उलझन	कमररजा हैदरी 'नवोदित'	94
मेरे नए फैशन के जूते	रामसरन शर्मा	127
रूखासूखा भला	अहमद खालिद नदीम	142
सास पुराण	हरविंदर पाल	149
कायापलट	नारायणी	154

लेख

पुर्तगाली साम्राज्य	योगेशचंद्र शर्मा	19
गिर के शेर	प्रमिलादेवी	27
एंटीबायोटिक्स	रविशंकर चौबे	33
पीऊं या न पीऊं?	कुलदीपसिंह रामसिंह	48
बिंदिया	हुकमचंद सोगानी	58
शिक्षा	शंकरप्रसाद श्रीवास्तव	60
फैंसी ड्रेस	शकुंतला	69
जारज संतान	विनय दीक्षित	70
मोतियों का फ्राक	सरला भाटिया	84
छोटीछोटी बातें	पुष्पा सिंह	101
टूटते परिवार	ऋषिवंश	106
सौतेली मां	आप के विचार	111
एक उधार...	अनिलकुमार पांडेय	114
मृगतृष्णा	बसंती माथुर	117
पराशरस्मृति	सुरेंद्रकुमार शर्मा 'अज्ञात'	133
इज्जत का सवाल	शि. सु.	168

कविताएं

रात की लोरी	जगमोहन	32
कैसे रूप सजाऊं...	कुसुम शर्मा	43
सपनों के हंस	कृपाशंकर शुक्ल	77

स्तंभ

हमारी बेड़ियां	40	देश प्रदेश की भाषा	105
बात ऐसे बनी	47	ये पत्नियां	141
बच्चों के मुख से	57	ये पति	153
मुझे शिकायत है	68	चंचल छाया	165
इन्हें भी आजमाइए	83	आप के पत्र	171

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Agfa®

ISOLY-I

आगफ़ा आइसोली-१

हर मौसम में हूबहू तस्वीर खींचने वाला कैमरा

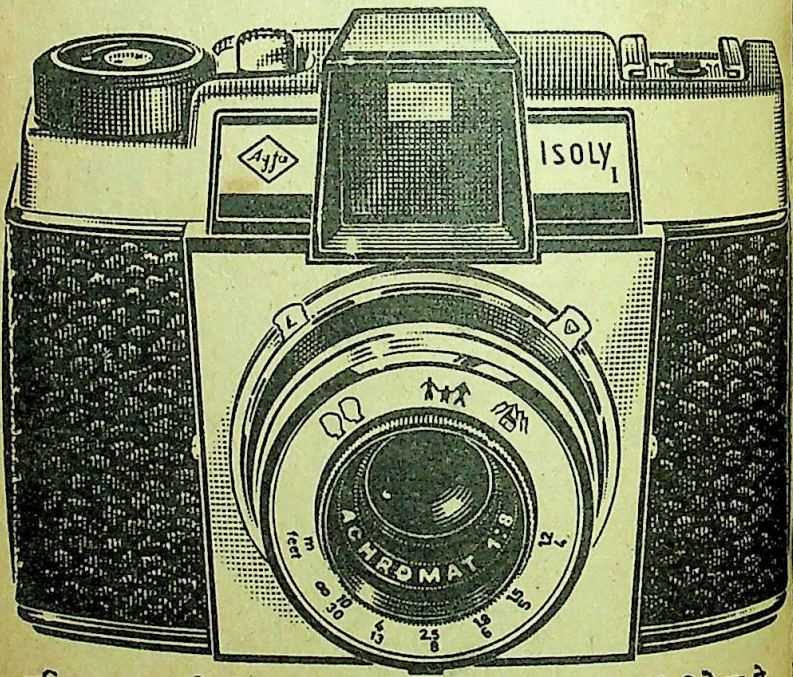

अधिक जानकारी के लिए अपने निकटतम आगफ़ा-गेवर्ट विक्रेता से सम्पर्क कीजिये।

AGI

एकमात्र वितरक :
आगफ़ा-गेवर्ट इंडिया लिमिटेड,
मर्चेंट चेम्बर्स, ४१, न्यू मरीन लाइन्स, बम्बई-४०००२०
शाखायें : बम्बई • नई दिल्ली • कलकत्ता • मद्रास
® फ़ोटोग्राफी संबंधी उत्पादनों के निर्माता आगफ़ा-गेवर्ट, ऐंटवर्प/लीवरकुसेन का रजिस्टर्ड ट्रेडमार्क।

SIMOES/AG/35 B MIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यदि आप सहज पत्नी-प्रेमी, मौज-शौक से डरने वाले सीधे-सादे संकोची किस्म के दकियानूस आदमी हैं, तो फेबीना से दूर ही रहिए !

वहीं तो, आप की ओर कितनी ही नजरें उठेंगी...
कितनी सुंदर, कितनी दिलकश नजरें !

फेबीना
शर्टिंग्स और शार्टिंग्स
बीना सिल्क मिल्स
मु. नगर-२० फोन: ४९१३२९

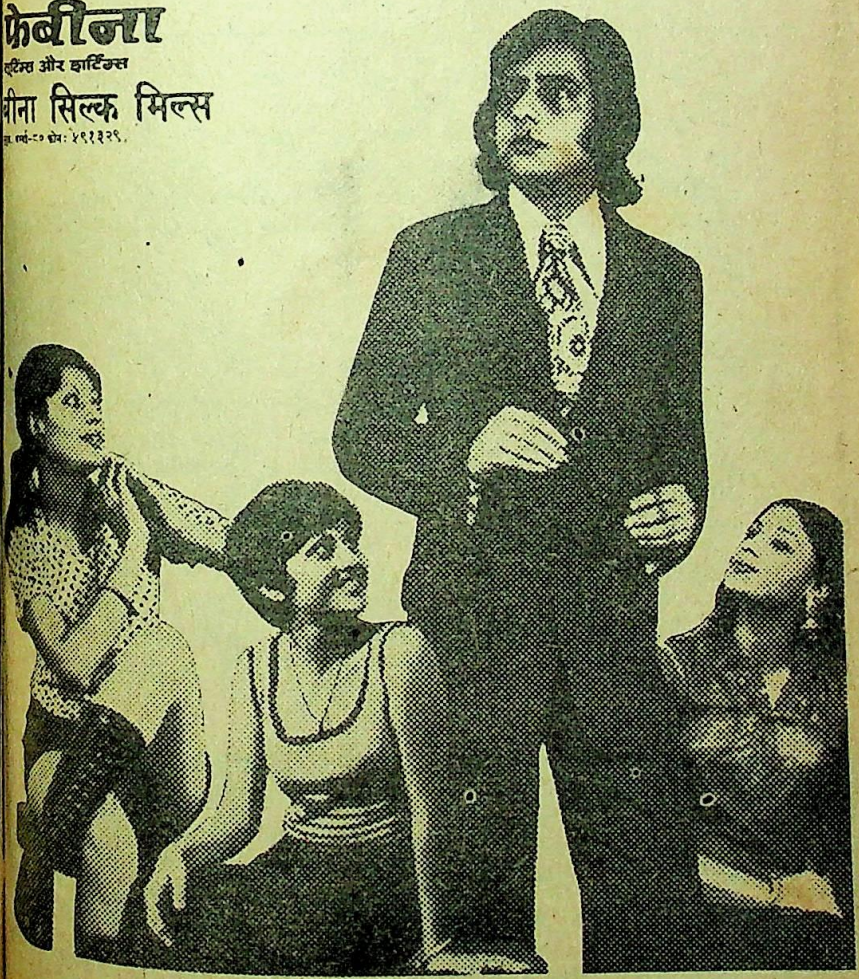

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

HIGHLIGHTS OF CARAVAN NEW YEAR NUMBER

Romantic love

Is romantic love a mere fancy of the poets? What part does sex play in romance? Ved Prakash views love in a rational light.

Abolition of capital punishment

Every forty minutes there is a murder committed in India. Should the murderer pay for the crime with his life? N.N. Mallya, the renowned crime-story writer, examines the question in the light of expert opinion.

Indian sports 1975

What have we achieved on the sports ground in 1975? Not much, says Surjeet Singh, analysing our meagre victories and massive defeats in the field.

Indian Films 1975

A survey of Indian films of 1975 by our columnist Prem Kumar Jauhar with all his punch and spice.

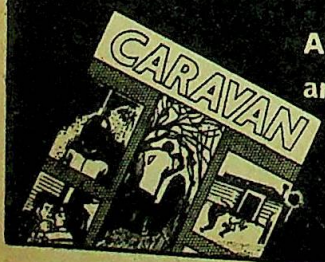

Alongwith other stories, inspiring articles and regular features

Book your copy with your news agent today

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भैया कहते है साठे माल्टएक्स इतने स्वादिष्ट है क्यों कि उनमें माल्ट है

स्वादिष्ट और मज़ेदार यह बिस्कुट
चाहे जितने भी खायें,
और खाने को जी चाहता है।
इसलिये कि इसमे मॉल्ट है!

उपहार में देने के लिए सुंदर
पैकेट में और घर लेजाने के लिए
खुला मिलता है।

आई. एस. आई मुहर वाले
माल्टएक्स का मतलब है अच्छी
किस्म की गारंटी वाले बिस्कुट

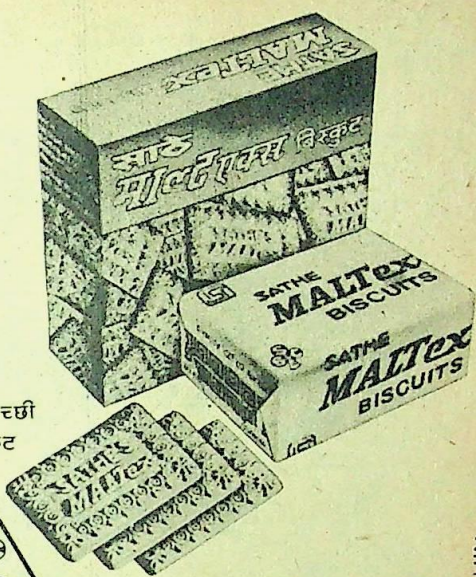

heros' SBC-57 F HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरिता को सामाजिक क्रांति का

सरिता परिवार की ओर से

जनवरी, 1976 से प्रकाशित

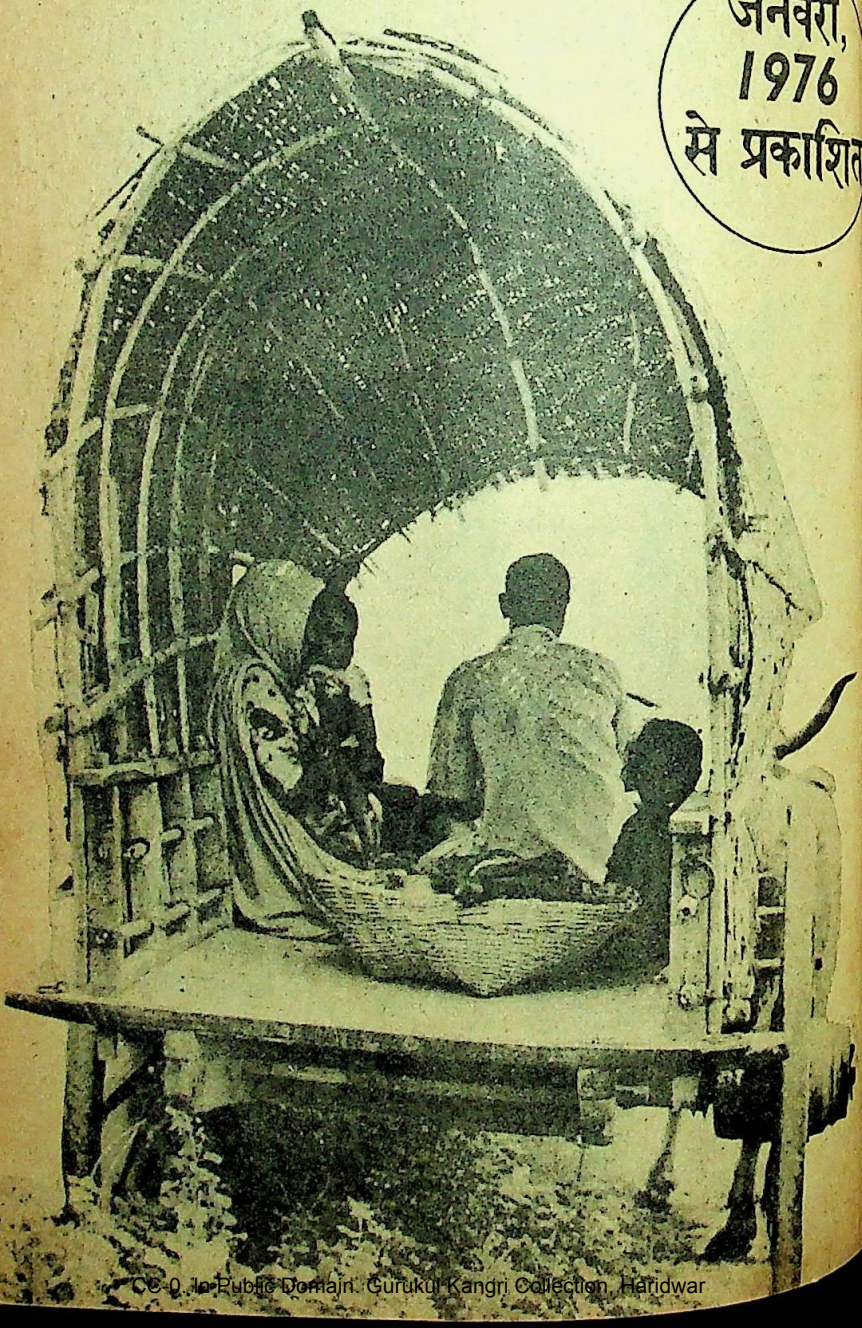

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गांवों की ओर

एक नई पत्रिका

भूभारती

भूभारती ग्रामीण समाज के लिए एक अनूठी मासिक पत्रिका है. इस का उद्देश्य जहां गांवों में रहने वालों तक कृषि व अन्य ग्रामीण उद्योगधंधों के बारे में नई जानकारी पहुंचाना है, वहीं उन के मनोरंजन व ज्ञानवर्द्धन के लिए उच्च स्तर की सामग्री भी देना है.

भूभारती के हर अंक में ऐसी रोचक, प्रेरणात्मक कहानियां होती हैं जिन में मनोरंजन के साथ ग्रामीण समाज की अनेक समस्याओं का सहज और सरल हल भी होता है.

इस के लेख कृषि तक ही सीमित न हो कर गांवों में चलाए जा सकने वाले उद्योगधंधों, घरों की साजसज्जा, परिवार व आसपास वालों से व्यवहार, देशविदेश की घटनाओं की जानकारी आदि तक सब लिए हैं.

इस की गुदगुदाने वाली कविताएं, चुटीले कार्टून तथा आकर्षक छपाई आप का मन मोह लेगी.

भूभारती अपनी तरह की अकेली ऐसी पत्रिका है जिसे गांव में रहने वाला हर शिक्षित व्यक्ति—स्त्री, पुरुष, युवा, बच्चे सभी पढ़ना चाहेंगे.

100 पृष्ठों की रोचक सामग्री • मूल्य केवल 1 रुपया

विशेष रियायती मूल्य पर तुरंत वार्षिक ग्राहक बनिए. 11 रु. के स्थान पर 29 फरवरी, 1976 तक केवल 8.25 रु. दीजिए. पंचायतों व ग्रामीण स्कूलों के लिए केवल 6.25 रु. आज ही निम्न पते पर मनीआर्डर भेजिए :

भूभारती, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-55.

मुझे/हमें भूभारती का वार्षिक ग्राहक बना लीजिए. वार्षिक शुल्क

रु._____ म. आ. नं._____ तिथि_____ द्वारा भेजा जा रहा है.

नाम _____

पता : मकान नं._____ गली_____

डाकखाना_____

जिला_____ राज्य_____ पिन कोड_____

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ये टिकाऊ हैं
ये फ़्लेक्स हैं

टैनरी एण्ड फुटवियर कॉर्पोरेशन ऑफ इण्डिया लिमिटेड

(भारत सरकार का एक प्रतिष्ठान) पोस्ट बाक्स नं० ३२९, कानपुर

FDSITAFCO/67 B

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह है वूलमार्क

शुद्ध, नयी ऊन

शुद्ध और मिलावट-रहित ऊन का प्रतीक— सारे संसार में !

प्रकृति का अनुपम रेशा—ऊन

शुद्ध, नये ऊनी उत्पादनों की श्रेष्ठता का प्रमाण है—वूलमार्क। ऊनी उत्पादनों की उत्तमता की पूरी जाँच-परख करके ही उन पर वूलमार्क लगाया जाता है। इण्टरनेशनल वूल सेक्रेटेरियट का इस पर पूरा नियंत्रण रहता है। इसलिये सूटिंग, स्वेटर, हाथ-बुनाई की ऊन, शॉल, गलीचे वग़ैरह ख़रीदने से पहले अपने विश्वास के लिये वूलमार्क अवश्य देख लें।

ऊन के स्वाभाविक गुण	आपको लाभ
कुचालक (सर्दी दूर, शक्ति की बचत)	ऊन से शरीर का तापमान सामान्य बना रहता है। इसलिये ऊनी वस्त्र आरामदेह होते हैं। इससे शक्ति भी बनी रहती है: यही कारण है कि क्रिकेट खिलाड़ी-गर्मियों में भी ऊनी कपड़े पहनते हैं।
प्रत्यास्थता (लचीलापन)	ऊनी कपड़ों में सिलवटें नहीं पड़ती। उनका रूप और आकार यथापूर्व रहता है क्योंकि उनमें एक स्वाभाविक लचक है।
रंगाई-क्षमता	ऊन, रंगों को आसानी से स्थायी तौर पर जज़्ब कर लेती है, इसलिये इसे विविध रंगों में रंगना संभव है। इसके अलावा इसकी रंगछटा बड़ी पक्की, निखारपूर्ण और आकर्षक होती है।
अनाम्यता (टिकाऊपन)	ऊनी वस्त्र ज़्यादा चलते हैं क्योंकि उनमें ज़्यादा से ज़्यादा ऐंठन, मरोड़ या फैलाव सहने की शक्ति है।
अग्नि-रोधकता	ऊन पर आग का असर जल्दी नहीं होता। यह आग से न पिघलती है, न टपकती है है और न ही लपटें पकड़ती है। इसीलिये संकटकाल में लोग आग बुझाने के लिए ऊनी कम्बल ही इस्तेमाल करते हैं।
प्राकृतिक गठन	ऊन की प्राकृतिक बनावट के कारण इसका रूप और आकार स्थायी बनाये रखना संभव है। इसीलिये ऊनी वस्त्रों की कटाई और सिलाई करना बड़ा सुविधाजनक है।

नयी, मिलावट-रहित, शुद्ध ऊन की पहचान—वूलमार्क

CMIWS-30-162-HI

Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सही पालन पोषण का आधार

पराग

(स्प्रे-ड्राईड)

शिशु दुग्ध आहार

पूर्णतया संतुलित 'पराग' नवजात शिशु के सही पालन-पोषण के लिए एक विश्वसनीय दुग्ध आहार है। इसे आप अपने शिशु को जन्म के बाद पहले ही सप्ताह से पिला सकती हैं।

अत्यांधुनिक स्प्रे-ड्राइंग प्रक्रिया द्वारा निर्मित तथा सभी पौष्टिक तत्वों से भरपूर 'पराग' को आप अपने शिशु की पाचन शक्ति के अनुकूल पायेंगी।

आज ही से पराग अपनाइये और अपने शिशु का पालन-पोषण सही कीजिए।

प्रादेशिक कोआपरेटिव डेरी फेडरेशन लि०
लखनऊ द्वारा इन्फैंट मिल्क फूड फैक्टरी, दलपतपुर, (मुरादाबाद) में निर्मित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

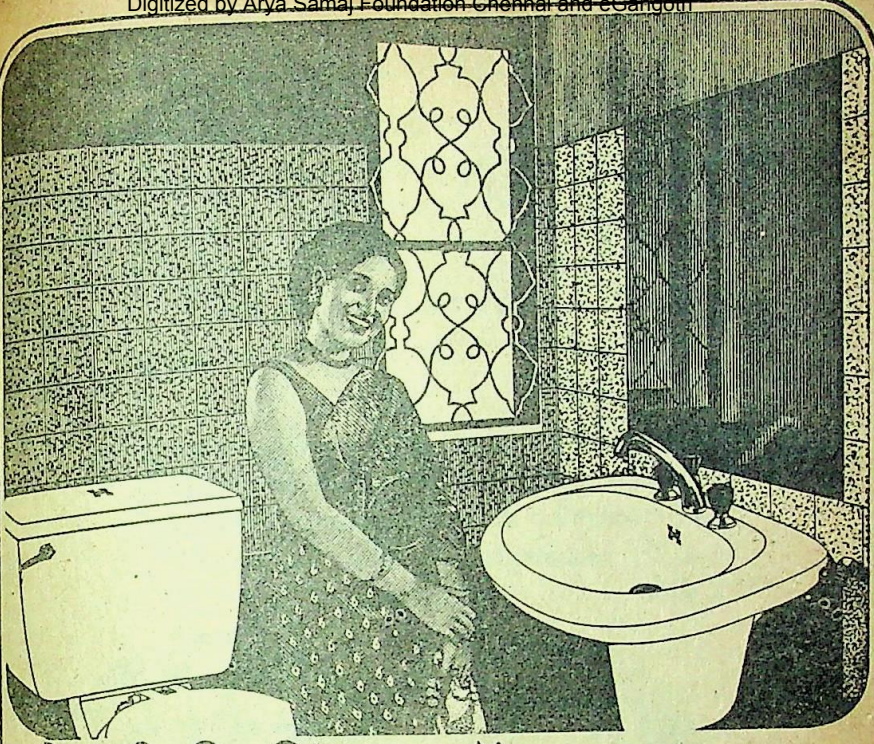

सोमानी पिल्किंगटन्स् वॉल टाइल्स ने मेरे स्नानगृह में चार चांद लगा दिये हैं।

सोमानी पिल्किंगटन्स् सेरेमिक वॉल टाइल्स आपके स्नानगृह को अत्यंत शानदार और मोहक बना देते हैं-ऐसा कि देख कर आप रीझ जायेंगे।

सारी दुनिया में विख्यात इंगलैण्ड की पिल्किंगटन्स् टाइल्स लिमिटेड के सहयोग से निर्मित एसपी वॉल टाइल्स उत्कृष्टता, डिजाइन, फिनिश और टिकाऊपन में बेजोड़ होते हैं। सम्पूर्णतः सीलन-प्रतिरोधक और स्वास्थ्य सम्मत। तरह तरह के फीके न पड़ने वाले आकर्षक रंगों-जगमगाते सफेद समेत-में मिलते हैं और ऐसे कीमत पर कि खरीद कर आपको खुशी होगी।

हिन्दुस्तान सैनिटरीवेयर के उत्पादन का स्टॉक रखने वाले दुकानों पर ही आपको अपने पसन्द के विभिन्न किस्म और प्रकार के एसपी वॉल टाइल्स मिल जायेंगे। भारत में सबसे ज्यादा बिकने और निर्यात किये जाने वाले ये सैनिटरीवेयर तथा सोमा मेटल फिटिंग्स*-जो कि सोमा प्लम्बिंग फिक्सचर्स लिमिटेड द्वारा सिमिलोर एस.ए. जेनेवा के सहयोग से निर्मित होते हैं।

*सोमा मेटल फिटिंग्स शीघ्र ही बाजार में आ जायेंगे।

खूबसूरत स्नानगृह का प्रतीक

सोमानी-पिल्किंगटन्स् लिमिटेड
हिन्दुस्तान सैनिटरीवेयर की एक सहायक संस्था

हिन्दुस्तान सैनिटरीवेयर एण्ड इण्डस्ट्रीज लिमिटेड
सबसे ज्यादा बिकने वाले और सबसे ज्यादा निर्यात किये जाने वाले भारतीय स्नानगृह उपकरणों के निर्माता

सोमा प्लम्बिंग फिक्सचर्स लिमिटेड
हिन्दुस्तान सैनिटरीवेयर की सहयोग तथा से अपनी सहायक संस्था

मुफ्त

सचित्र रंगीन पुस्तिका—'ए गाइड टू म्यूटिफुल बाथरूम्स' के लिये लिखिये और अपने प्रयोजन के अनुसार अपना स्नानगृह सजा लीजिये।

२, रेड क्रास प्लेस, कलकत्ता-७००००१

naa. HSI-7515 HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Splash of colour and camouflage can elude the eye—but you expect something more in a woman's magazine—more than mere fashion or fluffy fiction or sponsored shows. . .

WOMAN'S ERA is a bouquet of fresh ideas that leads you and your family to a fuller, richer and happier life.

WOMAN'S ERA shares your worries, eases your problems, enlightens and entertains you with heart-warming short stories, informative articles, meaningful household hints and a wide variety of exclusive features.

Woman's era

THE INDISPENSABLE FORTNIGHTLY FOR INTELLIGENT WOMEN

For specimen copy send 50 p. in stamps to Delhi Press, New Delhi-55.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

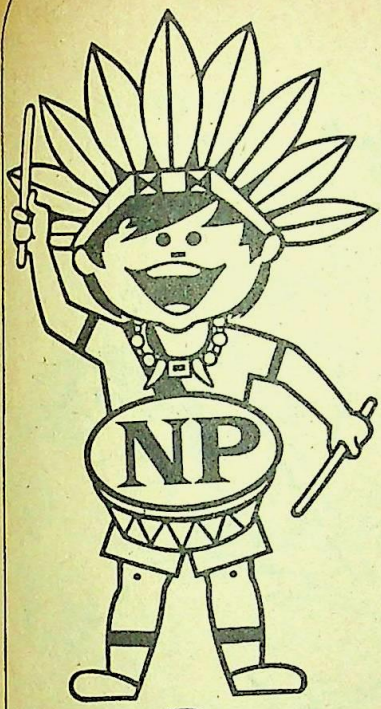

ये लीजिये आपको लुभानेवाले क्रॅकीज़

सांता क्लॉस की ही तरह एन. पी. भी बच्चोंके लिए स्वादिष्ट मिठाइयोंका खजाना लुटाने आते हैं। एन. पी. क्रॅकीज़ च्युइंग गम—बबल गम भी—जो पेपरमिंट, पाइनएपल, टूटी फ्रूटी, ऑरेंज और अनोखे, सुपारीके स्वादयुक्त होते हैं। इसके अलावा बॉनब्राइट—जो मलाईदार और अप्रतिम स्वादिष्ट मिठाई है, और फलोंके रुचिकर स्वादवाले बालगम्स।

आपकी रुचि-पसंद च्युइंग गम

NP – 5 गुणवत्ता के निशानवाले अद्वितीय च्युइंग गम्स और बबल गम्स।

अपनी जेबोंमें हमेशा NP–आपकी पसंद की च्युइंग गम्स रखिए।

दि नॅशनल प्रॉडक्टस
बंगलूर

Dattaram-NP-1HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

असली सिंगर* सूइयां

इन पर आप भरोसा कर सकती हैं !

maa-SSM-25HIN

सभी जगह उपलब्ध

यह कोई राज़ नहीं कि हमने दुनिया को सीना सिखाया।

सिंगर*

निर्माता सिंगर–टी वी एस लिमिटेड, मदुराई.

व्यापारिक पूछ-ताछ के लिए इस पते पर सम्पर्क साधिए :

सिंगर सूइंग मशीन कम्पनी,
२०७, डी. एन. रोड, बम्बई ४०० ००१.

*सिंगर कम्पनी का ट्रेडमार्क

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

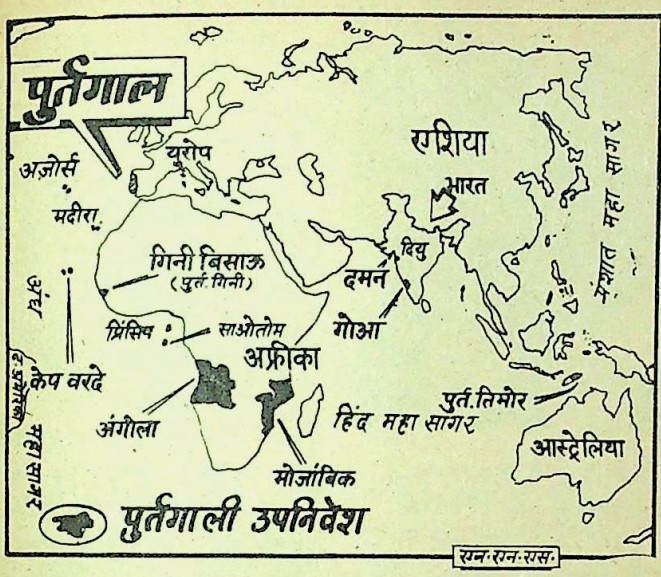

लेख • योगेशचंद्र शर्मा

पुर्तगाली साम्राज्य

पुर्तगाली साम्राज्य अंगरेजी साम्राज्य के बाद सब से बड़ा था. क्रूर दमन और भारी कीमत देने के बाद आखिर अब उसे भी सब उपनिवेश स्वतंत्र करने पड़ रहे हैं...

यदि विश्व के प्राचीन राजतंत्रीय साम्राज्यों को छोड़ दें तो वर्तमान युग में साम्राज्यवाद का नया इतिहास लगभग पंदरहवीं शताब्दी से प्रारंभ होता है. इस साम्राज्यवाद के मूल में राजनीतिक प्रसार की भावना उतनी अधिक नहीं थी, जितनी व्यापार वृद्धि और आर्थिक सत्ता के प्रसार की. बीसवीं शताब्दी ने इस नए साम्राज्यवाद को भी धूलिधूसरित कर दिया और अब केवल अवशेष के रूप में कहींकहीं इस के टिमटिमाते दीप नजर आ जाते हैं.

इस युग में सब से बड़ा साम्राज्य इंगलैंड का था. उस के बारे में कहा जाता है कि अंगरेजों के राज्य से कभी भी सूर्य नहीं छिपता. अभिप्राय यही है कि उन का साम्राज्य इतना विस्तृत और विशाल था कि उस में कहीं न कहीं सूर्य का प्रकाश सदैव विद्यमान रहता था. इस क्रम में दूसरा नाम था पुर्तगाल का. यद्यपि इस युग में साम्राज्यवाद का प्रारंभ पुर्तगाल ने ही किया था, लेकिन उस के प्रसार में वह अंगरेजों से कुछ पिछड़ गया. फिर भी पुर्तगाल के साम्राज्य को छोटा नहीं कहा जा सकता. इस की सीमाएं दक्षिण में लैटिन अमरीका तक और पूर्व में प्रशांत महासागर के द्वीपों तक थीं.

पुर्तगाल की जनसंख्या लगभग एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

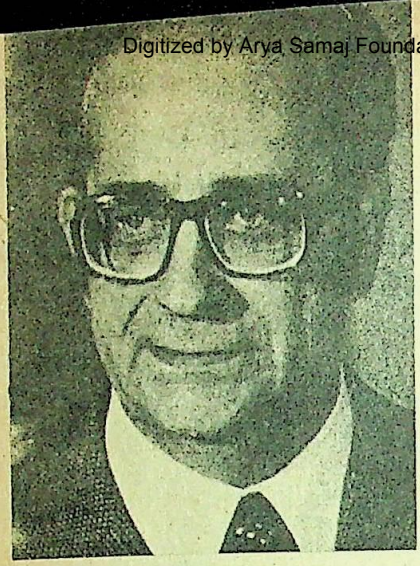

राष्ट्रपति जनरल गोमेज : 1974 की सैनिक क्रांति के उन्नायक.

करोड़ है और उस का अपना क्षेत्रफल पैंतीस हजार वर्गमील है. अपने इस छोटे आकार और जनसंख्या के बावजूद उस ने अनेक छोटेबड़े उपनिवेशों के साथ ब्राजील जैसे बड़े देश पर भी एक लंबे समय तक शासन किया, जिस की जनसंख्या लगभग नौ करोड़ तथा क्षेत्रफल 32 लाख वर्गमील है. यह उदाहरण लगभग वैसा ही है, जैसा इंगलैंड और भारत का है. पांच करोड़ की जनसंख्या और लगभग साठ हजार वर्गमील वाले छोटे से देश इंगलैंड ने अपने से कई गुना बड़े भारत पर एक लंबे समय तक शासन किया.

स्वतंत्र देश के रूप में पुर्तगाल का इतिहास केवल बारहवीं शताब्दी से प्रारंभ होता है. चौदहवीं शताब्दी तक यह केवल अपनी ही सीमा में रहा. बाद में पंदरहवीं शताब्दी में उस ने अपने पैर फैलाने प्रारंभ किए और 1488 तक उस ने अजोर्स, मेडीरिया और केपवर्दे पर अपना नियंत्रण स्थापित कर लिया. इसी अवधि में उस ने अंगोला में भी अपने पैर जमा लिए.

1498 में वास्कोडीगामा नाम का एक पुर्तगाली व्यापारी भारत आया और उस के पीछे पुर्तगाल की एक बड़ी शक्ति आ कर भारत में जम गई. इस प्रकार भारत में भी साम्राज्यवाद को फैलाने वाला पहला देश पुर्तगाल ही था. उस के बाद जब अंगरेज यहां आए तो पुर्तगाली युद्ध के मैदान में उन के सामने नहीं टिक सके. फलस्वरूप पुर्तगाली साम्राज्य, भारत में गोवा, दमन और दीव तक सिमट कर रह गया.

1500 में पुर्तगाल ने ब्राजील पर भी अपना नियंत्रण स्थापित कर के विश्व को आश्चर्यचकित कर दिया. साम्राज्य के इस प्रसार से पुर्तगाल की आर्थिक स्थिति में तेजी से विकास होता चला गया और सोलहवीं शताब्दी में पुर्तगाल यूरोप का सर्वाधिक समृद्धिशाली और शक्तिशाली राष्ट्र गिना जाने लगा. पुर्तगाली साम्राज्य का ज्योंज्यों प्रसार होने लगा, त्योंत्यों पुर्तगाल की शक्ति और क्षमता भी निरंतर बढ़ने लगी. मगर आगे चल कर पुर्तगाल साम्राज्यवादी प्रतियोगिता में इंगलैंड का मुकाबला नहीं कर सका और उस से कुछ पिछड़ गया.

नए साम्राज्यवाद के पतन का प्रारंभ द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद हुआ. इस में भारत का विशेष योगदान रहा. 15 अगस्त, 1947 को स्वतंत्रता प्राप्त करने के बाद

भूतपूर्व प्रधानमंत्री गोनकाल्वेज : एक दुर्बल शासनाधिकारी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उग्रवादी सैनिकों का राजनीति में हस्तक्षेप.

भारत ने सर्वत्र उपनिवेशवाद तथा साम्राज्यवाद के विरुद्ध आवाज बुलंद की. इस से शोषित राष्ट्रों को नया उत्साह मिला. अनेक बड़ेबड़े साम्राज्य टूटने लगे. इंडोनेशिया मलयेशिया, अलजीरिया, श्रीलंका, घाना, मारीशस तथा नाइजीरिया आदि देश साम्राज्यवादी शिकंजे से मुक्त हो कर स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में उभरे. फ्रांस ने भी भारत में अपनी बस्तियों को खाली कर दिया. भारत ने पुर्तगाल से गोवा, दमन और दीव को स्वतंत्र करने का आग्रह किया, मगर वह नहीं माना. तब मजबूरन हमें 1961 में पुलिस कार्यवाही करनी पड़ी और उस से हमारे क्षेत्र पुर्तगाली शिकंजे से मुक्त हो गए.

कम्युनिस्ट पार्टी के नेता एलवरो चुनाल : अल्पमत में होते हुए भी शक्तिशाली क्यों?

यद्यपि पुर्तगाली साम्राज्यवाद का प्रारंभ सर्वप्रथम हुआ, मगर उस की पूर्णाहुति अब तक नहीं हो पाई है. इंगलैंड इस कलंक से मुक्ति प्राप्त कर चुका है. पुर्तगाल से कई गुना अधिक शक्तिशाली फ्रांस का साम्राज्य भी दम तोड़ चुका है. हालैंड और बैल्जियम के साम्राज्य भी कब से अतीत के गर्त में समा चुके हैं. मगर पुर्तगाली साम्राज्य अब भी कहींकहीं अपनी अंतिम सांस लेता हुआ दृष्टिगत हो रहा है. उस के साम्राज्य के अनेक बड़े क्षेत्र हाल में ही स्वतंत्र हो पाए हैं.

गिनी बिसाऊ ने 24 सितंबर, 1973 को एक लंबे संघर्ष के बाद अपनी इकतरफा स्वतंत्रता की घोषणा कर दी थी. उस के एक वर्ष बाद मजबूर हो कर पुर्तगाली सरकार को भी 10 सितंबर, 1974 को गिनी बिसाऊ की स्वतंत्रता स्वीकार करनी पड़ी.

25 जून, 1975 को छः लाख की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जनसंख्या वाले मोजंबीक को स्वतंत्रता दी गई और 11 नवंबर, 1975 को चार लाख वर्गमील क्षेत्रफल वाले अंगोला को भी स्वतंत्रता दे दी गई. अफ्रीका में अंगोला ही पुर्तगाल का अंतिम उपनिवेश था. इस की स्वतंत्रता से अफ्रीका में पुर्तगाल का पांच सौ वर्ष पुराना शासन समाप्त हो गया. मगर विश्व के अन्य क्षेत्रों में पुर्तगाली साम्राज्यवाद अब भी अपने धुंधलाते अस्तित्व को कायम रखे हुए है.

पुर्तगाली साम्राज्यवाद के उत्थान और पतन में वहां की आंतरिक स्थिति का अत्यधिक योगदान रहा है. इसलिए वस्तुस्थिति को समझने हेतु उस का भी संक्षिप्त अध्ययन आवश्यक है.

प्रारंभ में पुर्तगाल में राजतंत्र था. 1908 में वहां के राजा की हत्या कर दी गई. कुछ व्यवधान के बाद 1910 में वहां गणतंत्र की स्थापना हुई. 1933 में पुर्तगाल का नया संविधान बना. प्रधानमंत्री बने सालाजार. सत्तामोह से पीड़ित सालाजार ने देश के गणतांत्रिक ढांचे को नष्ट कर दिया, फासिस्टवादी शासन की स्थापना हुई. सालाजार ने देश के अंदर तो अपनी सत्ता को मजबूत किया ही, पुर्तगाली उपनिवेशों पर भी अपनी जकड़ मजबूत कर दी. अनेक उपनिवेशों ने स्वतंत्रता के लिए संघर्ष किया, मगर सालाजार के दमन के सामने उन की एक न चली.

कभीकभी पुर्तगाल के ही कुछ नागरिक उपनिवेशों का पक्ष लेने का दुस्साहस करते तो उन को भी कुचल दिया जाता. पुर्तगाल का यह फासिस्टवादी शासन स्पेन के फासिस्टवादी शासन से भी अधिक शक्तिशाली सिद्ध हुआ. स्पेन का फौलादी पंजा मुख्यतः अपने देश के अंदर ही सीमित रहा, जब कि पुर्तगाल के इस पंजे ने देश के बाहर के उपनिवेशों को भी अपने शिकंजे में जकड़े रखा.

दूसरे विश्वयुद्ध में फासिस्टवाद के विरुद्ध जो अंतर्राष्ट्रीय लहर उठी थी, उस से आशा बनने लगी थी कि जरमनी और इटली के साथ ही पुर्तगाल का फासिस्ट-

जुलूस व हड़ताल पर प्रतिबंध लगाने से पूर्व उग्रवादियों की एक सभा का दृश्य : अब जनता हमारे साथ है?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

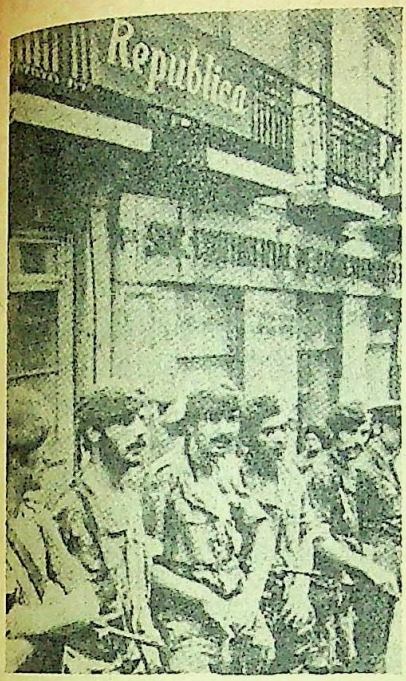

सोशलिस्ट दैनिक पत्र के कार्यालय की रक्षा करते हुए कुछ सैनिक.

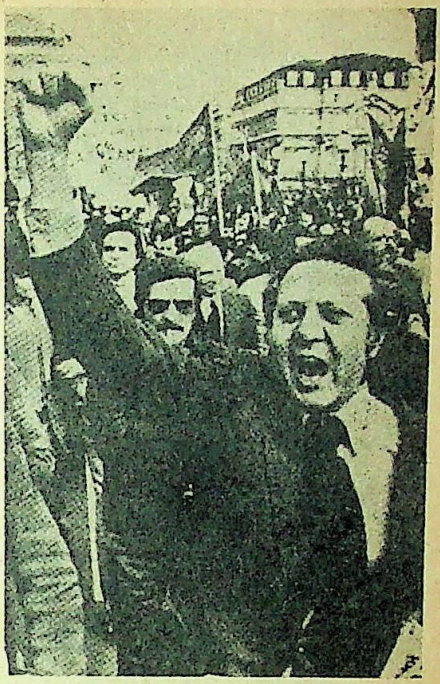

दैनिक पत्र पर कम्युनिस्टों की अनाधिकार चेष्टा का विरोध.

वाद भी अतीत की बात बन कर रह जाएगा. इसी आशा पर उन दिनों पुर्तगाली उपनिवेशों में एक नया उत्साह नजर आने लगा था, मगर ऐसा नहीं हुआ. पुर्तगाल का फासिस्टवादी शासन व तदनुसार उस का साम्राज्य भी सुरक्षित रहा. इस का प्रथम कारण तो यह था कि विश्वयुद्ध में पुर्तगाल तटस्थ रहा. दूसरे, युद्ध को अधिक न बढ़ने देने की दृष्टि से स्वयं मित्रराष्ट्रों ने भी इस पर जोर नहीं दिया, लगभग इन कारणों से स्पेन का फासिस्टवादी शासन भी सुरक्षित बचा रहा.

आगे चल कर कम्युनिज्म के प्रसार को रोकने की दृष्टि से पुर्तगाल को नाटो का भी सदस्य बना लिया गया. इस से पुर्तगाल की शक्ति और बढ़ गई. अपने साम्राज्य की सुरक्षा के लिए अब उसे 'नाटो' का भी कभी प्रत्यक्ष और कभी परोक्ष समर्थन मिलने लगा.

1968 तक सालाजार का शासन सफलता से चलता रहा. इस के बाद दो वर्ष की बीमारी के बाद 1970 में साला-जार की मृत्यु हो गई. सालाजार को भारत में गोवा, दमन और दीव के खोने का अफसोस सदैव बना रहा. गोवा पर भारतीय कार्यवाही के अवसर पर उस ने गोवा स्थित अपने गवर्नर सिल्वा को आदेश दिया था कि वह गोवा को जला कर राख कर दे, ताकि भारत को वहां पर कुछ भी प्राप्त न हो सके, मगर सिल्वा ऐसा नहीं कर सका. इस पर सालाजार ने उसे पदच्युत कर दिया.

सालाजार की मृत्यु के बाद सत्ता प्रधान मंत्री डा. मासलो केताना और राष्ट्रपति थोमाज के हाथों में आई. उन्होंने भी पुर्तगाल में फासिस्टवादी शासन को बरकरार रखने की कोशिश की, मगर असफल रहे. सेना में विद्रोहात्मक प्रवृत्ति बढ़ने लगी. नई सत्ता ने भी उपनिवेशों में चल रहे स्वतंत्रता संघर्ष को अपनी शक्ति से कुचलने की कोशिश की. पुर्तगाल की जनता के अतिरिक्त अनेक सैन्य अधिकारियों ने भी नीति को बदलने की मांग की. फरवरी 1974 में जनरल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

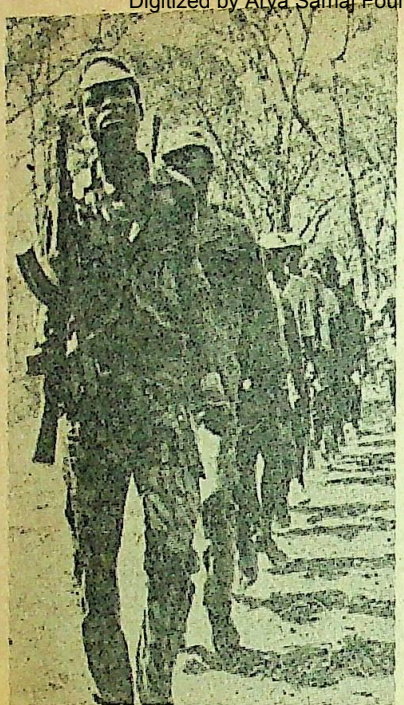

अंगोला के भूतपूर्व गुरिल्ला सिपाही.

अंतोनियो स्पिनोला की 'पुर्तगाल एंड द फ्यूचर' (पुर्तगाल और उस का भविष्य) शीर्षक से एक पुस्तक प्रकाशित हुई, जिस ने पुर्तगाल में क्रांति का श्रीगणेश कर दिया.

जनरल स्पिनोला पुर्तगाली सेना के उपाध्यक्ष थे. सेना और जनता में उन्हें काफी लोकप्रियता भी प्राप्त थी. इस पुस्तक में जनरल स्पिनोला ने पुर्तगाल की औपनिवेशिक नीति की आलोचना की थी और इस नीति को ही देश की दुरावस्था के लिए मुख्य रूप से उत्तरदायी ठहराया था. उन्होंने अपनी इस पुस्तक में सुझाव दिया कि दमन का रास्ता छोड़ कर इन उपनिवेशों को आंतरिक स्वायत्तता प्रदान कर दी जाए तथा उन के साथ समझौता कर के, उन्हें पुर्तगाली राष्ट्रमंडल का सदस्य बना लिया जाए. स्पष्ट ही जनरल स्पिनोला अंगरेजी राष्ट्रमंडल की सफलता से प्रभावित थे.

पुर्तगाली शासन जनरल स्पिनोला की इस पुस्तक से एकदम बौखला गया. जनरल स्पिनोला को पद से अलग कर दिया गया. इस का सेना पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ा. असंतोष बढ़ने लगा और 25 अप्रैल, 1974 को हुई सैनिक क्रांति में देश का तख्ता पलट दिया गया. डा. मासेलो केताना और राष्ट्रपति थोमाज को देश-निकाला दे दिया. शासन संचालन के लिए एक अस्थायी राष्ट्रीय सरकार बनाई गई, जिस के अध्यक्ष बने जनरल स्पिनोला और उस में देश के सोशलिस्ट, कम्युनिस्ट और वामपंथियों को उचित प्रतिनिधित्व दिया गया. यह भी वादा किया गया कि देश को प्राचीन फासिस्टवादी शासन से मुक्ति दिला कर शीघ्र ही जनतंत्रीय स्वरूप प्रदान कर दिया जाएगा.

उपनिवेशों के साथ उदारता

जनरल स्पिनोला के नेतृत्व में पुर्तगाल ने अपने उपनिवेशों के साथ उदारता का व्यवहार किया. उपनिवेशों के अनेक स्वतंत्रता सेनानी, जो पुर्तगाल की जेल में बंद थे, रिहा कर दिए गए. मोजांबीक के राष्ट्रीय नेताओं के साथ हुए एक समझौते में यह तय किया गया कि 15 सितंबर, 1974 को वहां अंतरिम राष्ट्रीय सरकार बनाई जाएगी और 25 जून, 1975 को उसे स्वतंत्रता प्रदान कर दी जाएगी.

जनरल स्पिनोला की इस उदारतापूर्ण नीति के बावजूद पुर्तगाल के उग्रवादी तत्त्व उन की धीमी गति से संतुष्ट नहीं थे. सालाजार समर्थक तत्त्व भी लुकछिप कर अपना सिर उभार रहे थे. परिणाम यह हुआ कि सितंबर, 1974 में पुर्तगाल में पुनः सैनिक क्रांति हुई और जनरल स्पिनोला को देश निकाला दे दिया गया. नए राष्ट्रपति बने भूतपूर्व सेनाध्यक्ष जनरल गोमेज. इस बीच लंबे अरसे के बाद फासिस्टवादी शासन से मुक्ति प्राप्त करने से जनता की जनतंत्रीय आकांक्षाएं अनेक राजनीतिक दलों के रूप में फूट पड़ीं, जिन की संख्या साठ तक जा पहुंची.

नई सरकार ने देश में संविधान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सभा के लिए चुनाव करवाए. चुनाव में सर्वाधिक मत 37.82 प्रतिशत सोशलिस्ट पार्टी को मिले. दूसरा स्थान पापुलर डेमोक्रेटिक पार्टी को मिला, जिस ने 26.41 प्रतिशत मत प्राप्त किए. कम्युनिस्ट पार्टी के हाथ केवल बारह प्रतिशत मत लगे. शेष मत विभिन्न पार्टियों में बंट गए. कम्युनिस्ट पार्टी अप्रैल, 1974 से ही सेना का साथ दे रही थी. इस से सेना भी उस के पक्ष में थी. राष्ट्रीय सरकार में कम्युनिस्ट पार्टी को काफी अधिक स्थान मिले हुए थे. उसे यह गलतफहमी थी कि जनता भी उस के साथ है. लेकिन चुनाव ने उस की इस गलतफहमी को दूर कर दिया. सैन्य अधिकारी भी अब कुछ धर्मसंकट में पड़े.

सोशलिस्ट पार्टी ने देश की सरकार में अपने मतों के अनुसार प्रतिनिधित्व की मांग की. जनता ने उस का समर्थन किया. इस से सरकार का पुनर्गठन किया गया, मगर उस में प्रधानमंत्री के पद पर कम्युनिस्ट समर्थक जनरल गोनकाल्वेज को ही नियुक्त किया गया. सरकार में कम्युनिस्टों का प्रतिनिधित्व भी कुछ अधिक ही रहा. सोशलिस्ट पार्टी को नीचा दिखाने के लिए कम्युनिस्ट हिंसा पर उतारू हो गए. सोशलिस्ट पार्टी के एक दैनिक समाचारपत्र के कार्यालय पर कम्युनिस्ट समर्थकों ने जबरदस्ती कब्जा कर लिया. इस से सोशलिस्टों ने सरकार से त्यागपत्र दे दिया. उन के समर्थन में पापुलर डेमोक्रेटिक पार्टी ने भी सरकार छोड़ दी.

अधिकांश जनता सोशलिस्ट और डेमोक्रेटिक तत्त्वों के साथ थी. सेना ने अधिकांश कम्युनिस्टों का साथ दे रखा था. अब जनता और सेना में भी विचारधारा के आधार पर स्पष्ट मतभेद हो गया. पुर्तगाल में जुलूस और प्रदर्शनों की बाढ़ सी आ गई.

जनअसंतोष बहुत अधिक बढ़ जाने पर 20 सितंबर, 1975 को जनरल गोनकाल्वेज को त्यागपत्र देना पड़ा. उन के स्थान पर प्रधानमंत्री बने नौ सेना के

ग्रामीण जनता को चुनाव की प्रक्रिया समझाते हुए एक पुर्तगाली सैनिक : जनता और सेना में विचारधारा के आधार पर भारी मतभेद.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

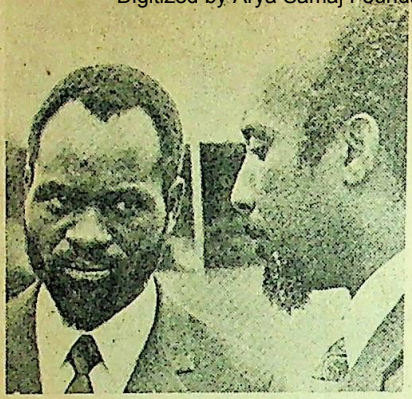

माजांबिक मुक्ति आंदोलन के नेता.

चीफ आफ स्टाफ एडमिरल अजवेदी. इस के बाद भी पुर्तगाल में आंतरिक शांति पूर्णतः स्थापित नहीं हो सकी. जनअसंतोष विभिन्न रूपों में उभरता रहा.

पुर्तगाल की इस आंतरिक अशांति में विदेशी हस्तक्षेप भी बराबर रहा. पुर्तगाल नाटो का सदस्य है. इस रूप में वहां अमरीका की रुचि स्वाभाविक है. सदैव की भांति कम्युनिज्म के प्रसार के भय ने उसे यहां भी चिंतित किया. फलस्वरूप पुर्तगाल में अमरीकी गुप्तचर संस्था सी. आई.ए.काफी गतिशील रही है. दूसरी ओर सोवियत संघ भी शांत नहीं है. सी. आई. ए. उपनिदेशक के अनुसार सोवियत संघ पुर्तगाल में प्रतिमाह एक करोड़ डालर व्यय कर रहा है. अमरीकी विदेश विभाग का अनुमान सोवियत संघ के इस व्यय के बारे में पचास लाख डालर का है. अतिशयोक्ति संभव है, मगर हस्तक्षेप निश्चित और प्रमाणित है. इस प्रकार विदेशी शक्तियों के आर्थिक साधनों पर वहां का जनमानस अनावश्यक रूप से उद्वेलित और अशांत हो रहा है.

पुर्तगाल की इस आंतरिक अशांति में भी उपनिवेशों को स्वतंत्रता देने का क्रम रुका नहीं. मोजांबीक और अंगोला स्वतंत्र कर दिए. पुर्तगाल के सभी प्रगतिशील तत्त्व अपने देश के उपनिवेशवादी कलंक को धो डालना चाहते हैं. इस बारे में सभी प्रमुख दल एकमत हैं. मलय प्रायद्वीप में स्थित सिंगापुर को 1976 में ही स्वतंत्रता देने का वादा किया जा चुका है. इस का क्षेत्रफल 7332 वर्गमील और जनसंख्या लगभग साढ़े छः लाख है. अतलांतिक महासागर में स्थित केपवर्दे द्वीप समूह को भी स्वतंत्रता देने की घोषणा की जा चुकी है. इन का कुल क्षेत्रफल 1557 वर्गमील व जनसंख्या लगभग दो लाख है.

उत्तर अतलांतिक महासागर में स्थित साओटाम द्वीप समूह तथा प्रिंसप टापू को भी स्वतंत्रता देने का निर्णय लिया जा चुका है. इन का क्षेत्रफल क्रमशः 319 वर्गमील तथा 55 वर्गमील है. दो छोटे क्षेत्र और भी हैं जिन की स्वतंत्रता देरसवेर निश्चित है. इन में से एक है अजोर्स--अतलांतिक महासागर में नौ सौ वर्गमील का एक द्वीप. दूसरा है, चीन के मध्यपूर्व में स्थित मकाओ. केवल छः वर्गमील का एक छोटा सा क्षेत्र.

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि पुर्तगाली साम्राज्य धीरेधीरे समाप्ति की ओर बढ़ रहा है. इस के प्रमुख गढ़ और बड़े उपनिवेश समाप्त हो चुके हैं. कुछ छोटे क्षेत्र शेष हैं, जहां से पुर्तगाल को देरसवेर अपने बिस्तर उठाने ही हैं.

प्रश्न उठता है कि पुर्तगाली साम्राज्य के समाप्त होने में इतना विलंब क्यों हुआ? पुर्तगाल से कहीं अधिक शक्तिशाली देश, इंगलैंड और फ्रांस के भी उपनिवेश समाप्त हो चुके, तब पुर्तगाल ही अब तक कैसे जमा रहा? इस के मुख्य कारण दो हैं. प्रथम, पुर्तगाल में सालाजार की फासिस्टवादी सरकार बनी रही. इस से वहां सरकार पर जनमत का या उदारवादी विचारधारा का कोई प्रभाव नहीं पड़ सका. दूसरे, पुर्तगाल के अधीन देश ज्यादातर शक्तिसंपन्न नहीं थे. इस से उन का भी पुर्तगाल पर वांछित दबाव नहीं पड़ सका.

गोवा, दमन और दीव की स्वतंत्रता के लिए जब भारत ने शक्ति का प्रयोग किया तो पुर्तगाल उस का सामना नहीं कर पाया और उसे घुटने टेकने पड़े. अन्य स्थानों पर पुर्तगाल के सामने इस प्रकार की चुनौतियां कम उपस्थित हुईं. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गिर के शेर

जिन का शिकार बंदूक से नहीं कैमरे से किया जाता है.

लेख • प्रमिलादेवी

गिर अभयारण्य अपने ढंग का अनोखा ही है. यह गुजरात के काठियावाड़ क्षेत्र में स्थित है. 1947 के पूर्व यह जूनागढ़ राज्य में था. यही अकेला एक ऐसा स्थान है जहां एशियाई सिंह स्वच्छंद रूप में पाए जाते हैं. इस अभयारण्य का क्षेत्रफल 1295 (500 वर्गमील)

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

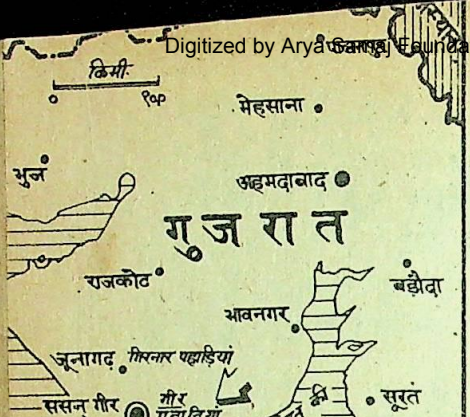

मानचित्र

किलोमीटर है.

गिर अभयारण्य जूनागढ़ (गुजरात) से 61 किलोमीटर दूर है. छोटी लाइन की रेल द्वारा सासन तक जाया जा सकता है. वैसे बंबई से कैशोद हवाई अड्डे तक पहुंचने में एक घंटा लगता है. कैशोद से सासन 67 किलोमीटर है. पूर्व प्रबंध से यहां टैक्सी इत्यादि मिलने में कठिनाई नहीं होती. सासन में वनविभाग का विश्रामगृह भी है. वन विभाग और भी बहुत सी सुविधाएं देता है. यहां से गिर जाया जा सकता है.

इस वन में सिंह देखने का सर्वोत्तम समय जनवरी से मई तक है. जुलाई से अक्तूबर तक वर्षा के कारण जंगल की सड़कें खराब होने की संभावना होती है. वैसे अधिक वनस्पति होने के कारण जानवर भी आसानी से नहीं दिखाई देते. मार्च, अप्रैल और मई के महीनों में गरमी तो अधिक होती है, परंतु जंगली जीव सुगमता से दिखाई दे जाते हैं.

सन 1968 की गणना के अनुसार यहां सिंहों की संख्या 170 के लगभग है. यहां यह उल्लेख कर देना भी अनुपयुक्त न होगा कि पहली गणना 1893 में हुई थी. तब उन की कुल संख्या 31 थी और 1900 में केवल 19 सिंह ही शेष रह गए. उस के कुछ वर्षों बाद उन की संख्या घट कर केवल 12 ही रह गई. कुछ लोगों का यह मत है कि वायसराय आदि द्वारा सिंह का शिकार न होने देने के लिए जूनागढ़ के नवाब ने जानबूझ कर इन की संख्या कम घोषित की थी.

एक समय यूरोप और दक्षिणपश्चिम एशिया में लगभग सभी जगह सिंह पाए जाते थे. लेकिन ईसवी सन की पहली शताब्दी तक यूरोप से सिंह लुप्त हो चुका था. उन्नीसवीं शताब्दी के अंत तक यह अफ्रीका और भारत के गिर वन को छोड़ कर सभी जगह समाप्त हो चुका था. भारत में इस के लुप्त होने का क्रम लगभग इस प्रकार है: बिहार--1814, दिल्ली---1834, ग्वालियर--1865, विंध्य प्रदेश---1865, मध्य भारत व राजस्थान--1870.

गिर के जंगल अफ्रीका के जंगलों से भिन्न हैं. ये उतने सघन नहीं हैं. यहां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नागफनी और बबूल के पेड़ अधिक हैं. पलास, जामुन और बेर भी कम नहीं होते. कंटीली झाड़ियों और घास के मैदान भी हैं और स्थानस्थान पर बांसों के समूह भी पाए जाते हैं. वर्षा ऋतु में सारा वन खंड हरियाली की चादर ओढ़ लेता है. परंतु हरियाली अधिक दिन नहीं रहती. नमी कम होने पर पत्ते झड़ने लगते हैं और झाड़ियां पीली पड़ जाती हैं. इस का परिणाम यह होता है कि दर्शकों को सिंह और अन्य वन्यप्राणी देखने में कठिनाई नहीं होती. यहां पाए जाने वाले अन्य प्राणी चीतल, सांभर, चौसिंघा, नीलगाय, जंगली सुअर, तेंदुआ, मोर व अन्य पक्षी हैं.

गिर वन के बीच में और आसपास लगभग पांच हजार 'मालधारी' चरवाहे रहते हैं. इन के पास 25,000 से ऊपर पशु हैं, जिन्हें यह अभयारण्य में ही चराते हैं. इन के अतिरिक्त अन्य पशु इतनी अधिक संख्या में हैं कि घास, पत्ते, फल आदि जो कुछ भी होता है उस का 90 प्रतिशत खा जाते हैं, इसलिए जंगली जीवों के लिए पर्याप्त खाद्य सामग्री उपलब्ध नहीं हो पाती. फलतः उस की संख्या दिनोंदिन कम होती जा रही है. सिंहों को आसानी से भोजन के लिए जंगली जीव नहीं मिलते और वे पालतू जानवरों को मारते हैं. एडिनबरा विश्वविद्यालय के पाल जोसीलन की शोध के अनुसार गिर सिंह अपने भोजन का 93 प्रतिशत भाग घरेलू जानवरों को मार कर प्राप्त करते हैं. 'मालधारी' इस का बदला लेते हैं. वे मरे हुए जीवों की लाश में

बंदूक तो नहीं है आप के हाथ में? फिर ठीक है. पोज बना लिया है. अब लीजिए हमारी तसवीर.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विष भर देते हैं. सिंह इन्हें खा कर मर जाते हैं. एक बार तो एक साथ पांच सिंह इसी प्रकार मरे पाए गए.

'मालधारी' सिंह के मुख से उस का ग्रास एक और प्रकार से भी छीनते हैं. जैसे ही सिंह अपने भोजन के लिए कोई शिकार करता है, 'मालधारी' लोग वहां पहुंच कर मारे गए जानवर के पास से सिंह को भगा देते हैं, और पास ही में बसे हरिजनों को बुला लाते हैं. जानवर का चमड़ा व मांस बेच दिया जाता है, जो कुछ थोड़ाबहुत बचता है उसे गिद्ध खा जाते हैं. सरकार मालधारियों को सिंह द्वारा मारे गए जानवर का मुआवजा तो देती है, पर उस की राशि नहीं के बराबर होती है.

व्यावहारिक समस्याएं

अभयारण्य का क्षेत्र अब पहले से केवल एक चौथाई ही रह गया है. सन 1880 में इस का विस्तार 5180 वर्ग किलोमीटर था. अब यह घट कर 1295 किलोमीटर रह गया है. यह भाग मनुष्य ने कृषि व औद्योगिकीकरण के लिए धीरे-धीरे हथिया लिया है. यहां मूंगफली और गन्ने की खेती होने लगी है व कारखाने भी खुल गए हैं. आदमियों के आते ही जंगली सुअरों का शिकार भी होने लगा है. इस से सिंह का विचरण क्षेत्र तो घट ही गया, साथसाथ उस का प्रिय भोजन भी उस के मुंह से छीना जाने लगा.

गुजरात में आए दिन अकाल पड़ते हैं. गिर अभयारण्य में जो घास जानवरों के चरने से बच जाती है उसे दूसरे सूखा पीड़ित स्थानों पर सुखा कर भेज दिया जाता है. अतः इन पर निर्भर जंगली जानवरों को भोजन की भारी कमी हो जाती है.

आवश्यकता इस बात की है कि संक्षिप्त वन का क्षेत्र पर्याप्त रूप से बढ़ा दिया जाए. इस अभयारण्य में सिंहों की संख्या 300 के आसपास होने का अनुमान है. एक शेर के रहने के लिए लगभग 20 वर्ग किलोमीटर भूमि की आवश्यकता है. अतः 300 सिंहों के लिए 6000 वर्ग किलोमीटर भूमि की आवश्यकता होगी. यहां से चरवाहे और उन के पशुओं के आने पर रोकथाम की जानी चाहिए.

यहां एक समस्या सामने आती है. भोजन की कमी से वे वन्यजीवन जिन का सिंह शिकार करते हैं, बहुत कम रह गए हैं. उन के भोजन का केवल साढ़े प्रतिशत ही वन्य प्राणियों से प्राप्त होता है. अन्य 93 प्रतिशत मालधारी चरवाहों के जानवरों से प्राप्त होता है. यदि अभयारण्य में इन का प्रवेश एकाएक बिलकुल बंद हो गया तो डर है कि एशियाई सिंह के अंतिम वंशज कहीं भूखे ही न मर जाएं. अतः इन के प्रवेश पर धीरेधीरे रोक लगाना उचित होगा तथा सिंह द्वारा मारे गए जानवरों का उन्हें उचित मुआवजा दिया जाना चाहिए.

एक अन्य विचारणीय समस्या है, सिंहों का एक छोटे से क्षेत्र में सीमित होना. किसी प्रकार की बीमारी आदि से संपूर्ण सिंह जाति के अस्तित्व को खतरा हो सकता है. सन 1957 में एक सिंह व दो सिंहनी उत्तर प्रदेश के चंद्रप्रभा संरक्षित वन में छोड़ दिए गए थे. इन की रक्षा के लिए जंगल के अधिकतर भाग में तारों की बाड़ लगा दी गई थी. पर शेर तो शेर ही ठहरे, निकल भागते थे. उन की संख्या बढ़ कर 11 तक पहुंच गई थी. परंतु जंगल का विस्तार सिर्फ 30 वर्गमील था जो सिंह के लिए बहुत कम है. एक तो इस जंगल में शिकार की कमी थी, ऊपर से सरकार ने जंगल काटने के ठेके भी दे रखे थे. कहा जाता है कि अब वहां भी सिंह नहीं हैं.

राजस्थान में सिंहों के अभयारण्य बनाने का प्रस्ताव है. पर वहां भी सिंह की बाघ से मुकाबला करने की समस्या होगी. बाघ अधिक चालाक और चुस्त होता है. फिर भी दोतीन स्थान इस संबंध में विचाराधीन हैं. उन में से किसी का भी विस्तार अधिक नहीं है. भोजन पर्याप्त मात्रा में प्राप्त होने की संभावना भी कम ही है. उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

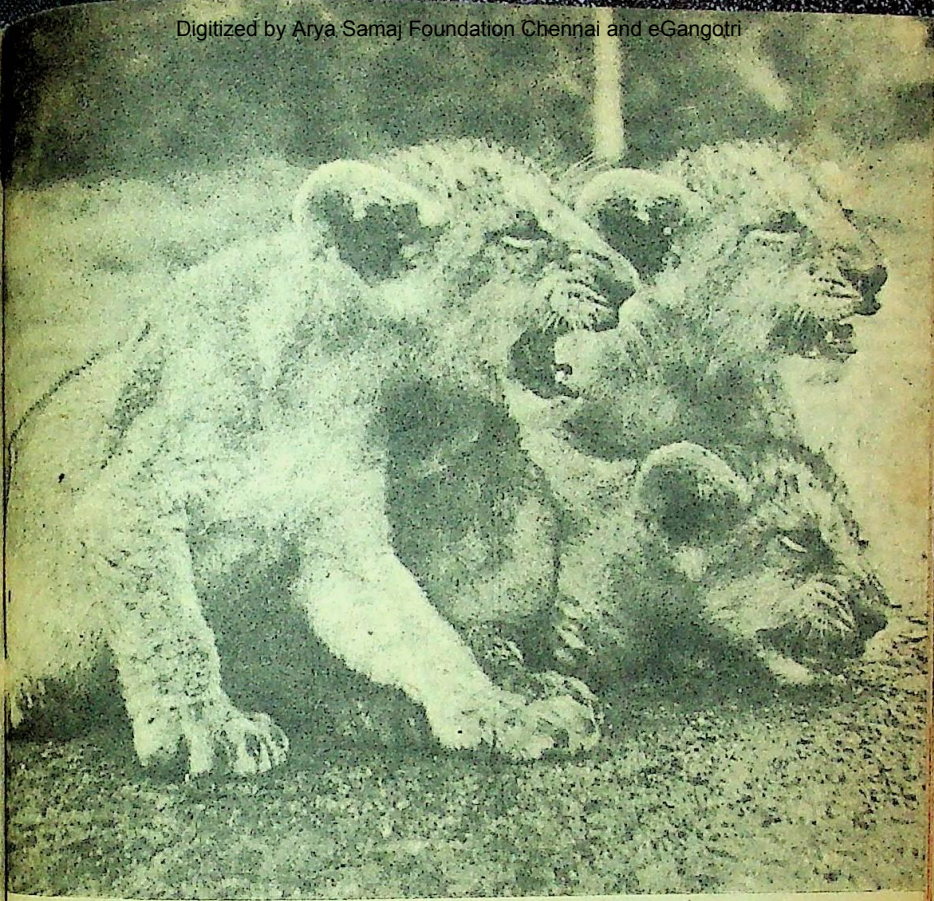

शेर के बच्चे : शिकार की इंतजार में.

और इन के सीमांत क्षेत्रों में अभयारण्य बनाने के भी प्रस्ताव हैं. कुछ भी हो इस दिशा में कोई ठोस कदम सोचविचार कर शीघ्र ही उठाने की आवश्यकता है.

अफ्रीकी और एशियाई सिंहों में थोड़ा अंतर होता है. अफ्रीकी सिंह की लंबाई थोड़ी अधिक होती है, पर शेष शरीर पर रोएं सघन होते हैं और पूंछ के अंत में बालों का गुच्छा अधिक लंबा होता है.

भारतीय सिंह बहुत सभ्य होता है. तीनचार मीटर नजदीक पहुंच जाने पर भी कुछ नहीं बोलता, पर इस का अफ्रीकी बंधु बड़ा खूंखार होता है. वहां के अभयारण्य में सैलानियों को वाहन से उतरने तक की मनाही है.

गिर सिंहों का कोई निश्चित प्रजनन काल नहीं है, पर मुख्यत: संभोगकाल अक्तूबरनवंबर है. बच्चे जनवरी व फरवरी में पैदा होते हैं.

सिंहनी एक बार में दो से पांच बच्चे तक जनती है. वह दो साल में एक बार गर्भ धारण करती है. नर सिंह पांच साल में पूरी जवानी में आता है. पर मादाएं तीन साल में ही जनने लगती हैं. इन का जीवनकाल 30-32 वर्ष होता है. एक समूह में लगभग पंदरह सदस्य होते हैं. ये मिल कर ही शिकार करते हैं.

सिंह भारत सरकार का राष्ट्रीय चिह्न है. इसे राष्ट्रीय पशु का दरजा भी बहुत पहले प्रदान किया गया था, परंतु अब सिंह सिंहासनच्युत कर दिया गया है. कहीं ऐसा न हो कि हम इस दुर्लभ वन-निधि से हाथ धो बैठें? ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

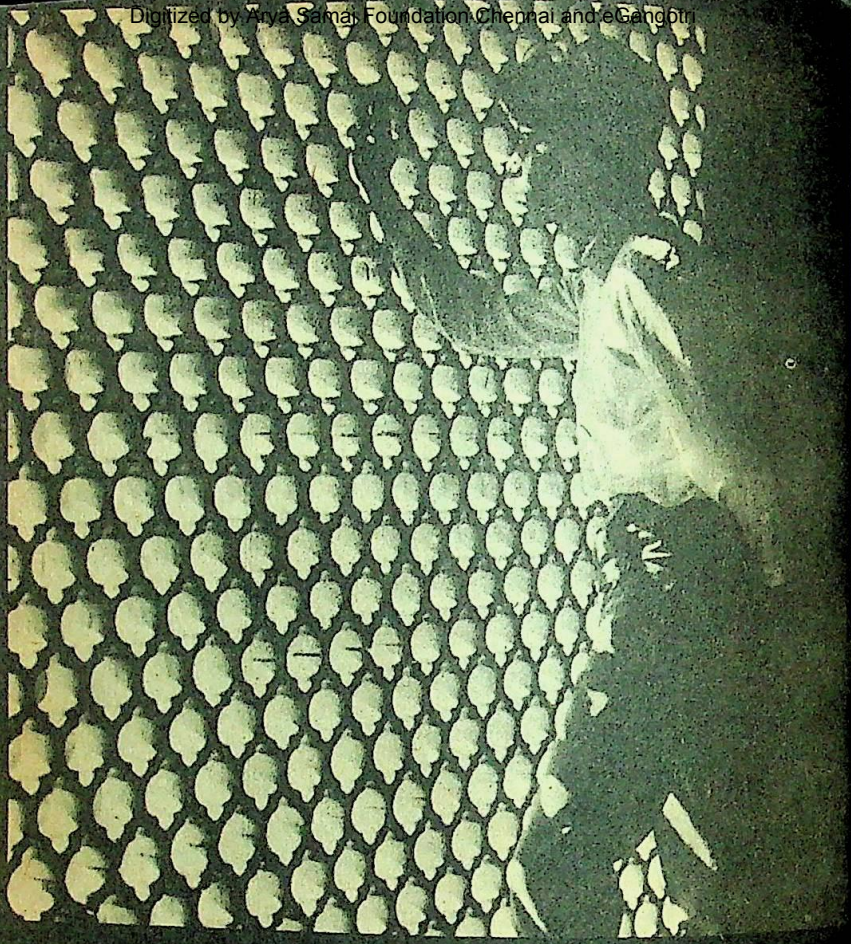

रात की लोरी

दस्तक दे मेरे द्वार पर
अंधकार ने कहा था,
चुप...चुप...चुप...
सो जाओ,
जागना अच्छा नहीं होता
जागा हुआ फिर नहीं सोता.

रात के इस
गाढ़े आवरण से
तुम धरा को और—
ढकने दो जरा
फिर करूंगा बात तुम से
दांव लगने दो जरा
चुप...चुप...चुप...

यह तुम्हारी आंख में
खिलते हुए कमल,
यह तुम्हारे होंठ पर
लिखी हुई गजल,
यह तुम्हारे प्राण में
पिघले हुए आंसू,
यह तुम्हारे कंठ में
ठहरा हुआ गरल.

मुझे बेचैन करता है
सांस जलती है,
चुप...चुप...चुप...
सो जाओ,
जागना अच्छा नहीं होता
जगा हुआ फिर नहीं सोता.

—जगमोहन

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

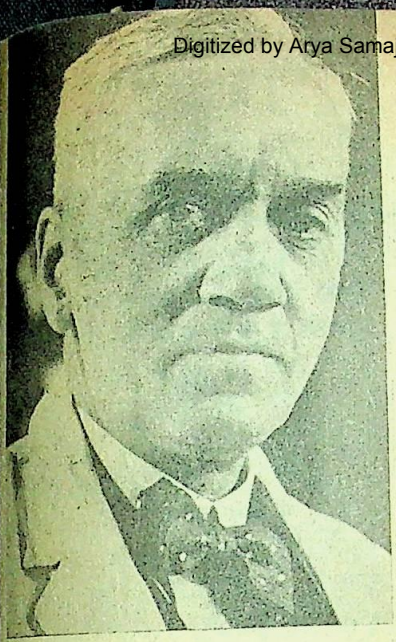

पेनिसिलीन के अन्वेषक अलेग्जेंडर फ्लेमिंग

लेख • रविशंकर चौबे

एंटीबायोटिक्स

चिकित्सा कार्य में एक अचूक दवा है लेकिन इस का दुरुपयोग जीवन के लिए उतना ही घातक है...

अरे यार, कहां डाक्टर के चक्कर में पड़े हो? दो एक डाइक्रिस्टीसिन लगवा लो, ठीक हो जाओगे. अरे भाई, डाक्टर भी यही प्रेस्क्राइब करेगा, देख लेना.

प्रायः लोग अपने दोस्तों, परिचितों को दवाओं के बारे में ऐसी सलाह देते रहते हैं. यही नहीं कुछ लोग तो टेट्रासाइक्लिन या क्लोरोमाइसिटीन जैसी दवाएं भी अपने परिचितों को अपने 'ज्ञान' के अपार भंडार का परिचय देते हुए प्रेस्क्राइब करते रहते हैं. कुछ ऐसे लोग भी हैं जो डाक्टर के पास जाते ही कहते हैं, "डाक्टर साहब, क्या मुझे अब टेट्रासाइक्लिन लेना शुरू कर देना चाहिए? मैं इस के पहले डाइक्रिस्टीसिन ले चुका हूं."

आधुनिक चिकित्सा के बढ़ते कदमों में एंटीबायोटिक्स की खोज निस्संदेह एक लंबी छलांग है. परंतु आजकल इस के मनमाने दुरुपयोग से उतनी ही लंबी समस्याएं भी पैदा होती जा रही हैं. सब से पहली एंटीबायोटिक्स पेनिसिलीन थी, जो अलेग्जेंडर फ्लेमिंग ने सन 1928 में खोजी थी. उन्होंने ही सर्वप्रथम यह देखा था कि स्टेफिलोकोकाई नामक बैक्टीरिया की कल्चर प्लेट में जब हरे रंग की फफूंद उग जाती है, तो बैक्टीरिया की वृद्धि रुक जाती है. लेकिन पेनिसिलीन को इस के फफूंद से सन 1940 में अलग किया गया और उस के गुणों का विस्तार से अध्ययन किया गया. प्रारंभ में पेनिसिलीन इतनी दुर्लभ थी कि रोगी को दिए जाने के बाद यह औषधि उस के मूत्र से अलग की जाती थी, ताकि उस का पुनः प्रयोग किया जा सके. आज पेनिसिलीन बहुत ही कम मूल्य पर उपलब्ध हो जाती है.

बैक्टीरिया एक कोशकीय वनस्पति वर्ग से संबंध रखने वाला जीव होता है. कुछ बैक्टीरिया रोग पैदा करते हैं. इन के आधार पर एंटीबायोटिक दो मुख्य भागों में बांटे जा सकते हैं. एक तो वे, जो केवल कुछ प्रकार के बैक्टीरिया पर ही प्रभाव डाल सकते हैं. इन को नैरो स्पेक्ट्रम एंटीबायोटिक्स कहते हैं. इस वर्ग में पेनिसिलीन मुख्य हैं. दूसरे, जो विभिन्न प्रकार के बहुत से बैक्टीरिया पर प्रभाव डालते हैं. इन को ब्राड स्पेक्ट्रम एंटीबायोटिक्स कहा जाता है, जिन में टेट्रासाइक्लिन और क्लोरोमाइसिटीन मुख्य हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आज सैकड़ों एंटीबायोटिक्स मानव ने खोज निकाले हैं. कुछ प्रकार के बैक्टीरिया केवल एक खास एंटीबायोटिक से ही प्रभावित होते हैं और अन्यों का प्रतिरोध करते हैं जैसे 'कारबेनिसिलीन' एक खास बैक्टीरिया स्यूडोमोनास पर बहुत प्रभाव डालता है, जहां कि अन्य दवाएं निरर्थक हैं. परंतु पेनिसिलीन सब से पुरानी और सब से अधिक प्रयोग में आने वाली एंटीबायोटिक है. पेनिसिलीन के बहुत से नए रूप खोजे गए हैं. अब तो एंपिसिलीन के नाम से ब्राड स्पेक्ट्रम पेनिसिलीन भी बाजार में उपलब्ध है. पेनिसिलीन में और कई चीजें (जैसे कि प्रोकेन) मिला कर उस की कार्यविधि को बढ़ाया गया है. पेनिसिलीन सामान्यत: बैक्टीरिया को मारती है, जब कि टेट्रासाइक्लिन जैसी दवाएं उन की वृद्धि को रोकती हैं.

अनियमित प्रयोग से हानियां

आज एंटीबायोटिक्स के अविवेकपूर्ण अनियमित प्रयोग से लाभ की अपेक्षा हानि हो रही है. इन को एक निश्चित अंतराल पर लिया जाना चाहिए. यदि इन की मात्रा कम हो या लेने का समय काफी लंबा हो, तो जीवाणुओं की इन दवाओं के प्रति संवेदनशीलता कम होती जाती है और वे इन के प्रति प्रतिरोधक शक्ति विकसित कर लेते हैं. उदाहरण के लिए स्टेफिलोकोकाई नामक बैक्टीरिया (जो घावों में पाया जाता है और मवाद उत्पन्न करता है) पहले सामान्य पेनिसिलीन के प्रति संवेदनशील थे और आसानी से मर जाते थे, लेकिन वे अब धीरेधीरे पेनिसिलीन के प्रति प्रतिरोधक शक्ति विकसित कर रहे हैं और घाव अब जल्दी ठीक नहीं होते. प्रतिरोध या रेजिस्टेंस की यह समस्या क्षय रोग में ज्यादा है क्योंकि इस रोग का इलाज कम से कम डेढ़ वर्ष या उस से भी ज्यादा चलता है. अधिकतर मरीजों का यह इलाज अनियमित हो जाता है और क्षय रोग के बैक्टीरिया स्ट्रेप्टोमाइसिन और अन्य दवाओं के विरुद्ध प्रतिरोध पैदा करते हैं.

दवाओं को अधिक मात्रा ले लेने से भी हानि है. बहुधा डाक्टर एंटीबायोटिक्स की अधिकतम सहनीय मात्रा ही देते हैं. उस से अधिक दवा खा लेने पर शरीर की कोशिकाएं प्रभावित होती हैं. उदाहरण के लिए स्ट्रेप्टोमाइसिन की अधिक मात्रा कान की तंत्रिका पर कुप्रभाव डालती है और आदमी बहरा हो सकता है या उस का संतुलन बिगड़ सकता है.

क्लोरामाइसिटीन के अधिक प्रयोग के कारण व्यक्ति रक्त की कमी से पीड़ित हो सकता है. यह औषधि टायफाइड बुखार में काम आती है. एरीथ्रोमाइसिन एस्टोलेट यकृत पर विष जैसा प्रभाव डालता है. जेंटामाइसिन जैसी औषधियां गुर्दे पर बुरा प्रभाव डालती हैं. टेट्रासाइक्लिन, फंगस इन्फैक्शन को आमंत्रित करता है. अब तक ज्ञात सारे एंटीबायोटिक्स में संभवत: पेनिसिलीन ही सब से अधिक सुरक्षित दवा है. वह बहुत कम हानिप्रद है. परंतु कुछ व्यक्ति पेनिसिलीन के लिए बहुत अधिक संवेदनशील हो सकते हैं, ऐसे व्यक्तियों को पेनिसिलीन का इंजेक्शन लगाने पर उन की मृत्यु तक हो सकती है.

एंटीबायोटिक्स की खोज से डाक्टरों को इन्फैक्शन रोकने में बड़ी सहायता मिली है. अब इन्फैक्शन यानी संक्रमण कोई समस्या नहीं है. एंटीबायोटिक्स ने आपरेशनों को और अधिक सुरक्षित बनाया है. आपरेशनों के बाद होने वाले संक्रमणों से अब किसी की मृत्यु नहीं होती. एंटीबायोटिक्स का सावधानी से प्रयोग किया जाए. एंटीबायोटिक्स केवल डाक्टर की सलाह पर ही लें. ●

इस अंक में आप के लिए विशेष भेंट—सुसज्जित, बहुरंगी छटा समेटे नए वर्ष का कैलेंडर पृष्ठ 51 पर. इस कैलेंडर को आप पत्रिका से निकाल कर अलग रख सकते हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विडंबना

मदुरा की राजगद्दी के प्रश्न को ले कर कुलशेखर और पराक्रम पांड्य के बीच गृह-युद्ध छिड़ गया. लंकानरेश की सहायता से विजय पांड्यवंश की हुई. . .लेकिन अंत में चोल शासकों ने पांड्यवंश के उत्तराधिकारी को संरक्षण क्यों दिया?

कहानी • प्रभात त्यागी

"क्षमा करें लंकाधिपति, मैं आप से सहमत नहीं हूं."

"हमें खेद है, सामंतश्रेष्ठ, तु हमारा निर्णय भी अंतिम व अपरिवर्तनीय है. पहली बार आप की इच्छा विरुद्ध कार्य करने का निश्चय हम ने क्या है. पर हमें अपने निर्णय के लिए पश्चाताप नहीं करना होगा, ऐसा मैं आप को विश्वास दिलाता हूं."

"मेरा आशीर्वाद आप के साथ है, महाराजाधिराज. ईश्वर आप को सफलता प्रदान करे. व्यक्तिगत रूप से मैं सोचता हूं कि पड़ोस के किसी घर की अग्नि को

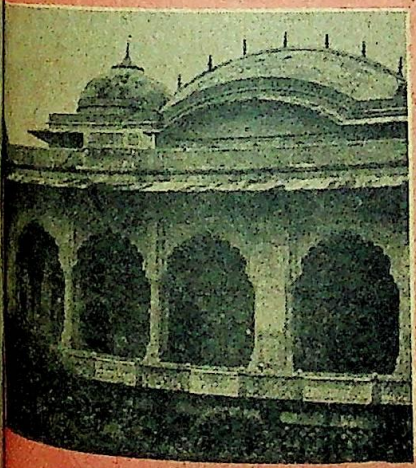

पराक्रमबाहु ने अपने प्रधान अमात्य से कहा, "हमारा बस चले तो गंगाकोंड चोलपुरम को जला कर राख कर दें."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बुझाने के प्रयत्न में हमेशा हाथ झुलसने का भय रहता है..."

"पर इस का यह अर्थ नहीं कि हम खड़ेखड़े अपने पड़ोसी का घर जल जाने दें. फिर पड़ोसी पांड्य नरेश हैं जो हमेशा हमारे ऋणी रहेंगे..."

"इसी लिए तो उन्होंने मुझे आप से सहायता की प्रार्थना के लिए भेजा है, श्रीमन." तीसरा नया स्वर भारत से आए दूत का था.

अनुराधापुर, लंका के राजमहल में अर्द्धरात्रि के समय मंत्रणाकक्ष में उपर्युक्त वार्त्तालाप लंकानरेश राजा पराक्रमबाहु, उन के प्रधान अमात्य व पांड्य दूत के बीच चल रहा था. पराक्रमबाहु मदुरा में, मारवर्मन श्रीवल्लभ के पुत्र कुलशेखर व पराक्रम पांड्य के बीच चल रहे गृहयुद्ध में हस्तक्षेप को उत्सुक थे.

"अतिथि, तुम अतिथिशाला में विश्राम करो. हम विचारविमर्श के पश्चात अपने अंतिम निर्णय से तुम्हें अवगत कराएंगे. वैसे तुम हमारी सहायता की अपेक्षा कर सकते हो."

"बहुतबहुत धन्यवाद, लंकाधिराज." सिर झुका कर पांड्य दूत कक्ष के बाहर चला गया.

"प्रश्न भावनाओं का नहीं है, महासामंत. आप को ज्ञात ही है कि चोल शासकों ने हमें आज तक पददलित किया है. राजेंद्र चोल, राजाधिराज व कारिकल सभी शासकों ने सिंहलद्वीप को रौंदा व इस पर एकछत्र शासन किया. यहां तक कि परांतक प्रथम ने तो हमारे पितामह कस्सप व पांड्य शासक मारवर्मन राजसिंह द्वितीय के बीच गृहयुद्ध में न केवल राजसिंह को ही पराजित किया अपितु उन के लंका भाग आने पर लंका व पांड्य, दोनों शासकों की संयुक्त सेनाओं को भी वेलूर के युद्ध में पराजित किया..."

"जी, मुझे मालूम है, लंकापति. मुझे यह भी ज्ञात है कि पांड्य शासक राजसिंह द्वितीय द्वारा लंकानरेश के पास धरोहर के रूप में छोड़े गए मुकुट व आभूषण को भी राजेंद्र चोल लंका से जबरदस्ती छीन कर ले गया और राजसिंह की [illegible] व पत्नी को उस ने अपने अंतःपुर में [illegible] दिया. यही नहीं, लंकानरेश [illegible] सहित..."

"बसबस, प्रधानजी, हमारे घाव [illegible] मत कुरेदिए. हम भूले नहीं हैं कि हमारे पूर्व शासक महेंद्र, उन की पत्नी तथा रिश्तेदारों को राजेंद्र चोल के बंदीगृह में जीवन के अंतिम 12 वर्ष किस कष्ट के साथ काटने पड़े. उन के राजपुत्र कस्सप, हमारे दादा को, राजेंद्र चोल के पुत्र राजाधिराज ने चैन से नहीं बैठने दिया." आवेश में अपने स्थान से उठ कर पराक्रमबाहु कक्ष में चक्कर काटना प्रारंभ कर दिया.

"तब हम बच्चे ही तो थे जब वह हमारी बुआ व परबुआ को पकड़ कर भारत ले गया तथा हमारी परबुआ की यहां हमारे देश में ही उस दुष्ट ने नाक काट ली." क्रोध से पराक्रमबाहु की सांस तेज चलने लगी.

"शांत रहिए, सम्राट. पिछली कटु बातों की स्मृति से क्या लाभ?"

"लाभ? हमारा बस चले तो हम चोल राजधानी उरैपुर व नए नगर गंगैकोंड चोलपुरम को जला कर राख कर दें."

"अपराध क्षमा हो, मान्यवर. [illegible] पांड्य गृहयुद्ध का चोल कूटनीति से [illegible] संबंध है, यह मैं समझ नहीं पाया."

"आप समझ नहीं पाए, बड़ा आश्चर्य है. आप को ज्ञात होगा कि लंका शासक सम्राट विजयबाहु ने चोलों को मानसिक आघात पहुंचाने के लिए हमारी बुआ मित्त का विवाह जानबूझ कर पांड्य युवराज से किया, जब कि चोल कुलोत्तुंग उन से विवाह के लिए लालायित था. आप समझ नहीं रहे हैं कि चोल शासक पांड्य गृहयुद्ध में कुलशेखर पांड्य का समर्थन कर रहे हैं, इसलिए हमें मित्र के पति पराक्रम पांड्य का पक्षपोषण करना है? हम सोचते हैं, हमारा मदुरा अभियान पिछले चोल अत्याचारों व अपमान के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भयंकरतम प्रतिशोध का अवसर प्रदान करेगा. हम गिनगिन कर पिछली घटनाओं का चोलों से प्रतिकार लेंगे, मुख्य सामंत."

"जैसी आप की इच्छा, सम्राट. फिर भी मैं इतना कहूंगा कि प्रतिशोध की भावना के वशीभूत हो कर आप यथार्थ को दृष्टि से ओझल कर रहे हैं. गृहयुद्ध में विजय चाहे पांड्य शासकों की हो अथवा चोलों की, हमारी सेना के सैकड़ों सैनिकों को खेत रहना होगा. पर चूंकि आप ने अंतिम निर्णय कर ही लिया है इसलिए मेरा कुछ कहना व्यर्थ है. मैं प्रधान सेनापति लंकापुर को युद्ध की तैयारियां करने का आदेश दे देता हूं."

"बिलकुल ठीक. और पांड्य दूत को भी सूचित करा दीजिए कि हम ने उस की प्रार्थना स्वीकार कर ली है. हमारी सेनाएं शीघ्र मदुरा पहुंच जाएंगी."

मित्त को भी यही आशा थी. उस का भतीजा पराक्रमबाहु सेनाएं अवश्य भेजेगा, यह उस का दृढ़ विश्वास था. इसलिए नहीं कि वह उस के पति के शत्रु कुलशेखर से घृणा करता था, अपितु इसलिए कि लंका के शासकों को जिन चोल शासकों ने बुरी तरह अपमानित व प्रताड़ित किया था, वे ही उस के पति के प्रतिद्वंद्वी की सहायता कर रहे थे. एक पत्थर से दो शिकार करने का इस से सुंदर अवसर पराक्रमबाहु को और कौन सा मिल सकता था. मदुरा के राजमहल की छत पर चहलकदमी करती हुई मित्त अपने पिता विजयबाहु द्वारा सुनाई गई उस कहानी को याद कर रही थी जब कि अनुराधापुर के सिंहासन पर बैठ कर चोल राजाधिराज ने कस्सप या विक्रमबाहु को अपने सामने बुला कर उस के जवाहरात, आभूषण व रत्नजड़ित मुकुट नौकरों से उतरवा लिए थे तथा उस के हाथी का प्राणांत केवल इसलिए करा दिया कि वह लंका के शासक विक्रमबाहु का बहुत प्रिय हाथी था. राजा की बहन व उस की पुत्री को सभासदों की भरी सभा में बुला कर अपमानित करने के साथ उस की माता की भी, उस दुष्ट ने केवल राजनीतिक ईर्ष्यावश नाक काट ली थी. यह सब कुछ सुन कर ही मित्त कांप उठी थी. जिन्होंने यह लोमहर्षक दृश्य अपनी आंखों से देखा होगा उन की क्या स्थिति हुई होगी?

"राजवंश में उत्पन्न होने से ही क्या कोई व्यक्ति इनसान नहीं रह जाता?" वह सोच रही थी 'राजनीतिक ईर्ष्या क्या व्यक्ति की नैतिकता को भी समाप्त कर देती है? कूटनीतिक दांवपेंचों के कारण इनसान इनसान का शत्रु क्यों बन जाता है?' सभी प्रश्न अनुत्तरित थे. नारी को पुरुष की वासना तथा उस की शत्रुता, उस के प्यार अथवा उस की सफलता, क्या सभी का दंड भुगतना पड़ता रहेगा? यदि ऐसा न होता तो प्रत्येक युद्ध, प्रत्येक षड्यंत्र व प्रत्येक राजनीतिक कुचक्र में नारी को अपनी बलि दे कर पुरुष की हठधर्मी तथा उस की निरंकुशता का मूल्य न चुकाना पड़ता. चोल शासकों का उस की दादी ने क्या बिगाड़ा था?

उदास कली...

एक मासूम सी उदास कली,
इस तरह देखती है फूलों को.
खोखले कहकहों के झुरमुट में
जैसे इक पुरवुलूस आंसू हो.

—नरेशकुमार 'शाद'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यही तो उस का पाप था कि वह राजवंश में उत्पन्न हुई थी. किसी की दादी, किसी की मां या बहन होने से पूर्व वह एक नारी होती है. पुरुष इस तथ्य को क्यों भूल जाता है?

जिस समय यह प्रश्न आया कि स्वयं उस का विवाह पराक्रम पांड्य से हो अथवा कुलोत्तुंग से तो वह राजनीतिक निर्णय की तीक्ष्णता से मर्माहत हो उठी. उसे ज्ञात था कि कुलोत्तुंग उस पर अपने प्राण न्योछावर करता था. अपने लंका प्रवास में कई बार उस ने प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से विवाह का संदेश भी भिजवाया था. कुलोत्तुंग के प्रभावशाली व्यक्तित्व व सुंदरता से वह भी कम प्रभावित नहीं हुई थी. उस की मनोगत भावना तो यही थी कि वह चोल शासक को ही अपना पति चुन ले. अचानक एक दुधारी तलवार ने उस के हृदय के दो टुकड़े कर दिए. उस के पिता व भाई ने घोषणा कर दी, "क्या अपनी परदादी, परबुआ व अन्य रिश्तेदारों तथा पूर्वजों के सम्मान की होली जलाने वाले व अपने वंश की नारियों को दासी बनाने वाले चोल शासकों के वंशज से अपना वैवाहिक गठबंधन करना उसे बुरा नहीं लगेगा? अपने पूर्वजों के कट्टर शत्रु के साथ क्या वह अपना जीवन बिता सकेगी?"

उस का हृदय चीख उठा. वह मानो पुकारपुकार कर कह रहा था, "दोषी पूर्ववर्ती चोल शासक हैं, कुलोत्तुंग प्रथम नहीं. उस ने तो किसी का सम्मान नहीं छीना, किसी को अपमानित नहीं किया. जब वह स्वयं आगे बढ़ कर लंका की राजकुमारी अर्थात उस के साथ विवाह रचाना चाहता है तो इस से अधिक उस की सच्चरित्रता व नैतिकता का और क्या प्रमाण होगा?"

पर उस के सगेसंबंधी तो जैसे बहरे हो गए थे. उन का पुरुषजनित अहं उस के लिए हिमालय बन कर उस के सम्मुख

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खड़ा हो गया था. वही हुआ भी जिस की उसे आशंका थी. राजनैतिक विवाह हुआ और उसे पांड्य कुमार पराक्रम के साथ विवाहित हो कर आना पड़ गया. उसे भयंकर ईर्ष्या थी साधारण कही जाने वाली नारियों, हीर, चन्ना, लैला व मारूत से, जिन्हें प्राप्त करने के लिए रांझा, रामू, मजनूं व ढोला अपने प्राणों पर खेल गए थे. जैसा उस ने प्रेम कहानियों में पढ़ा व सुना था, उस के पराक्रम पांड्य से विवाहित हो जाने पर कहीं कोई हलचल नहीं हुई, कोई तूफान नहीं मचा. टूटा मन व बुझा हृदय लिए वह मदुरा की 'राजमहिषी' बन गई. इस शब्द पर वह खीझ उठती. राजमहिषी की गौरवपूर्ण वेशभूषा व राजसी ठाटबाट तो सब को दिखते, पर नशे में धुत जब पराक्रम पांड्य उसे पीटपीट कर अधमरा कर देता तो किसी को यह बात ज्ञात न हो पाती, कोई उस की सहायता के लिए न आता. साहस कर वह अपने प्रकोष्ठ में ताला बंद कर भीतर बैठ जाती. नशा हटने पर उस का पति घंटों मिन्नतें कर, अपने व्यवहार के लिए क्षमा मांग कर उस से प्रकोष्ठ का द्वार खुलवाता. ऐसे समय में चोल कुलोत्तुंग के गौरव व साहस की गाथाएं सुनसुन कर उस के मन में कसक उत्पन्न हो जाती. लंबी सांस ले कर वह नीचे जाने को उद्यत थी.

विचारमग्न मित्त को ज्ञात ही नहीं हो सका कि एक मानव आकृति चुपचाप कब से उस के पीछे आ कर खड़ी हो गई थी. जैसे ही वह अपने स्थान से उठने लगी, उस आकृति ने उसे पीछे से आलिंगन-बद्ध कर लिया.

"हटो, मुझे तुम्हारे ये चोंचले पसंद

पल्लवरमार और उस के सैनिकों ने देश लौटने की प्रसन्नता में मग्न सिंहली सैनिकों को घेर लिया...

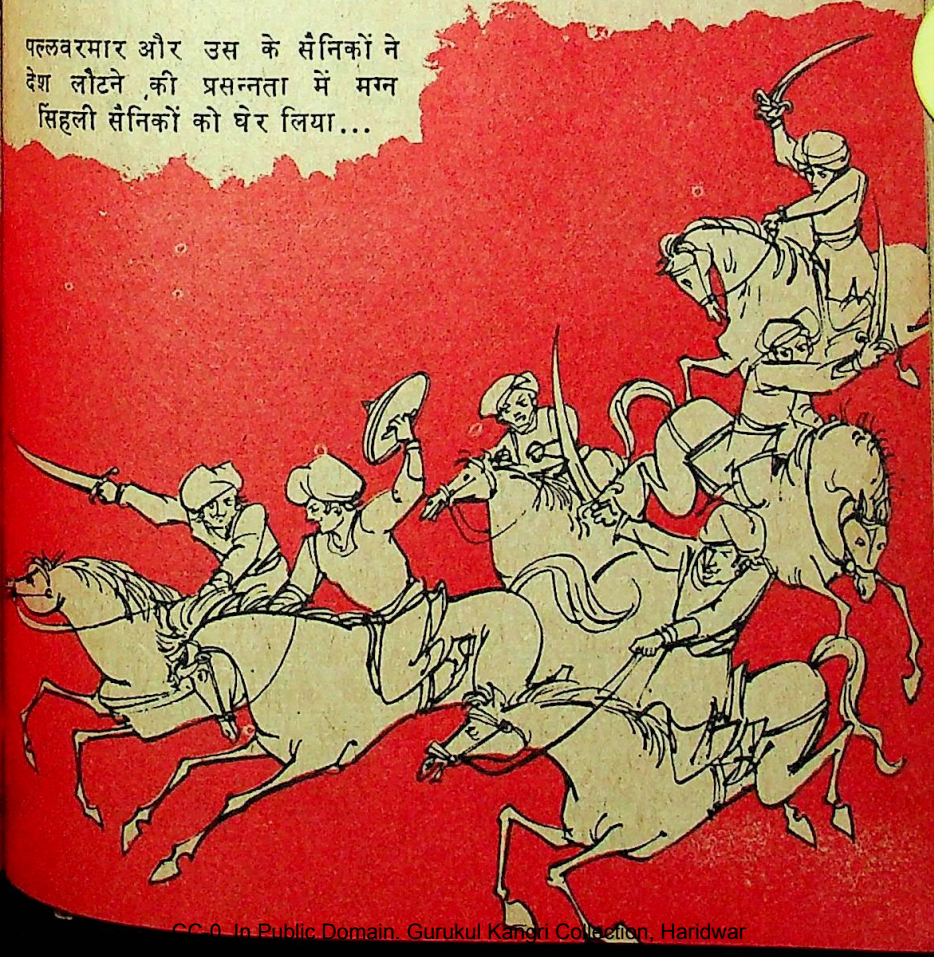

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं हैं." उस व्यक्ति को अपना पति पराक्रमबाहु समझ कर आलिंगनपाश से मुक्त करते हुए वह झिड़क कर बोली.

प्रथम दिवस से ही वह उस के प्रति वितृष्णा से भर उठी थी. सामाजिक परंपराओं का निर्वाह करते हुए वह भारतीय समाज की हजारोंलाखों नारियों की भांति 'पतिव्रतधर्म' का पालन कर रही थी, क्योंकि समाज ने उन्हें एक चारदीवारी में ला कर रख दिया था. उस का रोमरोम पति के 'बलात्कार' व मानसिक व शारीरिक अत्याचारों का चीखचीख कर प्रतिरोध कर उठता था. किंतु किसे उस प्रतिरोध की चिंता थी. अन्य विवाहित नारियों में से किस के प्रतिरोध की किसी ने चिंता की है? उसे बड़ा आश्चर्य हुआ कि उस की झिड़की सुन कर तुरंत अलग हट जाने वाला उस का भीरु पति आज उसे और अधिक तीव्रता से आलिंगनबद्ध कर रहा था.

"हटो, सुना नहीं तुम ने? मैं राजमहिषी हूं, कोई बांदी या उपपत्नी नहीं जिसे जब चाहो, अपनी वासना का शिकार बना लिया."

"तुम राजमहिषी हो तो मैं कौन कम हूं, प्रियतमे?"

एक अपरिचित स्वर सुन कर उसे लगा जैसे कई बिच्छुओं ने उसे एक साथ डंक मार दिए हों. कठोर प्रयत्न कर वह छिटक कर दूर जा खड़ी हुई.

"तुम...?" अपनी आंखों से हिमालय पर्वत को चलताफिरता देख कर भी शायद इतना आश्चर्य उसे न हुआ होता जितना अपने शत्रु, पति के प्रतिद्वंद्वी जटावर्मन कुलशेखर को छत पर खड़ा देख कर उसे हुआ.

"हां, मैं ही हूं, मेरी रानी." वह खड़ाखड़ा वासना की हंसी हंस रहा था.

"तुम्हारा इतना साहस कैसे हुआ कि मदुरा के राजमहलों में तुम ने पदार्पण कर लिया? चोरों की भांति महल की छत पर आते हुए क्या तुम्हें तनिक भी लज्जा नहीं आई? ठहरो, मैं तुम्हारी धृष्टता का दंड तुम्हें अभी देती हूं. मदुरा

हमारी बेड़ियां

मेरी एक सहेली के भाई की शादी हुई. सब समारोह गांव में ही संपन्न किए गए. उन के यहां यह रिवाज है कि वधू के आगमन के बाद वर व वधू दोनों को घर में प्रवेश करने से पहले गांव भर के मंदिरों, तालाबों व कुओं की पूजा करनी पड़ती है. पूजा के लिए नंगे पैर जाना आवश्यक है.

रात के समय ऊबड़खाबड़ सड़क पर घूंघट में ही उक्त कार्यक्रम पूरा कराया गया. वधू के पैर में कांच का एक टुकड़ा घुस गया, जिस से उत्पन्न घाव एक माह में ठीक हो सका. काफी दिनों तक वह अपना पांव जमीन पर भी नहीं रख सकी.

—शैलबाला, सहारनपुर

एक बार मेरा भाई मोटरसाइकिल पर मेरी बड़ी बहन को ससुराल से लेने गया. आते समय जब बहन मोटरसाइकल पर बैठने लगी तो बहन की सास ने मोटरसाइकल के दोनों पहियों पर एकएक लोटा पानी डाल दिया. ऐसा करने का कारण पूछा गया तो उन्होंने बताया कि यह शुभ होता है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की राजमहिषी का अपमान कोई सरल कार्य नहीं है. रंजना, रेखा, वत्सला, ऊपर आना तो. महलसंरक्षक दंतमणि को भी लेती आना," मित्त ने लगभग चीखते हुए आवाज दी. कई पल निकल गए पर नीचे से जब किसी के भी आने की आहट न हुई तो मित्त का माथा ठनका. उस ने विचारों की आंधी में यह तथ्य भुला ही दिया था कि सारे राजमहल में मौत जैसी शांति छाई हुई थी. सब लोगों का क्या हुआ? वे सब किधर चले गए?'

"दंतमणि..." राजमहिषी ने उच्च स्वर में आवाज दी. उस का शत्रु, गृहयुद्ध का जनक, पति पराक्रम पांड्य का दूर के रिश्ते का भाई, मदुरा की गद्दी का इच्छुक कुलशेखर उसी मुख मुद्रा में खड़ा मंदमंद मुसकरा रहा था.

"मित्त, मेरी हृदय साम्राज्ञी, तुम्हारा चीखनाचिल्लाना व्यर्थ है. तुम्हें प्राप्त करने के लिए तो मैं छत क्या, पहाड़ व सागर तक भी लांघ सकता था. जिस दिन मैं ने तुम्हें उस मूर्ख पांड्य की नववधू के रूप में देखा उसी दिन मैं ने हृदय तुम पर वार दिया था. आज मुझे अपना मंतव्य पूरा करने का स्वर्णावसर मिला है. देखें, तुम्हें आज कौन मुझ से बचाता है." कुलशेखर हाथ फैला कर दोबारा उसे आलिंगनबद्ध करने के लिए आगे बढ़ा.

"मैं कहती हूं, अनाधिकार चेष्टा न कर अपने स्थान पर खड़े रहो, एक कदम भी आगे बढ़ाया तो..."

उसे नहीं सूझा कि वह क्या कहे. वह राक्षस तो उस की ओर बढ़ता ही चला आ रहा था.

"श्रीमन, आप के आदेशानुसार सारी गुप्त योजना सफलतापूर्वक पूरी कर ली गई है," अचानक एक व्यक्ति ने आ कर जटावर्मन कुलशेखर को सिर झुका कर सूचना दी.

"बहुत सुंदर, प्रधान सेनापति, जरा इन राजमहिषी को भी बता दो कि तुम

थोड़ी दूर जा कर मोटरसाइकिल खराब हो गई. उसे मिस्त्री के पास ले जाया गया तो पता चला कि ट्रांसफारमर में पानी चला गया है. धन और समय की बरबादी तो हुई ही, समय पर न पहुंचने के कारण परिवार के सभी सदस्य भी चिंतित हो उठे.

—संतोष मित्तल, नई दिल्ली

✦

हमारे पड़ोस में एक परिवार रहता है. उन के बड़े लड़के की शादी हुए करीब आठ साल हो चुके हैं, परंतु अभी तक कोई संतान नहीं हुई. पहले तो उन्होंने एक मुल्लाजी से झाड़फूंक करवाई. लेकिन कुछ भी फायदा नहीं हुआ. फिर वह मुल्लाजी के कहने के अनुसार बहू को मजारात करवाने ले गए. मजारात में बहू को पीरों की कब्र पर जाना पड़ता है.

उस से भी कोई फायदा न देख कर उस के साससुर ने मुल्लाजी से मशवरा किया और उन्हीं के आदेशानुसार 'चिल्लाकशी' करवाने कब्र पर ले गए, जिस में बहू को बाल खोल कर सिर पटकना पड़ता है. इसी प्रक्रिया में कोई नोकीली चीज बहू की आंख में लग गई. संतान तो फिर भी नहीं हुई, परंतु अपने रूढ़िग्रस्त संस्कारों के कारण उन्होंने अपनी बहू की एक आंख गंवा दी.

—भीमसेन भाटिया, दिल्ली ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या कार्य पूरा कर के आ रहे हो."

"मुझे खेद है, महिषी, मैं भूतपूर्व मदुराशासक पराक्रम पांड्य व उस के दो बच्चों को तलवार के घाट उतार कर आ रहा हूं."

मित्त का मुंह खुला का खुला रह गया. शब्द उस के गले में फंस गए. पैरों के नीचे से जमीन खिसक गई.

"किंतु लंका से..." वह अपना वाक्य पूरा न कर सकी. उसे लगा जैसे वह गिर पड़ेगी. धीरेधीरे उस की आंखों के सामने अंधेरा छा गया.

"हा हा हा," भयानक अट्टहास करते हुए कुलशेखर ने उस का वाक्य पूरा किया, "लंका से पराक्रमबाहु की सेनाएं अभी यहां तक पहुंची भी नहीं और उस से पूर्व ही मेरा मदुरा पर अधिकार हो गया है. पराक्रम पांड्य व तुम्हारे बच्चों को चुपचाप हम ने महलों से निकाल कर यमलोक भेज दिया है, इसलिए तुम्हारा भला इसी में है कि तुम मेरी रानी बन जाओ अन्यथा..."

तब तक मित्त शायद अपना कर्तव्य निश्चित कर चुकी थी. बच्चों व पति के देहांत के बाद वह किस के लिए जीवित रहती.

"तू मुझे कभी नहीं पा सकता, वासना के कुत्ते," कहते हुए भाग कर मित्त उस के देखतेदेखते राजमहल की मुंडेर पर जा चढ़ी. तभी शून्य में एक हलचल हुई. वह एक क्षण के लिए हवा में झूलती दृष्टिगोचर हुई और दूसरे ही क्षण सैकड़ों फुट नीचे गिर कर उस का तन चिथड़ेचिथड़े हो कर धरती पर बिखर गया.

कुलशेखर व उस के प्रधान सेनापति को तो मानो सांप सूंघ गया. उन के देखतेदेखते ही विद्युत गति से सब कुछ घटित हो गया था.

पराक्रमबाहु को जब सिंहलद्वीप में सारा समाचार मिला तो वह एक क्षण तो ठगा सा रह गया. पर दूसरे ही पल वह क्रोध से कांप उठा. सोचसोच कर वह बेहद रो पड़ा. इतनी सुकुमार नारी का ऐसा बीभत्स अंत? सिंहलराज कुमारी की ऐसी दुखद मृत्यु? पराक्रम पांड्य से हुए विवाह की बात उस के स्मृतिपटल पर सहसा अंकित हो उठी. कैसी नैराश्य व निरीहता की प्रतिमूर्ति बनी वह हृदय पर पत्थर रख कर पराक्रम पांड्य की वधू बन कर रह गई थी. अपनी कल्पना में राजमहल से कूदती मित्त का चित्र देख कर वह सिर से पांव तक सिहर उठा.

"आप ने ठीक कहा था, प्रधानजी, हमारे अभियान का पहला कुपरिणाम हमारे सामने आ गया है. सचमुच मित्त को हम ने अपनी मूर्खता से खो दिया है. किंतु चाहे लंका विनाश के गर्त में डूब जाए, हर स्थिति में हमें मित्त के बलिदान का मूल्य हत्यारे कुलशेखर से वसूल करना

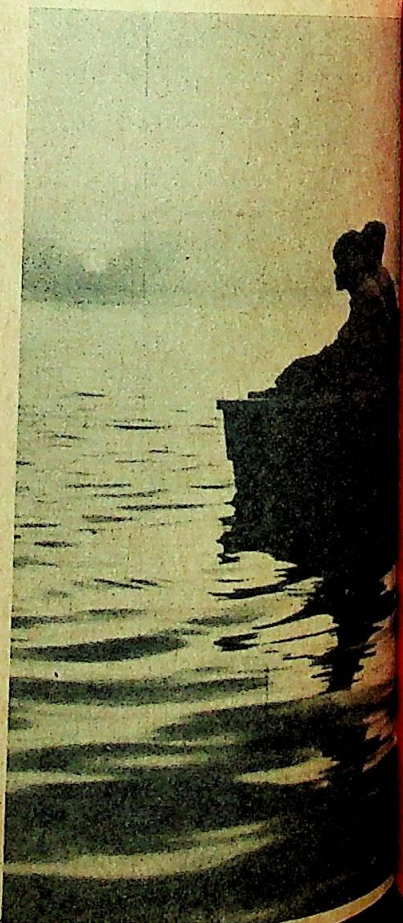

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है. सेनापति लंकापुर को आप आदेश दीजिए कि चाहे एक भी सिंहली सैनिक वापस लौट कर न आए, पर मित्त के हत्यारों के पास मदुरा का सिंहासन नहीं रहना चाहिए. उस सिंहासन पर चाहे कोई पत्थर की प्रतिमा ही प्रतिष्ठित हो, पर कुलशेखर को वह किसी भी मूल्य पर नहीं मिलना चाहिए."

सेनापति लंकापुर को तलाहिल में सम्राट का आदेश मिला. मित्त की असामयिक मृत्यु व पराक्रम पांड्य की हत्या ने सभी सैनिकों का अद्भुत क्रोध का आगार बना दिया. कुलशेखर पर भयंकर आक्रमण कर उसे मदुरा छोड़ कर भागने को बाध्य कर दिया गया. एक-दो बार नहीं, कुलशेखर की पराजय कई बार हुई. उसे मदुरा से भगा कर जिस

कैसे रूप सजाऊं...

दर्पण से नयना जुड़ जाते कैसे रूप सजाऊं,
रूप सजाए बिन भी लेकिन कैसे मन बहलाऊं.

पैरों को यह ताना देती
रुनझुन करती पायल
"हो कितने निर्दयी
रचाया नहीं अभी तक महावर."
करूं शरम या घोल महावर पैरों बीच रचाऊं,
या पायल की बात अनसुनी कर मन को बहलाऊं?

आंखों की तकरार हर समय
होती यह जुल्फों से :
"क्यों न संवरती, सखी,
हुई क्या अनबन कुछ पुष्पों से."
करूं शरम या गूंथ चमेली जूड़ा सुघड़ बनाऊं,
या अनसुनी करूं मन का और संन्यासिन बन जाऊं.

ठंडी सांस और अंगड़ाई
बारबारी आती,
एक निराशा और दूसरी
आशा दीप जलाती.
पड़ी बीच जंजाल करूं क्या कुछ भी समझ न पाऊं?
कर के मान बैठ जाऊं या पाती लिख भिजवाऊं?

—कुसुम शर्मा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समय मदुरा में सेनापति विजयोत्सव मनाने में मग्न थे, एक फटेहाल किंतु आकर्षक युवक को अपने डेरे में आया देख कर लंकापुर चौंक पड़ा. संगीत की धुन बीच में ही रुक गई, मदिरा की प्यालियां सब के हाथों में जहां की तहां रह गईं.

"प्रधान सेनापतिजी, यह युवक हठपूर्वक आप से भेंट करने आया है," प्रतिहारी नतमस्तक हो कर बोला.

लंकापुर ने ध्यान से युवक को देखा. उस के होंठों पर पपड़ी जमी हुई थी. बदन लगभग नंगा था. सिर के बाल रूखेसूखे थे तथा बेतरतीब दाढ़ी ने उस का चेहरा विकृत कर दिया था. फिर भी न जाने उस की आंखों में कैसी चमक थी कि लंकापुर ने सब को अपनेअपने डेरे में जाने की आज्ञा दे दी.

"कहो, युवक, तुम्हें क्या चाहिए?"

"जी, मैं दस दिन से भूखा हूं. भटकतेभटकते मैं अंत में आप के पास आया हूं. समझ लीजिए कि मैं ने जीवन के भयंकरतम कष्ट भोग लिए हैं." कहतेकहते वह अचानक लड़खड़ाया और दूसरे ही पल वह धड़ाम से जमीन पर गिर पड़ा. लंकापुर के आदेश पर तुरंत उस का उपचार कर पानी के छींटे दे कर उस की बेहोशी मिटाई गई. भोजन की उसी समय उस के लिए व्यवस्था की गई जिसे देखते ही वह उस पर टूट पड़ा.

भूख व्यक्ति को कितना असहाय बना देती है, लंकापुर जल्दीजल्दी खाते हुए युवक को देख कर सोच रहा था. पेट भर जाने पर युवक बोला, "आप को ज्ञात नहीं कि आज आप ने एक इनसान को भूख के तीखे दांतों से बचा कर मुझ पर कितना बड़ा उपकार किया है. मदुरा राजवंश का अंतिम कुलकलंक जब तक जीवित रहेगा, आप का ऋणी रहेगा.

"क्या कहा मदुरा राजवंश? तुम्हारा नाम क्या है?"

"मैं राजा पराक्रम पांड्य का अभागा पुत्र वीर पांड्य हूं जिस ने कायरों की भांति भाग कर कुलशेखर से अपने प्राण बचाए. मैं इतना हतभागी हूं कि जंगलों में भागतेभागते मैं ने अपनी इन आंखों से अपने पिता व छोटे भाई की हत्या होते देखी है. मैं कुछ न कर सका और यदि मैं कुछ करने का प्रयत्न करता भी तो शायद आप के सामने आने के लिए बचता भी नहीं."

"वीर पांड्य? सिंहलनरेश के दौहित्र?" उत्साह में लंकापुर ने उसे बांहों में भर लिया. बेचारा युवक हक्काबक्का रह गया.

"समझ लीजिए कि आप के कष्टों का अब अंत हो गया, मदुराधिपति."

"मदुराधिपति? क्यों आप मेरी हंसी उड़ा रहे हैं? कभी यह सुखद स्वप्न मैं ने अवश्य देखा था, पर आज तो जीवन की साधारण आवश्यकताएं भी पूर्ण नहीं हो पा रही हैं."

"रानी मित्त के सुत, मैं आप को वचन देता हूं कि जब तक कुलशेखर से आप का मुकुट व सिंहासन छीन कर आप को न दिला दूंगा, मैं सिंहलद्वीप की सीमा में पैर नहीं रखूंगा."

"ओह!" पहली बार वीर पांड्य के मन में जीवन के प्रति गहरी आस्था जगी.

तुरंत लंका को समाचार दौड़ाया गया. पराक्रमबाहु तो प्रसन्नता से पागल हो उठा. उस ने एक और सेनापति जगतविजय को भेज कर लंकापुर को कहलाया कि कुलशेखर जटावर्मन से मुकुट व सिंहासन प्राप्त किया जाए तथा तब तक वीर पांड्य को लंका भेज दिया जाए. वीर पांड्य के लिए राजसी वस्त्र, आभूषण, जड़ाऊ हार व अन्य बहुमूल्य 'भेंट' भी भेजी गई. वीर पांड्य गुप्त रूप से लंका पहुंच गया जहां उस का अभूतपूर्व स्वागत हुआ. पूरे सिंहलद्वीप में एक व्यक्ति ऐसा था जिसे उस के आने की विशेष प्रसन्नता न हुई, अपितु एक भयंकर आशंका उस के मन को संतप्त कर उठी. वह व्यक्ति था प्रधान अमात्य गट्टक.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूजामार्वती में लंकापुर व जगत-विजय अपने सैनिकों सहित जटावर्मन कुलशेखर व चोल सैनिकों की तीव्रता से प्रतीक्षा कर रहे थे. यह एक निर्णायक युद्ध था. जैसी आशा थी, वही परिणाम निकला. चोल सैनिकों का सहयोग प्राप्त होते हुए भी जटावर्मन कुलशेखर की भयंकर पराजय हुई. अन्याय के पैर ही कितने होते हैं? युद्ध में पराजित होने के साथ कुलशेखर को पांड्य, मुकुट, आभूषण, राजसी वस्त्र तथा छत्र से हाथ धो कर फिर एक बार जंगल की ओर भागना पड़ा.

विद्युत गति की भांति विजय का समाचार मदुरा में फैल गया. साथ ही वास्तविक उत्तराधिकारी वीर पांड्य के मदुरा के सिंहासन पर राज्यारोहण की बात सुन कर जन साधारण हर्ष विभोर हो उठा. बड़े आनंद व उत्साह से एक बार फिर पांड्य उत्तराधिकारी सिंहासनारूढ़ हुआ. पराक्रमबाहु का नाम घरघर में पूजा जाने लगा. उस के द्वारा भेजी गई राज्याभिषेक के अवसर की बहुमूल्य भेंट चर्चा का विषय बन गई.

किंतु चोलशासक, कुलशेखर की पराजय सरलतापूर्वक सहन नहीं कर सकता था. प्रश्न कुलशेखर से अधिक चोल गौरव व सम्मान का था. पांड्य शासकों को हमेशा बुरी तरह पराजित करने वाले सैनिक आज उन्हीं के हाथों हार गए. चोल शासक ने युद्ध से लौटे चोल सैनिकों को प्रताड़ित किया. उस का क्रोध सिंहली सेना व सेनापति पर अधिक था जिस ने भारत के एक क्षेत्र में हस्तक्षेप करने का दुःसाहस किया था. हस्तक्षेप भी चोल सैनिकों व उस के संरक्षित राजा के विरुद्ध? सिंहली सैनिक क्या भूल गए कि चोल सत्ता ने उन के देश को हजारों बार पददलित किया था? मित्त को जानबूझ कर पांड्य शासक से ब्याहने की बात उसे पहले ही सहन नहीं हुई थी.

पांड्य शासक वीर पांड्य को भुला कर सम्राट ने अपने नए सेनापति पल्लवरमार को बुला कर आदेश दिया, "सेनापति, हम चाहते हैं कि विदेशी तथा हमारे पुराने शत्रु सिंहली सत्ता को भारत में हस्तक्षेप करने का कोई उचित पुरस्कार हमारे हाथों से मिले. पांड्य शासक को तो हम भुनगा समझते हैं जिसे कभी भी मसल दिया जाएगा. तुम्हें तुरंत जा कर विजयोन्माद में मत्त सिंहली सेनापति लंकापुर की बंदी बनना है और उस की लाश को मदुरा के किले के बाहर, कीलों से गाड़ कर हाथपैर चौड़े कर, लटकाना है, जिस से भविष्य में कोई भी विदेशी शक्ति भारत में पैर रखने का साहस न कर सके. जाओ, हमारी आज्ञा का पालन करो."

पल्लवरमार ने वास्तव में आंधी की ही भांति अपने सैनिकों को ले जा कर अपने देश लौटने की प्रसन्नता में मग्न

बीसवीं शताब्दी में

जहां भारत में समाज का एक वर्ग जादूटोनों और झाड़फूंक जैसी मान्यताओं को समाप्त कर अपनी बेड़ियां काटने का प्रयास कर रहा है, वहां अफ्रीकी ओझा एसोसिएशन ने 28,000 डालर की लागत से एक विश्वविद्यालय की स्थापना करने का निर्णय किया है, जिस में पांच वर्षीय पाठ्यक्रम के अंतर्गत विद्यार्थियों को भूतप्रेत और रोगों के निवारण हेतु झाड़फूंक एवं जादूटोनों की शिक्षा दी जाएगी. परीक्षा में उत्तीर्ण होने पर छात्रों को लाइसेंसधारी ओझा के रूप में मान्यता प्राप्त होगी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिंहली सैनिकों को अचानक घेर लिया तथा सेनापति लंकापुर को मार कर चोल सम्राट की आज्ञा का अक्षरशः पालन किया.

राजा पराक्रमबाहु ने अचानक अपने सेनापति की अपमानपूर्ण मृत्यु का विवरण जब सुना तो चोल सैनिकों व चोल शक्ति को कूटनीतिक पराजय देने के लिए उस ने अत्यधिक भेंट भेज कर कुलशेखर को भी अब अपनी ओर मिला लिया. पर चोल शासक ने भी कच्ची गोलियां नहीं खेली थीं. उस ने तुरंत मदुरा की गद्दी पर वीर पांड्य के अधिकार का समर्थन कर कुलशेखर के विरुद्ध अभियान प्रारंभ कर दिया. नए शासक के लिए मदुरा का सिंहासन कंटकहीन हो गया जब कि बेचारे कुलशेखर को फिर एक बार जंगलों में मारामारा भागना पड़ा.

भारत से प्राण बचा कर भाग कर गए हुए सिंहली सैनिकों ने जब चोल अत्याचारों व अपनी दुर्दशा का वर्णन जनसाधारण को सुनाया तो पराक्रमबाहु हतप्रभ रह गया.

प्रधान अमात्य को केवल वर्तमान की पराजय का ही दुख नहीं था, उसे दुख था कि लंकापति की कूटनीति से प्राचीन शत्रु चोल शासकों सहित पांड्य शासक भी अब सिंहल शत्रु बन चुके थे. अपनी भविष्यवाणी की सत्यता को आंकने के लिए यद्यपि गुट्टन जीवित नहीं रहा पर उस का भय निर्मूल नहीं था.

पांड्य शासक मारवर्मन, सुंदर पांड्य तथा जटावर्मन सुंदर पांड्य के शासनकाल में लंका को पांड्य शक्ति के अधीन गुलाम बन कर रहना पड़ा. राजनीति के इन बदलते मूल्यों को देख कर महिषी मित्त सेनापति लंकापुर व कई अन्य सिंहली सैनिकों तथा राजा पराक्रम पांड्य की आत्माएं मदुरा के आसपास भटकती हमेशा चिंतनशील रहा करती थीं. क्या उन्होंने अपने प्राण व्यर्थ ही गवाएं? बदलते राजनीतिक मूल्यों के कारण क्या उन का आत्मोत्सर्ग व्यर्थ व महत्त्वहीन सिद्ध नहीं हो गया था?

सत्य है, राजनीति में शत्रुता व मित्रता स्थायी नहीं रहतीं. तभी तो पांड्य शासक कुलशेखर जटावर्मन को अपना शत्रु मनाने वाले चोल शासकों ने, उसी के पुत्र विक्रम पांड्य को वीर पांड्य के बाद, मदुरा के सिंहासन पर बैठा कर उसे अपना संरक्षण प्रदान किया. •

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बात ऐसे बनी

हमारे एक पड़ोसी अखबार पढ़ने के लिए रोजाना हमारे घर आया करते थे. कभीकभी वह हमारा अखबार अपने घर भी ले जाते, लेकिन लौटाने का नाम न लेते. पूछने पर 'माफ करना, भाई, बच्चों ने फाड़ डाला' कह कर टाल जाते.

एक दिन मेरे यहां कुछ दोस्तों का आना हुआ. मैं ने इन्हीं पड़ोसी महाशय के यहां से शरबत परोसने के लिए कांच के गिलास मंगवा लिए. काम हो जाने पर भी मैं ने उन्हें जानबूझ कर नहीं लौटाए. एक दिन पड़ोसी ने जब अपने गिलासों का जिक्र किया तो मैं ने तुरंत कह दिया, "माफ करना, भाई, बच्चों ने फोड़ डाले."

मेरे इस जवाब से वह स्वयं मेरा उद्देश्य समझ गए और फिर कभी अखबार मांगने नहीं आए.

—कमलाकर कुलकर्णी, चांदूर

✦

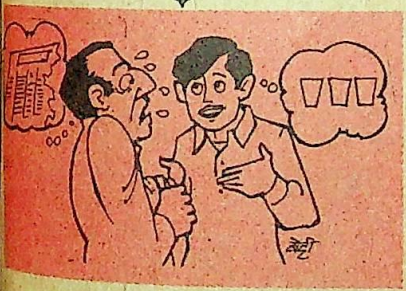

हमारे शहर में एक सुनार की दुकान है. उस का लड़का किसी दफ्तर में काम करता है. वह अपने साथियों से गहने बनवाने के लिए सोना व बनवाई के पैसे ले आता है, परंतु बहुत समय तक वापस नहीं करता. लोग चक्कर लगाते रहते हैं. आए दिन झगड़ा भी होता रहता है. किसी को गहने बना कर दिए भी तो मिलावट कर के. जो मिलता है लोग उसे ही अपना भाग्य समझ कर संतुष्ट हो जाते हैं.

कुछ समय पूर्व उस के दफ्तर में एक नए महाशय की नियुक्ति हुई. उन की बहन की शादी होने वाली थी. उन्होंने उसे अपना साथी समझते हुए छःसात तोला सोना व बनवाई के पैसे दे दिए. अब वह रोज गहनों के बारे में पूछताछ करते और वह लड़का रोज टाल देता. आखिर शादी के दिन नजदीक आ गए. एक दिन वह सुनार की दुकान पर पहुंचे तो उन्हें देखते ही लड़का हाथ जोड़ कर बोला, "बस, आप का हार मैं दोतीन दिन में ले आऊंगा. तैयार ही समझो."

वह बोले, "खैर, हार अभी तैयार नहीं हुआ तो अच्छा ही है. बात दरअसल यह है कि घर वाले सोच नहीं पाए हैं कि हार कैसा बनवाया जाए. सोचा, आप से ही सलाह ले लूं."

लड़का एक हार निकालता हुआ बोला, "क्यों नहीं. यह देखिए, यह सब से आधुनिक नमूना है."

उन महाशय ने हार ले कर जेब में रखा और बोले, "मैं अभी घर पर दिखा कर आता हूं."

काफी देर हो गई, वह महाशय नहीं लौटे. लड़का घबराया. दौड़ादौड़ा महाशय के घर पहुंचा और हार मांगने लगा. महाशय बोले, "आप का हार मेरे पास है. आप मेरा सोना व पैसा वापस कर दीजिए और हार ले जाइए."

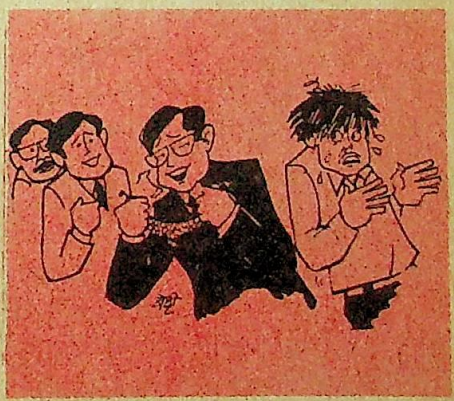

लड़का दौड़ादौड़ा दुकान पर पहुंचा, सोना व पैसे ला कर दिए. उन महाशय ने एकदो और साथियों के गहने भी दिलवाए. अंत में एक बढ़िया सी दावत ली, तब कहीं हार वापस किया.

—ईश्वर व्यास 'सुरपुर,' जयपुर ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

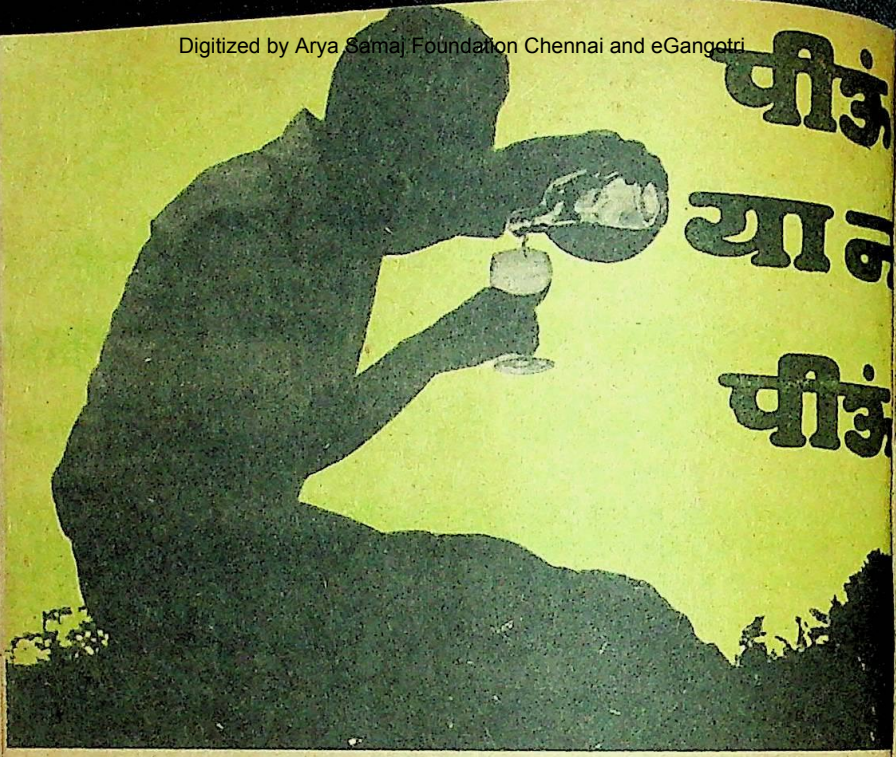

लेख • डा. कुलदीपसिंह ढींडसा, डा. रामसिंह

चाहे आप गम मिटाने के लि
पिएं या खुशी मनाने के लि
शराब के हर घूंट से आप
शरीर में जो रासायनक परि
वर्तन होते हैं, क्या आप उन
बच सकते हैं?

रामू एक के बाद दूसरा प्याला गले के नीचे उतारता एवं अपने इर्द-गिर्द बैठे साथियों को और पीने को उत्साहित करता, "खूब छक कर पी लो, चौधरी मंगरु. तुम भी कोई कसर न रखना, लल्लू भैया! बोतलों की आज कमी नहीं. बेटे की शादी रोजरोज थोड़े ही होती है."

आज वह अपने एकमात्र बेटे राजन के विवाह पर बेहद प्रसन्न था और लोगों के खाली प्याले में शराब की बोतल इस तरह उड़ेल रहा था जैसे किसी दानी के हाथ कुबेर की संपत्ति लग गई हो और वह जरूरतमंदों को उसे लुटा कर अपने जीवन को सार्थक बना रहा हो.

वह एकदम भूल चुका था कि शराब के लिए पैसों की व्यवस्था करने में उसे कितने लोगों की फटकारें सुननी पड़ी थीं, कितनों के सामने गिड़गिड़ाते हुए हाथों को पसारना पड़ा था और कितनी रातें भूखे ही सोना पड़ा था.

हम थोड़ी ही दूर आगे बढ़े थे कि सैकड़ों लोगों की भीड़ पर नजर पड़ी. भीड़ क्यों है? इस प्रश्न के समाधान हम भीड़ में घुस गए. देखा कि एक पचीसतीस वर्ष का छरहरा नवयुवक शायद अपने जीवन की अंतिम सांसें गिन रहा था. सिर के बाल बिखरे थे एवं मुंह से लार टपक रही थी.

पूछने पर पता लगा कि उक्त नवयुवक की पत्नी का कुछ महीने पूर्व बेहोशी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

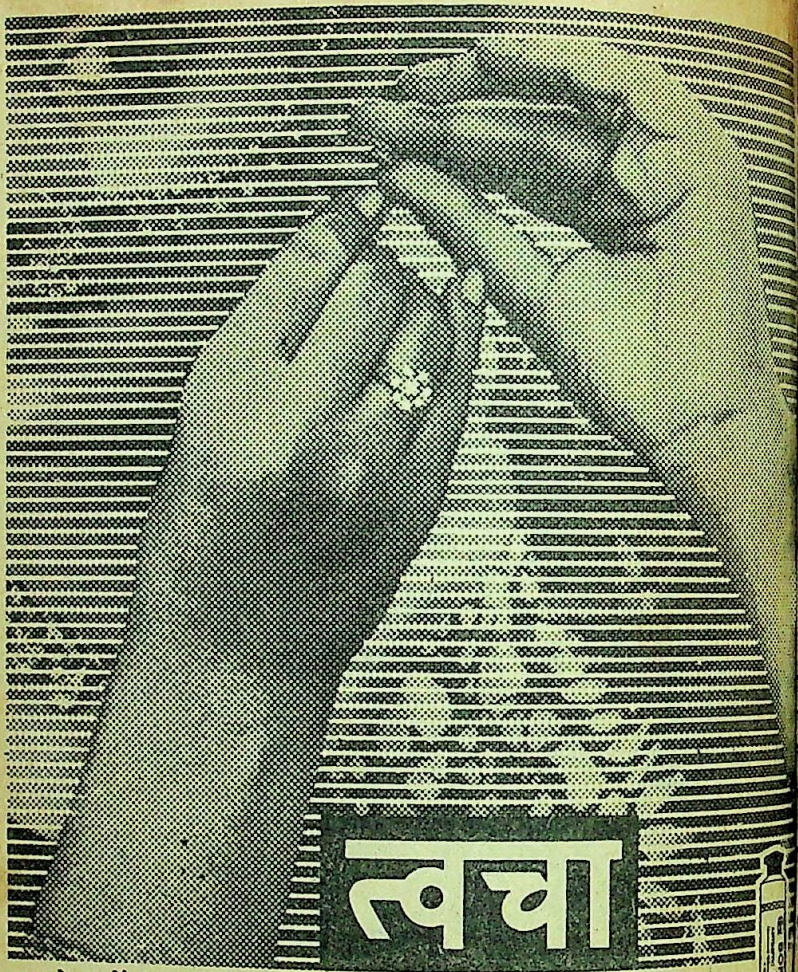

आपके हाथों की त्वचा हाथ-मुँह धोते समय, काम करते समय या खेलते समय निरन्तर रगड़ खाती रहती है। और इस लगातार घर्षण से त्वचा में यदि कोई विकार आ जाय, तो आश्चर्य की बात नहीं! बहुतों के हाथों की त्वचा खुरदरी, शुष्क और फटी-फटी हो जाती है।

बोरोलीन

एण्टीसेप्टिक सुगन्धित क्रीम

इसके सुखद व शान्तिप्रद उपादान आपके हाथों की उचित देखभाल करते हैं। त्वचा पर हल्की-सी मालिश से यह जीवाणुनाशक मृदु सुगन्धित क्रीम फौरन तरल रूप लेकर रोमकूपों में गहराई तक प्रवेश कर जाती है और त्वचा की शुष्कता एवं छोटे-मोटे सभी प्रकार के संक्रमण को रोकती है। बोरोलीन के रहते आप परेशान न होइये। आपके हाथों की त्वचा सम्बन्धी सारी परेशानियों को दूर करेगी—बोरोलीन।

जी डी फार्मास्यूटिकल्स प्रा लि बोरोलीन हाउस • कलकत्ता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बच्चों के मुख से

मेरा सात वर्षीय लड़का डाक्टर का खेल खेल रहा था. वह डाक्टर बना हुआ था, बाकी सब बच्चे मरीज. एक छोटी लड़की ने उस के पास आ कर कहा, "डाक्टर साहब, मुझे बुखार है."

उस ने हाथ देखते हुए कहा, "तुम्हें बहुत तेज बुखार है. तुम मर्दाने वार्ड में भरती हो जाओ."

लड़की ने पूछा, "मर्दाना क्या होता है?"

डाक्टर साहब ने रोब से कहा, "वहां पर मरीज मर जाते हैं."

—मोहनलाल गुप्ता, जयपुर

✦

एक बार हमारे घर में कुछ मेहमान आए हुए थे. मेरा चार वर्षीय बेटा वीनू आम खाने की जिद कर रहा था. मैं ने उसे मना करने के लिए कहा, "इन लोगों को जाने दो, फिर देंगे, नहीं तो ये भी मांगेंगे."

इतने में वह उठ कर अंदर गया व मम्मी से पूछने लगा, "यदि मैं आम खाऊं तो आप लोग मांगेंगे तो नहीं? मेरी मम्मी ने पूछा है."

वे लोग हंस कर कहने लगे, "नहीं."

पर मैं शर्म से कुछ न कह सकी.

—अनूप डोगर, सोलन

✦

मेरे चार वर्षीय भानजे के गाल में कभी समय गड्ढे पड़ जाते हैं. एक बार

मेरी बहन ने उस के हंसने पर कहा, "मीनू, जब तेरी बहू आएगी तो तेरी सास मर जाएगी."

उस ने छूटते ही उत्तर दिया, "मैं उस की सास को मार डालूंगा." उस के इस उत्तर पर सभी लोग हंस पड़े.

—छाया तिवारी, लखीमपुर

✦

मेरे भैया के एक दोस्त हैं. मैं एक बार उन के यहां गई तो भैया के दोस्त घर पर न थे. पूछने पर मालूम हुआ कि बेबी की अंगुली पर पट्टी कराने के लिए डाक्टर के पास गए हैं. जब वे दोनों लौट कर आए तो मैं ने बेबी से पूछा, "अंगुली कैसे काट ली?"

उस ने बड़े भोलेपन से कहा, "मम्मी-पापा हमेशा नाखून ब्लेड से काटते हैं. मैं भी काट रही थी. नाखून तो नहीं कटा, अंगुली काट ली."

दसबारह दिन बाद उस के मामाजी आए. उन्होंने नाखून काट कर ब्लेड खिड़की पर रख दिया. बेबी की नजर उस पर पड़ गई. उस ने भाभीजी को बुला कर कहा, "मम्मी, देखो, मामाजी ने ब्लेड यहां रख दिया है. मैं ब्लेड ले कर अंगुली काट लूंगी तो मुझे मत डांटना."

—वंदना व गीता वर्णवाल

✦

मैं अपनी ननद के घर उन के देवर की शादी पर गई थी. दुलहन आ चुकी थी और शादी की भीड़भाड़ धीरेधीरे समाप्त हो रही थी. आते समय एक महिला ने दो बच्चों को एक रुपए का नोट देते हुए कहा, "लो, बेटा, तुम दोनों भाई इसी में से ले लेना."

थोड़ी ही देर में दोनों भाई नोट का आधाआधा टुकड़ा लिए हुए आए. इस पर मैं ने पूछा, "अरे, इसे फाड़ क्यों डाला?"

बड़े भोलेपन से एक ने कहा, "दादी ने कहा था कि तुम दोनों भाई इसी में से ले लेना, इसलिए आधा मैं ने ले लिया और आधा उसे दे दिया." उपस्थित सभी लोगों की हंसी फूट पड़ी.

—सुशीला श्रीवास्तव, लखनऊ ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिंदिया

बिंदिया, अपनेआप में वैसे तो कुछ नहीं होती, परंतु किसी अंक के पीछे लग जाने पर गणित की दृष्टि से उस अंक की महत्ता बहुत अधिक बढ़ जाती है. इसी प्रकार कुछ शब्दों के अंत में बिंदी (फुल-स्टाप) लग जाने से वाक्य की परिणति हो जाती है.

शृंगार में बिंदी का महत्त्व प्राचीन काल से है. कवियों ने नारी के भाल पर अंकित बिंदी के आधार पर काव्य में सौंदर्य की अनेक कल्पनाएं की हैं. नारी के भाल पर लगी कलात्मक बिंदी संपूर्ण नारीत्व को प्रकट करने की क्षमता रखती है.

आधुनिक युग में शृंगारिक बिंदी के अनेक डिजाइन चल पड़े हैं. गंध, कुंकुम, प्लास्टिक, सितारे आदि की बिंदियों का उपयोग भी किया जाता है.

महिलाएं वस्त्रों के रंगों के अनुकूल बिंदी के रंग और डिजाइन का चुनाव करने में बड़ी रुचि लेती हैं. उन्हें नए प्रकार की बिंदियों के लिए बाजार अकसर जाना पड़ता है. सामान्यतः डिजाइन उपलब्ध नहीं हो पाते.

बिंदी की रचना में मुख्य बात गोलाई और सफाई. भाल पर बिंदी के बीच जितनी सफाई से अंकित जाएगी आप उतनी आकर्षक दिखाई दें

बिंदी किसी भी डिजाइन की न हो यदि वह आप के चेहरे के अनु है तो अवश्य सुशोभित होगी. विभिन्न डिजाइनों की बीस बिंदि प्रस्तुत हैं. बिंदियों के इन नवीन आका को आप ब्रश की सहायता से अपने भाल पर शोभित कर सकती हैं.

—हुकमचंद सोग

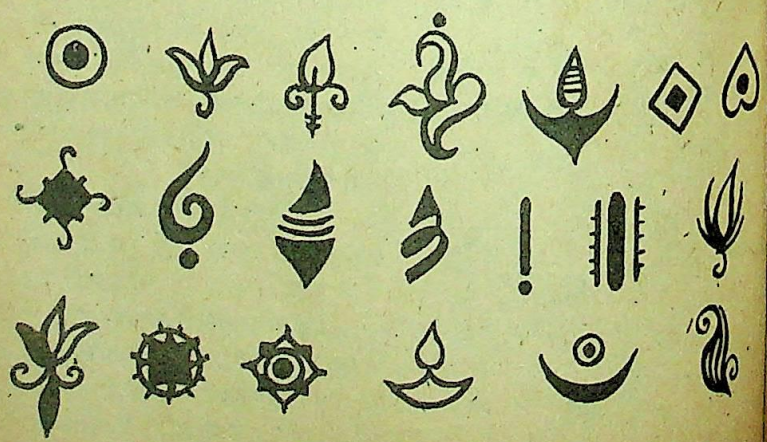

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधिकतर खिज़ाब फीके पड़ जाते हैं क्योंकि
वे बालों को ऊपर ही से रंगते हैं...

ट्रू-टोन

बालों में समा जाता है...
आपकी प्राकृतिक सुन्दरता को कायम रखता है.

खास फार्मूलेवाला ट्रू-टोन बालों के क्यूटिकल्स को खोलकर कॉर्टेक्स में पहुंचता है जहां यह खिज़ाब जल्दी सोख लिया जाता है... इससे आपके बालों की प्राकृतिक सुन्दरता कायम रहती है. ट्रू-टोन के निर्माता हैं हेलीन कर्टिस— जिन्हें बालों की कैमिस्ट्री में कमाल हासिल है.

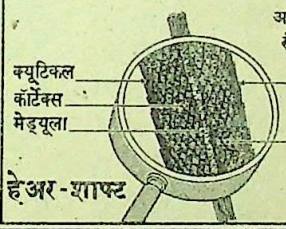

कोई भी पसंद कीजिए
ट्रू-टोन तरल खिज़ाब या
ट्रू-टोन जेल—
न टपकने वाला
गाढ़ा खिजाब.

तरल खिज़ाब दोनों में हेअर-कंडिशनर मिला है जो आपके बालों को मुलायम और चमकीला बनाता है. जेल खिज़ाब

पहली बार खिज़ाब लगानेवाले हमारी मुफ़्त पुस्तिका
'हेअर डाइंग एक्स्प्लेन्ड' मंगवायें :
जे. के. हेलीन कर्टिस लिमिटेड, जे. के. बिल्डिंग, बम्बई ४०० ०३८.

काले व ब्राउन रंगों में उपलब्ध. पुरुषों के लिए खास पॅक.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हम हिंदुस्तानियों में बहुत सी खूबियां हैं, लेकिन उन में जो सब से बड़ी खूबी है वह है, बेइंतहा बोलना, चाहे मौका हो या न हो. इसी लिए यहां के ऋषिमुनियों, संतमहात्माओं ने मौनव्रत पर अधिक जोर दिया है. यहां तक कि भगवान को पाने के लिए जो तपस्या बतलाई गई है उस में भी मौन को बहुत महत्त्व दिया गया है.

लेकिन इन सब की कौन सुनता है. कोई भी मसला पैदा हुआ नहीं कि बातें शुरू हो गईं. पहले आपस में हुईं, जब उस में मजा नहीं आया तो छोटीबड़ी मीटिंगें, कान्फ्रेंसें बुला डालीं और उन में बड़े पैमाने पर बातें हुईं और जब वे खत्म हुईं भी तो इस टिप्पणी के साथ कि समय की कमी की वजह से मीटिंग स्थगित होती है, विचारविमर्श फिर होगा. और जब तक कोई दूसरा मसला नहीं आता तब तक उसी पर बात करते रहेंगे, और हम लोग करें तो क्या करें.

हम लोगों में जो एक अजीब सी भावना भरी है कि जितने जोर से, जितनी देर तक जो बोल सके, उसी की ओर लोग ज्यादा मुखातिब होते हैं और वही लोगों के ध्यान का केंद्र बन जाता है, यह बात कुछ सही लगती भी है. पिपहरी बजाते रहो, कोई सुनता ही नहीं, लेकिन धूमधड़ाके के साथ भोंपू बजाओ तो सब तरफ उथलपुथल मच जाती है.

अब आप इसी शिक्षा के मसले को लीजिए और गिनना शुरू कीजिए कि कितनी कान्फ्रेंसें, मीटिंगें हुईं, कमीशन बैठे. लेकिन मसले की तह तक न तो पहुंचना था, न पहुंचे ही और अगर यही हाल रहा तो न ही पहुंचेंगे. उस की वजह और कुछ नहीं, बस बोलने और बातें करने का शौक है.

न मालूम कब से शिक्षा, बुनियादी शिक्षा, परीक्षाओं के रूप, विषयों के संगठन आदि मसलों पर चर्चा चली आ रही है लेकिन कोई फैसला ही नहीं हो पाया.

इस की वजह क्या है? इस को जानने के लिए अधिक दिमाग लगाने की जरूरत नहीं है. हम लोग बड़ेबड़े विद्वत्तापूर्ण लेख, पर्चे तो लिख कर पेश कर देते हैं, क्योंकि हम विद्वान हैं, प्रोफेसर हैं, वाइस चांसलर हैं, नेता हैं. अगर हमारे

लेख • शंकरप्रसाद श्रीवास्तव

शिक्षा

शिक्षा में सुधार के नाम पर सिर्फ शोर ही शोर मचाया जा रहा है; परिवर्तन तो नाम मात्र को हो रहे हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

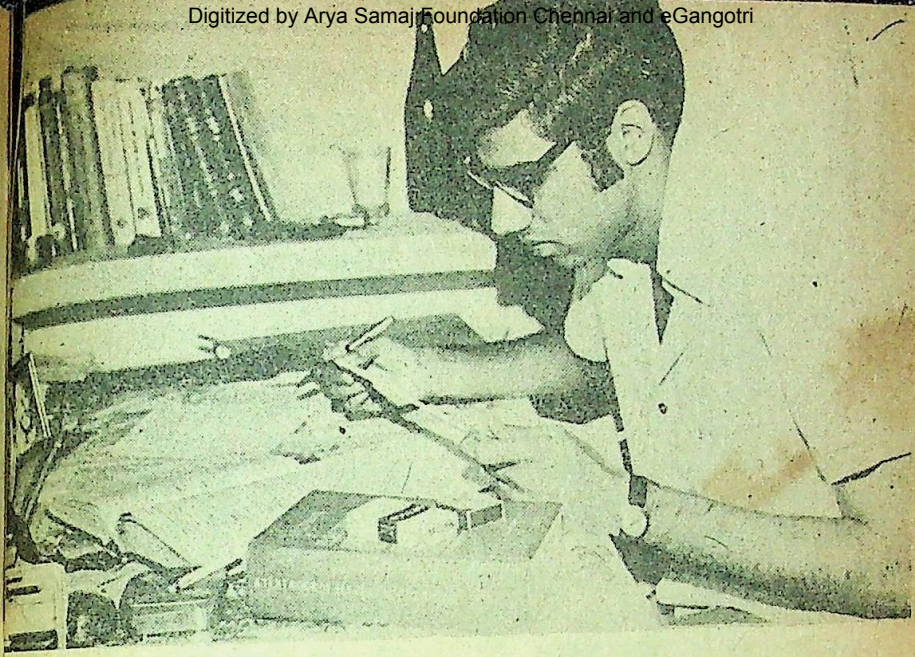

यह विद्यार्थी की रुचि पर निर्भर हो कि वह उच्च शिक्षा प्राप्त करे या व्यवसाय चुने.

लेख विद्वत्तापूर्ण हुए तो लोग कहेंगे, "वाह देखो तो प्रोफेसर क्या कहता है." लेकिन उन में किसी भी प्रकार के आंकड़ों का, हिंदुस्तानी मातापिताओं की, हिंदुस्तानी विद्यार्थियों की, जो शिक्षा पा रहे हैं, उन हिंदुस्तानी युवकों की जो कि शिक्षा खत्म करने वाले हैं, समस्याओं का कोई उल्लेख नहीं कि उन की अपनी आवश्यकताएं क्या हैं, वे क्या चाहते हैं.

लेकिन हम विद्वान लोग करें भी क्या? इन पर कोई अनुसंधान, कोई अन्वेषण तो हुआ ही नहीं. और जरूरत भी क्या है? जब बातें ही करनी हैं तो देर तक बातें करने के लिए तो कल्पना का ही सहारा चाहिए, आंकड़ों पर तो ज्यादा बातें हो ही नहीं सकतीं.

दो जिंदा मिसालें लीजिए. मेरे भतीजे ने, जो उन्नीस साल का है और एक इंजीनियरिंग कालिज का विद्यार्थी है, मुझे कुछ दिन पहले लिखा, "चाचाजी, आखिर यह पांच साल का इंजीनियरिंग कोर्स क्यों रखा गया कि पढ़तेपढ़ते आदमी बोर हो जाए. अपने बाप का तमाम रुपया भी खर्च करो और इस के बाद नौकरी ढूंढने के लिए गलीगली की खाक छानो." हमारे पास इस लड़के की बातों का क्या जवाब है?

दूसरा पहलू देखिए, दोतीन महीने पहले किसी एक प्रोग्राम में दिल्ली के टेली विजन केंद्र ने कुछ छात्रछात्राओं और उन के मातापिताओं (अलगअलग) के इंटरव्यू आजकल की शिक्षा के बारे में प्रसारित किए. मजे की बात कि उन में से

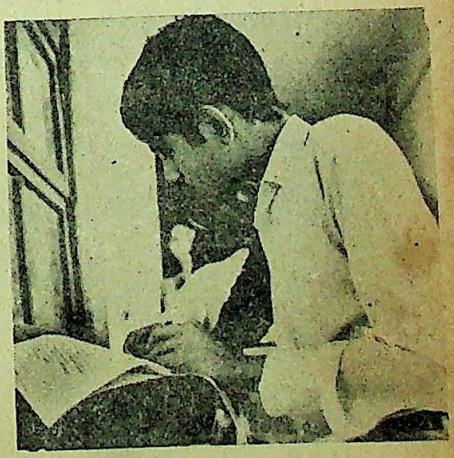

मात्र शिक्षित कहलाने के लिए डिग्री प्राप्त करने से क्या लाभ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करीब सभी विद्यार्थी (लड़के-लड़कियां) आगे पढ़ने के इच्छुक नहीं थे, बल्कि कुछ काम करने के इच्छुक थे. लेकिन पढ़ इस लिए रहे थे कि मजबूर थे. एक तो उन को कोई काम आता नहीं था, दूसरे, उन के मातापिता का विचार उन को आगे पढ़ाने का था, इसलिए नहीं कि वे विद्वान बनें, बल्कि इसलिए कि डिग्री का होना एक ऊंचे सामाजिक स्तर का चिह्न है.

अब बताइए, हमारे पास इन दो पीढ़ियों के बीच परस्पर विरोधी विचारों का क्या समाधान है? बड़ी अजीब सी बात है कि जो बुनियादी मसले पहले उठने चाहिए थे उन का कहीं नामो-निशान नहीं और माथापच्ची इस में हो रही है कि कितने सालों का इजाफा पढ़ाई में और किया जाए, मास्टर कैसे हों, अंगरेजी रखें कि नहीं, इम्तहान कैसे हों, नकल कैसे रोकी जाए, लड़के मास्टरों के बारे में निर्णय दें, आदिआदि.

हम सब हिंदुस्तानी जानते हैं कि आजकल की पढ़ाई क्या है, उस पढ़ाई की समाज में, आर्थिक पहलू से क्या कीमत है, हिंदुस्तान की मौजूदा हालत, उस की परिस्थितियों और मौजूदा शिक्षाप्रणाली के बीच कितनी बड़ी खाई है, लेकिन फिर भी हम आंखें मूंदे हुए हैं. मजा यह है कि प्रयोग के नाम पर हर दूसरेतीसरे साल जो पुरानी कड़ी में एक नई तरह की कड़ी जोड़ते चलते हैं. तो आप ही सोचिए कि उन लोगों की क्या हालत होगी जो पुरानी कड़ी में थे. उन का क्या होगा जो अभी भी नई कड़ी में हैं लेकिन चारछः साल बाद वह अगले नए के सामने पुराने हो जाएंगे. ऐसा प्रयोग किस काम का? खासकर हिंदुस्तान की मौजूदा परिस्थितियों में, जिस में पुरानी और नई कड़ी का कोई जोड़ ही न हो, पुराना फिर कहां जाएगा?

बुनियादी तालीम की कितनी चर्चा थी, कितने प्रयोग किए गए. लेकिन उसी तकली कातने, कागज की लुगदी बनाने, बढ़ईगीरी करने और किताबों की जिल्द बांधने से ज्यादा उस का कोई अर्थ ही हम नहीं लगा पाए. हम समझ ही नहीं पाए कि गांधीजी ने कब, किन परिस्थितियों और किस पृष्ठभूमि को ले कर यह कहा था और उस से वह क्या

तकली चलाना आदि बुनियादी तालीम : आधुनिकता की दृष्टि से हेय.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवन में कई खुशियों के पल होते हैं

सरदर्द को आपकी खुशियां बिगाड़ने न दीजिये

२ ऐस्प्रो लीजिये

माइक्रोफ़ाइन्ड ऐस्प्रो दर्द को जल्दी खींच निकालता है

A.G.66.HN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहनने, छूने और दिखने में—
हर पहलू से उत्कृष्ट सृजन।
अरविंद की देन।

अरविंद मिल्स

शानदार ७ मिलों में से एक

लालभाई ग्रुप के वस्त्र

Interpub/AM/28/75 Hin

दूरा दुकानें ● मोहन ब्रदर्स, क्लॉक टॉवर, ७५२, चांदनी चौक, दिल्ली-६ ● भँवरलाल मूथा
सन्स, एस.एम.एस. हाइवे, जयपुर ● बन्सल ब्रदर्स, जी. टी. रोड, नाकोदर चौक, जलंधर शहर
(पंजाब) ● चन्दूलाल दुर्गाप्रसाद, बाँकीपुर, पटना-४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

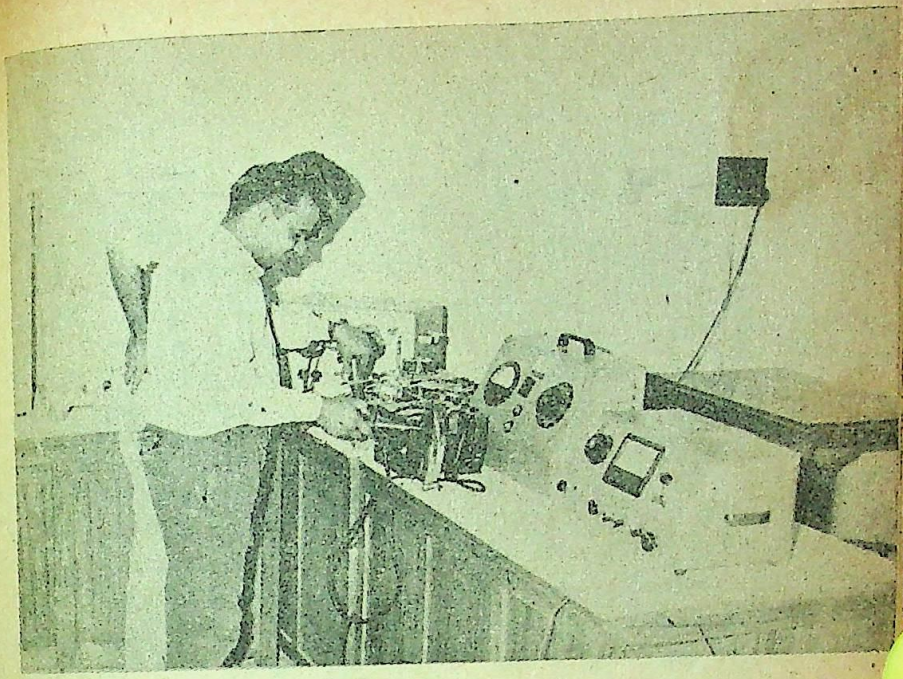

आज के युग की मांग : पढ़ाई के साथ आधुनिक मशीनों की जानकारी भी.

समझाना चाहते थे. अगर विस्तृत रूप से देखा जाए तो साफ जाहिर है कि तालीम के साथसाथ किसी वास्तविक ट्रेनिंग का होना लाजिमी है, जिस से कि हर हिंदुस्तानी किसी न किसी काम में लगा रहे और अपना और अपने परिवार का पेट पाल सके. तकली कातना, कागज बनाना, बढ़ईगीरी और जिल्दसाजी तो एक नमूने के तौर पर थी. शिल्पकला की मिसाल थीं, क्योंकि आज के तकनीकी युग में, जब कि इनसान चांद पर छलांग लगा रहा है, तकली चला कर, हाथ से कागज बना कर, बढ़ईगीरी कर के या जिल्दसाजी से पेट नहीं भर सकता.

फिर समाज के दृष्टिकोण को भी देखिए. ऐसे पेशों को समाज में किस दृष्टि से देखा जाता है? हिंदुस्तान में जिन पेशों को समाज द्वारा थोड़ी ऊंची दृष्टि से देखा जाता है उधर लोगों की दौड़ अधिक होती है. जिन पेशों की ओर समाज की दृष्टि कुछ हेयता लिए होती है उन पेशों को [illegible] के लिए जनता का वह वर्ग होता है जो कि शुरू से ही इस तरह के काम करता चला आ रहा है.

तो फिर क्या हम लोग अपने बच्चों के लिए कोई ऐसी शिक्षाप्रणाली नहीं अपना सकते जो कि सभी दृष्टिकोण (विद्यार्थी, मातापिता, देश की बुनियादी शिक्षा) का समन्वय कर सके? क्या यह आवश्यक है कि संसार के दूसरे देशों की जो प्रणालियां प्रचलित हैं उन्हीं की नकल या उन सब की मिली हुई खिचड़ी की नकल की जाए चाहे वह देश के लिए उचित हो या न हो?

जहां तक मैं समझता हूं, अगर कोशिश की जाए तो ऐसी प्रणाली विकसित की जा सकती है. जरा देखिए हमारा देश चाहता है कि शैक्षिक बेकारी न रहे. मातापिता चाहते हैं कि बच्चे शिक्षित कहलाएं, कम से कम एक डिग्री जरूर हो. विद्यार्थी, जो वास्तव में पढ़ना चाहते हैं, पढ़ें और जो व्यवसाय में जाना चाहते हैं उस में जाएं. बुनियादी शिक्षा यह चाहती है कि शिक्षा ऐसी हो जि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से हर आदमी अपना जीवनानिर्वाह कर सके. समाज (शिक्षित वर्गों के लिए खास कर) हर पेशे को अलग नजर से देखता है और अंत में आज का युग उच्च रूप से विकसित तकनीकी युग है. यही देश की मौजूदा परिस्थितियों का एक खाका है.

शिक्षा संस्थाएं दो प्रकार की

अब, ऊपरी बातों पर नजर रखते हुए सोचें. क्या यह संभव नहीं है कि देश में दो तरह की शिक्षा संस्थाएं बनाने की कोशिश की जाए? एक तो वे संस्थाएं जो केवल उच्च शिक्षा दे सकें, इन की संख्या देश में बहुत थोड़ी हो और इन में दाखिला मुश्किल हो. ये अनुसंधानों, अन्वेषणों के केंद्र हों. यह संस्थाएं तीन शाखाओं में बंट सकती हैं—एक शाखा केवल शास्त्र के लिए, दूसरी केवल प्राकृतिक विज्ञान और तीसरी तकनीकी शिक्षा के लिए.

दूसरे प्रकार की वे संस्थाएं हों जो बुनियादी शिक्षा के लिए हों. ये डिग्री स्तर की हों और इन में भी वर्तमान समय की तरह विभिन्न विषयों को पढ़ाया जाए, लेकिन पाठ्यक्रम थोड़ा भिन्न हो. परंतु इन संस्थाओं में, शिक्षा के साथ नकली और लुगदी के काम की जगह घड़ियों की मरम्मत, टेलीविजन, रेडियो, ट्रांजिस्टरों को बनाना और मरम्मत करना, स्कूटरों, कारों, बड़ी मोटरों के इंजन वगैरा की मरम्मत, सिलाई मशीन, औजारों और तमाम तरह की मशीनों की मरम्मत, प्लास्टिक के खिलौने वगैरा बनाने की विधि, सचिवालय संबंधी शिक्षा तथा बैंकिंग की शिक्षा दी जाए.

ये आज के युग के ऐसे व्यवसाय हैं जो आसानी से इंटर, बी. ए., हाई स्कूल की शिक्षा के साथ जोड़े जा सकते हैं. मैं इसलिए कह रहा हूं कि अगर इधरउधर सड़कों पर नजर दौड़ाएं और पता लगाएं कि जो लोग इन व्यवसायों में लगे हुए हैं उन में से कितने व्यक्ति उच्च शिक्षा प्राप्त हैं, तो पता चलेगा कि ऐसे लोगों की संख्या बहुत कम है. अब अशिक्षित लोग इन व्यवसायों को आसानी से सीख सकते हैं तो शिक्षित लोग तो और भी आसानी से सीख सकते हैं, चाहे वे कला के विद्यार्थी हों, चाहे वाणिज्य या विज्ञान के.

तो अगर इस तकनीकी युग की इन कलाओं को हाई स्कूल, इंटर और स्नातक कक्षाओं के साथ विषयों के रूप में रख दें तो हमारे उपर्युक्त सभी दृष्टिकोणों का समावेश हो जाएगा, क्योंकि मातापिता की इच्छानुसार बच्चा डिग्री वाला होगा, विद्यार्थी (यदि वह पढ़ाई का इच्छुक नहीं है) पढ़ाई के साथ इन व्यवसायों को सीख कर अपनी इच्छानुसार काम कर सकेगा, बुनियादी शिक्षा का सिद्धांत भी पूरा होगा. तब देश में शैक्षिक बेकारी इसलिए कम हो जाएगी कि छोटे पैमाने के उद्योगों के बीज इन व्यवसायों में निहित हैं और समाज द्वारा अनुकूल परिस्थितियां मिलने पर छोटे पैमाने के इन सभी उद्योगों को विकसित कर देश, जापान की तरह तरक्की कर सकता है.

पाठ्यक्रम में परिवर्तन

इस के लिए केवल पाठ्यक्रम में थोड़ा परिवर्तन करना पड़ेगा, सर्टिफिकेट और डिग्रियों में नहीं. इसी पाठ्यक्रम को संशोधित कर के डिग्री के स्तर तक ले जाया जा सकता है और विश्वविद्यालयों की शिक्षा का एक अंग बनाया जा सकता है. यह जरूरी है कि जो स्कूलकालिज, ग्रामीण वातावरण में स्थित हैं उन में कुछ ऐसे व्यवसाय जैसे कि घड़ी, ट्रांजिस्टर की मरम्मत, ट्रैक्टरों की मरम्मत, ट्यूबवेलों की मशीनों की मरम्मत, जल्दी और अधिक मात्रा में पैदावार देने वाले वर्णसंकर बीजों को पैदा करने का ढंग, उपलब्ध परिस्थिति और साधनों के अनुसार जोड़ा जा सकता है.

कुछ लोग कह सकते हैं कि आई. टी. आई. स्कूल, पोलीटेक्नीक स्कूल तो उपर्युक्त कोटि के विद्यार्थियों के लिए खोले ही गए हैं, जिस को सीखना हो वे वहां जाएं. लेकिन आई. टी. आई. की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

DC.G.19 HN (R)

कोलगेट डेन्टल क्रीम से सांस की दुर्गंध रोकिये... दंतक्षय का दिनभर प्रतिकार कीजिये!

वैज्ञानिक परीक्षणों से यह सिद्ध हो चुका है कि १० में से ७ लोगों के लिए कोलगेट सांस की दुर्गंध को तत्काल ख़त्म कर देता है और खाना खाने के तुरंत बाद कोलगेट विधि से दांत साफ़ करने पर अब पहले से अधिक लोगों का—अधिक दंतक्षय रुक जाता है। दंत-मंजन के सारे इतिहास की यह एक बेमिसाल घटना है। क्योंकि एक ही बार दांत साफ़ करने पर कोलगेट डेन्टल क्रीम मुंह में दुर्गंध और दंतक्षय पैदा करने वाले ८५ प्रतिशत तक रोगाणुओं को दूर कर देता है।

इसका पिपरमिंट जैसा स्वाद भी कितना अच्छा है—इसलिए बच्चे भी नियमित रूप से कोलगेट डेन्टल क्रीम से दांत साफ़ करना पसंद करते हैं।

ज़्यादा साफ़ व तरोताज़ा सांस और ज़्यादा सफ़ेद दांतों के लिए...

दुनिया में अधिक लोग दूसरे टूथपेस्टों के बजाय कोलगेट ही खरीदते हैं!

अधिक सफ़ेद दांतों,
अधिक स्वस्थ मसूढ़ों व
मुंह में अधिक ताज़गी के लिये
कोलगेट टूथ ब्रश इस्तेमाल कीजिये।
३६ विभिन्न किस्मों में—आपके परिवार में
हरेक के लिये अनुकूल!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिक्षा एक विशिष्ट शिक्षा के स्तर के बाद शुरू होती है. एक चीज के सीखने के लिए अधिक समय देना पड़ता है और साथ ही मातापिता की 'उच्च शिक्षा' की बात रह जाती है—तथा विद्यार्थियों की कालिज की जिंदगी बिताने की इच्छा रह जाती है. आई. टी. आई. आदि केवल व्यवसाय का सर्टिफिकेट डिप्लोमा देते हैं जब कि कालिजों में शिक्षा का सर्टिफिकेट या डिग्री तो होगी ही, साथ ही व्यवसाय का ज्ञान भी होगा.

इन व्यवसायों की शिक्षा में मेरा जोर जिस बात पर है, वह है केवल प्रैक्टिकल ट्रेनिंग. थ्योरी केवल मोटे रूप में आवश्यकतानुसार हो जिस से जो लोग आगे सीखना चाहें वे विशिष्ट प्रशिक्षण केंद्रों में जा सकें.

बहरहाल, औरों की तरह मेरी भी बातें हैं और खयाली पुलाव हैं. जैसे कि हमारे हिंदुस्तानी भाईबंद खयालों का इजहार करने में माहिर हैं, उसी तरह मैं भी हूं. भेड़चाल जो है. ●

मुझे शिकायत है

मुझे शिकायत है उन लोगों से, जो टेलीविजन पर फिल्म देखने आते हैं तथा बीचबीच में उठ कर बाहर जाते रहते हैं. फिर कुछ देर बाद ही वापस आ कर पूछते हैं कि क्या हुआ. इस तरह वे दूसरों का मजा किरकिरा कर देते हैं.

—कौशल्या, बंबई

✦

मुझे शिकायत है उन मेहमानों से, जो किसी के घर अपने बच्चों सहित जाते हैं और बच्चे मेजबान के घर पर हुड़दंग मचाते व तोड़फोड़ करते रहते हैं, फिर भी वे अपने बच्चों को डांटते नहीं हैं. बच्चों द्वारा तोड़फोड़ होते देख मेजबान मन ही मन कष्ट महसूस करता है और चाहता है कि ऐसे मेहमान न आएं तो अच्छा है.

—संतोषदेवी, लुधियाना

✦

मुझे शिकायत है उन अध्यापिकाओं से, जो स्कूल जाते समय अपने आसपड़ोस की छात्राओं पर काफी सामान लाद देतीं हैं व खुद खाली हाथ जाती हैं. छात्राएं बेचारी संकोच व दबाव के कारण कुछ कह भी नहीं पातीं.

—अर्चना तिवारी, दयालबाग

✦

मुझे शिकायत है उन लोगों से, जिन की लापरवाही से कांच का सामान सड़क पर टूट जाता है और वे कांच बीच रास्ते में ही छोड़ कर चले जाते हैं. भारी वाहनों से कांच छोटेछोटे टुकड़ों के रूप में पूरी सड़क पर फैल जाता है, जिस से पैदल चलने वालों व साइकिल वालों को शारीरिकआर्थिक हानि उठानी पड़ती है.

—ईश्वर व्यास 'सुरपुर,' जयपुर

✦

मुझे शिकायत है बस में यात्रा करने वाले उन यात्रियों से, जो जलती हुई सिगरेट खिड़की से बाहर फेंक देते हैं और यह भी ध्यान नहीं देते कि इस से किसी राहगीर के कपड़े भी जल सकते हैं या किसी को कोई अन्य क्षति पहुंच सकती है.

मुझे शिकायत है उन हलवाइयों से, जो बैठेबैठे नाक या कान में उंगली डालते रहते हैं और उन्हीं हाथों से मिठाई भी तौल देते हैं.—महेश चौधरी, पिछोर

✦

मुझे शिकायत है उन लोगों से, जो एक निर्धारित समय के बाद देर से पहुंचते हैं और फिर 'भारतीय समय' कह कर टाल देते हैं और भारत के नाम को कलंकित करते हैं.

—प्रवीन धमीजा, यमुनानगर

✦

मुझे शिकायत है उन सज्जनों से, जो घर के दरवाजों पर टंगे परदों से सब की आंख बचा कर अपने हाथ, मुंह व नाक पोंछ लेते हैं.

—गिरीश तिवारी, कानपुर ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

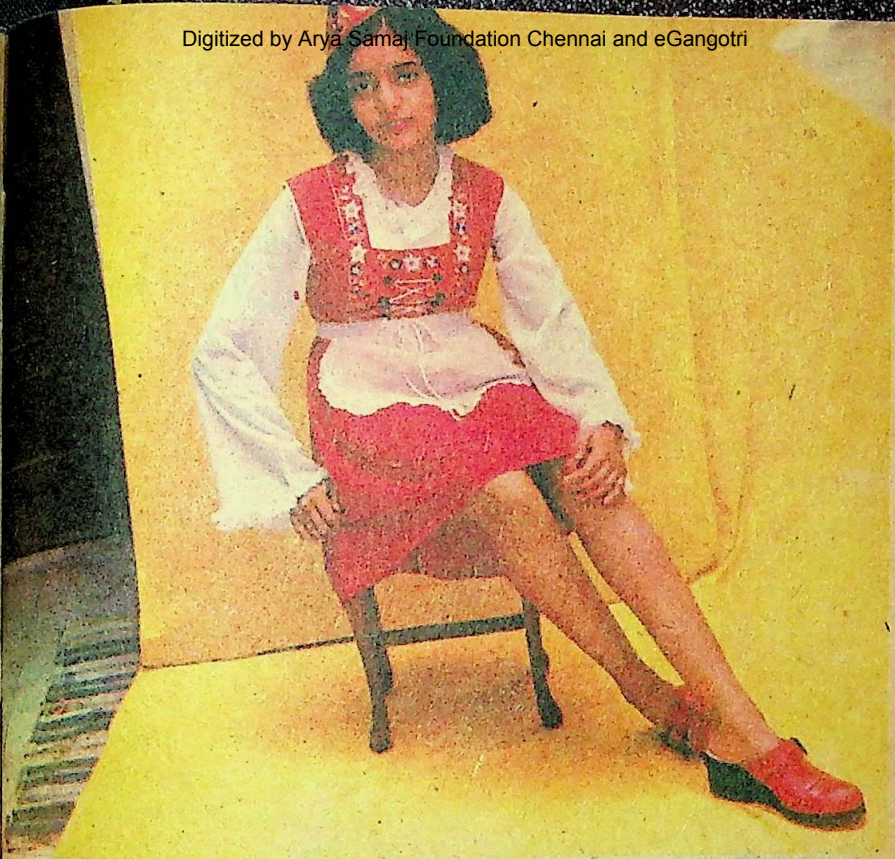

फैंसी ड्रेस

रंगों के मेल और शैली की कलात्मकता से ओतप्रोत.

विशेष अवसरों के लिए फैंसी ड्रेस में तरहतरह के आकर्षक नमूने बनाए जाते हैं--अनोखे और अनूठे. नमूना कोई भी हो, रंगों का मेल, शैली की कलात्मकता और संयोजन की सुसबूझ मिल कर ही ड्रेस को फैंसी रूप प्रदान करते हैं. कुछ इस तरह कि पहनने वाली सपनों की राजकुमारी या शहजादी सी लगे.

प्रस्तुत ड्रेस कव्वाली ड्रेस का एक आधुनिकीकरण कही जा सकती है. चटक लाल रंग की पापलीन की कुरती या वास्कट टाइप बाडी पर विभिन्न रंगों के रेशम से कढ़ाई, मध्य भाग में पिरोई क्रास डिजाइन में डोरी, लाल ही फ्राक का घेर और कुरती या बाडी के भीतर सफेद फुल वायल का ब्लाउज, जिस की पूरी ढीली बांहों के आगे और गले पर फ्रिल या झालर बनी है. फिर सज्जा के लिए कमर से नीचे, सामने मध्य भाग में एक सफेद गोल टुकड़ा (चित्र देखिए) टुकड़े का एक सीधा भाग कमर के जोड़ में टांक कर शेष तीनों ओर की गोलाई में छोटी लैस लगा दी गई है. चाहें तो गले, बांहों जैसी झालर भी लगा सकती हैं.

लाल रंग के बचे छोटे टुकड़े में से बनाई गई यह छोटी सी तिरछी नवाबी टोपी भी तो देखिए, जिस के बिना यह ड्रेस कव्वाली ड्रेस नहीं कहला सकती. पूरी टोपी पर उन्हीं रंगों के रेशम से कढ़ाई भर कर बनाई गई है जिन रंगों से बाडी के चौकोर गले की भरवां बेल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जारज संतान

महाभारत में एक कथा है, अविवाहित कुंती द्वारा कर्ण को जन्म देने के बाद उसे नदी में प्रवाहित कर देने की. यह कथा अज्ञात पिता की संतान और ऐसी संतान की माता के प्रति तत्कालीन समाज के कड़े तिरस्कार का आभास देती है.

महाभारत में महान सेनापति, योद्धा और दानवीर के रूप में कर्ण का चरित्र उभर कर सामने आता है, लेकिन कर्ण पर 'जारज पुत्र' होने का लांछन भी मृत्युपर्यंत बना रहता है. कर्ण के मरने के बाद ही कुंती युधिष्ठिर से कर्ण का श्राद्ध करने को कहती है, तब कहीं यह रहस्य उजागर होता है कि कर्ण कुंती का पुत्र है.

जारज संतान और उस की माता के प्रति समाज की बेदर्द मान्यता उस समाज में भी जारी थी, जब कि द्रौपदी को पांच पतियों की पत्नी बनने की छूट थी.

वस्तुतः जारज संतान और उस की माता के प्रति समाज का यह रुख समाज में पुरुष के वर्चस्व के कारण ही था. लेकिन प्राचीन समाज में इस मान्यता को तोड़ने के लिए कुछ संघर्ष भी हुए हैं. ऋषि जाबाल की कथा इस संघर्ष का उदाहरण है. ऋषि अपनी माता की जारज संतान थे. जब उन्होंने माता से अपने पिता का नाम और वंश जानना चाहा, तो मां ने साफ कह दिया कि वह इस बारे में कुछ भी निश्चित नहीं कह सकती. जाबाल ने पिता का नाम तथा वंश पूछने वालों को माता द्वारा दिया उत्तर ही सुनाया.

ज्ञान और तपस्या के क्षेत्र में महान जाबाल ऋषि की महानता का एक प्रमुख कारण यह भी था कि उन्होंने निडरता-पूर्वक समाज की तत्कालीन मान्यता से विरोध करते हुए स्वयं को साफ तौर पर अज्ञात पिता की संतान बताया था.

लेख • विनय दीक्षित

लेकिन आज ऐसा नहीं है.

आए दिन नवजात शिशुओं की जन्मते ही हत्या कर देने या उन्हें असुरक्षित फेंक देने या अविवाहित गर्भवती द्वारा स्वयं की जीवनलीला समाप्त कर लेने की घटनाएं पढ़नेसुनने को मिलती हैं, क्योंकि समाज ने जो रुख अपनाया है, वह अज्ञात पिता के पुत्र और उस की माता को जीवन भर सुख चैन से रहने नहीं देता.

अज्ञात पिता की संतान को समाज कलंक के रूप में ही मानता है, लेकिन जिस ने अभी धरती पर आंख भी नही खोली, वह 'कलंक' कैसे हो गया? क्या घोर प्रतिक्रियावादी मान्यता वाले इस समाज के पास इस का कोई उत्तर है?

वस्तुतः जारज संतान की समस्या इस पुरुष प्रधान समाज में नारी को गुलामी की जंजीर में जकड़ने वाली यौन मान्यताएं ही हैं. महिला को प्यारमुहब्बत में धोखा देना, उसे बलात्कार का शिकार बना कर अपने हाल पर छोड़ देना पुरुषों के लिए आम बात है. बदनामी से पुरुष तो बच जाता है और यौन संबंधों का सारा दोष महिला पर ही मढ़ा जाता है.

ऐसी स्थिति में जारज संतान के लिए भी पूरा दोष महिला को ही दिया जाता है. उसे समाज से उपेक्षा, घृणा और तिरस्कार ही मिलता है. और नवजात शिशु को जन्मते ही या तो मां की गोद से हटा कर मृत्यु की गोद में सुला दिया जाता है, या फिर जिंदगी भर समाज में अपमान व तिरस्कार सहने के लिए बेसहारा छोड़ दिया जाता है.

समाज उस कामी पुरुष के प्रति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुरुष प्रधान व्यवस्था की खामियों को दूर कर के बच्चों के साथ माता का नाम क्यों न जोड़ा जाए?

तौर से उदासीन ही रहता है, जो बच्चे को जन्म तो देता है पर अपना नाम' नहीं दे सकता. ऐसी स्थिति में सारी माताओं और बच्चों के हित में हित यही होगा कि समाज के इस प्रतिक्रियावादी दृष्टिकोण में परिवर्तन किया जाए.

वर्तमान कानूनी, धार्मिक और सामाजिक व्यवस्था में पिता के नाम का बड़ा महत्व है, लेकिन यह नाम जरूरी नहीं है. अगर व्यक्ति स्वयं अपने नाम से पहचाना जाए तो ज्यादा उचित है. किसी के नाम के सहारे की जरूरत कमजोरों को हुआ करती है.

यदि पिता के नाम का उल्लेख करने की प्रवृति समाप्त हो जाए तो काफी अच्छा है, बल्कि 'पिता' के नाम के स्थान पर 'माता' का नाम लिखा जाना चाहिए, क्योंकि जन्म देने वाली माता का नाम उस की संतान के नाम के साथ जोड़ने से उस का सम्मान बढ़ेगा और इस से पुरुष प्रधान समाज की जड़ता दूर होगी. यह कोई नया विचार नहीं है.

हमारे देश में 'माता' के नाम को संतान के नाम से जोड़ा जाता रहा है, तभी तो अंजनीपुत्र (हनुमान), यशोदानंदन (श्रीकृष्ण), पार्वतीसुत (गणेश) जैसे नाम बड़े विख्यात हैं.

पुरुष प्रधान समाज की 'जारज' संतान संबंधी मान्यता एकाधिकार और संपत्ति के सवाल से भी जुड़ी है. जारज संतान का पिता या माता की संपत्ति में कोई अधिकार नहीं माना गया है. यह अधिकार संपत्ति बचाने के लिए छीना गया है.

हमारे देश में 1956 में हिंदू उत्तराधिकार विधेयक पर बहस के समय अवैध (जारज) संतान का संपत्ति में हक संबंधी मामला भी उठा. लंबी बहस के बाद यह तय हुआ कि 'जारज' संतान को यदि उस का पिता स्वीकार कर ले तो उसे भी पिता की संपत्ति में अन्य संतानों के समान अधिकार होगा, लेकिन यह स्थिति शायद ही कभी आती हो. इसलिए जरूरी है कि इस कानून में भी परिवर्तन हो और जारज संतान की माता को संतान के पिता की संपत्ति में हिस्सा दिलाने की व्यवस्था हो. हिंदू समाज के अतिरिक्त कुछ समाज इस विषय में ज्यादा उदार हैं.

अवैध होने का कलंक

गत वर्ष संसद में एक अशासकीय विधेयक पेश कर इस संबंध में कानूनी सुधार करने का प्रयास किया भी गया था. विधेयक रखने वाले सदस्य ने विचार व्यक्त किया कि 'आज हमारे समाज में पनपने वाले जर्जर दृष्टिकोण' के कारण हजारों व्यक्तियों और उन की माताओं का जीवन कष्टमय हो रहा है. इस विधेयक द्वारा उन व्यक्तियों, अपनी माता के जारज बेटेबेटियों पर से अवैध होने का कलंक हटाना है, जिन को समाज बिना किसी गलती के सजा देता है.'

विधेयक में माता की ओर से वंश स्वीकार करने को कानूनी मान्यता देने पर जोर दिया गया था और 'जारज' शब्द को समाप्त करने का एक नया और सही रास्ता बताया गया था.

विधेयक में कहा गया था कि किसी कानूनी या प्रशासनिक कार्य में व्यक्ति अपनी माता का नाम लिख सकता है और यही कानूनी होना चाहिए. पिता का नाम लिखने और बताने के लिए किसी को बाध्य नहीं किया जाना चाहिए. उन्होंने यह भी सुझाव दिया था कि किसी व्यक्ति को अवैध या जारज संतान कहना दंडनीय अपराध घोषित होना चाहिए.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी • राधिकाप्रसाद गौतम

प्रतिज्ञा

धन और मोहनभोग के लोलुप साधुओं की भूखहड़ताल ने नगर में उत्तेजना फैला दी... लेकिन वाराह देवता की मूर्ति स्थापना के प्रस्ताव ने पाखंडियों के पांव उखाड़ दिए...

सभा से निवृत्त हो कर शर्माजी घर पहुंचे तो दरवाजे पर ताला लटकता हुआ दिखाई पड़ा. शर्माजी का माथा ठनका. मगर क्या करते. उन्हें से दूसरी चाबी जो हमेशा अपने पास रखते थे---निकाली और ताला खोल कर अंदर गए. कपड़े उतार कर वह सीधे रसोई घर पहुंचे लेकिन वहां की हालत देख कर उन का गुस्सा सातवें आसमान

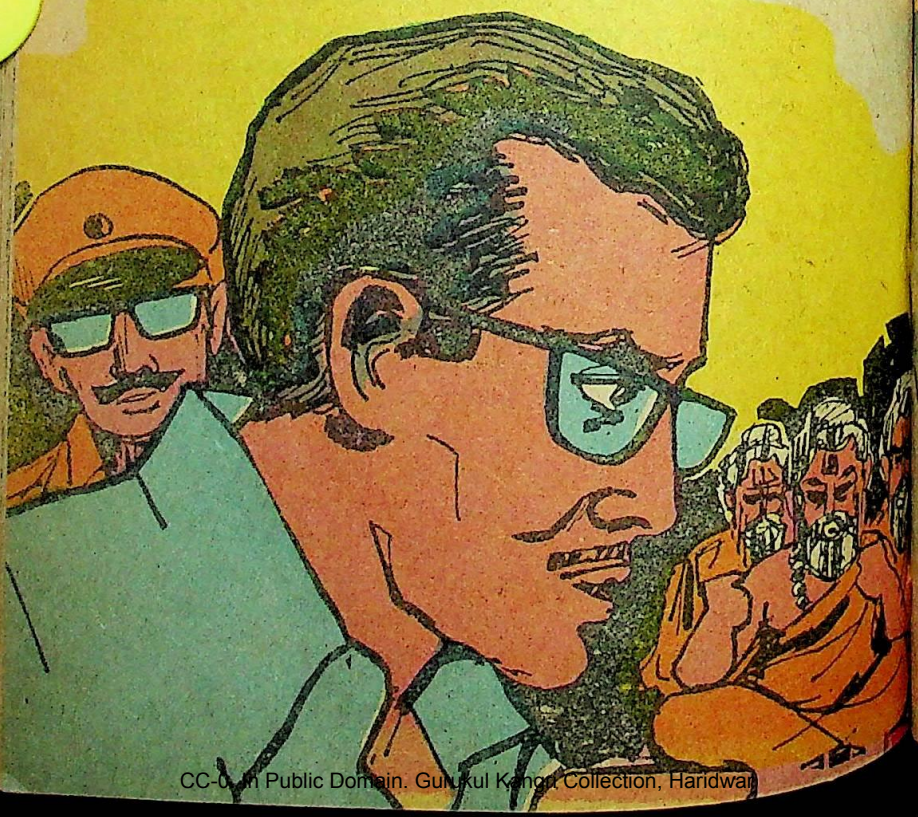

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

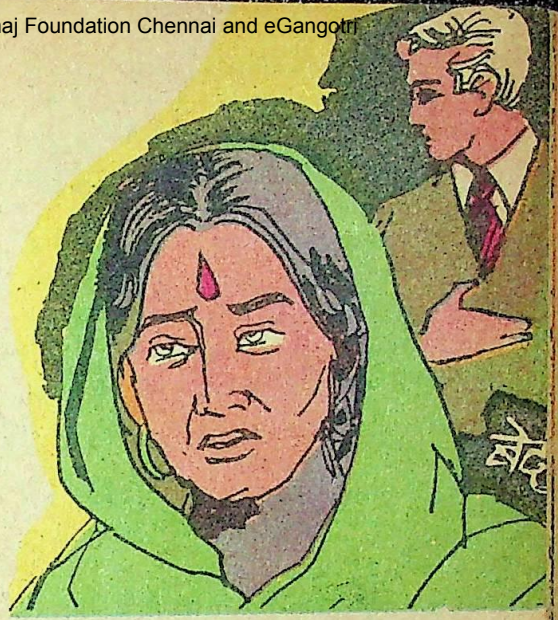

पड़ गया. बरतनों की हालत देख उन्हें यह समझते देर न लगी कि शर्माजी ने केवल अपने लिए ही खाना बनाया और डकार कर कहीं चली गई हैं. क्षण भर के लिए तो वह इतने खिन्न हो गए कि बीवी का गला घोंट दें लेकिन थोड़ी देर में संयत हो कर बाथरूम में और हाथमुंह धो कर अपनी कुर्सी पर बैठ गए. वैसे तो उन का आपस में झगड़ा अकसर ही होता रहता था लेकिन यह मौका पहली बार आया था. इसी वक्त उन की धर्मपत्नी सामने पड़ जातीं तो गला भले न घोंटते लेकिन हाथापाई जरूर कर बैठते. कुर्सी पर टिकेटिके वह विचारमग्न हो गए.

चप्पलों की चरमराहट से शर्माजी

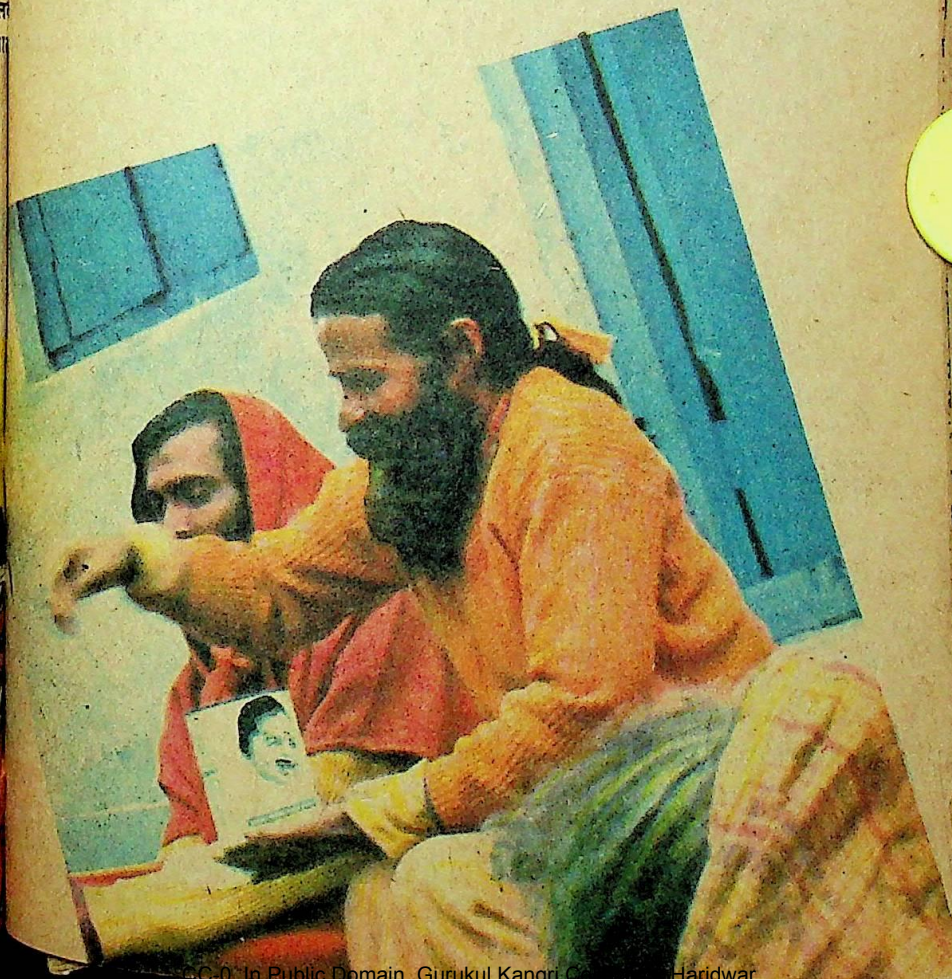

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की विचार शृंखला टूटी. उन्होंने घूम कर देखा, मिसेज शर्मा मुसकराती हुई अंदर आ रही थीं. शर्माजी उठ कर खड़े हो गए और चिल्लाते हुए बोले, "सचसच बताओ, कहां गई थीं तुम?"

शर्माजी की आवाज से पहले तो वह डर गईं, लेकिन साहस कर के बोलीं, "मोती पार्क में साप्ताहिक भागवत का पाठ चल रहा है. वहीं चली गई थी." मिसेज शर्मा की आवाज काफी धीमी थी.

"तो क्या पति को भूखा रख कर ही भागवत सुनी जाती है?"

"क्या अभी आप ने खाना नहीं खाया?" मिसेज शर्मा ने आश्चर्य प्रकट करते हुए पूछा.

"मैं क्या कहीं निमंत्रण में गया था जो खाना खा कर आता." शर्माजी गुस्से में बोले जा रहे थे. "कालिज के चंदे के संबंध में मीटिंग में गया था, किसी पार्टी में तो गया नहीं था कि वहां खाना भी मिल जाता."

मिसेज शर्मा काफी घबरा गईं. उन्होंने अत्यंत नम्र स्वर में कहा, "माफ कीजिए, मुझ से बहुत बड़ी गलती हो गई. आप पांच मिनट आराम करें मैं बहुत जल्दी खाना तैयार कर देती हूं. यह कहते हुए वह सीधे रसोई घर में घुस गईं. शर्माजी भूख से व्याकुल थे इसलिए इस के अलावा और कोई रास्ता ही नहीं था कि बैठ कर भोजन का इंतजार करें.

सचमुच शर्माजी को थोड़ा ही इंतजार करना पड़ा. उन की मेज पर खाना आ गया. मिसेज शर्मा एक कुशल गृहिणी के पूरे गुण रखती हैं लेकिन शर्माजी से झगड़ा उन के अलगअलग विचारों के कारण ही होता रहता है. मिसेज शर्मा काफी धार्मिक प्रवृत्ति की महिला हैं तो शर्माजी इस धार्मिक प्रवृत्ति को अंधविश्वास की संज्ञा देते हैं. और इसी बात पर एकदूसरे में ठन जाती है. मगर इस में किसी एक का दोष भी तो नहीं है. दोनों की शिक्षाएं ही इस प्रकार की हैं.

सुबह शर्माजी बैठ अखबार पढ़ रहे थे. बाहर दरवाजे पर हलकी सी [illegible] सुनाई पड़ी. शर्माजी ने जा कर दरवाजा खोला और जो दृश्य देखा उस से उन का मूड एकदम बिगड़ गया. बाहर [illegible] घासीराम दो साधुओं के साथ खड़े [illegible] मुसकरा रहे थे. सेठजी ने शर्माजी [illegible] अभिवादन किया. औपचारिकता के [illegible] शर्माजी ने भी अभिवादन कर दिया.

उन की दृष्टि दोनों तोंदवाले साधुओं पर ही टिकी थी. पहलवान जैसा उन का शरीर खाखा कर तोंद [illegible] रूप में बाहर लटक रहा था. दाढ़ी [illegible] बाल बड़ेबड़े लटक रहे थे. कोई भी [illegible] ऐसा नहीं दिखाई पड़ रहा था जहां [illegible] न पुता हुआ हो. गले में बड़ेबड़े रुद्राक्ष की माला और हाथ में त्रिशूल उन [illegible] भयंकरता में चार चांद लगा रहे थे.

शर्माजी का मन घृणा से ओत प्रोत हो चला था. शर्माजी को साधुओं की तरफ बड़े ध्यान से देख कर [illegible] घासीराम ने अपना मुंह कैंची [illegible] चलाना शुरू किया, "ये महात्माजी हरिद्वार से आए हैं. वह जो मोती पार्क में साप्ताहिक भागवत का पाठ हो रहा है, उ[illegible] में पधारे हैं."

"ये महात्माजी कहीं से भी पधारे [illegible] इस से मुझे कोई मतलब नहीं. [illegible] यह बताइए कि किस लिए आप मेरे [illegible] आए हैं." शर्माजी ने बड़े उपेक्षित [illegible] से ये शब्द कहे. शर्माजी के शब्द साधुओं को तीर जैसे लगे. वे दोनों एकदूसरे [illegible] ओर देख कर रह गए.

"शर्माजी, जरा बैठ जाइए. क्योंकि हम लोग आप से बहुत जरूरी बातें करने आए हैं." घासीराम ने अंदर चलने का इशारा करते हुए कहा. सब लोग अंदर जा कर बैठ गए. साधुओं के बैठते [illegible] सोफा चरमरा गया, मानो वह वजन [illegible] कराह उठा हो.

"हां तो, शर्माजी, पहले इन साधुओं का परिचय करा दूं." सेठ घासीराम [illegible] हंसते हुए बोलना आरंभ किया, "[illegible] लंबी दाढ़ी वाले महात्मा [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

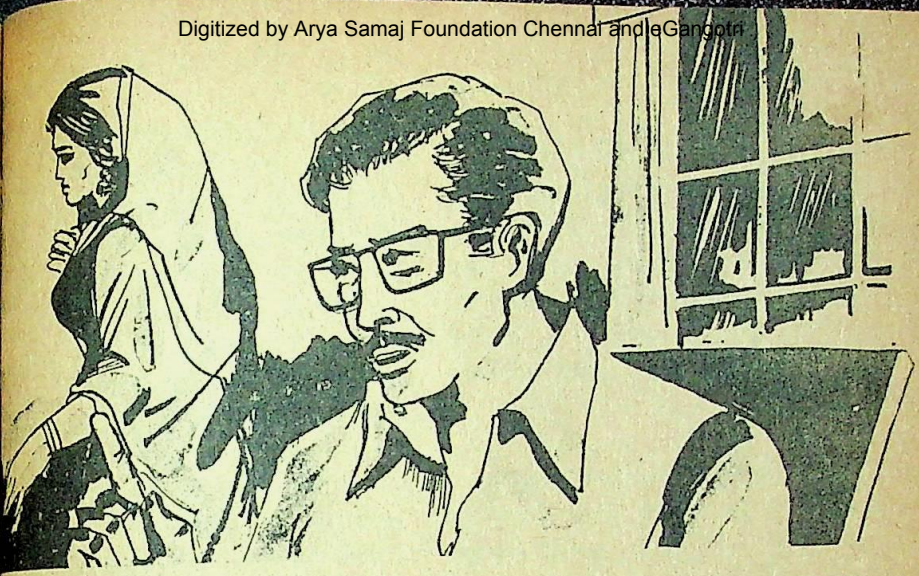

"यह सब तुम्हारी ही करतूत है, उस दिन न तुम भागवत सुनने जाती और न ये लोग इधर आते..." शर्माजी फट पड़े.

नाम श्रद्धानंद है. यह रामायण के बहुत बड़े विद्वान हैं और यह दूसरे छोटी दाढ़ी वाले महात्मा का नाम स्वामी सच्चिदानंद है. यह गीता की गहरी जानकारी रखते हैं."

शर्माजी ने हंसते हुए कहा, "आनंद शब्द तो दयानंद संप्रदाय वालों में जोड़ा जाता है लेकिन दयानंद संप्रदाय वाले न तो बड़ेबड़े बाल ही रखते हैं और न दाढ़ी ही." शर्माजी की बात सुन कर पहले तो महात्मा लोग कुछ घबराए फिर श्रद्धानंद बोले, "वास्तव में हम लोग किसी संप्रदाय के नहीं हैं. हम लोगों का नाम ही ऐसा रखा गया है."

"तो कहिए, मैं आप लोगों की क्या सेवा कर सकता हूं?" शर्माजी ने बात का रुख मोड़ते हुए कहा.

अब की स्वामी सच्चिदानंद बोले, "आप के नगर में हम लोग एक रामचरित मानस मंदिर का निर्माण कराना चाहते हैं. इसलिए आप से कुछ मदद चाहते हैं."

शर्माजी को ऐसे शब्दों की जरा भी उम्मीद नहीं थी. वह जरा तेज आवाज में बोले, "देखिए, महात्माजी, हमारे नगर में किस चीज की ज्यादा जरूरत है, यह हम लोग अच्छी तरह जानते हैं. आप को इस के लिए परेशान होने की कोई जरूरत नहीं है. नगर में दोचार मंदिर वैसे ही बेकार पड़े हैं. उन का कोई उपयोग नहीं है."

महात्माजी को भी ऐसे शब्दों की उम्मीद नहीं थी, इसलिए वह भी जरा तेज आवाज में बोले, "देखिए, मास्टरजी, धर्म का प्रचार करना हम लोगों का काम है. इसी काम के लिए हम लोग यहां भेजे गए हैं. इस में हमारी भी भलाई है और आप लोगों की भी भलाई है."

"इस में हम लोगों की भलाई तो कहीं नजर नहीं आती. हां, आप लोगों की भलाई जरूर है. जो भी रुपया इकट्ठा होगा. ले कर चलते बनोगे." शर्माजी की बात सुन कर बाबा सोफे पर पैर रख कर उकड़ू बैठ गया और त्रिशूल टेक कर बोला, "इस का मतलब है हम चोर हैं?"

शर्माजी ने भी बिना भलाबुरा सोचे जवाब दिया, "चोर तो आप लोगों से अच्छे हैं. वे तो छिप कर चोरी करते हैं. लेकिन आप लोग दिन दहाड़े जनता को उलटासीधा समझा कर अच्छाअच्छा खाते हो और ढर सारे रुपए और सामान हड़प

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ले जाते हो." इस से पहले कि स्वामी सच्चिदानंद और कुछ बोलें, सेठ घासीराम बीच में ही बोल पड़े. वह वास्तव में घबरा गए थे. सोच रहे थे कि यदि इसी तरह बातों में गरमी बढ़ती रही तो कहीं ऐसा न हो जाए कि आए थे हरि भजन को ओटन लगे कपास. उन्होंने कहा, "शर्माजी, आप तो पढ़ेलिखे आदमी हैं. आप को कुछ नहीं देना है तो वैसे ही कह दीजिए, भलाबुरा कहने की क्या जरूरत है."

सेठ की बातों से शर्माजी को और गुस्सा आ गया. उन्होंने कहा, "इस का मतलब है एक पढ़ालिखा आदमी जो कुछ कहे वह गलत है और ये मूर्ख जटा-जूटधारी जो कुछ कहें सही है?"

"क्या कहा? हमें मूर्ख कहता है?" लंबी दाढ़ी वाला बाबा बोला.

"तुम लोग मूर्ख हो. बताओ कौन से कालिज से डिग्री ली है?"

"हम डिग्रीफिग्री कुछ नहीं जानते. हम ने सात साल तक हरिद्वार में कठिन तपस्या की है और चार साल तक कई साधु महात्माओं का सत्संग कर के रामायण और गीता के गूढ़ रहस्यों को जाना है."

"अपनी विद्वता अपने पास रखो. मुझे इस से कोई मतलब नहीं है. आप लोग जा सकते हैं. मेरे पास व्यर्थ की बकवास के लिए समय नहीं है." शर्माजी ने पिंड छुड़ाने के लिहाज से ऐसा कहना उचित समझा.

बाबा तुनक कर बोला, "अब जवाब देते नहीं बनता तो घर से भगाते हो?" आवाज में काफी तेजी थी.

"हां, हां, आप लोग चले जाइए." शर्माजी ने फिर बाहर की ओर इशारा करते हुए कहा.

"तुम समझते हो कि हम बिना रुपया लिए हुए चले जाएंगे, लेकिन कान खोल कर सुन लो, बिना चंदा लिए हुए हम नहीं जाएंगे. चाहे हमें प्राण ही क्यों न देने पड़ें." बाबा ने ये शब्द कुछ ऐसे ढंग से कहे मानो वह प्रतिज्ञा कर रहा हो.

बाबा की प्रतिज्ञा से शर्माजी कुछ सोच में पड़ गए. उन की समझ में नहीं आ रहा था कि अब क्या कहें क्या न कहें. उन्हें ऐसा महसूस हो रहा था कि जैसे उन्होंने ही ऐसी बातें कर के यह स्थिति उत्पन्न कर दी है. यदि शांति से हाथ जोड़ कर कह देते कि वह कुछ मदद करने में असमर्थ हैं तो शायद इतनी बात न बढ़ती.

वे सोच रहे थे कि यदि सचमुच ही बाबा ने हठ ठान ली तो मुश्किल खड़ी हो जाएगी. इसी चिंता में शर्माजी कुछ सोच रहे थे. सेठजी चुपचाप कभी शर्माजी की ओर, कभी बाबाजी की ओर देख रहे थे. दोनों बाबा त्रिशूल जमीन पर टेक कर जमीन की ओर देख रहे थे. कमरे का वातावरण एकदम शांत हो चुका था.

कमरे के मौन को भंग करते हुए श्रीमती शर्मा हाथ में तश्तरी, जिस में तीन-चार प्लेटें रखी हुई थीं, लिए हुए पहुंचीं

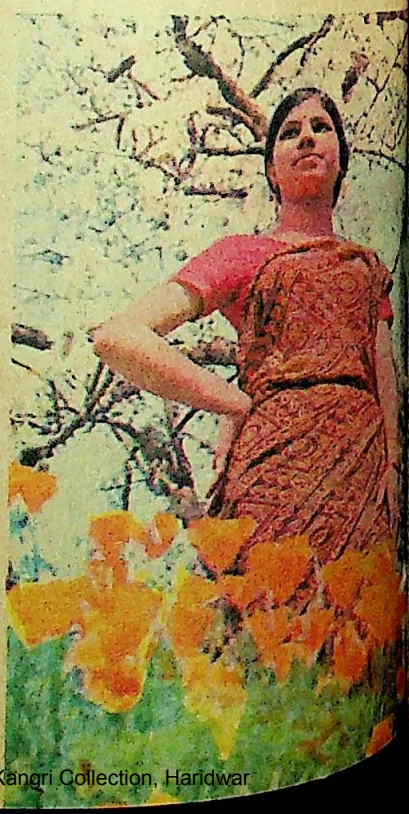

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और मेज पर रखते हुए बोलीं, "लीजिए, आप लोग नाश्ता कीजिए, मैं अभी चाय ले कर आती हूं." और कहती हुई अंदर चली गई.

प्लेटों में कुछ बिस्कुट और थोड़ी नमकीन रखी हुई थी. साधुओं ने बड़े ध्यान से देखा और फिर नीचे की ओर देखने लगे. सेठ घासीराम ने एक बिस्कुट उठा लिया. शर्माजी भी इंतजार कर रहे थे कि साधु लोग उठाएं तो वह भी उठाएं. लेकिन साधुओं ने नहीं उठाया. घासीराम ने कहा, "लीजिए, महाराज, नाश्ता कीजिए."

"क्या तुम भी मजाक करते हो? जानते हो हम दिन में एक ही बार खाना खाते हैं. यदि हम यह नमकीन बिस्कुट खा लेंगे तो चौबीस घंटे हमें भोजन नसीब नहीं होगा." बाबा श्रद्धानंद ने कहा. शर्माजी चाहते थे कि उन्हें अब कुछ न बोलना पड़े. वे अपनी धर्मपत्नी की चाल भी समझ गए थे कि वह चाय-नाश्ता करा के साधुओं को भगाना चाहती है. क्योंकि उसे डर है कि कहीं हाथापाई न हो जाए, लेकिन बाबा के स्वार्थयुक्त शब्द शर्माजी से नहीं सहे गए और उन्होंने अपना मुंह खोल ही दिया. उन्होंने निश्चय कर लिया कि अब वे बाबा की हर बात का करारा जवाब देंगे. इसलिए उन्होंने बड़े व्यंगात्मक ढंग से कहा, "हां, बाबाजी, आप तो रबड़ीमलाई खाने वाले, यह नमकीन और बिस्कुट क्यों खाएंगे."

शर्माजी का व्यंग्य सुन कर बाबा श्रद्धानंद फट पड़े, "तुम नहीं जानते, हम लोग रबड़ी और मलाई क्यों खाते हैं. हम लोग भगवान के भक्त हैं. भगवान भक्तों के मुख से भोजन करते हैं. तुम चाहते हो कि हम यह नमकीन और बिस्कुट खा लें जिस से भगवान का मुंह खराब हो जाए."

"वाह! क्या बहाना ढूंढ़ा है आप लोगों ने माल खाने का..."

शर्माजी अपनी बात पूरी भी न कर पाए थे कि बाबा बीच में ही बोल पड़ा.

सपनों के हंस

अंधियारे कूलों में बहक रही पानी की धार,
भर्राए दूहों पर लहक रही पछुआ बयार.

झिलमिल तरंगों पर खेल रहे नीलाभ फल,
पागल दिशाओं ने फेंक दिए धानी दुकूल.

सतरंगी साड़ी से फूट रहा अंगों का हास,
रेशमी किरणों से दमक रहा यौवन विकास.

अंजुली भर पानी तैर रहे सपनों के हंस,
अरुणाभ कानों में झूल रहे पीले अवतंस.

सांसों के परिमल में बहक रहे खुशियों के पांव,
अलसाई पलकें भी झूम रहीं अलकों की छांव.

बिजली से अंगों को कस रहा लहरों का जाल,
मछली सा छिटक रहा बांहों का चिकना मृणाल.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"बहाना! इसे बहाना कहते हो. गरुड़ पुराण और मनुस्मृति उठा कर देख लो. उस में लिखा हुआ मिल जाएगा."

"आखिर ये मनुस्मृति और गरुड़ पुराण भी तो तुम लोगों के ही बनाए हुए हैं." शर्माजी ने तपाक से जवाब दिया.

"क्या कहा! हम लोगों के बनाए हुए हैं? मास्टर, तुम हमारा तथा हमारे धर्मग्रंथों का अपमान कर रहे हो. हम इसे कभी बरदाश्त नहीं कर सकते," बाबा ने लगभग चिल्लाती हुई मुद्रा में कहा.

"क्या करोगे?" शर्माजी ने भी चिल्ला कर कहा.

"तो तुम्हें देखना है?" बाबा फिर से चिल्लाया.

"हां, हां, दिखाओ, तुम्हारे में जो शक्ति है, कोई डरता थोड़ी है." शर्माजी ने बहुत ही घिसेपिटे किंतु अत्यधिक प्रयुक्त होने वाले चुनौती भरे शब्दों में कहा.

"तो सुन लो. अभी तो मैं तुम से चंदा मांगने आया था पर अब तुम्हारे दरवाजे पर ही तुम्हारे खर्च से ही मंदिर और उस में किसी देवता की मूर्ति स्थापित कराऊंगा और उस देवता का भोग मैं अपने मुंह से ही खा कर जाऊंगा अन्यथा यहीं प्राण दे दूंगा." ये प्रतिज्ञा भरे शब्द कह कर बाबा अंदर से निकल गया और दरवाजे के सामने वाले मैदान में आसन जमा कर बैठ गया. उस ने अपने दूसरे साथी से कहा, "जाओ गुरु को खबर कर दो, चेले ने प्रतिज्ञा की है, वह मदद करें." बाबाजी की आज्ञा सुन कर वह दूसरा बाबा तेजी से चला गया. सेठ घासीराम शर्माजी को समझाने लगे. लेकिन शर्माजी भी इतनी जल्दी मानने वाले कहां थे. सेठ घासीराम भी चुपचाप खिसक गया.

इस थोड़े से समय के अंदर ही शर्माजी इतने थक गए थे कि वह क्या करें क्या न करें, इस का निर्णय नहीं कर पा रहे थे. आज उन्हें महसूस हो रहा था कि अब उन की हार हो जाएगी. इसी ऊहापोह में डूब वे कुर्सी पर बैठ गए और आंखें बंद कर के कुछ सोचने लगे.

"अब क्या सोच रहे हैं आप?" श्रीमतीजी की आवाज सुन कर चौंक पड़े.

"मैं तो पहले ही कह रही थी कि आप की यह नास्तिकता किसी दिन ले डूबेगी," श्रीमती शर्मा फिर बोलीं.

"यह सब तुम्हारी ही करतूतें हैं. उस दिन तुम भागवत सुनने न जातीं और न ये कुत्ते इधर आते."

"देखिए, इस में मेरा जरा भी दोष नहीं है. मैं तो चुपचाप गई थी, चुपचाप चली आई थी." श्रीमती शर्मा ने सफाई देते हुए कहा.

शर्माजी ने नम्र स्वर में कहा, "तो बताओ अब क्या किया जाए कि सांप भी मर जाए और लाठी भी न टूटे?"

"देखिए साधु हठ बहुत ही कठिन होता है अपनी बात बिना मनवाए वह कदापि अपना अनशन न तोड़ेगा. इसलिए इस से पहले कि कोई भयंकर मुसीबत खड़ी हो हम चुपचाप एक छोटा सा मंदिर बनवा कर कोई छोटी सी मूर्ति स्थापित कर दें. और उस बाबा को उस देवता के नाम से भोग खिला दें." श्रीमती शर्मा ने शर्माजी को समझाते हुए कहा.

"तो तुम भी यही चाहती हो कि मैं उस लुटेरे के सामने आत्मसमर्पण कर दूं."

"आप आत्मसमर्पण करेंगे और अवश्य करेंगे लेकिन मेरे कहने से नहीं जब वह साधु भूख से मरने लगेगा और बड़ेबड़े खद्दरधारी तथा साधुमहात्मा, एस. पी. तथा कलेक्टर आ कर कहेंगे तब आप आत्मसमर्पण करेंगे."

"नहीं, मैं उस बाबा की इच्छा कभी पूरी नहीं होने दूंगा. जो कुछ भी होगा देखा जाएगा. जाओ तुम अपना काम करो. मुझे आराम करने दो. मेरा दिमाग काफी थक गया है." शर्माजी कुर्सी पर टिक गए और आंखें मूंद लीं. श्रीमती शर्मा चुपचाप अंदर चली गईं.

श्रीमती शर्मा अपने पति के साथ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काफी हमदर्दी थी. लेकिन उन की नास्तिकता से तंग आ चुकी थीं. वह दिल से यह चाहती थीं कि एक बार शर्माजी किसी आस्तिक से अवश्य हार मान लें. क्योंकि शर्माजी की आदत हो गई थी कि वह पत्नी के हर काम को अंधविश्वास करार दे कर टांग अड़ा देते थे. स्थिति को समझ कर और शर्माजी के हठी स्वभाव को देखते हुए उन्होंने अपने बेटे प्रकाश को टेलीग्राम कर दिया. उन्हें विश्वास था कि वे दोनों मिल कर शर्माजी को अवश्य समझा लेंगे. शर्माजी प्रकाश की बात कभी नहीं टालते थे.

शाम को शर्माजी जब सो कर उठे और बाहर निकलने के लिए दरवाजा खोला तो बाहर का दृश्य देख कर हैरान हो गए. लगभग पचासों की संख्या में हर किस्म के साधु आसन जमा कर भूख हड़ताल पर बैठ गए थे. नगर के बहुत से भक्त लोग भी वहां उपस्थित थे. शर्माजी को देखते ही भक्त लोग शर्माजी के पास आ गए. एक भक्त ने शर्माजी से कहा, "शर्माजी क्यों बेकार में झंझट बढ़ा रहे हैं. मान लीजिए महात्माजी का कहना."

लेकिन शर्माजी एकदम इनकार करते गए. वहां और भी बहुत से लोग इकट्ठे हो गए. सब ने शर्माजी को हाथ जोड़ कर बहुत समझाया लेकिन शर्माजी यह कह कर टालते गए कि यह उन की इज्जत का सवाल बन गया है. अंत में लोगों ने कहा कि कुछ आप झुकें और कुछ साधु बाबा झुकें, जिस से यह बला टल जाए. बड़े दबाव के बाद शर्माजी एक शर्त पर राजी हो गए. शर्माजी कहते, "मैं मंदिर और मूर्ति स्थापना वाली बात बाबाजी की मान लूंगा, लेकिन भोग के रूप में नमकीन और बिस्कुट ही बाबाजी को खिलाऊंगा."

शर्माजी का प्रस्ताव बाबाजी को सुनाया गया. बाबाजी ने कहा, "मंदिर में चाहे जिस देवता की मूर्ति स्थापित की जाए लेकिन भोग उस की पसंद का ही होना चाहिए और वह भोग मेरे द्वारा अर्थात मेरे मुख द्वारा ही खिलाया जाना चाहिए. क्योंकि मैं ने प्रतिज्ञा कर दी है."

शर्माजी अपने हठ से तो थोड़ा झुके थे लेकिन बाबाजी ने झुकने से इनकार कर दिया, क्योंकि वह प्रतिज्ञा कर चुके थे. फिर क्या था शर्माजी ने भी प्रतिज्ञा कर ली कि वह भी बाबा की बातें नहीं मानेंगे. प्रतिज्ञा कर के वे अंदर चले गए.

दोनों तरफ की प्रतिज्ञाओं ने अपना चमत्कार दिखाना आरंभ किया. बाबाजी की हालत भूख के कारण खराब होने लगी. सुबह, शाम और दोपहर डाक्टर बाबाजी के स्वास्थ्य की जांच करने लगे और उधर शर्माजी पर एस. पी., कलेक्टर तथा नगर के विधायक का दबाव पड़ने लगा. न तो बाबा ही अपनी प्रतिज्ञा तोड़ने के लिए राजी थे और न शर्माजी ही. पत्रकारों का आनाजाना भी शुरू हो गया और खबरें पत्रों में छपने लगीं और इस के साथसाथ बहुत दूरदूर से भक्त लो

(शेष पृष्ठ 82 पर)

रंगीं नजरें

कौन जाने मेरे इमरोज का फर्दा क्या है?
कुरबतें बढ़ के पशेमान भी हो जाती हैं,
दिल के दाम से लिपटती हुई रंगी नजरें—
देखतेदेखते अनजान भी हो जाती हैं.

—'साहिर' लुधियानवी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

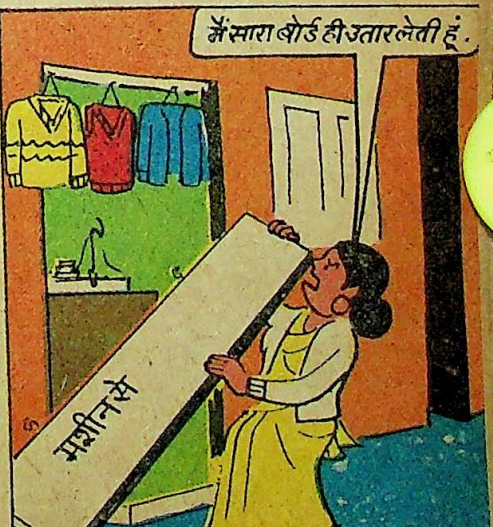

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रतिज्ञा

(पृष्ठ 79 से आगे)

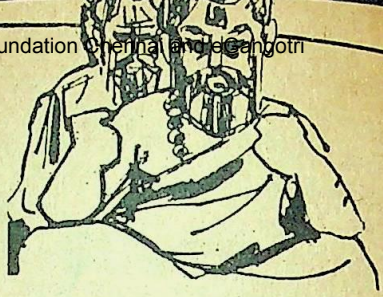

बाबा को देखने के लिए आने लगे. बाबा की हालत देख कर बहुत से लोग शर्माजी को भलाबुरा कहने लगे.

सातवें दिन बाबा की हालत काफी नाजुक हो गई. डाक्टर ने बताया कि यदि कल शाम तक बाबा को खाना नहीं दिया जाता तो बाबा का बचना मुश्किल हो जाएगा. इस संबंध में जब शर्माजी से कहा गया तो उन्होंने यह कह कर कि यदि बाबा अपनी प्रतिज्ञा तोड़ दें तो वह भी तोड़ देंगे अपना रास्ता साफ कर लिया, लेकिन बाबा अपनी प्रतिज्ञा पर अटल रहा.

बाबा के समर्थन में नगर में कई जगह आम सभाएं हुईं, जिस में यह निर्णय किया गया कि शर्माजी के खिलाफ आंदोलन शुरू कर दिया जाए. जब शर्माजी को यह खबर मालूम पड़ी तो उन्होंने विद्यार्थी संघ के अध्यक्ष को बुला कर नगर में अपने समर्थन में बाबा के खिलाफ आंदोलन शुरू करने के लिए कह दिया.

जब यह खबर एस. पी. और कलेक्टर तक पहुंची तो वे शर्माजी के पास आए. कलेक्टर ने शर्माजी से कहा, "शर्माजी, जरा सोचिए, यदि एक तरफ विद्यार्थियों ने और दूसरी तरफ जनता ने आंदोलन शुरू कर दिया तो नगर की क्या हालत हो जाएगी?"

शर्माजी ने कहा, "कलेक्टर साहब, आप उस को दबाइए जो गलत काम कर रहा हो. बाबा ने चंदा मांगा. मैं ने नहीं दिया. इस का मतलब यह थोड़ी है कि किसी के दरवाजे पर भूख हड़ताल शुरू कर दी जाए. यह तो सरासर जबरदस्ती है."

कलेक्टर ने कहा, "यहां यह देखना है कि भयंकर बरबादी जो कल से होने वाली है उसे कैसे रोका जाए.

"कलेक्टर साहब, आप अपना काम देखिए, मैं तो अन्याय के खिलाफ झुकने वाला नहीं हूं. यदि आप मुझे दोषी समझते हैं तो मुझे ही जेल में बंद कर दीजिए." शर्माजी ने बिलकुल अडिग भाव से कहा.

"आप के बंद करने से समस्या का क्या हल होगा." कलेक्टर ने कहा.

"तो आप जाइए अपना काम करिए. यदि बाबा की प्रतिज्ञा कोई महत्त्व रखती है तो मेरी भी प्रतिज्ञा कुछ महत्त्व रखती है." शर्माजी ने ये शब्द कुछ तेज स्वर में कहे.

कलेक्टर और एस. पी. उठ कर चले गए. कलेक्टर आफिस में बैठे दोनों बड़ी देर तक विचारविमर्श करते रहे.

लगभग बारह बजे रात को शर्माजी का लड़का प्रकाश बंबई से आ गया. आते ही अपने दरवाजे पर जो दृश्य देखा उस के बारे में उस की मां ने विस्तार सहित बताया. पूरा हाल सुन कर प्रकाश कुछ देर तक तो सोचता रहा फिर मां से बोला, "घबराओ नहीं, मां, मैं अभी सब ठीक किए देता हूं." और वह उठ कर बाहर गया. वह सीधे अनशनधारी बाबा के पास गया और बाकी लोगों को वहां से हटा दिया. जब सब लोग हट गए तो उस ने बाबा से कुछ बातें कीं और अंबर खापी कर सो गया.

सुबह जब कलेक्टर और एस. पी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

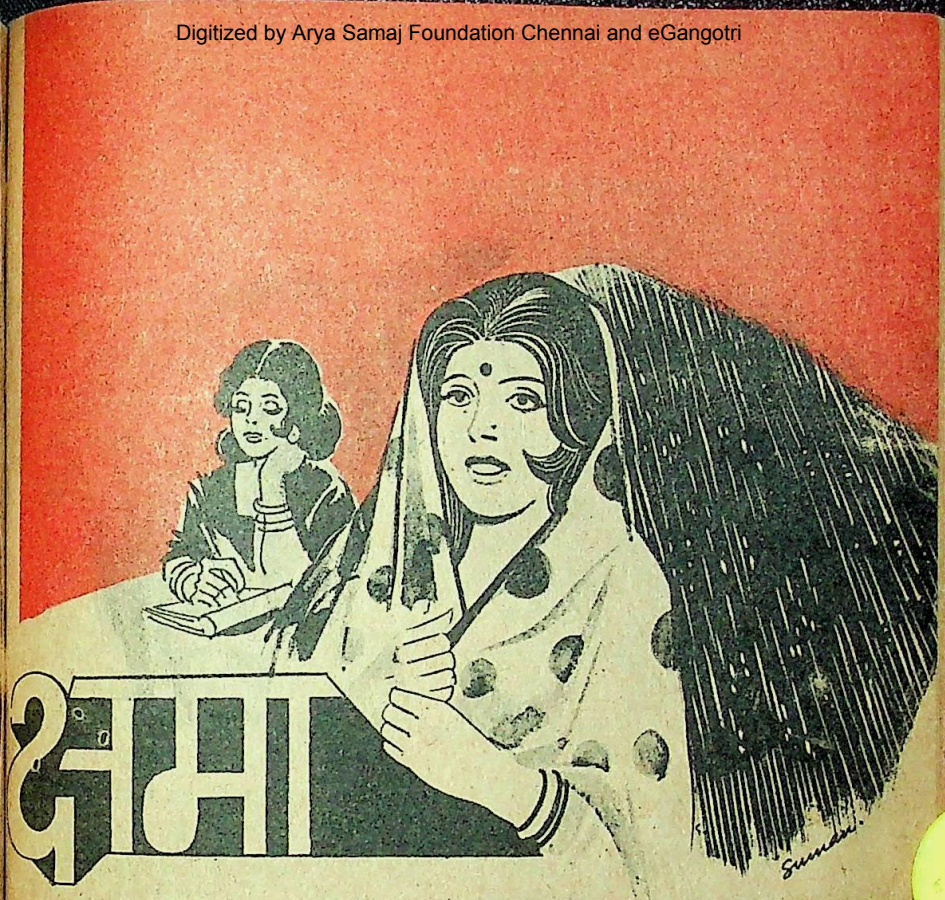

क्षमा

वह लगातार दरवाजा पीटती जा रही है. पर मैं ने भी तय कर लिया है कि आज मैं द्वार नहीं खोलूंगी. पीटे, जितना चाहे पीटे. आखिर थक कर चली ही जाएगी. सारी रात खड़ी तो रहेगी नहीं. यह भी कोई समय है आने का? मुझे खीज लग रही है.

"क्या घोड़ा बेच कर सोई हो? दीदी, ओ, दीदी." वह फिर पुकार रही है.

एक पल को मैं ने सोचा, क्यों न पूछ ही लूं कि क्या बात है? इतना तेज पानी गिर रहा है और बाहर खुली गली. कोई शेड तक नहीं है. भीग कर तर हो गई होगी., परंतु तुरंत ही विचार बदल दिया. बहुत हो चुका, अब और तरस नहीं खाऊंगी इस पर. मेरी भलमनसाहत का नाजायज फायदा उठा रही है. झूठी, बेईमान.

मैं ने कस कर रजाई में सिर लपेट लिया है और कान तकिए में गड़ा लिए हैं. वह फिर कुछ बोली पर मेघों की गड़गड़ाहट के कारण मैं स्पष्ट कुछ न सुन पाई. बस इतना ही आभास मिला कि उस के स्वर में निराशा का पुट है. हो, मेरी बला से. फिर कुछ मांगने आई होगी.

छोटे से काम के लिए क्षमा ने मना क्या किया मेरे मन में उस के लिए कोई जगह नहीं रह गई...पर उस के तोहफे ने मुझे आत्मग्लानि से भर दिया...

कहानी • मोहिनी जोशी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आप के पास एक इनलैंड होगा?" मेरे कानों में उस का स्वर गूंज उठा. यही थी मांगने की शुरुआत और यही था उस का व मेरा प्रथम परिचय. मुझे तब इस मकान में आए मुश्किल से पंदरह दिन हुए थे. वह बगल वाले हिस्से में रहती थी.

"हां, है." मैं ने उसे तुरंत इनलैंड थमा दिया था. उस के मैलेकुचैले कपड़े, अस्तव्यस्त बाल और रूखा चेहरा देख मैं ने अनुमान लगाया था कि वह गरीब होगी, लेकिन उस ने खुद ही मुझे बतलाया था कि वह गरीब नहीं है. उस के सास-ससुर हद दरजे के कंजूस हैं. उस का पति साल भर की ट्रेनिंग के लिए हैदराबाद गया है. अभी वहां मकान नहीं मिला है इसलिए उसे यहां छोड़ गया है. मकान मिलते ही ले जाएगा. वह प्रति मास रुपया भेजता है, पर सास सब दबा लेती है.

"तुम उन्हें लिख क्यों नहीं देतीं?" मैं ने पूछा.

"दोचार महीने की ही तो बात है. क्यों व्यर्थ में घर में कांटे बोऊं और उन का मन अशांत करूं? मकान मिलते ही वह मुझे ले जाएंगे." उस ने सरलता से कहा था.

आज के जमाने में ऐसी बहू हो सकती है? मैं विस्मय से विमुग्ध सी उसे देखती ही रह गई थी. उस के चेहरे पर मासूम बच्चे का सा भोलापन था.

"उन का गुस्सा बहुत खराब है. अगर मैं ने उन के लिए यहां का हाल लिख दिया तो ट्रेनिंगवेनिंग छोड़छाड़ कर यहीं पहुंच जाएंगे. हर बार मनीआर्डर में खासकर लिखते हैं—'पचास रुपए क्षमा को दे देना,' पर..." कहतेकहते उस के नयन भीग गए और स्वर भारी हो गया था. मैं उस के प्रति सहानुभूति से भर उठी थी.

"जिस चीज की भी जरूरत हो मुझ से ले जाया करो. जरा भी संकोच न करना." मैं ने खुद ही कहा था उस से.

वह फिर आई थी. राखी के एक सप्ताह पूर्व.

"एक राखी ला दोगी?"

"हांहां."

"मांजी से कहा था, वह कहने लगीं, 'धागे बट कर राखी बना ले. इतना बड़ा भाई है तेरा फूलफाल वाली राखी पहन कर क्या करेगा? फिर शगुन की ही तो बात है. व्यर्थ पैसा फेंकने से लाभ?' इतना ही नहीं, कहती हैं कि इनलैंड में धागे भेज दे. बीस पैसे में काम चल जाएगा. लिफाफे में बेकार पांच पैसे ज्यादा लग जाते हैं."

'कोई इतना भी सूम हो सकता है?' मैं सोच कर दंग रह गई. उस की सास की मनोवृत्ति देख कर. मेरी आंखों के आगे बुढ़िया की मुखाकृति घूम गई. कैसा कठोर चेहरा है, जैसे तनी हुई मुट्ठी.

"अब आप ही बताइए पीहर में मुझे ससुराल वालों की इज्जत रखनी है कि नहीं? अगर मैं मांजी के मुताबिक चलूं तो वे लोग क्या सोचेंगे हमारे घर के बारे में."

"ठीक है, मैं ला दूंगी—राखी भी, लिफाफा भी." मैं ने उसे आश्वासन दिया था.

पोस्ट आफिस और बाजार मेरे आफिस के रास्ते में ही पड़ते हैं. अतः उस की छोटमोटी चीजें लाने में मुझे कोई दिक्कत नहीं होती थी.

राखी व लिफाफा देख वह गद्गद हो उठी थी. आंखों का झरना बह चला था.

"दीदी."

"पगली, इस में रोने की क्या बात है?"

"आप का एहसान तो मैं आजीवन नहीं चुका पाऊंगी, पर उन के पास जाते ही आप के लिए रुपए जरूर भेज दूंगी, आप..."

"कैसी बातें करती हो, क्षमा?" मैं ने उसे मीठी झिड़की दी थी.

मैं वास्तव में उस से प्यार करने लगी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हम फ़ैशन-मुग्ध व्यक्तियों का अभिवादन करते हैं!

सोफ़िस्टिकेट

चेक व धारीदार नाना प्रकार के ऐसे मनोहारी नमूने जो पुरुष की गौरव-लालसा को तुष्ट और उसके आत्म विश्वास को सुपुष्ट करेंगे। प्रभावशाली फ़ैशन और व्यक्तित्व को उभारने वाला सूटिंग — सोफिस्टीकेट

शारोब्रेड

पुरुषों के सूटिंग में ऐसे नवीनतम नमूने कि जिन्होंने आज के फ़ैशन की दौड़ में विजय प्राप्त की हैं। फ़ैशन में क्रान्ति लाने वाला विशिष्ट कपड़ा। शारोब्रेड का सूट पहनकर आप विजय पताका फहराने को—तत्पर हो जाइये!

टेरीन वूल

एक नवीन नमूने का टेरीन-वूल सूटिंग, जो आज के द्रुतगामी जीवन की नित्य बदलने वाली स्टाईल का प्रतिबिंब है। उन अपनी गरमाई और टेरीन टिकाऊपन प्रदान करती है। इन दोनों को समोया है उन्होंने जो क्वालिटी और मूल्य दोनों दृष्टि से आपको मनचाही वस्तु देने में विश्वास रखते हैं।

सूटिंग के लिए उक्त प्रमुख नमूने अब आपको उपलब्ध हैं। 'के०जी०' की स्थायी चमकीली फ़िनिश के साथ चौड़ाई भी 147/152 सें० मी०

NPS/GR-103/75 HIN

GWALIOR SUITING GR®

जन-साधारण द्वारा
जन-साधारण के लिए

दि ग्वालियर रेयन सिल्क मैनू० (वीविंग) कं० लिमिटेड, बिरलानगर, ग्वालियर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लैनोलिन व मॉयस्चराइज़र मिश्रित तुहिना अब पहले से बेहतर तौर पर चमड़ी का रूखापन दूर करती है...सारे शरीर को मखमल सा मुलायम और कान्तिवान बनाती है !

तुहिना

ब्यूटी मिल्क

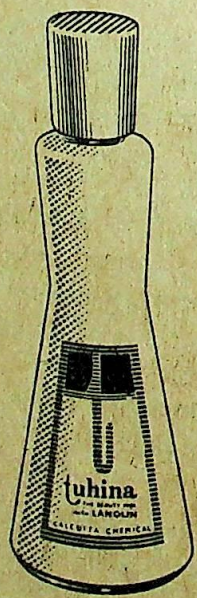

CNT 7278-3

कैल्कटा केमिकल का उत्पादन.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

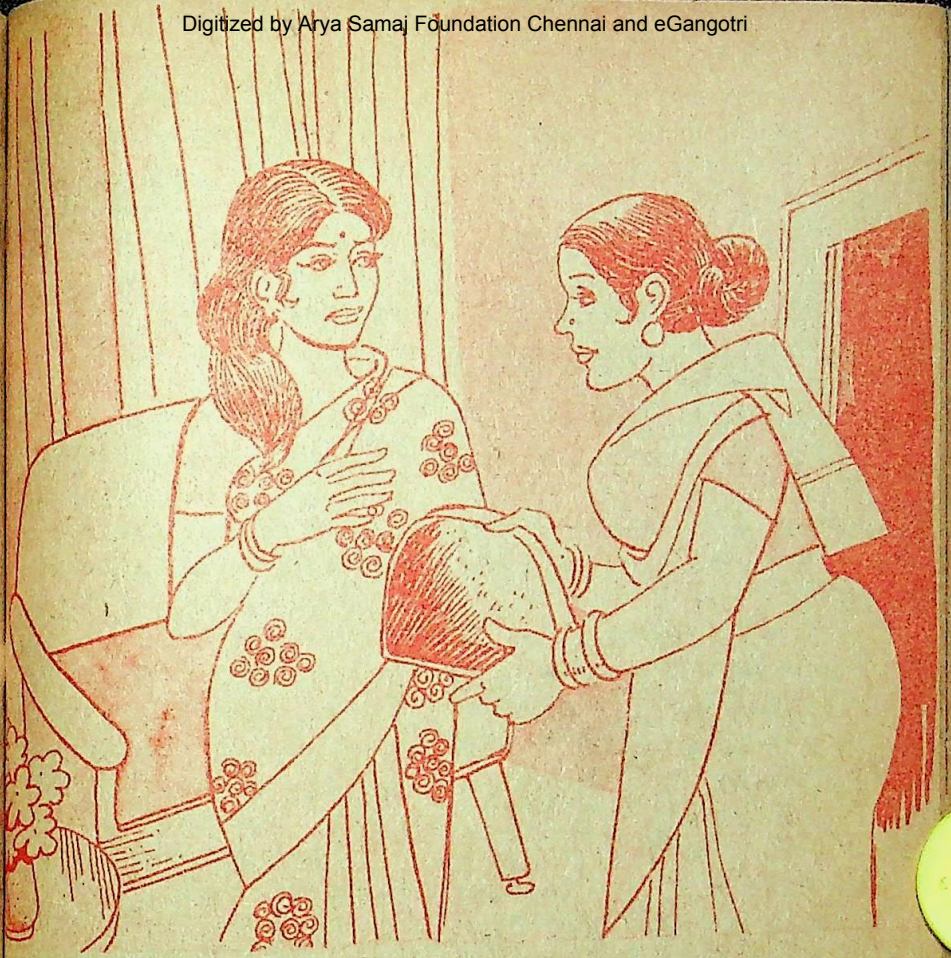

मकान मालकिन ने मुझे पत्र और कुछ सामान थमा कर बताया कि यह क्षमा ने देने के लिए कहा था.

थी. फिर तो मांगने का सिलसिला बढ़ता ही गया. साबुन, लिफाफा, आदिआदि छोटीमोटी चीजें वह अकसर मुझ से ले जाती. उस का हाथ वाकई बहुत तंग था.

"आज आप मेरे लिए लाल धागे की एक लच्छी ला देंगी?" एक दिन उस ने फरमाइश की थी.

"क्या करोगी?"

"कढ़ाई कर रही हूं. उसी में थोड़ा कम पड़ गया है."

"क्या काढ़ रही हो?"

"गिलाफ, मेजपोश, ट्रेकवर व टी कोजी का पूरा सेट."

"पैसे कहां से आए?"

"भैया ने राखी के पचीस रुपए भेजे थे, उसी से चुपचाप ले आई. कमरा बंद कर के काढ़ती हूं, नहीं तो मांजी वह भी छीन लेंगी."

"रुपए नहीं लिए?"

"जब मनीआर्डर आया तो वह घर पर नहीं थीं, इसी से मुझे मिल गए. उन्हें तो पता भी नहीं है."

दूसरे दिन मौका पा कर उस की सास की अनुपस्थिति में मैं उसे लाल लच्छी देने गई. वह उस समय भी काढ़ रही थी. मैं उस के हाथ की सफाई देख कर चकित रह गई थी. बहुत ही खूबसूरत सेट काढ़ रखा था. रंगों के सुंदर चुनाव से उस की परिमार्जित रुचि का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिचय मिल रहा था.

"तुम बहुत सुंदर काढ़ती हो, क्षमा."

"मुझे एक ही शौक है—काढ़ना."

"मेरे लिए भी एक गिलाफ व एक मेजपोश काढ़ दोगी?"

"अभी तो मेरा हाथ खाली नहीं है."

बस उस के इसी सपाट उत्तर से मेरा तनबदन सुलग उठा था. उस सेट में मुश्किल से दो दिन का काम शेष था. और वह टाल गई थी. मैं बौखला उठी थी. "जब देखो तब अपने बाप का सा घर समझ कर दुनिया भर की चीजें मांगने आ जाती है मेरे पास. आज जरा सा काम के लिए कहा तो मुकर गई. कृतघ्न कहीं की."

दो दिन बाद वह फिर आई थी.

"एक सूई है?"

"मैं ने चुपचाप उसे सूई पकड़ा दी थी. न तो एक शब्द बोली और न बैठने को ही कहा था.

"आप मुझ से नाराज हैं?"

"नहीं," मैं ने स्वर को ही सामान्य बनाने की चेष्टा की पर बचातेबचाते भी स्वर से रुखाई टपक ही पड़ी थी.

वह सूई ले कर चुपचाप चली गई थी. मैं सोचती रही कि यह एक नंबर की झूठी है. कहती थी कि पति के पास जा कर तुम्हें रुपए भेज दूंगी. अगर नीयत की सच्ची होती तो इन पचीस रुपयों से पहले मेरा कर्ज उतारती.

छोटामोटा सामान तो दरकिनार, तीनचार बार मुझ से दोदो चारचार रुपए भी मांग चुकी है. पर कसीदे का शौक है. इन रुपयों को बचा कर क्यों नहीं रखा? आगे से क्या फिर पोस्टेज, तेल, साबुन आदि की जरूरत नहीं पड़ेगी? तब कौन देगा, इस का बाप? मैं ने तय किया कि अब यह कुछ मांगने आई तो मैं भी साफ मना कर दूंगी. मैं क्यों मुहब्बत करूं?

इधर करीब एक सप्ताह से उसे देखा नहीं था. सूई ले जाने के बाद वह कुछ मांगने भी नहीं आई. आज इतनी आवाज दे रही है, इतनी रात को दरवाजा पीट रही है, परंतु मैं भी अपने निश्चय पर अटल रही. दरवाजा नहीं खोला तो नहीं ही खोला. मेरे मन में उस के प्रति आक्रोश भरा है, मतलबी कहीं की.

वह जा चुकी है. उसे यों निराश कर के लौटा देने से मुझे एक प्रकार का आत्मसंतोष मिल रहा है. मैं करवट बदल कर सोने का उपक्रम कर रही हूं.

मुझे खयाल था कि वह सुबह फिर आ धमकेगी, परंतु वह नहीं आई. नाश्ता कर के उठी ही थी कि मकानमालकिन आई. आते ही बोली, "क्यों, दीदी, कल रात तो आप खूब गहरी नींद सोईं?"

"क्यों, क्यों, क्या हुआ?"

"क्षमा बतला रही थी."

"क्या बतला रही थी?"

"वह रात में करीब नौ बजे आप के पास आई. गुहार लगाती रही. दरवाजा पीटती रही, पर आप जगी ही नहीं."

"क्यों आई थी?"

"यह लीजिए, आप के लिए चिट्ठी दे गई है और यह सामान भी."

"आप को दे गई?"

"हां, यहां से भीगतीभीगती बेचारी मेरे पास आई बोली, 'दीदी तो सो गई हैं. शायद आज बहुत थकी हैं. आप कल जरूर यह पत्र और सामान उन के पास पहुंचा दीजिएगा.'"

मैं ने तुरंत पत्र खोला. लिखा था :

"पूज्य दीदी,

सादर प्रणाम. शाम को भी आप के पास आई थी, पर ताला लगा था. इन्हें मकान मिल गया है. लेने आ गए हैं. आज रात की गाड़ी से जाना है. दिन भर पैकिंग व शापिंग में व्यस्त रही.

जाते समय आप से नहीं मिल सकी. बहुत अफसोस है. आप का आशीर्वाद ले कर जाना चाहती थी. पर...

आप का उपकार व प्यार आजीवन नहीं भूलूंगी.

उस दिन आप ने गिलाफ व मेजपोश काढ़ने की बात की थी. पर मैं ने आज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

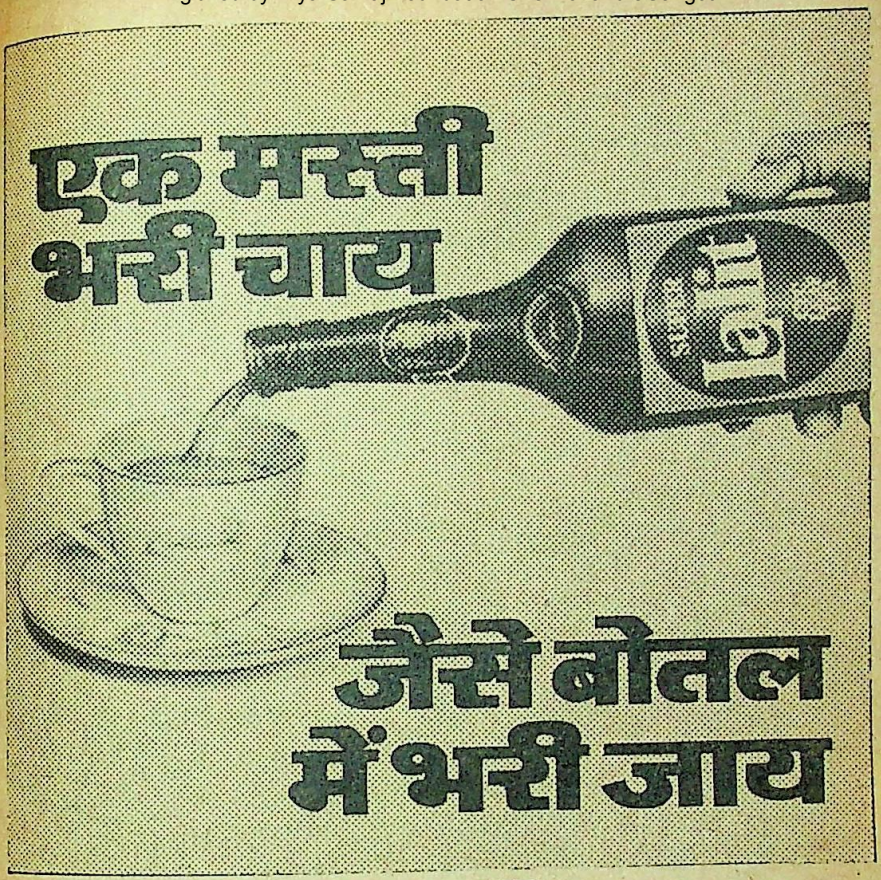

सूपर ललित

सूपर ललित—एक कड़ी चाय, मस्त चाय, मज़ेदार चाय। इसका भरपूर ज़ायका और बेमिसाल खुशबू दिल खुश कर देगी। जी हां, एक असली चाय के ये ही गुण तो आपको चाहिएं न! सचमुच यही चाय है, सही चाय। सूपर ललित जी भर के पीजिए। इस पर कोई बंदिश नहीं है।

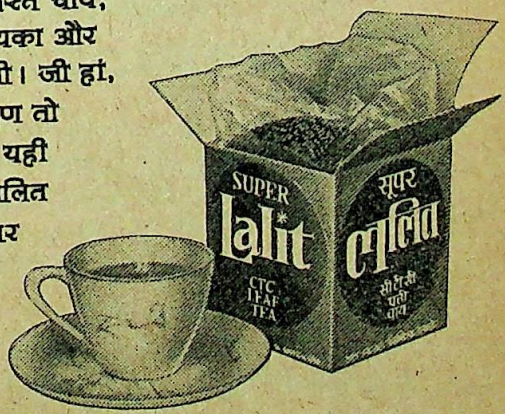

सूपर ललित चाय

हर घूंट में नशा – हर चुस्की में मज़ा

dCA/TFSL/3e Hin.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिनेश ऊनी सूटिंग पर है वूलमार्क

नयी, मिलावट-रहित, शुद्ध ऊन का अन्तर्राष्ट्रीय प्रतीक!

वूलमार्क— सारे संसार में ऊन के मिलावट-रहित, शुद्ध और नयी होने का एकमात्र विश्वसनीय प्रतीक है। आप पूरे विश्वास से अपनी मनपसन्द स्टाइल में दिनेश* की शुद्ध, ऊन की सूटिंग पहन सकते हैं क्योंकि इस पर वूलमार्क है।

dinesh

नयी, मिलावट-रहित और शुद्ध ऊन की सूटिंग की पहचान — वूलमार्क

CMIWS-23-152

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बूझ कर टाल दिया था. दरअसल वह सेट मैं ने आप के लिए ही बनाया है. सोचा था, आज आप को सप्राइज दूंगी. परंतु आप गहरी निद्रा में निमग्न न जाने किस सुनहरे संसार में विचरण कर रही होंगी.

जब आप नहीं जगीं तो मुझे एक ही उपाय सूझा कि आप के लिए पत्र व आप का सामान मकानमालकिन को दे जाऊं. मांजी की आदत तो आप जानती ही हैं.

आशा है, आप मेरी तुच्छ भेंट स्वीकार करेंगी.

आप की,
क्षमा.

मैं ने पैकेट खोला तो मैं ग्लानि से गड़ गई. उस खूबसूरत सेट के साथसाथ क्षमा ने वह सारा सामान भी रख छोड़ा है जो वह इन दोतीन महीनों में मुझ से मांग कर ले गई थी. मेरा माथा घूमने लगा.

मैं कह उठी, "क्षमा, अपने नीच व्यवहार के लिए मैं स्वयं को कभी क्षमा नहीं करूंगी, पर क्या तुम मुझे क्षमा कर दोगी?" ●

यह भी खूब रही

विलासपुर. तीन मछलियां, जिन्हें पकड़ने के लिए तालाब में जाल डाला गया था, मछुआरे को ही खींच ले गईं.

बताया जाता है कि मछुआरा तालाब में जाल डाल कर और उस की रस्सी अपने पैर से बांध कर सो गया था. उस के जाल में तीन मछलियां, जिन का वजन 35 किलो, 17 किलो और 15 किलो था, फंसी. उन्होंने निकल भागने के लिए जैसे ही जोर लगाया, तालाब के किनारे सोया हुआ मछुआरा भी खिंच कर तालाब में चला गया.

बाद में पुलिस ने मछुआरे के शव और तीनों जीवित मछलियों को तालाब से बरामद किया.

—हिंदुस्तान, नई दिल्ली
(प्रेषिका : प्रभा अग्रवाल, दिल्ली)

✦

मेरठ. सदियों पहले महाराजा दशरथ अपने पुत्र के बिछोह में कुछ दिन ही जी पाए थे. लेकिन आज के दशरथ इसे एक क्षण के लिए भी सह नहीं पाए.

यहां से 15 किलोमीटर दूर शाहजहांपुर में रामलीला के दौरान 'दशरथ' (60 वर्षीय पात्र) उस समय मंच पर ही गिर पड़े, जब उन्होंने 'राम' को बनवास की आज्ञा दी. इस पर रामलीला को तुरंत रोक कर डाक्टर को बुलाना पड़ा. डाक्टर ने उक्त पात्र को मृत घोषित कर दिया. मृत्यु का कारण हृदय की गति रुकना बताया गया.

बाद में बहुत से शोकाकुल दर्शक शवयात्रा में शामिल हुए.

—हिंदुस्तान, नई दिल्ली
(प्रेषक : अनुजकुमार, दिल्ली) ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उलझन

कहानी • कमररजा हैदरी 'नवोदित'

फरजाना ने आंखें खोलीं. गहरा अंधकार था. 'शायद बिजली चली गई है,' उस ने सोचा. पंखा बंद हो गया है तभी मच्छर भी भुनभुन कर रहे हैं. उस ने चादर ओढ़ ली और नन्हे पुच्चू को सीने से लगा लिया. आंसू ढुलक कर तकिए पर आ गिरे. नींद नहीं आ रही है. उसे उस घर से नफरत हो गई जिस से कभी उस को अत्यधिक प्रेम था. अब वही घर उजाड़ सा पड़ा रहता है.

लगभग ढाई वर्ष पहले वह इसी घर में ब्याह कर आई थी! कितना प्यार करता था सलीम उसे. कितनी खुश रहती थी वह. पर कभीकभी अकेली होने के कारण उस का मन घबराने लगता. सलीम तो कचहरी चला जाता और वह सारे दिन बोर होती रहती.

"मेरा दिल यहां अकेले में घबराता है, क्या करूं?"

"फिकर मत करो. खुदा गुड्डा या

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शबाना और सलीम के संबंधों ने फरजाना के संयम का बांध तोड़ दिया. हर रोज के बढ़ते तनावों ने घर छोड़ने को मजबूर किया...पर मातृत्व ने बढ़ते कदमों में जंजीर डाल दी...

गुड़िया देगा तो दिन भर खेलती रहा करना."

फरजाना का चेहरा लज्जा से लाल हो जाता और सलीम अपना वाक्य पूरा करता, "मगर हमें भूल मत जाना. इतना ही प्यार करती रहना, समझीं."

"हूं, आप तो अभी से ही जलने लगे."

वह मुंह चिढ़ा कर भाग जाती, सलीम उस का पीछा करता, वह भागती जाती, छुपती जाती.

"देखो, तुम्हारा भागनाकूदना ठीक नहीं. जरा समझो..."

वह यकायक रुक जाती और सलीम जबरदस्ती उस को अपनी बांहों में भर लेता.

"मैं आज घर जाऊंगी."

"मगर क्यों?"

"पापामम्मी की याद आ रही है और फिर शबाना....मैं उस से आने का वादा कर के आई थी. वह मेरी इकलौती बहन तो है ही, एक दोस्त भी है."

"तो अब यह दोस्ती छोड़ दो, यह मम्मीपापा, बहन...यह रोजरोज घर जाना मुझे अच्छा नहीं लगता."

"जी, आप का मतलब क्या है?"

"यही कि मेरे पास रहो. अब

'मैं घर छोड़ कर जा भी नहीं सकती. अगर मुझे कुछ हो गया तो पुच्चू का क्या होगा?' फरजाना सोच में डूब गई.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम्हारा मम्मीपापा, बहन, दोस्त सब कुछ मैं ही हूं."

मगर उस के बच्चों की तरह जिद्द करते रहने से वह उस को घर पहुंचा ही देता.

"मेरी एक बात सुनिए."

वह बड़े प्यार से सलीम को संबोधित करती और वह लिखतेलिखते अपनी कलम रोक लेता.

"तुम हमेशा डिस्टर्ब करती हो."

"तो क्या मैं अपना बिस्तर यहां से हटा लूं?"

"नहीं, भई, मैं ने तो जान कर ही अपने कमरे में डलवाया है. जब दिल चाहा फाइल उठा कर काम करने लगा और जब दिल चाहा तो तुम..."

"बस, बस, आप बहुत बदतमीज हो गए हैं."

फरजाना ने सलीम के मुंह पर हाथ रख दिया.

"अरे, भई, बदतमीजी की क्या बात, जब दिल चाहा तुम से बातें करने लगा."

दोनों जोरजोर से हंस देते.

"मैं तो बी. ए. कर के ही रह गई, मगर शबाना को बी. ए. के बाद वकालत पढ़ाना है."

"तुम्हें इस की क्या फिकर है. उस के मांबाप अभी जिंदा हैं."

"फिर भी..."

"फिर भी क्या...तुम पुच्चू को वकील नहीं, जज बनाना."

"वाह, बाप वकील, बेटा जज!"

फरजाना मुसकरा पड़ती और सलीम झेंप मिटाता, "पुच्चू का बेटा और भी बड़ा आदमी बनेगा."

कभीकभी वह बचकानी सी बातें करती, "हूं, आप पुच्चू के लिए कितने सारे खिलौने लाते हैं और मेरे लिए..."

"भई, तुम्हारा खिलौना तो पुच्चू है और ये गुड़ियां पुच्चू की..."

"गुड़ियां...मगर दोनों एक ही शक्ल की हैं. बस कपड़े अलग हैं."

"दोनों सगी बहनें हैं न?"

"लगता तो मुझ को भी ऐसा ही है. लेकिन आप गुड्डे नहीं लाए, अब मैं इन की शादियां कैसे करूंगी."

"अरे, भई, गुड्डा तो तुम्हारे पास मौजूद ही है. कर डालो इन की शादियां."

"पर एक गुड्डा तो लाना ही पड़ेगा..."

"एक से ही कर डालो न?"

शायद आप को यह नहीं पता कि हमारे यहां एक आदमी की बीवियां दो सगी बहनें एक साथ नहीं बन सकतीं."

"अच्छा, बाबा, आखिर हो न एक वकील की बीवी."

"उस से भी पहले एक सीनियर वकील की बेटी."

सलीम उस की हाजिरजवाबी पर मुसकरा कर झेंप मिटाता.

"अच्छा, भई, तो तुम दस रुपए का खून करवा के ही छोड़ोगी. कल गुड्डा भी आ जाएगा. बस, खुश."

कितना कहना मानता था सलीम उस का. उस की खुशी के लिए वह कुछ भी कर सकता था.

पलंग पर लेटे ही लेटे गमगीन चेहरा खिल सा गया. कितना अपनापन था उन दोनों में, प्रेम की मीठी नोकझोंक वह करते ही रहते थे.

शबाना को वह अपने ही घर ले आई थी. अकेले घर में मांबाप की सारी खिदमत, घर की जिम्मेदारी और फिर बी. ए. फाइनल की पढ़ाई, वह एक साथ इतना सब कुछ कैसे पर पाती.

"क्या आप को शबाना का यहां आना अच्छा नहीं लगा?" एक दिन उस ने हिम्मत कर के सलीम से पूछ ही लिया.

"नहीं तो..."

"फिर आप उस से बोलते क्यों नहीं? वह कह रही थी आप उस के सलाम का जवाब देते वक्त उस की तरफ निगाह उठा कर भी नहीं देखते."

"शायद ऐसा हो. और फिर वह तो हर वक्त पढ़ती रहती है, मैं [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करूंगा तो बेकार डिस्टर्ब होगी."

"ऐसी भी क्या पढ़ाई?" फरजाना झुंझला कर कहती और सलीम मुसकरा पड़ता.

सलीम को गृहस्थी के बारे में काफी अनुभव है. जो कुछ उस के पिता के साथ घटा वह उसे खूब याद है. उस की मां के बहनभाई, मातापिता सभी उस के पिता पर बोझ बन गए थे. सब खातेपीते और मौज करते. कितना परेशान हो गए थे उस के पिता. एक मामूली सा अध्यापक और इतना बड़ा परिवार. तंग आ कर उन्होंने आत्महत्या कर ली थी. सलीम सोलह वर्ष का था. ग्यारहवीं कक्षा की पढ़ाई, मां का भार, सब कुछ उस ने धैर्यपूर्वक सहन किया. मगर अफसोस कि उस की मां उसे गाउन पहने कोर्ट में बहस करते न देख सकी. अपनी बहू को आशीर्वाद देने की कामना वह मन में ही लिए सलीम को अकेला छोड़ गई थी.

अपनी पत्नी के किसी भी संबंधी से कभी भी मुंह न लगाने का उस ने प्रण कर रखा था. पर फरजाना के पिता ने जब एक माह के पश्चात सलीम को डेढ़ सौ रुपए भेजे तब सलीम का सिर शर्म से झुक गया. रुपए उस ने वापस दे दिए. हां, इतना अनुमान उस को अवश्य हो गया कि उस के घर का वातावरण उस के पिता के घर जैसा नहीं हो सकता.

शबाना से कुछ ही दिनों में उस को अपनापा सा हो गया. वह नित्यप्रति उस से हंसहंस कर बातें करता.

"ओफ्फो, खाना ठंडा हो रहा है.

दूसरे कमरे से आती आवाजों से परेशान हो कर फ़रजाना घर छोड़ने के लिए द्वार की ओर लपकी...पुच्चू की आवाज ने उसे विवश कर दिया और वह उसे सीने से लगा कर सिसकियां भरने लगी...

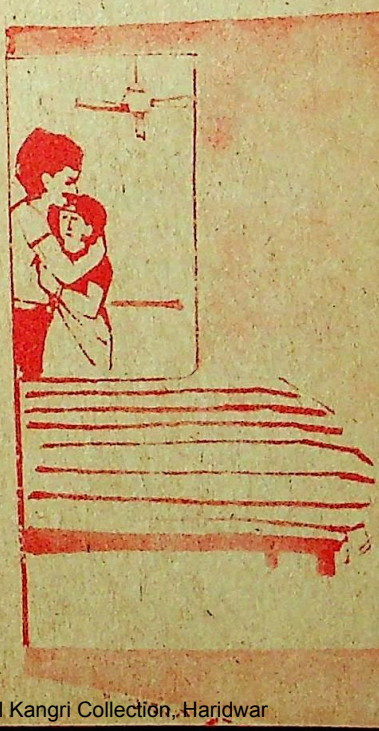

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बातें कैसी हैं कि खत्म ही नहीं होतीं," फरजाना चिढ़ सी जाती.

"तुम्हारी ही बहन से तो बातें कर रहा हूं. कोई गैर तो नहीं है."

फरजाना से कुछ कहते न बनता. कभीकभी वह कह बैठता, "बेचारी अकेली कमरे में पड़ी है. यहीं बुला लो न."

"अरे, यह क्या, क्या कह रहे हैं आप? यहां..."

"क्यों, क्या बुरा कहा. जब तक हम लोग जाग रहे हैं, बातें ही होंगी."

मन न होते हुए भी वह शबाना को आवाज दे कर अपने बैडरूम में बुला लेती, पर न जाने क्यों फरजाना को अपनी इकलौती बहन से, अपनी एक दोस्त से अब उतना प्यार नहीं रह गया था. सलीम के साथ इतना मेलजोल उस को अखरने लगा था.

"मैं सोचती हूं, अब शबाना को घर भेज दिया जाए," कभीकभी वह कहती.

"क्या बेकार की बातें करती हो. बेचारी को बुलाया ही क्यों था? अब इम्तहान भी सिर पर हैं," सलीम कहता तो वह चुप हो जाती.

सोचने लगती, 'कहीं इन दोनों के संबंध गलत तो नहीं? नहीं, नहीं, यह पाप है. मुझे ऐसा नहीं सोचना चाहिए. वह मुझे धोखा नहीं दे सकते. शबाना मेरा घर नहीं उजाड़ सकती.'

पर कभीकभी यही शंका उस के मन में दृढ़ हो जाती. मन का विपरीत पक्ष करवट लेता. कहीं उस का पति उस के स्थान पर शबाना को तो नहीं देखना चाहता.

"यह चम्मच यहां क्यों पड़ा है, मेरी फाइलों में? किसी बात का ढंग नहीं रहा. पता नहीं क्या होता जा रहा है तुम्हें. कहां ध्यान रहता है तुम्हारा? खोई-खोई रहती हो. पता नहीं क्या सोचती रहती हो?"

"गुस्सा न करिए, चम्मच मेरे हाथ में था. आप से लाने के लिए कहने गई थी, भूल से वहीं रह गया."

शबाना की बात पर सलीम का क्रोधित चेहरा खिल सा उठता.

कभीकभी शबाना फरजाना की बात को भी स्वयं पर ही ले लेती, मगर फरजाना यह सहन नहीं कर पाती. एक ही बात पर फरजाना को डांट पड़ती और शबाना का मुसकरा कर स्वागत होता. शबाना तो अपनी बड़ी बहन की हमदर्दी में ऐसा करती, पर फरजाना को यही बातें मन ही मन सुलगा रही थीं.

"क्या बात है, बाजी, तुम मुझ से कुछ नाराज रहती हो, क्यों? हो न? बताओ न, बाजी?"

कई बार पूछने पर फरजाना संक्षिप्त सा उत्तर देती, "नहीं तो."

"फिर मुझ से पहले की तरह हंसती बोलतीं क्यों नहीं?"

फरजाना के मन में तो आता कि साफसाफ कह दे कि उस का और सलीम का इतना समीपत्व उसे बिलकुल पसंद नहीं, पर किस मुंह से कहे? वही तो जिद कर के शबाना को यहां लाई थी. वह स्वयं ही अपने दुख, अपनी उलझन की जड़ है. स्वयं अपनी बहन पर दोष कैसे लगा दे वह?

"तुम्हें गलतफहमी है, शबाना."

वह बात टाल देती, मन के भाव छिपा जाती. शबाना से सट कर बैठना हंसीमजाक करना, बालों को छेड़ना— अब सलीम को कुछ भी संकोच न रह गया था. बल्कि फरजाना ही अब कतरा जाती थी. उपाय सोचती कि किस प्रकार अपना उजड़ता हुआ संसार बचाए.

बिजली आ गई. पंखे की हवा के अनुभव से उस ने चादर से मुंह निकाल लिया. शरीर पसीने से कुछकुछ नम है. आंखें आंसुओं से भरी हैं. दोचार कराहटों के साथ मन की पीड़ा प्रकट हो गई.

"फरजाना, मेरा बहुत हर्ज होता है. रात को केस तैयार नहीं कर पाता. देर से सोता हूं और फिर रात को पुच्चू सैकड़ों बार उठता है. रोता है. नींद पूरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं हो पाती. सिरदर्द, आंखें भारी..." सलीम ने झुंझला कर कहा.

"आखिर, आप कहना क्या चाहते हैं?"

"इस से छुटकारा..."

"तो पुच्चू को शबाना के पास लिटा दूं."

"क्या बेवकूफों की सी बातें करती हो? तुम पुच्चू की मां हो, उस के इशारे समझती हो...वह बेचारी क्या जाने, फिर उस की पढ़ाई, इम्तहान का क्या होगा."

"तो फिर मैं क्या करूं, बताइए?"

"अरे, भई, तुम उस कमरे में सो जाओ."

"जी, यह आप कह रहे हैं?"

"क्यों, तुम्हें आंखों से दिखता नहीं या कानों से सुनाई नहीं देता कि तुम्हारे सामने कौन है, क्या कह रहा है."

सलीम की जलीकटी बात सुन कर वह गुस्से से कांप उठी. "ठीक है, मैं वहां चली जाती हूं और शबाना को यहां..."

"फरजाना, बदतमीजी और बेहूदगी की हदों को मत छुओ. तुम कहने से पहले सोच तो लिया करो कि क्या कहने जा रही हो. इस का क्या मतलब होगा. दूसरे पर इस बात का क्या असर पड़ेगा? तुम यह भूल रही हो कि शबाना तुम्हारी कौन है."

फरजाना के लिए एक पलंग शबाना के कमरे यानी कि बड़े कमरे में डलवा दिया गया. कई रात वह सो भी न सकी थी. कितनी उलझन में है वह, मस्तिष्क में तरहतरह के विचार आ रहे हैं. उसे पागल सा किए दे रहे हैं. सोचतेसोचते उस के दिमाग की रगें फटी जा रही हैं. वह बेसुध सी हो जाती है, पर इन उलझन भरी समस्याओं का हल निकालने में वह असमर्थ है.

फरजाना ने करवट बदली. सीधी हो गई. द्वार खुला है कमरे का, सामने सलीम का कमरा है. प्रकाश रोशनदान एवं किवाड़ों के ऊपरी शीशों से छनछन कर आ रहा है. सलीम अभी तक जाग रहा है.

'क्यों न जहर खा लूं? नहीं, पापा शबाना एवं सलीम को ही दोषी ठहराएंगे. क्यों न एक परचा लिख दूं कि यह लोग निर्दोष हैं. पर आत्महत्या के बाद लोग बाल की खाल निकालेंगे. कितनी बातें बनेंगी? क्यों न शबाना को घर वापस भिजवा दूं? अम्मी से कह दूं कि वह शबाना को बुला लें. पर क्या फायदा, सलीम मुझ पर और सख्ती करेगा. मुझे मेरे अधिकारों से वंचित कर देगा. यह मुझ से सहन न होगा.'

'क्यों न मैं इन से तलाक ले लूं. मगर क्यों? जाहिर में मुझे क्या तकलीफ है. कुछ नहीं, क्या कहूंगी, क्यों न अपना जीवन इन्हें दे दूं. उन दोनों के बीच की दीवार गिरा दूं. घर छोड़ कर चली जाऊं. कुंवारी बहन पर दोष भी नहीं आएगा. थोड़ी चर्चा होगी. अम्मीअब्बा को दुख होगा. लोग यही तो कहेंगे कि फरजाना भाग गई. कहें, मैं कुंवारी थोड़े

तासीरे नजर

इनायत की, करम की, लुत्फ की आखिर कोई हद है,
कोई करता रहेगा चारा-ए-जख्में जिगर कब तक?
किसी का हुस्न रूसवा हो गया पर्दे ही पर्दे में—
न लाए रंग आखिरकार तासीरे नजर कब तक?

—'फिराक' गोरखपुरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही हूं. आखिर ऐसे कब तक चलेगा. मैं पागल हो जाऊंगी, नहीं रहूंगी मैं यहां.'

वह उठ कर घर से बाहर आ गई. पर कुछ सोचने लगी. 'पुच्चू...ममता ने कदम रोक लिए. पुच्चू का नाम उस के कानों में गूंज गया. उस का मासूम चेहरा उस की आंखों में घूम गया. वह लौट आई.' पुच्चू को गोद में उठा लिया. 'मैं इस के बिना नहीं रह सकती.'

विचार के विपरीत पक्ष ने करवट बदली. 'समाज मुझ को जिंदा नहीं रहने देगा. मेरा इकलौता मेरे लिए कलंक बन जाएगा. मैं समाज के बराबर नहीं जा सकती, और पुच्चू...लोग इस को किसी का पाप समझेंगे और यह भी बड़ा हो कर अपने पिता के बारे में पूछेगा. क्या बताऊंगी मैं. इस का बाप कौन है, कहां है? यह सब कुछ बन कर भी सब के बराबर नहीं आ सकेगा. नहीं, नहीं, मैं यह घर कभी नहीं छोड़ूंगी. सलीम का साया सदा ही इस पर रहने दूंगी. चाहे वह नामिमात्र को ही क्यों न हो. सब कुछ सहन कर लूंगी.'

'अब मैं करूंगी भी क्या? इस के लिए सब कुछ सह लूंगी.' पुच्चू को लिटा कर उस ने एक हसरत भरी निगाह सलीम के कमरे की ओर डाली. यकायक शीशों से छन कर आने वाला प्रकाश मंद पड़ गया. सलीम काम कर चुका है, सोने की तैयारी में है. वह बैठ गई पलंग पर.

'मैं यहां से जा भी नहीं सकती. आत्महत्या नहीं कर सकती. पुच्चू को साथ ले कर भी नहीं जा सकती. यहां अकेला छोड़ भी नहीं सकती. आखिर मैं क्या करूं? अगर मुझे कुछ हो गया तो पुच्चू का क्या होगा. सलीम...सलीम का खून है वह...शबाना...उस को भी पुच्चू से प्रेम अवश्य होगा. दोनों इस को पाल लेंगे. भिखारी नहीं बनने देंगे. दरदर की ठोकरें नहीं खाने देंगे. सलीम जरूर शबाना से शादी कर लेगा. वही इस की मां कहलाएगी. यह भी शबाना को ही अपनी असली मां समझेगा. शबाना..."

दृष्टि कुछ दूर पर पड़े शबाना के खाली पलंग पर गई. पलंग खाली था... शबाना कहां चली गई. वह उठ कर लाइट जलाना चाहती थी कि अत्यंत शांत वातावरण में चूड़ियों की खनक, अधूरेअधूरे शब्दों ने उस का ध्यान सलीम के कमरे की ओर केंद्रित कर दिया.

"नहीं, नहीं, अब मैं इस घर में नहीं रह सकती. सलीम मेरा पति नहीं, शबाना मेरी बहन नहीं."

बड़बड़ाती हुई वह पलंग से उतर कर द्वार की ओर लपकी. वह बाहर के गहरे अंधकार में, काली सड़क पर चलते-चलते, विलीन हो जाना चाहती थी सदा के लिए.

"मम्मी."

पुच्चू की आवाज उस के कानों में पड़ी. वह कुलबुला कर उठ बैठा था. पांव एक बार फिर ठिठक गए. वह वापस लौट आई और पलंग पर गिर कर पुच्चू को सीने से लगा कर सिसकियां भरने लगी.

विशेषांकों का सेट

सरिता के निम्न विशेषांक सेटों के रूप में उपलब्ध हैं. तीनों का मूल्य केवल 6 रु. (रजिस्टर्ड डाक खर्च सहित).

1. कढ़ाई विशेषांक (दिसंबर द्वितीय, 1974). हर प्रकार की कढ़ाई के तीस से अधिक नमूने.
2. बुनाई परिशिष्टांक (अक्तूबर द्वितीय, 1975). आधुनिक डिजाइनों के नौ नमूने.
3. दीपावली विशेषांक (नवंबर प्रथम, 1975). 250 पृष्ठों का अंक, जिस में 14 कहानियां, 15 लेख और शाश्वत रहने वाली सामग्री है.

आज ही पूरा सेट मंगाइए. 6 रु. का मनीआर्डर निम्न पते पर भेजिए:

सरिता,
रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-55.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

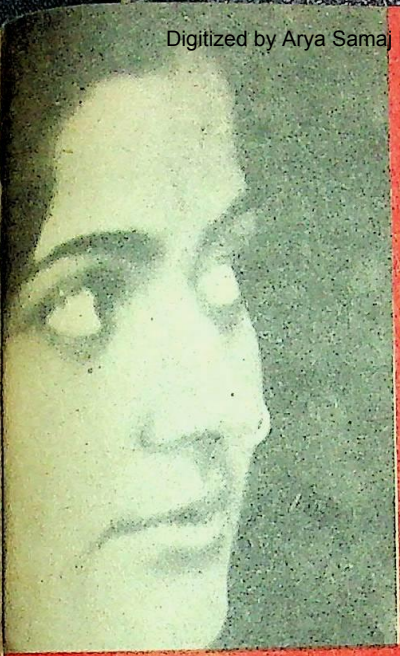

छोटी छोटी बातें

लेख • पुष्पा सिंह

कुछ बातें होती तो छोटी हैं, पर कितनी महत्त्वपूर्ण! इन की उपेक्षा कर के तनाव से बचा जा सकता है...

"उर्मि, स्वेटर पहन लो, नहीं तो ठंड लग जाएगी." मैं ने मुंह उठा कर देखा, देवरजी अपनी पत्नी को स्वेटर पहनने को कह रहे थे. मुझे मन ही मन बहुत बुरा लगा. एक तरह की अग्नि भीतर ही भीतर सुलग उठी. मुझ से इस तरह का लाड़प्यार कोई नहीं जताता था. मातापिता तो हैं ही नहीं और पति...?

मैं पांच वर्ष पहले के अतीत में झांकने लगती हूं. मैं सजधज कर सुहाग सेज पर बैठी मन ही मन हजारों सुंदर सलोने सपनों के तानेबाने बुन रही थी. पति से साक्षात्कार हुआ. कुछ बातें करने के बाद उन्होंने कहा, "मैं उन पतियों में से नहीं हूं जो पहले तो अपनी पत्नियों की जूती उठाते फिरते हैं और फिर तमाम उमर उन को दुत्कारते रहते हैं, उन की उपेक्षा करते हैं. मैं तुम्हें ज्योंज्यों समय बीतता जाएगा त्योंत्यों अधिक प्यार करूंगा." कुछ शब्दों में इस का आशय यह था कि तुम्हें मेरे दिल में अपने लिए जगह बनानी होगी, जिस में समय लगेगा.

मैं चुप रही. तब से मैं मंजिल दर मंजिल विवाहित जीवन से गुजरती आ रही थी. रोज यही सोचते हुए कि शायद आने वाला कल जिंदगी के इस ढांचे को बदल देगा. सतह पर हर चीज ठीक थी, कहीं कुछ गलत नहीं था, मगर सतह के नीचे जीवन कितनीकितनी उलझनों और गांठों से भरा था. पति अपने प्यार के धन को किसी कंजूस साहूकार की तरह हमेशा दांतों से पकड़े रहना चाहते. एक भी वाक्य वह ऐसा न बोलते जिस से प्यार की एक बूंद भी टपकती हो. वह मेरे प्रति एक भी ऐसा काम न करते जिस से उन का प्यार प्रकट हो. शायद प्यार प्रकट करने को वह जोरू का गुलाम

 कुछ घर की • कुछ जग की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बन जाना समझते. उन की समझ में यह नहीं आता कि गृहस्थी की गाड़ी दो पहियों से चलती है, एक से नहीं. एक व्यक्ति अपने मन को मार कर दूसरे से सहमत होता चला जाए तो जीवन कब तक सहज रह सकता है?

"अरी, उर्मि, तुम ने खाना खा लिया या नहीं? कहीं देवीजी अभी तक भूखी तो नहीं बैठी हैं." देवरजी की आवाज सुन कर मैं फिर अपने वर्तमान में लौट आई. देवरजी अपनी पत्नी को कितना प्यार करते हैं? उस का कितना खयाल रखते हैं? एक मैं हूं.

मुझे अपनी मां की याद आ जाती है. जब अम्मा जीवित थीं तो वह मेरा कितना अधिक ध्यान रखती थीं. पूछती ही रहतीं, 'मधु, तुम ने नाश्ता कर लिया या नहीं, खाना खा लिया या नहीं.' पर अब कौन पूछता है? अब तो यही सोच कर खाना खा लेती हूं कि जीवित रहना है तो खाना तो खाना ही पड़ेगा. भूखे कब तक रहा जा सकता है? इस पर भी मेरी सासजी कहतीं, "यह भूखी बिलकुल नहीं रह सकती."

मैं उन के इस अपमानजनक वाक्य से मन ही मन तिलमिला कर रह जाती. पर कर क्या सकती थी. जीवन भैंसा-गाड़ी की तरह चलता जा रहा था. उस में कुछ भी रस न था. आंसू के घूंट पी पी कर जी रही थी.

"रमा, तुम कल कहां गई थीं. जब मैं ऊपर गई तो ताला लगा हुआ था," मैं अपनी सहेली से पूछती हूं.

"कल यह आफिस से लौटते समय पिक्चर के दो टिकट लेते आए थे. सो कल हम पिक्चर देखने चले गए थे."

मेरे भीतर फिर कहीं एक आग सी जल उठती है. मैं सोचती हूं, विवाह हुए पांच साल होने को आए पर इन्होंने अभी तक मुझे एक भी पिक्चर नहीं दिखाई.

"क्या सोचने लगीं," रमा पूछती हैं.

"हुंह, कुछ नहीं. तुम बताओ, पिक्चर कैसी थी?"

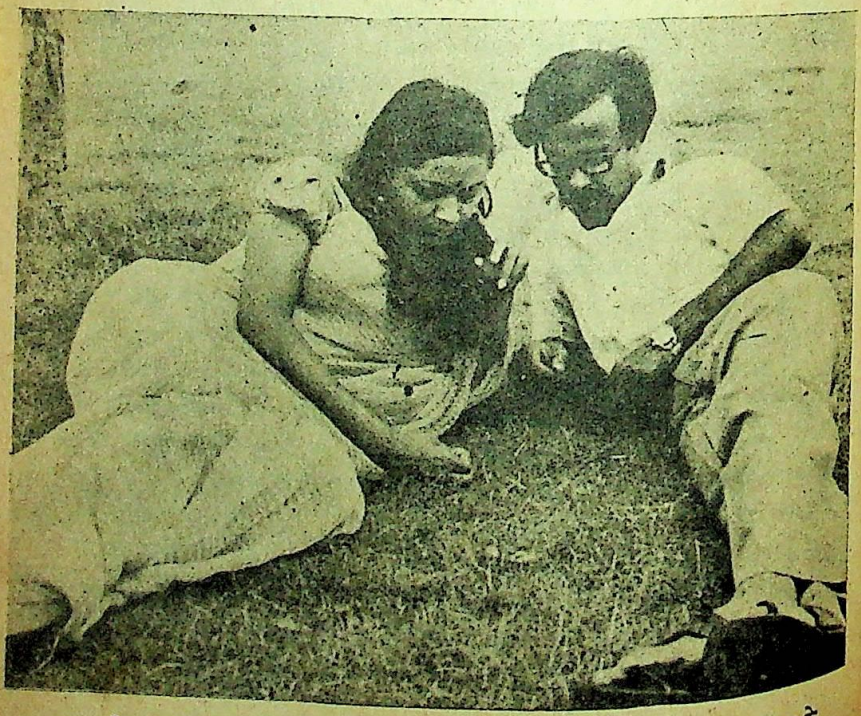

मन की बातों को मन में रखने की बजाए अगर आपस में बातचीत कर के भ्रम मिटा लिया जाए तो क्या अच्छा नहीं रहेगा?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मॉडेला ऊनी सूटिंग पर है श्रेष्ठता का निशान -

नयी, मिलावट-रहित, शुद्ध ऊन का अन्तर्राष्ट्रीय प्रतीक!

वूलमार्क— सारे संसार में ऊन के मिलावट-रहित, शुद्ध और नयी होने का एकमात्र विश्वसनीय प्रतीक है। आप पूरे विश्वास से अपनी मनपसन्द स्टाइल में मॉडेला की शुद्ध ऊन की सूटिंग व बुनाई की ऊन इस्तेमाल कर सकते हैं क्योंकि इन पर वूलमार्क है।

नयी, मिलावट-रहित और शुद्ध ऊन की सूटिंग की पहचान — वूलमार्क

modella

CMIWS-25-172 Hin

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"पिक्चर तो बहुत ही अच्छी थी, तुम भी अवश्य देख आओ."

मेरे मन में हीनता की भावना आती है, परंतु मैं हठात उस भाव को दूर कर हंस कर कहती हूं, "मुझे पिक्चर देखने का बिलकुल शौक नहीं है. कौन तीन घंटे तक बंधा बैठा रहे."

वह चली जाती है तो मैं फिर अपने अतीत में खो जाती हूं. भाई साहब एक महीने में एक पिक्चर तो अवश्य ही दिखा देते थे. कभीकभी सहेलियों के साथ भी जाती थी. पर अब...

किसी भी सहेली को अच्छी साड़ी पहने देखती तो मन ही मन भुन जाती. किसी सहेली को अपने पति के साथ घूमने जाते देखती तो मन ही मन कट कर रह जाती. किसी सहेली के पतिदेव शाम को जल्दी ही आफिस से घर आ जाते तो मैं मन ही मन बुरा महसूस करती, क्योंकि मेरे पति घर हमेशा देर से ही लौटते थे. कभी ब्रिज की महफिल किसी दोस्त के यहां जम जाती थी तो कभी दोस्तों में गपशप करने लग जाते. घर परिवार के लोग शत्रु जैसे लगने लगे. आलस घेरने लगा. सब ओर निराशा ही निराशा. मेरा मन क्रंदन करने लगता, मैं ने ऐसा क्या पाप किया है कि मुझे यह कष्ट भोगना पड़ रहा है?

ईर्ष्या और क्लेश ने मेरे तन मन को खोखला कर के रख दिया. निरंतर मन ही मन कुढ़ते रहने और मानसिक तनाव रहने के कारण मैं बीमार हो गई. तब पतिदेव ने बहुत सेवा की.

जीवन के इस झोंके के साथ मेरा मन एकदम स्वच्छ हो गया. निराशा की चुभन बहुत कम हो गई. मुझे कुछ ऐसा मिल गया था जो जीवन भर मेरे साथ रहने वाला था. उस का नाम था 'गंभीर प्रेम.' जीवन की धारा बिलकुल बदल गई. मैं ने अलिप्त रह कर बहुत कुछ सीखने का मर्म जान लिया. छोटी-छोटी बातों को ले कर मन गंदा करने की भावना दूर हो गई. मुझे पांच वर्ष छोटीछोटी बातों पर मन ही मन कुढ़ते रहने का बहुत पश्चात्ताप हुआ. पर अब यही संतोष है कि मैं ने जीने का मर्म जान लिया है. ●

यह किस देशप्रदेश की भाषा है?

इस स्तंभ में जनजीवन से दूर, उलझी हुई व कठिन भाषा के नमूने प्रकाशित किए जाते हैं ताकि हिंदी को बेजान व किताबी भाषा बनने से रोका जा सके. प्रकाशित उद्धरणों पर दस रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाती हैं. कृपया उद्धरण के साथ प्रकाशक का नाम, प्रकाशन का वर्ष तथा पृष्ठ संख्या भी लिखें.

—संपादक

दीप जला! स्वर्णकिरणराजियुक्त, लोहितपीताभसिक्त. सुदूर अतीत के तमसाच्छादित क्षितिज पर जागृति की ज्योति लिए, अज्ञानांधकार के शतशत आवरणों को विदीर्ण करता, विकास के प्रशस्त पुण्य पथ पर अग्रसर करता, प्रलय के असंख्य झकोरों में कांपता, अमरों के प्रतिनिधि की श्वासों से प्रकंपित, जल प्लावन की लहरों पर तैरता, कामगोत्रजा श्रद्धानामाषिका की करुण कोमल अंगुलियों का सरस स्पर्श पा कर—दीप जला!

—सन्निवेश (दो) : श्याम श्रोत्रिय (प्रेषक : राकेशकुमार, बीकानेर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

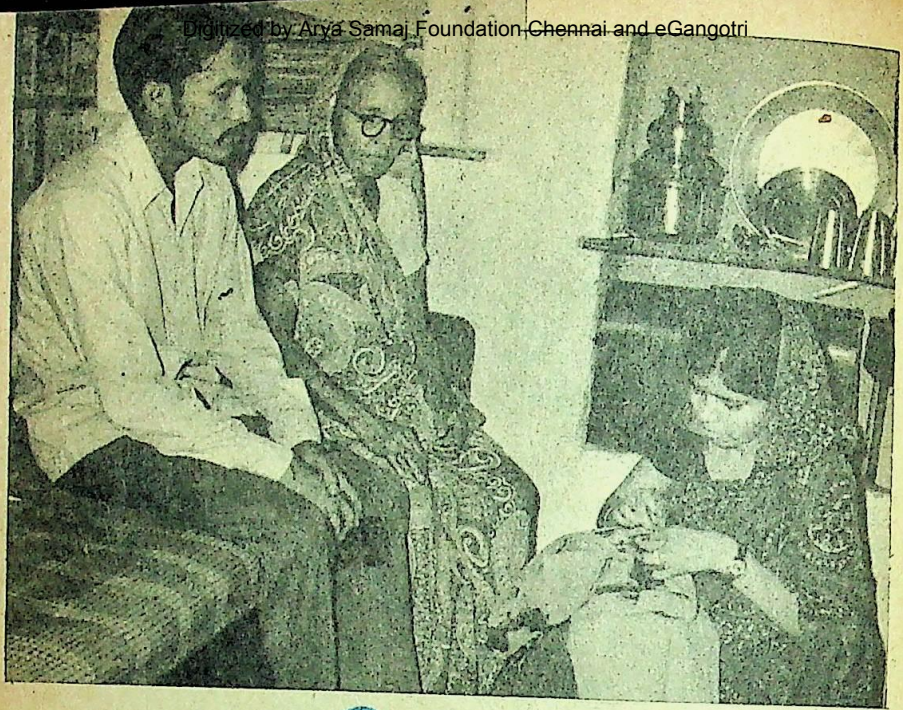

टूटते परिवार

युग के साथ होते विघटनों में संयुक्त परिवारों का विघटन भी क्रमशः बढ़ता जा रहा है. आपसी संबंध तेजी से टूट रहे हैं. लोग, विशेष कर शिक्षित एवं आधुनिक लोग, संयुक्त परिवार प्रथा से विमुख होते जा रहे हैं.

वैसे भी संयुक्त परिवार उचित प्रतीत नहीं होता. अब तक हमारे यहां समझा जाता था कि परिवार में जितने अधिक लोग जितने अधिक समय तक साथ रह लें उतना ही वह परिवार सम्माननीय है. अब भी हम यही समझते हैं. सम्मिलित रूप से रहने पर पारिवारिक शक्ति, चाहे वह आर्थिक हो या सामाजिक अथवा शारीरिक, बढ़ जाती है. परंतु सम्मिलित परिवार होने से उत्पन्न दोष भी नगण्य नहीं हैं. कम से कम शिक्षित व्यक्ति जिस का बौद्धिक स्तर पूर्वजों की अपेक्षा उच्चतर है, वह इन दोषों को अनदेखा नहीं कर सकता. सम्मिलित परिवार के निम्न दोष तो स्पष्ट ही हैं :

लेख • ऋषिवंश

1. सम्मिलित परिवार प्रायः पचीस से पचाससाठ आदमियों तक के होते हैं. सभी व्यक्तियों की रुचियों और सभी व्यक्तियों के दिमाग व स्वभाव में कभी एकरूपता नहीं हो सकती. कोई उग्र स्वभाव का है तो कोई शांत, कोई सात्विक विचारधारा का है तो कोई तामसिक. परिवार के सभी व्यक्तियों में परस्पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्नेह एवं प्रेम हो भी, वह अधिकांश नहीं है. बड़े परिवार प्रायः शहरों से दूर होते हैं जिन में शिक्षित महिलाएं कम ही होती हैं. इन महिलाओं में प्रायः देखा गया है कि वे परिवार के लोगों से आंतरिक ईर्ष्या रखती हैं. हां, यदि वे किसी अन्य परिवार के संपर्क में आएंगी तो उस से अपने परिवार की अपेक्षा अधिक प्रेम दर्शाएंगी. सम्मिलित परिवार होने से प्रायः पारस्परिक मतभेद पैदा हो जाते हैं.

2. सम्मिलित परिवारों में 'प्राइवेसी' नहीं रह पाती. प्रायः पत्नियां परदे में रहती हैं. पति चाहने पर भी दिन में पत्नी से नहीं मिल सकता, यदि मिलता है तो अन्य लोग उसे अजीब सी नजरों से देखते हैं. संयुक्त परिवार व्यवस्था भावुक दंपति के लिए तो बिलकुल ही अनुपयुक्त है.

3. ऐसे परिवारों में कोई व्यक्ति अपनी पत्नी या बच्चे को अपनी रुचि के अनुसार नहीं रख सकता. मान लीजिए; कोई आदमी अपने परिवार में सब से अधिक शिक्षित एवं अच्छी सर्विस में है. वह अपना निजी परिवार आधुनिक ढंग से रखना चाहता है तो पहले तो उस पर सामाजिक बंधन रखे जाएंगे और यदि न भी रखे गए तो वह ऐसा तभी कर सकता है जब परिवार के अन्य लोगों को भी उसी प्रकार रख सके. परंतु यह आज्ञा उस की आमदनी नहीं देती.

4. सम्मिलित परिवारों की सब से बड़ी कमजोरी यह है कि ये कुछ व्यक्तियों को काहिल बना देते हैं. घर में यदि पांच-सात आदमी कमा रहे हैं तो एकाध वैसे ही खातेपीते और पड़े रहते हैं. इस प्रकार वे कार्यशीलता से विमुख हो जाते हैं और सोचते हैं, काम तो चल ही जाएगा, कमानेधमाने की क्या जरूरत है.

5. सम्मिलित परिवार में व्यक्ति पूर्णतया आत्मनिर्भर न हो कर बहुत से मामलों में परिवार पर आश्रित रहता है. यदि हर परिवार को अलगअलग खाने-कमाने दिया जाए तो वे अलगअलग रहने पर आटे दाल का भाव जानेंगे और अपने पैरों पर खड़े होना सीखेंगे.

6. बड़े परिवारों में प्रायः औरतें कामकाज ठीक से नहीं करतीं. वे सोचती हैं कि यह कार्य वह करेगी, वह कार्य यह करेगी. कोई कीमती सामान बेजगह पड़ा है तो पड़ा ही रह जाएगा. उसे कोई उठा कर यथास्थान नहीं रखेगी. इसी तरह खाद्यान्न वगैरा का असंतुलित उपयोग करती हैं. ग्रामीण सम्मिलित परिवारों में नईनई लापरवा बहुएं प्रायः इतना अधिक खाद्यान्न बरबाद करती हैं कि बचने पर वह जानवरों और कुत्तों

बदलती परिस्थितियों के कारण संयुक्त परिवार को विकास में बाधक देख अपने अलग परिवार बसा लेना गलत काम नहीं है. यदि ऐसे समय संयम से काम लिया जाए तो...

पतिपत्नी और बच्चे : आज के युग में इतना ही परिवार सफल हो सकता है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

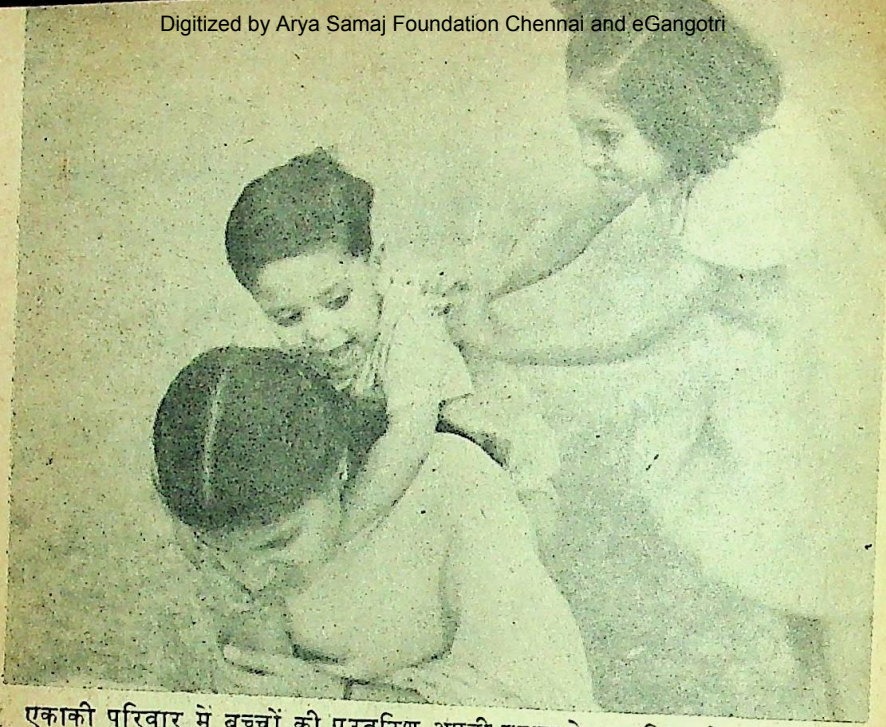

एकाकी परिवार में बच्चों की परवरिश अपनी इच्छा के मुताबिक हो सकती है.

को खिलाया जाता है. इस लापरवाही के पीछे यह भावना रहती है कि 'कौन सा उन की अपनी अंटी से दाम लग रहा है.' यही औरतें जब शहरों में अपने पतियों के साथ जाती हैं तो पैसे दांत से दबा कर रखती हैं अर्थात खर्च अपने मत्थे रहने पर उन में कम खर्च की भावना पनपती है.

7. सम्मिलित कृषक परिवार में यदि युवक भावुक या कवि प्रकृति का होता है तो उसे सभी कामचोर, निकम्मा और न जाने क्याक्या ठहरा देते हैं, क्योंकि एक भावुक व्यक्ति कृषक की तरह अधिक शारीरिक श्रम तो कर नहीं सकता. इधर कवि महोदय के भाइयों की पत्नियां यह सोच सकती हैं कि मेरा पति मेहनत कर के खाए और ये महोदय बैठ कर खाएं. इस प्रकार पारिवारिक कलह पैदा हो सकता है तथा प्रतिभा का संरक्षण एवं मूल्यांकन भी नहीं हो सकता.

8. संयुक्त परिवारों में कोई व्यक्ति अपने बच्चों की उत्तम और उचित परवरिश नहीं कर सकता है. वह संकोचवश बच्चों की इच्छाएं पूरी नहीं कर पाता. उन की शिक्षा भी परिवार के स्वामी पर निर्भर करती है. बच्चों का रहनसहन, तौरतरीके सभी अविकसित रह जाते हैं.

आए दिन हम सुनते हैं कि फलां के परिवार का अमुक व्यक्ति झगड़ा कर के परिवार से अलग हो गया या आपस में भाइयों में मारपीट हो गई आदि. यदि शुरू में ही सब को अलगअलग रखा जाता तो इतना सब होने की नौबत ही क्यों आती? प्रायः परिवार चलाने के झूठे सम्मान की आकांक्षा में रत गृहस्वामी परिवार की उन्नति रोक देते हैं तथा परिवार को अंदरूनी विघटन के करीब ला कर पटक देते हैं.

अतः आवश्यकता है समय पर चेतने की. हां, जब तक हंसीखुशी सम्मिलित परिवार चलता है बहुत ही उत्तम है. अन्यथा बिना किसी लोकापवाद की चिंता किए तुरंत परिवार को टुकड़ों में बांट दें, यही सामयिक सूझ होगी. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

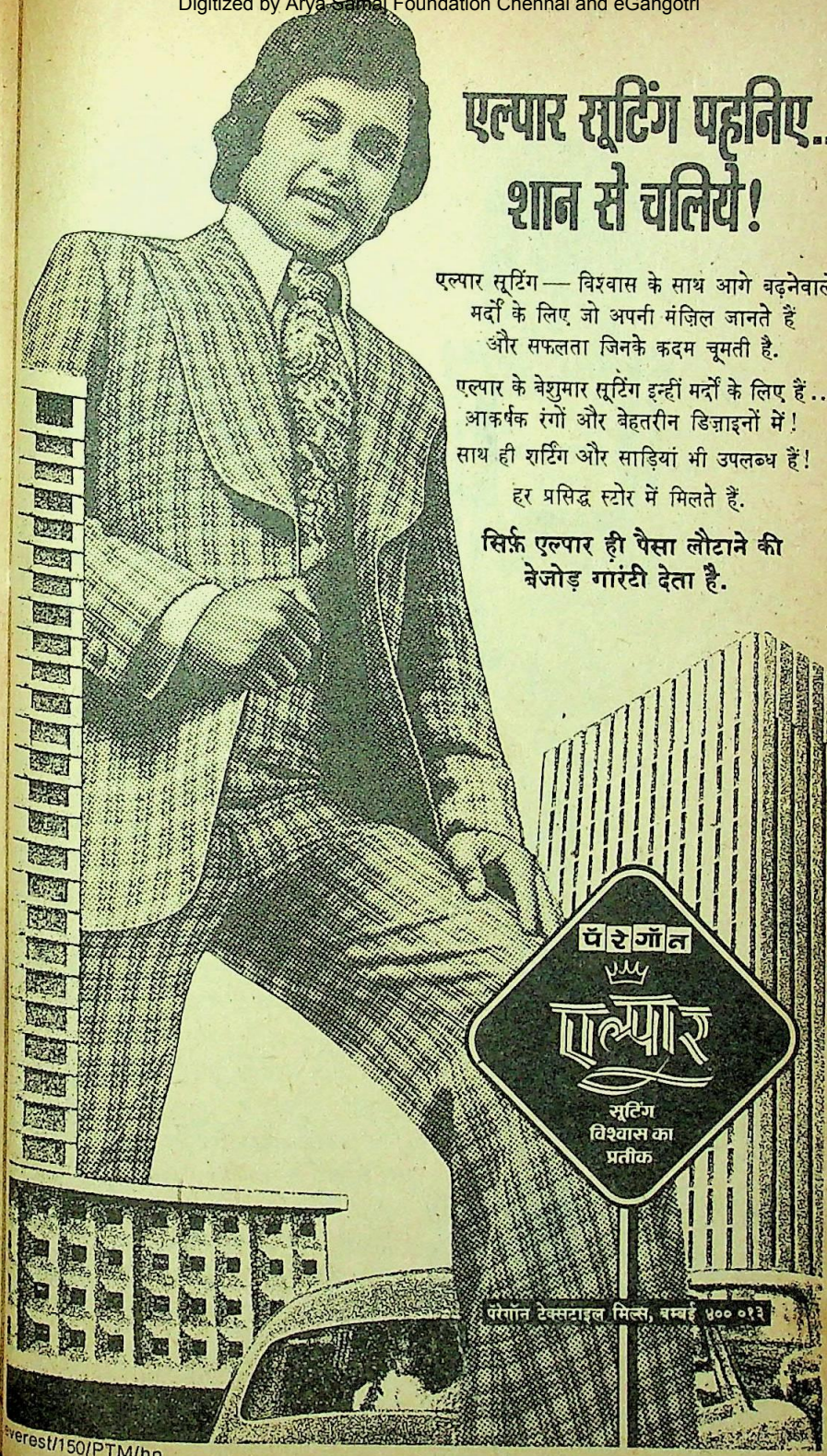

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ENTERTAINMENT AT YOUR FINGER TIPS!

RADIO CEYLON

For family radio entertainment, there's nothing, but nothing, to beat RADIO CEYLON: The best in sheer entertainment, in English, Hindi and Tamil, comes to you with unsurpassed power and clarity. Comb the various wave-bands and see which station tops them all. RADIO CEYLON of course!

ENGLISH—Daily 0600 to 1000 hours	15425 KHZ (19 M) 9720 KHZ (31 M) 6075 KHZ (49 M)
1800 to 2300 hours	15425 KHZ (19 M) 9720 KHZ (31 M) 7190 KHZ (41 M)
HINDI — Mondays	through Saturdays
0600 to 1000 hrs	11800 KHZ (25 M)
1200 to 1400 hrs	7190 KHZ (41 M)
1900 to 2300 hrs	11800 KHZ (25 M) 6075 KHZ (49 M)
HINDI—Sundays only	11800 KHZ (25 M)
0600 to 1400 hrs	7190 KHZ (41 M)
1900 to 2300 hrs	11800 KHZ (25 M) 6075 KHZ (49 M)
TAMIL — Daily 1630 to 1900 hrs	11800 KHZ (25 M) 6075 KHZ (49 M) 7190 KHZ (41 M)
MALAYALAM—Daily 1530 to 1630 hrs	11800 KHZ (25 M) 6075 KHZ (49 M) 7190 KHZ (41 M)
TELUGU — Daily 1430 to 1550 hrs	11800 KHZ (25 M) 6075 KHZ (49 M) 7190 KHZ (41 M)
KANNADA — Daily 1400 to 1430 hrs	11800 KHZ (25 M) 6075 KHZ (49 M) 7190 KHZ (41 M)

ADVERTISERS SEEKING EXPORT MARKETS CONTACT

RADIO ADVERTISING SERVICES

Cecil Court
Landsdowne Road,
Bombay 1
Tel: 213046-47
Grams: RADONDA

30 Fifth Trust
Cross Street,
Mandavelipakkam
Madras 28
Tel: 73736

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मां जैसा प्यार...

बच्चों को मां का दुलार देने की समस्या मेरे सामने थी...

सौतेली मां के रूप में नई जिंदगी की अपनी कहानी मैं कहां से आरंभ करूं, यह एक विचारणीय विषय है. अच्छा तो यही होगा कि इस के पूर्व के जीवन की चर्चा ही न करूं. मुझे दोबारा नववधू बनने का 'सौभाग्य' प्राप्त हुआ था. निस्संदेह मेरे सामने नए चेहरे एवं नए स्वभावों को परखने एवं नई परिस्थितियों में अपने को ढालने की भीषण समस्या थी. यहां एक बात और स्पष्ट कर दूं कि यह नया रिश्ता मेरे पिताजी एवं श्वसुरजी, जो अब नहीं रहे, की सहमति से तय हुआ था.

एक परिवार से कुलटा, कुलच्छिनी व पापिन इत्यादि उपाधियां प्राप्त कर नए घर में प्रवेश किया था. अच्छीखासी गृहस्थी मिली. साथ में मिले दो सौतेले बच्चे, जिन का लालनपालन अब मेरा उत्तरदायित्व था. समस्या यह थी कि मैं उन की असली मां न हो कर इन्हें मां का प्यार दे पाऊंगी या नहीं.

कहते हैं, सौतेली मां अपने सौतेले बच्चों के लिए अभिशाप बन कर आती है. लेकिन मैं ने इसे अपने संबंध में सार्थक नहीं होने दिया. बच्चे निश्चय ही बहुत प्यारे थे. उस समय एक 5 वर्ष का था और दूसरा 8 वर्ष का. मेरी सासजी बूढ़ी परंतु बेहद चतुर थीं. रुपएपैसे की मालकिन वह ही थीं और अब भी हैं. धन की निगरानी वह ऐसे करतीं जैसे किसी बैंक की पहरेदार हों. पर अब स्थिति भिन्न है. बच्चे विद्यालय जाते थे और पति दफ्तर. मैं अच्छी तरह जानती थी कि घर में प्रतिष्ठा प्राप्ति के लिए इन नन्हेमुन्नों व अपनी सास को समुचित प्यार व आदर दे कर संतुष्ट करना मेरा पहला कर्तव्य है.

आरंभ में बच्चे तो मुझ से बोलना भी पसंद नहीं करते थे. एक दिन 8 वर्षीय संतोष ने मुझ से एक छोटा सा प्रश्न किया, "तुम्हारा घर कहां है? यहां क्यों आई हो?" बस फिर क्या था. मेरे लिए सोचना असंभव हो गया कि मैं इसे क्या जवाब दूं.

साहस बटोर कर मैं ने कहा, "बेटे, मैं तुम्हारी मौसी हूं. तुम्हारी मां नहीं है न, इसलिए मैं अब तुम्हारी मां हूं." मैं तब नहीं सोच सकी कि मेरा यह झूठा उत्तर संतोष को संतुष्ट कर सकेगा या नहीं. लेकिन आप को आश्चर्य होगा कि आज भी दोनों बच्चे मुझे मौसी कहते हैं और मौसी के रूप में असली मां के दर्शन पाते हैं.

अपनी सास एक दूसरी मां ही होती है, एक ऐसी मां जिसे मां तो समझा जाता है लेकिन मां के प्यार की आशा

सरिता में पिछले अंकों में सौतेली मांओं के खट्टेमीठे अनुभव प्रकाशित किए जा रहे हैं. इसी श्रृंखला में...इस अंक में प्रस्तुत हैं एक सौतेली मां के कुछ अनुभव. —संपादक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कम ही रहती है. एक तो पराई, दूसरे सौतेली सास को नाक भौं सिकोड़ने के लिए इतना ही काफी था. भारतीय नारी के आदर्शों के अनुरूप मैं एक दिन उन के पांव दबाने बैठी. बस, फिर क्या था! लगीं झाड़ पिलाने, ऐसी झाड़ जो किसी भी नारी हृदय को झकझोरने को काफी थी. वहां भी धैर्य ने मेरा साथ दिया. धीरेधीरे मैं उन के मन में आदर्श बहू के रूप में बैठ गई. स्थिति यहां तक आ पहुंची कि वह उन की (मेरे पति) तनख्वाह प्राप्त कर मुझे रखने को देतीं और मैं बड़े प्यार से कहती, "नहीं, अम्मा, यह बोझ मेरे बस का नहीं है."

धैर्य नहीं खोया

यह सत्य है कि आरंभ में मुझे अत्यंत भीषण परिस्थितियों का सामना करना पड़ा. अनेक बार मेरे जीवन की नाव डूबने की स्थिति में आ गई. परंतु मैं ने धैर्य नहीं खोया. आज हाल यह है कि परिवार में न तो कहीं कलह है और न ही कोई सौतेला व्यवहार. मेरी अपनी संतान न होते हुए भी मैं खुश हूं. मेरे पति भी इस बात से संतुष्ट हैं कि बच्चों का भविष्य तो बन गया. मेरा आज का दांपत्य जीवन पहले से अधिक सुखी एवं शांतिमय है.

यहां मैं धर्म को दोष देने के पक्ष में नहीं हूं. हां, समाज अवश्य दोषपूर्ण है. सौतेली मां का नाम जिस बुराई का पर्याय समझा जाता है, वह वास्तव में हमारे समाज की ही देन है.

हर सौतेली मां की तरह मुझे भी पड़ोस की अफवाहों का सामना करना पड़ा है, सास की झिड़कियां सुननी पड़ी हैं. सौतेले बच्चों की दिलतोड़ बातों के जवाब देने पड़े हैं. कितने ही त्याग करने पड़े हैं. कष्टों को ओढ़नाबिछाना पड़ा है.

यह सच है कि मेरे आगमन से मेरे सम्मानित पति को बिरादरी में कुछ नीचा देखना पड़ा, लेकिन आज वह पहले से भी अधिक सम्मानित हैं. मैं ने बच्चों का अच्छा मार्गदर्शन करने की ठानी और किया भी. आज संतोष बी.ए. (द्वितीय वर्ष) में है और कमलेश इंटर कर चुका है.

आज मुझे इस घर में आए हुए लगभग 10 वर्ष हो रहे हैं. अब भी मेरी अपनी न कोई संतान है और न ही उस की कोई इच्छा है. अब तो बस सोचती हूं कि संतोष की शादी हो और वह शीघ्र ही पिता बने.

यदि आप सौतेली मां हैं तो सर्वप्रथम अपने मन से हीन भावना को निकालिए. बच्चे देश के भावी कर्णधार हैं. कष्ट सह कर भी उन्हें एक अच्छा नागरिक बनाना आप का पहला कर्तव्य है. कष्ट सहने में जो सुख है वह कष्ट देने में कदापि नहीं. थोड़ा धैर्य से काम लीजिए, आप की प्रतिष्ठा भी अवश्यमेव बढ़ जाएगी. आप अपने गुण, स्वभाव व कार्यकुशलता से परिवार को सुखमय बना सकती हैं. ●

प्रेम विहीन हृदय

प्रेम विहीन हृदय के लिए संसार काल कोठरी है, जो नैराश्य और अंधकार से भरी है.

—प्रेमचंद

✦

सच्चा प्रेमी अपने सुखों की तनिक भी इच्छा नहीं करता, वरन जिस से प्रेम करता है उस के सुख पर अपने सुख को उत्सर्ग कर देता है. —सूक्ति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूरे परिवार के स्वास्थ्य के लिये २ फ़ॉस्फ़ोमिन टॉनिक

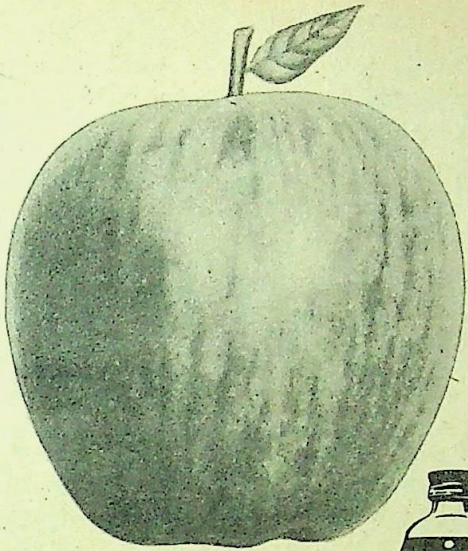

फ़ॉस्फ़ोमिन आयर्न

महिलाओं के लिये आयर्न टॉनिक

फ़ॉस्फ़ोमिन आयर्न शरीर को जरूरी आयर्न देने का एक और साधन है. आयर्न स्वस्थ लाल रक्त का निर्माण करता है और शरीर में आयर्न की उचित मात्रा बनाये रखता है. इसमें बी-कॉम्प्लैक्स विटामिन और विविध ग्लिसरोफ़ॉस्फ़ेट्स भी मिले हैं जो शरीर को स्वास्थ्य और बल प्रदान करते हैं और थकान दूर करते हैं. महिलाओं के लिये विशेष रूप से बनाया गया प्रथम टॉनिक—फ़ॉस्फ़ोमिन आयर्न.

फ़ॉस्फ़ोमिन विटामिन

पूरे परिवार के लिये विटामिन टॉनिक

फलों के स्वादवाला टॉनिक. अच्छे स्वास्थ्य के लिये एक पूरक आहार. इसमें महत्वपूर्ण बी-कॉम्प्लैक्स विटामिन और विविध ग्लिसरोफ़ॉस्फ़ेट्स मिले हैं जो परिवार में सभी को स्वस्थ और चुस्त रखते हैं. परिवार में सभी की पसन्द का टॉनिक—फ़ॉस्फ़ोमिन विटामिन.

फ़ॉस्फ़ोमिन टॉनिक—भूख जगायें, फुर्ती बढ़ायें, स्वस्थ बनायें.

SQUIBB® SARABHAI CHEMICALS LTD.

®ई. आर. स्क्विब ऐंड सन्स इन्कॉर्पोरेटेड का रजिस्टर्ड ट्रेडमार्क है जिसके अनुज्ञप्त उपयोगकर्ता हैं—एस. सी. एल.

Shilpi SC-4A/75 hm.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उधार माल लेने पर दुकानदार रद्दी माल का भी मनचाहा भाव लेने से न चूकेगा...

एक उधार निन्यानवे बीमार

लेख • अनिलकुमार पांडेय

आजकल उधार लेनेदेने की व्यवस्था मध्यमवर्गीय व्यक्तियों में महामारी की तरह व्याप्त है. 99 व्यक्ति उधार की मार से ग्रस्त हैं. उधार लेने के कारण इतने खोखले और तर्कहीन हैं कि यदि बारीकी से देखा जाए तो हम पाएंगे कि उधार लेना अपमान, तिरस्कार और अपने व्यक्तित्व की हत्या के अलावा और कुछ नहीं है. उधार मांगते वक्त चेहरे पर पड़ी शिकनों को यदि उधार लेने वाला व्यक्ति स्वयं पढ़ ले तो उधार के नाम से ही उसे घृणा हो जाएगी.

मान लीजिए, आप को चार सौ रुपए तनख्वाह मिलती है. महीने के बीच में आप को उधार लेने की आवश्यकता पड़ गई. आप का काम उस समय तो चल गया, परंतु आगामी महीनों के लिए कितनी परेशानी, समस्याओं के बीज आप ने बो लिए हैं, आप इस की कल्पना नहीं कर सकते.

महीने के बीच में लिया गया उधार कुछ प्रतिशत ब्याज के साथ अगले महीने के वेतन से आप ने पूरा का पूरा चुका दिया. अगले माह के खर्चे में से आप की एक बड़ी रकम चली गई. आवश्यक खर्चों में कटौती कर के तो आप उस रकम को 'एडजस्ट' कर नहीं सकते, लिहाजा आप का हाथ उधार के लिए दोबारा फैल जाता है. इस तरह ब्याज के पैसे हर माह अतिरिक्त देने पड़ते हैं, वह अलग.

यह सिलसिला वर्षों आप का पीछा नहीं छोड़ता. उधार जिस से लेंगे उस के सामने आप का व्यक्तित्व श्रेष्ठ होते हुए भी हीन हो जाएगा. आप अपनेआप को उस से सदा हीन महसूस करते रहेंगे. सौ रुपए उधार के पीछे दस रुपए कैंटीन के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिल के चुकाएंगे. स्पष्ट है, यह वह बिल होगा जब यदाकदा आप का उस का सामना होने पर आप उसे (जिस से उधार लिए हैं) चायनाश्ते के लिए आमंत्रित करते हैं. इस तरह ब्याज और कैंटीन, रेस्तरां का बिल चुका कर आप को सौ रुपए के एक सौ पंदरह से पचीस तक चुकाने पड़ते हैं. आप की अर्थव्यवस्था निश्चित रूप से इस राह को अपना कर चरमरा कर बिखर जाएगी. हीनता, चिंताएं आप को घेर लेंगी, वह अलग.

उधार में रद्दी माल

उधार का सिलसिला दुकानों (किराना, जनरल स्टोर, क्लाथ मर्चेंट, होटल, केमिस्ट आदि) पर भी चलाया जाता है. उधार माल ले कर आप अपने-आप को रद्दी माल दुकानदार के मनचाहे भावों पर लेने के लिए परोक्ष रूप से तैयार करते हैं. पैसा हर माह अनिवार्य रूप से चुकाना ही पड़ता है (ताकि अगली बार उधार ले सकें). ऊपर से महीने भर दुकानदार के बोझ तले दबा सा रहना पड़ता है.

लोग दलील देते हैं, "क्या करें, साहब, काम ही नहीं चलता. लेनादेना तो बना ही रहता है."

कोई उन से पूछे, व्यवस्था तो उतने ही में से करनी पड़ती है जितनी उन की आमदनी है. इस माह लो, उस माह चुका दो, फिर इस माह का उधार क्यों लो? नकद ही क्यों न लो जो अगले माह चुकाना न पड़े. आवश्यक खर्च अपनी निश्चित आमदनी से ही क्यों न पूरा करें.

उधार लेने के कुछ कारण हैं— दिखावे में अधिक दिलचस्पी, नित नए फैशन, नई प्रदर्शित फिल्म को शीघ्र ही देख लेने की होड़, श्रीमतीजी के लिए नई साड़ी लेने का चक्कर, आदि. घर में चाहे पूरे महीने का राशन न हो, परंतु यदि किसी मित्र ने होटलिंग या पिकनिक के लिए कह दिया तो आप अपनेआप को किसी से कम घोषित नहीं होने देंगे.

शाम को दफ्तर से लौटने पर यदि

उधार ले कर क्यों स्वयं को चिंताओं और परेशानियों के घेरे में कैद कर रहे हैं?

श्रीमतीजी ने घर में 'कूलरफ्रिज' न होने का, दोपहर में दिन भर गरमी में सड़ने का दुखड़ा यदि धारावाहिक रूप से सुनाया, साथ ही अगलबगल श्रीमती क, ख, और ग के घर कूलर होने की सान चढ़ाई तो 'घ' फिर कैसे पीछे रह सकता है. चाहे खींचतान में ओढ़ी हुई चादर चौदह जगह से क्यों न फट जाए.

इसी दिखावे की प्रवृत्ति के कारण मध्यमवर्गीय परिवारों में शादी आदि तय करते समय लड़कियां बड़ी शानशौकत से दिखाई जाती हैं. कुछ समय के लिए बात ठीक वैसे ही दब जाती है जैसे आज उधार से चल गई, परंतु आखिर में हमेशा कष्टदायक स्थितियों का सामना करना पड़ता है.

लोग महंगाई का रोना रोते हैं. ठीक है, महंगाई है तो अवश्य, पर इतनी भयंकर रूप में भी नहीं. ठीक वैसे ही कि मौत भयानक होती है, परंतु उस की भयावहता स्त्रियों के कारुणिक ढंग से रोनेपीटने से अधिक हो जाती है.

आजकल चारपांच सौ रुपए मासिक पाने वाले लोग 100 रुपए की कैफीन और निकोटिन पी कर नकली ऊर्जा प्राप्त करते हैं. इस की जगह यदि वे चाहें तो तीन साढ़े तीन किलो घी खा कर असली ऊर्जा प्राप्त कर सकते हैं. परंतु कहां बहुरंगी टीकोजी से ढका टी सेट और कहां अल्यूमिनियम का घी का डब्बा. उस डब्बे में वह शान कहां जो ट्रे में सजे 'टी-पाट' में. यहां मेरा उद्देश्य चायकाफी आदि का विरोध नहीं, अपितु चाय आदि के बेतहाशा प्रयोग से है.

फिजूलखर्ची आप को उधार लेने के लिए बाध्य करती है. आप अपने बच्चों को बहुत प्यार करते हैं. उन की हर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आवश्यकता का ध्यान रखते हैं. बहुत ही अच्छी बात है कि आप अपने कर्तव्य से भलीभांति परिचित हैं. परंतु आवश्यकता से अधिक ध्यान रखना साधारण आय की स्थिति में फिजूलखर्ची है. मौसम का हर फल बच्चों को खिलाया, बहुत अच्छा किया. परंतु उधार ले कर बच्चों को फलों के ढेर के नीचे पूर रखा यह ठीक नहीं किया. यही बात कपड़ों आदि के विषय में भी कही जा सकती है.

फिजूलखर्ची के कारण उधार

उधार लेने की कुछ आवश्यकताएं भी होती हैं. कुछ आकस्मिक होती हैं, कुछ सुनियोजित. आकस्मिक स्थितियों में बीमारी, दुर्घटना आदि घटनाएं प्रमुख हैं. सुनियोजित में—बच्चों की शिक्षा के खर्च का दबाव, शादी आदि में होने वाले खर्चों का पहाड़ है. इस में आप किसी महंगी चीज को जैसे मकान, स्कूटर, फ्रिज आदि भी शामिल कर सकते हैं. ऐसी स्थिति में आप को उधार लेना पड़ सकता है. परंतु यदि आप अपनी अर्थव्यवस्था की जड़ को उधार के दीमक से बचाते आ रहे हैं तो उपरोक्त कठिन अवसर के झंझावातों को आप सहजता से झेल लेंगे.

यदि थोड़ाबहुत उधार लेना भी पड़ा तो आप सुनियोजित तथा व्यावहारिक जीवन जी कर बड़ी सरलता से मुक्त हो सकते हैं. सुनियोजित तथा व्यावहारिक से मेरा मतलब यह नहीं कि कंजूसी में आप आधे पेट खाएं और फटेचिथड़े पहनें. पालिएस्टर सूटिंग्स की जगह साधारण टेरीकाट भी तो पहना जा सकता है. जापानी जार्जेट और कांजीवरम के स्थान पर हैंडलूम की सुंदर या अन्य साड़ियां तो पहनी ही जा सकती हैं.

मूर्ति, छैनीहथौड़ी के प्रहार से बनाई जाती है. निर्माण की प्रक्रिया में प्रयुक्त चोटों के अलावा यदि प्रहार अधिक तीव्रता से किए जाएं तो निश्चित ही निर्माण तो हो ही नहीं सकता, वरन मूर्ति का खंडित हो जाना स्वाभाविक है. ठीक इसी प्रकार आप की तनख्वाह रूपी शिला है, जिस पर आप के खर्चों के छैनीहथौड़े चलते हैं. संचय और कर्जदारी आप के खर्च प्रहारों पर आधारित है.

दिखावा, शानशौकत तभी स्थिर रह सकती है, जब इस के अनुसार आमदनी हो. नकली शानशौकत के द्वारा आप उपहास के पात्र ही बनते हैं. मान लीजिए, किसी मित्र को आप खाने पर आमंत्रित करते हैं और शानदार तरीके से सत्कार करते हैं. कल फिर उसी से सौपचास उधार मांगते हैं. सब मिला कर यह कुछ व्यावहारिक और गरिमायुक्त नहीं लगता. उस की नजर में आप की शानशौकत खोखली रह जाती है. अतः जो सत्य है, वही सत्य है. जो आप हैं, वही रहें, व्यर्थ का आडंबर ओढ़ेंगे तो परेशानियों का सिलसिला बढ़ता ही जाएगा.

सूक्ति है 'कर्ज वह मेहमान है, जो एक बार घर में घुस आए तो निकाले नहीं निकलता.' जहां तक संभव हो इस अवांछित मेहमान को घर में मत घुसने दीजिए. किसी आकस्मिक समस्या के कारण घुस भी आए तो हर संभव प्रयास से टालने का प्रयत्न कीजिए.

कर्जयुक्त जीवन आप की पारिवारिक खुशियों तथा स्वास्थ्य के लिए अहितकर है. इस स्थिति में व्यर्थ की चिंताएं और परेशानियां आप को सदैव घेरे रहती हैं. एक बार कर्जमुक्त जीवन का आनंद आप को कर्जे से सदैव के लिए तौबा करवा देगा. यही नहीं आप का व्यक्तित्व आप के मित्रपरिचितों में गरिमायुक्त माना जाएगा. हां, यदि किसी का उधार न चुकाना हो तो निश्चित ही आप सुख की नींद सोएंगे तथा व्यर्थ की उदासी व चिड़चिड़ाहट से कोसों दूर रहेंगे. ●

शान ही शान...

शान तो कोशिश में है, इनाम में नहीं. —मिलनर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मृगतृष्णा

कमा कर लाए गए चार पैसों का लालच या पुरुषों के साथ समानाधिकार की होड़ किस से उलझ कर महिलाएं नौकरी के चक्कर में पड़ी हैं?

लेख • बसंती माथुर

आज विश्व में नारी की मुक्ति और समानाधिकारों की चर्चा जोरों पर है. 'अंतर्राष्ट्रीय महिला वर्ष' मनाया जा रहा है. ऐसी स्थिति में नारी का कार्यक्षेत्र घर में सीमित करना अधिकतर बुद्धिजीवियों को मूर्खता ही लगेगी. पर सदियों पूर्व नारी को दिए गए आदरपूर्ण पद 'गृहलक्ष्मी' से बढ़ कर कौन सा ऐसा पद है जो हमें आज का आधुनिक समाज दे सकेगा?

पुरातन काल से ही स्त्री को गृहस्थी का केंद्रबिंदु माना गया है. प्राचीन भारत के सभी युगों में नारी को आदर की दृष्टि से देखा गया है. शारीरिक संरचना के कारण स्त्री का कार्यक्षेत्र अवश्य घर में ही सीमित किया गया पर कहीं भी नारी को पुरुष से हीन नहीं समझा गया है. प्राचीन काल में कोई भी धार्मिक या सामाजिक अनुष्ठान स्त्री के बिना पूरा नहीं माना जाता था, अर्थात जितना आदरमान समाज में पुरुषों का था उतना ही स्त्री का था. आज भी हमारे प्रत्येक धार्मिक व सामाजिक रस्मरिवाज में अर्धांगिनी का होना अत्यंत जरूरी माना जाता है.

आज की नारी अपने कार्यक्षेत्र को ले कर ही समानाधिकार की मिथ्या धारणा से भ्रमित हो चुकी है. घर का काम संभालना, बच्चों की देखरेख करना व पति की इच्छाओं व जरूरतों का खयाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

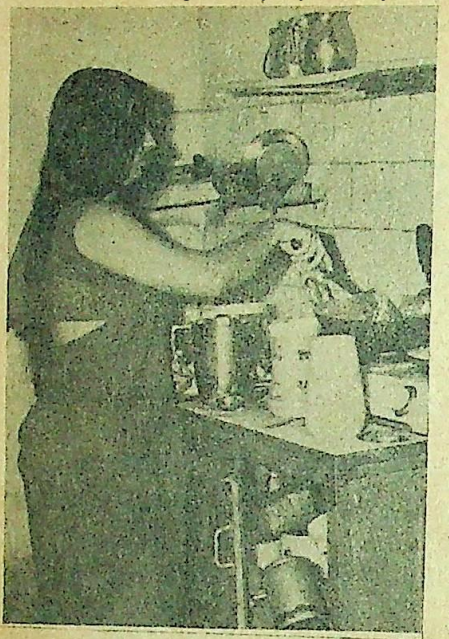

रखना एक आधुनिक नारी को अपमान-जनक लगता है. जो स्त्री घर में अपने पति या सास की एक हलकी सी बात भी सहन नहीं कर सकती, दफ्तर में वह अपने बास की घुड़कियों व साथियों के व्यंग्यों को सहज भाव से सहन कर जाती है.

कार्यक्षेत्रों को ले कर समानाधिकारों का प्रश्न उठाना ही गलत है. घर और बाहर, वास्तव में पारिवारिक जीवन के लिए आवश्यक दो भिन्न कार्यक्षेत्र हैं तथा इन में काम करने वाले किसी भी रूप में एकदूसरे से छोटे या बड़े नहीं हो सकते. यह तो हमारा अपना दृष्टिकोण है कि हम पुरुषों द्वारा किए गए कामों को ज्यादा महत्त्वपूर्ण समझते हैं.

वास्तव में इसी गलत धारणा के कारण आज की नारी अपनी शारीरिक संरचना व शक्ति को भूल हर क्षेत्र में पुरुषों की बराबरी कर पुरुष बनने की असफल कोशिश कर रही है. फलस्वरूप अपने परिवार का व अपना सुखचैन अपने ही हाथों नष्ट करती जा रही है.

कितना अच्छा हो यदि नारी अपनी इस धारणा से छुटकारा पा कर सामाजिक इकाई अर्थात परिवारों को नष्ट होने से बचा ले.

सविता दीदी हमारी शादी के बाद पहली बार हमारे यहां सपरिवार छुट्टियां बिताने आई थीं. पर बड़ी परेशान, बुझी हुई, थकी सी. जब मैं ने एक दिन फुरसत में बैठ कर उन से इस विषय में बातचीत की तो लंबी सांस खींचते हुए दीदी बोलीं, "क्या बताऊं, बहूजी, मैं तो नौकरी के मारे ऐसी परेशान हूं कि कुछ कर ही नहीं पाती. पिछले दो महीनों से तो तरक्की मिल जाने की वजह से पोस्टिंग भी जयपुर के बाहर हो गई है. महीनेबीस दिन बाद जयपुर आना होता है, इसलिए न तो बच्चों को संभाल पाती हूं न घर ही देख पाती हूं. क्या करें, कुछ समझ ही नहीं आता."

एक तो नौकरी की थकावट उस पर घर का ढेर सा काम...कौन रुचि ले?

उन की निराशापूर्ण भावभंगिमा देख कर मैं ने अपनी तरफ से उन की समस्या का समाधान उन के सामने रखा, "अरे दीदी, जब आप इतनी परेशान हैं तो नौकरी छोड़ क्यों नहीं देतीं? जीजाजी की तनख्वाह अच्छीखासी है [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

NOW
a unique gift for your children

CHAMPAK

A colourful, captivating, monthly magazine in English from the publishers of
CARAVAN & WOMAN'S ERA

Delhi Press, the publishers of famous and fast-selling Hindi and English magazines, now bring a new magazine in English for your young children. A magazine that is modern, colourful and beautifully printed. No longer dependence on foreign comics that teach your children violence and mischief in the name of adventure and entertainment.

CHAMPAK on one hand, rejects the comic formula and on the other hand, liberates young minds from the cocktail of mythological and tragic tales of horror, romance and magic. **CHAMPAK** is the modern magazine for children of jet age which teaches them values of honesty, hardwork, friendship and bravery.

CHAMPAK is also the key to knowledge for young children as it brings to them the latest information and keeps them ahead of others.

Buy CHAMPAK for your children today

One Copy Re 1 only
One Year Rs 10 only

Available from your nearest newspaper agents.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अमृतांजन

दर्द और सर्दी-ज़ुकाम को निरापद और निश्चितरूप से फ़ौरन दूर करता है

अमृतांजन सरदर्द, पेशियों के दर्द, मोच, बदन के दर्द और ज़ुकाम से जल्द छुटकारा दिलाता है। अमृतांजन के लगाते ही दर्द ग़ायब ! शीशियों, इकोनॉमी जार तथा कम कीमती टिन की डिबियों में मिलता है।

अमृतांजन—१० दवाओं का एक अपूर्व मिश्रण

अमृतांजन लिमिटेड

AM/7571A

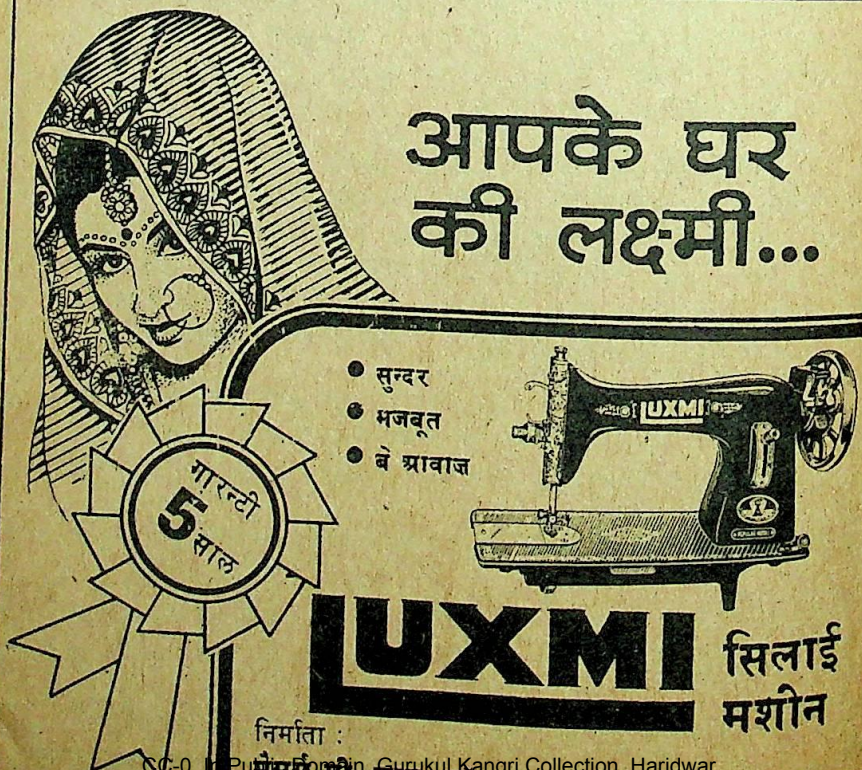

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दि आप स्वयं घर की देखभाल करें तो ई कारण नहीं कि आप का खर्च न ते."

"नहीं, भई, नहीं. इन की तनख्वाह तो आठ सौ रुपए है. उस में घर का र्च तो खींचतान कर चल भी जाए पर च्चों को क्या हम अच्छे स्कूलों में पढ़ा ंगे? मैं अभी नौकरी करती हूं तो दोनों ड़े बच्चों को शहर के सब से बढ़िया न्वेंट स्कूल में डाल रखा है. घर पर ी ट्यूशन के लिए अच्छा मास्टर रखा एक बच्चे पर प्रतिमास कम से कम ड़ सौ रुपए का खर्च है. अगले साल ोटी गुड़िया को भी भरती कर दूंगी. म कितना ही दुख पा लें, बच्चों की जिंदगी तो बन जाएगी."

एक हिंदी स्कूल की प्रधानाध्यापिका के मुंह से कान्वेंट स्कूलों को बच्चों के चहुंमुखी विकास का एक मात्र साधन सुन कर बड़ा आश्चर्य हुआ.

मैं ने एक बात और जाननी चाही, "दीदी, आप को कुल कितना वेतन मिलता है तथा नौकरों की वजह से क्या अतिरिक्त व्यक्तिगत खर्च है?"

मेरे प्रश्न के जवाब में उन्होंने संक्षेप में अपनी आय व खर्च का जो ब्योरा दिया, उस से हम इस नतीजे पर पहुंचे कि वे सिर्फ डेढ़ सौ या ज्यादा से ज्यादा दो सौ रुपए अपनी तनख्वाह में से घरखर्च में दे पाती हैं, जो बच्चों के ट्यूशन आदि में कहां खर्च हो जाते हैं, कुछ पता ही नहीं चलता.

एक और मिलने वाली हैं. किसी स्कूल में अध्यापिका का काम कर रही हैं. पति भी अच्छे पद पर काम कर रहे हैं. चार बच्चे हैं. सब से छोटा बच्चा भी सात वर्ष का हो चुका है. उन से जब बातचीत के दौरान मैं ने यह जानना

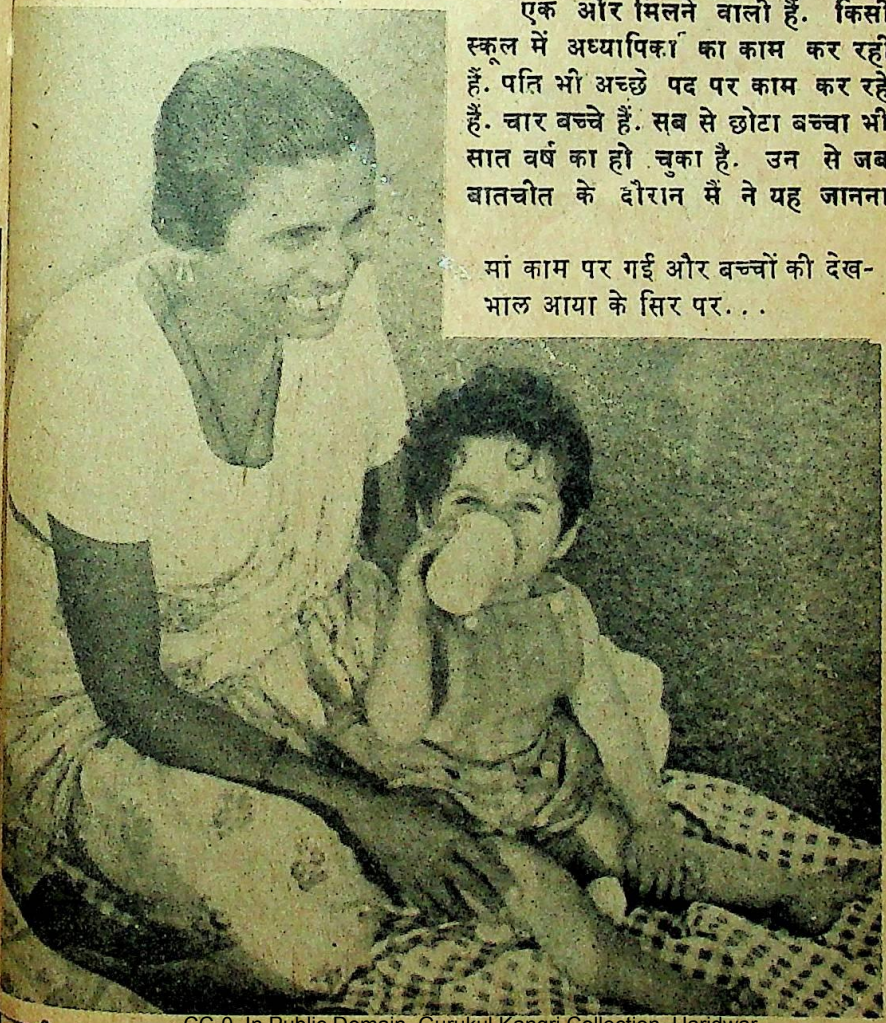

मां काम पर गई और बच्चों की देख-भाल आया के सिर पर. . .

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहा कि उन्हें नौकरी से विमुख करवाया है तो बोलीं, "मेरी तनख्वाह में से इतना तो बचता नहीं कि घरखर्च में कुछ सहायता मिले, क्योंकि मेरे खुद के खर्च, जैसे कि रहनसहन, रोज स्कूल आनेजाने का व साथी कर्मचारियों के साथ चायनाश्ते आदि में भी काफी लग जाता है. मनचाही वस्तुएं भी खरीद लेती हूं, बच्चों की आदत भी खूब खर्च करने की पड़ गई है. पहले जब वे छोटे थे तो मेरे स्कूल जाते ही रोने लगते थे और उन्हें चुप रखने के चक्कर में नौकरानी को रोज एकदो रुपए दे जाती थी. अब बच्चों की आदतें बिगड़ चुकी हैं. उन्हें हमेशा भरपूर जेबखर्च चाहिए."

मेरे यह पूछने पर कि जब वह कुछ बचा नहीं पातीं और उन की गैरहाजिरी में बच्चों की आदतें भी बिगड़ रही हैं तो इस साधारण नौकरी को छोड़ क्यों नहीं देतीं. बोलीं, "नौकरी छोड़ने की बात तो मैं कभी सोच भी नहीं सकती. शादी से भी चार वर्ष पहले से नौकरी कर रही हूं. इस समय सब से बड़ा लड़का 12 वर्ष का हो चुका है. बच्चे जब छोटे थे, जरूर कुछ ज्यादा परेशानी थी पर किसी तरह नौकरों की सहायता से वह समय भी निकल गया. अब तो मेरी नौकरी मुझे जिंदगी का एक हिस्सा लगने लगी है. इसे छोड़ कर दिन भर घर में रहना मेरे लिए असंभव है. इसी बहाने कम से कम रोज घर के बाहर निकलने का मौका तो मिलता है." दो महीने की गरमी की छुट्टियों में ही मैं तो घर और बच्चों से इतनी परेशान हो जाती हूं कि क्या बताऊं, बस इंतजार रहता है कि कब स्कूल खुले और मुझे घर की कैद से छुट्टी मिले."

बच्चे की अच्छी निगरानी मां की तरह कौन कर सकता है?

बच्चों की उपेक्षा कैसे?

कुछ और भी नौकरीपेशा महिलाओं से बातचीत कर मैं इस नतीजे पर पहुंची कि अधिकतर महिलाओं को नौकरी की लत पड़ चुकी है तथा वे अपनी पढ़ाई का एकमात्र उपयोग अपने दफ्तर में ही समझती हैं तथा ये महिलाएं इस बात की तनिक भी चिंता नहीं करतीं कि उन की उपेक्षा की वजह से घर व बच्चों की हालत बिगड़ती जा रही है.

नौकरीपेशा महिलाओं का व्यक्तिगत खर्च प्रायः इस प्रकार होता है :

1. रोज सजसंवर कर दफ्तर जाने के लिए कपड़े, चप्पल, शृंगार प्रसाधन आदि का खर्च : 50 रुपए प्रति माह

2. घर से दफ्तर आनेजाने में सवारी आदि का खर्च : 30 रुपए प्रति माह

3. दफ्तर में अपने साथियों के साथ चायपानी व मनोरंजन का खर्च : 50 रुपए प्रति माह

नौकरी की वजह से घर में होने वाले अतिरिक्त खर्च :

1. अधिकतर नौकरीपेशा महिलाएं इतना समय नहीं निकाल पातीं कि दोनों समय का खाना व बच्चों की देखभाल कर सकें. अतः 90 प्रतिशत महिलाएं घरेलू कामों व बच्चों की देखभाल के लिए रोटीकपड़ा व तीसचालीस रुपए माहवार पर नौकर रख लेती हैं जिस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का पूरा खर्च करीब दो सौ रुपए प्रति माह आता है. इस के अलावा चोरीछिपे नौकर जो मेहरबानी करते हैं सो अलग.

2. बच्चों के लिए ट्यूशन का खर्च प्रति बच्चा कम से कम 50 रुपए प्रति माह.

चूंकि पतिपत्नी दोनों ही अपने दफ्तर के कामों से थक कर लौटते हैं, इसलिए वे बच्चों को पढ़ाने में न तो कोई रुचि रख पाते हैं, न ही हिम्मत. अतः बच्चों के भविष्य के प्रति अत्यंत जागरूक माता-पिता उन के लिए अच्छे ट्यूशन लगा कर ही संतोष कर लेते हैं.

नौकरीपेशा महिला की बचत :

उपर्युक्त मासिक खर्च के योग को यदि 600 रुपए मासिक आय में से घटा दिया जाए तो 150 से ज्यादा नहीं बचते. 20 प्रतिशत महिलाएं, जो ऊंचे पदों पर नियुक्त हैं तथा जिन की आय भी अधिक है, अवश्य अपनी तनख्वाह में से अधिक बचत करती हैं. पर साधारणतया शेष 80 प्रतिशत नौकरीपेशा महिलाएं अधिक बचत नही कर पातीं. इन सौ डेढ़ सौ रुपयों के पीछे बच्चों के भविष्य और पति की इच्छाओं की अवहेलना करना क्या उचित है?

घरेलू काम और बचत

स्त्री यदि अपनी सूझबूझ व चतुराई का संपूर्ण उपयोग घर में ही करे तो वह निश्चय ही साधारण नौकरी वाली महिला से कहीं ज्यादा बचत कर सकती है. आम तौर पर इस प्रकार की बचत पर कोई ध्यान नहीं दिया जाता क्योंकि सदियों से चली आ रही सामाजिक परंपरा के अनुसार खाना बनाना, बच्चे संभालना व घर संभालना स्त्री के अति आवश्यक कार्य समझे जाते हैं. स्त्रियां स्वयं भी घर के कामों को महत्त्वपूर्ण नहीं समझतीं. पढ़लिख जाने के बाद तो उन का एकमात्र आकर्षणकेंद्र नौकरी बन जाता है. महीने की पहली तारीख को

मां तो घर में नहीं हैं. अपना 'होम वर्क' खुद ही पूरा करना पड़ेगा.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिलने वाली तनख्वाह के कड़कड़ाते नोटों की खुमारी में वे घर के कामों का महत्त्व व उन से की जा सकने वाली बचत के बारे में सोच भी नहीं पातीं. वैसे इस बचत के आंकड़े भी कुछ हद तक इस प्रकार हैं :

मासिक बचत :

1. दालें, मसाले, बेसन, पापड़, बड़ियां आदि घर पर बना कर की गई बचत 15 रुपए.

2. शरबत, नाश्ते की नमकीन, मीठा व अन्य खानेपीने की वस्तुओं को बनाने से 20.00 रुपए.

3. बरतन, झाड़ू व नौकरों से कराए जाने वाले काम स्वयं कर के की गई बचत 30.00 रुपए.

4. धोने का साबुन या सर्फ घर पर बना कर, कपड़े धोने, इस्त्री करने से बचत 30.00 रुपए.

5. सिलाई, बुनाई, कशीदे व अन्य रचनात्मक कामों द्वारा की गई औसत बचत 40.00 रुपए.

6. बच्चों के ट्यूशन में दी जाने वाली राशि की बचत 60.00 रुपए.

कुल बचत 195.00 रुपए

घरेलू बचत का महत्त्व

इस प्रकार साधारण नौकरीपेशा महिला की वास्तविक बचत की तुलना यदि घर में की जा सकने वाली बचत से करें तो घरेलू बचत का पलड़ा ही भारी रहेगा. गृहिणी द्वारा घर संभालने के कुछ अमूल्य लाभ :

कुछ बातें ऐसी होती हैं जिन की कीमत नहीं आंकी जा सकती—बच्चों का भविष्य व पारिवारिक शांति, कुछ ऐसी बातें हैं जिन्हें सिर्फ महसूस किया जा सकता है.

बच्चों की जननी होने के नाते बच्चों की जितनी अच्छी परवरिश मां कर सकती है उतनी दादी, नानी या बढ़िया से बढ़िया आया भी नहीं कर सकती. मनु के अनुसार बच्चे के लिए सौ आचार्यों के बराबर दस पिता हैं और दस पिता के बराबर है एक मां. क्यों न हम जननशक्ति को प्रकृति का एक आशीर्वाद समझ कर उस के बाद आने वाली सभी जिम्मेदारियों को गौरवपूर्ण ढंग से पूरा करें. मां की उचित देखरेख व बढ़िया परवरिश के बाद जब बच्चा सफलता की सीढ़ियां लांघता हुआ उन्नति की ओर बढ़ता जाता है तो मां को कितनी खुशी होती है, इसे सिर्फ मां ही महसूस कर सकती है.

परिवार में एकाकीपन की भावना

घर में सुखचैन हर पुरुष चाहता है. पर यदि आप दिन भर दफ्तर में रहती हैं तो चाह कर भी आप घर में उतना समय नहीं दे सकतीं जितना आप के घर के लिए आवश्यक है. फलस्वरूप आप की उपेक्षा के शिकार आप के बच्चे असुरक्षित हो लड़तेझगड़ते व चीखतेचिल्लाते रहते हैं. पति भी आप की व्यस्तता को अपनी अवहेलना समझने लगते हैं. इस प्रकार घर का हर सदस्य एक अलग इकाई बन जाता है और आप लाख कोशिश के बावजूद अपने ही परिवार में सुख व चैन नहीं पा सकतीं.

खिलखिलाते, साफसुथरे, आकर्षक सभ्य बच्चे, दफ्तर की थकान को घर में घुसते ही भूल जाने वाले हंसमुख पति, आप के लिए एक अमूल्य सपना बन कर रह जाते हैं.

उपर्युक्त तथ्य व युक्तियों का यह अर्थ नहीं कि प्रत्येक महिला नौकरी छोड़ दे, क्योंकि कुछ प्रतिशत महिलाएं ऐसी हैं जिन के घरों की स्थिति किन्हीं कारणों की वजह से ऐसी हो गई है कि अपने परिवार का पालनपोषण करने का भार उन पर आ पड़ा है, लेकिन जो सिर्फ इसलिए नौकरी कर रही हैं कि वे पढ़ीलिखी हैं और अपनी पढ़ाई का एकमात्र उपयोग दफ्तरों में ही समझती हैं, उन से प्रार्थना है कि वे इस नौकरीरूपी मृगतृष्णा के पीछे न दौड़ कर बेकारी की विभीषिका से त्रस्त अपने भाइयों, भतीजों व मजबूर बहनों के लिए, नौकरी के लिए होने वाली प्रतियोगिता को कुछ आसान कर दें. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हाथों और शरीर की देखभाल के लिए अब एक सौंदर्यसाधन

...वेसलीन इन्टेन्सिव केयर लोशन से. अपने हाथों और कोहनियों में केवल कुछ बूंदें कोमलता से मलिए, और हाथों में कोमलता का फ़र्क़ महसूस कीजिए. कितने खूबसूरत हाथ! फटे अंगूठों और फटी एड़ियों के बारे में सावधानी बरतिए. अपनी त्वचा को अंग अंग कोमल और अनुकूल बनाए रखने के लिए ये लोशन इस्तेमाल कीजिए. अतिरिक्त गुणकारी, चिपचिपाहट रहित फ़ार्मूला— वेसलीन इन्टेन्सिव केयर लोशन.

दो साइज़ों में मिलता है— १०० मि.ली. और १८० मि.ली.

वेसलीन® इन्टेन्सिव केयर® लोशन

अंग अंग की पूरी पूरी देखभाल

चीज़ब्रो पाण्ड्स इन्क. (सीमित दायित्व के साथ यू.एस.ए में स्थापित)

लिंटास - VICL. 2-77 HI

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐटेक्स

सौंदर्य प्रसाधन

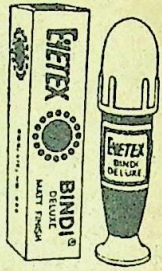

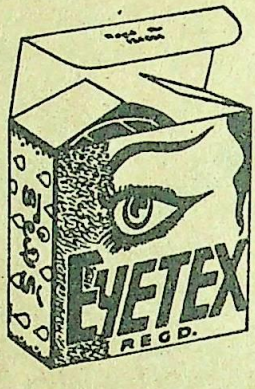

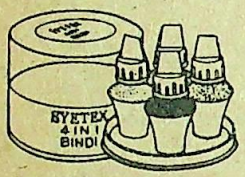

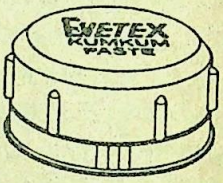

ARAVIND LABORATORIES MADRAS-600 033

जी ई सी ओसरम ट्यूब लाइट

वर्षों इस्तेमाल के बाद भी नयी जैसी उज्ज्वल रोशनी

GEC Osram

ट्यूब के छोर काले नहीं पड़ते अधिक घटे एक समान उज्ज्वल रोशनी मिलती है।

Trade Mark GEC and Osram Permitted User—The General Electric Company of India

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यंग्य • रामसरन शर्मा

मेरे नए फैशन के जूते

कहानी सचमुच जूतों की है--यानी एक जोड़ी जूतों की. वही इस के नायक हैं. मैं तो केवल निमित्त मात्र रहा हूं, उन की कृपा या अकृपा का.

हां, एक बात और है. मुझे नए प्रयोग करने में आनंद आता है और मैं जूतों के मामले में काफी फैशनेबल हूं, या कभी था. अब कुछ कमी आ गई है. इस का कारण भी यही जूते हैं.

तो कहानी का आरंभ--आप को स्मरण होगा कि कुछ दिन पहले तंग 'टो' यानी पंजे का जूता पहनने का फैशन चला था यों महंगाई के कारण अब फैशन कम हो गए हैं. पर फिर भी कुछ न कुछ तो फैशन में हेरफेर होती ही रहती है. सो तंग पंजे का फैशन आ गया था.

और उन्हीं दिनों हमें भी जूता खरीदना था. पुराने जूते महोदय जीभ निकाल गए थे. सूरतशक्ल भी बिगड़ गई थी. कुछ ऐसा लगता था मानो टी.बी. से उठे हों,

नए फैशन के जूते क्या खरीदे मुसीबत ही मोल ले ली... लोग पागल समझ कर हमारा मजाक उड़ाने लगे...लेकिन हम पर क्या गुजर रही थी— यह किसे पता?

या बुढ़ापे की झुर्रियां परेशान किए हों. दिल्ली की शानदार जूते बनाने वाली दुकान के सूटसज्जित मोची ने उन्हें देख कर, कुछ ऐसा कड़वा मुंह बनाया कि हम पर घड़ों पानी पड़ गया. जूते मरम्मत कराने का विचार त्यागना पड़ा.

नए जूते लेने की मन में ठान ली. फिर जब फैशनेबल जूते लेने थे तो बड़ी दुकान पर जाना ही था. श्रीमतीजी ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

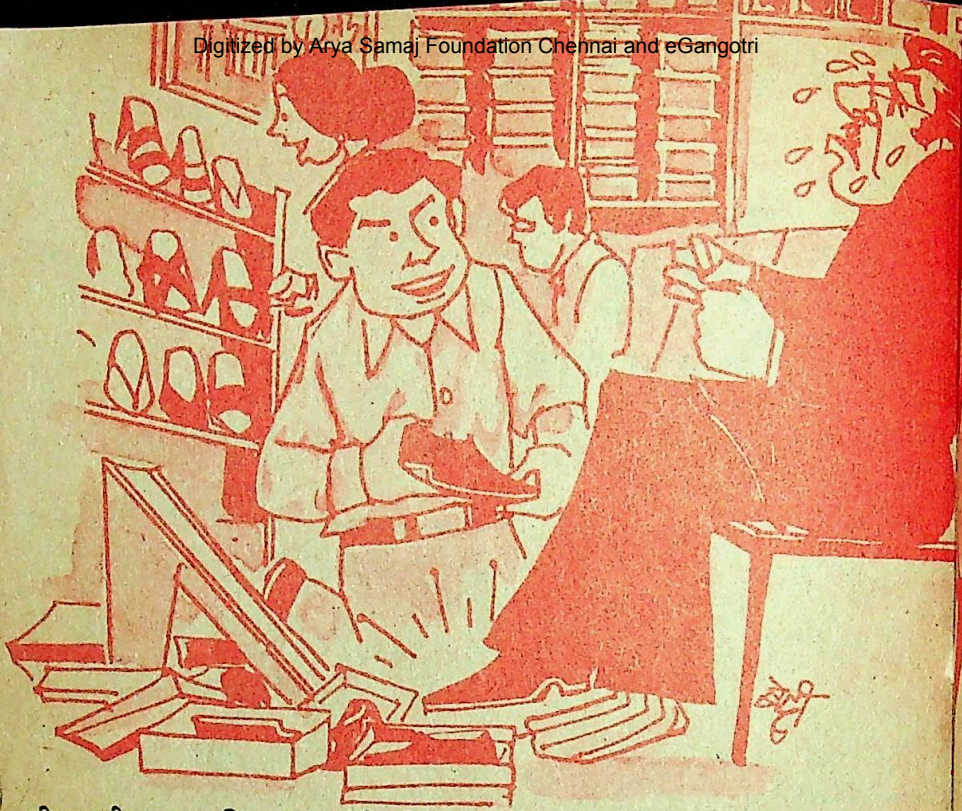

भी काफी उत्साह दिखाया, "भई, चीज लेनी हो तो बढ़िया ही लेनी चाहिए." 'महंगा रोए एक बार सस्ता रोए बारबार' जूते का ही तो असली रोब पड़ता है. वह एक अच्छा सा विज्ञापन निकलता है न..."

शाम को दफ्तर से लौट कर हम घर आए. चाय पी कर जो चलने लगे तो श्रीमतीजी भी तैयार हो गईं, "आप न जाने कैसा जूता ले आएं, मैं भी चलूंगी. जरा टहलना भी हो जाएगा."

टहलतेटहलते हम दुकान पर पहुंचे. दुकान जगमगजगमग कर रही थी. चारों ओर जूते ही जूते हंस रहे थे, मुसकरा रहे थे, बुला रहे थे. चमचमाते सेल्समैन ने चट हमें थाम लिया और सूचना दी, "लेडीज सैंडिल आई है, एकदम नए डिजाइन की."

श्रीमतीजी ने तुरंत कहा, "पहले इन के लिए जूते दिखाइए."

इस 'पहले' शब्द पर हम चौंके, गौर से उन्हें देखा. वह उस समय बड़ी सुंदर लग रही थीं उस नकली रोशनी के कारण शायद. यों भी वह काफी सुंदर हैं. पहले से तो कुछ कम, पर अब भी काफी.

सेल्समैन ने हमारे जूते को देखा, फिर हलका सा मुंह बना कर पूछा, "यह जोड़ा आप ने कब लिया था?"

हम 'हूं' कर के रह गए. श्रीमतीजी लेडीज सैंडिलों को घूर रही थीं. उन में रखी सुंदरसुंदर रंगबिरंगी सैंडिलें बसंत में मदमाती रूपसियों के समान मुसकरा रही थीं.

खैर, उधर से दृष्टि मोड़ हम ने अपने जूते की ओर ध्यान दिया. देखा, तो सेल्समैन ने एक तंग पंजे वाला जूता हमारे सामने प्रस्तुत किया हुआ था. हमें अपने छः इंच चौड़े पंजे पर रहम आया, जो बरसों की चप्पल घिसाई के बाद इतना फैल पाया था. हम ने कहा, "कोई चौड़ी 'टो' का जूता दिखाओ."

सेल्समैन ने मुसकरा कर कहा, "चौड़ी 'टो' क्या? साहब, आजकल तो उस का फैशन नहीं, तंग पंजे का फैशन है."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमें लगा मानो उस ने हमें गाली दे दी हो. भला, हम और फैशन न मानें, या न बरतें. हमें प्राण देना स्वीकार था, पर गंवार बनना नहीं. सो हम ने चुपचाप जूते में पैर डाल दिया. उस का नंबर वही था जो हमारे पैर का, पर सच मानिए पैर आधा भीतर जाने के बाद अड़ गया और पंजे महोदय उस बिल में जाने को किसी भाव भी तैयार न थे.

"जरा बड़ा दिखाओ," हम ने माथे का पसीना पोंछ कर सेल्समैन से कहा.

वहां गया तो श्रीमतीजी कान में बोलीं, "लो, और पहनो चप्पल. पांव को खुरपा बना रखा है." फिर उठ कर मंत्रमुग्ध सी जनानी सैंडिलों की ओर बढ़ गईं. हमें हलकाहलका हृदय का दौरा पड़ने लगा.

हम ने आसपास देखा. दोचार और लोग भी जूते पहन रहे थे. वही छोटे पंजे के उन के पांव मजे से भीतर चले जा

हम ने जूते में पैर को ठूंस दिया... पंजे ने चीखना चाहा, पर हम ने उस का गला घोंट दिया. इतने में सेल्समैन ने पूछा, "ठीक है, साहब?"

बल, न पसीना और हमारा शरीर पसीने से भीगता जा रहा था. क्या समझते होंगे वे लोग हमें?

दूसरे चमकदार जोड़े को सामने रख कर सेल्समैन मानो कटे पर नमक छिड़कते हुए बोला, "लीजिए, साहब, सब से बड़ा साइज यही है."

हम ने उस में पैर ठूंस दिया. पंजे ने एक बार चीखना चाहा, पर हम ने उस का गला घोंट दिया. अर्द्धमृत हो कर वह भीतर घुस गया और कराहकराह कर हमें कोसने लगा.

"ठीक है, साहब?" सेल्समैन ने पूछा.

हम ने हां कह दिया, यद्यपि पैर में आग सी लगी हुई थी. सेल्समैन चट से जूता उतार कर पैक करतेकरते बोला, शायद हमारी दशा ताड़ कर, "पहनने से जूता कुछ खुलेगा, साहब."

श्रीमतीजी मेरे पास आ कर बैठ गईं. सेल्समैन ने दो पैकेट ला कर दिए.

"दो क्यों?" हैरान हो कर हम ने पूछा.

पता चला, श्रीमतीजी का सैंडिल भी है. बिल था 72 रुपए का. 31 हमारे फैशनेबल जोड़े के, शेष उन के. हम ने पैसा चुका दिया, क्या करते? रास्ते भर देवीजी हमारे जूतों की प्रशंसा करती रहीं. खूब सस्ता है, बढ़िया भी. चाकलेट और नीले, दोनों सूटों के साथ खूब चलेगा. उन के तनिक सांस लेते ही हम ने उन की सैंडिल की चर्चा चलाई, इतने पैसे जाने की बात निश्चय ही कांटे सी गड़ रही थी, जब कि उन के पास छः जोड़ी थीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह हमारे हाथ में हाथ डाल कर बोली, "भई, क्या करूं? इतने नए फैशन की और इतने कम दामों की सैंडिल देख कर मन न माना,... चलो, अब महीना समाप्ति पर है ही. न होगा तुम्हारी कमीजों का कपड़ा अगले महीने ले लेंगे. खादी आश्रम में उन दिनों रेट भी रियायती होने वाला है."

हमारे हृदय में उन की बातों से चिनगारियां सुलग रही थीं. साथ ही उन की नर्मनर्म बांह और सुमधुर सामीप्य हमें भड़क उठने से रोक रहे थे.

दूसरे दिन दफ्तर जाते समय हम नए जूते पहनने बैठे. शू हार्न की सहायता से, दांत भींच कर, हम ने पैर उस में डाल ही दिया.

"ठीक है न?" श्रीमतीजी ने पूछा.

हम मुसकरा भर दिए, यद्यपि पैर की हड्डीहड्डी दर्द कर रही थी. अंगुलियों की दशा तो काफी बुरी थी.

बस स्टाप तक पहुंचतेपहुंचते तो हम रोने लगे. ऐसा लग रहा था मानो स्टाप मीलों दूर है, मानो आएगा ही नहीं. वहां उपस्थित लोगों ने हमारे जूतों पर दृष्टि डाली नहीं. सो मन मारे बस में जैसेतैसे चढ़ गए. पर विश्वास कीजिए दफ्तर पहुंचतेपहुंचते हमें अपने किए सारे बुरे कर्म याद आ गए. पढ़ा था कि मध्य युग में रोमन कैथलिक संप्रदाय में किसी से धर्महीनता की बात उगलवाने के लिए ऐसा ही लोहे का जूता पहनाया जाता था, जो धीरेधीरे तंग होता जाता था. हमें विश्वास होने लगा कि हमारा जूता भी कुछ उसी प्रकार का बना है.

दफ्तर तक हम लंगड़ाने लगे थे. सो चौकीदार ने दांत निकाल कर कहा, "साहब, तकलीफ है क्या?"

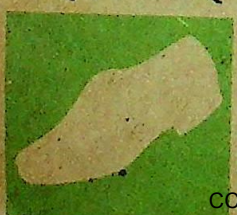

"हां," कह कर हम आगे बढ़ गए.

फिर यही बात फर्राश ने, लिफ्टमैन ने, चपरासी ने भी कही. हम ने उत्तर देना ही व्यर्थ समझा. बस झट से कुरसी पर बैठ कर चटपट अपने जूते खोल डाले, अधा कर दोचार सांसें लीं," माथे का पसीना पोंछा और एक सिगरेट जलाई. उस समय हम मनचाहा भोग रहे थे.

दिन तो कट गया, पर संध्या को पैरों ने जूते में जाने से इनकार कर दिया. लाख जोर मारा पर या तो हमारे पांव ही दबाव के कारण कुछ सूज गए थे, या स्वभावानुसार जूते कुछ और छोटे हो गए थे. वे पहने ही न गए.

अब सूरत यह थी कि घड़ी की सूई पांच से ऊपर हो गई थी और हम हाथ में जूते लिए बैठे थे. नंगे पांव न बाहर जा सकते थे, न सड़क पर चल सकते. और वह भी तब, जब हाथ में नए जूते हों. सोचसोच कर हम ने जूतों की उसी दूकान पर फोन किया, अपनी समस्या समझाते हुए बताया कि शायद जूते रात भर में और छोटे हो गए थे.

उधर से उत्तर आया, "जी! क्या कहा? आप ने जूते लिए थे कल, हमारे यहां से? फिट करा कर और रात भर में छोटे हो गए? साहब, न तो आज पहली अप्रैल है, न हम बेचा माल वापस लेते हैं." टेलीफोन बंद हो गया. हम समझ गए कि या तो दुकानदार ने हमें पागल समझा है या मसखरा.

फिर हम ने घर टेलीफोन किया. अपनी विपदा सुना कर श्रीमतीजी से पुराने जूते ले कर दफ्तर आने को कहा पर उन्होंने जो उत्तर दिया वह सुन कर मानो हमारा दम निकल गया. पुराने जूते नौकर को दे दिए गए थे.

अब एकदम लाचारी थी.

हम ने एक सिगरेट पी कर फिर से योजना बनाई. उस के अनुसार चपरासी को छुट्टी दे दी. समय कुछ और बीतने दिया. जब बाहर की चहलपहल मिट गई, हम हाथ में जूते ले कर नंगे पांव दफ्तर से निकले. सामने ही मिला चौकीदार. उस ने एक बार हमें सिर से पांव तक देखा, फिर सलाम कर के कमरा बंद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

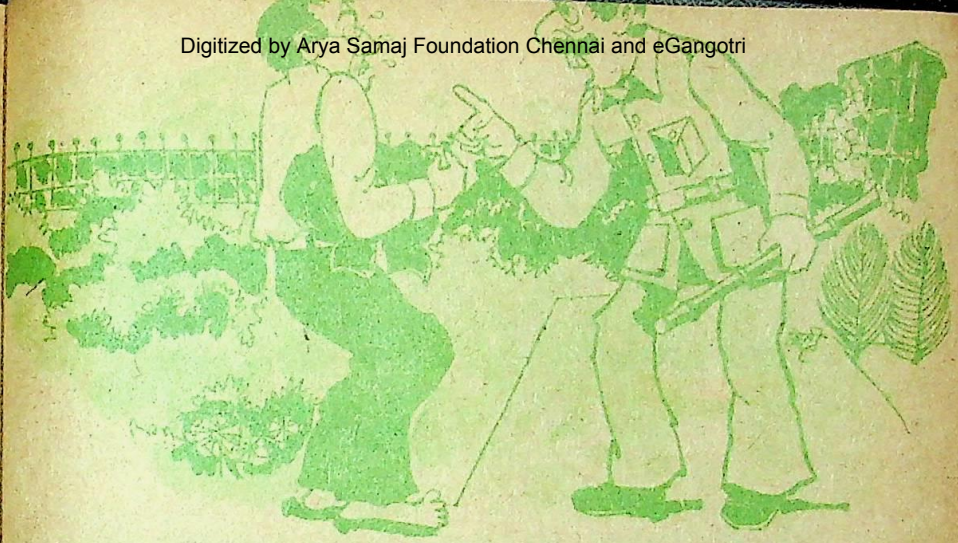

बाग के चौकीदार ने पहले हमारे नंगे पैरों को घूरा और फिर पूछा, "कहां से आ रहे हो?"

करने चल दिया. अब लिफ्टमैन का सामना करने का हमारा साहस न था सो सीढ़ियां उतरने लगे. पर हुआ ऐसा कि राह में कहीं मेहतर मिलता, कहीं चौकीदार और सब की दृष्टि हमारे नंगे पांव तथा हाथ में लपेटे बंडल पर ही पड़ती. हमें ठीक पता है कि वे सब घूरघूर कर तक देखते रहते थे.

बाहर आ कर हम पास वाले बाग में घुस गए. एक झाड़ी की ओट में बैठ कर हम ने कोट तथा नेकटाई भी उतार डाली. जूतों को उन में लपेट लिया और उस फटीचर हुलिया में पैदल घर जाने की ठहराई.

काफी अंधेरा होने पर हम झाड़ी की ओट से निकले. चुपचाप फाटक की ओर जा रहे थे कि सामने बाग का चौकीदार आ गया. उस ने एक बार हमें देखा. हमारे नंगे पैरों को घूरा और फिर पूछा, "कहां से आ रहे हो?"

"वहां से," हम ने झाड़ी की तरफ दिखा कर कहा.

वह कुछ देर सोचता रहा, फिर बोला, "बगल में क्या है?"

हम ने सीधेसादे बता दिया, "कोट है, टाई है, जूते हैं."

अब और क्या कहें? बड़ी दर्दनाक कहानी है. चौकीदार को हमारी हुलिया, पतलून तथा नंगे पांव पर संदेह था ही. पर जूते देख कर पुलिस को हमारे चोर होने का विश्वास हो गया. वह तो जब घर से देवीजी आईं, हम ने अटकअटक कर जूतों की कहानी सुनाई, तब एक ठहाके के साथ पुलिस इंस्पेक्टर ने हमें छोड़ा.

घर जाते समय रास्ते में नए जूते खरीदे गए, चौड़े पंजे के. दुकानदार ने भी हमारे नंगे पांवों को खूबखूब घूरा.

वहीं हम ने देखा श्रीमतीजी के नए सैंडिल को. खूब चौड़े पंजे का, आगे से खुला हुआ था. उन के लिए फैशन था.

अब हम दफ्तर से छुट्टी लिए पड़े हैं. कारण यह है कि सारे चौकीदारों, मेहतरों ने यह बात फैला रखी है कि हमारा दिमाग बिगड़ गया है और हाथ में जूते ले कर कपड़े फाड़ते मुंह से फेन गिराते, वही तबाही बकते, सड़कों पर घूमा करते हैं. कई बार पुलिस ने पकड़ कर घर भी पहुंचाया है.

स्थानांतर का आवेदनपत्र दे रखा है. आप सिफारिश कर के करवा सकें तो हम आप को एक जोड़ी लगभग नए तंग पंजे वाले बिलकुल नए फैशन के जूते भेंट करेंगे. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रवींद्र साहित्य पर दस प्रतिशत छूट

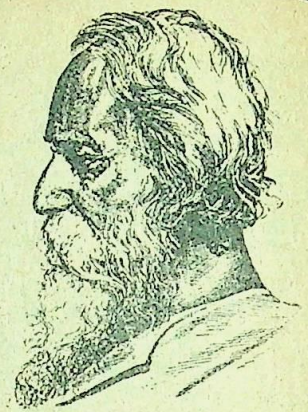

गुरुदेव रवींद्रनाथ ठाकुर की पुस्तकों के बिना आप का घरेलू पुस्तकालय अधूरा है. विश्वविख्यात रवींद्र साहित्य अब हिंदी में भी सुलभ है. दक्ष अनुवादकों द्वारा तैयार रवींद्रनाथ की पुस्तकें अब बहुत ही सस्ते मूल्य में उपलब्ध हैं. ये पुस्तकें स्वयं पढ़ने तथा उपहार देने योग्य हैं. आज ही इन का आर्डर दीजिए.

रवींद्रनाथ की कहानियां
21 कहानियां, 403 पृष्ठ 8.00

रवींद्रनाथ के नाटक (प्रथम खंड)
'विसर्जन,' 'चित्रांगदा' और 'चिरकुमार सभा' का 305 पृष्ठ का संग्रह 8.00

रवींद्रनाथ के नाटक (द्वितीय खंड)
'राजा,' 'डाकघर,' 'मुक्तधारा' और 'रक्त करवी' का 286 पृष्ठ का संग्रह 8.00

रवींद्रनाथ का बाल साहित्य
73 बालोपयोगी कहानियां, कविताएं व निबंध, 312 पृष्ठ 7.50

आंख की किरकिरी
प्रसिद्ध उपन्यास 'चोखेर बालि' का हिंदी रूपांतर, पृष्ठ 230 5.00

रवींद्रनाथ के निबंध (प्रथम खंड)
धार्मिक, आर्थिक, शैक्षणिक, सामाजिक, राजनीतिक तथा ग्रामसुधार संबंधी चुने हुए निबंध. 15.00

रवींद्रनाथ के निबंध (द्वितीय खंड)
आत्मकथा, साहित्य समीक्षा, चारुलेख आदि विविध विधाओं के 45 प्रेरणाप्रद लेख, पृष्ठ 479. 12.00

रवींद्रनाथ की कविताएं
एक सौ एक चुनी हुई कविताओं का संग्रह, पृष्ठ 326 12.00

गोरा
उपन्यास, पृष्ठ 455 8.00

योगायोग
उपन्यास, पृष्ठ 252 6.00

डाक खर्च अतिरिक्त. वी. पी. पी. से मंगाने के लिए 5 रु. अग्रिम भेजें.

प्राप्ति स्थान--

दि

12-एम.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेख • सुरेंद्रकुमार शर्मा 'अज्ञात'

पराशर स्मृति

कलियुग के लिए रची गई स्मृति आज कितनी अवैधानिक, अव्यावहारिक और असामाजिक हो गई है?

स्मृति शब्द का व्यापकार्थ है—"भूतपूर्व का वर्तमान में अनुस्मरण." परंतु सीमितार्थ है—"काल विशेष के वर्णाश्रमों के कर्त्तव्याकर्तव्य का अभिलेख." मनुस्मृति, पराशरस्मृति आदि समासांत पद इसी अर्थ के द्योतक हैं.

भारतीय साहित्य पर अद्वैत दर्शन की छाया बहुत प्रभावी रही है. एक ब्रह्म के अतिरिक्त अन्य तो कुछ है ही नहीं. हम, तुम सब एक ही तत्त्व हैं—'ओउम् एवं ब्रह्म.' गीतादि में भी साम्यावस्था का गुणगान किया गया है. भारतीयों ने बात-बात में औपनिषदिक ब्रह्म को खींचा है. परंतु व्यावहारिक संदर्भ में, सामाजिक जीवनमूल्यों में द्विध्रुवीय द्वैतता का बोलबाला रहा है. इस का कारण स्पष्ट ही है.

भारतीय धर्म, दर्शन अथवा चिंतन कदापि सामाजिक संदर्भ में नहीं रहा. वह सदैव व्यक्तिवादी रहा है. अद्वैतवेदांत, गीता के साम्यवाद एवं सब प्रकार की कल्पित मुक्ति का लक्ष्य घोर व्यक्तिवाद है. यही कारण है कि भारतीय चिंतन मानवता को इकाई नहीं मानता. मानवता तो इन के चिंतन में कहीं आई ही नहीं. यदि मैं गलत नहीं, प्राचीन भारतीय द
में कहीं भ
नहीं हुआ
कि
सर्वत्र घो

मानवता को स्थूलतः चार खंडों में खंडित किया गया दीख पड़ेगा. किसी धर्मशास्त्र में जो व्यापक आदेश भी दिया गया है, वह भी 'द्विजातियों और शूद्रों को ऐसा करना चाहिए' इन शब्दों में लिखा हुआ मिलता है न कि 'मानव को ऐसा करना चाहिए' इन शब्दों में. इसी से भारतीय धर्मशास्त्रियों की सीमित विचारधारा का अनुमान लगाया जा सकता है. इसी असामाजिकता का ही दुष्परिणाम है कि औसतन भारतीय आज भी न केवल नागरिकता और पड़ोसीपन के क्षेत्र में असफल है अपितु पारिवारिक संबंधों को निभाने में भी विषमता अनुभव करता है.

इन स्मृतियों को धर्मशास्त्र भी कहा जाता है. यहां धर्म शब्द सामान्य नियम से अधिक अर्थ रखता है क्योंकि इस में धर्म, परंपरा, सदाचरण, कर्तव्य और सारा सद् आ जाता है. (इंडियाज पास्ट, पृ. 164, कृत ए. ए. मेक्डानल). इस तरह धर्मशास्त्र तात्कालिक जीवन का सर्वस्व है.

टेपरेकार्ड है, फिल्म, विश्वकोष है. इन धर्मशास्त्रों व स्मृतियों की काफी संख्या है. इन में 'पराशरस्मृति' बहुत महत्त्वपूर्ण दस्तावेज है. अंतःसाक्ष्य के अनुसार
के लिए नितांत उपयुक्त है
र इस युग को दृष्टि में रख
है.
स्तक के अध्ययन से यह
जाता है कि इसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक वर्ग विशेष ने अपने निहित स्वार्थों को दृष्टिगत करते हुए रचा और यथा समय मीठी छुरी एवं अंध-विश्वास का प्रयोग किया. अपनी पैठ डालने के लिए शुरू में कुछ क्रांतिकारी निर्णय लेने का स्वांग रचा गया है. कहा है : "मनुस्मृति सतयुग के लिए है, गौतम-स्मृति त्रेता के लिए, शंखस्मृति द्वापर के लिए और पराशरस्मृति कलियुग के लिए." (1/24).

आजीविका के लिए

किसी न किसी तरह अपनी आजीविका चलाने के लिए जो कदम पुरोहितों ने उठाए, उन का मुंह बोलता चित्र पराशरस्मृति के अध्ययन से देखा जा सकता है.

खेत जोतते समय : हल चलाने से कृमि मरते हैं, अतः कृषक को पापों से बचने के लिए खलिहान से मुंहमांगा अनाज ब्राह्मणों को अवश्य दान करना चाहिए, अन्यथा बहुत अनर्थ होगा. (2/15), उसे चोरी करने का पाप लगेगा, वह ब्रह्महत्यारा हो जाएगा. (2/16). ब्राह्मणों को अपनी उपज का 30 वां भाग दे कर किसान सब पापों से छूट सकता है. (2/17). ब्राह्मणों का कहा माने अन्यथा भ्रूणहत्या के समान पाप लगेगा. (6/60).

ब्राह्मण चलतेफिरते पवित्र स्थान हैं. जो कुछ वे कहते हैं, देवता भी उन का समर्थन करते हैं, क्योंकि ब्राह्मणों में सब देवों का वास होता है. जो ब्राह्मणों से जपतप करवाता है, अर्थात उन्हें दक्षिणा देता है, उस को जपतप का पूर्ण फल मिलता है. (6/61 से 63). अग्नि, जल, वेद, सोम, पवन ये सब ब्राह्मणों के दक्षिण कान में रहते हैं. प्रभास आदि तीर्थ और गंगा आदि नदियां ब्राह्मण के दाहिने कान में हैं. (7/38,39) तीनचार ब्राह्मण जिसे पुण्यात्मा कह दें, वह चाहे कितना भी पापी क्यों न हो, उस के पाप उसी तरह नष्ट हो जाते हैं जैसे पत्थर पर पड़ा हुआ पानी हवा और सूर्य के संयोग से अस्तित्वहीन हो जाता है (8/[illegible]).

वेद को जानने वाला ब्राह्मण सर्वभक्षी (मांसाहारी) हो कर भी पवित्र ही रहता है. (8/30). यदि किसी ने ब्राह्मण को 'तूं' या 'तू' कह दिया, तो वह सारा दिन पानी में स्नान करता रहे और ब्राह्मण के पैरों पर गिर कर गिड़गिड़ाता रहे. यदि किसी से ब्राह्मण पर तिनके के द्वारा भी प्रहार हो जाए या यदि कोई ब्राह्मण को शास्त्रार्थ में पराजित कर दे तो उसे चाहिए कि वह बारंबार प्रणाम कर ब्राह्मण को प्रसन्न करे. (11/52,3).

प्रायश्चित्त भी आजीविका का साधन

आजीविका के लिए पुरोहितों ने एक नया मार्ग ढूंढ़ निकाला था--प्रायश्चित्त. यदि किसी से कोई 'अपराध' हो जाता तो उसे कहा जाता कि तुम यह व्रत रखो और 10 गाय ब्राह्मण को दान दो, यह व्रत करो और 100 गाएं, सुवर्ण और भूमि दान दो. (देखो 9/15,25,52,54; 10/4,6,7,8,9,15, 17,24,41; 11/3, 12-6,8,47 आदि). इन और ऐसे अन्य स्थलों पर यजमानों से गौएं, सोना, रुपया-पैसा और भूमि आदि ब्राह्मणों को देने को कहा गया है. चोरी व भ्रूणहत्या कर, अगम्य स्त्रीगमन कर, चांडाल के घर का भोजन कर, यदि कोई दो गौएं ब्राह्मण को दान कर दे तो, पता नहीं कैसे, उस का पाप खत्म हो जाएगा.

यह पेट के लिए की गई व्यवस्था है. तभी तो लिखा है, जो ब्राह्मण के लिए प्राणों की बाजी लगा दे वह हत्या जैसे जघन्य अपराध के पाप से छूट जाता है. (8-43). गौ हत्या को बहुत बड़ा पाप घोषित किया गया है. परंतु ब्राह्मणों को भोजन करा देने से, उन्हें दानदक्षिणा दे देने से, गौवधरूपी पाप निःसंदेह नष्ट हो जाता है. (8-49,50).

पराशरस्मृति में यह लिखा हुआ भी पाते हैं कि ब्राह्मण चाहे नीच स्वभाव का ही क्यों न हो, वह चाहे कितना भी गयागुजरा क्यों न हो, वह पूज्य ही है. [illegible] व्यक्ति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहे कितने भी अच्छे स्वभाव वाला व संयमी क्यों न हो, आदरणीय नहीं है. (8/33). अपनी निरंकुशता को बनाए रखने एवं अपने को सर्वोच्च तथा आक्षेपों से ऊपर सिद्ध करने के लिए रूपक बांध कर कहा है, धर्मशास्त्र रूपी रथ पर चढ़ा, वेदरूपी तलवार वाला ब्राह्मण हंसी में भी जो बात कहे, उसे परम धर्म मानना चाहिए. (8/34).

शूद्रों के लिए उन का आदेश है—ब्राह्मण की सेवाशुश्रूषा करना शूद्रों का परम धर्म है, अन्यथा वे सर्वत्र असफल होंगे. कपिला गाय का दूध पीने से और वेदमंत्रों पर विचार करने से शूद्र सीधा नरक में जाता है. (1/75).

यदि कोई शूद्र, कारीगर अथवा स्त्री की हत्या कर दे, वह दो बार प्राजापत्य व्रत कर ले और ग्यारह बैल ब्राह्मणों को दान कर दे, बस स्त्रीहत्या या शूद्रहत्या का दोष समाप्त. (6/16). इस तरह के विधान शूद्रों और स्त्रियों पर 'धार्मिक' लोगों से अत्याचार ही कहे जाएंगे.

इतना ही नहीं, प्रायश्चित्त जैसे विधानों में ब्राह्मण का तो एकाध दिन के उपवास से छुटकारा कहा गया है. परंतु शूद्रों के लिए दो से ले कर ग्यारह गाय और ग्यारह बैल तक दान करने के विधान हैं, ताकि उन का आर्थिक शोषण कर सदा के लिए उन्हें स्वाश्रित और स्वमुखदर्शी बना लिया जाए जिस से बिना हीलहुज्जत वे क्रीतदासों की तरह जीवन जिएं.

शूद्रों को एक ओर अपना दास बना कर उन से सेवा करवाई जाती है दूसरी ओर उन के प्रति घृणा का उद्घोष इन शब्दों में किया जाता है—कुत्ते या शूद्र से स्पर्श होने पर रात्रि भर उपवास कर, पंचगव्य (गाय का दूध, घी, दही, मूत्र और गोबर—पवित्र पदार्थ) पान करें. शूद्र के जूठे बरतनों को दस बार राख से साफ करें. (7/25).

स्मृतिकार कहता है, पति के मर जाने के पश्चात स्त्री यदि उस के प्रति वफादारी निभाती हुई अपने स्वाभाविक कामावेग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को रुद्ध कर ब्रह्मचारिणी बनी रहे तो मर कर वह स्वर्ग को प्राप्त होती है. (4/31). जो नारी पति के साथ ही चिता में जल मरे वह साढ़े तीन करोड़ वर्ष तक स्वर्गवास की अधिकारिणी होती है. (4/32). पति के शव के साथ दग्ध हो कर पत्नी उसे पापों से उसी प्रकार निकाल लेती है, जैसे सपेरा बिल में से सांप को निकाल लेता है. स्वर्ग में फिर उस पति के साथ विविध भोग भोगती है. (4/33). जो स्त्री गरीब, रोगी एवं धूर्त पति का जरा भी तिरस्कार करती है, वह मृत्यु के उपरांत कुतिया बनती है और बारबार सूअरी का जन्म लेती है. (4/16).

इस तरह के विचार आज अमानवीय, असामाजिक और गैरकानूनी हैं, अतः इन्हें किसी भी प्रकार की धार्मिक मान्यता प्राप्त नहीं होनी चाहिए.

स्त्री को किस कदर नीच और अपमान की अधिकारिणी घोषित किया गया है, वह अध्याय सात के प्रस्तुत श्लोक को पढ़ कर पता चल सकता है. मासिक धर्म के समय पहले दिन वह चांडालिन के समान होती है, दूसरे दिन ब्रह्महत्यारी के समान और तीसरे दिन धोबिन के सदृश. (7/20).

जितने घटिया शब्द उन दिनों उपलब्ध हो सकते थे, स्मृतिकार ने स्त्रियों के लिए प्रयुक्त कर दिए. स्त्रियों को क्रय-विक्रय का पदार्थ कहते हुए लिखा है कि स्त्री और भूमि, दोनों बराबर हैं जैसे भूमि किसी अन्य पदार्थ के विनिमय में हस्तांतरित की जा सकती है ऐसे ही नारी भी. (10/25).

धर्म के नाम पर

धर्म के विषय में जो विचार आलोच्य स्मृति में उपलब्ध होते हैं उन के हाथों धर्म मोम की नाक बन गया था, तभी तो प्रस्तुत स्मृतिकार लिखता है, तीन या चार ब्राह्मण जिसे धर्म कह दें, वही धर्म होता है, दूसरे चाहे हजारों लोग उस के विरुद्ध चिल्लाते रहें (8/15). तीनचार ब्राह्मण जिसे पवित्र कह दें, वह उसी प्रकार पापों से रहित एवं शुद्ध हो जाता है जैसे पत्थर के ऊपर का पानी सूख जाता है. (8/17). एकदूसरे के साथ बैठने, सोने, सवारी करने और बातचीत करने से एक मनुष्य के पाप दूसरे पर लागू हो जाते हैं, जिस तरह कि पानी में तेल की बूंद फैल जाती है. इन पापों को नष्ट करने के लिए मनुष्य को चाहिए कि जौ का भोजन किया करे और गौओं के पीछे चला करे तथा अपने भार के बराबर स्वर्ण, चांदी और अनाज आदि दान किया करे. (12/77,8). बस, यही धर्म है.

पुरोहितों ने खानेपीने के विषय में बहुत 'उदारता' बरती है, वे स्वयं गोमांस भी खाने को स्वतंत्र थे और चांद्रायणव्रत से ही शुद्ध भी हो जाते थे. (11/1). जो सफाई पसंद क्षत्रिय और वैश्य हों, उन के यहां ब्राह्मणों को नित्य हव्यकव्य उड़ाने चाहिए. (11-13).

जिन के स्पर्श मात्र से पुरोहित कई धार्मिक अनुष्ठान किया करते थे और जिन के छुए बरतन साफ करने के लिए दसदस बार रगड़ा करते थे, उन के यहां रखे हुए घी, दूध, तेल में पकाए हुए पकवान आदि को ब्राह्मण नदी के किनारे खा सकता है. (11/14). शूद्र के घर से आए हुए दूध, घी और आटे को ब्राह्मण खा ले. (11/20).

शुद्धि के नाम पर

पराशरस्मृति में शुद्धि के विधान भी कम अविवेकपूर्ण नहीं हैं. जब नरहत्या जैसे जघन्य अपराध करने वाले ब्राह्मण को ग्यारह गाय देने या कुछ ब्राह्मणों को भोजन खिला देने पर शुद्ध घोषित किया गया है तो अनुमान लगाया जा सकता है कि पशुपक्षी के प्रति ये कितने क्रूर रहे होंगे.

स्मृति का छठा अध्याय उन तुच्छ विधानों से भरपूर है जो पशुओं या पक्षियों को मार डालने वालों को शुद्ध करते हैं. तीतर, मुरगा, खरगोश, कबूतर, गोह, कछुआ आदि को मार कर चट कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चेहरे पर लाइ...

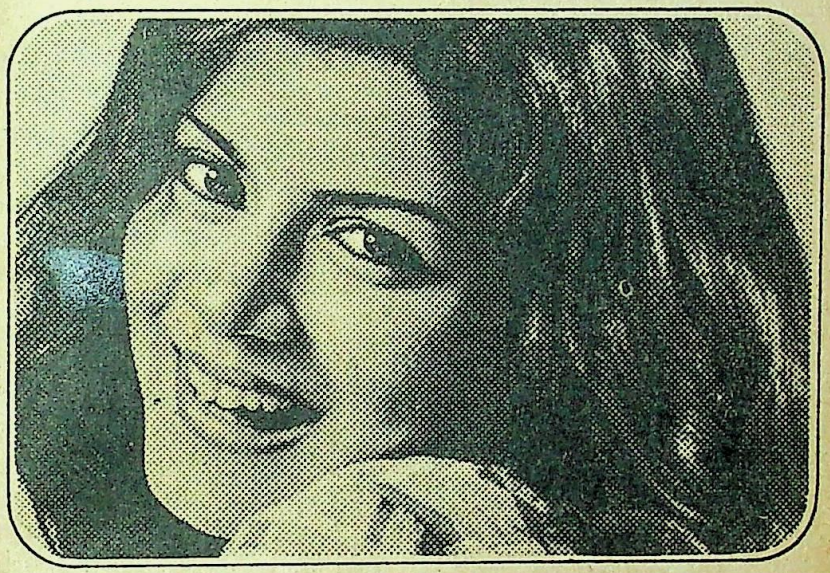

...दिल की जवानी

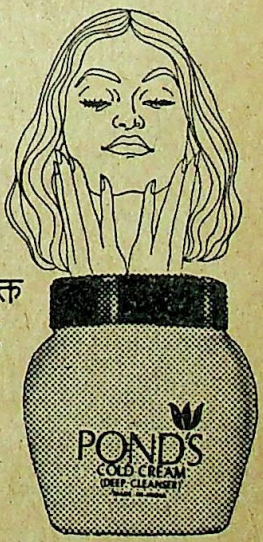

त्वचा में कोमल बेदाग़ जवानी की झलक... पाण्ड्स कोल्ड क्रीम से. यह उन सभी क्रीमयुक्त प्राकृतिक तेलों से मिश्रित है जिनकी एक सुंदर रूपरंग के लिए आपको आवश्यकता है. इसे अपनी त्वचा के पोषण के लिए मलिए और जाड़े की ज़ुल्मी बयारों से त्वचा बचाइए.

आपकी... युवा त्वचा का आधार

पाण्ड्स कोल्ड क्रीम

चीज़ब्रो पाण्ड्स इन्क. (सीमित दायित्व के साथ यू. एस. ए. में स्थापित)

लिंटास - CPC. 6-77 HI

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाने वालों को शुद्ध करने के लिए विधान बताए गए हैं--शाम का भोजन न करो. बस, जीवहत्या को साधारण सी बात के रूप में लिया गया है. दूसरी ओर चूहा बिल्ली और सर्प आदि के मारने को भी अपराध घोषित कर अपनी जीवों के प्रति दया का ढिंढोरा पीटा गया है. हानिकारक जीवजंतुओं को प्रतिरक्षा स्वरूप नष्ट करने को भी अपराध घोषित करना स्मृतिकार की थोथी दयालुता है. इस का निहित फल अपने लिए दान के अवसर जुटाना है.

शुद्धि के ज्वर की चरम सीमा तो उस समय ज्ञात होती है जब हम पढ़ते हैं--चांडाल (शूद्र पिता द्वारा ब्राह्मण माता से उत्पन्न संतान को चांडाल कहा गया है.) का बरतन यदि कुएं के साथ लग जाए व उस कुएं से कोई पानी पी ले तो उसे तीन दिन 'गोमूत्र' (महापवित्र तरल) पीना चाहिए. (6/26). परंतु जहां स्वार्थ को धक्का पहुंचता था वहां शुद्धि का ज्वर वैसे ही उतर जाता था जैसे कुनैन के द्वारा मलेरिया. सत्तर सेर के लगभग अन्न को यदि कुत्ता आदि जूठा कर दे उस को मत त्यागे. (6/67). चांडाल घर में प्रविष्ट हो जाए तो मिट्टी के बरतन बाहर फेंक दे परंतु जिन में मदिरा और चटनी हो उन्हें न फेंके. (6/47).

बालविवाह की कुशिक्षा

बालविवाह जैसी पतनकारिणी कुप्रथा को मार्गदर्शक सुधारकों ने जीजान एक कर बड़ी कठिनता से रोका है. परंतु प्रस्तुत स्मृति अपने को वर्तमान काल के उपयुक्त स्वयमेव उद्घोषित करती हुई बालविवाह के कुष्ठ को फैलाती है.

बारह वर्ष बाद जो कन्या का विवाह नहीं करते, ऐसा समझना चाहिए कि वे हर मास कन्या का मासिक रज पीते हैं. (7/7). जब कन्या का मासिक धर्म शुरू हो जाए और उस की शादी न की जाए तो उस के मातापिता, बड़ा भाई आदि सब उस को देख कर भी नरक के अधिकारी बनते हैं. (7/8). बारह वर्ष के ऊपर की कन्या से शादी करने वाले ब्राह्मण का सामाजिक बहिष्कार करना चाहिए. ऐसी कन्या के साथ एक दिन संभोग करने वाला तीन साल गायत्री मंत्र जपने और मांग कर खाने के बाद शुद्ध होता है. (7/9,10).

स्मृति की प्राथमिकता का दावा करने के लिए आवश्यक था कि इस में कुछ नया और ज्ञानविज्ञान समन्वित होता. इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए स्मृतिकार ने बौद्धिक प्राणायाम कर कई तथ्य जुटाने की कोशिश की. वे यद्यपि उस के समसामयिकों के लिए विश्वसनीय रहे होंगे, परंतु आज के वैज्ञानिक आलोक में वे लेखक के बौद्धिक दिवालिएपन और मूर्खता के परिचायक हैं. संभवतः उस के दिमाग में यह हो कि हर असंबद्ध प्रलाप बौद्धिक धाक जमाने के लिए उपयुक्ततम उपकरण है. कुछ उदाहरण देखिए: सिर को ढक कर, दक्षिण की ओर मुख कर और बाएं पैर पर हाथ रख कर जो भोजन किया जाता है उस में राक्षसी प्रभाव आ जाता है. (1-59). भोजन करते हुए यदि हाथ से पैर छू लिया जाए तो समझो कि अपनी जूठन खाई जा रही है. (6/65). न तो खड़ाऊं आदि पहन कर भोजन करें और न ही पलंग पर बैठ कर. (6/66).

यदि रोगी को शुद्ध करना हो तो स्वस्थ व्यक्ति दस बार स्नान कर उस का स्पर्श कर दे, बस रोगी शुद्ध हो जाएगा. (7/21). यदि कांस्य के पात्र में कभी पैर धो लिए जाएं तो उसे छः महीने तक जमीन में गाड़ दें फिर वह शुद्ध होगा. (7/26). छींकने के बाद, थूकने के पश्चात तथा पतित के साथ बातचीत करते हुए दाहिने कान को छुएं. (7/37).

सब पाप केशों में निवास करते हैं, अतः उन से छुटकारा पाने के लिए केशों को ऊपर की ओर उठा कर उन्हें आगे से दो अंगुल भर काट दें. (9/55). यदि स्त्री अपने यार के घर चली जाए तो उस के पति का तथा उस स्त्री के मातापिता का घर अशुद्ध हो जाता है. उन्हें पवित्र करने के लिए घरों को खोदा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ड्युरेक्स गोसामर

लुब्रिकेटेड प्रोटेक्टिवज्

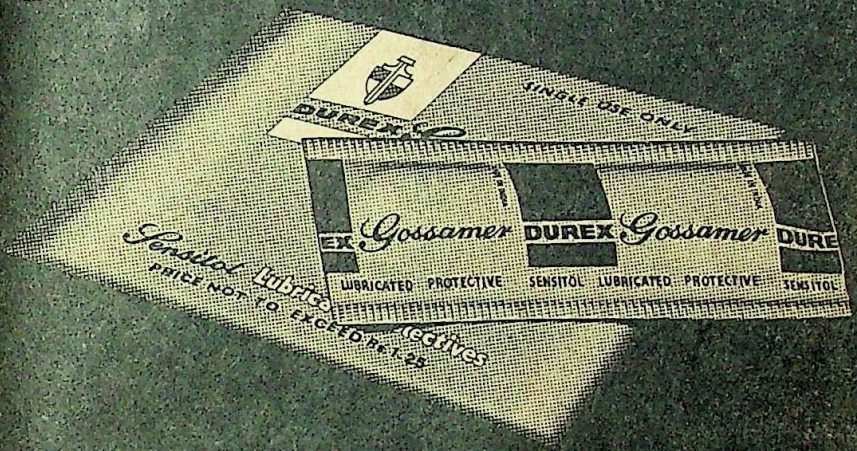

प्राकृतिक आनन्द का आभास देनेवाला एकमात्र कन्डोम

* खास प्रकार के लुब्रिकेन्ट "सेन्सिटॉल" से लुब्रिकेट किए गये
* पूर्ण सुरक्षा के लिए इलेक्ट्रॉनिक विधि से जांचे गये.

अगली बार जब भी आप कन्डोम खरीदें – याद रखें – 'ड्युरेक्स' गोसामर या फिर नीचे दिया गया कूपन भरकर भेज दें.

उत्तम सुरक्षा और उचित आराम के लिए — **ड्युरेक्स**

टी.टी. कृष्णामाचारी एण्ड कंपनी
५ लज चर्च रोड, पोस्ट बॉक्स नं. २९०१, मद्रास ६०० ००४
कृपया मुझे पांच ड्युरेक्स प्रोटेक्टीवज् कन्डोम का एक पैकेट भेज दीजिए. मैं रु. १.६५ का पोस्टल ऑर्डर भेज रहा हूँ.
(मूल्य रु. १.२५ + ०.४० पै. डाक खर्च) (S)

नाम _____

(कृपया साफ-साफ लिखें) _____

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बच्चों के लिए स्वस्थ मनोरंजन
तीन बाल उपन्यासों का सेट

वीरान टापू

डाकू लाखन का गिरोह बच्चों को उड़ा कर उन के मातापिता से रकम ऐंठने लगा. यही लाखन जब नीलू को बहका कर ले गया तो मोहन को बड़ी ठेस पहुंची. डाकुओं को रंगे हाथ पकड़ा कर उस ने अपना लक्ष्य पूरा किया.....मोहन वीरान टापू पर डाकुओं के अड्डे तक कैसे पहुंचा? उस ने पूरे गिरोह को कैसे गिरफ्तार करवाया? इन प्रश्नों का हल इस रोमांचक बाल उपन्यास में मिलेगा.

योगीराज

कपटी बंदर और उस के धूर्त साथी लोमड़ और गीदड़ ने भक्ति के नाम पर नंदनवन के जानवरों को खूब लूटा. और नंदनवन के सीधेसादे जानवर 'योगीराज' कह कर बंदर के चरणों में सिर नवाने लगे.....लेकिन तभी समाजसेवक भालू ने उन की धूर्तता की पोलपट्टी खोल दी. बच्चों को मनोरंजन प्रदान करने के साथ ही यह उपन्यास उन्हें पाखंडियों से बचने की राह भी दिखाएगा.

मंगल की सैर

मंगल पर जाना था उमेश चाचा को लेकिन चला गया दीपू जिसे अंतरिक्ष यात्रा का कोई अनुभव नहीं था.....वहां की उड़नतश्तरियां, मशीनी आदमी, विचित्र लालहरी रोशनियां, बौना मिक और उस के साथी—इन सब की ढेर सारी यादें ले कर दीपू जब धरती पर लौटा उस के चाचा बेसब्री से उस का इंतजार कर रहे थे.

प्रत्येक रु. 2.

विश्वविजय प्रकाशन

प्राप्य: दिल्ली बुक कंपनी, एम-12, कनाट सरकस नई दिल्ली-110001.
पूरा सेट मंगाने पर डाक खर्च की छूट. आर्डर के साथ दो रुपए अग्रिम भेजें.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाए, घरों के मिट्टी के सब बरतनों को फेंक दिया जाए. (10/38,39).

भिखमंगों और समुद्र को देख कर ही लोग पवित्र हो जाते हैं. (12/44). काले बिलाव, मृग की काली छाल और बकरे को घर में रखें. (12/45). यदि ब्राह्मण बरतन से पानी पीता है, हाथों से नहीं तो निश्चित है कि वह कुत्ते की योनि में जन्म लेगा. (12/53). ऐसी ही और बहुत सी अविवेकपूर्ण बातें आलोच्य स्मृति से इकट्ठी की जा सकती हैं.

यह स्मृति स्वास्थ्य विज्ञान व साधारण विज्ञान के नितांत विपरीत उपदेश देते हुए घोषित करती है : बिल्ली, मक्खी, कीड़ेमकोड़े और पतंगों द्वारा दूषित वस्तु को जूठा नहीं समझना चाहिए, क्योंकि ये पवित्र अपवित्र सब का ही स्पर्श करते हैं. (7/32,3). यह शिक्षा कितनी मूर्खतापूर्ण और कितनी घातक है, कहने की आवश्यकता नहीं. जिसे कुत्ते ने काटा हो वह स्नान करे, पवित्र एवं वेदमाता गायत्री को जपे. (5/1).

जमीन पर पड़ा पानी अशुद्ध नहीं मानना चाहिए. (7/33). पान और सोमरस ये दोनों जूठे नहीं होते (7/34), अर्थात जूठा पान या सोमरस पान करना कोई बुरा प्रभाव नहीं डालता. जिस अन्न को सांप, नेवला और बिलाव जूठा कर दे उस पर दोचार दाने तिल और कुशा घास से दोचार बूंद पानी फेंक देने से वह शुद्ध हो जाता है. (71/6). यदि ब्राह्मण ने मेंढक या चूहे का मांस खा लिया हो तो उसे एक दिन जौ खा लेना चाहिए, उस पर दुष्ट प्रभाव नहीं पड़ेगा. (11/12). प्राणियों के शरीर में जो पाप रहते हैं पंचगव्य उन्हें शुद्ध कर देता है. तीनों लोकों में पंचगव्य के समान अन्य कुछ भी शुद्ध नहीं है. पंचगव्य में जो गोमूत्र है उस में वरुण देवता रहता है, गोबर में अग्नि देवता, दही में वायु देवता, दूध में सोम देवता और घी में सूर्य देवता. (11/38-40).

चंद्रग्रहण के समय मरुत, वसु, रुद्र और सूर्य आदि सब देवता चंद्रमा में लीन हो जाते हैं. अतः चंद्रग्रहण के समय दान देना चाहिए. (12/27). यदि शराब पी ले तो उस पाप को दूर करने के लिए उबलती हुई शराब पीएं. (12/74).

प्रस्तुत स्मृति अपने को वर्तमान युग 'कलियुग' के लिए नितांत उपादेय घोषित करती हुई यदि नितांत अनुपादेय और अनुपयुक्त सिद्ध होती है तो अन्याय स्मृतियां तो समाज को पीछे ही ले जाएंगी. अतः उन्हें या इसे मानना अतीत के अविकसित समाज में अपने को ले जाना है. हमें अतीत के मोह को वर्तमान के प्रकाश में त्याग कर भविष्य के लिए पथ प्रशस्त करना होगा. ●

ऐ पत्नियां

मेरी पत्नी को आमपापड़ खाने का बहुत शौक है. रोटी मिले या न मिले मगर आमपापड़ जरूर मिलना चाहिए.

1 मई को उस का जन्मदिन था. मेरी जेब में पैसे बिलकुल नहीं थे, क्योंकि वेतन अभी मिलना था. उधर वह इस बात की जिद करने लगीं कि आज उन का जन्मदिन है, इसलिए उन्हें एक नई साड़ी ला कर दी जाए. मैं असमंजस में पड़ गया कि क्या करूं. सोचा दुकानदार अपना जानकार है, उधार ले लेंगे.

रास्ते में मुझे अचानक एक उपाय सूझा. वापस आ कर जब पत्नी के हाथ में मैं ने साड़ी के डब्बे की बजाए एक छोटा सा पैकेट दिया तो पहले तो वह खूब गर्म हुईं. मगर जैसे ही उन्होंने उसे खोला तो खुश हो कर कहने लगीं, "सच-मुच आप कितने अच्छे हैं! मेरा कितना ध्यान रखते हैं."

दरअसल उस पैकेट में 250 रुपए की साड़ी की बजाए ढाई रुपए का आधा किलो आमपापड़ था.

—रमेश जैन, होशियारपुर ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

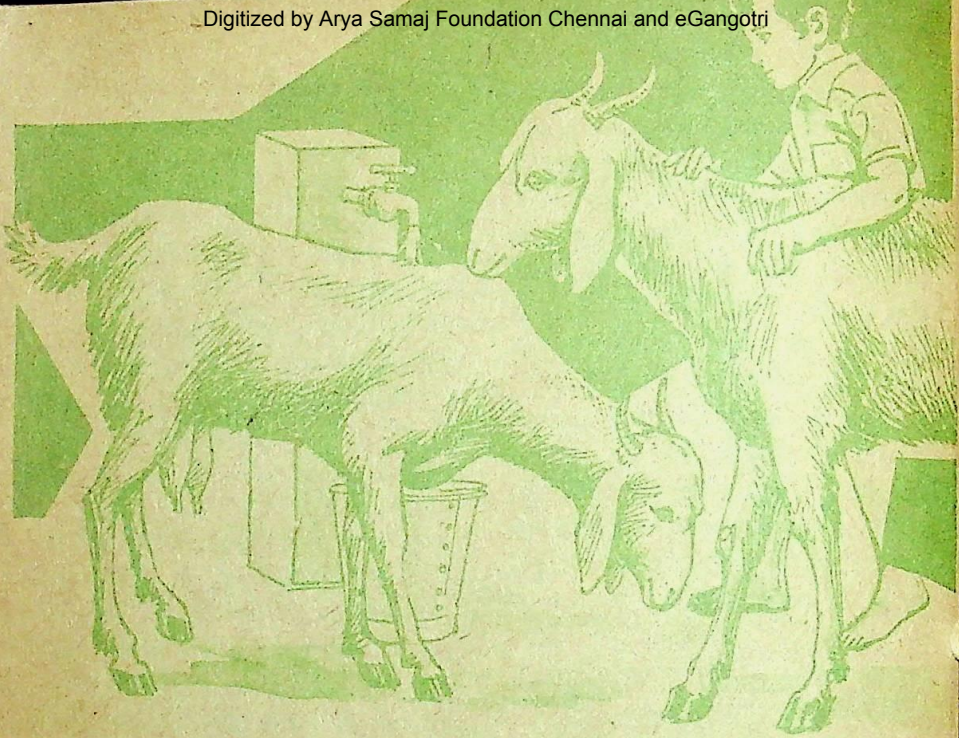

शक्कू पिताजी के ड्यूटी पर जाते ही भोंदू और चुन्नू को टहलाने ले जाता, उन्हें नहलाता लेकिन रेलवे लाइन पर जाने की उस की भी हिम्मत नहीं पड़ती थी...

बाल सरिता

रूखा सूखा भला

कहानी • अहमद खालिद नदीम

बरसात के आते ही चारों ओर हरियाली छा गई. मैदानों में हरीहरी घास उग आई थी. पेड़ों में नएनए पत्ते और सुंदर पुष्प खिल उठे थे. हर ओर हरे रंग की चादर सी बिछ गई थी.

भोंदू बकरे ने इच्छाभरी दृष्टि से रेलवे लाइन की ओर देखा जहां दूर तक नागिन की तरह बल खाई हुई पटरियां थीं. पटरियों के इर्दगिर्द खूब ऊंचीऊंची और हरीभरी घास उगी हुई थी जिन्हें देख कर उस के मुंह में पानी आ गया था जब कि इस समय भोंदू के सामने तसले में सूखा भूसा पानी में सना रखा हुआ था. उसे इस भूसे में तनिक भी स्वाद नहीं आया, परंतु भोंदू को बाध्य हो कर तसले में मुंह मारना पड़ रहा था क्योंकि उस की गरदन में लोहे की जंजीर बंधी थी और जंजीर का संबंध जमीन में गड़ी हुई एक मजबूत खूंटी से था. भोंदू ने स्वयं को बिल-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुल विवश पाया.

अपनी बहन चुन्नी बकरी की ओर भोंदू ने अर्थपूर्ण दृष्टि से देखा, जो चुपचाप सिर झुकाए उसी सूखे भूसे को बड़े चाव से खा रही थी. चुन्नी ने रेलवे लाइन की ओर एक बार भी नहीं देखा था. उस ने इशारा करते हुए कहा, "चुन्नी बहन, इस भोजन में तो जरा भी मजा नहीं है. मुझ से तो बिलकुल नहीं खाया जाता. देखो तो कैसी हरीहरी घास उगी है. जी चाहता है कि बस जंजीर तुड़ा कर भाग निकलूं और खूब जी भर कर घास चरूं. लेकिन अपने भाग्य में कहां?" चुन्नी ने दृष्टि भर कर रेलवे लाइन की ओर देखा, जहां हवा चलने के कारण लंबीलंबी घास लहलहाने लगी थी. पहली ही दृष्टि में उस के मुंह में भी पानी भर आया था.

मगर चुन्नी कुछ सोच कर शंटिंग करते हुए इंजन की ओर देख कर बोली, "भैया, वह तो ठीक है. स्वादिष्ट भोजन भला किसे पसंद नहीं है. मेरा भी मन चाहता है कि खूब जी भर कर पेटपूजा करूं. मगर, भैया, जरा इंजन को भी तो देखो. मान लो, हमें जंजीरों से निजात मिल भी जाए तो हम निश्चित हो कर आनंद नहीं ले सकते, क्योंकि हर समय तो गाड़ियां ही आतीजाती रहती हैं."

चुन्नी की इस बात पर भोंदू तनिक भी सोच में नहीं डूबा, बल्कि उस ने तुरंत अपनी गरदन अकड़ाते हुए कहा, "तू बहुत भोली है. अरे, पहले खाने को तो मिले. क्या हमारे कान बहरे हैं? जैसे ही गाड़ी की सीटी सुनाई पड़ेगी हम उछल कर पटरी से अलग हट जाएंगे. आखिर गाड़ी में सीटी किसलिए होती है. पर हम दोनों को आजादी ही कहां मिलेगी?"

भोंदू की बात चुन्नी की भी कुछ समझ में आई थी. यद्यपि वह इंजन की कर्कश सीटी से बहुत डरती थी परंतु भोंदू की बातों का जादू उसे भी प्रभावित कर रहा था. अब चुन्नी भी सूखा भूसा नहीं खा रही थी. उस ने ऊब कर मुंह मोड़ लिया. भोंदू तो अब तक हरीहरी घास के सपने में खोया हुआ था. वह धीरेधीरे अपनी बहन कह रहा था, "चुन्नी बहन, जरा सोचो, गार्ड साहब कितने कठोर हैं, स्वयं तो मौसम बदलते ही नई और हरी तरकारियां खरीद लाते हैं और मजा लेले कर खाते हैं और हम दोनों को केवल छिलका मिलता है. वह भी अगर छिलका ज्यादा हरा होता है तो मालकिन छिलके समेत सब्जी पका डालती है."

"हां, भैया, तुम सच कह रहे हो," चुन्नी ने उस की बातों से प्रभावित हो कर हां में हां मिलाई.

"हम तो बेजुबान जानवर हैं फिर कमजोर भी. हम भला अपनी जीभ के स्वाद के लिए गार्ड साहब से किस प्रकार लड़ सकते हैं. वह चाहे जितना स्वादिष्ट भोजन ग्रहण करें, मगर हम दोनों को तो वही सूखा भूसा ही मिलेगा."

"लेकिन, चुन्नी, अगर हम दोनों जंजीर तुड़ाने में सफल हो जाएं तो फिर रेलवे लाइन तक चलने में तनिक भी परेशानी नहीं होगी. अतः हमें कुछ करने के लिए सोचना चाहिए," और दोनों कोई बढ़िया सी तरकीब सोचने में जुट गए.

हरीहरी घास खाने के लालच से भोंदू बकरे की जान पर बन आई. अगर उस ने शक्कू व बहन चुन्नी बकरी का कहना माना होता तो एक बड़ी मुसीबत से बच जाता...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गार्ड साहब भोंदू बकरी और चुन्नी बकरी को सज्जाद गड़रिए से खरीद कर लाए थे. वह तो केवल चुन्नी को ही खरीदना चाहते थे. लेकिन सज्जाद ने उन्हें बताया था कि दोनों सगे भाईबहन हैं और हमेशा साथसाथ रहते आए हैं इसलिए अगर केवल चुन्नी जाएगी तो भोंदू बहुत ऊधम मचाएगा और बाध्य हो कर उन्हें दोनों को घर लाना पड़ा था.

उन का क्वार्टर स्टेशन से कुछ दूरी पर रेलवे लाइन के किनारे स्थित था. गार्ड साहब का क्वार्टर बहुत छोटा था, इसी लिए आंगन में किसी भी प्रकार के पेड़पौधे नहीं लगे थे. आंगन का फर्श पक्का होने के कारण उस पर घास भी नहीं उगती थी.

और जब बरसात आई तो दोनों रेलवे लाइन के आसपास उगी हुई घास देख कर दीवाने हो रहे थे. गार्ड साहब केवल भूसा खाने को देते थे. वह उन्हें खोलते इसलिए नहीं थे कि कहीं चरते-चरते दोनों रेलवे लाइन के निकट पहुंच जाएं और आतीजाती गाड़ी से कुचल कर मर न जाएं. लेकिन उन का शक्कू भोंदू और चुन्नी को टहलाने का बहुत शौकीन था. जब गार्ड साहब ड्यूटी पर चले जाते तो वह दोनों को बाहर लाता, नल पर उन्हें नहलाता, फिर अपने हाथ में जंजीर पकड़े दोनों को टहलाया करता था. लेकिन शक्कू की हिम्मत रेलवे लाइन की ओर जाने की नहीं होती थी. भोंदू तथा चुन्नी व्यर्थ में घास देख-देख कर ललचाया करते थे.

इस समय दोनों शक्कू ही के बारे में सोच रहे थे. उन्हें उस की दयालुता की बहुत याद आ रही थी. कुछ देर बाद भोंदू ने सोचते हुए धीरे से कहा, "बहन, शक्कू के द्वारा काम बन सकता है."

"वह तो मैं भी सोच रही हूं." चुन्नी कुछ खुश होते हुए बोली, "लेकिन जंजीर तो वह अपने हाथ ही में पकड़े रहता है."

"अरे, तरकीब भी हिम्मत होगी तो हम निबट लेंगे. फिर शक्कू बच्चा ही तो है हमारे पैंतरे के आगे कहां टिक सकेगा." भोंदू ने शान दिखाई. उसे अपने मोटे शरीर और शक्ति पर बहुत घमंड था.

"लेकिन अगर बाद में पकड़े गए तो, शक्कू जो कुछ हमें मारेगा वह तो सहन कर लेंगे. परंतु अगर यह बात गार्ड साहब को मालूम हो गई तो वह अपने सोटे से धुन कर रख देंगे." चुन्नी आगापीछा बहुत सोच रही थी.

"कोई भागने को कह रहा हूं क्या? बस घास खा कर लौट आएंगे." भोंदू ने स्वयं को बहुत अक्लमंद साबित करते हुए कहा. फिर दोनों अपनी तरकीब पर मन ही मन खुशी से फूल उठे.

अगले दिन जब गार्ड साहब ड्यूटी पर चले गए तो शक्कू ने दोनों की जंजीर खोली और बाहर नल पर नहलाने ले गया. जब वह भोंदू और चुन्नी को खूब अच्छी तरह नहलाधुला चुका तो वे अपने आप बहुत सुस्त और ढीले पड़ गए.

शक्कू ने सोचा कि ये क्या भागेंगे इसीलिए उस ने जंजीर दोनों की गरदनों में लपेट दी और हाथ से चुमकार कर दोनों को सहलाने लगा. इसी समय भोंदू ने अपने कान खड़े कर तीन बार हिलाए और चुन्नी ने भागने का सिगनल देख कर तुरंत हिरनी की तरह चौकड़ी भरी और क्षण भर में दोनों उछलतेकूदते रेलवे लाइन के पास पहुंच गए. शक्कू दोनों को हाथ मलता हुआ देख रहा था. वह दौड़ा हुआ अपनी मम्मी को बुला लाया.

मम्मी भी गाड़ी आदि से बहुत डरती थीं, इसलिए उन्होंने शक्कू से कहा, "अब गए हैं तो जाने दो शायद घास चरने के बाद वापस आ जाएं, मगर तुम पकड़ने के लिए पटरियों की तरफ मत जाना. समझे?" और वह चुपचाप दोनों को चरते देख रहा था. भोंदू और चुन्नी बड़े चाव से घास पर मुंह मार रहे थे. वहां मौसमी पौधों के अलावा चौराई के पौधे भी वहां उगे हुए थे जिसे खाने में दोनों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को विशेष आनंद आ रहा था. घास इतनी थी कि खाए न चुकती थी. आधे घंटे के बाद आती हुई गाड़ी की सीटी सुनाई पड़ी और दोनों तुरंत कूदफांद कर शक्कू के पास भाग आए और मेंमें, कर के उस का हाथ स्नेहपूर्वक चाटने लगे. दोनों की वफादारी ने शक्कू का दिल जीत लिया और वह उन्हें बजाए मारनेपीटने के प्यार से पुचकारने लगा.

उस दिन शक्कू ने अपने मित्रों से भोंदू और चुन्नी की खूब प्रशंसा की. अब वह दोनों को प्रतिदिन खोल देता था और गरदन से जंजीर भी उतार लेता था ताकि गरदन पर बोझ न रहे. भोंदू और चुन्नी का सपना साकार हो गया था. अब वे नियमित रूप से चरते थे और जैसे ही गाड़ी की सीटी सुनाई पड़ती, लौट आते थे.

लेकिन भोंदू बहुत पेटू और लालची था. उस का मन इतना खाने के बाद भी संतुष्ट नहीं होता था. हरी रसदार घास को पेट भर खाने से वह आजकल फूल कर कुप्पा हो रहा था, जब कि चुन्नी बहुत कम खाती थी. फिर वह रेलगाड़ी से डरती भी बहुत थी. वह जब तक चरती रहती उस का मन गाड़ी की घड़घड़ाहट में अटका ही रहता था, इसी लिए वह भोंदू से पहले ही लाइन पर से हट आती थी. इधर भोंदू जब तक आती हुई गाड़ी देख न लेता, खिसकने का नाम नहीं लेता था.

एक दिन उस ने चुन्नी से कहा, "बहन, तुम तो बहुत ही जल्दबाजी करती हो. जरा जी भर कर खा लेने दिया करो न."

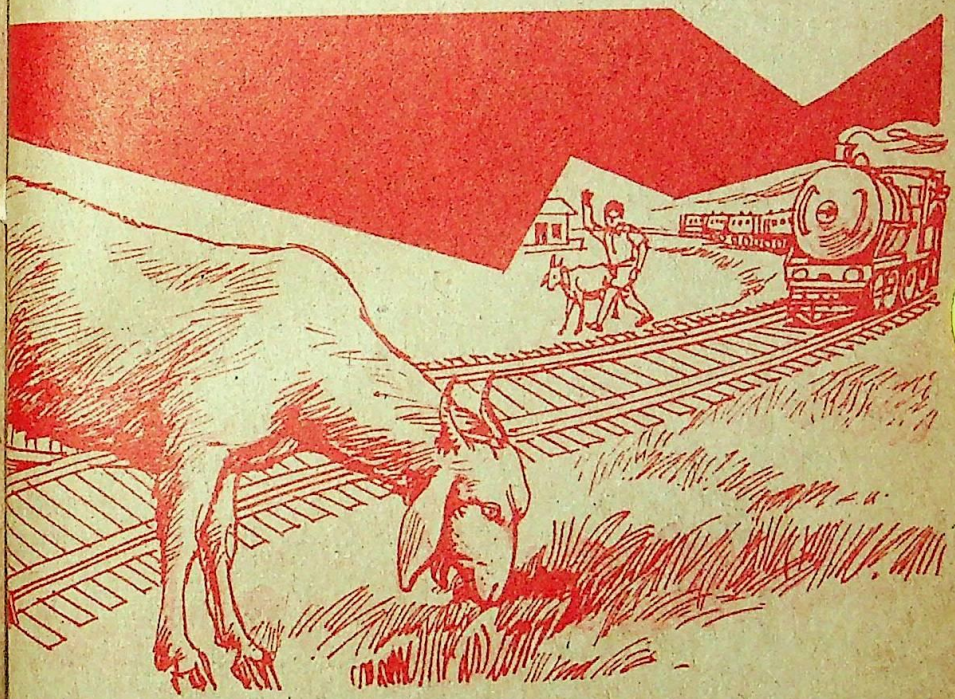

शक्कू ने ताली बजा कर भोंदू को लाइन पर से चले आने का संकेत किया, लेकिन उस ने अनसुनी कर दी.

आज दोनों को चरते आधा घंटा बीत चुका था. कुछ देर बाद चुन्नी चली आई लेकिन भोंदू टस से मस न हुआ. गाड़ी आने का समय हो चुका था. उस का मन हरीहरी चौराई को छोड़ कर जाने को नहीं चाह रहा था. शक्कू ने उसे ताली बजा कर लाइन पर से चले आने का संकेत भी किया लेकिन भोंदू ने अनसुनी कर दी. चुन्नी ने भी उसे बुलाया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेकिन उस के कानों पर जूं तक न रेंगी.

फिर गाड़ी की सीटी सुनाई पड़ी. अब तो उसे आ ही जाना चाहिए था. लेकिन भोंदू अपनी जगह से हिला तक नहीं, जैसे उस ने कसम खा ली थी कि जब तक बीच वाली सभी चौराई हजम न कर लेगा वहां से नहीं हटेगा. गाड़ी स्टेशन से सरकने लगी थी. उस की गड़-गड़ाहट सुन कर शक्कू बहुत छटपटाया. उस ने खूब जोरजोर से ताली बजाई. चुन्नी भी परेशान हो गई. घबरा कर बोली, "भैया, गाड़ी बिलकुल करीब आ रही है, भागो."

इस पर भोंदू ने हंस कर कहा, "अरी, मूर्ख, मैं तो दूसरी लाइन पर हूं. गाड़ी तो आखिरी लाइन पर आती है न. तू क्यों चिंता करती है, डरपोक."

भोंदू लालच और शेखी के नशे में अंधा हो रहा था. वह इसी चक्कर में था कि गाड़ी दूसरी लाइन पर आ ही नहीं सकती.

लेकिन गाड़ी तो दूसरी ही लाइन पर आ रही थी. चुन्नी की समझ में कुछ नहीं आया. इतने में शक्कू की दृष्टि लाइन के किनारे बने हुए ऊंचे से केबिन पर पड़ी जहां एक आदमी लाइन मिला रहा था. अब उस की समझ में आया कि आज गाड़ी दूसरी लाइन पर क्यों आ रही थी.

भोंदू इसी फेर में था कि गाड़ी उस लाइन पर नहीं आएगी. लेकिन जब इंजन दस फर्लांग दूर रह गया तो चुन्नी चीख कर बोली, "भैया, अंधे न बनो. गाड़ी उसी लाइन पर आ रही है, भागो."

भोंदू ने सुना तो चकराया, आंखें उठा कर देखा तो सचमुच देव समान काला इंजन दहाड़ता हुआ उसी की ओर आ रहा था. उस ने जल्दी से पटरी पर से कूदना चाहा. लेकिन पटरी चिकनी होने के कारण उस का पांव फिसल गया. वह दो पटरियों के बीच में गिर गया. जब तक वह अपने पांव निकाले इसी बीच खट की आवाज हुई और सिग्नलर ने लाइन मिला दी. दोनों पटरियां आपस में चिपक गईं और लाइन की कैंची ने भोंदू की पिछली एक टांग को बुरी तरह जकड़ लिया. अब वह अपनी भारी आवाज में मेंमें, करता हुआ चुन्नी और शक्कू की ओर सहायता के लिए देखने लगा. चुन्नी अपने भाई की बेबसी पर रोने लगी. शक्कू भी कुछ नहीं कर सकता था.

भोंदू की पिछली बाईं टांग कट कर झूलने लगी थी. लेकिन शरीर बच गया था. लंगड़े और असहाय भोंदू को बाबूराम लाइनमैन ने केबिन से उतर कर, क्वार्टर में पहुंचाया जहां से गार्ड साहब उसे रिक्शे में बठा कर पशु चिकित्सालय ले गए. चिकित्सालय में भोंदू एक सप्ताह तक भरती रहा लेकिन फिर भी उस की टांग नहीं जुड़ सकी और वह सदैव के लिए लंगड़ा हो गया.

अब वह चलफिर नहीं सकता था. भोंदू हर समय बैठा रहता और अपनी गलती पर पश्चात्ताप करता था. गार्ड साहब उसे एक कसाई के हाथ बेचना चाहते थे पर वह केवल बीस रुपए दे रहा था. इस प्रकार कुछ दिनों के लिए भोंदू की जान बच गई थी.

अब वह कभी लाइन की ओर देखता तो हरीभरी घास देख कर उस के मुंह में तनिक भी पानी नहीं आता, बल्कि वही पानी आंखों से आंसुओं के रूप में बहने लगता था. उसे मालूम हो चुका था कि ऐसे स्वादिष्ट भोजन से कोई लाभ नहीं जहां जीवन हर समय मौत के मुंह में टंगा रहता हो. उस से अच्छा तो यह रूखासूखा भोजन ही भला है जिसे वह निश्चिंत हो कर खा सकता था.

ढोंगी

जो मनुष्य के साथ तो दया-लुता का बरताव नहीं करता, किंतु पाषाण मूर्ति की पूजा करता रहता है, वह ढोंगी कहा जा सकता है.

—विनोबा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हर मौसम में त्वचा की रक्षा करती है

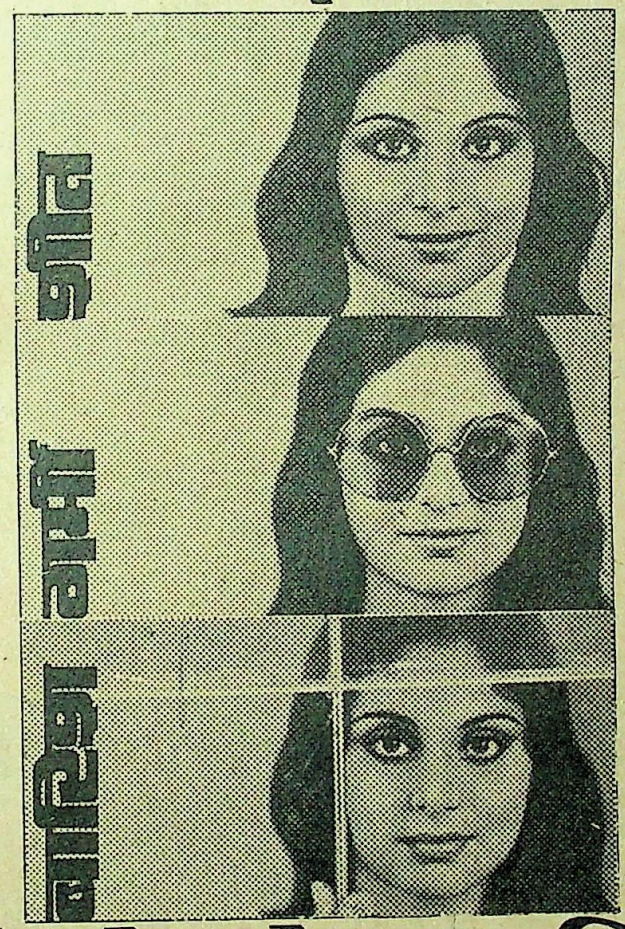

लॅक्मे कोल्ड क्रीम

तीन साइज़ में मिलता है

सूर्य की तीखी किरणें, तेज़ हवा और बारिश आपकी त्वचा को नुकसान पहुंचाते हैं, और इससे आप का रंगरूप मुरझा जाता है.

लॅक्मे कोल्ड क्रीम आपकी त्वचा को स्निग्ध बनाती है– उसे मुलायम और चिर युवा रखती है. चेहरे पर जमे धूल के कणों को दूर कर उसे एक अनोखी दाग-रहित चमक दमक प्रदान करती है.

लॅक्मे कोल्ड क्रीम–
सूखी त्वचा हो नित नवीन !

आप की त्वचा के पहरेदार

लॅक्मे

dCA/LCC/1c Hin

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंदी में रोज हजारों पाकेट बुक्स प्रकाशित होती हैं, उन सब से अलग हैं- विश्व पाकेट बुक्स

एक लहर टूटी हुई:
जीवन से निराश विनोद अपने संक्षिप्त जीवन को और संक्षिप्त बना देना चाहता था. ऐसे में नीला ने निस्वार्थ भाव से विनोद को नई जिदगी दी.
स्त्री और पुरुष के सात्विक प्रेम संबंधो की कहानी.

डाल से बिछुड़े:
रीता की शादी इंगलैंड में बसे राम के साथ तय हुई तो उसे लगा जैसे वह भावना के स्वप्नलोक में जा रही है. मगर...
ब्रिटेन में बसने वाले भारतीयों की अपमान-जनक जिदगी की सच्ची तस्वीर.

दिल्ली के आंसू:
तैमूर लंग ने एक दिन मे एकएक लाख हिंदुओं को कत्ल कर के भारत की धरती को खून से लाल कर दिया. फिर भी कई हिंदू उस के पैर चूमने में अपना सौभाग्य समझते थे....आखिर क्यों?

समय के उस पार:
अनार्य राजा करंज और आर्य कन्या अंजसि का प्रेम?--असंभव.
परिणाम क्या हुआ?...
ईसा से तीन हजार वर्ष पूर्व की भारतीय सभ्यता व संस्कृति की रोमांचक कहानी.

उत्तरदान:
रहस्य, रोमांस व रोमांच का पुट लिए स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने वाले उन वीरों की कहानी जो स्वयं स्वतंत्रता पाने में असफल होने के बावजूद भी अपने बच्चों के उत्तरदान में स्वतंत्रता पाने की आशा दे गए.

एक और पराजय:
टिशांग कसबे के भोले-भाले नागरिकों को चीनी गुलाम बनाना चाहते थे. क्या वे इस में सफल हो सके ?

—प्रत्येक रु. 4

पूरे परिवार के लिए मनोरंजक व सुरुचिपूर्ण पुस्तकें

विश्वविजय प्रकाशन

आज ही अपने पुस्तक विक्रेता से लें.

प्राप्य : दिल्ली बुक कंपनी, एम-12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001.

पूरा सेट लेने पर 5% व डाकखर्च की छूट. आदेश के साथ पांच रुपए अग्रिम भेजें.

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

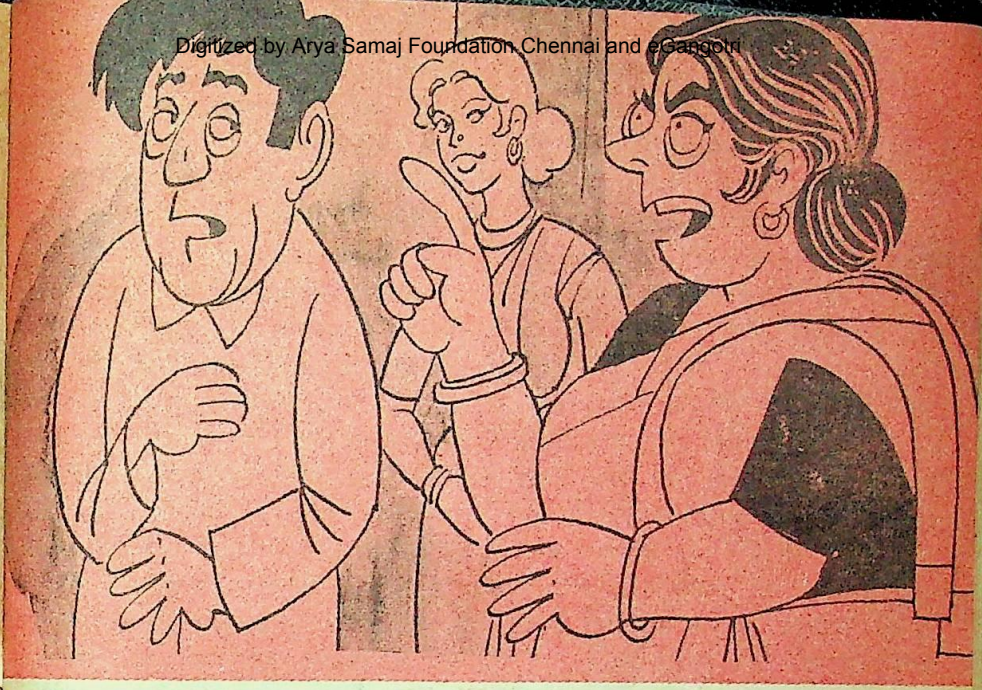

सास पुराण

मेरा कहा मानें तो आप अपनी होने वाली पत्नी को देखें या न देखें मगर होने वाली सास का इंटरव्यू जरूर ले लें.

जब हम छोटे हुआ करते थे तो अकसर पिताजी के परिचित मित्र रविवार हमारे घर मनाया करते थे. दोपहर का खाना खाने के बाद उन का गप्पें लड़ाने का समय हो जाया करता था. गप्प गोष्ठी की हम तीनों भाई घंटों से प्रतीक्षा करते थे, क्योंकि हमें वह महफिल बहुत ही मजेदार लगती थी. उन की बातें घूमफिर कर एक ही केंद्र पर आ टपकती थीं और वह केंद्र था 'सास.' सास, यानी कि पत्नी की परम पूज्या माताजी. इन व्यक्तियों की चर्चा का मूल विषय अपनीअपनी सासों का व्यवहार विश्लेषण या छिद्रान्वेषण ही होता था. एक सज्जन विषय प्रवर्तन करते हुए कहते थे, "भगवान कसम मेरी सास तो भैंस है भैंस. मोटी इतनी कि पता नहीं चलता कि उस की लंबाई ज्यादा है या चौड़ाई."

दूसरे साहब विषय को आगे बढ़ाते हुए कहा करते थे, "अरे यार, मेरी सास तो इतना खाती है कि मैं जब भी उसे खाते हुए देखता हूं तो मेरी भूख बिलकुल ही मर जाती है."

तीसरे साहब जो बड़े उतावले हो कर बात खत्म होने की बाट जोहते थे, बात खत्म होते ही एकदम यतीमी सूरत बना कर बोलते, "अमां यार, मैं एक महीने

व्यंग्य • हरविंदर पाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहले एक ज्योतिषी के पास गया था. उन्होंने बताया था, 'बच्चा, तुम्हारे घर पर राहू, केतु और शनिश्चर एक ही रूप में डाका डालने का कार्यक्रम क्रियान्वित करने वाले हैं. जाओ, अगर तुम बचाव कर सकते हो तो कर लो.' मैं ने घर जा कर देखा कि मेरी सास के आने का तार आया हुआ है."

पिताजी के मित्र सास के भयंकर कारनामों का हवाला इस प्रकार देते थे कि मेरे दिमाग में सास का ऐसा अजब सा नक्शा खिंच गया था जैसा कि हर साल हमारे घर के पास नौटंकी करने वाले शूर्पनखा का बनाते थे--डरावना चेहरा, लंबेलंबे नाखून तथा मुंह से दो दांत बाहर की तरफ निकले हुए.

मगर बड़े होने पर जब मेरी शादी हुई तो सास के प्रति बचपन की सब पुरानी धारणाएं खंडित होने लगीं क्योंकि शादी के तीसरे दिन एक रस्म के मुताबिक हमें ससुराल से बुलावा आने पर हमारी सासजी ने हमारी इतनी खातिर की कि जितनी भारत सरकार ने कीसिंगर के भारत आने के स्वागत में भी न की होगी. मैं सोचने लगा कि अगर मुझे ऐसा मालूम होता तो मैं अपनी शादी चारपांच साल पहले करा लेता.

मगर, चार महीने के पश्चात जब मैं हनीमून मना कर लौटा तो पुरानी धारणाएं, जिन का खंडन तो क्या मंडन भी हो चुका था, फिर जुड़ने लगीं क्योंकि तब हमारी पूज्यनीय सासजी महीने के बीस दिन तो हमारे घर काटतीं और बाकी के दस दिन भी बिना किसी अल्टीमेटम के हमारे घर आ टपकतीं. फिर अपने आप ही सफाई प्रस्तुत करते हुए कहतीं, "मेरी एक ही तो लाड़ों पली, फूलों लदी बेटी है, जिस ने जिंदगी भर कभी दुख नहीं सहा. मैं उसे कैसे काम करने दूं?" इधर हम सोचते कि हम कौन सा इन की बेटी से पहाड़ उठवा रहे हैं? मगर मजबूरी यह थी कि कुछ कह नहीं सकते थे क्योंकि कुछ कह देने से इतना लंबा भाषण सुनना पड़ता था कि उस के आधार पर महाकाव्य नहीं तो एक खंडकाव्य जरूर लिखा जा सकता है और खंडकाव्य लिखने का हमारा कभी मूड नहीं रहा, इसलिए हम समझदारी का ध्यान धरते हुए चुप रहते.

हमारी सासजी जब भी आतीं तो हमारी मुखमुद्रा उन को देखते ही अपनेआप दयनीय और अपराधी की सी हो जाती थी. क्योंकि हमें मालूम था कि अब इतनी बेभाव की पड़ेंगी कि नानी तो क्या परनानी भी याद आ जाएगी. क्योंकि हमारा कसूर यह होगा कि हम ने उन की लाड़ली बेटी को झाड़ू लगाने या जरा ड्राइंगरूम की सफाई करने को कह दिया है. "अरे बेटा, तू यह छोटेछोटे काम खुद नहीं कर सकता तो बाकी की जिंदगी कैसे गुजारेगा? तुझ को सौ दफा पहले कहा है कि मेरी बेटी बहुत नाजुक है. उस ने जिंदगी भर कोई काम नहीं किया. अगर उसे कुछ हो गया तो?"

हम इस के जवाब में कान पकड़ कर माफी मांगते कि अब उस से कोई काम नहीं कराएंगे. जब वह जाने वाली होती थीं तो उन के चेहरे पर ऐसे भाव होते थे जैसे उन्होंने हमारे यहां रह कर हम पर बहुत बड़ा एहसान किया हो. सासजी के जाते ही हम अपना बजट ठीक करने का असफल प्रयास करने लगते थे.

अभी एक साल पहले की बात है. मैं अपने एक मित्र के साथ सिनेमा देखने चला गया. जब रात दस बजे वापस आया तो सासजी ने पहले तो खूब खिंचाई की, फिर मेरी फिजूलखर्ची पर एक धारा प्रवाह भाषण दिया--"अब समझी, तुम सारी तनख्वाह कहां उड़ा देते हो. मेरी बेटी के पास सिर्फ 15 साड़ियां हैं. यह तो होता नहीं कि इस फिजूलखर्ची के बदले उसे एकआध साड़ी ही ला दूं."

मैं ने उन के भाषण को बीच में ही काटते हुए कान को हाथ लगा कर तौबा मांगी और कहा, "आगे से कभी सिनेमा नहीं देखूंगा." मगर दिल ही दिल में सोच

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहा था कि पिछले ही सप्ताह जो तीन सौ रुपए की साड़ी आई थी वह किस खाते में गई?

इस बात को बता देना अच्छा समझता हूं कि इस लेख को लिखने की मेरी इच्छा बिलकुल नहीं थी, क्योंकि मेरी सासजी अपनेआप को न केवल समझदार औरत मानती हैं, बल्कि हिंदी की प्रकांड पंडित भी समझती हैं. इस नाते वह हिंदी की तमाम प्रतिनिधि पत्रिकाएं (इन का खर्चा भी मेरे ऊपर ही पड़ता है) नियमित रूप से पढ़ती हैं. मुझे डर है कि यह लेख कहीं उन की आंखों के सामने न पड़ जाए? क्योंकि तब मेरा वह हाल होगा जो अमरीकी संसद ने वाटरगेट कांड के बाद निक्सन का भी न किया होगा.

कुछ दिन पूर्व एक दैनिक समाचारपत्र में एक समाचार इस प्रकार छपा था: 'ब्रिटेन में एक करोड़पति उद्योगपति के पास टेलीफोन आया, हम ने आप की सास का अपहरण कर लिया है. अतः आप को सूचित किया जाता है कि फलां तारीख को फलां जगह आप दस लाख ब्रिटिश पौंड ले कर न उपस्थित हुए तो आप की सास को जान से हाथ धोना पड़ेगा.' इस पर उद्योगपति ने जवाब दिया, "अगर तुम ने मेरी सास को छोड़ दिया तो तुम्हें कानी कौड़ी भी नहीं मिलेगी, पर अगर मार दोगे तो दस लाख पौंड मिल जाएंगे."

यह घटना जब मेरी नजरों के सामने से गुजरी तो मैं ने इस पर अच्छी तरह मनन किया. मैं इस नतीजे पर पहुंचा कि सारा संसार सास नामक मानवीय जंतु के शोषण से पीड़ित है. अतः मेरे अंतःकरण ने जोर मारा और अस्थायी रूप से सास का डर मेरे मन से निकल गया. मैं लेख लिखने इसलिए बैठ गया ताकि आने वाली पीढ़ी के युवकों, जिन्होंने अभी तक शादी नहीं की है, को इन सासों के चक्रव्यूह से सचेत कर दूं.

अभी जिन की शादी नहीं हुई है उन को चाहिए कि वे अपनी शादी की बातचीत में अपनी होने वाली पत्नी को देखें या न देखें मगर होने वाली सास का इंटरव्यू जरूर ले लें. शादी के वक्त उन से निम्नलिखित वचन भी ले लें:

1. सासजी को जब भी हमारे घर का टूर मारना हो तो यह ध्यान रखना होगा कि प्रत्येक टूर का अंतराल कम से कम चार साल का होना चाहिए.

2. प्राचीन काल में मान्यता थी कि मांबाप जिस घर में अपनी बेटी ब्याहते थे, उस घर का अन्नजल ग्रहण करना हराम समझते थे. बीसवीं सदी होने के बावजूद इस मान्यता का पालन शत प्रतिशत किया जाएगा.

और अंत में मुझे सिर्फ यह कहना है कि हमारे पूर्वज कह गए थे, 'बेटा, अफसर के अगाड़ी और गधे के पिछाड़ी कभी नहीं रहना चाहिए.' हमारे पूर्वज सास के बारे में कुछ नहीं कह गए थे. मैं सास के बारे में यह राय कायम करता हूं कि 'सास के न अगाड़ी रहना चाहिए, न पिछाड़ी.' ●

तेरा खयाल जागेगा...

ऐ हुस्न! हम को हिज्र की रातों का खौफ क्या?
तेरा खयाल जागेगा सोया करेंगे हम...
ये दिल से कह के आहों के झोंके निकल गए,
उन को थपकथपक के सुलाया करेंगे हम.

—मुईन अहसन 'जज्बी'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चमड़ी के रोगों के लिए

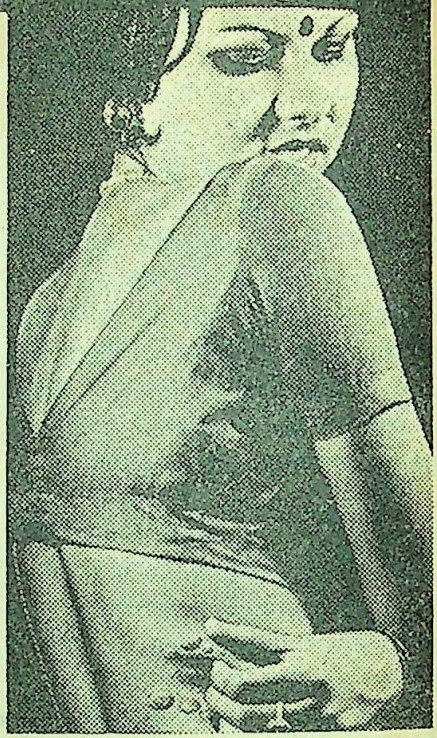

गहराई तक जानेवाला मलहम– अमृतांजन डर्मल ऑइंटमेंट

चमड़ी के साधारण मलहम, चमड़ी के भीतर गहराई तक नहीं जा सकते. परंतु अपने अनोखे सम्मिलित पदार्थों के अत्यंत असरदार गुणों के कारण, अमृतांजन गहराई तक जा सकता है. यह चमड़ी के रोगों की जड़ों तक जाकर उनको मिटाता है और चमड़ी को फिर से स्वस्थ बनाता है दाद, खाज और चमड़ी की अन्य बीमारियों को दूर करने के लिए अमृतांजन डर्मल ऑइंटमेंट एक आदर्श दवा है.

आज ही एक डिबिया खरीदें!

SAA/AM/1906 HN

कभी
करने दूं!
सा इन की
मगर मजबूरी
सकते हैं क्योंकि

अमृतांजन लिमिटेड, १४/१५ लज़ चर्च रोड, मद्रास ६०० ००४.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ये पति

मेरी सहेली की नईनई शादी हुई थी. एक दिन उस के पतिदेव घर में अपना सीना दबाए हुए आए और बोले, "शालू, मेरे सीने में बड़ा दर्द हो रहा है, जरा एक गिलास गरम दूध में दो चमम्च ब्रांडी डाल कर देना."

सहेली बेचारी दौड़ कर लाई. पतिदेव की सेवा में लगी. पूछने पर पता चला कि सर्दियों में अकसर उन्हें ऐसा हो जाया करता है.

जून का महीना आया तब भी उन का दर्द न गया. एक रात वह दर्द से पीड़ित मुद्रा में आए तो शालू ने शांतिपूर्वक कहा, "देखिए साहब, दर्द की दवा आप पी कर आए हैं. चलिए, चुपचाप जा कर सो जाइए."

अब पतिदेव का चेहरा देखने लायक था. असल में जब वह पार्टी में शराब पी कर आते थे तो मुंह से बदबू का वास्तविक कारण छुपाने के लिए दो चम्मच ब्रांडी ले लेते थे और झगड़े से बच कर आराम से पत्नी सेवा प्राप्त करते थे.

—विजया लक्ष्मी, मोदीनगर

✦

भाई साहब आफिस से घर पहुंचे ही थे. बच्चे आपस में उलझे हुए थे और एक दूसरे पर गुस्सा उतार रहे थे. भाभीजी इसी झकझक से तंग आ कर गुस्से में भरी एक ओर बैठी थीं. भाई साहब को देखते ही बोलीं, "सब बच्चे आप पर ही गए हैं. आप का गुस्सा इन सब में कूटकूट कर भरा है."

भाई साहब बोले, "वह तो साफ दीख रहा है, क्योंकि तुम्हारा गुस्सा तो अभी तुम्हारे पास है." यह सुनते ही भाभीजी हंसे बिना न रह सकीं.

—कमल पाटनी, जयपुर

✦

मेरे पति एक अच्छे वैज्ञानिक हैं. [illegible] अनुसंधान में ही लगाते हैं. बच्चों ने खेलखेल में, पता नहीं कैसे, डाइनिंग चेयर की एक टांग नीचे से कुछ तोड़ दी थी, जिस से बैठते समय यदि संतुलन न रखा जाए तो बैठने वाला धड़ाम से गिर पड़ता था.

एक दिन डाइनिंग टेबल पर खड़ी हो कर मैं जाले साफ कर रही थी. काम समाप्त होने पर नीचे उतरने के लिए मेरा पैर अनजाने में उसी टूटी कुरसी पर पड़ गया और मैं चारों खाने चित्त गिर

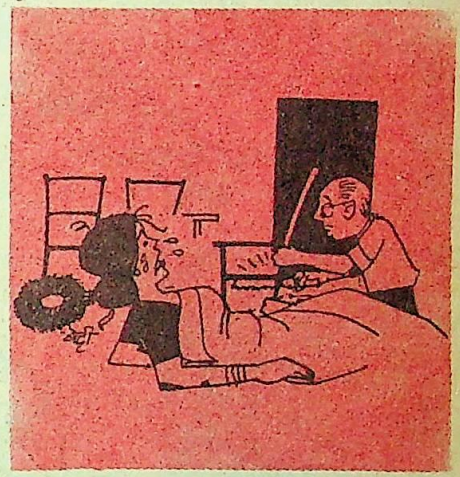

पड़ी. कुरसी और झाड़ू बंधा बांस भी मेरे ऊपर ही आ कर गिरे. आवाज सुनते ही मेरे पति दौड़ेदौड़े आए. उन्होंने तुरंत परिस्थिति भांप ली. बोले, "अच्छा, इस साली कुरसी की वजह से ही तुम गिरी हो. रुको, मैं इसे अभी मजा चखाता हूं." और वह वर्कशाप से आरा इत्यादि औजार ले आए और कुरसी का पाया काटने बैठ गए.

मैं अभी कराह ही रही थी कि मेरा पुत्र शशि आ गया और दौड़ कर उस ने मुझे उठाया. यह तब तक आरी चलाने में ही मस्त थे. पूरी बात पता चलने पर वह खूब हंसा और बोला, "वाह डैडी, वाह! मम्मी बेचारी गिर गई और उन्हें उठाने के बजाए आप आरी ले कर कुरसी की टांग ठीक करने लगे." कुछ देर सोच कर यह भी हंस पड़े और आ कर मेरी पीठ सहलाने लगे.

—प्रियंवदा कलत्रेष्ठ, अहमदाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कायापलट

फोन रागिनी का ही था. कई बार जरूरत होने पर उस ने पड़ोस के डाक्टर के घर से फोन किया है. कई बार तो फिल्म देखने या किसी के घर या बाजार जाने के लिए ही वह फोन कर बैठती थी. अतः उस का फोन पा कर कोई उलझन या दुश्चिंता मन में नहीं उठी थी.

लेकिन रागिनी के स्वर में कुछ आश्चर्य और कुछ घबराहट का भाव था.

"हां, मैं ही बोल रहा हूं, रागिनी. क्यों, क्या है?" गोपाल ने किंचित चिंता से कहा.

"वह...वह आए हैं...भाई साहब...गांव से..."

"भाई साहब!

गोपाल दुविधा में पड़ गया... भैया की आड़े समय में मदद करे या रागिनी को खुश रखे...रागिनी ने मन की बात कह कर उसे चौंका दिया...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कौन...वह क्यों आएंगे?" वह कुछ देर से कह गया.

"यह तो पता नहीं, पर तुम आ जाओ?" जल्दी ही, वह बैठे हैं न...मुझे उलझन हो रही है और वह शायद रात को जाना भी चाहें तो थोड़ा साथ हो जाएगा."

रागिनी को उलझन क्यों हो रही है? कोई पुरुषों से परदा करने वाली, अलग-थलग रहने वाली गांव की तो है नहीं. बढ़चढ़ कर बातें करती है. दुनिया भर की जानकारी उस के दिमाग की थैली में भरी रहती है. जब जितना चाहा, थैली का मुंह खोल दिया. बस बातों की भरमार. वह कोई दब्बू, आंखें झुका कर बैठने वाली तो है नहीं. जहां भी बैठती है वहां उस का व्यक्तित्व हावी हो जाता है.

'तो क्या आज वह जेठ के आगे लजाने वाली बहू बनी है.' सोचतेसोचते गोपाल ने स्कूटर स्टार्ट किया. मन में दुविधा हो रही थी कि भैया, उस के

कहानी • नारायणी

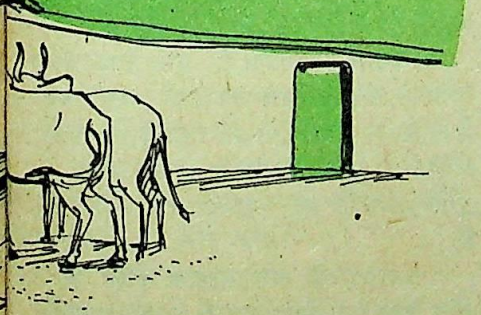

भाभी ने शरारत से मुसकराते हुए बताया कि वही रामभरोसे बाबू आए हैं जिन्हें जबान दे रखी थी, तो गोपाल को धक्का सा लगा. वह इतना ही कह पाया, "यह क्या!"

अपने गोविंद भैया, आज यहां कैसे आए. चार वर्ष हुए उन से कोई संबंध ही नहीं रह गया था. न चिट्ठी, न पत्री, न आनाजाना. रागिनी से विवाह की चर्चा से ही इस तरह तुनक गए थे कि सारा नातारिश्ता तोड़ दिया था. उन्होंने जो मुंह मोड़ा तो उसे घर से जाते हुए भी देखने नहीं आए.

गलती उस की ही थी. पितृवत् दुलारने वाले भैया तो सब दुख सहते हुए उसे पढ़ालिखा रहे थे.

घर पहुंचतेपहुंचते अतीत के ढेर सारे दृश्य उस की आंखों के आगे घूम गए थे.

"भाभी, यह रजाई तो एकदम फट चुकी है, चिथड़ाचिथड़ा हो गई है. एक खोल ही बना लो न." भाभी मायूस हो कर रजाई देखने लगतीं.

"एक भी अतिरिक्त चादर घर में नहीं क्या कि कभी धोबी को दी जा सके."

भैया खिसियाए से कहते, "तुम्हारी भाभी धोबी की सी सफाई तो घर में ही कर लेती है फिर क्या जरूरत है धोबी की." कहतेकहते हंस पड़ते. किंतु उस हंसी में कितनी करुणा छिपी रहती.

"गांव में जितनी खेतीबाड़ी है वह तो मैं संभाल ही रहा हूं. तो गोपाल की जिंदगी भी यहां क्यों खराब की जाए? जमाना इतनी महंगाई का है. पढ़लिख कर वह कहीं बाबूअफसर बन जाएगा तो दुख के ये दिन फिरेंगे," भैया कहा करते.

"गोपाल पढ़ने में बहुत तेज है. स्कूल में सब कहा करते हैं कि उसे पढ़ने का मौका मिला तो खूब पढ़ेगा. चलो, एक भाई जाहिल गंवार रहा, तो दूसरा तो पढ़ालिखा निकला."

गोपाल होस्टल में नहीं रहता था, वहां खर्च बहुत पड़ता था. तीनचार लड़कों के साथ एक कमरा ले रखा था उस ने. खाना भी वहीं बनाने का जुगाड़ कर लिया था. एक बाई शाम को जो खाना बना जाती वही सुबह के लिए भी कुछ रखा रहता.

भैया सुनते तो हाय कर उठते,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्यों गोपाल, रात का बासी खाना खाते हो? अपने से बना लिया करो ताजा. ताजा खाने की बात ही और होती है. न हो तो कुछ दिनों के लिए अपनी भाभी को ले जा..."

"भैया, इतनी जगह कहां है वहां एक कमरे में? तीन जनों का गुजर करना ही कितना मुश्किल है, भाभी कहां रहेंगी?"

"हां, हां, यह क्यों नहीं कहते, गोपाल बाबू, कि भाभी को शहर की हवा लग जाएगी तो भैया का काम कैसे चलेगा. इस से तुम शायद डरते हो. नहीं तो भाभी का क्या, रसोई में ही एक कोने में पड़ी रहेगी," भाभी परिहास करतीं.

परिहास तो भाभी का जन्मसिद्ध अधिकार है. गोपाल के आने पर खूब परिहास होता. अच्छा भी लगता. मगर पति का बारबार टोकना उन्हें अखर जाया करता. कभीकभी कहते, "आज दाल इतनी पतली क्यों बनाई है कि डुबकी लगा लो? गोपाल रहे तब तो गाढ़ी दाल ही बनाया करो...घी तो सूंघने भर को रखा है. पढ़ाईलिखाई में इतना दिमाग खर्च करता है, वहां तो रूखीसूखी रोटी खाता ही है. कौन वहां भैयाभाभी बैठे हैं. यहां तो कुछ तरी मिल जाए."

"रोजरोज वही आलूप्याज छौंक दिया या कद्दू की सब्जी बना दी...कोई ढंग की सब्जी नहीं मिलती?"

"सुनो, दूध को खूब औंट कर दही जमा दो तब गाढ़ा जमेगा और रात को गोपाल को दूध दे देना. मुझे न देना, पेट भारी लग रहा है कुछ..."

"भाभी खूब समझती हैं कि पेट क्यों भारी है, लेकिन यह रोजरोज के चोंचले कहां तक सहती रहें. कहना ही पड़ता, "जानते तो हो ही घर की दशा कि किस तरह बच्चों का पेट पाला जा रहा है. दूध औंटाती ही रहूं तो नन्हा बिना दूध का रह जाएगा. तलीफली चीजें बनाने को इतना तेलघी कहां से लाऊं? माना कि देवर महीने भर को आए हैं पर यहां बच्चे कौन सा रोज पूड़ीपूआ खा रहे हैं...सभी को चाहिए न."

भैया बातों का औचित्य समझते हुए भी बिगड़ उठते, "ठीक है, भई, तुम्हारा रोना तो लगा ही रहता है. मगर अब साल दो साल की ही तो बात है. गोपाल की नौकरी लगी नहीं कि बस घर का कायापलट हो जाएगा."

"यह सब तुम्हारे सपने हैं. उन का अपना घरबार होगा, शहर के खर्चे होंगे कि तुम्हारे घर का कायापलट करने आएंगे."

गोपाल की एम. एससी. की परीक्षा को कुछ दिन बाकी रह गए थे. वह घर आया तो भाभी ने खातिरदारी में कोई कसर न रखी. मेवा, पेड़े, असली घी के लड्डू, नाश्ते के लिए चाय के संग पकौड़ियां, खाने में रोटी घी से तर कर देतीं, अचारपापड़ भी देना न भूलतीं. गाढ़ीगाढ़ी उड़द की दाल के संग पुराना चावल, सामने स्वयं पंखा ले कर बैठतीं भाभी.

तब गोपाल ने समझा था कि घर की हालत अच्छी हो गई है. मालूम होता है, अब की अनाज अच्छा हुआ है और पैसे भी अच्छे वसूल हुए हैं.

यह तो बाद में मालूम हुआ कि भाभी उधार लेले कर उस की खातिर कर रही थीं.

गोपाल ने पिच्च से थूक दिया था. घृणा से उस का मन भर उठा था. "अब मेरी पढ़ाई पूरी होने जा रही है, कमाने लगूंगा तो उन का ही घर भरता रहूंगा... इसी आशा से यह खातिरदारी हो रही है."

परीक्षा दे कर गोपाल जिस दिन गांव गया था, देखा घर में काफी सफाई, बल्कि सजावट नजर आ रही थी. दालान में बिछी चारपाई पर नई चादर थी. कुछ नए शीशे के गिलास मेज पर रखे थे. भाभी रसोई में व्यस्त थीं. भतीजे और भतीजियां साफसुथरे कपड़े पहने दिखाई दीं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

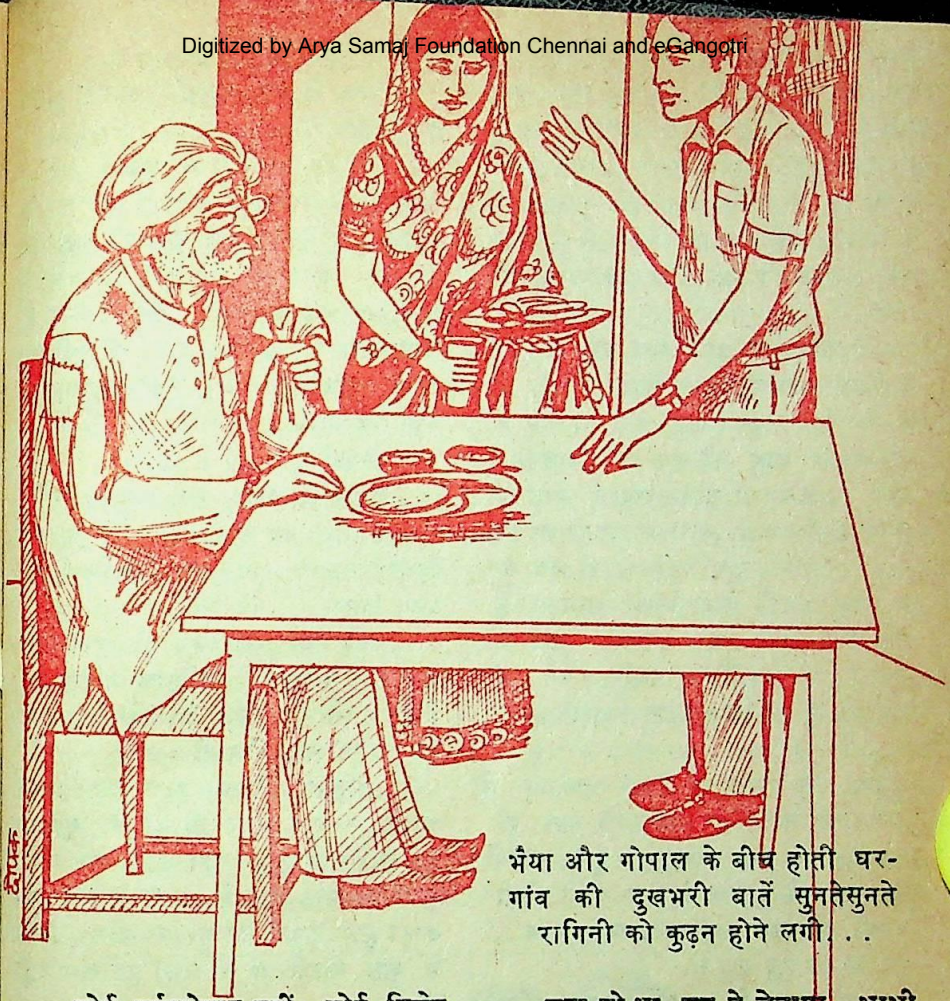

भैया और गोपाल के बीच होती घर-गांव की दुखभरी बातें सुनतेसुनते रागिनी को कुढ़न होने लगी. . .

कोई पर्वत्योहार नहीं, कोई विशेष अवसर नहीं, फिर ऐसा क्यों?...रसोई से पकवान बनने की खुशबू भी आ रही थी.

"आज तो, भाभी, खुशबू से ही भूख लगी आ रही है:.."

"सच, मेहमान जो बड़े आए हैं, तो खाना बढ़िया न बने?" भाभी ने कहा.

"मेहमान? कौन मेहमान? गोपाल पूछ बैठा था. "फूफा, मामा, जीजा...कोई आए होंगे या और कोई?"

"वही, रामभरोसे बाबू," भाभी कुछ शरारत से मुसकराई थीं. "जिन को तुम्हारे भैया ने जबान दे रखी है बहुत पहले से."

गोपाल को धक्का सा लगा, "भाभी, यह क्या?" उस की चेतना लुप्त सी होने लगी. "यह क्या, भाभी, मुझ से पूछा भी नहीं और..."

कहा तो था, मन ने चेताया. भाभी ने बहुत पहले ही बताया था और उन्होंने उस की अस्वीकृति को भी विनोद में ही लिया था.

"मैं ने तो इनकार कर दिया था. मुझे नहीं पता था कि आप सचमुच मुझ से पूछे बिना कोई रिश्ता तय करेंगे." रामभरोसे की आंखें निर्जीव सी टंगी रह गई थीं. वह बिना पानी पिए ही वहां से चले गए थे. खाना किसी ने न खाया था, न भैया ने, न भाभी ने, न गोपाल ने.

भैया ने समझाते हुए कहा था, "गोपाल, गलती मेरी ही थी. मैं ने तो यही सोचा था कि बेटे की तरह तुम्हें माना है. तुम दसबारह वर्ष के हो तो थे तभी मां चली गई थीं. बाबूजी की तो तुम्हें याद भी न होगी. तुम्हारे लिए जो कुछ कर सकता था

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किया, पेट काट कर भी... रामभरोसे बाबू को वचन दिया था कि पढ़ाई पूरी होते ही उन की बेटी से तुम्हारा ब्याह करूंगा, वही आज आए थे. लड़की देखी-भाली है तुम्हारी भाभी की गुनसहूर में पूरी, ग्यारहवें दर्जे तक पढ़ी भी है...अब मेरी जबान की लाज रख लो. मुझे क्या पता..."

तनबदन में आग लग गई थी उस के. भैया असली बात छिपा रहे हैं या कहने का साहस नहीं कर पा रहे हैं. रामभरोसे बाबू की इकलौती लड़की है और रुपया काफी बटोर रखा है. भैया की नजर उसी पर है. चीख कर कहा था उस ने, "आप को पता नहीं था तो अब सुन लीजिए. शादी मेरा निजी मामला है. मुझे जो लड़की पसंद आएगी, आप को बता दूंगा, रही दानदहेज लेने की बात तो मैं उस के एकदम खिलाफ हूं."

भैया ऐसे निरीह से देखते रह गए थे जैसे गाल पर तमाचा पड़ा हो. 'गोपाल ने क्या सचमुच मुझे स्वार्थी समझा?...मैं ने जिस के लिए कभी बीवी-बच्चों की परवा नहीं की, वही आज...' वह सोचते रह गए थे.

कठिनता से उन्होंने साहस बटोरा था, "शादीब्याह होता है तो लड़के वालों को भी कुछ खर्च करना होता है. सब कहां से आएगा? गहने, कपड़े, चढ़ावा बरात सब देखना है. अपने पास तो कुछ है नहीं. घर का हाल तो छिपा नहीं है. खैर, चाहो तो खेत बेच कर अपना हिस्सा ले लेना."

"इस की जरूरत न पड़ेगी, भैया. घरबार, खेतखलिहान, सब आप संभालते रहें. मुझे इस में से कुछ नहीं लेनादेना."

गोपाल को भैया का कथन बहुत ही कड़वा लगा था. इस का कारण अन्य मान्यताओं के अतिरिक्त रागिनी भी थी उस के एक मित्र की बहन. परिचय प्रेम में बदला और प्रेम के साथ परिणय की आकांक्षा.

भैया ने सुना तो गोपाल से उन की दूरी बढ़ गई थी.

"कम से कम लड़की अपनी जाति की तो होती."

"मैं यह सब नहीं मानता."

"नहीं मानते तो आज से इस घर के द्वार तुम्हारे लिए बंद हैं. मुझे तो लड़कियों के ब्याह करने हैं. यह कोई शहर तो है नहीं, जहां सब चलता है. मामूली गांव है, जातकुजात की बात ले कर कोई रिश्ता करना पसंद नहीं करेगा. कहां हम ब्राह्मण, कहां वह यादव..."

"तब?"

"मुझे जो कहना था, कह दिया."

विवाह का कार्ड भैया ने दूर फेंक दिया था. न खुद आए, न किसी को आने दिया.

वही भैया चार वर्ष की दूरी पार कर के कैसे आए थे? गोपाल चकित था, चिंतित भी था. अभी भी उसे लगता था कि शायद कोई और हों.

सीढ़ियां फांदता हुआ वह ऊपर आया. सचमुच भैया ही बैठे थे. एकदम बूढ़े से लगते हुए. वही गजी का मोटा कुर्तापाजामा. हाथ में भाभी के हाथ का काढ़ा हुआ दुसूती का पुराना झोला, जिस में कुछ पोटलियां सी बंधी हुई लग रही थीं.

भैया हड़बड़ा कर खड़े हो गए थे. फिर कई क्षण दोनों एकदूसरे को देखते खड़े रहे. रागिनी चुपचाप दोनों को देख रही थी.

मौन टूटा, "कब आए यहां? पता कैसे लगा?" गोपाल ने पूछा.

भैया ने गला साफ करने के लिए खखारा. नीचे देखते हुए बोले, "पता लगा ही लिया...आज ही आया हूं."

"आप ने बताया होता, हम आ जाते लेने स्टेशन..."

भैया कुछ न बोल पाए. हाथ हिला भर दिया उन्होंने, जैसे कहा हो कि 'जानता ही कहां था कि पहुंच भी सकूंगा, कहीं स्वाभिमान बीच में ही रोक लेता तो?'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंतर्व्यथा कहां थी, कितनी थी, दोनों में से कोई नहीं जानता था. एक बड़े साहस से बोलता, दूसरा बड़े साहस से जवाब देता.

रागिनी ने खाना तैयार होने की सूचना दी थी. किंतु मेज पर सजा हुआ भोजन...

"नीचे ही इंतजाम किया होता, भैया मेज पर नहीं खाते."

"नहीं, जहां मिल जाए, सब जगह खापी लेता हूं." स्वर में दीनता थी.

रागिनी ने थोड़ी ही देर में किंतु मन से खाना बनाया था. तीन सब्जियां, खीर, घी से तर फुलके, रायता. पहली बार ससुराल का कोई आया था, जिसे मान-सम्मान देना ही था.

भैया पहले संकुचित से रहे, फिर रागिनी के बारबार आग्रह करने पर रस लेले कर खाने लगे.

"खाना बहुत अच्छा बनाती है बहू. घर भी खूब सजाधजा रखा है. लक्ष्मी है बहू."

गोपाल ने किंचित संदेह से देखा उन्हें. प्रशंसा वास्तव में प्रशंसा के ही लिए है अथवा कुछ और...

भैया को जैसे एकाएक कुछ याद आया, पहली बार बहू देखी है और उस के हाथ का खाना खाया है. जेब में हाथ डाला, रूमाल निकाल कर मेज के नीचे बाएं हाथ से खोला, मगर रुक गए.

गोपाल ने उपेक्षा से देखा, मगर रागिनी ने ताड़ लिया.

भैया धीरेधीरे घर की बातें करने लगे थे. लड़की का ब्याह करना है. मगर...तीन साल से भगवान ने भी अजब छलावा दे रखा है. जब पानी चाहते हैं, पानी नहीं बरसता, पानी की बूंद को तरसतरस कर हाड़मांस के पसीने से खेत सींचते हैं. जब फसल पकने पर आती है तब ओले बरस जाते हैं, या फिर बाढ़ ही बाढ़.

रागिनी को घरगांव की दुखभरी बातें सुनतेसुनते कुढ़न सी हो आई. कहां हरदम चहलपहल, मित्रपार्टी जमी रहती, पिक्चर और पिकनिक की बातें होतीं, ताश और गीत होते या राजनीति की चर्चा छिड़ती और कहां सूखा और अकाल की बातें हो रही थीं. सूखा और अकाल

"और सब बातों को छोड़ो, बाबा. मुझे यह बताओ कि राजेश, दिनेश, संजय,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरिता व मुक्ता में प्रकाशित महत्त्वपूर्ण लेखों के रिप्रिंट

सेट नं. 1.

1. प्राचीन हिंदू संस्कृति
2. शंबूक वध
3. अतीत का मोह
4. पुरोहितवाद
5. गोपूजा
6. हमारी धार्मिक सहिष्णुता
7. कृष्ण नीति : हमारा नैतिक पतन
8. ज्ञान की कसौटी पर परलोकवाद
9. राम का अंतर्द्वंद्व
10. राम का अंतर्द्वंद्व : आलोचनाओं का उत्तर
11. भारत में संस्कृति का ब्राह्मणनियंत्रित विस्तार
12. हिंदू धर्म
13. संस्कृत
14. भारतीय नारी की धार्मिक यात्रा
15. कर्ण
16. भारतीय नारी की सामाजिक यात्रा
17. तुलसी और वेद
18. रामचरितमानस में ब्राह्मणशाही
19. युगोंयुगों से शोषित भारतीय नारी
20. भ्रष्टाचार
21. रामचरितमानस में नारी
22. सत्यनारायण व्रत कथा
23. क्या नास्तिक मूर्ख हैं?
24. गांधीजी का बलिदान
25. यज्ञोपवीत
26. जंत्र तंत्र मंत्र
27. कर्मयोग
28. गरुड़ पुराण

सेट नं. 1 का मूल्य तीन रुपए. मूल्य मनी/पोस्टल आर्डर द्वारा भेजें. वी पी. पी. द्वारा भेजना संभव नहीं. अध्यापकों, ग्राम सेवकों, ग्राम पंचायतों के लिए आधा मूल्य.

दिल्ली बुक कंपनी,
एम-12, कनाट सरकस,
नई दिल्ली-1.

यह सब तो अखबार की बातें होती हैं, न कि घर की, कोई घर इस से भी बन-बिगड़ सकता है, इसे रागिनी ने कभी अनुभव नहीं किया था.

खाने की मेज से उठ कर भैया फिर चुपचाप बैठ गए थे. एक बार दृष्टि उठी तो देखा, रागिनी उन के झोले को कुरेद रही थी, बच्चों की सी उत्सुकता से. भाई के होंठों पर हंसी आई, मगर कहतेकहते सकुचा गए. कहां यह संपन्न घर...कहें न कहें की दुविधा में पड़े हुए वह बोले, "गोपाल, तुम्हारी भाभी मानी नहीं, लड्डू बना दिए. मैं कहता रहा...मगर..."

भैया के आने का अर्थ समझ में आ गया था. इतने साल देखा नहीं, नाराज रहे. अब मतलब पर कैसे दौड़े आए. कैसे कह रहे हैं, "एकदो हजार मिल जाते तो विवाह की बात चलाता." सोच कर भाई से विरक्ति होने लगी थी. तभी भाई की दुविधा, भाभी के सौगात के विषय में कहने की अटपटाहट ने उसे फिर भाईभाभी के स्नेह की याद दिला दी थी. वह जैसे अचानक कह उठा, "भाभी ने लड्डू भेजे हैं? बड़े अच्छे होते हैं, रागिनी, उन के हाथ के. मूंग के होंगे, मुझे अच्छे लगते थे न. ले कर देखो." कहतेकहते स्वयं ही एक बार में पूरा लड्डू अपने मुंह में डाल लिया था गोपाल ने.

"असली घी का है न, इसी से. अब हम लोग इतना खर्च कर के कहां बना पाते हैं." रागिनी ने उन का महत्त्व कम करना चाहा था. भैया ने कुछ उदासी से देखा. तीन कमरे का सुंदर सा मकान, सोफा, कालीन, पंखे, फ्रिज, स्टील के चमचमाते बरतन. सिर्फ अपने पर इतना खर्च...फिर कहने का कारण यही है न कि उन के पास पैसा नहीं है.

गोपाल भाई के स्नेह में भीग गया था, मगर दुविधा रागिनी की तरफ से थी. भाई मदद का विश्वास ले कर आए होंगे, मगर वह कैसे कहें...क्या रागिनी से चोरी भला कहा जा सकेगी कि जिस ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जी.ई.सी.

आसरम् बल्ब

वोल्टेज के उतार-चढ़ाव से बे-असर

OBM—4493A/3/HIN

नया

भारत मे सर्वप्रथम! स्वयं अपने पिस्टन फिलिंग सिस्टम वाला

कैम्लिन पेन

उत्कृष्ट हाथों में एक परिपूर्ण पैन ही सजता है। यही सुंदर लिखावट की कुंजी है! यह एक ऐसा पैन है जिसमें विस्मयपूर्ण विचित्रताएं छिपी हुई हैं जो आपको बेदाग सफ़ाई और सुथरापन की एक नयी दुनिया से परिचित करती है। इससे आप जादा समयतक लिखते हैं। इसका विशेष पिस्टन फिलिंग सिस्टम किसी भी दूसरे सिस्टमकी अपेक्षा कही अधिक स्याही खींचता है। स्याही न तो फिलिंग के समय फैलती है न ही लिखने के समय रुकती है।

कैम्लिन पैन और बॉल पॉइंट पैन कई तरह के आकर्षक डिज़ाइनों में मिलते हैं।

कैम्लिन प्रा. लिमिटेड
स्टेशनरी डिवीज़न, बम्बई

Vision /52 Hin

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उस की शादी में आना तक नहीं स्वीकार किया, एक पत्र तक न लिखा, उसे कुछ दिया जाए और रागिनी से छिपा कर. देना अनुचित है.

शाम की बस से भैया चलने को तैयार हो गए. रागिनी ने ही कहा, "इतनी जल्दी क्यों? पहली बार आए हैं, कुछ दिन और रुक जाएं."

"पहली बार सुना तो भैया को फिर सोच में डूबते पाया." आखिर रूमाल खोला. ग्यारह रुपए बहू के हाथ में देते हुए उन्होंने कहा, "पहली बार बहू के हाथ का खाने का."

रागिनी ने सादर स्वीकार किया. भैया अपना झोला उठा कर चलने को उद्यत हुए, "कहासुना माफ करना, बेटी के ब्याह में जरूर आना."

रागिनी ने जाते हुए भैया के पैर छुए. गोपाल स्कूटर पर पहुंचाने जाने लगा तो अचानक उसे लगा कि रागिनी उसे अकेले में कुछ कहने को बुला रही है. वह जान कर भी अनजान बना.

भैया को पहुंचा कर आया तो रात हो चुकी थी. लेकिन रसोई सूनी पड़ी थी और रागिनी चुपचाप कुरसी पर बैठी हुई पत्रिका के पृष्ठ बिना देखे पलट रही थी. लगता था, तब से वह वैसे ही बैठी है.

गोपाल ने चुपचाप देखा और वह भी सामने कुछ ऐसे ही बैठ गया जैसे फर्स्ट क्लास की रिजर्व जगहों पर यात्री आ कर अपनीअपनी सीट पर बैठ जाएं. यह सब तो न चालना.

कि घर [illegible] कब तक? आखिर मौन टूटा. बिगड़ स[illegible]गनी, आज चुप क्यों हो?"

[illegible]नुभव [illegible]नी ने अपराधी सा उत्तर दिया, "[illegible]हा है कि कुछ भूल हुई है."

[illegible]चा मुझे भी ऐसा ही लगता है. पर मैं स[illegible] देखकर भी समझ नहीं पाता."

[illegible]ति से भूल हुई है—और वह स्वी[illegible]र कर रहे हैं. रागिनी का कोमल मन [illegible]ाकुल हो उठा.

"हैं? कौन सी भल? क्या मुझ से नहीं कहोगे?"

"कहूंगा...मगर तुम पता नहीं क्या समझोगी. मैं तुम से छिपा नहीं सकता. भैया बहुत परेशान थे, तभी आए थे. वह चाहते थे कि उन्हें कुछ आश्वासन दूं. पर स्वाभिमानी ऐसे कि चाहा मगर मांगा नहीं. एकदो हजार देने की स्थिति में तो हम हैं ही, लेकिन..."

"लेकिन क्या?" रागिनी के आंखों में कुछ चमक आई. "यही तो मैं तुम से कहना चाहती थी. भैया की बेटी हमारी भी तो कुछ है.

"माफ करना, रागिनी, मैं ने तुम्हें गलत समझा था. इसी आशंका से मैं ने स्टेशन जाने से पहले तुम्हारी बात नहीं सुनी थी. सोचा था, तुम्हें भैया से नफरत होगी."

"थी. . .पर अब श्रद्धा और संवेदना है. पुराने संस्कारों और मान्यताओं को छोड़ देना इतना आसान नहीं होता, .उन को देख कर ही यह अनुभव किया है." ●

गोली न चली

हेलब्राउन. गर्भ निरोधक गोली के बावजूद सात वर्ष में छः बच्चे! यहां के 50 वर्षीय एक नागरिक ने डाक्टर से शिकायत की और बोला, "आजकल की डाक्टरी बिलकुल बकवास है."

पूछताछ करने पर पता चला कि पत्नी के बजाए यह साहब गोलियां खुद खाते रहे. वजह? उन्हें पता था कि उन की घरवाली गोलियां खाने में बड़ी लापरवा है और अकसर भूल जाती है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चंचल छाया पिछले 30 वर्षों में

हमारे पाठक समयसमय पर पूछते रहते हैं कि सरिता में तीन, चार और पांच स्टार किनकिन फिल्मों को दिए गए हैं, इस बार हम एक पूरी सूची प्रकाशित कर रहे हैं, जिस में सरिता के प्रकाशनारंभ से अब तक तीन, चार और पांच स्टार पाने वाली फिल्मों के नाम हैं :

★★★★★ अद्वितीय

विराजबहू (1954)
गोदान (1964)

★★★★ अति उत्तम

विक्रमादित्य (1945)
शाहजहां (1946)
डा. कोटनिस की अमर कहानी (1947)
सुहागरात (1949)
मां (1952)
रत्नदीप (1952)
आवारा (1952)
दो बीघा जमीन (1953)
हीरा मोती (1959)
परख (1960)
काबुलीवाला (1962)
सौतेलाभाई (1962)
गाइड (1966)
उपकार (1967)
आशीर्वाद (1969)
आनंद (1971)
परिचय (1972)
अभिमान (1973)

★★★ उत्तम

हुमायूं (1945)
आइना (1945)
एक दिन का सुलतान (1946)
हमराही (1946)
दिनरात (1946)
पृथ्वीराज संयुक्ता (1946)
बैरम खां (1946)
रेणुका (1947)
सिंदूर (1947)
दर्द (1948)
सम्राट अशोक (1948)
आज की रात (1948)
चंद्रशेखर (1948)
अनोखी अदा (1948)
आजादी की राह पर (1949)
मेरी कहानी (1949)
नदिया के पार (1949)
अंदाज (1949)
स्वयंसिद्धा (1949)
महल (1950)
छोटा भाई (1950)
दहेज (1950)
मंजूर (1950)
शीशमहल (1950)
मशाल (1950)
अफसाना (1951)
काली घटा (1951)
नवबहार (1952)
पात्रिक (1952)
झांसी की रानी (1953)
छोटी मां (1953)
नन्हेमुन्ने (1953)
तीन बत्ती चार रास्ता (1953)
बाज (1953)
परिणीता (1953)
पतिता (1953)
श्री चैतन्य महाप्रभु (1954)
धर्मपत्नी (1954)
औलाद (1954)
फेरी (1954)
सुबह का तारा (1954)
पमपोश (1954)
नौकरी (1955)
अधिकार (1955)
गर्म कोट (1955)
शांति (1955)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुंदन (1955)
श्री 420 (1955)
परिचय (1955)
झनकझनक पायल बाजे (1955)
देवदास (1956)
एक ही रास्ता (1956)
तूफान और दिया (1956)
इंस्पेक्टर (1956)
सी. आई. डी. (1956)
जागते रहो (1956)
नई दिल्ली (1956)
प्यासा (1957)
छोटे बाबू (1957)
दो आंखें बारह हाथ (1957)
मदर इंडिया (1957)
परवरिश (1958)
सोलवां साल (1958)
एक शोला (1959)
लाजवंती (1959)
सुजाता (1959)
गूंज उठी शहनाई (1959)
नई राहें (1959)
दीदी (1960)
चौदहवीं का चांद (1960)
अनुराधा (1960)
मुगले आजम (1960)
जिस देश में गंगा बहती है (1961)
मेम दीदी (1961)
हम हिंदुस्तानी (1961)
अमर रहे यह प्यार (1961)
कानून (1961)
गंगाजमना (1961)
आरती (1962)
बीस साल बाद (1962)
साहिब, बीबी और गुलाम (1962)
रूप की रानी चोरों का राजा (1962)
प्रोफेसर (1963)
बंदिनी (1963)
गुमराह (1963)
गंगा मइया तोह पियरी चढ़इबो (1963)
संगम (1964)
दोस्ती (1964)
गीत गाया पत्थरों ने (1965)
हकीकत (1965)
ममता (1966)
आसरा (1967)
तीन बहूरानियां (1968)
साथी (1969)
राहगीर (1969)
तलाश (1970)
आराधना (1970)
खामोशी (1970)
तेरे मेरे सपने (1971)
दुश्मन (1972)
अनुभव (1972)
कच्चे धागे (1973)
सौदागर (1974)
कोरा कागज (1974)
गरम हवा (1974)
जूली (1975)

ALL UNDER ONE ROOF
ESTD : 1958

ELECTROLYSIS
THOUSANDS HAVE BEEN CURED OF UGLY SUPERFLUOUS HAIR PERMANENTLY IN INDIA & ABROAD

PROP. MRS. A. GARKAL
EX-BEAUTICIAN OF TAO CLINIC LONDON

SLIMMING
BY SCIENTIFIC MACHINES

HAIR DRESSING
BY ROSHAN LAL

BEAUTY TREATMENT
INDIVIDUAL FACE MASSAGE
BRIDAL MAKE-UP
WAXING MANICURE ETC.

DELHI ELECTROLYSIS & BEAUTY CLINIC
40, HANUMAN ROAD, NEW DELHI-110001 TELEPHONE 31297

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिल्म समीक्षा

★★★★अति उत्तम ★★★उत्तम ★★मध्यम★ साधारण ○बेकार

★ फरार

निर्माता : अलंकार चित्र
निदशक : शंकर मुखर्जी
कहानी : गुलजार
मुख्य कलाकार : संजीवकुमार, शर्मिला टैगोर, अमिताभ बच्चन, सुलोचना, राजन हकसर, जयश्री तलपदे, अनुपमा, आगा, मास्टर राजू, सप्रू, सज्जन

राज (अमिताभ) अपनी बहन मीता (अनुपमा) के हत्यारे तरुण (राजन हकसर) की हत्या कर के फरार हो जाता है और पुलिस अफसर संजय (संजीव) के घर शरण लेता है. इस के बाद कहानी 'छत्तीस घंटे और 'इत्तिफाक' के ढर्रे पर चल पड़ती है.

फिल्म में दर्शकों की सहानुभूति राज के साथ बनाए रखी गई है. दूसरे राज जिस परिवार में खूनी के रूप में शरण लेता है, धीरेधीरे वह उस का एक सदस्य ही बन जाता है. इस के लिए लेखक कई बार कहानी को फ्लैश बैक में ले जाता है. इन्हीं फ्लैश बैकों में राज की पहली जिंदगी दिखाई है और पता चलता है कि संजय की पत्नी माला (शर्मिला टैगोर) और उस में कभी प्रेम रहा था. इस प्रकार फिल्म में नाटकीयता पैदा हो जाती है जो दर्शकों को कहानी में बांधे रखती है.

संजय का बेटा बाबी (मास्टर राजू), जिस को आड़ बना कर राज अपने आप को पकड़े जाने से बचाता रहता है और एकदूसरे को प्यार करने लगते हैं. यह तर्कसंगत तो प्रतीत नहीं होता, पर बाद में इस को ले कर कहानी में ऐसे मोड़ आए हैं कि उन का चित्रण बड़ा ही भावपूर्ण रहा है.

फिल्म दुखांत है और अंत में राज पुलिस के हाथों मारा जाता है लेकिन इस से पहले लेखक उसे एक ऊंचे स्तर तक उठा गया है, जिस से दर्शकों की सहानुभूति उस के साथ हो जाती है और पुलिस इंस्पेक्टर बेवकूफ लगने लगता है.

अभिनय की दृष्टि से संजीवकुमार का अंतर्द्वंद्व सजीव तो लगता है पर साथ ही साथ सारी परिस्थिति बनावटी मालूम पड़ती है. इसलिए अमिताभ संजीव से आगे निकल गया है. आशा और माला के रूप में दोहरा जीवन जीती हुई शर्मिला टैगोर स्वाभाविक है. मास्टर राजू भी अभिनय की दृष्टि से उल्लेखनीय है. क. ह. कपाड़िया की फोटोग्राफी सुंदर है. पटकथा सुगठित है. परंतु हमारी फिल्मों में जो हत्यारों और अपराधियों को प्रेरक नायक के रूप में चित्रित करने की निंदनीय परंपरा चल रही है, फरार भी उसी की एक कड़ी है, और इसलिए वांछनीय नहीं कही जा सकती.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

★ गीत गाता चल

निर्माता : राजश्री प्रोडक्शंस
निर्देशक : हिरेन नाग
मुख्य कलाकार : सचिन, सारिका, ख्याति, पद्मा खन्ना, मदन पुरी, महमूद जूनियर, उर्मिला भट्ट, मनहर देसाई

फिल्म 'गीत गाता चल' के रूप में निर्माता ताराचंद बड़जात्या ने 'राहगीर' का ही पुनर्निर्माण किया है. केवल कुछ परिवर्तनों के साथ कहानी को सुखांत बना दिया गया है.

श्याम (सचिन) एक स्वच्छंद विचरने वाला युवक है जिसे एक जमींदार की बेटी राधा (सारिका) विरोधी स्वभाव होते हुए भी प्रेम करने लगती है. जमींदार राधा की शादी श्याम से करना चाहता है पर श्याम इसे बंधन समझता है और चुपके से भाग जाता है. बाद में उसे अहसास होता है कि वह भी राधा को प्यार करता है और प्यार का बंधन बंधन नहीं होता. और दोनों का मिलन हो जाता है.

सचिन और सारिका : पाकीजा युगल

'गीत गाता चल' फिल्म के लेखक द्वय मधुसूदन कालेलकर और शरद पिलगांवकर किसी विशेष उद्देश्य को ले कर नहीं चले क्योंकि यहां कोरी भावुकता ही है जो कहीं भी मन को नहीं छूती.

फिल्म आम लीक से हट कर बनाई गई है. अपराध प्रवृत्ति का कहीं चित्रण नहीं है. साफसुथरी है. शराब दिखाई अवश्य देती है किंतु शराब के प्रति वितृष्णा ही पैदा करती है. नायक श्याम का जीवन लक्ष्यहीन है और सारी फिल्म को छोटेछोटे लड़केलड़की की शरारतों पर खपा देना बुद्धिमानी नहीं लगती.

अभिनय की दृष्टि से सभी पात्र कमोबेश सफल हैं. परंतु श्याम के रूप में सचिन और राधा के रूप में सारिका की जोड़ी उचित नहीं रही. सारिका आयु में बड़ी प्रतीत होती है. नई अभिनेत्री ख्याति मीरा की छोटी सी भूमिका में प्रभावपूर्ण है.

फिल्म गीत प्रधान है परंतु रवींद्र जैन के लिखे गीत व संगीत कोई विशेष आकर्षक नहीं हैं. पटकथा कमजोर है पर बृजेंद्र गौड़ के संवाद चुटीले हैं. अनेक स्थलों पर संवादों के सहारे ही कहानी में महत्त्वपूर्ण मोड़ आए हैं. अनिल मिश्रा की फोटोग्राफी पिक्चर पोस्टकार्डों की तरह सुंदर तो है, पर उस की कहानी में कोई विशेष जान नहीं दिखाई पड़ती.

निर्माता ताराचंद बड़जात्या की इच्छा थी कि 'गीत गाता चल' का निर्देशन 'राहगीर' के निर्देशक तरुण मजुमदार करते. उन्होंने आग्रह भी किया किंतु तरुण मजूमदार ने एक दुखांत कहानी को दोबारा सुखांत रूप में निर्देशित करने से इनकार कर दिया. निर्देशक हिरेन नाग 'गीत गाता चल' में भावों का मार्मिक चित्रण करने में असफल रहे हैं. 'दोस्ती,' 'सौदागर' और 'राहगीर' जैसी उत्तम स्तर की फिल्में देने वाले श्रेष्ठ निर्माता ताराचंद बड़जात्या से 'गीत गाता चल' जैसी स्तरहीन फिल्म की अपेक्षा नहीं की जा सकती थी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

○ कहते हैं मुझ को राजा

निर्माता : जयीता मूवीज आर्ट
निर्देशक : विश्वजीत
मुख्य कलाकार : धर्मेंद्र, विश्वजीत, हेमा मालिनी, शत्रुघ्न सिन्हा, नादिरा, अलका, केश्तो मुखर्जी

विश्वजीत की बहुत दिनों से कोई फिल्म नहीं बनी है. लगता है दूसरे निर्माताओं द्वारा अस्वीकार होने पर इस ने स्वयं ही अपने पर फिल्म बनाई है. इसलिए फिल्म का निर्माता, निर्देशक विश्वजीत स्वयं फिल्म का नायक भी है. और यही नहीं, फिल्म में नायक की दोहरी भूमिका भी है ताकि वह अपने को सब से अधिक कैमरे के सामने रख सके.

राजा ठाकुर (विश्वजीत) को उस की सौतेली मां (नादिरा) और उस का बेटा रणधीर मारने का षड्यंत्र रचते हैं. लेकिन अचानक बच कर वह बलराम (धर्मेंद्र) के पास पहुंच जाता है. बलराम उसे अपना भाई राजाराम (विश्वजीत) समझता है क्योंकि दोनों की शक्ल मिलती है. उधर राजाराम राजा ठाकुर के घर पहुंच जाता है. लंबीचौड़ी मारपीट के बाद अंत में रणधीर पुलिस द्वारा पकड़ा जाता है.

'कहते हैं मुझ को राजा' एक अच्छी हास्य फिल्म बन सकती थी लेकिन निर्माता, निर्देशक ने बाक्स आफिस के चक्कर में पड़ कर उसे मारपीट, गोलीबारी की स्टंट फिल्म बना दिया है. जादूगर राजाराम के खेलों से बच्चों का मनोरंजन हो सकता था लेकिन केश्तो मुखर्जी की शराब और महमूद, टुनटुन के हास्य ने उसे अश्लील बना दिया है. यही नहीं हेमा मालिनी को जबरदस्ती कोठे पर ले जा कर बलात्कार के दृश्य भी जोड़ दिए गए हैं.

विश्वजीत की दोहरी भूमिका है और राजाराम की भूमिका में उस ने खूब उछलकूद मचाई है. रेखा और हेमा मालिनी केवल आकर्षण के लिए रखी गई हैं क्योंकि भूमिका की दृष्टि से उन का कोई महत्त्व नहीं है. धर्मेंद्र कहींकहीं हंसाता है.

मजरूह सुल्तानपुरी की तुकबंदी (गीतों) को राहुलदेव बर्मन ने चालू किस्म की धुनों में बांधा है.

○ अंधेरा

निर्माता : एफ. यू. रामसे कृत
निर्देशक : तुलसी रामसे, श्याम रामसे
कहानी : किरण रामसे
मुख्य कलाकार : वाणी गणपति, समीर, इम्तियाज, सत्येंद्र कप्पू, सुरेंद्रकुमार, आशू, कृष्ण धवन, हेलेन

दीपक (समीर) एक तस्कर रणजीत (इम्तियाज) के यहां ड्राइवर है और उस की बहन आशा (वाणी गणपति) से प्यार करता है. अचानक रणजीत को पता चलता है कि आशा मां बनने वाली है तो क्रोध में आ कर दीपक के हाथ काट देता है.

असहाय और पीड़ित दीपक रात के अंधेरे में रणजीत और उस के गिरोह के लोगों की एकएक कर के हत्या करता है और अंत में स्वयं भी घायल हो कर मर जाता है.

अपराध फिल्म बनाने वाले निर्माता, निर्देशक, कहानीकार अपराध विज्ञान से बिलकुल परिचित नहीं लगते, फिर न जाने रहस्यरोमांच के नाम पर ऐसी घटिया फिल्में बना कर दर्शकों का सिरदर्द क्यों करते हैं?

नायक होते हुए भी समीर के अभिनय में प्रतिभा का आभास नहीं मिलता है. वाणी गणपति अपने अंगप्रदर्शन और बारबार आलिंगनबद्ध होने के अतिरिक्त कुछ नहीं कर पाई. इम्तियाज, सत्येंद्र कप्पू, कृष्ण धवन आदि कोई कलाकार जम नहीं पाया. हेलेन को भी अश्लील रूप में प्रस्तुत किया है. आशू ही एकमात्र ऐसी है जो छोटी सी भूमिका में आकर्षित करती है. ●

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

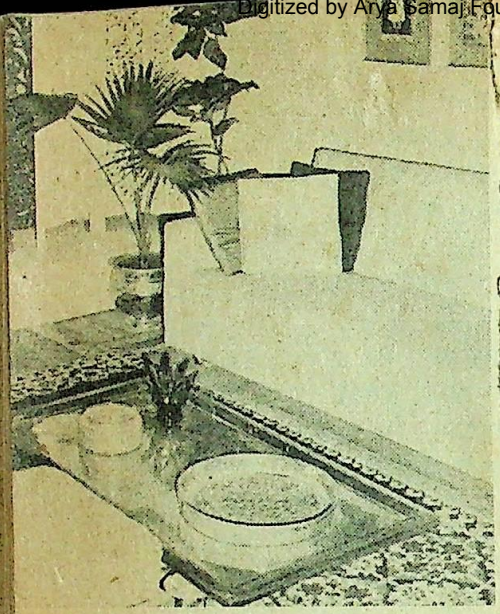

पड़ोसिन ने अपना घर सजा लिया है तो फिर अपने घर की सजावट में क्यों कसर छोड़ी जाए?

दिन दोनों महिलाओं में महाभारत हो गया. दीनानाथ यह भूल गया कि बड़े भैया ने उसे पिता की तरह प्यार किया है. वह आपे से बाहर हो गया. उस की पत्नी ने कहा, "मैं अब अलग हो कर रहूंगी, यह मेरी इज्जत का सवाल है." अतः फिर बंटवारा हो कर ही रहा. एक हराभरा घर उजड़ गया, क्योंकि यह इज्जत का सवाल था.

प्रभुदत्त का अपने पड़ोसी से जरा सी बात पर विवाद हो गया. वह मेरे पास कानूनी सलाह लेने आया.

लेख • शि. सु.

इज्जत का

अंततः रामदीन की लड़की की शादी नहीं हो सकी और उस के घर आई हुई बरात वापस लौट गई. फेरों के कुछ समय पूर्व लड़के वालों ने सहसा पांच हजार रुपए की मांग कर दी. रामदीन कितना ही रोया और गिड़-गिड़ाया, पर दीवानचंद टस से मस नहीं हुए. उन्होंने इसे इज्जत का सवाल बना लिया, उधर रामदीन भी ऐन वक्त पर इतनी बड़ी राशि नहीं जुटा पाया. हालांकि यह उस के लिए भी इज्जत का सवाल था, अतः बेचारी कलावती के हाथ पीले नहीं हो सके.

दीनानाथ और मांगचंद सगे भाई थे. जैसा कि आम तौर पर होता है, छोटे भाई दीनानाथ की पत्नी अपनी जेठानी से मधुर संबंध न बनाए रख सकी. एक

महज दिखावे के लिए शादी वगैरा पर कितना पैसा खर्च किया जाता है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं ने कहा, "भई, तुम्हारा छोटा सा मामला है, तुम चाहो तो आसानी से सुलह हो सकती है." उधर उस का पड़ोसी भी अपनी गलती स्वीकार रहा था एवं क्षमा-याचना करने को तैयार था. पर प्रभुदत्त ने कसम खा ली थी कि वह अपने पड़ोसी को सबक सिखा कर ही रहेगा, चाहे वह खुद बरबाद हो जाए.

उस ने कहा, "मैं लखनसिंह को हाईकोर्ट तो क्या सुप्रीम कोर्ट तक नहीं छोड़ूंगा."

मेरे पुनः समझाने पर वह बोला, "साहब, मेरी इज्जत जा रही है, चाहे लाख रुपया खर्च हो जाए, पर केस तो करना ही है."

करमचंद के पिता का असामयिक निधन हो गया. घर में पैसे के नाम पर फूटी कौड़ी भी न थी. तीनतीन अविवाहित बहनें थीं, छोटे भाई की पढ़ाई, बरसात में टपकते घर की मरम्मत एवं अन्य कई जरूरी खर्चे थे, पर घर वालों, करीब के रिश्तेदारों और गांव वालों ने हठ किया कि जब तक पूरे गांव को भोज न दिया जाएगा, मृतक की आत्मा को शांति न मिलेगी. मरता क्या न करता? करमचंद ने आधेपौने दामों पर मकान बेचा. गंगोज किया. जो पैसा घटा, वह भारी ब्याज दर पर उधार लिया. ऐसे वक्त इस तरह की मदद करने वाले भी बहुत मिल जाते हैं. कर्ज ले कर करमचंद ने अपनी इज्जत के सवाल को हल किया.

इस तरह न जाने कितनी ही छोटी-छोटी बातें आप की इज्जत का सवाल बन जाती हैं और जिंदगी को मटियामेट कर देती हैं. वैसे ये बातें सर्वथा नगण्य, तुच्छ एवं अवहेलनायोग्य होती हैं, पर हम इन से अपनी इज्जत को अनावश्यक रूप से संबद्ध कर स्वयं भी दुख पाते हैं एवं दूसरों को भी दुख देते हैं. क्या हमारी, आप की इज्जत इतनी सस्ती है कि जरा-जरा सी बातों पर इस का बननाबिगड़ना निर्भर करता है. निश्चय ही आप के आचरण एवं व्यवहार में कोई बड़ा दोष निहित है, जिस का निवारण करना आवश्यक है.

सवाल

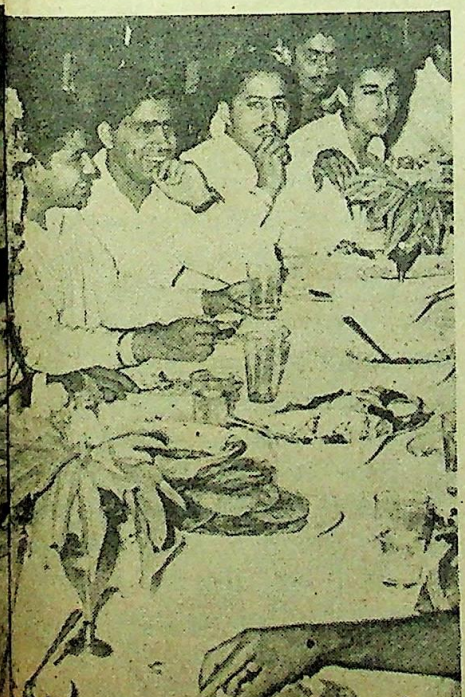

दूसरों की देखादेखी सिर्फ इज्जत बनाए रखने के लिए अनापशनाप पैसा खर्च करना कहां की बुद्धिमानी है?

आप एक साधारण क्लर्क हैं. ठाटबाट की जिंदगी आप साधारणतः नहीं जी सकते. पर आप इसे इज्जत का सवाल बना लेते हैं. परंतु पैसा कहीं से आता नहीं दीखता. तब अपनी तथाकथित इज्जत की रक्षार्थ आप या तो ऋण लेते हैं या अन्य अनुचित साधनों द्वारा अपनी लालसा की पूर्ति करते हैं. फलतः आप या तो ऋण-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भार से ग्रस्त हो जाते हैं, जो दिनदिन बढ़ता जाता है या आप अपनी अंतरात्मा को बेच देते हैं, जिस का कालांतर में आप कटुफल भुगतते हैं.

आप गाड़ी नहीं रख सकते. फर्नीचर का बढ़िया सेट नहीं खरीद सकते, पर आप की श्रीमतीजी इसे इज्जत का सवाल बनाती हैं. आप किसी भी कीमत पर अपने मित्रों एवं आगंतुकों को प्रभावित करना चाहते हैं. ज्यों ही पड़ोसिन ने कोई बढ़िया गहना बनवाया, आप की पत्नी भी वैसा ही गहना बनवाने का हठ करती हैं, क्योंकि यह उन की इज्जत का सवाल होता है, पर आप को अन्य जरूरी मदों का पैसा काट कर उन की फरमाइश पूरी करनी पड़ती है. प्रश्न यह है कि आप इन छोटे-छोटे एवं उपेक्षणीय पहलुओं को अपनी इज्जत का सवाल बनाते ही क्यों हैं?

सामर्थ्य से परे व्यय क्यों?

कोई दोस्त आप से रुपया उधार मांगता है. यदि आप के पास पैसा नहीं है तो संकोच छोड़ कर साफ इनकार कर दीजिए. ऐसा न हो कि आप इसे अपनी इज्जत का सवाल बना कर एक दुविधा अपने लिए पाल लें एवं इधरउधर से पैसा जुटाने की व्यवस्था करें.

इसी प्रकार किसी निकट संबंधी की शादी में जरूरी नहीं कि आप अपनी इज्जत के नाम पर जरूरत से ज्यादा पैसा व्यय करें. आप अपनी सीमा में रहें एवं अपने सामर्थ्य के बाहर व्यय न करें. क्षणिक तुष्टि के लिए सारी उमर का रोग पालना उचित नहीं. यदि आप के पास पैसा है तो दोनों हाथों से भले ही उलीचें, नहीं है तो आप को अपनी भावुकता पर नियंत्रण करना ही होगा.

'जितनी सौर हो, उतने ही पांव पसारिए' युगों से चली आ रही कहावत है. किसी को प्रभावित करने के लिए डींग हांकना, बढ़बढ़ कर बातें बनाना बेहद गलत है, क्योंकि आप वक्त आने पर अपनी बात की रक्षा नहीं कर सकते. कोई काम न हो सके तो स्पष्ट इनकार आप को बड़ीबड़ी दुविधाओं से मुक्त कर देगा. आप मना करना सीखें, एक इनकार हजार बाधाओं को हरती है. वरना कल आप अपने वचन का निर्वाह नहीं कर सकेंगे और आप की जगहंसाई होगी.

विद्या जैन वाला बहुचर्चित केस पाठकों ने पढ़ा होगा. यदि राकेश कौशिक अपने सामर्थ्य से परे वाला कार्य करने का दायित्व नहीं लेता, चंद्रेश को प्रभावित करने हेतु झूठी डींग नहीं हांकता तो शायद उक्त कांड घटित ही नहीं होता. बाद में उसे किसी भी तरह अपने वचन की रक्षा करनी होती है. काश, उस ने साफ गोई की होती एवं वह उस दुविधा में नहीं फंसा होता!

व्यर्थ के वादे

हम में से बहुत से लोग इसी प्रकार के वादे कर लिया करते हैं. फिर या तो वचन भंग करते हैं या मानसिक घुटन में जीते हैं एवं कोई गलत काम कर बैठते हैं. अतः बोलते समय एक बड़ी सावधानी अपेक्षित है. अपनी इज्जत की सही तरीके से रक्षा कीजिए न!

अपने कपड़े के अनुसार ही कोट का नाप देने वाले सिद्धांत के अनुसार अपने सामर्थ्य एवं सीमा के परे आचरण न करना ही बुद्धिमत्ता होगी. साधन हों तो विलासिता पालना भले ही ठीक हो, पर जब साधन नहीं हैं तो कम खर्च करना या न खर्च करना बहुत बेहतर है.

आप आज के क्षणिक संतोष के लिए अपना भविष्य क्यों खराब करते हैं? आने वाले कल को कालिमामय न बनाएं. आज की जरूरत हमेशा के लिए सर्वोपरि नहीं, अतः कल की अनजान आवश्यकताओं को भी ध्यान में रखें.

आप की जिंदगी केवल आज के लिए नहीं वरन आगामी कईकई दिनों से उस का संबंध है, अतः आज के लिए अपना भविष्य न बिगाड़िए, उसे उज्ज्वल ही रहने दें. जीवन में अपने हाथों व्यर्थ ही अनजाने खतरे उठाने में कोई बुद्धिमत्ता नहीं है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

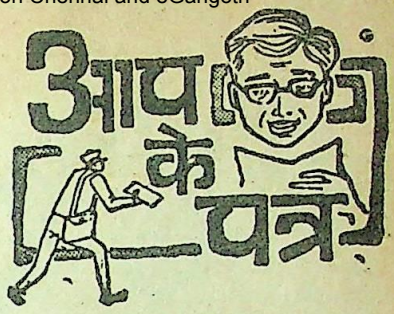

नवंबर (द्वितीय) अंक में 'आप के पत्र' के अंतर्गत श्री देवतादीन शर्मा, भीरागोविंदपुर' के विचार सितंबर (द्वितीय) में प्रकाशित अपनी कहानी 'गन्ने का रस' के बारे में पढ़े. कानून-की महत्ता व अनिवार्यता को कोई भी कानून प्रिय नागरिक नकार नहीं सकता. परंतु मैं ने अपनी कहानी में वास्तविक स्वरूप को ही पेश करने का प्रयत्न किया है. काल्पनिक अदालत-बाजी दिखाने से तो लाभ ही नहीं. वास्तव में संतासिंह जैसे बहुत से लोग कानून के शिकंजे में नहीं जकड़े जा सकते.

मेरी आपबीती ही सुन लीजिए. मेरे गांव की आयुर्वेदिक डिस्पेंसरी में एक नीमहकीम था. वह लोगों को एलोपैथिक इंजेक्शन वगैरा लगा कर रुपए ऐंठा करता था. एकदो ऐसे गरीब लोगों ने मुझे अपनी करुण गाथा बताई, जिन से उस ने डिस्टिल्ड वाटर के इंजेक्शन लगा कर मोटी रकम ली थी. मैं ने स्वास्थ्य मंत्री को उस की शिकायत कर दी.

इस मामले की जांच हुई और वह कर्मचारी दोषी पाया गया. विभाग ने उस का स्थानांतरण कर दिया. परंतु क्योंकि वह नीम-हकीम सरपंच की मूंछ का बाल था, इसलिए सरपंच और उस के गुरगों ने मुझे तरहतरह से परेशान किया. मेरे पूरे परिवार के विरुद्ध जितना जहर उगला जा सकता था, उगला. आखिर जब कुछ नहीं हो पाया तो गत 24 अक्तूबर को मुझ पर हमला करवा दिया. मुझे एक मकान के अंदर बंद कर के बुरी तरह मारा-पीटा गया. गांव वालों ने मुझे छुड़ाया.

जब मैं ढिलवां थाने में रपट लिखवाने गया तो वहां भी मुझे दिक्कतों का सामना करना पड़ा. साथ ही सरपंच के एक गुरगे ने अपना बाजू चीर डाला और मुझ पर उलटा मुकदमा बना दिया. मेरे पक्ष में जो गरीब वर्ग था, वह सरपंच के गुरगे के डर के मारे तुरंत राजीनामे को सहमत हो गया, क्योंकि सरपंच के गुरगे ने मेरा सारा परिवार उस कल्पित मुकदमे में बंधवा दिया था.

आशा है श्री देवतादीन शर्मा यह समझने का कष्ट करेंगे कि सरिता के माध्यम से प्रकाश में आने वाली रचनाओं में यथार्थ की अनुभूति अधिक होती है. संतासिंह जैसे लोग ठीक उसी तरह लगातार बचते रहते हैं जैसे मेरे गांव के सरपंच के गुरगे.

—बलरामदत्त शर्मा, छालीवाल बेट

✦

यह जान कर दुख हुआ कि जयपुर के श्री सैयद महमूद अली अक्तूबर (द्वितीय) में प्रकाशित 'हलाला' का आशय नहीं समझ सके. उन का यह आरोप दुरभिप्रायपूर्ण है कि लेखक हलाला का मतलब नहीं जानता. शायद उन्हें कहानी और लेख का अंतर मालूम नहीं है. कहानी का मूल उद्देश्य हलाला की बारीकियां व तलाक की किस्में बतलाना नहीं, बल्कि यह दर्शाना था कि नारी के अधिकारों का ढिंढोरा पीटने वाले समाज में किसकिस तरह नारी का शोषण होता है, किनकिन रूपों में उस के साथ अमानुषिक व्यवहार किया जाता है व अल्लाहअल्लाह की रट लगाने वाले लोग किस तरह चरित्रहीन व हवसपरस्त हो सकते हैं. सीधीसादी जिंदगियों को कानून के बारीक जालों में उलझाना मौलवियोंमुफतियों का काम होता है, लेखक को नहीं. श्री सैयद को यह मालूम होना चाहिए कि विशेष विषय पर कहानी अध्ययन के बाद ही लिखी जाती है. यह अलग बात है कि लेखक किन मुद्दों को अधिक महत्त्व देता है.

संभोग की बात पर लगता है, उन्होंने कहानी को ठीक से नहीं पढ़ा है, वरना यह दोष लेखक के सिर नहीं मढ़ते. पुरुष द्वारा की गई गलतियों का खमियाजा सदैव औरत को ही भुगतना पड़ता है, क्यों? पत्नी परपुरुष के संग सोती है तो शारीरिक व मानसिक वेदना किसे होती है? क्या पुरुष को? उस पुरुष को, जो स्त्री को मात्र पैर की जूती मानता है? एक नहीं पहनी, दो पहन लीं, चार पहन लीं. मानो औरत न हुई, गायभैंस हो गई.

बहरहाल मुझे इस बात की खुशी है कि सरिता का पाठक समुदाय जागरूक है.

—हसनजमाल छीपा, जोधपुर

✦

दीपावली विशेषांक में प्रकाशित 'दीवाली आई है' (लेख : कैलाश भारद्वाज) के लिए लेखक को साधुवाद. दीपावली से संबंधित सभी मान्यताओं पर व्यावहारिक प्रकाश डालने से पाठकों के ज्ञान में वृद्धि हुई होगी. इस अवसर पर खीलें ही बांटी जाती हैं, कुछ और क्यों नहीं?

बरसात के पश्चात पेट में कई गड़बड़ियां शुरू हो जाती हैं, विशेषतः पित्त रोग. खीलें अधिक मात्रा में खाई जाएं तो ये पित्त को शोधित कर उस की मात्रा घटाती हैं. गुड़ रक्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में सीधे प्रवेश कर जाता है तथा रक्त की वृद्धि करता है, इसलिए खीलें तथा गुड़ बांटने की प्रथा प्रचलित थी. परंतु बाजारू मिठाई इत्यादि पेट ठीक करने की बजाए पेट खराब करने में अधिक सहायक होती है.

लेख के अंत में शिवदत्त द्वारा बिजली लगवा देने का प्रसंग अत्यंत प्रेरक है. आशा है, पाठक दीपावली को केवल लड़ियों, पटाखों, जुओं, लक्ष्मी पूजन या मिठाइयों का ही त्योहार न बना कर इस के व्यावहारिक पक्ष की ओर ध्यान देंगे. —मदन गुप्ता, सपाट

✧

सरिता का दीपावली विशेषांक पढ़ कर दीपावली के बारे में काफी जानकारी मिली.

'दीवाली आई है' (लेख : कैलाश भारद्वाज) पढ़ा, जो बहुत अनुचित लगा. आज का हिंदुस्तानी अपनी परंपराओं तथा रीतिरिवाजों का इस तरह अपमान कर सकता है, यह सोचा भी नहीं था. —राजकुमार पालीवाल, नई दिल्ली

✧

संग्रहणीय विशेषांक शृंखला की एक और सुंदर कड़ी दीपावली विशेषांक के रूप में सामने आई, जिस ने अन्य अनेक अवसरों की भांति ही त्योहारों पर पुनर्विचार के लिए बाध्य कर दिया.

हर त्योहार, चाहे वह हिंदुओं का हो या मुसलमानों का, सिखों का हो या ईसाइयों का, अपने पीछे कोई न कोई आधार अवश्य रखता है. लेकिन समय के साथसाथ परिस्थितियां भी बदलती रहती हैं और समय के प्रभाव से आधार धूमिल पड़ जाते हैं. लोग केवल लकीर पीटते रहते हैं. अवसर का लाभ उठा समाज के कुछ तथाकथित ठेकेदार निजी स्वार्थ के वशीभूत हो कर लकीर पीटने के लिए प्रोत्साहित करने लगते हैं. ऐसा ही कुछ हमारे त्योहारों के साथ हो रहा है. भावनाएं तो विलुप्त होती जा रही हैं और मात्र परंपरा का निर्वाह करने के लिए त्योहारों की लकीर पीटी जाती है.

त्योहार तो खुशियां मनाने के लिए आते हैं, परंतु जब वे कठिनाइयों व समस्याओं के कारण बन जाएं तो उन्हें मनाने से क्या लाभ? लेकिन दोष केवल ब्राह्मण समाज का नहीं, बल्कि प्रत्येक संबंधित व्यक्ति का है. अपराध करने वाले से भी बड़ा अपराधी वह होता है जो चुपचाप सब कुछ सहन कर लेता है. और फिर कोई त्योहार मनाने के लिए बाध्य तो करता नहीं है. यह तो अपनी इच्छा पर निर्भर है कि मनाएं या न मनाएं. जैसे न मैं किसी से राखी बंधाता हूं, न होली खेलता हूं और न ही जुआ खेल कर दीवाली मनाता हूं. मुझ से कोई कुछ नहीं कहता. —सुरेश अवस्थी, कानपुर

The new and powerful material in this Light Weight Pantie Girdle has an incredible strength to shape the body. Soft, Smooth and well fitting...

Pantie Girdle Rs. 49.00
Rollon Girdle Rs. 47.00
Abdominal Belt Rs. 35.00
Legrisa (Longer Leg Pantie Girdle) Rs. 56.00

Write for free literature. V.P.P. Orders executed. Send Waist-measurement alongwith your order.

BRASSIERES BY Bridal Form Regd

Manufactured by:

K. R. VITHAL

13, KITCHEN GARDEN LANE,
NEAR MANGALDAS MARKET,
BOMBAY-400 002 PH.: 317919

WHOLESALE STOCKISTS:

M/s. Chandra Hosiery, Room No. 50 A, 1st floor, Ghaffar Market, Karol Bagh New Delhi-5. Phone: 563818

M/s Chandra Hosiery, 203/1, M.G. Road, 3rd floor, Room No. D 14/15, Calcutta-7. Phone: 338446.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरिता, नवंबर (प्रथम) अंक में प्रकाशित 'शराब और भारतीय नारी' (लेख : कमला सपोलिया) में लेखिका का कथन 'क्लबों और पार्टियों में भारतीय नारी का पुरुष के साथ शराब पीना पाश्चात्य सभ्यता का अंधानुकरण है,' गलत है. मुगल एवं ब्रिटिश काल से पहले की सभ्यता में मदिरापान बुरा तो माना जाता था, परंतु कुछ स्त्रियां शराब पीती थीं.

रामायण एवं महाभारत में अनेक ऐसे वृत्तांत आते हैं जिन से यह ज्ञात होता है कि उस काल में स्त्रियां भी मद्यपान करती थीं. वाल्मीकि रामायण के किष्किंधा कांड के 33 वें सर्ग में जब सुग्रीव अपनी पत्नी तारा को क्रोधित लक्ष्मण को शांत करने के लिए भेजता है तब तारा के नेत्र मद से चंचल थे. मधुपान के कारण तारा की नारी लज्जा निवृत्त हो गई थी.

महाभारत में भी जब द्रौपदी नौकरानी बन कर विराटनगर में काम कर रही थी, तब विराटनगर की रानी दासी बनी द्रौपदी से कहती है कि 'मेरा नशा अब उतरता जा रहा है. अच्छी मदिरा कीचक के पास है. तुम मेरे लिए उस से मदिरा ले आओ.'

'रघुवंश' में कालिदास ने कहा है कि उस काल की शासन व्यवस्था इतनी उत्तम थी कि उपवनों में मद पिए मदहोश पड़ी हुई रमणियों के वस्त्रों को छूने की हिम्मत पवन में भी नहीं थी.

आज भी राजस्थान एवं मध्य प्रदेश के कुछ इलाकों में किसी भी पर्व पर शराब पहले घर की बड़ी बहू से झूठी कराई जाती है. काली देवी को तो पूजा में मदिरा चढ़ाई जाती है. अतः हमारे देश में स्त्रियों का शराब पीना अनुचित तो अवश्य है परंतु किसी विदेशी सभ्यता का अनुकरण नहीं. यह हमारी अपनी बुराई है.

—आशिमा चौहान, इलाहाबाद

✦

दीपावली के अवसर पर द्यूतक्रीड़ा का चलन और उस का सर्वनाशकारी परिणाम आज एक गंभीर राष्ट्रीय समस्या बनी हुई है. हर साल अनेक समृद्ध घर निर्धन बन जाते हैं. कितनों की खुशियां मायूसी में बदल जाती हैं, कितने पतिपत्नियों का सुखद दांपत्य जीवन कलह-युक्त हो जाता है. फिर भी इस की ओर न तो सरकार का ध्यान जाता है, न ही किसी समाज सुधारक का.

साहित्य जगत के लिए यह गर्व की बात है कि सरिता ने दीपावली अंक में इस गहन समस्या की पृष्ठभूमि में अनेक रोचक, मार्मिक, शिक्षाप्रद एवं यथार्थ पर आधारित कहानियों को प्रकाशित कर इस के समाधान का आह्वान किया है.

—गुलाबचंद महतो, नई दिल्ली

दीपावली विशेषांक बड़ा ही आकर्षक लगा. पढ़ने, सोचने और जी भर कर हंसनेहंसाने को इस में बहुत कुछ है. 'जूली कांड' (कहानी : उषा बाला) पढ़ कर तो मैं खुल कर हंसे बिना न रह सका.

'आप के विचार' स्तंभ के अंतर्गत 'हीन भावनाओं की शिकार' लेख प्रकाशित कर आप ने निस्संदेह हिंदी साहित्य में एक नया अध्याय जोड़ा है. नया इस अर्थ में कि यह सजीव वर्णन स्वयं उस जीवन को जीने वाले की कलम से लिखा गया है. अतः यह सौतेली माताओं के उत्पीड़न एवं मानसिक स्थिति का अधिक तथ्य-पूर्ण एवं आधिकारिक चित्रण है.

लेख के शीर्षक को ले कर कहना चाहूंगा कि लेखिका हीन भावनाओं की शिकार नहीं अपितु सामाजिक पूर्वाग्रहों की शिकार हुई है.

बेमेल विवाह का सब से बड़ा दोष यह है कि इस में एक पक्ष वह सब कुछ इतने समय तक भोग चुका होता है कि प्रायः वह उस से विरक्त हो उठता है, साथ ही उसे पुनः भोगने में अशक्त भी. जब कि दूसरा पक्ष उसे जीने का स्वप्न देख रहा होता है. एक पक्ष पूर्ण समर्पण को तत्पर होता है, दूसरा उसे स्वीकार करने की स्थिति में नहीं होता. बस एक पक्ष की वह शारीरिक एवं मानसिक असंतुष्टि उन के संबंधों

2 अनुपम उत्पादन

बालसन

हेयर रीमुवींग (बाल सफा)

क्रीम

कोमल त्वचा के बाल साफ करने के लिए

बालसन

केश काला

सफेद

बालों को प्राकृतिक रंग जैसा काला

करने के लिए

बालसन सेल्ज कारपोरेशन, दिल्ली-६

देश भर में डीलरों की आवश्यकता है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में अकसर व्यवधान उत्पन्न कर देती है.

लेखिका की अच्छे दिनों की इंतजार मुझे दुराशा मात्र ही प्रतीत होती है. रूढ़ि एवं पूर्वाग्रहों से जकड़ा समाज इतनी जल्दी नहीं बदलता. क्या आप अपने आगामी अंकों में विपिताओं की समस्याओं पर भी सामग्री प्रकाशित करेंगे?

—राजेंद्रप्रसाद पारीक, महू इब्राहीमपुर

✦

नवंबर (प्रथम) में 'विज्ञापन' (लेख : जसंवर्तसिंह) चोर कंपनियों का सत्य चित्रण है. आज ये ठग पत्रपत्रिकाओं के माध्यम से जिस प्रकार जनता को लूट रहे हैं, वह शर्मनाक बात है. लेखक ने जो जानकारी दी है वह सत्य है. मैं स्वयं इन कंपनियों की लूट में आज से तीन साल पूर्व आ चुका हूं.

शायद सरिता ही पहली पत्रिका है जिस ने इन ठगों का पर्दाफाश किया है. ऐसे लेख के लिए लेखक व प्रकाशक धन्यवाद के पात्र हैं. आशा है अब कोई पाठक इन ठगों के चक्कर में आ कर अपना समय व पैसा न गंवाएगा.

—सुखरामसिंह तोमर, उज्जैन

✦

सितंबर अंक में प्रकाशित 'अकेलापन' (लेख : कुसुम गुप्ता) पसंद आया. लेखिका को उन के विचारों की ताईद में एक नज्म की कुछ सतरें मैं पेश करना चाहूंगी :

'सोचता हूं कि जो छिन जाएं कहीं मुझ से,
लम्हे मेरी तनहाई के,
एक दिन भी न उठे बारे हयात
ये खतोकिताब तक का सिलसिला.'

पत्रिकाओं का पठनपाठन भी तो अकेलेपन के अभिशाप को शिकस्त देने का एक सही माध्यम है, जिस के लिए संसार भर का अकेलापन संपादकों का सदा ऋणी रहेगा. मेरे इस विचार से कुसुमजी भी सहमत होंगी.

—रजिया तहसीन, उदयपुर

✦

जुलाई (द्वितीय) अंक में 'दहेज' (लेख : रीता मानवी) पढ़ने को मिला. लेखिका ने शायद समाज का पूर्णरूपेण निरीक्षण कर के अपने विचार प्रकट किए हैं, जो यथार्थता को स्पर्श करते हैं. नगर की एक दहेजविरोधी परिषद का कार्यकर्ता होने के नाते मुझे यह अनुभव हुआ कि दहेजविरोधी प्रचार में नवयुवतियां नवयुवकों से अधिक रुचि ले रही हैं. पर जब तक कि नवयुवक भी अपना पूर्ण सहयोग प्रदान नहीं करते, वे कर ही क्या सकती हैं. जब तक नवयुवक हृदय से धनलोलुपता या मातापिता के नाम पर दहेज लेने का विचार त्याग नहीं देते हैं तब तक इस विषय में प्रयत्न करना व्यर्थ है. —अरुण श्रीवास्तव, लखनऊ

● आप का यह विचार गलत है कि दहेज-उन्मूलन में नवयुवक ही कुछ कर सकते हैं, नवयुवतियां नहीं. यदि नवयुवतियां यह प्रण कर लें कि वे अपने भाइयों व भतीजों और अन्य संबंधियों के विवाह में दहेज नहीं लेने देंगी तो समस्या काफी सुलझ सकती है. वास्तव में दहेज की पूरी जिम्मेदारी स्त्रियों पर ही है. वे ही लड़कों की मां, बहन, बुआ, चाचीताई के रूप में लड़की वालों को दहेज देने के लिए मजबूर करती हैं. पुरुषों का इस मामले में कोई विशेष आग्रह नहीं होता. यदि होता है तो वह परिवार की महिलाओं के कारण ही. —संपादक

मुक्ता

युवा पीढ़ी की एक मात्र अपनी पत्रिका.
केवल मुक्ता में आप को पढ़ने को मिलेगा :

- युवा पीढ़ी की समस्याओं को संजोए हुए सुरुचिपूर्ण एवं रोचक कम से कम सात कहानियां.
- विभिन्न विषयों पर विचारोत्तेजक और सूचनापरक अनेक लेख.

आज ही अपने समाचार-पत्र विक्रेता से मुक्ता खरीदिए.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं 'सरिता' का स्थायी पाठक हूं. आप ने अक्तूबर (प्रथम) अंक में 'कृषि समाचार' स्तंभ के अंतर्गत कुछ नई खोजों की जानकारी दी है. आज कृषि के क्षेत्र में क्रांति लाने के लिए जो प्रयास किए जा रहे हैं उन्हें देखते हुए यह जानकारी बहुत कम है. मेरा सुझाव है कि देश में होने वाले सभी नए अनुसंधानों की सूचना 'सरिता' में दी जानी चाहिए. कृषि समाचारों के लिए पत्रिका के हर अंक में कुछ पृष्ठ सुरक्षित होने चाहिए. प्रत्येक अंक में कृषि से संबंधित एक लेख को भी स्थान दिया जाना चाहिए. बुनाई विशेषांक की भांति वर्ष में कम से कम एक कृषि विशेषांक भी प्रकाशित करें अथवा वर्ष में दोएक रबी फसल अंक और दूसरा खरीफ फसल अंक प्रकाशित किए जाने चाहिए.

—अभिलाषचंद्र अग्रवाल, बरेली

● कृषि व ग्राम समस्याओं पर 'सरिता' कार्यालय से शीघ्र ही एक नई मासिक पत्रिका 'भू ारती' का प्रकाशन प्रारंभ हो रहा है. ये सब विषय उस में सम्मिलित रहेंगे. —संपादक

'सरिता' द्वारा हिंदू समाज की कुरीतियों, आडंबरों और अंधविश्वासों के विरुद्ध जो लेख प्रकाशित किए जाते हैं, वे बहुत पसंद आते हैं.

ढोंगी पुजारियों, धर्म के ठेकेदारों तथा प्रचलित ब्राह्मणवाद पर लेख प्रकाशित कर उन्हें कुचलने का जो प्रयत्न किया जा रहा है, वह बहुत ही साहसिक एवं सराहनीय है. ये लेख अच्छे एवं शिक्षाप्रद होते हैं.

मेरी राय है कि आप 'सरिता' में प्रकाशित इस प्रकार के लेखों को एक पुस्तक का रूप दें तो बहुत अच्छा होगा, जिस से सभी लेखों को पढ़ कर ज्ञान प्राप्त किया जा सके. साधारण आदमी आप के पूरे अंक खरीद नहीं सकता. अतः इन लेखों को एक ही पुस्तक के रूप में प्रकाशित करने की महान कृपा करें, जिस से आम जनता को भी सही मार्गदर्शन प्राप्त हो सके.

—सूरजमल गायकवाड़, पलारी

● महत्त्वपूर्ण लेखों के रिप्रिंट होने की सूचना समयसमय पर प्रकाशित होती है. —संपादक ●

सरिता के लेखक

राधिकाप्रसाद गौतम

पृष्ठ 72 पर प्रकाशित कहानी 'प्रतिज्ञा' के लेखक श्री राधिकाप्रसाद गौतम विज्ञान में स्नातक हैं और बैंक में कर्मचारी हैं. लेखन में बचपन से रुचि है. सरिता में इन की यह पहली रचना है.

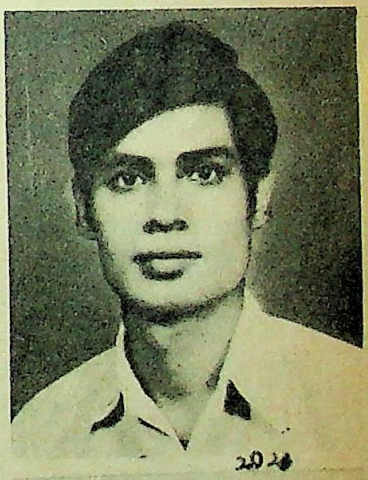

अनिलकुमार पांडेय

पृष्ठ 114 पर प्रकाशित लेख 'एक उधार निन्यानवे बीमार' के लेखक श्री अनिलकुमार पांडेय खेती की देखरेख करते हैं. यह शुरू से लिखते रहे हैं, लेकिन प्रकाशन का सुअवसर सरिता से ही मिला है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आप देश के लिए क्या कर रहे हैं?

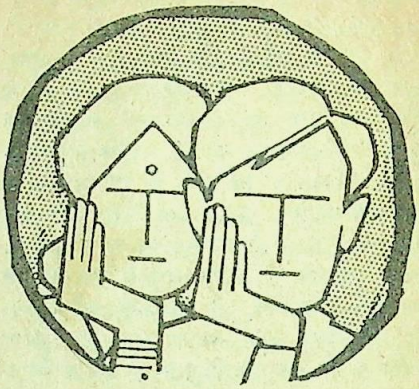

आप देश के लिए क्या कर रहे हैं?

आप पूछ सकते हैं—मैं क्या करूं?

आप अपना और अपने बच्चों का वर्तमान और भविष्य नेताओं के हाथों सौंपने के बजाए इतना तो कर ही सकते हैं :

● जो भी काम आप के जिम्मे हो उसे पूरा करें. अगर आप अपना काम पूरी लगन से करते हैं तो स्वयं अपनी क्षमता बढ़ा रहे हैं, अपनी उन्नति कर रहे हैं, चाहे उस का पैसा मिले या नहीं. आज हर क्षेत्र में कर्मनिष्ठ व्यक्ति की बहुत मांग है. अगर वर्तमान संस्था में आप को अपनी मेहनत का पूरा मुआवजा नहीं मिलता तो दूसरी संस्था देगी.

● न अन्याय सहें, न अन्याय करें. आप समाज की महत्त्वपूर्ण इकाई हैं. समाज की प्रगति के लिए आवश्यक है कि उस की हर इकाई अन्याय के विरुद्ध हो.

● अपनी गली, महल्ले, नगर के प्रबंध में दिलचस्पी लें. उसे दूसरों के भरोसे न छोड़ दें. कुप्रबंध और दुर्व्यवस्था के विरुद्ध संबंधित अधिकारियों को पत्र लिखते रहें. हो सकता है आप के दोचार पत्रों का कोई असर न हो पर वे आप की बिलकुल अवहेलना नहीं कर सकते. स्थानीय दैनिक पत्रों के संपादकों को भी पत्र लिखें (वे स्थानीय समस्याओं से संबंधित पत्रों की प्रतीक्षा में रहते हैं). अपने क्षेत्र के निगम सदस्य, विधायक या संसद सदस्य को भी पत्र लिखें और उन से महल्ले के व्यक्तियों के साथ मिलते रहें. और जब तक दुर्व्यवस्था ठीक न हो जाए, चैन से न बैठें.

● अपना फालतू समय किसी स्थानीय समाजसेवी संस्था में लगाएं. पुस्तकालय, स्कूल, चिकित्सालय सभी जगह निःस्वार्थी व्यक्तियों की आवश्यकता है. असंतुष्ट हो कर बैठे रहने से न आप बदल सकेंगे, न समाज, न देश.

रोजीरोटी का प्रबंध तो भिखारी, आवारा पशु और गली के कुत्ते भी कर लेते हैं. पर आप पढ़ेलिखे हैं, सोचविचार कर सकते हैं. कामधंधे में लगे हैं, अपने परिवार की जिम्मेदारी उठाए हैं, इसी लिए यह आवश्यक है कि आप अपने आप से पूछें कि...

आप देश के लिए क्या कर रहे हैं?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यक्तिगत विज्ञापन

वैवाहिक विज्ञापन

$23\frac{1}{2}$ वर्षीया, माहेश्वरी, कद 154 सें. मी., एम. ए., गेहुआं वर्ण, धार्मिक रुचि, गृहकार्य में सुदक्ष कन्या हेतु सुयोग्य, कार्यरत, वैश्य वर चाहिए. माहेश्वरी को प्राथमिकता. लिखें : वि. नं. 228, सरिता, नई दिल्ली-55.

20 व 22 वर्षीया, माथुर, हायर सेकंडरी, बी. एससी., सुंदर कन्याओं के लिए योग्य सुसंपन्न, कायस्थ वर चाहिए. लिखें : वि. नं. 229, सरिता, नई दिल्ली-55.

19 वर्षीया, कद 5'-2", बी. ए. फाइनल में, घर के कार्य में दक्ष, वैश्य (गुप्ता), सुशील कन्या के लिए सजातीय, संपन्न परिवार का सरकारी सर्विस या निजी व्यवसाय वाला योग्य वर चाहिए. उत्तम शादी. लिखें : वि. नं. 230, सरिता, नई दिल्ली-55.

17 वर्षीया, दिगंबर जैन, मित्तल, बी. ए. फाइनल, अति सुंदर, आकर्षक, स्मार्ट, छरहरी, गृहकार्य निपुण, गोरी कन्या हेतु इंजीनियर, डाक्टर, राजपत्रित अधिकारी अथवा सुशिक्षित, उद्यमरत, सुयोग्य वर चाहिए. सजातीय को प्राथमिकता. लिखें : वि. नं. 231, सरिता, नई दिल्ली-55.

24 वर्षीया, अग्रवाल गर्ग, मंगलीक, बी. ए., बी. एड., सुंदर, मासिक आय 400 रुपए, कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. लिखें : वि. नं. 232, सरिता, नई दिल्ली-55.

27 वर्षीया, एम. ए., बी. एड., साहित्य-रत्न, गौरवर्ण, कान्यकुब्ज कन्या हेतु सजातीय, सुयोग्य वर चाहिए. लिखें : वि. नं. 233, सरिता, नई दिल्ली-55.

24 वर्षीया, एम. ए., गौरवर्ण, दिगंबर जैन कन्या हेतु सजातीय, सुयोग्य वर चाहिए. लिखें : वि. नं. 234, सरिता, नई दिल्ली-55.

22 वर्षीया, सनाढय ब्राह्मण, ग्रेजुएट, मांगलिक कन्या के लिए सजातीय वर चाहिए. लिखें : वि. नं. 235, सरिता, नई दिल्ली-55.

26 वर्षीया, गोयल अग्रवाल, स्वस्थ, विधवा युवती हेतु, योग्य, बारोजगार, प्रगतिशील युवक वर चाहिए. प्रथम पति से चार वर्षीया बालिका है, जिस के विवाह का दायित्व संभावित वर पर नहीं होगा. प्रथम बार पूर्ण विवरण के साथ लिखें : वि. नं. 237, सरिता, नई दिल्ली-55.

22 वर्षीया, ओसवाल, बी. ए., बी. एड., सुशील, गृहकार्य में दक्ष, कन्या हेतु कार्यरत, सुंदर, स्वस्थ, स्नातक, वर की तलाश है. पूर्ण विवरण सहित लिखें : वि. नं. 238, सरिता, नई दिल्ली-55.

20 वर्षीया, श्रीवास्तव, 5'-$3\frac{1}{2}$" लंबी, गौरवर्ण, सुंदर, स्वस्थ, स्लिम, गृहकार्य में दक्ष, सितारवादक, संगीत शिक्षार्थी, बी. एससी. बायलोजी फाइनल, कन्या हेतु डाक्टर, प्रोफेसर, इंजीनियर, निजी व्यवसायी, लंबा, स्वस्थ वर चाहिए. पिता बड़े मोटर कारखाना में प्रोडक्शन मैनेजर. सविवरण लिखें : वि. नं. 239, सरिता, नई दिल्ली-55.

24 व 27 वर्षीया, कान्यकुब्ज, कश्यप गोत्रीय दीक्षित, स्नातकोत्तर शिक्षा संस्थाओं में कार्यरत कन्याओं हेतु सजातीय, उच्च शिक्षित, कार्यरत वरों की आवश्यकता है. दहेज नहीं. लिखें : वि. नं. 240, सरिता, नई दिल्ली-55.

24 वर्षीया, राजपूत, एम. ए., बी. एड., कद 5'-2", गौरवर्ण, गृहकार्य में दक्ष कन्या हेतु सजातीय, सुयोग्य वर की आवश्यकता है. इंजीनियर अथवा डाक्टर को प्राथमिकता. लिखें : वि. नं. 241, सरिता, नई दिल्ली-55.

28 वर्षीया, माहेश्वरी, शिक्षित, प्रगतिशील परिवार की गेहुआं रंग, कद 5'-2", डाक्टर, एम. डी. अध्ययनरत कन्या हेतु माहेश्वरी खंडेलवाल अथवा अग्रवाल, सुयोग्य वर चाहिए. शादी अच्छी. पूर्ण विवरण सहित लिखें : वि. नं. 242, सरिता, नई दिल्ली-55.

$25\frac{1}{2}$ वर्षीया, पीएच. डी., कद 5'-$2\frac{1}{2}$' व 21 वर्षीया, बी. लिब., एम. ए. अध्ययनरत, कद 5', उत्तरप्रदेशीय श्रीवास्तव, स्वस्थ, सुंदर, सुशील व गृहकार्य दक्ष कन्याओं हेतु योग्य, कायस्थ वर चाहिए. विवाह अच्छा. लिखें : वि. नं. 243, सरिता, नई दिल्ली-55.

27 वर्षीया, कान्यकुब्ज ब्राह्मण कन्या, एम. ए., अध्यापिका, वेतन 700 रुपए मासिक, दिल्ली निवासी हेतु वर चाहिए. विवाह साधारण. लिखें: वि. नं. 244, सरिता, नई दिल्ली-55.

एम. ए., शिक्षिका, लेखिका, सुंदर कन्या के लिए लगभग 35 वर्षीय, भटनागर वर चाहिए. लिखें : वि. नं. 245, सरिता, नई दिल्ली-55.

18 वर्षीया, अच्छे परिवार की, गृहकार्य में दक्ष कन्या हेतु उपयुक्त वर चाहिए. शीघ्र विवाह. लिखें : वि. नं. 246, सरिता, नई दिल्ली-55.

26 वर्षीया, जैन, ओसवाल, बी. ए., एम. ए. (हिंदी), बी. एड., शिक्षित, सुंदर, सुशील, कन्या के लिए सजातीय वर चाहिए. शीघ्र लिखें वि. नं. 247, सरिता, नई दिल्ली-55.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

25 वर्षीया, राजपूत, बी. एससी., कद 5'-1", कन्या के लिए सजातीय, कार्यरत, योग्य वर चाहिए. लिखें : वि. नं. 248, सरिता, नई दिल्ली-55.

24 वर्षीया, खत्री, एम. ए., बी. एड., कद 5', गौरवर्ण, स्वस्थ, सुंदर कन्या हेतु सेवारत अथवा व्यवसायरत, सुशिक्षित वर चाहिए. उत्तम विवाह. प्रथम बार में ही पूर्ण विवरण लिखें : वि. नं. 249, सरिता, नई दिल्ली-55.

18 से 24 वर्षीया, तीन चौरसिया, सभी ग्रेजुएट कन्याओं हेतु सजातीय, कार्यरत वरों की आवश्यकता है. दहेज नहीं. लिखें : वि. नं. 250, सरिता, नई दिल्ली-55.

18 वर्षीया, वरिष्ठ डाक्टर की स्वस्थ, सुंदर, सुशील, गौरवर्ण, गृहकार्य में दक्ष, कान्यकुब्ज, ब्राह्मण, सांडिल्य गोत्रीय, पुत्री के लिए शिक्षित, सुयोग्य, सजातीय वर की आवश्यकता है. डाक्टर, वकील, इंजीनियर उद्योगपति या उच्च सरकारी सेवा में लगे लोगों को प्राथमिकता. कृपया वर के जन्मपत्र एवं पूर्ण विवरण सहित लिखें : वि. नं. 251, सरिता, नई दिल्ली-55.

23½ वर्षीया, बी. एड., सिंघल कन्या हेतु मांगलिक वर चाहिए. पिता प्रथम श्रेणी अधिकारी. लिखें : वि. नं. 252, सरिता, नई दिल्ली-55.

21 वर्षीया, अग्रवाल, बंसल, एम. ए., बी. एड., इकहरा बदन, सुंदर, साफ रंग, गृहकार्य दक्ष, कद 156 सें. मी., धनाढ्य व्यापारी परिवारीय कन्या हेतु सजातीय, संपन्न, परिवारीय, डाक्टर, इंजीनियर, उच्च व्यवसायी, राजकीय [illegible] सेवारत, सुयोग्य वर शीघ्र चाहिए. उत्तम विवाह. पूर्ण विवरण लिखें : वि. नं. 253, सरिता, नई दिल्ली-55.

25 वर्षीया, कान्यकुब्जीय, एम. ए. अंगरेजी, सुंदर एवं गृहकार्य में दक्ष कन्या हेतु सजातीय, डाक्टर, इंजीनियर, लेक्चरार अथवा सरकारी सेवा में कार्यरत, सुयोग्य वर चाहिए. लिखें : वि. नं. 254, सरिता, नई दिल्ली-55.

30 वर्षीया, ग्रेजुएट, सुंदर, गौरवर्ण, अविवाहित कन्या हेतु उपयुक्त वर तथा उस के भाई 26 वर्षीय, व्यवसायी युवक हेतु वधू चाहिए. दहेज, जाति कोई बंधन नहीं. विवाह शीघ्र. लिखें : वि. नं. 255, सरिता, नई दिल्ली-55.

22 वर्षीया, कान्वेंट मैट्रिक पास कन्या तथा 25 वर्षीय, डिप्लोमा प्राप्त, कार्यरत, वेतन 1300 रुपए युवक हेतु सुयोग्य, कार्यरत, कान्यकुब्ज ब्राह्मण वर व वधू चाहिए. लिखें : वि. नं. 256, सरिता, नई दिल्ली-55.

22 वर्षीया, अग्रवाल, एम. बी. बी. एस., अति सुंदर, गौरवर्ण कन्या एवं उस की 29 वर्षीया, अति सुंदर, गौरवर्ण, कद 5'-3", एम. एससी. अंतिम वर्ष (विद्यार्थी), बहन हेतु अच्छा वर चाहिए. जाति बंधन नहीं. लिखें : वि. नं. 257, सरिता, नई दिल्ली-55.

30 वर्षीय, कान्यकुब्ज ब्राह्मण भारद्वाज, बी. एससी. इलेक्ट्रिकल इंजीनियर, मासिक वेतन 500 रुपए, युवक के लिए, सुयोग्य कन्या चाहिए. दहेज बंधन नहीं. लड़का मामूली झुक कर चलता है. लिखें : वि. नं. 258, सरिता, नई दिल्ली-55.

32 वर्षीय, एयरफोर्स में सेवारत, 950 रुपए मासिक वेतन, गौरवर्ण, गोयल गोत्र वर के लिए शिक्षित, सुंदर कन्या चाहिए. कोई मांग नहीं. शादी शीघ्र. लिखें : वि. नं. 259, सरिता, नई दिल्ली-55.

21 वर्षीय, माहेश्वरी, कद 5'-5", बी. काम. आनर्स, निजी उद्योग में कार्यरत, मेधावी युवक के लिए समृद्ध एवं भरेपूरे माहेश्वरी परिवार की 17/19 वर्षीया, सुंदर, गौरवर्ण, इंगलिश माध्यम से पढ़ी, गृहकार्य में दक्ष, 5'-2"/5'-3", कद की कन्या चाहिए. कृपया कन्या की साखों व विशेष गुणों की जानकारी देते हुए पत्र-व्यवहार करें. लिखें : वि. नं. 260, सरिता, नई दिल्ली-55.

20 वर्षीय, ओसवाल, कद 5'-7", बी. एससी., युवक हेतु, सुंदर, सुशील, सजातीय कन्या चाहिए. राजस्थान निवासिनी को प्राथमिकता. लिखें : वि. नं. 261, सरिता, नई दिल्ली-55.

27 वर्षीय, ग्रेजुएट, राजपूत, कद 5'-5½" [illegible] रंग गोरा, राष्ट्रीयकृत बैंक में सेवारत, वेतन 900 रुपए मासिक, पिता राजपत्रित अधिकारी, युवक हेतु सुंदर, ग्रेजुएट वधू चाहिए. दहेज अथवा जाति बंधन नहीं. लिखें : वि. नं. 262, सरिता, नई दिल्ली-55.

28 वर्षीय, सरयूपारीण ब्राह्मण, कद 5'-6", गौरवर्ण, अमरीका की सुविख्यात कंपनी में प्रोजेक्ट लीडर, (कंप्यूटर सिस्टम) पदासीन, 150 हजार रुपए वार्षिक वेतन, पीएच. डी. अध्ययनरत, एम. एस., बी. ई. (विद्युतीय) डिस्टिंक्शन व मैरिट में तृतीय, सुंदर, दयालु, आदर्शवादी नवयुवक हेतु एम. बी. बी. एस. या अद्वितीय सौंदर्य वाली, ब्राह्मण कन्या के विवरण आमंत्रित हैं. दहेज नहीं व इन की 18 वर्षीया अतिसुंदर, बी. ए. अध्ययनरत, गृहकार्य में निपुण बहन के लिए यथोचित, सुशिक्षित ब्राह्मण वर आमंत्रित है. लिखें : **Sh. R. L. P. Vimal, 4100, N. Keystone, APT 310, CHICAGO Ill. 60641, U. S. A.**

112 7-94

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

24 वर्षीय, माहेश्वरी, बी. कॉम, कार्यरत युवक हेतु सुंदर, शिक्षित वधू चाहिए. लिखें : वि. नं. 263, सरिता, नई दिल्ली-55.

24 वर्षीय, कहार, छठी पास, सांवला रंग, वेतन 350 रुपए, दिल्ली में अकेले रह रहे, अविवाहित नवयुवक के लिए निःसंतान विधवा चाहिए. उमर, जाति बंधन नहीं. लिखें : वि. नं. 264, सरिता, नई दिल्ली-55.

35 वर्षीय, चौरसिया, एम.ए., एलएल.बी. एडवोकेट, मासिक आय 800 रुपए लगभग, युवक के लिए वधू चाहिए. जाति बंधन नहीं. विधवा आदि को प्राथमिकता. लिखें : वि. नं. 265, सरिता, नई दिल्ली-55.

36 वर्षीय, क्षत्रिय, गजटेड अफसर, 950 रुपए वेतन, एम. ए., हेतु सुंदर वधू चाहिए. जाति, प्रांत, दहेज, विधवा बंधन नहीं. लिखें : वि. नं. 266, सरिता, नई दिल्ली-55.

25 वर्षीय, जैन, जिंदल गोत्रीय, सुंदर, स्वस्थ, आकर्षक व्यक्तित्व, बी. एससी. असम निवासी, सफल व्यवसायी, उत्तम आय वाले युवक हेतु लंबी, सुंदर, शिक्षित, गृहकार्य दक्ष वधू चाहिए. लिखें : वि. नं. 267, सरिता, नई दिल्ली-55.

31 वर्षीय, महाविद्यालयीय व्याख्याता, 168 सें. मी. ऊंचे, म. प्र. निवासी, प्रतिष्ठित राजपूत परिवार के युवक के लिए हिंदी भाषी वधू चाहिए. लिखें : वि. नं. 268, सरिता, नई दिल्ली-55.

मुसलिम मां, हिंदू पिता के 30 वर्षीय युवक, रंग सांवला, कद लंबा, आय 550 रुपए, कलकत्ते में निजी फ्लैट, के लिए किसी भी जाति की शिक्षित वधू चाहिए. उदार, आधुनिक दृष्टिकोण, लेनदेन नहीं. सादा विवाह. लिखें : वि. नं. 269, सरिता, नई दिल्ली-55.

26 वर्षीय, सनाढ्य माहेश्वरी परिवार, स्टेट बैंक कर्मचारी, आकर्षक (बाईं टांग आंशिक विकल, देखनेचलने में सामान्य) युवक के लिए साथी चाहिए. दहेज नहीं. विवाह आडंबरहीन. लिखें : वि. नं. 270, सरिता, नई दिल्ली-55.

26 वर्षीय, सक्सेना (दूसरे), इंटरमीडिएट, राज्य सरकार मथुरा में तीन साल से कार्यरत, युवक हेतु सुयोग्य वधू चाहिए. उपजाति बंधन नहीं. लिखें : वि. नं. 271, सरिता, नई दिल्ली-55.

27 वर्षीय, ब्राह्मण प्रवक्ता, संपन्न, स्वस्थ, आकर्षक वर (इटावा) को सुंदर, तीखे नक्श, गोरी, अत्याकर्षक आंखों वाली वधू चाहिए. कोई शर्त नहीं. लिखें : वि. नं. 272, सरिता, नई दिल्ली-55.

25 वर्षीय, 500 रुपए पाने वाले, रेलवे कर्मचारी हेतु राजपूत, गौरवर्ण, सुंदर वधू चाहिए. दहेज आवश्यक नहीं. लिखें : वि. नं. 273, सरिता, नई दिल्ली-55.

26 वर्षीय, कायस्थ, मैट्रिक, 400 रुपए मासिक आय वाले युवक हेतु वधू चाहिए. लिखें : वि. नं. 274, सरिता, नई दिल्ली-55.

21 वर्षीय, बीसा अग्रवाल, गर्ग गोत्र, बी. काम., निजी उच्च व्यवसाय, प्रतिष्ठित परिवार के युवक के लिए रूपगुणवती, सुशिक्षित, सुंदर पारिवारिक, सजातीय वधू चाहिए. लिखें : वि. नं. 275, सरिता, नई दिल्ली-55.

29 वर्षीय, राजपूत, इंजीनियर, बिहार निवासी के लिए सुंदर कन्या चाहिए. लिखें : वि. नं. 276, सरिता, नई दिल्ली-55.

28 वर्षीय, खत्री, मैट्रिक, आई. टी. आई., 550 रुपए वेतन, युवक हेतु सुयोग्य, सुंदर, सजातीय कन्या चाहिए. लिखें : वि. नं. 277, सरिता, नई दिल्ली-55.

32½ वर्षीय, अविवाहित जाटव, कद 5'-6", पूर्ण शाकाहारी, राधास्वामी, शासकीय सेवा, 650 रुपए मासिक, युवक को स्वस्थ, सुशील, गृहकार्य में दक्ष, कम से कम हायर सेकंडरी कन्या चाहिए. सादा विवाह. लिखें : वि. नं. 279, सरिता, नई दिल्ली-55.

23 वर्षीय, 800 रुपए माहवार, माहेश्वरी, ग्रेजुएट युवक के लिए गौरवर्ण, आकर्षक, सुंदर, शालीन एवं सुशील कन्या चाहिए. पूर्ण पत्र-व्यवहार करें. लिखें : वि. नं. 280, सरिता, नई दिल्ली-55.

27 वर्षीय, माथुर कायस्थ, असिस्टेंट इंजीनियर के लिए सजातीय, सुंदर, सुशिक्षित वधू चाहिए. लिखें : वि. नं. 281, सरिता, नई दिल्ली-55.

24 वर्षीय, इंजीनियरिंग चतुर्थ छात्र, स्वस्थ, 5'-3½", युवक के लिए सेवारत कन्या चाहिए. दहेज, जाति, उमर बंधन नहीं. लिखें : वि. नं. 282, सरिता, नई दिल्ली-55.

33 वर्षीय, पारीक युवक, एम. ए., बी. एड., राजकीय सेवा में स्थायी नियुक्त, 400 रुपए मासिक आय, कवि हृदय, आस्तिक, सरल स्वभाव किंतु दृष्टिहीन है, के लिए आवश्यकता है सजातीय, सनेत्र कन्या की जो स्वेच्छा से स्वीकार करे. शिक्षित को प्राथमिकता. गरीब, कुरूप व अन्य शारीरिक कमी से कोई एतराज नहीं. दहेज से मुक्त. लिखें : वि. नं 284, सरिता, नई दिल्ली-55.

35 वर्षीय, केंद्रीय, स्थायी सेवारत, मासिक आय 300 रुपए, युवक हेतु विश्वसनीय पत्र-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यवहार आमंत्रित हैं. स्वावलंबी कन्या को प्राथमिकता. लिखें : वि. नं. 288, सरिता, नई दिल्ली-55.

25 वर्षीय, पांचाल ब्राह्मण, एम. एससी., बी. ई. (इलेक्ट्रिकल) इंजीनियर युवक हेतु सुंदर, शिक्षित, गृहकार्य में दक्ष कन्या चाहिए. लिखें : वि. नं. 289, सरिता, नई दिल्ली-55.

22 व 37 वर्षीय, सुंदर, शिक्षित, युवकों हेतु वधुएं चाहिए. असम, सिक्किम, तिब्बत, भूटान, बंगलादेश, नेपाल, बनारस, लखनऊ, बरेली, देहरादून, दिल्ली वालों को प्रधानता. जिस की शादी किसी कारणवश न हुई हो—जैसे अंगदोष, कुरूपता, नर्स, अध्यापिका, विधवा, तलाकशुदा को भी प्राथमिकता. जाति बंधन नहीं. लिखें : वि. नं. 142, सरिता, नई दिल्ली-55.

21 वर्षीया, वैष्णव ब्राह्मण, एम. एससी., कद 5'-3", प्रतिष्ठित परिवार की गौरवर्ण, सुंदर, स्वस्थ कन्या के लिए सुयोग्य वर की आवश्यकता है. जातिबंधन नहीं. आई. ए. एस. एवं उच्च पदस्थ, प्रतिष्ठित परिवारों से पत्र-व्यवहार आमंत्रित हैं. लिखें : वि. नं. 219, सरिता, नई दिल्ली-55.

20 वर्षीया, राजस्थानी, संपन्न, माहेश्वरी (तोशनीवाल) बी. ए. आनर्स अंगरेजी, कद 5'-2", सुंदर, सुशील, स्पोर्ट्समैन, कला व गृह-कार्य में निपुण कन्या के लिए शिक्षित, कुलीन व सजातीय, योग्य वर की आवश्यकता है. विवाह उत्तम प्रकार से किया जाएगा. पूर्ण विवरण सहित शीघ्र पत्रव्यवहार करें. लिखें : वि. नं. 173, सरिता, नई दिल्ली-55.

27 वर्षीय, राजपूत, एम.ए., स्पोर्ट्समैन, मासिक आय 600 रु. युवक हेतु सजातीय, सुंदर, शिक्षित वधू चाहिए. लिखें : वि. नं. 278, सरिता, नई दिल्ली-55.

25 वर्षीय, गर्ग अग्रवाल, 300 रु., शासकीय अधिकारी हेतु सुयोग्य, सुंदर कन्या चाहिए. लिखें : वि. नं. 283, सरिता, नई दिल्ली-55.

गोद विज्ञापन

संभ्रांत तथा समृद्धिशाली, महानगरवासी दंपति, एक छः से बारह महीने तक के गौरवर्ण तथा सुंदर लड़के को गोद लेना चाहते हैं. उदार तथा इच्छुक सज्जन लिखें : वि. नं. 286, सरिता, नई दिल्ली-55.

अच्छे खानदान का सुंदर, मनमोहक अल्पायु का लड़का गोद लेने के इच्छुक, वही परिवार लिखें, जिन के कोई बच्चा न हो. लिखें : वि. नं. 143, सरिता, नई दिल्ली-55.

विज्ञापनदाताओं के लिए

सरिता में वैवाहिक, गोद व अन्य व्यक्तिगत विज्ञापनों की दर 1 रुपए प्रति शब्द है और अंगरेजी पाक्षिक कैरेवान में 50 पैसे प्रति शब्द. यदि सरिता के साथसाथ वही विज्ञापन कैरेवान में भी प्रकाशित कराया जाए तो उस के लिए केवल 30 पैसे प्रति शब्द अतिरिक्त देना होगा, यानी केवल 1 रुपए 30 पैसे प्रति शब्द. अगर वही विज्ञापन सरिता, कैरेवान के साथ वूमंस इरा में भी प्रकाशित कराया जाए तो सिर्फ 1.50 रुपए प्रति शब्द लगेंगे.

मूल विज्ञापन के साथ 'विज्ञापन न ...सरिता, नई दिल्ली-55.' 6 शब्दों का मूल्य आवश्यक है. विज्ञापनदाता के 'निजी पते व फोटो सहित' वाले विज्ञापन स्वीकार नहीं किए जाते.

विज्ञापन के उत्तर में प्राप्त पत्र विज्ञापनदाता के पास भेजने की व्यवस्था करने के लिए 4 रुपए अतिरिक्त लिए जाएंगे.

विधवाओं, परित्यक्ताओं और जाति बंधन छोड़ कर विवाह करने वालों के वैवाहिक विज्ञापन आधे मूल्य पर स्वीकार किए जाते हैं. ऐसे विज्ञापनों में विज्ञापनदाता की जाति का भी उल्लेख नहीं होना चाहिए.

विज्ञापन का शुल्क व विवरण साफसाफ लिख कर इस पते पर भेजिए. विज्ञापन विभाग, सरिता, नई दिल्ली-55.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

227
10/6/95

Central
1559-2024

112794

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar